महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्र 'भावप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम्)

प्रथम खण्ड



दयालोक प्रकाशन संस्थान
१८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद-२११००२

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

(सचित्रं 'तत्त्वप्रबोधिनी' सरल-हिन्दी-टीका-सहितम्)

सप्तम खण्डः

(दशमः स्कन्धः उत्तरार्धः)



टीकाकर्त्री

श्रीमती दयाकान्ति देवी

धर्मपत्नी—श्रीलोकमणिलाल

दयालोक प्रकाशन संस्थान

१८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद-२११००२

प्रकाशक—दयालोक प्रकाशन संस्थान, १८ पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद

विक्रमसंवत् २०५०, प्रथम संस्करण १०००

❋

प्राप्ति-स्थान
दयालोक प्रकाशन संस्थान
१८, पन्नालाल मार्ग, इलाहाबाद-२११००२

❋

मूल्य : ४०० रुपये मात्र

❋

मुद्रक
शाकुन्तल मुद्रणालय
३४, बलरामपुर हाउस, इलाहाबाद



सम्पादिका—श्रीमती दयाकान्ति देवी

नम्र निवेदन

भक्त पाठकगण !

भक्ति ज्ञान तथा वैराग्य तीनों के प्रचार के लिये श्रीमद्भागवत ग्रन्थ का निर्माण किया गया है। यह पुराण सभी पुराणों में सर्वश्रेष्ठ है। वैष्णव भक्त इसकी कथाओं का सदा स्मरण करते रहते हैं। इसके पठन, श्रवण तथा मनन से मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। जैसा कि पद्मपुराण में कहा गया है—

श्रीमद्भागवतं पुराणतिलकं यद्वैष्णवानां धनम्,
यस्मिन् पारमहंस्यमेवममलं ज्ञानं परं गीयते।
यत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतम्,
तच्छृण्वन् प्रपठन् विचारणपरो भक्त्या विमुच्येन्नरः॥

[पद्म उ० खण्ड ६/८२]

जहाँ पर श्रीमद्भागवत की कथा होती है वहाँ सभी दिव्य भक्त, महर्षि, ज्ञानी, तपस्वी स्वतः विराजमान रहते हैं। यह भागवत परमहंमसंहिता है। माधुर्य का सागर है। विद्याओं का भण्डार है। इसके पारायण से सभी लौकिक व पारलौकिक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसके गूढ भावों को जानने के लिये केवल भक्ति की आवश्यकता है। विद्या एवं बुद्धि का अभिमान रखने वाले पण्डितजन इसे हृदयङ्गम नहीं कर सकते। श्रीमद्भागवत के नित्य पाठ का फल कपिला गाय के दान के समान माना गया है।

श्रीमद्भागवत का दशम स्कन्ध विशेष महत्त्व का है। इसमें भगवान् के पूर्णकलावतार श्रीकृष्ण के चरित्र का आद्योपान्त वर्णन किया गया है। इसके पूर्वार्द्ध में भगवान् के व्रज-निवास तथा मथुरा निवास के काल के चरितों का वर्णन है। यशोदा के बाल-गोपाल नन्द-नन्दन गो-गोप-गोपीजन-वल्लभ भगवान् के चमत्कार पूर्ण पूतनामारण से लेकर केशी के वध पर्यन्त सभी कार्य आज भी व्रजवासियों के मन में अपनी छाप छोड़े हुये प्रतीत होते हैं। यह व्रजवास लगभग १२ वर्षों का था।

इसके अनन्तर कंस-वध से लेकर मथुरा के सिंहासन में महाराज उग्रसेन को पुनः प्रतिष्ठापित कर भगवान् देवकीनन्दन तथा वासुदेव के रूप में सभी के प्रेम पात्र बने। उद्धव के माध्यम से उन्होंने अपने प्रिय व्रज के निवासियों को सन्तुष्ट कर कंस के पक्ष वाले राजाओं का विनाश करना प्रारम्भ किया। यहीं से दशम-स्कन्ध का उत्तरार्ध प्रारम्भ होता है।

इसमें मुख्य रूप से भगवान् कृष्ण तथा उनके बड़े भाई बलराम के उदात्त चरित का वर्णन है । एक असाधारण वीर, नीतिज्ञ, धर्मरक्षक तथा दुष्टविनाशक के रूप में भगवान् की दिव्य कथाओं के वर्णन से दशम-उत्तरार्ध-स्कन्ध परिपूर्ण है । इसमें भगवान् का सोलह हजार आठ रानियों के साथ विवाह, बीस हजार राजाओं के उद्धारार्थ जरासंध का वध, युधिष्ठिर के राजसूय में शिशुपाल का वध तथा अन्य दुष्ट राजाओं के वध के उत्तम मनोरम वर्णन के साथ भगवान् के भक्तभयहारी रूप का प्रतिपादन किया गया है ।

यह भगवल्लीला देवर्षिनारद को भी मोहित करने वाली थी । सुदामा की प्रीति की कथा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है । भगवान् का गृहस्थ जीवन अपने में स्वयम् आदर्श है । संक्षेप में भगवान् के शौर्य औदार्य-माधुर्य एवं चातुर्यमय चरित्रों से परिपूर्ण यह अंश भक्तों के लिये सर्वथा अभ्युपेय है । सारा भगवच्चरित्र हृत्कर्णरसायन है । आशा है अन्य खण्डों की तरह यह खण्ड भी पाठकों को अभिप्रेत होगा ।

अन्त में मैं इस खण्ड के प्रकाशन में सहयोग करने वाले पं० श्री आजाद मिश्र आचार्य तारिणीश झा जी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ ।

मार्गशीर्ष सोमवती अमावस्या
सं० २०५०, कलि सं० ५०९४, श्रीकृष्ण सं० ५११९
१३ दिसम्बर, १९९३

निवेदिका
दयाकान्ति देवी अग्रवाल

श्रीहरिः

विषय-सूची

दशमः स्कन्धः (उत्तरार्धः)



श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

श्रीमद्भागवतमहापुराणस्य

दशमः स्कन्धः

(उत्तरार्द्धः)



कान्तिः सिताऽऽमृशति निन्दितशारदेन्दुर्यत्रैकतो विलसितामसिताङ्गशोभाम् ।
वृन्दावनेऽपि कृतयामुनगांगसंगं राधामुकुन्दयुगलं तदहं नमामि ।।


इन्द्र शर्मा

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

(उत्तरार्धः)

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अस्तिः प्राप्तिश्च कंसस्य महिष्यौ भरतर्षभ ।
मृते भर्तरि दुःखार्ते ईयतुः स्म पितुर्गृहान् ।।१।।

पदच्छेद— अस्तिः प्राप्तिः च कंसस्य महिष्यौ भरतर्षभ ।
मृते भर्तरि दुःखार्ते ईयतुः स्म पितुः गृहान् ।।

शब्दार्थ—

अस्तिः	४.	अस्ति	मृते	८.	मर जाने पर वे
प्राप्तिः	६	प्राप्ति	भर्तरि	७.	पति के
च	५.	और	दुःखार्ते	९.	दुःख से पीडित होकर
कंसस्य	२.	कंस की	ईयतुः स्म	१२.	चली गईं
महिष्यौ	३.	दो रानियाँ थीं	पितुः	१०.	पिता के
भरतर्षभ ।	१.	हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ !	गृहान् ।।	११.	घर

श्लोकार्थ—हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! कंस की दो रानियाँ थीं—अस्ति और प्राप्ति । पति के मर जाने पर वे दुःख से पीड़ित होकर पिता के घर चली गईं ।।

द्वितीयः श्लोकः

पित्रे मगधराजाय जरासन्धाय दुःखिते ।
वेदयाञ्चक्रतुः सर्वमात्मवैधव्यकारणम् ।।२।।

पदच्छेद— पित्रे मगधराजाय जरासन्धाय दुःखिते ।
वेदयाम् चक्रतुः सर्वम् आत्म वैधव्य कारणम् ।।

शब्दार्थ—

पित्रे	३.	पिता	चक्रतुः	१०.	दिया
मगधराजाय	२.	मगधराज	सर्वम्	७.	सब
जरासन्धाय	४.	जरासन्ध से	आत्म	५.	अपने
दुःखिते ।	१.	उन दुःखी रानियों ने	वैधव्य	६.	विधवा होने का
वेदयाम्	९.	बता	कारणम् ।।	८.	कारण

श्लोकार्थ—उन दुःखी रानियों ने मगधराज पिता जरासन्ध से अपने विधवा होने का सब कारण बता दिया ।।

तृतीयः श्लोकः

स तदप्रियमाकर्ण्य शोकामर्षयुतो नृप ।
अयादवीं महीं कर्तुं चक्रे परममुद्यमम् ॥३॥

पदच्छेद— सः तत् अप्रियम् आकर्ण्य शोक अमर्षयुतः नृप ।
अयादवीम् महीम् कर्तुम् चक्रे परमम् उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

सः तत्	२.	उसने वह	अयादवीम्	८.	यादव विहीन
अप्रियम्	३.	अप्रिय समाचार	महीम्	७.	पृथ्वी को
आकर्ण्य	४.	सुन कर	कर्तुम्	९.	करने के लिये
शोक	५.	शोक और	चक्रे	१२.	की
अमर्षयुतः	६.	क्रोध से युक्त होकर	परमम्	१०.	बड़ी
नृप ।	१.	हे राजन् !	उद्यमम् ॥	११.	तैयारी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उसने वह अप्रिय समाचार सुन कर शोक और क्रोध से युक्त होकर पृथ्वी को यादव विहीन करने के लिये बड़ी तैयारी की ॥

चतुर्थः श्लोकः

अक्षौहिणीभिर्विंशत्या तिसृभिश्चापि संवृतः ।
यदुराजधानीं मथुरां न्यरुणत् सर्वतोदिशम् ॥४॥

पदच्छेद— अक्षौहिणीभिः विंशत्या तिसृभिः च अपि संवृतः ।
यदु राजधानीम् मथुराम् न्यरुणत् सर्वतः दिशम् ॥

शब्दार्थ—

अक्षौहिणीभिः	५.	अक्षौहिणी सेना से	यदु	७.	यदुवंशियों की
विंशत्या	२.	बीस	राजधानीम्	८.	राजधानी
तिसृभिः	४.	तीन (तेईस)	मथुराम्	९	मथुरा को
च	१.	और	न्यरुणत्	१२.	घेर लिया
अपि	३.	एवं	सर्वतः	१०.	सब
संवृतः ।	६.	युक्त होकर	दिशम् ॥	११.	ओर से

श्लोकार्थ और बीस एवं तीन (तेईस) अक्षौहिणी सेना से युक्त होकर यदुवंशियों की राजधानी मथुरा को सब ओर से घेर लिया ॥

पञ्चमः श्लोकः

निरीक्ष्य तद्बलं कृष्ण उद्वेलमिव सागरम् ।
स्वपुरं तेन संरुद्धं स्वजनं च भयाकुलम् ॥५॥

पदच्छेद— निरीक्ष्य तत् बलम् कृष्णः उद्वेलम् इव सागरम् ।
स्वपुरम् तेन संरुद्धम् स्वजनम् च भय आकुलम् ॥

शब्दार्थ—

निरीक्ष्य	२. देखा कि	स्वपुरम्	८. हमारे नगर को
तत् बलम	३. उसकी सेना	तेन	७. उसने
कृष्णः	१. श्रीकृष्ण ने	संरुद्धम्	९. घेर लिया है और
उद्वेलम्	४. उमड़ते हुये	स्वजनम् च	१०. हमारे अपने लोग
इव	६. समान है और	भय	११. भय से
सा रम् ।	५. सागर के	आकुलम् ॥	१२. व्याकुल हो रहे है

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने देखा कि उसकी सेना उमड़ते हुये सागर के समान है । और उसने हमारे नगर को घेर लिया है । अं र हमारे अपने लोग भय से व्याकुल हो रहे हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

चिन्तयामास भगवान् हरिः कारणमानुषः ।
तद्देशकालानुगुणं स्वावतारप्रयोजम् ॥६॥

पदच्छेद— चिन्तयामास भगवान् हरिः कारण मानुषः ।
तत् देशकाल अनुगुणम् स्व अवतार प्रयोजनम् ॥

शब्दार्थ—

चिन्तयामास	१०. सोचने लगे	तत्	५. उस
भगवान्	३. भगवान्	देशकाल	६. स्थान और समय के
हरिः	४. श्रीकृष्ण	अनुगुणम्	७. अनुकूल
कारण	१. प्रयोजन वश	स्व अवतार	८. अपने अवसर का
मानुषः ।	२. मनुष्य रूप धारण करने वाले	प्रयोजनम् ॥	९. प्रयोजन

श्लोकार्थ—प्रयोजन वश मनुष्य रूप धारण करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण उस स्थान और समय के अनुकूल अपने अवतार का प्रयोजन सोचने लगे ॥

सप्तमः श्लोकः

हनिष्यामि बलं ह्येतद् भुवि भारं समाहितम् ।
मागधेन समानीतं वश्यानां सर्वभूभुजाम् ॥७॥

पदच्छेद— हनिष्यामि बलम् हि एतद् भुवि भारम् समाहितम् ।
मागधेन समानीतम् वश्यानाम् सर्वभूभुजाम् ॥

शब्दार्थ—

हनिष्यामि	१२.	नष्ट कर दूंगा	मागधेन	१.	मगधराज के द्वारा
बलम्	८.	सेना को (जो)	समानीतम्	२.	लायी गई
हि	११.	निश्चित रूप से	वेश्यानाम्	३.	अधीनस्थ
एतद्	७.	इस	सर्व	५.	सभी
भुविभारम्	९.	पृथ्वी पर भार	भू	४.	पृथ्वी के
समाहितम् ।	१०.	स्वरूप है, मैं	भुजाम् ॥	६.	राजाओं को

श्लोकार्थ—मगधराज के द्वारा लायी गई अधीनस्थ पृथ्वी के सभी राजाओं की इस सेना को, जो पृथ्वी पर भार स्वरूप है, मैं निश्चित रूप से नष्टकर दूंगा ॥

अष्टमः श्लोकः

अक्षौहिणीभिः संख्यातं भटाश्वरथकुञ्जरैः ।
मागधस्तु न हन्तव्यो भूयः कर्ता बलोद्यमम् ॥८॥

पदच्छेद— अक्षौहिणीभिः संख्यातम् भट अश्वरथ कुञ्जरैः ।
मागधः तु न हन्तव्यः भूयः कर्ता बल उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

अक्षौहिणीभिः	५.	अक्षौहिणी से	मागधः	७.	मगधराज को (अभी)
संख्यातम्	६.	युक्त (सेना को लाने वाले	तु न	८.	नहीं
भट	१.	पैदल	हन्तव्यः	९.	मारना चाहिये
अश्व	२.	घोड़े	भूयः	१०.	(क्यों कि यह) फिर से
रथ	३.	रथ और	कर्ता	१२.	कर लायेगा
कुञ्जरैः ।	४.	हाथी रूप	बलउद्यमम् ॥	११.	सेना इकट्ठी

श्लोकार्थ—पैदल, घोड़े, रथ और हाथी रूप अक्षौहिणी से युक्त सेना को लाने वाले मगधराज को अभी नहीं मारना चाहिये । क्योंकि यह फिर से सेना इकट्ठी कर लायेगा ॥

नवम श्लोकः

एतदर्थोऽवतारोऽयं भूभारहरणाय मे ।
संरक्षणाय साधूनां कृतोऽन्येषां वधाय च ॥९॥

पदच्छेद— एतत् अर्थः अवतारः अयम् भूभार हरणाय मे ।
संरक्षणाय साधूनाम् कृतः अन्येषाम् वधाय च ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	इसी	संरक्षणाय	९.	रक्षा तथा
अर्थः	२.	प्रयोजन वश	साधूनाम्	८.	सज्जनों की
अवतारःअयम्	४.	यह अवतार हुआ है कि	कृतः	१२.	करूँ
भूभार	५.	पृथ्वी का भार	अन्येषाम्	१०.	दुर्जनों का
हरणाय	६.	हल्का कर दूँ	वधाय	११.	संहार
मे ।	३.	मेरा	च ॥	७.	और

श्लोकार्थ – इसी प्रयोजन वश मेरा यह अवतार हुआ है कि पृथ्वी का भार हल्का कर दूँ और सज्जनों की रक्षा तथा दुर्जनों का संहार करूँ ॥

दशमः श्लोकः

अन्योऽपि धर्मरक्षायै देहः संभ्रियते मया ।
विरामायाप्यधर्मस्य काले प्रभवतः क्वचित् ॥१०॥

पदच्छेद— अन्यः अपि धर्मरक्षायै देहः संभ्रियते मया ।
विरामाय अपि अधर्मस्य काले प्रभवतः क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

अन्यः	९.	दूसरा	विरामाय	७.	रोकने के लिये
अपि	११.	भी	अपि	२.	और
धर्मरक्षायै	१.	धर्म की रक्षा के लिये	अधर्मस्य	६.	अधर्म को
देहः	१०.	शरीर	काले	३.	समय पर
संभ्रियते	१२.	धारण करता हूँ	प्रभवतः	५.	बढ़ते हुये
मया ।	८.	मैं	क्वचित् ॥	४.	कहीं

श्लोकार्थ—धर्म की रक्षा के लिये और समय पर कहीं बढ़ते हुये अधर्म को रोकने के लिये मैं दूसरा शरीर भी धारण करता हूँ ॥

एकादशः श्लोकः

एवं ध्यायति गोविन्द आकाशात् सूर्यवर्चसौ ।
रथावुपस्थितौ सद्यःससूतौ सपरिच्छदौ ॥११॥

पदच्छेद— एवम् ध्यायति गोविन्दे आकाशात् सूर्यं वर्चसौ ।
रथौ उपस्थितौ सद्यः ससूतौ सपरिच्छदौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	रथौ	७.	दो रथ
ध्यायति	३.	सोच ही रहे थे कि	उपस्थितौ	११.	आ गये
गोविन्दे	२.	श्रीकृष्ण	सद्यः	१०.	तुरन्त
आकाशात्	४.	आकाश से	ससूतौ	८.	सारथी और
सूय	५.	सूर्य के समान	सपरिच्छदौ ॥	९.	युद्ध सामग्रियों सहित
वर्चसौ ।	६.	चमकते हुये			

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण सोच ही रहे थे कि आकाश से सूर्य के समान चमकते हुये, दो र सारथी और युद्ध सामग्रियों सहित तुरन्त आ गये ॥

द्वादशः श्लोकः

आयुधानि च दिव्यानि पुराणानि यदृच्छया ।
दृष्ट्वा तानि हृषीकेशः सङ्कर्षणमथाब्रवीत् ॥१२॥

पदच्छेद— आयुधानि च दिव्यानि पुराणानि यदृच्छया ।
दृष्ट्वा तानि हृषीकेशः सङ्कर्षणम् अथ अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

आयुधानि	४.	अस्त्र-शस्त्र	दृष्ट्वा	८.	देखकर
च	१.	और (उसी समय उनके)	तानि	७.	उन्हें
दिव्यानि	३.	दिव्य	हृषीकेशः	९.	श्रीकृष्ण ने
पुराणानि	२.	पुराने	संकर्षणम्	१०.	बलराम जी से
यदृच्छया ।	५.	अपने आप ही वहाँ पर आ गये	अथ	६.	तथा
			अब्रवीत् ॥	११.	कहा

श्लोकार्थ—और उसी समय उनके पुराने दिव्य अस्त्र-शस्त्र अपने आप ही वहाँ पर आ गये । तथा उन्हें देख कर श्रीकृष्ण ने बलराम जी से कहा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

पश्यार्य व्यसनं प्राप्तं यदूनां त्वावतां प्रभो ।
एष ते रथ आयातो दयितान्यायुधानि च ॥१३॥

पदच्छेद — पश्य आर्य व्यसनम् प्राप्तम् यदूनाम् त्वावताम् प्रभो ।
एष ते रथः आयातः दयितानि आयुधानि च ॥

शब्दार्थ—

पश्यः आर्य	१.	हे भाई जी ! देखिये	एषः	७.	यह
व्यसनम्	४.	विपत्ति	ते	८.	आपका
प्राप्तम्	५.	आ पड़ी है	रथः	९.	रथ
यदूनाम्	३	यदुवंशियों पर	आयातः	१०.	आ गया है और
त्वावताम्	२.	आपको रक्षक मानने वाले	दयितानि	११.	प्रिय
प्रभो ।	६.	हे प्रभो !	आयुधानि च ॥	१२.	अस्त्र-शस्त्र भी आ गये हैं

श्लोकार्थ—हे भाई जी ! देखिये आप को रक्षक मानने वाले यदुवंशियों पर विपत्ति आ पड़ी है, हे प्रभो ! यह आपका रथ आ गया है । और प्रिय अस्त्र-शस्त्र भी आ गये हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

यानमास्थाय जह्येतद् व्यसनात् स्वान् समुद्धर ।
एतदर्थं हि नौ जन्म साधूनामीश शर्मकृत् ॥१४॥

पदच्छेद-- यानम् आस्थाय जहि एतत् व्यसनात् स्वान् समुद्धर ।
एतद् अर्थम् हि नौ जन्म साधूनाम् ईश शर्मकृत् ॥

शब्दार्थ—

यानम्	१.	रथ पर	एतद् अर्थम् हि	१२.	इसीलिये हुआ है
आस्थाय	२.	सवार होकर	नौ	१०.	हम लोगों का
जहि	४.	संहार कीजिये	जन्म	११.	जन्म
एतत्	३.	इस सेना का	साधूनाम्	८.	सज्जनों का
व्यसनात् स्वान्	५.	अपने लोगों को विपत्ति से	ईश	७.	हे भगवान्
समुद्धर ।	६.	बचाइये	शर्मकृत् ॥	९.	कल्याण करने वाला

श्लोकार्थ—हे भाई जी ! आप रथ पर सवार हो कर इस सेना का संहार कीजिये अपने लोगों को विपत्ति से बचाइये, हे भगवन् ! सज्जनों का कल्याण करने वाले हम लोगों का जन्म इसीलिये हुआ है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

त्रयोविंशत्यनीकाख्यं भूमेर्भारमपाकुरु ।
एवं सम्मन्त्र्य दाशार्हौ दंशितौ रथिनौ पुरात् ॥१५॥

पदच्छेद— त्रयोविंशति अनीक आख्यम् भूमेः भारम् अपाकुरु ।
एवम् सम्मन्त्र्य दाशार्हौ दंशितौ रथिनौ पुरात् ॥

शब्दार्थ—

त्रयोविंशति	१.	तेईस	एवम्	७.	इस प्रकार
अनीक	२.	अक्षौहिणी सेना	सम्मन्त्र्य	८.	मन्त्रणा करके
आख्यम्	३.	रूप	दाशार्हौ	९.	श्रीकृष्ण और बलराम
भूमेः	४.	पृथ्वी का	दंशितौ	१०.	कवच धारण करके
भारम्	५.	भार	रथिनौ	११.	रथ पर सवार हो कर
अपाकुरु ।	६.	दूर कीजिये	पुरात् ॥	१२.	नगर से निकल पड़े

श्लोकार्थ—तेईस अक्षौहिणी सेना रूप पृथ्वी का भार दूर कीजिये । इस प्रकार मन्त्रणा करके श्रीकृष्ण और बलराम कवच धारण करके रथ पर सवार हो कर नगर से निकल पड़े ॥

षोडशः श्लोकः

निर्जग्मतुः स्वायुधाढ्यौ बलेनाल्पीयसाऽऽवृतौ ।
शङ्खं दध्मौ विनिर्गत्य हरिर्दारुकसारथिः ॥१६॥

पदच्छेद— निर्जग्मतुः स्वायुध आढ्यौ बलेन अल्पीयसा आवृतौ ।
शङ्खम् दध्मौ विनिर्गत्य हरिः दारुक सारथिः ॥

शब्दार्थ—

निर्जग्मतुः	१०.	निकल कर	शङ्खम्	११.	अपना शङ्ख
स्वायुध	१.	अपने आयुधों से	दध्मौ	१२.	बजाया
आढ्यौ	२.	सम्पन्न	विनिर्गत्य	९.	नगर से निकल कर
बलेन	४.	सेना से	हरिः	८.	श्रीकृष्ण ने
अल्पीयसा	३.	छोटी सी	दारुक	६.	दारुक नामक
आवृतौ ।	५.	युक्त	सारथिः ॥	७.	सारथि वाले

श्लोकार्थ— अपने आयुधों से सम्पन्न छोटी सी सेना से युक्त दारुक नामक सारथि वाले श्रीकृष्ण ने नगर से निकल कर अपना शङ्ख बजाया ॥

सप्तदशः श्लोकः

ततोऽभूत् परसैन्यानां हृदि वित्रासवेपथुः ।
तावाह मागधो वीक्ष्य हे कृष्ण पुरुषाधम ॥१७॥

पदच्छेद— ततः अभूत् पर सैन्यानां हृदि वित्रास वेपथुः ।
तौ आह मागधः वीक्ष्य हे कृष्ण पुरुष अधम ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उस (शङ्ख ध्वनि से)	तौ	९.	उन दोनों को
अभूत्	७.	होने लगा	आह	११.	कहा
पर	२.	शत्रु पक्ष के	मागधः	८.	मगधराज ने
सैन्यानाम्	३.	सैनिकों के	वीक्ष्य	१०.	देख कर
हृदि	४.	हृदय में	हे कृष्ण	१४.	श्रीकृष्ण !
वित्रास	५.	महान् भय से	पुरुष	१२.	हे पुरुषों में
वेपथुः ।	६.	कम्पन	अधम ॥	१३.	अधम

श्लोकार्थ—उस शङ्ख ध्वनि से शत्रुपक्ष के सैनिकों के हृदय में महान् भय से कम्पन होने लगा। मगधराज ने उन दोनों को देखकर कहा। हे पुरुषों में अधम श्रीकृष्ण ! भाग जा ॥

अष्टादशः श्लोकः

न त्वया योद्धुमिच्छामि बालेनैकेन लज्जया ।
गुप्तेन हि त्वया मन्द न योत्स्ये याहि बन्धुहन् ॥१८॥

पदच्छेद— न त्वया योद्धुम् इच्छामि बालेन एकेन लज्जया ।
गुप्तेन हि त्वया मन्द न योत्स्ये याहि बन्धुहन् ॥

शब्दार्थ—

न त्वया	३.	नहीं तुझ	गुप्तेन	८.	छिपे रहने वाले
योद्धुम्	५.	युद्ध करना	हि त्वया	९.	तेरे साथ
इच्छामि	६.	चाहता हूँ	मन्द	७.	मूर्ख !
बालेन	४.	बालक के साथ	न योत्स्ये हे	१०.	युद्ध नहीं करूँगा
एकेन	२.	अकेले	याहि	१२.	भाग जा
लज्जया ।	१.	लज्जावश मैं	बन्धुहन् ।	११.	बन्धुहन्

श्लोकार्थ—अधम कृष्ण ! मैं लज्जावश अकेले तुझ बालक के साथ युद्ध नहीं करना चाहता हूँ। ओ मूर्ख ! छिपे रहने वाले तेरे साथ युद्ध नहीं करूँगा। बन्धु का हत्यारा यहाँ से भाग जा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तव राम यदि श्रद्धा युध्यस्व धैर्यमुद्वह ।
हित्वा वा मच्छरैश्छिन्नं देहं स्वर्याहि मां जहि ॥१९॥

पदच्छेद— तव राम यदि श्रद्धा युध्यस्व धैर्यम् उद्वह ।
हित्वा वा मच्छरैः छिन्नम् देहम् स्वर्याहि माम् जहि ॥

शब्दार्थ—

तव	३.	तुझे	हित्वा	१२.	छोड़कर
राम	१.	बलराम	वा	८.	यदि
यदि	२.	यदि	मच्छरैः	९.	मेरे बाणों से
श्रद्धा	४.	श्रद्धा हो तो	छिन्नम्	१०.	कटे हुये
युध्यस्व	७.	युद्ध कर	देहम्	११.	शरीर को
धैर्यम्	५.	धैर्य	स्वर्याहि	१३.	स्वर्ग में जा
उद्वह ।	६.	धारण कर	माम् जहि ॥	१४.	या मुझे मार डाल

श्लोकार्थ—बलराम यदि तुझे श्रद्धा हो तो धैर्य धारण कर युद्ध कर । अथवा मेरे बाणों से कटे हुये शरीर को छोड़कर स्वर्ग में जा या मुझे मार डाल ॥

विंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—न वै शूरा विकत्थन्ते दर्शयन्त्येव पौरुषम् ।
न गृह्णीमो वचो राजन्नातुरस्य मुमूर्षतः ॥२०॥

पदच्छेद— न वै शूराः विकत्थन्ते दर्शयन्ति एव पौरुषम् ।
न गृह्णीमः वचः राजन् आतुरस्य मुमूर्षतः ॥

शब्दार्थ—

न वै	३.	नहीं	न गृह्णीमः	११.	हम ध्यान नहीं देते हैं
शूराः	२.	शूरवीर	वचः	१०.	बात पर
विकत्थन्ते	४.	डींग हाँकते हैं	राजन्	१.	हे राजन् !
दर्शयन्ति	७.	दिखाते हैं	आतुरस्य	९.	रोगी की
एव	६.	ही	मुमूर्षतः ॥	८.	मरने के इच्छुक
पौरुषम् ।	५.	पौरुष			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! शूरवीर डींग नहीं हाँकते हैं, पौरुष ही दिखाते हैं । मरने के इच्छुक रोगी की बात पर हम ध्यान नहीं देते हैं ॥

एकविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—जरासुतस्तावभिसृत्य माधवौ महाबलौघेन बलीयसाऽऽवृणोत्।
ससैन्ययानध्वजवाजिसारथी सूर्यानलौ वायुरिवाभ्ररेणुभिः ॥२१॥

पदच्छेद— जरा सुतः तौ अभिसृत्य माधवौ महाबल ओघेन बलीयसा आवृणोत्।
स सैन्ययान ध्वज वाजि सारथी सूर्य अनलौ वायुः इव अभ्र रेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

जरासुतः तौ	१.	जरासन्ध ने	स सैन्ययान	२.	सेना रथ
अभिसृत्य	६.	सामने आकर	ध्वज वाजि	३.	ध्वजा, घोड़ों और
माधवौ	५.	कृष्ण और बलराम के	सारथी	४.	सारथियों समेत
महाबल	८.	विशाल सेनाओं के	सूर्य अनलौ	१३.	सूर्य को और अग्नि को
ओघेन	९.	समूह से उसी प्रकार	वायु इव	११.	जैसे वायु
बलीयसा	७.	अत्यन्त बलवान्	अभ्र	१२.	बादलों से
आवृणोत।	१०.	घेर लिया	रेणुभिः ॥	१४.	धूल से ढक लेता है

श्लोकार्थ- जरासन्ध ने सेना, रथ, ध्वजा, घोड़ों और सारथियों समेत श्रीकृष्ण और बलराम के सामने आकर अत्यन्त बलवान् विशाल सेनाओं के समूह से उसी प्रकार घेर लिया, जैसे वायु बादलों से सूर्य को और धूल से अग्नि को ढक लेता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

सुपर्णतालध्वजचिह्नितौ रथावलक्षयन्त्यो हरिरामयोर्मृधे।
स्त्रियः पुराट्टालकहर्म्यगोपुरं समाश्रिताः संमुमुहुः शुचार्दिताः ॥२२॥

पदच्छेद— सुपर्ण तालध्वज चिह्नितौ रथौ अलक्षयन्त्यः हरि रामयोः मृधे।
स्त्रियः पुर अट्टालक हर्म्य गोपुरम् समाश्रिताः संमुमुहुः शुचा अर्दिताः ॥

शब्दार्थ—

सुपर्ण	१०.	गरुड़ और	स्त्रियः	६.	स्त्रियाँ
तालध्वज	११.	तालध्वज वाले (चिह्न से)	पुर	१.	नगर में
चिह्नितौ	१२.	चिह्नित	अट्टलक	२.	अटारियों
रथौ	१३.	रथों को	हर्म्य	३.	छज्जों और
अलक्षयन्त्यः	१४.	न देख कर	गोपुरम्	४.	फाटकों पर
हरि	८.	कृष्ण और	समाश्रिताः	५.	चढ़ी हुई
रामयोः	९.	बलराम के	संमुमुहुः	१६	मूर्च्छित हो गईं
मृधे।	७.	युद्ध भूमि में	शुचा अर्दिताः ॥	१५.	शोक से व्यथित हो कर

श्लोकार्थ—नगर में अटारियों पर छज्जों और फाटकों पर चढ़ी हुईं स्त्रियाँ युद्ध भूमि में कृष्ण और बलराम के गरुड़ और तालध्वज वाले चिह्न से चिह्नित रथों को न देख कर शोक से व्यथित हो कर मूर्च्छित हो गईं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

हरिः परानीकपयोमुचां मुहुः शिलीमुखात्युल्बणवर्षपीडितम् ।
स्वसैन्यमालोक्य सुरासुरार्चितं व्यस्फूर्जयच्छार्ङ्गशरासनोत्तमम् ॥२३॥

पदच्छेद— हरिः परानीक पयोमुचाम् मुहुः शिलीमुख अति उल्बण वर्ष पीडितम् ।
स्व सैन्यम् आलोक्य सुर असुर अर्चितम् व्यस्फूर्जयत् शार्ङ्ग शरासन उत्तमम् ॥

शब्दार्थ —

हरिः	१३. श्रीकृष्ण ने अपने	स्वसैन्यम्	८. अपनी सेना को
परानीक	१. शत्रु सेना रूपी	आलोक्य	९. देख कर
पयोमुचाम्	२. बादलों की	सुर	१०. देवों और
मुहुः	३. बार-बार	असुर	११. असुरों से
शिलीमुख	४. वाणरूपी	अर्चितम्	१२. पूजित
अति उल्बण	५. अत्यन्त भयंकर	व्यस्फूर्जयत्	१६. टङ्कार किया
वर्ष	६. वर्षाओं से	शार्ङ्ग शरासन	१५. शार्ङ्ग धनुष का
पीडितम् ।	७. पीड़ित	उत्तमम् ॥	१४. श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—शत्रु सेना रूपी बादलों की बार-बार वाण रूपी अत्यन्त भयंकर वर्षाओं से पीड़ित अपनी सेना को देख कर देवों और असुरों से पूजित श्रीकृष्ण ने अपने श्रेष्ठ शार्ङ्ग धनुष का टङ्कार किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

गृह्णन् निषङ्गादथ सन्दधच्छरान् विकृष्य मुञ्चन्शितबाणपूगान् ।
निघ्नन् रथान् कुञ्जरवाजिपत्तीन् निरन्तरं यद्वदलातचक्रम् ॥२४॥

पदच्छेद— गृह्णन् निषङ्गात् अथ सन्दधत् शरान् विकृष्य मुञ्चन् शित बाण पूगान् ।
निघ्नन् रथान् कुञ्जर वाजि पत्तीन् निरन्तरम् यत्-वत् अलात-चक्रम् ॥

शब्दार्थ—

गृह्णन्	४. निकाल कर	निघ्नन्	१६. मारने लगे
निषङ्गात् अथ	१. तथा तरकस में से	रथान्	११ शत्रु के रथों
सन्दधत्	३. धनुष पर चढ़ा कर	कुञ्जर	१२. हाथियों
शरान् विकृष्य	२. बाणों को खींच कर	वाजि	१३. घोड़ों और
मुञ्चन्	८. छोड़ने लगे	पत्तीन्	१४. पैदल सेनाओं को
शित	५. तीक्ष्ण	निरन्तरम्	१५. निरन्तर
बाण	६. बाणों के	यत्-वत्	१०. समान (धनुष को घुमाकर)
पूगान् ।	७ समूहों को	अलात-चक्रम् ॥	९. अलात चक्र के

श्लोकार्थ—तरकस में से बाणों को खींच कर धनुष पर चढ़ा कर तथा निकाल कर तीक्ष्ण बाणों के समूहों को छोड़ने लगे । अलात चक्र के समान धनुष को घुमा कर शत्रु के रथों, हाथियों, घोड़ों, और पैदल सेनाओं को निरन्तर मारने लगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

निर्भिन्नकुम्भाः करिणो निपेतुरनेकशोऽश्वाः शरवृक्णकन्धराः ।
रथा हताश्वध्वजसूतनायकाः पदातयश्छिन्नभुजोरुकन्धराः ॥२५॥

पदच्छेद— निर्भिन्न कुम्भाः करिणः निपेतुः अनेकशः अश्वाः शरवृक्ण कन्धराः ।
रथाः हत अश्व ध्वज सूतनायकाः पदातयः छिन्नभुजः उरुकन्धराः ॥

शब्दार्थ—

निर्भिन्न	१. फटे हुये	रथाः	९. रथ के
कुम्भाः	२. मस्तक वाले	हत	१३. नष्ट हो गये
करिणः	३. हाथी तथा	अश्व	१०. घोड़े
निपेतुः	८. गिरने लगे	ध्वज	११. ध्वजायें
अनेकशः	६. अनेकों	सूतनायकाः	१२. सारथी और रथी
अश्वाः	७. घोड़े	पदातयः	१४. पैदल सेना की
शरवृक्ण	४. वाणों से कटी हुई	छिन्नभुज	१५. बाहें
कन्धराः ।	५. गर्दन वाले	उरुकन्धराः॥	१६. जाँघ और गर्दनें कटने लगीं

श्लोकार्थ— फटे हुये मस्तक वाले हाथी तथा वाणों से कटी हुई गर्दन वाले अनेकों घोड़े गिरने लगे । रथ के घोड़े ध्वजायें सारथी, रथी नष्ट हो गये, पैदल सेना की बाँहें जाँघ और गर्दनें कटने मगीं ॥

षड्विंशः श्लोकः

संछिद्यमानद्विपदेभवाजिनामङ्गप्रसूताः शतशोऽसृगापगाः ।
भुजाहयः पूरुषशीर्षकच्छपा हतद्विपद्वीपहयग्रहाकुलाः ॥२६॥

पदच्छेद— संछिद्यमान द्विपद इभ वाजिनाम् अङ्ग प्रसूताः शतशः असृग् आपगाः ।
भुजअहयः पूरुष शीर्ष कच्छपाः हतद्विप द्वीपहय ग्रह आकुलाः ॥

शब्दार्थ—

संछिद्यमान	१. वहाँ काटे जाते हुये	भुजअहयः	९ (उनमें मानों) भुजायें सांप हैं
द्विपद	२. मनुष्यों	पुरुष	१०. मनुष्यों के
इभ	३. हाथियों और	शीर्ष	११. सिर
वाजिनाम्	४. घोड़ों के	कच्छपाः	१२. कछुये हैं
अङ्ग	५. अङ्गों से	हतद्विप	१३. मारे गये हाथी
प्रसूता	८. बह निकली	द्वीप	१४. द्वीप हैं और (वे नदियाँ)
शतशः असृग्	६. सैंकड़ों रक्त की	हय ग्रह	१५. घोड़े रूपी ग्राहों से
आपगाः ।	७. नदियाँ	आकुलाः ॥	१६. प्रपूर्ण हैं

श्लोकार्थ— वहाँ काटे जाते हुये मनुष्यों, हाथियों और घोड़ों के अङ्गों से सैंकड़ों रक्त की नदियाँ वह निकलीं । उनमें मानों भुजायें सांप हैं, मनुष्यों के सिर कछुये हैं । मारे गये हाथी द्वीप हैं, और वे नदियाँ घोड़े रूपी ग्राहों से प्रपूर्ण हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मरोरुमीना नरकेशशैवला धनुस्तरङ्गायुधगुल्मसङ्कुलाः ।
अच्छूरिकावर्तभयानका महामणिप्रवेकाभरणाश्मशर्कराः ॥२७॥

पदच्छेद— करोरुमीना नरकेश शैवला धनुः तरङ्ग आयुध गुल्म सङ्कुलाः ।
अच्छूरिका आवर्त भयानकाः महामणि प्रवेक आभरण अश्म शर्कराः ॥

शब्दार्थ—

करोरुमीना	१. (उनमें) हाथ और जांघें मछलियाँ हैं	अच्छूरिका	९. (वे नदियाँ) ढाल रूपी
नरकेश	२. मनुष्यों के केश	आवर्त	१०. भँवरों से
शैवला	३. सेवार हैं	भयानकाः	११. भयंकर हैं और
धनुः	४. धनुष	महामणि	१२. बहुमूल्य मणियाँ तथा
तरङ्ग	५. तरङ्ग हैं और	प्रवेक	१३. सर्वोत्तम
आयुध	६. अस्त्र-शस्त्र	आभरण	१४. आभूषण
गुल्म	७. लता के रूप में	अश्म	१५. पत्थर के
सङ्कुलाः ।	८. व्याप्त हैं	शर्कराः ॥	१६. रोड़ों के समान कंकड़ों से युक्त हैं

श्लोकार्थ—उनमें हाथ और जांघें मछलियाँ हैं। मनुष्यों के केश सेवार है, धनुष तरङ्ग हैं और अस्त्र-शस्त्र लता के रूप में व्याप्त है। वे नदियाँ ढाल रूपी भँवरों से भयंकर हैं और बहुमूल्य मणियों तथा सर्वोत्तम आभूषण पत्थर के रोड़ों के समान कङ्कड़ों से युक्त है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

प्रवर्तिता भीरुभयावहा मृधे मनस्विनां हर्षकरीः परस्परम् ।
विनिघ्नतारीन् मुसलेन दुर्मदान् सङ्कर्षणेनापरिमेयतेजसा ॥२८॥

पदच्छेद— प्रवर्तिताः भीरु भयावहाः मृधे मनस्विनाम् हर्षकरीः परस्परम् ।
विनिघ्नत अरीन् मुसलेन दुर्मदान् सङ्कर्षणेन अपरिमेय तेजसा ॥

शब्दार्थ—

प्रवर्तिता	९. (नदियाँ) बहा दीं जो	विनिघ्नत	८. मार-मार कर
भीरु	१०. कायरों को	अरीन्	७. शत्रुओं को
भयावहा	११. डराने वाली	मुसलेन	५. मूसल से
मृधे	१. युद्ध में	दुर्मदान्	६. मतवाले
मनस्विनाम्	१२. और वीरों को	सङ्कर्षणेन	४. बलराम जी ने
हर्षकरीः	१४. हर्षित करने वाली थीं	अपरिमेय	२. अपार
परस्परम् ।	१३. आपस में	तेजसा ॥	३. तेजस्वी

श्लोकार्थ—युद्ध में अपार तेजस्वी बलराम जी ने मूसल से मतवाले शत्रुओं को मार-मार कर नदियाँ बहा दीं। जो कायरों को डराने वाली और वीरों को आपस में हर्षित करने वाली थीं।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

बलं तदङ्गार्णवदुर्गभैरवं दुरन्तपारं मगधेन्द्रपालितम् ।
क्षयं प्रणीतं वसुदेवपुत्रयोर्विक्रीडितं तज्जगदीशयोः परम् ॥२९॥

पदच्छेद— बलम् तत्अङ्ग अर्णव दुर्ग भैरवम् दुरन्त पारम् मगधेन्द्र पालितम् ।
क्षयम् प्रणीतम् वसुदेव पुत्रयोः विक्रीडितम् तत् जगदीशयोः परम् ॥

शब्दार्थ—					
बलम्	४.	सेना	क्षयम्	९.	होने पर भी नष्ट
ततअङ्ग	३.	वह अपनी	प्रणीतम्	१०.	कर दी गई
अर्णव	५.	समुद्र के समान	वसुदेव	१२.	वसुदेव के
दुर्ग	६.	दुर्गम	पुत्रयोः	१३.	पुत्रों (श्रीकृष्ण-बलराम) के लिये
भैरवम्	७	भयानक और	विक्रीडितम्	१६.	खिलवाड़ थी
दुरन्त पारम्	८.	बड़ी कठिनाई से जीतने योग्य	तत्	१४.	यह
मगधेन्द्र	१.	मगधराज की	जगदीशयोः	११.	संसार के स्वामी
पालितम् ।	२.	पाली हुई	परम् ॥	१५.	केवल

श्लोकार्थ—मगधराज की पाली हुई वह अपनी सेना समुद्र के समान दुर्गम भयानक और बड़ी कठिनाई से जीतने योग्य होने पर भी नष्ट कर दी गई । संसार के स्वामी वसुदेव के पुत्रों श्रीकृष्ण बलराम के लिये यह केवल खिलवाड़ ही थी ॥

त्रिंशः श्लोकः

स्थित्युद्भवान्तं भुवनत्रयस्य यः समीहतेऽनन्तगुणः स्वलीलया ।
न तस्य चित्रं परपक्षनिग्रहस्तथापि मर्त्यानुविधस्य वर्ण्यते ॥३०॥

पदच्छेद— स्थिति उद्भव अन्तम् भुवनत्रयस्य यः समीहते अनन्त गुणः स्वलीलया ।
न तस्य चित्रम् परपक्ष निग्रहः तथापि मर्त्य अनुविधस्य वर्ण्यते ॥

शब्दार्थ—					
स्थिति उद्भव	६.	स्थित-उत्पत्ति और	न	१३.	नहीं है
अन्तम्	७.	संहार	तस्य	९.	उनके लिये
भुवनत्रस्य	५.	तीनों लोकों की	चित्रम्	१२.	आश्चर्य की बात
यः	२.	जो	परपक्ष	१०.	शत्रु पक्ष का
समीहते	८.	करते हैं	निग्रहः	११.	विनाश करना
अनन्त गुणः	१.	अनन्त गुण वाले	तथापिमर्त्यं	१४.	फिर भी मनुष्य कोसी
स्व	३.	अपनी	अनुविधस्य	१५.	लीला करने वाले का
लीलया ।	४.	लीला से	वर्ण्यते ॥	१६.	वर्णन तो किया ही जाता है

श्लोकार्थ—अनन्त गुण वाले जो अपनी लीला से तीनों लोकों की स्थिति-उत्पत्ति और संहार करते हैं । उनके लिये शत्रु पक्ष का विनाश करना आश्चर्य की बात नहीं है । फिर भी मनुष्य की सी लीला करने वाले का वर्णन तो किया ही जाता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

जग्राह विरथं रामो जरासन्धं महाबलम्।
हतानीकावशिष्टासुं सिंहः सिंहमिवौजसा ॥३१॥

पदच्छेद— जग्राह विरथम् रामः जरासन्धम् महाबलम्।
हत अनीक अवशिष्टासुम् सिंहः सिंहम् इव ओजसा ॥

शब्दार्थ—

जग्राह	८. पकड़ लिया	हत अनीक	३. नष्ट सेना वाले और
विरथम्	२. रथ हीन	अवशिष्टासुम्	४. केवल बचे हुये प्राण वाले
रामः	१. बलराम जी ने	सिंहः	११. सिंह
जरासन्धम्	७. जरासन्ध को	सिंहम्	१२. सिंह को पकड़ लेता है
महा	५. महान्	इव	९. जैसे
बलम्।	६. बली	ओजसा ॥	१०. बलवान्

श्लोकार्थ—बलराम जी ने रथ हीन नष्ट सेना वाले और केवल बचे हुये प्राण वाले महान् बली जरासन्ध को पकड़ लिया। जैसे बलवान् सिंह, सिंह को पकड़ लेता है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

बध्यमानं हतारातिं पाशैर्वारुणमानुषैः।
वारयामास गोविन्दस्तेन कार्यचिकीर्षया ॥३२॥

पदच्छेद— बध्यमानम् हत अरातिम् पाशैः वारुण मानुषैः।
वारयामास गोविन्दः तेन कार्य चिकीर्षया ॥

शब्दार्थ—

बध्यमानम्	५. बाँधे जाते हुये	वारयामास	११. रोक दिया
हत	७. नाशक (जरासन्ध) को	गोविन्दः	८. श्रीकृष्ण ने
अरातिम्	६. शत्रु	तेन	१. उन (बलराम जी के) द्वारा
पाशैः	४. फाँसी-फन्दे से	कार्य	९. कार्य
वारुण	२. वरुण और	चिकीर्षया ॥	१०. करने की इच्छा से
मानुषैः।	३. मनुष्य के		

श्लोकार्थ—उन बलराम जी के द्वारा वरुण और मनुष्य के फाँसी-फन्दे से बाँधे जाते हुये शत्रु-नाशक जरासन्ध को श्रीकृष्ण ने कार्य करने की इच्छा से रोक दिया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

स मुक्तो लोकनाथाभ्यां व्रीडितो वीरसंमतः ।
तपसे कृतसङ्कल्पो वारितः पथि राजभिः ॥३३॥

पदच्छेद— सः मुक्तः लोकनाथाभ्याम् व्रीडितः वीर सम्मतः ।
तपसे कृत सङ्कल्पः वारितः पथि राजभिः ॥

शब्दार्थ—

सः	५.	उस (जरासन्ध) ने	तपसे	७.	तपस्या के लिये
मुक्तः	३.	छोड़े गये	कृत	९.	किया (किन्तु)
लोकनाथा	१.	लोकों के स्वामी	सङ्कल्पः	८.	निश्चय
भ्याम्	२.	श्रीकृष्ण बलराम के द्वारा	वारितः	१२.	रोक दिया
व्रीडितः	६.	लज्जित होकर	पथि	१०.	मार्ग में
वीर सम्मतः ।	४.	वीर-सम्मानित	राजभिः ॥	११.	राजाओं ने उसे

श्लोकार्थ—लोकों के स्वामी श्रीकृष्ण और बलराम के द्वारा छोड़े गये वीर तथा सम्मानित उस जरासन्धने लज्जित हो कर तपस्या के लिये निश्चय किया। किन्तु मार्ग में राजाओं ने उसे रोक दिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

वाक्यैः पवित्रार्थपदैर्नयनैः प्राकृतैरपि ।
स्वकर्मबन्धप्राप्तोऽयं यदुभिस्ते पराभवः ॥३४॥

पदच्छेद— वाक्यैः पवित्र अर्थ पदैः नयनैः प्राकृतैः अपि ।
स्वकर्म बन्ध प्राप्तः अयम् यदुभिः ते पराभवः ॥

शब्दार्थ—

वाक्यैः	४.	वाक्यों से तथा	स्वकर्म	८.	अपने कर्मों के
पवित्र	१.	पवित्र	बन्ध	९.	बन्धन से
अर्थ	२.	अर्थ और	प्राप्तः	१४.	प्राप्त हुआ है
पदैः	३.	शब्द वाले	अयम्	१२.	यह
नयनैः	६.	दृष्टान्तों से	यदुभिः	११.	यदुवंशियों से
प्राकृतैः	५.	लौकिक	ते	१०.	तुम्हें
अपि ।	७.	भी (समझाया) कि	पराभवः ॥	१३.	पराजय

श्लोकार्थ—पवित्र अर्थ और शब्द वाले वाक्यों से तथा लौकिक दृष्टान्तों से भी समझाया कि अपने कर्मों के बन्धन से तुम्हें यदुवंशियों से यह पराजय प्राप्त हुआ है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

हतेषु सर्वानीकेषु नृपो बार्हद्रथस्तदा ।
उपेक्षितो भगवता मगधान् दुर्मना ययौ ।।३५।।

पदच्छेद— हतेषु सर्व अनीकेषु नृपः बार्हद्रथः तदा ।
उपेक्षितः भगवतः मगधान् दुर्मनाः ययौ ।।

शब्दार्थ—

हतेषु	३.	मारे जाने पर तथा (स्वयं)	उपेक्षितः	५.	उपेक्षा पूर्वक छोड़ने पर
सर्वअनीकेषु	२.	समस्त सेनाओं के	भगवतः	४.	भगवान् के द्वारा
नृपः	६.	राजा	मगधान्	९.	मगध को
बार्हद्रथः	७.	जरासन्ध	दुर्मनाः	८.	उदास होकर
तदा ।	१.	तब	ययौ ।।	१०.	चला गया

श्लोकार्थ—तब समस्त सेनाओं के मारे जाने पर तथा स्वयं भगवान् के द्वारा उपेक्षा पूर्वक छोड़ने पर राजा जरासन्ध उदास होकर मगध को चला गया ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

मुकुन्दोऽप्यक्षतबलो निस्तीर्णारिबलार्णवः ।
विकीर्यमाणः कुसुमैस्त्रिदशैरनुमोदितः ।।३६।।

पदच्छेद— मुकुन्दः अपि अक्षतबलः निस्तीर्ण अरिबल अर्णवः ।
विकीर्यमाणः कुसुमैः त्रिदशैः अनुमोदितः ।।

शब्दार्थ—

मुकुन्दः	१.	भगवान् श्रीकृष्ण	अर्णवः ।	५.	समुद्र को
अपि	२.	भी	विकीर्यमाणः	९.	वर्षा करते हुये
अक्षतबलः	३.	क्षति से रहित सेना वाले	कुसुमैः	८.	फूलों की
निस्तीर्ण	६.	पार कर चुकने वाले	त्रिदशैः	७.	देवताओं द्वारा
अरिबल	४.	शत्रु सेना रूपी	अनुमोदितः ।।	१०.	प्रशंसित होने लगे

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण भी क्षति से रहित सेना वाले, शत्रु सेना रूपी समुद्र को पारकर चुकने वाले, देवताओं द्वारा फूलों की वर्षा करते हुये प्रशंसित होने लगे ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

माथुरैरुपसङ्क्रम्य　　विज्वरैर्मुदितात्मभिः ।
उपगीयमानविजयः सूतमागधवन्दिभिः ॥३७॥

पदच्छेद—　　माथुरैः उपसङ्क्रम्य विज्वरैः मुदित आत्मभिः ।
　　उपगीयमान विजयः सूत मागध वन्दिभिः ॥

शब्दार्थ—

माथुरैः	७.	मथुरा वासियों से	उपगीयमान	१०.	गीत गाने लगे
उपसङ्क्रम्य	८.	मिलने वाले (श्रीकृष्ण) की	विजयः	९.	विजय के
विज्वरैः	४.	सन्ताप रहित और	सूत	१.	सूत
मुदित	५.	प्रसन्न	मागध	२.	मागध और
आत्मभिः ।	६.	चित्त वाले	वन्दिभिः ॥	३.	वन्दीजन

श्लोकार्थ—सूत, मागध और बन्दीजन सन्ताप रहित और प्रसन्न चित्त वाले मथुरा वासियों से मिलने वाले श्रीकृष्ण की विजय के गीत गाने लगे ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

शङ्खदुन्दुभयो　　नेदुर्भेरीतूर्याण्यनेकशः ।
वीणावेणुमृदङ्गानि　पुरं　प्रविशति　प्रभौ ॥३८॥

पदच्छेद—　　शङ्ख दुन्दुभयः नेदुः भेरी तूर्याणि अनेकशः ।
　　वीणा वेणु मृदङ्गानि पुरम् प्रविशति प्रभौ ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	४.	शंख	वीणा	८.	वीणा
दुन्दुभयः	५.	नगारे	वेणु	९.	बाँसुरी
नेदुः	१२.	बजने लगे	मृदङ्गानि	१०.	मृदङ्ग
भेरी	६.	भेरी (ढोल)	पुरम्	१.	नगर में
तूर्याणि	७.	तुरही	प्रविशति	३.	प्रवेश करने पर
अनेकशः ।	११.	अनेक प्रकार से	प्रभौ ॥	२.	भगवान् के

श्लोकार्थ—नगर में भगवान् के प्रवेश करने पर शंख, नगारे, भेरी, (ढोल), तुरही, वीणा, बाँसुरी, मृदंग अनेक प्रकार से बजने लगे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

सिक्तमार्गां हृष्टजनां पताकाभिरलङ्कृताम् ।
निर्घुष्टां ब्रह्मघोषेण कौतुकाबद्धतोरणाम् ॥३९॥

पदच्छेद— सिक्त मार्गाम् हृष्टजनाम् पताकाभिः अलङ्कृताम् ।
निर्घुष्टाम् ब्रह्मघोषेण कौतुक आबद्ध तोरणाम् ॥

शब्दार्थ—

सिक्त	२.	छिड़काव किया गया था	निर्घुष्टाम्	७.	गूंज रही थी
मार्गाम्	१.	मथुरा की सड़कों पर	ब्रह्मघोषेण	६.	वेद-ध्वनि
हृष्टजनाम्	५.	लोग हर्ष मना रहे थे	कौतुक	८.	उत्सव सूचक
पताकाभिः	३.	पताकायें	आबद्ध	१०.	बाँधे गये थे
अलङ्कृताम् ।	४.	सजा दी गई थीं	तोरणाम् ॥	९.	वन्दन वार

श्लोकार्थ—मथुरा की सड़कों पर छिड़काव किया गया था । पताकायें सजा दी गईं थीं । लोग हर्ष मना रहे थे । वेद ध्वनि गूंज रही थी । उत्सव सूचक बन्दन वार बाँधे गये थे ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

निचीयमानो नारीभिर्माल्यदध्यक्षताङ्कुरैः ।
निरीक्ष्यमाणः सस्नेहं प्रीत्युत्कलितलोचनैः ॥४०॥

पदच्छेद— निचीयमानः नारीभिः माल्य दधि अक्षत अङ्कुरैः ।
निरीक्ष्यमाणः सस्नेहम् प्रीति उत्कलित लोचनैः ॥

शब्दार्थ—

निचीयमानः	१०.	बिखेर रही थीं	निरीक्ष्यमाणः	६.	निहार रही थीं तथा उन पर
नारीभिः	१.	उस समय नारियाँ	सस्नेहम्	२.	स्नेह पूर्वक
माल्य	७.	फूलों के हार	प्रीति	३.	प्रेम और
दधि-अक्षत	८.	दधि-अक्षत	उत्कलित	४.	उत्कण्ठा से भरे हुये
अङ्कुरैः ।	९.	(जौ आदि) के अङ्कुर	लोचनैः ॥	५.	नेत्रों से (भगवान् को)

श्लोकार्थ—उस समय नारियाँ स्नेह पूर्वक प्रेम और उत्कण्ठा से भरे हुये नेत्रों से भगवान् को निहार रही थीं । तथा उन पर फूलों के हार, दधि, अक्षत, जौ आदि के अङ्कुर बिखेर रही थीं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

आयोधनगतं वित्तमनन्तं वीरभूषणम् ।

यदुराजाय तत् सर्वमाहृतं प्रादिशत्प्रभुः ॥४१॥

पदच्छेद— आयोधन गतम् वित्तम् अनन्तम् वीर भूषणम् ।
यदुराजाय तत् सर्वम् आहृतम् प्रादिशत् प्रभुः ॥

शब्दार्थ —

आयोधन	१.	भगवान् (श्रीकृष्ण) युद्ध में	यदुराजाय	१०.	राजा उग्रसेन के पास
गतम्	२.	स्थित	तत्	८.	वे
वित्तम्	४.	धन और	सर्वम्	९.	सब
अनन्तम्	३.	अपार	आहृतम्	७.	ले आये थे
वीर	५.	वीरों के	प्रादिशत्	१२.	भिजवा दिये
भूषणम् ।	६.	आभूषण	प्रभुः	११.	प्रभु ने

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण युद्ध में स्थित अपार धन और वीरों के आभूषण ले आये थे। वे सब राजा उग्रसेन के पास प्रभु ने भिजवा दिये ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

एवं सप्तदशकृत्वस्तावत्यक्षौहिणीबलः ।

युयुधे मागधो राजा यदुभिः कृष्णपालितैः ॥४२॥

पदच्छेद— एवम् सप्तदश कृत्वः तावती अक्षौहिणी बलः ।
युयुधे मागधः राजा यदुभिः कृष्ण पालितैः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	युयुधे	१२.	युद्ध किया
सप्तदश	२.	सत्रह	मागध	८.	जरासन्ध ने
कृत्वः	३.	बार	राजा	७.	राजा
तावती	४.	तेईस-तेईस	यदुभिः	११.	यदुवंशियों से
अक्षौहिणी	५.	अक्षौहिणी	कृष्ण	९.	श्रीकृष्ण के द्वारा
बलः ।	६.	सेना लाकर	पालितैः ॥	१०.	सुरक्षित

श्लोकार्थ— इस प्रकार सत्रह बार तेईस-तेईस अक्षौहिणी सेना लाकर राजा जरासन्ध ने श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित यदुवंशियों से युद्ध किया ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

अक्षिण्वंस्तद्बलं सर्वं वृष्णयः कृष्णतेजसा ।
हतेषु स्वेष्वनीकेषु त्यक्तोऽयादरिभिर्नृपः ।४३॥

पदच्छेद— अक्षिण्वन् तत् बलम् सर्वम् वृष्णयः कृष्ण तेजसा ।
हतेषु स्वेषु अनीकेषु त्यक्तः अयात् अरिभिः नृपः ॥

शब्दार्थ—

अक्षिण्वन्	७.	नष्ट कर देते थे	हतेषु	१०.	नष्ट हो जाने पर
तत्	१.	उस	स्वेषु	८.	अपनी
बलम्	३.	सेना को	अनीकेषु	९.	सेनाओं के
सर्वम्	२.	सारी	त्यक्तः	१२.	त्यागा हुआ
वृष्णयः	४.	यादव लोग	अयात्	१४.	चला जाता था
कृष्ण	५.	कृष्ण की	अरिभिः	११.	शत्रुओं द्वारा
तेजसा ।	६.	शक्ति से	नृपः ॥	१३.	मगधराज

श्लोकार्थ—उस सारी सेना को यादव लोग कृष्ण की शक्ति से नष्ट कर देते थे। अपनी सेनाओं के नष्ट हो जाने पर शत्रुओं द्वारा त्यागा हुआ मगधराज चला जाता था ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

अष्टादशमसंग्रामे आगामिनि तदन्तरा ।
नारदप्रेषितो वीरो यवनः प्रत्यदृश्यत ॥४४॥

पदच्छेद— अष्टादशम संग्रामे आगामिनि तत् अन्तरा ।
नारद प्रेषितः वीरः यवनः प्रति अदृश्यत ॥

शब्दार्थ—

अष्टादशम	१.	अठारहवाँ	नारद	६.	नारद का
संग्रामे	२.	संग्राम	प्रेषितः	७.	भेजा हुआ
आगामिनि	३.	छिड़ने ही वाला था	वीरः	८.	वीर
तत्	४.	कि	यवनः	९.	कालयवन
अन्तरा ।	५.	इतने में	प्रतिअदृश्यत	१०.	दिखायी पड़ा

श्लोकार्थ—अठारहवाँ संग्राम छिड़ने ही वाला था कि इतने में नारद का भेजा हुआ वीर कालयवन दिखाई दिया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

रुरोध मथुरामेत्य तिसृभिर्म्लेच्छकोटिभिः ।
नृलोके चाप्रतिद्वन्द्वो वृष्णीन्श्रुत्वाऽऽत्मसम्मितान् ॥४५॥

पदच्छेद— रुरोध मथुराम् एत्य तिसृभिः म्लेच्छ कोटिभिः ।
नृलोके च अप्रतिद्वन्द्वः वृष्णीन् श्रुत्वा आत्म सम्मितान् ॥

शब्दार्थ—

रुरोध	१२.	घेर लिया	नृलोके च	१.	और मनुष्य लोक में
मथुराम्	११.	मथुरापुरी को	अप्रतिद्वन्द्वः	२.	सामना करने वालों से रहित
एत्य	१०.	आकर	वृष्णीन्	३.	यदुवंशियों को
तिसृभिः	७.	तीन	श्रुत्वा	६.	सुनकर
म्लेच्छ	९.	म्लेच्छों की सेना के साथ	आत्म	४.	अपने
कोटिभिः ।	८.	करोड़	सम्मितान् ॥	५.	समान (बलशाली)

श्लोकार्थ—और मनुष्य लोक में सामना करने वालों से रहित यदुवंशियों को अपने समान बलशाली सुनकर तीन करोड़ म्लेच्छों की सेना के साथ आकर मथुरापुरी को घेर लिया ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

तं दृष्ट्वाचिन्तयत् कृष्णः सङ्कर्षणसहायवान् ।
अहो यदूनां वृजिनं प्राप्तं ह्युभयतो महत् ॥४६॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा अचिन्तयत् कृष्णः सङ्कर्षण सहायवान् ।
अहो यदूनाम् वृजिनम् प्राप्तम् हि उभयतः महत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उसे	अहो	७.	ओह !
दृष्ट्वा	२.	देखकर	यदूनाम्	८.	यदुवंशियों पर
अचिन्तयत्	६.	विचार किया	वृजिनम्	११.	सङ्कट
कृष्णः	३.	कृष्ण ने	प्राप्तम्	१२.	आ गया है
सङ्कर्षण	४.	बलराम जी के	हि उभयतः	९.	दोनों ओर से (जरासन्ध कालयवन)
सहायवान् ।	५.	साथ	महत् ॥	१०.	महान्

श्लोकार्थ—उसे देखकर कृष्ण ने बलराम जी के साथ विचार किया कि ओह ! यदुवंशियों पर जरासन्ध और कालयवन दोनों ओर से महान् सङ्कट आ गया है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

यवनोऽयं निरुन्धेऽस्मानद्य तावन्महाबलः ।
मागधोऽप्यद्य वा श्वो वा परश्वो वाऽऽगमिष्यति ॥४७॥

पदच्छेद— यवनः अयम् निरुन्धे अस्मान् अद्य तावत् महाबलः ।
मागधः अपि अद्य वा श्वः पर श्वः वा आगमिष्यति ॥

शब्दार्थ—

यवनः	४.	यवन ने	मागधः	१२.	जरासन्ध
अयम्	२.	इस	अपि	१३.	भी
निरुन्धे	७.	घेर लिया है (और)	अद्य	८.	आज
अस्मान्	५.	हमें	वा श्वः	९.	या कल
अद्य	१.	आज	परश्वः	११.	परसों तक
तावत्	६.	तब-तक	वा	१०.	अथवा
महाबलः ।	३.	परम बलशाली	आगमिष्यति	१४.	आ ही जायेगा

श्लोकार्थ—आज इस परम बलशाली यवन ने हमें तब-तक घेर लिया है। और आज या कल अथवा परसों तक जरासन्ध भी आ ही जायेगा ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

आवयोर्युध्यतोरस्य यद्यागन्ता जरासुतः ।
बन्धून् वधिष्यत्यथवा नेष्यते स्वपुरं बली ॥४८॥

पदच्छेद— आवयोः युध्यतोः अस्य यदि आगन्ता जरासुतः ।
बन्धून् बधिष्यति अथवा नेष्यते स्वपुरम् बली ॥

शब्दार्थ—

आवयोः	४.	हम दोनों भाइयों के	बन्धून्	८.	हमारे बन्धुओं को
युध्यतोः	३.	युद्ध करते हुये	वधिष्यति	९.	मार डालेगा
अस्य	२.	इसके साथ	अथवा	१०.	अथवा
यदि	१.	यदि	नेष्यते	१२.	ले जायेगा
आगन्या	७.	आ गया (तो वह)	स्वपुरम्	११.	अपने नगर में
जरासुतः ।	६.	जरासन्ध	बली ॥	५.	बलवान्

श्लोकार्थ—यदि इसके साथ युद्ध करते हुये हम दोनों भाइयों के, बलवान् जरासन्ध आ गया तो वह हमारे बन्धुओं को मार डालेगा। अथवा अपने नगर में ले जायेगा ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

तस्मादद्य विधास्यामो दुर्गं द्विपददुर्गमम् ।
तत्र ज्ञातीन् समाधाय यवनं घातयामहे ॥४९॥

पदच्छेद— तस्मात् अद्य विधास्यामः दुर्गम् द्विपद दुर्गमम् ।
तत्र ज्ञातीन् समाधाय यवनम् घातयामहे ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	तत्र	७.	वहाँ पर
अद्य	२.	आज ऐसा	ज्ञातीन्	८.	अपने भाई-बन्धुओं को
विधास्यामः	४.	बनायेंगे	समाधाय	९.	पहुँचा कर
दुर्गम्	३.	किला	यवनम्	१०.	यवन का
द्विपद	५.	मनुष्यों के लिये जहाँ पहुँचना	घातया	११.	वध
दुर्गमम् ।	६.	अत्यन्त कठिन होगा	महे ॥	१२.	करेंगे

श्लोकार्थ—इसलिये आज ऐसा किला बनायेंगे, मनुष्यों के लिये जहाँ पहुँचना अत्यन्त कठिन होगा । वहाँ पर अपने भाई-बन्धुओं को पहुँचाकर यवन का वध करेंगे ॥

पञ्चाशः श्लोकः

इति सम्मन्त्र्य भगवान् दुर्गं द्वादशयोजनम् ।
अन्तःसमुद्रे नगरं कृत्स्नाद्भुतमचीकरत् ॥५०॥

पदच्छेद— इति सम्मन्त्र्य भगवान् दुर्गम् द्वादश योजनम् ।
अन्तः समुद्रे नगरम् कृत्स्न अद्भुतम् अचीकरत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	अन्तः	५.	भीतर
सम्मन्त्र्य	२.	मन्त्रणा करके	समुद्रे	४.	समुद्र के
भगवान्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	नगरम्	११.	नगर
दुर्गम्	१०.	एक दुर्गम	कृत्स्न	६.	सम्पूर्ण रूप से
द्वादश	८.	बारह	अद्भुतम्	७.	अद्भुत
योजनम् ।	९.	योजन का	अचीकरत् ॥	१२.	बनवाया

श्लोकार्थ—इस प्रकार मन्त्रणा करके भगवान् श्रीकृष्ण ने समुद्र के भीतर सम्पूर्ण रूप से अद्भुत बारह योजन का एक दुर्गम नगर बनवाया ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

दृश्यते यत्र हि त्वाष्ट्रं विज्ञानं शिल्पनैपुणम् ।
रथ्याचत्वरवीथीभिर्यथावास्तु विनिर्मितम् ॥५१॥

दपच्छेद— दृश्यते यत्र ही त्वाष्ट्रम् विज्ञानम् शिल्प नैपुणम् ।
रथ्याचत्वर वीथीभिः यथा वास्तु विनिर्मितम् ॥

शब्दार्थ—

दृश्यते	१२.	प्रकट होती थी	रथ्या	४.	सड़कों
यत्र	१.	जहाँ पर	चत्वर	५.	चौराहों और
त्वाष्ट्रम्	८.	विश्वकर्मा का	वीथीभिः	६.	गलियों में
विज्ञानम्	१०.	विज्ञान और	यथा	३.	अनुसार
शिल्प नैपुणम्	११.	शिल्प कला की निपुणता	वास्तु	२.	वास्तु कला के
			विनिर्मितम् ॥	७.	बनाये गये

श्लोकार्थ—जहाँ पर वास्तु कला के अनुसार सड़कों चौराहों और गलियों में बनाये गये विश्वकर्मा का विज्ञान और शिल्प कला की निपुणता दिखाई देती थी ॥

द्विपञ्चाशः श्लोकः

सुरद्रुमलतोद्यानविचित्रोपवनान्वितम् ।
हेमश्रृङ्गैर्दिविस्पृग्भिः स्फाटिकाट्टालगोपुरैः ॥५२॥

पदच्छेद— सुरद्रुम लता उद्यान विचित्र उपवन अन्वितम् ।
हेम श्रृङ्गैः दिवि स्पृग्भिः स्फाटिक अट्टाल गोपुरैः ॥

शब्दार्थ—

सुरद्रुम	१.	(वह नगर) देव वृक्षों एवम्	हेम	८.	सोने के
लता	२.	लता वाले	श्रृङ्गैः	९.	शिखरों
उद्यान	३.	बगीचों और	दिविस्पृग्भिः	७.	आकाश चुम्बी
विचित्र	४.	विचित्र	स्फाटिक	१०.	स्फटिक मणि निर्मित
उपवन	५.	उपवनों से	अट्टाल	११.	अटारियों और
अन्वितम् ।	६.	युक्त तथा	गोपुरैः ॥	१२.	ऊँचे-ऊँचे दरवाजे से सुन्दर था

श्लोकार्थ— वह नगर देव वृक्षों एवम् लता वाले बगीचों और विचित्र उपवनों से युक्त तथा आकाश चुम्बी सोने के शिखरों, स्फटिक मणि निर्मित अटारियों और ऊँचे-ऊँचे दरवाजों से सुन्दर था ॥

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

राजतारकुटैः कोष्ठैर्हेमकुम्भैरलङ्कृतैः ।
रत्नकूटैर्गृहैर्हैमैर्महामरकतस्थलैः ॥५३॥

पदच्छेद— राजत आरकुटैः कोष्ठैः हेम कुम्भैः अलङ्कृतैः ।
रत्न कूटैः गृहैः हैमैः महामरकत स्थलैः ॥

शब्दार्थ—

राजत	१. वह नगर चाँदी के और	रत्न	७. रत्नों के
आरकूटैः	२. पीतल के बने	कूटैः	८. शिखर वाले और
कोष्ठैः	३. कोठों वाले	गृहैः	१२. भवनों से सुशोभित था
हेम	४. सोने के	हैमैः	११. सोने के बने
कुम्भैः	५. कलशों से	महामरकत	९. पन्ने की बनी
अलङ्कृतैः ।	६. विभूषित था	स्थलैः ॥	१०. गचों से तथा

श्लोकार्थ—वह नगर चाँदी के और पीतल के बने कोठों वाले सोने के कलशों से विभूषित था । रत्नों के शिखर वाले और पन्ने की बनी गचों से तथा सोने के बने भवनों से सुशोभित था ॥

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

वास्तोष्पतीनां च गृहैर्वलभीभिश्च निर्मितम् ।
चातुर्वर्ण्यजनाकीर्णं यदुदेवगृहोल्लसत् ॥५४॥

पदच्छेद— वास्तोष्पतीनाम् च गृहैः बलभीभिः च निर्मितम् ।
चातुर्वर्ण्यं जानकीर्णम् यदुदेव गृह उल्लसत् ॥

शब्दार्थ—

वास्तो	२. नगर में वास्तु	चातुर्वर्ण्यं	७. वह चारों वर्णों के
ष्पतीनाम्	३. देवता के	जनाकीर्णम्	८. लोगों से व्याप्त तथा
च	१. इसके अतिरिक्त	यदुदेव	९. यदुवंशियों में श्रेष्ठ लोगों के
गृहैः	४. मन्दिर	गृह	१०. घरों से
बलभीभिः च	५. और छज्जे	उल्लसत् ॥	११. सुशोभित तथा
निर्मितम् ।	६. बनाये गये थे		

श्लोकार्थ—इसके अतिरिक्त नगर में वास्तु देवता के मन्दिर और छज्जे बनाये गये थे । वह चारों वर्णों के लोगों से व्याप्त तथा यदुवंशियों में श्रेष्ठ लोगों के घरों से सुशोभित था ॥

पञ्चपञ्चाशः श्लोकः

सुधर्मां पारिजातं च महेन्द्रः प्राहिणोद्धरेः ।
यत्र चावस्थितो मर्त्यो मर्त्यधर्मैर्न युज्यते ॥५५॥

पदच्छेद— सुधर्माम् पारिजातम् च महेन्द्रः प्राहिणोत् हरेः ।
यत्र च अवस्थितः मर्त्यः मर्त्यधर्मैः न युज्यते ॥

शब्दार्थ—

सुधर्माम्	३.	सुधर्मा सभा	यत्र च	७.	जिस (सभा) में
पारिजातम्	५.	पारिजात वृक्ष	अवस्थितः	८.	बैठे हुये
च	४.	और	मर्त्यः	९.	मनुष्य को
महेन्द्रः	१.	इन्द्र ने	मर्त्यधर्मैः	१०.	मर्त्यलोक के धर्म
प्राहिणोत्	६.	भेज दिये	युज्यते ॥	११.	नहीं छू पाते थे
हरेः ।	२.	श्रीकृष्ण के लिये			

श्लोकार्थ—इन्द्र ने श्रीकृष्ण के लिये सुधर्मा सभा और पारिजात वृक्ष भेज दिये । जिस सभा में बैठे हुये मनुष्य को मर्त्य लोक के धर्म नहीं छू पाते हैं ॥

षट्पञ्चाशः श्लोकः

श्यामैककर्णान् वरुणो हयाञ्छुक्लान् मनोजवान् ।
अष्टौ निधिपतिः कोशान् लोकपालो निजोदयान् ॥५६॥

पदच्छेद— श्याम एककर्णान् वरुणः हयान् शुक्लान् मनोजवान् ।
अष्टौ निधिपतिः कोशान् लोकपालः निज उदयान् ॥

शब्दार्थ—

श्याम	२.	श्याम वर्ण के	अष्टौ	८.	आठों
एककर्णान्	३.	एक-एक कान वाले	निधिपतिः	७.	कुवेर ने
वरुणः	१.	वरुण ने	कोशान्	९.	निधियाँ तथा
हयान्	६.	घोड़े (भेज दिये)	लोकपालः	१०.	लोकपालों ने
शुक्लान्	५.	श्वेत	निज	११.	अपनी-अपनी
मनोजवान् ।	४.	मन के समान वेग वाले	उदयान् ॥	१२.	विभूतियाँ (भेज दीं)

श्लोकार्थ—वरुण ने श्याम वर्ण के एक-एक कान वाले, मन के समान वेग वाले, श्वेत घोड़े भेज दिये । कुवेर ने आठों निधियाँ तथा लोक पालों ने अपनी-अपनी विभूतियाँ भेज दीं ॥

सप्तपञ्चाशः श्लोकः

यद् यद् भगवता दत्तमाधिपत्यं स्वसिद्धये ।
सर्वं प्रत्यर्पयामासुर्हरौ भूमिगते नृप ॥५७॥

पदच्छेद— यद्-यद् भगवता दत्तम् आधिपत्यम् स्व सिद्धये ।
सर्वम् प्रत्यपर्यामासुः हरौ भूमि गते नृप ॥

शब्दार्थ—यद्-यद्	५. जो-जो	सर्वम्	८. वे सब (उन्होंने)
भगवता	४. भगवान् ने	प्रत्यपर्याम्	११. उन्हें सौंप
दत्तम्	७. दिये थे	आसुः	१२. दिये
आधिपत्यम्	६. स्वामित्व (अधिकार)	हरौ	९. भगवान् श्रीकृष्ण के
स्व	२. अपनी	भूमिगते	१०. पृथ्वी पर अवतीर्ण होने पर
सिद्धये ।	३. सिद्धि (लोक पालों) को	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अपनी सिद्धि के लिये लोक पालों को भगवान् ने जो-जो स्वामित्व (अधिकार) दिये थे, वे सब उन्होंने भगवान् श्रीकृष्ण के पृथ्वी पर अवतीर्ण होने पर उन्हें सौंप दिये ॥

अष्टपञ्चाशः श्लोकः

तत्र योगप्रभावेण नीत्वा सर्वजनं हरिः ।
प्रजापालेन रामेण कृष्णः समनुमन्त्रितः ।
निर्जगाम पुरद्वारात् पद्ममाली निरायुधः ॥५८॥

पदच्छेद— तत्र योग प्रभावेण नीत्वा सर्वजनम् हरिः ।
प्रजापालेन रामेण कृष्णः समनुमन्त्रितः ।
निर्जगाम पुरद्वारात् पद्म माली निरायुधः ॥

शब्दार्थ—तत्र	८. वहाँ (द्वारका में)	कृष्णः	५. श्रीकृष्ण ने
योगप्रभावेण	७. अपने योग के प्रभाव से	समनुमन्त्रितः ।	३. मन्त्रणा करके
नीत्वा	९. पहुँचा दिया (और स्वयं)	निर्जगाम	१४. निकल भागे
सर्वजनम्	६. सभी स्वजनों को	पुरद्वारात्	१३. नगर के दरवाजे से
हरिः ।	४. भगवान्	पद्म	१०. कमलों की
प्रजापालेन	१. प्रजाओं के पालन	माली	११ माला धारण करके
रामेण	२. बलराम जी से	निरायुधः ॥	१२. बिना अस्त्र-शस्त्र लिये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! प्रजाओं के पालक बलराम जी से मन्त्रणा करके भगवान् श्रीकृष्ण ने सभी स्वजनों को अपने योग के प्रभाव से वहाँ द्वारका में पहुँचा दिया । और स्वयं कमलों की माला धारण करके बिना अस्त्र-शस्त्र लिये नगर के दरवाजे से निकल भागे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे दुर्गनिवेशनमं नाम पञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५०॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकपञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तं विलोक्य विनिष्क्रान्तमुज्जिहानमिवोडुपम् ।
दर्शनीयतमं श्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥१॥

पदच्छेद — तम् विलोक्य विनिष्क्रान्तम् उज्जिहानम् इव उडुपम् ।
दर्शनीय तमम् श्यामम् पीत कौशेय वाससम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	७.	उन श्रीकृष्ण को	दर्शनीय	२.	दर्शनीय
विलोक्य	१२.	देखा	तमम्	१.	अत्यन्त
विनिष्क्रान्तम्	११.	निकलते हुये	श्यामम्	३.	श्याम वर्ण
उज्जिहानम्	८.	आते हुये	पीत	४.	पीले
इव	१०.	समान (मुख्य द्वार से)	कौशेय	५.	रेशमी
उडुपम् ।	९.	चन्द्रमा के	वाससम् ॥	६.	वस्त्र धारी

श्लोकार्थ—अत्यन्त दर्शनीय श्याम वर्ण, पीले रेशमी वस्त्र धारी उन श्रीकृष्ण को आते हुये तथा चन्द्रमा के समान मुख्य द्वार से निकलते हुये देखा ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीवत्सवक्षसं भ्राजत्कौस्तुभामुक्तकन्धरम् ।
पृथुदीर्घचतुर्बाहुं नवकञ्जारुणेक्षणम् ॥२॥

पदच्छेद श्रीवत्स वक्षसम् भ्राजत् कौस्तुभ आमुक्त कन्धरम् ।
पृथु दीर्घ चतुर्बाहुम् नवकञ्ज अरुण ईक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

श्रीवत्स	२.	श्रीवत्स चिह्न से युक्त था	पृथु	९.	मोटी थीं और
वक्षसम्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण का वक्षः-स्थल .	दीर्घ	८.	लम्बी-लम्बी और
भ्राजत्	६.	जगमगा रही थी उनकी	चतुर्बाहुम्	७.	चार भुजायें थीं जो
कौस्तुभ	४.	कौस्तुभ	नवकञ्ज	१०.	नये खिले कमल के समान
आमुक्त	५.	मणि	अरुण	११.	लाल-लाल
कन्धरम् ।	३.	गले में	ईक्षणम् ॥	११.	नेत्र थे

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण का वक्षः स्थल श्रीवत्स चिह्न से युक्त था । गले में कौस्तुभ मणि जगमगा रही थी । उनकी चार भुजायें थीं जो लम्बी-लम्बी और मोटी थीं । और नये खिले कमल के समान लाल-लाल नेत्र थे ॥

तृतीयः श्लोकः

नित्यप्रमुदितं श्रीमत्सुकपोलं शुचिस्मितम् ।
मुखारविन्दं बिभ्राणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ॥३॥

पदच्छेद-- नित्य प्रमुदितम् श्रीमत् सुकपोलम् शुचि स्मितम् ।
मुख अरविन्दम् बिभ्राणं स्फुरन् मकर कुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

नित्य	३.	सदा	मुख	१.	उनका मुख
प्रमुदितम्	४.	आनन्द युक्त	अरविन्दम्	२.	कमल
श्रीमत्	५.	शोभायमान था	बिभ्राणम्	१२.	धारण किये थे
सुकपोलम्	६.	सुन्दर कपोलों पर	स्फुरन्	९.	चमकते हुये
शुचि	७.	पवित्र	मकर	१०.	मकराकृत
स्मितम् ।	८.	हास्य और	कुण्डलम् ॥	११.	कुण्डलों को

श्लोकार्थ--उनका मुख कमल सदा आनन्द युक्त, शोभायमान था सुन्दर कपोलों पर पवित्र हास्य और चमकते हुये मकराकृत कुण्डलों को धारण किये थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

वासुदेवो ह्ययमिति पुमाञ्छ्रीवत्सलाञ्छनः ।
चतुर्भुजोऽरविन्दाक्षो वनमाल्यतिसुन्दरः ॥४॥

पदच्छेद— वासुदेवः हि अयम् इति पुमान् श्रीवत्स लाञ्छनः ।
चतुर्भुजः अरविन्द अक्षः वनमाली अति सुन्दरः ॥

शब्दार्थ—

वासुदेवः	२.	वासुदेव ही है	चतुर्भुजः	७.	चार भुजाओं वाले
हि अयम्	१.	यह	अरविन्द	८.	कमल के समान
इति	३.	क्योंकि (यह)	अक्षः	९.	नेत्र वाले
पुमान्	४.	पुरुष	वनमाली	१०.	वनमाला पहने और
श्रीवत्स	५.	श्रीवत्स	अति	११.	अत्यन्त
लाञ्छनः ।	६.	चिह्न से युक्त	सुन्दरः ॥	१२.	सुन्दर हैं

श्लोकार्थ—यह वासुदेव ही है । क्योंकि यह पुरुष श्रीवत्स चिह्न से युक्त, चार भुजाओं वाले, कमल के समान नेत्र वाले, वनमाला पहने और अत्यन्त सुन्दर है ॥

पञ्चमः श्लोकः

लक्षणैर्नारदप्रोक्तैर्नान्यो भवितुमर्हति ।
निरायुधश्चलन् पद्भ्यां योत्स्येऽनेन निरायुधः ॥५॥

पदच्छेद— लक्षणैः नारद प्रोक्तैः नान्यः भवितुम् अर्हति ।
निरायुधः चलन् पद्भ्याम् योत्स्ये अनेन निरायुधः ॥

शब्दार्थ—

लक्षणैः	३.	लक्षणों से	निरायुधः	७.	बिना अस्त्र-शस्त्र के
नारद	१.	नारद के	चलन्	८.	चल रहा है (अतः मैं भी)
प्रोक्तः	२.	बताये हुये	पद्भ्याम्	११.	पैदल ही
न अन्यः	४.	यह दूसरा नहीं	योत्स्ये	१२.	लड़ूंगा
भवितुम्	५.	हो	अनेन	९.	इसके साथ
अर्हति ।	६.	सकता है (ये)	निरायुधः ॥	१०.	बिना अस्त्र-शस्त्र के

श्लोकार्थ—नारद के बताये हुये लक्षणों से यह दूसरा नहीं हो सकता है। ये बिना अस्त्र-शस्त्र के चल रहा है। अतः मैं भी इसके साथ बिना अस्त्र-शस्त्र के पैदल ही लड़ूंगा ॥

षष्ठः श्लोकः

इति निश्चित्य यवनः प्राद्रवन्तं पराङ्मुखम् ।
अन्वधावज्जिघृक्षुस्तं दुरापमपि योगिनाम् ॥६॥

पदच्छेद— इति निश्चित्य यवनः प्राद्रवन्तम् पराङ्मुखम् ।
अन्वधावत् जिघृक्षुः तम् दुरापम् अपि योगिनाम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	अन्वधावत्	१२.	पीछे-पीछे दौड़ने लगा
निश्चित्य	२.	निश्चय करके	जिघृक्षुः	११.	पकड़ने के लिये
यवनः	३.	काल यवन	तम्	७.	उन (प्रभु को)
प्राद्रवन्तम्	६.	भागते हुये (जो)	दुरापम्	१०.	दुष्प्राप्य हैं
पराङ्	४.	दूसरी ओर	अपि	९.	भी
मुखम् ।	५.	मुँह करके	योगिनाम् ॥	८.	जो योगियों के लिये

श्लोकार्थ—ऐसा निश्चय करके कालयवन दूसरी ओर मुँह करके भागते हुए उन प्रभु को, जो योगियों लिये भी दुष्प्राप्य हैं, पकड़ने के लिये पीछे-पीछे दौड़ने लगा ॥

सप्तमः श्लोकः

हस्तप्राप्तमिवात्मानं हरिणा स पदे-पदे ।
नीतो दर्शयता दूरं यवनेशोऽद्रिकन्दरम् ॥७॥

पदच्छेद— हस्त प्राप्तम् इव आत्मानम् हरिणा सः पदे-पदे ।
नीतः दर्शयता दूरम् यवनेशः अद्रि कन्दरम् ॥

शब्दार्थ—

हस्त	२.	हाथों से	नीतः	१२.	ले गये
प्राप्तम्	४.	पकड़े हुये के	दर्शयता	७.	दिखाते हुये
इव	५.	समान	दूरम्	९.	बहुत दूर
आत्मानम्	३.	अपने को	यवनेशः	८.	कालयवन को
हरिणा सः	६.	भगवान् श्रीकृष्ण उसे	अद्रि	१०.	एक पहाड़ की
पदे-पदे ।	१.	पग-पग पर	कन्दरम् ॥	११.	गुफा में

श्लोकार्थ—पग-पग पर हाथों से अपने को पकड़े हुये के समान भगवान् श्रीकृष्ण उसे दिखाते हुये काल यवन को बहुत दूर एक पहाड़ की गुफा में ले गये ॥

अष्टमः श्लोकः

पलायनं यदुकुले जातस्य तव नोचितम् ।
इति क्षिपन्ननुगतो नैनं प्रापाहताशुभः ॥८॥

पदच्छेद— पलायनम् यदुकुले जातस्य तव न उचितम् ।
इति क्षिपन् अनुगतः न एनम् प्राप आहत अशुभः ॥

शब्दार्थ—

पलायनम्	४.	भागना	इति	७.	इस प्रकार
यदुकुले	१.	यदुकुल में	क्षिपन्	८.	आक्षेप करता हुआ तथा
जातस्य	२.	उत्पन्न हुये	अनुगतः	९.	पीछा करता हुआ वह
तव	३.	तुम्हारा	न एनम्	१०.	उन प्रभु को नहीं
न	६.	नहीं है	प्राप	११.	पा सका उसके
उचितम् ।	५.	उचित	अहत	१३.	नष्ट नहीं हुये थे
			अशुभः ॥	१२.	अशुभ अभी

श्लोकार्थ—यदुकुल में उत्पन्न हुये तुम्हारा भागना उचित नहीं है । इस प्रकार आक्षेप करता हुआ तथा पीछा करता हुआ वह उन प्रभु को प्राप्त नहीं कर सका । क्योंकि उसके अशुभ अभी नष्ट नहीं हुये थे ॥

नवमः श्लोकः

एवं क्षिप्तोऽपि भगवान् प्राविशद् गिरिकन्दरम् ।
सोऽपि प्रविष्टस्तत्रान्यं शयानं ददृशे नरम् ॥९॥

पदच्छेद— एवम् क्षिप्तः अपि भगवान् प्राविशद् गिरिकन्दरम् ।
सः अपि प्रविष्टः तत्र अन्यम् शयानम् ददृशे नरम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	सः अपि	८.	वह भी
क्षिप्तः	२.	आक्षेप किये जाने पर	प्रविष्टः	९.	घुसा
अपि	३.	भी	तत्र	१०.	वहाँ पर उसने
भगवान्	४.	भगवान् श्रीकृष्ण	अन्यम्	११.	एक दूसरे
प्राविशद्	७.	घुस गये	शयानम्	१३.	सोते हुये
गिरि	५.	पर्वत की	ददृशे	१४.	देखा
कन्दरम् ।	६.	गुफा में	नरम् ॥	१२.	मनुष्य को

श्लोकार्थ—इस प्रकार आक्षेप किये जाने पर भी भगवान् श्रीकृष्ण पर्वत की गुफा में घुस गये । वह भी घुसा । वहाँ पर उसने एक दूसरे मनुष्य को सोते हुये देखा ॥

दशमः श्लोकः

नन्वसौ दूरमानीय शेते मामिह साधुवत् ।
इति मत्वाच्युतं मूढस्तं पदा समताडयत् ॥१०॥

पदच्छेद— ननु असौ दूरम् आनीय शेते माम् इह साधुवत् ।
इति मत्वा अच्युतम् मूढः तम् पदा सम्अताडयत् ॥

शब्दार्थ—

ननु असौ	१.	अरे! यह	इति	८.	इस प्रकार
दूरम्	३.	दूर	मत्वा	११.	मानकर
आनीय	४.	लाकर	अच्युतम्	१०.	श्रीकृष्ण
शेते	७.	सो रहा है	मूढः	१२.	मूर्ख ने
माम्	२.	मुझे	तम्	९.	उसे
इह	५.	यहाँ पर	पदा	१३.	पैर से
साधुवत् ।	६.	साधु के समान	सम्अताडयत् ॥	१४.	ठोकर मारी

श्लोकार्थ—अरे ! यह मुझे दूर लाकर यहाँ पर साधु के समान सो रहा है । इस प्रकार उसे श्रीकृष्ण मान् कर मूर्ख ने पैर से ठोकर मारी ॥

एकादशः श्लोकः

स उत्थाय चिरं सुप्तः शनैरुन्मील्य लोचने ।
दिशो विलोकयन् पार्श्वे तमद्राक्षीदवस्थितम् ॥११॥

पदच्छेद— सः उत्थाय चिरम् सुप्तः शनैः उन्मील्य लोचने ।
दिशः विलोकयन् पार्श्वे तम् अद्राक्षीत् अवस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

सः उत्थाय	३.	उस पुरुष ने उठ कर	दिशः	७.	इधर-उधर
चिरम्	१.	बहुत दिनों से	विलोकयन्	८.	देखते हुये
सुप्तः	२.	सोये हुये	पार्श्वे	९.	पास में
शनैः	४.	धीरे से	तम्	११.	उस (कालयवन को)
उन्मील्य	६.	खोल कर	अद्राक्षीत्	१२.	देखा
लोचने ।	५.	आँखें	अवस्थितम् ॥	१०.	खड़े हुये

श्लोकार्थ—बहुत दिनों से सोये हुये उस पुरुष ने उठ कर धीरे से आँखें खोल कर इधर-उधर देखते हुये पास में खड़े हुये उस काल यवन को देखा ॥

द्वादशः श्लोकः

स तावत्तस्य रुष्टस्य दृष्टिपातेन भारत ।
देहजेनाग्निना दग्धो भस्मसादभवत् क्षणात् ॥१२॥

पदच्छेद— सः तावत् तस्य रुष्टस्य दृष्टिपातेन भारत ।
देहजेन अग्निना दग्धः भस्मसात् अभवत् क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वह	देहजेन	७.	शरीर में उत्पन्न
तावत्	३.	तभी	अग्निना	८.	अग्नि से
तस्य	४.	उस	दग्धः	९.	जल कर
रुष्टस्य	५.	कुपित हुये पुरुष की	भस्मसात्	११.	राख का ढेर
दृष्टिपातेन	६.	दृष्टि पड़ते ही	अभवत्	१२.	हो गया
भारत ।	१.	हे परीक्षित् !	क्षणात् ॥	१०.	क्षण भर में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वह तभी उस कुपित हुये पुरुष की दृष्टि पड़ते ही शरीर में उत्पन्न अग्नि से जल कर क्षण भर में राख का ढेर हो गया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

राजोवाच— को नाम स पुमान् ब्रह्मन् कस्य किंवीर्य एव च ।
कस्माद् गुहां गतः शिश्ये किन्तेजो यवनार्दनः ॥१३॥

पदच्छेद— कः नाम सः पुमान् ब्रह्मन् कस्य किम् वीर्य एव च ।
कस्मात् गुहाम् गतः शिश्ये किन्तेजः यवन अर्दनः ॥

शब्दार्थ—

कः नाम	६. कौन था	कस्मात्	१०. किस लिये
सः	४. वह	गुहाम्	११. पर्वत की गुफा में
पुमान्	५. पुरुष	गतः	१२. जा कर
ब्रह्मन्	१. हे भगवन् !	शिश्ये	१३. सोया था (उसमें)
कस्य	७. किसका पुत्र था	किन्तेजः	१४. कैसी शक्ति थी
किम् वीर्यः	९. किस वंश का था	यवन	२. कालयवन को
एव च ।	८. और	अर्दनः ॥	३. जलाने वाला

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! कालयवन को जलाने वाला वह पुरुष कौन था । किसका पुत्र था । और किस वंश का था । किस लिये पर्वत की गुफा में जा कर सोया था । उसमें कैसी शक्ति थी ॥

चतुर्दशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— स इक्ष्वाकुकुले जातो मान्धातृतनयो महान् ।
मुचुकुन्द इति ख्यातो ब्रह्मण्यः सत्यसङ्गरः ॥१४॥

पदच्छेद— सः इक्ष्वाकुकुले जातः मान्धातृ तनयः महान् ।
मुचुकुन्दः इति ख्यातः ब्रह्मण्यः सत्य सङ्गरः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वह	मुचुकुन्दः	७. मुचुकुन्द
इक्ष्वाकुकुले	२. इक्ष्वाकु के वंश में	इति	८. इस नाम से
जातः	३. उत्पन्न	ख्यातः	९. विख्यात
मान्धातृ	४. मान्धाता का	ब्रह्मण्यः	१०. ब्राह्मणों का भक्त और
तनयः	५. पुत्र	सत्य	११. सत्य
महान् ।	६. महापुरुष	सङ्गरः ॥	१२. प्रतिज्ञ था

श्लोकार्थ—वह इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न मान्धाता का पुत्र महापुरुष मुचुकुन्द इस नाम से विख्यात ब्राह्मणों का भक्त और सत्यप्रतिज्ञ था ॥

पञ्चदशः श्लोकः

स याचितः सुरगणैरिन्द्राद्यैरात्मरक्षणे ।
असुरेभ्यः परित्रस्तैस्तद्रक्षां सोऽकरोच्चिरम् ॥१५॥

पदच्छेद— सः याचितः सुरगणैः इन्द्राद्यैः आत्म रक्षणे ।
असुरेभ्यः परित्रस्तैः तत् रक्षाम् सः अकरोत् चिरम् ॥

शब्दार्थ—

सः	७.	उससे	असुरेभ्यः	१.	असुरों से
याचितः	८.	प्रार्थना करने पर	परित्रस्तैः	२.	भयभीत
सुरगणैः	४.	देवताओं द्वारा	तत् रक्षाम्	११.	उनकी रक्षा
इन्द्राद्यैः	३.	इन्द्रादि	सः	९.	उसने
आत्म	५.	अपनी	अकरोत्	१२.	की थी
रक्षणे ।	६.	रक्षा के लिये	चिरम् ॥	१०.	बहुत दिनों तक

श्लोकार्थ—असुरों से भयभीत इन्द्रादि देवताओं द्वारा अपनी रक्षा के लिये उनसे प्रार्थना करने पर उसने बहुत दिनों तक उनकी रक्षा की थी ॥

षोडशः श्लोकः

लब्ध्वा गुहं ते स्वःपालं मुचुकुन्दमथाब्रुवन् ।
राजन् विरमतां कृच्छ्राद् भवान् नः परिपालनात् ॥१६॥

पदच्छेद— लब्ध्वा गुह्यम् ते स्वःपालम् मुचुकन्दम् अथ अब्रुवन् ।
राजन् विरमताम् कृच्छ्रात् भवान् नः परिपालनात् ॥

शब्दार्थ—

लब्ध्वा	४.	पाकर	राजन्	७.	हे राजन् !
गुह्यम्	३.	कार्तिकेय को	विरमताम्	१३.	विश्राम करें
ते	१.	उन लोगों ने	कृच्छ्रात्	१०.	कष्ट से
स्वःपालम्	२.	सेनापति के रूप में	भवान्	१२.	आप
मुचुकन्दम्	५.	मुचुकुन्द से	नः	८.	हम लोगों के भलो-भाँति
अथ	११.	अब	परिपालनात् ॥	९.	पालन रूप
अब्रुवन्	६.	कहा			

श्लोकार्थ—उन लोगों ने सेनापति के रूप में कार्तिकेय को पाकर मुचुकुन्द से कहा कि हे राजन् ! हम लोगों के भलो-भाँति पालन रूप कष्ट से अब आप विश्राम करें ॥

सप्तदशः श्लोकः

नरलोके परित्यज्य राज्यं निहतकण्टकम् ।
अस्मान् पालयतो वीर कामास्ते सर्वं उज्झिताः ॥१७॥

पदच्छेद— नर लोके परित्यज्य राज्यम् निहतकण्टकम् ।
अस्मान् पालयतः वीर कामाः ते सर्वं उज्झिताः ॥

शब्दार्थ—

नर	५. मनुष्य	पालयतः	३. रक्षा करते हुये
लोके	६. लोक में	वीर	१. हे वीर !
परित्यज्य	९. छोड़ कर	कामाः	११. कामनाओं का भी
राज्यम्	८. राज्य को	ते	४. आपने
निहतकण्टकम्	७. निष्कण्टक	सर्वं	१०. सभी
अस्मान्	२. हमारी	उज्झिताः ॥	१२. परित्याग कर दिया

श्लोकार्थ—हे वीर ! हमारी रक्षा करते हुये आपने मनुष्य लोक में निष्कण्टक राज्य को छोड़ कर सभी कामनाओं का भी परित्याग कर दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

सुता महिष्यो भवतो ज्ञातयोऽमात्यमन्त्रिणः ।
प्रजाश्च तुल्यकालीया नाधुना सन्ति कालिताः ॥१८॥

पदच्छेद — सुताः महिष्यः भवतः ज्ञातयः अमात्य मन्त्रिणः ।
प्रजाः च तुल्य कालीयाः न अधुना सन्ति कालिताः ॥

शब्दार्थ—

सुताः	२. पुत्र	प्रजाः च	९. प्रजायें
महिष्यः	३. रानियाँ	तुल्य	७. आपके
भवतः	१. आपके	कालीया	८. समय की
ज्ञातयः	४. बन्धु	न अधुना	१०. इस समय
अमात्य	५. सचिव	सन्ति	११. नहीं हैं वे
मन्त्रिणः ।	६. मंत्री और	कालिताः ॥	१२. सब काल के गाल में चले गये

श्लोकार्थ —हे राजन् ! आप के पुत्र, रानियाँ, बन्धु, सचिव, मंत्री और आप के समय की प्रजायें इस समय नहीं हैं । वे सब काल के गाल में चले गये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

कालो बलीयान् बलिनां भगवानीश्वरोऽव्ययः ।
प्रजाः कालयते क्रीडन् पशुपालो यथा पशून् ॥१९॥

पदच्छेद— कालः बलीयान् बलिनाम् भगवान् ईश्वरः अव्ययः ।
प्रजाः कालयते क्रीडन् पशुपालः यथा पशून् ।।

शब्दार्थ—

कालः	१.	काल	प्रजाः	१०.	वैसे ही वह प्रजाओं की
बलीयान्	३.	सबसे बड़ा बलवान् है वह	कालयते	१२.	वश में रखता है
बलिनाम्	२.	बलवानों में भी	क्रीडन्	११.	खेल-खेल में ही
भगवान्	४.	परमसमर्थ	पशुपालः	८.	ग्वाला
ईश्वरः	६.	ईश्वर है	यथा	७.	जैसे
अव्ययः ।	५.	अविनाशी और	पशून् ।।	९.	पशुओं को वश में रखता है

श्लोकार्थ—काल बलवानों में सबसे बड़ा बलवान् है। वह परमसमर्थ, अविनाशी और ईश्वर है। जैसे ग्वाला पशुओं को वश में रखता है वैसे ही वह प्रजाओं को खेल-खेल में ही वश में रखता है ।।

विंशः श्लोकः

वरं वृणीष्व भद्रं ते ऋते कैवल्यमद्य नः ।
एक एवेश्वरस्तस्य भगवान् विष्णुरव्ययः ॥२०॥

पदच्छेद— वरम् वृणीष्व भद्रम् ते ऋते कैवल्यम् अद्य नः ।
एकः एव ईश्वरः तस्य भगवान् विष्णुः अव्ययः ।।

शब्दार्थ—

वरम्	६.	वरदान	एकः	१०.	एक
वृणीष्व	७.	मांग लीजिये	एव	१४.	ही हैं
भद्रम्	२.	कल्याण हो	ईश्वरः	९.	स्वामी तो
ते	१.	तुम्हारा	तस्य	८.	उस मोक्ष का
ऋते	५.	अतिरिक्त	भगवान्	१२.	भगवान्
कैवल्यम्	४.	कैवल्य मोक्ष के	विष्णुः	१३.	विष्णु
अद्य नः ।	३.	आज आप हम से	अव्ययः ।।	११.	अविनाशी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! तुम्हारा कल्याण हो। आज आप हम से कैवल्य मोक्ष के अतिरिक्त वरदान मांग लीजिये। उस मोक्ष का स्वामी तो एक अविनाशी भगवान् विष्णु ही हैं ।।

एकविंशः श्लोकः

एवमुक्तः स वै देवानभिवन्द्य महायशाः ।

अशयिष्ट गुहाविष्टो निद्रया देवदत्तया ॥२१॥

पदच्छेद— एवम् उक्तः सः वै देवान् अभिवन्द्य महायशाः ।
अशयिष्ट गुहा आविष्टः निद्रया देव दत्तया ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	अशयिष्ट	१२.	सो गया
उक्तः	२.	कहने पर	गुहा	७.	गुफा में
सः वै	४.	वह राजा	आविष्टः	८.	घुस कर
देवान्	५.	देवताओं की	निद्रया	११.	नींद से
अभिवन्द्य	६.	वन्दना करके	देव	९.	देवताओं के द्वारा
महायशाः ।	३.	महान् यशस्वी	दत्तया ॥	१०.	दी हुई

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहने पर महान् यशस्वी वह राजा देवताओं की वन्दना करके गुफा में घुसकर देवताओं द्वारा दी हुई नींद से सो गया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

स्वापं यातं यस्तु मध्ये बोधयेत्त्वामचेतनः ।

स त्वया दृष्टमात्रस्तु भस्मीभवतु तत्क्षणात् ॥२२॥

पदच्छेद— स्वापम् यातम् यः तु मध्ये बोधयेत् त्वाम् अचेतनः ।
सः त्वया दृष्ट मात्रः तु भस्मीभवतु तत् क्षणात् ॥

शब्दार्थ—

स्वापम्	१.	सोते	सः त्वया	८.	वह आपकी
यातम्	२.	हुये	दृष्ट	९.	दृष्टि
यः तु	३.	जो कोई	मात्रः तु	१०.	पड़ते ही
मध्ये	५.	बीच में	भस्मी	१३.	भस्म
बोधयेत्	७.	जगा देगा	भवतु	१४.	हो जायेगा
त्वाम्	६.	आपको	तत्	११.	उसी
अचेतनः ।	४.	मूर्ख	क्षणात् ॥	१२.	क्षण

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सोते हुये जो कोई मूर्ख बीच में आपको जगा देगा, वह आपकी दृष्टि पड़ते ही उसी क्षण भस्म हो जावेगा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यवने भस्मसान्नीते भगवान् सात्वतर्षभः ।
आत्मानं दर्शयामास मुचुकुन्दाय धीमते ॥२३॥

पदच्छेद— यवने भस्मसात् नीते भगवान् सात्वत ऋषभः ।
आत्मानं दर्शयामास मुचुकुन्दाय धीमते ॥

शब्दार्थ—

यवने	१.	काल यवन के	ऋषभः	५.	श्रेष्ठ
भस्मसात्	२.	भस्म हो	आत्मानं	९.	अपना
नीते	३.	जाने पर	दर्शयामास	१०.	दर्शन दिया
भगवान्	६.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	मुचुकुन्दाय	८.	मुचुकुन्द को
सात्वत	४.	यदुवंशियों में	धीमते ॥	७.	बुद्धिमान्

श्लोकार्थ—कालयवन के भस्म हो जाने पर यदुवंशियों में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्ण ने बुद्धिमान् मुचुकुन्द को अपना दर्शन दिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तमालोक्य घनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ।
श्रीवत्सवक्षसं भ्राजत्कौस्तुभेन विराजितम् ॥२४॥

पदच्छेद— तम् आलोक्य घनश्यामम् पीत कौशेय वाससम् ।
श्रीवत्स वक्षसम् भ्राजत् कौस्तुभेन विराजितम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	राजा ने (उनको)	श्रीवत्स	७.	श्रीवत्स चिह्न से युक्त
आलोक्य	२.	देखा	वक्षसम्	६.	वक्षः स्थल पर
घनश्यामम्	३.	जो मेघ के समान साँवले (और)	भ्राजत्	८.	जगमगाते हुये
पीतकौशेय	४.	पीले रेशमी	कौस्तुभेन	९.	कौस्तुभ मणि से
वाससम् ।	५.	वस्त्र पहने हुये थे (तथा)	विराजितम् ॥	१०.	सुशोभित थे

श्लोकार्थ—राजा ने उनको देखा । जो मेघ के समान साँवले और पीले रेशमी वस्त्र पहने हुये थे । वक्षः स्थल पर श्रीवत्स चिह्न से युक्त जगमगाते हुये कौस्तुभ मणि से सुशोभित थे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

चतुर्भुजं रोचमानं वैजयन्त्या च मालया ।
चारुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ॥२५॥

पदच्छेद— चतुर्भुजम् रोचमानम् वैजयन्त्या च मालया ।
चारु प्रसन्न वदनम् स्फुरन् मकर कुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

चतुर्भुजम्	१	वे चार भुजा वाले	चारु	६.	सुन्दर और
रोचमानम्	५.	शोभायमान	प्रसन्न वदनम्	७.	प्रसन्न मुख वाले
वैजयन्त्या	३.	वैजयन्ती	स्फुरन्	८.	चमकते हुये
च	२.	और	मकर	९.	मकराकृत
मालया ।	४.	माला से	कुण्डलम् ॥	१०.	कुण्डलों से युक्त थे

श्लोकार्थ—वे चार भुजा वाले और वैजयन्ती माला से शोभायमान सुन्दर और प्रसन्न मुख वाले चमकते हुये मकराकृत कुण्डलों से युक्त थे ॥

षड्विंशः श्लोकः

प्रेक्षणीयं नृलोकस्य सानुरागस्मितेक्षणम् ।
अपीच्यवयसं मत्तमृगेन्द्रोदारविक्रमम् ॥२६॥

पदच्छेद— प्रेक्षणीयम् नृलोकस्य स अनुराग स्मित ईक्षणम ।
अपीच्य वयसम् मत्त मृगेन्द्र उदार विक्रमम् ॥

शब्दार्थ—

प्रेक्षणीयम्	१०.	देखने योग्य है	अपीच्य	४.	अत्यन्त दर्शनीय
नृलोकस्य	९.	मनुष्य समूह के लिये	वयसम्	५.	अवस्था और
स अनुराग	१.	उनके प्रेम और	मत्त	६.	मतवाले
स्मित	२.	मुसकराहट के साथ	मृगेन्द्र	७.	सिंह के समान
ईक्षणम ।	३.	चितवन	उदार विक्रमम् ॥	८.	निर्भीक चाल

श्लोकार्थ—उनकी प्रेम और मुसुकराहट के साथ चितवन, अत्यन्त दर्शनीय अवस्था और मतवाले सिंह के समान निर्भीक चाल मनुष्य समूह के लिये देखने योग्य है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

पर्यपृच्छन्महाबुद्धिस्तेजसा तस्य धर्षितः ।
शङ्कितः शनकै राजा दुर्धर्षमिव तेजसा ॥२७॥

पदच्छेद — परि अपृच्छत् महाबुद्धिः तेजसा तस्य धर्षितः ।
शङ्कितः शनकैः राजा दुर्धर्षम् इव तेजसा ॥

शब्दार्थ—

पर्यपृच्छत्	११.	पूछा	शङ्कितः	६.	शंकित होकर
महाबुद्धि	४.	महाबुद्धिमान्	शनकैः	१०.	धीरे से
तेजसा	२.	तेज से	राजा	५.	राजा ने
तस्य	१.	उनके	दुर्धर्षम्	८.	दुर्धर्ष
धर्षितः ।	३.	चकित	इव	९.	जान पड़ने वाले (भगवान् से
			तेजसा ॥	७.	तेज के कारण)

श्लोकार्थ—उनके तेज से चकित महाबुद्धिमान राजा ने शंकित होकर तेज के कारण दुर्धर्ष जान पड़ने वाले भगवान् से धीरे से पूछा ॥

अष्टविंशः श्लोकः

मुचुकुन्द उवाच—को भवानिह सम्प्राप्तो विपिने गिरिगह्वरे ।
पद्भ्यां पद्मपलाशाभ्यां विचरस्युरुकण्टके ॥२८॥

पदच्छेद— कः भवान् इह सम्प्राप्तः विपिने गिरि गह्वरे ।
पद्भ्याम् पद्मपलाशाभ्यां विचरसि उरुकण्टके ॥

शब्दार्थ—

कः	५.	कौन हैं (और क्यों)	पद्भ्याम्	११.	चरणों से
भवान्	४.	आप	पद्म	९.	कमल की
इह	१.	यहाँ	पलाशाभ्याम्	१०.	पंखुड़ियों के समान कोमल
सम्प्राप्तः	३.	आये हुये	विचरसि	१२.	विचर रहे हैं
विपिने	८.	जंगल में	उरु	७.	भरे हुये
गिरि गह्वरे ।	२	पहाड़ की गुफा में	कण्टके ॥	६	काँटों से

श्लोकार्थ—यहाँ पहाड़ की गुफा में आये हुये आप कौन हैं । और क्यों काँटों से भरे हुये जङ्गल में कमल की पंखुड़ियों के समान कोमल चरणों से विचर रहे हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

किंस्वित्तेजस्विनां तेजो भगवान् वा विभावसुः ।
सूर्यः सोमो महेन्द्रो वा लोकपालोऽपरोऽपि वा ॥२९॥

पदच्छेद— किम्स्वित् तेजस्विनाम् तेजः भगवान् वा विभावसुः ।
सूर्यः सोमः महेन्द्रः वा लोकपालः अपरः अपि वा ॥

शब्दार्थ—

किम्स्वित्	१.	क्या आप	सूर्यः	७.	सूर्य
तेजस्विनाम्	२.	तेजस्वियों के	सोमः	८.	चन्द्रमा
तेजः	३.	मूर्तिमान् तेज	महेन्द्रः	९.	इन्द्र
भगवान्	५.	भगवान्	वा	१०.	अथवा
वा	४.	अथवा	लोकपालः	११.	लोकपाल हैं
विभावसुः ।	६.	अग्निदेव	अपरः अपि ॥	१२.	या दूसरे कोई हैं ।

श्लोकार्थ—क्या आप तेजस्वियों के मूर्तिमान् तेज अथवा भगवान् अग्निदेव, सूर्य, चन्द्रमा, अथवा लोकपाल हैं । या दूसरे कोई हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

मन्ये त्वां देवदेवानां त्रयाणां पुरुषर्षभम् ।
यद् बाधसे गुहाध्वान्तं प्रदीपः प्रभया यथा ॥३०॥

पदच्छेद— मन्ये त्वाम् देवदेवानाम् त्रयाणाम् पुरुष ऋषभः ।
यद् बाधसे गुहाध्वान्तम् प्रदीपः प्रभया यथा ॥

शब्दार्थ—

मन्ये	१.	मैं समझता हूँ कि	यद्	७.	जो
त्वाम्	२.	आप	बाधसे	१०.	दूर कर रहे हैं
देवदेवानाम्	३.	देवताओं के देव	गुहा	८.	गुफा के
त्रयाणाम्	४.	(ब्रह्मा विष्णु महेश) इन तीनों में से	ध्वान्तम्	९.	अन्धकार को (वैसे ही)
पुरुष	५.	पुरुषोत्तम,	प्रदीपः	१२.	उत्तम दीप
ऋषभ ।	६.	विष्णु हैं	प्रभया	१३.	अपनी कान्ति से अंधेरे को दूर कर देता है
			यथा ॥	११.	जैसे

श्लोकार्थ—मैं समझता हूँ कि आप ब्रह्मा-विष्णु-महेश इन तीनों में से पुरुषोत्तम विष्णु हैं । जो गुफा के अन्धकार को वैसे ही दूर कर रहे हैं । जैसे उत्तम दीप अपनी कान्ति से अन्धेरे को दूर कर देता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

शुश्रूषतामव्यलीकमस्माकं नरपुङ्गव ।
स्वजन्म कर्म गोत्रं वा कथ्यतां यदि रोचते ॥३१॥

पदच्छेद— शुश्रूषताम् अव्यलीकम् अस्माकम् नर पुङ्गव ।
स्वजन्म कर्म गोत्रम् वा कथ्यताम् यदि रोचते ॥

शब्दार्थ—

शुश्रूषताम्	५.	सुनने की इच्छा वाले	स्वजन्म	७.	आप अपने जन्म
अव्यलीकम्	४.	सच्चे हृदय से	कर्म	८.	कर्म और
अस्माकम्	६.	हमें	गोत्रम् वा	९.	गोत्र को
नर	१.	हे पुरुष	कथ्यताम्	१०.	बताइये
पुङ्गव ।	२.	श्रेष्ठ !	यदि रोचते ॥	३	यदि रुचे तो

श्लोकार्थ— हे पुरुष श्रेष्ठ ! यदि रुचे तो सच्चे हृदय से सुनने की इच्छा वाले हमें आप अपने जन्म-कर्म और गोत्र को बताइये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

वयं तु पुरुषव्याघ्र ऐक्ष्वाकाः क्षत्रबन्धवः ।
मुचुकुन्द इति प्रोक्तो यौवनाश्वात्मजः प्रभो ॥३२॥

पदच्छेद— वयम् तु पुरुष व्याघ्र ऐक्ष्वाकाः क्षत्र बन्धवः ।
मुचुकुन्द इति प्रोक्तः यौवनाश्व आत्मजः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

वयम् तु	२.	हम तो	मुचुकुन्द इति	७.	मुचुकुन्द यह मेरा
पुरुष व्याघ्र	१.	हे पुरुषोत्तम !	प्रोक्तः	८.	नाम हैं मैं
ऐक्ष्वाकाः	३.	इक्ष्वाकुवंशीय	यौवनाश्व	९.	मान्धाता का
क्षत्र	४.	क्षत्रिय	आत्मजः	१०.	पुत्र हूँ
बन्धवः ।	५.	बन्धु हैं	प्रभो ॥	६.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ— हे पुरुषोत्तम ! हम तो इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय बन्धु हैं । हे प्रभो ! मुचुकुन्द यह मेरा नाप है । मैं मान्धाता का पुत्र हूँ ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

चिरप्रजागरश्रान्तो निद्रयोपहृतेन्द्रियः ।
शयेऽस्मिन् विजने कामं केनाप्युत्थापितोऽधुना ॥३३॥

पदच्छेद— चिर प्रजागर श्रान्तः निद्रया उपहतइन्द्रियः ।
शये अस्मिन् विजने कामम् केनापि उत्थापितः अधुना ॥

शब्दार्थ—

चिर	१.	बहुत दिनों तक	शये	९.	सो रहा था
प्रजागर	२.	जागते रहने के कारण	अस्मिन्	७	इस
श्रान्तः	३.	मैं थक गया था	विजने कामम्	८.	निर्जन स्थान में निर्द्वन्द्व
निद्रया	४.	निद्राने	केनापि	११.	किसी ने
उपहृत	६.	छीन ली थी	उत्थापितः	१२.	उठा दिया
इन्द्रियः ।	५.	मेरी इन्द्रियों की शक्ति	अधुना ॥	१०.	इस समय

श्लोकार्थ—बहुत दिनों तक जागते रहने के कारण मैं थक गया था । निद्रा ने मेरी इन्द्रियों की शक्ति छीन ली थी । इस निर्जन स्थान में निर्द्वन्द्व सो रहा था । इस समय किसी ने उठा दिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सोऽपि भस्मीकृतो नूनमात्मीयेनैव पाप्मना ।
अनन्तरं भवाञ्छ्रीमान् लक्षितोऽमित्रशातनः ॥३४॥

पदच्छेद— सः अपि भस्मीकृतः नूनम् आत्मीयेन एव पाप्मना ।
अनन्तरम् भवान् श्रीमान् लक्षितः अमित्र शातनः ॥

शब्दार्थ—

सः अपि	१.	वह भी	अनन्तरम	७.	इसके बाद
भस्मीकृत	६.	भस्म कर दिया गया	भवान्	११.	आपने
नूनम्	२.	निश्चत रूप से	श्रीमान्	१०.	श्रीमान्
आत्मीयेन	३.	अपने	लक्षितः	१२.	मुझे दर्शन दिया
एव	४.	ही	अमित्र	८.	शत्रुओं के
पाप्मना ।	५.	पाप के द्वारा	शातनः ॥	९.	नाशक

श्लोकार्थ—वह भी निश्चित रूप से अपने ही पाप के द्वारा भस्म कर दिया गया । इसके बाद शत्रुओं के नाशक श्रीमान् आपने मुझे दर्शन दिया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तेजसा तेऽविषह्येण भूरि द्रष्टुं न शक्नुमः ।
हतौजसो महाभाग माननीयोऽसि देहिनाम् ॥३५॥

पदच्छेद— तेजसा ते अविषह्येण भूरि द्रष्टुम् न शक्नुमः ।
हृत ओजसः महाभाग माननीयः असि देहिनाम् ॥

शब्दार्थ—

तेजसा ते	६.	आपके तेज से	हृत	७.	विनष्ट
अविषह्येण	५.	असह्य	ओजसः	८.	तेज वाले हम आपको
भूरि	९.	बहुत देर तक	महाभाग	१.	हे महाभाग ! आप
द्रष्टुम्	११.	देख	माननीयः	३.	समाननीय
न	१०.	नहीं	असि	४.	हैं
शक्नुमः ।	१२.	सकते हैं	देहिनाम् ॥	२.	प्राणियों के

श्लोकार्थ—हे महाभाग ! आप प्राणियों के सम्माननीय हैं । आप के असह्य तेज से विनष्ट तेज वाले हम आप को बहुत देर तक नहीं देख सकते हैं ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

एवं सम्भाषितो राज्ञा भगवान् भूतभावनः ।
प्रत्याह प्रहसन् वाण्या मेघनादगभीरया ॥३६॥

पदच्छेद— एवम् सम्भाषितः राज्ञा भगवान् भूत भावनः ।
प्रत्याह प्रहसन् वाण्या मेघ नाद गभीरया ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	प्रत्याह	१२.	कहा
सम्भाषितः	३.	कहने पर	प्रहसन्	७.	हंसते हुये
राज्ञा	२.	राजा के	वाण्या	११.	वाणी से
भगवान्	६.	भगवान् ने	मेघ	८.	मेघ जैसी
भूत	४.	प्राणियों के	नाद	९.	ध्वनि के समान
भावनः ।	५.	जीवन दाता	गभीरया ॥	१०.	गम्भीर

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा के कहने पर प्राणियों के जीवन-दाता भगवान् ने हंसते हुये मेघ जैसी ध्वनि के समान गम्भीर वाणी से कहा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—जन्मकर्माभिधानानि सन्ति मेऽङ्ग सहस्रशः ।
न शक्यन्तेऽनुसंख्यातुमनन्तत्वान्मयापि हि ॥३७॥

पदच्छेद— जन्म कर्म अभिधानानि सन्ति मे अङ्ग सहस्रशः ।
न शक्यन्ते अनुसंख्यातुम् अनन्तत्वात् मया अपि हि ॥

शब्दार्थ—

जन्म	३. जन्म	न	११. नहीं
कर्म	४. कर्म	शक्यन्ते	१२. सकता हूँ
अभिधानानि	५. और नाम	अनुसंख्यातुम्	१०. उन्हें गिन
सन्ति	६. हैं	अनन्तत्वात्	७. अनन्त होने के कारण
मे अङ्ग	१. हे वत्स मेरे !	मया	८. मैं
सहस्रशः ।	२. हजारों	अपिहि ॥	९. भी

श्लोकार्थ—हे वत्स ! मेरे हजारों जन्म कर्म और नाम हैं। अनन्त होने के कारण मैं भी उन्हें नहीं गिन सकता हूँ ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

क्वचिद् रजांसि विममे पार्थिवान्युरुजन्मभिः ।
गुणकर्माभिधानानि न मे जन्मानि कर्हिचित् ॥३८॥

पदच्छेद— क्वचित् रजांसि विममे पार्थिवानि उरु जन्मनि ।
गुण कर्म अभिधानानि न मे जन्मानि कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

क्वचित्	१. कहीं (कोई पुरुष)	गुण	८. गुण
रजांसि	५. धूलि कणों की	कर्म	९. कर्म और
विममे	६. गिनती कर सकता है	अभिधानानि	१०. नामों को
पार्थिवानि	४. पृथ्वी के	न मे	१२. नहीं गिन सकता मेरे
उरु	२. अपने बहुत से	जन्मनि	७. जन्म
जन्मनि ।	३. जन्मों में	कर्हिचित् ॥	१०. कभी भी

श्लोकार्थ—कहीं कोई पुरुष अपने बहुत से जन्मों में पृथ्वी के धूलि कणों की गिनती कर सकता है। किन्तु मेरे जन्म-गुण और नामों को नहीं गिन सकता है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

कालत्रयोपपन्नानि जन्मकर्माणि मे नृप ।
अनुक्रमन्तो नैवान्तं गच्छन्ति परमर्षयः ॥३९॥

पदच्छेद— काल त्रय उपपन्नानि जन्म कर्माणि मे नृप ।
अनुक्रमन्तः न एव अन्तम् गच्छन्ति परमर्षयः ॥

शब्दार्थ—

काल त्रय	४.	तीनों कालों में	अनुक्रमन्तः	८.	वर्णन करते हुये
उपपन्नानि	५.	सिद्ध	न	१०.	नहीं
जन्म	६.	जन्म और	एव	११.	ही
कर्माणि	७.	कर्मों का	अन्तम्	९.	उनका पार
मे	३.	मेरे	गच्छन्ति	१२.	पाते हैं
नृप ।	१.	हे राजन् !	परमर्षयः ॥	२.	परमर्षिगण

श्लोकार्थ—हे राजन् ! परमर्षिगण मेरे तीनों कालों में सिद्ध जन्म और कर्मों का वर्णन करते हुये उनका पार नहीं हो पाते हैं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तथाप्यद्यतनान्यङ्ग श्रृणुष्व गदतो मम ।
विज्ञापितो विरिञ्चेन पुराहं धर्मगुप्तये ।
भूमेर्भारायमाणानामसुराणां क्षयाय च ॥४०॥

पदच्छेद— तथापि अद्यतनानि अङ्ग श्रृणुष्व गदतः मम ।
विज्ञापितः विरिञ्चेन पुरा अहम् धर्म गुप्तये ।
भूमेः भारायमाणानाम् असुराणाम् क्षयाय च ॥

शब्दार्थ—

तथापि	२.	तो भी (अपने)	पुरा	७.	पहले
अद्यतनानि	३.	वर्तमान (जन्म आदि को)	अहम्	९.	मुझसे
अङ्ग	१.	हे वत्स !	धर्म	१०.	धर्म की
श्रृणुष्व	६.	सुनो	गुप्तये ।	११.	रक्षा और
गदतः	४.	कहते हुये	भूमेः	१२.	पृथ्वी के
मम ।	५.	मुझसे	भारायमाणानाम्	१३.	भार बने हुये
विज्ञापितः	१६.	निवेदन किया था	असुराणाम्	१४.	असुरों का
विरिञ्चेन	८.	ब्रह्मा ने	क्षयाय च ॥	१५.	संहार करने के लिये

श्लोकार्थ—हे वत्स ! तो भी अपने वर्तमान जन्म आदि को कहते हुये मुझ से सुनो। पहले ब्रह्मा ने मुझ से धर्म की रक्षा और पृथ्वी के भार बने हुये असुरों का संहार करने के लिये निवेदन किया ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

अवतीर्णो यदुकुले गृह आनकदुन्दुभेः ।
वदन्ति वासुदेवेति वसुदेवसुतं हि माम् ॥४१॥

पदच्छेद— अवतीर्णः यदुकुले गृहे आनकदुन्दुभेः ।
वदन्ति वासुदेव इति वसुदेव सुतं हि माम् ॥

शब्दार्थ—

अवतीर्णः	४.	अवतार लिया है (अतः)	वासुदेव	८.	वासुदेव
यदुकुले	१.	यदुवंश में	इति	९.	ऐसा
गृहे	३.	घर में (मैंने)	वसुदेव	६.	वसुदेव के
आनकदुन्दुभेः	२.	वसुदेव जी के	सुतम्	७.	पुत्र
वदन्ति	१०.	कहते हैं	हि माम् ॥	५.	मुझ को ही लोग

श्लोकार्थ—यदुवंश में वसुदेव जी के घर में मैंने अवतार लिया है। अतः मुझ को ही लोग वसुदेव के पुत्र वासुदेव ऐसा कहते हैं ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

कालनेमिर्हतः कंसः प्रलम्बाद्याश्च सद्द्विषः ।
अयं च यवनो दग्धो राजंस्ते तिग्मचक्षुषा ॥४२॥

पदच्छेद— कालनेमिः हतः कंसः प्रलम्बआद्याः च सत् द्विषः ।
अयम् च यवनः दग्धाः राजन् ते तिग्म चक्षुषा ॥

शब्दार्थ—

कालनेमिः	३.	कालनेमि	अयम्	१०.	यह
हतः	४.	मारा गया	च	९.	और
कंसः	२.	कंस के रूप में	यवनः	११.	कालयवन
प्रलम्ब	६.	प्रलम्ब	दग्धाः	१४.	जल गया
आद्याः	७.	आदि	राजन्	१.	हे राजन् !
च	८.	भी (मारे गये)	ते तिग्म	१२.	तुम्हारी तीक्ष्ण
सत्द्विषः ।	५.	साधुओं के द्रोही	चक्षुषा ॥	१३.	दृष्टि से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! कंस के रूप में कालनेमि मारा गया। साधुओं के द्रोही प्रलम्ब आदि भी मारे गये। और यह काल यवन तुम्हारी तीक्ष्ण दृष्टि से जल गया ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

सोऽहं तवानुग्रहार्थं गुहामेतामुपागतः ।
प्रार्थितः प्रचुरं पूर्वं त्वयाहं भक्तवत्सलः ॥४३॥

पदच्छेद— सः अहम् तव अनुग्रहार्थम् गुहाम् एताम् उपागतः ।
प्रार्थितः प्रचुरम् पूर्वम् त्वया अहम् भक्त वत्सलः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वही	प्रार्थितः	१४. आराधना की थी
अहम्	२. मैं	प्रचुरम्	१३. बहुत
तव	३. तुम पर	पूर्वम्	९. पहले
अनुग्रह अर्थम्	४. अनुग्रह करने के लिये	त्वया	८. तुमने
गुहाम्	६. गुफा में	अहम्	१२. मेरी
एताम्	५. इस	भक्त	१०. भक्तों का
उपागतः ।	७. आया हूँ	वत्सल ॥	११. चाहने वाले

श्लोकार्थ—वही मैं तुम पर अनुग्रह करने के लिये इस गुफा में आया हूँ । तुमने पहले भक्तों को चाहने वाले मेरी बहुत आराधना की थी ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

वरान् वृणीष्व राजर्षे सर्वान् कामान् ददामि ते ।
मां प्रपन्नो जनः कश्चिन्न भूयोऽर्हति शोचितुम् ॥४४॥

पदच्छेद— वरान् वृणीष्व राजर्षे सर्वान् कामान् ददामि ते ।
माम् प्रपन्नः जनः कश्चित् न भूयः अर्हति शोचितुम् ॥

शब्दार्थ—

वरान्	२. वरदान	माम्	८. मुझे
वृणीष्व	३. माँगो (मैं)	प्रपन्नः	९. पाकर
राजर्षे	१. हे राजर्षि !	जनः	११. मनुष्य
सर्वान्	५. समस्त	कश्चित्	१०. कोई भी
कामान्	६. कामनाओं को	न भूयः	१२. फिर नहीं
ददामि	७. पूर्ण कर दूंगा	अर्हति	१४. योग्य होता है
ते ।	४. तुम्हारी	शोचितुम् ॥	१३. शोक करने

श्लोकार्थ—हे राजर्षि ! वरदान माँगो । मैं तुम्हारी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर दूंगा । मुझे पाकर कोई भी मनुष्य फिर शोक करने योग्य नहीं होता है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इत्युक्तस्तं प्रणम्याह मुचुकुन्दो मुदान्वितः ।
ज्ञात्वा नारायणं देवं गर्गवाक्यमनुस्मरन् ॥४५॥

पदच्छेद— इति उक्तः तम् प्रणम्य आह मुचुकुन्दः मुदाअन्वितः ।
ज्ञात्वा नारायणम् देवम् गर्ग वाक्यम् अनुस्मरन् ॥

शब्दार्थ

इति उक्तः	१.	इस प्रकार कहने पर	ज्ञात्वा	१०.	समझ कर
तम्	७.	उन्हें	नारायणम्	९.	नारायण
प्रणम्य	११.	प्रणाम किया (और)	देवम्	८.	भगवान्
आह	१२.	कहा	गर्ग	२.	गर्ग जी के
मुचुकुन्दः	५.	मुचुकुन्द ने	वाक्यम्	३.	वाक्यों का
मुदान्वितः ।	६.	हर्षित होकर तथा	अनुस्मरन् ॥	४.	स्मरण करके

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहने पर गर्ग जी के वाक्यों का स्मरण करके मुचुकुन्द ने हर्षित होकर उन्हें भगवान् नारायण समझ कर प्रणाम किया और कहा ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

मुचुकुन्द उवाच—विमोहितोऽयं जन ईश मायया त्वदीयया त्वां न भजत्यनर्थदृक् ।
सुखाय दुःखप्रभवेषु सज्जते गृहेषु योषित् पुरुषश्च वञ्चितः ॥४६॥

पदच्छेद— विमोहितः अयम् जनः ईश मायया त्वदीयया त्वाम् न भजन्ति अनर्थदृक् ।
सुखाय दुःख प्रभवेषु सज्जते गृहेषु योषित् पुरुषः च वञ्चितः ॥

शब्दार्थ—

विमोहितः	६.	अत्यन्त मोहित होकर	सुखाय	९.	सुख के लिये वह
अयम्	२.	यह	दुःख	१०.	दुःख के
जनः	३.	जगत् का प्राणी	प्रभवेषु	११.	उत्पत्ति स्थान
ईश	१.	हे प्रभो !	सज्जते	१३.	फंस जाता है
मायया	५.	माया से	गृहेषु	१२.	घरों में
त्वदीयया	४.	आपकी	योषित्	१४.	(इस तरह) स्त्री और
त्वाम् भजन्ति	८.	आपका भजन नहीं करता है	पुरुषः च	१५.	पुरुष दोनों ही
अनर्थदृक् ।	७.	अनर्थ में फंसे रहने से	वञ्चितः ॥	१६.	ठगे जा रहे हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! यह जगत् का प्राणी आपकी माया से अत्यन्त मोहित होकर अनर्थ में फंसे रहने से आप का भजन नहीं करता है। सुख के लिये वह दुःख के उत्पत्ति स्थान घरों में फंस जाता है। इस तरह स्त्री और पुरुष दोनों ही ठगे जा रहे हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

लब्ध्वा जनो दुर्लभमत्र मानुषं कथञ्चिदव्यङ्गमयत्नतोऽनघ ।
पादारविन्दं न भजत्यसन्मतिर्गृहान्धकूपे पतितो यथा पशुः ॥४७॥

पदच्छेद— लब्ध्वा जनः दुर्लभम् अत्र मानुषम् कथञ्चित् अव्यङ्गम् यत्नतः अनघ ।
पादार विन्दम् न भजति असन्मतिः गृह अन्धकूपे पतितः यथा पशुः ॥

शब्दार्थ—लब्ध्वा	८. पाकर (तथा)	पादारविन्दम्	१०. आपके चरण कमल का
जनः	२. जो व्यक्ति	न भजति	११. भजन नहीं करते वह
दुर्लभम्	४. दुर्लभ (एवं)	असन्मतिः	९. असत् संसार में बुद्धि को लगाकर
अत्र	३. यहाँ (संसार में)	गृह	१२. घर गृहस्थी के
मानुषम्	७. मनुष्य जीवन को	अन्धकूपे	१३. अन्धेरे कुंये में
कथञ्चित्	६. किसी प्रकार	पतितः	१६. गिर जाता है
अव्यङ्गम्	५. पूर्ण तया	यथा	१५. समान
यत्नतः अनघ ।	१. हे निष्पाप ! अनायास ही	पशुः ॥	१४. तृण के लोभी पशु के

श्लोकार्थ—हे निष्पाप ! अनायास ही जो व्यक्ति यहाँ संसार में दुर्लभ एवम् पूर्णतया किसी प्रकार मनुष्य जीवन को पाकर तथा असत् संसार में बुद्धि को लगाकर आपके चरण कमल का भजन नहीं करते वह घर गृहस्थी के अन्धेरे कुंए में तृण के लोभी पशु के समान गिर जाता है ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

ममैष कालोऽजित निष्फलो गतो राज्यश्रियोन्नद्धमदस्य भूपतेः ।
मर्त्यात्मबुद्धेः सुतदारकोशभूष्वासज्जमानस्य दुरन्तचिन्तया ॥४८॥

पदच्छेद— मम एष कालः अजित निष्फलः गतः राज्यश्रिया उन्नद्ध मदस्य भूपतेः ।
मर्त्य आत्मबुद्धेः सुतदार कोशभूषु आसज्जमानस्य दुरन्त चिन्तया ॥

शब्दार्थ—मम	१०. मुझ	मर्त्य	४. मरणशील शरीर को
एषः कालः	१२. यह समय	आत्मबुद्धेः	५. आत्मा समझ कर
अजित	१. हे अजेय !	सुतदार	६. पुत्र-स्त्री
निष्फलः	१५. व्यर्थ ही	कोश	७. खजाना तथा
गतः	१६. चला गया	भूषु	८. पृथ्वी के (लोभ में)
राज्यश्रियः	२. राज्य लक्ष्मी के कारण	असज्जमानस्य	९. फँसे हुये
उन्नद्धमदस्य	३. मदमत्त होते हुये (तथा)	दुरन्त	१३. अपार
भूपतेः ।	११. राजा का	चिन्तया ॥	१४. चिन्ता से

श्लोकार्थ—हे अजेय ! राज्य लक्ष्मी के कारण मदमत्त होते हुये तथा मरणशील शरीर को आत्मा समझकर पुत्र, स्त्री, खजाना तथा पृथ्वी के लोभ में फंसे हुये मुझ राजा का यह समय अपार चिन्ता से व्यर्थ ही चला गया ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

कलेवरेऽस्मिन् घटकुड्यसन्निभे निरूढमानो नरदेव इत्यहम् ।
वृतो रथेभाश्वपदात्यनीकपैर्गां पर्यटंस्त्वागणयन् सुदुर्मदः ॥४९॥

पदच्छेद— कलेवरे अस्मिन् घटकुड्य सन्निभे निरूढमानः नरदेव इति अहम् ।
वृतः रथ इभ अश्व पदाति अनीकपैः गाम: पर्यटन् त्वा अगणयन् सुदुर्मदः ॥

शब्दार्थ—

कलेवरे	५.	शरीर में	वृतः	१४.	घिरा हुआ मैं
अस्मिन्	४.	इस	रथ इभ अश्व	११.	रथ, हाथी, घोड़े
घट	१.	घड़े और	पदाति	१२.	पैदल और
कुड्य	२.	भीत के	अनीकपैः	१३.	सेनापतियों से
सन्निभे	३.	समान	गाम्	१५.	पृथ्वी पर
निरूढमानः	८.	मान लिया था	पर्यटन्	१६.	घूमता रहता था
नरदेव इति	७.	अपने को राजा यह	त्वा अगणयन्	१०.	आपको न गिनता हुआ
अहम् ।	६.	मैंने	सुदुर्लभम् ॥	९.	इस प्रकार मदान्ध होकर

श्लोकार्थ—घड़े और भीत के समान इस शरीर में मैंने अपने को राजा यह मान लिया था इस प्रकार मदान्ध होकर आपको न गिनता हुआ, रथ, हाथो, घोड़े पैदल और सेनापतियों से घिरा हुआ मैं पृथ्वी पर घूमता रहता था ॥

पञ्चाशः श्लोकः

प्रमत्तमुच्चैरितिकृत्यचिन्तया प्रवृद्धलोभं विषयेषु लालसम् ।
त्वमप्रमत्तः सहसाभिपद्यसे क्षुल्लेलिहानोऽहिरिवाखुमन्तकः ॥५०॥

पदच्छेद— प्रमत्तम् उच्चैः इतिकृत्य चिन्तया प्रवृद्ध लोभम् विषयेषु लालसम् ।
त्वम् अप्रमत्तः सहसा अभिपद्यसे क्षुत्लेलिहानः अहिः इव आखुम् अन्तकः ॥

शब्दार्थ—

प्रमत्तम्	४.	प्रमाद करने वाले (तथा)	त्वम्	९.	आप
उच्चैः	३.	अत्यन्त	अप्रमत्तः	१०.	सावधान रहकर
इतिकृत्य	१.	कर्तव्य कर्मों की	सहसा	११.	उसी प्रकार एकाएक
चिन्तया	२.	चिन्ता से	अभिपद्यसे	१२.	टूट पड़ते हैं
प्रवद्ध	५.	बढ़े हुये	क्षुत्लेलिहानः	१४.	जीभ लपलपाता हुआ
लोभम्	६.	लोभ और	अहिः इव	१३.	जैसे साँप
विषयेषु	७.	विषयों के प्रति	आखुम्	१६.	चूहे पर टूट पड़ता है
लालसम् ।	८.	लालसा वाले मनुष्य पर	अन्तकः ॥	१५.	काल रूप से

श्लोकार्थ—कर्तव्य कर्मो की चिन्ता से अत्यन्त प्रमाद करने वाले तथा बढ़े हुये लोभ और विषयों के प्रति लालसा वाले मनुष्य पर आप सावधान रह कर उसी प्रकार एकाएक टूट पड़ते हैं जैसे सांप जीभ लपलपाता हुआ काल रूप से चूहे पर टूट पड़ता है ॥

एकपञ्चाशः श्लोकः

पुरा रथैर्हेमपरिष्कृतैश्चरन् मतङ्गजैर्वा नरदेवसंज्ञितः ।
स एव कालेन दुरत्ययेन ते कलेवरो विट्कृमिभस्मसंज्ञितः ॥५१॥

पदच्छेद— पुरा रथैः हेम परिष्कृतैः चरन् मतङ्गजैः वा नरदेव संज्ञितः ।
स: एव कालेन दुरत्ययेन ते कलेवरः विट् कृमि भस्म संज्ञितः ॥

शब्दार्थ—पुरा	१. पूर्व काल में (जो)	सः एव	९. वह ही
रथैः	४. रथों पर	कालेन	१२. काल का ग्रास बन जाता है तब फेंक देने पर
हेम	२. सोने के	दुरत्ययेन ते	११. आप के अबाध
परिष्कृतैः	३. बने हुये	कलेवरः	१०. शरीर जब
चरन् मतङ्गजैः	६. हाथियों पर चढ़ कर चलता था और	विट्	१३. (पक्षियों की विष्ठा)
वा	५. अथवा	कृमि	१४. (गाड़ देने पर) कीडा
नरदेव	७. राजा	भस्म	१५. जला देने पर राख
संज्ञितः ।	८. कहलाता था	संज्ञितः ॥	१६. नाम वाला हो जाता है

श्लोकार्थं—पूर्व काल में जो सोने के बने हुये रथों पर अथवा हाथियों पर चढ़ कर चलता था । और राजा कहलाता था । वही शरीर जब आप के अबाध काल का ग्रास बन जाता है । तब फेंक देने पर पक्षियों का विष्ठा, गाड़ देने पर कीड़ा, जला देने पर राख नाम वाला हो जाता है ॥

द्वापञ्चाशः श्लोकः

निर्जित्य दिक्चक्रमभूतविग्रहो वरासनस्थः समराजवन्दितः ।
गृहेषु मैथुन्यसुखेषु योषितां क्रीडामृगः पूरुष ईश नीयते ॥५२॥

पदच्छेद— निर्जित्य दिक् चक्रम् अभूत विग्रहः वरासनस्थः सम राज वन्दितः ।
गृहेषु मैथुन्य सुखेषु योषिताम् क्रीडामृगः पुरुषः ईश नीयते ॥

शब्दार्थ—निर्जित्य ३.	जीत कर	गृहेषु	१३. घरों में
दिक् चक्रम् २.	दिशाओं के समूह को	मैथुन्य	११. मैथुन्य जन्य
भूत ५.	परे	सुखेषु	१२. सुख मिलने पर
विग्रह ४.	युद्ध से	योषिताम्	१४. स्त्रियों के
वरासनस्थः ६.	श्रेष्ठ आसन पर विराजमान	क्रीडामृगः	१५. खेलने का पशु
सम ७.	तथा अपने समान	पुरुष	१०. वही पुरुष
राज ८.	राजाओं से	ईश	१. हे प्रभो !
वन्दितः । ९.	वन्दनीय था	नीयते ॥	१६. बन जाता है

श्लोकार्थं— हे प्रभो ! दिशाओं के समूह को जीत कर युद्ध से परे श्रेष्ठ आसन पर विराजमान तथा अपने समान राजाओं से वन्दिनीय था । वही पुरुष मैथुन्य जन्य सुख मिलने पर घरों में स्त्रियों के खेलने का पशु बन जाता है ॥

त्रिपञ्चाशः श्लोकः

करोति कर्माणि तपस्सुनिष्ठितो निवृत्तभोगस्तदपेक्षया ददत् ।
पुनश्च भूयेयमहं स्वराडिति प्रवृद्धतर्षो न सुखाय कल्पते ॥५३॥

पदच्छेद— करोति कर्माणि तपः सुनिष्ठितः निवृत्तभोगः तत् अपेक्षया ददत् ।
पुनः च भूयेयम् अहम् स्वराट् इति प्रवृद्ध तर्षः न सुखाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

करोति	१२. करता है (वह)	पुनः च	५. और फिर
कर्माणि	११. शुभ कर्मों को	भूयेयम्	८. होऊँ (यह सोच कर)
तपः	९. तपस्या में	अहम्	६. मैं
सुनिष्ठितः	१०. भली-भाँति स्थित होकर	स्वराट् इति	७. स्वतन्त्र सम्राट्
निवृत्तभोगः	१. जो विषय भोग त्याग कर	प्रवृद्ध	१३. बढ़ी हुई
तत्	२. राज्यादि भोग	तर्षः	१४. तृष्णा वाला (व्यक्ति)
अपेक्षया	३. मिलने की इच्छा से	न सुखाय	१५. सुखी नहीं
ददत् ।	४. दान पुण्य करता है	कल्पते ॥	१६. हो सकता है

श्लोकार्थ—जो विषय भोगत्याग कर राज्यादि भोग मिलने की इच्छा से दान पुण्य करता है । और फिर मैं स्वतन्त्र सम्राट होऊँ; यह सोच कर तपस्या में भली-भाँति स्थित होकर शुभ कर्मों को करता है वह बढ़ी हुई तृष्णा वाला व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता है ॥

चतुःपञ्चाशः श्लोकः

भवापवर्गो भ्रमतो यदा भवेज्जनस्य तर्ह्यच्युत सत्समागमः ।
सत्सङ्गमो यर्हि तदैव सद्गतौ परावरेशे त्वयि जायते मतिः ॥५४॥

पदच्छेद— भव अपवर्गः भ्रमतः यदा भवेत् जनस्य तर्हि अच्युत सत्समागमः ।
सत् सङ्गमः यर्हि तदैव सद्गतौ पर अवर ईशे त्वयि जायते मतिः ॥

शब्दार्थ—

भव	४. संसार से	सत्सङ्गमः	१०. सत्सङ्गति मिलती है
अपवर्गः	५. छूटने का समय	यर्हि	९. और जब
भ्रमतः यदा	२. जब चक्कर काटते हुये	तदैव	११. तब ही
भवेत्	६. प्राप्त होता है	सद्गतौ	१२. सन्तों के आश्रय
जनस्य	३. जीव को	पर	१३. कर्म
तर्हि	७. तब उसे	अवर	१४. कारण रूप
अच्युत	१. हे भगवन् !	ईश त्वयि	१५. जगत् के स्वामी आप में
सत्समागमः ।	८. सज्जनों का सङ्ग प्राप्त होता है	जायते मतिः ॥	१६. बुद्धि लग जाती है

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! जब चक्कर काटते हुये जीव को संसार से छूटने का समय प्राप्त होता है । तब उसे सज्जनों का सङ्ग प्राप्त होता है । और जब सत्सङ्गति मिलती है । तब ही सन्तों के आश्रय कर्म कारण रूप जगत् के स्वामी आप में बुद्धि लग जाती है ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

मन्ये ममानुग्रह ईश ते कृतो राज्यानुबन्धापगमो यदृच्छया ।
यः प्रार्थ्यते साधुभिरेकचर्यया वनं विविक्षद्भिरखण्डभूमिपैः ॥५५॥

पदच्छेद— मन्ये मम अनुग्रह ईश ते कृतः राज्य अनुबन्ध अपगमः यदृच्छया ।
यः प्रार्थ्यते साधुभिः एक चर्यया वनम् विविक्षद्भिः अखण्ड भूमिपैः ॥

शब्दार्थ—

मन्ये	२. मैं समझता हूँ कि	यः	१५. उस मोक्ष बन्धन की
मम अनुग्रह	४. मेरे ऊपर अनुग्रह	प्रार्थ्यते	१६. प्रार्थना किया करते हैं
ईश	१. हे प्रभो !	साधुभिः	१२. साधु स्वभाव के
ते	३. आपने	एकचर्यया	९. एकान्त सेवी
कृतः	५. किया है (जो)	वनम्	१०. वन में
राज्य अनुबन्ध	६. राज्य का बन्धन	विविक्षद्भिः	११. जाने के इच्छुक
अपगमः	८. टूट गया (क्योंकि)	अखण्ड	१३. चक्रवर्ती
यदृच्छया ।	७. अपने आप ही	भूमिपैः ॥	१४. राजा भी

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं समझता हूँ कि आपने मेरे ऊपर अनुग्रह किया है । जो राज्य-बन्धन अपने आप ही टूट गया । क्योंकि एकान्त सेवी वन में जाने के इच्छुक साधु स्वभाव के चक्रवर्ती राजा भी उस मोक्ष-बन्धन की प्रार्थना किया करते हैं ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

न कामयेऽन्यं तव पादसेवनादकिञ्चनप्रार्थ्यतमाद् वरं विभो ।
आराध्य कस्त्वां ह्यपवर्गदं हरे वृणीत आर्यो वरमात्मबन्धनम् ॥५६॥

पदच्छेद— न कामये अन्यम् तव पाद सेवनात् अकिञ्चन प्रार्थ्यतमात् वरम् विभो ।
आराध्य कस्त्वाम् हि अपवर्गदम् हरे वृणीति आर्यः वरम् आत्मबन्धनम् ॥

शब्दार्थ—

न कामये	८. नहीं चाहता हूँ	आराध्य	११. आराधना करके
अन्यम्	६. भिन्न	कस्त्वाम् हि	१२. कौन
तव	४. आपके	अपवर्गदम्	९. क्योंकि मोक्ष देने वाले
पादसेवनात्	५. चरणों की सेवा से	हरे	१०. हे भगवान् ! आपकी
अकिञ्चन	२. अभिमान रहित व्यक्ति के द्वारा	वृणीति	१६. माँगेगा
प्रार्थ्यतमात्	३. अत्यन्त प्रार्थनीय	आर्यः	१३. श्रेष्ठ पुरुष
वरम्	७. वरदान (मैं)	वरम्	१५. वरदान को
विभो ।	१. हे प्रभो !	आत्मबन्धनम्	१४. अपने को बाँधने वाले

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! अभिमान रहित व्यक्ति के द्वारा अत्यन्त प्रार्थनीय आपके चरणों की सेवा से भिन्न वरदान मैं नहीं चाहता हूँ । क्योंकि मोक्ष देने वाले हे भगवान् ! आपकी आराधना करके कौन श्रेष्ठ पुरुष अपने को बाँधने वाले वरदान को माँगेगा ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तस्माद् विसृज्याशिष ईश सर्वतो रजस्तमः सत्त्वगुणानुबन्धनः ।
निरञ्जनं निर्गुणमद्वयं परं त्वां ज्ञप्तिमात्रं पुरुषं व्रजाम्यहम् ।५७।

पदच्छेद— तस्मात् विसृज्य आशिष ईश सर्वतः रजः तमः सत्त्वगुण अनुबन्धनः ।
निरञ्जनम् निर्गुणम् अद्वयम् परम् त्वाम् ज्ञप्ति मात्रम् पुरुषम् व्रजाम्यहम् ।।

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	निरञ्जनम्	६.	माया से रहित
विसृज्य	८.	छोड़कर	निर्गुणम्	१०.	गुणातीत
आशिषः	७.	कामनाओं को	अद्वयम् परम्	११.	अद्वितीय परम
ईश सर्वतः	२.	हे प्रभो ! समस्त	त्वाम्	१५.	आपकी
रजः	३.	रजो गुण	ज्ञप्ति	१३.	चित्त ज्ञान स्वरूप
तमः	४.	तमो गुण (और)	मात्रम्	१४.	मात्र
सत्त्वगुण	५.	सत्त्व गुण से	पुरुषम्	१२.	पुरुष
अनुबन्धनः ।	६.	सम्बन्ध रखने वाली	व्रजाम्यहम् ।	१६.	मैं शरण ग्रहण करता हूँ

श्लोकार्थ—इसलिये हे प्रभो ! समस्त रजो गुण, तमो गुण, सत्त्वगुण से सम्बन्ध रखने वाली कामनाओं को छोड़कर माया से रहित, गुणातीत, अद्वितीय, परम पुरुष, चित्तज्ञान स्वरूप मात्र आपकी मैं शरण ग्रहण करता हूँ ।।

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

चिरमिह वृजिनार्तस्तप्यमानोऽनुतापैरवितृषषडमित्रोऽलब्धशान्तिः कथञ्चित् ।
शरणद समुपेतस्त्वत्पदाब्जं परात्मन्नभयमृतमशोकं पाहि माऽऽपन्नमीश ।।५८।।

पदच्छेद—चिरम् इह वृजिन आर्तः तप्यमानः अनुतापैः अवितृष षडमित्रः अलब्ध शान्तिः कथञ्चित् ।
शरणद समुपेतः त्वत् पदाब्जम् परात्मन् अभयमृतम् अशोकम् पाहि मा आपन्नम् ईश ।।

शब्दार्थ—

चिरम् इह	४.	चिर काल तक यहाँ	शरणद	३.	शरण दाता
वृजिन आर्तः	५.	पाप से पीड़ित	समुपेतः	१६.	आया हूँ
तप्यमानः	६.	सन्तप्त	त्वत्पदाब्जम्	१५.	आपके चरण कमलों की शरण में
अनुतापैः	७.	पश्चातापों और	परात्मन्	२.	परमात्मा
अवितृष	८.	तृष्णा से रहित	अभयममृतम्	१२.	भयऔर मृत्यु से रहित और
षडमित्रः	६.	छः शत्रुओं वाला	अशोकम्	१३.	शोक रहित
अलब्ध शान्ति	११.	शान्ति को नहीं पाने वाला	पाहि माआपन्नम्	१४.	मेरी रक्षा करें मैं
कथञ्चित् ।	१०.	किसी प्रकार भी	ईशः ।।	१.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! परमात्मा, शरण दाता चिरकाल तक यहाँ पाप से पीडित, सन्तप्त, पश्चातापों और तृष्णा से रहित, छः शत्रुओं वाला, किसी प्रकार भी शान्ति को नहीं पाने वाला, भय और मृत्यु से रहित और शोक-रहित मेरी रक्षा करें । मैं आपके चरण कमलों की शरण में आया हूँ ।।

एकोनषष्टितमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—सार्वभौम महाराज मतिस्ते विमलोर्जिता ।
वरैः प्रलोभितस्यापि न कामैर्विहता यतः ॥५९॥

पदच्छेद— सार्व भौमम् महाराज मतिः ते विमल उर्जिताः ।
वरैः प्रलोभितस्य अपि न कामैः विहता यतः ॥

शब्दार्थ—

सार्व भौमम्	१.	हे चक्रवर्ती !	वरैः	७.	वरदानों से
महाराज	२.	महाराज	प्रलोभितस्य	८.	लुभाये जाने पर
मतिः	४.	बुद्धि	अपि न	९.	भी नहीं
ते	३.	तुम्हारी	कामैः	१०.	कामनाओं से
विमल	५.	निर्मल और	विहता	११.	नष्ट हुई
ऊर्जिता ।	६.	उच्चकोटि की है (जो)	यतः ॥	१२.	जो कि

श्लोकार्थ—हे चक्रवर्ती महाराज ! तुम्हारी बुद्धि निर्मल ओर उच्चकोटि की है । जो कि वरदानों से लुभाये जाने पर भी कामनाओं से नष्ट नहीं हुई ॥

षष्टितमः श्लोकः

प्रलोभितो वरैर्यत्त्वमप्रमादाय विद्धि तत् ।
न धीर्मय्येकभक्तानामाशीर्भिर्भिद्यते क्वचित् ॥६०॥

पदच्छेद— प्रलोभितः वरैं यत्त्वम् अप्रमादाय विद्धि तत् ।
न धीः मयि एक भक्तानाम् आशीर्भिः भिद्यते क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

प्रलोभितः	२.	लुभाये जाने पर भी	न	१३.	नहीं होती है
वरैः	१.	वरदानों से	धीः	९.	बुद्धि
यत्वम्	३.	जो तुमने	मयि एक	७.	मेरे अनन्य
अप्रमादाय	४.	लोभ नहीं किया	भक्तानाम्	८.	भक्तों की
विद्धि	६.	समझो कि	अशीर्भिः	११.	कामनाओं के
तत् ।	५.	यह	भिद्यते	१२.	अधीन
			क्वचित् ॥	१०.	कहीं भी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वरदानों से लुभाये जाने पर भी जो तुमने लोभ नहीं किया यह समझो कि मेरे अनन्य भक्तों की बुद्धि कहीं भी कामनाओं के अधीन नहीं होती है ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

युञ्जानानामभक्तानां प्राणायामादिभिर्मनः ।
अक्षीणवासनं राजन् दृश्यते पुनरुत्थितम् ॥६१॥

पदच्छेद— युञ्जानानाम् अभक्तानाम् प्राणायाम आदिभिः मनः ।
अक्षीण वासनम् राजन् दृश्यते पुनः उत्थितम् ॥

शब्दार्थ—

युञ्जानानाम्	४.	मन को एकाग्र करने वाले	अक्षीण	८.	क्षीण न होने के कारण
अभक्तानाम्	५.	अभक्तों का	वासनम्	७.	वासना के
प्राणायाम	२.	प्राणायाम	राजन्	१.	हे राजन् !
आदिभिः	३.	आदि के द्वारा	दृश्यते	११.	दिखाई देता है
मनः ।	६	मन	पुनः	९.	फिर से
			उत्थितम् ॥	१०.	उठा हुआ

श्लोकार्थ—हे राजन् ! प्राणायाम आदि के द्वारा मन को एकाग्र करने वाले अभक्तों का मन वासना के क्षीण न होने के कारण फिर से उठा हुआ दिखाई देता है ॥

द्विषष्टितमः श्लोकः

विचरस्व महीं कामं मय्यावेशितमानसः ।
अस्त्वेव नित्यदा तुभ्यं भक्तिर्मय्यनपायिनी ॥६२॥

पदच्छेद— विचरस्व महीम् कामम् मयि आवेशित मानसः ।
अस्तु एव नित्यदा तुभ्यम् भक्तिः मयि अनपायिनी ॥

शब्दार्थ—

विचरस्व	६.	विचरण करो	अस्तु	१३.	प्राप्त
महीम्	४.	पृथ्वी पर	एव	१२.	ही
कामम्	५.	इच्छा पूर्वक	नित्यदा	११.	नित्य
मयि	१.	मुझ में	तुभ्यम्	१०.	तुम्हें
आवेशित	३.	लगा कर	भक्तिः	९.	भक्ति
मानसः ।	२.	मन को	मयि	७.	मेरी
			अनपायिनी ॥	८.	अविनाशिनी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! मुझ में मन को लगा कर पृथ्वी पर विचरण करो । तथा मेरी अविनाशिनी भक्ति तुम्हें नित्य ही प्राप्त है ।

त्रिषष्टितमः श्लोकः

क्षात्रधर्मस्थितो जन्तून् न्यवधीर्मृगयादिभिः ।
समाहितस्तत्तपसा जह्यघं मदुपाश्रितः ॥६३॥

पदच्छेद— क्षात्रधर्म स्थितः जन्तून् न्यवधीः मृगया आदिभिः ।
समाहितः तत् तपसा जहि अघम् मत् उपाश्रितः ॥

शब्दार्थ—

क्षात्रधर्म	१.	क्षत्रिय धर्म में	समाहितः	७.	एकाग्रचित्त से
स्थितः	२.	स्थित होकर (तुमने)	तत् तपसा	१०.	तपस्या के द्वारा उस
जन्तून्	५.	प्राणियों का	जहि	१२.	धो डालो
न्यवधीः	६.	वध किया है	अघम्	११.	पाप को
मृगया	३.	शिकार	मत्	८.	मेरी
आदिभिः ।	४.	आदि के द्वारा	उपाश्रितः ॥	९.	उपासना करते हुये तुम

श्लोकार्थ—हे राजन् ! क्षत्रिय धर्म में स्थित होकर तुमने शिकार आदि के द्वारा प्राणियों का वध किया है। एकाग्रचित्त से मेरी उपासना करते हुये तुम तपस्या के द्वारा उस पाप को धो डालो ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

जन्मन्यनन्तरे राजन् सर्वभूतसुहृत्तमः ।
भूत्वा द्विजवरस्त्वं वै मामुपैष्यसि केवलम् ॥६४॥

पदच्छेद— जन्मनि अनन्तरे राजन् सर्वभूत सुहृत्तमः ।
भूत्वा द्विजवरः त्वम् वै माम् उपैष्यसि केवलम् ॥

शब्दार्थ—

जन्मनि	२.	इस जन्म के	भूत्वा	९.	होकर
अन्तरे	३.	पश्चात् (तुम)	द्विजवरः	४.	श्रेष्ठ ब्राह्मण (तथा)
राजन्	१.	हे राजन् !	त्वम् वै	१०.	निश्चित रूप से तुम
सर्व	५.	सभी	माम्	११.	मुझे
भूत	६.	प्राणियों के	उपैष्यसि	१२.	प्राप्त कर लोगे
सुहृत्तमः ।	७.	परम सुहृद्	केवलम् ॥	८	द्वैत भाव से रहित

श्लोकार्थ— राजन् ! इस जन्म के पश्चात् श्रेष्ठ ब्राह्मण तथा सभी प्राणियों के सुहृद, द्वैत भाव से रहित होकर निश्चित रूप से तुम मुझे प्राप्त कर लोगे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
मुचुकुन्दस्तुतिर्नाम एकपञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५१॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

द्विपञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्थं सोऽनुगृहीतोऽङ्ग कृष्णेनेक्ष्वाकुनन्दनः ।
तं परिक्रम्य सन्नम्य निश्चक्राम गुहामुखात् ।।१।।

पदच्छेद— इत्थम् सः अनुगृहीतः अङ्ग कृष्णेन इक्ष्वाकुनन्दनः ।
तम् परिक्रम्य सन्नम्य निश्चक्राम गुहा मुखात् ।।

शब्दार्थ—

इत्थम्	५.	इस प्रकार	नन्दनः ।	४.	नन्दन (मुचुकुन्द)
सः	२.	वे	तम्	८.	उनकी
अनुगृहीतः	७.	अनुगृहीत होकर	परिक्रम्य	९.	परिक्रमा करके
अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !	सन्नम्य	१०.	नमस्कार किया एवं
कृष्णेन	६.	श्रीकृष्ण के द्वारा	निश्चक्राम	१२.	बाहर निकल गये
इक्ष्वाकु	३.	इक्ष्वाकु	गुहामुखात् ।।	११.	गुफा से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! वे इक्ष्वाकुनन्दन मुचुकुन्द इस प्रकार श्रीकृष्ण के द्वारा अनुगृहीत होकर उनकी परिक्रमा करके नमस्कार किया एवम् गुफा से बाहर निकल गये ।।

द्वितीयः श्लोकः

स वीक्ष्य क्षुल्लकान् मर्त्यान् पशून् वीरुद्वनस्पतीन् ।
मत्वा कलियुगं प्राप्तं जगाम दिशमुत्तराम् ।।२।।

पदच्छेद— सः वीक्ष्य क्षुल्लकान् मर्त्यान् पशून् वीरुद् वनस्पतीन् ।
मत्वा कलि युगम् प्राप्तम् जगाम दिशम् उत्तराम् ।।

शब्दार्थ—

सः	१.	वे (राजा मुचुकुन्द)	मत्वा	१०	मानकर
वीक्ष्य	७.	देखकर	कलियुगम्	८.	कलियुग
क्षुल्लकान्	२.	छोटे आकार के	प्राप्तम्	९.	आ गया है (ऐसा)
मर्त्यान्	३.	मनुष्यों	जगाम	१३.	चल पड़े
पशून्	४.	पशुओं	दिशम्	१२.	दिशा की ओर
वीरुद्	५.	लताओं और	उत्तराम् ।।	११.	उत्तर
वनस्पतीन् ।	६.	वृक्षों को			

श्लोकार्थ—वे राजा मुचुकुन्द छोटे आकार के मनुष्यों, पशुओं, लताओं और वृक्षों को देखकर कलियुग आ गया है ऐसा मानकर उत्तर दिशा की ओर चल पड़े ।।

तृतीयः श्लोकः

तपःश्रद्धायुतो धीरो निःसङ्गो मुक्तसंशयः ।
समाधाय मनः कृष्णे प्राविशद् गन्धमादनम् ॥३॥

पदच्छेद— तपः श्रद्धा युतः धीरः निःसङ्गः मुक्त संशयः ।
समाधाय मनः कृष्णे प्राविशत् गन्धमादनम् ॥

शब्दार्थ—

तपः	१.	तपस्या और	संशयः ।	६.	सन्देह से
श्रद्धा	२.	श्रद्धा से	समाधाय	१०.	लगा कर
युतः	३.	युक्त	मनः	८.	मन को
धीरः	४.	धीर	कृष्णे	९.	श्रीकृष्ण में
निःसङ्गः	५.	आसक्ति रहित (तथा)	प्राविशत्	१२.	जा पहुँचे
मुक्त	७.	मुक्त हो कर	गन्धमादनम् ॥	११.	गन्धमादन पर्वत पर

श्लोकार्थ—तपस्या और श्रद्धा से युक्त, धीर, आसक्ति रहित, तथा सन्देह से मुक्त होकर मन को श्रीकृष्ण में लगा कर गन्धमादन पर्वत पर जा पहुँचे ॥

चतुर्थः श्लोकः

बदर्याश्रममासाद्य नरनारायणालयम् ।
सर्वद्वन्द्वसहः शान्तस्तपसाऽऽराधयद्धरिम् ॥४॥

पदच्छेद— बदरी आश्रमम् आसाद्य नर नारायण आलयम् ।
सर्वद्वन्द्व सहः शान्तः तपसा आराधयत् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

बदरी	४.	बदरिका	सर्वद्वन्द्व	७.	सभी सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों को
आश्रमम्	५.	आश्रम में	सहः	८.	सहते हुये
आसाद्य	६.	जा कर	शान्तः	९.	शान्त हो कर
नर	१.	वे नर और	तपसा	१०.	तपस्या के द्वारा
नारायण	२.	नारायण के	आराधयत्	१२.	आराधना करने लगे
आलयम् ।	३.	निवास स्थान	हरिम् ॥	११.	भगवान् की

श्लोकार्थ—वे नर और नारायण के निवास स्थान बदरिकाश्रम में जा कर सभी सुख-दुःख आदि द्वन्द्वों को सहते हुये शान्त होकर तपस्या के द्वारा भगवान् की आराधना करने लगे ॥

पञ्चमः श्लोकः

भगवान् पुनराव्रज्य पुरीं यवनवेष्टिताम् ।
हत्वा म्लेच्छबलं निन्ये तदीयं द्वारकां धनम् ॥५॥

पदच्छेद— भगवान् पुनः आव्रज्य पुरीम् यवन वेष्टिताम् ।
हत्वा म्लेच्छ बलम् निन्ये तदीयम् द्वारकाम् धनम् ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२.	भगवान् (श्रीकृष्ण)	हत्वा	९.	मार कर
पुनः	१.	फिर	मलेच्छ	७.	मलेच्छों की
आव्रज्य	६.	लौट कर (और)	बलम्	८.	सेना को
पुरीम्	५.	मथुरा पुरी को	निन्ये	१३.	ले गये
यवन	३.	कालयवन से	तदीयम्	१०.	उसका
वेष्टिताम् ।	४.	घिरी हुई	द्वारकाम्	१२.	द्वारका को
			धनम् ॥	११.	धन

श्लोकार्थ—फिर भगवान् श्रीकृष्ण कालयवन से घिरी हुई मथुरा पुरी को लौट कर और म्लेच्छों की सेना को मार कर उसका धन द्वारका को ले गये ॥

षष्ठः श्लोकः

नीयमाने धने गोभिर्नृभिश्चाच्युतचोदितैः ।
आजगाम जरासन्धस्त्रयोविंशत्यनीकपः ॥६॥

पदच्छेद— नीयमाने धने गोभिः नृभिः च अच्युत चोदितैः ।
आजगाम जरासन्धः त्रयोविंशति अनीकपः ॥

शब्दार्थ—

नीयमाने	७.	ले जाया जाने लगा (तब)	चोदितैः ।	२.	प्रेरणा से (जब)
धने	६.	वह धन	आजगाम	११.	आ धमका
गोभिः	५.	बैलों पर	जरासन्ध	१०.	जरासन्ध
नृभिः	३.	मनुष्यों	त्रयोविंशति	८.	तेईस अक्षौहिणी
च	४.	और	अनीकपः ।	९.	सेना के साथ
अच्युत	१.	भगवान् श्रीकृष्ण की			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण की प्रेरणा से जब मनुष्यों और बैलों पर वह धन ले जाया जाने लगा । तब तेईस अक्षौहिणी सेना के स.थ जरासन्ध आ धमका ॥

सप्तमः श्लोकः

विलोक्य वेगरभसं रिपुसैन्यस्य माधवौ ।
मनुष्यचेष्टामापन्नौ राजन् दुद्रुवतुर्द्रुतम् ॥७॥

पदच्छेद— विलोक्य वेग रभसम् रिपु सैन्यस्य माधवौ ।
मनुष्य चेष्टाम् आपन्नौ राजन् दुद्रुवतुः द्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	६.	देखकर	मनुष्य	८.	मनुष्यों की सी
वेग	५.	वेग	चेष्टाम्	९.	लीला
रभसम्	४.	प्रबल	आपन्नौ	१०.	करते हुये
रिपु	२.	शत्रु	राजन्	१.	हे राजन् !
सैन्यस्य	३.	सेना का	दुद्रुवतुः	१२.	भाग निकले
माधवौ ।	७	श्रीकृष्ण और बलराम	द्रुतम् ॥	११.	फुर्ती के साथ

श्लोकार्थ—हे राजन् ! शत्रु सेना का प्रबल वेग देख कर श्रीकृष्ण और बलराम मनुष्यों की सी लीला करते हुये फुर्ती के साथ भाग निकले ॥

अष्टमः श्लोकः

विहाय वित्तं प्रचुरमभीतौ भीरुभीतवत् ।
पद्भ्यां पद्मपलाशाभ्यां चेरतुर्बहुयोजनम् ॥८॥

पदच्छेद— विहाय वित्तम् प्रचुरम् भीतौ भीरु भीतवत् ।
पद्भ्याम् पद्म पलाशाभ्याम् चेरतुः बहु योजनम् ॥

शब्दार्थ—

विहाय	६.	छोड़कर	पद्भ्याम्	९.	कोमल चरणों से
वित्तम्	५.	धन	पद्म	७.	कमल
प्रचुरम्	४.	बहुत सा	पलाशाभ्याम्	८.	दल के समान
भीतौ	१.	भयभीत के समान	चेरतुः	१२.	भागते चले गये
भीरु	२.	डरपोक और	बहु	१०.	अनेक
भीतवत् ।	३.	भयभीत होकर	योजनम् ॥	११.	योजनों तक

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण भयभीत के समान डरपोक और भयभीत होकर बहुत साधन छोड़कर कमल दल के समान कोमल चरणों से अनेक योजनों तक भागते चले गये ॥

नवमः श्लोकः

पलायमानौ तौ दृष्ट्वा मागधः प्रहसन् बली ।
अन्वधावद् रथानीकैरीशयोरप्रमाणवित् ॥९॥

पदच्छेद— पलायमानौ तौ दृष्ट्वा मागधः प्रहसन् बली ।
अन्वधावत् रथ अनीकैः ईशयोः अप्रमाणवित् ॥

शब्दार्थ—

पलायमानौ	२.	भागते हुये	अन्वधावत्	११.	उनका पीछा करने लगा
तौ	१.	उन दोनों को	रथ	९.	अपने रथ और
दृष्ट्वा	३.	देखकर	अनीकैः	१०.	सेना के साथ
मागधः	७.	जरासन्ध ने	ईशयोः	४.	ईश्वरों के
प्रहसन्	८.	हंसते हुये	अप्रमाणवित् ॥	५.	प्रभाव आदि को न जानने वाले
बली ।	६.	बलवान्			

श्लोकार्थ—उन दोनों को भागते हुये देखकर ईश्वरों के प्रभाव आदि को न जानने वाले बलवान् जरासन्धने हंसते हुये अपने रथ और सेना के साथ उनका पीछा किया ॥

दशमः श्लोकः

प्रद्रुत्य दूरं संश्रान्तौ तुङ्गमारुहतां गिरिम् ।
प्रवर्षणाख्यं भगवान् नित्यदा यत्र वर्षति ॥१०॥

पदच्छेद— प्रद्रुत्य दूरम् संश्रान्तौ तुङ्गम् आरुहताम् गिरिम् ।
प्रवर्षण आख्यम् भगवान् नित्यदा यत्र गिरिम् ॥

शब्दार्थ—

प्रद्रुत्य	२.	दौड़ने से	प्रवर्षण	४.	प्रवर्षण
दूरम्	१.	दूर तक	आख्यम्	५.	नामक
संश्रान्तौ	३.	थके हुये (दोनों भाई)	भगवान्	१०.	मेघ
तुङ्गम्	६.	बहुत ऊंचे	नित्यदा	११.	नित्य
आरुहताम्	८.	चढ़ गये	यत्र	९.	जहां
गिरिम् ।	७.	पर्वत पर	गिरिम् ॥	१२.	वर्षा करता था

श्लोकार्थ—दूर तक दौड़ने से थके हुये दोनों भाई प्रवर्षण नामक बहुत ऊँचे पर्वत पर चढ़ गये, जहाँ मेघ नित्य वर्षा करता था ॥

एकादशः श्लोकः

गिरौ निलीनावाज्ञाय नाधिगम्य पदं नृप ।
ददाह गिरिमेधोभिः समन्तादग्निमुत्सृजन् ॥११॥

पदच्छेद— गिरौ निलीनौ आज्ञाय न अधिगम्य पदम् नृप ।
ददाह गिरिम् एधोभिः समन्तात् अग्निम् उत्सृजन् ॥

शब्दार्थ—

गिरौ	२.	पहाड़ में	ददाह	१३.	जला दिया
निलीनौ	३.	छिपे हुये	गिरिम्	९.	पर्वत को
आज्ञाय	४.	जान कर	एधोभिः	८.	ईंधन से भरे हुये
न	६.	न	समन्तात्	१२.	चारों ओर से
अधिगम्य	७.	पाकर (जरासन्ध ने)	अग्निम्	१०.	आग
पदम्	५.	उनका पता	उत्सृजन् ॥	११.	लगवा कर
नृप ।	१.	हे राजन् ! (उन्हें)			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! पहाड़ों में छिपे हुये जान कर उनका पता न पाकर जरासन्ध ने ईंधन से भरे हुये पहाड़ में आग लगवा कर चारों ओर से जला दिया ॥

द्वादशः श्लोकः

तत उत्पत्य तरसा दह्यमानतटादुभौ ।
दशैकयोजनोत्तुङ्गान्निपेततुरधो भुवि ॥१२॥

पदच्छेद— तत उत्पत्य तरसा दह्यमान तटात् उभौ ।
दशैकयोजन उत्तुङ्गात् निपेततुः अधो भुवि ॥

शब्दार्थ—

ततः	४.	उस	दशैकयोजन	५.	ग्यारह योजन
उत्पत्य	८.	उछल कर	उत्तुङ्गात्	६.	ऊँचे पर्वत से
तरसा	७.	वेग के साथ	निपेततुः	११.	कूद पड़े
दह्यमान	२.	जलते हुये	अधो	९.	नीचे
तटात्	३.	तट वाले	भुवि ॥	१०.	धरती पर
उभौ ।	१.	दोनों भाई			

श्लोकार्थ—दोनों भाई जलते हुये तटों वाले उस ग्यारह योजन ऊँचे पर्वत से वेग के साथ उछल कर नीचे धरती पर कूद पड़े ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अलक्ष्यमाणौ रिपुणा सानुगेन यदूत्तमौ ।
स्वपुरं पुनरायातौ समुद्रपरिखां नृप ॥१३॥

पदच्छेद— अलक्ष्यमाणौ रिपुणा स अनुगेन यद् उत्तमौ ।
स्वपुरम् पुनः आयातौ समुद्र परिखाम् नृप ॥

शब्दार्थ—

अलक्ष्यमाणौ	६.	अदृश्य हो कर	स्वपुरम्	९.	अपनी पुरी द्वारका में
रिपुणा	५.	शत्रु से	पुनः	१०.	फिर से
स अनुगेन	४.	अनुयायियों सहित	आयातौ	११.	आ गये
यद्	२.	यदुवंशियों में	समुद्र	७.	समुद्र से
उत्तमौ ।	३.	श्रेष्ठ दोनों भाई	परिखाम्	८.	घिरी हुई
			नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यदुवंशियों में श्रेष्ठ दोनों भाई अनुयायिओं से सहित शत्रु से अदृश्य हो कर समुद्र से घिरी हुई अपनी पुरी द्वारका में फिर से आ गये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सोऽपि दग्धाविति मृषा मन्वानो बलकेशवौ ।
बलमाकृष्य सुमहन्मगधान् मागधो ययौ ॥१४॥

पदच्छेद— सः अपि दग्धौ इति मृषा मन्वानः बलकेशवौ ।
बलम आकृष्य सुमहत् मगधान् मागधः ययौ ॥

शब्दार्थ—

सः अपि	१.	वह भी	बलम्	९.	सेना को
दग्धौ	४.	जले हुये	आकृष्य	१०.	लौटा कर
इति	५.	ऐसा	सुमहत्	८.	बहुत बड़ी
मृषा	६.	झूठ-मूठ	मगधान्	११.	मगध देश को
मन्वानः	७.	मान कर अपनी	मागधः	२.	जरासन्ध
बलकेशवौ ।	३.	बलराम और श्रीकृष्ण को	ययौ ॥	१२.	चला गया

श्लोकार्थ—वह जरासन्ध भी बलराम और श्रीकृष्ण को जले हुये ऐसा झूठ-मूठ मान कर अपनी बहुत बड़ी सेना को लौटा कर मगध देश को चला गया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

आनर्ताधिपतिः श्रीमान् रैवतो रेवतीं सुताम् ।
ब्रह्मणा चोदितः प्रादाद् बलायेति पुरोदितम् ॥१५॥

पदच्छेद — आनर्त अधिपतिः श्रीमान् रैवतः रेवतीम् सुताम् ।
ब्रह्मणा चोदितः प्रादात् बलाय इति पुरा उदितम् ॥

शब्दार्थ—

आनर्तं	४.	आनर्त देश के	ब्रह्मणा	८.	ब्रह्मा जी के
अधिपतिः	५.	राजा	चोदितः	९.	कहने से
श्रीमान्	६.	श्रीमान्	प्रादात्	१३.	दे दी थी
रैवत	७.	रैवत ने	बलाय	१२.	बलराम जी को
रेवतीम्	११.	रेवती	इति	३.	कि
सुताम् ।	१०.	अपनी पुत्री	पुरा	१.	पहले नवम स्कन्ध में मैं
			उदितम् ॥	२.	कह चुका हूँ

श्लोकार्थ—पहले नवम स्कन्ध में कह चुका हूँ कि आनर्त देश के राजा श्रीमान् रैवत ने ब्रह्मा जी के कहने से अपनी पुत्री रेवती बलराम जी को दे दी थी ॥

षोडशः श्लोकः

भगवानपि गोविन्द उपयेमे कुरूद्वह ।
वैदर्भीं भीष्मकसुतां श्रियो मात्रां स्वयंवरे ॥१६॥

पदच्छेद— भगवान् अपि गोविन्दः उपयेमे कुरूद्वह ।
वैदर्भीम् भीष्मक सुताम् श्रियः मात्राम् स्वयंवरे ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२.	भगवान्	वैदर्भीम्	९.	रुक्मिणी से
अपि	४.	भी	भीष्मक	५.	भीष्मक की
गोविन्द	३.	गोविन्द ने	सुताम्	६.	पुत्री
उपयेमे	११.	विवाह कर लिया	श्रियः	७.	लक्ष्मी का
कुरूद्वह।	१.	हे परीक्षित् !	मात्राम्	८.	अवतार
			स्वयंवरे ॥	१०.	स्वयम्वर में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् गोविन्द ने भी भीष्मक की पुत्री लक्ष्मी की अवतार रुक्मिणी से स्वयम्बर में विवाह कर लिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

प्रमथ्य तरसा राज्ञः शाल्वादींश्चैद्यपक्षगान् ।
पश्यतां सर्वलोकानां तार्क्ष्यपुत्रः सुधामिव ।।१७।।

पदच्छेद— प्रमथ्य तरसा राज्ञः शाल्वादीन् चैद्य पक्षगान् ।
पश्यताम् सर्वलोकानाम् तार्क्ष्य पुत्रः सुधाम् इव ।।

शब्दार्थ—

प्रमथ्य	६.	हरा कर	पश्यताम्	६.	देखते-देखते (रुक्मिणी को हर लिया)
तरसा	५.	बल पूर्वक	सर्व	७.	सभी
राज्ञः	४.	राजाओ को	लोकानाम्	८.	लोगों के
शाल्वादिभिः	३.	शाल्वादि	तार्क्ष्यपुत्र	११.	गरुड़ ने
चैद्य	१.	शिशुपाल और	सुधाम्	१२.	अमृत का हरण किया था
पक्षगान् ।	२.	उसके पक्षपाती	इव ।।	१०.	जिस प्रकार

श्लोकार्थ—शिशुपाल और उसके पक्षपाती शाल्वादि राजाओं को बलपूर्वक हराकर सभी लोगों के देखते-देखते रुक्मिणी को हर लिया। जिस प्रकार गरुड़ ने अमृत का हरण किया था ।।

अष्टादशः श्लोकः

राजोवाच— **भगवान् भीष्मकसुतां रुक्मिणीं रुचिराननाम् ।**
राक्षसेन विधानेन उपयेम इति श्रुतम् ।।१८।।

पदच्छेद— भगवान् भीष्मक सुताम् रुक्मिणीम् रुचिर आननाम् ।
राक्षसेन विधानेन उपयेमे इति श्रुतम् ।।

शब्दार्थ—

भगवान्	१.	भगवान् ने	राक्षसेन	७.	राक्षस
भीष्मक	२.	भीष्मक की	विधानेन	८.	विधि से
सुताम्	३.	पुत्री	उपयेमे	६.	विवाह किया था
रुक्मिणीम्	६.	रुक्मिणी से	इति	१०.	ऐसा
रुचिर	४.	सुन्दर	श्रुतम् ।।	११.	हमने सुना है
आननाम् ।	५.	मुखवाली			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने भीष्मक की पुत्री सुन्दर मुख वाली रुक्मिणी से राक्षस विधि से विवाह किया था, ऐसा हमने सुना है ।।

एकोनविंशः श्लोकः

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि कृष्णस्यामिततेजसः ।
यथा मागधशाल्वादीन् जित्वा कन्यामुपाहरत् ॥१९॥

पदच्छेद— भगवन् श्रोतुम् इच्छामि कृष्णस्य अमित तेजसः ।
यथा मागध शाल्व आदीन् जित्वा कन्याम् उपाहरत् ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	१.	भगवन् (मैं)	यथा	७.	जिस प्रकार उन्होंने
श्रोतुम्	५.	सुनना	मागध	८.	जरासन्ध
इच्छामि	६.	चाहता हूँ कि	शाल्व	९.	शाल्व
कृष्णस्य	४.	श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में	आदीन्	१०.	आदि को
अमित	२.	परम	जित्वा	११.	जीत कर
तेजसः ।	३.	तेजस्वी	कन्याम्	१२.	कन्या रुक्मिणी का
			उपाहरत् ॥	१३.	हरण किया था

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! मैं परम तेजस्वी श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में सुनना चाहता हूँ कि जिस प्रकार उन्होंने जरासन्ध शाल्वादि को जीत कर कन्या रुक्मिणी का हरण किया था ॥

विंशः श्लोकः

ब्रह्मन् कृष्णकथाः पुण्या माध्वीर्लोकमलापहाः ।
को नु तृप्येत शृण्वानः श्रुतज्ञो नित्यनूतनाः ॥२०॥

पदच्छेद - ब्रह्मन् कृष्ण कथाः पुण्याः माध्वीः लोक मल अपहाः ।
कः नु तृप्येत शृण्वानः श्रुतज्ञः नित्य नूतनाः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	कः नु	११.	कौन
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण की	तृप्येत	१२.	तृप्त हो सकता है
कथाः	९.	कथाओं के	शृण्वानः	१०.	सुनते हुये
पुण्याः	३.	पवित्र	श्रुतज्ञ	१२.	विद्वान्
माध्वीः	४.	मधुर	नित्य	७.	नित्य
लोक	५.	लोक के	नूतनाः ।	८.	नवीन
मल अपहा ।	६.	मल को दूर करने वाली			

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! श्रीकृष्ण की पवित्र, मधुर, लोक के मल को दूर करने वाली, नित्य नवीन कथाओं को सुनते हुये कौन विद्वान् तृप्त हो सकता है ॥

एकविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—राजाऽऽसीद् भीष्मको नाम विदर्भाधिपतिर्महान् ।
तस्य पञ्चाभवन् पुत्राः कन्यैका च वरानना ॥२१॥

पदच्छेद— राजा आसीत् भीष्मकः नाम विदर्भ अधिपतिः महान् ।
तस्य पञ्च अभवन् पुत्राः कन्या एका च वरानना ॥

शब्दार्थ—

राजा	४.	राजा	तस्य	८.	उनके
आसीत्	७.	थे	पञ्च	९.	पांच
भीष्मकः	१.	भीष्मक	अभवन्	१४.	हुई
नाम	२.	नामक	पुत्राः	१०.	पुत्र
विदर्भ	३.	विदर्भ देश के	कन्या	१३.	पुत्री
अधिपतिः	६.	शासक	एका च	११.	और
महान् ।	५.	महान्	वरानना ॥	१२.	सुन्दरी

श्लोकार्थ—भीष्मक नामक विदर्भ देश के राजा महान् शासक थे। उनके पाँच पुत्र और एक सुन्दरी पुत्री हुई ॥

द्वाविंशः श्लोकः

रुक्म्यग्रजो रुक्मरथो रुक्मबाहुरनन्तरः ।
रुक्मकेशो रुक्ममाली रुक्मिण्येषां स्वसा सती ॥२२॥

पदच्छेद— रुक्मी अग्रजः रुक्मरथः रुक्मबाहुः अनन्तरः ।
रुक्मकेशः रुक्ममाली रुक्मिणी एषाम् स्वसा सती ॥

शब्दार्थ—

रुक्मी	१.	रुक्मी	रुक्मकेशः	६.	रुक्मकेश
अग्रजः	२.	सब से बड़ा भाई था	रुक्ममाली	७.	रुक्ममाली और
रुक्मरथः	३.	रुक्मरथ	रुक्मिणि	१०.	रुक्मिणी थी
रुक्मबाहुः	४.	रुक्मबाहु	एषाम्	८.	इनकी
अनन्तरः ।	५.	उसके बाद	स्वसा सती ॥	९.	साध्वी बहन

श्लोकार्थ—रुक्मी सबसे बड़ा था। रुक्मरथ, रुक्मबाहु उसके बाद रुक्मकेश, रुक्ममाली और इनकी साध्वी बहन रुक्मणी थीं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

सोपश्रुत्य मुकुन्दस्य रूपवीर्यगुणश्रियः ।
गृहागतैर्गीयमानास्तं मेने सदृशं पतिम् ॥२३॥

पदच्छेद— सा उपश्रुत्य मुकुन्दस्य रूपवीर्य गुणश्रियः ।
गृह आगतैः गीयमानाः तम् मेने सदृशं पतिम् ॥

शब्दार्थ—

सा	१.	उसने	गृह	२.	घर पर
उपश्रुत्य	९.	सुनकर	आगतैः	३.	आये हुये
मुकुन्दस्य	५.	श्रीकृष्ण के	गीयमानाः	४.	गाये जाने वाले
रूप	६.	रूप	तम्	१०.	उन्हें
वीर्य	७.	वीर्य	मेने	१३.	माना
गुणश्रियः ।	८.	गुण और वैभव को	सदृश	११.	अपने समान
			पतिम् ॥	१२.	पति

श्लोकार्थ—उसने घर पर आये हुये अतिथियों से गाये जाते हुये श्रीकृष्ण के रूप वीर्य, गुण और वैभव को सुनकर उन्हें अपने समान पति माना ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तां बुद्धिलक्षणौदार्यरूपशीलगुणाश्रयाम् ।
कृष्णश्च सदृशीं भार्यां समुद्वोढुं मनो दधे ॥२४॥

पदच्छेद— ताम् बुद्धि लक्षण औदार्य रूपशील गुण आश्रयाम् ।
कृष्णः च सदृशीम् भार्याम् सुमुद्वोढुम् मनः दधे ॥

शब्दार्थ—

ताम्	७.	उस रुक्मिणी को	कृष्णः	८.	श्रीकृष्ण ने
बुद्धि	१.	बुद्धि	च	९.	भी अपने
लक्षण	२.	लक्षण	सदृशीम्	१०.	अनुरूप
औदार्य	३.	उदारता	भार्याम्	११.	पत्नी (मानकर उससे)
रूपशील	४.	रूप, शील और	सुमुद्वोढुम्	१२.	विवाह करने का
गुण	५.	गुणों की	मनः	१३.	मन में निश्चय
आश्रयाम् ।	६.	खान	दधे ॥	१४.	किया

श्लोकार्थ—हे राजन् ! बुद्धि, लक्षण, उदारता, रूपशील और गुणों की खान उस रुक्मिणी को भी अपने अनुरूप पत्नी मानकर उससे विवाह करने का निश्चय किया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

बन्धूनामिच्छतां दातुं कृष्णाय भगिनीं नृप ।
ततो निवार्य कृष्णद्विड् रुक्मी चैद्यममन्यत ॥२५॥

पदच्छेद— बन्धूनाम् इच्छताम् दातुम् कृष्णाय भगिनीम् नृप ।
ततः निवार्य कृष्ण द्विड् रुक्मी चैद्यम् अमन्यत ॥

शब्दार्थ—

बन्धूनाम्	५.	भाई बन्धुओं के	ततः निवार्य	८.	उन्हें रोककर
इच्छताम्	६.	चाहते हुये भी	कृष्ण	९.	श्रीकृष्ण के
दातुम्	४.	देना	द्विड्	१०.	द्रोही
कृष्णाय	२.	श्रीकृष्ण की	रुक्मी	७.	रुक्मीने
भगिनीम्	३.	बहन	चैद्यम्	११.	शिशुपाल को
नृप ।	१.	हे राजन् !	अमन्यत ॥	१२.	देना चाहा

श्लोकार्थ—हे राजन् ! श्रीकृष्ण को बहन देना भाई बन्धुओं के चाहते हुये भी रुक्मीने श्रीकृष्ण के द्रोही शिशुपाल को देना चाहा ।

षड्विंशः श्लोकः

तदवेत्यासितापाङ्गी वैदर्भी दुर्मना भृशम् ।
विचिन्त्याप्तं द्विजं कञ्चित् कृष्णाय प्राहिणोद् द्रुतम् ॥२६॥

पदच्छेद— तत् अवेत्य असित अपाङ्गी वैदर्भी दुर्मनाः भृशम् ।
विचिन्त्य आप्तम् द्विजम् कञ्चित् कृष्णाय प्राहिणोत् द्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	यह	विचिन्त्य	८.	सोच विचार करके
अवेत्य	२.	जानकर	आप्तम्	१०.	विश्वास पात्र
असित	३.	काले	द्विजम्	११.	ब्राह्मण को
अपाङ्गी	४.	नेत्रों वाली सुन्दरी	कञ्चित्	९.	किसी एक
वैदर्भी	५.	रुक्मिणी ने	कृष्णाय	१३.	कृष्ण के पास
दुर्मनाः	७.	उदास होकर	प्राहिणोत्	१४.	भेजा
भृशम् ।	६.	बहुत	द्रुतम् ॥	१२.	शीघ्र ही

श्लोकार्थ—यह जानकर काले नेत्रों वाली सुन्दरी रुक्मिणी ने बहुत उदास होकर सोच विचार करके किसी एक ब्राह्मण को शीघ्र ही श्रीकृष्ण के पास भेजा ॥

सप्तविंशः श्लोकः

द्वारकां स समभ्येत्य प्रतीहारैः प्रवेशितः ।
अपश्यदाद्यं पुरुषमासीनं काञ्चनासने ॥२७॥

पदच्छेद— द्वारकाम् सः समभ्येत्य प्रतीहारैः प्रवेशितः ।
अपश्यत् आद्यम् पुरुषम् आसीनम् काञ्चन आसने ॥

शब्दार्थ—

द्वारकाम्	२.	द्वारका	अपश्यत्	११.	देखा
सः	१.	उसने	आद्यम्	९.	आदि
समभ्येत्य	३.	पहुँच कर	पुरुषम्	१०.	पुरुष श्रीकृष्ण को
प्रतीहारैः	४.	द्वारपालों द्वारा	आसीनम्	८.	बैंठे हुये
प्रवेशितः ।	५.	(अन्तः पुर में) ले जाया जाने पर	काञ्चन	६.	सोने के
			आसने ॥	७.	सिंहासन पर

श्लोकार्थ—उसने द्वारका पहुँच कर द्वारपालों द्वारा अन्तः पुर में ले जाये जाने पर सोने के सिंहासन पर बैठे हुये आदि पुरुष श्रीकृष्ण को देखा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

दृष्ट्वा ब्रह्मण्यदेवस्तमवरुह्य निजासनात् ।
उपवेश्यार्हयाञ्चक्रे यथाऽऽत्मानं दिवौकसः ॥२८॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा ब्रह्मण्यदेवः तम् अवरुह्य निज आसनात् ।
उपवेश्य अर्हयाञ्चक्रे यथा आत्मानम् दिवौकसः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	३.	देख कर	उपवेश्य	६.	उन्हें बैठा कर
ब्रह्मण्यदेवः	१.	ब्रह्मणों के परम भक्त (श्रीकृष्ण ने)	अर्हयाञ्चक्रे	७.	उसी प्रकार पूजा को
तम्	२.	उन (ब्राह्मण को)	यथा	८.	जैसे
अवरुह्य	६.	उतर कर	आत्मानम्	१०.	उन श्रीकृष्ण की पूजा करते थे
निज	४	अपने	दिवौकसः ॥	९.	देवता लोग
आसनात् ।	५.	आसन से			

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के परम भक्त श्रीकृष्ण ने उन ब्राह्मणों को देख कर अपने आसन से उतर कर उन्हें बैठा कर उसी प्रकार पूजा को, जैसे देवता लोग उन श्रीकृष्ण की पूजा करते हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

तं भुक्तवन्तं विश्रान्तमुपगम्य सतां गतिः ।
पाणिनाभिमृशन् पादावव्यग्रस्तमपृच्छत ॥२९॥

पदच्छेद— तम् भुक्तवन्तम् विश्रान्तम् उपगम्य सताम् गतिः ।
पाणिना अभिमृशम् पादौ अव्यग्रस्तम् अपृच्छत ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उनके	पाणिना	७.	अपने हाथ से उनके
भुक्तवन्तम्	२.	भोजन और	अभिमृशम्	९.	सहलाते हुये
विश्रान्तम्	३.	विश्राम कर चुकने पर	पादौ	८.	दोनों चरणों को
उपगम्य	६.	पास जा कर	अव्यग्रस्तम्	१०.	शान्त भाव से
सताम्	४.	सज्जनों के	अपृच्छत ॥	११.	पूछा
गतिः ।	५.	आश्रय (भगवान् ने)			

श्लोकार्थ—उनके भोजन और विश्राम कर चुकने पर सज्जनों के आश्रय भगवान् ने पास जा कर अपने हाथ से उनके दोनों चरणों का सहलाते हुये पूछा ॥

त्रिंशः श्लोकः

कच्चिद् द्विजवरश्रेष्ठ धर्मस्ते वृद्धसम्मतः ।
वर्तते नातिकृच्छ्रेण संतुष्टमनसः सदा ॥३०॥

पदच्छेद— कश्चित् द्विजवर श्रेष्ठ धर्मः ते वृद्ध सम्मतः ।
वर्तते न अति कृच्छ्रेण संतुष्ट मनसः सदा ॥

शब्दार्थ—

कश्चित्	१०.	कहीं	वर्तते	१४.	होता है
द्विजवर	१.	हे ब्राह्मण !	न	१३.	नहीं
श्रेष्ठ	२.	श्रेष्ठ	अति	११.	बहुत
धर्मः	९.	धर्म के पालन में	कृच्छ्रेण	१२.	कष्ट तो
ते	६.	आप को	संतुष्ट	४.	सन्तुष्ट
वृद्ध	७.	पूर्व पुरुषों द्वारा	मनसः	५.	मन वाले
सम्मतः ।	८.	स्वीकृत	सदा ॥	३.	सदा

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मण श्रेष्ठ ! सदा सन्तुष्ट मन वाले आपके पूर्व पुरुषों द्वारा स्वीकृत धर्म के पालन में कहीं बहुत कष्ट तो नहीं होता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

संतुष्टो यर्हि वर्तेत ब्राह्मणो येन केनचित् ।
अहीयमानः स्वाद्धर्मात् स ह्यस्याखिलकामधुक् ॥३१॥

पदच्छेद— सन्तुष्टः यर्हि वर्तेत ब्राह्मणः येन केनचित् ।
अहीयमानः स्वात् धर्मात् सः हि अस्य अखिल कामधुक् ॥

शब्दार्थ—

सन्तुष्टः	५.	सन्तुष्ट	अहीयमानः	८.	न गिरे
यर्हि	२.	यदि	स्वात् धर्मात्	७.	अपने धर्म से
वर्तेत	६.	रहे और	सः हि	९.	वही
ब्राह्मणः	१.	ब्राह्मण	अस्य	१०.	उसकी
येन	३.	जो	अखिल	११.	सारी
केनचित् ।	४.	कुछ मिल जावे उसमें ही	कामधुक् ॥	१२.	कामनायें पूर्ण कर देता है

श्लोकार्थ—ब्राह्मण यदि जो कुछ मिल जाये उसमें ही सन्तुष्ट रहे और अपने धर्म से न गिरे वही उसकी सारी कामनायें पूर्ण कर देता है ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

असन्तुष्टोऽसकृल्लोकानाप्नोत्यपि सुरेश्वरः ।
अकिञ्चनोऽपि संतुष्टः शेते सर्वाङ्गविज्वरः ॥३२॥

पदच्छेद— असन्तुष्टः असकृत् लोकान् आप्नोति अपि सुरेश्वरः ।
अकिञ्चनः अपि सन्तुष्टः शेते सर्वाङ्ग विज्वरः ॥

शब्दार्थ—

असन्तुष्टः	१.	असन्तुष्ट व्यक्ति	अकिञ्चनः	८.	अकिंचन होने पर
असकृत्	४.	बार-बार	अपि	९.	भी
लोकान्	५.	लोकों को	सन्तुष्टः	७.	और सन्तुष्ट व्यक्ति
आप्नोति	६.	प्राप्त करता रहता है	शेते	१२.	सोता है
अपि	३.	भी	सर्वाङ्ग	१०.	सब प्रकार के
सुरेश्वरः ।	२.	इन्द्र होने पर	विज्वरः ॥	११.	सन्ताप से रहित होकर

श्लोकार्थ—असन्तुष्ट व्यक्ति इन्द्र होने पर भी बार-बार लोकों को प्राप्त करता है और सन्तुष्ट व्यक्ति अकिंचन होने पर भी सब प्रकार के सन्तापों से रहित होकर सोता है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

विप्रान् स्वलाभसंतुष्टान् साधून् भूतसुहृत्तमान् ।
निरहङ्कारिणः शान्तान् नमस्ये शिरसासकृत् ॥३३॥

पदच्छेद— विप्रान् स्वलाभ संतुष्टान् साधून् भूत सुहृत्तमान् ।
निरहङ्कारिणः शान्तान् नमस्ये शिरसा असकृत् ॥

शब्दार्थ—

विप्रान्	८.	ब्राह्मणों को मैं	निरहङ्कारिणः	६.	अहंकार रहित और
स्वलाभ	१.	अपने अर्थलाभ से	शान्तान्	७.	शान्त
सन्तुष्टान्	२.	सन्तुष्ट	नमस्ये	११.	नमस्कार करता हूँ
साधून्	३.	सज्जन	शिरसा	९.	शिर झुका कर
भूत	४.	प्राणियों के	असकृत् ॥	१०.	बार-बार
सुहृत्तमान् ।	५.	हितैषी			

श्लोकार्थ—अपने अर्थलाभ से सन्तुष्ट, सज्जन, प्राणियों के, हितैषी, अहंकार से रहित और शान्त ब्राह्मणों को मैं बार-बार शिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

कच्चित् वः कुशलं ब्रह्मन् राजतो यस्य हि प्रजाः ।
सुखं वसन्ति विषये पाल्यमानाः स मे प्रियः ॥३४॥

पदच्छेद— कच्चित् वः कुशलम् ब्रह्मन् राजतः यस्य हि प्रजाः ।
सुखम् वसन्ति विषये पाल्यमानाः सः मे प्रियः ॥

शब्दार्थ—

कच्चिद्	५.	है	सुखम्	१०.	सुख से
वः	३.	आप लोगों का	वसन्ति	११.	निवास करती है
कुशलम्	४.	कुशल तो	विषये	७.	राज्य में
ब्रह्मन्	१.	हे ब्राह्मण देवता	पाल्यमानः	८.	रहती हुई
राजतः	२.	राजा की ओर से	सः	१२.	वह (राजा)
यस्य हि	६.	जिसके	मे	१३.	मुझे
प्रजाः ।	९.	प्रजायें	प्रियः ॥	१४.	प्रिय है

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मण देवता ! राजा की ओर से आप लोगों का कुशल तो है । जिसके राज्य में रहती हुई प्रजायें सुख से निवास करती हैं, वह राजा मुझे प्रिय है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

यतस्त्वमागतो दुर्गं निस्तीर्येह यदिच्छया ।
सर्वं नो ब्रूह्यगुह्यं चेत् किं कार्यं करवाम ते ॥३५॥

पदच्छेद— यतः त्वम् आगतः दुर्गम् निस्तीर्य इह यद् इच्छया ।
सर्वं नः ब्रूहि अगुह्यम् चेत् किम् कार्यम् करवाम ते ॥

शब्दार्थ—

यतः	२.	जहाँ से	सर्वं	८.	वह सब
त्वम्	१.	आप	नः ब्रूहि	११.	मुझे बताइये
आगतः	७.	आये हैं	अगुह्यम्	१०.	गोपनीय न हो तो
दुर्गम्	३.	कठिन मार्ग	चेत्	९.	यदि
निस्तीर्य	४.	पार करके	किम् कार्यम्	१३.	क्या सेवा
इह यद्	५.	यहाँ पर जिस	करवाम	१४.	करें
इच्छया ।	६	इच्छा से	ते ॥	१२.	हम आपकी

श्लोकार्थ—आप जहाँ से कठिन मार्ग पार करके यहाँ पर जिस इच्छा से आये हैं, वह सब यदि गोपनीय न हो तो मुझे बताइये । हम आपकी क्या सेवा करें ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

एवं सम्पृष्टसम्प्रश्नो ब्राह्मणः परमेष्ठिना ।
लीलागृहीतदेहेन तस्मै सर्वमवर्णयत् ॥३६॥

पदच्छेद— एवम् सम्पृष्ट सम्प्रश्नः ब्राह्मणः परमेष्ठिना ।
लीला गृहीत देहेन तस्मै सर्वम् अवर्णयत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	इस प्रकार	लीला	१.	लीला पूर्वक
सम्पृष्ट	७.	पूछने पर	गृहीत	३.	धारण करने वाले
सम्प्रश्नः	६.	प्रश्न	देहेन	२.	शरीर
ब्राह्मणः	८.	ब्राह्मण देवता	तस्मै सर्वम्	९.	उनसे सब कुछ
परमेष्ठिना ।	४.	श्रीकृष्ण के द्वारा	अवर्णयत् ॥	१०.	बताने लगे

श्लोकार्थ—लीला पूर्वक शरीर धारण करने वाले श्रीकृष्ण के द्वारा इस प्रकार प्रश्न पूछने पर ब्राह्मण देवता उनसे सब कुछ बताने लगे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

रुक्मिण्युवाच—

श्रुत्वा गुणान् भुवन सुन्दर शृण्वनां ते निर्विश्य कर्णविवरैर्हरतोऽङ्गतापम् ।
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थलाभं त्वय्यच्युताविशति चित्तमपत्रपं मे ॥३७॥

पदच्छेद—श्रुत्वा गुणान् भुवनसुन्दर शृण्वताम् ते निर्विश्य कर्णविवरैः हरतः अङ्गतापम् ।
रूपम् दृशाम् दृशिमताम् अखिल अर्थलाभम् त्वयि अच्युत आविशति चित्तम् अपत्रपम् मे ॥

शब्दार्थ—श्रुत्वा	९.	सुनकर तथा	रूपम्	१४.	रूप सौन्दर्य को सुनकर
गुणान्	८.	गुणों को	दृशाम्	११.	नेत्रों के लिये
भुवनसुन्दर	१.	हे तीनों लोको में सुन्दर !	दृशिमताम्	१०.	नेत्र वालों के
शृण्वताम्	२.	सुनने वालों के	अखिलअर्थ	१२.	सम्पूर्ण प्रयोजनों का
ते	७.	आपके	लाभम्	१३.	लाभ कराने वाले
निर्विश्य	४.	प्रवेश करके	त्वयि अच्युत	१५.	हे कृष्ण आपमें
कर्णविवरैः	३.	कानों के छेद से (हृदय में)	आविशति	१८.	प्रवेश कर रहा है
हरतः	६.	मिटाने वाले	चित्तम्	१७.	चित्त
अङ्गतापम् ।	५.	अङ्गों के ताप को	अपत्रपम् ॥	१६.	मेरा निर्लज्ज

श्लोकार्थ—हे तीनों लोकों में सुन्दर ! सुनने वालों के कानों के छेद से हृदय में प्रवेश करके अङ्गों के ताप को मिटाने वाले आपके गुणों को सुनकर तथा नेत्र वालों के नेत्रों के लिये रूप सौन्दर्य को सुनकर हे कृष्ण ! आप में मेरा निर्लज्ज चित्त प्रवेश कर रहा है ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

का त्वा मुकुन्द महती कुलशीलरूपविद्यावयोद्रविणधामभिरात्मतुल्यम् ।
धीरा पतिं कुलवती न वृणीत कन्या काले नृसिंह नरलोकमनोऽभिरामम् ॥३८॥

पदच्छेद—का त्वा मुकुन्द महती कुलशील रूपविद्यावयः द्रविणधामभिः आत्म तुल्यम् ।
धीरा पतिम् कुलवती न वृणीत कन्या काले नृसिंह नरलोकमनः अभिरामम् ॥

शब्दार्थ—का त्वा	१०.	कौन आपको	धीरा	१३.	धैर्यवती
मुकुन्द	१.	हे मुकुन्द !	पतिम्	१५.	पति के रूप में
महती	११.	महागुणवती	कुलवतीम्	१२.	कुलवती (और)
कुलशील	३.	कुल, शील	न वृणीत	१६.	नहीं चुनेगी
रूपविद्यावयो	४.	सौन्दर्य, विद्या, अवस्था	कन्या काले	१४.	कन्या समय आने पर
द्रविणधामभिः	५.	धनधाम सभी में	नृसिंह	२.	हे पुरुषोत्तम
आत्म	६.	अपने ही	नरलोकमनः	८.	मनुष्य लोक के मन को
तुल्यम् ।	७.	समान	अभिरामम् ॥	९.	आनन्दित करने वाले

श्लोकार्थ—हेमुकुन्द ! हे पुरुषोत्तम, कुल, शील, सौन्दर्य, विद्या, अवस्था, धन-धाम सभी में अपने ही समान मनुष्य लोक के मन को आनन्दित करने वाले आपको कौन महागुणवती, कुलवती तथा धैर्यवती कन्या समय आने पर पति के रूप में नहीं चुनेगी ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तन्मे भवान् खलु वृतः पतिरङ्ग जायामात्मार्पितश्च भवतोऽत्र विभो विधेहि ।
मा वीरभागमभिमर्शतु चैद्य आराद् गोमायुवन्मृगपतेर्बलिमम्बुजाक्ष ॥३९॥

पदच्छेद— तत् मे भगवान् खलु वृतः पतिः अङ्ग जायाम् आत्म अर्पितः च भवतः अत्रविभो विधेहि ।
मा वीरभागम् अभिमर्शतु चैद्यः आरात् गोमायुवत् मृगपतेः बलिम् अम्बुजाक्ष ॥

शब्दार्थ—तत् मे	२. इसलिये मैंने	मा	१७ न
भगवान् खलु	३. निश्चित रूप से आपका	वीरभागम्	१६. आप वीर का भाग मुझे
वृतः पतिः	४. पति रूप में वरण कर लिया है	अभिमर्शतु	१८. छू ले
अङ्ग	१. हे प्रियतम !	चैद्यः	१४. शिशुपाल
जायाम्	८. पत्नी के रूप में	आरात्	१५. पास आकर
आत्म अर्पित	६. आत्म समर्पण कर चुकी हूँ	गोमायुवत्	११. जैसे सियार
च भवतः	५. और आप को	मृगपतेः	१२. सिंह का
अत्रविभो	७. हे प्रभो ! यहाँ आकर मुझे	बलिम्	१३. भाग छू ले वैसे
विधेहि ।	९. स्वीकार कीजिये	अम्बुजाक्ष ॥	१०. हे कमलनयन !

श्लोकार्थ—हे प्रियतम ! इसलिये मैंने निश्चित रूप से आपका पति रूप में वरण कर लिया है । और आप को आत्मसमर्पण कर चुकी हूँ । हे प्रभो ! यहाँ आ कर मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार कीजिये । हे। कमल नयन ! जैसे सियार सिंह का भाग छूले वैसे शिशुपाल पास आ कर आप वीर का भाग मुझे न छूले ।

चत्वारिंशः श्लोकः

पूर्तेष्टदत्तनियमव्रतदेवविप्रगुर्वर्चनादिभिरलं भगवान् परेशः ।
आराधितो यदि गदाग्रज एत्य पाणिं गृह्णातु मे न दमघोषसुतादयोऽन्ये ॥४०॥

पदच्छेद— पूर्त इष्ट दत्तनियम व्रतदेव विप्रगुरु अर्चन आदिभिः अलम् भगवान् परेशः ।
आराधितः यदि गद अग्रज एत्य पाणिम् गृह्णातु मे न दमघोषसुत आदयः अन्ये ॥

शब्दार्थ—पूर्त इष्ट	२. कुआँ आदि बनवाना यज्ञ करना	आराधितः	१०. आराधना की है
दत्तनियम	३. दान देना नियम करना	यदि	१. मैंने यदि
व्रतदेव	४. व्रत तथा देवता और	गद अग्रज	११. श्रीकृष्ण
विप्रगुरु	५. ब्राह्मणों तथा गुरु की	एत्य	१२. आ कर
अर्चन	६. पूजा	पाणिम् गृह्णातु	१४. पाणि ग्रहण करे
आदिभिः	७. आदि के द्वारा	मे	१३. मेरा
अलम्	८. पर्याप्त	न दमघोषसुत	१५. दमघोष का पुत्र शिशुपाल
भगवान् परेशः ।	९. भगवान् परमेश्वर की	आदयः अन्ये ॥	१६. आदि दूसरा कोई न करे

श्लोकार्थ—मैंने यदि कुआँ आदि बनवाना, यज्ञ करना, दान देना, नियम करना, व्रत तथा देवता और ब्राह्मणों तथा गुरु की पूजा आदि के द्वारा पर्याप्त भगवान् परमेश्वर की आराधना की है तो श्रीकृष्ण आकर मेरा पाणि ग्रहण करें । दमघोष के पुत्र शिशुपाल आदि दूसरे कोई न करें ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

**श्वोभाविनि त्वमजितोद्वहने विदर्भान् गुप्तः समेत्य पृतनापतिभिः परीतः ।
निर्मथ्य चैद्यमगधेन्द्रबलं प्रसह्य मां राक्षसेन विधिनोद्वह वीर्यशुल्काम् ॥४१॥**

पदच्छेद—श्वःभाविनि त्वम् अजित उद्वहने विदर्भान् गुप्तः समेत्य पृतना पतिभिः परीतः ।
निर्मथ्य चैद्य मगधेन्द्र बलम् प्रसह्य माम् राक्षसेन विधिना उद्वह वीर्य शुल्काम् ॥

शब्दार्थ –

श्वःभाविनि	२. आने वाले कल	निर्मथ्य	११. मथ कर
त्वम्	४. आप	चैद्य	९. शिशुपाल तथा
अजित	१. हे प्रभो !	मगधेन्द्र बलम्	१०. जरासन्ध की सेना को
उद्वहने	३. विवाह के समय	प्रसह्य	१२. बल पूर्वक
विदर्भान् गुप्तः	५. विदर्भ नगर में गुप्त रूप से	माम्	१५. मेरा
समेत्य पृतना	६. आकर सेना	राक्षसेन विधिना	१३. राक्षस विधि से
पतिभिः	७. पतियों	उद्वह	१६. ग्रहण कीजिये
परीतः ।	८. सहित	वीर्य शुल्काम् ॥	१४. वीरता का मूल्य देकर

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आने वाले कल विवाह के समय आप विदर्भ नगर में गुप्त रूप से आकर सेना पतियों सहित शिशुपाल तथा जरासन्ध की सेना को मथ कर बल पूर्वक राक्षस विधि से वीरता का शुल्क देकर मेरा पाणिग्रहण कीजिये ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

**अन्तःपुरान्तरचरीमनिहत्य बन्धूंस्त्वामुद्वहे कथमिति प्रवदाम्युपायम् ।
पूर्वेद्युरस्ति महती कुलदेवियात्रा यस्यां बहिर्नववधूर्गिरिजामुपेयात् ॥४२॥**

पदच्छेद—अन्तःपुर अन्तरचरीम् अनिहत्य बन्धून् त्वाम् उद्वहे कथम् इति प्रवदामि उपायम् ।
पूर्वेद्युःअस्ति महती कुलदेवी यात्रा यस्याम् बहिःनववधूः गिरिजाम् उपेयात् ॥

शब्दार्थ—

अन्तःपुर	२ अन्तःपुर के	पूर्वेद्युः अस्ति	९. पहले दिन है
अन्तरचरीम्	३. भीतर रहने वाली	महती	११. बहुत बड़ी
अनिहत्य बन्धून्	१. भाई बन्धुओं को मारे बिना	कुलदेवी	१०. कुलदेवी की
त्वाम्	४. तुम्हें	यात्रा	१२. यात्रा होती है
उद्वहे कथम्	५. कैसे ले जा सकता हूँ	यस्याम्	१३. जिसमें
इति	६. इसका	बहिःनववधूः	१४. दुलहिन बाहर
प्रवदामि	८. देती हूँ	गिरिजाम्	१५. गिरिजा देवी के
उपायम् ।	७. उपाय बताये	उपेयात् ॥	१६. पास मन्दिर में जाती है

श्लोकार्थ—तुम्हारे भाई बन्धुओं को मारे बिना अन्तःपुर के भीतर रहने वाली तुम्हें कैसे ले जा सकता हूँ । इसका उपाय बताये देती हूँ । पहले दिन कुल देवी की बहुत बड़ी यात्रा होती है । जिसमें दुलहिन बाहर गिरिजा देवी के पास मन्दिर में जाती है ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजः स्नपनं महान्तो वाञ्छन्त्युमापतिरिवात्मतमोऽपहत्यै ।
यर्ह्यम्बुजाक्ष न लभेय भवत्प्रसादं जह्यामसून् व्रतकृशाञ्छतजन्मभिः स्यात् ॥४३॥

पदच्छेद—यस्य अङ्घ्रिपङ्कजरजः स्नपनम् महान्तः वाञ्छन्ति उमापतिः इव आत्मतमः अपहत्यै ।
यर्हि अम्बुजाक्ष न लभेय भवत् प्रसादम् जह्याम् असून् व्रतकृशान् शत जन्मभिः स्यात् ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिन आपके	यर्हि	११.	यदि मैं
अङ्घ्रि	२.	चरण	अम्बुजाक्ष	१०.	हे कमलनयन !
पंकजरजः	३.	कमलों की रज से	न लभेय	१३.	नहीं पा सकी तो
स्नपनम्	८.	स्नान करना	भवत्प्रसादम्	१२.	आपका प्रसाद
महान्तः	७.	बड़े लोग	जह्याम्असून्	१५.	प्राणों को त्याग दूंगी
वाञ्छन्ति	९.	चाहते हैं	व्रत कृशान्	१४.	व्रतों द्वारा शरीर को क्षीण करके
उमापतिः इव	६.	शंकर के समान	शत	१६.	चाहे वह प्रसाद सैकड़ों
आत्मतमः	४.	अपने अन्धकार को	जन्मभिः	१७.	जन्मों में
अपहत्यै ।	५.	दूर करने के लिये	स्यात् ॥	१८.	प्राप्त हो

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जिन आपके चरण कमलों को रज से अपने अन्धकार को मिटाने के लिये शङ्कर के समान बड़े लोग स्नान करना चाहते हैं । हे कमल नयन ! यदि मैं आपका प्रसाद नहीं पा सकी तो व्रतों द्वारा शरीर को क्षीण करके प्राणों को त्याग दूंगी । चाहे वह प्रसाद सैकड़ों जन्मों में प्राप्त हो ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

ब्राह्मण उवाच—इत्येते गुह्यसन्देशा यदुदेव मयाऽऽहृताः ।
विमृश्य कर्तुं यच्चात्र क्रियतां तदनन्तरम् ॥४४॥

पदच्छेद— इति एते गुह्य सन्देशाः यदुदेव मया आहृताः ।
विमृश्य कर्तुम् यत् च अत्र क्रियताम् तदनन्तरम् ॥

शब्दार्थ—

इति एते	२.	ये इतने	विमृश्य	११.	विचार कर
गुह्य	३.	गोपनीय	कर्तुम्	१०.	करना हो वह
सन्देशाः	४.	सन्देश	यत् च	९.	जो कुछ इसके
यदुदेव	१.	हे यदुवंश-शिरोमणि !	अत्र	१२.	सम्बन्ध में
मया	५.	मैं	क्रियताम्	१३.	कीजिये
आहृताः ।	६.	ले आया हूँ	तदनन्तरम् ॥	८.	तत्पश्चात्

श्लोकार्थ—हे यदुवंश-शिरोमणि ! ये इतने गोपनीय सन्देश, मैं ले आया हूँ । तत्पश्चात् जो कुछ करना हो वह विचार कर इसके सम्बन्ध में कीजिये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
रुक्मिण्युद्वाहप्रस्तावे द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥५२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रिपञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—वैदर्भ्याः स तु सन्देशं निशम्य यदुनन्दनः ।

प्रगृह्य पाणिना पाणिं प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥१॥

पदच्छेद— वैदर्भ्याः सः तु सन्देशम् निशम्य यदुनन्दनः ।
प्रगृह्य पाणिना पाणिम् प्रहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

वैदर्भ्याः	३.	रुक्मिणी का	प्रगृह्य	८.	पकड़ कर
सः तु	१.	वे भगवान्	पाणिना	६.	अपने हाथ से
सन्देशम्	४.	सन्देश	पाणिम्	७.	ब्राह्मण का हाथ
निशम्य	५.	सुनकर	प्रहसन्	९.	हँसते हुये
यदुनन्दनः ।	२.	श्रीकृष्ण	इदम्	१०.	यह
			अब्रवीत् ॥	११.	बोले

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण रुक्मिणी का सन्देश सुनकर अपने हाथ से ब्राह्मण का हाथ पकड़ कर हंसते हुये यह बोले ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—तथाहमपि तच्चित्तो निद्रां च न लभे निशि ।

वेदाहं रुक्मिणा द्वेषान्ममोद्वाहो निवारितः ॥२॥

पदच्छेद— तथा अहम् अपि तत् चित्तः निद्राम् च न लभे निशि ।
वेद अहम् रुक्मिणा द्वेषात् मम उद्वाहः निवारितः ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	इसी प्रकार	वेद	९.	जानता हूँ कि
अहम् अपि	२.	मेरा भी	अहम्	८.	मैं
तत् चित्तो	३.	चित्त उन्हीं में लगा है	रुक्मिणा	११.	रुक्मी ने
निद्राम्	६.	नींद	द्वेषात्	१०.	द्वेष वश
च	४.	और	मम	१२.	मेरा
न लभे	७.	नहीं आती है	उद्वाह	१३.	विवाह
निशि ।	५.	रात में मुझे	निवारितः ॥	१४.	रोक दिया है

श्लोकार्थ—इसी प्रकार मेरा भी चित्त उन्हीं में लगा है । और रात्रि में नींद, नहीं आती है । मैं जानता हूँ कि रुक्मी ने द्वेषवश मेरा विवाह रोक दिया है ॥

तृतीयः श्लोकः

ताम्मानयिष्य उन्मथ्य राजन्यापसदान् मृधे ।
मत्परामनवद्याङ्गीमेधसोऽग्निशिखामिव ॥३॥

पदच्छेद— ताम् आनयिष्ये उन्मथ्य राजन्य अपसदान् मृधे ।
मत् पराम् अनवद्य अङ्गीम् एधसः अग्नि शिखाम् इव ॥

शब्दार्थ—

ताम्	८.	उस राजकुमारी को	मत् पराम्	५.	मुझ में अनुरक्त तथा
आनयिष्ये	१२.	ले आऊँगा	अनवद्य	६.	प्रशंसनीय
उन्मथ्य	४.	मार कर	अङ्गीम्	७.	अङ्गों वाली परम साध्वी
राजन्य	३.	राजाओं को	एधसः	९.	काष्ठ से
अपसदान्	२.	नीच	अग्नि	१०.	अग्नि की
मृधे ।	१.	युद्ध में	शिखाम् इव ॥	११.	ज्वाला के समान निकाल कर

श्लोकार्थ—मैं युद्ध में नीच राजाओं को मार कर मुझ में अनुरक्त तथा प्रशंसनीय अङ्गों वाली परम साध्वी उस राजकुमारी को काष्ठ से अग्नि की ज्वाला के समान निकाल कर ले आऊँगा ॥

चतुर्थः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—उद्वाहर्क्षं च विज्ञाय रुक्मिण्या मधुसूदनः ।
रथः संयुज्यतामाशु दारुकेत्याह सारथिम् ॥४॥

पदच्छेद— उद्वाह ऋक्षम् च विज्ञाय रुक्मिण्याः मधुसूदनः ।
रथः संयुज्यताम् आशु दारुक इति आह सारथिम् ॥

शब्दार्थ—

उद्वाह	३.	विवाह का	रथः	११.	रथ
ऋक्षम्	४.	नक्षत्र	संयुज्यताम्	१२.	जोड़ लाओ
च	१.	फिर	आशु	१०.	शीघ्र ही
विज्ञाय	५.	जान कर	दारुक	९.	दारुक
रुक्मिण्याः	२.	रुक्मिणी के	इतिआह	८.	कहा कि
मधुसूदन ।	६.	श्रीकृष्ण ने	सारथिम् ॥	७.	सारथि से

श्लोकार्थ—फिर रुक्मिणी के विवाह का नक्षत्र जान कर श्रीकृष्ण ने सारथी से कहा कि दारुक शीघ्र ही रथ जोड़ लाओ ॥

पञ्चमः श्लोकः

स चाश्वैः शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकैः ।
युक्तं रथमुपानीय तस्थौ प्राञ्जलिरग्रतः ॥५॥

पदच्छेद— सः च अश्वैः शैब्य सुग्रीव मेघ पुष्प बलाहकैः ।
युक्तम् रथम् आनीय तस्थौ प्राञ्जलिः अग्रतः ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह दारुक	युक्तम्	८.	जोत कर
च	२.	भी	रथम्	७.	रथ में
अश्वैः	६.	घोड़ों को	आनीय	९.	ले आया और
शैब्य सुग्रीव	३.	शैब्य सुग्रीव	तस्थौ	१२.	खड़ा हो गया
मेघ पुष्प	४.	मेघ पुष्प और	प्राञ्जलिः	१०.	हाँथ जोड़ कर
बलाहकैः ।	५.	बलाहक नामक	अग्रतः ॥	११.	सामने

श्लोकार्थ—वह दारुक भी शैब्य, सुग्रीव, मेघ पुष्प और बलाहक नामक घोड़ों को रथ में जोत कर ले आया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया ॥

षष्ठः श्लोकः

आरुह्य स्यन्दनं शौरिर्द्विजमारोप्य तूर्णगैः ।
आनर्त्तादेकरात्रेण विदर्भानगमद्धयैः ॥६॥

पदच्छेद— आरुह्य स्यन्दनम् शौरिः द्विजम् आरोप्य तूर्णगैः ।
आनर्त्तात् एक रात्रेण विदर्भान् अगमत् हयैः ॥

शब्दार्थ—

आरुह्य	५.	चढ़ कर	आनर्त्तात्	१०.	आनर्त देश से
स्यन्दनम्	३.	रथ पर	एक	८.	एक ही
शौरिः	१.	भगवान् श्रीकृष्ण	रात्रेण	९.	रात्रि में
द्विजम्	२.	ब्राह्मण को	विदर्भान्	११.	विदर्भ देश में
आरोप्य	४.	चढ़ा कर (स्वयं)	अगमत्	१२.	जा पहुँचे
तूर्णगैः ।	६.	शीघ्र-गामी	हयैः ॥	७.	घोड़ों के द्वारा

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ब्राह्मण को रथ पर चढ़ा कर स्वयं चढ़ कर शीघ्र-गामी घोड़ों के द्वारा एक ही रात्रि में आनर्त देश से विदर्भ देश में जा पहुँचे ॥

सप्तमः श्लोकः

राजा स कुण्डिनपतिः पुत्रस्नेहवशं गतः ।
शिशुपालाय स्वां कन्यां दास्यन् कर्माण्यकारयत् ॥७॥

पदच्छेद— राजा सः कुण्डिन पतिः पुत्र स्नेह वशम् गतः ।
शिशुपालाय स्वाम् कन्याम् दास्यन् कर्माणि अकारयत् ॥

शब्दार्थ—

राजा सः	१.	वे राजा	शिशुपालाय	७.	शिशुपाल को
कुण्डिनपतिः	२.	कुण्डिन पुर के अधिपति	स्वाम्	८.	अपनी
पुत्र	३.	पुत्र के	कन्याम्	९.	कन्या
स्नेह	४.	मोह के	दास्यन्	१०.	देने के लिये
वशम्	५.	वश में	कर्माणि	११.	विवाहोत्सव की
गतः ।	६.	होकर	अकारयत् ॥	१२.	तैयारी करा रहे थे ।

श्लोकार्थ—वे राजा कुण्डिन पुर के अधिपति पुत्र के मोह के वश में हो कर शिशुपाल को अपनी कन्या देने के लिये विवाहोत्सव की तैयारी करा रहे थे ॥

अष्टमः श्लोकः

पुरं सम्मृष्टसंसिक्तमार्गरथ्याचतुष्पथम् ।
चित्रध्वजपताकाभिस्तोरणैः समलङ्कृतम् ॥८॥

पदच्छेद— पुरम् सम्मृष्ट संसिक्त मार्ग रथ्या चतुष्पथम् ।
चित्र ध्वज पताकाभिः तोरणैः सम् अलङ्कृतम् ॥

शब्दार्थ—

पुरम्	७.	नगर को	चित्र	८.	चित्रों
सम्मृष्ट	२.	झाड़ बुहार कर	ध्वज	९.	ध्वजा
संसिक्त	३.	छिड़काव किये गये	पताकाभिः	१०.	पताकाओं और
मार्ग	४.	मार्गों	तोरणैः	११.	बन्दनवारों से
रथ्या	५.	गलियों और	सम्	१.	अच्छी तरह
चतुष्पथम् ।	६.	चौराहों वाले	अलङ्कृतम् ॥	१२.	सजा दिया गया था

श्लोकार्थ—अच्छी तरह झाड़ बुहार कर छिड़काव किये गये मार्गों, गलियों और चौराहों वाले नगर को चित्रों, ध्वजा, पताकाओं और बन्दरवारों से सजा दिया गया था ॥

नवमः श्लोकः

स्रग्गन्धमाल्याभरणैर्विरजोऽम्बरभूषितैः ।
जुष्टं स्त्रीपुरुषैः श्रीमद्गृहैरगुरुधूपितैः ॥९॥

पदच्छेद— स्रक् गन्ध माल्य आभरणैः विरजः अम्बर भूषितैः ।
जुष्टम् स्त्री पुरुषैः श्रीमद् गृहैः अगुरु धूपितैः ॥

शब्दार्थ—

स्रक्	१. फूलों की मालायें	जुष्टम्	११. वह नगर (सेवित तथा)
गन्ध	२. इत्र चन्दनादि	स्त्री	९. स्त्री और
माल्य	३. हार	पुरुषैः	१०. पुरुषों से
आभरणैः	४. गहनों और	श्रीमद्	८. सुन्दर
विरजः	५. निर्मल	गृहैः	१२. घरों में
अम्बर	६. वस्त्रों से	अगुरु	१३. अगर के
भूषितैः।	७. सजाया गया था	धूपितैः ॥	१४. धूप की सुगन्धि फैल रही थी

श्लोकार्थ— वह नगर मालाओं, इत्र, चन्दनादि, हार, गहनों और निर्मल वस्त्रों से सजाया गया था। सुन्दर स्त्री-पुरुषों से वह नगर सेवित था। घरों में अगर की सुगन्ध आ रही थी।

दशमः श्लोकः

पितॄन् देवान् समभ्यर्च्य विप्रांश्च विधिवन्नृप ।
भोजयित्वा यथान्यायं वाचयामास मङ्गलम् ॥१०॥

पदच्छेद— पितॄन् देवान् समभ्यर्च्य विप्रान् च विधिवत् नृप ।
भोजयित्वा यथा न्यायम् वाचयामास मङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

पितॄन्	२. पितरों	नृप !	१. हे राजन् !
देवान्	४. देवताओं की	भोजयित्वा	८. भोजन करा कर
समभ्यर्च्य	५. अर्चना करके	यथा	१०. अनुसार
विप्रान्	६. ब्राह्मणों को	न्यायम्	९. नियम के
च	३. और	वाचयामास	१२. वाचन कराया
विधिवत्	७. विधिपूर्वक	मङ्गलम् ॥	११. स्वस्ति

श्लोकार्थ— हे राजन् ! पितरों और देवताओं की अर्चना करके ब्राह्मणों को विधिपूर्वक भोजन कराकर नियम के अनुसार स्वस्तिवाचन कराया ॥

एकादशः श्लोकः

सुस्नातां सुदतीं कन्यां कृतकौतुकमङ्गलाम् ।
अहतांशुकयुग्मेन भूषितां भूषणोत्तमैः ॥११॥

पदच्छेद— सुस्नाताम् सुदतीम् कन्याम् कृत कौतुक मङ्गलाम् ।
अहत अंशुक युग्मेन भूषिताम् भूषण उत्तमैः ॥

शब्दार्थ—

सुस्नाताम्	३.	स्नान करा कर	अहत	८.	नये
सुदतीम्	१.	सुन्दर दाँतों वाली	अंशुक	९.	रेशमी वस्त्र और
कन्याम्	२.	कन्या (रुक्मिणि को)	युग्मेन	७.	दो
कृत	६.	बनाया गया (एवं)	भूषितम्	१२.	पहनाये गये
कौतुक	५.	कोहवर	भूषित	११.	आभूषण (उन्हें)
मङ्गलम् ।	४.	मङ्गलसूत्र पहनाया (तथा)	उत्तमैः ॥	१०.	उत्तम

श्लोकार्थ—सुन्दर दाँतों वाली कन्या रुक्मिणी को स्नान कराकर मङ्गलसूत्र पहनाया तथा कोहवर बनाया गया । एवं दो नये रेशमी वस्त्र और उत्तम आभूण उन्हें पहनाये गये ॥

द्वादशः श्लोकः

चक्रुः सामर्ग्यजुर्मन्त्रैर्वध्वा रक्षां द्विजोत्तमाः ।
पुरोहितोऽथर्वविद् वै जुहाव ग्रहशान्तये ॥१२॥

पदच्छेद— चक्रुः सामऋग् यजुः मन्त्रैः वध्वाः रक्षाम् द्विज उत्तमाः ।
पुरोहिताः अथर्व विद् वै जुहाव ग्रह शान्तये ॥

शब्दार्थ—

चक्रुः	७.	की और	पुरोहिताः	९.	पुरोहितों ने
सामऋक्	२.	सामवेद ऋग्वेद	अथर्वविद्	८.	अथर्ववेद के जानकार
यजुः	३.	यजुर्वेद के	वै	१०.	निश्चिय ही
मन्त्रैः	४.	मन्त्रों से	जुहाव	१३.	हवन किया
वध्वाः	५.	बधू की	गृह	११.	घर की
रक्षाम्	६.	रक्षा	शान्तये ॥	१२.	शान्ति के लिये
द्विजउत्तमाः ।	१.	श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने			

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने सामवेद, ऋक्वेद, यजुर्वेद के मन्त्रों से वधू की रक्षा की और अथर्ववेद के जानकार पुरोहितों ने निश्चित रूप से घर की शान्ति के लिये हवन कराया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

हिरण्यरूप्यवासांसि तिलांश्च गुडमिश्रितान्।
प्रादाद् धेनूश्च विप्रेभ्यो राजा विधिविदांवरः ॥१३॥

पदच्छेद— हिरण्यरूप्य वासांसि तिलांश्च च गुडमिश्रितान्।
प्रादात् धेनूः च विप्रेभ्यः राजा विधि विदाम् वरः ॥

शब्दार्थ

हिरण्यरूप्य	६.	सोना, चाँदी	प्रादात्	१३.	प्रदान की
वासांसि	७.	वस्त्र	धेनूः च	१२.	गौयें
तिलान्	११.	तिल तथा	विप्रेभ्यः	५.	ब्राह्मणों को
च	८.	और	राजा	४.	राजा ने
गुड	९.	गुड	विधि	१.	विधियों के
मिश्रितान्।	१०.	मिले हुये	विदाम्	२.	जानने वालों में
			वरः ॥	३.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—विधियों के श्रेष्ठ जानकार राजा ने ब्राह्मणों को सोना, चाँदी, वस्त्र और गुड़ मिले हुये तिल तथा गायें दान कीं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

एवं चेदिपती राजा दमघोषः सुताय वै।
कारयामास मन्त्रज्ञैः सर्वमभ्युदयोचितम् ॥१४॥

पदच्छेद— एवम् चेदिपतिः राजा दमघोषः सुताय वै।
कारयामास मन्त्रज्ञैः सर्वम् अभ्युदय उचितम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इसी प्रकार	कारयामास	११.	करवाये
चेदिपतिः	२.	चेदि देश के स्वामी	मन्त्रज्ञैः	७.	मन्त्र ज्ञाता (ब्राह्मणों से)
राजा	३.	राजा	सर्वम्	८.	सभी
दमघोष	४	दम घोष ने	अभ्युदयः	९.	माङ्गलिक
सुताय	५.	अपने पुत्र शिशुपाल के लिये	उचितम् ॥	१०.	कार्य
वै।	६.	भी			

श्लोकार्थ—इसी प्रकार चेदि देश के स्वामी राजा दम घोष ने अपने पुत्र शिशुपाल के लिये भी मन्त्रज्ञाता ब्राह्मणों से सभी माङ्गलिक कार्य करवाये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

मदच्युद्भिर्गजानीकैः स्यन्दनैर्हेममालिभिः ।
पत्त्यश्वसङ्कुलैः सैन्यैः परीतः कुण्डिनं ययौ ॥१५॥

पदच्छेद— मद च्युद्भिः गज अनीकैः स्यन्दनैः हेम मालिभिः ।
पत्ति अश्व सङ्कुलैः सैन्यैः परीतः कुण्डिनम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

मद	१.	मद	पत्ति अश्व	८.	पैदलों और घोड़ों से
च्युद्भिः	२.	चुआते हुये	सङ्कुलैः	९.	व्याप्त
गज	३.	हाथियों की	सैन्यैः	१०.	सेनाओं से
अनीकैः	४.	सेनाओं (और)	परीतः	११.	युक्त होकर
स्यन्दनैः	७.	रथों	कुण्डिनम्	१२.	कुण्डिन पुर में
हेम	५.	सोने की	ययौ ॥	१३.	जा पहुँचे
मालिभिः ।	६.	मालाओं से सज्जित			

श्लोकार्थ—मद मद चुआते हुये हाथियों की सेनाओं और सोने की मालाओं से सज्जित रथों, पैदलों और घोड़ों से व्याप्त सेनाओं से युक्त होकर कुण्डिनपुर में जा पहुँचे ॥

षोडशः श्लोकः

तं वै विदर्भाधिपतिः समभ्येत्याभिपूज्य च ।
निवेशयामास मुदा कल्पितान्यनिवेशने ॥१६॥

पदच्छेद— तम् वै विदर्भ अधिपतिः समभ्येत्य अभिपूज्य च ।
निवेशयामास मुदा कल्पितअन्य निवेशने ॥

शब्दार्थ—

तम् वै	३.	उनको	निवेशयामास	१०.	ठहरा दिया
विदर्भ	१.	विदर्भ देश के	मुदा	७.	आनन्द पूर्वक
अधिपति	२.	अधिपति भीष्मक ने	कल्पितान्य	८.	बनाये गये दूसरे
समभ्येत्य	४.	अगवानी करके	निवेशने ॥	९.	घरों (जनवासे में)
अभिपूज्य	५.	अर्चन, पूजन किया			
च ।	६	और			

श्लोकार्थ—विदर्भ देश के अधिपति भीष्मक ने अगवानी करके अर्चन पूजन किया । और आनन्दपूर्वक बनाये गये दूसरे घरों में (जनवासे) में ठहरा दिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

तत्र शाल्वो जरासन्धो दन्तवक्त्रो विदूरथः।
आजग्मुश्चैद्यपक्षीयाः पौण्ड्रकाद्याः सहस्रशः ॥१७॥

पदच्छेद— तत्र शाल्वः जरासन्धः दन्तवक्त्रः विदूरथः।
आजग्मुः चैद्यपक्षीयाः पौण्ड्रक आद्याः सहस्रशः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	आजग्मुः	११.	आये थे
शाल्वः	२.	शाल्व	चैद्य	९.	शिशुपाल के
जरासन्धः	३.	जरासन्ध	पक्षीयाः	१०.	पक्ष वाले
दन्तवक्त्रः	४.	दन्त वक्त्र	पौण्ड्रक	६.	पौण्ड्रक
विदूरथः।	५.	विदूरथ और	आद्याः	७.	आदि
			सहस्रशः ॥	८.	हजारों राजा

श्लोकार्थ—वहाँ पर शाल्व, जरासन्ध, दन्तवक्त्र, विदूरथ और पौण्ड्रक आदि हजारों राजा शिशुपाल के पक्ष वाले आये थे ॥

अष्टादशः श्लोकः

कृष्णरामद्विषो यत्ताः कन्यां चैद्याय साधितुम्।
यद्यागत्य हरेत् कृष्णो रामाद्यैर्यदुभिर्वृतः ॥१८॥

पदच्छेद— कृष्णराम द्विषः यत्ताः कन्याम् चैद्याय साधितुम्।
यदि आगत्य हरेत् कृष्णः राम आद्यैः यदुभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	१.	कृष्ण और	यदि	८.	यदि
राम	२.	बलराम के	आगत्य	११.	आकर
द्विषः	३.	विरोधी	हरेत्	१२.	कन्या का हरण करेंगे तो हम
यत्ताः	४.	वे राजा लोग	कृष्णः राम	९.	श्रीकृष्ण और बलराम
कन्याम्	६.	कन्या (रुक्मिणी) को	आद्यैः	१०.	आदि
चैद्याय	५.	शिशुपाल को	यदुभिः	१३.	यदुवंशियों के
साधितुम्।	७.	दिलाने के लिये (आये थे)	वृतः ॥	१४.	साथ युद्ध करेंगे

श्लोकार्थ— श्रीकृष्ण और बलराम के विरोधी वे राजा लोग शिशुपाल को कन्या रुक्मिणी को दिलाने आये थे। यदि श्रीकृष्ण और बलराम आदि आकर कन्या का हरण करेंगे तो हम यदुवंशियों से युद्ध करेंगे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

योत्स्यामः संहतास्तेन इति निश्चितमानसाः ।
आजग्मुर्भूभुजः सर्वे समग्रबलवाहनाः ॥१९॥

पदच्छेद— योत्स्यामः संहताः तेन इति निश्चित मानसाः ।
आजग्मुः भूभुजाः सर्वे समग्र बल वाहनाः ॥

शब्दार्थ—

योत्स्यामः	३.	युद्ध करेंगे	आजग्मुः	१२.	आये थे
संहताः	१.	हम सब मिल कर	भूभुजः	८.	राजा लोग
तेन	२.	उससे	सर्वे	७.	सभी
इति	४.	ऐसा	समग्र	९.	पूरी
निश्चित	६.	निश्चित करके	बल	१०.	सेना और
मानसाः ।	५.	मन से	वाहनाः ॥	११.	वाहन लेकर

श्लोकार्थ—हम सब मिल कर उससे युद्ध करेंगे ऐसा मन से निश्चित कर के सभी राजा लोग पूरी सेना और वाहन ले कर आये थे ॥

विंशः श्लोकः

श्रुत्वैतद् भगवान् रामो विपक्षीयनृपोद्यमम् ।
कृष्णं चैकं गतं हर्तुं कन्यां कलहशङ्कितः ॥२०॥

पदच्छेद— श्रुत्वा एतत् भगवान् रामः विपक्षीय नृप उद्यमम् ।
कृष्णम् च एकम् गतम् हर्तुम् कन्याम् कलह शङ्कितः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	१०.	सुन कर	कृष्णम्	९.	श्रीकृष्ण के बारे में
एतत्	३.	वह	च	५.	और
भगवान्	११.	भगवान्	एकम् गतम्	८.	अकेले गये हुये
रामः	१२.	बलराम जी को	हर्तुम्	७.	हरण करने के लिये
विपक्षीय	१.	विपक्षी	कन्याम्	६.	राजकुमारी का
नृप	२.	राजाओं की	कलह	१३.	झगड़े की
उद्यमम् ।	४.	चेष्टा	शङ्कितः ॥	१४.	आशंका हुई

श्लोकार्थ—विपक्षी राजाओं की यह चेष्टा और राजकुमारी का हरण करने के लिये, अकेले गये हुये श्रीकृष्ण के बारे में सुन कर भगवान् बलराम जी को झगड़े की आशंका हुई ॥

एकविंशः श्लोकः

बलेन महता सार्धं भ्रातृस्नेहपरिप्लुतः ।
त्वरितः कुण्डिनं प्रागाद् गजाश्वरथपत्तिभिः ॥२१॥

पदच्छेद— बलेन महता सार्धम् भ्रातृ स्नेह परिप्लुतः ।
त्वरितः कुण्डिम् प्रागात् गज अश्व रथ पत्तिभिः ॥

शब्दार्थ—

बलेन	८. सेना के	त्वरितः	१०. शीघ्र
महता	७. बड़ी भारी	कुण्डिनम्	११. कुण्डिन पुर
सार्धम्	९. साथ	प्रागात्	१२. पहुँच गये
भ्रातृ	१. भाई के	गज अश्व	४. हाथी, घोड़े
स्नेह	२. प्रेम से	रथ	५. रथ और
परिप्लुतः ।	३. आर्द्र (बलराम जी)	पत्तिभिः ॥	६. पैदलों की

श्लोकार्थ—भाई के प्रेम से आर्द्र बलराम जी हाथी, घोड़े, रथ और पैदलों की बड़ी भारी सेना के साथ शीघ्र कुण्डिनपुर पहुँच गये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

भीष्मकन्या वरारोहा काङ्क्षन्त्यागमनं हरेः ।
प्रत्यापत्तिमपश्यन्ती द्विजस्याचिन्तयत्तदा ॥२२॥

पदच्छेद— भीष्मकन्या वरारोहा काङ्क्षन्त्या गमनम् हरेः ।
प्रति आपत्तिम् अपश्यन्ती द्विजस्य अचिन्तयत् तदा ॥

शब्दार्थ—

भीष्मकन्या	५. भीष्मक पुत्री रुक्मिणि	प्रति आपत्तिम्	७. लौट कर आना
वरारोहा	४. सुन्दरी	अपश्यन्ती	८. न देख कर
काङ्क्षन्त्या	३. प्रतीक्षा करती हुई	द्विजस्य	६. ब्राह्मण का
आगमनम्	२. आने की	अचिन्तयत्	१०. चिन्ता करने लगी
हरेः ।	१. श्रीकृष्ण के	तदा ॥	९. उस समय

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के आने की प्रतीक्षा करती हुई सुन्दरी भीष्मक कन्या रुक्मिणी ब्राह्मण का लौट कर आना न देख कर उस समय चिन्ता करने लगी ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अहो त्रियामान्तरित उद्वाहो मेऽल्पराधसः ।
नागच्छत्यरविन्दाक्षो नाहं वेद्म्यत्र कारणम् ।
सोऽपि नावर्ततेऽद्यापि मत्सन्देशहरो द्विजः ॥२३॥

पदच्छेद— अहो त्रियाम अन्तरितः उद्वाहः मे अल्पराधसः ।
न आगच्छति अरविन्दाक्षः न अहम् वेद्मि अत्र कारणम् ।
सः अपि न आवर्तते अद्य अपि मत् सन्देश हरः द्विजः ॥

शब्दार्थ—अहो	१. अहो !	वेद्मि	१२. जान पा रही हूँ
त्रियाम	४. एक रात की	अत्र	९. इसका
अन्तरित	५. देरी है (किन्तु)	कारणम्	१०. कारण
उद्वाहः	३. विवाह में	सः अपि	१५. वे भी
मे अल्पराधसः ।	२. मुझ अभागिनी के	न आवर्तते	१६. नहीं लौटे हैं
न आगच्छति	८. नहीं पधारे हैं	अद्य अपि	६. अभी तक
अरविन्दाक्षः	७. कमल नयन भगवान्	मत् सन्देश	१३. मेरा सन्देश
न अहम्	११. मैं नहीं	हरः द्विजः ॥	१४. ले जाने वाले ब्राह्मण

श्लोकार्थ—अहो ! मुझ अभागिनी के विवाह में एक रात की देरी है । किन्तु अभी तक कमल नयन भगवान् नहीं पधारे हैं । इसका कारण नहीं जान पा रही हूँ । मेरा सन्देश ले जाने वाले ब्राह्मण वे भी नहीं लौटे हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अपि मय्यनवद्यात्मा दृष्ट्वा किञ्चिज्जुगुप्सितम् ।
मत्पाणिग्रहणे नूनं नायाति हि कृतोद्यमः ॥२४॥

पदच्छेद— अपि मयि अनवद्य आत्मा दृष्ट्वा किञ्चित् जुगुप्सितम् ।
मत् पाणि ग्रहणे नूनम् न आयाति हि कृत उद्यमः ॥

शब्दार्थ—अपि	१. क्या	मत्	८. मेरा
मयि	४. मुझ में	पाणि ग्रहेण	९. हाथ पकड़ने के लिये
अनवद्य	२. विशुद्ध	नूनम्	१०. निश्चित
आत्मा	३. आत्मा श्रीकृष्ण ने	न	१३. नहीं
दृष्ट्वा	७. देख कर	आयाति	१४. आ रहे हैं
किञ्चित्	५. कुछ	हि	११. ही
जुगुप्सितम् ।	६. बुराई	कृतउद्यमः ॥	१२. उद्यत होकर

श्लोकार्थ—क्या विशुद्ध आत्मा श्रीकृष्ण ने मुझ में कुछ बुराई देख कर मेरा हाथ पकड़ने के लिये निश्चित ही उद्यत हो कर नहीं आ रहे हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

दुर्भगाया न मे धाता नानुकूलो महेश्वरः ।
देवी वा विमुखा गौरी रुद्राणी गिरिजा सती ॥२५॥

पदच्छेद— दुर्भगायाः न मे धाता न अनुकूलः महेश्वरः ।
देवी वा विमुखा गौरी रुद्राणी गिरिजा सती ॥

शब्दार्थ—

दुर्भगायाः	२.	अभागिन के	देवी	१३.	देवी
न	३.	न	वा	८.	अथवा
मे	१.	मुझ	विमुखा	१४.	मुझ पर अप्रसन्न है
धाता	४.	विधाता	गौरी	१२.	गौरी
न	५.	और न	रुद्राणी	९.	रुद्राणी
अनुकूल	७.	अनुकूल हैं	गिरिजा	१०.	गिरिराज कुमारी
महेश्वरः ।	६.	शङ्कर ही	सती ॥	११.	सती

श्लोकार्थ—मुझे अभागिन के न विधाता और न शंकर ही अनुकूल हैं। अथवा रुद्राणी, गिरिराज कुमारी सती गौरी देवी मुझ पर अप्रसन्न हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

एवं चिन्तयती बाला गोविन्दहृतमानसा ।
न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रे चाश्रुकलाकुले ॥२६॥

पदच्छेद— एवम् चितयती बाला गोविन्द हृत मानसा ।
न्यमीलयत कालज्ञा नेत्रे च अश्रुकला आकुले ॥

शब्दार्थ—

एवम्	७.	इस प्रकार	न्यमीलयत	१२.	बन्द कर लिये
चिन्तयती	८.	सोच करती हुई अपने	कालज्ञा	५.	समय को जानने वाली
बाला	६.	वाला (रुक्मिणि)	नेत्रे	११.	नेत्रों को
गोविन्द	१.	भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा	च	४.	और
हृत	२.	अपहृत	अश्रुकला	९.	आंसू
मानसा ।	३.	चित्त वाली	आकुले ॥	१०.	भरे

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा अपहृत चित्तवाली और समय को जानने वाली बाला रुक्मिणी इस प्रकार सोच करती हुई अपने आंसू भरे नेत्रों को बन्द कर लिये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एवं वध्वाः प्रतीक्षन्त्या गोविन्दागमनं नृप ।
वाम ऊरुर्भुजो नेत्रमस्फुरन् प्रियभाषिणः ॥२७॥

पदच्छेद— एवम् वध्वाः प्रतीक्षन्त्याः गोविन्द आगमनम् नृप ।
वामः ऊरुः भुजः नेत्रम् अस्फुरन् प्रिय भाषिणः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	वामः ऊरुः	९.	बायीं जाँघ,
वध्वाः	६.	रुक्मिणी जी की	भुजः	१०.	भुजा और
प्रतीक्षन्त्याः	५.	प्रतीक्षा करती हुई	नेत्रम्	११.	नेत्र
गोविन्द	३.	भगवान् श्रीकृष्ण के	अस्फुरन्	१२.	फड़कने लगे
आगमनन्	४.	आने की	प्रिय	७.	प्रिय बात
नृप ।	१.	हे राजन्	भाषिणः ॥	८.	बताने वाली

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण के आने की प्रतीक्षा करती हुई रुक्मिणी को प्रिय बताने वाली बायीं जाँघ, भुजा और नेत्र फड़कने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अथ कृष्णविनिर्दिष्टः स एव द्विजसत्तमः ।
अन्तःपुरचरीं देवीं राजपुत्रीं ददर्श ह ॥२८॥

पदच्छेद— अथ कृष्ण विनिर्दिष्टः सः एव द्विज सत्तमः ।
अन्तःपुरचरीम् देवीम् राजपुत्रीम् ददर्श ह ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	अन्तःपुर	७.	अन्तःपुर में
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण के	चरीम्	८.	रहने वाली
विनिर्दिष्टः	३.	भेजे हुये	देवीम्	१०.	रुक्मिणी को
सः एव	४.	उन्हें	राजपुत्रीम्	९.	राजकुमारी
द्विज	६.	ब्राह्मण ने	ददर्श ह ॥	११.	देखा
सत्तमः ।	५.	श्रेष्ठ			

श्लोकार्थ—तदनन्तर श्रीकृष्ण के भेजे हुये उन्हीं श्रेष्ठ ब्राह्मण ने अन्तःपुर में विचरण करने वाली राजकुमारी रुक्मिणी को देखा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

सा तं प्रहृष्टवदनमव्यग्रात्मगतिं सती ।
आलक्ष्य लक्षणाभिज्ञा समपृच्छच्छुचिस्मिता ॥२९॥

पदच्छेद— सा तम् प्रहृष्ट वदनम् अव्यग्र आत्म गतिम् सती ।
आलक्ष्य लक्षण अभिज्ञा समपृच्छत् शुचिस्मिता ॥

शब्दार्थ—

सा	११.	उस	आलक्ष्य	६.	देखकर
तम्	५.	ब्राह्मण को	लक्षण	७.	लक्षणों को
प्रहृष्ट	१	प्रसन्न	अभिज्ञा	८.	जानने वाली
वदनम्	२.	मुख वाले तथा	समपृच्छत्	१३.	पूछा
अव्यग्र	३.	घबराहट से रहित	शुचि	९.	पवित्र
आत्म गतिम्	४.	मनकी गति वाले	स्मिता ॥	१०.	मुसकान वाली
सती ।	१२.	सती रुक्मिणी ने			

श्लोकार्थ—प्रसन्न मुख वाले तथा घबराहट से रहित मन की गति वाले ब्राह्मण को देखकर लक्षण को जानने वाली पवित्र मुसकान वाली उस सती रुक्मिणी ने पूछा ॥

त्रिंशः श्लोकः

तस्या आवेदयत् प्राप्तं शशंस यदुनन्दनम् ।
उक्तं च सत्यवचनमात्मोपनयनं प्रति ॥३०॥

पदच्छेद— तस्याः आवेदयत् प्राप्तम् शशंस यदुनन्दनम् ।
उक्तम् च सत्यवचनम् आत्म उपनयनम् प्रति ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	१.	उनसे	उक्तम्	११.	कहा
आवेदयत्	२.	निवेदन किया कि	च	१०.	भी
प्राप्तम्	४.	आ गये हैं और	सत्यवचनम्	९.	सत्यवचन
शशंस	५.	उनकी प्रशंसा की	आत्म	६.	अपने
यदुनन्दनम् ।	३.	श्रीकृष्ण	उपनयनम्	७.	साथ ले जाने के
प्रति ॥	८.	सम्बन्ध में			

श्लोकार्थ—उनसे निवेदन किया कि श्रीकृष्ण आ गये हैं। और उनकी प्रशंसा की एवं अपने साथ ले जाने के सम्बन्ध में सत्यवचन भी कहा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तमागतं समाज्ञाय वैदर्भी हृष्टमानसा।
न पश्यन्ती ब्राह्मणाय प्रियमन्यन्ननाम सा ॥३१॥

पदच्छेद— तम् आगतम् सम् आज्ञाय वैदर्भी हृष्ट मानसा।
न पश्यन्ती ब्राह्मणाय प्रियम् अन्यत् ननाम सा ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन श्रीकृष्ण को	न पश्यन्ती	१०.	न देखकर
आगतम्	२.	आये हुये	ब्राह्मणाय	७.	ब्राह्मण के लिये
सम् आज्ञाय	३.	जान कर	प्रियम्	८.	प्रिय और
वैदर्भी	६.	रुक्मिणी जी ने	अन्यत्	९.	कुछ
हृष्ट	४.	प्रसन्न	ननाम	१२.	केवल प्रणाम कर लिया
मानसा।	५.	चित्त	सा ॥	११.	उन्होंने

श्लोकार्थ—उन श्रीकृष्ण को आया हुआ जानकर प्रसन्न चित्त रुक्मिणी जी ने ब्राह्मण के लिये और कुछ प्रिय न देखकर उन्होंने केवल प्रणाम कर लिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

प्राप्तौ श्रुत्वा स्वदुहितुरुद्वाहप्रेक्षणोत्सुकौ।
अभ्ययात्तूर्यघोषेण रामकृष्णौ समर्हणैः ॥३२॥

पदच्छेद— प्राप्तौ श्रुत्वा स्वदुहितुः उद्वाह प्रेक्षण उत्सुकौ।
अभ्ययात् तूर्य घोषेण रामकृष्णौ सम्अर्हणैः ॥

शब्दार्थ—

प्राप्तौ	५.	आये हुये	अभ्ययात्	११.	उनकी अगवानी की
श्रुत्वा	७.	सुनकर (भीष्मक) ने	तूर्य	८.	तुरही
स्वदुहितुः	१.	अपनी पुत्री का	घोषेण	९.	बजवाते हुये
उद्वाह	२.	विवाह	रामकृष्णौ	६.	बलराम और श्रीकृष्ण
प्रेक्षण	३.	देखने के लिये	समर्हणैः ॥	१०.	पूजन की सामग्री लेकर
उत्सुकौ।	४.	उत्सुक होकर			

श्लोकार्थ—अपनी पुत्री का विवाह देखने के लिये उत्सुक होकर आये हुये बलराम और श्रीकृष्ण को सुनकर भीष्मक ने तुरही बजवाते हुये पूजन की सामग्री लेकर उनकी अगवानी की ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

मधुपर्कमुपानीय वासांसि विरजांसि सः ।
उपायनान्यभीष्टानि विधिवत् समपूजयत् ॥३३॥

पदच्छेद— मधुपर्कम् उपानीय वासांसि विरजांसि सः ।
उपायनानि अभीष्टानि विधिवत् समपूजयत् ॥

शब्दार्थ—

मधुपर्कम्	२. मधुपर्क	उपायनानि	६. भेंट
उपानीय	७. देकर	अभीष्टानि	५. मनचाही
वासांसि	४. वस्त्र	विधि	८. विधि
विरजांसि	३. निर्मल	वत्	९. पूर्वक उनकी
सः ।	१. उन्होंने	समपूजयत् ॥	१०. पूजा की

श्लोकार्थ—उन्होंने मधुपर्क, निर्मल वस्त्र और मनचाही भेंट देकर विधिपूर्वक उनकी पूजा की ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तयोर्निवेशनं श्रीमदुपकल्प्य महामतिः ।
ससैन्ययोः सानुगयोरातिथ्यं विदधे यथा ॥३४॥

पदच्छेद— तयोः निवेशनम् श्रीमद् उपकल्प्य महामतिः ।
ससैन्ययोः सानुगयोः आतिथ्यम् विदधे यथा ॥

शब्दार्थ—

तयोः	५. उन दोनों का	ससैन्ययो	३. सेना और
निवेशनम्	७. निवास स्थान में	सानुगयोः	४. साथियों के सहित
श्रीमद्	६. सुन्दर	आतिथ्यम्	१०. आतिथ्य सत्कार
उपकल्प्य	८. ठहराकर	विदधे	११. किया
महा	१. महा	यथा ॥	९. यथोचित
मतिः ।	२. बुद्धिमान् (भीष्मक ने)		

श्लोकार्थ—महा बुद्धिमान् भीष्मक ने सेना और साथियों के सहित उन दोनों को सुन्दर निवास स्थान में ठहराकर यथोचित आतिथ्य सत्कार किया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एवं राज्ञां समेतानां यथावीर्यं यथावयः ।
यथाबलं यथावित्तं सर्वैः कामैः समर्हयत् ॥३५॥

पदच्छेद— एवम् राज्ञाम् समेतानाम् यथा वीर्यम् यथा वयः ।
यथा बलम् यथा वित्तम् सर्वैः कामैः समर्हयत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	यथा बलम्	७.	बल तथा
राज्ञाम्	३.	राजाओं का	यथा वित्तम्	८.	धन के अनुसार
समेतानाम्	२.	वहाँ पर आये हुये	सर्वैः	९.	सभी प्रकार से
यथा	४.	उनके	कामैः	१०.	इच्छित वस्तुओं द्वारा
वीर्यम्	५.	पराक्रम	समर्हयत् ॥	११.	खूब सत्कार किया
यथावयः ।	६.	तथा अवस्था			

श्लोकार्थ—इस प्रकार वहाँ पर आये हुये राजाओं का उनके पराक्रम तथा अवस्था, बल तथा धन के अनुसार सभी प्रकार से इच्छित वस्तुओं के द्वारा खूब सत्कार किया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

कृष्णमागतमाकर्ण्य विदर्भपुरवासिनः ।
आगत्य नेत्राञ्जलिभिः पपुस्तन्मुखपङ्कजम् ॥३६॥

पदच्छेद— कृष्णम् आगतम् आकर्ण्य विदर्भ पुर वासिनः ।
आगत्य नेत्र अञ्जलिभिः पपुः तत् मुख पङ्कजम् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णम्	१.	कृष्ण को	आगत्य	७.	आकर
आगतम्	२.	आये हुये	नेत्र	८.	नेत्रों की
आकर्ण्य	३.	सुन कर	अञ्जलिभिः	९.	अञ्जलि में
विदर्भ	४.	विदर्भ	पपुः	१२.	पान करने लगे
पुर	५.	नगर के	तत्	१०.	उनके
वासिनः ।	६.	निवासी	मुख पङ्कजम् ॥	११.	मुख कमल का (मकरंद)

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को आये हुये सुन कर विदर्भ नगर के निवासी आकर नेत्रों की अञ्जलि में उनके मुख कमल का मकरन्द पान करने लगे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अस्यैव भार्या भवितुं रुक्मिण्यर्हति नापरा ।
असावप्यनवद्यात्मा भैष्म्याः समुचितः पतिः ॥३७॥

पदच्छेद— अस्य एव भार्या भवितुम् रुक्मिणी अर्हति न अपरा ।
असौ अपि अनवद्य आत्मा भैष्म्याः समुचितः पतिः ॥

शब्दार्थ—

अस्य	३. इनको	असौ	८. ये
एव	२. ही	अपि	९. भी
भार्या	४. पत्नी	अनवद्य	१०. पवित्र
भवितुम्	५. होने के	आत्मा	११. मूर्ति
रुक्मिणी	१. रुक्मिणी	भैष्म्याः	१२. रुक्मिणी के
अर्हति	६. योग्य है	समुचितः	१३. योग्य
न अपरा ।	७. दूसरी कोई नहीं है	पतिः ॥	१४. पति हैं

श्लोकार्थ—रुक्मिणी ही इनकी पत्नी होने के योग्य है । दूसरी कोई नहीं है । ये भी पवित्र मूर्ति रुक्मिणी के योग्य पति हैं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

किञ्चित्सुचरितं यन्नस्तेन तुष्टस्त्रिलोककृत् ।
अनुगृह्णातु गृह्णातु वैदर्भ्याः पाणिमच्युतः ॥३८॥

पदच्छेद— किञ्चित् सुचरितम् यन्नः तेन तुष्टः त्रिलोककृत् ।
अनुगृह्णातु गृह्णातु वैदर्भ्याः पाणिम् अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

किञ्चित्	१. कुछ	अनुगृह्णातु	९. कृपा करें और
सुचरितम्	३. सत्कर्म किया है	गृह्णातु	१२. ग्रहण करें
यन्नः	१. हमने जो	वैदर्भ्याः	१०. रुक्मिणी का
तेन	४. उससे	पाणिम्	११. पाणि
तुष्ट	५. सन्तुष्ट होकर	अच्युतः ॥	८. भगवान् श्रीकृष्ण
त्रिलोककृत् ।	६. तीनों लोकों के रचयिता		

श्लोकार्थ—हमने जो कुछ सत्कर्म किया है, उससे तीनों लोकों के रचयिता भगवान् श्रीकृष्ण कृपा करें और रुक्मिणी का पाणि ग्रहण करें ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

एवं प्रेमकलाबद्धा वदन्ति स्म पुरौकसः ।
कन्या चान्तःपुरात् प्रागाद् भटैर्गुप्ताम्बिकालयम् ॥३९॥

पदच्छेद— एवम् प्रेमकला बद्धा वदन्ति स्म पुरौकसः ।
कन्या च अन्तःपुरात् प्रागात् भटैःगुप्ता अम्बिका आलयम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	कन्या	९.	कन्या रुक्मिणी
प्रेमकला	२.	प्रेम की रस्सी से	च	७.	और
बद्धाः	३.	बंधे हुये	अन्तःपुरात्	८.	अन्तःपुर से
वदन्ति	५.	बोल रहे	प्रागात्	१३.	चल पड़ी
स्म	६.	थे	भटैःगुप्ता	१०.	सैनिकों से सुरक्षित
पुरौकसः ।	४.	पुरवासी	अम्बिका	११.	देवी के
			आलयम् ॥	१२.	मन्दिर के लिये

श्लोकार्थ— इस प्रकार प्रेम की डोरी में बँध कर पुरवासी बोल रहे थे । और अन्तःपुर से कन्या रुक्मिणी सैनिकों से सुरक्षित देवी मन्दिर की ओर चल पड़ी ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

पद्भ्यां विनिर्ययौ द्रष्टुं भवान्याः पादपल्लवम् ।
सा चानुध्यायती सम्यङ् मुकुन्दचरणाम्बुजम् ॥४०॥

पदच्छेद— पद्भ्याम् विनिर्ययौ द्रष्टुम् भवान्याः पाद पल्लवम् ।
सा च अनुध्यायती सम्यक् मुकुन्द चरण अम्बुजम् ॥

शब्दार्थ—

पद्भ्याम्	११.	पैदल ही	सा च	१.	वह
विनिर्ययौ	१२	चलीं	अनुध्यायती	६.	ध्यान करती हुई
द्रष्टुम्	१०.	दर्शन करने को	सम्यक्	५.	भली-भाँति
भवान्याः	७.	भवानी के	मुकुन्द	२.	श्रीकृष्ण के
पाद	८.	चरण	चरण	३.	चरण
पल्लवम् ।	९.	पल्लव का	अम्बुजम् ॥	४.	कमलों का

श्लोकार्थ— वह भी श्रीकृष्ण के चरण कमलों का भली-भाँति ध्यान करती हुई, भवानी के चरण पल्लव का दर्शन करने के लिये पैदल ही चलीं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

यतवाङ्मातृभिः सार्धं सखीभिः परिवारिता ।
गुप्ता राजभटैः शूरैः सन्नद्धैरुद्यतायुधैः ।
मृदङ्गशङ्खपणवास्तूर्यभेर्यश्च जघ्निरे ॥४१॥

पदच्छेद — यतवाक् मातृभिः सार्धम् सखीभिः परिवारिता ।
गुप्ता राजभटैः शूरैः सन्नद्धैः उद्यत आयुधैः ।
मृदङ्ग शङ्ख पणवाः तूर्य भेर्यः च जघ्निरे ॥

शब्दार्थ—

यतवाक्	५.	वह मौन थीं	सन्नद्धैः	११.	कवच पहने थे
मातृभिः	१.	माताओं के	उद्यत	१०.	उठाये और
सार्धम्	२.	साथ	आयुधैः	६.	अस्त्र-शस्त्र
सखीभिः	३.	सखियों से	मृदङ्ग शङ्ख	१२.	मृदङ्ग, शंख
परिवारिता ।	४.	घिरी हुई	पणव तूर्य	१३.	ढोल, तुरही
गुप्ता	८.	उनकी रक्षा कर रहे थे	भेर्यः	१५.	भेरी आदि बाजे
राजभटैः	७.	राज सैनिक	च	१४.	तथा
शूरैः	६	शूरवीर	जघ्निरे ॥	१६.	बज रहे थे

श्लोकार्थ—माताओं के साथ सखियों से घिरी हुई वह मौन थीं। शूरवीर राज सैनिक उनकी रक्षा कर रहे थे। अस्त्र-शस्त्र उठाये और कवच पहने थे। मृदङ्ग, ढोल, शङ्ख, तुरही तथा भेरी आदि बाजे बज रहे थे ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

नानोपहारबलिभिर्वारमुख्याः सहस्रशः ।
स्रग्गन्धवस्त्राभरणैर्द्विजपत्न्यः स्वलङ्कृताः ॥४२॥

पदच्छेद— नाना उपहार बलिभिः वार मुख्याः सहस्रशः ।
स्रक् गन्ध वस्त्र आभरणैः द्विजपत्न्यः सु अलङ्कृताः ॥

शब्दार्थ—

नाना	७.	अनेक	स्रक्	२.	माला
उपहार	८.	उपहार तथा	गन्ध	३.	चन्दन
बलिभिः	९.	पूजन सामग्रियां लेकर	वस्त्र	४.	वस्त्र और
वार	१२.	वाराङ्गनायें साथ थीं	आभरणैः	५.	आभूषणों से
मुख्याः	११.	श्रेष्ठ	द्विजपत्न्यः	१.	ब्राह्मणों की पत्नियाँ
सहस्रशः ।	१०.	हजारों	सु अलङ्कृताः ॥	६.	सज धज कर साथ चल रही थीं

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों की पत्नियाँ माला, चन्दन, वस्त्र और आभूषणों से सज-धज कर साथ चल रही थीं। और अनेक उपहार तथा पूजन सामग्रियाँ लेकर हजारों श्रेष्ठ वाराङ्गनायें साथ थीं ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

गायन्तश्च स्तुवन्तश्च गायका वाद्यवादकाः ।
परिवार्य वधूं जग्मुः सूतमागधवन्दिनः ॥४३॥

पदच्छेद— गायन्तः च स्तुवन्तः च गायकाः वाद्य वादकाः ।
परिवार्य वधूम् जग्मुः सूत मागध वन्दिनः ॥

शब्दार्थ—

गायन्तः च	३. गाते हुये और	परिवार्य	२. चारों ओर
स्तुवन्तः च	४. स्तुति करते हुये	वधूम्	१. दुलहिन के
गायकाः	५. गायक लोग	जग्मुः	१०. चल रहे थे
वाद्य	६. बाजे	सूतमागध	८. सूत मागध और
वादकाः ।	७. बजाने वाले	वन्दिनः ॥	९. वन्दीजन

श्लोकार्थ—दुलहिन के चारों ओर गाते और स्तुति करते हुये गायक लोग, बाजे बजाने वाले और सूत-मागध वन्दिजन चल रहे थे ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

आसाद्य देवीसदनं धौतपादकराम्बुजा ।
उपस्पृश्य शुचिः शान्ता प्रविवेशाम्बिकान्तिकम् ॥४४॥

पदच्छेद— आसाद्य देवी सदनम् धौत पाद कर अम्बुजा ।
उपस्पृश्य शुचिः शान्ता प्रविवेश अम्बिका अन्तिकम् ॥

शब्दार्थ—

आसाद्य	३. पहुँच कर	उपस्पृश्य	८. आचमन किया
देवी	१. देवी के	शुचिः	९. पवित्र होकर
सदनम्	२. मन्दिर में	शान्ता	१०. शान्त भाव से
धौत	७. धोकर	प्रविवेश	१३. गई
पाद	६. पैर	अम्बिका	११. दुर्गा के
कर	५. हाथ	अन्तिकम् ॥	१२. पास
अम्बुजा ।	४. कमल के समान		

श्लोकार्थ—देवी के मन्दिर में पहुँच कर कमल के समान हाथ पैर धोकर आचमन किया । और पवित्र होकर शान्त भाव से दुर्गा के पास गई ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तां वै प्रवयसो बालां विधिज्ञा विप्रयोषितः ।
भवानीं वन्दयाञ्चक्रुर्भवपत्नीं भवान्विताम् ॥४५॥

पदच्छेद— ताम् वै प्रवयसः बालाम् विधिज्ञाः विप्र योषितः ।
भवानीं वन्दयाञ्चक्रुः भव पत्नीम् भव अन्विताम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	२. उस	भवानीम्	१२. अम्बिका जी को
वै	१. निश्चय ही	वन्दयाम्	१३. प्रणाम
प्रवयसः	४. बड़ी बूढ़ी	चक्रुः	१४. कराया
बालाम्	३. बाला (रुक्मिणी) को	भव	१०. शिव
विधिज्ञाः	५. विधि विधान जानने वाली	पत्नी	११. पत्नी
विप्र	६. ब्राह्मण	भव	८. शंकर
योषितः ।	७. पत्नियों ने	अन्विताम् ॥	९. सहित

श्लोकार्थ—निश्चय ही उस बाला रुक्मिणी को बड़ी बूढ़ी एवं विधि विधान को जानने वाली ब्राह्मण पत्नियों ने शंकर सहित शिव-पत्नी अम्बिका जी को प्रणाम कराया ।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

नमस्ये त्वाम्बिकेऽभीक्ष्णं स्वसन्तानयुतां शिवाम् ।
भूयात् पतिर्मे भगवान् कृष्णस्तदनुमोदताम् ॥४६॥

पदच्छेद— नमस्ये त्वा अम्बिके ऽभीक्ष्णम् स्वसन्तान युताम् शिवाम् ।
भूयात् पतिः मे भगवान् कृष्णः तत् अनुमोदताम् ॥

शब्दार्थ—

नमस्ये	७. मैं नमस्कार करती हूँ	भूयात्	१२. हों
त्वा	४. आप	पतिः	११. पति
अम्बिके	१. अम्बिका माता	मे	१०. मेरे
अभीक्ष्णम्	६. बा-बार	भगवान्	८. भगवान्
स्वसन्तान	२. अपने सन्तान गणेश जी से	कृष्णः	९. श्रीकृष्ण
युताम्	३. युक्त	तत्	१३. इसका आप
शिवाम् ।	५. गौरी को	अनुमोदताम् ॥	१४. अनुमोदन करें

श्लोकार्थ—अम्बिका माता ! अपने सन्तान गणेश जी से युक्त आप गौरी को बार-बार नमस्कार करती हूँ । भगवान् श्रीकृष्ण मेरे पति हों । इसका आप अनुमोदन करें ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

अद्भिर्गन्धाक्षतैर्धूपैर्वासःस्रङ्माल्यभूषणैः ।
नानोपहारबलिभिः प्रदीपावलिभिः पृथक् ॥४७॥

पदच्छेद— अद्भिः गन्ध अक्षतैः धूपैःवासः स्रक्माल्य भूषणैः ।
नाना उपहार बलिभिः प्रदीप आवलिभिः पृथक् ॥

शब्दार्थ—

अद्भिः	१. जल	नाना	७. अनेक प्रकार के
गन्धः	२. चन्दन	उपहार	८. उपहार
अक्षतैः	३. अक्षत	बलिभिः	९. नैवेद्यों तथा
धूपैः वासः	४. धूप-वस्त्र	प्रदीप	१०. दीपक
स्रक् माल्य	५. पुष्प माला हार	आवलिभिः	११. समूहों से
भूषणैः ।	६. आभूषण और	पृथक् ॥	१२. अलग-अलग पूजा की

श्लोकार्थ—उन्होंने अम्बिका जी की जल, चन्दन, अक्षत, धूप-वस्त्र, पुष्प-माला, हार, आभूषण और अनेक प्रकार के उपहार, नैवेद्यों तथा दीपक समूहों से अलग-अलग पूजा की ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

विप्रस्त्रियः पतिमतीस्तथा तैः समपूजयत् ।
लवणापूपताम्बूलकण्ठसूत्रफलेक्षुभिः ॥४८॥

पदच्छेद— विप्रस्त्रियः पतिमतीः तथा तैः समपूजयत् ।
लवण आपूप ताम्बूल कण्ठ सूत्र फल इक्षुभिः ॥

शब्दार्थ—

विप्रस्त्रियः	९. ब्राह्मणियों की भी	लवण	३. नमक
पतिमतीः	८. पतिव्रता सुहागिन	आपूप	४. पुआ
तथा	२. तथा	ताम्बूल	५. पान
तैः	१. उक्त सामग्रियों से	कण्ठ सूत्र	६. कण्ठ सूत्र
समपूजयत् ।	१०. पूजा की	फल ईक्षुभिः ॥	७. फल और ईख से

श्लोकार्थ—उक्त सामग्रियों से तथा नमक, पुआ, कण्ठ-सूत्र, फल और ईख से पतिव्रता सुहागिन ब्राह्मणियों की भी पूजा की ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तस्यै स्त्रियस्ताः प्रददुः शेषां युयुजुराशिषः ।
ताभ्यो देव्यै नमश्चक्रे शेषां च जगृहे वधूः ॥४९॥

पदच्छेद— तस्यै स्त्रियः ताः प्रददुः शेषाम् युयुजुः आशिषः ।
ताभ्यः देव्ये नमः चक्रे शेषाम् च जगृहे वधूः ॥

शब्दार्थ—

तस्यै	३. उस वधू को	ताभ्यः	१०. उन स्त्रियों को
स्त्रियः	२. स्त्रियों ने	देव्यै	९. देवी को और
ताः	१. उन	नमः	११. नमस्कार
प्रददुः	५. दिया (और)	चक्रे	१२. किया
शेषाम्	४. प्रसाद	शेषां	१३. तथा प्रसाद
युयुजुः	७. युक्त किया	च जगृहे	१४. लिया
आशिषः ।	६. आशीर्वाद से	वधूः ॥	८. वधू ने

श्लोकार्थ—उन स्त्रियों ने उस वधू को प्रसाद दिया और आशीर्वाद से युक्त किया । वधू ने देवी को और उन स्त्रियों को नमस्कार किया तथा प्रसाद लिया ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

मुनिव्रतमथ त्यक्त्वा निश्चक्रामाम्बिकागृहात् ।
प्रगृह्य पाणिना भृत्यां रत्नमुद्रोपशोभिना ॥५०॥

पदच्छेद— मुनि व्रतम अथ त्यक्त्वा निश्चक्राम अम्बिका गृहात् ।
प्रगृह्य पाणिना भृत्याम् रत्न मुद्रा उपशोभिना ॥

शब्दार्थ—

मुनि	२. मौन	प्रगृह्य	१०. पकड़ कर
व्रत	३. व्रत को	पाणिना	८. हाथ से
अथ	१. तदनन्तर	भृत्याम्	९. एक सहेली को
त्यक्त्वा	४. तोड़ कर	रत्न	५. रत्न जटित
निश्चक्राम	१३. बाहर निकली	मुद्रा	६. अंगूठी से
अम्बिका	११. देवी के	गृहात् ।	१२. मन्दिर से
		उपशोभिना ॥	७. सुशोभित

श्लोकार्थ—तदनन्तर मौन व्रत को तोड़ कर रत्न जटित अंगूठा से सुशोभित हाथ से एक सखी को पकड़ कर देवी के मन्दिर से बाहर निकलीं ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तां देवमायामिव वीरमोहिनीं सुमध्यमां कुण्डलमण्डितानननाम् ।
श्यामां नितम्बार्पितरत्नमेखलां व्यञ्जत्स्तनीं कुन्तलशङ्कितेक्षणाम् ॥५१॥

पदच्छेद—ताम् देवमायाम् इव वीर मोहिनीम् सुमध्यमाम् कुण्डल मण्डित आननाम् ।
श्यामाम् नितम्ब अर्पित रत्न मेखलाम् व्यञ्जत्स्तनीम् कुन्तल शङ्कित ईक्षणाम् ॥

शब्दार्थ—ताम्	३. उस कन्या को देख कर सब मोहित हो गये ।	श्यामाम्	९. किशोरावस्थावाली
देवमायाम्	१. भगवान् की माया के	नितम्ब	१०. नितम्बों पर
इव	२. समान	अर्पित	१३. शोभायमान
वीरमोहिनीम्	४. वीरों को मोहित करने वाली	रत्न	११. रत्नों की
सुमध्यमाम्	५. सुन्दर कटिवाली	मेखलाम्	१२. करधनी से
कुण्डल	६. कुण्डलों से	व्यञ्जत्स्तनीम्	१४ कुछ उभरे हुये वक्षःस्थलवाली
मण्डित	७. शोभित	कुन्तलशङ्कित	१५. अलकों के कारण चंचल
आननाम् ।	८. मुखवाली	ईक्षणाम् ॥	१६. दृष्टि वाली थी

श्लोकार्थ—भगवान् की माया के समान उस कन्या को देखकर सब मोहित हो गये । वह वीरों को मोहित करने वाली, सुन्दर कटिवाली, कुण्डलों से शोभित मुखवाली, किशोरावस्थावाली नितम्बों पर रत्नों की करधनी से शोभायमान, कुछ उभरे वक्षः स्थलवाली और अलकों के कारण चञ्चल दृष्टिवाली थीं । उस कन्या को देख कर सब मोहित हो गये ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

शुचिस्मितां बिम्बफलाधरद्युतिशोणायमानद्विजकुन्दकुड्मलाम् ।
पदा चलन्तीं कलहंसगामिनीं शिञ्जत्कलानूपुरधामशोभिना ।
विलोक्य वीरा मुमुहुः समागता यशस्विनस्तत्कृतहृच्छयार्दिताः ॥५२॥

पदच्छेद—शुचिस्मिताम् बिम्बफल अधरद्युति शोणायमान द्विजकुन्द कुड्मलाम् ।
पदा चलन्तीं कलहंस गामिनीं शिञ्जत्कलानूपुर धाम शोभिना ।
विलोक्य वीराः मुमुहुः समागताः यशस्विनः तत्कृत हृच्छय अर्दिताः ॥

शब्दार्थ—शुचिस्मिताम्	१. पवित्र मुसकान वाली	शिञ्जत्कला	६. रुनझुन करते हुये
बिम्बफल अधरद्युति	२. बिम्बाफल के समान अधरों की	नूपुरधाम शोभिता ।	७. पायलों की चमक से शोभित
शोभायमान	३. चमक से लाल बने हुये	विलोक्य	१०. देखकर
द्विज	५. उज्ज्वल दाँतों वाली	वीरामुमुक्षुः	१४. वीर गण मोहित हो गये
कुन्दकुड्मलाम्	४. कुन्दकली के समान	समागतायशस्विनः	११. वहाँ आये हुये यशस्वी
पदा चलन्तीम्	९. पैदल चलती हुई, उसे	तत्कृतहृच्छया	१२. उसके लिये कामदेव द्वारा
कलहंस गामिनीम् ।	८. राजहंस की-सी गति वाली	अर्दिताः ॥	१३. पीड़ित

श्लोकार्थ—पवित्र मुसकान वाली बिम्बाफल के समान अधरों की चमक से लाल बने हुये कुन्द कली के समान उज्ज्वल दांतों वाली रुनझुन करते हुये पायलों की चमक से शोभित राजहंस की सी गति वाली पैदल चलती हुई देख कर वहाँ आये हुये यशस्वी उसके लिये कामदेव द्वारा पीड़ित वीरगण मोहित हो गये ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

यां वीक्ष्य ते नृपतयस्तदुदारहासव्रीडावलोकहृतचेतस उज्झितास्त्राः ।
पेतुः क्षितौ गजरथाश्वगता विमूढा यात्राच्छलेन हरयेऽर्पयतीं स्वशोभाम् ॥५३

पदच्छेद—याम् वीक्ष्य ते नृपतयः तत् उदार हास व्रीडा अवलोक हृत चेतसः उज्झित अस्त्राः ।
पेतुः क्षितौ गजरथ अश्वगता विमूढाः यात्रा च्छलेन हरये अर्पयतीम् स्वशोभाम् ॥

शब्दार्थ—

याम् वीक्ष्य	५. उसे देखकर	पेतुःक्षितौ	१६. पृथ्वी पर गिर पड़े
ते नृपतयः	१०. वे राजा लोग	गजरथ	१४. हाथी-रथ तथा
तत् उदार	६. उसकी उदार	अश्वगताः	१५. घोड़ों से
हास व्रीडा	७. मुसकान-लज्जा और	विमूढाः	१३. अत्यन्त मोहित होकर
अवलोक	८. चितवन से	यात्रा च्छलेन	२. यात्रा के बहाने
हृतचेतसः	९. चुराये गये चित्त वाले	हरये	१. भगवान् श्रीकृष्ण को
उज्झित	१२. छोड़ बैठे (तथा)	अर्पयतीम्	४. अर्पित कर रही थीं
अस्त्राः ।	११. अस्त्र-शस्त्रों को	स्वशोभाम् ॥	३. अपनी शोभा

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण को यात्रा के बहाने अपनी शोभा अर्पित कर रही थीं । उसे देखकर उसकी उदार मुसकान, लज्जा और चितवन से चुराये गये चित्त वाले वे राजा लोग अस्त्र-शस्त्रों को छोड़ बैठो तथा अत्यन्त मोहित होकर हाथी-रथ तथा घोड़ों से पृथ्वी पर गिर पड़े ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सैवं शनैश्चलयती चलपद्मकोशौ प्राप्तिं तदा भगवतः प्रसमीक्षमाणा ।
उत्सार्य वामकरजैरलकानपाङ्गैः प्राप्तान् ह्रियैक्षत नृपान् ददृशेऽच्युतं सा ॥५४॥

पदच्छेद—सा एवम् शनैः चलयती चल पद्मकोशौ प्राप्तिम् तदा भगवतः प्रसमीक्षमाणा ।
उत्सार्य वामकरजैः अलकाम् अपाङ्गैः प्राप्तान् ह्रिया ऐक्षत नृपान् ददृशे अच्युतम् सा ॥

शब्दार्थ—सा	१६. उन्हें	उत्सार्य	११. हटा कर
एवम्	१. इस प्रकार	वामकरजैः	९. अपने बाँयें हाथ की अंगुलियोंसे
शनैः	४. धीरे-धीरे	अलकान्	१०. घुंघराली अलकों को
चलयती	५. चलाती हुईं	अपाङ्गैः	१५. चितवन से देखा
चल	२. चञ्चल	प्राप्तान्	१२. आये हुये
पद्मकोशौ	३. कमल कोशके समानचरणों	कोह्रियाक्षत	१४. लजाली
प्राप्तिम्	७. आने की	नृपान्	१३ उन राजाओं को
तदाभगवतः	६. उस समय भगवान् के	ददृशे अच्युतम्	१८. भगवान् श्रीकृष्णके दर्शन हुये
प्रसमीक्षमाणा ।	८. प्रतिक्षा कर रहीं थीं	सा ॥	१७. उसी समय

श्लोकार्थ—इस प्रकार चञ्चल कमल कोश के समान चरणों को धीरे-धीरे चलाती हुईं उस समय के आने की भगवान् को प्रतीक्षा कर रही थीं । अपने बाँयें हाथ की अंगुलियों से घुंघराली अलकों को हटा कर आये हुये उन राजाओं को लजीली चितवन से देखा । उन्हें उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन हुये ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तां राजकन्यां रथमारुरुक्षतीं जहार कृष्णो द्विषतां समीक्षताम्।

रथं समारोप्य सुपर्णलक्षणं राजन्यचक्रं परिभूय माधवः ॥५५॥

पदच्छेद— ताम् राजकन्याम् रथम् आरुरुक्षतीम् जहार कृष्णः द्विषताम् समीक्षताम्।

रथम् सम् आरोप्य सुपर्ण लक्षणम् राजन्य चक्रम् परिभूय माधवः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	३.	उस	रथम्	१५.	अपने रथ पर
राजकन्याम्	४.	राजकुमारी का	सम् आरोप्य	१६.	बैठा लिया
रथम्	१.	रथ पर	सुपर्ण	१३.	गरुड़ के
आरुरुक्षतीम्	२.	चढ़ती हुई	लक्षणम्	१४.	चिह्न से युक्त
जहार	८.	हरण कर लिया	राजन्य	९.	राजाओं के
कृष्णः	५.	श्रीकृष्ण ने	चक्रम्	१०.	समूह की
द्विषताम्	६.	शत्रुओं के	परिभूय	११.	अवहेलना करके
समीक्षताम्।	७.	देखते-देखते	माधवः ॥	१२.	श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—रथ पर चढ़ती हुई उस राजकुमारी का श्रीकृष्ण ने शत्रुओं के देखते-देखते हरण कर लिया। राजाओं के समूह की अवहेलना करके श्रीकृष्ण ने गरुड़ के चिह्न से युक्त अपने रथ पर बैठा लिया ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

ततो ययौ रामपुरोगमैः शनैः।

सृगालमध्यादिव भागहृद्धरिः ॥५६॥

पदच्छेद— ततः ययौ राम पुरोगमैः शनैः।

सृगाल मध्यात् इव भागहृत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	सृगाल	३.	सियारों के
ययौ	१०.	चल पड़े	मध्यात्	४.	बीच में से
राम	७.	बलराम	इव	२.	जैसे
पुरोगमैः	८.	आदि के साथ	भागहृत्	६.	वैसे ही श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर
शनैः।	९.	धीरे-धीरे	हरिः ॥	५.	सिंह अपना भाग ले जाये

श्लोकार्थ—इसके बाद जैसे सियारों के बीच में से सिंह अपना भाग ले जाये, वैसे ही श्रीकृष्ण रुक्मिणी को लेकर बलराम आदि के साथ धीरे-धीरे चल पड़े ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तं मानिनः स्वाभिभवं यशःक्षयं परे जरासन्धवशा न सेहिरे ।
अहो धिगस्मान् यश आत्तधन्वनां गोपैर्हृतं केसरिणां मृगैरिव ।।५७।।

पदच्छेद—तम् मानिनः स्वाभि भवम् यशःक्षयम् परे जरासन्ध वशाः न सेहिरे ।
अहो धिक् अस्मान् यशःआत्त धन्वनाम् गोपैः हृतम् केसरिणाम् मृगैःइव ।।

शब्दार्थ—

तम्	१५.	वह	अहो	६.	वे कहने लगे
मानिनः	२.	स्वाभिमानी	धिक्	११.	धिक्कार है
स्वाभि	५.	अपना	अस्मान्	१०.	हमें
भवम्	६.	तिरस्कार और	यशः	१८.	हमारा यश छीन ले गये
यशःक्षयम्	७.	कीर्ति का नाश	आत्त धन्वनाम्	१७.	धनुष धारण किये हुये भी
परे	१.	दूसरे	गोपैः	१५.	ये ग्वाले
जरासन्ध	३.	जरासन्ध के	हृतम्	१४.	ले जाये वैसे ही
वशा	४.	वश वर्ती राजाओं ने	केसरिणाम्	१३.	सिंहों के भाग को
न सेहिरे ।	८.	नहीं सहन किया	मृगैःइव ।।	१२.	जैसे हरिण

श्लोकार्थ—दूसरे स्वाभिमानी जरासन्ध के वशवर्त्ती राजाओं ने अपना तिरस्कार और कीर्ति का नाश नहीं सहन किया । वे कहने लगे हमें धिक्कार है । जैसे हरिण सिंहों के भाग को ले जाये वैसे ही ये ग्वाले धनुष धारण किये हुये भी हमारा यश छीन ले गये ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे पूर्वार्धे
रुक्मिणीहरणं नाम त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ।।५३।।



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

चतुःपञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इति सर्वे सुसंरब्धा वाहानारुह्य दंशिताः ।
स्वैः स्वैर्बलैः परिक्रान्ता अन्वीयुर्धृतकार्मुकाः ॥१॥

पदच्छेद— इति सर्वे सुसंरब्धाः वाहान् आरुह्य दंशिताः ।
स्वैः स्वैः बलैः परिक्रान्ताः अन्वीयुः धृत कार्मुकाः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	स्वैः स्वैः	७.	अपनी-अपनी
सर्वे	२.	सभी राजा	बलैः	८.	सेनाओं से
सुसंरब्धाः	३.	क्रुद्ध हो उठे और	परिक्रान्ताः	९.	युक्त होकर
वाहान्	५.	वाहनों पर	अन्वीयुः	१२.	श्रीकृष्ण के पीछे-पीछे दौड़े
आरुह्य	६.	चढ़कर	धृत	११.	लेकर
दंशिताः ।	४.	कवच पहन कर	कार्मुकाः ॥	१०.	धनुष

श्लोकार्थ—इस प्रकार सभी राजा क्रुद्ध हो उठे और कवच पहन कर वाहनों पर चढ़कर अपनी-अपनी सेनाओं से युक्त होकर धनुष लेकर श्रीकृष्ण के पीछे-पीछे दौड़े ॥

द्वितीयः श्लोकः

तानापतत आलोक्य यादवानीकयूथपाः ।
तस्थुस्तत्संमुखा राजन्विस्फूर्ज्य स्वधनूंषि ते ॥२॥

पदच्छेद — तान् आपततः आलोक्य यादव अनीक यूथपाः ।
तस्थुः तत् संमुखाः राजन् विस्फूर्ज्य स्व धनूंषि ते ॥

शब्दार्थ—

तान्	२.	उन्हें	तस्थुः	१३.	डट गये
आपततः	३.	चढ़ाई करते हुये	तत्	११.	उनके
आलोक्य	४.	देखकर	संमुखाः	१२.	सामने
यादव	५.	यदुवंशियों की	राजन्	१.	हे राजन् !
अनीक	६.	सेना और	विस्फूर्ज्य	१०.	टंकार करके
यूथपाः ।	७.	सेनापति	स्वधनूंषि	९.	अपने धनुषों की
			ते ॥	८.	वे सब

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन्हें चढ़ाई करते हुये देखकर यदुवंशियों की सेना और सेनापति वे सब अपने धनुषों की टंकार करके उनके सामने डट गये ॥

तृतीयः श्लोकः

अश्वपृष्ठे गजस्कन्धे रथोपस्थे च कोविदाः ।
मुमुचुः शरवर्षाणि मेघा अद्रिष्वपो यथा ॥३॥

पदच्छेद— अश्व पृष्ठे गजस्कन्धे रथ उपस्थे च कोविदाः ।
मुमुचुः शरवर्षाणि मेघाः अद्रिषु अपः यथा ॥

शब्दार्थ—

अश्वपृष्ठे	१.	घोड़ों की पीठ पर	मुमुचुः	८.	करने लगे
गजस्कन्धे	२.	हाथी के कन्धे पर	शरवर्षाणि	७.	बाणों की वर्षा
रथ	३.	रथ के	मेघाः	१०.	बादल
उपस्थे	४.	मध्य में स्थित होकर	अद्रिषु	११.	पर्वतों पर
च	५.	और	अपः	१२.	जल की वर्षा करते हैं ।
कोविदाः ।	६.	धनुर्वेद के जानकार	यथा ॥	९.	जैसे

श्लोकार्थ—घोड़ों पर चढ़कर, हाथी के कन्धे पर और रथ के मध्य में स्थित होकर धनुर्वेद के जानकार लोग वाणी की वर्षा करने लगे । जैसे बादल पहाड़ों पर जल की वर्षा करते हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

पत्युर्बलं शरासारैश्छन्नं वीक्ष्य सुमध्यमा ।
सव्रीडमैक्षत्तद्वक्त्रं भयविह्वललोचना ॥४॥

पदच्छेद— पत्युः बलम् शर आसारैः छन्नम् वीक्ष्य सुमध्यमा ।
सव्रीडम् ऐक्षत् तत् वक्त्रम् भय विह्वल लोचनाः ॥

शब्दार्थ—

पत्युः	२.	पति की	सव्रीडम्	८.	लज्जा के साथ
बलम्	३.	सेना को	ऐक्षत्	१४.	देखा
शर	४.	बाणों की	तत्	१२.	उनके श्रीकृष्ण के
आसारैः	५.	वर्षा से	वक्त्रम्	१३.	मुख की ओर
छन्नम्	६.	ढकी हुई	भय	९.	भयभीत और
वीक्ष्य	७.	देखकर	विह्वल	१०.	विह्वल
सुमध्यमा ।	१.	सुन्दरी रुक्मिणी ने	लोचना ॥	११.	नेत्रों से

श्लोकार्थ—सुन्दरी रुक्मिणी ने पति की सेना को बाणों की वर्षा से ढकी हुई देखकर लज्जा के साथ भयभीत और विह्वल नेत्रों से श्रीकृष्ण के मुख को ओर देखा ॥

पञ्चमः श्लोकः

प्रहस्य भगवानाह मा स्म भैर्वामलोचने ।
विनङ्क्ष्यत्यधुनैवैतत् तावकैः शात्रवं बलम् ॥५॥

पदच्छेद — प्रहस्य भगवान् आह मा स्म भैः वाम लोचने ।
विनङ्क्ष्यति अधुनैव एतत् तावकैः शात्रवम् बलम् ॥

शब्दार्थ—

प्रहस्य	२. हँसकर	विनङ्क्ष्यति	१२. नष्ट किये डालती है
भगवान्	१. भगवान् ने	अधुनैव	११. अभी
आह	३. कहा	एतत्	८. इस
मा स्म	५. मत	तावकैः	७. तुम्हारी सेना
भैः	६. डरो	शात्रवम्	९. शत्रु की
वामलोचने ।	४. सुन्दरी	बलम् ॥	१०. सेना को

श्लोकार्थ—भगवान् ने हँसकर कहा सुन्दरी मत डरो । तुम्हारी सेना शत्रु की इस सेना को अभी मारे डालती है ॥

षष्ठः श्लोकः

तेषां तद्विक्रमं वीरा गदसङ्कर्षणादयः ।
अमृष्यमाणा नाराचैर्जघ्नुर्हयगजान् रथान् ॥६॥

पदच्छेद— तेषाम् तत् विक्रमम् वीराः गद सङ्कर्षण आदयः ।
अमृष्यमाणाः नाराचैः जघ्नुः हय गजान् रथान् ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	१. उनके	अमृष्यमाणाः	४. न सहते हुये
तत्	३. उस	नाराचैः	१२. अपने बाणों से
विक्रमम्	२. पराक्रम को	जघ्नुः	१३. नष्ट कर डाला
वीराः	८. वीरों ने	हय	९. उनके घोड़ों
गद	५. गद और	गजान्	१०. हाथी और
सङ्कर्षण	६. सङ्कर्षण	रथान् ॥	११. रथों को
आदयः ।	७. आदि		

श्लोकार्थ—उनके उस पराक्रम को न सहते हुये गद और सङ्कर्षण आदि वीरों ने उनके घोड़ों, हाथी और रथों को अपने बाणों से नष्ट कर डाला ॥

सप्तमः श्लोकः

पेतुः शिरांसि रथिनामश्विनां गजिनां भुवि ।
सकुण्डलकिरीटानि सोष्णीषाणि च कोटिशः ॥७॥

पदच्छेद— पेतुः शिरांसि रथिनाम् अश्विनाम् गजिनाम् भुवि ।
सकुण्डल किरीटानि सोष्णीषाणि च कोटिशः ॥

शब्दार्थ—

पेतुः	१२.	गिरने लगे	सकुण्डल	६.	कुण्डल
शिरांसि	११.	सिर	किरीटानि	७.	मुकुटों
रथिनाम्	१.	शत्रुदल के रथ के सवारों	सउष्णीषाणि	९.	पगड़ियों सहित
अश्विनाम्	२.	घोड़ों के सवारों	च	८.	और
गजिनाम्	४.	हाथी के सवारों के	कोटिशः ॥	१०.	करोड़ों
भुवि ।	५.	धरती पर			

श्लोकार्थ—शत्रुदल के रथ के सवारों, घोड़ों के सवारों, हाथी के सवारों के कुण्डल, मुकुटों और पगड़ियों सहित करोड़ों सिर गिरने लगे ॥

अष्टमः श्लोकः

हस्ताः सासिगदेष्वासाः करभा ऊरवोऽङ्घ्रयः ।
अश्वाश्वतरनागोष्ट्रखरमर्त्यशिरांसि च ॥८॥

पदच्छेद— हस्ताः स असि गदा इष्वासाः करभाः ऊरवः अङ्घ्रयः ।
अश्व अश्वतर नाग उष्ट्रखर मर्त्य शिरांसि च ॥

शब्दार्थ—

हस्ताः	४.	हाथ	अश्व	८.	इसी प्रकार घोड़े
स असि	१.	खड्ग	अश्वतर	९.	खच्चर
गदा	२.	गदा	नागः	१०.	हाथी
इष्वासः	३.	धनुष युक्त	उष्ट्रखर	११.	ऊँट गधे
करभाः	५.	पहुँचे	मर्त्य	१३.	मनुष्यों के
ऊरवः	६.	जाँघें	शिरांसि	१४.	सिर भी गिरने लगे
अङ्घ्रयः ।	७.	पैर गिरने लगे	च ॥	१२.	और

श्लोकार्थ—खड्ग, गदा, धनुष युक्त हाथ, पहुँचे, जाँघें पैर गिरने लगे । इसी प्रकार घोड़े, खच्चर, हाथी, ऊँट, गधे और मनुष्यों के सिर भी गिरने लगे ॥

नवमः श्लोकः

हन्यमानबलानीका वृष्णिभिर्जयकाङ्क्षिभिः ।
राजानो विमुखा जग्मुर्जरासन्धपुरःसराः ॥९॥

पदच्छेद— हन्यमान बल अनीकाः वृष्णिभिः जय कङ्क्षिभिः ।
राजानः विमुखाः जग्मुः जरासन्ध पुरः सराः ॥

शब्दार्थ—

हन्यमान	४.	मारे जाते हुये	राजानः	९.	राजा लोग
बल	५.	सैनिक और	विमुखाः	१०.	युद्ध से पीठ दिखा कर अपने
अनीक	६.	सेना वाले	जग्मुः	१२.	भाग गये
वृष्णिभिः	३.	यदुवंशियों के द्वारा	जरासन्ध	७.	जरासन्ध
जय	१.	विजय की	पुरः	११.	नगरों को
काङ्क्षिभिः ।	२	आकांक्षा वाले	सराः ।	८.	आदि

श्लोकार्थ—विजय की आकांक्षा वाले यदुवंशियों के द्वारा मारे जाते हुये सैनिक और सेना पति जरासन्ध आदि राजा लोग युद्ध में पीठ दिखा कर अपने नगरों को भाग गये ॥

दशमः श्लोकः

शिशुपालं समभ्येत्य हृतदारमिवातुरम् ।
नष्टत्विषं गतोत्साहं शुष्यद्वदनमब्रुवन् ॥१०॥

पदच्छेद— शिशुपालम् समभ्येत्य हृत दारम् इव आतुरम् ।
नष्ट त्विषम् गत उत्साहम् शुष्यत् वदनम् अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

शिशुपालम्	११.	शिशुपाल के	नष्ट	५.	नष्ट
समभ्येत्य	१२.	पास जाकर	त्विषम्	६.	कान्ति और
हृत	२.	छिन जाने से	गत	८.	रहित
दारम्	१.	पत्नी के	उत्साहम्	७.	उत्साह से
इव	४.	समान	शुष्यत्	९.	सूखे हुये
आतुरम् ।	३.	मरणासन्न के	वदनम्	१०.	मुख वाले
			अब्रुवन् ॥	१३.	कहने लगे

श्लोकार्थ—पत्नी के छिन जाने से मरणासन्न के समान नष्ट कान्ति और उत्साह से रहित सूखे हुये मुख वाले शिशुपाल के पास जाकर कहने लगे ॥

एकादशः श्लोकः

भो भोः पुरुषशार्दूल दौर्मनस्यमिदं त्यज।
न प्रियाप्रिययो राजन् निष्ठा देहिषु दृश्यते ॥११॥

पदच्छेद— भोः भोः पुरुष शार्दूल दौर्मनस्यम् इदम् त्यज।
न प्रिय अप्रिययोः राजन् निष्ठा देहिषु दृश्यते ॥

शब्दार्थ—

भोः भोः	१. हे हे	न	१२. नहीं
पुरुष	३. पुरुष	प्रिय	८. अनुकूलता और
शार्दूल	२. श्रेष्ठ	अप्रिययोः	९. प्रतिकूलता के बारे में
दौर्मनस्यम्	५. उदासी को	राजन्	७. हे राजन्
इदम्	४. इस	निष्ठा	११. स्थिरता
त्यज।	६. त्याग दीजिये	देहिषु	१०. प्राणियों में
		दृश्यते ॥	१३. देखी जाती है

श्लोकार्थ—हे हे श्रेष्ठ पुरुष ! इस उदासी को त्याग दीजिये। हे राजन् ! अनुकूलता और प्रतिकूलता के बारे में प्राणियों में स्थिरता नहीं देखी जाती है ॥

द्वादशः श्लोकः

यथा दारुमयी योषिन्नृत्यते कुहकेच्छया।
एवमीश्वरतन्त्रोऽयमीहते सुखदुःखयोः ॥१२॥

पदच्छेद— यथा दारुमयी योषित् नृत्यते कुहक इच्छया।
एवम् ईश्वर तन्त्रोऽयमीहते सुख दुःखयोः ॥

शब्दार्थ—

यथा	१. जैसे	एवम्	७. वैसे ही
दारुमयी	२. लकड़ी की बनी	ईश्वर	८. ईश्वर के
योषित्	३. स्त्री (कठ पुतली)	तन्त्रः	९. अधीन
नृत्यते	६. नाचती है	अयम्	१०. यह (जीव)
कुहक	४. बाजीगर की	ईयते	१३. चेष्टा करता है
इच्छया।	५ इच्छा के अनुसार	सुख	११. सुख और
		दुःखयोः ॥	१२. दुःख के सम्बन्ध में

श्लोकार्थ—जैसे लकड़ी की बनी स्त्री (कठ पुतली) बाजीगर की इच्छा के अनुसार नाचती है वैसे ही ईश्वर के अधीन यह जीव सुख और दुःख के सम्बन्ध में चेष्टा करता है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

शौरेः सप्तदशाहं वै संयुगानि पराजितः।
त्रयोविंशतिभिः सैन्यैर्जिग्य एकमहं परम् ॥१३॥

पदच्छेद— शौरेः सप्तदश अहं वै संयुगानि पराजितः।
त्रयो विंशतिभिः सैन्यैः जिग्ये एकम् अहम् परम् ॥

शब्दार्थ—

शौरेः	१.	श्रीकृष्ण ने	त्रयो	३.	तेईस-तेईस
सप्तदश	२.	सत्रह बार	विंशतिभिः	४.	अक्षौहिणी
अहम् वै	६.	मुझे	सैन्यैः	५.	सेना के साथ
संयुगानि	७.	युद्ध में	जिग्ये	११.	जीता था
पराजितः।	८.	हरा दिया था	एकम् अहम्	१०.	एक बार मैंने
			परम् ॥	६.	केवल

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने सत्रह बार तेईस-तेईस अक्षौहिणी सेना के साथ मुझे युद्ध में हरा दिया था। केवल एक बार मैंने जीता था।

चतुर्दशः श्लोकः

तथाप्यहं न शोचामि न प्रहृष्यामि कर्हिचित्।
कालेन दैवयुक्तेन जानन् विद्रावितं जगत् ॥१४॥

पदच्छेद— तथापि अहम् न शोचामि न प्रहृष्यामि कर्हिचित्।
कालेन दैवयुक्तेन जानन् विद्रावितम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

तथापि	१.	तब भी	कालेन	८.	काल ही
अहम् न	२.	मैं न	दैव युक्तेन	६.	प्रारब्ध से जुड़ा हुआ है
शोचामि	३.	शोक करता हूँ और	जानन्	६.	जिसको में जानता हूँ कि
न	४.	न ही	विद्रावितम्	११.	झकझोरता रहता है
प्रहृष्यामि	६.	हर्षित होता है	जगत् ॥	१०.	वह संसार को
कर्हिचित्।	५.	कभी			

श्लोकार्थ—तब भी मैं न शोक करता हूँ और नहीं कभी हर्षित होता हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि काल ही प्रारब्ध से जुड़ा हुआ है। वह संसार को झकझोरता रहता है॥

पञ्चदशः श्लोकः

अधुनापि वयं सर्वे वीरयूथपयूथपाः ।
पराजिताः फल्गुतन्त्रैर्यदुभिः कृष्णपालितैः ॥१५॥

पदच्छेद— अधुना अपि वयं सर्वे वीर यूथप यूथपाः ।
पराजिताः फल्गु तन्त्रैः यदुभिः कृष्ण पालितैः ॥

शब्दार्थ—

अधुना	१.	इस समय	पराजिताः	१३.	हमें हरा दिया है
अपि	२.	भी	फल्गु	१०.	थोड़ी
वयम्	३.	हम	तन्त्रैः	११.	सेना वाले
सर्वे	४.	सब	यदुभिः	१२.	यदुवंशियों ने
वीर	५.	वीर	कृष्ण	८.	कृष्ण के द्वारा
यूथप	६.	सेनापतियों के	पालितैः ॥	९.	सुरक्षित
यूथपाः ।	७.	नायक हैं (फिर भी)			

श्लोकार्थ—इस समय भी हम सब वीर सेना पतियों के नायक हैं। फिर भी श्रीकृष्ण के द्वारा सुरक्षित थोड़ी सी यदुवंशियों की सेना ने हमें हरा दिया ॥

षोडशः श्लोकः

रिपवो जिग्युरधुना काल आत्मानुसारिणि ।
तदा वयं विजेष्यामो यदा कालः प्रदक्षिणः ॥१६॥

पदच्छेद— रिपवः जिग्युः अधुना काले आत्मा अनुसारिणि ।
तदा वयम् विजेष्यामः यदा कालः प्रदक्षिणः ॥

शब्दार्थ—

रिपवः	५.	शत्रु	तदा	१०.	तब
जिग्युः	६.	जीत गये	वयम्	११.	हम
अधुना	१.	इस बार	विजेष्यामः	१२.	जीत लेंगे
काले	४.	समय में	यदा	७.	जब
आत्म	२.	अपने	कालः	८.	समय
अनुसारिणि ।	३	अनुकूल	प्रदक्षिणः ॥	९.	हमारे दाहिने होगा

श्लोकार्थ—इस बार अपने अनुकूल समय में शत्रु जीत गये। जब समय हमारे दाहिने होगा तब हम भी जीत लेंगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

एवं प्रबोधितो मित्रैश्चैद्योऽगात् सानुगः पुरम् ।
हतशेषाः पुनस्तेऽपि ययुः स्वं स्वं पुरं नृपाः ॥१७॥

पदच्छेद— एवम् प्रबोधितः मित्रैः चैद्यः अगात् सानुगः पुरम् ।
हतशेषाः पुनः ते अपि ययुः स्वम्-स्वम् पुरम् नृपाः ॥

शब्दार्थ—एवम्	१.	इस प्रकार	हतशेषाः	९.	मरने से बचे हुये
प्रबोधितः	३.	समझाया गया तब	पुनः	८.	फिर
मित्रैः	२.	मित्रों द्वारा	ते	१०.	जो
चैद्यः	४.	शिशुपाल	अपि	११.	भी
अगात्	७.	चला गया	ययुः	१५.	लौट गये
सानुगः	५.	अनुयायियों सहित	स्वम्-स्वम्	१३.	अपने-अपने
पुरम् ।	६.	नगर को	पुरम्	१४.	नगरों को
			नृपाः ॥	१२.	राजा थे वे

श्लोकार्थ—इस प्रकार मित्रों द्वारा समझाया गया तब शिशुपाल अनुयायियों सहित नगर को चला गया । फिर मरने से बचे हुये जो भी राजा थे वे अपने-अपने नगरों को चले गये ॥

अष्टादशः श्लोकः

रुक्मी तु राक्षसोद्वाहं कृष्णद्विडसहन् स्वसुः ।
पृष्ठतोऽन्वगमत् कृष्णमक्षौहिण्या वृतो बली ॥१८॥

पदच्छेद— रुक्मी तु राक्षस उद्वाहम् कृष्णद्विड् असहन् स्वसुः ।
पृष्ठतः अन्वगमत् कृष्णम् अक्षौहिण्या वृतः बली ॥

शब्दार्थ—रुक्मी	३.	रुक्मी	पृष्ठतः	१२.	पीछा
तु	४.	तो	अन्वगमन्	१३.	किया
राक्षस	६.	राक्षस रीति से	कृष्णम्	११.	श्रीकृष्ण का
उद्वाहम्	७.	विवाह	अक्षौहिणी	९.	उसने एक अक्षौहिणी सेना
कृष्णद्विड्	१.	कृष्ण से द्वेष करने वाले	वृतः	१०.	को साथ लेकर
असहन्	८.	सहन नहीं कर सका	बली ॥	२.	बलवान्
स्वसुः ।	५.	बहिन का			

श्लोकार्थ—कृष्ण से द्वेष करने वाला बलवान् रुक्मी तो बहिन का राक्षस रीति से विवाह सहन नहीं कर सका । उसने एक अक्षौहिणी सेना को साथ लेकर श्रीकृष्ण का पीछा किया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

रुक्म्यमर्षी सुसंरब्धः शृण्वतां सर्वभूभुजाम् ।
प्रतिजज्ञे महाबाहुर्दंशितः सशरासनः ॥१९॥

पदच्छेद— रुक्मी अमर्षी सुसंरब्धः शृण्वताम् सर्व भूभुजाम् ।
प्रतिजज्ञे महाबाहुः दंशितः स शरासनः ॥

शब्दार्थ—

रुक्मी	४.	रुक्मी ने	प्रतिजज्ञे	१०.	प्रतिज्ञा की
अमर्षी	२.	असहनशील एवं	महाबाहुः	१.	महान् पराक्रमी
सुसंरब्धः	३.	क्रोध से उद्दीप्त होकर	दंशितः	५.	कवच पहन कर
शृण्वताम्	७.	सुनते हुये	स शरासनः ॥	६.	धनुष लेकर
सर्व	८.	सभी			
भूभुजाम् ।	९.	राजाओं के सामने			

श्लोकार्थ— महान् पराक्रमशाली असहनशील एवं क्रोध से उद्दीप्त हो कर रुक्मी ने कवच पहन कर धनुष लेकर सुनते हुये सभी राजाओं के सामने प्रतीज्ञा की ॥

विंशः श्लोकः

अहत्वा समरे कृष्णमप्रत्यूह्य च रुक्मिणीम् ।
कुण्डिनं न प्रवेक्ष्यामि सत्यमेतद् ब्रवीमि वः ॥२०॥

पदच्छेद— अहत्वा समरे कृष्णम् अप्रत्यूह्य च रुक्मिणीम् ।
कुण्डिनम् न प्रवेक्ष्यामि सत्यम् एतत् ब्रवीमि वः ॥

शब्दार्थ—

अहत्वा	३.	मार कर	कुण्डिनम्	७.	कुण्डिनपुर में
समरे	१.	मैं युद्ध में	न प्रवेक्ष्यामि	८.	प्रवेश नहीं करूँगा
कृष्णम्	२.	कृष्ण को	सत्यम्	११.	सत्य
अप्रत्यूह्य	६.	न लौटा सका तो	एतत्	९.	यह
च	४.	यदि	ब्रवीमि	१२.	कहता हूँ
रुक्मिणीम् ।	५.	रुक्मिणी को	वः ॥	१०.	आप से

श्लोकार्थ— मैं युद्ध में कृष्ण को मार कर यदि रुक्मिणी को न लौटा सका तो कुण्डिनपुर में प्रवेश नहीं करूँगा । यह आप से सत्य कह रहा हूँ ॥

एकविंश श्लोकः

इत्युक्त्वा रथमारुह्य सारथिं प्राह सत्वरः ।
चोदयाश्वान् यतः कृष्णस्तस्य मे संयुगं भवेत् ॥२१॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा रथम् आरुह्य सारथिम् प्राह सत्वरः ।
चोदय अश्वान् यतः कृष्णः तस्य मे संयुगम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. यह	चोदय	११. ले चलो
उक्त्वा	२. कह कर	अश्वान्	१०. घोड़ों को
रथम्	३. रथ पर	यतः	८. जिधर
आरुह्य	४. चढ़ कर	कृष्णः	९. कृष्ण हों उधर
सारथिम्	५. सारथी से	तस्य मे	१२. उसके साथ मेरा
प्राह	६. कहा	संयुगम्	१३. युद्ध
सत्वरः ।	७. शीघ्र	भवेत् ॥	१४. होगा

श्लोकार्थ—यह कहकर रथ पर चढ़कर सारथी से कहा शीघ्र जिधर श्रीकृष्ण हों उधर ही घोड़ों को ले चलो उसके साथ मेरा युद्ध होगा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अद्याहं निशितैर्बाणैर्गोपालस्य सुदुर्मतेः ।
नेष्ये वीर्यमदं येन स्वसा मे प्रसभं हृता ॥२२॥

पदच्छेद— अद्य अहम् निशितैः बाणैः गोपालस्य सुदुर्मतेः ।
नेष्ये वीर्य मदं येन स्वसा, मे प्रसभम् हृता ॥

शब्दार्थ—

अद्य	१. आज	नेष्ये	९. चूर कर दूँगा
अहम्	२. मैं	वीर्य	७. पराक्रम का
निशितैः	३. तीक्ष्ण	मदम् येन	८. मद जो
बाणैः	४. बाणों से	मे स्वसा	१०. मेरी बहन को
गोपालस्य	६. गोपाल के	प्रसभम्	११. बल पूर्वक
सुदुर्मतेः ।	५. खोटी बुद्धि वाले	हृता ॥	१२. हर ले गया है ॥

श्लोकार्थ—आज मैं तीक्ष्ण बाणों से खोटी बुद्धि वाले गोपाल के पराक्रम का मद चूर-चूर कर दूँगा । जो मेरी बहन को बलपूर्वक हर ले गया है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

विकत्थमानः कुमतिरीश्वरस्याप्रमाणवित् ।
रथेनैकेन गोविन्दं तिष्ठ तिष्ठेत्यथाह्वयत् ॥२३॥

पदच्छेद— विकत्थमानः कुमतिः ईश्वरस्य अप्रमाणवित् ।
रथैनएकेन गोविन्दम् तिष्ठ-तिष्ठ इति अथ आह्वयत् ॥

शब्दार्थ—

विकत्थमानः	८.	डींग हाँकता हुआ	गोविन्दम्	६.	श्रीकृष्ण के पास जाकर
कुमतिः	७.	दुर्मति (रुक्मी)	तिष्ठ	९.	खड़ा रह
ईश्वरस्य	२.	भगवान् के	तिष्ठ इति	१०.	खड़ा रह कह कर
अप्रमाणवित् ।	३.	तेज प्रभाव को न जानने वाला	अथ	१.	अनन्तर
रथेन	५.	रथ से	आह्वयत् ॥	११.	ललकारने लगा
एकेन	४.	एक			

श्लोकार्थ—अनन्तर भगवान् के तेज प्रभाव को न जानने वाला एक रथ से श्रीकृष्ण के सामने जाकर दुर्मति रुक्मी डींग हाँकता हुआ खड़ा रह खड़ा रह कहकर ललकारने लगा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

धनुर्विकृष्य सुदृढं जघ्ने कृष्णं त्रिभिः शरैः ।
आह चात्र क्षणं तिष्ठ यदूनां कुलपांसन ॥२४॥

पदच्छेद— धनुः विकृष्य सुदृढम् जघ्ने कृष्णम् त्रिभिः शरैः ।
आह च अत्र क्षणम् तिष्ठ यदूनाम् कुलपांसन ॥

शब्दार्थ—

धनुः	१.	धनुष को	आह च	८.	और कहा
विकृष्य	३.	खींचकर	अत्र	११.	यहाँ
सुदृढम्	२.	बलपूर्वक	क्षणम्	१२.	क्षणभर
जघ्ने	७.	मारे	तिष्ठ	१३.	ठहर जा
कृष्णम्	४.	श्रीकृष्ण को	यदूनाम्	९.	यदुवंशियों के
त्रिभिः	५.	तीन	कुलपांसन ॥	१०.	कुल कलंक
शरैः ।	६.	बाण			

श्लोकार्थ—धनुष को बलपूर्वक खींचकर श्रीकृष्ण को तीन बाण मारे और कहा यदुवंशियों के कुल कलंक यहाँ क्षण भर ठहर जा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

कुत्र यासि स्वसारं मे मुषित्वा ध्वाङ्क्षवद्धविः ।
हरिष्येऽद्य मदं मन्द मायिनः कूटयोधिनः ॥२५॥

पदच्छेद — कुत्र यासि स्वसारम् मे मुषित्वा ध्वाङ्क्षवत् हविः ।
हरिष्ये अद्य मदम् मन्द मायिनः कूट योधिनः ॥

शब्दार्थ—

कुत्र	७. कहां	हरिष्ये	१४. चूर कर दूंगा
यासि	८. जा रहा है	अद्यमदम्	१३. आज मद
स्वसारम्	४. बहन को	मन्द	९. अरे मूर्ख
मे	३. मेरी	मायिनः	१०. मायावी और
मुषित्वा	५ चुराकर	कूट	११. कपट
ध्वाङ्क्षवत्	१. कौए के समान तू	योधिनः ॥	१२. युद्ध करने वाले तेरा
हविः ।	२. हवि को छूने वाले		

श्लोकार्थ— कौवे के समान हवि को छूने वाले मेरी बहन को चुराकर कहाँ जा रहा है। अरे मूर्ख ! मायावी और कपट युद्ध करने वाले तेरा आज मद चूर कर दूंगा ॥

षड्विंशः श्लोकः

यावन्न मे हतो बाणैः शयीथा मुञ्च दारिकाम् ।
स्मयन् कृष्णो धनुश्छित्त्वा षड्भिर्विव्याध रुक्मिणम् ॥२६॥

पदच्छेद— यावत् न मे हतो बाणैः शयीथाः मुञ्च दारिकाम् ।
स्मयन् कृष्णः धनुः छित्त्वा षड्भिः विव्याध रुक्मिणम् ॥

शब्दार्थ—

यावत्	१. जब तक	स्मयन्	९. मुसकराते हुये
न	६. नहीं है (तब तक) इस	कृष्णः	१०. श्रीकृष्ण ने (उसका)
मे	२. मेरे	धनुः	११. धनुष
हतः	४. मारा जाकर	छित्त्वा	१२. काट कर
बाणैः	३. बाणों से	षड्भिः	१३. छः बाणों से
शयीथाः	५. सोता	विव्याध	१५. बींध दिया
मुञ्च	८. छोड़ दे (इस पर)	रुक्मिणम् ॥	१४. रुक्मो को
दारिकाम् ।	७. बालिका को		

श्लोकार्थ—जब तक मेरे बाणों से मारा जाकर सोता नहीं है, तब तक इस बालिका को छोड़ दें। इस पर मुसकराते हुये श्रीकृष्ण ने उसका धनुष काटकर छः बाणों से उसे बींध दिया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

अष्टभिश्चतुरो वाहान् द्वाभ्यां सूतं ध्वजं त्रिभिः ।
स चान्यद् धनुरादाय कृष्णं विव्याध पञ्चभिः ॥२७॥

पदच्छेद— अष्टभिः चतुरः वाहान् द्वाभ्याम् सूतम् ध्वजम् त्रिभिः ।
स च अन्यत् धनुः आदाय कृष्णम् विव्याध पञ्चभिः ॥

शब्दार्थ—

अष्टभिः	१. आठ बाणों से	स	८. उसने
चतुरः	२. उसके चार	च	९. भी
वाहान्	३. घोड़ों को	अन्यत्	१०. दूसरा
द्वाभ्याम्	४. दो-दो से	धनुः	११. धनुष
सूतम्	५. सारथि को	आदाय	१२. लेकर
ध्वजम्	७. रथ की ध्वजा को काट डाला	कृष्णम्	१३. श्रीकृष्ण को
त्रिभिः ।	६. और तीन से	विव्याध	१५. बींध दिया
		पञ्चभिः ॥	१४. पाँच बाणों से

श्लोकार्थ—आठ बाणों से उसके चार घोड़ों को, दो-दो से सारथी को और तीन से रथ की ध्वजा को काट डाला। उसने भी दूसरे अन्य धनुष लेकर श्रीकृष्ण को पाँच बाणों से बींध दिया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तैस्ताडितः शरौघैस्तु चिच्छेद धनुरच्युतः ।
पुनरन्यदुपादत्त तदप्यच्छिनदव्ययः ॥२८॥

पदच्छेद— तैः ताडितः शरौघैः तु चिच्छेद धनुः अच्युतः ।
पुनः अन्यत् उपादत्त तत् अपि अच्छिनद् अव्ययः ॥

शब्दार्थ—

तैः	१. उन	पुनः	८. फिर (उसने)
ताडितः	३. आहत होने पर	अन्यत्	९. दूसरा (धनुष)
शरौघैः	२. बाण समूहों से	उपादत्त	१०. लिया
तु	४. तो	तत्	११. उसे
चिच्छेद	७ काट दिया	अपि	१२. भी
धनुः	६. धनुष को	अच्छिनद्	१४. काट डाला
अच्युतः ।	५ श्रीकृष्ण ने	अव्ययः ॥	१३. अविनाशी भगवान् ने

श्लोकार्थ—उन बाण समूहों से आहत होने पर तो श्रीकृष्ण ने धनुष को काट दिया। फिर उसने दूसरा धनुष लिया उसे भी अविनाशी भगवान् ने काट डाला ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

परिघं पट्टिशं शूलं चर्मासी शक्तितोमरौ ।
यद् यदायुधमादत्त तत् सर्वं सोऽच्छिनद्धरिः ॥२९॥

पदच्छेद— परिघम् पट्टिशम् शूलम् चर्म असी शक्ति तोमरौ ।
यद्-यद् आयुधम् आदत्त तत् सर्वम् सः अच्छिनत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

परिघम्	१.	परिघ	यद्-यद्	८.	जो-जो
पट्टिशम्	२.	पट्टिश	आयुधम्	९.	अस्त्र उसने
शूलम्	३.	त्रिशूल	आदत्त	१०.	लिये
चर्म	४.	ढाल	तत् सर्वम्	११.	उन सभी को
असी	५.	तलवार	सः	१२.	उन
शक्तिः	६.	शक्ति और	अच्छिनत्	१४.	काट डाला
तोमरौ ।	७.	तोमर आदि	हरिः ॥	१३.	श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ— परिघ, पट्टिश, त्रिशूल, ढाल, तलवार, शक्ति और तोमर आदि जो-जो अस्त्र उसने लिये उन सभी को उन श्रीकृष्ण ने काट डाला ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततो रथादवप्लुत्य खड्गपाणिर्जिघांसया ।
कृष्णमभ्यद्रवत् क्रुद्धः पतङ्ग इव पावकम् ॥३०॥

पदच्छेद— ततः रथात् अवप्लुत्य खड्ग पाणिः जिघांसया ।
कृष्णम् अभ्यद्रवत् क्रुद्धः पतङ्गः इव पावकम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर (रुक्मी)	कृष्णम्	७.	श्रीकृष्ण को
रथात्	३.	रथ से	अभ्यद्रवत्	९.	उनकी ओर झपटा
अवप्लुत्य	४.	कूद कर	क्रुद्धः	२.	क्रोध वश
खड्ग	६.	तलवार लेकर	पतङ्गः	११.	पतिङ्गा
पाणिः	५.	हाथ में	इव	१०.	जैसे
जिघांसया ।	८.	मार डालने की इच्छा से	पावकम् ॥	१२.	अग्नि की ओर जाता है

श्लोकार्थ—तदनन्तर रुक्मी कोध वश रथ से कूद कर हाथ में तलवार लेकर श्रीकृष्ण को मार डालने की इच्छा से उनकी ओर झपटा । जैसे पतिंगा अग्नि की ओर जाता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तस्य चापततः खड्ग तिलशश्चर्म चेषुभिः ।
छित्वासिमाददे तिग्मं रुक्मिणं हन्तुमुद्यतः ॥३१॥

पदच्छेद— तस्य च आपततः खड्गम् तिलशः चर्म च इषुभिः ।
छित्वा असिम् आददे तिग्मम् रुक्मिणम् हन्तुम् उद्यतः ॥

शब्दार्थं -

तस्य च	१. उसके	छित्वा	८. काट कर
आपततः	३. गिरते हुये	असिम्	१३. तलवार
खड्गम्	४. खड्ग	आददे	१४. ले ली
तिलशः	२. तिल-तिल करके	तिग्मम्	१३. तीखी
चर्म	६. ढाल को	रुक्मिणम्	९. रुक्मी को
च	५. और	हन्तुम्	१०. मार डालने के लिये
इषुभिः ।	७. बाणों से	उद्यतः ॥	११. उद्यत होकर

श्लोकार्थ—उसके तिल-तिल करके गिरते हुये खड्ग और ढाल को बाणों से काट कर रुक्मी को मार डालने के लिये उद्यत होकर तीखी तलवार ले ली ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

दृष्ट्वा भ्रातृवधोद्योगं रुक्मिणी भयविह्वला ।
पतित्वा पादयोर्भर्तुरुवाच करुणं सती ॥३२॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा भ्रातृ वध उद्योगम् रुक्मिणी भयविह्वला ।
पतित्वा पादयोः भर्तुः उवाच करुणं सती ॥

शब्दार्थं—

दृष्ट्वा	४. देख कर	पतित्वा	१०. गिर कर
भ्रातृ	१. भाई के	पादयोः	९. चरणों पर
वध	२. वध का	भर्तुः	८. स्वामी के
उद्योगम्	३. प्रयत्न	उवाच	१२. बोली
रुक्मिणी	५. रुक्मिणी	करुणम्	११. करुण स्वर में
भयविह्वला ।	६. भय से विह्वल हो गईं	सती ॥	७. सती रुक्मिणी

श्लोंकार्थं—भाई के वध का प्रयत्न देख कर रुक्मिणी भय से विह्वल हो गईं । सती रुक्मिणी स्वामी के चरणों पर गिर कर बोलीं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

योगेश्वराप्रमेयात्मन् देवदेव जगत्पते ।
हन्तुं नार्हसि कल्याण भ्रातरं मे महाभुज ॥३३॥

पदच्छेद— योगेश्वर अप्रमेय आत्मन् देव देव जगत् पते ।
हन्तुम् न अर्हसि कल्याण भ्रातरम् मे महाभुज ॥

शब्दार्थ—

योगेश्वर	१.	हे योगेश्वर !	हन्तुम्	९.	मारना
अप्रमेय	२.	न जानने योग्य	न अर्हसि	१०.	आपको उचित नहीं है
आत्मन्	३.	स्वरूप वाले	कल्याण	६.	मङ्गलमय
देवदेव	४.	देवताओं के देवता	भ्रातरम् मे	८.	मेरे भाई को
जगत्पते ।	५.	हे जगत्पते !	महाभुज ॥	७.	हे महापराक्रमी ! इस

श्लोकार्थ—हे योगेश्वर ! न जानने योग्य स्वरूप वाले ! देवताओं के देवता ! हे जगत्पते ! मङ्गलमय ! हे महाभुज ! इस मेरे भाई को मारना आपको उचित नहीं है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तया परित्रासविकम्पिताङ्ग्या शुचावशुष्यन्मुखरुद्धकण्ठया ।
कातर्यविस्रंसितहेममालया गृहीतपादः करुणो न्यवर्तत ॥३४॥

पदच्छेद— तया परित्राण विकम्पित अङ्ग्या शुचा अशुष्यत् मुखरुद्ध कण्ठया ।
कातर्य विस्रंसित हेममालया गृहीत पादः करुणः न्यवर्तत ॥

शब्दार्थ—

तया	११.	उस राजकन्या के द्वारा	कातर्य	८.	आतुरता वश
परित्रास	१.	भय के मारे	विस्रंसित	९.	खिसकते हुये
विकम्पित अङ्ग्या	२.	थर-थर काँपते हुये	हेममालया	१०.	सोने के हार वाली
शुचा	३.	शोक से	गृहीत	१२.	पकड़े गये
अशुष्यत्	४.	सूखते हुये	पादः	१३.	चरणों वाले
मुख	५.	मुख वाली तथा	करुणः	१४.	दयालु भगवान्
रुद्ध	६.	रुँधे हुये	न्यवर्तत ॥	१५.	रुक्मी को मारने से रुक गये
कण्ठया ।	७.	गले वाली			

श्लोकार्थ—भय के मारे थर-थर काँपते हुये शोक से सूखते हुये मुख वाली तथा रुँधे हुये गले वाली अतुरता वश खिसकते हुये सोने के हार वाली उस राजकन्या के द्वारा पकड़े गये चरणों वाले दयालु भगवान् रुक्मी को मारने से रुक गये ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

चैलेन बद्ध्वा तमसाधुकारिणं सश्मश्रुकेशं प्रवपन् व्यरूपयत् ।
तावन्ममर्दुः परसैन्यमद्भुतं यदुप्रवीरा नलिनीं यथा गजाः ॥३५॥

पदच्छेद— चैलेन बद्ध्वा तम् असाधु कारिणम् सश्मश्रु केशम् प्रवपन् व्यरूपयत् ।
तावत् ममर्दुः परसैन्यम् अद्भुतम् यदुप्रवीरा नलिनीम् यथा तथा ॥

शब्दार्थ - चैलेन	१.	वस्त्र से उसे	तावत्	९.	तब तक
बद्ध्वा	२.	बाँधकर	ममर्दुः	१३.	वैसे ही रौंद डाला
तम् असाधु	३.	उस अप्रिय	परसैन्यम्	१२.	शत्रु सेना को
कारिणम्	४.	करने वाले की	अद्भुतम्	११.	अद्भुत
सश्मश्रु	५.	दाढ़ी-मूंछ तथा	यदु प्रवीरा	१०.	यदुवंशी वीरों ने
केशम्	६.	केशों को	नलिनीम्	१६.	कमलिनी को रौंद देता है
प्रवपन्	७.	मूंड़कर	यथा	१४.	जैसे
व्यरूपयत् ।	८.	कुरूप बना दिया	तथा ॥	१५.	हाथी

श्लोकार्थ—वस्त्र से उसे बाँध कर उस अप्रिय करने वाले की दाढ़ी-मूँछ तथा केश को मूँड़ कर कुरूप बना दिया । तब तक यदुवंशी वीरों ने अद्भुत शत्रु सेना को वैसे रौंद डाला । जैसे हाथी कमलिनी को रौंद देता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

कृष्णान्तिकमुपव्रज्य ददृशुस्तत्र रुक्मिणम् ।
तथाभूतं हतप्रायं दृष्ट्वा सङ्कर्षणो विभुः ।
विमुच्य बद्धं करुणो भगवान् कृष्णमब्रवीत् ॥३६॥

पदच्छेद— कृष्ण अन्तिकम् उपव्रज्य ददृशुः तत्र रुक्मिणम् ।
तथा भूतम् हत प्रायम् दृष्ट्वा संकर्षणः विभुः ।
विमुच्य बद्धं करुणः भगवान् कृष्णम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण के	दृष्ट्वा	९.	देखकर
अन्तिकम्	२.	पास	संकर्षणः	११.	बलराम
उपव्रज्य	३.	जाकर	विभुः	१०.	सर्वशक्तिमान्
ददृशुः	४.	देखा कि	विमुच्य	१२.	उसे खोल दिया और
तत्र रुक्मिणम्	५.	वहाँ रुक्मी	बद्धम्	८.	बांधा हुआ है उसे
तथा भूतम्	७.	की तरह	करुणः	१३.	दयालु
हतप्रायम् ।	६.	मारे गये	भगवान् कृष्णम्	१४.	भगवान् श्रीकृष्ण से
			अब्रवीत् ॥	१५.	कहा

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के पास जाकर यदुवीरों ने देखा कि वहाँ रुक्मी मारे गये की तरह बाँधा हुआ है। उसे देखकर सर्वशक्तिमान् बलराम जी ने उसे खोल दिया और दयालु भगवान् श्रीकृष्ण से कहा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

असाध्विदं त्वया कृष्ण कृतमस्मज्जुगुप्सितम् ।
वपनं श्मश्रुकेशानां वैरूप्यं सुहृदो वधः ॥३७॥

पदच्छेद— असाधु इदम् त्वया कृष्ण कृतम् अस्मत् जुगुप्सितम् ।
वपनम् श्मश्रु केशानाम् वैरूप्यम् सुहृदः वधः ॥

शब्दार्थ—

असाधु	५.	अनुचित एवं	वपनम्	१०.	मूंड़ कर
इदम्	३.	यह	श्मश्रु	८.	डाढ़ी मूंछ तथा
त्वया	२.	तुमने	केशानाम्	९.	केश
कृष्ण	१.	हे कृष्ण !	वैरूप्यम्	१२.	कुरूप कर देना
कृतम्	७.	किया है	सुहृदः	११.	सम्बन्धी का
अस्मत्	४.	हमारे लिये	वधः ॥	१३.	वध ही है
जुगुप्सितम् ।	६.	निन्दनीय कर्म			

श्लोकार्थ—कृष्ण ! तुमने यह हमारे लिये निन्दनीय कर्म किया है । डाढ़ी मूंछ तथा केश मूंड कर कुरूप कर देना सम्बन्धी का वध ही है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

मैवास्मान् साध्व्यसूयेथा भ्रातुर्वैरूप्यचिन्तया ।
सुखदुःखदो न चान्योऽस्ति यतः स्वकृतभुक् पुमान् ॥३८॥

पदच्छेद— मा एव अस्मान् साध्वि असूयेथाः भ्रातुः वैरूप्य चिन्तया ।
सुख दुःखदः न च अन्यः अस्ति यतः स्वकृत् भुक् पुमान् ॥

शब्दार्थ—

मा एव	७.	ठीक नहीं है (क्योंकि)	सुख	८.	सुख और
अस्मान्	५.	हम लोगों से	दुःखदः	९.	दुःख दोनों को देने वाला
साध्वि	१.	पतिव्रते	न च	११.	नहीं है
असूयेथाः	६.	बुरा मानना	अन्यः	१०.	दूसरा कोई और
भ्रातृ	२.	भाई को	अस्ति	१२.	है
वैरूप्य	३.	कुरूप कर देने की	यतः	१३.	जो
चिन्तया ।	४.	चिन्ता वश	स्वकृत भुक्	१५.	अपने ही कर्मों कोफल भोगता है
			पुमान् ॥	१४.	मनुष्य

श्लोकार्थ—पतिव्रते ! भाई को कुरूप कर देने की चिन्ता वश हम लोगों से बुरा मानना ठीक नहीं है । क्योंकि सुख और दुःख दोनों को देने वाला कोई और ही है । जो मनुष्य अपने ही कर्मों का फल भोगता है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

बन्धुर्वधार्हदोषोऽपि न बन्धोर्वधमर्हति ।
त्याज्यः स्वेनैव दोषेण हतः किं हन्यते पुनः ॥३९॥

दपच्छेद— बन्धुः वधार्ह दोषः अपि न बन्धोः वधम् अर्हति ।
त्याज्यः स्वेन एव दोषेण हतः किम् हन्यते पुनः ॥

शब्दार्थ—

बन्धुः	१. सगा-सम्बन्धी	त्याज्यः	१२. त्याग देने योग्य (मर चुका है)
वधार्ह	२. वध करने योग्य	स्वेन	९. वह अपने
दोषः	३. अपराध करने पर	एव	१०. ही
अपि	४. भी	दोषेण	११. अपराध से
न	८. नहीं है	हतः	१४. मरे हुये को
बन्धोः	५. सगे-सम्बन्धी के द्वारा	किम्	१३. क्या
वधम्	६. मारा जाने	हन्यते	१६. मारा जाता है
अर्हति ।	७. योग्य	पुनः ॥	१५. फिर

श्लोकार्थ—सगा-सम्बन्धी वध करने योग्य अपराध करने पर भी सगे-सम्बन्धी के द्वारा मारा जाने योग्य नहीं है। वह अपने ही अपराध से त्याग देने योग्य मर चुका है। फिर क्या मरे हुये को मारा जाता है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

क्षत्रियाणामयं धर्मः प्रजापतिविनिर्मितः ।
भ्रातापि भ्रातरं हन्याद् येन घोरतरस्ततः ॥४०॥

पदच्छेद— क्षत्रियाणाम् अयम् धर्मः प्रजापति विनिर्मिता ।
भ्राता अपि भ्रातरम् हन्यात् येन घोरतरः ततः ॥

शब्दार्थ—

क्षत्रियाणाम्	२. क्षत्रियों का	भ्राता अपि	६. भाई भी
अयम्	३. यह	भ्रातरम्	७. भाई को
धर्मः	४. धर्म	हन्यात्	८. मार डाले
प्रजापतिः	१. प्रजापति ब्रह्मा ने	येन घोरतरः	१०. इससे अधिक भयंकर बात क्या होगी
विनिर्मितः	५. बनाया है कि	ततः ॥	९. इसलिये

श्लोकार्थ—प्रजापति ब्रह्मा ने क्षत्रियों का यह धर्म बनाया है कि भाई भी भाई को मार डाले। इससे अधिक भयंकर बात क्या होगी ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

राज्यस्य भूमेर्वित्तस्य स्त्रियो मानस्य तेजसः ।
मानिनोऽन्यस्य वा हेतोः श्रीमदान्धाः क्षिपन्ति हि ॥४१॥

पदच्छेद— राज्स्य भूमेः वित्तस्य स्त्रियः मानस्य तेजसः ।
मानिनः अन्यस्य वा हेतोः श्रीमदान्धाः क्षिपन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

राज्यस्य	३. राज्य	मानिनः	२. अभिमानी पुरुष
भूमेः	४. भूमि	अन्यस्य	१०. अन्य किसी
वित्तस्य	५. धन	वा	९. अथवा
स्त्रियः	६. स्त्री	हेतोः	११. कारण से बन्धुओं का
मानस्य	७. मान	श्रीमदान्धाः	१. धन के मद से अन्धे बने
तेजसः ।	८. तेज	क्षिपन्ति हि ॥	१२. तिरस्कार करते हैं

श्लोकार्थ—धन के मद से अन्धे बने अभिमानी पुरुष राज्य, भूमि, धन, स्त्री, मान, तेज अथवा अन्य किसी कारण से बन्धुओं का तिरस्कार करते हैं ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तवेयं विषमा बुद्धिः सर्वभूतेषु दुर्हृदाम् ।
यन्मन्यसे सदाभद्रं सुहृदां भद्रमज्ञवत् ॥४२॥

पदच्छेद— तव इयम् विषमा बुद्धिः सर्व भूतेषु दुर्हृदाम् ।
यत् मन्यसे सदा भद्रम् सुहृदाम् भद्रम् अज्ञवत् ॥

शब्दार्थ—

तव	११. तुम्हारी	यत्	५. जो (तुम)
इयम्	१२. यह	मन्यसे	१०. मान रही हो
विषमा	१३. विषम	सदा	७. सदा
बुद्धिः	१४. बुद्धि है	भद्रम्	९. अमंगल
सर्व	१. सभी	सुहृदाम्	४. अपने बन्धुओं के प्रति
भूतेषु	२. प्राणियों के प्रति	भद्रम्	६. मङ्गल को
दुर्हृदाम् ।	३. दुष्ट हृदय वाले	अज्ञवत् ॥	८. अज्ञानियों के समान

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के प्रति दुष्ट हृदय वाले अपने बन्धुओं के प्रति जो तुम मंगल को सदा अज्ञानियों के समान अमंगल मान रही हो तुम्हारी यह विषम बुद्धि है ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

आत्ममोहो नृणामेव कल्पते देवमायया ।
सुहृद्दुर्हृदुदासीन इति देहात्ममानिनाम् ॥४३॥

पदच्छेद— आत्ममोहः नृणाम् एषः कल्पते देवमायया ।
सुहृद् दुर्हृद् उदासीनः इति देह आत्ममानिनः ॥

शब्दार्थ—

आत्ममोहः	६.	आत्ममोह	सुहृद्	८.	यह मित्र है
नृणाम्	३.	मनुष्यों को	दुर्हृद	९.	यह शत्रु है और
एषः	५.	यह	उदासीनः	१०.	यह उदासीन है
कल्पते	७.	होता है	इति	१.	इस प्रकार
देवमायया ।	४.	भगवान् की माया से	देहमानिनाम् ॥	२.	देह को आत्मा समझने वाले

श्लोकार्थ—इस प्रकार मनुष्यों को भगवान् की माया से यह आत्ममोह होता है कि यह मित्र है, यह शत्रु है और यह उदासीन है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

एक एव परो ह्यात्मा सर्वेषामपि देहिनाम् ।
नानेव गृह्यते मूढैर्यथा ज्योतिर्यथा नभः ॥४४॥

पदच्छेद— एक एव परः हि आत्मा सर्वेषाम् अपि देहिनाम् ।
नाना इव गृह्यते मूढैः यथा ज्योतिः यथा नभः ॥

शब्दार्थ—

एकः	५.	एक	नाना इव	८.	अनेक की तरह
एव	६.	ही है (परन्तु)	गृह्यते	९.	प्रतीत होता है
परः	३.	श्रेष्ठ	मूढैः	७.	मूर्खों को (वह)
आत्मा	४.	आत्मा	यथा	१०.	जैसे
सर्वेषाम् अपि	१.	सभी	ज्योतिः	११.	सूर्य, चन्द्र और
देहिनाम् ।	२.	शरीरधारियों का	यथानभः ॥	१२.	आकाश उपाधि भेद से भिन्न-दिखाई देते हैं

श्लोकार्थ—सभी शरीरधारियों का श्रेष्ठ आत्मा एक ही है। परन्तु मूर्खों को वह अनेक की तरह प्रतीत होती है। जैसे सूर्य, चन्द्र और आकाश उपाधि भेद से भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

देह आद्यन्तवानेष द्रव्यप्राणगुणात्मकः ।
आत्मन्यविद्यया क्लृप्तः संसारयति देहिनम् ।।४५।।

पदच्छेद— देहः आदि अन्तवान् एषः द्रव्य प्राण गुण आत्मकः ।
आत्मनि अविद्यया क्लृप्तः संसारयति देहिनम् ।।

शब्दार्थ—

देहः	२.	शरीर	आत्मकः ।	८.	उसका स्वरूप है
आदि	३.	आदि (और)	आत्मनि	९.	आत्मा में
अन्तवान्	४.	अन्त वाला है	अविद्यया	१०.	अज्ञान से
एषः	१.	यह	क्लृप्तः	११.	इसकी कल्पना हुई है
द्रव्य	५.	पञ्च भूत	संसारयति	१३.	संसार में ले जाता है
प्राण	६.	पञ्च प्राण और	देहिनाम् ।।	१२.	यही प्राणो को
गुण	७.	निर्गुण ही			

श्लोकार्थ—यह शरीर आदि और अन्त वाला है। पञ्चभूत, पञ्चप्राण, और निर्गुण ही इसका स्वरूप है। आत्मा में अज्ञान से इसकी कल्पना हुई है। यही प्राणी को संसार में ले जाता है ।।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

नात्मनोऽन्येन संयोगो वियोगश्चासतः सति ।
तद्धेतुत्वात्तत्प्रसिद्धेर्दृग्रूपाभ्यां यथा रवेः ।।४६।।

पदच्छेद— न आत्मनः अन्येन संयोगः च असतः सति ।
तत् हेतुत्वात् तत् प्रसिद्धेः दृग्रूपाभ्याम् यथा रवेः ।।

शब्दार्थ—

न	८.	नहीं होता है	सति ।	१.	हे पतिव्रते !
आत्मनः	४.	आत्मा का	तत्	११.	वही उसका
अन्येन	२.	दूसरे	हेतुत्वात्	१२.	कारण है और
संयोगः	५.	संयोग	तत्	१३.	उसीं से
वियोगः	७.	वियोग	प्रसिद्धेः	१४.	वह प्रकाशित होता है
च	६.	और	दृग्रूपाभ्याम्	१०.	नेत्र और रूप के साथ नहीं होता है
असतः	३.	असत् पदार्थों के साथ	यथ रवेः ।।	९.	जैसे सूर्य का

श्लोकार्थ--पतिव्रते ! दूसरे असत् पदार्थों के साथ आत्मा का संयोग और वियोग नहीं होता है। जैसे सूर्य का नेत्र और रूप के साथ नहीं होता है। क्योंकि वही उसका कारण है। और उसी से वह प्रकाशित होता है ।।

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

जन्मादयस्तु देहस्य विक्रिया नात्मनः क्वचित् ।
कलानामिव नैवेन्दोर्मृतिर्ह्यस्य कुहूरिव ॥४७॥

पदच्छेद— जन्म आदयः तु देहस्य विक्रिया न आत्मनः क्वचित् ।
कलानाम् इव न एव इन्दोः मृतिः हि अस्य कुहूः इव ॥

शब्दार्थ—

जन्म	१.	जन्म	कलानाम्	९.	कलाओं का क्षय होता है
आदयः तु	२.	आदि	इव	८.	जैसे
देहस्य	४.	शरीर के होते हैं	न एव	१०.	परन्तु
विक्रिया	३.	विकार	इन्दोः	११.	चन्द्रमा का नहीं
न	५.	न कि	मृतिः हि	१३.	क्षय मान लेते हैं
आत्मनः	७.	आत्मा के होते है	अस्य कुहूः	१२.	किन्तु अमावस्या को चन्द्रमा का
क्वचित् ।	६.	कहीं	इव ॥	१४.	वैसे ही आत्मा मान लेते हैं

श्लोकार्थ—जन्म आदि विकार शरीर के होते हैं न कि कहीं आत्मा के। जैसे कलाओं का क्षय होता हैं चन्द्रमा का नहीं। किन्तु आमवस्या को चन्द्रमा का क्षय मानते हैं वैसे ही आत्मा का मान लेते हैं ।।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

यथा शयान आत्मानं विषयान् फलमेव च ।
अनुभुङ्क्तेऽप्यसत्यर्थे तथाऽऽप्नोत्यबुधो भवम् ॥४८॥

पदच्छेद— यथा शयानः आत्मानम् विषयान् फलम् एव च ।
अनुभुङ्क्ते अपि असति अर्थे तथा आप्नोति अबुधःभवम् ।।

शब्दार्थ—

यथा	१.	जिस प्रकार	अनुभुङ्क्ते	९.	अनुभव करता है
शयानः	२.	सोया हुआ (पुरुष)	अपि असति	४.	न होने पर भी
आत्मानम्	५.	भोक्ता	अर्थे	३.	किसी पदार्थ के
विषयान्	६.	भोग्य और भोगरूप	तथा	१०.	उसी प्रकार
फलम्	७.	फल का	आप्नोति	१२.	अनुभव करता है
एव च ।	८.	ही	अबुधः भवम् ॥	११.	मूर्ख व्यक्ति असत् संसार का

श्लोकार्थ—जिस प्रकार सोया हुआ पुरुष किसी पदार्थ के न होने पर भी भोक्ता, भोग्य और भोगरूप फल का ही अनुभव करता है, उसी प्रकार मूर्ख व्यक्ति असत् संसार का अनुभव करता है ।।

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

तस्मादज्ञानजं शोकमात्मशोषविमोहनम् ।
तत्त्वज्ञानेन निर्हृत्य स्वस्था भव शुचिस्मिते ॥४९॥

पदच्छेद— तस्मात् अज्ञानजम् शोकम् आत्म शोष विमोहनम् ।
तत्त्व ज्ञानेन निर्हृत्य स्वस्था भव शुचिस्मिते ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	तत्त्व	७. तत्त्व
अज्ञानजम्	३. अज्ञान से उत्पन्न	ज्ञानेन	८. ज्ञान स्वरूपावस्था से
शोकम्	६. शोक को	निर्हृत्य	९. दूर करके
आत्मशोष	४. अन्तःकरण के शोषक	स्वस्था भव	१०. स्वस्थ हो जाओ
विमोहनम् ।	५. तथा मोहक	शुचिस्मिते ॥	२. पवित्र मुसकान वाली

श्लोकार्थ—इसलिये पवित्र मुसकान वाली ! अज्ञान से उत्पन्न अन्तःकरण के शोषक शोक को तथा मोहक तत्त्व ज्ञान से दूर करके स्वस्थ हो जाओ ॥

पञ्चाशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं भगवता तन्वी रामेण प्रतिबोधिता ।
वैमनस्यं परित्यज्य मनो बुद्ध्या समादधे ॥५०॥

पदच्छेद— एवम् भगवता तन्वी रामेण प्रतिबोधिता ।
वैमनस्यम् परित्यज्य मनः बुद्ध्या समादधे ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	वैमनस्यम्	६. मन का मैल
भगवता	२. भगवान्	परित्यज्य	७. मिटाकर
तन्वी	५. सुन्दरी रुक्मिणी ने	मनः	९. मन का
रामेण	३. बलराम जी के द्वारा	बुद्ध्या	८. बुद्धि से
प्रतिबोधिता ।	४. समझाई गयी	समादधे ॥	१०. समाधान किया

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् बलराम जी के द्वारा समझाई गई सुन्दरी रुक्मिणी ने मन का मैल मिटाकर बुद्धि से मन का समाधान किया ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्राणावशेष उत्सृष्टो द्विड्भिर्हतबलप्रभः ।
स्मरन् विरूपकरणं वितथात्ममनोरथः ॥५१॥

पदच्छेद— प्राणअवशेष उत्सृष्टः द्विड्भिर्हत बल प्रभः ।
स्मरन् विरूप करणम् वितथ आत्म मनोरथः ॥

शब्दार्थ—

प्राणअवशेषः	२. प्राण मात्र शेष करके	स्मरन्	९. स्मरण करता हुआ (रुक्मिणी
उत्सृष्टः	३. छोड़ा हुआ	विरूप	७. कुरूप
द्विड्भिः	१. शत्रुओं के द्वारा	करणम्	८. बनाने
हत	४. नष्ट किये गये	वितथ	१२. व्यर्थ (मानने लगा)
बल	५. बल तथा	आत्म	१०. अपने
प्रभः ।	६. कान्ति वाला	मनोरथः ॥	११. मनोरथ को

श्लोकार्थ—शत्रुओं के द्वारा प्राण मात्र शेष करके छोड़ा हुआ नष्ट किये गये बल तथा कान्तिवाला कुरूप बनाने का स्मरण करता हुआ रुक्मी अपने मनोरथ को व्यर्थ मानने लगा ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

चक्रे भोजकटं नाम निवासाय महत् पुरम् ।
अहत्वा दुर्मतिं कृष्णमप्रत्यूह्य यवीयसीम् ।
कुण्डिनं न प्रवेक्ष्यामीत्युक्त्वा तत्रावसद् रुषा ॥५२॥

पदच्छेद— चक्रे भोजकटम् नाम निवासाय महत् पुरम् ।
अहत्वा दुर्मतिम् कृष्णम् प्रत्यूह्य यवीयसीम् ।
कुण्डिनम् न प्रवेक्ष्यामि इति उक्त्वा तत्र अवसद् रुषा ॥

शब्दार्थ—चक्रे	५. बसाई	प्रत्यूह्य	१०. बिना लौटाये
भोजकटम् नाम	२. भोज कट नामक	यवीयसीम्	९. छोटो बहन रुक्मिणी को
निवासाय	१. अपने रहने के लिये	कुण्डिनम्	११. कुण्डिनपुर में नहीं
महत्	३. एक बहुत बड़ी	प्रवेक्ष्यामि	१२. प्रवेश करूँगा
पुरम्	४. नगरी	इतिउक्त्वा	१३. इस प्रतिज्ञा के अनुसार
अहत्वा	८. बिना मारे (और)	तत्र	१५. वहीं
दुर्मतिम्	६. दुर्बुद्धि	अवसत्	१६. बस गया
कृष्णम् ।	७. कृष्ण को	रुषा ॥	१४. क्रोध से

श्लोकार्थ—अपने रहने के लिये भोजकट नामक एक बहुत बड़ी नगरी बसाई । दुर्बुद्धि कृष्ण को बिना मारे और छोटी बहन रुक्मिणी को बिना लौटाये कुण्डिनपुर में नहीं प्रवेश करूँगा । इस प्रतिज्ञा के अनुसार क्रोध से वहीं बस गया ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

भगवान् भीष्मकसुतामेवं निर्जित्य भूमिपान् ।
पुरमानीय विधिवदुपयेमे कुरूद्वह ॥५३॥

पदच्छेद— भगवान् भीष्मक सुताम् एवम् निर्जित्य भूमिपान् ।
पुरम् आनीय विधिवत् उपयेमे कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	पुरम्	८.	नगर में
भीष्मक	६.	भीष्मक की	आनीय	९.	लाकर
सुताम्	७.	पुत्री (रुक्मिणी को)	विधिवत्	१०.	विधि पूर्वक
एवम्	३.	इस प्रकार	उपयेमे	११.	विवाह कर लिया
निर्जित्य	५.	जीत कर	कुरूद्वह ॥	१.	हे परीक्षित् ।
भूमिपान् ।	४.	राजाओं को			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भगवान् श्रीकृष्ण ने इस प्रकार भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी को राजाओं को जीत कर नगर में लाकर विधि पूर्वक विवाह कर लिया ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तदा महोत्सवो नृणां यदुपुर्यां गृहे गृहे ।
अभूदनन्यभावानां कृष्णे यदुपतौ नृप ॥५४॥

पदच्छेद— तदा महोत्सवः नृणाम् यदुपुर्याम् गृहे गृहे ।
अभूत् अनन्य भावानाम् कृष्णे यदुपतौ नृप ॥

शब्दार्थ—

तदा	२.	तब	अभूत्	१२.	मनाया
महोत्सवः	११.	उत्सव	अनन्य	५.	अनन्य
नृणाम्	७.	लोगों ने	भावानाम्	६.	प्रेम रखने वाले
यदुपुर्याम्	८.	द्वारकापुरी में	कृष्णे	४.	श्रीकृष्ण के प्रति
गृहे	९.	घर	यदुपतौ	३.	यदुपति
गृहे ।	१०.	घर	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! तब यदुपति श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखने वाले लोगों ने द्वारकापुरी में घर घर उत्सव मनाया ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

नरा नार्यश्च मुदिताः प्रमृष्टमणिकुण्डलाः ।
पारिबर्हमुपाजह्रुर्वरयोश्चित्रवाससोः ॥५५॥

पदच्छेद-- नरा नार्यः च मुदिताः प्रमृष्ट मणि कुण्डलाः ।
पारिबर्हम् उपाजह्रुः वरयोः चित्र वाससोः ॥

शब्दार्थ—

नराः	६.	नर और	कुण्डलाः ।	४.	कुण्डल धारण किये हुये
नार्यः	७.	नारियों ने	पारिबर्हम्	११.	भेंट की
च	१.	तथा	उपाजह्रुः	१२.	सामग्रियाँ उपहार में दीं
मुदिताः	५.	आनन्दित	वरयोः	१०.	दूल्हा और दुल्हन को
प्रमृष्ट	२.	चमकीले	चित्र	८.	चित्र-विचित्र
मणि	३.	मणियों के	वाससोः ॥	९.	वस्त्र पहने

श्लोकार्थ—तथा चमकीले मणियों के कुण्डल धारण किये हुये आनन्दित नर और नारियों ने चित्र-विचित्र वस्त्र पहने दूल्हा और दुल्हिन को भेंट की सामग्रियाँ उपहार में दीं ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

सा वृष्णिपुर्युत्तभितेन्द्रकेतुभिर्विचित्रमाल्याम्बररत्नतोरणैः ।
बभौ प्रतिद्वार्युपक्लृप्तमङ्गलैरापूर्णकुम्भागुरुधूपदीपकैः ॥५६॥

पदच्छेद— सा वृष्णिपुरी उत्तभित इन्द्र केतुभिः विचित्र माल्य अम्बर रत्न तोरणैः ।
बभौ प्रतिद्वारि उपक्लृप्त मङ्गलैः आपूर्ण कुम्भ अगुरु धूप दीपकैः ॥

शब्दार्थ—

सा वृष्णिपुरी	१.	वह द्वारकापुरी	बभौ	१८.	सुशोभित हो रही थी
उत्तभित	२.	फहराती हुई	प्रतिद्वारि	१०.	द्वार-द्वार पर
इन्द्र	३.	बड़ी-बड़ो	उपक्लृप्त	११.	सजायी गई
केतुभिः	४.	पताकाओं	मङ्गलैः	१२.	मांगलिक वस्तुओं
विचित्र	५.	चित्र-विचित्र	आपूर्ण	१३.	जल भरे
माल्य	६.	मालाओं	कुम्भ	१४.	कलशों
अम्बर	७.	वस्त्र और	अगुरु	१५.	अरगजा और
रत्न	८.	रत्नों के	धूप	१६.	धूप तथा
तोरणैः ।	९.	बन्दनवारों से	दीपकैः ॥	१७.	दीपों से

श्लोकार्थ—वह द्वारकापुरी फहराती हुई बड़ो-बड़ी पताकाओं चित्र-विचित्र मालाओं वस्त्र और रत्नों के बन्दनवारों से द्वार-द्वार पर सजाई गई माँगलिक वस्तुओं, जल भरे कलशों अरगजा और धूप तथा दीपों से सुशोभित हो रही थी ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सिक्तमार्गा मदच्युद्भिराहूतप्रेष्ठभूभुजाम् ।
गजैर्द्वास्सु परामृष्टरम्भापूगोपशोभिता ॥५७॥

पदच्छेद— सिक्त मार्गा मदच्युद्भिः आहूत प्रेष्ठ भूभुजाम् ।
गजैः द्वास्सु परामृष्ट रम्भा पूग उप शोभिता ॥

शब्दार्थ—

सिक्तमार्गा	६. सींचे गये मार्गों वाली वह (द्वारका)	गजैः	५. हाथियों के
मदच्युद्भिः	४. मद चूते हुये	द्वास्सु	७. दरवाजों पर
आहूत	१. बुलाये गये	परामृष्ट	८. रोपे गये
प्रेष्ठ	२. अत्यन्त प्रिय	रम्भापूग	९. केले के खम्भों और सुपाड़ी के पेड़ों से
भूभुजाम् ।	३. नरपतियों के	उपशोभिता ॥	१०. सुशोभित हो रही थी

श्लोकार्थ—बुलाये गये अत्यन्त प्रिय नरपतियों के मद चूते हुये हाथियों से सीचे गये मार्गों वाली वह द्वारका दरवाजों पर रोपे गये केले के खम्भों और सुपारी के पेड़ों से सुशोभित हो रही थी ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

कुरुसृञ्जयकैकेयविदर्भयदुकुन्तयः ।
मिथो मुमुदिरे तस्मिन् संभ्रमात् परिधावताम् ॥५८॥

पदच्छेद— कुरु सृञ्जय कैकेय विदर्भ यदु कुन्तयः ।
मिथः मुमुदिरे तस्मिन् संभ्रमात् परिधावताम् ॥

शब्दार्थ—

कुरु	४. कुरु	मिथः	१०. परस्पर
सृञ्जय	५. सृञ्जय	मुमुदिरे	११. आनन्द मना रहे थे
कैकेय	६. कैकेय	तस्मिन्	१. उस उत्सव में
विदर्भ	७. विदर्भ	संभ्रमात्	२. कूतुहल वश
यदु	८. यदु और	परिधावताम् ॥	३. दोड़ धूप करते हुये
कुन्तयः ।	९. कुन्ति वंशों के लोग		

श्लोकार्थ—उस उत्सव में कूतुहल वश दोड़ धूप करते हुये कुरु, सृञ्जय, कैकेय, विदर्भ यदु और कुन्ति वंशों के लोग परस्पर आनन्द मना रहे थे ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

रुक्मिण्या हरणं श्रुत्वा गीयमानं ततस्ततः ।
राजानो राजकन्याश्च बभूवुर्भृशविस्मिताः ॥५९॥

पदच्छेद— रुक्मिण्याः हरणम् श्रुत्वा गीयमानम् ततः ततः ।
राजानः राजकन्याः च बभूवुः भृश विस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

रुक्मिण्याः	४.	रुक्मिणी	राजानः	७.	राजा
हरणम्	५.	हरण की बात	राजकन्याः	९.	राजकन्यायें
श्रुत्वा	६.	सुन कर	च	८.	और
गीयमानम्	३.	गायी जाती हुई	बभूवुः	१२.	हो गईं
ततः	१.	जहाँ	भृश	१०.	अत्यन्त
ततः ।	२.	तहाँ	विस्मिताः ॥	११.	विस्मित

श्लोकार्थ—जहाँ-तहाँ गायी जाती हुई रुक्मिणी हरण की बात सुन कर राजा और राजकन्यायें अत्यन्त विस्मित हो गईं ।।

षष्टितमः श्लोकः

द्वारकायामभूद् राजन् महामोदः पुरौकसाम् ।
रुक्मिण्या रमयोपेतं दृष्ट्वा कृष्णं श्रियः पतिम् ॥६०॥

पदच्छेद— द्वारकायाम् अभूत् राजन् महामोदः पुर ओकसाम् ।
रुक्मिण्या रमया उपेतम् दृष्ट्वा कृष्णम् श्रियः पतिम् ॥

शब्दार्थ—

द्वारकायाम्	२.	द्वारका में	रुक्मिण्या	३.	रुक्मिणी के रूप में
अभूत्	१३.	हुआ	रमया	४.	लक्ष्मी को
राजन्	१.	हे राजन् !	उपेतम्	८.	साथ
महामोदः	१२.	महान् आनन्द	दृष्ट्वा	९.	देख कर
पुरः	१०.	द्वारका	कृष्णम्	७.	श्रीकृष्ण के
ओकसाम् ।	११.	वासियों को	श्रियः	५.	लक्ष्मी के
			पतिम् ॥	६.	पति

श्लोकार्थ—हे राजन् ! द्वारका में रुक्मिणी के रूप में लक्ष्मी को लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण के साथ देख कर द्वारका वासियों को महान् आनन्द प्राप्त हुआ ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
रुक्मिण्युद्वाहे चतुः पञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५४॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चपञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—कामस्तु वासुदेवांशो दग्धः प्राग् रुद्रमन्युना ।
देहोपपत्तये भूयस्तमेव प्रत्यपद्यत ॥१॥

पदच्छेद— कामः तु वासुदेव अंशः दग्धः प्राक् रुद्रमन्युना ।
देह उपपत्तये भूयः तम् एव प्रति अपद्यत ॥

शब्दार्थ—

कामः तु	१.	कामदेव तो	मन्युना ।	६.	क्रोधाग्नि से
वासुदेव	२.	वासुदेव का ही	देहः	९.	शरीर
अंशः	३.	अंश है	उपपत्तये	१०.	प्राप्ति के लिये (उसने)
दग्धः	७.	भस्म हो गया था	भूयः	८.	पुनः
प्राक्	४.	पहले वह	तम् एव	११.	उन्हीं का
रुद्र	५.	रुद्र भगवान् की	प्रति	२१.	आश्रय
			अपद्यत ॥	१३.	ले लिया

श्लोकार्थ—कामदेव तो वासुदेव का ही अंश है । पहले वह रुद्र भगवान् की क्रोधाग्नि से भस्म हो गया था । शरीर प्राप्ति के लिये उसने उन्हीं का आश्रय ले लिया ॥

द्वितीयः श्लोकः

स एव जातो वैदर्भ्यां कृष्णवीर्यसमुद्भवः ।
प्रद्युम्न इति विख्यातः सर्वतोऽनवमः पितुः ॥२॥

पदच्छेद— सः एव जातः वैदर्भ्याम् कृष्ण वीर्य समुद्भवः ।
प्रद्युम्नः इति विख्यातः सर्वतः अनवमः पितुः ॥

शब्दार्थ—

सः एव	४.	उसी काम ने	प्रद्युम्नः	७.	प्रद्युम्न
जातः	६.	जन्म लिया	इति	८.	इस नाम से
वैदर्भ्याम्	५.	रुक्मिणी से	विख्यातः	९.	प्रसिद्ध काम
कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण के	सर्वतः	१०.	सभी गुणों में
वीर्य	२.	वीर्य से	अनवमः	१२.	कम नहीं थे
समुद्भवः ।	३.	उत्पन्न होने वाले	पितुः ॥	११.	पिता से (किसी प्रकार भी)

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के वीर्य से उत्पन्न होने वाले उसी काम ने रुक्मिणी से जन्म लिया । प्रद्युम्न इस नाम से प्रसिद्ध काम सभी गुणों में पिता से किसी प्रकार कम नहीं था ॥

तृतीयः श्लोकः

तं शम्बरः कामरूपी हृत्वा तोकमनिर्दशम् ।
स विदित्वाऽऽत्मनः शत्रुं प्रास्योदन्वत्यगाद् गृहम् ॥३॥

पदच्छेद— तम् शम्बरः कामरूपी हृत्वा तोकम् अनिर्दशम् ।
सः विदित्वा आत्मनः शत्रुम् प्रास्य उदन्वति अगात् गृहम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	काम का	सः	७.	उसने
शम्बरः	५.	शम्बरासुर ने	विदित्वा	९.	समझ कर
कामरूपी	४.	इच्छानुसार रूप धरने वाले	आत्मनः शत्रुम्	८.	अपना शत्रु
हृत्वा	६.	हरण कर लिया	प्रास्य	११.	फेंक कर
तोकम्	२.	बालक	उदन्वति	१०.	उसे समुद्र में
अनिर्दशम् ।	१.	दस दिन के	अगात् गृहम् ॥	१२.	घर लौट गया

श्लोकार्थ—दस दिन के बालक काम का इच्छानुसार रूप धारण करने वाले शम्बरासुर ने हरण कर लिया । उसने अपना शत्रु ममझकर उसे समुद्र में फेंक कर घर लौट गया ॥

चतुर्थः श्लोकः

तं निर्जगार बलवान् मीनः सोऽप्यपरैः सह ।
वृतो जालेन महता गृहीतो मत्स्यजीविभिः ॥४॥

पदच्छेद— तम् निर्जगार बलवान् मीनः सः अपि अपरैः सह ।
वृतः जालेन महता गृहीतः मत्स्य जीविभिः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उस (बालक) को	वृतः	९.	फँसाकर
निर्जगार	४.	निगल गया	जालेन	८.	जाल में
बलवान्	१.	एक बलवान्	महता	७.	बहुत बड़े
मीनः	२.	मच्छ	गृहीतः	११.	पकड़ लिया गया
सः अपि	५.	वह मच्छ भी	मत्स्यजीविभिः ।	१०.	मछुओं के द्वारा वह मत्स्य
अपरैः सह ।	६.	दूसरी मछलियों के साथ			

श्लोकार्थ—एक बलवान् मच्छ उस बालक को निगल गया । वह मत्स्य भी दूसरी मछलियों के साथ बहुत बड़े जाल में फँसाकर मछुओं के द्वारा पकड़ लिया गया ॥

पञ्चमः श्लोकः

तं शम्बराय कैवर्ता उपाजह्रुरुपायनम् ।
सूदा महानसं नीत्वावद्यन् स्वधितिनाद्भुतम् ॥५॥

पदच्छेद—
तम् शम्बराय कैवर्ताः उपाजह्रुः उपायनम् ।
सूदाः महानसम् नीत्वा अवद्यन् स्वधितिना अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	उस मत्स्य को ले जाकर	सूदाः	६.	रसोइये
शम्बराय	३.	शम्बरासुर को	महानसम्	७.	रसोईघर में
कैवर्ताः	१.	मछुओं ने	नीत्वा	८.	ले जाकर
उपाजह्रुः	५.	दे दिया	अवद्यन्	११.	काटने लगे
उपायनम् ।	४.	भेंट के रूप में	स्वधितिना	१०.	छूरे से
			अद्भुतम् ॥	९.	उस अद्भुत मत्स्य को

श्लोकार्थ—मछुओं ने उस मत्स्य को ले जाकर शम्बरासुर को भेंट के रूप में दे दिया। रसोइये रसोईघर में ले जाकर उस अद्भुत मत्स्य को छूरे से काटने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

दृष्ट्वा तदुदरे बालं मायावत्यै न्यवेदयन् ।
नारदोऽकथयत् सर्वं तस्याः शङ्कितचेतसः ।
बालस्य तत्त्वमुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ॥६॥

पदच्छेद—
दृष्ट्वा तत् उदरे बालम् मायावत्यै न्यवेदयन् ।
नारदः अकथयत् सर्वम् तस्याः शङ्कित चेतसः ।
बालस्य तत्त्वम् उत्पत्तिम् मत्स्य उदर निवेशनम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	३.	देखकर	तस्याः	९.	मायावती से
तत् उदरे	१.	उसके पेट में	शङ्कित	७.	सशङ्कित
बालम्	२.	बालक को	चेतसः ।	८.	चित्तवाली
मायावत्यै	४.	मायावती को	बालस्य	१२.	बालक का
न्यवेदयन् ।	५.	समर्पित कर दिया	तत्त्वम्	१३.	कामदेव होना
नारदः	६.	(फिर) नारद ने	उत्पत्तिम्	१६.	रुक्मिणी से जन्म लेना इत्यादि
अकथयत्	११.	बता दिया	मत्स्य उदर	१४.	मछली के
सर्वम्	१०.	सब कुछ	निवेशनम् ॥	१५.	पेट में जाना

श्लोकार्थ—उसके पेट में बालक को देखकर मायावती को समर्पित कर दिया। फिर नारद ने सशङ्कित चित्त वाली उस मायावती से सब कुछ बता दिया—बालक का कामदेव होना, मछली के पेट में जाना, रुक्मिणी से जन्म लेना। इत्यादि ॥

सप्तमः श्लोकः

सा च कामस्य वै पत्नी रतिर्नाम यशस्विनी ।
पत्युर्निर्दग्धदेहस्य देहोत्पत्तिं प्रतीक्षती ॥७॥

पदच्छेद— सा च कामस्य वै पत्नी रतिर्नाम यशस्विनी ।
पत्युः निर्दग्ध देहस्य देह उत्पत्ति प्रतीक्षती ॥

शब्दार्थ—

सा च	७. वह मायावती	पत्युः	३. पति के
कामस्य वै	८. कामदेव की ही	निर्दग्ध	१. भस्म किये गये
पत्नी	१२. पत्नी थी	देहस्य	२. शरीर वाले
रतिः	९. रति	देह	४. देह के
नाम	१०. नाम की	उत्पत्ति	५. उत्पन्न होने की
यशस्विनी ।	११. यशस्विनी	प्रतीक्षती ॥	६. प्रतीक्षा करती हुई

श्लोकार्थ—भस्म किये गये शरीर वाले पति के देह के उत्पन्न होने की प्रतीक्षा करती हुई वह मायावती कामदेव की ही रति नाम की यशस्विनी पत्नी थी ॥

अष्टमः श्लोकः

निरूपिता शम्बरेण सा सूपौदनसाधने ।
कामदेवं शिशुं बुद्ध्वा चक्रे स्नेहं तदार्भके ॥८॥

पदच्छेद— निरूपिता शम्बरेण सा सूपौदन साधने ।
कामदेवम् शिशुम् बुद्ध्वा चक्रे स्नेहम् तदा अर्भके ॥

शब्दार्थ—

निरूपिता	५. नियुक्तकर रखा था	कामदेवम्	७. कामदेव
शम्बरेण	१. शम्बरासुर ने	शिशुम्	६. जब उसने बच्चें को
सा	२. उसे	बुद्ध्वा	८. समझ लिया
सूपौदन	३. दाल-भात	चक्रे स्नेहम्	१०. प्रेम करने लगी
साधने ।	४. बनाने के कार्य में	तदा अर्भके ॥	९. तब से वह बच्चे के प्रति

श्लोकार्थ—शम्बरासुर ने उसे दाल-भात बनाने के कार्य में नियुक्तकर रखा था । जब उसने बच्चे को कामदेव समझ लिया तब से वह बच्चे को प्रेम करने लगी ॥

नवमः श्लोकः

नातिदीर्घेण कालेन स कार्ष्णी रूढयौवनः ।

जनयामास नारीणां वीक्षन्तीनां च विभ्रमम् ॥९॥

पदच्छेद— न अति दीर्घेण कालेन सः कार्ष्णी रूढ यौवनः ।
जनयामास नारीणाम् वीक्षन्तीनाम् च विभ्रमम् ॥

शब्दार्थ—

न अति	४.	नहीं (थोड़े ही दिनों में)	जनयामास	१०.	उत्पन्न कर देते थे
दीर्घेण	२.	अधिक लम्बे	नारीणाम्	८.	रमणियों के मन में
कालेन	३.	समय में	वीक्षन्तीनाम्	७.	देखने वाली
सः कार्ष्णी	१.	वे श्रीकृष्ण कुमार	च	६.	और
रूढयौवनः ।	५.	युवा हो गये	विभ्रमम् ॥	९.	श्रृंगार रस का भाव

श्लोकार्थ—वे श्रीकृष्ण कुमार अधिक लम्बे समय में नहीं थोड़े ही दिनों में युवा हो गये । और देखने वाली रमणियों के मन में श्रृंगार रस का भाव उत्पन्न कर देते थे ॥

दशमः श्लोकः

सा तं पतिं पद्मदलायतेक्षणं प्रलम्बबाहुं नरलोकसुन्दरम् ।

सव्रीडहासोत्तभितभ्रुवेक्षती प्रीत्योपतस्थे रतिरङ्ग सौरतैः ॥१०॥

पदच्छेद— सा तम् पतिम् पद्मदलआयत ईक्षणम् प्रलम्ब बाहुम् नरलोक सुन्दरम् ।
स व्रीडहास उत्तभित भ्रुवा ईक्षती प्रीत्या उपतस्थे रतिः अङ्ग सौरतैः ॥

शब्दार्थ—

सा	२.	वह	स व्रीडहासः	११.	लज्जा युक्त हास्य और
तम्	९.	उस	उत्तभित	१२.	मटकी हुई
पतिम्	१०.	पति की ओर	भ्रुवाईक्षती	१३.	भौंहों से देखती हुई
पद्मदलआयत	४.	कमल पत्र के समान लम्बी	प्रीत्या	१५.	प्रेम से उनकी परिचर्या में
ईक्षणम्	५.	आँखों वाले	उपतस्थे	१६	लगी रहती थी
प्रलम्बबाहुम्	६.	बहुत लम्बी भुजाओं वाले	रतिः	३.	रति
नरलोक	७.	मनुष्य लोक में	अङ्ग	१.	हे राजन् !
सुन्दरम् ।	८.	सबसे सुन्दर	सौरतैः ॥	१४.	रति भाव व्यक्त करती हुई

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वह रति कमल पत्र के समान लम्बी आँखों वाले, बहुत लम्बी भुजाओं वाले, मनुष्य लोक में सबसे सुन्दर उस पति की ओर लज्जा युक्त हास्य और मटकी हुई भौंहों से देखती हुई रति भाव व्यक्त करती हुई प्रेम से उनकी परिचर्या में लगी रहती थी ॥

एकादशः श्लोकः

तामाह भगवान् कार्ष्णिर्मातस्ते मतिरन्यथा ।
मातृभावमतिक्रम्य वर्तसे कामिनी यथा ॥११॥

पदच्छेद— तम् आह भगवान् कार्ष्णिः मातः ते मतिः अन्यथा ।
मातृ भावम् अतिक्रम्य वर्तसे कामिनी यथा ॥

शब्दार्थ—

ताम् आह	३. उससे कहा	मातृ	७. जो तुम माता का
भगवान्	१. भगवान्	भावम्	८. भाव
कार्ष्णिः	२. श्रीकृष्ण पुत्र ने	अतिक्रम्य	९. छोड़कर
मातः ते	४. माता तुम्हारी	वर्तते	१२. व्यवहार कर रही हो
मतिः	५. बुद्धि	कामिनी	१०. कामिनी के
अन्यथा ।	६. उलटी हो गई है	यथा ॥	११. समान

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण-पुत्र ने उससे कहा माता तुम्हारी बुद्धि उल्टी हो गई है जो तुम माता का भाव छोड़कर कामिनी के समान व्यवहार कर रही हो ॥

द्वादशः श्लोकः

रतिरुवाच— **भवान् नारायणसुतः शम्बरेणाहृतो गृहात् ।**
अहं तेऽधिकृता पत्नी रतिः कामो भवान् प्रभो ॥१२॥

पदच्छेद— भवान् नारायण सुतः शम्बरेण आहृतः गृहात् ।
अहम् ते अधिकृता पत्नी रतिः कामः भवान् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

भवान्	१. आप	अहम्	७. मैं
नारायण	२. श्रीकृष्ण के	ते	८. आपकी
सुतः	३. पुत्र हैं (आपके)	अधिकृता	९. सदा की
शम्बरेण	५. शम्बरासुर	पत्नी रति	१०. पत्नी रति हूँ
आहृतः	६. चुरा लाया था	कामः	१२. कामदेव हैं
गृहात् ।	४. घर से (आपको)	भवान् प्रभो ॥	११. हे प्रभो ! आप स्वयं

श्लोकार्थ—आप श्रीकृष्ण के पुत्र हैं । आपके घर से आपको शम्बरासुर चुरा लाया था । मैं आपकी सदा की पत्नी रति हूँ ! हे प्रभो ! आप स्वयं कामदेव हैं ।

त्रयोदशः श्लोकः

एष त्वानिर्दशं सिन्धावक्षिपच्छम्बरोऽसुरः ।
मत्स्योऽग्रसीत्तदुदरादिह प्राप्तो भवान् प्रभो ॥१३॥

पदच्छेद— एषः त्वा निर्दशम् सिन्धौ अक्षिपत् शम्बरः असुरः ।
मत्स्यः अग्रसीत् तत् उदरात् इह प्राप्तः भवान् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

एषः	१.	इस	मत्स्यः	८.	एक मच्छ आपको
त्वा	५.	तुमको	अग्रसीत्	९.	निगल गया था
निर्दशम्	४.	दस दिन से भी कमके थे (तब ही)	तत्	१०.	उसके
सिन्धौ	६.	समुद्र में	उदरात्	११.	पेट से
अक्षिपत्	७.	फेंक दिया था	इह	१३.	यहाँ मुझे
शम्बरः	२.	शम्बर नामक	प्राप्तः	१४.	मिले हैं
असुरः ।	३.	असुर ने	भवान् प्रभो ॥	१२.	हे प्रभो ! आप

श्लोकार्थ—इस शम्बर नामक असुर ने तुमको, दस दिन से भी कमके थे तब ही समुद्र में फेंक दिया था । एक मच्छ आप को निगल गया था । उसके पेट से हे प्रभो ! आप मुझे यहाँ मिले हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तमिमं जहि दुर्धर्षं दुर्जयं शत्रुमात्मनः ।
मायाशतविदं त्वं च मायाभिर्मोहनादिभिः ॥१४॥

पदच्छेद— तम् इमम् जहि दुर्धर्षम् दुर्जयम् शत्रुम् आत्मनः ।
माया शतविदम् त्वम् च मायाभिः मोहन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	सो	माया	४.	माया जानने वाले
इमम्	९.	इस	शतविदम्	३.	सैकड़ों प्रकार
जहि	१४.	मार डालिये	त्वम्	२.	आप
दुर्धर्षम्	५.	कठिनाई से वश में लाने योग्य	च	६.	तथा
दुर्जयम्	७.	कठिनाई से जीतने योग्य	मायाभिः	१३.	मायाओं के द्वारा
शत्रुम्	१०.	शत्रु को	मोहन	११.	मोहन
आत्मनः ।	८.	अपने	आदिभिः ॥	१२.	आदि

श्लोकार्थ—सो आप सैकड़ों प्रकार की माया जानने वाले, कठिनाई से वश में लाने योग्य अपने इस शत्रु को मोहन आदि मायाओं के द्वारा मार डालिये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

परिशोचति ते माता कुररीव गतप्रजा ।
पुत्रस्नेहाकुला दीना विवत्सा गौरिवातुरा ॥१५॥

पदच्छेद— परिशोचति ते माता कुररी इव गत प्रजा ।
पुत्र स्नेह आकुला दीना विवत्सा गौः इव आतुरा ॥

शब्दार्थ—

परिशोचति	१५.	शोक कर रही हैं	पुत्र	५.	पुत्र
ते	३.	आप की	स्नेह	६.	स्नेह
माता	४.	माता	आकुला	७.	व्याकुल होकर
कुररी	९.	कुररी पक्षी के	दीना	८.	दीन हो कर
इव	१०.	समान तथा	विवत्सा	१३.	खो जाने पर
गत	२.	खो जाने पर	गौः	११.	गाय के (बच्चे के)
प्रजा ।	१.	सन्तान के	इव	१२.	समान
			आतुरा ॥	१४.	व्याकुल

श्लोकार्थ—सन्तान के खो जाने पर आप की माता पुत्र स्नेह से व्याकुल एवम् दीन हो कर कुररी पक्षी के समान, तथा गाय के बच्चे के समान खो जाने पर व्याकुल होकर शोक कर रही हैं ।

षोडशः श्लोकः

प्रभाष्यैवं ददौ विद्यां प्रद्युम्नाय महात्मने ।
मायावती महामायां सर्वमायाविनाशिनीम् ॥१६॥

पदच्छेद— प्रभाष्य एवम् ददौ विद्याम् प्रद्युम्नाय महात्मने ।
मायावती महामायाम् सर्व माया विनाशिनीम् ॥

शब्दार्थ—

प्रभाष्य	२.	कह कर	मायावती	३.	मायावती ने
एवम्	१.	इस प्रकार	महामायाम्	७.	महामाया नामक
ददौ	११.	सिखा दी	सर्व	४.	सभी
विद्याम्	८.	विद्या	माया	५.	मायाओं का
प्रद्युम्नाय	१०.	प्रद्युम्न को	विनाशिनीम् ॥	६.	विनाश करने वाली
महात्मने ।	९.	परम शक्तिशाली			

श्लोकार्थ—इस प्रकार कह कर मायावती ने सभी मायाओं का विनाश करने वाली महामाया नामक विद्या परम शक्तिशाली प्रद्युम्न को सिखा दी ॥

सप्तदशः श्लोकः

स च शम्बरमभ्येत्य संयुगाय समाह्वयत् ।
अविषह्यैस्तमाक्षेपैः क्षिपन् सञ्जनयन् कलिम् ॥१७॥

पदच्छेद— स च शम्बरम् अभ्येत्य संयुगाय सम् आह्वयत् ।
अविषह्यैः तम् आक्षेपैः क्षिपन् सञ्जनयन् कलिम् ॥

शब्दार्थ—

स च	१.	उन्होंने भी	अविषह्यैः	६.	अत्यन्त कटु
शम्बरम्	२.	शम्बर के	तम्	८.	उसकी
अभ्येत्य	३.	पास जाकर	आक्षेपैः	७.	आक्षेपों से
सम् संयुगाय	४.	युद्ध के लिये	क्षिपन्	९.	निन्दा करते हुये
आह्वयत् ।	५.	ललकारा (और)	सञ्जनयन्	११.	बढ़ा लिया
			कलिम् ॥	१०.	झगड़ा

श्लोकार्थ—उन्होंने शम्बर के पास जा कर युद्ध के लिये ललकारा । और अत्यन्तकटु आक्षेपों से उसकी निन्दा करते हुये झगड़ा बढ़ा लिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

सोऽधिक्षिप्तो दुर्वचोभिः पादाहत इवोरगः ।
निश्चक्राम गदापाणिरमर्षात्ताम्रलोचनः ॥१८॥

पदच्छेद— सः अधिक्षिप्तः दुर्वचोभिः पाद आहत इव उरगः ।
निः चक्राम गदापाणिः अमर्षात् ताम्र लोचनः ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वह शम्बरासुर	निः चक्राम	१०.	बाहर निकल आया
अधिक्षिप्तः	५.	तिल-मिला उठा	गदापाणिः	९.	वह हाथ में गदा लेकर
दुर्वचोभिः	३.	कटु वचनों से	अमर्षात्	८.	क्रोध से
पाद आहत	१.	पैर से ठोकर मारे गये	ताम्र	७.	लाल कर के
इव उरगः ।	२.	सांप के समान	लोचनः ॥	६.	आँखें

श्लोकार्थ—पैर से ठोकर मारे गये साँप के समान कटु वचनों से वह शम्बरासुर तिल-मिला उठा और आँखें लाल करके क्रोध से वह हाथ में गदा लेकर बाहर निकल आया ।

एकोनविंशः श्लोकः

गदामाविध्य तरसा प्रद्युम्नाय महात्मने ।
प्रक्षिप्य व्यनदन्नादं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् ॥१९॥

पदच्छेद— गदाम् आविध्य तरसा प्रद्यु म्नाय महात्मने ।
प्रक्षिप्य व्यनदत् नादम् वज्र निष्पेष निष्ठुरम् ॥

शब्दार्थ—

गदाम्	१.	उसने गदा को	प्रक्षिप्य	६.	चला कर
आविध्य	३.	घुमा कर	व्यनदत्	१०.	किया
तरसा	२.	बड़े जोर से	नादम्	९.	सिंहनाद
प्रद्यु म्नाय	५.	प्रद्युम्न पर	वज्र निष्पेष	७.	वज्र गिरने के समान
महात्मने ।	४.	महात्मा	निष्ठुरम् ॥	८.	कठोर

श्लोकार्थ—उसने गदा को बड़े जोर से घुमा कर महात्मा प्रद्युम्न पर चला कर वज्र गिरने के समान कठोर सिंह नाद किया ॥

विंशः श्लोकः

तामापतन्तीं भगवान् प्रद्युम्नो गदया गदाम् ।
अपास्य शत्रवे क्रुद्धः प्राहिणोत् स्वगदां नृप ॥२०॥

पदच्छेद— ताम् आपतन्तीम् भगवान् प्रद्युम्नः गदया गदाम् ।
अपास्य शत्रवे क्रुद्धः प्राहिणोत् स्वगदाम् नृप ॥

शब्दार्थ—

ताम्	५.	उस	अपास्य	८.	दूर करके
आपतन्तीम्	४.	आगिरती हुई	शत्रवे	१०.	शत्रु पर
भगवान्	२.	भगवान्	क्रुद्धः	९.	क्रुद्ध हो कर
प्रद्युम्नः	३.	प्रद्यु म्न ने	प्राहिणोत्	१२.	चला दी
गदया	७.	अपनी गदा से	स्वगदाम्	११.	अपनी गदा
गदाम् ।	६.	गदा को	नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् प्रद्यु म्न ने आ गिरती हुई उस गदा को अपनी गदा से दूर करके क्रुद्ध हो कर शत्रु पर अपनी गदा चला दी ॥

एकविंशः श्लोकः

स च मायां समाश्रित्य दैतेयीं मयदर्शिताम् ।
मुमुचेऽस्त्रमयं वर्षं कार्ष्णौ वैहायसोऽसुरः ॥२१॥

पदच्छेद— सः च मायाम् समाश्रित्य दैतेयीम् मय दर्शिताम् ।
मुमुचे अस्त्र मयम् वर्षम् कार्ष्णौ वैहायसः असुरः ॥

शब्दार्थ—

सः च	१.	वह	मुमुचे	१२.	करने लगा
मायाम्	६.	माया का	अस्त्र मयम्	१०.	अस्त्र शस्त्रों की
सम् आश्रित्य	७.	आश्रय लेकर	वर्षम्	११.	वर्षा
दैतेयीम्	५.	आसुरी	कार्ष्णौ	९.	प्रद्युम्न पर
मय	३.	मयासुर को	वैहायसः	८.	आकाश में स्थित होकर
दर्शिताम् ।	४.	बतलायी हुई	असुरः ॥	२.	असुर

श्लोकार्थ—वह असुर मयासुर को बतलायी हुई आसुरी माया का आश्रय लेकर आकाश में स्थित होकर प्रद्युम्न पर अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा करने लगा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

बाध्यमानोऽस्त्रवर्षेण रौक्मिणेयो महारथः ।
सत्त्वात्मिकां महाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् ॥२२॥

पदच्छेद— बाध्यमानः अस्त्र वर्षेण रौक्मिणेयो महारथः ।
सत्त्व आत्मिकाम् महाविद्याम् सर्व माया उपमर्दिनीम् ॥

शब्दार्थ—

बाध्यमानः	३.	पीड़ित	सत्त्व	८.	सत्त्व
अस्त्र	१.	अस्त्रों की	आत्मिकाम्	९.	स्वरूपी
वर्षेण	२.	वर्षा से	महाविद्याम्	१०.	महाविद्या का प्रयोग किया
रौक्मिणेयः	५.	रुक्मिणी पुत्र ने	सर्वमाया	६.	समस्त मायाओं को
महारथः ।	४.	महारथी	उपमर्दिनीम् ॥	७.	शान्त करने वाली

श्लोकार्थ—अस्त्रों की वर्षा से पीड़ित महारथी रुक्मिणी पुत्र ने समस्त मायाओं को शान्त करने वाली सत्त्वरूपी महाविद्या का प्रयोग किया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

ततो गौह्यकगान्धर्वपैशाचोरगराक्षसीः ।
प्रायुङ्क्त शतशो दैत्यः कार्ष्णिर्व्यधमयत् स ताः ॥२३॥

पदच्छेद— ततः गौह्यक गान्धर्व पैशाचः उरग राक्षसीः ।
प्रायुङ्क्त शतशः दैत्यः कार्ष्णिः व्यधमयत् सः ताः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	प्रायुङ्क्त	९. प्रयोग किया
गौह्यक	३. यक्ष	शतशः	८. सैकड़ों मायाओं का
गान्धर्व	४. गन्धर्व	दैत्यः	२. दैत्य ने
पैशाच	५. पिशाच	कार्ष्णिः	१०. प्रद्युम्न ने
उरग	६. नाग और	व्यधमयत्	१२ नष्ट कर दिया
राक्षसी ।	७. राक्षसों की	सः ताः ॥	११. उन-उन को

श्लोकार्थ—तदनन्तर दैत्य ने यक्ष, गन्धर्व, पिशाच, नाग और राक्षसों की सैकड़ों मायाओं का प्रयोग किया । किन्तु प्रद्युम्न जी ने उन-उनको नष्ट कर दिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

निशातमसिमुद्यम्य सकिरीटं सकुण्डलम् ।
शम्बरस्य शिरः कायात् ताम्रश्मश्र्वोजसाहरत् ॥२४॥

पदच्छेद— निशातम् असिम् उद्यम्य सकिरीटम् सकुण्डलम् ।
शम्बरस्य शिरः कायात् ताम्र श्मश्रु ओजसा अहरत् ॥

शब्दार्थ—

निशातम्	१. फिर एक तीक्ष्ण	शिरः	९. सिर को
असिम्	२. तलवार को	कायात्	१०. शरीर से
उद्यम्य	३. उठाकर	ताम्र	७. लाल-लाल
सकिरीटम्	५. मुकुट और	श्मश्रु	८. डाढ़ी-मूँछों वाले
सकुण्डलम् ।	६. कुण्डल से युक्त	ओजसा	११. बलपूर्वक
शम्बरस्य	४. शम्बरासुर के	अहरत् ॥	१२. अलग कर दिया

श्लोकार्थ—फिर एक तीक्ष्ण तलवार को उठाकर शम्बरासुर के मुकुट और कुण्डल से युक्त लाल-लाल डाढ़ी मूँछों वाले सिर को शरीर से बल पूर्वक अलग कर दिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

आकीर्यमाणो दिविजैः स्तुवद्भिः कुसुमोत्करैः ।
भार्ययाऽम्बरचारिण्या पुरं नीतो विहायसा ॥२५॥

पदच्छेद— आकीर्यमाणः दिविजैः स्तुवद्भिः कुसुम उत्करैः ।
भार्यया अम्बर चारिण्या पुरम् नीतः विहायसा ॥

शब्दार्थ—

आकीर्यमाणः	५.	बिखेरने लगे	भार्यया	८.	पत्नी मायावती
दिविजैः	२.	देवता लोग (उन पर)	अम्बर	६.	फिर आकाश में
स्तुवद्भिः	१.	स्तुति करते हुये	चारिण्या	७.	चलने वाली
कुसुम	३.	पुष्पों की	पुरम्	१०.	द्वारकापुरी में
उत्करैः ।	४.	राशि	नीतः	११.	ले गयीं
			विहायसा ॥	९.	आकाश मार्ग से (उन्हें)

श्लोकार्थ—स्तुति करते हुये देवता लोग उन पर पुष्पों की राशि बिखेरने लगे। फिर आकाश में चलने वाली पत्नी मायावती आकाश मार्ग से उन्हें द्वारकापुरी में ले गईं ॥

षड्विंशः श्लोकः

अन्तःपुरवरं राजन् ललनाशतसङ्कुलम् ।
विवेश पत्न्या गगनाद् विद्युतेव बलाहकः ॥२६॥

पदच्छेद— अन्तःपुर वरम् राजन् ललना शत सङ्कुलम् ।
विवेश पत्न्या गगनात् विद्युता इव बलाहकः ॥

शब्दार्थ—

अन्तःपुर	६.	अन्तःपुर में	विवेश	१२.	प्रवेश किया
वरम्	५.	श्रेष्ठ	पत्न्या	८.	पत्नी के साथ
राजन्	१.	हे राजन् !	गगनात्	७.	प्रद्युम्न ने आकाश से
ललना	३.	रमणियों से	विद्युता	११.	बिजली के साथ
शत	२.	सैकड़ों	इव	१०.	समान
सङ्कुलम् ।	४.	भरे हुये	बलाहकः ॥	९.	मेघ के

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सैकड़ों रमणियों से भरे हुये श्रेष्ठ अन्तःपुर में प्रद्युम्न ने आकाश से पत्नी के साथ वैसे प्रवेश किया मानो बिजली के साथ मेघ हो ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तं दृष्ट्वा जलदश्यामं पीतकौशेयवाससम् ।
प्रलम्बबाहुं ताम्राक्षं सुस्मितं रुचिराननम् ॥२७॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा जलद श्यामम् पीत कौशेय वाससम् ।
प्रलम्ब बाहुम् ताम्र अक्षम् सुस्मितम् रुचिर आननम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१३.	उन प्रद्युम्न को	प्रलम्ब	६.	लम्बी
दृष्ट्वा	१४.	देखा	बाहुम्	७.	भुजाओं वाले
जलद	१.	मेघ के समान	ताम्र	८.	लाल
श्यामम्	२.	श्यामवर्ण	अक्षम्	९.	नेत्रों वाले (और)
पीत	३.	पीला	सुस्मितम्	१२.	मुसकराते हुये
कौशेय	४.	रेशमी	रुचिर	१०.	मनोहर
वाससम् ।	५.	वस्त्र धारण किये हुए	आननम् ॥	११.	मुख वाले

श्लोकार्थ—मेघ के समान श्याम वर्ण, पीला रेशमी वस्त्र धारण किये हुये, लम्बी भुजाओं वाले, लाल नेत्रों वाले और मनोहर मुख वाले मुसकराते हुये उन प्रद्युम्न को देखा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

स्वलङ्कृतमुखाम्भोजं नीलवक्रालकालिभिः ।
कृष्णं मत्वा स्त्रियो ह्रीता निलिल्युस्तत्र तत्र ह ॥२८॥

पदच्छेद— सु अलङ्कृत मुखाम्भोजम् नील वक्र अलक अलिभिः ।
कृष्णम् मत्वा स्त्रियः ह्रीताः निलिल्युः तत्र-तत्र ह ॥

शब्दार्थ—

सु अलङ्कृत	५.	अच्छी प्रकार विभूषित	कृष्णम्	८.	कृष्ण
मुख	६.	मुख	मत्वा	९.	समझ कर
अम्भोजम्	७.	कमल वाले (उन्हें)	स्त्रियः	१०.	स्त्रियाँ
नील	१.	नीली और	ह्रीताः	११.	सकुचा गईं और
वक्र	२.	घुंघराली	निलिल्युः	१४.	लुक-छिप गईं
अलक	३.	केश	तत्र-	१२.	इधर
अलिभिः ।	४.	पंक्तियों से	तत्र ह ॥	१३.	उधर

श्लोकार्थ—नीली और घुंघराली केश पंक्तियों से अच्छी प्रकार विभूषित मुख कमल वाले उन्हें कृष्ण समझकर स्त्रियाँ सकुचा गईं और इधर-उधर लुक-छिप गईं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अवधार्य शनैरीषद्वैलक्षण्येन योषितः ।
उपजग्मुः प्रमुदिताः सस्त्रीरत्नं सुविस्मिताः ॥२९॥

पदच्छेद— अवधार्य शनैः ईषत् वैलक्षण्येन योषितः ।
उपजग्मुः प्रमुदिताः सस्त्रीरत्नम् सुविस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

अवधार्य	४. जान कर	उपजग्मुः	९. आ गईं
शनैः	१. धीरे-धीरे (श्रीकृष्ण से)	प्रमुदिताः	६. आनन्दित (और)
ईषत्	२. इनमें कुछ	सस्त्रीरत्नम्	८. श्रेष्ठ दम्पति के पास
वैलक्षण्येन	३. विलक्षणता	सुविस्मिताः ॥	७. आश्चर्य चकित होकर
योषितः ।	५. स्त्रियाँ		

श्लोकार्थ—धीरे-धीरे श्रीकृष्ण से इनमें कुछ विलक्षणता जान कर स्त्रियाँ आनन्दित और आश्चर्य-चकित होकर श्रेष्ठ दम्पति के पास आ गईं ॥

त्रिंशः श्लोकः

अथ तत्रासितापाङ्गी वैदर्भी वल्गुभाषिणी ।
अस्मरत् स्वसुतं नष्टं स्नेहस्नुतपयोधरा ॥३०॥

पदच्छेद— अथ तत्र असित अपाङ्गी वैदर्भी वल्गुभाषिणी ।
अस्मरत् स्वसुतम् नष्टम् स्नेह स्नुत पयोधरा ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. अनन्तर	अस्मरत्	९. स्मरण हो आया (और)
तत्र	२. वहाँ	स्वसुतम्	८. अपने पुत्र का
असित	३. कजरारे	नष्टम्	७. खोये हुये
अपाङ्गी	४. नेत्रों वाली और	स्नेह	१०. स्नेह के कारण
वैदर्भी	६. रुक्मिणी को	स्नुत	१२. दूध टपकने लगा
वल्गुभाषिणी ।	५. मधुर बोलने वाली	पयोधरा ॥	११. स्तनों से

श्लोकार्थ—अनन्तर वहाँ कजरारे नेत्रों वाली और मधुर बोलने वाली रुक्मिणी को खोये हुये अपने पुत्र का स्मरण हो आया और स्नेह के कारण स्तनों से दूध टपकने लगा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

को न्वयं नरवैदूर्यः कस्य वा कमलेक्षणः ।
धृतः कया वा जठरे केयं लब्धा त्वनेन वा ॥३१॥

पदच्छेद— कः नु अयम् नरवैदूर्यः कस्य वा कमलेक्षणः ।
धृतः कया वा जठरे का इयम् लब्धा तु अनेन वा ॥

शब्दार्थ—

कः नु	३. कौन है	धृतः	१०. धारण किया है
अयम्	१. यह	कया	८. किसने
नरवैदूर्यः	२. नर रत्न	वा	७. अथवा
कस्य	६. किसका पुत्र है	जठरे	९. इसे गर्भ में
वा	४. अथवा यह	का इयम्	११. यह कौन
कमलेक्षणः ।	५. कमल नयन	लब्धा तु	१३. प्राप्त हुई है
		अनेन वा ॥	१२. इसे (पत्नी रूप में)

श्लोकार्थ—यह नररत्न कौन है। अथवा यह कमल नयन किसका पुत्र है। अथवा किसने इसे गर्भ में धारण किया है, यह कौन इसे पत्नी रूप में प्राप्त हुई है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

मम चाप्यात्मजो नष्टो नीतो यः सूतिकागृहात् ।
एतत्तुल्यवयोरूपो यदि जीवति कुत्रचित् ॥३२॥

पदच्छेद— मम च अपि आत्मजः नष्टः नीतः यः सूतिका गृहात् ।
एतत् तुल्य वयः रूपः यदि जीवति कुत्रचित् ॥

शब्दार्थ—

मम च	१. मेरा	एतत्	११. इसी के
अपि	२. भी	तुल्य	१२. समान
आत्मजः	३. पुत्र	वयः	१३. उसकी अवस्था और
नष्टः	४. खो गया था	रूपः	१४. रूप हुआ होगा
नीतः	७. उठा ले गया था	यदि	८. यदि वह
यः	५. जिसे	जीवति	१०. जीता होगा तो
सूतिका गृहात् ।	६. सूतिका गृह से (कोई)	कुत्रचित् ॥	९. कहीं

श्लोकार्थ—मेरा भी पुत्र खो गया था। जिसे सूतिका गृह से कोई उठा ले गया था। यदि वह कहीं ज़ीता होगा तो इसी के समान उसकी अवस्था और रूप हुआ होगा ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

कथं त्वनेन संप्राप्तं सारूप्यं शार्ङ्गधन्वनः ।

आकृत्यावयवैर्गत्या स्वरहासावलोकनैः ॥३३॥

पदच्छेद— कथम् तु अनेन संप्राप्तम् सारूप्यं शार्ङ्गधन्वनः ।

आकृत्या अवयवैः गत्या स्वरहास अवलोकनैः ॥

शब्दार्थ—

कथम् तु	९.	कैसे	आकृत्या	४.	आकृति
अनेन	१.	इसने	अवयवैः	५.	अंग
संप्राप्तम्	१०.	प्राप्त कर ली	गत्या	६.	चाल
सारूप्यम्	३.	समान रूप	स्वरहास	७.	स्वर हंसी और
शार्ङ्गधन्वनः ।	२.	शार्ङ्ग धनुष वाले (श्रीकृष्ण के)	अवलोकनैः ॥	८.	चितवन

श्लोकार्थ—इसने शार्ङ्गधनुष वाले श्रीकृष्ण के समान रूप आकृति, अंग, चाल, स्वर, हंसी और चितवन कैसे प्राप्त कर ली ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

स एव वा भवेन्नूनं यो मे गर्भे धृतोऽर्भकः ।

अमुष्मिन् प्रीतिरधिका वामः स्फुरति मे भुजः ॥३४॥

पदच्छेद— सः एव वा भवेत् नूनम् यः मे गर्भे धृतः अर्भकः ।

अमुष्मिन् प्रीतिः अधिका वामः स्फुरति मे भुजः ॥

शब्दार्थ—

सः एव	३.	वह ही	अमुष्मिन्	९.	क्योंकि इसमें
वा	१.	अथवा	प्रीतिः	११.	प्रीति
भवेत्	५.	होगा	अधिका	१२.	अधिक उमड़ रही है
नूनम्	२.	निश्चित रूप से	वामः	१३.	और बायीं
यः	६.	जिसे	स्फुरति	१५.	फड़क रही है
मे गर्भे	७.	मैंने गर्भ में	मे	१०.	मेरी
धृतः	८.	धारण किया था	भुजः ॥	१४.	भुजा
अर्भकः ।	४.	यह बालक			

श्लोकार्थ—अथवा निश्चित रूप से वह ही यह बालक होगा जिसे मैंने गर्भ में धारण किया था । क्योंकि मेरी प्रीति अधिक उमड़ रही है । और बांयी भुजा फड़क रही है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एवं मीमांसमानायां वैदर्भ्यां देवकीसुतः ।
देवक्यानकदुन्दुभ्यामुत्तमश्लोक आगमत् ॥३५॥

पदच्छेद— एवम् मीमांसमानायाम् वैदर्भ्याम् देवकी सुतः ।
देवको आनक दुन्दुभ्याम् उत्तम श्लोकः आगमत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	देवकी	८. देवकी और
मीमांस	३. सोच-विचार कर	आनक दुन्दुभ्याम्	९. वसुदेव के साथ
मानायाम्	४. रही थीं कि	उत्तम	५. पवित्र
वैदर्भ्याम्	२. रुक्मिणी	श्लोक	६. कीर्ति
देवकीसुतः ।	७. देवकीनन्दन श्रीकृष्ण	आगमत् ॥	१०. आ गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार रुक्मिणी सोच-विचार कर रही थीं कि पवित्रकीर्ति देवकीनन्दन श्रीकृष्ण देवकी और वसुदेव के साथ आ गये ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

विज्ञातार्थोऽपि भगवांस्तूष्णीमास जनार्दनः ।
नारदोऽकथयत् सर्वं शम्बराहरणादिकम् ॥३६॥

पदच्छेद— विज्ञात अर्थः अपि भगवान् तूष्णीम् आस जनार्दन ।
नारदः अकथयत् सर्वम् शम्बर आहरण आदिकम् ॥

शब्दार्थ—

विज्ञात	४. जानते हुये	नारदः	७. नारद ने
अर्थः	३. सब कुछ	अकथयत्	१२. कह दिया
अपि	५. भी	सर्वम्	११. सब
भगवान्	१. भगवान्	शम्बर	८. शम्बरासुर द्वारा
तूष्णीम् आस	६. चुप रहे	आहरण	९. हर ले जाना
जनार्दन ।	२. श्रीकृष्ण	आदिकम् ॥	१०. आदि

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण सब कुछ जानते हुये भी चुप रहे । नारद ने शम्बरासुर द्वारा हर ले जाना आदि सब कह दिया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा महदाश्चर्यं कृष्णान्तःपुरयोषितः ।
अभ्यनन्दन् बहूनब्दान् नष्टं मृतमिवागतम् ॥३७॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा महत् आश्चर्यम् कृष्ण अन्तःपुर योषितः ।
अभ्यनन्दन् बहून्अब्दान् नष्टम् मृतम् इव आगतम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. वह	अभ्यनन्दन्	९. इस प्रकार अभिनन्दन करने लगीं
श्रुत्वा	४. सुन कर	बहून्अब्दान्	८. बहुत वर्षों तक
महत्	२. महान्	नष्टम्	९. खोये (प्रद्युम्न का)
आश्चर्यम्	३. आश्चर्यमयी घटना	मृतम्	१२. मर कर
कृष्ण	५. श्रीकृष्ण के	इव	११. मानों
अन्तःपुर	६. अन्तःपुर की	आगतम् ॥	१३. जी उठे हों
योषितः ।	७. स्त्रियाँ		

श्लोकार्थ—वह महान् आश्चर्यमयी घटना सुन कर श्रीकृष्ण के अन्तःपुर की स्त्रियाँ बहुत वर्षों तक खोये प्रद्युम्न का इस प्रकार अभिनन्दन करने लगीं मानों मर कर जी उठे हों ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

देवकी वसुदेवश्च कृष्णरामौ तथा स्त्रियः ।
दम्पती तौ परिष्वज्य रुक्मिणी च ययुर्मुदम् ॥३८॥

पदच्छेद— देवकी वसुदेवः च कृष्ण रामौ तथा स्त्रियः ।
दम्पती तौ परिष्वज्य रुक्मिणि च ययुः मुदम् ॥

शब्दार्थ—

देवकी	१. देवकी	दम्पती	१०. दम्पति का
वसुदेवः	२. वसुदेव	तौ	९. उन दोनों
च कृष्ण	३. और श्रीकृष्ण	परिष्वज्य	११. आलिगन करके
रामौ	४. बलराम	रुक्मिणी च	८. रुक्मिणी और
तथा	५. तथा	ययुः	१३. प्राप्त हुये
स्त्रियः ।	६. स्त्रियाँ	मुदम् ॥	१२. आनन्द को

श्लोकार्थ—देवकी वसुदेव. और श्रीकृष्ण बलराम तथा स्त्रियाँ रुक्मिणी और उन दोनों दम्पति का आलिगन करके आनन्द को प्राप्त हुये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

नष्टं प्रद्युम्नमायातमाकर्ण्य द्वारकौकसः।
अहो मृत इवायातो बालो दिष्ट्येति हाब्रुवन् ॥३९॥

पदच्छेद— नष्टम् प्रद्युम्नम् आयातम् आकर्ण्यम् द्वारका औकसः।
अहो मृत इव आयातो दिष्टचा इतिह अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ— नष्टम्	३. खोये हुये	अहो	८.	अहा
प्रद्युम्नम्	४. प्रद्युम्न को	मृतः	११.	मर कर
आयातम्	५. आये हुये	इव	१०.	मानो
आकर्ण्य	६. सुन कर	आयातः	१२.	लौट आया है
द्वारका	१. द्वारका	दिष्टचा इति ह	९.	भाग्य की बात है कि यह बालक
ओकसः।	२. वासी	अब्रुवन् ॥	७.	कहने लगे

श्लोकार्थ—द्वारकावासी खोये हुये प्रद्युम्न को आये हुये सुन कर कहने लगे अहा भाग्य की बात है कि यह बालक मानों मर कर लौट आया है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

यं वै मुहुः पितृसरूपनिजेशभावास्तन्मातरो यदभजन् रहरूढभावाः।
चित्रं न तत् खलु रमास्पदबिम्बबिम्बे कामे स्मरेऽक्षिविषये किमुतान्यनार्यः ४०

पदच्छेद—यम् वै मुहुः पितृ सरूप निजईश भावाः तत् मातरः यत् अभजन् रहः रूढभावाः।
चित्रम् न तत् खलु रमा आस्पद बिम्बबिम्बे कामे स्मरे अक्षि विषये किम् उत अन्य नार्यः ॥

शब्दार्थ—यम्	१.	जिन प्रद्युम्न को	चित्रम् न	१७.	आश्चर्य की बात नहीं है
वै मुहुः	३.	रूप से बार-बार देख कर	तत् खलु	११.	यह निश्चित ही
पितृ सरूप	२.	पिता श्रीकृष्ण के समान	रमा आस्पद	१२.	शोभा धाम (श्रीकृष्ण के)
निजईश	४.	अपने स्वामी श्रीकृष्ण का	बिम्बबिम्बे	१३.	प्रतिबिम्ब स्वरूप
भावाः	५.	भाव कर लेने वाली	कामे स्मरे	१४.	शरीर वाले काम देव के
तत् मातरः	६.	उनकी मातायें	अक्षि	१५.	दृष्टि
यत	७.	जो	विषये	१६.	गोचर हो जाने पर
अभजन्	१०.	हो जाती थीं	किम् उत	२०.	कहना ही क्या है
रहः	८.	एकान्त में	अन्य	१८.	दूसरी
रूढभावाः।	९.	विभोर भाव	नार्यः ॥	१९.	स्त्रियों के बारे में तो

श्लोकार्थ—जिन प्रद्युम्न को पिता श्रीकृष्ण के समान रूप से बार-बार देख कर अपने स्वामी श्रीकृष्ण का भाव कर लेने वाली उनकी मातायें जो एकान्त में विभोर भाव हो जाती थीं। यह निश्चित ही शोभा धाम श्रीकृष्ण के प्रतिबिम्ब स्वरूप शरीर वाले काम देव के दृष्टि गोचर हो जाने पर आश्चर्य की बात नहीं है। दूसरी स्त्रियों के बारे में तो कहना ही क्या है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
प्रद्युम्नोत्पत्तिनिरूपणं नाम पञ्चपञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षट्पञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—सत्राजितः स्वतनयां कृष्णाय कृतकिल्बिषः ।

स्यमन्तकेन मणिना स्वयमुद्यम्य दत्तवान् ॥१॥

पदच्छेद— सत्राजितः स्वतनयाम् कृष्णाय कृत किल्बिषः ।

स्यमन्तकेन मणिना स्वयम् उद्यम्य दत्तवान् ॥

शब्दार्थ—

सत्राजितः	३.	सत्राजित ने	स्यमन्तकेन	६.	स्यमन्तक
स्वतनयाम्	८.	अपनी पुत्री (सत्यभामा)	मणिना	७.	मणि के साथ
कृष्णाय	९.	श्रीकृष्ण को	स्वयम्	४.	स्वयम्
कृत	२.	करने वाले	उद्यम्य	५.	प्रयत्न करके
किल्विषः ।	१.	अपराध	दत्तवान् ॥	१०.	दे दी

श्लोकार्थ—अपराध करने वाले सत्राजितने स्वयम् प्रयत्न करके स्यमन्तक मणि के साथ अपनी पुत्री सत्यभामा श्रीकृष्ण को दे दी ॥

द्वितीयः श्लोकः

राजोवाच— सत्राजितः किमकरोद् ब्रह्मन् कृष्णस्य किल्बिषम् ।

स्यमन्तकः कुतस्तस्य कस्माद् दत्ता सुता हरेः ॥२॥

पदच्छेद— सत्राजितः किम् अकरोत् ब्रह्मन् कृष्णस्य किल्विषम् ।

स्यमन्तकः कुतः तस्य कस्मात् दत्ता सुता हरेः ॥

शब्दार्थ—

सत्राजितः	२.	सत्राजित ने	स्यमन्तकः	८.	स्यमन्तक मणि
किम्	४.	क्या	कुतः	९.	कहाँ से मिली (और)
अकरोत्	६.	किया था	तस्य	७.	उसे
ब्रह्मन्	१.	भगवान्	कस्मात्	१२.	क्यों
कृष्णस्य	३.	श्रीकृष्ण का	दत्ता	१३.	दी
किल्विषम् ।	५.	अपराध	सुता	११.	अपनो पुत्री
			हरेः ॥	१०.	श्रीकृष्ण को

श्लोकार्थ—भगवान् सत्राजित ने श्रीकृष्ण का क्या अपराध किया था । उसे स्यमन्तकमणि कहाँ से मिलो और श्रीकृष्ण को अपनो पुत्री क्यों दी ॥

तृतीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—आसीत् सत्राजितः सूर्यो भक्तस्य परमः सखा ।
प्रीतस्तस्मै मणिं प्रादात् सूर्यस्तुष्टः स्यमन्तकम् ॥३॥

पदच्छेद— आसीत् सत्राजितः सूर्यः भक्तस्य परमः सखा ।
प्रीतः तस्मै मणिम् प्रादात् सूर्यः तुष्टः स्यमन्तकम् ॥

शब्दार्थ —

आसीत्	६. थे	प्रीतः	१२. प्रीति पूर्वक
सत्राजितः	२. सत्राजित् के	तस्मै	९. उसे
सूर्यः	३. सूर्य	मणिम्	११. मणिम्
भक्तस्य	१. भक्त	प्रादात्	१३. दे दी
परमः	४. परम	सूर्यः	७. सूर्य ने
सखा ।	५. मित्र	तुष्टः	८. प्रसन्न होकर
		स्यमन्तकम् ॥	१०. स्यमन्तक

श्लोकार्थ—भक्त सत्राजित् सूर्य के परम मित्र थे । सूर्य ने प्रसन्न होकर उसे स्यमन्तक मणि प्रीतिपूर्वक दे दी ॥

चतुर्थः श्लोकः

स तं बिभ्रन् मणिं कण्ठे भ्राजमानो यथा रविः ।
प्रविष्टो द्वारकां राजंस्तेजसा नोपलक्षितः ॥४॥

पदच्छेद— सः तम् बिभ्रत् मणिम् कण्ठे भ्राजमानः यथा रविः ।
प्रविष्टः द्वारकाम् राजन् तेजसा न उपलक्षितः ॥

शब्दार्थ—

सः	६. वह (सत्राजित्)	प्रविष्टः	१०. प्रवेश करने पर
तम्	३. उस	द्वारकाम्	९. द्वारका में
बिभ्रत्	५. धारण किये हुये	राजन्	१. हे राजन् !
मणिम्	४. मणि को	तेजसा	११. तेज के कारण
कण्ठे	२. गले में	न	१२. (लोग उसे) नहीं
भ्राजमानः	८. चमकने लगा	उपलक्षिता ॥	१३. पहचान पाये
यथारविः ।	७. सूर्य के समान		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! गले में उस मणि को धारण किये हुये वह सत्राजित सूर्य के समान चमकने लगा । द्वारका में प्रवेश करने पर तेज के कारण लोग उसे नहीं पहचान पाये ॥

पञ्चमः श्लोकः

तं विलोक्य जना दूरात्तेजसा मुष्टदृष्टयः ।
दिव्यतेऽक्षैर्भगवते शशंसुः सूर्यशङ्किताः ॥५॥

पदच्छेद— तम् विलोक्य जनाः दूरात् तेजसा मुष्टदृष्टयः ।
दिव्यते अक्षैः भगवते शशंसुः सूर्य शङ्किताः ॥

शब्दार्थ—

तम्	२. उसे	दिव्यते	११. खेलते हुये
विलोक्य	३. देख कर (उसके)	अक्षैः	१०. चौसर
जनाः	७. लोग	भगवते	१२. भगवान् से
दूरात्	१. दूर से	शशंसुः	१३. कहने लगे
तेजसा	४. तेज से	सूर्य	८. सूर्य का
मुष्ट	५. चौंधियायी हुई	शङ्किताः ॥	९. सन्देह करके
दृष्टयः ।	६. आँखों वाले		

श्लोकार्थ—दूर से उसे देख कर उसके तेज से चौंधियायी हुई आँखों वाले लोग सूर्य का संदेह करके चौसर खेलते हुये भगवान् से कहने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

नारायण नमस्तेऽस्तु शङ्खचक्रगदाधर ।
दामोदरारविन्दाक्ष गोविन्द यदुनन्दन ॥६॥

पदच्छेद— नारायण नमस्ते अस्तु शङ्खचक्र गदाधर ।
दामोदर अरविन्दाक्ष गोविन्द यदु नन्दन ॥

शब्दार्थ—

नारायण	९. नारायण	दामोदर	४. दामोदर
नमस्ते	१०. आप को नमस्कार	अरविन्दाक्ष	५. कमल नयन
अस्तु	११. है	गोविन्द	६. गोविन्द
शङ्ख	१. शङ्ख	यदु	७. यदुवंशियों को
चक्र	२. चक्र और	नन्दन ॥	८. आनन्द देने वाले
गदाधर ।	३. गदा धारण करने वाले		

श्लोकार्थ—शङ्ख, चक्र और गदा धारण करने वाले, दामोदर, कमलनयन, गोविन्द, यदुवंशियों को आनन्द देने वाले, नारायण आप को नमस्कार है ॥

सप्तमः श्लोकः

एष आयाति सविता त्वां दिदृक्षुर्जगत्पते ।
मुष्णन् गभस्तिचक्रेण नृणां चक्षूंषि तिग्मगुः ॥७॥

पदच्छेद— एषः आयाति सविता त्वाम् दिदृक्षुः जगत्पते ।
मुष्णन् गभस्ति चक्रेण नृणाम् चक्षूंषि तिग्मगुः ॥

शब्दार्थ—

एषः	२.	ये	मुष्णन्	११.	चौंधियाते हुये
आयाति	१२.	आ रहे हैं	गभस्ति	९.	किरणों के
सविता	६.	सूर्य	चक्रेण	१०.	समूह से
त्वाम्	४.	आप के	नृणाम्	७.	लोगों की
दिदृक्षुः	५.	दर्शन के इच्छुक	चक्षूंषि	८.	आँखों को अपनी
जगत्पते ।	१.	हे संसार के स्वामी !	तिग्मगुः ॥	३.	चमकीली किरणों वाले एवं

श्लोकार्थ—हे संसार के स्वामी ! ये चमकीली किरणों वाले एवं आपके दर्शन के इच्छुक सूर्य लोगों की आँखों को अपनी किरणों के समूह से चौंधियाते हुये आ रहे हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

नन्वन्विच्छन्ति ते मार्गं त्रिलोक्यां विबुधर्षभाः ।
ज्ञात्वाद्य गूढं यदुषु द्रष्टुं त्वां यात्यजः प्रभो ॥८॥

पदच्छेद— ननु अन्विच्छन्ति ते मार्गम् त्रिलोक्याम् विबुध ऋषभाः ।
ज्ञात्वा अद्य गूढम् यदुषु द्रष्टुम् त्वाम् याति अजः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

ननु	४.	निश्चित रूप से	ज्ञात्वा	१२.	जान कर
अन्विच्छन्ति	७.	ढूंढते रहते हैं	अद्य	८.	आज
ते	५.	आपको	गूढम्	११.	छिपा हुआ
मार्गम्	६.	मार्ग	यदुषु	१०.	यदुवंश में
त्रिलोक्याम्	१.	त्रिलोकी में	द्रष्टुम्	१४.	दर्शन करने
विबुध	३.	देवता	त्वाम्	९.	आपको
ऋषभाः ।	२.	श्रेष्ठ	याति	१५.	आ रहे हैं
			अजः प्रभो ॥	१३.	हे प्रभो ! सूर्य नारायण

श्लोकार्थ— त्रिलोकी में श्रेष्ठ देवता निश्चित रूप से आपका मार्ग ढूंढते रहते हैं। आज आपको यदुवंश में छिपा हुआ जानकर हे प्रभो ! सूर्य नारायण दर्शन करने आ रहे हैं ॥

नवमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—निशम्य बालवचनं प्रहस्याम्बुजलोचनः ।
प्राह नासौ रविर्देवः सत्राजिन्मणिना ज्वलन् ॥९॥

पदच्छेद— निशम्य बाल वचनम् प्रहस्य अम्बुज लोचनः ।
प्राह न असौ नरविः देवः सत्राजित् मणिना ज्वलन् ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	३. सुनकर	प्राह	७. बोले ये
बाल	१. अनजान पुरुषों की	न असौ	१०. नहीं हैं ये तो
वचनम्	२. बात	रविः	८. सूर्य
प्रहस्य	६. हंसकर	देवः	९. देव
अम्बुज	४. कमल	सत्राजित्	१३. सत्राजित् है
लोचनः ।	५. नयन	मणिना	११. मणि के कारण
		ज्वलन् ॥	१२. चमकता हुआ

श्लोकार्थ—अनजान पुरुषों की बात सुनकर कमल नयन भगवान् बोले ये सूर्यदेव नहीं है । ये तो मणि के कारण चमकता हुआ सत्राजित् है ॥

दशमः श्लोकः

सत्राजित् स्वगृहं श्रीमत् कृतकौतुकमङ्गलम् ।
प्रविश्य देवसदने मणिं विप्रैर्न्यवेशयत् ॥१०॥

पदच्छेद— सत्राजित् स्वगृहम् श्रीमत् कृत कौतुक मङ्गलम् ।
प्रविश्य देव सदने मणिम् विप्रैः न्यवेशयत् ॥

शब्दार्थ—

सत्राजित्	१. सत्राजित् ने	प्रविश्य	७. प्रवेश करके
स्वगृहम्	२. अपने घर में जहाँ	देव सदने	९. देव मन्दिर में
श्रीमत्	३. शोभा सम्पन्न	मणिम्	१०. मणि को
कृत	६. मनाया जा रहा था	विप्रैः	८. ब्राह्मणों के द्वारा
कौतुक	४. उत्सव	न्यवेशयत् ॥	११. स्थापित करा दिया
मङ्गलम् ।	५. मङ्गल		

श्लोकार्थ—सत्राजित् ने शोभा सम्पन्न अपने घर में जहाँ उत्सव मङ्गल मनाया जा रहा था प्रवेश करके ब्राह्मणों के द्वारा देव मन्दिर में मणि को स्थापित करा दिया ॥

एकादशः श्लोकः

दिने दिने स्वर्णभारानष्टौ स सृजति प्रभो।
दुर्भिक्षमार्यरिष्टानि सर्पाधिव्याधयोऽशुभाः।
न सन्ति मायिनस्तत्र यत्रास्तेऽभ्यर्चितो मणिः ॥११॥

पदच्छेद— दिने दिने स्वर्णं भारान् अष्टौ स सृजति प्रभो।
दुर्भिक्ष मारी अरिष्टानि सर्प आधिव्याधयः शुभाः।
न सन्ति मायिनः तत्र-तत्र आस्ते अभ्यर्चितः मणिः ।।

शब्दार्थ—दिने दिने	९.	प्रति दिन	सर्प आधि	१४.	सर्पभय, मनोरोग
स्वर्ण भारान्	८.	भारसोना	व्याधयः	१५.	व्याधियाँ
अष्टौ	७.	आठ	अशुभाः	१७.	अशुभ
सः	६.	वह	न सन्ति	१८.	नहीं होते थे
सृजति	१०.	दिया करती थी	मायिनः	१६.	मायावियों का उपद्रवादि
प्रभो।	१.	हे परीक्षित्!	तत्र-यत्र	२.	जहाँ वह
दुर्भिक्ष	११.	वहाँ दुर्भिक्ष	आस्ते	५.	रहती थी
मारी	१२.	महामारी	अभ्यर्चितः	४.	पूजित होकर
अरिष्टानि	१३.	ग्रह पीड़ा	मणिः ।।	३.	वह मणि

श्लोकार्थ—हे परीक्षित्! जहाँ वह मणि पूजित होकर रहती थी। वहाँ वह आठ भार सोना प्रतिदिन दिया करती थी। वहाँ दुर्भिक्ष, महा मारी, ग्रह पीड़ा, सर्प भय. मनो रोग, व्याधियाँ तथा मायावियों का उपद्रवादि नहीं होते थे।

द्वादशः श्लोकः

स याचितो मणिं क्वापि यदुराजाय शौरिणा।
नैवार्थकामुकः प्रादाद् याच्ञाभङ्गमतर्कयन् ॥१२॥

पदच्छेद— सः याचितः मणिम् क्वापि यदु राजाय शौरिणा।
न एव अर्थं कामुकः प्रादात् याच्ञा भङ्गम् अतर्कयन् ।।

शब्दार्थ—सः	६.	उस	न एव	९.	मणि नहीं
याचितः	५.	माँगने पर	अर्थं	७.	धन के
मणिम्	४.	मणि	कामुकः	८.	लोलुप ने
क्वापि	१.	एक बार	प्रादात्	१०.	दी
यदुराजाय	२.	उग्रसेन के लिये	याच्ञा	११.	आज्ञा
शौरिणा।	३.	श्रीकृष्ण द्वारा	भङ्गम्	१२.	भङ्ग होने की
			अतर्कयन् ।।	१३.	बिना परवाह किये।

श्लोकार्थ—एक बार उग्रसेन के लिये श्रीकृष्ण द्वारा मणि माँगने पर उस धन के लोलुप ने मणि नहीं दी, आज्ञाभङ्ग होने की बिना परवाह किये ।।

त्रयोदशः श्लोकः

तमेकदा मणिं कण्ठे प्रतिमुच्य महाप्रभम् ।
प्रसेनो हयमारुह्य मृगयां व्यचरद् वने ॥१३॥

पदच्छेद— तम् एकदा मणिम् कण्ठे प्रतिमुच्य महाप्रभम् ।
प्रसेनः हयम् आरुह्य मृगयाम् व्यचरत् वने ॥

शब्दार्थ—

तम्	३. उस	प्रसेनः	७. प्रसेन
एकदा	१. एक बार	हयम्	८. घोड़े पर
मणिम्	४. मणि को	आरुह्य	९. सवार होकर
कण्ठे	५. गले में	मृगयाम्	१०. शिकार खेलने
प्रतिमुच्य	६. पहन कर	व्यचरत्	१२. चला गया
महाप्रभम् ।	२. बड़ी चमकीली	वने ॥	११. वन में

श्लोकार्थ—एक बार बड़ी चमकीली उस मणि को गले में पहनकर प्रसेन घोड़े पर सवार होकर शिकार खेलने वन चला गया ।

चतुर्दशः श्लोकः

प्रसेनं सहयं हत्वा मणिमाच्छिद्य केसरी ।
गिरिं विशञ्जाम्बवता निहतो मणिमिच्छता ॥१४॥

पदच्छेद— प्रसेनम् सहयम् हत्वा मणिम् आच्छिद्य केसरी ।
गिरिम् विशन् जाम्बवता निहतः मणिम् इच्छता ॥

शब्दार्थ—

प्रसेन	२. प्रसेन को	गिरिम्	६. पर्वत में
सहयम्	१. घोड़े सहित	विशन्	७. प्रवेश करते हुये
हत्वा	३. मार कर	जाम्बवता	११. जाम्बवान् ने
मणिम्	४. मणि	निहतः	१२. मार डाला
आच्छिद्य	५. छीन कर	मणिम्	९. मणि को
केसरी ।	८. सिंह को	इच्छता ॥	१०. चाहते हुये

श्लोकार्थ—घोड़े सहित प्रसेन को मार कर मणि छीनकर पर्वत में प्रवेश करते हुये सिंह को मणि चाहते हुये जाम्बवान् ने मार डाला ॥

पञ्चदशः श्लोकः

सोऽपि चक्रे कुमारस्य मणिं क्रीडनकं बिले ।

अपश्यन् भ्रातरं भ्राता सत्राजित् पर्यतप्यत ॥१५॥

पदच्छेद— सः अपि चक्रे कुमारस्य मणिम् क्रीडनकम् बिले ।
अपश्यन् भ्रातरं भ्राता सत्राजित् परि अतप्यत ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उसने	अपश्यन्	६.	न देखकर
अपि	२.	भी	भ्रातरम्	८.	भाई (प्रसेन को)
चक्रे	७.	दे दी	भ्राता	१०.	भाई
कुमारस्य	५.	बालक को	सत्राजित्	११.	सत्राजित्
मणिम्	४.	वह मणि	परि	१२.	बड़ा
क्रीडनकम्	६.	खेलने के लिये	अतप्यत ॥	१३.	दुःखी हुआ
बिले ।	३.	गुफा में			

श्लोकार्थ—उसने भी गुफा में वह मणि बालक को खेलने के लिये दे दी । भाई प्रसेन को न देखकर भाई सत्राजित् बड़ा दुःखी हुआ ॥

षोडशः श्लोकः

प्रायः कृष्णेन निहतो मणिग्रीवो वनं गतः ।

भ्राता ममेति तच्छ्रुत्वा कर्णे कर्णेऽजपञ्जनाः ॥१६॥

पदच्छेद— प्रायः कृष्णेन निहतः मणिग्रीवः वनम् गतः ।
भ्राता मम इति तत् श्रुत्वा कर्णे-कर्णे अजपन् जनाः ॥

शब्दार्थ—

प्रायः	५.	सम्भव है	भ्राता	७.	भाई को
कृष्णेन	८.	श्रीकृष्ण ने	मम	६.	मेरे
निहतः	९.	मार डाला है	इति	१०.	इस प्रकार (कहने लगी)
मणि	२.	मणि डाल कर	तत्	११.	यह
ग्रीवः	१.	गले में	श्रुत्वा	१२.	सुनकर
वनम्	३.	वन में	कर्णे-कर्णे	१४.	काना-फूंसी
गतः ।	४.	गया था	अजपन्	१५.	करने लगे
			जनाः ॥	१३.	लोग

श्लोकार्थ—वह गले में मणि डाल कर वन में गया था । सम्भव है मेरे भाई को श्रीकृष्ण ने मार डाला है । इस प्रकार कहने लगा । यह सुनकर लोग काना-फूंसी करने लगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

भगवांस्तदुपश्रुत्य दुर्यशो लिप्तमात्मनि ।
मार्ष्टुं प्रसेनपदवीमन्वपद्यत नागरैः ॥१७॥

पदच्छेद— भगवान् तत् उपश्रुत्य दुर्यशः लिप्तम् आत्मनि ।
मार्ष्टुम् प्रसेन पदवीम् अनु अपद्यत नागरैः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	१.	भगवान्	मार्ष्टुम्	७.	धोने के लिये
तत्	६.	उसे	प्रसेन	९.	प्रसेन का
उपश्रुत्य	५.	सुनकर	पदवीम्	१०.	पता लगाने के लिये
दुर्यशः	४.	अपराध को	अनु	११.	चल
लिप्तम्	३.	थोपे गये	अपद्यत	१२.	पड़े
आत्मनि ।	२.	अपने ऊपर	नागरैः ॥	८.	नागरिकों के साथ प्रसेन

श्लोकार्थ—भगवान् अपने ऊपर थोपे गये अपराध को सुनकर उसे धोने के लिये नागरिकों के साथ प्रसेन का पता लगाने के लिये चल पड़े ॥

अष्टादशः श्लोकः

हतं प्रसेनमश्वं च वीक्ष्य केसरिणा वने ।
तं चाद्रिपृष्ठे निहतमृक्षेण ददृशुर्जनाः ॥१८॥

पदच्छेद— हतम् प्रसेनम् अश्वम् च वीक्ष्य केसरिणा वने ।
तम् च अद्रि पृष्ठे निहतम् ऋक्षेण ददृशुः जनाः ॥

शब्दार्थ—

हतम्	४.	मारे गये	तम्	१३.	उस सिंह को
प्रसेनम्	५.	प्रसेन	च	१४.	भी
अश्वम्	७.	घोड़े को	अद्रि	९.	पहाड़
च	६.	और	पृष्ठे	१०.	पर
वीक्ष्य	८.	देखा (फिर)	निहतम्	११.	मारे गये
केसरिणा	३.	सिंह के द्वारा	ऋक्षेण	१२.	एक रीछ के द्वारा
वने ।	१.	वन में	ददृशुः	१५.	देखा
			जनाः ॥	२.	लोगों ने

श्लोकार्थ—वन में लोगों ने सिंह के द्वारा मारे गये प्रसेन और घोड़े को देखकर पहाड़ पर मारे गये एक रीछ के द्वारा उस सिंह को देखा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

ऋक्षराजबिलं भीममन्धेन तमसाऽऽवृतम् ।
एको विवेश भगवानवस्थाप्य बहिः प्रजाः ॥१९॥

पदच्छेद— ऋक्षराज बिलम् भीमम् अन्धेन तमसा आवृतम् ।
एकः विवेश भगवान् अवस्थाप्य बहिः प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

ऋक्षराज	९.	ऋक्षराज की	एकः	५.	अकेले ही
बिलम्	११.	गुफा में	विवेश	१२.	प्रवेश किया
भीमम्	१०.	भयंकर	भगवान्	१.	भगवान् ने
अन्धेन	६.	घोर	अवस्थाप्य	४.	बैठा कर
तमसा	७.	अंधकार से	बहिः	३.	बाहर
आवृतम् ।	८.	भरी हुई	प्रजाः ॥	२.	लोगों को

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने लोगों को बाहर बैठाकर अकेले ही घोर अंधकार से भरी हुई ऋक्षराज की गुफा में प्रवेश किया ।

विंशः श्लोकः

तत्र दृष्ट्वा मणिश्रेष्ठं बालक्रीडनकं कृतम् ।
हर्तुं कृतमतिस्तस्मिन्नवतस्थेऽर्भकान्तिके ॥२०॥

पदच्छेद— तत्र दृष्ट्वा मणि श्रेष्ठम् बाल क्रीडनकम् कृतम् ।
हर्तुम् कृतमतिः तस्मिन् अवस्थे अर्भक अन्तिके ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ	हर्तुम्	८.	हर
दृष्ट्वा	६.	देख कर	कृतम्	९.	लेने का
मणि श्रेष्ठम्	५.	उत्तम मणि	मतिः	१०.	विचार करके
बाल	२.	बच्चों का	तस्मिन्	७.	उसे
क्रीडनकम्	३.	खिलौना	अवतस्थे	१३.	खड़े हो गये
कृतम् ।	४.	बनी हुई	अर्भक	११.	बच्चे के
			अन्तिके ॥	१२.	पास

श्लोकार्थ—वहाँ बच्चों का खिलौना बनी हुई उत्तम मणि देखकर उसे हर लेने का विचार करके बच्चे के पास खड़े हो गये ॥

एकविंशः श्लोकः

तमपूर्वं नरं दृष्ट्वा धात्री चुक्रोश भीतवत् ।

तच्छ्रुत्वाभ्यद्रवत् क्रुद्धो जाम्बवान् बलिनां वरः ॥२१॥

पदच्छेद— तम् अपूर्वम् नरम् दृष्ट्वा धात्री चक्रोश भीतवत् ।

तत् श्रुत्वा अभ्यद्रवत् क्रुद्धः जाम्बवान् बलिनाम् वरः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उस	तत्	८.	उसे
अपूर्वम्	२.	अपरिचित	श्रुत्वा	९.	सुन कर
नरम्	३.	मनुष्य को	अभ्यद्रवत्	१४.	दौड़ आये
दृष्ट्वा	४.	देख कर	क्रुद्धः	१३.	क्रोधित होकर
धात्री	५.	धाय	जाम्बवान्	१२.	जाम्बवान्
चुक्रोश	७.	चिल्ला उठी	बलिनाम्	१०.	बलवानों में
भीतवत् ।	६.	भयभीत के समान	वरः ॥	११.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—उस अपरिचित मनुष्य को देख कर धाय भयभीत के समान चिल्ला उठी । उसे सुन कर बलवानों में श्रेष्ठ जाम्बवान् क्रोधित होकर दौड़ आये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

स वै भगवता तेन युयुधे स्वामिनाऽऽत्मनः ।

पुरुषं प्राकृतं मत्वा कुपितो नानुभाववित् ॥२२॥

पदच्छेद— सः वै भगवता तेन युयुधे स्वामिना आत्मनः ।

पुरुषम् प्राकृतम् मत्वा कुपितः न अनुभाववित् ॥

शब्दार्थ—

सः वै	३.	वह जाम्बवान्	पुरुषम्	५.	मनुष्य
भगवता	११.	भगवान् श्रीकृष्ण से	प्राकृतम्	४.	साधारण
तेन	१०.	उन	मत्वा	६.	जान कर
युयुधे	१२.	युद्ध करने लगे	कुपितः	७.	कुपित हो गया
स्वामिना	९.	स्वामी	न	२.	नहीं
आत्मनः ।	८.	अपने	अनुभाववित् ॥	१.	प्रभाव को जानने वाला

श्लोकार्थ—प्रभाव को नहीं जानने वाला वह जाम्वान् साधारण मनुष्य जान कर कुपित होकर उन भगवान् श्रीकृष्ण से युद्ध करने लगा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

द्वन्द्वयुद्धं सुतुमुलमुभयोर्विजिगीषतोः ।
आयुधाश्मद्रुमैर्दोर्भिः क्रव्यार्थे श्येनयोरिव ॥२३॥

पदच्छेद— द्वन्द्व युद्धम् सुतुमुलम् उभयोः विजिगीषतोः ।
आयुध अश्म द्रुमैः दोर्भिः क्रव्यार्थे श्येनयोः इव ॥

शब्दार्थ—

द्वन्द्व	८.	आपस में	आयुध अश्म	५.	अस्त्र-शस्त्रों, पत्थरों
युद्धम्	१०.	युद्ध करने लगे	द्रुमैः	६.	वृक्षों और
सुतुमुलम्	९.	घमासान	दोर्भिः	७.	बाँहों से
उभयोः	२.	वे दोनों	क्रव्यार्थे	१.	मांस के लिये
विजिगीषतोः ।	४.	विजय चाहने वाले	श्येनयोः इव ॥	२.	जैसे दो बाज युद्ध कर रहे हों

श्लोकार्थ— जैसे दो बाज मांस के लिये युद्ध कर रहे हों । वे दोनों विजय चाहने वाले अस्त्र-शस्त्र-पत्थरों, वृक्षों और बाँहों से आपस में घमासान युद्ध करने लगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

आसीत्तदष्टाविंशाहमितरेतरमुष्टिभिः ।
वज्रनिष्पेषपरुषैरविश्रममहर्निशम् ॥२४॥

पदच्छेद— आसीत् तत् अष्टाविंश अहम् इतरेतर मुष्टिभिः ।
वज्र निष्पेष परुषैः अविश्रमम् अहर्निशम् ॥

शब्दार्थ—

आसीत्	११.	चलता रहा	वज्र	१.	वज्र
तत्	९.	वह युद्ध	निष्पेष	२.	प्रहार के समान
अष्टाविंश	१०.	अट्ठाइस दिनों तक	परुषैः	३.	कठोर
अहम्	४.	एक	अविश्रमम्	७.	बिना विश्राम के
इतरेतर	५.	दूसरों के	अहर्निशम् ॥	८.	रात-दिन
मुष्टिभिः ।	६.	घूसों से			

श्लोकार्थ—वज्र के प्रहार के समान कठोर एक दूसरों के घूंसों से बिना विश्राम के रात-दिन वह युद्ध अट्ठाइस दिनों तक चलता रहा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

कृष्णमुष्टिविनिष्पातनिष्पिष्टाङ्गोरुबन्धनः ।
क्षीणसत्त्वः स्विन्नगात्रस्तमाहातीव विस्मितः ॥२५॥

पदच्छेद— कृष्ण मुष्टि विनिष्पात निष्पिष्ट अङ्ग उरु बन्धनः ।
क्षीण सत्त्वः स्विन्न गात्रः तम् आह अतीव विस्मितः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण के	क्षीण	८.	हीन तथा
मुष्टि	२.	घूंसों की	सत्त्वः	७.	उत्साह से
विनिष्पात	३.	चोट से (उसके)	स्विन्न गात्रः	९.	पसीने से लथपथ शरीर उसने
निष्पिष्ट	६.	चूर-चूर हो गये	तम् आह	१०.	उन (भगवान् से) कहा
अङ्ग	४.	अङ्ग	अतीव	११.	अत्यन्त
उरु बन्धनः ।	५.	गाँठें और जोड़	विस्मितः ॥	१२.	आश्चर्य चकित होकर

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के घूंसों की चोट से उसके अङ्ग, गाँठें और जोड़ चूर-चूर हो गये। उत्साह से हीन, पसीने से लथपथ शरीर उसने उन भगवान् से आश्चर्य चकित होकर कहा ॥

षड्विंशः श्लोकः

जाने त्वां सर्वभूतानां प्राण ओजः सहो बलम् ।
विष्णुं पुराणपुरुषं प्रभविष्णुमधीश्वरम् ॥२६॥

पदच्छेद— जाने त्वाम् सर्वभूतानाम् प्राण ओजः सहो बलम् ।
विष्णुम् पुराण पुरुषम् प्रभविष्णुम् अधीश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

जाने	१०.	जानता हूँ	विष्णुम्	९.	भगवान् विष्णु
त्वाम्	८.	आप को मैं	पुराण	४.	पुराण
सर्वभूतानाम्	१.	सभी प्राणियों के	पुरुषम्	५.	पुरुष
प्राण ओजः	२.	प्राण इन्द्रिय बल	प्रभविष्णुम्	६.	रक्षक एवम्
सहो बलम् ।	३.	मनोबल, शरीर बल	अधीश्वरम् ॥	७.	स्वामी

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के प्राण, इन्द्रियबल, मनोबल, शरीर बल, पुराण पुरुष, रक्षक एवम् स्वामी आप को मैं भगवान् विष्णु जानता हूँ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

त्वं हि विश्वसृजां स्रष्टा सृज्यानामपि यच्च सत् ।
कालः कलयतामीशः पर आत्मा तथाऽऽत्मनाम् ।।२७।।

पदच्छेद— त्वम् हि विश्वसृजाम् स्रष्टा सृज्यानाम् अपि यत् च सत् ।
कालः कलयताम् ईशः परः आत्मा तथा आत्मनाम् ।।

शब्दार्थ— त्वम्	१.	आप	कालः	१०.	परम काल
हि	२.	ही	कलयताम्	८.	काल के अवयवों के
विश्वसृजाम्	३.	विश्व के रचयिता	ईशः	९.	नियामक
स्रष्टा	४.	ब्रह्मा आदि के बनाने वाले हैं	पर	१३.	परम
सृज्यानाम्	५.	बनाये हुये पदार्थों की	आत्मा	१४.	आत्मा भी आप ही हैं
अपि यत् च	६.	भी जो और	तथा	११.	तथा
सत् ।	७.	सत्ता है (वह भी आप हैं)	आत्मनाम् ।।	१२.	अन्तरात्माओं के

श्लोकार्थ—आप ही विश्व के रचयिता ब्रह्मा आदि के बनाने वाले हैं । बनाये हुये पदार्थों की भी जो और सत्ता है वह भी आप हैं । काल के अवयवों के नियामक परम काल तथा अन्तरात्माओं के परम आत्मा भी आप ही हैं ।।

अष्टाविंशः श्लोकः

यस्येषदुत्कलितरोषकटाक्षमोक्षैर्वर्त्मादिशत् क्षुभितनक्रतिमिङ्गिलोऽब्धिः ।
सेतुः कृतः स्वयश उज्ज्वलिता च लङ्का रक्षःशिरांसि भुवि पेतुरिषुक्षतानि ।२८।

पदच्छेद—यस्य ईषत् उत्कलित रोष कटाक्षमोक्षैः वर्त्म आदिशत् क्षुभित नक्र तिमिङ्गिलः अब्धिः ।
सेतुः कृतः स्वयश उज्ज्वलिता च लङ्का रक्षः शिरांसि भुवि पेतुः इषु क्षतानि ।।

शब्दार्थ—यस्य	१.	जिन आप के	सेतुः कृतः	११.	पुल बाँधा था
ईषत्	३.	किञ्चित्	स्वयश	१०.	अपने यशः स्वरूप आपने
उत्कलित	४.	भाव से युक्त	उज्ज्वलिता	१३.	विध्वंस किया था
रोष	२.	क्रोध के	च लङ्का	१२.	और लङ्का को
कटाक्षमोक्षैः	५.	तिरछी दृष्टि डालते ही	रक्षः शिरांसि	१६.	राक्षसों के सिर
वर्त्म	८.	मार्ग	भुवि	१७.	पृथ्वी पर
आदिशत्	९.	दे दिया था	पेतुः	१८.	गिरने लगे थे
क्षुभित नक्र	६.	क्षुब्ध घड़ियाल और	इषु	१४.	बाणों से
तिमिङ्गिलः अब्धिः ।	७.	मगरमच्छ वाले समुद्र ने	क्षतानि ।।	१५.	कटे हुये

श्लोकार्थ—जिन आप के क्रोध के भाव से युक्त तिरछी दृष्टि डालते ही क्षुब्ध घड़ियाल और मगरमच्छ वाले समुद्र ने मार्ग दे दिया था । आपने अपने यशः स्वरूप पुल बाँधा था और लङ्का का विध्वंस किया था । बाणों से कटे हुये राक्षसों के सिर पृथ्वी पर गिरने लगे थे ।।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

इति विज्ञातविज्ञानमृक्षराजानमच्युतः ।
व्याजहार महाराज भगवान् देवकीसुतः ॥२९॥

पदच्छेद— इति विज्ञात विज्ञानम् ऋक्षराजानम् अच्युतः ।
व्याजहार महाराज भगवान् देवकी सुतः ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	व्याजहार	१०. कहा
विज्ञात	४. प्राप्त किये हुये	महाराज	१. हे परीक्षित !
विज्ञानम्	३. वास्तविक ज्ञान को	भगवान्	८. भगवान्
ऋक्षराजानम्	५. ऋक्षराज से	देवकी	६. देवकी
अच्युतः ।	९. श्रीकृष्ण ने	सुतः ॥	७. पुत्र

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार वास्तविक ज्ञान प्राप्त किये हुये ऋक्षराज से देवकी पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा ॥

त्रिंशः श्लोकः

अभिमृश्यारविन्दाक्षः पाणिना शङ्करेण तम् ।
कृपया परया भक्तं प्रेमगम्भीरया गिरा ॥३०॥

पदच्छेद— अभिमृश्य अरविन्दाक्षः पाणिना शङ्करेण तम् ।
कृपया परया भक्तं प्रेमगम्भीरया गिरा ॥

शब्दार्थ—

अभिमृश्य	८. स्पर्श करके	कृपया	३. कृपा करके
अरविन्दाक्षः	१. कमल नयन (भगवान्) ने	परया	२. परम
पाणिना	५. हाथ से	भक्तम्	७. भक्त जाम्बवान् का
शङ्करेण	४. कल्याणकारी	प्रेम	९. प्रेम पूर्वक
तम् ।	६. उस	गम्भीरया	१०. गम्भीर
		गिरा ॥	११. वाणी से कहा

श्लोकार्थ—कमलनयन भगवान् श्रीकृष्ण ने परम कृपा करके कल्याणकारी हाथ से उस भक्त जाम्बवान् का स्पर्श करके प्रेम पूर्वक गम्भीर वाणी से कहा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

मणिहेतोरिह प्राप्ता वयमृक्षपते बिलम् ।
मिथ्याभिशापं प्रमृजन्नात्मनो मणिनामुना ॥३१॥

पदच्छेद— मणि हेतोः इह प्राप्ताः वयम् ऋक्षपते बिलम् ।
मिथ्या अभिशापम् प्रमृजन् आत्मनः मणिना अमुना ॥

शब्दार्थ—

मणि हेतोः	२.	मणि के लिये	मिथ्या	१०.	झूठे
इह	४.	इस	अभिशापम्	११.	कलंक को
प्राप्ताः	६.	आये हैं	प्रमृजन्	१२.	मिटाना है
वयम्	३.	हम	आत्मनः	९.	अपने ऊपर लगे
ऋक्षपते	१.	हे ऋक्षराज	मणिना	८.	मणि के द्वारा
बिलम् ।	५.	गुफा में	अमुना ॥	७.	क्योंकि इस

श्लोकार्थ—हे ऋक्षराज ! मणि के लिये हम इस गुफा में आये हैं, क्योंकि इस मणि के द्वारा अपने ऊपर लगे झूठे कलंक को मिटाना है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

इत्युक्तः स्वां दुहितरं कन्यां जाम्बवतीं मुदा ।
अर्हणार्थं स मणिना कृष्णायोपजहार ह ॥३२॥

पदच्छेद— इति उक्तः स्वाम् दुहितरम् कन्याम् जाम्बवतीम् मुदा ।
अर्हण अर्थम् सः मणिना कृष्णाय उपजहार ह ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	अर्हण	९.	उनकी पूजा करने
उक्तः	२.	कहने पर	अर्थम्	१०.	के लिये
स्वाम्	४.	अपनी	सः	३.	उस जाम्बवान् ने
दुहितरम्	५.	पुत्री	मणिना	८.	मणि के साथ
कन्याम्	६.	कुमारी	कृष्णाय	१२.	श्रीकृष्ण को
जाम्बवतीम्	७.	जाम्बवती को	उपजहार ह ॥	१३.	समर्पित कर दिया
मुदा ।	११.	हर्ष पूर्वक			

श्लोकार्थ—ऐसा कहने पर उस जाम्बवान् ने अपनी पुत्री कुमारी जाम्बवती को मणि के साथ उनकी पूजा करने के लिये हर्ष पूर्वक श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अदृष्ट्वा निर्गमं शौरेः प्रविष्टस्य बिलं जनाः ।
प्रतीक्ष्य द्वादशाहानि दुःखिताः स्वपुरं ययुः ॥३३॥

पदच्छेद— अदृष्ट्वा निर्गमम् शौरेः प्रविष्टस्य बिलम् जनाः ।
प्रतीक्ष्य द्वादश अहानि दुःखिताः स्व पुरम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

अदृष्ट्वा	५. न देखकर	प्रतीक्ष्य	९. प्रतीक्षा करके
निर्गमम्	४. बाहर आना	द्वादश	७. बारह
शौरेः	३. श्रीकृष्ण का	अहानि	८. दिनों तक
प्रविष्टस्य	२. गये हुये	दुःखिताः	१०. दुःखी होकर
बिलम्	१. गुफा में	स्व पुरम्	११. अपने नगर को
जनाः ।	६. लोग	ययुः ॥	१२. लौट आये

श्लोकार्थ—गुफा में गये हुये श्रीकृष्ण का बाहर आना न देखकर लोग बारह दिनों तक प्रतीक्षा करके दुःखी होकर अपने नगर को लौट आये ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

निशम्य देवकी देवी रुक्मिण्यानकदुन्दुभिः ।
सुहृदो ज्ञातयोऽशोचन् बिलात् कृष्णमनिर्गतम् ॥३४॥

पदच्छेद— निशम्य देवकी देवी रुक्मिणी आनक दुन्दुभिः ।
सुहृदः ज्ञातयः अशोचन् बिलात् कृष्णम् अनिर्गतम् ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	१. समाचार सुनकर	सुहृदः	६. मित्र तथा
देवकी	२. देवकी	ज्ञातयः	७. सम्बन्धी लोग
देवी	३. देवी	अशोचन्	१०. शोक करने लगे
रुक्मिणी	४. रुक्मिणी	बिलात्	८. गुफा से
आनक दुन्दुभिः ।	५. वसुदेव जी	कृष्णम्	११. श्रीकृष्ण के लिये
		अनिर्गतम् ॥	९. न निकले हुये

श्लोकार्थ—समाचार सुनकर देवकी देवी रुक्मिणी, वसुदेव जी, मित्र तथा सम्बन्धी लोग गुफा से न निकले हुये श्रीकृष्ण के लिये शोक करने लगे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सत्राजितं शपन्तस्ते दुःखिता द्वारकौकसः ।
उपतस्थुर्महामायां दुर्गां कृष्णोपलब्धये ॥३५॥

पदच्छेद — सत्राजितम् शपन्तः ते दुःखिता द्वारकौकसः ।
उपतस्थुः महामायाम् दुर्गाम् कृष्ण उपलब्धये ॥

शब्दार्थ—

सत्राजितम्	४. सत्राजित को	उपतस्थुः	१२. शरण में गये
शपन्तः	५. कोसते हुये	महामायाम्	८. महामाया
ते दुःखिताः	१. वे दुःखी	दुर्गाम्	९. देवी दुर्गा की
द्वारका	२. द्वारका	कृष्ण	६. श्रीकृष्ण की
ओकसः ।	३. निवासी	उपलब्धये ॥	७. प्राप्ति के लिये

श्लोकार्थ—वे दुःखी द्वारका निवासी सत्राजित को कोसते हुये श्रीकृष्ण की प्राप्ति के लिये महामाया दुर्गा देवी की शरण में गये ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तेषां तु देव्युपस्थानात् प्रत्यादिष्टाशिषा स च ।
प्रादुर्बभूव सिद्धार्थः सदारो हर्षयन् हरिः ॥३६॥

पदच्छेद— तेषाम् तु देवी उपस्थानात् प्रति आदिष्ट आशिषा स च ।
प्रादुः बभूव सिद्धार्थः सदारः हर्षयन् हरिः ॥

शब्दार्थ—

तेषाम् तु	१. उनके द्वारा की गई	प्रादुः बभूव	१२. प्रकट हो गये
देवी	२. देवी की	सिद्ध	८. सफल
उपस्थानात्	३. उपासना से	अर्थः	९. मनोरथ होकर
प्रति आदिष्ट	४ दिये गये	सदारः	१०. पत्नी के साथ
आशिषा	५. आशीर्वाद के	हर्षयन्	११. सबको हर्षित करते हुये
स च ।	६. कारण वे	हरिः ॥	७. भगवान् श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—उनके द्वारा की गई देवी की उपासना से दिये गये आशीर्वाद के कारण वे भगवान् श्रीकृष्ण सफल मनोरथ होकर पत्नी के साथ सबको हर्षित करते हुये प्रकट हो गये ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

उपलभ्य हृषीकेशं मृतं पुनरिवागतम् ।
सह पत्न्या मणिग्रीवं सर्वे जातमहोत्सवाः ॥३७॥

पदच्छेद— उपलभ्य हृषीकेशम् मृतम् पुनः इव आगतम् ।
सह पत्न्या मणि ग्रीवम् सर्वे जात महोत्सवाः ॥

शब्दार्थ—

उपलभ्य	६.	पाकर	सह	४.	साथ और
हृषीकेशम्	२.	श्रीकृष्ण	पत्न्या	३.	पत्नी के
मृतम्	१०.	कोई मर कर	मणि ग्रीवम्	५.	गले में मणि पहने हुये
पुनः	११.	फिर	सर्वे	१.	सभी नागरिक
इव	९.	मानों	जात	८.	मग्न हो गये
आगतम् ।	१२.	लौट आया हो	महोत्सवाः ।	७.	परमानन्द में

श्लोकार्थ—सभी नागरिक श्रीकृष्ण को पत्नी के साथ और गले में मणि पहने हुये पाकर परमानन्द में मग्न हो गये । मानों कोई मर कर फिर लौट आया हो ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

सत्राजितं समाहूय सभायां राजसन्निधौ ।
प्राप्तिं चाख्याय भगवान् मणिं तस्मै न्यवेदयत् ॥३८॥

पदच्छेद— सत्राजितम् सम् आहूय सभायाम् राज सन्निधौ ।
प्राप्तिम् च आख्याय भगवान् मणिम् तस्मै न्यवेदयत् ॥

शब्दार्थ—

सत्राजितम्	२.	सत्राजित को	प्राप्तिम् च	७.	और मणि की प्राप्ति
सम् आहूय	६.	बुला कर	आख्याय	८.	बता कर
सभायाम्	३.	सभा में	भगवान्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
राज	४.	राजा के	मणिम् तस्मै	९.	वह मणि उसको
सन्निधौ ।	५.	समीप	न्यवेदयत् ॥	१०.	दे दी

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने सत्राजित को सभा में राजा के समीप बुला कर और मणि की प्राप्ति बता कर वह मणि उसको दे दी ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

स चातिव्रीडितो रत्नं गृहीत्वावाङ्मुखस्ततः ।
अनुतप्यमानो भवनमगमत् स्वेन पाप्मना ॥३९॥

पदच्छेद— स: च अतिव्रीडितः रत्नम् गृहीत्वा अवाङ् मुखः ततः ।
अनुतप्यमानः भवनम् अगमत् स्वेन पाप्मना ॥

शब्दार्थ—

सः च	१.	वह	अनुतप्यमानः	८.	पश्चात्ताप करता हुआ
अतिव्रीडितः	२.	अत्यन्त लज्जित होकर	भवनम्	१०.	घर को
रत्नम्	३.	मणि	अगमत्	११.	चला गया
गृहीत्वा	४.	लेकर	स्वेन	६.	अपने
अवाङ् मुखः	५.	नीचे की ओर मुंह करके	पाप्मना ॥	७.	अपराध पर
ततः ।	९.	वहाँ से			

श्लोकार्थ—वह अत्यन्त लज्जित होकर मणि लेकर नीचे की ओर मुंह करके अपने अपराध पर पश्चात्ताप करता हुआ वहाँ से घर को चला गया ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

सोऽनुध्यायंस्तदेवाघं बलवद्विग्रहाकुलः ।
कथं मृजाम्यात्मरजः प्रसीदेद् वाच्युतः कथम् ॥४०॥

पदच्छेद— सः अनुध्यायन् तद् एव अघम् बलवत् विग्रह आकुलः ।
कथम् मृजामि आत्मरजः प्रसीदेत् वा अच्युतः कथम् ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वह (सत्राजित)	कथम्	९.	किस प्रकार
अनुध्यायन्	७.	सोचता रहता कि	मृजामि	१०.	मार्जन करूँ
तद् एव	५.	वही	आत्मरजः	८.	अपने अपराध का
अघम्	६.	अपराध पर	प्रसीदेत्	१४.	प्रसन्न होंगे
बलवत्	१.	बलवान् के साथ	वा	११.	अथवा ये
विग्रह	२.	विरोध करने के कारण	अच्युतः	१२.	श्रीकृष्ण
आकुलः ।	३.	व्याकुल होकर	कथम् ॥	१३.	कैसे

श्लोकार्थ—बलवान् के साथ विरोध करने के कारण व्याकुल होकर वह सत्राजित वही अपराध सोचता रहता कि अपने अपराध का किस प्रकार मार्जन करूँ । अथवा ये श्रीकृष्ण कैसे प्रसन्न होंगे ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

किं कृत्वा साधु मह्यं स्यान्न शपेद्वा जनो यथा ।
अदीर्घदर्शनं क्षुद्रं मूढं द्रविणलोलुपम् ॥४१॥

पदच्छेद— किम् कृत्वा साधु मह्यं स्यात् न शपेत् वा जनः यथा ।
अदीर्घ दर्शनम् क्षुद्रम् मूढम् द्रविण लोलुपम् ॥

शब्दार्थ—

किम् कृत्वा	१.	क्या करने से	अदीर्घ	६.	अदूर
साधु मह्यं	२.	मेरा कल्याण	दर्शनम्	७.	दर्शी
स्यात्	३.	होगा	क्षुद्रम्	८.	क्षुद्र
न शपेत्	१२.	न कोसें	मूढम्	९.	मूर्ख और
वा जनः	४.	अथवा लोग	द्रविण	१०.	धन के
यथा ।	५.	जिससे	लोलुपम् ॥	११.	लोभी मुझ को

श्लोकार्थ—क्या करने से मेरा कल्याण होगा । अथवा लोग जिससे अदूर-दर्शी, क्षुद्र, मूर्ख और धन के लोभी मुझ को न कोसें ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

दास्ये दुहितरं तस्मै स्त्रीरत्नं रत्नमेव च ।
उपायोऽयं समीचीनस्तस्य शान्तिर्न चान्यथा ॥४२॥

पदच्छेद— दास्ये दुहितरम् तस्मै स्त्रीरत्नम् रत्नम् एव च ।
उपायः अयम् समीचीनः तस्य शान्तिर्न च अन्यथा ॥

शब्दार्थ—

दास्ये	७.	दे दूँ	उपायः	९.	उपाय
दुहितरम्	३.	पुत्री (सत्यभामा)	अयम्	८.	यह
तस्मै	१.	उनको	समीचीनः	१०.	बहुत अच्छा है
स्त्रीरत्नम्	२.	स्त्रियों में रत्न के समान	तस्य	१२.	इस (अपराध) का
रत्नम्	५.	मणि दोनों	शान्तिर्न	१३.	मार्जन नहीं
एव	६.	ही	च	१४.	हो सकता है
च ।	४.	और	अन्यथा ॥	११.	दूसरे प्रकार से

श्लोकार्थ—उनको स्त्रियों में रत्न के समान पुत्री सत्यभामा और मणि दोनों ही दे दूँ । यह उपाय बहुत अच्छा है । दूसरे प्रकार से उस अपराध का मार्जन नहीं हो सकता है ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

एवं व्यवसितो बुद्ध्या सत्राजित् स्वसुतां शुभाम् ।
मणिं च स्वयमुद्यम्य कृष्णायोपजहार ह ॥४३॥

पदच्छेद— एवम् व्यवसितः बुद्धचा सत्राजित् स्वसुताम् शुभाम् ।
मणिम् च स्वयम् उद्यम्य कृष्णाय उपजहार ह ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	मणिम्	८.	मणि को
व्यवसितः	३.	निश्चय करके	च	७.	और
बुद्धचा	२.	बुद्धि से	स्वयम्	९.	स्वयम्
सत्राजित्	४.	सत्राजित् ने	उद्यम्य	१०.	ले जा कर
स्वसुताम्	६.	अपनी पुत्री (सत्यभामा)	कृष्णाय	११.	श्रीकृष्ण को
शुभाम् ।	५.	शुभमूर्ति	उपजहार ह ॥	१२.	अर्पित कर दो

श्लोकार्थ—इस प्रकार बुद्धि से निश्चय करके सत्राजित् ने शुभ मूर्ति अपनी पुत्री सत्यभामा और मणि को स्वयम् ले जा कर श्रीकृष्ण को अर्पित कर दी ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तां सत्यभामां भगवानुपयेमे यथाविधि ।
बहुभिर्याचितां शीलरूपौदार्यगुणान्विताम् ॥४४॥

पदच्छेद— ताम् सत्यभामाम् भगवान् उपयेमे यथा विधि ।
बहुभिः याचिताम् शीलरूप औदार्यं गुण अन्विताम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	८.	उस	बहुभिः	२.	बहुतों के द्वारा
सत्यभामाम्	९.	सत्यभामा से	याचिताम्	३.	माँगी गई
भगवान्	१.	भगवान् ने	शीलरूप	४.	शील, सुन्दरता और
उपयेमे	१२.	विवाह कर लिया	औदार्य	५.	उदारता रूप
यथा	११.	पूर्वक	गुण	६.	गुणों से
विधि ।	१०.	विधि	अन्विताम् ॥	७.	युक्त

श्लोकार्थ—भगवान् ने बहुतों के द्वारा माँगी गई शील, सुन्दरता और उदारता रूप गुणों से युक्त उस सत्यभामा से विधि पूर्वक विवाह कर लिया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

भगवानाह न मणिं प्रतीच्छामो वयं नृप ।

तवास्तां देवभक्तस्य वयं च फलभागिनः ॥४५॥

पदच्छेद—

भगवान् आह न मणिम् प्रतीच्छामः वयम् नृप ।

तव आस्ताम् देव भक्तस्य वयम् च फल भागिनः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	तव	८.	आप ही के पास
आह	३.	कहा	आस्ताम्	९.	यह रहे
न मणिम्	५.	मणि नहीं	देवभक्तस्य	७.	सूर्य देव के भक्त
प्रतीच्छामः	६.	लेंगे	वयम् च	१०.	हम तो
वयम्	४.	हम	फल	११.	उसके फल सुवर्ण के
नृप ।	१.	हे राजन् !	भागिनः ॥	१२.	अधिकारी हैं

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—हम मणि नहीं लेंगे। सूर्यदेव के भक्त आप ही के पास यह रहे। हम तो उसके फल सुवर्ण के अधिकारी हैं ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे स्यमन्तकोपख्याने षट्पञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्तपञ्चाशत्तम अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—विज्ञातार्थोऽपि गोविन्दो दग्धानाकर्ण्य पाण्डवान् ।
कुन्तीं च कुल्यकरणे सहरामो ययौ कुरून् ॥१॥

पदच्छेद— विज्ञात अर्थः अपि गोविन्दः दग्धान् आकर्ण्य पाण्डवान् ।
कुन्तीम् च कुल्यकरणे सहरामः ययौ कुरून् ॥

शब्दार्थ—

विज्ञात	७.	मालूम हो जाने पर	कुन्तीम्	३.	कुन्ती के
अर्थः अपि	६.	सही स्थिति भी	च	२.	और
गोविन्दः	८.	श्रीकृष्ण	कुल्यकरणे	९.	कुलोचित व्यवहार
दग्धान्	४.	जल जाने की बात	सहरामः	१०.	बलराम जी के साथ
आकर्ण्य	५.	सुनकर	ययौ	१२.	गये
पाण्डवान् ।	१.	पाण्डवों के	कुरून् ॥	११.	हस्तिनापुर

श्लोकार्थ—पाण्डवों के और कुन्ती के जल जाने की बात सुनकर सही स्थिति भी मालूम हो जाने पर श्रीकृष्ण कुलोचित व्यवहार करने के लिये बलराम जी के साथ हस्तिनापुर गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

भीष्मं कृपं सविदुरं गान्धारीं द्रोणमेव च ।
तुल्यदुःखौ च सङ्गम्य हा कष्टमिति होचतुः ॥२॥

पदच्छेद— भीष्मम् कृपम् सविदुरम् गान्धारीम् द्रोणम् एव च ।
तुल्य दुःखौ च सङ्गम्य हा कष्टम् इति ह ऊचतुः ॥

शब्दार्थ—

भीष्मम्	१.	भीष्म पितामह	तुल्य दुःखौ	८.	समवेदना प्रकट करते हुये
कृपम्	२.	कृपाचार्य	सङ्गम्य	७.	मिलकर
सविदुरम्	३.	विदुर	हा कष्टम्	११.	हाय कष्ट को बात है
गान्धारीम्	४.	गान्धारी	इति	९.	यह
द्रोणम्	६.	द्रोणाचार्य से	ह ऊचतुः ॥	१०.	कहा
एव च ।	५.	और			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने भीष्म पितामह, कृपाचार्य, विदुर, गान्धारी और द्रोणाचार्य से मिल कर समवेदना प्रकट करते हुये यह कहा—हाय कष्ट की बात है ॥

तृतीयः श्लोकः

लब्ध्वैतदन्तरं राजन् शतधन्वानमूचतुः ।
अक्रूरकृतवर्माणौ मणिः कस्मान्न गृह्यते ॥३॥

पदच्छेद— लब्ध्वा एतद् अन्तरम् राजन् शतधन्वानम् ऊचतुः ।
अक्रूर कृतवर्माणौ मणिः कस्मात् न गृह्यते ॥

शब्दार्थ—

लब्ध्वा	४.	पाकर	अक्रूर	५.	अक्रूर और
एतद्	२.	उन (श्रीकृष्ण के चले जाने का)	कृतवर्माणौ	६.	कृतवर्मा ने
अन्तरम्	३.	अवसर	मणिः	९.	मणि
राजन्	१.	हे राजन् !	कस्मात्	१०.	क्यों
शतधन्वानम्	७.	शतधन्वा से आकर	न	११.	नहीं
ऊचतुः ।	८.	कहा (सत्राजित से)	गृह्यते ॥	१२.	ले लेते

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन श्रीकृष्ण के चले जाने का अवसर पाकर अक्रूर और कृतवर्मा ने शतधन्वा से कहा—सत्राजित से मणि क्यों नहीं ले लेते ॥

चतुर्थः श्लोकः

योऽस्मभ्यं संप्रतिश्रुत्य कन्यारत्नं विगर्ह्य नः ।
कृष्णायादान्न सत्राजित् कस्माद् भ्रातरमन्वियात् ॥४॥

पदच्छेद— यः अस्मभ्यम् संप्रतिश्रुत्य कन्या रत्नम् विगर्ह्य नः ।
कृष्णाय अदात् न सत्राजित् कस्मात् भ्रातरम् अन्वियात् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जिसने (अपनी)	कृष्णाय	८.	कन्या श्रीकृष्ण को
अस्मभ्यम्	४.	हमें	अदात्	९.	दे दी
संप्रतिश्रुत्य	५.	देने का वायदा करके	न	१३.	न
कन्या	२.	श्रेष्ठ कन्या	सत्राजित्	१०.	वह सत्राजित् अपने
रत्नम्	३.	रत्न	कस्मात्	१२.	क्यों
विगर्ह्य	७.	तिरस्कार करके	भ्रातरम्	११.	भाई प्रसेन का
नः ।	६.	हमारा	अन्वियात् ॥	१४.	अनुगमन करे (मारा जाय)

श्लोकार्थ—जिसने अपनी श्रेष्ठ कन्या रत्न हमें देने का वायदा करके हमारा तिरस्कार करके कन्या श्रीकृष्ण को दे दी, वह सत्राजित् अपने भाई प्रसेन का क्यों न अनुगमन करें (मारा जाय) ॥

पञ्चमः श्लोकः

एवं भिन्नमतिस्ताभ्यां सत्राजितमसत्तमः ।
शयानमवधील्लोभात् स पापः क्षीणजीवितः ॥५॥

पदच्छेद--- एवम् भिन्न मतिः ताभ्याम् सत्राजितम् असत्तमः ।
शयानम् अवधीत् लोभात् सः पापः क्षीणजीवितः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	शयनम्	१०.	सोये हुये
भिन्नमतिः	३.	बहकाये गये	अवधीत्	१३.	मार डाला
ताभ्याम्	२.	उन दोनों के द्वारा	लोभात्	१२.	लोभ वश
सत्राजितम्	११.	सत्राजित को	सः	४.	उस
असत्तमः ।	५.	दुष्ट एवं	पापः	८.	पापी (शतधन्वा) ने
			क्षीणजीवितः ॥	६.	स्वल्प जीवन वाले

श्लोकार्थ-- इस प्रकार उन दोनों के द्वारा बहकाये गये उस दुष्ट पापी एवं स्वल्प जीवन वाले शतधन्वा ने सोये हुये सत्राजित को लोभवश मार डाला ॥

षष्ठः श्लोकः

स्त्रीणां विक्रोशमानानां क्रन्दन्तीनामनाथवत् ।
हत्वा पशून् सौनिकवन्मणिमादाय जग्मिवान् ॥६॥

पदच्छेद— स्त्रीणाम् विक्रोशमानानाम् क्रन्दन्तीनाम् अनाथवत् ।
हत्वा पशून् सौनिकवत् मणिम् आदाय जग्मिवान् ॥

शब्दार्थ—

स्त्रीणाम्	१.	स्त्रियों के	हत्वा	८.	मारता है (वैसे ही मार कर) यह
विक्रोशमानानाम्	३.	चिल्लाने पर भी	पशून्	७.	पशुओं को
क्रन्दन्तीनाम्	२.	रोने तथा	सौनिकवत्	६.	जैसे कसाई
अनाथ	४.	अनाथ के	मणिम्	९.	मणि को
वत् ।	५.	समान	आदाय	१०.	लेकर
			जग्मिवान् ॥	११.	चला गया

श्लोकार्थ---स्त्रियों के रोने तथा चिल्लाने पर भी अनाथ के समान जैसे कसाई पशुओं को मारता है, वैसे ही मार कर वह मणि को लेकर चला गया ॥

सप्तमः श्लोकः

सत्यभामा च पितरं हतं वीक्ष्य शुचार्पिता ।
व्यलपत्तात तातेति हा हतास्मीति मुह्यती ॥७॥

पदच्छेद— सत्यभामा च पितरम् हतम् वीक्ष्य शुचार्पिता ।
व्यलपत् तात तात इति हा हता अस्मीति मुह्यती ॥

शब्दार्थ—

सत्यभामा	२.	सत्यभामा	व्यलपत्	१०.	विलाप करने लगीं
च	१.	तथा	तात	७.	पिता जी
पितरम्	३.	पिता को	तात	८.	पिता जी
हतम्	४.	निहत	इति	९.	यह कहकर
वीक्ष्य	५.	देखकर	हा हता	११.	हाय मैं मारी गई
शुचार्पिता ।	६.	शोक के अधीन होकर	अस्मीति	१२.	हूँ
			मुह्यती ॥	१३.	यह कहकर बेहोश हो गईं

श्लोकार्थ—तथा सत्यभामा पिता निहत को देखकर शोक के अधीन होकर पिता जी पिता जी यह कहकर विलाप करने लगीं । और हाय मैं मारी गई हूँ यह कहकर बेहोश हो गईं ॥

अष्टमः श्लोकः

तैलद्रोण्यां मृतं प्रास्य जगाम गजसाह्वयम् ।
कृष्णाय विदितार्थाय तप्ताऽऽचख्यौ पितुर्वधम् ॥८॥

पदच्छेद— तैल द्रोण्याम् मृतम् प्रास्य जगाम गज साह्वयम् ।
कृष्णाय विदित अर्थाय तप्ता आचख्यौ पितुः वधम् ॥

शब्दार्थ—

तैल	१.	तैल के	कृष्णाय	९.	श्रीकृष्ण को
द्रोण्याम्	२.	कढ़ाये में	विदित	८.	पहले से ही जानने वाले
मृतम्	३.	मृतक को	अर्थाय	७.	सारी स्थिति को
प्रास्य	४.	रखकर	तप्ता	१०.	दुःखी होकर
जगाम	६.	गईं (और)	आचख्यौ	१२.	बताने लगीं
गजसाह्वयम् ।	५.	हस्तिनापुर को	पितुः वधम् ॥	११.	पिता के वध की बात

श्लोकार्थ—तैल के कढ़ाये में मृतक को रखकर हस्तिनापुर को गईं । सारी स्थिति को पहले से ही जानने वाले श्रीकृष्ण को दुःखी होकर पिता के वध की बात बताने लगीं ॥

नवमः श्लोकः

तदाकर्ण्येश्वरौ राजन्ननुसृत्य नृलोकताम् ।
अहो नः परमं कष्टमित्यस्राक्षौ विलेपतुः ॥९॥

पदच्छेद— तत् आकर्ण्य ईश्वरौ राजन् अनुसृत्य नृलोकताम् ।
अहो नः परमम् कष्टम् इति अस्राक्षौ विलेपतुः ॥

शब्दार्थ—

तत्	२. वह	अहो	८. आह !
आकर्ण्य	३. सुनकर	नः	९. हम लोगों पर
ईश्वरौ	४. प्रभु श्रीकृष्ण और बलराम	परमम्	१०. बड़ी
राजन्	१. हे राजन् !	कष्टम्	११. विपत्ति आ गयी
अनुसृत्य	६. अनुसरण करते हुये	इति	१२. यह कहकर
नृलोकताम् ।	५. मनुष्य लोक का	अस्राक्षौ	७. आँखों में आँसू भरकर
		विलेपतुः ॥	१३. विलाप करने लगे

श्लोकार्थ—हे राजन् ! प्रभु श्रीकृष्ण और बलराम मनुष्य लोक का अनुसरण करते हुये आँखों में आँसू भरकर आह ! हम लोगों पर बड़ी विपत्ति आ गयी यह कहकर विलाप करने लगे ॥

दशमः श्लोकः

आगत्य भगवांस्तस्मात् सभार्यः साग्रजः पुरम् ।
शतधन्वानमारेभे हन्तुं हर्तुं मणिं ततः ॥१०॥

पदच्छेद— आगत्य भगवान् तस्मात् सभार्यः साग्रजः पुरम् ।
शतधन्वानम् आरेभे हन्तुम् हर्तुम् मणिम् ततः ॥

शब्दार्थ—

आगत्य	६. आकर	शतधन्वानम्	७. शतधन्वा को
भगवान्	१. भगवान् श्रीकृष्ण	आरेभे	१२. उद्योग करने लगे
तस्मात्	४. वहाँ से	हन्तुम्	८. मारने का
सभार्यः	२. पत्नी सहित और	हर्तुम्	११. छीनने का
सअग्रजः	३. बड़े भाई बलराम के साथ	मणिम्	१०. मणि
पुरम् ।	५. द्वारकापुरी में	ततः ॥	९. तथा उससे

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण पत्नी सहित और बड़े भाई बलराम के साथ वहाँ से द्वारकापुरी में आकर शतधन्वा को मारने का तथा उससे मणि छीनने का उद्योग करने लगे ॥

एकादशः श्लोकः

सोऽपि कृष्णोद्यमं ज्ञात्वा भीतः प्राणपरीप्सया ।
साहाय्ये कृतवर्माणमयाचत स चाब्रवीत् ॥११॥

पदच्छेद— सः अपि कृष्ण उद्यमम् ज्ञात्वा भीतः प्राण परीप्सया ।
साहाय्ये कृतवर्माणम् अयाचत सः च अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उसने	साहाय्ये	८. सहायता
अपि	२. भी	कृतवर्माणम्	७. कृतवर्मा से
कृष्ण	३. श्रीकृष्ण का	अयाचत	९. माँगी
उद्यमम्	४. प्रयत्न	सः	११. उस कृतवर्मा ने
ज्ञात्वा भीतः	५. जान कर भयभीत होकर	च	१०. तब
प्राणपरीप्सया ।	६. प्राण बचाने के लिये	अब्रवीत् ॥	१२. कहा

श्लोकार्थ—उसने भी श्रीकृष्ण का प्रयत्न जान कर भयभीत हो कर प्राण बचाने के लिये कृतवर्मा से सहायता माँगी, तब उस कृतवर्मा ने कहा ॥

द्वादशः श्लोकः

नाहमीश्वरयोः कुर्यां हेलनं रामकृष्णयोः ।
को नु क्षेमाय कल्पेत तयोर्वृजिनमाचरन् ॥१२॥

पदच्छेद— नः अहम् ईश्वरयोः कुर्याम् हेलनम् राम कृष्णयोः ।
कः नु क्षेमाय कल्पेत तयोः वृजिनम् आचरन् ॥

शब्दार्थ—

न	५. नहीं	कः नु	१०. कौन
अहम् ईश्वरयोः	१. मैं सर्वशक्तिमान्	क्षेमाय	११. कुशल से
कुर्याम्	६. कर सकता	कल्पेत	१२. रह सकता है
हेलनम्	४. तिरस्कार	तयोः	७. उन दोनों का
राम	२. बलराम और	वृजिनम्	८. अपराध
कृष्णयोः ।	३. श्रीकृष्ण का	आचरन् ॥	९. करके

श्लोकार्थ—मैं सर्वशक्तिमान् बलराम और श्रीकृष्ण का तिरस्कार नहीं कर सकता । उन दोनों का अपराध करके कौन कुशल से रह सकता है ॥

त्रयोदशः श्लोकः

कंसः सहानुगोऽपीतो यद्द्वेषात्त्याजितः श्रिया ।
जरासन्धः सप्तदश संयुगान् विरथो गतः ।।१३।।

पदच्छेद— कंसः सह अनुगः अपीतः यत् द्वेषात् त्याजितः श्रिया ।
जरासन्धः सप्तदश संयुगान् विरथः गतः ।।

शब्दार्थ—

कंसः सह	२.	कंस साथ	जरासन्धः	७.	जरासन्ध
अनुगः	३.	अनुयायियों के	सप्तदश	८.	सत्रह बार
अपीतः	४.	मारा गया (तथा)	संयुगान्	९.	युद्धों में
यत् द्वेषात्	१.	जिनसे द्वेष करने से	विरथः	१०.	रथ हीन होकर
त्याजितः	६.	खो बैठा (तथा)	गतः ।।	११.	भाग गया
श्रिया ।	५.	लक्ष्मी को			

श्लोकार्थ—जिनसे द्वेष करने से कंस अनुयायियों के साथ मारा गया और लक्ष्मी को खो बैठा। तथा जरासन्ध सत्रह बार युद्ध में रथ हीन होकर भाग गया ।।

चतुर्दशः श्लोकः

प्रत्याख्यातः स चाक्रूरं पार्ष्णिग्राहमयाचत ।
सोऽप्याह को विरुध्येत विद्वानीश्वरयोर्बलम् ।।१४।।

पदच्छेद— प्रति आख्यातः सः च अक्रूरम् पार्ष्णिग्राहम अयाचत ।
सः अपि आह कः विरुध्येत विद्वान् ईश्वरयोः बलम् ।।

शब्दार्थ—

प्रति आख्यातः	१.	कृतवर्मा के अस्वीकार करने पर	सः अपि	६.	उस अक्रूर ने भी
सः च	२.	उसने	आह कः	७.	कहा कौन
अक्रूरम्	३.	अक्रूर से	विरुध्येत	११.	विरोध करे
पार्ष्णिग्राहम्	४.	सहायता की	विद्वान्	८.	समझदार व्यक्ति
अयाचत ।	५.	याचना की	ईश्वरयोः	९.	दो सर्वशक्तिमानों के
			बलम् ।।	१०.	बल का

श्लोकार्थ—कृतवर्मा के अस्वीकार करने पर उसने अक्रूर से सहायता की याचना की। उस अक्रूर ने कहा कौन समझदार व्यक्ति दो सर्व शक्तिमानों के बल का विरोध करे ।।

पञ्चदशः श्लोकः

य इदं लीलया विश्वं सृजत्यवति हन्ति च ।
चेष्टां विश्वसृजो यस्य न विदुर्मोहिताजया ॥१५॥

पदच्छेद— य: इदम् लीलया विश्वम् सृजति अवति हन्ति च ।
चेष्टां विश्वसृजः यस्य न विदुः मोहित अजया ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जो	चेष्टाम्	६. चेष्टा को
इदम्	३. इस	विश्वसृजः	१२. ब्रह्मा भी
लीलया	२. खेल-खेल में	यस्य	८. जिनकी
विश्वम्	४. संसार की	न विदुः	१३. नहीं जानते हैं
सृजति	५. सृष्टि	मोहित	११. मोहित होकर
अवति	६. रक्षा	अजया ॥	१०. माया से
हन्ति च ।	७. और संहार करता है		

श्लोकार्थ—जो खेल-खेल में इस संसार की सृष्टि रचना और संहार करते हैं। जिनकी चेष्टा को माया से मोहित होकर ब्रह्मा भी नहीं जानते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

यः सप्तहायनः शैलमुत्पाट्यैकेन पाणिना ।
दधार लीलया बाल उच्छिलीन्ध्रमिवार्भकः ॥१६॥

पदच्छेद— यः सप्तहायनः शैलम् उत्पाट्य एकेन पाणिना ।
दधार लीलया बालः उच्छिलीन्ध्रम् इव अर्भकः ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जिन	दधार	६. धारण किया
सप्तहायनः	२. सात वर्ष के	लीलया	८. लीला पूर्वक
शैलम्	४. पहाड़ को	बालः	३. बालक ने
उत्पाट्य	७. उखाड़ कर	उच्छिलीन्ध्रम्	१२. गोबर के छत्ते को (उखाड़ लेता है)
एकेन	५. एक	इव	१०. जैसे
पाणिना ।	६. हाथ से	अर्भकः ॥	११. बालक

श्लोकार्थ—जिन सात वर्ष के बालक ने पहाड़ को एक हाथ से उखाड़ कर लीलापूर्वक धारण किया जैसे बालक गोबर के छत्ते को उखाड़ लेता है ॥

सप्तदशः श्लोक

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाद्भुतकर्मणे ।

अनन्तायादिभूताय कूटस्थायात्मने नमः ॥१७॥

पदच्छेद— नमः तस्मै भगवते कृष्णाय अद्भुत कर्मणे ।
अनन्ताय आदि भूताय कूटस्थाय आत्मने नमः ।।

शब्दार्थ—

नमः	४. नमस्कार है	अनन्ताय	७. अनन्त
तस्मै	१. उन	आदि	८. सबके आदि
भगवते	२. भगवान्	भूताय	९. बने हुये
कृष्णाय	३. श्रीकृष्ण को	कूटस्थाय	१०. एक रस
अद्भुत	५. अद्भुत	आत्मने	११. आत्म स्वरूप को
कर्मणे ।	६. कर्म वाले	नमः ।।	१२. नमस्कार है

श्लोकार्थ—उन भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है। अद्भुत कर्म करने वाले, अनन्त, सबके आदि बने हुये, एक रस, आत्म स्वरूप को नमस्कार है ।।

अष्टादशः श्लोकः

प्रत्याख्यातः स तेनापि शतधन्वा महामणिम् ।

तस्मिन् न्यस्याश्वमारुह्य शतयोजनगं ययौ ॥१८॥

पदच्छेद— प्रति आख्यातः सः तेन अपि शत धन्वा महामणिम् ।
तस्मिन् न्यस्य अश्वम् आरुह्य शतयोजनगम् ययौ ।।

शब्दार्थ—

प्रति आख्यातः	३. अस्वीकार कर देने पर	तस्मिन्	७. उसी के पास
सः	४. वह	न्यस्य	८. रखकर
तेन	१. उस अक्रूर के	अश्वम्	११. घोड़े पर
अपि	२. भी	आरुह्य	१२. चढ़कर
शतधन्वा	५. शतधन्वा	शतयोजन	९. सौ योजन
महामणिम् ।	६. महामणि को	गम्	१०. लगातार चलने वाले
		ययौ ।।	१३. भाग गया

श्लोकार्थ—उस अक्रूर के भी अस्वीकार कर देने पर वह शतधन्वा महामणि को उसी के पास रखकर सौ योजन लगातार चलने वाले घोड़े पर चढ़कर भाग गया ।।

एकोनविंशः श्लोकः

गरुडध्वजमारुह्य रथं रामजनार्दनौ ।
अन्वयातां महावेगैरश्वै राजन् गुरुद्रुहम् ॥१६॥

पदच्छेद— गरुडध्वजम् आरुह्य रथम् राम जनार्दनौ ।
अन्वयाताम् महावेगैः अश्वैः राजन् गुरुद्रुहम् ॥

शब्दार्थ—

गरुडध्वजम्	२. गरुड़ चिह्न से युक्त (तथा)	अन्वयाताम्	१०. पीछा किया
आरुह्य	६. चढ़ कर	महावेगैः	३. बड़े वेग वाले
रथम्	५. रथ पर	अश्वैः	४. घोड़े जुते हुये
राम	७. बलराम और	राजन्	१. हे राजन् !
जनार्दनौ ।	८. श्रीकृष्ण ने	गुरुद्रुहम् ॥	६. गुरु से द्रोह करने वाले का

श्लोकार्थ—हे राजन् ! गरुड़ चिह्न से युक्त तथा बड़े वेग वाले घोड़े जुते हुये रथ पर चढ़ कर बलराम और श्रीकृष्ण ने गुरु से द्रोह करने वाले का पीछा किया ॥

विंशः श्लोकः

मिथिलायामुपवने विसृज्य पतितं हयम् ।
पद्भ्यामधावत् सन्त्रस्तः कृष्णोऽप्यन्वद्रवद् रुषा ॥२०॥

पदच्छेद— मिथिलायाम् उपवने विसृज्य पतितम् हयम् ।
पद्भ्याम् अधावत् सन्त्रस्तः कृष्णः अपि अन्वद्रवत् रुषा ॥

शब्दार्थ—

मिथिलायाम्	१. मिथिला के पास	पद्भ्याम्	७. पैदल ही
उपवने	२. उपवन में	अधावत्	८. भागा
विसृज्य	५. छोड़ कर	सन्त्रस्तः	६. भयभीत (शतधन्वा)
पतितम्	३. गिरे हुये	कृष्णः अपि	९. श्रीकृष्ण भी
हयम् ।	४. घोड़े को	अन्वद्रवत्	११. उसके पीछे दौड़े
		रुषा ॥	१०. क्रोध से

श्लोकार्थ—मिथिला के पास उपवन में गिरे हुये घोड़े को छोड़ कर भयभीत शतधन्वा पैदल ही भागा । श्रीकृष्ण भी क्रोध से उसके पीछे दौड़े ॥

एकविंशः श्लोकः

पदातेर्भगवांस्तस्य पदातिस्तिग्मनेमिना ।
चक्रेण शिर उत्कृत्य वाससो व्यचिनोन्मणिम् ॥२१॥

पदच्छेद— पदातेः भगवान् तस्य पदातिः तिग्म नेमिना ।
चक्रेण शिरः उत्कृत्य वाससः व्यचिनोत् मणिम् ॥

शब्दार्थ—

पदातेः	३.	पैदल भागते हुये	चक्रेण	७.	चक्र से
भगवान्	२.	भगवान् ने	शिरः	८.	सिर
तस्य	४.	उसका	उत्कृत्य	९.	उतार कर
पदातिः	१.	पैदल	वाससः	१०.	वस्त्रों में
तिग्म	५.	तीक्ष्ण	व्यचिनोत्	१२.	ढूँढ़ा
नेमिना ।	६.	धार वाले	मणिम् ॥	११.	मणि को

श्लोकार्थ—पैदल भगवान् ने पैदल भागते हुये उसका तीक्ष्ण धार वाले चक्र से सिर उतार कर वस्त्रों में मणि को ढूँढ़ा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अलब्धमणिरागत्य कृष्ण आहाग्रजान्तिकम् ।
वृथा हतः शतधनुर्मणिस्तत्र न विद्यते ॥२२॥

पदच्छेद— अलब्ध मणिः आगत्य कृष्णः आह अग्रज अन्तिकम् ।
वृथा हतः शतधनुः मणिः तत्र न विद्यते ॥

शब्दार्थ—

अलब्ध	२.	न मिलने पर	वृथा	९.	व्यर्थ
मणिः	१.	मणि के	हतः	१०.	मारा
आगत्य	६.	आकर	शतधनुः	८.	शतधन्वा को
कृष्णः	३.	श्रीकृष्ण ने	मणिः	१२.	स्यमन्तक मणि
आह	७.	कहा	तत्र	११.	उसके पास
अग्रज	४.	बड़े भाई के	न	१३.	नहीं
अन्तिकम् ।	५.	पास	विद्यते ॥	१४.	है

श्लोकार्थ—मणि के न मिलने पर श्रीकृष्ण ने बड़े भाई के पास आकर कहा । शतधन्वा को व्यर्थ मारा उसके पास मणि नहीं है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तत आह बलो नूनं स मणिः शतधन्वना ।
कस्मिंश्चित् पुरुषे न्यस्तस्तमन्वेष पुरं व्रज ॥२३॥

पदच्छेद— तत आह बलः नूनम् सः मणिः शतधन्वना ।
कस्मिन् चित् पुरुषे न्यस्तः तम् अन्वेष पुरम् व्रज ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. इस पर	कस्मिन्चित्	८. किसी
आह	३. कहा	पुरुषे	९. पुरुष के पास
बलः	२. बलराम ने	न्यस्तः	१०. रख दिया है
नूनम्	४. निश्चित ही	तम्	१३. उसका
सः	५. उस	अन्वेष	१४. पता लगाओ
मणिः	६. मणि को	पुरम्	११. तुम द्वारका
शतधन्वना ।	७. शतधन्वाने	व्रज ॥	१२. जाओ (और)

श्लोकार्थ—इस पर बलराम ने कहा निश्चित ही उस मणि को शतधन्वाने किसी पुरुष के पास रख दिया है । तुम द्वारका जाओ और उसका पता लगाओ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अहं विदेहमिच्छामि द्रष्टुं प्रियतमं मम ।
इत्युक्त्वा मिथिलां राजन् विवेश यदुनन्दनः ॥२४॥

पदच्छेद— अहम् विदेहम् इच्छामि द्रष्टुम् प्रियतमम् मम ।
इति उक्त्वा मिथिलाम् राजन् विवेश यदुनन्दनः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१. मैं	इति	८. यह
विदेहम्	४. मिथिलापति जनक से	उक्त्वा	९. कहकर
इच्छामि	६. चाहता हूँ	मिथिलाम्	११. मिथिला नगरी में
द्रष्टुम्	५. मिलना	राजन्	७. हे राजन् !
प्रियतमम्	३. अत्यन्त प्रिय	विवेश	१२. प्रवेश किया
मम ।	२. अपने	यदुनन्दनः ॥	१०. यदुनन्दन बलराम जी ने

श्लोकार्थ—मैं अपने अत्यन्त प्रिय मिथिलापति जनक से मिलना चाहता हूँ । हे राजन् ! यह कह कर यदुनन्दन बलराम जी ने मिथिला में प्रवेश किया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय मैथिलः प्रीतमानसः ।
अर्हयामास विधिवदर्हणीयं समर्हणैः ॥२५॥

पदच्छेद — तम् दृष्ट्वा सहसा उत्थाय मैथिलः प्रीतमानसः ।
अर्हयामास विधिवत् अर्हणीयम् सम् अर्हणैः ॥

शब्दार्थ— तम्	१.	उन्हें	अर्हयामास	११.	पूजा की
दृष्ट्वा	२.	देखकर	विधिवत्	१०.	विधिवत्
सहसा	३.	एकाएक	अर्हणीयम्	७.	पूजनीय बलराम जी की
उत्थाय	४.	उठकर	सम्	८.	अनेक प्रकार की
मैथिलः	५.	मिथिला नरेश ने	अर्हणैः ॥	९.	सामग्रियों से
प्रीतमानसः ।	६.	मन में प्रसन्न होकर			

श्लोकार्थ—उन्हें देखकर एकाएक उठकर मिथिला नरेश ने मन में प्रसन्न होकर पूजनीय बलराम जी की अनेक प्रकार की सामग्रियों से विधिपूर्वक पूजा की ॥

षड्विंशः श्लोकः

उवास तस्यां कतिचिन्मिथिलायां समा विभुः ।
मानितः प्रीतियुक्तेन जनकेन महात्मना ।
ततोऽशिक्षद् गदां काले धार्तराष्ट्रः सुयोधनः ॥२६॥

पदच्छेद— उवास तस्याम् कतिचिन्मिथिलायाम् समा विभुः ।
मानितः प्रीतियुक्तेन जनकेन महात्मना ।
ततोऽशिक्षत् गदाम् काले धार्तराष्ट्रः सुयोधनः ॥

शब्दार्थ— उवास	१०.	रह गये	जनकेन	३.	जनक के द्वारा
तस्याम्	८.	उसी	महात्मना	२.	महात्मा
कतिचित्	६.	कुछ	ततः	११.	तत्पश्चात्
मिथिलायाम्	९.	मिथिलापुरी में	अशिक्षत्	१६.	शिक्षा ग्रहण की
समाः	७.	वर्षों तक	गदाम्	१५.	गदा की
विभुः	५.	प्रभु बलराम जी	काले	१२.	समय पर
मानितः	४.	सम्मानित	धार्तराष्ट्रः	१३.	धृतराष्ट्र-पुत्र
प्रीतियुक्तेन	१.	आनन्द युक्त	सुयोधनः ॥	१४.	दुर्योधन ने उनसे

श्लोकार्थ—आनन्द युक्त महात्मा जनक के द्वारा सम्मानित प्रभु बलराम जी ने कुछ वर्षों तक उसी मिथिलापुरी में रह गये । तत्पश्चात् समय पर धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन ने उनसे गदा की शिक्षा ग्रहण की ॥

सप्तविंशः श्लोकः

केशवो द्वारकामेत्य निधनं शतधन्वनः ।
अप्राप्तिं च मणेः प्राह प्रियायाः प्रियकृद् विभुः ॥२७॥

पदच्छेद— केशवः द्वारकाम् एत्य निधनम् शतधन्वनः ।
अप्राप्तिम् च मणेः प्राह प्रियायाः प्रियकृद् विभुः ॥

शब्दार्थ—

केशवः	४.	श्रीकृष्ण ने	अप्राप्तिम्	६.	न मिलने का समाचार
द्वारकाम्	५.	द्वारका में	च मणेः	१०.	और मणि
एत्य	६.	आकर	प्राह	११.	बता दिया
निधनम्	८.	मृत्यु का	प्रियायाः	१.	प्रिया का
शतधन्वनः ।	७.	शतधन्वा की	प्रियकृद्	२.	प्रिय कार्य करने वाले
			विभुः ॥	३.	भगवान्

श्लोकार्थ—प्रिया का प्रिय कार्य करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण ने द्वारका में आकर शतधन्वा की मृत्यु और मणि न मिलने का समाचार बता दिया ।।

अष्टाविंशः श्लोकः

ततः स कारयामास क्रिया बन्धोर्हतस्य वै ।
साकं सुहृद्भिर्भगवान् या याः स्युः साम्परायिकाः ॥२८॥

पदच्छेद— ततः सः कारयामास क्रियाः बन्धोः हतस्य वै ।
साकम् सुहृद्भिः भगवान् याः याः स्युः साम्परायिकाः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	साकम्	११.	साथ
सः	२.	उन	सुहृद्भिः	१०.	भाई बन्धुओं के
कारयामास	१२.	करवायीं	भगवान्	३.	भगवान् ने
क्रियाः	८.	श्राद्ध क्रियायें	याः याः	६.	जो-जो
बन्धोः	५.	बन्धु (श्वशुर) की	स्युः	९.	होती हैं (वे सब)
हतस्य वै ।	४.	मारे गये	साम्परायिकः ॥	७.	और्ध्वदैहिक

श्लोकार्थ—तदनन्तर उन भगवान् ने मारे गये बन्धु श्वशुर की जो-जो और्ध्वदैहिक श्राद्ध क्रियायें होती हैं वे सब भाई बन्धुओं के साथ करवायीं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अक्रूरः कृतवर्मा च श्रुत्वा शतधनोर्वधम् ।
व्यूषतुर्भयवित्रस्तौ द्वारकायाः प्रयोजकौ ॥२९॥

पदच्छेद— अक्रूरः कृतवर्मा च श्रुत्वा शतधन्वनः वधम् ।
व्यूषतुः भय वित्रस्तौ द्वारकायाः प्रयोजकौ ॥

शब्दार्थ—

अक्रूरः	२. अक्रूर	व्यूषतुः	१०. भाग खड़े हुये
कृतवर्मा च	३. कृतवर्मा और	भय	७. भय से
श्रुत्वा	६. सुनकर	वित्रस्तौ	८. घबड़ा कर
शतधन्वनः	४. शतधन्वा का	द्वारकायाः	९. द्वारका से
वधम् ।	५. वध	प्रयोजकौ ॥	१. उत्तेजित करने वाले

श्लोकार्थ—उत्तेजित करने वाले अक्रूर और कृतवर्मा शतधन्वा का वध सुनकर भय से घबराकर द्वारका से भाग खड़े हुये ॥

त्रिंशः श्लोकः

अक्रूरे प्रोषितेऽरिष्टान्यासन् वै द्वारकौकसाम् ।
शारीरा मानसास्तापा मुहुर्दैविकभौतिकाः ॥३०॥

पदच्छेद— अक्रूरे प्रोषिते अरिष्टानि आसन् वै द्वारका ओकसाम् ।
शारीराः मानसाः तापाः मुहुः दैविक भौतिकाः ॥

शब्दार्थ—

अक्रूरे	१. अक्रूर के	शारीराः	१०. शारीरिक तथा
प्रोषिते	२. द्वारका से चले जाने पर	मानसाः	११. मानसिक
अरिष्टानि	५. अनेक उपद्रव	तापाः	१२. कष्ट हुये
आसन् वै	६. हुये	मुहुः	७. बार-बार
द्वारका	३. द्वारका	दैविक	८. दैविक और
ओकसाम् ।	४. वासियों को	भौतिकाः ॥	९. भौतिक निमित्तों से

श्लोकार्थ—अक्रूर के द्वारका से चले जाने पर द्वारकावासियों को अनेक उपद्रव हुये । बार-बार दैविक-भौतिक निमित्तों से शारीरिक तथा मानसिक कष्ट हुये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

इत्यङ्गोपदिशन्त्येके विस्मृत्य प्रागुदाहृतम् ।
मुनिवासनिवासे किं घटेतारिष्टदर्शनम् ॥३१॥

पदच्छेद— इति अङ्ग उपदिशन्ति एके विस्मृत्य प्राक् उदाहृतम् ।
मुनिवास निवासे किम् घटेत अरिष्ट दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

इति	६.	इस प्रकार	मुनि	६.	मुनियों के
अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !	वास	१०.	निवास भूत (भगवान् के)
उपदिशन्ति	७.	कहते हैं (भला)	निवासे	११.	निवास स्थान (द्वारका में)
एके	२.	कुछ लोग	किम्	१२.	क्या
विस्मृत्य	५.	भूल कर	घटेत	१५.	हो सकता है
प्राक्	३.	पहले कही हुई	अरिष्ट	१३.	अरिष्टों का
उदाहृतम् ।	४.	बात को	दर्शनम् ॥	१४.	दर्शन

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! कुछ लोग पहले कही हुई बात को भूलकर इस प्रकार कहते हैं। भला मुनियों के निवास भूत भगवान् के निवास स्थान द्वारका में क्या अरिष्टों का दर्शन हो सकता है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

देवेऽवर्षति काशीशः श्वफल्कायागताय वै ।
स्वसुतां गान्दिनीं प्रादात् ततोऽवर्षत् स्म काशिषु ॥३२॥

पदच्छेद— देवे अवर्षति काशीशः श्वफल्काय आगताय वै ।
स्वसुतां गान्दिनीं प्रादात् ततः अवर्षत् स्म काशिषु ॥

शब्दार्थ—

देवे	१.	एक बार इन्द्रदेव के	स्वसुताम्	६.	अपनी पुत्री
अवर्षति	२.	वर्षा न करने पर	गान्दिनीम्	७.	गान्दिनी
काशीशः	३.	काशी नरेश ने	प्रादात् ततः	८.	ब्याह दी तब
श्वफल्काय	५.	अक्रूर के पिता श्वफल्क को	अवर्षत्स्म	१०.	वर्षा हुई
आगताय वै ।	४.	अपने राज्य में आये हुये	काशिषु ॥	६.	काशी राज्य में

श्लोकार्थ—एक बार इन्द्रदेव के वर्षा न करने पर काशी नरेश ने अपने राज्य में आये हुये अक्रूर के पिता श्वफल्क को अपनी पुत्री गान्दिनी ब्याह दी तब काशी राज्य में वर्षा हुई ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तत्सुतस्तत्प्रभावोऽसावक्रूरो यत्र यत्र ह ।
देवोऽभिवर्षते तत्र नोपतापा न मारिकाः ॥३३॥

पदच्छेद—
तत् सुतः तत् प्रभावः असौ अक्रूरः यत्र यत्र ह ।
देवः अभिवर्षते तत्र न उपतापाः न मारिकाः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. श्वफल्क का	देवः	९. इन्द्र
सुतः	२. पुत्र भी	अभिवर्षते	१०. वर्षा करते हैं तथा
तत्	३. वैसा ही	तत्र	८. वहाँ
प्रभावः	४. प्रभाव रखता है और	न	११. न तो
असौ	५. वह	उपतापाः	१२. कष्ट होते हैं और
अक्रूरः	६. अक्रूर भी	न	१३. न
यत्र यत्र ह ।	७. जहाँ-जहाँ रहता है	मारिकाः ॥	१४. महामारी होती है

श्लोकार्थ—श्वफल्क का पुत्र भी वैसा ही प्रभाव रखता है। और वह अक्रूर भी जहाँ-जहाँ रहता है, इन्द्र वर्षा करते हैं। तथा वहाँ न तो कष्ट होते हैं, और न महामारी होती है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

इति वृद्धवचः श्रुत्वा नैतावदिह कारणम् ।
इति मत्वा समानाय्य प्राहाक्रूरं जनार्दनः ॥३४॥

पदच्छेद—
इति वृद्ध वचः श्रुत्वा न एतावत् इह कारणम् ।
इति मत्वा समानाय्य प्राह अक्रूरम् जनार्दनः ॥

शब्दार्थ—

इति	१. यह	इति	८. यह
वृद्ध	२. वृद्धों का	मत्वा	९. मानकर
वचः	३. वचन	समानाय्य	११. बुलवाकर
श्रुत्वा न	४. सुनकर नहीं है	प्राह	१३. कहा
एतावत्	६. इतना ही	अक्रूरम्	१०. अक्रूर को
इह	५. यहाँ	जनार्दनः ॥	१२. श्रीकृष्ण ने
कारणम् ।	७. कारण		

श्लोकार्थ—यह वृद्धों का वचन सुनकर यहाँ इतना ही कारण नहीं हैं, यह मान कर अक्रूर को बुलवाकर श्रीकृष्ण ने कहा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

पूजयित्वाभिभाष्यैनं कथयित्वा प्रियाः कथाः ।

विज्ञाताखिलचित्तज्ञः स्मयमान उवाच ह ॥३५॥

पदच्छेद— पूजयित्वा अभिभाष्य एनम् कथयित्वा प्रियाः कथाः ।
विज्ञात अखिल चित्तज्ञः स्मयमानः उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

पूजयित्वा	५.	स्वागत करके	विज्ञात	१.	पहले से जाने हुये
अभिभाष्य	६.	सम्भाषण किया और	अखिल	२.	सम्पूर्ण
एनम्	४.	उसका	चित्तज्ञः	३.	चित्तों के ज्ञाता श्रीकृष्ण ने
कथयित्वा	९.	कह कर	स्मयमानः	१०.	मुस्कराते हुये
प्रियाः	७.	प्रिय	उवाच ह ॥	११.	कहा
कथाः ।	८.	बातें			

श्लोकार्थ—पहले से जाने हुये सम्पूर्ण चित्तों के ज्ञाता श्रीकृष्ण ने उसका स्वागत करके सम्भाषण किया और प्रिय बातें कह कर मुस्कराते हुये कहा ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

ननु दानपते न्यस्तस्त्वय्यास्ते शतधन्वना ।

स्यमन्तको मणिः श्रीमान् विदितः पूर्वमेव नः ॥३६॥

पदच्छेद — ननु दानपते न्यस्तः त्वयि आस्ते शतधन्वना ।
स्यमन्तकः मणिः श्रीमान् विदितः पूर्वम् एव नः ॥

शब्दार्थ—

ननु	१.	हे	स्यमन्तकः	९.	स्यमन्तक
दानपते	२.	दान धर्म के पालक	मणिः	१०.	मणि
न्यस्तः	११.	रख छोड़ो	श्रीमान्	८.	प्रकाशमान
त्वयि	७.	आपके पास	विदितः	५.	मालूम है कि
आस्ते	१२.	है	पूर्वम्	४.	पहले से ही
शतधन्वना ।	६.	शतधन्वा ने	एव नः ॥	३.	हमें

श्लोकार्थ—हे दानधर्म के पालक ! हमें पहले से ही मालूम है कि शतधन्वा ने आपके पास प्रकाशमान स्यमन्तक मणि रख छोड़ी है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

सत्राजितोऽनपत्यत्वाद् गृह्णीयुर्दुहितुः सुताः ।
दायं निनीयापः पिण्डान् विमुच्यर्णं च शेषितम् ॥३७॥

पदच्छेद— सत्राजितः अनपत्यत्वात् गृह्णीयुः दुहितुः सुताः ।
दायम् निनीय आपः पिण्डान् विमुच्य ऋणं च शेषितम् ॥

शब्दार्थ—

सत्राजितः	१. सत्राजित के	दायम्	१०. उनकी सम्पत्ति का भाग
अनपत्यत्वात्	२. पुत्र न होने से	निनीय	७. देकर
गृह्णीयुः	११. ग्रहण करेंगे	आपः	५. तिलाञ्जलि और
दुहितुः	३. उनकी पुत्री के	पिण्डान्	६. पिण्ड
सुताः ।	४. पुत्र	विमुच्य ऋणं	९. ऋण चुका कर
		च शेषितम् ॥	८. और शेष

श्लोकार्थ—सत्राजित् के पुत्र न होने से उनकी पुत्री के पुत्र तिलाञ्जलि और पिण्ड देकर और शेष ऋण चुका कर उनकी सम्पत्ति का भाग ग्रहण करेंगे ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तथापि दुर्धरस्त्वन्यैस्त्वय्यास्तां सुव्रते मणिः ।
किन्तु मामग्रजः सम्यङ् न प्रत्येति मणिं प्रति ॥३८॥

पदच्छेद— तथापि दुर्धरः तु अन्यैः त्वयि आस्ताम् सुव्रते मणिः ।
किन्तु माम् अग्रजः सम्यक् न प्रतिएति मणिम् प्रति ॥

शब्दार्थ—

तथापि	१. तो भी (मणि का रखना)	किन्तु	८. किन्तु
दुर्धरः तु	३. अत्यन्त कठिन है	माम्	१२. मुझ पर
अन्यैः	२. दूसरों के लिये	अग्रजः	९. बड़े भाई बलराम जी
त्वयि	६. आप ही के पास	सम्यक्	१३. पूरा
आस्ताम्	७. रहे	न प्रतिएति	१४. विश्वास नहीं करते
सुव्रते	४. हे व्रतनिष्ठ	मणिम्	१०. मणि के
मणिम् ।	५. मणि	प्रति ॥	११. सम्बन्ध में

श्लोकार्थ—तो भी मणि का रखना दूसरों के लिये अत्यन्त कठिन है । हे व्रतनिष्ठ ! मणि आप ही के पास रहे । किन्तु बड़े भाई बलराम जी मणि के सम्बन्ध में मुझ पर पूरा विश्वास नहीं करते ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

दर्शयस्व महाभाग बन्धूनां शान्तिमावह ।
अव्युच्छिन्ना मखास्तेऽद्य वर्तन्ते रुक्मवेदयः ॥३९॥

पदच्छेद— दर्शयस्व महाभाग बन्धूनाम् शान्तिम् आवह ।
अव्युच्छिन्नाः मखाः ते अद्य वर्तन्ते रुक्म वेदयः ॥

शब्दार्थ—

दर्शयस्व	३. मणि दिखा कर (मुझे)	अव्युच्छिन्नाः	९. लगातार
महाभाग	१. हे महाभाग आप	मखाः	८. यज्ञ
बन्धूनाम्	२. मेरे बन्धुओं को	ते अद्य	६. आजकल आपके
शान्तिम्	४. शान्ति	वर्तन्ते	१०. चल रहे हैं
आवह ।	५. प्रदान कीजिये (क्योंकि)	रुक्म वेदयः ।	७. सोने की वेदियों वाले

श्लोकार्थ—हे महाभाग ! आप मेरे बन्धुओं को मणि दिखाकर मुझे शान्ति प्रदान कीजिये । क्योंकि आज कल आपके सोने की वेदियों वले यज्ञ बराबर चल रहे हैं ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

एवं सामभिरालब्धः श्वफल्कतनयो मणिम् ।
आदाय वाससाच्छन्नं ददौ सूर्यसमप्रभम् ॥४०॥

पदच्छेद— एवम् सामभिः आलब्धः श्वफल्क तनयः मणिम् ।
आदाय वाससा आच्छन्नम् ददौ सूर्य समप्रभम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	आदाय	११. लाकर
सामभिः	२. सांत्वनाओं से	वाससा	६. वस्त्र में
आलब्धः	३. आश्वस्त होकर	आच्छन्नम्	७. लपेटी हुई
श्वफल्क	४. श्वफल्क के	ददौ	१२. दे दी
तनयः	५. पुत्र अक्रूर ने	सूर्य	८. सूर्य के
मणिम् ।	१०. मणि	समप्रभम् ॥	९. समान कान्ति वाली वह

श्लोकार्थ—इस प्रकार सांत्वनाओं से आश्वस्त होकर श्वफल्क के पुत्र अक्रूर ने वस्त्र में लपेटी हुई सूर्य के समान कान्ति वाली वह मणि लाकर दे दी ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

स्यमन्तकं दर्शयित्वा ज्ञातिभ्यो रज आत्मनः ।
विमृज्य मणिना भूयस्तस्मै प्रत्यर्पयत् प्रभुः ॥४१॥

पदच्छेद— स्यमन्तकम् दर्शयित्वा ज्ञातिभ्यः रजः आत्मनः ।
विमृज्य मणिना भूयः तस्मै प्रतिअर्पयत् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

स्यमन्तकम्	२. स्यमन्तक मणि	विमृज्य	७. मिटाकर
दर्शयित्वा	४. दिखाकर	मणिना	८. मणि
ज्ञातिभ्यः	३. जाति भाइयों को	भूयः	९. पुनः
रजः	६. कलंक	तस्मै	१०. अक्रूर को
आत्मनः ।	५. अपना	प्रतिअर्पयत्	११. लौटा दी
		प्रभुः ॥	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने स्यमन्तक मणि जाति भाइयों को दिखाकर और अपना कलंक मिटा कर पुनः अक्रूर को लौटा दी ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

यस्त्वेतद् भगवत ईश्वरस्य विष्णोर्वीर्याढ्यं वृजिनहरं सुमङ्गलं च ।
आख्यानं पठति शृणोत्यनुस्मरेद् वा दुष्कीर्तिं दुरितमपोह्य याति शान्तिम् ॥४२॥

पदच्छेद—यः तु एतत् भगवतः ईश्वरस्य विष्णोः वीर्याढ्यं वृजिनहरं सुमङ्गलम् च ।
आख्यानम् पठतिशृणोति अनुस्मरेत् वा दुष्कीर्तिम् अपोह्य याति शान्तिम् ॥

शब्दार्थ—

यः तु	१. जो	आख्यानम्	९. आख्यान
एतत्	२. यह	पठति शृणोति	१०. पढ़ता है सुनता है
भगवतः	४. भगवान्	अनुस्मरेत् वा	११. या स्मरण करता है वह
ईश्वरस्य	३. सर्वशक्तिमान्	दुष्कीर्तिम्	१२. कलंक और
विष्णोः	५. विष्णु का	दुरितम्	१३. पाप से
वीर्याढ्यम्	६. पराक्रम से युक्त	अपोह्य	१३. छूटकर
वृजिन हरम्	७. पाप हारी	याति	१६. प्राप्त करता
सुमङ्गलम् च ।	८. और अतिमङ्गलकारी	शान्तिम् ॥	१५. शान्ति को

श्लोकार्थ—जो यह सर्व शक्तिमान् भगवान् श्रीकृष्ण का पराक्रम से युक्त पाप हारी और अतिमङ्गलकारी आख्यान पढ़ता है, सुनता है, या स्मरण करता है। वह पाप से छूटकर शान्त को प्राप्त करता है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
स्यमयन्तकोपाख्याने सप्तपञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५७॥

दशमः स्कन्धः

अष्टपञ्चाशत्तमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकदा पाण्डवान् द्रष्टुं प्रतीतान् पुरुषोत्तमः ।
इन्द्रप्रस्थं गतः श्रीमान् युयुधानादिभिर्वृतः ॥१॥

पदच्छेद— एकदा पाण्डवान् द्रष्टुम् प्रतीतान् पुरुषोत्तमः ।
इन्द्र प्रस्थम् गतः श्रीमान् युयुधान आदिभिः वृतः ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक बार	इन्द्र प्रस्थम्	९.	इन्द्रप्रस्थ
पाण्डवान्	४.	पाण्डवों से	गतः	१०.	पधारे
द्रष्टुम्	५.	मिलने के लिये	श्रीमान्	६.	श्रीमान्
प्रतीतान्	३.	विश्वस्त	युयुधान आदिभिः	७.	सात्यकि आदि से
पुरुषोत्तमः ।	२	श्रीकृष्ण	वृतः ॥	८.	युक्त होकर

श्लोकार्थ—एक बार श्रीकृष्ण विश्वस्त पाण्डवों से मिलने के लिये श्रीमान् सात्यकि आदि से युक्त होकर इन्द्र प्रस्थ पधारे ॥

द्वितीयः श्लोकः

दृष्ट्वा तमागतं पार्था मुकुन्दमखिलेश्वरम् ।
उत्तस्थुर्युगपद् वीराः प्राणा मुख्यमिवागतम् ॥२॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा तम् आगतम् पार्थाः मुकुन्दम् अखिलईश्वरम् ।
उत्तस्थुः युगपद् वीराः प्राणाः मुख्यम् इव आगतम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	५.	देखकर	उत्तस्थुः	९.	उठ खड़े हुये
तम्	२.	उन	युगपद्	८.	एक साथ
आगतम्	४.	आये हुये	वीराः	६.	वीर
पार्थाः	७.	पाण्डव (वैसे ही)	प्राणाः	१२.	प्राण के इन्द्रियाँ सचेत हो जाती हैं
मुकुन्दम्	३.	श्रीकृष्ण को	मुख्यम्	११.	मुख्य
अखिलेश्वरम ।	१.	सबके ईश्वर	इव आगतम् ॥	१०.	जैसे आने पर

श्लोकार्थ—सबके ईश्वर उन श्रीकृष्ण को आये हुये देखकर वीर पाण्डव वैसे ही एक साथ उठ खड़े हुये जैसे मुख्य प्राण के आने पर इन्द्रियाँ सचेत हो जाती हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

परिष्वज्याच्युतं वीरा अङ्गसङ्गहतैनसः ।
सानुरागस्मितं वक्त्रं वीक्ष्य तस्य मुदं ययुः ॥३॥

पदच्छेद— परिष्वज्य अच्युतम् वीराः अङ्ग सङ्ग हत एनसः ।
स अनुरागस्मितम् वक्त्रम् वीक्ष्य तस्य मुदम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

परिष्वज्य	२. आलिंगन करके	स अनुराग	८. अनुराग भरी
अच्युतम्	१. श्रीकृष्ण का	स्मितम्	९. मुसकराहट से युक्त
वीराः	६. वीर पाण्डव	वक्त्रम्	१०. मुख को
अङ्ग-सङ्ग	३. उनके अङ्गों के सङ्ग से	वीक्ष्य	११. देखकर
हत	४. विनष्ट	तस्य	७. उनकी
एनसः ।	५. पाप वाले	मुदम् ययुः ॥	१२. आनन्द को प्राप्त हुये

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण का आलिंगन करके उनके अङ्गों के सङ्ग से विनष्ट पाप वाले वीर पाण्डव उनकी अनुराग भरी मुसकराहट से युक्त मुख को देखकर आनन्द को प्राप्त हुये ॥

चतुर्थः श्लोकः

युधिष्ठिरस्य भीमस्य कृत्वा पादाभिवन्दनम् ।
फाल्गुनं परिरभ्याथ यमाभ्यां चाभिवन्दितः ॥४॥

पदच्छेद— युधिष्ठिरस्य भीमस्य कृत्वा पाद अभिवन्दनम् ।
फाल्गुनम् परिरभ्य अथ यमाभ्याम् च अभिवन्दितः ॥

शब्दार्थ—

युधिष्ठिरस्य	१. श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर	फाल्गुनम्	६. अर्जुन का
भीमस्य	२. और भीमसेन के	परिरभ्यअथ	७. आलिङ्गन किया
कृत्वा	५. करके	यमाभ्याम्	९. नकुल-सहदेव ने
पाद	३. चरणों में	च	८. और
अभिवन्दनम् ।	४. प्रणाम	अभिवन्दितः ॥	१०. उनकी वन्दना की

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर और भीमसेन के चरणों में प्रणाम करके अर्जुन का आलिंगन किया और नकुल-सहदेव ने उनकी वन्दना की ॥

पञ्चमः श्लोकः

परमासन आसीनं कृष्णा कृष्णमनिन्दिता ।
नवोढा व्रीडिता किञ्चिच्छनैरेत्याभ्यवन्दत ॥५॥

पदच्छेद— परमासने आसीनम् कृष्णा कृष्णम् अनिन्दिता ।
नवोढा व्रीडिता किञ्चित् शनैः एत्य अभ्यवन्दत ॥

शब्दार्थ—

परमासन	७. श्रेष्ठ आसन पर	नवोढा	३. नवविवाहिता होने के कारण
आसीनम्	८. बैठे हुये	व्रीडिता	५. लजाती हुई
कृष्णा	२. द्रौपदी ने	किञ्चित्	४. कुछ
कृष्णम्	९. श्रीकृष्ण को	शनैः एत्य	६. धीरे-धीरे आकर
अनिन्दिता ।	१. अति सुन्दरी	अभ्यवन्दत ॥	१० प्रणाम किया

श्लोकार्थ—अति सुन्दरी द्रौपदी ने नवविवाहिता होने के कारण कुछ लजाती हुई धीरे-धीरे आकर श्रेष्ठ आसन पर बैठे हुये श्रीकृष्ण को प्रणाम किया ॥

षष्ठः श्लोकः

तथैव सात्यकिः पार्थैः पूजितश्चाभिवन्दितः ।
निषसादासनेऽन्ये च पूजिताः पर्युपासत ॥६॥

पदच्छेद— तथैव सात्यकिः पार्थैः पूजितः च अभिवन्दितः ।
निषसाद आसने अन्ये च पूजिताः परि उपासत ॥

शब्दार्थ—

तथैव	१. उसी प्रकार	निषसाद	८. बैठ गये
सात्यकिः	३. सात्यकि का	आसने	७. एक आसन पर
पार्थैः	२. पाण्डवों ने	अन्ये च	९. दूसरे यदुवंशी भी
पूजितः	४. पूजन	पूजिताः	१०. सत्कृत होने पर
च	५. और	परि	११. चारों ओर
अभिवन्दितः ।	६. अभिवन्दन किया (वे)	उपासत ॥	१२. बैठे गये.

श्लोकार्थ—उसी प्रकार पाण्डवों ने सात्यकि का पूजन और अभिवन्दन किया । वे एक आसन पर बैठ गये । दूसरे यदुवंशी भी सत्कृत होने पर चारों ओर बैठ गये ॥

सप्तमः श्लोकः

पृथां समागत्य कृताभिवादनस्तयातिहार्दार्द्रदृशाभिरम्भितः ।

आपृष्टवांस्तां कुशलं सहस्नुषां पितृष्वसारं परिपृष्टबान्धवः ॥७॥

पदच्छेद— पृथाम् समागत्य कृत अभिवादनः तया अतिहार्द आर्द्रदृशा अभिरम्भितः ।
आपृष्टवान् ताम् कुशलम् सहस्नुषाम् पितृष्वसारम् परिपृष्ट बान्धवः ॥

शब्दार्थ—

पृथाम्	१.	इसके बाद कुन्ती के पास	आपृष्टवान्	१५.	पूछा
समागत्य	२.	जाकर	ताम्	१३.	उनका
कृत	४.	किया	कुशलम्	१४.	कुशल
अभिवादनः	३.	प्रणाम	सहस्नुषाम्	१२.	पतोहू द्रौपदी सहित
तया	५.	उन्होंने	पितृष्वसारम्	११.	फुआ से
अतिहार्द	६.	अत्यन्त स्नेह वश	परिपृष्ट	१०.	पूछा (श्रीकृष्ण ने भी)
आर्द्रदृशा	७.	गीली आँखों से (श्रीकृष्णका)	बान्धवः ॥	९.	बन्धुओं का कुशल मङ्गल
अभिरम्भितः ।	८.	आलिंगन किया (और)			

श्लोकार्थ—इसके बाद कुन्ती के पास जाकर प्रणाम किया । उन्होंने अत्यन्त स्नेह वश गीली आँखों से श्रीकृष्ण का आलिङ्गिन न किया उत्तर बन्धुओं का कुशल मङ्गल पूछा । श्रीकृष्ण ने भी फुआ से पतोहू द्रौपदी सहित उनका कुछल पूछा ॥

अष्टमः श्लोकः

तमाह प्रेमवैक्लव्यरुद्धकण्ठाश्रुलोचना ।

स्मरन्ती तान् बहून् क्लेशान् क्लेशापायात्मदर्शनम् ॥८॥

पदच्छेद— तम् आह प्रेम वैक्लव्य रुद्धकण्ठा अश्रु लोचना ।
स्मरन्ती तान् बहून् क्लेशान् क्लेशअपाय आत्मदर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	११.	उन भगवान् से	स्मरन्ती	८.	स्मरण करती हुई (कुन्ती)
आह	१२.	बोली	तान्	५.	उन
प्रेम	१.	स्नेह की	बहून्	६.	बहुत से
वैक्लव्य	२.	विह्वलता से	क्लेशान्	७.	क्लेशों का
रुद्धकण्ठा	३.	रुंधे हुये गले से	क्लेशअपाय	१०.	क्लेशों को मिटाने वाले
अश्रु लोचना ।	४.	डबडबाई आँखों वाली	आत्मदर्शनम् ॥	९.	अपने दर्शन से

श्लोकार्थ—स्नेह की विह्वलता से रुंधे हुये गले से डबडबाई आँखों वाली उन बहुत से क्लेशों का स्मरण करती हुई कुन्ती अपने दर्शन से क्लेशों को मिटाने वाले उन भगवान् से बोलीं ॥

नवमः श्लोकः

तदैव कुशलं नोऽभूत् सनाथास्ते कृता वयम् ।
ज्ञातीन् नः स्मरता कृष्ण भ्राता मे प्रेषितस्त्वया ॥९॥

पदच्छेद— तदैव कुशलम् नः अभूत् सनाथाः ते कृताः वयम् ।
ज्ञातीन् नः स्मरता कृष्ण भ्राता मे प्रेषितः त्वया ॥

शब्दार्थ—

तदैव	७.	उसी समय	ज्ञातीन् नः	२.	हमारे सम्बन्धियों को
कुशलम् नः	८.	हमारा कल्याण	स्मरता	३.	स्मरण करते हुये
अभूत्	९.	हो गया	कृष्ण	१.	हे कृष्ण ! जब
सनाथाः ते	११.	उसने सनाथ	भ्राता मे	५.	मेरे भाई अक्रूर को
कृताः	१२.	कर दिया	प्रेषितः	६.	भेजा
वयम् ।	१०.	हमें	त्वया ॥	४.	तुमने

श्लोकार्थ—हे कृष्ण ! जब हम सम्बन्धियों का स्मरण करते हुये तुमने मेरे भाई अक्रूर को भेजा, उसी समय हमारा कल्याण हो गया, हमें तुमने सनाथ कर दिया ॥

दशमः श्लोकः

न तेऽस्ति स्वपरभ्रान्तिर्विश्वस्य सुहृदात्मनः ।
तथापि स्मरतां शश्वत् क्लेशान् हंसि हृदि स्थितः ॥१०॥

पदच्छेद— न ते अस्ति स्वपर भ्रान्तिः विश्वस्य सुहृद् आत्मनः ।
तथापि स्मरताम् शश्वत् क्लेशान् हंसि हृदि स्थितः ॥

शब्दार्थ—

न	६.	नहीं	तथापि	८.	तो भी
ते	३.	स्वामी उम्हें	स्मरताम्	१०.	स्मरण करने वालों के
अस्ति	७.	है	शश्वत्	९.	सदा
स्वपर	४.	अपने और पराये का	क्लेशान्	१३.	क्लेशों को
भ्रान्तिः	५.	भ्रम	हंसि	१४.	मिटा देते हैं
विश्वस्य	१.	हे संसार के !	हृदय	११.	हृदय में
सुहृद् आत्मनः ।	२.	मित्र एवं आतमस्वरूप	स्थितः ॥	१२.	स्थित होकर

श्लोकार्थ—हे संसार के मित्र ! एवं आत्म स्वरूप स्वामी ! तुम्हें अपने और पराये का भ्रम नहीं है । तो भी सदा स्मरण करने वालों के हृदय में स्थित होकर क्लेशों को मिटा देते हो ॥

एकादशः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच— किं न आचरितं श्रेयो न वेदाहमधीश्वर ।
योगेश्वराणां दुर्दर्शो यन्नो दृष्टः कुमेधसाम् ॥११॥

पदच्छेद— किम् नः आचरितम् श्रेयः न वेद अहम् अधीश्वर ।
योगेश्वराणाम् दुर्दर्शः यत् नः दृष्टः कुमेधसाम् ॥

शब्दार्थ—

किम् नः	२.	हमारा कौन सा	योगेश्वराणाम्	८.	योगेश्वरों को भी
आचरितम्	४.	साधन	दुर्दर्शः	९.	कठिनाई से दिखाई पड़ने वाले
श्रेयः	३.	कल्याणकारी	यत्	७.	क्योंकि
न वेद	६.	नहीं जानती हूँ	नः	१०.	हम
अहम्	५.	यह मैं	दृष्टः	१२.	दिखलाई पड़े हो
अधीश्वर ।	१.	हे सर्वेश्वर !	कुमेधसाम् ॥	११.	कुबुद्धियों को (आप)

श्लोकार्थ—हे सर्वेश्वर ! हमारा कौन सा कल्याणकारी साधन है, यह मैं नहीं जानती हूँ । क्योंकि योगेश्वरों को भी कठिनाई से दिखाई पड़ने वाले, हम कुबुद्धियों को आप दिखाई पड़े हो ॥

द्वादशः श्लोकः

इति वै वार्षिकान् मासान् राज्ञा सोऽभ्यर्थितः सुखम् ।
जनयन् नयनानन्दमिन्द्रप्रस्थौकसां विभुः ॥१२॥

पदच्छेद— इति वै वार्षिकान् मासान् राज्ञा सः अभ्यर्थितः सुखम् ।
जनयन् नयनानन्दम् इन्द्रप्रस्थ ओकसाम् विभुः ॥

शब्दार्थ—

इति वै	१	इस प्रकार	जनयन्	८.	देते हुये
वार्षिकान्	९.	बरसात के	नयनानन्दम्	७.	नेत्रों का आनन्द
मासान्	१०.	चार महीनों तक	इन्द्रप्रस्थ	५.	इन्द्रप्रस्थ के
राज्ञा	२.	राजा युधिष्ठिर के	ओकसाम्	६.	निवासियों को
सः अभ्यर्थितः	३.	प्रार्थना करने पर वे	विभुः ॥	४.	भगवान् श्रीकृष्ण
सुखम् ।	११.	सुख पूर्वक (वहीं रहे)			

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा युधिष्ठिर के प्रार्थना करने पर वे भगवान् श्रीकृष्ण इन्द्रप्रस्थ के निवासियों को नेत्रों का आनन्द देते हुये बरसात के चार महीनों तक सुख पूर्वक वहीं पर रहे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

एकदा रथमारुह्य विजयो वानरध्वजम् ।
गाण्डीवं धनुरादाय तूणौ चाक्षयसायकौ ॥१३॥

पदच्छेद— एकदा रथम् आरुह्य विजयः वानर ध्वजम् ।
गाण्डीवम् धनुः आदाय तूणौ च अक्षय सायकौ ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१. एक बार	गाण्डीवम्	२. गाण्डीव नामक
रथम्	११. रथ पर	धनुः	३. धनुष
आरुह्य	१२. चढ़कर (प्रस्थान किया)	आदाय	७. लेकर
विजयः	८. अर्जुन ने	तूणौ	६. दो तरकश
वानर	९. वानर के चिह्न की	च	४. तथा
ध्वजम् ।	१०. ध्वजा वाले	अक्षय सायकौ ॥	५. अक्षय बाण वाले

श्लोकार्थ—एक बार गाण्डीव नामक धनुष लेकर तथा अक्षय बाण वाले दो तरकश लेकर अर्जुन ने वानर चिह्न की ध्वजा वाले रथ पर चढ़कर प्रस्थान किया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

साकं कृष्णेन सन्नद्धो विहर्तुं विपिनं वनम् ।
बहुव्यालमृगाकीर्णं प्राविशत् परवीरहा ॥१४॥

पदच्छेद— साकम् कृष्णेन सन्नद्धः विहर्तुम् विपिनम् वनम् ।
बहु व्यालमृग आकीर्णम् प्राविशत् पर वीरहा ॥

शब्दार्थ—

साकम्	४. साथ	बहु	६. बहुत से
कृष्णेन	३. श्रीकृष्ण के	व्यालमृग	७. सर्पों और पशुओं से
सन्नद्धः	५. कवच पहन कर	आकीर्णम्	८. भरे हुये
विहर्तुम्	११. शिकार के लिये	प्राविशत्	१२. प्रवेश किया
विपिनम्	९. घने	पर	१. शत्रु
वनम् ।	१०. वन में	वीरहा ॥	२. वीरों को मारने वाले (अर्जुन ने)

श्लोकार्थ—शत्रु वीरों को मारने वाले अर्जुन ने श्रीकृष्ण के साथ कवच पहन कर बहुत से सर्पों और पशुओं से भरे हुये घने वन में शिकार के लिये प्रवेश किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रान् सूकरान् महिषान् रुरून् ।
शरभान् गवयान् खड्गान् हरिणाञ्छशशल्लकान् ॥१५॥

पदच्छेद— तत्र अविध्यत् शरैः व्याघ्रान् शूकरान् महिषान् रुरून् ।
शरभान् गवयान् खगड़ान् हरिणान् शश शल्लकान् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर उन्होंने	शरभान्	६.	शरभों
अविध्यत	१२.	बेध दिया	गवयान्	७.	गवयों (बड़े हिरन)
शरैः	२.	बाणों से	खड्गान्	८.	गैंड़ों
व्याघ्रान्	३.	बाघों	हरिणान्	९.	हिरणों
शूकरान्	४.	सूकरों	शश	१०.	खरगोशों तथा
महिषान् रुरून् ।	५.	भैंसों और काले हरिणों को	शल्लकान् ॥	११.	साहियों को

श्लोकार्थ— वहाँ पर उन्होंने बाणों से बाघों, सूकरों, भैंसों और काले हरिणों को शरभों, गवयों (बड़े हिरन), गैंड़ों, हिरणों, खरगोशों तथा साहियों को बेध दिया ॥

षोडशः श्लोकः

तान् निन्युः किङ्करा राज्ञे मेध्यान् पर्वण्युपागते ।
तृट्परीतः परिश्रान्तो बीभत्सुर्यमुनामगात् ॥१६॥

पदच्छेद— तान् निन्युः किङ्कराः राज्ञे मेध्यान् पर्वणि उपागते ।
तृट् परीतः परिश्रान्तः बीभत्सुः यमुनाम् अगात् ॥

शब्दार्थ—

तान्	३.	उनमें से	उपागते ।	२.	आ जाने पर
निन्युः	७.	ले गये और	तृट् परीतः	८.	प्यासे एवम्
किङ्कराः	५.	सेवक गण	परिश्रान्तः	९.	थके
राज्ञे	६.	राजा युधिष्ठिर के पास	बीभत्सुः	१०.	अर्जुन
मेध्यान्	४.	पवित्र पशुओं को	यमुनाम्	११.	यमुना के किनारे
पर्वणि	१.	पर्व	अगात् ॥	१२.	गये

श्लोकार्थ— पर्व आने पर उनमें से पवित्र पशुओं को सेवक गण राजा युधिष्ठिर के पास ले गये । और प्यासे एवम् थके अर्जुन यमुना के किनारे गये ॥

सप्तदशः श्लोकः

तत्रोपस्पृश्य विशदं पीत्वा वारि महारथौ ।
कृष्णौ ददृशतुः कन्यां चरन्तीं चारुदर्शनाम् ॥१७॥

पदच्छेद— तत्र उपस्पृश्य विशदम् पीत्वा वारि महारथौ ।
कृष्णौ ददृशतुः कन्याम् चरन्तीम् चारु दर्शनाम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. वहाँ	कृष्णौ	७. श्रीकृष्ण और अर्जुन ने
उपस्पृश्य	२. आचमन करके	ददृशतुः	१२. देखा
विशदम्	३. स्वच्छ	कन्याम्	१०. एक कन्या को
पीत्वा	५. पीकर	चरन्तीम्	११. तप करते हुये
वारि	४. जल	चारु	८. सुन्दर
महारथौ ।	६. दोनों महारथी	दर्शनाम् ॥	९. दीखने वाली

श्लोकार्थ—वहाँ आचमन करके स्वच्छ जल पीकर दोनों महारथी श्रीकृष्ण और अर्जुन ने सुन्दर दीखने वाली एक कन्या को तप करते हुये देखा ॥

अष्टादशः श्लोकः

तामासाद्य वरारोहां सुद्विजां रुचिराननाम् ।
पप्रच्छ प्रेषितः सख्या फाल्गुनः प्रमदोत्तमाम् ॥१८॥

पदच्छेद— ताम् आसाद्य वरारोहाम् सुद्विजाम् रुचिर आननाम् ।
पप्रच्छ प्रेषितः सख्या फाल्गुनः प्रमदा उत्तमाम् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	११. उससे	पप्रच्छ	१२. पूछा
आसाद्य	१०. पहुँचकर	प्रेषितः	२. भेजे गये
वरारोहा	९. सुन्दरी के पास	सख्या	१. मित्र श्रीकृष्ण के द्वारा
सुद्विजाम्	४. सुन्दर दाँतों वाली	फाल्गुनः	३. अर्जुन ने
रुचिर	५. सुन्दर	प्रमदा	७. स्त्रियों में
आननाम् ।	६. मुख वाली और	उत्तमाम् ॥	८. श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—मित्र श्रीकृष्ण के द्वारा भेजे गये अर्जुन ने सुन्दर दाँतों वाली, सुन्दर मुख वाली और स्त्रियों में श्रेष्ठ सुन्दरी के पास पहुँचकर उससे पूछा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

का त्वं कस्यासि सुश्रोणि कुतोऽसि किं चिकीर्षसि ।
मन्ये त्वां पतिमिच्छन्तीं सर्वं कथय शोभने ॥१९॥

पदच्छेद— का त्वम् कस्य असि सुश्रोणि कुतः असि किम् चिकीर्षसि ।
मन्ये त्वाम् पतिम् इच्छन्तीम् सर्वम् कथय शोभने ॥

शब्दार्थ—

का त्वम्	२. तुम कौन हो	मन्ये	९. मानता हूँ
कस्यअसि	३. किसकी कन्या हो	त्वाम् पतिम्	७. मैं तुम्हें पति की
सुश्रोणि	१. सुन्दर नितम्बों वाली	इच्छन्तीम्	८. इच्छा वाली
कुतः असि	४. कहाँ से आयी हो	सर्वम्	११. सब बातें
किम्	५. क्या	कथय	१२. बताओ
चिकीर्षसि ।	६. करना चाहती हो	शोभने ॥	१०. हे सुन्दरी !

श्लोकार्थ—सुन्दर नितम्बों वाली तुम कौन हो, किसकी कन्या हो, कहाँ से आयी हो, क्या करना चाहती हो। मैं तुम्हें पति की इच्छा वाली मानता हूँ। हे सुन्दरी ! सब बातें बताओ ॥

विंशः श्लोकः

कालिन्द्युवाच—अहं देवस्य सवितुर्दुहिता पतिमिच्छती ।
विष्णुं वरेण्यं वरदं तपः परममास्थिता ॥२०॥

पदच्छेद— अहम् देवस्य सवितुः दुहिता पतिम् इच्छती ।
विष्णुम् वरेण्यम् वरदम् तपः परमम् आस्थिता ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१. मैं	विष्णुम्	७. विष्णु को
देवस्य	३. देव की	वरेण्यम्	५. श्रेष्ठ एवं
सवितुः	२. सूर्य	वरदम्	६. वरदायक
दुहिता	४. पुत्री हूँ और	तपः	११. तपस्या
पतिम्	८. पति के रूप में	परमम्	१०. कठोर
इच्छति ।	९. चाहती हूँ (इसलिये)	आस्थिता ॥	१२. कर रही हूँ

श्लोकार्थ—मैं सूर्यदेव की पुत्री हूँ। वरदायक, श्रेष्ठ एवं विष्णु को पति के रूप में चाहती हूँ। इसलिये कठोर तपस्या कर रही हूँ ॥

एकविंशः श्लोकः

नान्यं पतिं वृणे वीर तमृते श्रीनिकेतनम् ।
तुष्यतां मे स भगवान् मुकुन्दोऽनाथसंश्रयः ॥२१॥

पदच्छेद— न अन्यम् पतिम् वृणे वीर तम् ऋते श्रीनिकेतनम् ।
तुष्यताम् मे सः भगवान् मुकुन्दः अनाथ संश्रयः ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं कर सकती	तुष्यताम्	१२. प्रसन्न हों
अन्यम्	४. दूसरे	मे	११. मुझ पर
पतिम् वृणे	५. पति का वरण	सः भगवान्	९. वे भगवान्
वीर तम्	१. हे वीर ! मैं उन भगवान् को	मुकुन्दः	१०. श्रीकृष्ण
ऋते	३. छोड़ कर	अनाथ	७. अनाथों के
श्रीनिकेतनम् ।	२. लक्ष्मी के आश्रय	संश्रयः ॥	८. आश्रय

श्लोकार्थ—हे वीर ! मैं लक्ष्मी के आश्रय उन भगवान् को छोड़ कर दूसरे पति का वरण नहीं कर सकती हूँ । अनाथों के आश्रय वे भगवान् श्रीकृष्ण मुझ पर प्रसन्न हों ॥

द्वाविंशः श्लोकः

कालिन्दीति समाख्याता वसामि यमुनाजले ।
निर्मिते भवने पित्रा यावदच्युतदर्शनम् ॥२२॥

पदच्छेद— कालिन्दी इति समाख्याता वसामि यमुना जले ।
निर्मिते भवने पित्रा यावत् अच्युत दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

कालिन्दी	१. कालिन्दी	निर्मिते	७. बनाये गये
इति	२. यह (मेरा)	भवने	८. भवन में
समाख्याता	३. नाम है	पित्रा	६. पिता जी के द्वारा
वसामि	९. मैं रहती हूँ	यावत्	१०. जब-तक
यमुना	४. यमुना के	अच्युत	११. भगवान् का
जले ।	५. जल में	दर्शनम् ॥	१२. दर्शन नहीं होगा (यहीं रहूँगी)

श्लोकार्थ—कालिन्दी यह मेरा नाम है । यमुना के जल में पिता जी के द्वारा बनाये भवन में मैं रहती हूँ । जब-तक भगवान् का दर्शन नहीं होगा यहीं रहूँगी ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तथावदत् गुडाकेशो वासुदेवाय सोऽपि ताम् ।
रथमारोप्य तद् विद्वान् धर्मराजमुपागमत् ॥२३॥

पदच्छेद— तथा अवदत् गुडाकेशः वासुदेवाय सः अपि ताम् ।
रथम् आरोप्य तत् विद्वान् धर्मराजम् उपागमत् ॥

शब्दार्थ—

तथा	५. सारी बातें	रथम्	१०. रथ पर
अवदत्	६. कह दी	आरोप्य	११. बैठा कर
गुडाकेशः	२. अर्जुन ने	तत्	७. उसको
वासुदेवाय	४. श्रीकृष्ण से	विद्वान्	८. जानने वाले श्रीकृष्ण
सः	१. उन	धर्मराजम्	१२. युधिष्ठिर के
अपि	३. भी	उपागमत् ॥	१३. पास चले गये
ताम् ।	९. उसको		

श्लोकार्थ—उन अर्जुन ने भी श्रीकृष्ण से सारी बातें कह दीं । उसके जानने वाले श्रीकृष्ण उस कालिन्दी को रथ पर बैठा कर युधिष्ठिर के पास चले गये ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

यदैव कृष्णः सन्दिष्टः पार्थानां परमाद्भुतम् ।
कारयामास नगरं विचित्रं विश्वकर्मणा ॥२४॥

पदच्छेद— यदा एव कृष्णः सन्दिष्टः पार्थानाम् परम अद्भुतम् ।
कारयामास नगरम् विचित्रम् विश्व कर्मणा ॥

शब्दार्थ—

यदा एव	१. जब	कारयामास	११. बनवा दिया
कृष्णः	२. श्रीकृष्ण से	नगरम्	८. नगर
सन्दिष्टः	३. निवेदन किया (तब उन्होंने)	विचित्रम्	७. और विचित्र
पार्थानाम्	४. पाण्डवों के लिये	विश्व	९. विश्व
परम	५. एक अत्यन्त	कर्मणा ॥	१०. कर्मा के द्वारा
अद्भुतम् ।	६. अद्भुत		

श्लोकार्थ—जब श्रीकृष्ण से निवेदन किया । तब उन्होंने पाण्डवों के लिये एक अत्यन्त अद्भुत और विचित्र नगर विश्वकर्मा द्वारा बनवा दिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

भगवांस्तत्र निवसन् स्वानां प्रियचिकीर्षया ।
अग्नये खाण्डवं दातुमर्जुनस्यास सारथिः ॥२५॥

पदच्छेद— भगवान् तत्र निवसन् स्वानाम् प्रिय चिकीर्षया ।
अग्नये खाण्डवम् दातुम् अर्जुनस्य आस सारथिः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	३. भगवान्	अग्नये	७. अग्निदेव को
तत्र	१. वहाँ	खाण्डवम्	८. खाण्डव वन
निवसन्	२. निवास करते हुये	दातुम्	९. देने के लिये
स्वानाम्	४. आत्मीय जनों का	अर्जुनस्य	१०. अर्जुन के
प्रिय	५. हित	आस	१२. बने
चिकीर्षया ।	६. करने की इच्छा से	सारथिः ॥	११. सारथी

श्लोकार्थ—वहाँ निवास करते हुये भगवान् आत्मीय जनों का हित करने की इच्छा से और अग्निदेव को खाण्डव वन देने के लिये अर्जुन के सारथी बने ॥

षड्विंशः श्लोकः

सोऽग्निस्तुष्टो धनुरदाद्धयाञ्छ्वेतान् रथं नृप ।
अर्जुनायाक्षयौ तूणौ वर्म चाभेद्यमस्त्रिभिः ॥२६॥

पदच्छेद— सः अग्निः तुष्टः धनुः अदात् हयान् श्वेतान् रथम् नृप ।
अर्जुनाय अक्षयौ तूणौ वर्म च अभेद्यम् अस्त्रिभिः ॥

शब्दार्थ—

सः अग्निः	३. उन अग्निदेव ने	अर्जुनाय	४. अर्जुन को
तुष्टः	२. सन्तुष्ट हुये	अक्षयौ	८. दो अक्षय
धनुः	५. धनुष	तूणौ	९. तरकस
अदात्	१४. दिये	वर्म	१३. कवच
हयान् श्वेतान्	६. उजले घोड़े	च	१०. और
रथम्	७. रथ	अभेद्यम्	१२. न भेदन करने योग्य
नृप ।	१. हे राजन् !	अस्त्रिभिः ॥	११. अस्त्र धारियों द्वारा

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सन्तुष्ट हुये उन अग्निदेव ने अर्जुन को उजले धनुष, घोड़े, रथ, दो अक्षय तरकस और अस्त्र धारियों द्वारा न भेद न करने योग्य कवच दिये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मयश्च मोचितो वह्नेः सभां सख्य उपाहरत् ।
यस्मिन् दुर्योधनस्यासीज्जलस्थलदृशिभ्रमः ॥२७॥

पदच्छेद— मयः च मोचितः वह्नेः सभाम् सख्ये उपाहरत् ।
यस्मिन् दुर्योधनस्य आसीत् जल-स्थल दृशिभ्रमः ॥

शब्दार्थ—

मयः	२. मय दानव को	यस्मिन्	८. जहाँ पर
च	१. और अर्जुन ने	दुर्योधनस्य	९. दुर्योधन को
मोचितः	४. बचा लिया था (उसने)	आसीत्	१४. हो गया था
वह्नेः	३. अग्नि से	जल	१०. जल और
सभाम्	६. एक सभा भवन	स्थल	११. स्थल में
सख्ये	५. मित्र अर्जुन के लिये	दृशि	१२. दृष्टि का
उपाहरत् ।	७. बना दिया	भ्रमः ॥	१३. भ्रम

श्लोकार्थ—और अर्जुन ने मय दानव को अग्नि से बचा लिया था। उसने मित्र अर्जुन के लिये एक सभा भवन बना दिया। जहाँ पर दुर्योधन को जल में, स्थल और स्थल में जल का भ्रम हो गया था ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

स तेन समनुज्ञातः सुहृद्भिश्चानुमोदितः ।
आययौ द्वारकां भूयः सात्यकिप्रमुखैर्वृतः ॥२८॥

पदच्छेद— सः तेन सम् अनुज्ञातः सुहृद्भिः च अनुमोदितः ।
आययौ द्वारकाम् भूयः सात्यकि प्रमुखैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वे भगवान् श्रीकृष्ण	आययौ	१२. लौट आये
तेन	२. उन अर्जुन से	द्वारकाम्	११. द्वारका में
सम्‌अनुज्ञातः	३. अनुमति	भूयः	१०. पुनः
सुहृद्भिः	५. सम्बन्धियों से	सात्यकि	७. सात्यकि
च	४. और	प्रमुखैः	८. आदि के
अनुमोदितः ।	६. अनुमोदन पाकर	वृतः ॥	९. साथ

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण उन अर्जुन से अनुमति और सम्बन्धियों से अनुमोदन पाकर सात्यकि आदि के साथ पुनः द्वारका में लौट आये ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अथोपयेमे कालिन्दीं सुपुण्यर्त्वृक्ष ऊर्जिते ।
वितन्वन् परमानन्दं स्वानां परममङ्गलम् ॥२९॥

पदच्छेद— अथ उपयेमे कालिन्दीम् सुपुण्य ऋतु ऋक्षे ऊर्जिते ।
वितन्वन् परमानन्दम् स्वानाम् परम मङ्गलम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने	वितन्वन्	६. विस्तार करते हुये
उपयेमे	११. विवाह कर लिया	परमानन्दम्	३. परम आनन्द तथा
कालिन्दीम्	१०. कालिन्दी से	स्वानाम्	२. स्वजन सम्बन्धियों के
सुपुण्य	७. पवित्र	परम	४. परम
ऋतु ऋक्षे	८. ऋतु और लग्न में	मङ्गलम् ॥	५. मङ्गल का
ऊर्जिते ।	९. शोभित काल में		

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वजन सम्बन्धियों के परम आनन्द तथा परम मङ्गल का विस्तार करते हुये पवित्र ऋतु और लग्न में शोभित काल में कालिन्दी से विवाह किया ॥

त्रिंशः श्लोकः

विन्दानुविन्दावावन्त्यौ दुर्योधनवशानुगौ ।
स्वयंवरे स्वभगिनीं कृष्णे सक्तां न्यषेधताम् ॥३०॥

पदच्छेद— विन्द अनुविन्दौ आवन्त्यौ दुर्योधन वश अनुगौ ।
स्वयंवरे स्वभगिनीं कृष्णे सक्ताम् न्यषेधताम् ॥

शब्दार्थ—

विन्द	५. विन्द और	स्वयंवरे	७. स्वयंवर में
अनुविन्द	६. अनुविन्द ने	स्वभगिनीं	१०. अपनी बहन को
आवन्त्यौ	४. अवन्ती (उज्जैन) के रहने वाले	कृष्णे	८. श्रीकृष्ण के प्रति
दुर्योधन	१. दुर्योधन के	सक्ताम्	९. आसक्त
वश	२. वशवर्ती और	न्यषेधताम् ॥	११. रोक दिया
अनुगौ ।	३. अनुयायी		

श्लोकार्थ—दुर्योधन के वशवर्ती और अनुयायी अवन्ती (उज्जैन) के रहने वाले विन्द और अनुविन्द ने स्वयंवर में श्रीकृष्ण के प्रति आसक्त अपनी बहन को रोक दिया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

राजाधिदेव्यास्तनयां मित्रविन्दां पितृष्वसुः ।

प्रसह्य हृतवान् कृष्णो राजन् राज्ञां प्रपश्यताम् ॥३१॥

पदच्छेद— राजाधिदेव्याः तनयाम् मित्रविन्दाम् पितृष्वसुः ।
प्रसह्य हृतवान् कृष्णः राजन् राज्ञाम् प्रपश्यताम् ॥

शब्दार्थ—

राजाधिदेव्याः	४.	राजाधिदेवी की	हृतवान्	१०.	हर ले गये
तनयाम्	५.	कन्या	कृष्णः	२.	श्रीकृष्ण
मित्रविन्दाम्	६.	मित्रविन्दा को	राजन्	१.	हे राजन्
पितृष्वसुः ।	३.	अपनी फुआ	राज्ञाम्	७.	राजाओं के
प्रसह्य	९.	बल पूर्वक	प्रपश्यताम् ॥	८.	देखते-देखते

श्लोकार्थ—हे राजन् ! श्रीकृष्ण अपनी फुआ राजाधिदेवी की कन्या मित्रविन्दा को राजाओं के देखते-देखते बलपूर्वक हर ले गये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

नग्नजिन्नाम कौसल्य आसीद् राजातिधार्मिकः ।

तस्य सत्याभवत् कन्या देवी नाग्नजिती नृप ॥३२॥

पदच्छेद— नग्नजित् नाम कौसल्यः आसीत् राजा अति धार्मिकः ।
तस्य सत्या अभवत् कन्या देवी नाग्नजिती नृप ॥

शब्दार्थ—

नग्नजित्	३.	नग्नजित्	तस्य	९.	उसकी
नाम	४.	नामक	सत्या	१०.	सत्या (एवम्)
कौसल्यः	२.	कोसल देश का	अभवत्	१४.	थी
आसीत्	८.	था	कन्या	१३.	एक कन्या
राजा	७.	राजा	देवी	१२.	सुन्दरी
अति	५.	अत्यन्त	नाग्नजिती	११.	नाग्नजिती नाम की
धार्मिकः ।	६.	धार्मिक	नृप ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! कौसल देश का नग्नजित् नामक अत्यन्त धार्मिक राजा था । उसकी सत्या एवं नाग्नजिती नाम की एक सुन्दरी कन्या थी ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

न तां शेकुर्नृपा वोढुमजित्वा सप्त गोवृषान् ।
तीक्ष्णशृङ्गान् सुदुर्धर्षान् वीरगन्धासहान् खलान् ॥३३॥

पदच्छेद— न ताम् शेकुः नृपाः वोढुम् अजित्वा सप्तगोवृषान् ।
तीक्ष्ण शृङ्गान् सुदुर्धर्षान् वीर गन्ध असहान् खलान् ॥

शब्दार्थ—

न	१३.	नहीं कर	तीक्ष्ण	१.	तीखे
ताम्	११.	उस सत्या से	शृङ्गान्	२.	सींगों वाले
शेकुः	१४.	सके	सुदुर्धर्षान्	४.	दुर्दान्त
नृपाः	१०.	राजा लोग	वीर	५.	वीरों की
वोढुम्	१२.	विवाह	गन्ध	६.	गन्ध भी
अजित्वा	९.	न जीत सकने के कारण	असहान्	७.	सहन न करने वाले
सप्तगोवृषान् ।	८.	सात बैलों को	खलान् ॥	३.	दुष्ट

श्लोकार्थ—तीखे सींगों वाले दुष्ट दुर्दान्त वीरों की गन्ध भी सहन न करने वाले सात बैलों को न जीत सकने के कारण राजा लोग उस सत्या से विवाह नहीं कर सके ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तां श्रुत्वा वृषजिल्लभ्यां भगवान् सात्वतां पतिः ।
जगाम कौसल्यपुरं सैन्येन महता वृतः ॥३४॥

पदच्छेद— ताम् श्रुत्वा वृषजित् लभ्याम् भगवान् सात्वताम् पतिः ।
जगाम कौसल्य पुरम् सैन्येन महता वृतः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	३.	उस सत्या के बारे में	जगाम	१२.	पहुँचे
श्रुत्वा	४.	सुनकर	कौसल्य	१०.	कौसल्यपुर
वृषजित्	१.	बैलों को जीतने वाले के द्वारा	पुरम्	११.	अयोध्या में
लभ्याम्	२.	प्राप्त करने योग्य	सैन्येन	८.	सेना
भगवान्	६.	श्रीकृष्ण	महता	७.	बहुत बड़ी
सात्वताम् पतिः ।	५.	यदुवंशियों के स्वामी	वृतः ॥	९.	लेकर

श्लोकार्थ—बैलों को जीतने वाले के द्वारा प्राप्त करने योग्य उस सत्या के बारे में सुनकर यदुवंशियों के स्वामी श्रीकृष्ण बहुत बड़ी सेना लेकर कौसल्यपुर अयोध्या में पहुँचे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सः कोसलपतिः प्रीतः प्रत्युत्थानासनादिभिः ।
अर्हणेनापि गुरुणा पूजयन् प्रतिनन्दितः ।।३५।।

पदच्छेद— सः कोसलपतिः प्रीतः प्रति उत्थान आसन आदिभिः ।
अर्हणेन अपि गुरुणा पूजयन् प्रति नन्दितः ।।

शब्दार्थ—

सः	१. उन	अर्हणेन	८. पूजा सामग्री से
कोसलपतिः	२. कोसल नरेश ने	अपि	९. भी उनकी
प्रीतः	३. आनन्दित होकर	गुरुणा	७. बहुत बड़ी
प्रतिउत्थान	४. उनकी अगवानी की	पूजयन्	१०. पूजा की (तब)
आसन	५. और आसन	प्रति	११. श्रीकृष्ण ने उनका
आदिभिः ।	६. आदि देकर	नन्दितः ।।	१२. अभिनन्दन किया

श्लोकार्थ—उन कोसल नरेश ने आनन्दित होकर उनकी अगवानी की और आसन आदि देकर बहुत बड़ी पूजा सामग्री से भी उनकी पूजा की । तब श्रीकृष्ण ने उनका अभिनन्दन किया ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

वरं विलोक्याभिमतं समागतं नरेन्द्रकन्या चकमे रमापतिम् ।
भूयादयं मे पतिराशिषोऽमलाः करोतु सत्या यदि मे धृतो व्रतैः ।।३६।।

पदच्छेद— वरम् विलोक्य अभिमतम् समागतम् नरेन्द्र कन्या चकमे रमापतिम् ।
भूयात् अयम् मे पतिः आशिर्षः अमलाः करोतु सत्याः यदि मे धृतः व्रतैः ।।

शब्दार्थ—

वरम्	२. वर को	भूयात्	१४. होवें (और मेरी)
विलोक्य	४. देखकर	अयम्	१२. यही
अभिमतम्	१. अभीष्ट	मे पतिः	१३. मेरे पति
समागतम्	३. आये हुये	आशिर्षः	१६. लालसाओं को
नरेन्द्र	५. राजा की	अमलाः	१५. विशुद्ध
कन्या	६. कन्या ने	करोतु सत्याः	१७. पूर्ण करें
चकमे	८. अभिलाषा की	यदि मे	९. यदि मैंने
रमापतिम् ।	७. लक्ष्मी पति की	धृतः	११. धारण किया है तो
		व्रतैः ।।	१०. व्रतों के द्वारा(हृदय में)इनको

श्लोकार्थ—अभीष्ट वर को आये हुये देखकर राजा की कन्या ने लक्ष्मी पति को अभिलाषा की । यदि मैंने व्रतों के द्वारा हृदय में इनको धारण किया है तो यही मेरे पति हों । और मेरी विशुद्ध लालसाओं को पूर्ण करें ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

यत्पादपङ्कजरजः शिरसा बिभर्ति श्रीरब्जजः सगिरिशः सहलोकपालैः ।
लीलातनूः स्वकृतसेतुपरीप्सयेशः काले दधत् स भगवान् मम केन तुष्येत् ॥३७॥

पदच्छेद—यत् पाद पङ्कजरजः शिरसा बिभर्ति श्रीः अब्जजः सगिरिशः सहलोक पालैः ।
लीलातनूः स्वकृत सेतु परीप्सया ईशः काले दधत् सः भगवान् मम केन तुष्येत् ॥

शब्दार्थ—

यत्पाद	१.	जिनके चरण	स्वकृत	९.	अपनी बनाई हुई
पङ्कजरजः	२.	कमलों की धूलि को	सेतुपरीप्सया	१०.	मर्यादा का पालन करने के लिये
शिरसा	६.	सिर पर	ईशः	८.	जो प्रभु
बिभर्ति	७.	धारण करते हैं	काले	११.	समय-समय पर
श्रीः अब्जजः	३.	लक्ष्मी और ब्रह्मा	दधत्	१३.	ग्रहण करते हैं
सगिरिशः	४.	शंकर सहित	सः भगवान्	१४.	वे भगवान्
सहलोकपालैः ।	५.	साथ अपने लोक पालों के	मम केन	१५.	मेरे किस व्रत से
लीला तनूः	१२.	लीलावतार	तुष्येत्	१६.	सन्तुष्ट होंगे

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों की धूलि को लक्ष्मी और ब्रह्मा शंकर सहित लोक पालों के साथ सिर पर धारण करते हैं, जो प्रभु अपनी बनाई हुई मर्यादा का पालन करने के लिये समय-समय पर लीलावतार ग्रहण करते हैं, वे भगवान् मेरे किस व्रत से सन्तुष्ट होंगे ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

अर्चितं पुनरित्याह नारायण जगत्पते ।
आत्मानन्देन पूर्णस्य करवाणि किमल्पकः ॥३८॥

पदच्छेद— अर्चितम् पुनः इति आह नारायण जगत्पते ।
आत्म आनन्देन पूर्णस्य करवाणि किम् अल्पकः ॥

शब्दार्थ—

अर्चितम्	२.	पूजित भगवान् से	आत्म	८.	अपने स्वरूप भूत
पुनः	१.	फिर	आनन्देन	९.	आनन्द से
इति	३.	यह	पूर्णस्य	१०.	परिपूर्ण आपकी
आह	४.	कहा	करवाणि	१२.	सेवा करूँ
नारायण	५.	हे नारायण !	किम्	११.	क्या
जगत्पते ।	६.	हे जगत्पते !	अल्पकः ॥	७.	मैं तुच्छ मनुष्य

श्लोकार्थ—फिर पूजित भगवान् से यह कहा हे नारायण ! हे जगत्पते ! मैं तुच्छ मनुष्य अपने स्वरूप भूत आनन्द से परिपूर्ण आपकी क्या सेवा करूँ ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— तमाह भगवान् हृष्टः कृतासनपरिग्रहः ।
मेघगम्भीरया वाचा सस्मितं कुरुनन्दन ॥३९॥

पदच्छेद— तम् आह भगवान् हृष्टः कृत आसन परिग्रहः ।
मेघ गम्भीरया वाचा सस्मितम् कुरु नन्दन ॥

शब्दार्थ—

तम्	११.	उनसे	परिग्रहः ।	३.	ग्रहण
आह	१२	कहा	मेघ	७.	मेघ के
भगवान्	६.	भगवान् ने	गम्भीरया	८.	समान गम्भीर
हृष्टः	५.	प्रसन्न (मन से)	वाचा	९.	वाणी में
कृत	४.	किये हुये	सस्मिता	१०.	मुसकराते हुये
आसन	२.	आसन	कुरुनन्दन ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! आसन ग्रहण किये हुये प्रसन्न मन से भगवान् ने मेघ के समान गम्भीर वाणी से मुसकराते हुये उनसे कहा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—

नरेन्द्र याच्ञा कविभिर्विगर्हिता राजन्यबन्धोर्निजधर्मवर्तिनः ।
तथापि याचे तव सौहृदेच्छया कन्यां त्वदीयां न हि शुल्कदा वयम् ॥४०॥

पदच्छेद— नरेन्द्र याच्ञा कविभिः विगर्हिता राजन्य बन्धोः निजधर्म वर्तिनः ।
तथापि याचे तव सौहृद इच्छया कन्याम् त्वदीयाम् न हि शुल्कदा वयम् ॥

शब्दार्थ—

नरेन्द्र	१.	हे राजन् !	याचे	१३.	चाहता हूँ (किन्तु)
याच्ञा	५.	याचना का	तवसौहृद	९.	आपसे सौहार्द स्थापित करने की
कविभिः	६.	विद्वानों ने	इच्छया	१०.	इच्छा से (मैं)
विर्हगिता	७.	निन्दा की है	कन्याम्	१२.	कन्या
राजन्य	३.	क्षत्रिय	त्वदीयाम्	११.	आपकी
बन्धोः	४.	बन्धु की	न हि	१६.	नहीं हैं
निज मंर्वातनः ।	२.	अपने धर्म पर आरूढ	शुल्कदा	१५.	शुल्क देने वाले
तथापि	८.	तो भी	वयम् ॥	१४.	हम

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अपने धर्म पर आरूढ क्षत्रिय बन्धु की याचना का विद्वानों ने निन्दा की है । तो भी आपसे सौहार्द स्थापित करने की इच्छा से मैं आपकी कन्या चाहता हूँ । किन्तु हम शुल्क देने वाले नहीं हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

राजोवाच— कोऽन्यस्तेऽभ्यधिको नाथ कन्यावर इहेप्सितः ।
गुणैकधाम्नो यस्याङ्गे श्रीर्वसत्यनपायिनी ॥४१॥

पदच्छेद— कः अन्यः ते अभिअधिकः नाथ कन्या वर इह ईप्सितः ।
गुण एक धाम्नः यस्य अङ्गे श्रीः वसति अनपायिनी ॥

शब्दार्थ—

कः अन्यः	७. दूसरा कौन हो सकता है	गुण	८. गुणों के
ते	५. आप से	एक	९. एक मात्र
अभिअधिकः	६. श्रेष्ठ	धाम्नः	१०. धाम
नाथ	१. हे प्रभो !	यस्य	११. जिन आपके
कन्या	२. कन्या के लिये	अङ्गे श्रीः	१२. अङ्ग में लक्ष्मी
वर इह	४. वर यहाँ	वसति	१४. निवास करती हैं
ईप्सितः ।	३. अभीष्ट	अनपायिनी ॥	१३. निरन्तर

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! कन्या के लिये अभीष्ट वर यहाँ आप से श्रेष्ठ कौन हो सकता है । गुणों के एक मात्र धाम जिन आप के अङ्ग में लक्ष्मी निरन्तर निवास करती हैं ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

किं त्वस्माभिः कृतः पूर्वं समयः सात्वतर्षभ ।
पुंसां वीर्यपरीक्षार्थं कन्यावरपरीप्सया ॥४२॥

पदच्छेद— किन्तु अस्माभिः कृतः पूर्वम् समयः सात्वतर्षभ ।
पुंसाम् वीर्य परीक्षार्थम् कन्या वर परीप्सया ॥

शब्दार्थ—

किन्तु	१. परन्तु	पुंसाम्	६. पुरुषों के
अस्माभिः	९. हमने	वीर्य	७. बल की
कृतः	१२. किया था	परीक्षार्थम्	८. परीक्षा करने के लिये
पूर्वम्	१०. पहले	कन्या	३. कन्या के
समयः	११. एक प्रण	वर	४. वर की
सात्वतर्षभ ।	२. हे यदुवंश शिरोमणि !	परीप्सया ॥	५. इच्छा से

श्लोकार्थ—परन्तु हे यदुवंशशिरोमणि ! कन्या के वर की इच्छा से पुरुषों के बल की परीक्षा करने के लिये हमने पहले एक प्रण किया था ।

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

सप्तैते गोवृषा वीर दुर्दान्ता दुरवग्रहाः ।
एतैर्भग्नाः सुबहवो भिन्नगात्रा नृपात्मजाः ॥४३॥

पदच्छेद— सप्त एते गोवृषाः वीर दुर्दान्त दुरवग्रहाः ।
एतैः भग्नाः सुबहवः भिन्नगात्राः नृपात्मजाः ॥

शब्दार्थ—,

सप्तएते	२. ये सातों	एतैः	६. इन्होंने
गोवृषाः	३. बैल (किसी के)	भग्नाः	१०. उत्साह भङ्ग कर दिया है
वीर	१. हे वीर !	सुबहवः	७. बहुत से
दुर्दान्ताः	४. वश में न आने वाले और	भिन्नगात्राः	९. अङ्गों को खण्डित करके
दुरवग्रहाः ।	५. बिना सधाये हुये हैं	नृपात्मजाः ॥	८. राजकुमारों के

श्लोकार्थ—हे वीर ! ये सातों बैल किसी के वश में न आने वाले और बिना सधाये हुये हैं । इन्होंने बहुत से राजकुमारों के अङ्गों को खण्डित करके उनका उत्साह भङ्ग कर दिया है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

यदिमे निगृहीताः स्युस्त्वयैव यदुनन्दन ।
वरो भवानभिमतो दुहितुर्मे श्रियः पते ॥४४॥

पदच्छेद— यत् इमे निगृहीताःस्युः त्वया एव यदुनन्दन ।
वरः भवान् अभिमतः दुहितुः मे श्रियः पते ॥

शब्दार्थ—

यत्	२. यदि	वरः	१२. वर होंगे
इमे	५. इन्हें	भवान्	१०. आप
निगृहीताः स्युः	६. नाथ लें तो	अभिमतः	११. अभीष्ट
त्वया	३. आप	दुहितुः	९. पुत्री के लिये
एव	४. ही	मे	८. मेरी
यदुनन्दन ।	१. हे श्रीकृष्ण !	श्रियः पते ॥	७. हे लक्ष्मीपति !

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! यदि आप ही इन्हें नाथ लें तो मेरी पुत्री के लिये आप ही अभीष्ट वर होंगे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

एवं समयमाकर्ण्य बद्ध्वा परिकरं प्रभुः ।
आत्मानं सप्तधा कृत्वा न्यगृह्णाल्लीलयैव तान् ॥४५॥

पदच्छेद— एवम् समयम् आकर्ण्य बद्ध्वा परिकरम् प्रभुः ।
आत्मानम् सप्तधा कृत्वा न्यगृह्णात् लीलया एव तान् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. ऐसा	आत्मानम्	७. अपने
समयम्	२. प्रण	सप्तधा	८. सात रूप
आकर्ण्य	३. सुनकर	कृत्वा	९. बनाकर
बद्ध्वा	६. कसकर	न्यगृह्णात्	१३. नाथ दिया
परिकरम्	५. कमर	लीलया	१०. खेल-खेल में
प्रभुः ।	४. भगवान् ने	एव	११. ही
		तान् ॥	१२. उन बैलों को

श्लोकार्थ—ऐसा प्रण सुनकर भगवान् ने कमर कसकर अपने सात रूप बनाकर खेल-खेल में ही उन बैलों को नाथ दिया ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

बद्ध्वा तान् दामभिः शौरिर्भग्नदर्पान् हतौजसः ।
व्यकर्षल्लीलया बद्धान् बालो दारुमयान् यथा ॥४६॥

पदच्छेद— बद्ध्वा तान् दामभिः शौरिः भग्न दर्पान् हत ओजसः ।
व्यकर्षत् लीलया बद्धान् बालः दारुमयान् यथा ॥

शब्दार्थ—

बद्ध्वा	४. बांधकर	व्यकर्षत्	९. खींचने लगे
तान्	२. उन्हें	लीलया	८. लीला पूर्वक
दामभिः	३. रस्सियों से	बद्धान्	१३. बांधकर घसीटता है
शौरिः	१. श्रीकृष्ण ने	बालः	११. बालक
भग्न	६. भङ्ग करते हुये	दारुमयान्	१२. काठ के बने बैलों को
दर्पान्	५. अभिमान	यथा ॥	१०. जैसे
हत ओजसः ।	७. पौरुष रहित करके		

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने उन्हें रस्सियों से बांधकर अभिमान भङ्ग करते हुये पौरुष रहित करके लीला पूर्वक खींचने लगे, जैसे बालक काठ के बने बैलों को बांध कर घसीटता है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

ततः प्रीतः सुतां राजा ददौ कृष्णाय विस्मितः ।
तां प्रत्यगृह्लाद् भगवान् विधिवत् सदृशीं प्रभुः ॥४७॥

पदच्छेद— ततः प्रीतः सुताम् राजा ददौ कृष्णाय विस्मितः ।
ताम् प्रति अगृह्लाद् भगवान् विधिवत सदृशीं प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	विस्मितः ।	२. आश्चर्य चकित
प्रीतः	४. प्रसन्न होकर	ताम्	११. उस कन्या का
सुताम्	५. अपनी कन्या	प्रतिअगृह्लात्	१२. पाणिग्रहण किया
राजा	३. राजा ने	भगवान्	८. भगवान्
ददौ	७. प्रदान कर दो	विधिवत्	१० विधिपूर्वक
कृष्णाय	६. श्रीकृष्ण को	सदृशीम् प्रभुः ॥	९. प्रभु ने अपने अनुरूप

श्लोकार्थ—तदनन्तर आश्चर्य चकित राजा ने प्रसन्न होकर अपनी कन्या श्रीकृष्ण को प्रदान कर दी । भगवान् प्रभु ने अपने अनुरूप विधिपूर्वक उस कन्या का पाणिग्रहण किया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

राजपत्न्यश्च दुहितुः कृष्णं लब्ध्वा प्रियं पतिम् ।
लेभिरे परमानन्दं जातश्च परमोत्सवः ॥४८॥

पदच्छेद— राजपत्न्यः च दुहितुः कृष्णम् लब्ध्वा प्रियम् पतिम् ।
लेभिरे परमानन्दम् जातः च परम उत्सवः ॥

शब्दार्थ—

राजपत्न्यः	२. रानियाँ भी	लेभिरे	१०. प्राप्त हुईं
च	१. और	परम	८. परम
दुहितुः	४. अपनी पुत्री के	आनन्दम्	९. आनन्द को
कृष्णम्	३. होने लगा	जातः	१४. होने लगा
लब्ध्वा	७. पाकर	च	११. और (सब ओर)
प्रियम्	५. प्रिय	परम	१२. महान्
पतिम् ।	६. पति के रूप में	उत्सवः ॥	१३. उत्सव

श्लोकार्थ—और रानियाँ भी श्रीकृष्ण को अपनी पुत्री के प्रिय पति के रूप में पाकर परम आनन्द को प्राप्त हुईं । और सब ओर महान् उत्सव होने लगा ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

शङ्खभेर्यानका नेदुर्गीतवाद्यद्विजाशिषः ।
नरा नार्यः प्रमुदिताः सुवासः स्रगलङ्कृताः ॥४९॥

पदच्छेद— शङ्ख भेरी आनकाः नेदुः गीत वाद्य द्विजआशिषः ।
नराः नार्यः प्रमुदिताः सुवासः स्रक् अलङ्कृताः ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	१. शङ्ख	नराः	११. नर
भेरी	२. ढोल	नार्यः	१२. नारियाँ
आनकाः	३. नगारे	प्रमुदिताः	१३. आनन्द मनाने लगे
नेदुः	४. बजाने लगे	सुवासः	८. सुन्दर वस्त्र
गीत	५. गाना वजाना	स्रक्	९. पुष्पों के हार और
द्विज	६. और ब्राह्मणों के	अलङ्कृताः ॥	१०. गहनों से सज कर
आशिषः ।	७. आशीर्वाद होने लगे		

श्लोकार्थ—शङ्ख, ढोल, नगारे बजने लगे । गाना, बजाना और ब्राह्मणों के आशीर्वाद होने लगे । सुन्दर वस्त्र, पुष्पों के हार और गहनों से सज कर नर नारियाँ आनन्द मनाने लगे ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

दशधेनुसहस्राणि पारिबर्हमदाद् विभुः ।
युवतीनां त्रिसाहस्रं निष्कग्रीवसुवाससाम् ॥५०॥

पदच्छेद— दशधेनु सहस्राणि पारिबर्हम् अदात् विभुः ।
युवतीनाम् त्रिसाहस्रम् निष्कग्रीव सुवाससाम् ॥

शब्दार्थ—

दश	२. दश	युवतीनाम्	६. युवती दासियाँ
धेनु	४. गौएँ और	त्रिसाहस्रम्	५. तीन हजार
सहस्राणि	३. हजार	निष्क	९. स्वर्णहार पहने थीं
पारिबर्हम्	१०. दहेज में	ग्रीव	८. गले में
अदात्	११. दीं	सुवाससाम् ॥	७. जो सुन्दर वस्त्र तथा
विभुः ।	१. राजा ने		

श्लोकार्थ—राजा ने दश हजार गौएँ और तीन हजार युवती दासियाँ जो सुन्दर वस्त्र तथा गले में स्वर्णहार पहने थीं, दहेज में दीं ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

नवनागसहस्राणि नागाच्छतगुणान् रथान् ।
रथाच्छतगुणानश्वानश्वाच्छतगुणान् नरान् ॥५१॥

पदच्छेद— नव नाग सहस्राणि नागात् शतगुणान् रथान् ।
रथात् शतगुणान् अश्वान् अश्वात् शतगुणान् नरान् ॥

शब्दार्थ—

नव	१. नौ	रथों से	७. रथों से
नाग	३. हाथी	शतगुणान्	८. सौ गुने
सहस्राणि	२. हजार	अश्वान्	९. घोड़े
नागात्	४. हाथियों से	अश्वात्	१०. घोड़ों से
शतगुणान्	५. सौ गुने	शतगुणान्	११. सौ गुने
रथान् ।	६. रथ	नरान् ॥	१२. सेवक दिये

श्लोकार्थ—राजा नग्नजित् ने नौ हजार हाथी, हाथियों से सौ गुने रथ, रथों से सौ गुने घोड़े, घोड़ों से सौ गुने सेवक दिये ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

दम्पती रथमारोप्य महत्या सेनया वृतौ ।
स्नेहप्रक्लिन्नहृदयो यापयामास कोसलः ॥५२॥

पदच्छेद— दम्पती रथम् आरोप्य महत्या सेनया वृतौ ।
स्नेह प्रक्लिन्न हृदयः यापयामास कोसलः ॥

शब्दार्थ—

दम्पती	५. वर-वधू को	स्नेह	१. वात्सल्य स्नेह से
रथम्	६. रथ पर	प्रक्लिन्न	२. द्रवित
आरोप्य	७. चढ़ाकर	हृदयः	३. हृदय वाले
महत्या	८. एक बड़ी	यापयामास	११. बिदा किया
सेनया	९ सेना के	कोसलः ॥	४. कौसल नरेश ने
वृतौ ।	१०. साथ		

श्लोकार्थ—वात्सल्य स्नेह से द्रवित हृदय वाले कौसल नरेश ने वर-वधू को रथ पर चढ़ाकर एक बड़ी सेना के साथ विदा किया ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रुत्वैतद् रुरुधुर्भूपा नयन्तं पथि कन्यकाम् ।
भग्नवीर्याः सुदुर्मर्षा यदुभिर्गोवृषैः पुरा ॥५३॥

पदच्छेद— श्रुत्वा एतद् रुरुधुः भूपाः नयन्तम् पथि कन्यकाम् ।
भग्नवीर्याः सुदुर्मर्षाः यदुभिः गोवृषैः पुरा ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	२. सुनकर	भग्न	५. नष्ट किये गये
एतद्	१. यह	वीर्याः	६. पौरुष वाले और
रुरुधुः	१३. घेर लिया	सुदुर्मर्षाः	७. अत्यन्त असहनशील
भूपाः	८. राजाओं ने	यदुभिः	१२. यदुवंशियां के साथ
नयन्तम्	११. ले जाते हुए श्रीकृष्ण को	गोवृषैः	४. बैलों के द्वारा
पथि	९. मार्ग में	पुरा ॥	३. पहले
कन्यकाम् ।	१०. कन्या को ।		

श्लोकार्थ—यह सुनकर पहले बैलों के द्वारा नष्ट किये गये पौरुष वाले और अत्यन्त असहन शील राजाओं ने मार्ग में कन्या को ले जाते हुये श्रीकृष्ण को यदुवंशियों के साथ घेर लिया ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तानस्यतः शरव्रातान् बन्धुप्रियकृदर्जुनः ।
गाण्डीवी कालयामास सिंहः क्षुद्रमृगानिव ॥५४॥

पदच्छेद— तान् अस्यतः शरव्रातान् बन्धु प्रिय कृत् अर्जुनः ।
गाण्डीवी कालयामास सिंहः क्षुद्र मृगान् इव ॥

शब्दार्थ—

तान्	८. उन राजाओं को	गाण्डीवी	४. गाण्डीव धनुष धारण करने वाले
अस्यतः	७. छोड़ते हुये	कालयामास	९. खदेड़ दिया
शरव्रातान्	६. बाण समूह	सिंहः	११. सिंह
बन्धु	१. बन्धुओं का	क्षुद्र	१२. क्षुद्र
प्रिय	२. प्रिय	मृगान्	१३. पशुओं को (खदेड़ देता है)
कृत्	३. करने वाले तथा	इव ॥	१०. जैसे
अर्जुनः ।	५. अर्जुन ने		

श्लोकार्थ—बन्धुओं का प्रिय करने वाले तथा गाण्डीव धनुष धारण करने वाले अर्जुन ने बाण समूह को छोड़ते हुये उन राजाओं को खदेड़ दिया जैसे सिंह क्षुद्र पशुओं को खदेड़ देता है ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

पारिबर्हमुपागृह्य द्वारकामेत्य सत्यया ।
रेमे यदूनामृषभो भगवान् देवकीसुतः ॥५५॥

पदच्छेद— पारिबर्हम् उपागृह्य द्वारकाम् एत्य सत्यया ।
रेमे यदूनाम् ऋषभः भगवान् देवकी सुतः ॥

शब्दार्थ—

पारिबर्हम्	१. दहेज	रेमे	१०. विहार करने लगे
उपागृह्य	२. ग्रहण करके	यदूनाम्	५. यदुवंशियों में
द्वारकाम्	३. द्वारका	ऋषभः	६. श्रेष्ठ
एत्य	४. आकर	भगवान्	७. भगवान् श्रीकृष्ण
सत्यया ।	९. सत्या के साथ	देवकी सुतः ॥	८. देवकी के पुत्र

श्लोकार्थ—दहेज ग्रहण करके द्वारका आकर यदुवंशियों में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्ण देवकी के पुत्र सत्या के साथ विहार करने लगे ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रुतकीर्तेः सुतां भद्रामुपयेमे पितृष्वसुः ।
कैकेयीं भ्रातृभिर्दत्तां कृष्णः सन्तर्दनादिभिः ॥५६॥

पदच्छेद— श्रुत कीर्तेः सुताम् भद्राम् उपयेमे पितृष्वसुः ।
कैकेयीं भ्रातृभिः दत्ताम् कृष्णः सन्तर्दन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत कीर्तेः	२. श्रुत कीर्ति की	कैकेयी	८. केकय देश की राजकुमारी
सुताम्	३. पुत्री	भ्रातृभिः	६. भाइयों के द्वारा
भद्राम्	९. भद्राका	दत्ताम्	७. दी गयी
उपयेमे	११. पाणिग्रहण किया	कृष्णः	१०. श्रीकृष्ण ने
पितृष्वसुः ।	१. फुआ	सन्तर्दन	४. सन्तर्दन
		आदिभिः ॥	५. आदि

श्लोकार्थ—फुआ श्रुत कीर्ति की पुत्री, सन्दर्तन आदि भाइयों के द्वारा दी गयी केकय देश की राजकुमारी भद्रा का श्रीकृष्ण ने पाणिग्रहण किया ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुतां च मद्राधिपतेर्लक्ष्मणां लक्षणैर्युताम् ।
स्वयंवरे जहारैकः स सुपर्णः सुधामिव ॥५७॥

पदच्छेद— सुताम् च मद्र अधिपतेः लक्ष्मणाम् लक्षणैः युताम् ।
स्वयंवरे जहार एकः सः सुपर्णः सुधाम् इव ॥

शब्दार्थ—

सुताम्	४.	पुत्री	स्वयंवरे	८.	स्वयंवर में
च	१.	और	जहार	११.	हरण कर लिया
मद्र	२.	मद्र देश के	एकः	९.	अकेले ही
अधिपतेः	३.	राजा की	सः	१०.	श्रीकृष्ण ने
लक्ष्मणाम्	७.	लक्ष्मणा का	सुपर्ण	१३.	गरुड़ ने
लक्षणैः	५.	सुलक्षणों से	सुधाम्	१४.	अमृत का (हरण किया था)
युताम् ।	६.	युक्त	इव ॥	१२.	जैसे

श्लोकार्थ—और मद्र देश के राजा की पुत्री सुलक्षणों से युक्त लक्ष्मणा का स्वयंवर में अकेले ही श्रीकृष्ण ने हरण कर लिया, जैसे गरुड़ ने अमृत का हरण किया था ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अन्याश्चैवंविधा भार्याः कृष्णस्यासन् सहस्रशः ।
भौमं हत्वा तन्निरोधादाहृताश्चारुदर्शनाः ॥५८॥

पदच्छेद— अन्याः च एवम् विधाः भार्याः कृष्णस्य आसन् सहस्रशः ।
भौमम् हत्वा तत् निरोधात् आहृताः चारु दर्शनाः ॥

शब्दार्थ—

अन्याः च	३.	और भी	भौमम्	९.	भौमासुर को
एवम् विधाः	१.	इस प्रकार	हत्वा तत्	१०.	मार कर उसके
भार्याः	५.	पत्नियाँ	निरोधात्	११.	बन्दीगृह से
कृष्णस्य	२.	श्रीकृष्ण की	आहृताः	१२.	छुड़ा लाये थे
आसन्	६.	थीं	चारु	७.	सुन्दर
सहस्रशः ।	४.	हजारों	दर्शनाः ॥	८.	दिखने वाली उन स्त्रियों को

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण की और भी हजारों पत्नियाँ थीं । सुन्दर दिखने वाली उन स्त्रियों को भौमासुर को मार कर उसके बन्दीगृह से छुड़ा लाये थे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
अष्टमहिष्युद्वाहो अष्टपञ्चाशत्तमः अध्यायः ॥५८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकोनषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— यथा हतो भगवता भौमो येन च ताः स्त्रियः ।
निरुद्धा एतदाचक्ष्व विक्रमं शार्ङ्गधन्वनः ॥१॥

पदच्छेद— यथा हतः भगवता भौमः येन च ताः स्त्रियः ।
निरुद्धाः एतद् आचक्ष्व विक्रमम् शार्ङ्गधन्वनः ॥

शब्दार्थ—यथा	४.	जिस प्रकार	निरुद्धाः	३.	बन्दीगृह में डाल रखा था और
हताः	७.	मारा था	एतद्	८.	वह
भगवता	५.	भगवान ने	आचक्ष्व	११.	बताइये
भौमः	६.	भौमासुर को	विक्रमम्	१०.	पराक्रम
येन च	१.	जिसने	शार्ङ्गधन्वनः ॥	९.	श्रीकृष्ण का
ताः स्त्रियः ।	२.	उन स्त्रियों को			

श्लोकार्थ—जिसने उन स्त्रियों को बन्दीगृह में डाल रखा था, और जिस प्रकार भगवान् ने भौमासुर को मारा था वह श्रीकृष्ण का पराक्रम बताइये ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इन्द्रेण हृतच्छत्रेण हृतकुण्डलबन्धुना ।
हृतामराद्रिस्थानेन ज्ञापितो भौमचेष्टितम् ।
सभार्यो गरुडारूढः प्राग्ज्योतिषपुरं ययौ ॥२॥

पदच्छेद— इन्द्रेण हृत च्छत्रेण हृत कुण्डल बन्धुना ।
हृत अमर अद्रि स्थानेन ज्ञापितः भौमचेष्टितम् ।
सभार्यः गरुड आरुढः प्राग्ज्योतिषपुरम् ययौ ॥

शब्दार्थ—इन्द्रेण	८.	इन्द्र ने (जब)	स्थानेन	६.	स्थान के
हृत	४.	छीन लिये जाने पर तथा	ज्ञापितोः	१०.	बताई (तब श्रीकृष्ण)
च्छत्रेण	२.	(भौमासुर द्वारा छत्र और	भौमचेष्टितम् ।	९.	भौमासुर की करतूत
हृत कुण्डल	३.	कुण्डल	सभार्यः	११.	पत्नी सत्यभामा सहित
बन्धुना ।	१.	बन्धु (वरुण और अदिति) के	गरुड आरुढः	१२.	गरुड़ पर चढ़ कर
हृत	७.	छिन जाने पर	प्राग्ज्योतिषपुरम्	१३.	प्राग्ज्योतिष पुर में
अमर आदि	५.	देवताओं के मणि पर्वत	ययौ ॥	१४.	गये

श्लोकार्थ—बन्धु (वरुण और अदिति) के भौमासुर द्वारा छत्र और कुण्डल छीन लिये जाने पर तथा देवताओं का स्थान मणि पर्वत छिन जाने पर इन्द्र ने जब भौमासुर की करतूत बताई तब श्रीकृष्ण पत्नी सत्यभामा सहित गरुड़ पर चढ़ कर प्राग्ज्योतिष पुर गये ॥

तृतीयः श्लोकः

गिरिदुर्गैः शस्त्रदुर्गैर्जलाग्न्यनिलदुर्गमम् ।
मुरपाशायुतैर्घोरैर्दृढैः सर्वत आवृतम् ॥३॥

पदच्छेद — गिरि दुर्गैः शस्त्रदुर्गैः जल अग्नि अनिल दुर्गमम् ।
मुरपाश अयुतैः घोरैः दृढैः सर्वतः आवृतम् ॥

शब्दार्थ—

गिरि	१. (वह पुर) पर्वतों की	मुरपाश	७. मुर दैत्य के द्वारा
दुर्गैः	२. किलेबन्दियों से	अयुतैः	८. दस हजार
शस्त्रदुर्गैः	३. शस्त्रों के किलों	घोरैः	९. भयंकर एवम्
जल अग्नि	४. जल अग्नि तथा	दृढैः	१०. सुदृढ़ जालों से
अनिल	५. वायु के घेरे के कारण	सर्वतः	११. सब ओर
दुर्गमम् ।	६. कठिनाई से पहुँचने योग्य	आवृतम् ॥	१२. घिरा हुआ था

श्लोकार्थ—वह पुर पर्वतों की किले बन्दियों से शस्त्रों के किलों, जल, अग्नि तथा वायु के घेरे के कारण कठिनाई से पहुँचने योग्य, मुरदैत्य के द्वारा दस हजार भयंकर एवम् सुदृढ़ जालों से सब ओर से घिरा हुआ था ।

चतुर्थः श्लोकः

गदया निर्बिभेदाद्रीन् शस्त्रदुर्गाणि सायकैः ।
चक्रेणाग्निं जलं वायुं मुरपाशांस्तथासिना ॥४॥

पदच्छेद— गदया निर्बिभेद अद्रीन् शस्त्र दुर्गाणि सायकैः ।
चक्रेण अग्निम् जलम् वायुम् मुर पाशान् तथा असिना ॥

शब्दार्थ—

गदया	१. गदा से	चक्रेण	७. चक्र से
निर्बिभेद	६. तोड़-फोड़ डाला	अग्निम्	८. अग्नि
अद्रीन्	२ पहाड़ों को तथा	जलम्	९. जल और
शस्त्र	४. शस्त्रों के	वायुम्	१०. वायु के घेरों को
दुर्गाणि	५. किलों को	मुर पाशान्	१२. मुर के जालों को (काट डाला)
सायकैः ।	३. बाणों से	तथा असिना ॥	११. तथा तलवार से

श्लोकार्थ—गदा से पहाड़ों को, बाणों से शस्त्रों के किलों को तोड़-फोड़ डाला । चक्र से अग्नि जल और वायु के घेरों को तथा तलवार से मुर के जालों काट डाला ॥

पञ्चमः श्लोकः

शङ्खनादेन यन्त्राणि हृदयानि मनस्विनाम् ।
प्राकारं गदया गुर्व्या निर्बिभेद गदाधरः ॥५॥

पदच्छेद— शङ्ख नादेन यन्त्राणि हृदयानि मनस्विनाम् ।
प्राकारम् गदया गुर्व्या निर्बिभेद गदाधरः ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	२. शङ्ख की	प्राकारम्	९. नगर के पर कोटे को
नादेन	३. ध्वनि से	गदया	८. गदा से
यन्त्राणि	४. मन्त्रों तथा	गुर्व्या	७. और भारी
हृदयानि	६. हृदयों को	निर्बिभेद	१०. ध्वस्त कर डाला
मनस्विनाम् ।	५. वीर पुरुषों के	गदाधरः ॥	१. गदाधर भगवान् ने

श्लोकार्थ—गदाधर भगवान् ने शङ्ख की ध्वनि से मन्त्रों तथा पुरुषों के हृदयों को और भारी गदा से नगर के पर कोटे को ध्वस्त कर दिया ॥

षष्ठः श्लोकः

पाञ्चजन्यध्वनिं श्रुत्वा युगान्ताशनिभीषणम् ।
मुरः शयान उत्तस्थौ दैत्यः पञ्चशिरा जलात् ॥६॥

पदच्छेद— पाञ्चजन्य ध्वनिम् श्रुत्वा युगान्त अशनिभीषणम् ।
मुरः शयानः उत्तस्थौ दैत्यः पञ्चशिराः जलात् ॥

शब्दार्थ—

पाञ्चजन्य	४. पाञ्चजन्य शंख के	मुरः	१०. मुर
ध्वनिम्	५. नाद को	शयानः	८. सोया हुआ
श्रुत्वा	६. सुनकर	उत्तस्थौ	१२. उठ खड़ा हुआ
युगान्त	१. प्रलय कालीन	दैत्यः	११. दैत्य
अशनि	२. बिजली की	पञ्चशिराः	९. पांच शिरों वाला
भीषणम् ।	३. कड़क के समान	जलात् ॥	७. जल के भीतर

श्लोकार्थ—प्रलय कालीन बिजली की कड़क के समान पाञ्चजन्य शंख के नाद को सुनकर जल के भीतर सोया हुआ पांच सिरों वाला मुर दैत्य उठ खड़ा हुआ ॥

सप्तमः श्लोकः

त्रिशूलमुद्यम्य सुदुर्निरीक्षणो युगान्तसूर्यानलरोचिरुल्बणः ।
ग्रसंस्त्रिलोकीमिव पञ्चभिर्मुखैरभ्यद्रवत्तार्क्ष्यसुतं यथोरगः ॥७॥

पदच्छेद— त्रिशूलम् उद्यम्य सुदुर्निरीक्षणः युगान्त सूर्य अनल रोचिः उल्बणः ।
ग्रसन् त्रिलोकीम् इव पञ्चभिः मुखैः अभ्यद्रवत् तार्क्ष्य सुतम् यथा उरगः ॥

शब्दार्थ—

त्रिशूलम्	७.	त्रिशूल	ग्रसन्	१३.	निगलता हुआ
उद्यम्य	८.	उठाकर	त्रिलोकीम्	१२.	तीनों लोक को
सुदुर्निरीक्षणः	६.	अत्यन्त कठिनाई से दिखने योग्य मुर	इव	११.	मानों
युगान्त	१.	प्रलय कालीन	पञ्चभिः	६.	अपने पाँचों
सूर्य	२.	सूर्य और	मुखैः	१०.	मुखों से
अनल	३.	अग्नि के समान	अभ्यद्रवत्	१४.	भगवान् की ओर दौड़ा
रोचिः	५.	तेजस्वी	तार्क्ष्य सुतम्	१६.	गरुड़ पर टूट पड़े
उल्बणः ।	४.	प्रचण्ड	यथा उरगः ॥	१५.	जैसे साँप

श्लोकार्थ—प्रलय कालीन सूर्य और अग्नि के समान प्रचण्ड तेजस्वी अत्यन्त कठिनाई से दिखाई देने योग्य मुर त्रिशूल उठाकर अपने पाँचों मुखों से मानों त्रिलोकी को निगलता हुआ भगवान् की ओर दौड़ा, जैसे साँप गरुड़ पर टूट पड़े ॥

अष्टमः श्लोकः

आविध्य शूलं तरसा गरुत्मते निरस्य वक्त्रैर्व्यनदत् स पञ्चभिः ।
स रोदसी सर्वदिशोऽन्तरं महानापूरयन्नण्डकटाहमावृणोत् ॥८॥

पदच्छेद— आविध्य शूलम् तरसा गरुत्मते निरस्य वक्त्रैः व्यनदत् सः पञ्चभिः ।
सः रोदसी सर्वदिशः अन्तरम् महान् आपूरयन् अण्डकटाहम् आवृणोत् ॥

शब्दार्थ—

आविध्य	३.	घुमाकर	सः	६.	उस
शूलं तरसा	२.	त्रिशूल को बड़े वेग से	रोदसी	११.	पृथ्वी, आकाश
गरुत्मते	४.	गरुड़ पर	सर्वदिशः	१३.	दसों दिशाओं को
निरस्य	५.	चलाया और	अन्तरम्	१२.	पाताल और
वक्त्रैः	७.	मुखों से	महान्	१०.	महान् शब्द ने
व्यनदत्	८.	सिंह नाद किया	आपूरयन्	१४.	भरते हुये
सः	१.	उसने	अण्डकटाहम्	१५.	सारे ब्रह्माण्ड को
पञ्चभिः ।	६.	पाँचों	आवृणोत् ॥	१६.	ढक लिया

श्लोकार्थ—उसने त्रिशूल को बड़े वेग से गरुड़ पर चलाया और पाँचों मुखों से सिंह नाद किया । उस महान् शब्द ने पृथ्वी आकाश, पाताल और दसों दिशाओं को भरते हुये सारे ब्रह्माण्ड को ढक लिया ॥

नवमः श्लोकः

तदापतद् वै त्रिशिखं गरुत्मते हरिः शराभ्यामभिनत्त्रिधौजसा ।
मुखेषु तं चापि शरैरताडयत् तस्मै गदां सोऽपि रुषा व्यमुञ्चत ॥९॥

पदच्छेद— तदा पतत् वै त्रिशिखम् गरुत्मते हरिः शराभ्याम् अभिनत् त्रिधा ओजसा ।
मुखेषु तम् च अपि शरैः अताडयत् तस्मै गदाम् सः अपि रुषा व्यमुञ्चत ॥

शब्दार्थ—

तदा	१.	तब	मुखेषु तम्	९.	उस दैत्य के मुख में
पतत् वै	४.	वेग से गिरते हुये	च अपि	१०.	भी
त्रिशिखम्	५.	त्रिशूल को	शरैः अताडयत्	११	बहुत से बाण मारे
गरुत्मते	३.	गरुड़ पर	तस्मै	१४.	उन पर अपनी
हरिः	२.	श्रीकृष्ण ने	गदाम्	१५.	गदा
शराभ्याम्	६.	दो बाणों से	सः अपि	१२.	उस दैत्य ने भी
अभिनत् त्रिधा	८.	काटकर तीन टुकड़े कर दिये	रुषा	१३.	क्रोध से
ओजसा ।	७.	फुर्ती से	व्यमुञ्चत ॥	१६.	चलाई

श्लोकार्थ—तब श्रीकृष्ण ने गरुड़ पर वेग से गिरते हुये त्रिशूल को दो बाणों से फुर्ती से काटकर तीन टुकड़े कर दिये । उस दैत्य के मुख में भी बहुत से बाण मारे । उस दैत्य ने क्रोध से उन पर अपनी गदा चलाई ॥

दशमः श्लोकः

तामापतन्तीं गदया गदां मृधे गदाग्रजो निर्बिभिदे सहस्रधा ।
उद्यम्य बाहूनभिधावतोऽजितः शिरांसि चक्रेण जहार लीलया ॥१०॥

पदच्छेद— ताम् आपतन्तीम् गदया गदाम् मृधे गदअग्रजः निर्बिभिदे सहस्रधा ।
उद्यम्य बाहून् अभिधावतः अजितः शिरांसि चक्रेण जहार लीलया ॥

शब्दार्थ—

ताम्	२.	उस	उद्यम्य	१०.	फैलाकर
आपतन्तीम्	१.	आती हुई	बाहून्	९.	भुजायें
गदया	४.	अपनी गदा से	अभिधावतः	११.	अपनी ओर दौड़ते हुये
गदाम् मृधे	३.	गदा के युद्ध में	अजितः	८.	श्रीकृष्ण ने
गदअग्रजः	५.	श्रीकृष्ण ने	शिरांसि	१२.	उसके सिरों को
निर्बिभिदे	७.	टुकड़े कर दिये	चक्रेण जहार	१४.	अपने चक्र से काट दिया
सहस्रधा ।	६.	सैकड़ों टुकड़े	लीलया ॥	१३.	खेल ही खेल में

श्लोकार्थ—आती हुई उस गदा के, युद्ध में अपनी गदा से श्री कृष्ण ने सैकड़ों टुकड़े कर दिये । श्रीकृष्ण ने भुजायें फैलाकर अपनी ओर दौड़ते हुये उसके सिरों को खेल ही खेल में अपने चक्र से काट दिया ॥

एकादशः श्लोकः

व्यसुः पपाताम्भसि कृत्तशीर्षो निकृत्तशृङ्गोऽद्रिरिवेन्द्रतेजसा ।
तस्यात्मजाः सप्त पितुर्वधातुराः प्रतिक्रियामर्षजुषः समुद्यताः ॥११॥

पदच्छेद— व्यसुः पपात अम्भसि कृत्तशीर्षः निकृत्तशृङ्गः अद्रिः इव इन्द्र तेजसा ।
तस्य आत्मजाः सप्त पितुः वधः आतुराः प्रतिक्रिया अमर्ष जुषःसमुद्यताः ॥

शब्दार्थ—

व्यसुः	५.	निष्प्राण होकर	तस्य	८.	उसके
पपात	७.	गिर पड़ा	आत्मजाः सप्त	९.	सात पुत्र
अम्भसि	६.	जल में	पितुः वध	१०.	पिता की हत्या से
कृत्तशीर्षः	३.	कटे हुये सिर वाला	आतुराः	११.	व्याकुल हो गये और
निकृत्तशृङ्गः	२.	काटी गई चोटी वाले	प्रतिक्रिया	१२.	बदला लेने के लिये
अद्रिः इव	४.	पर्वत के समान (मुरदैत्य)	अमर्ष जुषः	१३.	क्रोध से भर कर
इन्द्र तेजसा ।	१.	इन्द्र के वज्र से	समुद्यताः ॥	१४.	युद्ध के लिये तैयार हो गये

श्लोकार्थ—इन्द्र के वज्र से काटी गई चोटी वाले पर्वत के समान कटे हुये सिर वाला मुरदैत्य निष्प्राण होकर जल में गिर पड़ा । उसके सात पुत्र पिता की हत्या से व्याकुल हो गये । और क्रोध से भर कर युद्ध के लिये तैयार हो गये ॥

द्वादशः श्लोकः

ताम्रोऽन्तरिक्षः श्रवणो विभावसुर्वसुर्नभस्वानरुणश्च सप्तमः ।
पीठं पुरस्कृत्य चमूपतिं मृधे भौमप्रयुक्ता निरगन् धृतायुधाः ॥१२॥

पदच्छेद— ताम्रः अन्तरिक्षः श्रवणः विभावसुः वसुः नभस्वान् अरुणः च सप्तमः ।
पीठम् पुरस्कृत्य चमूपतिम् मृधे भौम प्रयुक्ताः निरगन् धृत आयुधाः ॥

शब्दार्थ—

ताम्रः	१.	ताम्र	पीठम्	९.	पीठ नामक दैत्य को
अन्तरिक्षः	२.	अन्तरिक्ष	पुरस्कृत्य	११.	बना कर
श्रवणः	३.	श्रवण	चमूपतिम्	१०.	सेना पति
विभावसुः	४.	विभावसु	मृधे	१५.	युद्ध के लिये
वसुः	५.	वसु	भौम	१२.	भौमासुर की
नभस्वान्	६.	नभस्वान्	प्रयुक्ताः	१३.	प्रेरणा से
अरुण	८.	अरुण नामक (मुरदैत्य का पुत्र)	निरगन्	१६.	निकल पड़े
च सप्तमः ।	७.	और सातवाँ	धृत आयुधाः ॥	१४.	शस्त्र धारण करके

श्लोकार्थ—ताम्र, अन्तरिक्ष, श्रवण, विभा वसु, वसु, नभस्वान् और सातवाँ अरुण नामक मुरदैत्य का पुत्र पीठ नामक दैत्य को सेनापति बना कर भौमासुर की प्रेरणा से शस्त्र धारण करके युद्ध के लिये निकल पड़े ॥

त्रयोदशः श्लोकः

प्रायुञ्जतासाद्य शरानसीन् गदाः शक्त्यृष्टिशूलान्यजिते रुषोल्बणाः ।
तच्छस्त्रकूटं भगवान् स्वमार्गणैरमोघवीर्यस्तिलशश्चकर्त ह ॥१३॥

पदच्छेद— प्रायुञ्जत आसाद्य शरान् असीन् गदाः शक्ति ऋष्टि शूलानि अजिते रुषा उल्वणाः ।
तत् शस्त्र कूटम् भगवान स्वमार्गणैः अमोघवीर्यः तिलशः चकर्त ह ॥

शब्दार्थ—

प्रायुञ्जत	८.	चलाया	तत्	१२.	उसके
आसाद्य	१.	वहाँ आकर उसने	शस्त्र	१३.	शस्त्र
शरान् असीन्	४.	बाणों खड्गों	कूटम्	१४.	समूह को
गदाः शक्ति	५.	गदा शक्ति	भगवान्	१०.	भगवान् ने
ऋष्टि	६.	ऋष्टि और	स्वमार्गणैः	११.	अपने बाणों से
शूलानि	७.	त्रिशूलों को	अमोघवीर्यः	९.	अमोघ शक्ति वाले
अजिते	२.	श्रीकृष्ण पर	तिलशः	१५.	तिल-तिल कर
रुषा उल्वणाः ।	३.	क्रोध से प्रचण्ड	चकर्त ह ॥	१६.	काट डाला

श्लोकार्थ—वहाँ आकर उसने श्रीकृष्ण पर क्रोध से प्रचण्ड बाणों, खड्गों, गदा, शक्ति ऋष्टि और त्रिशूलों को चलाया। अमोघवीर्य भगवान् ने अपने बाणों से उसके शस्त्र-समूह को तिल-तिल कर काट डाला ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तान् पीठमुख्याननयद् यमक्षयं निकृत्तशीर्षोरुभुजाङ्घ्रिवर्मणः ।
स्वानीकपानच्युतचक्रसायकैस्तथा निरस्तान् नरको धरासुतः ॥१४॥

पदच्छेद— तान् पीठ मुख्यान् अनयत् यमक्षयम् निकृत्त शीर्षः उरु भुजा अङ्घ्रि वर्मणः ।
स्व अनीकपान् अच्युत चक्र सायकैः तथा निरस्तान् नरकः धरासुतः ॥

शब्दार्थ—

तान्	१.	श्रीकृष्ण ने उन	स्व	१३.	अपने
पीठ मुख्यान्	२.	पीठ आदि दैत्यों के	अनीकपान्	१४.	सेनापतियों को देख कर
अनयत्	८.	पहुँचा दिया	अच्युत चक्र	९.	श्रीकृष्ण के चक्र
यमक्षयम्	७.	यमराज के घर	सायकैः	११.	बाणों से
निकृत्त	६.	काट कर (उन्हें)	तथा	१०.	तथा
शीर्ष उरु	३.	सिर जाँघे	निरस्तान्	१२.	विनष्ट किये गये
भुजा अङ्घ्रि	४.	भुजायें, पैर	नरकः	१६.	भौमासुर (अत्यन्त कुपित हुआ)
वर्मणः ।	५.	और कवच	धरासुतः ॥	१५.	पृथ्वी का पुत्र

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने उन पीठ आदि दैत्यों के सिर, जाँघें, भुजायें पैर और कवच काट कर उन्हें यमराज के घर पहुँचा दिया। श्रीकृष्ण के चक्र तथा बाणों से विनष्ट किये गये अपने सेनापतियों को देख कर पृथ्वी का पुत्र भौमासुर अत्यन्त कुपित हुआ ॥

पञ्चदशः श्लोकः

निरीक्ष्य दुर्मर्षण आस्रवन्मदैर्गजैः पयोधिप्रभवैर्निराक्रमत् ।
दृष्ट्वा सभार्यं गरुडोपरि स्थितं सूर्योपरिष्टात् सतडिद्घनं यथा ।
कृष्णं स तस्मै व्यसृजच्छतघ्नीं योधाश्च सर्वे युगपत् स्म विव्यधुः ॥१५॥

पदच्छेद— निरीक्ष्य दुर्मर्षणः आस्रवत् मदैः गजैः पयोधि प्रभवैः निराक्रमत् ।
दृष्ट्वा सभार्यम् गरुडोपरि स्थितम् सूर्य उपरिष्टात् सतडिद्घनम् यथा ।
कृष्णम् सः तस्मै व्यसृजत् शतघ्नीम् योधाः च सर्वे युगपत् स्म विव्यधुः ॥

शब्दार्थ—

निरीक्ष्य दुर्मर्षणः	१. यह देखकर उसे	सूर्य उपरिष्टात्	७. सूर्य के ऊपर
आस्रवत्	२. असह्य क्रोध हुआ	सतडिद्घनम्	८. बिजली के साथ मेघ के
मदैः	४. मद चुआने वाले	यथा	९. समान
गजैः	५. हाथियों की सेना लेकर वह	कृष्णम्	१२. श्रीकृष्ण को
पयोधिप्रभवैः	३. समुद्र तट पर उत्पन्न	सः तस्मै	१४. उसने उनके ऊपर
निराक्रमत्	६. नगर के बाहर निकला	व्यसृजत्	१६. चलाई
दृष्ट्वा	१३. देखकर	शतघ्नीम्	१५. शतघ्नी नामक शक्ति
सभार्यम्	११. पत्नी के साथ	योधाः च सर्वे	१७. और सभी योधा भी
गरुडोपरिस्थितम् ।	१०. गरुड़ पर स्थित	युगपत् स्म विव्यधुः ॥	१८. एक साथ प्रहार करने लगे

श्लोकार्थ—यह देखकर उसे असह्य क्रोध हुआ, समुद्रतट पर उत्पन्न मद चुआने वाले हाथियों की सेना लेकर वह नगर के बाहर निकला । सूर्य के ऊपर बिजली के साथ मेघ के समान गरुड़ पर स्थित पत्नी के साथ श्रीकृष्ण को देखकर उसने उनके ऊपर शतघ्नी नामक शक्ति चलाई और सभी योधा भी एक साथ प्रहार करने लगे ॥

षोडशः श्लोकः

तद् भौमसैन्यं भगवान् गदाग्रजो विचित्रवाजैर्निशितैः शिलीमुखैः ।
निकृत्तबाहूरुशिरोध्रविग्रहं चकार तर्ह्येव हताश्वकुञ्जरम् ॥१६॥

पदच्छेद— तत् भौम सैन्यं भगवान् गदाग्रजः विचित्र वाजैः निशितैः शिलीमुखैः ।
निकृत्त बाहु ऊरु शिरोध्र विग्रहम् चकार तर्हि एव हत अश्व कुञ्जरम् ॥

शब्दार्थ—तत्	६. उस	निकृत	१२. काटने लगे और
भौम	७. भौमासुर की	बाहु ऊरु	९. बाँहें जाँघें
सैन्यम्	८. सेना को	शिरोध्र	१०. गर्दन और
भगवान्	१. भगवान्	विग्रहम्	११. धड़
गदाग्रजः	२. श्रीकृष्ण	चकार	१६. गिरने लगे
विचित्र वाजैः	३. चित्र विचित्र पंख वाले	तर्हि एव	१३. उसी समय
निशितैः	४. तीखे	हत अश्व	१५. घोड़े भी मर कर
शिलीमुखैः ।	५. बाणों से	कुञ्जरम् ॥	१४. हाथी

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण चित्र विचित्र पंख वाले तीखे बाणों से उस भौमासुर की सेना की बाँहें, जाँघें, गर्द न और धड़ काटने लगे । और उसी समय हाथी घोड़े भी मरकर गिरने लगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

यानि योधैः प्रयुक्तानि शस्त्रास्त्राणि कुरूद्वह ।
हरिस्तान्यच्छिनत्तीक्ष्णैः शरैरेकैकशस्त्रिभिः ॥१७॥

पदच्छेद— यानि योधैः प्रयुक्तानि शस्त्र अस्त्राणि कुरूद्वह ।
हरिः तानि अच्छिनत् तीक्ष्णैः शरैः एकैकशः त्रिभिः ॥

शब्दार्थ—

यानि	३.	जो	हरिः	९.	श्रीकृष्ण ने
योधैः	२.	सैनिकों ने	तानि	७.	उनमें से
प्रयुक्तानि	६.	चलाये	अच्छिनत्	१२.	काट डाला
शस्त्र	४.	शस्त्र	तीक्ष्णैः शरैः	११.	तीखे बाणों से
अस्त्राणि	५.	अस्त्र	एकैकशः	८.	प्रत्येक को
कुरूद्वह ।	१.	हे परीक्षित् !	त्रिभिः ॥	१०.	तीन-तीन

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सैनिकों ने जो शस्त्र-अस्त्र चलाये उनमें से प्रत्येक को श्रीकृष्ण ने तीन-तीन तीखे बाणों से काट डाला ॥

अष्टादशः श्लोकः

उह्यमानः सुपर्णेन पक्षाभ्यां निघ्नता गजान् ।
गरुत्मता हन्यमानास्तुण्डपक्षनखैर्गजाः ॥१८॥

पदच्छेद— उह्यमानः सुपर्णेन पक्षाभ्याम् निघ्नता गजान् ।
गरुत्मता हन्यमानाः तुण्डपक्ष नखैः गजाः ॥

शब्दार्थ—

उह्यमानः	५.	सवार थे और	गरुत्मता	६.	गरुड़ की
सुपर्णेन	४.	गरुड़ पर (भगवान्)	हन्यमानाः	१०.	मारे जा रहे थे
पक्षाभ्याम्	१.	दोनों पंखों से	तुण्डपक्ष	७.	चोंच, पंख और
निघ्नता	३.	मारते हुये	नखैः	८.	नखों से
गजान् ।	२.	हाथियों को	गजाः ॥	९.	हाथी

श्लोकार्थ—दोनों पंखों से हाथियों को मारते हुये गरुड़ पर भगवान् सवार थे । और गरुड़ जी की चोंच, पंख और नखों से हाथी मारे जा रहे थे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

पुरमेवाविशन्नार्ता नरको युध्ययुध्यत ।
दृष्ट्वा विद्रावितं सैन्यं गरुडेनार्दितं स्वकम् ॥१९॥

पदच्छेद— पुरम् एव अविशन् आर्ताः नरकः युधि अयुध्यत ।
दृष्ट्वा विद्रावितम् सैन्यम् गरुडेन अर्दितम् स्वकम् ॥

शब्दार्थ—

पुरम्	२.	नगर में	दृष्ट्वा	१४.	देखा
एव	३.	ही	विद्रावितम्	१३.	भागते हुये
अविशन्	४.	घुस गये (और)	सैन्यम्	९.	सेना को
आर्ताः	१.	पीडित हाथी	गरुडेन	१०.	गरुड़ के द्वारा
नरकः	५.	नरकासुर	अर्दितम्	११.	पीडित होकर
युधि	६.	रण में	स्वकम् ॥	८.	(उसने) अपनी
अयुध्यत ।	७.	युद्ध करता रहा			

श्लोकार्थ—पीडित हाथी नगर में ही घुस गये। और नरकासुर रण में युद्ध करता रहा। उसने अपनी सेना को गरुड़ के द्वारा पीडित होकर भागते हुये देखा ॥

विंशः श्लोकः

तं भौमः प्राहरच्छक्त्या वज्रः प्रतिहतो यतः ।
नाकम्पत तया विद्धो मालाहत इव द्विपः ॥२०॥

पदच्छेद— तम् भौमः प्राहरत् शक्त्या वज्रः प्रतिहतः यतः ।
न अकम्पत तया विद्धः माला हतः इव द्विपः ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन पर	न	११.	नहीं हुये
भौमः	२.	भौमासुर ने	अकम्पत	१०.	उसी प्रकार विचलित
प्राहरत्	४.	प्रहार किया	तया	८.	उससे
शक्त्या	३.	शक्ति से	विद्धः	९.	विंध जाने पर भी (गरुड)
वज्रः	६.	वज्र को	मालाहतः	१३.	फूलों की माला से प्रहार करने पर
प्रतिहतः	७.	विफल कर दिया था	इव	१२.	जैसे
यतः ।	५.	जिस (शक्ति) ने	द्विपः ॥	१४.	हाथी (विचलित नहीं होता है।

श्लोकार्थ—उन पर भौमासुर ने शक्ति से प्रकार किया। जिस शक्ति ने वज्र को विफल कर दिया था। उससे विंध जाने पर भी गरुड़ उसी प्रकार विचलित नहीं हुये जैसे फूलों की माला से प्रहार करने पर हाथी विचलित नहीं होता है।

एकविंशः श्लोकः

शूलं भौमोऽच्युतं हन्तुमाददे वितथोद्यमः ।
तद्विसर्गात् पूर्वमेव नरकस्य शिरो हरिः ।
अपाहरद् गजस्थस्य चक्रेण क्षुरनेमिना ॥२१॥

पदच्छेद— शूलम् भौमः अच्युतम् हन्तुम् आददे वितथ उद्यमः ।
तत् विसर्गात् पूर्वम् एव नरकस्य शिरः हरिः ।
अपाहरत् गजस्थस्य चक्रेण क्षुर नेमिना ॥

शब्दार्थ—शूलम्	४.	त्रिशूल	नरकस्य	११.	नरकासुर के
भौमः	१.	नरकासुर ने	शिरः	१२.	सिर को
अच्युतम्	२.	श्रीकृष्ण को	हरिः	९.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
हन्तुम्	३.	मारने के लिये	अपाहरत्	१६.	काट डाला
आददे	५.	उठाया (किन्तु उसका)	गजस्थस्य	१०.	हाथी पर बैठे हुये
वितथ उद्यमः	६.	प्रयत्न व्यर्थ हुआ	चक्रेण	१५.	चक्र से
तत् विसर्गात्	७.	उसके छोड़ने से	क्षुर	१३.	छुरे के समान
पूर्वम् एव ।	८.	पहले ही	नेमिना ॥	१४.	तीखी धार वाले

श्लोकार्थ—नरकासुर ने श्रीकृष्ण को मारने के लिये त्रिशूल उठाया किन्तु उसका प्रयत्न विफल हुआ । उसके छोड़ने से पहले ही भगवान् श्रीकृष्ण ने हाथी पर बैठे हुये नरकासुर के सिर को छूरे के समान तीखी धार वाले चक्र से काट डाला ॥

द्वाविंशः श्लोकः

सकुण्डलं चारुकिरीटभूषणं बभौ पृथिव्यां पतितं समुज्ज्वलत् ।
हाहेति साध्वित्यृषयः सुरेश्वरा माल्यैर्मुकुन्दं विकिरन्त ईडिरे ॥२२॥

पदच्छेद— सकुण्डलम् चारु किरीट भूषणम् बभौ पृथिव्याम् पतितम् समुज्ज्वलम् ।
हाहाइति साधु इति ऋषयः सुरेश्वराः माल्यैः मुकुन्दम् विकिरन्तः ईडिरे ॥

शब्दार्थ— सकुण्डलम्	२.	कुण्डल	हाहाइति	८.	उसके सगे संबंधी हाय-यहा
चारु किरीट	३.	सुन्दर किरीट और	साधु इति	१०.	साधु-साधु
भूषणम्	४.	आभूषण के सहित	ऋषयः	९.	ऋषि गण
बभौ	७.	शोभित होने लगा	सुरेश्वराः	११.	देवेन्द्र गण
पृथिव्याम्	५.	पृथ्वी पर	माल्यैः	१२.	पुष्प मालायें
पतितम्	६.	गिर कर	मुकुन्दम्	१३.	भगवान् पर
समुज्ज्वलम् ।	१.	उसका जगमगाता हुआ सिर	विकिरन्तः	१४.	विखेरते हुये
			ईडिरे ॥	१५.	स्तुति करने लगे

श्लोकार्थ—उसका जगमगाता हुआ सिर कुण्डल, सुन्दर किरीट और आभूषण के सहित पृथ्वी पर गिर कर शोभित होने लगा । उसके सगे सम्बन्धो हाय-हाय, ऋषिगण साधु-साधु और देवेन्द्र गण पुष्प मालायें भगवान् पर विखेरते हुये स्तुति करने लगे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

ततश्च भूः कृष्णमुपेत्य कुण्डले प्रतप्तजाम्बूनदरत्नभास्वरं ।
सवैजयन्त्या वनमालयार्पयत् प्राचेतसं छत्रमथो महामणिम् ॥२३॥

पदच्छेद— ततः च भूः कृष्णम् उपेत्य कुण्डले प्रतप्त जाम्बूनद रत्नभास्वरे ।
स वैजयन्त्या वनमालया अर्पयत् प्राचेतसम् छत्रम् अथो महामणिम् ॥

शब्दार्थ—

ततः च	१.	तदनन्तर	सवैजयन्त्या	८.	वैजयन्ती के साथ
भूः कृष्णम्	२.	पृथिवी ने श्रीकृष्ण के	वनमालया	९.	वनमाला
उपेत्य	३.	पास जाकर	अर्पयत्	१४.	समर्पित की
कुण्डले	७.	कुण्डल	प्राचेतसम्	१०.	वरुण का
प्रतप्त	४.	तपाये हुये	छत्रम्	११.	छत्र
जाम्बूनद	५.	सोने के	अथो	१२.	और
रत्नभास्वरे ।	६.	रत्नजटित	महामणिम् ॥	१३.	एक महामणि

श्लोकार्थ— तदनन्तर पृथ्वी ने श्रीकृष्ण के पास जाकर तपाये हुये सोने के रत्न जटित कुण्डल, वैजयन्ती के साथ वनमाला, वरुण का छत्र और एक महामणि समर्पित की ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अस्तौषीदथ विश्वेशं देवी देववरार्चितम् ।
प्राञ्जलिः प्रणता राजन् भक्तिप्रवणया धिया ॥२४॥

पदच्छेद— अस्तौषीत् अथ विश्वेशम् देवी देववर अर्चितम् ।
प्राञ्जलिः प्रणता राजन् भक्ति प्रवणया धिया ॥

शब्दार्थ—

अस्तौषीत्	१२.	स्तुति करने	प्राञ्जलिः	७.	हाथ जोड़कर
अथ	२.	अनन्तर	प्रणता	८.	प्रणाम करके
विश्वेशम्	६.	विश्वेश्वर भगवान् की	राजन्	१.	हे राजन् !
देवी	३.	पृथ्वी देवी	भक्ति	९.	भक्ति भाव
देववर	४.	बड़े-बड़े देवताओं के द्वारा	प्रवणया	१०.	भरी
अर्चितम् ।	५.	पूजित	धिया ॥	११.	बुद्धि से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अनन्तर पृथ्वी देवी बड़े-बड़े देवताओं के द्वारा पूजित विश्वेश्वर भगवान् को हाथ जोड़कर प्रणाम करके भक्ति-भाव से भरी बुद्धि से स्तुति करने लगी ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

भूमिरुवाच— नमस्ते देवदेवेश शङ्खचक्रगदाधर ।
भक्तेच्छोपात्तरूपाय परमात्मन् नमोऽस्तु ते ॥२५॥

पदच्छेद— नमस्ते देव देवेश शङ्ख चक्र गदाधर ।
भक्त इच्छा उपात्तरूपाय परमात्मन् नमोऽस्तु ते ॥

शब्दार्थ—

नमस्ते	२. आपको नमस्कार है	भक्त इच्छा	७. भक्तों की इच्छा के
देव	१. हे देव	उपात्त	८. अधीन
देवेश	३. देवताओं के ईश्वर	रूपाय	९. रूप धारण करने वाले
शङ्ख	४. शङ्ख	परमात्मन्	१०. परमात्मन्
चक्र	५. चक्र और	नमोऽस्तु	१२. नमस्कार है
गदाधर ।	६. गदा धारण करने वाले	ते ॥	११. आपको

श्लोकार्थ—हे देव ! आपको नमस्कार है। देवताओं के ईश्वर ! शङ्ख, चक्र और गदा धारण करने वाले, भक्तों की इच्छा के अधीन रूप धारण करने वाले परमात्मन् ! आपको नमस्कार है ॥

षड्विंश श्लोकः

नमः पङ्कजनाभाय नमः पङ्कजमालिने ।
नमः पङ्कजनेत्राय नमस्ते पङ्कजाङ्घ्रये ॥२६॥

पदच्छेद — नमः पङ्कज नाभाय नमः पङ्कज मालिने ।
नमः पङ्कज नेत्राय नमस्ते पङ्कज अङ्घ्रये ॥

शब्दार्थ—

नमः	३. नमस्कार है	नमः	९. नमस्कार है
पङ्कज	२. कमल वाले को	पङ्कज	७. कमल के समान
नाभाय	१. नाभि में	नेत्राय	८. नेत्र वाले को
नमः	६. नमस्कार है	नमस्ते	१२. नमस्कार है
पङ्कज	४. कमलों की	पङ्कज	१०. कमल के समान
मालिने ।	५. माला पहनने वाले को	अङ्घ्रये ॥	११. चरण वाले आपको

श्लोकार्थ—नाभि में कमल वाले को नमस्कार है। कमलों की माला पहनने वाले को नमस्कार है। कमल के समान नेत्र वाले को नमस्कार है। कमल के समान चरण वाले आपको नमस्कार है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय विष्णवे ।
पुरुषायादिबीजाय पूर्णबोधाय ते नमः ॥२७॥

पदच्छेद— नमः भगवते तुभ्यम् वासुदेवाय विष्णवे ।
पुरुषाय आदि बीजाय पूर्णबोधाय ते नमः ॥

शब्दार्थ—

नमः	३. नमस्कार है	पुरुषाय	६. पुरुष
भगवते	२. भगवान् को	आदि	७. आदि
तुभ्यम्	१. आप	बीजाय	८. कारण और
वासुदेवाय	४. वसुदेव पुत्र	पूर्णबोधाय	९. पूर्णज्ञान स्वरूप
विष्णवे ।	५. विष्णु	ते नमः ॥	१०. आपको नमस्कार है

श्लोकार्थ—आप भगवान् को नमस्कार है। वसुदेवपुत्र, विष्णु, पुरुष, आदि कारण और पूर्ण ज्ञान स्वरूप आपको नमस्कार है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अजाय जनयित्रेऽस्य ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
परावरात्मन् भूतात्मन् परमात्मन् नमोऽस्तु ते ॥२८॥

पदच्छेद— अजाय जनयित्रे अस्य ब्रह्मणे अनन्तशक्तये ।
परावर आत्मन् भूतात्मन् परमात्मन् नमोऽस्तु ते ॥

शब्दार्थ—

अजाय	१. जन्म रहित	परावर	७. कार्य और कामना
जनयित्रे	३. जन्मदाता	आत्मन्	८. रूप
अस्य	२. इस जगत् के	भूतात्मन्	९. प्राणी और अप्राणी रूप
ब्रह्मणे	६. ब्रह्म	परमात्मन्	१०. परमात्मा
अनन्त	४. अनन्त	नमोऽस्तु	१२. नमस्कार है
शक्तये ।	५. शक्ति स्वरूप	ते ॥	११. आप को

श्लोकार्थ—जन्म रहित इस जगत् के जन्मदाता, अनन्त शक्ति स्वरूप ब्रह्मकार्य और कारण रूप प्राणी और अप्राणी रूप परमात्मा आपको नमस्कार है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

त्वं वै सिसृक्षू रज उत्कटं प्रभो तमो निरोधाय बिभर्ष्यसंवृतः ।
स्थानाय सत्त्वं जगतो जगत्पते कालः प्रधानं पुरुषो भवान् परः ॥२९॥

पदच्छेद— त्वम् वै सिसृक्षुः रजः उत्कटं प्रभो तमः निरोधाय बिभर्षि असंवृतः ।
स्थानाय सत्त्वम् जगतः जगत्पते कालः प्रधानम् पुरुषः भवान् परः ॥

शब्दार्थ—

त्वम् वै	३. आप निश्चित रूप से	स्थानाय	८. पालन करने के लिये
सिसृक्षुः	२. सृष्टि करने के इच्छुक	सत्त्वम्	९. सत्त्वगुण को
रजः उत्कटं	४. प्रबल रजोगुण को	जगतः	७. संसार का
प्रभो	१. हे प्रभो !	जगत्पते	१२. संसार के स्वामी
तमः	६. तमोगुण को और	कालः	१५. काल और इनसे
निरोधाय	५. संहार करने के लिये	प्रधानम्	१४. प्रकृति
बिभर्षि	१०. धारण करते हैं	पुरुषः भवान्	१३. आप पुरुष
असंवृतः ।	११. आप इन गुणों से नहीं ढकते हैं	परः ॥	१६. परे भी हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! सृष्टि करने के इच्छुक आप निश्चित रूप से प्रबल रजो गुण को, संहार करने के लिये तमोगुण को और संसार का पालन करने के लिये सत्त्वगुण को धारण करते हैं । आप इन गुणों से नहीं ढकते हैं । संसार के स्वामी ! आप पुरुष, प्रकृति, काल और इनसे परे भी हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

अहं पयो ज्योतिरथानिलो नभो मात्राणि देवा मन इन्द्रियाणि ।
कर्ता महानित्यखिलं चराचरं त्वय्यद्वितीये भगवन्नयं भ्रमः ॥३०॥

पदच्छेद— अहम् पयः ज्योतिः अथ अनिलः नभः मात्राणि देवाः मनः इन्द्रियाणि ।
कर्ता महान् इति अखिलम चराचरम् त्वयि अद्वितीये भगवन् अयम् भ्रमः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	२. मैं	कर्ता	१०. अहंकार और
पयः	३. जल	महान् इति	११. महत्त्व यह
ज्योतिः	४. अग्नि	अखिलम्	१२. सम्पूर्ण
अथअनिलः	५. और वायु	चराचरम्	१३. चराचर जगत्
नभः	६. आकाश	त्वयि	१४. आपके
मात्राणि	७. पञ्चतन्मात्रायें	अद्वितीये	१५. अद्वितीय (रूप में प्रतीत हो रहा है)
देवाः मनः	८. देवता, मन	भगवन्	१. हे भगवन् !
इन्द्रियाणि ।	९. इन्द्रिय	अयम्भ्रमः ॥	१६. यह भ्रम है

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! मैं जल, अग्नि, वायु और आकाश, पञ्चतन्मात्रायें, देवता, मन, इन्द्रिय, अहंकार और महत्तत्त्व यह सम्पूर्ण चराचर जगत् आपके अद्वितीय रूप में प्रतीत हो रहा है, यह भ्रम ही है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तस्यात्मजोऽयं तव पादपङ्कजं भीतः प्रपन्नार्तिहरोपसादितः ।
तत् पालयैनं कुरु हस्तपङ्कजं शिरस्यमुष्याखिलकल्मषापहम् ॥३१॥

पदच्छेद— तस्य आत्मजः अयम् तव पाद पङ्कजम् भीतः प्रपन्नार्तिहरः उपसादितः ।
तत् पालय एनम् कुरु हस्तपङ्कजम् शिरसि अमुष्य अखिल कल्मष अपहम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२. उस (भौमासुर के)	तत्	९. आप
आत्मजः	५. पुत्र को	पालय एनम्	१०. इसकी रक्षा कीजिये
अयम्	३. इस	कुरु	१६. रखिये
तव	६. आपके	हस्तपङ्कजम्	१३. अपना कर कमल
पाद पङ्कजम्	७. चरण कमल में	शिरसि	१५. सिर पर
भीतः	४. भयभीत	अमुष्य	१४. इसके
प्रपन्नार्तिहरः	१. हे शरणागत वत्सल !	अखिल कल्मष	११. सम्पूर्ण जगत् के पाप-तापको
उपसादितः ।	८. ले आयी हूँ	अपहम् ॥	१२. नष्ट करने वाला

श्लोकार्थ—हे शरणागत वत्सल ! उस भौमासुर के इस भयभीत पुत्र को आपके चरण कमल में ले आयी हूँ । आप इसकी रक्षा कीजिये । सम्पूर्ण जगत् के पाप-ताप को नष्ट करने वाला अपना कर कमल इसके सिर पर रखिये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच – इति भूम्यार्थितो वाग्भिर्भगवान् भक्तिनम्रया ।
दत्त्वाभयं भौमगृहं प्राविशत् सकलर्द्धिमत् ॥३२॥

पदच्छेद— इति भूम्याः अर्थितः वाग्भि भगवान् भक्तिनम्रया ।
दत्त्वा अभयम् भौमगृहम् प्राविशत् सकल ऋद्धिमत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	दत्त्वा	८. देकर
भूम्याः	३. पृथ्वी के द्वारा	अभयम्	७. अभयदान
अर्थितः	५. प्रार्थना किये जाने पर	भौमगृहम्	११. भौमासुर के घर में
वाग्भि	४. वाणी से	प्राविशत्	१२. प्रवेश किया
भगवान्	६. भगवान् ने	सकल	९. समस्त
भक्तिनम्रया ।	२. भक्तिभाव से विनम्र	ऋद्धिमत् ॥	१०. सम्पत्तियों से युक्त

श्लोकार्थ—इस प्रकार भक्तिभाव से विनम्र पृथ्वी के द्वारा वाणी से प्रार्थना किये जाने पर भगवान् ने अभय दान देकर समस्त सम्पत्तियों से युक्त भौमासुर के घर में प्रवेश किया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तत्र राजन्यकन्यानां षट्सहस्राधिकायुतम् ।
भौमाहृतानां विक्रम्य राजभ्यो ददृशे हरिः ॥३३॥

पदच्छेद— तत्र राजन्य कन्यानाम् षट्सहस्र अधिक आयुतम् ।
भौम आहृतानाम् विक्रम्य राजभ्यः ददृशे हरिः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. वहाँ	भौम	९. भौमासुर ने
राजन्य	५. राज	आहृतानाम्	१२. छीन लिया था
कन्यानाम्	६. कुमारियों को	विक्रम्य	११. बल पूर्वक
षट्सहस्र	२. छः हजार	राजभ्यः	१०. राजाओं से
अधिक	४. अधिक सोलह हजार	ददृशे	८. देखा जिन्हें
अयुतम् ।	३. दस हजार से	हरिः ॥	७. श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—वहाँ छः हजार, दस हजार से अधिक अर्थात् (सोलह हजार) राजकुमारियों को श्रीकृष्ण ने देखा । जिन्हें भौमासुर ने राजाओं से बलपूर्वक छीन लिया था ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तं प्रविष्टं स्त्रियो वीक्ष्य नरवीरं विमोहिताः ।
मनसा वव्रिरेऽभीष्टं पतिं दैवोपसादितम् ॥३४॥

पदच्छेद— तम् प्रविष्टम् स्त्रियः वीक्ष्य नरवीरम् विमोहिताः ।
मनसा वव्रिरे अभीष्टम् पतिम् दैव उपसादितम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	२. उन	मनसा	११. मन ही मन
प्रविष्टम्	१. अन्तःपुर में पधारे हुये	वव्रिरे	१२. वरण कर लिया
स्त्रियः	५. स्त्रियाँ	अभीष्टम्	९. अपने अभीष्ट
वीक्ष्य	४. देखकर	पतिम्	१०. पति के रूप में
नरवीरम्	३. नर श्रेष्ठ भगवान् को	दैव	७. उन्होंने भाग्य से
विमोहिताः ।	६. अति मोहित हो गईं	उपसादितम् ॥	८. प्राप्त उनको

श्लोकार्थ—अन्तःपुर में पधारे हुये उन नर श्रेष्ठ भगवान् को देखकर स्त्रियाँ अति मोहित हो गईं । उन्होंने भाग्य से प्राप्त उनको अपने अभीष्ट पति के रूप में वरण कर लिया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

भूयात् पतिरयं मह्यं धाता तदनुमोदताम् ।
इति सर्वाः पृथक् कृष्णे भावेन हृदयं दधुः ॥३५॥

पदच्छेद—　भूयात् पतिः अयम् मह्यम् धाता तत् अनुमोदताम् ।
इति सर्वाः पृथक् कृष्णे भावेन हृदयम् दधुः ॥

शब्दार्थ—

भूयात्	४.	हों	इति	८.	इस प्रकार
पतिः	३.	पति	सर्वाः	९.	सभी स्त्रियों ने
अयम्	१.	ये	पृथक्	११.	अलग-अलग
मह्यम्	२.	मेरे	कृष्णे	१०.	श्रीकृष्ण के प्रति
धाता	५.	विधाता	भावेन	१२.	प्रेमभाव से
तत्	६.	इसका	हृदयम्	१३.	अपना हृदय
अनुमोदताम् ।	७.	अनुमोदन करें	दधुः ॥	१४.	निछावर कर दिया

श्लोकार्थ—ये मेरे पति हों, विधाता इसका अनुमोदन करें। इस प्रकार सभी स्त्रियों ने श्रीकृष्ण के प्रति प्रेमभाव से अपना हृदय निछावर कर दिया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

ताः प्राहिणोद् द्वारवतीं सुमृष्टविरजोऽम्बराः ।
नरयानैर्महाकोशान् रथाश्वान् द्रविणं महत् ॥३६॥

पदच्छेद—　ताः प्रहिणोद् द्वारवतीम् सुमृष्ट विरजः अम्बराः ।
नरयानैः महाकोशान् रथआश्वान् द्रविणम् महत् ॥

शब्दार्थ—

ताः	१.	श्रीकृष्ण ने उन राजकुमारियों को	नरयानैः	५.	पालकियों से
प्राहिणोद्	७.	भेज दिया (उनके साथ)	महाकोशान्	८.	बहुत से खजाने
द्वारवतीम्	६.	द्वारका	रथाश्वान्	९.	रथ, घोड़े और
सुमृष्ट	२.	सुन्दर-सुन्दर	द्रविणम्	११.	सम्पत्ति भी भेजी
विरजः	३.	निर्मल	महत् ॥	१०.	अतुल
अम्बराः ।	४.	वस्त्राभूषण पहना कर			

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने उन राजकुमारियों को सुन्दर-सुन्दर निर्मल वस्त्र पहिनाकर पालकियों से द्वारका भेज दिया। उनके साथ बहुत खजाने, रथ, घोड़े और अतुल सम्पत्ति भी भेजी ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ऐरावतकुलेभांश्च चतुर्दन्तांस्तरस्विनः ।
पाण्डुरांश्च चतुःषष्टिं प्रेषयामास केशवः ॥३७॥

पदच्छेद— ऐरावतकुल इभान् च चतुर्दन्तान् तरस्विनः ।
पाण्डुरान् च चतुःषष्टिम् प्रेषयामास केशवः ॥

शब्दार्थ—

ऐरावतकुल	१. ऐरावत के वंश में उत्पन्न	पाण्डुरान्	५. सफेद रंग के
इभान्	७. हाथी	च	४. और
च	८. भी	चतुःषष्टिम्	६. चौंसठ
चतुर्दन्ताम्	३. चार-चार दाँतों वाले	प्रेषयामास	१०. भेजे
तरस्विनः ।	२. अत्यन्त वेगवान्	केशवः ॥	९. भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—ऐरावत के वंश में उत्पन्न, अत्यन्त वेगवान्, चार-चार दांतों वाले और सफेद रंग के चौंसठ हाथी भी भगवान् श्रीकृष्ण ने भेजे ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

गत्वा सुरेन्द्रभवनं दत्त्वादित्यै च कुण्डले ।
पूजितस्त्रिदशेन्द्रेण सहेन्द्राण्या च सप्रियः ॥३८॥

पदच्छेद— गत्वा सुरेन्द्र भवनम् दत्त्वा अदित्यै च कुण्डले ।
पूजितः त्रिदशइन्द्रेण सहइन्द्राण्या च सप्रियः ॥

शब्दार्थ—

गत्वा	३. जाकर	च	४. और
सुरेन्द्र	१. देवराज के	कुण्डले	६. कुण्डल
भवनम्	२. भवन में	पूजितः	११. पूजित हुये
दत्त्वा	७. देकर	त्रिदशइन्द्रेण	९. इन्द्र के द्वारा
अदित्यै ।	५. अदिति को	सहइन्द्राण्या	८. इन्द्राणी सहित
		च सप्रियः ॥	१०. सत्यभामा सहित श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—देवराज के भवन में जाकर और आदित को कुण्डल देकर इन्द्राणी सहित इन्द्र के द्वारा सत्यभामा सहित श्रीकृष्ण पूजित हुये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

चोदितो भार्ययोत्पाट्य पारिजातं गरुत्मति ।
आरोप्य सेन्द्रान् विबुधान् निर्जित्योपानयत् पुरम् ॥३९॥

पदच्छेद— चोदितः भार्यया उत्पाट्य पारिजातम् गरुत्मति ।
आरोप्य सइन्द्रान् विबुधान् निर्जित्य उपानयत् पुरम् ॥

शब्दार्थ—

चोदितः	२.	कहने पर (श्रीकृष्ण ने)	आरोप्य	६.	रख कर
भार्यया	१.	पत्नी सत्यभामा के	सइन्द्रान्	७.	इन्द्र सहित
उत्पाट्य	४.	उखाड़ कर	विबुधान्	८.	देवताओं को
पारिजातम्	३.	कल्पवृक्ष को	निर्जित्य	९.	जीत कर
गरुत्मति ।	५.	गरुड पर	उपानयत्	११.	ले आये
			पुरम् ॥	१०.	द्वारका में

श्लोकार्थ— पत्नी सत्यभामा के कहने पर श्रीकृष्ण ने कल्प वृक्ष को उखाड़ कर गरुड पर रख कर इन्द्र सहित देवताओं को जीत कर द्वारका में ले आये ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

स्थापितां सत्यभामाया गृहोद्यानोपशोभनः ।
अन्वगुर्भ्रमराः स्वर्गात् तद्गन्धासवलम्पटाः ॥४०॥

पदच्छेद— स्थापितां सत्यभामायाः गृह उद्यान उपशोभनः ।
अन्वगुः भ्रमराः स्वर्गात् तत्गन्ध आसव लम्पटाः ॥

शब्दार्थ—

स्थापितः	५.	लगा दिया	अन्वगुः	१०.	द्वारका चले आये
सत्यभामायाः	१.	सत्यभामा के	भ्रमराः	९.	भौंरे
गृह	२.	महल के	स्वर्गात् तत्गन्ध	६.	स्वर्ग से उसकी गन्ध और
उद्यान	३.	बगीचे में	आसव	७.	मकरन्द के
उपशोभनः ।	४.	शोभाशाली कल्पवृक्ष को	लम्पटाः ॥	८.	लोभी

श्लोकार्थ— श्रीकृष्ण ने सत्यभामा के महल के बगीचे में शोभाशाली कल्पवृक्ष को लगा दिया । स्वर्ग से उसकी गन्ध और मकरन्द के लोभी भौंरे द्वारका चले आये ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

यथाच आनम्य किरीटकोटिभिः पादौ स्पृशन्नच्युतमर्थसाधनम् ।
सिद्धार्थ एतेन विगृह्यते महानहोसुराणां च तमो धिगाढ्यताम् ॥४१॥

पदच्छेद— यथाचे आनम्य किरीट कोटिभिः पादौ स्पृशन् अच्युतम् अर्थ साधनम् ।
सिद्धार्थ एतेन विगृह्यते महान् अहोसुराणाम् च तमः धिग् आढ्यताम् ॥

शब्दार्थ—

यथा च	७. सहायता याचना की थी	सिद्धार्थ	८.	काम निकल जाने पर
आनम्य	१. (इन्द्र ने) सिर झुकाकर	एतेन	९.	उन्होंने
किरीट कोटिभिः	२. मुकुट की नोकों से	विगृह्यते महान्	१०.	श्रीकृष्ण से वैर कर लिया
पादौ स्पृशन्	६. चरणों का स्पर्श करते हुए	अहोसुराणाम्	११.	अहो देवताओं का
अच्युतम्	५ श्रीकृष्ण के	च तमः	१२.	भी कैसा तमोगुण है उनकी
अर्थ	३. प्रयोजन	धिग्	१४.	धिक्कार है
साधनम् ।	४. सिद्ध करने के लिए	आढ्यताम् ॥	१३.	धनाढ्यता को

श्लोकार्थ—इन्द्र ने सिर झुकाकर मुकुट की नोकों से प्रयोजन सिद्ध करने के लिये श्रीकृष्ण के चरणों का स्पर्श करते हुए सहायता । की काम निकल जाने पर उन्होंने श्रीकृष्ण से वैर कर लिया । अहो देवताओं का भी कैसा तमोगुण है । उनकी धनाढ्यता को धिक्कार है ।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

अथो मुहूर्त एकस्मिन् नानागारेषु ताः स्त्रियः ।
यथोपयेमे भगवांस्तावद्रूपधरोऽव्ययः ॥४२॥

पदच्छेद— अथो मुहूर्ते एकस्मिन् नानागारेषु ताः स्त्रियः ।
यथा उपयेमे भगवान् तावद्रूपधरः अव्ययः ॥

शब्दार्थ—

अथो	१. तदनन्तर	स्त्रियः ।	१०.	स्त्रियों से
मुहूर्ते	३. मुहुर्त में	यथा	११.	जिस प्रकार
एकस्मिन्	२. एक ही	उपयेमे	१२.	विवाह किया (उसे कहिये)
नाना	४. अनेक	भगवान्	८.	भगवान् ने
आगारेषु	५. भवनों में	तावद्रूपधरः	६.	उतने रूप धारण करके
ताः	९ उन	अव्ययः ॥	७.	अविनाशी

श्लोकार्थ—तदनन्तर एक ही मुहूर्त में अनेक भवनों में उतने रूप धारण करके अविनाशी भगवान् ने उन स्त्रियों से जिस प्रकार विवाह किया उसे कहिये ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

गृहेषु तासामनपाय्यतर्क्यकृन्निरस्तसाम्यातिशयेष्ववस्थितः ।
रेमे रमाभिर्निजकामसंप्लुतो यथेतरो गार्हकमेधिकांश्चरन् ॥४३॥

पदच्छेद— गृहेषु तासाम् अनपायि अतर्क्यकृत् निरस्त साम्यअतिशयेषु अवस्थितः ।
रेमे रमाभिः निजकाम संप्लुतः यथाइतरः गार्हकम् अधिकान् चरन् ॥

शब्दार्थ— गृहेषु	५.	भवनों में	रेमे	१०.	वैसे ही रमण करते थे
तासाम्	१.	उन पत्नियों के	रमाभिः	९.	उन रमणियों के साथ
अनपायि	५.	निर्दोष	निजकाम	७.	आत्मानन्द में
अतर्क्यकृत्	६.	मति-गति से परे की लीला करने वाले	संप्लुतः	८.	मग्न रहने वाले भगवान्
निरस्त	४.	परे	यथाइतरः	११.	जैसे साधारण मनुष्य
साम्यअतिशयेषु	२.	समता एवम्	गार्हकम्	१२.	घर गृहस्थी में रहकर
अवस्थितः ।	६.	अवस्थित होकर	अधिकान्	१३.	गृहस्थ धर्म के अनुसार
			चरन् ॥	१४.	आचरण करता है

श्लोकार्थ—उन पत्नियों के समता एवम् अधिकता से परे भवनों में अवस्थित होकर निर्दोष, मति-गति से परे लीला करने वाले, आत्मानन्द में मग्न रहने वाले भगवान् उन रमणियों के साथ वैसे ही रमण करते थे जैसे साधारण मनुष्य घर-गृहस्थी में रहकर गृहस्थ धर्म के अनुसार आचरण करता है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्थं रमापतिमवाप्य पतिं स्त्रियस्ता ब्रह्मादयोऽपि न विदुः पदवीं यदीयाम् ।
भेजुर्मुदाविरतमेधितयानुरागहासावलोकनवसङ्गमजल्पलज्जाः ॥४४॥

पदच्छेद—इत्थम् रमापतिम् अवाप्य पतिम् स्त्रियः ताः ब्रह्मा आदयः अपि न विदुः पदवीम् यदीयाम् ।
भेजुः मुदा अविरतम् एधितया अनुराग हास अवलोक नव सङ्गम जल्प लज्जाः ॥

शब्दार्थ—इत्थम्	७.	इस प्रकार	भेजुः	१६.	सेवा करती थीं
रमापतिम्	५.	लक्ष्मी पति को	मुदा	११.	आनन्द से
अवाप्यपतिम्	८.	पाकर पति रूप में	अविरतम्	९.	निरन्तर
स्त्रियः ताः	६.	वे स्त्रियाँ	एधितया	१०.	बढ़ते हुये
ब्रह्मा आदयः	३.	ब्रह्मा आदि	अनुराग	१२.	प्रेम
अपि न विदुः	४.	भी नहीं जानते हैं उन	हास अवलोक	१३.	हास चितवन
पदवीम्	२.	मार्ग को	नव सङ्गम	१४.	नव समागम
यदीयाम् ।	१.	जिनकी प्राप्ति के	जल्पलज्जाः ॥	१५.	वार्ता तथा लज्जा से युक्त होकर

श्लोकार्थ—जिनकी प्राप्ति के मार्ग को ब्रह्मा आदि भी नहीं जानते हैं, उन लक्ष्मी पति को वे स्त्रियाँ इस प्रकार पति के रूप में पाकर निरन्तर बढ़ते हुये आनन्द से प्रेम हास, चितवन, नव समागम वार्ता तथा लज्जा से युक्त होकर सेवा करती रहती थीं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

प्रत्युद्गमासनवरार्हणपादशौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ।

केशप्रसारशयनस्नपनोपहार्यैर्दासीशता अपि विभोर्विदधुः स्म दास्यम् ॥४५॥

पदच्छेद—

प्रत्युद्गम आसनवर अर्हण पादशौच ताम्बूल विश्रमण वीजन गन्ध माल्यैः ।

केश प्रसार शयन स्नपन उपहार्यैः दासीशता अपि विभोः विदधुः स्म दास्यम् ॥

शब्दार्थ--

प्रत्युगम	३.	अगवानी करना	केश प्रसार	११.	केश संवारना
आसनवर	४.	उत्तम आसन पर बैठाना	शयनस्नपन	१२.	सुलाना स्नान कराना
अर्हण	५.	पूजन करना	उपहार्यैः	१३.	अनेक प्रकार के भोजन कराना
पादशौच	६.	चरणों को धोना	दासीशता	१.	सैकड़ों दासियों के रहने पर
ताम्बूल	७.	पान खिलाना	अपि	२.	भी वे रानियाँ
विश्रमण	८.	थकान मिटाना	विभोः	१४.	भगवान् की
वीजन	९.	पंखा झलना	विदधुः स्म	१६.	किया करती थीं
गन्धमाल्यैः ।	१०.	सुगन्धित माला पहिनाना	दास्यम्	१५.	सेवा

श्लोकार्थ—

हे राजन् ! सैकड़ों दासियों के रहने पर भी वे रानियाँ अगवानी करना, उत्तम आसन पर बैठाना, पूजन करना, चरणों को धोना, पान खिलाना, थकान मिटाना, पंखा झलना, सुगन्धित माला पहिनाना, केश संवारना, सुलाना, स्नान कराना, अनेक प्रकार के भोजन कराना इत्यादि से भगवान् की सेवा किया करतीं थीं ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे पारिजातहरणनरकवधो नाम एकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥५९॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—कर्हिचित् सुखमासीनं स्वतल्पस्थं जगद्गुरुम् ।
पतिं पर्यचरद् भैष्मी व्यजनेन सखीजनैः ॥१॥

पदच्छेद— कर्हिचित् सुखम् आसीनम् स्वतल्पस्थम् जगद् गुरुम् ।
पतिम् पर्यचरत् भैष्मी व्यजनेन सखीजनैः ॥

शब्दार्थ—

कर्हिचित्	१.	किसी समय	पतिम्	६.	श्रीकृष्ण की
सुखम्	३.	सुखपूर्वक	पर्यचरत्	१०.	सेवा कर रही थीं
आसीनम्	४.	बैठे हुये	भैष्मी	७.	रुक्मिणी जी
स्वतल्पस्थम्	२.	पलंग पर	व्यजनेन	६.	पंखाझलकर
जगद् गुरुम् ।	५.	संसार के गुरु	सखीजनैः ॥	८.	सखियों के साथ

श्लोकार्थ—किसी समय पलंग पर सुख पूर्वक बैठे हुये संसार के गुरु श्रीकृष्ण की रुक्मिणी जी सखियों के साथ सेवा कर रही थीं ॥

द्वितीयः श्लोकः

यस्त्वेतल्लीलया विश्वं सृजत्यत्त्यवतीश्वरः ।
स हि जातः स्वसेतूनां गोपीथाय यदुष्वजः ॥२॥

पदच्छेद— यः तु एतत् लीलया विश्वम् सृजति अत्ति अवति ईश्वरः ।
स हि जातः स्वसेतूनाम् गोपीथाय यदुषु अजः ॥

शब्दार्थ—

यः तु	१.	जो	सः हि	८.	वे ही
एतत्	४.	इस	जातः	१४.	अवतीर्ण हुये हैं
लीलया	३.	खेल-खेल में ही	स्व	१०.	अपनी
विश्वम्	५.	संसार की	सेतूनाम्	११.	धर्म मर्यादाओं की
सृजति	६.	सृष्टि	गोपीथाय	१२.	रक्षा के लिये
अत्तिअवनि	७	पालन और संसार करते हैं	यदुषु	१३.	यदुवंशियों में
ईश्वरः ।	२.	ईश्वर	अजः ॥	६.	अजन्मा

श्लोकार्थ—जो ईश्वर खेल-खेल में ही इस संसार की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं। वे ही अजन्मा अपनी धर्म-मर्यादाओं की रक्षा के लिये यदुवंशियों में अवतीर्ण हुये हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

तस्मिन्नन्तर्गृहे भ्राजन्मुक्तादामविलम्बिना ।
विराजिते वितानेन दीपैर्मणिमयैरपि ॥३॥

पदच्छेद— तस्मिन् अन्तर्गृहे भ्राजन् मुक्तादाम विलम्बिना ।
विराजिते वितानेन दीपैः मणिमयैः अपि ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	उस	विराजिते	२.	शोभायमान
अन्तर्गृहे	३.	भीतरी महल में	वितानेन	४.	चँदोवे तने हुये थे
भ्राजन्	५.	चमकते हुये	दीपैः	६.	दीपक
मुक्तादाम	६.	मोतियों की झालर	मणिमयैः	८.	और वहाँ मणियों के
विलम्बिना ।	७.	लटक रही थी	अपि ॥	१०.	भी जगमगा रहे थे

श्लोकार्थ—उस शोभायमान भीतरी महल में चँदोवे तने हुये थे जिन में चमकते हुये मोतियों की झालरें लटक रही थीं । और वहाँ मणियों के दीपक भी जगमगा रहे थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

मल्लिकादामभिः पुष्पैर्द्विरेफकुलनादितैः ।
जालरन्ध्रप्रविष्टैश्च गोभिश्चन्द्रमसोऽमलैः ॥४॥

पदच्छेद— मल्लिका दामभिः पुष्पैः द्विरेफ कुलनादितैः ।
जालरन्ध्र प्रविष्टैः च गोभिः चन्द्रमसः अमलैः ॥

शब्दार्थ—

मल्लिका	४.	बेला चमेली के	जाल	८.	झरोखें की जालियों के
दामभिः	५.	हार और	रन्ध्र	६.	छेद से
पुष्पैः	६.	फूल महक रहे थे	प्रविष्टैः	१०.	प्रविष्ट
द्विरेफ	१.	भौंरों के	च	७.	तथा
कुल	२.	झुन्ड से	गोभिः	१३.	किरणें छिटक रही थी
नादितैः ।	३.	शब्दायमान	चन्द्रमसः	११.	चन्द्रमा की
			अमलैः ॥	१२.	शुभ्र

श्लोकार्थ—भौंरों के झुन्ड से शब्दायमान बेला-चमेली के हार और फूल महक रहे थे । तथा झरोखों की जालियों के छेद से प्रविष्ट चन्द्रमा की शुभ्र किरणें छिटक रही थीं ॥

पञ्चमः श्लोकः

पारिजातवनामोदवायुनोद्यानशालिना ।
धूपैरगुरुजै राजन् जालरन्ध्रविनिर्गतैः ॥५॥

पदच्छेद— पारिजात वन आमोद वायुना उद्यान शालिना ।
धूपैः अगुरुजैः राजन् जाल रन्ध्र विनिर्गतैः ॥

शब्दार्थ—

पारिजात	४.	कल्पवृक्ष के	धूपैः	६.	धूप
वन	५.	वन के	अगुरुजैः	८.	अगर के
आमोद	६.	सुगन्ध से युक्त	राजन्	१.	हे राजन् !
वायुना/	७.	वायु बह रहा था	जाल	१०.	जालियों के
उद्यान	२.	उद्यान में	रन्ध्र	११.	छेद से
शालिना ।	३.	शोभायमान	विनिर्गतैः ॥	१२.	निकल रहे थे

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उद्यान में शोभायमान कल्पवृक्ष के वन के सुगन्ध से युक्त वायु बह रहा था । अगर के धूप जालियों के छेद से निकल रहे थे ॥

षष्ठः श्लोकः

पयःफेननिभे शुभ्रे पर्यङ्के कशिपूत्तमे ।
उपतस्थे सुखासीनं जगतामीश्वरं पतिम् ॥६॥

पदच्छेद— पयः फेन निभे शुभ्रे पर्यङ्के कशिपु उत्तमे ।
उपतस्थे सुख आसीनम् जगताम् ईश्वरम् पतिम् ॥

शब्दार्थ—

पयः	१.	दूध के	उपतस्थे	१२.	उनकी सेवा कर रही थीं
फेन	२.	फेन के	सुख	७.	सुख पूर्वक
निभे	३.	समान	आसीनम्	८.	बैठे हुये
शुभ्रे	४.	उज्ज्वल और	जगताम्	९.	त्रिलोकी के
पर्यङ्के	६.	पलंग पर	ईश्वरम्	१०.	स्वामी को
कशिपु उत्तमे ।	५.	उत्तम बिछौनों से युक्त	पतिम् ॥	११.	पति के रूप में पाकर (रुक्मिणी)

श्लोकार्थ—दूध के फेन के समान उज्ज्वल और उत्तम बिछौने से युक्त पलंग पर सुख पूर्वक बैठे हुये त्रिलोकी के स्वामी को पति रूप में पाकर रुक्मिणी उनकी सेवा कर रही थीं ॥

सप्तमः श्लोकः

बालव्यजनमादाय रत्नदण्डं सखीकरात् ।
तेन वीजयती देवी उपासाञ्चक्र ईश्वरम् ॥७॥

पदच्छेद— बालव्यजनम् आदाय रत्न दण्डम् सखी करात् ।
तेन वीजयती देवी उपासान् चक्रे ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

बालव्यजनम्	३.	चँवर	तेन	७.	उस से
आदाय	६.	लेकर	वीजयती	८.	पंखा झलती हुई
रत्न	१.	रत्नों की	देवी	९.	रुक्मिणी देवी
दण्डम्	२.	डाँड़ी से युक्त	उपासान्	११.	सेवा
सखी	४.	सखी के	चक्रे	१२.	करने लगीं
करात् ।	५.	हाथ से	ईश्वरम् ॥	१०.	श्रीकृष्ण की

श्लोकार्थ—रत्नों की डांड़ी से युक्त चँवर सखी के हाथ से लेकर उससे पंखा झलती हुई रुक्मिणी देवी श्रीकृष्ण की सेवा करने लगीं ॥

अष्टमः श्लोकः

सोपाच्युतं क्वणयती मणिनूपुराभ्यां रेजेऽङ्गुलीयवलयव्यजनाग्रहस्ता ।
वस्त्रान्तगूढकुचकुङ्कुमशोणहारभासा नितम्बधृतया च परार्ध्यकाञ्च्या ॥८॥

पदच्छेद—स उपअच्युतम् क्वणयती मणिनूपुराभ्याम् रेजे अङ्गुलीय वलय व्यजन अग्रहस्ता ।
वस्त्रान्त गूढ कुचकुङ्कुम शोणहारभासा नितम्ब धृतया च परार्ध्यं काञ्च्या ॥

शब्दार्थ—

सः	४.	वह	वस्त्रान्त	८.	आँचल के नीचे
उपअच्युतम्	२.	श्रीकृष्ण के समीप	गूढ	९.	छिपे हुये
क्वणयती	३.	शब्द करती हुई	कुचकुङ्कुम	१०.	स्तनों के कुङ्कुम से
मणिनूपुराभ्याम्	१.	मणिनिर्मित नूपरों से	शोणहार भासा	११.	लाल बने हुये हार की कान्ति से
रेजे	६.	शोभा पा रहीं थीं	नितम्ब	१२.	कमर में
अङ्गुलीय वलय	६.	अंगूठी, कंगन और	धृतया च	१३.	धारण की गई
व्यजन	७.	चँवर से तथा	परार्ध्य	१४.	बहुमूल्य
अग्रहस्ता ।	५.	हाथों में	काञ्च्या ॥	१५.	करधनी से

श्लोकार्थ—मणि निर्मित नूपरों से श्रीकृष्ण के समीप शब्द करती हुई वह हाथों में अंगूठी, कंगन और चँवर से, तथा आंचल के नीचे छिपे हुये स्तनों के कुंकुम से लाल बने हुये हार की कान्ति से कमर में धारण की गई बहुमूल्य करधनी से शोभा पा रही थीं ॥

नवमः श्लोकः

तां रूपिणीं श्रियमनन्यगतिं निरीक्ष्य या लीलया धृततनोरनुरूपरूपा ।

प्रीतः स्मयन्नलककुण्डलनिष्ककण्ठवक्त्रोल्लसत्स्मितसुधां हरिराबभाषे ॥९॥

पदच्छेद— ताम् रूपिणीम् श्रियम् अनन्यगतिम् निरीक्ष्य या लीलया धृत तनोः अनुरूपरूपा ।
प्रीतः स्मयन् अलक कुण्डल निष्ककण्ठ वक्त्र उल्लसत् स्मित सुधाम् हरिःआबभाषे ॥

शब्दार्थ—

ताम्	५. उस	प्रीतः स्मयन्	९. प्रसन्न होकर मुसकराते हुये
रूपिणीम् श्रियम्	६. सुन्दरी लक्ष्मी को	अलक कुण्डल	१०. घुंघराले बाल-कुण्डल तथा
अनन्यगतिम्	७. श्रीकृष्ण परायण	निष्ककण्ठ	११. गले में स्वर्ण हार से शोभित
निरीक्ष्य	८. देख कर	वक्त्र	१२. मुख से
या लीलया	१. जिसने लीला के लिये	उल्लसत्	१४. करती हुई रुक्मिणी से
धृत	३. धारण करने वाले श्रीकृष्ण के	स्मित सुधाम्	१३. मुसकराहट की अमृत वर्षा
तनोः	२. शरीर	हरिः	१५. श्रीकृष्ण ने
अनुरूपरूपा ।	४. अनुरूप रूप प्रकट किया था	आबभाषे ॥	१६. कहा

श्लोकार्थ—जिसने लीला के लिये शरीर धारण करने वाले श्रीकृष्ण के अनुरूप रूप प्रकट किया था उस सुन्दरी लक्ष्मी को श्रीकृष्ण परायण देख कर प्रसन्न होकर मुसकराते हुये श्रीकृष्ण ने घुंघराले बाल, कुण्डल तथा गले में स्वर्णहार से शोभित मुख से मुसकराहट की अमृत वर्षा करती हुई रुक्मिणी से कहा ॥

दशमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच— राजपुत्रीप्सिता भूपैर्लोकपालविभूतिभिः ।

महानुभावैः श्रीमद्भी रूपौदार्यबलोर्जितैः ॥१०॥

पदच्छेद— राजपुत्री ईप्सिता भूपैः लोकपाल विभूतिभिः ।
महानुभावैः श्रीमद्भिः रूप औदार्य बल उर्जितैः ॥

शब्दार्थ—

राजपुत्री	१. हे राजकुमारी !	महानुभावैः	४. प्रभावशाली
ईप्सिता	१०. तुम्हें चाहते थे	श्रीमद्भिः	५. सम्पत्ति शाली
भूपैः	९. राजा लोग	रूप औदार्य	६. एवम् सुन्दरता, उदारता
लोकपाल	२. लोकपालों के समान	बल	७. और बल में भी
विभूतिभिः ।	३. ऐश्वर्यशाली	उर्जितैः ॥	८. आगे बढ़े हुये

श्लोकार्थ—हे राजकुमारी ! लोकपालों के समान ऐश्वर्यशाली, प्रभावशाली, सम्पत्तिशाली एवम् सुन्दरता, उदारता और बल में भी आगे बढ़े हुये राजालोग तुम्हें चाहते थे ॥

एकादशः श्लोकः

तान् प्राप्तानर्थिनो हित्वा चैद्यादीन् स्मरदुर्मदान् ।
दत्ता भ्रात्रा स्वपित्रा च कस्मान्नो ववृषेऽसमान् ॥११॥

पदच्छेद— तान् प्राप्तान् अर्थिनः हित्वा चैद्य आदीन् स्मर दुर्मदान् ।
दत्ता भ्रात्रा स्वपित्रा च हित्वा कस्मात् नः ववृषे असमान् ॥

शब्दार्थ—

तान्	२.	उन	दत्ता	६.	उन्हें दी गई तुमने
प्राप्तान्	४.	आये हुये	भ्रात्रा	८.	भाई के द्वारा
अर्थिनः	३.	प्राप्त करने के लिये	स्वपित्रा च	७.	अपने पिता और
हित्वा	६.	त्याग कर	कस्मात्	१२.	क्यों
चैद्य आदीन्	५.	शिशुपाल आदि को	नः	१०.	मुझे
स्मर दुर्मदान् ।	१.	काम से उन्मत्त	ववृषे	१३.	वरण किया
			असमान् ॥	११.	जो अपने समान नहीं है

श्लोकार्थ—काम से उन्मत्त उन प्राप्त करने के लिये आये हुये शिशुपाल आदि को त्याग कर अपने पिता और भाई के द्वारा दी गई तुमने मुझे, जो अपने समान नहीं है, क्यों वरण किया ।

द्वादशः श्लोकः

राजभ्यो बिभ्यतः सुभ्रूः समुद्रं शरणं गतान् ।
बलवद्भिः कृतद्वेषान् प्रायस्त्यक्तनृपासनान् ॥१२॥

पदच्छेद— राजभ्यः बिभ्यतः सुभ्रूः समुद्रम् शरणम् गतान् ।
बलवद्भिः कृत द्वेषान् प्रायः त्यक्त नृपआसनान् ।

शब्दार्थ—

राजभ्यः	२.	राजाओं से	बलवद्भिः	७.	बलवानों से
बिभ्यतः	३.	डर कर	कृत	९.	करने वाले (हम तो)
सुभ्रूः	१.	हे सुन्दरी !	द्वेषान्	८.	द्वेष
समुद्रम्	४	समुद्र की	प्रायः	१०.	प्रायः
शरणम्	५.	शरण में	त्यक्त	१२.	वञ्चित ही हैं
गतान् ।	६.	आ बसे हुये तथा	नृपआसनान् ॥	११.	राज-सिंहासन से भी

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! राजाओं से डर कर समुद्र की शरण में आ बसे हुये तथा बलवानों से द्वेष करने वाले हम तो प्रायः राजसिंहासन से भी वञ्चित ही हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अस्पष्टवर्त्मनां पुंसामलोकपथमीयुषाम् ।
आस्थिताः पदवीं सुभ्रू: प्रायः सीदन्ति योषितः ॥१३॥

पदच्छेद— अस्पष्ट वर्त्मनाम् पुंसाम् अलोक पथम् ईयुषाम् ।
आस्थिताः पदवीम् सुभ्रू: प्रायः सीदन्ति योषितः ॥

शब्दार्थ—

अस्पष्ट	२.	अस्पष्ट	आस्थिताः	९.	चलने वाली
वर्त्मनाम्	३.	मार्ग वाले और	पदवीम्	८.	मार्ग पर
पुंसाम्	७.	पुरुषों के	सुभ्रू:	१.	हे सुन्दरी !
अलोक	४.	लौकिक	प्रायः	११.	प्रायः
पथम्	५.	व्यवहार का पालन	सीदन्ति	१२.	दुःख भोगती हैं
ईयुषाम् ।	६.	न करने वाले	योषितः ॥	१०.	स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! अस्पष्ट मार्ग वाले और लौकिक व्यवहार का पालन न करने वाले पुरुषों के मार्ग पर चलने वाली स्त्रियाँ प्रायः दुःख भोगती हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

निष्किञ्चना वयं शश्वन्निष्किञ्चनजनप्रियाः ।
तस्मात् प्रायेण न ह्याढ्या मां भजन्ति सुमध्यमे ॥१४॥

पदच्छेद— निष्किञ्चनाः वयम् शश्वत् निष्किञ्चन जन प्रियाः ।
तस्मात् प्रायेण नहि आढ्याः माम् भजन्ति सुमध्यमे ॥

शब्दार्थ—

निष्किञ्चनाः	४.	अकिञ्चन हैं और	तस्मात्	८.	इसलिये
वयम्	२.	हम तो	प्रायेण	१०.	प्रायः
शश्वत्	३.	सदा के	नहि	१२.	नहीं
निष्किञ्चन	५.	अकिञ्चन	आढ्याः	९.	धनी-मानी लोग
जन	६.	लोग ही	माम्	११.	मुझसे
प्रियाः ।	७.	हमें प्रिय हैं	भजन्ति	१३.	प्रेम करते हैं
			सुमध्यमे ॥	१.	हे सुन्दरी !

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! हम तो सदा के अकिञ्चन हैं और अकिञ्चन लोग ही हमें प्रि
इसलिये धनी-मानी लोग प्रायः मुझसे प्रेम नहीं करते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ययोरात्मसमं वित्तं जन्मैश्वर्याकृतिर्भवः ।
तयोर्विवाहो मैत्री च नोत्तमाधमयोः क्वचित् ॥१५॥

पदच्छेद— ययोः आत्मसमम् वित्तम् जन्म ऐश्वर्यं आकृतिः भवः ।
तयोः विवाहः मैत्री च न उत्तम अधमयोः क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

यथोः	१. जिन दोनों का	तयोः	७. उन्हीं दोनों में
आत्मसमम्	६. अपने समान होते हैं	विवाहः	८. विवाह और
वित्तम्	२. धन	मैत्री च	९. मित्रता होनी चाहिये
जन्म ऐश्वर्य	३. कुल ऐश्वर्य	न	१३. नहीं (होनी चाहिये)
आकृतिः	४. सौन्दर्य और	उत्तमः	१०. श्रेष्ठ और
भवः ।	५. जन्म	अधमयोः	११. अधम में
		क्वचित् ॥	१२. कहीं

श्लोकार्थ—जिन दोनों का धन, कुल, ऐश्वर्य, सौन्दर्य और जन्म अपने समान होते हैं। उन्हीं दोनों में विवाह और मित्रता होनी चाहिये। श्रेष्ठ और अधम में कहीं नहीं होनी चाहिये ॥

षोडशः श्लोकः

वैदर्भ्येतदविज्ञाय त्वयादीर्घसमीक्षया ।
वृता वयं गुणैर्हीना भिक्षुभिः श्लाघिता मुधा ॥१६॥

पदच्छेद— वैदर्भि एतद् अविज्ञाय त्वया अदीर्घ समीक्षया ।
वृताः वयम् गुणैः हीनाः भिक्षुभिः श्लाघिताः मुधा ॥

शब्दार्थ—

वैदर्भि	१. विदर्भ राजकुमारी	वृताः	१३. वरण कर लिया
एतद्	२. इस बात को	वयम्	१२. हमारा
अविज्ञाय	३. बिना जाने बूझे	गुणैः	९. गुणों से
त्वया	६. तुमने	हीनाः	१०. हीन
अदीर्घ	४. दूर तक	भिक्षुभिः	७. भिक्षुकों से
समीक्षया ।	५. न सोचने वाली	श्लाघिताः	८. प्रशंसित (किन्तु)
		मुधा ॥	११. व्यर्थ ही

श्लोकार्थ—विदर्भ-राजकुमारी ! इस बात को बिना जाने बूझे दूर तक न सोचने वाली तुमने भिक्षुकों से प्रशंसित किन्तु गुणों से हीन व्यर्थ ही हमारा वरण कर लिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

अथात्मनोऽनुरूपं वै भजस्व क्षत्रियर्षभम् ।
येन त्वमाशिषः सत्या इहामुत्र च लप्स्यसे ॥१७॥

पदच्छेद— अथ आत्मनः अनुरूपम् वै भजस्व क्षत्रिय ऋषभम् ।
येन त्वम् आशिषः सत्याः इह अमुत्र च लप्स्यसे ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. अब	येन त्वम्	८. जिससे तुम
आत्मनः	२. अपने	आशिषः	१२. अभिलाषा को
अनुरूपम्	३. अनुरूप (किसी)	सत्याः	१३. पूर्ण
वै	६. निश्चित रूप से	इह	६. इस लोक में
भजस्व	७. वरण करलो	अमुत्र	११. परलोक में (अपनी
क्षत्रिय	५. क्षत्रिय का	च	१०. और
ऋषभम् ।	४. श्रेष्ठ	लप्स्यसे ॥	१४. कर लोगी

श्लोकार्थ—अब अपने अनुरूप किसी श्रेष्ठ क्षत्रिय का निश्चित रूप से वरण कर लो । जिससे तुम इस लोक में और परलोक में अपनी अभिलाषा का पूर्ण कर लोगी ॥

अष्टादशः श्लोकः

चैद्यशाल्वजरासन्धदन्तवक्त्रादयो नृपाः ।
मम द्विषन्ति वामोरु रुक्मी चापि तवाग्रजः ॥१८॥

पदच्छेद— चैद्य शाल्व जरासन्ध दन्तवक्त्र आदयः नृपाः ।
मम द्विषन्ति वामोरु रुक्मी च अपि तव अग्रजः ॥

शब्दार्थ—

चैद्य	२. शिशुपाल	मम	११. मुझसे
शाल्व	३. शाल्व	द्विषन्ति	१२. द्वेष करते हैं
जरासन्ध	४. जरासन्ध	वामोरु	१. हे सुन्दरी !
दन्तवक्त्र	५. दन्तवक्त्र	रुक्मी	१०. रुक्मी भी
आदयः	६. आदि	अपि	८. और
नृपाः ।	७. राजा लोग	तव अग्रजः ॥	६. तुम्हारा भाई

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! शिशुपाल, शाल्व, जरासन्ध, दन्तवक्त्र, आदि, राजा लोग और तुम्हारा भाई रुक्मी भी मुझसे द्वेष करते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तेषां वीर्यमदान्धानां दृप्तानां स्मयनुत्तये ।
आनीतासि मया भद्रे तेजोऽपहरतासताम् ॥१९॥

पदच्छेद— तेषाम् वीर्य मदान्धानाम् दृप्तानाम् स्मय नुत्तये ।
आनीतः असि मया भद्रे तेजः अपहरत असताम् ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	५.	उन राजाओं का	आनीताः	११.	तुम्हारा हरण किया
वीर्य	२.	बल के	असि	१२.	है
मदान्धानाम्	३.	मद से अन्धे और	मया	१०.	मैंने
दृप्तानाम्	४.	गर्वीले	भद्रे	१.	हे कल्याणि !
स्मय	६.	घमंड	तेजः अपहरत	९.	तेज अपहरण करने वाले
नुत्तये ।	७.	दूर करने के लिये	असताम् ॥	८.	दुष्टों का

श्लोकार्थ—हे कल्याणी ! बल के मद से अन्धे और गर्वीले उन राजाओं का घमंड दूर करने के लिये दुष्टों का तेज अपहरण करने वाले मैंने तुम्हारा हरण किया है ॥

विंशः श्लोकः

उदासीना वयं नूनं न स्त्र्यपत्यार्थकामुकाः ।
आत्मलब्ध्याऽऽस्महे पूर्णा गेहयोर्ज्योतिरक्रियाः ॥२०॥

पदच्छेद— उदासीनाः वयम् नूनम् न स्त्री अपत्य अर्थकामुकाः ।
आत्म लब्ध्या आस्महे पूर्णाः गेहयोः ज्योतिः अक्रियाः ॥

शब्दार्थ—

उदासीनाः	३.	उदासीन हैं	आत्म	९.	आत्म
वयम्	२.	हम	लब्ध्या	१०.	साक्षात्कार से
नूनम्	१.	निश्चय ही	आस्महे	१२.	हैं
न	६.	नहीं हैं हम	पूर्णाः	११.	पूर्ण
स्त्री अपत्य	४.	स्त्री-सन्तान और	गेहयोः	७.	स्थूल और सूक्ष्म शरीर के
अर्थ कामुकाः ।	५.	धन के लोलुप	ज्योतिः अक्रियाः ॥	८.	प्रकाशक निष्क्रिय तथा

श्लोकार्थ—निश्चय ही हम उदासीन हैं, स्त्री सन्तान और धन के लोलुप नहीं हैं । हम स्थूल और सूक्ष्म शरीर के प्रकाशक निष्क्रिय तथा आत्म साक्षात्कार से पूर्ण हैं ॥

एकविंशः श्लोकः

श्रीशुकउवाच— एतावदुक्त्वा भगवानात्मानं वल्लभामिव ।
मन्यमानामविश्लेषात् तद्दर्पघ्न उपारमत् ॥२१॥

पदच्छेद— एतावत् उक्त्वा भगवान् आत्मानम् वल्लभाम् इव ।
मन्यमानाम् अविश्लेषात् तत् दर्पघ्नः उपारमत् ॥

शब्दार्थ—

एतावत्	१०.	इतना	मन्यमानाम्	५.	समझने वाली
उक्त्वा	११.	कह कर (चुप हो गये)	अविश्लेषात्	१.	कभी अलग न होने के कारण
भगवान्	९.	भगवान्	तत्	६.	उन (रुक्मिणी) के
आत्मानम्	३.	अपने को	दर्पघ्नः	७.	गर्व की
वल्लभाम्	४.	सबसे बढ़ कर प्रिय	उपारमत् ॥	८.	शान्ति के लिये
इव ।	२.	मानों			

श्लोकार्थ—कभी अलग न होने के कारण मानों अपने को सब से बढ़ कर प्रिय समझने वाली उन रुक्मिणी के गर्व की शान्ति के लिये भगवान् इतना कह कर चुप हो गये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

इति त्रिलोकेशपतेस्तदाऽऽत्मनः प्रियस्य देव्यश्रुतपूर्वमप्रियम् ।
आश्रुत्य भीता हृदि जातवेपथुश्चिन्तां दुरन्तां रुदती जगाम ह ॥२२॥

पदच्छेद— इति त्रिलोकेशपतेः तदा आत्मनः प्रियस्य देवी अश्रुत पूर्वम् अप्रियम् ।
आश्रुत्य भीताः हृदि जातवेपथुः चिन्ताम् दुरन्ताम् रुदती जगाम ह ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	आश्रुत्य	८.	सुन कर
त्रिलोकेशपतेः	४.	त्रिलोकी पति भगवान् की	भीता	१०.	डर गईं (उनका)
तदा आत्मनः	२.	तब अपने	हृदि	११.	हृदय
प्रियस्य	३.	प्रियतम	जातवेपथुः	१२.	धड़कने लगा
देवी	९.	देवी (रुक्मिणी)	चिन्ताम्	१५.	चिन्ता में
अश्रुत	६.	न सुनी गई	दुरन्ताम्	१४.	अगाध
पूर्वम्	५.	पहले	रुदती	१३.	और वे रोती हुई
अप्रियम् ।	७.	अप्रिय वाणी	जगाम ह ॥	१६.	निमग्न हो गईं

श्लोकार्थ—इस प्रकार तब अपने पियतम त्रिलोकी पति भगवान् को पहले न सुनी गई अप्रियवाणी सुन कर देवी रुक्मिणी डर गईं । उनका हृदय धड़कने लगा । और वे रोती हुई अगाध चिन्ता में निमग्न हो गईं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

पदा सुजातेन नखारुणश्रिया भुवं लिखन्त्यश्रुभिरञ्जनासितैः।
आसिञ्चती कुङ्कुमरूषितौ स्तनौ तस्थावधोमुख्यतिदुःखरुद्धवाक् ॥२३॥

पदच्छेद— पदा सुजातेन नख अरुण श्रिया भुवम् लिखन्ती अश्रुभिः अञ्जन आसितैः।
आसिञ्चती कुङ्कुमरूषितौ स्तनौ तस्थौ अधोमुखी अति दुःख रुद्ध वाक् ॥

शब्दार्थ—

पदा	४. पैर से	आसिञ्चती	१०. सींचती हुई
सुजातेन	१. कमल के समान कोमल	कुङ्कुमरूषितौ	८. केसर से रङ्गे हुये
नख अरुण	२. नखों की लालिमा से	स्तनौ	९. स्तनों को
श्रिया	३. शोभित	तस्थौ	१२. स्थित हुई
भुवम् लिखन्ती	५. धरती को कुरेदती हुई	अधोमुखी	११. मुख नीचे करके
अश्रुभिः	७. आँसुओं से	अति दुःख	१३. अत्यन्त दुःख के कारण
अञ्जन असितैः।	६. काजल से काले	रुद्ध वाक् ॥	१४. उनकी वाणी रुक गई

श्लोकार्थ—कमल के समान कोमल नखों की लालिमा से शोभित पैर से धरती को कुरेदती हुई। काजल से काले आँसुओं से, केसर से रङ्गे हुये स्तनों को सींचती हुई मुख नीचे करके स्थित हुई अत्यन्त दुःख के कारण उनकी वाणी रुक गई॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तस्याः सुदुःखभयशोकविनष्टबुद्धेर्हस्ताच्छ्लथद्वलयतो व्यजनं पपात।
देहश्च विक्लवधियः सहसैव मुह्यन् रम्भेव वायुविहता प्रविकीर्य केशान् ॥२४॥

पदच्छेद— तस्याः सुदुःखभय शोकविनष्ट बुद्धेः हस्तात् श्लथद् वलयतः व्यजनम्पपात।
देहःच विक्लवधियः सहसा एव मुह्यन् रम्भा इव वायुविहता प्रविकीर्य केशान् ॥

शब्दार्थ—

तस्याः	४. उनके	देहःच	९. शरीर भी
सुदुःखभय	१. अत्यन्त दुःख और शोक के कारण	विक्लवधियः	८. बुद्धि की विकलता के कारण
शोकविनष्ट	२. लुप्त हुई	सहसा एव	१०. एकाएक अचेत हो गया
बुद्धेः	३. बुद्धि वाली	मुह्यन् रम्भा इव	१४. केले के खम्भे के समान गिर पड़ी
हस्तात् श्लथद्	६. हाथ ढीले पड़ गये	वायुविहता	१३. वायु वेग से उखड़े हुये
वलयतः	५. कङ्गन वाले	प्रविकीर्य	१२. बिखेर कर
व्यजनम् पपात।	७. चँवर गिर पड़ा	केशान् ॥	११. बालों को

श्लोकार्थ—अत्यन्त दुःख और शोक के कारण लुप्त हुई बुद्धि वाली उनके कंगन वाले हाथ ढीले पड़ गये, चँवर गिर पड़ा। बुद्धि की विकलता के कारण शरीर भी एकाएक अचेत हो गया। बालों को बिखेर कर वायु वेग से उखड़े हुये केले के खम्भे के समान गिर पड़ीं॥

पञ्चविंशः श्लोकः

तद् दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः प्रियायाः प्रेमबन्धनम् ।
हास्यप्रौढिमजानन्त्याः करुणः सोऽन्वकम्पत ॥२५॥

पदच्छेद— तत् दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः प्रियायाः प्रेम बन्धनम् ।
हास्य प्रौढिम् अजानन्त्याः करुणः सः अन्वकम्पत ॥

शब्दार्थ—

तत्	५.	वह	हास्य	१.	हास्य-विनोद की
दृष्ट्वा	८.	देख कर	प्रौढिम्	२.	गम्भीरता को
भगवान्	११.	भगवान्	अजानन्त्याः	३.	न जानती हुई
कृष्णः	१२.	श्रीकृष्ण	करुणः	१०.	दयालु
प्रियायाः	४.	प्रिया का	सः	९.	वे
प्रेम	६.	प्रेम	अन्वकम्पत ॥	१३.	करुणा से भर गये
बन्धनम् ।	७.	बन्धन			

श्लोकार्थ—हास्य विनोद की गम्भीरता को न जानती हुई प्रिया का वह प्रेम बन्धन देख कर वे दयालु भगवान् श्रीकृष्ण करुणा से भर गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

पर्यङ्कादवरुह्याशु तामुत्थाप्य चतुर्भुजः ।
केशान् समुह्य तद्वक्त्रं प्रामृजत् पद्मपाणिना ॥२६॥

पदच्छेद— पर्यङ्कात् अवरुह्य आशु ताम् उत्थाप्य चतुर्भुजः ।
केशान् समुह्य तत् वक्त्रम् प्रामृजत् पद्मपाणिना ॥

शब्दार्थ—

पर्यङ्कात्	३.	पलंग से	केशान्	७.	उनके केशों को
अवरुह्य	४.	उतर कर	समुह्य	८.	बाँध कर
आशु	२.	शीघ्र	तत्	९.	उनके
ताम्	५.	रुक्मिणी को	वक्त्रम्	१०.	मुख को (अपने)
उत्थाप्य	६.	उठा कर	प्रामृजत्	१२.	पोंछ दिया
चतुर्भुजः ।	१.	चार भुजाओं वाले श्रीकृष्ण ने	पद्मपाणिना ॥	११.	कर कमलों से

श्लोकार्थ—चार भुजाओं वाले श्रीकृष्ण ने शीघ्र पलंग से उतर कर रुक्मिणी को उठा कर उनके केशों को बाँध कर उनके मुख को अपने कर कमलों से पोंछ दिया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

प्रमृज्याश्रुकले नेत्रे स्तनौ चोपहतौ शुचा ।
आश्लिष्य बाहुना राजन्ननन्यविषयां सतीम् ॥२७॥

पदच्छेद— प्रमृज्य अश्रुकले नेत्रे स्तनौ च उपहतौ शुचा ।
आश्लिष्य बाहुना राजन् अनन्य विषयां सतीम् ॥

शब्दार्थ—

प्रमृज्य	७.	पोंछ कर	आश्लिष्य	१२.	भर लिया
अश्रुकले	२.	आँसू से भरे	बाहुना	११.	बाँहों में
नेत्रे	३.	नेत्रों को	राजन्	१.	हे राजन् !
स्तनौ च	६.	स्तनों को	अनन्य	८.	अनन्य
उपहतौ	५.	सिकुड़े हुये	विषयां	९.	प्रेम रखने वाली
शुचा ।	४.	और शोक से	सतीम् ॥	१०.	पतिव्रता (रुक्मिणी) को

श्लोकार्थ—हे राजन् ! आँसू से भरे नेत्रों को, शोक से सिकुड़े हुये स्तनों को पोंछकर अनन्य प्रेम रखने वाली पतिव्रता रुक्मिणी को बाँहों में भर लिया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

सान्त्वयामास सान्त्वज्ञः कृपया कृपणां प्रभुः ।
हास्यप्रौढिभ्रमच्चित्तामतदर्हां सतां गतिः ॥२८॥

पदच्छेद— सान्त्वयामास सान्त्वज्ञः कृपया कृपणाम् प्रभुः ।
हास्यप्रौढिभ्रमत् चित्ताम् अतद् अर्हाम् सताम् गतिः ॥

शब्दार्थ—

सान्त्वयामास	१०.	समझाने लगे	हास्यप्रौढि	५.	हास्य के कारण
सान्त्वज्ञः	१.	सान्त्वना के विशेषज्ञ और	भ्रमत्	६.	चकराते हुये
कृपया	४.	कृपा करके	चित्ताम्	७.	चित्त वाली और
कृपणाम्	९.	दीन (रुक्मिणी) को	अतद् अर्हाम्	८.	इसके अयोगम
प्रभुः ।	३.	भगवान् श्रीकृष्ण	सताम् गतिः ।	२.	सज्जनों के आश्रय

श्लोकार्थ—सान्त्वना के विशेषज्ञ और सज्जनों के आश्रय भगवान् श्रीकृष्ण कृपा करके हास्य के कारण चकराते हुये चित्त वाली और उसके अयोग्य, दीन रुक्मिणी को समझाने लगे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—मा मा वैदर्भ्यसूयेथा जाने त्वां मत्परायणाम् ।
त्वद्वचः श्रोतुकामेन क्ष्वेल्याऽऽचरितमङ्गने ॥२९॥

पदच्छेद— मा मा वैदर्भि असूयेथाः जाने त्वाम् मत् परायणाम् ।
त्वद् वचः श्रोतु कामेन क्ष्वेल्या आचरितम् अङ्गने ॥

शब्दार्थ—

मा मा	२.	मत	त्वद्	९.	तुम्हारी
वैदर्भि	१.	विदर्भ राजकुमारी	वचः	१०.	बात
असूयेथाः	३.	बुरा मानो	श्रोतु	११.	सुनने की
जाने	४.	मैं जानता हूँ कि	कामेन	१२.	कामना से ही
त्वाम्	५.	तुम	क्ष्वेल्या	१३.	मैंने हंसी करी थी
मत्	६.	मेरी	आचरितम्	१४.	यह
परायणाम् ।	७.	अनन्य भक्त हों	अङ्गने ॥	८.	हे सुन्दरी

श्लोकार्थ—विदर्भ राजकुमारी, मत बुरा मानों, मैं जानता हूँ कि तुम मेरी अनन्य भक्त हो । हे सुन्दरी ! तुम्हारी बात सुनने की कामना से ही मैंने यह हंसी करी थी ॥

त्रिंशः श्लोकः

मुखं च प्रेमसंरम्भस्फुरिताधरमीक्षितुम् ।
कटाक्षेपारुणापाङ्गं सुन्दरभ्रुकुटीतटम् ॥३०॥

पदच्छेद— मुखम् प्रेमसंरम्भ स्फुरित अधरम् ईक्षितुम् ।
कटाक्षेप अरुण अपाङ्गम् सुन्दर भ्रुकुटीतटम् ॥

शब्दार्थ—

मुखम्	९.	मुख को	कटाक्षेप	४.	कटाक्ष पूर्वक देखने से
प्रेमसंरम्भ	१.	प्रणय कोप से	अरुण	५.	लाल
स्फुरित	२.	फड़कते हुये	अपाङ्गम्	६.	आँखों के कोर वाले
अधरम्	३.	होठों वाले	सुन्दर	७.	सुन्दर
ईक्षितुम् ।	१०.	देखने के लिये ही (ऐसा कहा था)	भ्रुकुटीतटम् ॥	८.	भौंहों के तट वाले (तुम्हारे)

श्लोकार्थ—प्रणय कोप से फड़कते हुये होठों वाले, कटाक्ष पूर्वक देखने से लाल आँखों के कोर वाले, सुन्दर भौंहों के तट वाले, तुम्हारे मुख को देखने के लिये ही ऐसा कहा था ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अयं हि परमो लाभो गृहेषु गृहमेधिनाम् ।
यन्नर्मैर्नीयते यामः प्रियया भीरु भामिनि ॥३१॥

पदच्छेद— अयम् हि परमः लाभ गृहेषु गृहमेधिनाम् ।
यत् नर्मैः नीयते यामः प्रियया भीरु भामिनि ॥

शब्दार्थ—

अयम्	४.	यह	यत्	८.	जो कि
हि	५.	ही तो	नर्मैः	९.	हास-परिहास करते हुये
परमः	६.	परम	नीयते	१२.	बिता ली जाती हैं
लाभः	७.	लाभ है	यामः	११.	कुछ घड़ियाँ
गृहेषु	२.	गृह कार्य में लगे हुये	प्रियया	१०.	प्रिया के साथ
गृहमेधिनाम् ।	३.	गृहस्थों के लिये	भीरु भामिनि ॥	१.	डरपोक हे सुन्दरी !

श्लोकार्थ—डरपोक सुन्दरी ! गृह कार्य में लगे हुये गृहस्थों के लिये यह ही तो परम लाभ है, जो कि हास-परिहास करते हुये प्रिया के साथ कुछ घड़ियाँ बिता ली जाती हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—सैवं भगवता राजन् वैदर्भी परिसान्त्विता ।
ज्ञात्वा तत्परिहासोक्तिं प्रियत्यागभयं जहौ ॥३२॥

पदच्छेद— सा एवम् भगवता राजन् वैदर्भी परिसान्त्विता ।
ज्ञात्वा तत् परिहास उक्तिम् प्रियत्याग भयम् जहौ ॥

शब्दार्थ—

सा	३.	उस	ज्ञात्वा	१०.	जान कर
एवम्	५.	इस प्रकार	तत्	७.	तब उसने उसे
भगवता	२.	भगवान् ने	परिहास	८.	परिहास की
राजन्	१.	हे राजन् !	उक्तिम्	९.	बात
वैदर्भी	४.	रुक्मिणी को	प्रियत्याग	११.	प्रियतम के त्यागने का
परिसान्त्विता ।	६.	सान्त्वना दी	भयम् जहौ ॥	१२.	भय छोड़ दिया

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भगवान् ने उस रुक्मिणी को इस प्रकार सान्त्वना दी । तब उसने उसे परिहास की बात जान कर प्रियतम के त्यागने का भय छोड़ दिया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

बभाष ऋषभं पुंसां वीक्षन्ती भगवन्मुखम् ।
सव्रीडहासरुचिरस्निग्धापाङ्गेन भारत ॥३३॥

पदच्छेद— बभाषे ऋषभम् पुंसाम् वीक्षन्ती भगवन् मुखम् ।
सव्रीड हास रुचिर स्निग्ध अपाङ्गेन भारत ॥

शब्दार्थ—बभाषे	१२.	बोलीं	सव्रीड	२.	लज्जा
ऋषभम्	११.	श्रेष्ठ श्रीकृष्ण से	हास	३.	हास्य और
पुंसाम्	१०.	पुरुषों में	रुचिर	४.	सुन्दर
वीक्षन्ती	९.	देखती हुई रुक्मिणी	स्निग्ध	५.	प्रेम पूर्ण
भगवन्	७.	भगवान् का	अपाङ्गेन	६.	चितवन से
मुखम् ।	८.	मुख	भारत ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! लज्जा, हास्य और सुन्दर प्रेम पूर्ण चितवन से भगवान् का मुख देखती हुई रुक्मिणी पुरुषों में श्रेष्ठ श्रीकृष्ण से बोलीं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

रुक्मिण्युवाच—

नन्वेवमेतदरविन्दविलोचनाह यद् वै भवान् भगवतोऽसदृशी विभूम्नः ।
क्व स्वे महिम्न्यभिरतो भगवांस्त्र्यधीशः क्वाहं गुणप्रकृतिरज्ञगृहीतपादा॥३४॥

पदच्छेद—ननु एवम् एतद् अरविन्द विलोचन आह यद् वै भवान् भगवतः असदृशी विभूम्नः ।
क्व स्वे महिम्नि अभिरतः भगवान् त्रिअधीशः क्वअहम् गुण प्रकृतिः अज्ञ गृहीतपादा ॥

शब्दार्थ— ननु	५. निश्चित रूप से	क्व स्वे	१०. कहाँ अपनी
एवम्	६. ठीक इस प्रकार	महिम्नि	११. अखण्ड महिमा में
एतद्	४. यह	अभिरतः भगवान्	१३. स्थित आप भगवान्
अरविन्द	१. हे कमल	त्रिअधीशः	१२. तीनों गुणों के स्वामी
विलोचन	२. नयन भगवान् !	क्वअहम्	१४. कहाँ मैं
आह यद् वै	७. कहा है कि	गुण	१५. तीनों गुणों के अनुसार
भवान्	३. आपने	प्रकृतिः	१६. स्वभाव वाली एवम्
भगवतः असदृशी	९. आपके अनुरूप मैं नहीं हूँ	अज्ञ	१७. अज्ञानी लोगों के द्वारा
विभूम्नः ।	८. ऐश्वर्य शाली	गृहीतपादा ॥	१८. सेवित पैरों वाली मैं हूँ

श्लोकार्थ—हे कमल नयन भगवान् ! आपने यह निश्चित रूप से इस प्रकार ठीक ही कहा है कि ऐश्वर्य शाली आपके अनुरूप मैं नहीं हूँ । कहाँ अखण्ड महिमा में स्थित तीनों गुणों के स्वामी आप भगवान् और कहाँ मैं तीनों गुणों के अनुरूप स्वभाव वाली एवम् अज्ञानी लोगों के द्वारा सेवित पैरों वाली मैं हूँ ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सत्यं भयादिव गुणेभ्य उरुक्रमान्तः शेते समुद्र उपलम्भनमात्र आत्मा ।
नित्यं कदिन्द्रियगणैः कृतविग्रहस्त्वं त्वत्सेवकैर्नृपपदं विधुतं तमोऽन्धम् ।।३५।।

पदच्छेद—सत्यम् भयात् इव गुणेभ्यः उरुक्रम अन्तः शेते समुद्रे उपलम्भनमात्रः आत्मा ।
नित्यम् कत् इन्द्रियगणैः कृत विग्रहः त्वम् त्वत् सेवकैः नृपपदम् विधुतम् तमःअन्धम् ।।

शब्दार्थ—सत्यम्	२. सत्य है कि आप	आत्मा ।	८. आत्मा के रूप में
भयात्	४. भय से	नित्यम्	१२. नित्य
इव गुणेभ्यः	३. मानों तीनों गुण रूपी राजाओं के	कत्	१०. दुष्ट
उरुक्रमः	१. हे स्वामिन् !	इन्द्रियगणैः	११. इन्द्रिय समूह रूप राजाओं से
अन्तः	५. अन्तः करण रूप	कृत विग्रहः	१३. बैर ठानने वाले हैं
शेते	९. सोते हैं	त्वम् त्वत् सेवकैः	१४. आपके सेवकों ने
समुद्र	६. समुद्र में	नृपपदम् विधुतम्	१६. राजा के पद को ठुकरा दिया है
उपलम्भनमात्रः	७. चैतन्य स्वरूप	तमःअन्धम् ।।	१५. घोर अज्ञान समझ कर

श्लोकार्थ—हे स्वामिन् ! सत्य है कि आप मानों तीनों गुण रूपी राजाओं के भय से अन्तः करण रूप समुद्र में चैतन्य स्वरूप आत्मा के रूप में सोते हैं । आप दुष्ट इन्द्रिय समूह रूप राजाओं से नित्य वैर ठानने वाले हैं । आपके सेवकों ने घोर अज्ञान समझ कर राजा के पद को ठुकरा दिया है ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

त्वत्पादपद्ममकरन्दजुषां मुनीनां वर्त्मास्फुटं नृपशुभिर्ननु दुर्विभाव्यम् ।
यस्मादलौकिकमिवेहितमीश्वरस्य भूमंस्तवेहितमथो अनु ये भवन्तम् ।।३६।।

पदच्छेद—त्वत् पाद पद्ममकरन्द जुषाम् मुनीनाम् वर्त्म अस्फुटम् नृपशुभिः ननु दुर्विभाव्यम् ।
यस्मात् अलौकिकम् इव ईहितम् ईश्वरस्य भूमन् तव ईहितम् अथो अनु ये भवन्तम् ।।

शब्दार्थ—त्वत् पाद	१. आपके चरण	ईहितम्	१८. चेष्टा के बारे में क्या कहना है
पद्ममकरन्द	२. कमलों के पराग का	ईश्वरस्य	१७. ईश्वर की
जुषाम्	३. सेवन करने वाले	भूमन्	८. हे अनन्त !
मुनीनाम्वर्त्म	४. मुनियों का मार्ग	तव	१६. आप
अस्फुटम्	५. अस्पष्ट और	ईहितम्	१३. चेष्टा
नृपशुभिः	६. नर-पशुओं के लिये	अथो	१५. तब
ननुदुर्विभाव्यम् ।	७. निश्चित ही कठिन है	अनु	१२. अनुगामी है उनकी
यस्मात्	९. जब	ये	११. जो
अलौकिकम् इव	१४. मानों अनोखी	भवन्तम् ।।	१०. आपके

श्लोकार्थ—आपके चरण कमलों के पराग का सेवन करने वाले मुनियों का मार्ग अस्पष्ट है, और नर पशुओं के लिये निश्चित ही कठिन है । हे अनन्त ! जब आपके जो अनुगामी हैं उनकी चेष्टा मानों अनोखी हैं तब आप ईश्वर के बारे में क्या कहना है ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

निष्किञ्चनो ननु भवान् न यतोऽस्ति किञ्चिद्
यस्मै बलिं बलिभुजोऽपि हरन्त्यजाद्याः ।
न त्वा विदन्त्यसुतृपोऽन्तकमाढ्यतान्धाः
प्रेष्ठो भवान् बलिभुजामपि तेऽपि तुभ्यम् ॥३७॥

पदच्छेद—निष्किञ्चनः ननु भवान् न यतः अस्ति किञ्चित् यस्मै बलिम् बलिभुजः अपि हरन्तिअज आद्याः।
न त्वा विदन्तिअसुतृपः अन्तकम् आढ्यताअन्धाः प्रेष्ठः भवान् बलिभुजाम् अपितेअपि तुभ्यम् ॥

शब्दार्थ—निष्किञ्चनः	२. अकिञ्चन हैं	न त्वा	१२.	आपको नहीं
ननु भवान्	१. आप निश्चित रूप से	विदन्ति	१३.	जानते हैं
न यतः अस्ति	४. आपसे अलग नहीं है	असुतृपः	१०.	प्राणों को तृप्त करने वाले लोग
किञ्चित्	३. कुछ भी	अन्तकम्	११.	कालरूप
यस्मैबलिम्	७. आपको उपहार	आढ्यता अन्धाः	९.	धनमद से अन्धे और
बलिभुजः अपि	६. पूजोपहार लेने वाले	प्रेष्ठः	१५.	अति प्रिय हैं
हरन्ति	८. देते हैं	भवान् बलिभुजाम् अपि	१४.	आप पूजा देने वाले को भी
अजआद्याः ।	५. ब्रह्मा आदि भी	ते अपितुभ्यम् ॥	१६.	वे भी आपको अत्यन्त प्रिय हैं

श्लोकार्थ—आप निश्चित रूप से अकिञ्चन हैं। कुछ भी आपसे अलग नहीं है। ब्रह्मा आदि भी पूजोपहार लेने वाले आपको उपहार देते हैं। धनमद से अन्धे और प्राणों को तृप्त करने वाले लोग कालरूप आपको नहीं जानते हैं। आप पूजा देने वाले को भी अति प्रिय है। वे भी आपको अत्यन्त प्रिय हैं ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

त्वं वै समस्तपुरुषार्थमयः फलात्मा यद्वाञ्छया सुमतयो विसृजन्ति कृत्स्नम् ।
तेषां विभो समुचितो भवतः समाजः पुंसः स्त्रियाश्च रतयोः सुखदुःखिनोर्न॥३८

पदच्छेद—त्वम् वैसमस्त पुरुषार्थमयः फलआत्मा यत्वाञ्छया सुमतयः विसृजन्ति कृत्स्नम् ।
तेषाम्विभो समुचितः भवतः समाजः पुंसः स्त्रियाः च रतयोः सुःख दुःखिनोः न ॥

शब्दार्थ—त्वम् वै	१. आप निश्चित रूप से	तेषाम्	१०.	उन लोगों का
समस्त	२. समस्त	विभो	५.	हे प्रभो !
पुरुषार्थमयः	३. पुरुषार्थों के	समुचितः	१३.	उचित है (किन्तु)
फल आत्मा	४. फल स्वरूप हैं	भवतः	११.	आपके साथ
यत्वाञ्छया	६. जिन आपको पाने की इच्छा से	समाजः	१२.	सम्बन्ध होना
सुमतयः	७. विचार शील पुरुष	पुंसः स्त्रियाः च	१४.	स्त्री और पुरुष के
विसृजन्ति	९. छोड़ देते हैं	रतयोः	१५.	सहवास से
कृत्स्नम् ।	८. सब कुछ	सुखदुःखिनोः न ॥	१६.	सुखी दु.खी होने वाले का उचित नहीं है

श्लोकार्थ—आप निश्चितरूप से समस्त पुरुषार्थों के फलस्वरूप हैं, हे प्रभो ! जिन आपको पाने का इच्छा से विचार शील पुरुष सब कुछ छोड़ देते हैं, उन लोगों का आपके साथ सम्बन्ध होना उचित है। किन्तु स्त्री-पुरुष के सहवास से सुखी-दुःखी होने वाले का उचित नहीं है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

त्वं न्यस्तदण्डमुनिभिर्गदितानुभाव आत्माऽऽत्मदश्च जगतामिति मे वृतोऽसि ।
हित्वा भवद्भ्रुव उदीरितकालवेगध्वस्ताशिषोऽब्जभवनाकपतीन् कुतोऽन्ये ।३९

पदच्छेद—त्वम् न्यस्तदण्डमुनिभिः गदित अनुभाव आत्मा आत्मदः च जगताम् इति मे वृतः असि ।
हि त्वा भवद् भ्रुव उदीरित कालवेग ध्वस्त आशिषः अब्जभवनाक पतीन् कुतः अन्ये ।।

शब्दार्थ—त्वम्	३.	आपके	हित्वा	१४.	छोड़कर
न्यस्तदण्ड	१.	दण्ड देना त्यागने वाले	भवद् भ्रुव	८.	आपकी भौंहों से
मुनिभिः	२.	मुनियों ने	उदीरित	९.	प्रेरित
गदितअनुभावः	४.	प्रभाव का वर्णन किया है	कालवेग ध्वस्त	१०.	काल के वेग से नष्ट
आत्मा	६.	आत्मा और (भक्तों को)	आशिषः	११.	आशा अभिलाषा वाले
आत्मदः	७.	आत्म दान देने वाले हैं	अब्जभव	१२.	ब्रह्मा और
जगताम्	५.	आप सारे जगत् के	नाकपतीन्	१३.	देवराज इन्द्र आदि को
इति मे	१५.	इसलिये मैंने	कुतः	१८.	बात ही क्या है
वृतः असि ।	१६.	आपका वरण किया है	अन्ये ।।	१७.	दूसरे (शिशुपालादि की)तः

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! दण्ड देना त्यागने वाले मुनियों ने आपके प्रभाव का वर्णन किया है । आप सारे जगत् के आत्मा और भक्तों को आत्म दान देने वाले हैं । इसलिये आपकी भौंहों से प्रेरित काल के वेग से नष्ट आशा अभिलाषा वाले ब्रह्मा और देवराज इन्द्र आदि को छोड़कर मैंने आप का वरण किया है । दूसरे शिशुपालादि को तो बात ही क्या है ।।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

जाड्यं वचस्तव गदाग्रज यस्तु भूपान् विद्राव्य शार्ङ्गनिनदेन जहर्थ मां त्वम् ।
सिंहो यथा स्वबलिमीश पशून् स्वभागं तेभ्यो भयाद् यदुदधिं शरणं प्रपन्नः।।४०

पदच्छेद—जाड्यम् वचः तव गदअग्रज यः तु भूपान् विद्राव्यशार्ङ्ग निनदेन जहर्थमाम् त्वम् ।
सिंहो यथा स्वबलिम् ईश पशून् स्वभागम्तेभ्यः भयात् यत् उदधिम् शरणम् प्रपन्नः ।।

शब्दार्थ-जाड्यम्	३.	युक्ति संगत नहीं है	सिंहो यथा	१६.	जिस प्रकार सिंह
वचः तव	२.	आपका यह वचन	स्वबलिम्	१५.	अपना भाग ले लिया
गदाग्रज	१.	हे आर्य पुत्र !	ईश	९.	हे प्रभो !
यः तु	१०.	आपने तो	पशून्	१७.	पशुओं को भगाकर
भूपान्	१२.	राजाओं को	स्वभागम्	१८.	अपना भाग ले लेता है
विद्राव्य	१३.	खदेड़कर	तेभ्यः भयात्	५.	उन राजाओं के भय से
शार्ङ्गनिनदेन	११.	धनुष की टंकार से	यत् उदधिम्	६.	समुद्र में
जहर्थ माम्	१४.	मेरा हरण कर लिया और	शरणम्	७.	शरण
त्वाम् ।	४.	आप ने	प्रपन्नः ।।	८.	लिया है ।।

श्लोकार्थ—हे आर्य पुत्र ! आपका यह वचन युक्ति संगत नहीं है । आपने उन राजाओं के भय से समुद्र में शरण लिया है । हे प्रभो ! आपने तो धनुष की टंकार से राजाओं को खदेड़ कर मेरा हरण कर लिया और अपना भाग ले लिया । जिस प्रकार सिंह पशुओं का भगा कर अपना भाग ले लेता है ।।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

यद्वाञ्छया नृपशिखामणयोऽङ्गवैन्यजायन्तनाहुषगयादय ऐकपत्यम् ।
राज्यं विसृज्य विविशुर्वनमम्बुजाक्ष सीदन्ति तेऽनुपदवीं न इहास्थिताः किम्॥४१

पदच्छेद- यत् वाञ्छया नृप शिखामणयः अङ्ग वैन्य जायन्त नाहुष गय आदयः ऐकपत्यम् ।
राज्यम् विसृज्य विविशुः वनम् अम्बुज अक्ष सीदन्ति ते अनुपदवीम् इह आस्थिताः किम् ॥

शब्दार्थ—यत् वाञ्छया	११.	आपको पाने की इच्छा से	राज्यम्	९.	राज्य
नृप शिखामणयः	२.	राज शिरोमणि	विसृज्य	१०.	छोड़कर
अङ्ग वैन्य	३.	अङ्ग पृथु	विविशुः वनम्	१२.	वन में चले गये थे
जायन्त	४.	भरत	अम्बुज अक्ष	१.	हे कमल नयन !
नाहुष	५.	ययाति और	सीदन्ति	१६.	कष्ट उठा रहे हैं
गय आदयः	६.	गय आदि	ते अनुपदवीम्	१४.	आपके मार्ग पर
ऐक	७.	एक	इह आस्थिताः	१५.	आश्रित होकर यहाँ
पत्यम् ।	८.	छत्र	किम् ॥	१३.	क्या वे

श्लोकार्थ—हे कमल नयन ! राजशिरोमणि अङ्ग, पृथु, भरत, ययाति और गय आदि एक छत्र राज्य छोड़ कर आपको पाने की इच्छा से वन में चले गये थे । क्या वे आपके मार्ग पर आश्रित होकर कष्ट उठा रहे हैं ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

कान्यं श्रयेत तव पादसरोजगन्धमाघ्राय सन्मुखरितं जनतापवर्गम् ।
लक्ष्म्यालयं त्वविगणय्य गुणालयस्य मर्त्या सदोरुभयमर्थविविक्तदृष्टिः ॥४२॥

पदच्छेद— कन्यं श्रयेत तव पाद सरोज गन्धम् आघ्राय सन्मुखरितम् जनताप वर्गम् ।
लक्ष्मीआलयम् तु अविगणय्य गुण आलयस्य मर्त्या सदाउरुभयम् अर्थ विविक्त दृष्टिः ॥

शब्दार्थ—का	९.	कौन	लक्ष्म्यालयम्	४.	लक्ष्मी के निवास स्थल
अन्यम् श्रयेत	१६	दूसरे पुरुष का आश्रय लेगी	तु	८.	फिर
तव पाद	५.	आपके चरण	अविगणय्य	१४	आप का तिरस्कार करके
सरोज गन्धम्	६.	कमलों की सुगन्ध	गुण आलयस्य	१३.	गुणों के एक मात्र आश्रय
आघ्राय	७.	सूंघ कर	मर्त्या	१२.	मानवी
सन्मुखरितम्	१.	सत्पुरुषों द्वारा वर्णित	सदाउरुभयम्	१५.	सदा महान् भय से युक्त
जनताप	२.	लोगों का ताप	अर्थ	१०.	स्वार्थ और परमार्थ को
वर्गम् ।	३.	मिटाने वाले और	विविक्तदृष्टिः॥	११.	समझने वाली

श्लोकार्थ—सत्पुरुषों द्वारा वर्णित लोगों का ताप मिटाने वाले और लक्ष्मी के निवास स्थल आपके चरण, कमलों की सुगन्ध सूंघकर फिर कौन स्वार्थ और परमार्थ को समझने वाली मानवी गुणों के एक मात्र आश्रय आपका तिरस्कार करके सदा महान्भय से युक्त दूसरे पुरुष का आश्रय लेगी ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

तं त्वानुरूपमभजं जगतामधीशमात्मानमत्र च परत्र च कामपूरम् ।
स्यान्मे तवाङ्घ्रिररणं सृतिभिर्भ्रमन्त्या यो वै भजन्तमुपयात्यनृतापवर्गः ॥४३॥

पदच्छेद—तम् त्वा अनुरूपम् अभजम् जगताम् अधीशम् आत्मानम् अत्र च परत्र च कामपूरम् ।
स्यात् मे तव अङ्घ्रिः अरणम् सृतिभिः भ्रमन्त्याः यः वै भजन्तम् उपयाति अनृत अपवर्गः ॥

शब्दार्थ—तम्	६.	उस	स्यात्	१२.	हो
त्वा अनुरूपम्	७.	आपको अपने अनुरूप (समझकर)	मे तव	१०.	मुझे आपका
अभजम्	८.	मैंने वरण किया है	अङ्घ्रिः अरणम्	११.	चरण रक्षक
जगताम् अधीशम्	१.	सारे जगत् के स्वामी	सृतिभिः भ्रमन्त्याः	९.	विभिन्न योनियों में भटकती हुई
आत्मानम्	२.	आत्मा	यः वै	१३.	जो
अत्र च	३.	इस लोक में और	भजन्तम्	१४.	भजन करने वाले के
परत्र च	४.	परलोक में भी	उपयाति	१५.	पास जाता है
कामपूरम् ।	५.	कामनाओं को पूर्ण करने वाले	अनृत अपवर्गः ॥	१६.	और मिथ्या संसार भ्रम मिटा देता है

श्लोकार्थ—सारे जगत् के स्वामी, आत्मा, इस लोक में और परलोक में भी कामनाओं को पूर्ण करने वाले उन आपको अपने अनुरूप समझकर मैंने वरण किया है। विभिन्नयोनियों में भटकती हुई मुझे आपका चरण रक्षक हो। जो भजन करने वाले के पास जाता है और मिथ्या संसार-भ्रम मिटा देता है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तस्याः स्युरच्युत नृपा भवतोपदिष्टाः स्त्रीणां गृहेषु खरगोश्वबिडालभृत्याः ।
यत्कर्णमूलमरिकर्षण नोपयायाद् युष्मत्कथा मृडविरिञ्चसभासु गीता ॥४४॥

पदच्छेद—तस्याः स्युः अच्युत नृपाः भवतः उपदिष्टाः स्त्रीणाम् गृहेषु खरगोश्व बिडाल भृत्याः ।
यत् कर्ण मूलम् अरिकर्षण न उपयायात् युष्मत् कथा मृडविरिञ्च सभासु गीता ॥

शब्दार्थ—तस्याः स्युः	९.	उस स्त्री के पति हों	यत् कर्ण	१०.	जिनके कानों
अच्युत	१.	हे श्रीकृष्ण !	मूलम्	११.	तक
नृपाः	८.	राजा लोग	अरिकर्षण	२.	शत्रु नाशन
भवतः उपदिष्टाः	३.	आपके बताये हुये	न उपयायात्	१६.	न पहुँचे
स्त्रीणाम्	४.	स्त्रियों के	युष्मत् कथा	१५.	आपकी कथा
गृहेषु	५.	घरों में रहने वाले	मृडविरिञ्च	१२.	शंकर-ब्रह्मा आदि की
खर-गो अश्व	६.	गधा, बैल, घोड़े	सभासु	१३.	सभाओं में
बिडालभृत्याः ।	७.	बिलाव तथा क्रीत दास के समान	गीता ॥	१४.	गायी जाने वाली

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! शत्रुनाशन आपके बताये हुये स्त्रियों के घरों में रहने वाले गधा, घोड़े बिलाव तथा क्रीत दास के समान राजा लोग उस स्त्री के पति हों, जिसके कानों तक शंकर-ब्रह्मा आदि की सभाओं में गायी जाने वाली आपकी कथा न पहुँचे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

त्वक्श्मश्रुरोमनखकेशपिनद्धमन्तर्मांसास्थिरक्तकृमिविट्कफपित्तवातम् ।
जीवच्छवं भजति कान्तमतिर्विमूढा या ते पदाब्जमकरन्दमजिघ्रती स्त्री ॥४५॥

पदच्छेद—त्वक् श्मश्रु रोम ख केश पिनद्धम् अन्तर्मांस अस्थिरक्त कृमिविद् कफ पित्त वातम् ।
जीवत् शवम् भजति कान्तमतिः विमूढा या ते पदाब्ज मकरन्दम् अजिघ्रती स्त्री ॥

शब्दार्थ—त्वक्	५.	त्वचा	जीवत्	१४.	जीवित होने पर भी
श्मश्रु	६.	दाढ़ी-मूंछ	शवम्	१५.	मृतक के समान मानव शरीर को
रोमनख	७.	रोएँ नख	भजति	१७.	उसका सेवन करती है
केश	८.	केशों से	कान्तमतिः	१६.	अपना प्रियतम समझकर
पिनद्धम्	९.	ढका हुआ तथा	विमूढा या	१८.	वह स्त्री मूर्ख है
अन्तर्मांस	१०.	भीतर मांस	ते पदाब्ज	२.	आपके चरण कमल के
अस्थिरक्त	११.	हड्डी रक्त	मकरन्दम्	३.	मकरन्द को
कृमिविट्कफ	१२.	कीड़े, मल, कफ	अजिघ्रती	४.	नहीं सूँघा है वही
पित्त वातम् ।	१३.	पित्त और वायु से युक्त एवम्	स्त्री ॥	१.	जिस स्त्री ने

श्लोकार्थ—जिस स्त्री ने आपके चरण कमल के मकरन्द को नहीं सूँघा है, वही त्वचा, दाढ़ी-मूँछ, रोयें, नख, केशों से ढका हुआ तथा भीतर माँस, हड्डी, कीड़े, मल, कफ, पित्त और वायु से युक्त एवम् जीवित होने पर भी मृतक के समान मानव शरीर को अपना प्रियतम मानकर उसका सेवन करती है, वह स्त्री मूर्ख है ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

अस्त्वम्बुजाक्ष मम ते चरणानुराग आत्मन् रतस्य मयि चानतिरिक्तदृष्टेः ।
यर्ह्यस्य वृद्धय उपात्तरजोऽतिमात्रो मामीक्षसे तदु ह नः परमानुकम्पा ॥४६॥

पदच्छेद—अस्तु अम्बुज अक्ष ममते चरण अनुराग आत्मन् रतस्यमयि च अनतिरिक्त दृष्टेः ।
यर्हि अस्य वृद्धये उपात्त रजः अतिमात्रः माम् ईक्षसे तत् उह नः परम अनुकम्पा ॥

शब्दार्थ—अस्तु	९.	होते	यर्हि अस्य	१०.	जब इस संसार की
अम्बुजअक्ष	१.	हे कमल नयन !	वृद्धये	११.	अभिवृद्धि के लिये
मम	६.	मेरा	उपात्त	१४.	स्वीकार करके आप
ते चरण	७.	आपके चरणों में	रजः	१३.	रजो गुण को
अनुराग	८.	अनुराग	अतिमात्रः	१२.	प्रबल
आत्मन् रतस्य	२.	आत्मा में रमण करने वाले	माम् ईक्षसे	१५.	मेरी ओर देखते हैं
मयि च	३.	और मुझ पर	तत् उ ह	१६.	तब वह भी
अनतिरिक्त	४.	अधिक	नः परम	१७.	मुझ पर आपका परम
दृष्टेः ।	५.	दृष्टि न रखने वाले	अनुकम्पा ॥	१८.	अनुग्रह ही है

श्लोकार्थ—हे कमल नयन ! आत्मा में रमण करने वाले और मुझ पर अधिक दृष्टि न रखने वाले मेरा आपके चरणों में अनुराग होते । जब इस संसार की अभिवृद्धि के लिये प्रबल रजो गुण को स्वीकार करके आप मेरी ओर देखते हैं । तब वह भी मुझ पर आपका परम अनुग्रह ही है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

नैवालीकमहं मन्ये वचस्ते मधुसूदन ।
अम्बाया इव हि प्रायः कन्यायाः स्याद् रतिः क्वचित् ।।४७।।

पदच्छेद— न एव अलीकम् अहम् मन्ये वचः ते मधुसूदन ।
अम्बाया इव हि प्रायः कन्यायाः स्यात् रतिः क्वचित् ।।

शब्दार्थ—

न एव	६.	नहीं	अम्बायाः	१२.	(काशी नरेश की पुत्री) अम्बा के
अलीकम्	५.	मिथ्या	इव	१३.	समान
अहम्	२.	मैं	हि	८.	क्योंकि
मन्ये	७.	मानती हूँ	प्रायः	११.	प्रायः
वचः	४.	वचन को	कन्यायाः	९.	कन्या की
ते	३.	आपके	स्यात्	१५.	रहती है
मधुसूदन ।	१.	हे मधुसूदन !	रतिः	१०.	प्रीति
			क्वचित् ।।	१४.	कहीं (दूसरे पुरुष में भी)

श्लोकार्थ—हे मधुसूदन ! मैं आपके वचन को मिथ्या नहीं मानती हूँ । क्योंकि कन्या की प्रीति प्रायः काशी नरेश की पुत्री अम्बा के समान किसी दूसरे पुरुष में भी रहती है ।।

अष्टचत्वारिंशः श्लोक

व्यूढायाश्चापि पुंश्चल्या मनोऽभ्येति नवं नवम् ।
बुधोऽसतीं न बिभृयात् तां बिभ्रदुभयच्युतः ।।४८।।

पदच्छेद— व्यूढायाः च अपि पुंश्चल्याः मनः अभ्येति नवम्-नवम् ।
बुधः असतीम् न बिभृयात् ताम् बिभ्रत् उभय अच्युतः ।।

शब्दार्थ—

व्यूढायाः	४.	विवाह हो जाने पर	बुधः	८	विद्वान् व्यक्ति
च	१.	और	असतीम्	९.	कुलटा स्त्री का
अपि	५.	भी	न	११.	न करे
पुंश्चल्याः	२.	कुलटा स्त्री का	बिभृयात्	१०.	भरण-पोषण
मनः	३.	मन तो	ताम् बिभ्रत्	१२.	उसका भरण-पोषण करने वाला
अभ्येति	७.	खिंचता रहता है	उभय	१३.	दोनों लोकों से
नवम्-नवम् ।	६.	नये-नये पुरुषों की ओर	च्युतः ।।	१४.	भ्रष्ट हो जाता है

श्लोकार्थ—और कुलटा स्त्री का मन तो विवाह हो जाने पर भी नये-नये पुरुषों की ओर खिंचता रहता है । विद्वान् व्यक्ति कुलटा स्त्री का भरण-पोषण न करे । उसका भरण पोषण करने वाला दोनों लोकों से भ्रष्ट हो जाता है ।।

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—साध्व्येतच्छ्रोतुकामैस्त्वं राजपुत्रि प्रलम्भिता ।
मयोदितं यदन्वात्थ सर्वं तत् सत्यमेव हि ॥४९॥

पदच्छेद – साध्वि एतत् श्रोतुकामैः त्वम् राजपुत्रि प्रलम्भिता ।
मया उदितम् यत् अनुआत्थ सर्वम् तत् सत्यम् एव हि ॥

शब्दार्थ—

साध्वि	१.	पतिव्रते	मया	८.	मेरे
एतत्	३.	यह	उदितम्	९.	कहने को
श्रोतु	४.	सुनने के	यत्	१०.	जो
कामैः	५.	इच्छुक मैंने	अनु	११.	तुमने
त्वम्	६.	तुम्हारे साथ	आत्थ	१२.	व्याख्या की
राजपुत्रि	२	राजकुमारी	सर्वम्तत्	१३,	वह सब
प्रलम्भिता ।	७.	छल किया था	सत्यम् एव हि ।।	१४.	सत्य ही है ।।

श्लोकार्थ—पतिव्रते, राजकुमारी, यह सुनने के इच्छुक मैंने तुम्हारे साथ छल किया था । मेरे कहने की जो तुमने व्याख्या की वह सब सत्य ही है ।।

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

यान् यान् कामयसे कामान् मय्यकामाय भामिनि ।
सन्ति ह्येकान्तभक्तायास्तव कल्याणि नित्यदा ॥५०॥

पदच्छेद— यान्यान् कामयसे कामान् मयि अकामान् भामिनि ।
सन्ति हि एकान्त भक्तायाः तव कल्याणि नित्यदा ।।

शब्दार्थ—

यान्-यान्	३.	जिन-जिन	सन्ति हि	११.	ही हैं (और वे तुम्हें)
कामयसे	६	चाहती हो (वे तो मेरी)	एकान्त	७.	अनन्य
कामान्	४.	कामनाओं को	भक्तायाः	८.	भक्त
मयि	५.	मुझ से	तव	९.	तुम्हें
अकामान्	१२	बन्धन में नहीं डालेंगी	कल्याणि	२.	मंगलमयी (तुम)
भामिनि ।	१.	हे सुन्दरी !	नित्यदा ।।	१०.	नित्य प्राप्त

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! मंगलमयी तुम जिन-जिन कामनाओं को मुझसे चाहती हो वे तो मेरी अनन्य भक्त तुम्हें नित्य प्राप्त ही हैं और वे तुम्हें बन्धन में नहीं डालेंगा ।।

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

उपलब्धं पतिप्रेम पातिव्रत्यं च तेऽनघे ।
यद्वाक्यैश्चाल्यमानाया न धीर्मय्यपकर्षिता ॥५१॥

पदच्छेद— उपलब्धम् पतिप्रेम पातिव्रत्यं च ते अनघे ।
यत् वाक्यैः चाल्यमानायाः न धीः मयि अपकर्षिता ॥

शब्दार्थ—

उपलब्धम्	६. भली-भाँति देख लिया	यत्	७. क्योंकि
पतिप्रेम	३. पति प्रेम	वाक्यैः	८. बातों से
पातिव्रत्यम्	५. पाति व्रत्य धर्म	चाल्यमानायाः	९. चलायमान
च	४. और	न धीः	१०. तुम्हारी बुद्धि नहीं हुई
ते	२. तुम्हारा	मयि	११. मुझसे तनिक भी
अनघे ।	१. पुण्य मयी प्रिये	अपकर्षिता ॥	१२. इधर-उधर

श्लोकार्थ—पुण्यमयि प्रिये ! तुम्हारा पति प्रेम और पातिव्रत धर्म भली-भाँति देख लिया । क्योंकि बातों से चलायमान तुम्हारी बुद्धि मुझसे तनिक भी इधर-उधर नहीं हुई ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ये मां भजन्ति दाम्पत्ये तपसा व्रतचर्यया ।
कामात्मानोऽपवर्गेशं मोहिता मम मायया ॥५२॥

पदच्छेद— ये माम् भजन्ति दाम्पत्ये तपसा व्रत चर्यया ।
काम आत्मानः अपवर्ग ईशम् मोहिताः मम मायया ॥

शब्दार्थ—

ये	१. जो	काम	२. सकाम
माम्	९. मेरा	आत्मानः	३. पुरुष
भजन्ति	१०. भजन करते हैं वे	अपवर्ग	७. मोक्ष के
दाम्पत्ये	६. दाम्पत्य सुख के लिये	ईशम्	८. स्वामी
तपसा	५. तपस्या करके	मोहिताः	१२. मोहित हैं
व्रत चर्यया ।	४. व्रत आचरण और	मम मायया ॥	११. मेरी माया से

श्लोकार्थ—जो सकाम पुरुष व्रत, आचरण और तपस्या करके दाम्पत्य सुख के लिये मोक्ष के स्वामी मेरा भजन करते हैं, वे मेरी माया से मोहित हैं ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

मां प्राप्य मानिन्यपवर्गसम्पदं वाञ्छन्ति ये सम्पद एव तत्पतिम् ।
ते मन्दभाग्या निरयेऽपि ये नृणां मात्रात्मकत्वान्निरयः सुसङ्गमः ॥५३॥

पदच्छेद—माम् प्राप्य मानिनि अपवर्ग सम्पदम् वाञ्छन्ति ये सम्पदः एव तत् पतिम् ।
ते मन्द भाग्या निरये अपि ये नृणाम् मात्रा आत्मकत्वात् निरयः सुसङ्गमः ॥

शब्दार्थ—माम् प्राप्य	५.	मुझे पाकर	ते मन्द भाग्या	६.	वे मन्द भागी हैं क्योंकि
मानिनि	१.	हे मानवती !	निरये	१३.	नरक में
अपवर्ग	२.	मोक्ष	अपि	१४.	भी
सम्पदम्	३.	सम्पत्ति और	ये	१२.	विषय सुख
वाञ्छन्ति	८.	चाहते हैं	नृणाम्	१५.	मनुष्यों की
ये सम्पदः	६.	जो सम्पदा को	मात्रा	१०.	विषय और इन्द्रियों के
एव	७.	ही केवल	आत्मकत्वात्	११.	संयोग से उत्पन्न
तत् पतिम् ।	४.	उसके पति	निरयः सुसङ्गमः ॥	१६.	प्राप्त होता है

श्लोकार्थ—हे मानवती ! मोक्ष, सम्पत्ति और उसके पति मुझे पाकर जो सम्पदा को ही केवल चाहते हैं, वे मन्द भागी हैं। क्योंकि विषय और इन्द्रियों के संयोग से उत्पन्न विषय सुख नरक में भी प्राप्त होता है ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

दिष्ट्या गृहेश्वर्यसकृन्मयि त्वया कृतानुवृत्तिर्भवमोचनी खलैः ।
सुदुष्करासौ सुतरां दुराशिषो ह्यसुम्भराया निकृतिञ्जुषः स्त्रियाः ॥५४॥

पदच्छेद—दिष्टचा गृहेश्वरी असकृत्मयि त्वया कृत अनुवृत्तिः भवमोचनी खलैः ।
सुदुष्करम् असौ सुतराम् दुराशिषः हि असुम्भरायाः निकृतिम् जुषः स्त्रियाः ॥

शब्दार्थ-दिष्टचा	२.	आनन्द की बात है कि	सुदुष्करम्	६.	अत्यन्त कठिन है फिर
गृहेश्वरी	१.	हे गृह स्वामिनी !	असौ	८.	वह सेवा
असकृत्मयि	५.	मेरी बार-बार	सुतराम्	१६.	और भी कठिन है
त्वया	३.	तुमने	दुराशिषः	११.	दूषित कामना वाली
कृत	७.	की है	असुम्भरायाः	१२.	इन्द्रियों की तृप्ति में तत्पर
अनुवृत्ति	६.	सेवा	निकृतिम्	१३.	तथा कपट
भवमोचनी	४.	संसार बन्धन से मुक्त करने वाली	जुषः	१४.	रचने वाली
खलैः ।	१०.	दुष्टों के लिये	स्त्रियाः ॥	१५.	स्त्री के लिये तो

श्लोकार्थ—हे गृहस्वामिनी ! आनन्द की बात है कि तुमने संसार बन्धन से मुक्त करने वाली मेरी बार-बार सेवा की है। वह सेवा अत्यन्त कठिन है। फिर दुष्टों के लिये दूषित कामना वाली इन्द्रियों की तृप्ति में तत्पर तथा कपट रचने वाली स्त्री के लिये तो और भी कठिन है ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

न त्वादृशीं प्रणयिनीं गृहिणीं गृहेषु पश्यामि मानिनि यथा स्वविवाहकाले ।
प्राप्तान् नृपानवगणय्य रहोहरो मे प्रस्थापितो द्विज उपश्रुतसत्कथस्य ।।५५।।

पदच्छेद—न त्वादृशीम् प्रणयिनीम् गृहिणीम् गृहेषु पश्यामि मानिनि यथा स्व विवाह काले ।
प्राप्तान् नृपान् अवगणय्य रहः हरः मे प्रस्थापितः द्विजः उपश्रुत सत्कथस्य ।।

शब्दार्थ—न	६.	नहीं	प्राप्तान्	१०.	आये हुये
त्वादृशी	३.	तुम्हारे समान	नृपान्	११.	राजाओं की
प्रणयिनीम्	४.	प्रेम करने वाली	अवगणय्य	१२.	उपेक्षा करके
गृहिणीम्	५.	भार्या कोई	रहः हरः	१७.	गुप्त सन्देश
गृहेषु	२.	मुझे अपने घर में	मे	१६.	मेरे पास
पश्यामि	७.	दिखाई देती है	प्रस्थापितः	१८.	भेजा था
मानिनि	१.	मानवती	द्विजः	१३.	ब्राह्मण द्वारा
यथास्व	८.	क्योंकि तुमने अपने	उपश्रुत्य	१५.	सुनकर
विवाह काले ।	९.	विवाह के समय	सत्कथस्य ।।	१४.	केवल मेरी प्रशंसा

श्लोकार्थ—मानवती ! मुझे अपने घर में तुम्हारे समान प्रेम करने वाली भार्या कोई नहीं दिखाई देती है। क्योंकि तुमने अपने विवाह के समय आये हुये राजाओं की उपेक्षा करके ब्राह्मण द्वारा केवल मेरी प्रशंसा सुनकर मेरे पास गुप्त सन्देश भेजा था ।।

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

भ्रातुर्विरूपकरणं युधि निर्जितस्य प्रोद्वाहपर्वणि च तद्वधमक्षगोष्ठ्याम् ।
दुःखं समुत्थमसहोऽस्मदयोगभीत्या नैवाब्रवीः किमपि तेन वयं जितास्ते ।।५६।।

पदच्छेद—भ्रातुः विरूपकरणम् युधि निर्जितस्य प्रोद्वाह पर्वणि चतत् वधम् अक्ष गोष्ठ्याम् ।
दुःखम् समुत्थम् असहः अस्मत् अयोग भीत्या न एव अब्रवीः किमपि तेन वयम् जिताः ।।

शब्दार्थ—भ्रातुः	२.	तुम्हारे भाई को हमने	दुःखम्	१०.	दुःख को
विरूपकरणम्	३.	विरूप कर दिया	समुत्थम्	९.	उठे हुए
युधिनिर्जितस्य	१.	युद्ध में जीते गये	असहः	११.	तुमने सह लिया
प्रोद्वाह	५.	अनिरुद्ध के विवाह के	अस्मत्	१२.	पर हमसे
पर्वणि	६.	उत्सव में	अयोगभीत्या	१३.	वियोग हो जाने के भय से
च	४.	और	न एव अब्रवीः	१५.	नहीं बोली
तत्वधम्	८.	उसका वध कर दिया (इससे)	किमपि	१४.	तुम कुछ भी
अक्षगोष्ठ्याम् ।	७.	चौसर खेखने की सभा में	तेन वयम् जिताः ।।	१६.	इससे हम तुम्हारे वश में हो गये हैं

श्लोकार्थ—हे भामिनी ! युद्ध में जीते गये तुम्हारे भाई को हमने विरूप कर दिया और अनिरुद्ध के विवाह के उत्सव में चौसर खेलने की सभा में उसका वध कर दिया। इससे उठे हुए दुःख को तुमने सह लिया पर हम से वियोग हो जाने के भय से तुम कुछ भी नहीं बोली ।।

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

दूतस्त्वयाऽऽत्मलभने सुविविक्तमन्त्रः प्रस्थापितो मयि चिरायति शून्यमेतत् ।
मत्वाजिहास इदमङ्गमनन्ययोग्यं तिष्ठेत तत्त्वयि वयं प्रतिनन्दयामः ॥५७॥

पदच्छेद—दूतः त्वया आत्मलभने सुविविक्त मन्त्रः प्रस्थापितः मयि चिरायति शून्यम् एतत् ।
मत्वा जिहास इदम् अङ्गम् अनन्य योग्यम् तिष्ठेत तत् त्वयि वयम् प्रतिनन्दयामः ॥

शब्दार्थ—

दूतः	४. दूत	मत्वाजिहास	१२. समझकर छोड़ना चाहा था
त्वया	२. तुमने	इदम् अङ्गम्	९. तथा इस सुन्दर शरीर को
आत्मलभने	१. मेरी प्राप्ति के लिये	अनन्य	१०. दूसरे के
सुविविक्त मन्त्रः	३. अत्यन्त गुप्त सन्देश देकर	योग्यम्	११. योग्य न
प्रस्थापितः	५. भेजा था (फिर)	तिष्ठेत	१४. रहे
मयि	६. मेरे	तत्त्वयि	१३. यह प्रेम भाव तुम में ही
चिरायति	७. विलम्ब करने पर	वयम्	१५. हम
शून्यम् एतत् ।	८. इस संसार को शून्य	प्रतिनन्दयामः ॥	१६. तुम्हारा अभिनन्दन करते हैं

श्लोकार्थ—मेरी प्राप्ति के लिये तुमने अत्यन्त गुप्त सन्देश देकर दूत भेजा था। फिर मेरे विलम्ब करने पर इस संसार को शून्य तथा इस शरीर को दूसरे के योग्य न समझकर छोड़ना चाहा था, यह प्रेम भाव तुम में ही रहे। हम तुम्हारा अभिनन्दन करते हैं ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं सौरतसंलापैर्भगवाञ्जगदीश्वरः ।
स्वरतो रमया रेमे नरलोकं विडम्बयन् ॥५८॥

पदच्छेद— एवम् सौरत संलापैः भगवान् जगदीश्वरः ।
स्वरतः रमया रेमे नरलोकम् विडम्बयन् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	स्वरतः	९. स्वच्छन्दता पूर्वक
सौरत	४. सुरत सम्बन्धी	रमया	८. लक्ष्मी रूपिणी (रुक्मिणी के साथ)
संलापैः	५. वार्तालाप से	रेमे	१०. रमण करने लगे
भगवान्	३. भगवान्	नरलोकम्	६. मनुष्य लोक की सी
जगदीश्वरः ।	२. जगत् के ईश्वर	विडम्बयन् ॥	७. लीला करते हुये

श्लोकार्थ—इस प्रकार जगत् के ईश्वर भगवान् सुरत सम्बन्धी वार्तालाप से मनुष्य लोक की सी लीला करते हुये लक्ष्मी रूपिणी रुक्मिणी के साथ स्वच्छन्दता पूर्वक रमण करने लगे ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

तथान्यासामपि विभुर्गृहेषु गृहवानिव ।
आस्थितो गृहमेधीयान् धर्माल्लोकगुरुर्हरिः ॥५९॥

पदच्छेद—

तथा अन्यासाम् अपि विभुः गृहेषु गृहवान् इव ।
आस्थितः गृहमेधीयान् धर्मान् लोक गुरुः हरिः ॥

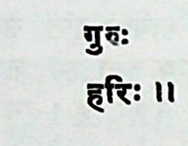
शब्दार्थ—

तथा	१.	इसी प्रकार	आस्थितः	१०.	रहते हुये
अन्यासाम्	६.	दूसरी पत्नियों के	गृहमेधीयान्	११.	गृहस्थोचित
अपि	८.	भी	धर्मान्	१२.	धर्मों का पालन करते थे
विभुः	५.	परमात्मा	लोक	२.	लोगों के
गृहेषु	७.	महलों में	गुरुः	३.	गुरु
गृहवान् इव ।	९.	गृहस्थ के समान	हरिः ॥	४.	श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—

इसी प्रकार लोगों के गुरु श्री कृष्ण परमात्मा दूसरी पत्नियों के महलों में भी गृहस्थ के समान रहते हुये गृहस्थोचित धर्मों का पालन करते थे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणं पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे कृष्णरुक्मिणीसंवादो
नाम षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६० ॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अथैकषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकैकशस्ताः कृष्णस्य पुत्रान् दश दशाबलाः ।
अजीजनन्ननवमान्पितुः सर्वात्मसम्पदा ॥१॥

पदच्छेद— एक एकशः ताः कृष्णस्य पुत्रान् दश-दश अबलाः ।
अजीजनत् अनवमान् पितुः सर्व आत्म सम्पदा ॥

शब्दार्थ—

एक एकशः	४.	एक-एक करके	अजीजनत्	७.	उत्पन्न किये जो
ताः	२.	उन	अनवमान्	१२	किसी बात में कम न थे
कृष्णस्य	१.	श्रीकृष्ण की	पितुः	८.	पिता से
पुत्रान्	६.	पुत्र	सर्व	९.	सभी
दश-दश	५.	दश-दश	आत्म	१०.	आत्म-
अबलाः ।	३.	पत्नियों ने	सम्पदा ॥	११.	गुणों में

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण की उन पत्नियों ने एक-एक करके दश-दश पुत्र उत्पन्न किये । जो पिता से सभी आत्म-गुणों में किसी बात में कम नहीं थे ॥

द्वितीयः श्लोकः

गृहादनपगं वीक्ष्य राजपुत्र्योऽच्युतं स्थितम् ।
प्रेष्ठं न्यमंसत स्वं स्वं न तत्तत्त्वविदः स्त्रियः ॥२॥

पदच्छेद— गृहात् अनपगम् वीक्ष्य राजपुत्र्यः अच्युतम् स्थितम् ।
प्रेष्ठम् न्यमंसत स्वम् स्वम् न तत्त्वविदः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

गृहात्	१.	घर से	प्रेष्ठम्	८.	उनकी सबसे अधिक प्यारी
अनपगम्	२.	न जाने वाले	न्यमंसत	९.	समझती थीं
वीक्ष्य	५.	देख कर	स्वम्-स्वम्	७.	अपने को
राजपुत्र्याः	६.	राजकुमारियाँ	न तत्	११.	उन भगवान् की
अच्युतम्	४.	श्री कृष्ण को	तत्त्वविदनः	१२.	महिमा नहीं जानती थी
स्थितम् ।	३.	सदा वहीं रहने वाले	स्त्रियः ॥	१०.	वे स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—घर से न जाने वाले सदा वहीं रहने वाले श्री कृष्ण को देखकर राजकुमारियाँ अपने को भगवान् श्रीकृष्ण की सबसे अधिक प्यारी समझती थीं । वे स्त्रियाँ उनकी महिमा को नहीं जानती थीं ॥

तृतीयः श्लोकः

चार्वब्जकोशवदनायतबाहुनेत्रसप्रेमहासरसवीक्षितवल्गुजल्पैः ।
सम्मोहिता भगवतो न मनो विजेतुं स्वैर्विभ्रमैः समशकन् वनिता विभूम्नः ।।३।।

पदच्छेद—चारु अब्जकोश वदन आयत बाहु नेत्र सप्रेम हास-रस वीक्षित वल्गु जल्पैः ।
सम्मोहिता भगवतः न मनः विजेतुम् स्वैः विभ्रमैः समशकन् वनिता विभूम्नः ।।

शब्दार्थ—

चारु	५.	सुन्दर	सम्मोहिता	१२.	मोहित रहती थीं (अत एव)
अब्जकोश	४.	कमल-कली के समान	भगवतः	३.	भगवान् श्रीकृष्ण के
वदन	६.	मुख	न मनः	१४.	उनके मन को
आयत बाहुनेत्र	७.	विशाल बाहु और नेत्र	विजेतुम्	१५.	जीतने में
सप्रेम	८.	प्रेम भरी	स्वैः-विभ्रमैः	१३.	अपने हाव-भावों से
हास-रस	९.	मुसकान रस मयी	समशकन्	१६.	समर्थ न हो सकीं
वीक्षितवल्गु	१०.	चितवन और मधुर	वनिताः	२.	वे सुन्दिरियाँ
जल्पैः ।	११.	वाणी से	विभूम्नः ।।	१.	आत्मानन्द में एक रस स्थित

श्लोकार्थ—आत्मानन्द में एक रस स्थित वे सुन्दरियाँ भगवान् श्रीकृष्ण के कमल की कली के समान सुन्दर मुख, विशाल, बाहु और नेत्र प्रेम भरी, मुसकान, रस मयी, चितवन और मधुर वाणी से मोहित रहती थीं। अत एव उनके मन को अपने हाव-भावों से जीतने में समर्थ न हो सकीं।

चतुर्थः श्लोकः

स्मायावलोकलवदर्शितभावहारिभ्रूमण्डलप्रहितसौरतमन्त्रशौण्डैः ।
पत्न्यस्तु षोडशसहस्रमनङ्गबाणैर्यस्येन्द्रियं विमथितुं करणैर्न शेकुः ।।४।।

पदच्छेद—स्माय अवलोक लव दर्शित भावहारि भ्रूमण्डल प्रहित सौरत मन्त्र शौण्डैः ।
पत्न्यः तु षोडश सहस्रम् अनङ्ग बाणैः यस्य इन्द्रियम् विमथितुम् करणैः न शेकुः ।।

शब्दार्थ—

स्माय	४.	मन्द-मन्द मुसकान एवम्	पत्न्यः तु	३.	पत्नियाँ
अवलोकलव	५.	तिरछी चितवन द्वारा	षोडश	१.	सोलह
दर्शित	६.	दिखाये गये	सहस्रम्	२.	हजार
भाव हारि	७.	भाव और	अनङ्ग बाणैः	१२.	काम बाणों से
भ्रूमण्डल	८.	भौंहों के	यस्य इन्द्रियम्	१३.	जिनकी इन्द्रियों को
प्रहित	९.	इशारे से	विमथितुम्	१४.	अपनी ओर खींचने में
सौरतमन्त्र	१०.	सुरत की मन्त्रणा में	करणैः	१५.	किसी प्रकार
शौण्डैः ।	११.	कुशल	न शेकुः ।।	१६.	समर्थ न हो सकीं

श्लोकार्थ—सोलह हजार पत्नियाँ मन्द-मन्द मुसकान एवम् तिरछी चितवन द्वारा दिखाये गये भाव और भौंहों के इशारे से सुरत की मन्त्रणा में कुशल काम बाणों से जिनकी इन्द्रियों को अपनी ओर खींचने में किसी प्रकार समर्थ न हो सकीं ।।

पञ्चमः श्लोकः

इत्थं रमापतिमवाप्य पतिं स्त्रियस्ता ब्रह्मादयोऽपि न विदुः पदवीं यदीयाम् ।
भेजुर्मुदाविरतमेधितयानुरागहासावलोकनवसङ्गमलालसाद्यम् ॥५॥

पदच्छेद—इत्थम् रमापतिम् अवाप्य पतिम् स्त्रियः ताः ब्रह्मा आदयः अपि न विदुः पदवीम् यदीयाम् ।
भेजुः मुदा अविरतम् एधितया अनुराग हास अवलोक नवसङ्गम लालसा आद्यम् ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	६.	इस प्रकार	भेजुः	१६.	कहने लगीं
रमापतिम्	५.	लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण को	मुदा	११.	आनन्द से
अवाप्य पतिम्	७.	पति के रूप में पाकर	अविरतम्	६.	निरन्तर
स्त्रियः ताः	८.	वे स्त्रियाँ	एधितया	१०.	बढ़े हुये
ब्रह्मा आदयः अपि	१.	ब्रह्मा आदि भी	अनुराग	१२.	प्रेमभरी
न विदुः	४.	नहीं जानते हैं उन	हास अवलोक	१३.	मुसकराहट मधुर चितवन
पदवीम्	३.	मार्ग को	नव सङ्गम	१४.	नव समागम की
यदीयाम् ।	२.	जिनके	लालसा आद्यम् ॥	१५.	लालसा आदि से

श्लोकार्थ—ब्रह्मा आदि भी जिनके मार्ग को नहीं जानते हैं, उन लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण को इस प्रकार पति के रूप में पाकर वे स्त्रियाँ निरन्तर बढ़े हुये आनन्द से प्रेम भरी मुसकराहट, मधुर चितवन, नव समागम की लालसा आदि से कहने लगीं ॥

षष्ठः श्लोकः

प्रत्युद्गमासनवरार्हणपादशौचताम्बूलविश्रमणवीजनगन्धमाल्यैः ।
केशप्रसारशयनस्नपनोपहार्यैर्दासीशता अपि विभोर्विदधुः स्म दास्यम् ॥६॥

पदच्छेद—प्रति उद्गम आसन वरार्हण पाद शौच ताम्बूल विश्रमण वीजन गन्ध माल्यैः ।
केश प्रसार शयन स्नपन उपहार्यैः दासीशता अपि विभोः विदधुः स्म दास्यम् ॥

शब्दार्थ—

प्रतिउद्गम	१.	अगवानी	केश प्रसार	८.	केश संवारना
आसनवरार्हण	२.	आसन उत्तम सामग्रियों से पूजन	शयनस्नपन	९.	सुलाना नहलाना और
पाद शौच	३.	चरण प्रक्षालन	उपहार्यैः	१०.	अनेक प्रकार के भोजन इत्यादि
ताम्बूल	४.	ताम्बूल	दासीशता	११.	सैकड़ों दासियों के रहते हुये
विश्रमण	५.	विश्राम कराना	अपिविभोः	१२.	भी वे पत्नियाँ भगवान् की स्वयं
वीजन	६.	पंखा झलना	विदधुः स्म	१४.	किया करती थीं
गन्धमाल्यैः ।	७.	सुगन्ध लगाना फूलों के हार और	दास्यम् ॥	१३.	सेवा

श्लोकार्थ—अगवानी, आसन, उत्तम सामग्रियों से पूजन, चरण-प्रक्षालन, ताम्बूल, विश्राम कराना, सुगन्ध लगाना, फूलों के हार पहिनाना, केश संवारना, सुलाना, नहलाना और अनेक प्रकार के भोजन इत्यादि कराना सैकड़ों दासियों के रहते हुये भी वे पत्नियाँ भगवान् की स्वयं सेवा करती थीं ॥

सप्तमः श्लोकः

तासां या दशपुत्राणां कृष्णस्त्रीणां पुरोदिताः ।
अष्टौ महिष्यस्तत्पुत्रान् प्रद्युम्नादीन् गृणामि ते ॥७॥

पदच्छेद— तासाम् याः दश पुत्राणाम् कृष्ण स्त्रीणाम् पुरोदिताः ।
अष्टौ महिष्यः तत् पुत्रान् प्रद्युम्न आदीन् गृणामि ते ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	१.	उन	अष्टौ	६.	जो आठ
याः दश	२.	दस-दस	महिष्यः	७.	पटरानियाँ
पुत्राणाम्	३.	पुत्रों वाली	तत्	९.	उनके
कृष्ण	४.	कृष्ण	पुत्रान्	१२.	पुत्रों को
स्त्रीणाम्	५.	पत्नियों में	प्रद्युम्न	१०.	प्रद्युम्न
पुरोदिताः ।	८.	पहले बताई जा चुकी हैं	आदीन्	११.	आदि
			गृणामि ते ॥	१३.	तुमसे बता रहा हूँ

श्लोकार्थ—उन दस, दस पुत्रों वाली कृष्ण-पत्नियों में जो आठ पटरानियाँ पहले बताई जा चुकी हैं उनके प्रद्युम्न आदि पुत्रों को तुमसे बता रहा हूँ ॥

अष्टमः श्लोकः

चारुदेष्णः सुदेष्णश्च चारुदेहश्च वीर्यवान् ।
सुचारुश्चारुगुप्तश्च भद्रचारुस्तथापरः ॥८॥

पदच्छेद— चारुदेष्णः सुदेष्णश्च चारुदेहश्च वीर्यवान् ।
सुचारुः चारुगुप्तः च भद्रचारुः तथा अपरः ॥

शब्दार्थ—

चारुदेष्णः	१.	चारुदेष्ण	सुचारुः	७.	सुचारु
सुदेष्णः	२.	सुदेष्ण	चारुगुप्तः	९.	चारुगुप्त
च	३.	और	च	८.	और
चारुदेहः	५.	चारुदेह	भद्रचारुः	१२.	भद्रचारु था
च	६.	तथा	तथा	१०.	तथा
वीर्यवान् ।	४.	पराक्रमी	अपरः ।	११.	दूसरा

श्लोकार्थ—चारुदेष्ण, सुदेष्ण और पराक्रमी चारुदेह तथा सुचारु और चारुगुप्त तथा दूसरा भद्रचारु था ॥

नवमः श्लोकः

चारुचन्द्रो विचारुश्च चारुश्च दशमो हरेः ।
प्रद्युम्नप्रमुखा जाता रुक्मिण्यां नावमाः पितुः ॥९॥

पदच्छेद— चारुचन्द्रः विचारुः च चारुः च दशमः हरेः ।
प्रद्युम्न प्रमुखाः जाताः रुक्मिण्याम् न अवमाः पितुः ॥

शब्दार्थ—

चारुचन्द्रः	१.	चारुचन्द्र	प्रद्युम्न	६.	प्रद्युम्न
विचारुः	२.	विचारु	प्रमुखाः	७.	आदि
च	३.	और	जाताः	१०.	उत्पन्न हुये जो
चारुः च	४.	चारु तथा	रुक्मिण्याम्	९.	रुक्मिणी के गर्भ से
दशमः	५.	दशम	न अवमाः	१२	किसी बात में कम नहीं थे
हरेः ।	८.	श्रीकृष्ण के पुत्र	पितुः ॥	११.	पिता से

श्लोकार्थ—चारुचन्द्र, विचारु और चारु तथा दशम प्रद्युम्नादि रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुये। जो पिता से किसी बात में कम नहीं थे ॥

दशमः श्लोकः

भानुः सुभानुः स्वर्भानुः प्रभानुर्भानुमांस्तथा ।
चन्द्रभानुर्बृहद्भानुरतिभानुस्तथाष्टमः ॥१०॥

पदच्छेद— भानुः सुभानुः स्वर्भानुः प्रभानुः भानुमान् तथा ।
चन्द्रभानुः बृहद्भानुः अतिभानुः तथा अष्टमः ॥

शब्दार्थ—

भानुः	१.	भानु	चन्द्रभानुः	७.	चन्द्रभानु
सुभानुः	२.	सुभानु	बृहद्भानुः	८.	बृहद्भानु
स्वर्भानुः	३.	स्वर्भानु	अतिभानुः	११.	अतिभानु था
प्रभानुः	४.	प्रभानु	तथा	९.	तथा
भानुमान्	५.	भानुमान्	अष्टमः ॥	१०.	आठवाँ
तथा ।	६.	तथा			

श्लोकार्थ—भानु, सुभानु, स्वर्भानु, प्रभानु, भानुमान् तथा चन्द्रभानु, बृहद्भानु तथा आठवाँ अतिभानु था ॥

एकादशः श्लोकः

श्रीभानुः प्रतिभानुश्च सत्यभामात्मजा दश ।
साम्बः सुमित्रः पुरुजिच्छतजिच्च सहस्रजित् ॥११॥

पदच्छेद— श्रीभानुः प्रतिभानुः च सत्यभामा आत्मजाः दश ।
साम्बः सुमित्रः पुरुजित् शतजित् च सहस्रजित् ॥

शब्दार्थ—

श्रीभानुः	१. श्रीभानु	साम्बः	७. साम्ब
प्रतिभानुः	३. प्रतिभानु	सुमित्रः	८. सुमित्र
च	२. और	पुरुजित्	९. पुरुजित्
सत्यभामा	६. सत्यभामा के थे	शतजित्	१०. शतजित्
आत्मजाः	५. पुत्र	च	११. और
दश ।	४. वे दश	सहस्रजित् ॥	१२. सहस्रजित्

श्लोकार्थ—श्रीभानु और प्रतिभानु ये दश पुत्र सत्यभामा के थे । साम्ब, सुमित्र, पुरुजित्, शतजित् और सहस्रजित् ॥

द्वादशः श्लोकः

विजयश्चित्रकेतुश्च वसुमान् द्रविडः क्रतुः ।
जाम्बवत्याः सुता ह्येते साम्बाद्याः पितृसंमताः ॥१२॥

पदच्छेद— विजय चित्रकेतुः च वसुमान् द्रविडः क्रतुः ।
जाम्बवत्याः सुताः हि एते साम्बआद्याः पितृ संमता ॥

शब्दार्थ—

विजय	१. विजय	जाम्बवत्याः	८. जाम्बवती के
चित्रकेतुः	२. चित्रकेतु	सुताः	९. पुत्र थे
च	५. और	एते	७. ये
वसुमान्	३. वसुमान्	साम्ब	१०. साम्ब
द्रविडः	४. द्रविड	आद्याः	११. आदि
क्रतुः ।	६. क्रतु	पितृ	१२. पिता (श्रीकृष्ण को)
		संमताः ॥	१३. बहुत प्यारे थे

श्लोकार्थ—विजय, चित्रकेतु, वसुमान्, द्रविड और क्रतु ये जाम्बवती के पुत्र थे । साम्ब आदि पिता श्रीकृष्ण को बहुत प्यारे थे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

वीरश्चन्द्रोऽश्वसेनश्च चित्रगुर्वेगवान् वृषः ।
आमः शङ्कुर्वसुः श्रीमान् कुन्तिर्नाग्नजितेः सुताः ॥१३॥

पदच्छेद— वीरः चन्द्रः अश्वसेनः च चित्रगुः वेगवान् वृषः ।
आमः शङ्कुः वसुः श्रीमान् कुन्तिः नाग्नजितेः सुताः ॥

शब्दार्थ—

वीरः	१.	वीर	आमः	८.	आम
चन्द्रः	२.	चन्द्र	शङ्कुः	९.	शङ्कु
अश्वसेनः	३.	अश्वसेन	वसुः	१०.	वसु और
च	४.	और	श्रीमान्	११.	परम तेजस्वी
चित्रगुः	५.	चित्रगु	कुन्तिः	१२.	कुन्ति ये
वेगवान्	६.	वेगवान्	नाग्नजितेः	१३.	नाग्नजिति के
वृषः ।	७.	वृष	सुताः ॥	१४.	पुत्र थे

श्लोकार्थ—वीर, चन्द्र, अश्वसेन, और चित्रगु, वेगवान्, वृष, आम, शङ्कु, वसु और परमतेजस्वी कुन्ति ये नाग्नजिति के पुत्र थे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

श्रुतः कविर्वृषो वीरः सुबाहुर्भद्र एकलः ।
शान्तिर्दर्शः पूर्णमासः कालिन्द्याः सोमकोऽवरः ॥१४॥

पदच्छेद— श्रुतः कविः वृषः वीरः सुबाहुः भद्रः एकलः ।
शान्तिः दर्शः पूर्णमासः कालिन्द्याः सोमकः अवरः ॥

शब्दार्थ—

श्रुतः	१.	श्रुत	शान्तिः	८.	शान्ति
कविः	२.	कवि	दर्शः	९.	दर्श
वृषः	३.	वृष	पूर्णमासः	१०.	पूर्णमास
वीरः	४.	वीर	कालिन्द्याः	१३.	कालिन्दी के पुत्र थे
सुबाहुः	५.	सुबाहु	सोमकः	१२.	सोमक ये
भद्रः	६.	भद्र	अवरः ॥	११.	सबसे छोटा
एकलः ।	७.	एक			

श्लोकार्थ—श्रुत, कवि, वृष, वीर, सुबाहु, भद्र, एक शान्ति, दर्श, पूर्णमास, सबसे छोटा सोमक ये कालिन्दी के पुत्र थे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

प्रघोषो गात्रवान्सिहो बलः प्रबल ऊर्ध्वगः ।
माद्र्याः पुत्रा महाशक्तिः सह ओजोऽपराजितः ॥१५॥

पदच्छेद— प्रघोषः गात्रवान् सिंहः बलः प्रबलः ऊर्ध्वगः ।
माद्र्या पुत्राः महाशक्तिः सह ओजः अपराजितः ॥

शब्दार्थ—

प्रघोषः	१. प्रघोष	माद्र्याः	११. माद्री के
गात्रवान्	२. गात्रवान्	पुत्राः	१२. पुत्र थे
सिंहः	३. सिंह	महाशक्तिः	७. महाशक्ति
बलः	४. बल	सहः	८. सह
प्रबलः	५. प्रबल	ओजः	९. ओज और
ऊर्ध्वगः ।	६. ऊर्ध्वग	अपराजितः ॥	१०. अपराजित थे

श्लोकार्थ—प्रघोष, गात्रवान्, सिंह, बल, प्रबल, ऊर्ध्वग, महाशक्ति, सह, ओज और अपराजित ये माद्री के पुत्र थे ॥

षोडशः श्लोकः

वृको हर्षोऽनिलो गृध्रो वर्धनोऽन्नाद एव च ।
महाशः पावनो वह्निर्मित्रविन्दात्मजाः क्षुधिः ॥१६॥

पदच्छेद— वृकः हर्षः अनिलः गृध्रः वर्धनः उन्नादः एव च ।
महाशः पावनः वह्निः मित्रविन्दा आत्मजाः क्षुधिः ॥

शब्दार्थ—

वृकः	१. वृक	महाशः	८. महाश
हर्षः	२. हर्ष	पावनः	९. पावन
अनिलः	३. अनिल	वह्निः	१०. वह्नि और
गृध्रः	४. गृध्र	मित्रविन्दा	१२. मित्रविन्दा के
वर्धनः	५. वर्धन	आत्मजाः	१३. पुत्र थे
उन्नादः	६. उन्नाद	क्षुधिः ॥	११. क्षुधि ये
एव च ।	७. और		

श्लोकार्थ—वृक, हर्ष, अनिल, गृध्र, वर्धन, उन्नाद और महाश, पावन, वह्नि और क्षुधि ये मित्रनिन्दा के पुत्र थे ॥

सप्तदशः श्लोकः

संग्रामजिद् बृहत्सेनः शूरः प्रहरणोऽरिजित् ।
जयः सुभद्रो भद्राया वाम आयुश्च सत्यकः ॥१७॥

पदच्छेद— संग्रामजित् बृहत्सेनः शूरः प्रहरणः अरिजित् ।
जयः सुभद्रः भद्रायाः वामः आयुः च सत्यकः ॥

शब्दार्थ—

संग्रामजित्	१.	संग्रामजित्	जयः	६.	जय
बृहत्सेनः	२.	बृहत्सेन	सुभद्रः	७.	सुभद्र
शूरः	३.	शूर	भद्रायाः	११.	भद्रा के पुत्र थे
प्रहरणः	४.	प्रहरण	वामः	८.	वाम
अरिजित् ।	५.	अरिजित्	आयुः च	९.	आयु और
			सत्यकः ॥	१०.	सत्यक ये

श्लोकार्थ—संग्रामजित्, बृहत्सेन, शूर, प्रहरण, अरिजित्, जय, सुभद्र, वाम, आयु और सत्यक ये भद्रा के पुत्र थे ॥

अष्टादशः श्लोकः

दीप्तिमांस्ताम्रतप्ताद्या रोहिण्यास्तनया हरेः ।
प्रद्युम्नाच्चानिरुद्धोऽभूद्रुक्मवत्यां महाबलः ॥१८॥

पदच्छेद— दीप्तिमान् ताम्रतप्त आद्याः रोहिण्याः तनयाः हरेः ।
प्रद्युम्नात् च अनिरुद्धः अभूत् रुक्मवत्याम् महाबलः ॥

शब्दार्थ—

दीप्तिमान्	३.	दीप्तिमान्	प्रद्युम्नात् च	७.	और प्रद्युम्न से
ताम्रतप्त	४.	ताम्रतप्त	अनिरुद्धः	१०.	अनिरुद्ध
आद्याः	५.	आदि	अभूत्	११.	हुये
रोहिण्याः	२.	रोहिणी से	रुक्मवत्याम्	८.	रुक्मवती के
तनयाः	६.	पुत्र हुये	महाबलः ॥	९.	महाबली
हरेः ।	१.	श्रीकृष्ण की पत्नी			

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण की पत्नी रोहिणी से दीप्तिमान्, ताम्रतप्त, आदि पुत्र हुये : और प्रद्युम्न से रुक्मवती के महाबली अनिरुद्ध हुये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

पुत्र्यां तु रुक्मिणो राजन् नाम्ना भोजकटे पुरं ।
एतेषां पुत्रपौत्राश्च बभूवुः कोटिशो नृप ।
मातरः कृष्णजातानां सहस्त्राणि च षोडश ॥१६॥

पदच्छेद— पुत्र्याम् तु रुक्मिणः राजन् नाम्ना भोजकटे पुरे ।
एतेषाम् पुत्र-पौत्राः च बभूवुः कोटिशः नृप ।
मातरः कृष्ण जातानाम् सहस्त्राणि च षोडशः ॥

शब्दार्थ—पुत्र्याम् तु	५.	पुत्री थी	नृप ।	१०.	हे राजन् !
रुक्मिणः	४.	रुक्मी की एक	मातरः	१३.	मातायें
राजन्	१.	हे राजन् !	कृष्ण	११.	श्रीकृष्ण के
नाम्ना	३.	नामक	जातानाम्	१२.	पुत्रों की
भोजकटे पुरे ।	२.	भोजकटपुरी में	सहस्त्राणि	१५.	हजार से (अधिक थीं)
एतेषाम्	६.	इन सबके	च	९.	क्योंकि
पुत्र-पौत्राः	७.	पुत्र और पौत्र	षोडशः ॥	१४.	सोलह
बभूवुः कोटिशः	८.	करोड़ों की संख्या में हुये			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! भोजकट नामक नगर में रुक्मी की एक पुत्री रुक्मवती थी । इन सबके पुत्र और पौत्र करोड़ों की संख्या में हुये । क्योंकि हे राजन् ! श्रीकृष्ण के पुत्रों की मातायें सोलह हजार से अधिक थीं ॥

विंशः श्लोकः

राजोवाच— कथं रुक्म्यरिपुत्राय प्रादाद् दुहितरं युधि ।
कृष्णेन परिभूतस्तं हन्तुं रन्ध्रं प्रतीक्षते ।
एतदाख्याहि मे विद्वन् द्विषोर्वैवाहिकं मिथः ॥२०॥

पदच्छेद— कथम् रुक्मी अरिपुत्राय प्रादात् दुहितरम् युधि ।
कृष्णेन परिभूतः तम् हन्तुम् रन्ध्रम् प्रतीक्षते ।
एतद् अख्याहि मे विद्वन् द्विषोः वैवाहिकम् मिथः ॥

शब्दार्थ— कथम्	६.	कैसे	हन्तुम् रन्ध्रम्	९.	मारने के लिये अवसर की
रुक्मी	३.	रुक्मी ने	प्रतीक्षते ।	१०.	प्रतीक्षा में था (फिर)
अरिपुत्राय	४.	शत्रु के पुत्र को (अपनी)	एतद् आख्याहि	१४.	यह बतलाइये
प्रादात् दुहितरम्	५.	पुत्री दी	मे	१३.	मुझे
युधि कृष्णेन	१.	युद्ध में श्रीकृष्ण से	विद्वन्	७.	हे विद्वन् (रुक्मी तो)
परिभूतः	२.	तिरस्कृत	द्विषोः	११.	दो शत्रुओं में
तम् ।	८.	कृष्ण को	वैवाहिकम् मिथः ॥	१२.	परस्पर वैवाहिक सम्बन्ध कैसे हुआ

श्लोकार्थ—युद्ध में श्रीकृष्ण से तिरस्कृत रुक्मी ने शत्रु के पुत्र को अपनी पुत्री कैसे दी । कृष्ण को मारने के लिये वह अवसर की प्रतीक्षा में था । फिर दो शत्रुओं में वैवाहिक सम्बन्ध कैसे हुआ । मुझे यह बतलाइये ॥

एकविंशः श्लोकः

अनागतमतीतं च वर्तमानमतीन्द्रियम् ।
विप्रकृष्टं व्यवहितं सम्यक् पश्यन्ति योगिनः ॥२१॥

पदच्छेद— अनागतम् अतीतम् च वर्तमानम् अतीन्द्रियम् ।
विप्रकृष्टम् व्यवहितम् सम्यक् पश्यन्ति योगिनः ॥

शब्दार्थ—

अनागतम्	२.	भविष्य	विप्रकृष्टम्	७.	बहुत दूर या
अतीतम्	३.	भूत	व्यवहितम्	८.	आड़ में पड़ी हैं
च	४.	और	सम्यक्	९.	भली-भाँति
वर्तमानम्	५.	वर्तमान की सभी बातें	पश्यन्ति	१०.	जानते हैं
अतीन्द्रियम् ।	६	जो इन्द्रियों से परे	योगिनः ॥	१.	योगी जन

श्लोकार्थ—योगी जन भविष्य, भूत और वर्तमान की सभी बातें, जो इन्द्रियों से परे, बहुत दूर या आड़ में पड़ी हैं, भली-भाँति जानते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—वृतः स्वयंवरे साक्षादनङ्गोऽङ्गयुतस्तया ।
राज्ञः समेतान् निर्जित्य जहारैकरथो युधि ॥२२॥

पदच्छेद— वृतः स्वयंवरे साक्षात् अनङ्गः अङ्गयुतः तया ।
राज्ञः समेतान् निर्जित्य जहार एकरथः युधि ॥

शब्दार्थ—

वृतः	६.	वरण कर लिया	राज्ञः	८.	राजाओं को
स्वयंवरे	१.	स्वयंवर में	समेतान्	७.	वहाँ पर इकट्ठे हुये
साक्षात्	४.	साक्षात्	निर्जित्य	११.	जीत कर
अनङ्गः	४.	कामदेव (अनिरुद्ध) को	जहार	१२.	रुक्मवती को हर लाये
अङ्गयुतः	३.	शरीरधारी	एकरथः	१०.	अकेले ही वे
तया ।	२.	रुक्मवती ने	युधि ॥	९.	युद्ध में

श्लोकार्थ—स्वयंवर में रुक्मवती ने शरीरधारी साक्षात् कामदेव को वरण कर लिया । वहाँ पर इकट्ठे हुये राजाओं को युद्ध में अकेले ही वे जीतकर रुक्मवती को हर लाये ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यद्यप्यनुस्मरन् वैरं रुक्मी कृष्णावमानितः ।
व्यतरद् भागिनेयाय सुतां कुर्वन् स्वसुः प्रियम् ॥२३॥

पदच्छेद— यद्यपि अनुस्मरन् वैरं रुक्मी कृष्ण अवमानितः ।
व्यतरत् भागिनेयाय सुताम् कुर्वन् स्वसुः प्रियम् ॥

शब्दार्थ—

यद्य प	१. यद्यपि	व्यतरत्	१२. ब्याह दी
अनुस्मरन्	६. स्मरण था (फिर भी उसने)	भागनेयाय	१०. भानजे को
वैरम	५. शत्रुता का	सुताम्	११. अपनी बेटी
रुक्मी	४. रुक्मी को	कुर्वन्	९. करने के लिये
कृष्ण	२. श्रीकृष्ण से	स्वसुः	७. बहन को
अवमानितः ।	३. अपमानित	प्रियम् ॥	८. प्रसन्न

श्लोकार्थ—यद्यपि श्रीकृष्ण से अपमानित रुक्मी को शत्रुता का स्मरण था । फिर भी उसने बहन को प्रसन्न करने के लिये भानजे को अपनी बेटी ब्याह दी ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

रुक्मिण्यास्तनयां राजन् कृतवर्मसुतो बली ।
उपयेमे विशालाक्षीं कन्यां चारुमतीं किल ॥२४॥

पदच्छेद— रुक्मिण्याः तनयाम् राजन् कृतवर्म सुतः बली ।
उपयेमे विशालाक्षीम् कन्याम् चारुमतीम् किल ॥

शब्दार्थ—

रुक्मिण्याः	२. रुक्मिणी की	उपयेमे	१०. विवाह किया
तनयाम्	३. पुत्री	विशालाक्षीम्	४. बड़ी-बड़ी आँखों वाली
राजन्	१. हे राजन् !	कन्याम्	६. कन्या से
कृतवर्म	७. कृतवर्मा के	चारुमतीम्	५. चारुमती नामक
सुतः	८. पुत्र	किल ॥	११. ऐसा सुना जाता है
बली ।	९. बली ने		

श्लोकार्थ—हे राजन् ! रुक्मिणी की पुत्री बड़ी-बड़ी आँखों वाली चारुमती नामक कन्या से कृतवर्मा के पुत्र बली ने विवाह किया । ऐसा सुना जाता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

दौहित्रायानिरुद्धाय पौत्रीं रुक्म्यददाद्धरेः ।
रोचनां बद्धवैरोऽपि स्वसुः प्रियचिकीर्षया ।
जानन्नधर्मं तद् यौनं स्नेहपाशानुबन्धनः ॥२५॥

पदच्छेद— दौहित्राय अनिरुद्धाय पौत्रीम् रुक्मी अददात् हरेः ।
रोचनाम् बद्धवैरः अपि स्वसुः प्रियचिकीर्षया ।
जानन् अधर्मम् तत् यौनम् स्नेह पाश अनुबन्धनः ॥

शब्दार्थ—

दौहित्राय	१२.	नाती	स्वसुः	६.	बहन रुक्मिणी को
अनिरुद्धाय	१३.	अनिरुद्ध को	प्रियचिकीर्षया ।	७.	प्रसन्न करने की इच्छा से
पौत्रीम्	१४.	पौत्री	जानन्	११.	जानते हुये भी
रुक्मी	३.	रुक्मी ने	अधर्मम्	१०.	धर्म के प्रतिकूल
अददात् ।	१६.	व्याह दी	तत	८.	उस
हरेः	१.	श्रीकृष्ण से	यौनम्	९.	विवाह सम्बन्ध
रोचनाम्	१५.	रोचना	स्नेह पाश	४.	स्नेह बन्धन में
बद्ध वैरः अपि	२.	शत्रुता में बँधे होने पर भी	अनुबन्धनः ॥	५.	बँध कर

श्लोकार्थ— श्रीकृष्ण से शत्रुता में बँधे होने पर भी रुक्मी ने स्नेह बन्धन में बँधकर बहन रुक्मिणी को प्रसन्न करने की इच्छा से उस विवाह सम्बन्ध को धर्म के प्रतिकूल जानते हुये भी नाती अनिरुद्ध को पौत्री रोचना से ब्याह दी ॥

षड्विंशः श्लोकः

तस्मिन्नभ्युदये राजन् रुक्मिणी रामकेशवौ ।
पुरं भोजकटं जग्मुः साम्बप्रद्युम्नकादयः ॥२६॥

पदच्छेद— तस्मिन् अभ्युदये राजन् रुक्मिणी राम केशवौ ।
पुरम् भोजकटम् जग्मुः साम्ब प्रद्युम्नक आदयः ॥

शब्दार्थ—

तस्मिम्	२.	उस	पुरम्	११.	नगर में
अभ्युदये	३.	विवाहोत्सव में	भोजकटम्	१०.	भोजकट
राजन्	१.	हे राजन् !	जग्मुः	१२.	गये
रुक्मिणी	४.	रुक्मिणी	साम्बः	७.	साम्ब
राम	५.	बलराम	प्रद्युम्नक	८.	प्रद्युम्न
केशवौ ।	६.	श्रीकृष्ण	आदयः ॥	९.	आदि

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उस विवाहोत्सव में रुक्मिणी, बलराम, श्रीकृष्ण, साम्ब, प्रद्युम्न आदि भोजकट नगर में गये ।

सप्तविंशः श्लोकः

तस्मिन् निवृत्त उद्वाहे कालिङ्गप्रमुखा नृपाः ।
दृप्तास्ते रुक्मिणं प्रोचुर्बलमक्षैर्विनिर्जय ॥२७॥

पदच्छेद— तस्मिन् निवृत्त उद्वाहे कालिङ्ग प्रमुखाः नृपाः ।
दृप्ताः ते रुक्मिणम् प्रोचुः बलम् अक्षैः विनिर्जय ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१. उस	दृप्ताः	८. घमंडी
निवृत्त	३. सम्पन्न हो जाने पर	ते	७. उस
उद्वाहे	२. विवाह के	रुक्मिणम्	९. रुक्मी से
कालिङ्ग	४. कलिङ्ग नरेश	प्रोचुः	१०. कहा कि
प्रमुखाः	५. आदि	बलम्	११. बलराम को
नृपाः ।	६. राजाओं ने	अक्षैः	१२. पासों के खेल में
		विनिर्जय ॥	१३. जीत लो

श्लोकार्थ—उस विवाह के सम्पन्न हो जाने पर कलिङ्ग नरेश आदि राजाओं ने उस घमंडी रुक्मी से कहा कि बलराम को पासों के खेल में जीत लो ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अनक्षज्ञो ह्ययं राजन्नपि तद्व्यसनं महत् ।
इत्युक्तो बलमाहूय तेनाक्षै रुक्म्यदीव्यत ॥२८॥

पदच्छेद— अनक्षज्ञः हि अयम् राजन् अपि तत् व्यसनम् महत् ।
इति उक्तः बलम् आहूय तेन अक्षैः रुक्मी अदीव्यत ॥

शब्दार्थ—

अनक्षज्ञः	४. पासों का खेल नहीं जानता है	इति	९. ऐसा
हि	३. निश्चित ही	उक्तः	१०. कहा जाने पर
अयम्	२. वह	बलम्	११. बलराम को
राजन्	१. हे राजन् !	आहूय	१२. बुलाकर
अपि	५. फिर भी	तेन	१३. उनके साथ
तत्	६. उसे (इसका)	अक्षैः	१५. चौसर
व्यसनम्	८. व्यसन है	रुक्मी	१४. रुक्मी
महत् ।	७. बहुत बड़ा	अदीव्यत ॥	१६. खेलने लगा

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वह निश्चित ही पासों का खेल नहीं जानता है। फिर भी उसे इसका बहुत बड़ा व्यसन है। ऐसा कहा जाने पर बलराम को बुलाकर उनके साथ रुक्मी चौसर खेलने लगा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

शतं सहस्रमयुतं रामस्तत्राददे पणम् ।
तंतु रुक्म्यजयत्तत्र कालिङ्गः प्राहसद् बलम् ।
दन्तान सन्दर्शयन्नुच्चैर्नामृष्यत्तद्धलायुधः ॥२९॥

पदच्छेद— शतम् सहस्रम् अयुतम् रामः तत्र आददे पणम् ।
तम् तु रुक्मी अजयत् तत्र कालिङ्गः प्राहसद् बलम् ।
दन्तान् सन्दर्शयन् उच्चैः न अमृष्यत् तद् हल आयुधः ॥

शब्दार्थ—शतम् सहस्रम्	२.	सौ हजार और	कालिंग	१०.	कालिंग नरेश
अयुतम्	३.	दस हजार (मुहरों का)	प्राहसद्	१५.	हँसने लगा
रामः तत्र	१.	वहाँ बलराम ने	बलम् ।	१४.	बलराम पर
आददे	५.	लगाया	दन्तान्	११.	दाँतों को
पणम् ।	४.	दाँव	सन्दर्शयन्	१२.	दिखाकर
तम् तु	६.	उसे तो	उच्चैः	१३.	जोर से
रुक्मी	७.	रुक्मी ने	न अमृष्यत्	१८.	सहन नहीं किया
अजयत्	९.	जीत लिया	तद्	१६.	उसे
तत्र	८	वहाँ	हल आयुधम् ॥	१७.	बलराम ने

श्लोकार्थ—वहाँ बलराम ने सौ हजार और दस हजार मुहरों का दाँव लगाया । उसे तो रुक्मी ने वहाँ जीत लिया । कलिंग नरेश दाँतों को दिखाकर जोर से बलराम पर हँसने लगा । उसे बलराम ने सहन नहीं किया ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततो लक्षं रुक्म्यगृह्णाद् ग्लहं तत्राजयद् बलः ।
जितवानहमित्याह रुक्मी कैतवमाश्रितः ॥३०॥

पदच्छेद— ततः लक्षम् रुक्मी अगृह्णाद् ग्लहम् तत्र अजयत् बलः ।
जितवान् अहम् इति आह रुक्मी कैतवम् आश्रितः ॥

शब्दार्थ— ततः	१.	तब	जितवान्	१४.	जीता है
लक्षम्	४.	एक लाख का	अहम्	१३.	मैंने
रुक्मी	२.	रुक्मी ने	इति	१२.	यह
अगृह्णात	६.	लगाया उसे	आह	११.	कहने लगा
ग्लहम्	५.	दाँव	रुक्मी	८.	रुक्मी
तत्र	३.	वहाँ	कैतवम्	९.	धूर्तता का
अजयत् बलम् ।	७.	बलराम ने जीत लिया	आश्रितः ॥	१०.	आश्रय लेकर

श्लोकार्थ— तब रुक्मी ने वहाँ एक लाख का दाँव लगाया । उसे बलराम ने जीत लिया । रुक्मी धूर्तता से कहने लगा यह मैंने जीता है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

मन्युना क्षुभितः श्रीमान् समुद्र इव पर्वणि ।
जात्यारुणाक्षोऽतिरुषा न्यर्बुदं ग्लहमाददे ॥३१॥

पदच्छेद— मन्युना क्षुभितः श्रीमान् समुद्र इव पर्वणि ।
जात्या अरुण अक्षः अतिरुषा न्यर्बुदम् ग्लहम् आददे ॥

शब्दार्थ—

मन्युना	२. क्रोध से	जात्या	७. स्वभाव से ही
क्षुभितः	३. क्षुब्ध हो गये	अरुण	८. लाल
श्रीमान्	१. बलराम जी	अक्षः	९. आँखों वाले उन्होंने
समुद्र	६. समुद्र में ज्वार आ गया है	अतिरुषा	१०. अत्यन्त क्रोध से
इव	४. मानों	न्यर्बुदम्	११. दस करोड़ मुद्रा का
पर्वणि ।	५. पूर्णिमा के दिन	ग्लहम् आददे ॥	१२. दाँव लगा दिया

श्लोकार्थ—बलराम जी क्रोध से क्षुब्ध हो गये । मानों पूर्णिमा के दिन समुद्र में ज्वार आ गया हो । स्वभाव से ही लाल आँखों वाले उन्होंने अत्यन्त क्रोध से दस करोड़ मुद्रा का दाँव लगा दिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तं चापि जितवान् रामो धर्मेणच्छलमाश्रितः ।
रुक्मी जितं मयात्रेमे वदन्तु प्राश्निका इति ॥३२॥

पदच्छेद— तम् च अपि जितवान् रामः धर्मेण छलम् आश्रितः ।
रुक्मी जितम् मया अत्र इमे वदन्तु प्राश्निकाः इति ॥

शब्दार्थ—

तम् च	१. उसे	रुक्मी	६. रुक्मी ने
अपि	२. भी	जितम्	१०. जीता है
जितवान्	५. जीत लिया (परन्तु)	मया	९. मैंने
रामः	३. बलराम ने	अत्र इमे	११. यहाँ ये
धर्मेण	४. धर्म से	वदन्तु	१४. निर्णय दें
छलम्	७. छल का	प्राश्निकाः	१२. कलिंग नरेशादि सभासद
आश्रितः ।	८. आश्रय लेकर (कहा)	इति	१३. इसका

श्लोकार्थ—उसे भी बलराम ने धर्म से जीत लिया । परन्तु रुक्मी ने छल का आश्रय लेकर कहा, मैंने जीता है । यहाँ ये कलिंग नरेशादि सभासद इसका निर्णय दें ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तदाब्रवीन्नभोवाणी बलेनैव जितो ग्लहः ।
धर्मतो वचनेनैव रुक्मी वदति वै मृषा ॥३३॥

पदच्छेद— तदा अब्रवीत् नभः वाणी बलेन एव जितः ग्लहः ।
धर्मतः वचनेन एव रुक्मी वदति वै मृषा ॥

शब्दार्थ—

तदा	१. तब	धर्मतः	४. धर्मपूर्वक
अब्रवीत्	३. कहा कि	वचनेन	५. कहने से
नभः वाणी	२. आकाशवाणी ने	एव	१३. ही
बलेन	६. बलराम ने	रुक्मी	१०. रुक्मी
एव	७. ही	वदति	१४. कह रहा है
जितः	९. जीता है	वै	११. निश्चित रूप से
ग्लहः ।	८. दाँव	मृषा ॥	१२. मिथ्या

श्लोकार्थ—तब आकाशवाणी ने कहा कि धर्मपूर्वक कहने से बलराम ने ही दाँव जीता है। रुक्मी निश्चित रूप से मिथ्या ही कह रहा है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तामनादृत्य वैदर्भो दुष्टराजन्यचोदितः ।
सङ्कर्षणं परिहसन् बभाषे कालचोदितः ॥३४॥

पदच्छेद— ताम्अनादृत्य वैदर्भः दुष्टराजन्य चोदितः ।
सङ्कर्षणम् परिहसन् बभाषे काल चोदितः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	१. उस (आकाशवाणी का)	सङ्कर्षणम्	९. बलराम जी की
अनादृत्य	२. तिरस्कार करके	परिहसन्	१०. हंसी उड़ाते हुये
वैदर्भः	६. विदर्भ पति रुक्मी	बभाषे	११. बोला
दुष्ट	३. दुष्ट	काल	७. जिसके सिर पर मौत
राजन्य	४. राजाओं से	चोदितः ॥	८. सवार थी
चोदितः ।	५. प्रेरित		

श्लोकार्थ—उस आकाशवाणी का तिरस्कार करके दुष्ट राजाओं से प्रेरित विदर्भ-पति रुक्मी, जिसके सिर पर मौत सवार थी, बलराम जी की हंसी उड़ाते हुये बोला ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

नैवाक्षकोविदा यूयं गोपाला वनगोचराः ।
अक्षैर्दीव्यन्ति राजानो बाणैश्च न भवादृशाः ॥३५॥

पदच्छेद— न एव अक्षकोविदाः यूयम् गोपालाः वन गोचराः ।
अक्षैः दीव्यन्ति राजानः बाणैः च न भवादृशाः ॥

शब्दार्थ—

न एव	७. नहीं हैं	अक्षैः	८. पासों से
अक्ष	५. जुआ खेलने में	दीव्यन्ति	१२. खेलते हैं
कोविदाः	६. निपुण	राजानः	११. राजा लोग
यूयम्	१. आप लोग	बाणैः	१०. बाणों से
गोपालाः	४. ग्वाले हैं	च	९. और
वन	२. वन में	न	१४. नहीं
गोचराः ॥	३. घूमने वाले	भवादृशाः ॥	१३. आप जैसे (क्या जाने)

श्लोकार्थ—आप लोग वन में घूमने वाले ग्वाले हैं । जुआ खेलने में निपुण नहीं हैं । पासों से और बाणों से राजा लोग खेलते हैं । आप जैसे क्या जानें ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

रुक्मिणैवमधिक्षिप्तो राजभिश्चोपहासितः ।
क्रुद्धः परिघमुद्यम्य जघ्ने तं नृम्णसंसदि ॥३६॥

पदच्छेद— रुक्मिणा एवम् अधिक्षिप्तः राजभिः च उपहासितः ।
क्रुद्धः परिघम् उद्यम्य जघ्ने तम् नृम्ण संसदि ॥

शब्दार्थ—

रुक्मिणा	१. रुक्मी के	परिघम्	७. मुद्गर
एवम्	२. इस प्रकार	उद्यम्य	८. उठाकर
अधिक्षिप्तः	३. आक्षेप और	जघ्ने	१२. मार डाला
राजभिः	४. राजाओं के	तम्	९. उस (रुक्मी को)
उपहासितः ।	५. उपहास करने पर	नृम्ण	१०. मांगलिक
क्रुद्धः	६. क्रुद्ध हुये बलराम ने	संसदि ॥	११. सभा में ही

श्लोकार्थ—रुक्मी के इस प्रकार आक्षेप और राजाओं के उपहास करने पर क्रुद्ध हुये बलराम ने मुद्गर उठा कर उस रुक्मी को मांगलिक सभा में ही मार डाला ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

कलिङ्गराजं तरसा गृहीत्वा दशमे पदे।
दन्तानपातयत् क्रुद्धो योऽहसद् विवृतैर्द्विजैः ॥३७॥

पदच्छेद— कलिङ्ग राजम् तरसा गृहीत्वा दशमे पदे।
दन्तान् अपातयत् क्रुद्धः यः अहसद् विवृतैः द्विजैः ॥

शब्दार्थ—

कलिङ्ग	२.	कलिङ्ग	दन्तान्	१२.	दाँतों को (तोड़कर)
राजम्	३.	राज को	अपातयत्	१३.	गिरा दिया
तरसा	१०.	हठात्	क्रुद्धः	१.	क्रुद्ध बलराम ने
गृहीत्वा	११.	पकड़कर	यः	४.	जो पहले
दशमे	८.	दश ही	अहसद्	७.	हँसता था
पदे।	९.	कदम पर	विवृतैः	६.	दिखाकर
			द्विजैः ॥	५.	दाँत

श्लोकार्थ—क्रुद्ध बलराम ने कलिङ्गराज को जो पहले दाँत दिखाकर हँसता था। दस ही कदम पर हठात् पकड़कर दाँतों को तोड़कर गिरा दिया ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

अन्ये निर्भिन्नबाहूरुशिरसो रुधिरोक्षिताः।
राजानो दुद्रुवुर्भीता बलेन परिघार्दिताः ॥३८॥

पदच्छेद— अन्ये निर्भिन्न बाहु ऊरु शिरसः रुधिर उक्षिताः।
राजानः दुद्रुवुः भीताः बलेन परिघ अर्दिताः ॥

शब्दार्थ—

अन्ये	९.	दूसरे	राजानः	१०.	राजा लोग
निर्भिन्न	४.	टूटी हुई	दुद्रुवुः	१२.	भागते बने
बाहु ऊरु	५.	बाँह, जाँघ और	भीताः	११.	भयभीत होकर
शिरसः	६.	सिर वाले तथा	बलेन	१.	बलराम के
रुधिर	७.	रुधिर से	परिघ	२.	मुद्गर की
उक्षिताः।	८.	लथपथ	अर्दिताः ॥	३.	चोट से

श्लोकार्थ—बलराम के मुद्गर की चोट से टूटी हुई बाँह और जाँघ तथा सिर वाले तथा रुधिर से लथपथ दूसरे राजा लोग भयभीत होकर भागते बने ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

निहते रुक्मिणि श्याले नाब्रवीत् साध्वसाधु वा ।
रुक्मिणीबलयो राजन् स्नेहभङ्गभयाद्धरिः ॥३९॥

पदच्छेद— निहते रुक्मिणि श्याले न अब्रवीत् साधु असाधु वा ।
रुक्मिणी बलयः राजन् स्नेह भङ्गभयात् हरिः ॥

शब्दार्थ—निहते	७. मार दिये जाने पर	रुक्मिणी	२. रुक्मिणी के
रुक्मिणी	६. रुक्मिणी के	बलयः	३. पति
श्याले	५. अपने साले	राजन्	१. हे राजन् !
न	१३. नहीं	स्नेह	८. स्नेह के
अब्रवीत्	१४. बोले	भङ्ग	९. भंग होने के
साधु	११. भला	भयात्	१०. भय से
असाधु वा ।	१२. या बुरा कुछ भी	हरिः ॥	४. श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—हे राजन् ! रुक्मिणी के पति श्रीकृष्ण अपने साले रुक्मी के मार दिये जाने पर स्नेह के भंग होने के भय से भला या बुरा कुछ भी नहीं बोले ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

ततोऽनिरुद्धं सह सूर्यया वरं रथं समारोप्य ययुः कुशस्थलीम् ।
रामादयो भोजकटाद् दशार्हाः सिद्धाखिलार्था मधुसूदनाश्रयाः ॥४०॥

पदच्छेद— ततः अनिरुद्धम् सह सूर्यया वरम् रथम् समारोप्य ययुः कुशस्थलीम् ।
राम आदयः भोजकटात् दशार्हाः सिद्ध अखिल अर्थाः मधुसूदन आश्रयाः ॥

शब्दार्थ—ततः	१. तत्पश्चात्	राम	७. बलराम
अनिरुद्धम्	११. अनिरुद्ध को	आदयः	८. आदि
सह	१३. साथ	भोजकटात्	१०. भोजकट नगर से
सूर्यया	१२. नव विवाहिता पत्नी के	दशार्हाः	९. यदुवंशी
वरम्	१४. श्रेष्ठ	सिद्ध	४. सिद्ध हो जाने पर
रथम्	१५. रथ पर	अखिल	२. सम्पूर्ण
समारोप्य	१६. बैठाकर	अर्थाः	३. प्रयोजन के
ययुः	१८. चले गये	मधुसूदन	५. श्रीकृष्ण के
कुशस्थलीम् ।	१७. द्वारका पुरी को	आश्रयाः ॥	६. आश्रित

श्लोकार्थ - तत्पश्च'त् सम्पूर्ण प्रयोजन के सिद्ध हो जाने पर श्रीकृष्ण के आश्रित बलराम आदि यदुवंशी भोजकट नगर से अनिरुद्ध को नव विवाहिता पत्नी के साथ श्रेष्ठ रथ पर बैठाकर द्वारकापुरी को चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे अनिरुद्धविवाहे रुक्मिवधो
नामैकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

द्विषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— बाणस्य तनयामूषामुपयेमे यदूत्तमः ।
तत्र युद्धमभूद् घोरं हरिशङ्करयोर्महत् ।
एतत् सर्वं महायोगिन् समाख्यातुं त्वमर्हसि ॥१॥

पदच्छेद— बाणस्य तनयाम् ऊषाम् उपयेमे यदूत्तमः ।
तत्र युद्धम् अभूत् घोरम् हरिशङ्करयोः महत् ।
एतत् सर्वम् महायोगिन् सम् आख्यातुम् त्वम् अर्हसि ॥

शब्दार्थ—बाणस्य	१.	बाणासुर को	घोरम्	६.	भयंकर
तनयाम्	२.	पुत्री	हरिशङ्करयोः	७.	श्रीकृष्ण और शङ्कर में
ऊषाम्	३.	ऊषा से	महत् ।	८.	बड़ा
उपयेमे	५.	विवाह किया था	एतत्	१३.	यह
यदूत्तमः ।	४.	यदुवंशियों में श्रेष्ठ (अनिरुद्ध ने)	सर्वम्	१४.	सब
तत्र	६.	वहाँ पर	महायोगिन्	१२.	हे महायोगी !
युद्धम्	१०.	युद्ध	सम् आख्यातुम्	१५.	बताने के लिये
अभूत्	११.	हुआ था	त्वम् अर्हसि ॥	१६.	आप योग्य हैं

श्लोकार्थ—बाणासुर की पुत्री ऊषा से यदुवंशियों में श्रेष्ठ अनिरुद्ध ने विवाह किया था। वहाँ पर श्रीकृष्ण और शङ्कर जी में बड़ा भयंकर युद्ध हुआ था। हे महायोगिन् ! यह सब बताने के लिये आप योग्य हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—बाणः पुत्रशतज्येष्ठो बलेरासीन्महात्मनः ।
येन वामनरूपाय हरयेऽदायि मेदिनी ॥२॥

पदच्छेद— बाणः पुत्र शत ज्येष्ठः बलेः आसीत् महात्मनः ।
येन वामन रूपाय हरये अदायि मेदिनी ॥

शब्दार्थ—बाणः	५.	बाण	येन	८.	जिस (बलि ने)
पुत्र	४.	पुत्रों में	वामन	९.	वामन
शत	३.	सौ	रूपाय	१०.	रूपधारी
ज्येष्ठः	६.	सबसे बड़ा	हरये	११.	हरि को
बलेः	२.	बलि के	अदायि	१३.	दे दी थी
आसीत्	७.	था	मेदिनी ॥	१२.	पृथ्वी
महात्मनः ।	१.	महात्मा			

श्लोकार्थ—महात्मा बलि के सौ पुत्रों में बाण सबसे बड़ा था। जिस बलि ने वामन रूपधारी हरि को पृथ्वी दे दी थी ॥

तृतीयः श्लोकः

तस्यौरसः सुतो बाणः शिवभक्तिरतः सदा ।
मान्यो वदान्यो धीमांश्च सत्यसन्धो दृढव्रतः ॥३॥

पदच्छेद— तस्यऔरसः सुतो बाणः शिवभक्तिरतः सदा ।
मान्यः वदान्यः धीमान् च सत्यसन्धः दृढ व्रतः ॥

शब्दार्थ —

तस्य	१.	उसका	मान्यः	७.	वह माननीय
औरसः	२.	औरस	वदान्यः	८.	अत्यन्तदानी
सुतः	३.	पुत्र	धीमान्	९.	बुद्धिमान्
बाणः	४.	बाण	च सत्यसन्धः	१२.	और अटल प्रतिज्ञा वाला था
शिवभक्ति	५	शङ्कर की भक्ति में	दृढ़	१०.	दृढ़
रतः सदा ।	६.	सदा रत रहता था	व्रतः ।	११.	व्रती

श्लोकार्थ—उसका औरस पुत्र बाण शङ्कर की भक्ति में सदा रत रहता था। वह माननीय अत्यन्त दानी बुद्धिमान् दृढ़ व्रती और अटल प्रतिज्ञा वाला था ॥

चतुर्थः श्लोकः

शोणिताख्ये पुरे रम्ये स राज्यमकरोत् पुरा ।
तस्य शम्भोः प्रसादेन किङ्करा इव तेऽमराः ।
सहस्रबाहुर्वाद्येन ताण्डवेऽतोषयन्मृडम् ॥४॥

पदच्छेद— शोणिताख्ये पुरे रम्ये स राज्यम् अकरोत् पुरा ।
तस्य शम्भोः प्रसादेन किङ्करा इव ते अमराः ।
सहस्र बाहुः वाद्येन ताण्डवे अतोषयत् मृडम् ॥

शब्दार्थ—

शोणितआख्ये	१.	शोणित नामक	किङ्कराः	११.	नौकर के
पुरे रम्ये	२.	रमणीय नगर में	इव	१२.	समान सेवा में रहते थे
सः राज्यम्	३.	वह राज्य	ते	८.	वे
अकरोत्	४.	करता था	अमराः ।	९.	देवगण
पुरा ।	५.	पूर्वकाल में	सहस्र बाहुः	१३.	उसकी हजार भुजायें थीं
तस्य	१०.	उसकी	वाद्येन	१५.	बाजे बजाकर
शम्भोः	६.	शंकर की	ताण्डवे	१४.	उसने ताण्डव नृत्य में
प्रसादेन	७.	कृपा से	अतोषयन् मृडम् ॥	१६.	शंकर को संतुष्ट किया था

श्लोकार्थ—शोणित नामक रमणीय नगर में वह राज्य करता था। पूर्वकाल में शंकर की कृपा से वे देवगण उसकी नौकर के समान सेवा में रहते थे। उसकी हजार भुजायें थीं। उसने ताण्डव नृत्य में बाजे बजाकर शङ्कर को सन्तुष्ट किया था ॥

पञ्चमः श्लोकः

भगवान् सर्वभूतेशः शरण्यो भक्तवत्सलः ।
वरेणच्छन्दयामास स तं वव्रे पुराधिपम् ॥५॥

पदच्छेद— भगवान् सर्वभूतईशः शरण्यः भक्त वत्सलः ।
वरेण छन्दयामास सः तम् वव्रे पुरअधिपम् ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	६. भगवान् शङ्कर ने (उससे)	वरेण	७. वर
सर्व	१. सभी	छन्दयामास	८. माँगने के लिये कहा
भूतईशः	२. प्राणियों के स्वामी	सः	९. उसने
शरण्यः	३. शरणागत रक्षक	तम्	१०. उससे
भक्त	४. भक्त	वव्रे	११. वर माँगा कि
वत्सलः ।	५. वत्सल	पुरअधिपम् ॥	१२. आप मेरे नगर के रक्षक बनें

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के स्वामी शरणागत-रक्षक भक्त-वत्सल भगवान् शङ्कर ने उससे वर माँगने के लिये कहा । उसने उनसे वर माँगा कि आप मेरे नगर के रक्षक बनें ॥

षष्ठः श्लोकः

स एकदाऽऽह गिरिशं पार्श्वस्थं वीर्यदुर्मदः ।
किरीटेनार्कवर्णेन संस्पृशंस्तत्पदाम्बुजम् ॥६॥

पदच्छेद— सः एकदा आह गिरिशम् पार्श्वस्थम् वीर्य दुर्मदः ।
किरीटेन अर्कवर्णेन संस्पृशन् तत् पद अम्बुजम् ॥

शब्दार्थ—

सः	३. उसने	किरीटेन	९. मुकुट से
एकदा	४. एक बार	अर्क	७. सूर्य के समान
आह	१४. कहा	वर्णेन	८. चमकीले
गिरिशम्	६. शङ्कर से	संस्पृशन्	१३. छूकर
पार्श्वस्थम्	५. समीप में स्थित	तत्	१०. उनके
वीर्य	१. बल-पौरुष के	पद	११. चरण
दुर्मदः ।	२. घमण्ड में चूर	अम्बुजम् ॥	१२. कमल को

श्लोकार्थ—बल-पौरुष के घमण्ड में चूर उसने एक बार समीप में स्थित शङ्कर से सूर्य के समान चमकीले मुकुट से उनके चरण कमल को छूकर कहा ॥

सप्तमः श्लोकः

नमस्ये त्वां महादेव लोकानां गुरुमीश्वरम् ।
पुंसामपूर्णकामानां कामपूरामराङ्घ्रिपम् ॥७॥

पदच्छेद— नमस्ये त्वाम् महादेव लोकानाम् गुरुम् ईश्वरम् ।
पुंसाम् अपूर्ण कामानाम् काम पूर अमर अङ्घ्रिपम् ॥

शब्दार्थ—

नमस्ये	६.	नमस्कार करता हूँ	पुंसाम्	७.	मनुष्यों की
त्वाम्	५.	आपको	पूर्णकामानाम्	८.	अपूर्ण कामनाओं की
महादेव	१.	हे महादेव !	काम	९.	कामना
लोकानाम्	२.	लोकों के	पूर	१०.	पूर्ण करने के लिए आप
गुरुम्	३.	गुरु और	अमर	११.	देव (कल्प)
ईश्वरम् ।	४.	ईश्वर	अङ्घ्रिपम् ॥	१२.	वृक्ष हैं

श्लोकार्थ—हे महादेव ! लोकों के गुरु और ईश्वर आपको नमस्कार करता हूँ । मनुष्यों की कामना पूर्ण करने के लिये आप कल्प वृक्ष हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

दोःसहस्रं त्वया दत्तं परं भाराय मेऽभवत् ।
त्रिलोक्यां प्रतियोद्धारं न लभे त्वदृते समम् ॥८॥

पदच्छेद— दोःसहस्रम् त्वया दत्तम् परम् भाराय मे अभवत् ।
त्रिलोक्याम् प्रतियोद्धारम् न लभे त्वदृते समम् ॥

शब्दार्थ—

दोःसहस्रम्	२.	दो हजार भुजायें	त्रिलोक्याम्	८.	तीनों लोक में
त्वया	१.	आपने	प्रतियोद्धारम्	११.	योद्धा
दत्तम्	३.	मुझे दीं	न	१२.	कोई नहीं
परम्	४.	केवल ये	लभे	१३.	मिल रहा है
भाराय	६.	भार रूप	त्वदृते	९.	आपके सिवाय (मुझे)
मे	५.	मेरे लिये	समम् ॥	१०.	अपने समान का
अभवत् ।	७.	हो गईं हैं			

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! आपने दो हजार भुजायें मुझे दीं । केवल ये मेरे लिये भार रूप हो गईं हैं । तीनों लोकों में आपके सिवाय मुझे अपने समान कोई योद्धा नहीं मिल रहा है ॥

नवमः श्लोकः

कण्डूत्या निभृतैर्दोर्भिर्युयुत्सुर्दिग्गजानहम् ।
आद्यायां चूर्णयन्नद्रीन् भीतास्तेऽपि प्रदुद्रुवुः ॥९॥

पदच्छेद— कण्डूत्या निभृतैर्दोर्भिः युयुत्सुः दिग्गजान् अहम् ।
आद्यायाम् चूर्णयन् अद्रीन् भीताः ते अपि प्रदुद्रुवुः ॥

शब्दार्थ—

कण्डूत्या	१. खुजलाहट से	आद्यायाम्	६. मार्ग में
निभृतैः	२. भरी हुई	चूर्णयन्	८. तोड़ता-फोड़ता हुआ
दोर्भिः	३. बाँहों से	अद्रीन्	७. पहाड़ों को
युयुत्सुः	४. युद्ध करने का इच्छुक	भीताः	११. परन्तु डर कर
दिग्गजान्	९. दिग्गजों की ओर चला गया	ते अपि	१०. वे भी
अहम् ।	५. मैं	प्रदुद्रुवुः ॥	१२. भाग गये

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! खुजलाहट से भरी हुई बाँहों से युद्ध करने का इच्छुक मैं मार्ग में पहाड़ों को तोड़ता-फोड़ता हुआ दिग्गजों की ओर चला गया । परन्तु वे भी डर कर भाग गये ॥

दशमः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा भगवान् क्रुद्धः केतुस्ते भज्यते यदा ।
त्वद्दर्पघ्नं भवेन्मूढ संयुगं मत्समेन ते ॥१०॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा भगवान् क्रुद्धः केतुः ते भज्यते यदा ।
त्वत् दर्पघ्नम् भवेत् मूढ संयुगम् मत् समेन ते ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. यह	त्वत्	१४. तेरा
श्रुत्वा	२. सुनकर	दर्पघ्नम्	१५. घमण्ड चूर करने वाला
भगवान्	३. भगवान् शङ्कर ने	भवेत्	१६. होगा
क्रुद्धः	४ क्रुद्ध होकर कहा	मूढ	५. हे मूर्ख !
केतुः	८. ध्वजा	संयुगम्	१३. युद्ध
ते	७. तेरी	मत्	१०. मेरे
भज्यते	९. टूट जायेगी (उस समय)	समेन	११. समान योद्धा से
यदा ।	६. जिस समय	ते ॥	१२. तेरा

श्लोकार्थ—यह सुनकर भगवान् शङ्कर ने क्रुद्ध होकर कहा—हे मूर्ख ! जिस समय तेरी ध्वजा टूट जायेगी उस समय मेरे समान योद्धा से तेरा युद्ध तेरा घमण्ड चूर करने वाला होगा ॥

एकादशः श्लोकः

इत्युक्तः कुमतिर्हृष्टः स्वगृहं प्राविशन्नृप।
प्रतीक्षन् गिरिशादेशं स्ववीर्यनशनं कुधीः ॥११॥

पदच्छेद— इति उक्तः कुमतिः हृष्टः स्वगृहम् प्राविशत् नृप।
प्रतीक्षन् गिरीश आदेशम् स्ववीर्य नशनम् कुधीः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	ऐसा	प्रतीक्षन्	१४.	प्रतीक्षा करने लगा
उक्तः	३.	कहने पर	गिरीश	१२.	शङ्कर के
कुमतिः	४.	दुर्बुद्धि (बाणासुर)	आदेशम्	१३.	आदेशानुसार युद्ध की
हृष्टः	५.	हर्षित होकर	स्व	९.	अपने
स्वगृहम्	६.	अपने घर में	वीर्य	१०.	पराक्रम का
प्राविशत्	७.	चला गया (वह)	नशनम्	११.	नाश करने वाले
नृप।	१.	हे राजन्!	कुधीः ॥	८.	मूर्ख

श्लोकार्थ—हे राजन्! ऐसा कहने पर दुर्बुद्धि बाणासुर हर्षित होकर अपने घर में चला गया। वह मूर्ख अपने पराक्रम का नाश करने वाले शङ्कर के आदेशानुसार युद्ध की प्रतीक्षा करने लगा।

द्वादशः श्लोकः

तस्योषा नाम दुहिता स्वप्ने प्राद्युम्निना रतिम्।
कन्यालभत कान्तेन प्रागदृष्टश्रुतेन सा ॥१२॥

पदच्छेद— तस्य ऊषा नाम दुहिता स्वप्ने प्राद्युम्निना रतिम्।
कन्या अलभत कान्तेन प्राक् अदृष्ट श्रुतेन सा ॥

शब्दार्थ—

तस्य	१.	उसकी	कन्या	६.	कन्या ने
ऊषा	२.	ऊषा	अलभत	१४.	प्राप्त किया
नाम	३.	नाम की	कान्तेन	१०.	सुन्दर
दुहिता	४.	एक कन्या थी	प्राक्	७.	पहले
स्वप्ने	१२.	स्वप्न में	अदृष्ट	८.	न देखे गये और
प्राद्युम्निना	११.	प्रद्युम्न पुत्र (अनिरुद्ध के साथ)	श्रुतेन	९.	न सुने गये
रतिम्।	१३.	समागम	सा ॥	५.	उस

श्लोकार्थ—उसकी ऊषा नाम की एक कन्या थी। उस कन्या ने पहले न देखे गये और न सुने गये सुन्दर प्रद्युम्न-पुत्र अनिरुद्ध के साथ समागम प्राप्त किया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सा तत्र तमपश्यन्ती क्वासि कान्तेति वादिनी ।
सखीनां मध्य उत्तस्थौ विह्वला व्रीडिता भृशम् ॥१३॥

पदच्छेद— सा तत्र तम् अपश्यन्ती क्वासि कान्तेति वादिनी ।
सखीनाम् मध्ये उत्तस्थौ विह्वला व्रीडिता भृशम् ॥

शब्दार्थ—

सा	१.	वह	सखीनाम्	८.	सखियों के
तत्र	२.	वहाँ	मध्ये	९.	बीच
तम्	३.	उसे	उत्तस्थौ	१०.	उठ बैठी और
अपश्यन्ती	४.	देखकर	विह्वला	११.	विह्वलतापूर्वक
क्वासि	६.	कहाँ हो	व्रीडिता	१३.	लज्जित हुई
कान्त इति	५.	प्रिय तम यह	भृशम् ॥	१२.	बहुत
वादिनी ।	७	बोलती हुई			

श्लोकार्थ—वह वहाँ उसे न देखकर प्रियतम कहाँ हो यह बोलती हुई सखियों के मध्य उठ बैठी और विह्वलतापूर्वक बहुत लज्जित हुई ॥

चतुर्दशः श्लोकः

बाणस्य मन्त्री कुम्भाण्डश्चित्रलेखा च तत्सुता ।
सख्यपृच्छत् सखीमूषां कौतूहलसमन्विता ॥१४॥

पदच्छेद— बाणस्य मन्त्री कुम्भाण्डः चित्रलेखा च तत् सुता ।
सखी अपृच्छत् सखीम् ऊषाम् कौतूहल समन्विता ॥

शब्दार्थ—

बाणस्य	१.	बाण का	सखी	७.	सखी (चित्रलेखा ने)
मन्त्री	२.	मन्त्री	अपृच्छत्	१२.	पूछा
कुम्भाण्डः	३.	कुम्भाण्ड था	सखीम्	१०.	सखी
चित्रलेखा	६.	चित्रलेखा थी	ऊषाम्	११.	ऊषा से
च तत्	४.	और उसकी	कौतूहल	८.	आश्चर्य से
सुता ।	५.	पुत्री	समन्विता ॥	९.	युक्त होकर

श्लोकार्थ—बाण का मन्त्री कुम्भाण्ड था । और उसकी पुत्री चित्रलेखा थी । सखी चित्रलेखा ने आश्चर्य से युक्त होकर सखी ऊषा से पूछा ॥

पञ्चदशः श्लोकः

कं त्वं मृगयसे सुभ्रूः कीदृशस्ते मनोरथः।
हस्तग्राहं न तेऽद्यापि राजपुत्र्युपलक्षये ॥१५॥

पदच्छेद— कम् त्वम् मृगयसे सुभ्रूः कीदृशःते मनोरथः।
हस्तग्राहम् न ते अद्य अपि राज पुत्रि उपलक्षये ॥

शब्दार्थ—

कम्	३.	किसे	हस्तग्राहम्	११.	पाणिग्रहण
त्वम्	२.	तुम	न	१२.	नहीं किया है
मृगयसे	४.	खोज रही हो	ते	१०.	तुम्हारा
सुभ्रूः	१.	हे सुन्दरी !	अद्य अपि	९.	अभी तक (किसी ने)
कीदृशःते	५.	कैसा तुम्हारा	राजपुत्रि	७.	हे राजकुमारी !
मनोरथः।	६.	मनोरथ है	उपलक्षये ॥	८.	मैं देखती हूँ कि

श्लोकार्थ—हे सुन्दरी ! तुम किसे खोज रही हो ? तुम्हारा कैसा मनोरथ है ? हे राजकुमारी ! मैं देखती हूँ कि अभी तक किसी ने तुम्हारा पाणिग्रहण नहीं किया है ॥

षोडशः श्लोकः

ऊषोवाच— दृष्टः कश्चिन्नरः स्वप्ने श्यामः कमललोचनः।
पीतवासा बृहद्बाहुर्योषितां हृदयङ्गमः ॥१६॥

पदच्छेद— दृष्टः कश्चित् नरः स्वप्ने श्यामः कमल लोचनः।
पीतवासाः बृहत् बाहुः योषिताम् हृदयङ्गमः ॥

शब्दार्थ—

दृष्टः	३.	देखा है	पीतवासाः	६.	पीताम्बरधारी
कश्चित नरः	२.	किसी एक पुरुष को	बृहत्	७.	लम्बी-लम्बी
स्वप्ने	१.	स्वप्न में	बाहुः	८.	भुजाओं वाला तथा
श्यामः	४.	जो साँवला	योषिताम्	९.	स्त्रियों का
कमललोचनः।	५.	कमल नयन	हृदयङ्गमः ॥	१०.	चित्त चुराने वाला है

श्लोकार्थ—स्वप्न में किसी एक पुरुष को देखा है। जो साँवला, कमल नयन, पीताम्बरधारी, लम्बी-लम्बी भुजाओं वाला तथा स्त्रियों का चित्त चुराने वाला है ॥

सप्तदशः श्लोकः

तमहं मृगये कान्तं पाययित्वाधरं मधु ।
क्वापि यातः स्पृहयतीं क्षिप्त्वा मां वृजिनार्णवे ॥१७॥

पदच्छेद— तम् अहम् मृगये कान्तम् पाययित्वा अधरम् मधु ।
क्वापि यातः स्पृहयतीम् क्षिप्त्वा माम् वृजिन अर्णवे ॥

शब्दार्थ—

तम्	२. उस	क्वापि	१३. कहीं
अहम्	१. मैं	यातः	१४. चला गया
मृगये	४. खोज रही हूँ (जो)	स्पृहयतीम्	८. तरसती हुई
कान्तम्	३. प्रियतम को	क्षिप्त्वा	१२. डालकर
पाययित्वा	७. पिलाकर	माम्	९. मुझे
अधरम्	५. (अपने) अधरों का	वृजिन	१०. दुःख
मधु ।	६. मधु (मुझे)	अर्णवे ॥	११ संसार में

श्लोकार्थ—मैं उस प्रियतम को खोज रही हूँ, जो अपने अधरों का मधु मुझे पिलाकर तरसती हुई मुझे दुःख संसार में डालकर कहीं चला गया ॥

अष्टादशः श्लोकः

चित्रलेखोवाच—व्यसनं तेऽपकर्षामि त्रिलोक्यां यदि भाव्यते ।
तमानेष्ये नरं यस्ते मनोहर्ता तमादिश ॥१८॥

पदच्छेद— व्यसनम् ते अपकर्षामि त्रिलोक्याम् यदि भाव्यते ।
तम् आनेष्ये नरम् यः ते मनः हर्ता तम् आदिश ॥

शब्दार्थ—

व्यसनम्	२. दुःख	तम्	७. तो उस
ते	१. मैं तुम्हारा	आनेष्ये	९. ले (आऊँगी)
अपकर्षामि	३. दूर कर दूँगी	नरम्	८. मनुष्य को मैं
त्रिलोक्याम्	५. तीनों लोक में कहीं भी वह	यः ते	१०. जो तुम्हारा
यदि	४. यदि	मनः हर्ता	११. चित्तचोर है
भाव्यते ।	६. होगा और उसे तुम पहचान लोगी	तम् आदिश ॥	१२. उसे चित्र में बतला दे ।

श्लोकार्थ—मैं तुम्हारा दुःख दूर कर दूँगी। यदि तीनों लोक में कहीं भी वह होगा और उसे तुम पहचान लोगी तो उस पुरुष को मैं ले आऊँगी। जो तुम्हारा चित्तचोर है, उसे चित्र मे बतला दो ॥

एकोनविंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा देवगन्धर्वसिद्धचारणपन्नगान् ।
दैत्यविद्याधरान् यक्षान् मनुजांश्च यथालिखत् ॥१९॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा देव गन्धर्व सिद्ध चारण पन्नगान् ।
दैत्य विद्याधरान् यक्षान् मनुजान् च यथा अलिखत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	यह	दैत्य	८.	दैत्य
उक्त्वा	२.	कहकर (उसने)	विद्याधरान्	९.	विद्याधर
देव	३.	देव	यक्षान्	१०.	यक्ष
गन्धर्व	४.	गन्धर्व	मनुजान्	१२.	मनुष्यों के
सिद्ध	५.	सिद्ध	च	११.	और
चारण	६.	चारण	यथा	१३.	ज्यों के त्यों चित्र
पन्नगान् ।	७.	नाग	अलिखत् ॥	१४.	बना दिये

श्लोकार्थ—यह कहकर उसने देवता, गन्धर्व, सिद्ध, चारण, नाग, दैत्य, विद्याधर, यक्ष और मनुष्यों के ज्यों के त्यों चित्र बना दिये ।

विंशः श्लोकः

मनुजेषु च सा वृष्णीन् शूरमानकदुन्दुभिम् ।
व्यलिखद् रामकृष्णौ च प्रद्युम्नं वीक्ष्य लज्जिता ॥२०॥

पदच्छेद— मनुजेषु च सा वृष्णीन् शूरम् आनकदुन्दुभिम् ।
व्यलिखत् रामकृष्णौ च प्रद्युम्नम् वीक्ष्य लज्जिता ॥

शब्दार्थ—

मनुजेषु च	२.	मनुष्यों में	व्यलिखत्	७.	चित्र बनाये
सा	१.	उसने	रामकृष्णौ	६.	बलराम और कृष्ण के
वृष्णीन्	३.	वृष्णि वंशियों में	च प्रद्युम्नम्	८.	और वह प्रद्युम्न को
शूरम्	४.	शूर (वसुदेव के पिता)	वीक्ष्य	९.	देखकर
आनकदुन्दुभिम् ।	५.	वसुदेव जी	लज्जिता ॥	१०.	लज्जित हो गई ॥

श्लोकार्थ—उसने मनुष्यों में वृष्णिवंशियों में शूर (वसुदेव के पिता) वसुदेव जी, बलराम और श्रीकृष्ण के चित्र बनाये । और वह प्रद्युम्न को देखकर लज्जित हो गई ।

एकविंशः श्लोकः

अनिरुद्धं विलिखितं वीक्ष्योषावाङ्मुखी ह्रिया ।
सोऽसावसाविति प्राह स्मयमाना महीपते ॥२१॥

पदच्छेद— अनिरुद्धम् विलिखितम् वीक्ष्य ऊषा अवाङ्मुखी ह्रिया ।
सः असौ असौ इति प्राह स्मयमाना महीपते ॥

शब्दार्थ—

अनिरुद्धम्	२. अनिरुद्ध का	सः	८. वह
विलिखितम्	३. चित्र	असौ	९. यही है
वीक्ष्य	४. देखकर	असौ	१०. यही है
ऊषा	५. ऊषा ने	इति	११. ऐसा (उसने)
अवाङ्मुखी	७. सिर झुका लिया	प्राह स्मयमाना	१२. मुसकराते हुये कहा
ह्रिया ।	६. लज्जा से	महीपते ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अनिरुद्ध का चित्र देखकर ऊषा ने लज्जा से सिर झुका लिया । वह यही है, यही है, ऐसा उसने मुसकराते हुये कहा ।

द्वाविंशः श्लोकः

चित्रलेखा तमाज्ञाय पौत्रं कृष्णस्य योगिनी ।
ययौ विहायसा राजन् द्वारकां कृष्णपालिताम् ॥२२॥

पदच्छेद— चित्रलेखा तम् आज्ञाय पौत्रम् कृष्णस्य योगिनी ।
ययौ विहायसा राजन् द्वारकाम् कृष्णपालिताम् ॥

शब्दार्थ—

चित्रलेखा	३. चित्रलेखा	ययौ	१२. पहुँची
तम्	४. उसे	विहायसा	११. आकाश मार्ग से
आज्ञाय	७. भली-भाँति जानकर	राजन्	१. हे राजन् !
पौत्रम्	६. पौत्र	द्वारकाम्	१०. द्वारकापुरी में
कृष्णस्य	५. श्रीकृष्ण का	कृष्ण	८. श्रीकृष्ण से
योगिनी ।	२. योगिनी	पालिताम् ॥	९. सुरक्षित

श्लोकार्थ—हे राजन् ! योगिनी चित्रलेखा उसे श्रीकृष्ण का पौत्र भली-भाँति जानकर श्रीकृष्ण से सुरक्षित द्वारकापुरी में आकाश मार्ग से पहुँची ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तत्र सुप्तं सुपर्यङ्के प्राद्युम्निं योगमास्थिता।
गृहीत्वा शोणितपुरं सख्यै प्रियमदर्शयत् ॥२३॥

पदच्छेद— तत्र सुप्तम् सुपर्यङ्के प्राद्युम्निम् योगम् आस्थिता।
गृहीत्वा शोणित पुरम् सख्यै प्रियम् अदर्शयत् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	गृहीत्वा	७.	उठाकर
सुप्तम्	३.	सोये हुये	शोणितपुरम्	८.	शोणितपुर ले आयी और
सुपर्यङ्के	२.	सुन्दर पलंग पर	सख्यै	९.	सखी ऊषा को
प्राद्युम्निम्	४.	अनिरुद्ध को	प्रियम्	१०.	उसके प्रियतम का
योगम्	५.	योग विद्या के	अदर्शयत् ॥	११.	दर्शन करा दिया
आस्थिता।	६.	प्रभाव से			

श्लोकार्थ—वहाँ पर सुन्दर पलंग पर सोये हुये अनिरुद्ध को योग विद्या के प्रभाव से उठाकर शोणितपुर ले आयी और सखी ऊषा को उसके प्रियतम का दर्शन करा दिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सा च तं सुन्दरवरं विलोक्य मुदितानना।
दुष्प्रेक्ष्ये स्वगृहे पुम्भिः रेमे प्राद्युम्निना समम् ॥२४॥

पदच्छेद— सा च तम् सुन्दर वरम् विलोक्य मुदित आनना।
दुष्प्रेक्ष्ये स्वगृहे पुम्भिः रेमे प्राद्युम्निना समम् ॥

शब्दार्थ—

सा च	१.	वह भी	दुष्प्रेक्ष्ये	८.	न देखे जाने योग्य
तम्	२.	उस	स्वगृहे	९.	अपने भवन में
सुन्दर	३.	सुन्दर	पुम्भिः	७.	पुरुषों द्वारा
वरम्	४.	वर को	रेमे	१२.	विहार करने लगी
विलोक्य	५.	देखकर	प्राद्युम्निना	१०.	अनिरुद्ध के
मुदित आनना।	६.	प्रसन्न मुख होकर	समम् ॥	११.	साथ

श्लोकार्थ—वह भी उस सुन्दर वर को देखकर प्रसन्न मुख होकर पुरुषों द्वारा न देखे जाने योग्य अपने भवन में अनिरुद्ध के साथ विहार करने लगी ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पराध्यर्यवासः स्रग्गन्धधूपदीपासनादिभिः ।
पानभोजनभक्ष्यैश्च वाक्यैः शुश्रूषयार्चितः ॥२५॥

पदच्छेद— पराध्र्य वासः स्रक् गन्ध धूपदीप आसन आदिभिः ।
पान भोजन भक्ष्यैः च वाक्यैः शुश्रूषया अर्चितः ॥

शब्दार्थ—

पराध्र्य	१.	वह बहुमूल्य	पान	८.	पीने
वासः	२.	वस्त्र	भोजन	९.	भोजन करने तथा
स्रक्	३.	पुष्पों के हार	भक्ष्यैः	१०.	निगल जाने योग्य पदार्थों
गन्ध	४.	इत्र फुलेल	च	११.	और
धूपदीप	५.	धूपदीप	वाक्यैः	१२.	सुन्दर वचनों से
आसन	६.	आसन	शुश्रूषया	१३.	एवम् सेवा शुश्रूषा से
आदिभिः ।	७.	आदि से	अर्चित ॥	१४.	अनिरुद्ध की अर्चना करती थी ।

श्लोकार्थ—वह बहुमूल्य, वस्त्र, पुष्पों के हार, इत्र फुलेल, धूपदीप, आसन, आदि से पीने, भोजन करने तथा निगल जाने योग्य पदार्थों से और सुन्दर वचनों से एवम् सेवा शुश्रूषा से अनिरुद्ध की अर्चना करती थी ॥

षड्विंशः श्लोकः

गूढः कन्यापुरे शश्वत् प्रवृद्धस्नेहया तया ।
नाहर्गणान् स बुबुधे ऊषयापहृतेन्द्रियः ॥२६॥

पदच्छेद— गूढः कन्यापुरे शश्वत् प्रवृद्ध स्नेहया तया ।
न अहः गणान् स बुबुधे ऊषया अपहृतइन्द्रियः ॥

शब्दार्थ—

गूढः	२.	छिपे रहने वाले	न	१२.	नहीं
कन्यापुरे	१.	कन्या के अन्तः पुर में	अहः गणान्	११.	दिनों के समूह को
शश्वत्	३.	निरन्तर	सः	१०.	अनिरुद्ध ने
प्रवृद्ध	४.	बढ़ते हुये	बुबुधे	१३.	जाना
स्नेहया	५.	स्नेह वाली	ऊषया	७.	ऊषा के द्वारा
तया ।	६.	उस	अपहृत	८.	अपहरण किये गये
			इन्द्रियः ॥	९.	चित्त वाले

श्लोकार्थ—कन्या के अन्तः पुर में छिपे रहने वाले निरन्तर बढ़ते हुये स्नेह वाली उस ऊषा के द्वारा अपहरण किये गये चित्त वाले अनिरुद्ध ने दिनों के समूह को नहीं जाना ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तां तथा यदुवीरेण भुज्यमानां हतव्रताम् ।
हेतुभिर्लक्षयाञ्चक्रुराप्रीतां दुरवच्छदैः ॥२७॥

पदच्छेद— ताम् तथा यदुवीरेण भुज्यमानाम् हत व्रताम् ।
हेतुभिः लक्षयाम् चक्रुः आप्रीताम् दुरवच्छदैः ॥

शब्दार्थ—

ताम्	५.	उस ऊषा में (पहरेदारों ने)	हेतुभिः	७.	कारणों को देखा जो
तथा	२.	उस प्रकार	लक्षयाम्	१०.	सूचना
यदुवीरेण	१.	यदुकुमार के द्वारा	चक्रुः	११.	दे रहे थे
भुज्यमाना	३.	भोगी जाती हुई (अतः)	आप्रीताम्	४.	बहुत प्रसन्न रहने वाली
हत	८.	नष्ट कौमार	दुरवच्छदैः ॥	६.	सुस्पष्ट
व्रताम् ।	९.	व्रत की			

श्लोकार्थ—यदु कुमार के द्वारा उस प्रकार भोगी जाती हुई अतः बहुत प्रसन्न रहने वाली उस ऊषा में पहरेदारों ने सुस्पष्ट उन कारणों को देखा जो नष्ट कौमार व्रत की सूचना दे रहे थे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

भटा आवेदयाञ्चक्रू राजंस्ते दुहितुर्वयम् ।
विचेष्टितं लक्षयामः कन्यायाः कुलदूषणम् ॥२८॥

पदच्छेद— भटाः आवेदयन् चक्रुः राजन् ते दुहितुः वयम् ।
विचेष्टितम् लक्षयामः कन्यायाः कुल दूषणम् ॥

शब्दार्थ—

भटाः	१.	पहरेदारों ने (बाणासुर से)	वयम् ।	५.	हम लोग
आवेदयान्	२.	निवेदन	विचेष्टितम्	१०.	रंग ढंग
चक्रुः	३.	किया	लक्षयामः	६.	देख रहे हैं (कि)
राजन्	४.	हे राजन् !	कन्यायाः	९.	राजकुमारी का
ते	७.	आपकी	कुल	११.	कुल को
दुहितुः	८.	पुत्री	दूषणम् ॥	१२.	दूषित करने वाला है

श्लोकार्थ—पहरेदारों ने बाणासुर से कहा—हे राजन् ! हम लोग देख रहे हैं कि आपकी पुत्री राजकुमारी का रंग ढंग कुल को दूषित करने वाला है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अनपायिभिरस्माभिर्गुप्तायाश्च गृहे प्रभो ।
कन्याया दूषणं पुम्भिर्दुष्प्रेक्षाया न विद्महे ॥२९॥

पदच्छेद— अनपायिभिः अस्माभिः गुप्तायाः च गृहे प्रभो ।
कन्यायाः दूषणम् पुम्भिः दुष्प्रेक्षायाः न विद्महे ॥

शब्दार्थ—

अनपायिभिः	३.	बिना क्रम टूटे	कन्यायाः	९.	कन्या का
अस्माभिः	४.	हम लोगों के द्वारा	दूषणम्	१०.	दूषित होना
गुप्तायाः	६.	सुरक्षित	पुम्भिः	७.	पुरुषों के द्वारा
च	२.	फिर	दुष्प्रेक्षायाः	८.	न देखने योग्य
गृहे	५.	महल में	न	१२.	नहीं आ रहा है
प्रभो ।	१.	हे प्रभो !	विद्महे ॥	११.	हमारी समझ में

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! फिर बिना क्रम टूटे हम लोगों के द्वारा महल में सुरक्षित पुरुषों के द्वारा न देखने योग्य कन्या का दूषित होना हमारी समझ में नहीं आ रहा है ॥

त्रिंशः श्लोकः

ततः प्रव्यथितो बाणो दुहितुः श्रुतदूषणः ।
त्वरितः कन्यकागारं प्राप्तोऽद्राक्षीद् यदूद्वहम् ॥३०॥

पदच्छेद— ततः प्रव्यथितः बाणः दुहितुः श्रुत दूषणः ।
त्वरितः कन्यका आगारम् प्राप्तः अद्राक्षीत् यदुउद्वहम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	त्वरितः	७.	शीघ्र
प्रव्यथितः	५.	बहुत दुःखी होकर	कन्यका	८.	कन्या के
बाणः	६.	बाणासुर ने	आगारम्	९.	महल में
दुहितुः	२.	पुत्री का	प्राप्तः	१०.	पहुँचने पर वहाँ
श्रुत	४.	सुनकर	अद्राक्षीत्	१२	देखा
दूषणः ।	३.	दूषित होना	यदुउद्वहम् ॥	११.	यदुवंशी अनिरुद्ध को

श्लोकार्थ—तदनन्तर पुत्री का दूषित होना सुनकर बहुत दुःखी होकर शीघ्र कन्या के महल में पहुँचने पर वहाँ यदुवंशी अनिरुद्ध को देखा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

कामात्मजं तं भुवनैकसुन्दरं श्यामं पिशङ्गाम्बरमम्बुजेक्षणम् ।
बृहद्भुजं कुण्डलकुन्तलत्विषा स्मितावलोकेन च मण्डिताननम् ॥३१॥

पदच्छेद—काम आत्मजम् तम् भुवन एक सुन्दरम् श्यामम् पिशङ्ग अम्बरम् अम्बुज ईक्षणम् ।
बृहत् भुजम् कुण्डल कुन्तल त्विषा स्मित अवलोकेन च मण्डित आननम् ॥

शब्दार्थ— काम	१.	कामावतार (प्रद्युम्न) के	बृहत् भुजम्	९.	लम्बी भुजाओं वाले
आत्मजम्	२.	पुत्र	कुण्डल	१०	कुण्डल और
तम् भुवन	३.	अनिरुद्धको देखा त्रिभुवन में जो	कुन्तलत्विषा	११.	घुँघराले बालों की
एक सुन्दरम्	४.	एक मात्र सर्वश्रेष्ठ सुन्दर	स्मित	१२.	कान्ति से मुसकराहट तथा
श्यामम्	५.	श्याम वर्ण वाले	अवलोकेन	१३.	चितवन से
पिशङ्ग अम्बरम्	६.	पीले वस्त्र धारण करने वाले	च	१४.	और
अम्बुज	७.	कमल के समान	मण्डित	१५.	विभूषित
ईक्षणम् ।	८.	नेत्र वाले	आननम् ॥	१६.	मुख वाले थे

श्लोकार्थ—कामावतार प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध को देखा । त्रिभुवन में जो एक मात्र सर्वश्रेष्ठ सुन्दर, श्याम वर्ण, पीले वस्त्र धारण करने वाले, कमल के समान नेत्र वाले, लम्बी भुजाओं वाले, कुण्डल और घुँघराले बालों को कान्ति से और मुसकराहट तथा चितवन से विभूषित मुख वाले थे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

दीव्यन्तमक्षैः प्रिययाभिनृम्णया तदङ्गसङ्गस्तनकुङ्कुमस्रजम् ।
बाह्वोर्दधानं मधुमल्लिकाश्रितां तस्याग्र आसीनमवेक्ष्य विस्मितः ॥३२॥

पदच्छेद—दीव्यन्तम् अक्षैः प्रियया अभिनृम्णया तत् अङ्गसङ्ग स्तन कुङ्कुम स्रजम् ।
बाह्वोः दधानम् मधुमल्लिकाश्रिताम् तस्याः अग्रे आसीनम् अवेक्ष्य विस्मितः ॥

शब्दार्थ—दीव्यन्तम्	४.	खेलते हुये	बाह्वोः	११.	दोनों भुजाओं के मध्य(गले में)
अक्षैः	३.	पासों से	दधानम्	१२.	धारण किये हुये (और)
प्रियया	२.	प्रियतमा के साथ	मधुमल्लिका	८.	मधुमालती (बसंती बेला) से
अभिनृम्णया	१.	खूब सजी-धजी हुई	श्रिताम्	९.	शोभित
तत् अङ्ग	५.	ऊषा के अङ्गों का	तस्याः अग्रे	१३.	ऊषा के आगे
सङ्ग स्तन	६.	सम्पर्क होते से स्तनों की	आसीनम्	१४.	बैठे हुये (अनिरुद्ध को)
कुङ्कुम	७.	केशर लगे हुये तथा	अवेक्ष्य	१५.	देखकर
स्रजम् ।	१०.	पुष्प हार को	विस्मितः ॥	१६.	बाणासुर आश्चर्य

श्लोकार्थ—खूब सजी-धजी हुई प्रियतमा के साथ पासों से खेलते हुये ऊषा के अङ्गों का सम्पर्क होने से स्तनों की केसर लगे हुये तथा मधुमालती, बसंती वेला से शोभित पुष्पहार को दोनों भुजाओं के मध्य गले में धारण किये और ऊषा के आगे बैठे हुये अनिरुद्ध को देखकर बाणासुर आश्चर्य चकित हो गया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

स तं प्रविष्टं वृतमाततायिभिर्भटैरनीकैरवलोक्य माधवः ।
उद्यम्य मौर्वं परिघं व्यवस्थितो यथान्तको दण्डधरो जिघांसया ॥३३॥

पदच्छेद— सः तम् प्रविष्टम् वृतम् आततायिभिः भटैः अनीकैः अवलोक्य माधवः ।
उद्यम्य मौर्वम् परिघम् व्यवस्थितः यथा अन्तकः दण्डधरः जिघांसया ॥

शब्दार्थ—

सः तम्	६	उस बाणासुर को	उद्यम्य	१२.	उठाकर
प्रविष्टम्	५.	महल में प्रवेश किये हुये	मौर्वम्	१०.	धनुष और
वृतम्	४.	साथ	परिघम्	११.	मुद्गर
आततायिभिः	१.	आततायी	व्यवस्थित	१३.	डट गये
भटैः	२.	योद्धाओं तथा	यथा	१४.	मानों
अनीकैः	३.	सैनिकों के	अन्तकः	१६.	मृत्यु (यम खड़ा) हो
अवलोक्य	७.	देखकर (उन)	दण्डधरः	१५.	काल दण्ड लेकर
माधवः ।	८.	(माधव) अनिरुद्ध ने	जिघांसया ॥	९.	उन्हें मार देने के लिये

श्लोकार्थ—आततायी योद्धाओं तथा सैनिकों के साथ महल में प्रवेश किये हुये उस बाणासुर को देखकर उन माधव अनिरुद्ध ने उन्हें मार देने के लिये धनुष और मुद्गर उठाकर डट गये। मानों काल दण्ड लेकर मृत्यु (यम खड़ा) हो ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

जिघृक्षया तान् परितः प्रसर्पतः शुनो यथा सूकरयूथपोऽहनत् ।
ते हन्यमाना भवनाद् विनिर्गता निर्भिन्नमूर्धोरुभुजाः प्रदुद्रुवुः ॥३४॥

पदच्छेद— जिघृक्षया तान् परितः प्रसर्पतः शुनः यथा सूकर यूथपः अहनत् ।
ते हन्यमानाः भवनात् विनिर्गताः निर्भिन्न मूर्धं ऊरु भुजाः प्रदुद्रुवुः ॥

शब्दार्थ—

जिघृक्षया	१.	उनको पकड़ने की इच्छा से	ते	१०.	वे सैनिक
तान्	४.	उन (सैनिकों को)	हन्यमानाः	९.	मारे जाते हुये
परितः	२.	चारों ओर से	भवनात्	१४.	महल से
प्रसर्पतः	३.	आक्रमण करते हुये	विनिर्गताः	१५.	निकल
शुनः	८.	कुत्तों को (मार डाले)	निर्भिन्न	१३.	टूट-फूट गये थे
यथा	६.	जैसे	मूर्ध	११.	जिनके सिर
सूकर यूथपः	७.	सुअरों के दल का नायक	ऊरुभुजाः	१२.	जाँघ भुजा (आदि अङ्ग)
अहनत् ।	५.	(अनिरुद्धउसी प्रकार)मार देते	प्रदुद्रुवुः ॥	१६.	भागे

श्लोकार्थ—उनको पकड़ने की इच्छा से चारों ओर से आक्रमण करते हुये उन सैनिकों को अनिरुद्ध उसी प्रकार मार देते जैसे सुअरों के दल का नायक कुत्तों को मार डाले। मारे जाते हुये वे सैनिक जिनके सिर, जाँघ, भुजा आदि अङ्ग टूट-फूट गये थे महल से निकल भागे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तं नागपाशैर्बलिनन्दनो बली घ्नन्तं स्वसैन्यं कुपितो बबन्ध ह ।
ऊषा भृशं शोकविषादविह्वला बद्धं निशम्याश्रुकलाक्ष्यरौदिषीत् ॥३५॥

पदच्छेद—

तम् नागपाशैः बलिनन्दनः बली घ्नन्तम् स्वसैन्यम् कुपितः बबन्ध ह ।
ऊषा भृशम् शोक विषाद विह्वला बद्धम् निशम्य अश्रुकला अक्षी अरौदिषीत् ॥

शब्दार्थ—

तम्	६.	अनिरुद्ध को	ऊषा	१४.	ऊषा
नागपाशैः	७.	नागपाश से	भृशम्	१५.	बहुत
बलिनन्दनः	३.	बाणासुर ने	शोक विषादः	११.	शोक और विषाद से
बली	२.	बलवान्	विह्वला	१२.	विह्वल एवम्
घ्नन्तम्	५.	मारते हुये	बद्धम्	९.	उसे बँधे हुये
स्वसैन्यम्	४.	अपनी सेना को	निशम्य	१०.	सुनकर
कुपितः	१.	क्रोध से भरे हुये	अश्रुकला अक्षी	१३.	आँसू से भरे नेत्रों वाली
बबन्ध ह ।	८.	बाँध लिया	अरौदिषीत् ॥	१६.	रोने लगी

श्लोकार्थ—

क्रोध से भरे हुये बलवान् बाणासुर ने अपनी सेना को मारते हुये अनिरुद्ध को नागपाश से बाँध लिया । उसे बँधे हुये सुनकर शोक और विषाद से विह्वल एवम् आँसू से भरे हुये नेत्रों वाली ऊषा बहुत रोने लगी ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे अनिरुद्धबन्धो
नाम द्विषष्टितमोऽध्यायः ॥६२॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रिषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अपश्यतां अनिरुद्धं तद्बन्धूनां च भारत।

चत्वारो वार्षिका मासा व्यतीयुरनुशोचताम् ॥१॥

पदच्छेद— अपश्यतां च आनिरुद्धम् तत् बन्धूनाम् च भारत।

चत्वारः वार्षिकाः मासाः व्यतीयुः अनु शोचताम् ॥

शब्दार्थ—

अपश्यताम्	४.	नहीं देखते हुये	चत्वारः	८.	चार
च	१.	और	वार्षिकाः	७.	बरसात के
अनिरुद्धम्	३.	अनिरुद्ध को	मासाः	९.	मास
तत्	५.	उनके	व्यतीयुः	११.	बीत गये
बन्धूनाम् च	६.	बन्धुओं के	अनुशोचताम् ॥	१०.	शोक करते हुये
भारत।	२.	हे परीक्षित !			

श्लोकार्थ—और हे परीक्षित् ! अनिरुद्ध को नहीं देखते हुये उनके बन्धुओं के बरसात के चार मास शोक करते हुये बीत गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

नारदात्तदुपाकर्ण्य वार्तां बद्धस्य कर्म च।

प्रययुः शोणितपुरं वृष्णयः कृष्णदेवताः ॥२॥

पदच्छेद— नारदात् तत् उपाकर्ण्य वार्ताम् बद्धस्य कर्म च।

प्रययुः शोणित पुरम् वृष्णयः कृष्ण देवताः ॥

शब्दार्थ—

नारदात्	१.	नारद से	प्रययुः	१२.	चढ़ाई कर दी
तत्	४.	किया हुआ वह	शोणित	१०.	शोणित
उपाकर्ण्य	६.	सुनकर	पुरम्	११.	पुर पर
वार्ताम्	३.	समाचार (तथा) उसका	वृष्णयः	९.	यदुवंशियों ने
बद्धस्य	२.	बंधे हुये (अनिरुद्ध)	कृष्ण	७	श्रीकृष्ण को ही
कर्म च।	५.	कार्य भी	देवताः ॥	८.	देवता मानने वाले

श्लोकार्थ—नारद से, बँधे हुये अनिरुद्ध का समाचार तथा उसका किया हुआ वह कार्य भी सुनकर श्रीकृष्ण को ही देवता मानने वाले यदुवंशियों ने शोणित पुर पर चढ़ाई कर दी ॥

तृतीयः श्लोकः

प्रद्युम्नो युयुधानश्च गदः साम्बोऽथ सारणः ।
नन्दोपनन्दभद्राद्या रामकृष्णानुवर्तिनः ।।३।।

पदच्छेद— प्रद्युम्नः युयुधानः च गदः साम्बः अथ सारणः ।
नन्द उपनन्द भद्र आद्याः राम कृष्ण अनुवर्तिनः ।।

शब्दार्थ—

प्रद्युम्नः	४.	प्रद्युम्न	नन्द	९.	नन्द
युयुधानः	५.	(युयुधान) सात्यकि	उपनन्द	१०.	उपनन्द और
च गदः	६.	और गद	भद्र	११.	भद्र
साम्बः	७.	साम्ब (तथा)	आद्याः	१२.	आदि ने (शोणित पुर) को घेर लिया
अथ	१.	अब	रामकृष्ण	२.	बलराम और श्रीकृष्ण के
सारणः ।	८.	सारण	अनुवर्तिनः ।।	३.	अनुयायी

श्लोकार्थ—अब बलराम और श्रीकृष्ण के अनुयायी प्रद्युम्न, सात्यकि और गद, साम्ब तथा सारण, नन्द, उपनन्द और भद्र आदि ने शोणित पुर को घेर लिया ।।

चतुर्थः श्लोकः

अक्षौहिणीभिर्द्वादशभिः समेताः सर्वतोदिशम् ।
रुरुधुर्बाणनगरं समन्तात् सात्वतर्षभाः ।।४।।

पदच्छेद— अक्षौहिणीभिः द्वादशभिः समेताः सर्वतः दिशम् ।
रुरुधुः बाण नगरम् समन्तात् सात्वत ऋषभाः ।।

शब्दार्थ—

अक्षौहिणीभिः	४.	अक्षौहिणी सेना के	रुरुधुः	१०.	घेर लिया
द्वादशभिः	३.	बारह	बाण नगरम्	८.	बाणासुर के नगर को
समेताः	५.	साथ	समन्तात्	९.	चारों ओर से
सर्वतः	६.	व्यूह	सात्वत	२.	यदुवंशियों ने
दिशम् ।	७.	बनाकर	ऋषभः ।।	१.	श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ यदुवंशियों ने बारह अक्षौहिणी सेना के साथ व्यूह बनाकर बाणासुर के नगर को चारों ओर से घेर लिया ।।

पञ्चमः श्लोकः

भज्यमानपुरोद्यानप्राकाराट्टालगोपुरम् ।
प्रेक्षमाणो रुषाविष्टस्तुल्यसैन्योऽभिनिर्ययौ ॥५॥

पदच्छेद— भज्यमान पुरउद्यान प्राकार अट्टाल गोपुरम् ।
प्रेक्षमाणः रुषा आविष्टः तुल्य सैन्यः अभिनिर्ययौ ॥

शब्दार्थ—

भज्यमान	६.	तोड़े जाते हुये	प्रेक्षमाणः	७.	देखकर
पुर	१.	नगर के	रुषा	८.	क्रोध से
उद्यान	२.	उद्यान	आविष्टः	९.	भरा हुआ बाणासुर
प्राकार	३.	परकोटे	तुल्य	१०.	समान (१२ अक्षौहिणी)
अट्टाल	४.	बुर्ज और	सैन्यः	११.	सेना के साथ
गोपुरम् ।	५.	सिंहद्वारों को	अभिनिर्ययौ ॥	१२.	नगर से निकल पड़ा

श्लोकार्थ—नगर के उद्यान, परकोटे बुर्ज और सिंहद्वारों को तोड़े जाते हुये देखकर क्रोध से भरा हुआ बाणासुर समान (१२ अक्षौहिणी) सेना के साथ नगर से निकल पड़ा ॥

षष्ठः श्लोकः

बाणार्थे भगवान् रुद्रः ससुतैः प्रमथैर्वृतः ।
आरुह्य नन्दिवृषभं युयुधे रामकृष्णयोः ॥६॥

पदच्छेद— बाण अर्थे भगवान् रुद्रः ससुतैः प्रमथैः वृतः ।
आरुह्य नन्दि वृषभम् युयुधे राम कृष्णयोः ॥

शब्दार्थ—

बाण अर्थे	१.	बाणासुर के लिये	आरुह्य	९.	सवार होकर
भगवान्	२.	भगवान्	नन्दि	७.	नन्दि
रुद्रः	३.	शङ्कर	वृषभम्	८.	बैल पर
ससुतैः	४.	पुत्रों और	युयुधे	१२.	युद्ध करने लगे
प्रमथैः	५.	प्रमथ गणों के	राम	१०.	बलराम और
वृतः ।	६.	साथ	कृष्णयोः ॥	११.	श्रीकृष्ण से

श्लोकार्थ—बाणासुर के लिये भगवान् शङ्कर पुत्रों और प्रमथ गणों के साथ नन्दी बैल पर सवार होकर बलराम और श्रीकृष्ण के साथ युद्ध करने लगे ॥

सप्तमः श्लोकः

आसीत् सुतुमुलं युद्धमद्भुतं रोमहर्षणम् ।
कृष्णशङ्करयो राजन् प्रद्युम्नगुहयोरपि ॥७॥

पदच्छेद— आसीत् सुतुमुलम् युद्धम् अद्भुतम् रोम हर्षणम् ।
कृष्ण शङ्करयोः राजन् प्रद्युम्न गुहयोः अपि ॥

शब्दार्थ—

आसीत्	१२.	हुआ	कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण और
सुतुमुलम्	८.	घमासान और	शङ्करयोः	३.	शङ्कर में तथा
युद्धम्	११.	युद्ध	राजन्	१.	हे राजन्
अद्भुतम्	७.	अद्भुत	प्रद्युम्न	४.	प्रद्युम्न और
रोम	९.	रोमाञ्च	गुहयोः	५.	कार्तिकेय में
हर्षणम् ।	१०.	कारी	अपि ॥	६.	भी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! श्रीकृष्ण और शङ्कर में तथा प्रद्युम्न और कार्तिकेय में भी अद्भुत घमासान रोमाञ्चकारी युद्ध हुआ ॥

अष्टमः श्लोकः

कुम्भाण्डकूपकर्णाभ्यां बलेन सह संयुगः ।
साम्बस्य बाणपुत्रेण बाणेन सह सात्यकेः ॥८॥

पदच्छेद— कुम्भाण्ड कूपकर्णाभ्याम् बलेन सह संयुगः ।
साम्बस्य बाणपुत्रेण बाणेन सह सात्यकेः ॥

शब्दार्थ—

कुम्भाण्ड	१.	कुम्भाण्ड और	साम्बस्य	५.	साम्ब का
कूपकर्णाभ्याम्	२.	कूपकर्ण का	बाण	६.	बाणासुर के
बलेन	३.	बलराम के	पुत्रेण	७.	पुत्र के साथ और
सह	४.	साथ	सह	९.	साथ
संयुगः ।	११.	युद्ध हुआ	सात्यकेः ॥	८.	सात्यकि के

श्लोकार्थ—कुम्भाण्ड और कूपकर्ण का बलराम के साथ, साम्ब का बाणासुर के पुत्र के साथ और सात्यकि के साथ बाण का युद्ध हुआ ॥

नवमः श्लोकः

ब्रह्मादयः सुराधीशा मुनयः सिद्धचारणाः ।
गन्धर्वाप्सरसो यक्षा विमानैर्द्रष्टुमागमन् ॥९॥

पदच्छेद— ब्रह्म आदयः सुर अधीशाः मुनयः सिद्ध चारणाः ।
गन्धर्व अप्सरसः यक्षाः विमानैः द्रष्टुम् आगमन् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म	१. ब्रह्मा	गन्धर्व	७. गन्धर्व
आदयः	२. आदि	अप्सरसः	८. अप्सरायें और
सुर अधीशाः	३. बड़े-बड़े देवता	यक्षाः	९. यक्ष
मुनयः	४. मुनि	विमानैः	१०. विमानों से युद्ध
सिद्ध	५. सिद्ध	द्रष्टुम्	११. देखने के लिये
चारणाः ।	६. चारण	आगमन् ॥	१२. आये

श्लोकार्थ—ब्रह्मा आदि बड़े-बड़े देवता मुनि, सिद्ध, चारण, गन्धर्व, अप्सरायें और यक्ष विमानों से युद्ध देखने के लिये आये ॥

दशमः श्लोकः

शङ्करानुचराञ्छौरिर्भूतप्रमथगुह्यकान् ।
डाकिनीर्यातुधानांश्च वेतालान् सविनायकान् ॥१०॥

पदच्छेद— शङ्कर अनुचरान् शौरिः भूत प्रमथ गुह्यकान् ।
डाकिनीः यातुधानान् च वेतालान् स विनायकान् ॥

शब्दार्थ—

शङ्कर	२. शिव के	डाकिनीः	७. डाकिनी
अनुचरान्	३. अनुचरों	यातुधानान्	८. रक्षोगण
शौरिः	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने	च	९. और
भूत	४. भूत	वेतालान्	१०. वेतालों के
प्रमथ	५. प्रमथगण	सः	११. साथ
गुह्यकान् ।	६. गुह्यक	विनायकान् ॥	१२. विनायकों को खदेड़ दिया

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने शिव के अनुचरों, भूत, प्रमथ गण, गुह्यक, डाकिनी, रक्षो गण, और वेतालों के साथ विनायकों को खदेड़ दिया ।

एकादशः श्लोकः

प्रेतमातृपिशाचांश्च कूष्माण्डान् ब्रह्मराक्षसान् ।
द्रावयामास तीक्ष्णाग्रैः शरैः शार्ङ्गधनुश्च्युतैः ॥११॥

पदच्छेद-- प्रेत मातृ पिशाचान् च कूष्माण्डान् ब्रह्मराक्षसान् ।
द्रावयामास तीक्ष्णाग्रैः शरैः शार्ङ्गधनुः च्युतैः ॥

शब्दार्थ—

प्रेत	१. प्रेत गण	द्रावयामास	११. खदेड़ दिया
मातृ	२. मातृ गण	तीक्ष्णाग्रैः	९. तीखी नोक वाले
पिशाचान्	३. पिशाच	शरैः	१०. बाणों से मार-मार कर
च	५. और	शार्ङ्गधनुः	७. शार्ङ्ग नामक धनुष से
कूष्माण्डान्	४. कूष्माण्ड	च्युतैः ॥	८. छूटे हुये
ब्रह्मराक्षसान् ।	६. ब्रह्मराक्षसों को		

श्लोकार्थ—प्रेत गण, मातृ गण, पिशाच, कूष्माण्ड, ब्रह्म राक्षसों को शार्ङ्ग नामक धनुष से छूटे हुये तीखी नोक वाले बाणों से मार-मार कर खदेड़ दिया ।।

द्वादशः श्लोकः

पृथग्विधानि प्रायुङ्क्त पिनाक्यस्त्राणि शार्ङ्गिणे ।
प्रत्यस्त्रैः शमयामास शार्ङ्गपाणिरविस्मितः ॥१२॥

पदच्छेद— प्रथक् विधानि प्रायुङ्क्त पिनाकी अस्त्राणि शार्ङ्गिणे ।
प्रत्यस्त्रैः शमयामास शार्ङ्गपाणिः अविस्मितः ॥

शब्दार्थ—

पृथक्	३. विभिन्न	प्रति	९. विरोधी
विधानि	४. प्रकार के	अस्त्रैः	१०. अस्त्रों से (उन्हें)
प्रायुङ्क्त	६. प्रयोग किया	शमयामास	११. शान्त कर दिया
पिनाकी	१. शङ्कर जी ने	शार्ङ्गपाणिः	७. भगवान् श्रीकृष्ण ने
अस्त्राणि	५ अस्त्रों का	अविस्मितः ॥	८. बिना विस्मय के
शार्ङ्गिणे ।	२. श्रीकृष्ण पर		

श्लोकार्थ—शङ्कर जी ने श्रीकृष्ण पर विभिन्न प्रकार के अस्त्रों का प्रयोग किया । भगवान् श्रीकृष्ण ने बिना विस्मय के विरोधी अस्त्रों से उन्हें शान्त कर दिया ।।

त्रयोदशः श्लोकः

ब्रह्मास्त्रस्य च ब्रह्मास्त्रं वायव्यस्य च पार्वतम् ।
आग्नेयस्य च पार्जन्यं नैजं पाशुपतस्य च ॥१३॥

पदच्छेद— ब्रह्म अस्त्रस्य च ब्रह्मास्त्रम् वायव्यस्य च पार्वतम् ।
आग्नेयस्य च पार्जन्यम् नैजम् पाशुपतस्य च ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म अस्त्रस्य	१.	श्रीकृष्णने ब्रह्मास्त्र के लिये	आग्नेयस्य	६.	आग्नेयास्त्र के लिये
च ब्रह्म अस्त्रम्	२.	ब्रह्मास्त्र का और	च पार्जन्यम्	७.	पार्जन्यास्त्र का
वायव्यस्य	३.	पार्वतास्त्र के	नैजम्	१०.	नारायणास्त्र का प्रयोग किया
च	४	लिये	पाशुपतस्य	९.	पाशुपतास्त्र के लिये
पार्वतम् ।	५.	पार्वतास्त्र का	च ॥	८.	और

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने ब्रह्मास्त्र के लिये ब्रह्मास्त्र का और पार्वतास्त्र के लिये पार्वतास्त्र का, आग्नेयास्त्र के लिये पार्जन्यास्त्र का और पाशुपतास्त्र के लिये नारायणास्त्र का प्रयोग किया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

मोहयित्वा तु गिरिशं जृम्भणास्त्रेण जृम्भितम् ।
बाणस्य पृतनां शौरिर्जघानासिगदेषुभिः ॥१४॥

पदच्छेद— मोहयित्वा तु गिरिशम् जृम्भणास्त्रेण जृम्भितम् ।
बाणस्य पृतनाम् शौरिः जघानअसि गदेषुभिः ॥

शब्दार्थ—

मोहयित्वा	५.	मोहित करके	पृतनाम्	११.	सेना को
तु गिरिशम्	४.	शङ्कर को	शौरिः	६.	भगवान् श्रीकृष्ण
जृम्भण	१.	जृम्भण	जघान	१२.	मारने लगे
अस्त्रेण	२.	अस्त्र से	असि	७.	तलवार
जृम्भितम् ।	३.	जम्भाई लेते हुये	गदा	८.	गदा और
बाणस्य	१०.	बाणासुर की	इषुभिः ॥	९.	बाणों से

श्लोकार्थ—जृम्भणास्त्र से जम्भाई लेते हुये शङ्कर को मोहित करके भगवान् श्रीकृष्ण ने तलवार, गदा और बाणों से बाणासुर की सेना को मारने लगे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

स्कन्दः प्रद्युम्नबाणौघैरर्द्यमानः समन्ततः ।
असृग् विमुञ्चन् गात्रेभ्यः शिखिनापाक्रमद् रणात् ॥१५॥

पदच्छेद— स्कन्दः प्रद्युम्न बाणओघैः अर्द्यमानः समन्ततः ।
असृग् विमुञ्चन् गात्रेभ्यः शिखिना अपाक्रमत् रणात् ॥

शब्दार्थ—

स्कन्दः	५.	कार्तिकेय	असृक्	७.	रक्त की धारा
प्रद्युम्न	१.	प्रद्युम्न के	विमुञ्चन्	८.	बहाते हुये
बाणओघैः	२.	बाण-समूहों से	गात्रेभ्यः	६.	अङ्गों से
अर्द्यमानः	४.	पीड़ित होते हुये	शिखिना	९.	मयूर द्वारा
समन्ततः ।	३.	चारों ओर से	अपाक्रमत्	११.	भाग निकले
			रणात् ॥	१०.	रमभूमि से

श्लोकार्थ—प्रद्युम्न के बाण समूहों से चारों ओर से पीडित होते हुये कार्तिकेय अङ्गों से रक्त की धारा बहाते हुये मयूर द्वारा रणभूमि से भाग निकले ॥

षोडशः श्लोकः

कुम्भाण्डः कूपकर्णश्च पेततुर्मुसलार्दितौ ।
दुद्रुवुस्तदनीकानि हतनाथानि सर्वतः ॥१६॥

पदच्छेद— कुम्भाण्डः कूपकर्णः च पेततुः मुसल अर्दितौ ।
दुद्रुवुः तत् अनीकानि हतनाथानि सर्वतः ॥

शब्दार्थ—

कुम्भाण्डः	१.	कुम्भाण्ड	दुद्रुवुः	१२.	भागने लगी
कूपकर्णः	३.	कूपकर्ण (बलराम जी के)	तत्	७.	उनकी
च	२.	और	अनीकानि	८.	सेनायें
पेततुः	६.	गिर पड़े	हत	१०.	मारे जाने पर
मूसल	४.	मूसल से	नाथानि	९.	सेनापति के
अर्दितौ ।	५.	पीडित होने पर	सर्वतः ॥	११.	चारों ओर

श्लोकार्थ—कुम्भाण्ड और कूपकर्ण बलराम जी के मूसल से पीडित होने पर गिर पड़े । उनकी सेनायें सेनापति के मारे जाने पर सब ओर भागने लगीं ॥

सप्तदशः श्लोकः

विशीर्यमाणं स्वबलं दृष्ट्वा बाणोऽत्यमर्षणः ।
कृष्णमभ्यद्रवत् संख्ये रथी हित्वैव सात्यकिम् ॥१७॥

पदच्छेद— विशीर्यमाणम् स्वबलम् दृष्ट्वा बाणः अति अमर्षणः ।
कृष्णम् अभ्यद्रवत् संख्ये रथी हित्वा एव सात्यकिम् ॥

शब्दार्थ—

विशीर्यमाणम्	२.	मारी जाती हुई	कृष्णम्	१२.	श्रीकृष्ण की ओर
स्वबलम्	१.	अपनी सेना को	अभ्यद्रवत्	१३.	दौड़ पड़ा
दृष्ट्वा	३.	देख कर	संख्ये	७.	वह युद्ध में
बाणः	४.	बाणासुर	रथी	८.	रथ में बैठा हुआ
अति	५.	बहुत ही	हित्वा	११.	छोड़कर
अमर्षणः ।	६.	क्रुद्ध हुआ (तथा)	एव	९.	ही
			सात्यकिम् ॥	१०.	सात्यकि को

श्लोकार्थ—अपनी सेना को मारी जाती हुई देखकर बाणासुर बहुत ही क्रुद्ध हुआ । तथा वह युद्ध में रथ में बैठा हुआ ही सात्यकि को छोडकर श्रीकृष्ण जी की ओर दौड़ पड़ा ॥

अष्टादशः श्लोकः

धनूंष्याकृष्य युगपद् बाणः पञ्चशतानि वै ।
एकैकस्मिञ्छरौ द्वौ द्वौ सन्दधे रणदुर्मदः ॥१८॥

पदच्छेद— धनूंषि आकृष्य युगपद् बाणः पञ्चशतानि च ।
एक-एकस्मिन् शरौ द्वौ-द्वौ सन्दधे रण दुर्मदः ॥

शब्दार्थ—

धनूंषि	७.	धनुष	एक-	१०.	एक
आकृष्य	८.	खींचकर	एकस्मिन्	११.	एक पर
युगपद्	४.	एक साथ ही	शरौ	१३.	बाण
बाणः	३.	बाणासुर ने	द्वौ-द्वौ	१२.	दो-दो
पञ्च	५.	पाँच	सन्दधे	१४.	चढ़ाये
शतानि	६.	सौ	रण	१.	रण से
च ।	९.	और	दुर्मदः ॥	२.	उन्मत्त

श्लोकार्थ—रण से उन्मत्त बाणासुर ने एक साथ ही पाँच सौ धनुष खींचकर और एक-एक पर दो-दो बाण चढ़ाये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तानि चिच्छेद भगवान् धनूंषि युगपद्धरिः ।
सारथिं रथमश्वांश्च हत्वा शङ्खमपूरयत् ॥१९॥

पदच्छेद— तानि चिच्छेद भगवान् धनूंषि युगपत् हरिः ।
सारथिम् रथम् अश्वान् च हत्वा शङ्खम् अपूरयत् ॥

शब्दार्थ—

तानि	३. उन	सारथिम्	८. सारथि
चिच्छेद	६. काट डाला	रथम्	९. रथ एवम्
भगवान्	१. भगवान्	अश्वान्	१०. घोड़ों को
धनूंषि	४. धनुषों को	च	७. और
युगपत्	५. एक साथ	हत्वा शङ्खम्	११. विनष्ट करके शङ्ख
हरिः ।	२. श्रीकृष्ण ने	अपूरयत् ॥	१२. बजाया

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उन धनुषों को एक साथ ही काट डाला । और सारथि, रथ एवम् घोड़ों को विनष्ट करके शङ्ख बजाया ॥

विंशः श्लोकः

तन्माता कोटरा नाम नग्न मुक्तशिरोरुहा ।
पुरोऽवतस्थे कृष्णस्य पुत्रप्राणरिरक्षया ॥२०॥

पदच्छेद— तत् माता कोटरा नाम नग्ना मुक्त शिरोरुहा ।
पुरः अवतस्थे कृष्णस्य पुत्रप्राण रिरक्षया ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसकी	पुरः	११. सामने
माता	३. माता	अवतस्थे	१२. खड़ी हो गई
कोटरानाम	२. कोटरा नाम की	कृष्णस्य	१०. श्रीकृष्ण के
नग्ना	९. नङ्गी होकर	पुत्र	४. पुत्र के
मुक्त	८. खोलकर	प्राण	५. प्राणों को
शिरोरुहा ।	७. बालों को	रिरक्षया ॥	६. बचाने की इच्छा से

श्लोकार्थ—उसकी कोटरा नाम की माता पुत्र के प्राणों को बचाने की इच्छा से बालों को खोलकर नङ्गी होकर श्रीकृष्ण के सामने खड़ी हो गई ॥

एकविंशः श्लोकः

ततस्तिर्यङ्मुखो नग्नामनिरीक्षन् गदाग्रजः ।
बाणश्च तावद् विरथश्छिन्नधन्वाविशत् पुरम् ॥२१॥

पदच्छेद— ततः तिर्यङ्मुखः नग्नाम् अनिरीक्षन् गदद अग्रजः ।
बाणः च तावत् विरथः छिन्नधन्वा आविशत् पुरम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	बाणः च	७.	बाण भी
तिर्यङ्मुखः	५.	अपने मुंह को फेर लिया	तावत्	६.	तब तक
नग्नाम्	३.	नङ्गी कोटरा को	विरथः	९.	रथ हीन हो जाने से
अनिरीक्षन्	४.	न देखते हुये	छिन्नधन्वा	८.	धनुष कट जाने तथा
गदअग्रजः ।	२.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	आविशत्	११.	चला गया
			पुरम् ॥	१०.	नगर में

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्ण ने नङ्गी कोटरा को न देखते हुये अपने मुँह को फेर लिया । तब तक बाण भी धनुष कट जाने तथा रथ हीन हो जाने से नगर में चला गया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

विद्राविते भूतगणे ज्वरस्तु त्रिशिरास्त्रिपात् ।
अभ्यधावत दाशार्हं दहन्निव दिशो दश ॥२२॥

पदच्छेद— विद्राविते भूतगणे ज्वरस्तु त्रिशिराः त्रिपात् ।
अभ्यधावत दाशार्हम् दहन् इव दिशः दश ॥

शब्दार्थ—

विद्राविते	२.	भाग जाने पर	अभ्यधावत	१२.	दौड़ा
भूतगणे	१.	भूत-गणों के	दाशार्हम्	११.	श्रीकृष्ण की ओर
ज्वरः	६.	ज्वर	दहन्	१०.	जलाता हुआ
तु	३.	वह	इव	७.	मानों
त्रिशिराः	४.	तीन शिर और	दिशः	८.	दशों
त्रिपात् ।	५.	तीन पैर वाला	दश ॥	९.	दिशाओं को

श्लोकार्थ—भूत-गणों के भाग जाने पर वह तीन सिर और तीन पैर वाला ज्वर मानों दशों दिशाओं को जलाता हुआ श्रीकृष्ण की ओर दौड़ा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अथ नारायणो देवस्तं दृष्ट्वा व्यसृजज्ज्वरम् ।
माहेश्वरो वैष्णवश्च युयुधाते ज्वरावुभौ ॥२३॥

पदच्छेद— अथ नारायणः देवः तम् दृष्ट्वा व्यसृजत् ज्वरम् ।
माहेश्वरः वैष्णवः च युयुधाते ज्वरौ उभौ ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	माहेश्वरः	८.	माहेश्वर
नारायणः	३.	नारायण ने	वैष्णवः	१०.	वैष्णव
देवः	२	भगवान्	च	९.	और
तम्	४.	उसे	युयुधाते	१३.	आपस में लड़ने लगे
दृष्ट्वा	५.	देखकर	ज्वरौ	१२.	ज्वर
व्यसृजत्	७.	छोड़ा (अब)	उभौ ॥	११.	दोनों
ज्वरम् ।	६.	(अपना) ज्वर			

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् नारायण ने उसे देखकर अपना ज्वर छोड़ा । अब माहेश्वर और वैष्णव दोनों ज्वर आपस में लड़ने लगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

माहेश्वरः समाक्रन्दन् वैष्णवेन बलार्दितः ।
अलब्ध्वाभयमन्यत्र भीतो माहेश्वरो ज्वरः ।
शरणार्थी हृषीकेशं तुष्टाव प्रयताञ्जलिः ॥२४॥

पदच्छेद— माहेश्वरः समाक्रन्दन् वैष्णवेन बलार्दितः ।
अलब्ध्वा अभयम् अन्यत्र भीतः माहेश्वरः ज्वरः ।
शरणार्थी हृषीकेशम् तुष्टाव प्रयत अञ्जलिः ॥

शब्दार्थ—

माहेश्वरः	३.	माहेश्वर ज्वर	माहेश्वरः	९.	माहेश्वर
समाक्रन्दन्	४.	अन्त में चिल्लाने लगा	ज्वरः ।	१०.	ज्वर
वैष्णवेन	१.	वैष्ण ज्वर के	शरणार्थी	१२.	शरण में गया और
बलार्दितः ।	२.	तेज से पीड़ित होकर	हृषीकेशम्	११.	श्रीकृष्ण की
अलब्ध्वा	७.	न देखकर	तुष्टाव	१५.	स्तुति करने लगा
अभयम्	६.	त्राण	प्रयत	१३.	नम्रता पूर्वक
अन्यत्र	५.	कहीं भी	अञ्जलिः ॥	१४.	हाथ जोड़कर
भीतः	८.	भयभीत होकर			

श्लोकार्थ—वैष्णव ज्वर के तेज से पीड़ित होकर माहेश्वर ज्वर अन्त में चिल्लाने लगा । कहीं भी त्राण न देखकर भयभीत होकर माहेश्वर ज्वर श्रीकृष्ण की शरण में गया, और नम्रता पूर्वक हाथ जोड़कर स्तुति करने लगा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ज्वर उवाच—नमामि त्वानन्तशक्तिं परेशं सर्वात्मानं केवलं ज्ञप्तिमात्रम् ।
विश्वोत्पत्तिस्थानसंरोधहेतुं यत्तद् ब्रह्म ब्रह्मलिङ्गं प्रशान्तम् ॥२५॥

पदच्छेद— नमामि त्वा अनन्त शक्तिम् परेशम् सर्व आत्मानं केवलं ज्ञप्ति मात्रम् ।
विश्व उत्पत्ति स्थान संरोध हेतुम् यत्-तत् ब्रह्म ब्रह्मलिङ्गम् प्रशान्तम् ॥

शब्दार्थ—

नमामि	१६.	प्रणाम करता हूँ	विश्व	७.	संसार की
त्वा	१५.	आपको मैं	उत्पत्ति	८.	उत्पत्ति
अनन्त	१.	अनन्त शक्ति वाले	स्थान संरोध	९.	स्थिति और संहार
शक्तिम्	२.	परमेश्वर	हेतुम्	१०.	कारण
परेशम्	३.	सबके	यत्-तत्	१४.	स्वरूप
आत्मानम्	४.	आत्मा	ब्रह्म	१३.	ब्रह्म
केवलम्	५.	अद्वितीय	ब्रह्मलिङ्गम्	१२.	श्रुतियों द्वारा वर्णित
ज्ञप्तिमात्रम् ।	६.	ज्ञान स्वरूप	प्रशान्तम् ॥	११.	समस्त विकारों से रहित

श्लोकार्थ—अनन्त शक्ति वाले, परमेश्वर, सबके आत्मा, अद्वितीय, ज्ञान स्वरूप, संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहार के कारण समस्त विकारों से रहित, श्रुतियों द्वारा वर्णित, ब्रह्म स्वरूप, आपको मैं प्रणाम करता हूँ ॥

षड्विंशः श्लोकः

कालो दैवं कर्म जीवः स्वभावो द्रव्यं क्षेत्रं प्राण आत्मा विकारः ।
तत्सङ्घातो बीजरोहप्रवाहस्त्वन्मायैषा तन्निषेधं प्रपद्ये ॥२६॥

पदच्छेद— कालः दैवं कर्म जीवः स्वभावः द्रव्यम् क्षेत्रम् प्राणः आत्मा विकारः ।
तत् सङ्घातः बीजरोह प्रवाहः त्वन्माया एषा तत् निषेधम् प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ—

कालः	१.	काल	तत् सङ्घातः	८.	इन सब का लिङ्ग शरीर
दवम् कर्म	२.	अदृष्ट कर्म	बीजरोह	९.	बीजाङ्कुर
जीवः	३.	जीव	प्रवाहः	१०	न्याय से, कर्म और उससे शरीर की उत्पत्ति
स्वभावः	४.	स्वभाव	त्वन्माया	११.	यह आपकी माया है
द्रव्यम् क्षेत्रम्	५.	सूक्ष्म भूत शरीर	एषा तत्	१२.	आप उस माया के
प्राणः आत्मा	६.	प्राण आत्मा	निषेधम्	१३.	निषेध की परम अवधि हैं
विकारः ।	७.	अहंकार, इन्द्रियाँ, पञ्चभूत	प्रपद्ये ॥	१४.	मैं आपकी शरण ग्रहण करता हूँ

श्लोकार्थ—काल, अदृष्ट कर्म, जीव, स्वभाव, सूक्ष्म भूत, प्राण, अहंकार, इन्द्रियाँ, पञ्चभूत, इन सबका लिङ्ग शरीर, बीजाङ्कुर न्याय से, कर्म और उससे शरीर की उत्पत्ति यह आपकी माया है। आप उस माया के निषेध की परम अवधि हैं। मैं आपकी शरण ग्रहण करता हूँ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

नानाभावैर्लीलयैवोपपन्नैर्देवान् साधूँल्लोकसेतून् बिभर्षि ।
हंस्युन्मार्गान् हिंसया वर्तमानान् जन्मैतत्ते भारहाराय भूमेः ॥२७॥

पदच्छेद— नानाभावैः लीलया एव उपपन्नैः देवान् साधून् लोक सेतून् बिभर्षि ।
हंसि उन्मार्गान् हिंसया वर्तमानान् जन्मएतत् ते भारहाराय भूमेः ॥

शब्दार्थ—

नाना	३.	अनेक प्रकार के	हंसि	१२.	संहार करते हैं
भावैः	४.	रूपों से	उन्मार्गान्	९.	कुमार्ग गामी और
लीलया	१.	आप लीला से ही	हिंसया	१०.	हिंसा
एव उपपन्नैः	२.	बने हुये	वर्तमानान्	११.	करने वालों का
देवान्	५.	देवता	जन्म एतत्	१४.	यह अवतार
साधून	६.	साधु तथा	ते	१३.	आपका
लोकसेतून्	७.	लोक मर्यादाओं को	भारहाराय	१६.	भार उतारने के लिये ही हुआ है
बिभर्षि ।	८.	धारण तथा पोषण करते हैं	भूमेः ॥	१५.	भूमि का

श्लोकार्थ—आप लीला से ही बने हुये अनेक प्रकार के रूपों से देवता, साधु तथा मर्यादाओं को धारण तथा पोषण करते हैं । कुमार्गगामी और हिंसा करने वालों का संहार करते हैं । आपका यह अवतार भूमि का भार उतारने के लिये ही हुआ है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तप्तोऽहं ते तेजसा दुःसहेन शान्तोग्रेणात्युल्बणेन ज्वरेण ।
तावत्तापो देहिनां तेऽङ्घ्रिमूलं नो सेवेरन् यावदाशानुबद्धाः ॥२८॥

पदच्छेद— तप्तः अहम् ते तेजसा दुःसहेन शान्तः उग्रेण अति उल्बणेन ज्वरेण ।
तावत् तापः देहिनाम् ते अङ्घ्रिमूलम् नो सेवेरन् यावत् आशा अनुबद्धाः ॥

शब्दार्थ—

तप्तः	८.	तप गया हूँ	तावत्	१०.	तभी तक
अहम् ते	१.	मैं आपके	तापः	११.	ताप रहता है
तेजसा	७.	तेज से	देहिनाम्	९.	प्राणियों को
दुःसहेन	६.	असहनीय	ते अङ्घ्रिमूलम्	१४.	आपके चरणों के मूल का
शान्तः	२.	शान्त	नो	१६.	नहीं
उग्रेण	३.	उग्र और	सेवेरन्	१५.	सेवन करते हैं
अति उल्बणेन	४.	अत्यन्त भयानक	यावत्	१२.	जब तक वे
ज्वरेण ।	५.	ज्वर के	आशाअनुबद्धाः ॥	१३.	आशा में बँधे रहने से

श्लोकार्थ—मैं आपके शान्त, उग्र और अत्यन्त भयानक ज्वर के असहनीय तेज से तप गया हूँ । प्राणियों को तभी तक ताप रहता है । जब तक वे आशा में बँधे रहने से आपके चरणों के मूल का सेवन नहीं करते हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—त्रिशिरस्ते प्रसन्नोऽस्मि व्येतु ते मज्ज्वराद् भयम् ।
यो नौ स्मरति संवादं तस्य त्वन्न भवेद् भयम् ॥२९॥

पदच्छेद— त्रिशिरः ते प्रसन्नः अस्मि व्येतु ते मज्ज्वरात् भयम् ।
यः नौ स्मरति संवादम् तस्य त्वत् न भवेत् भयम् ॥

शब्दार्थ—

त्रिशिरः ते	१. हे त्रिशिरा ! मैं तुमसे		यः	७. जो व्यक्ति	
प्रसक्तः अस्मि	२. प्रसन्न हूँ		नौ	८. हम दोनों के	
व्येतु	६. दूर हो गया		स्मरति	१०. स्मरण करेगा	
ते	४. तुम्हारा		संवादम् तस्य	९. संवाद का उसे	
मत् ज्वरात्	३. मेरे ज्वर से		त्वत न भवेत्	११. तुमसे नहीं होगा	
भयात् ।	५. भय		भयम् ॥	१२. भय	

श्लोकार्थ—हे त्रिशिरा ! मैं तुमसे प्रसन्न हूँ । मेरे ज्वर से तुम्हारा भय दूर हो जाय । जो व्यक्ति हम दोनों के संवाद का स्मरण करेगा, उसे तुम से भय नहीं होगा ॥

त्रिंशः श्लोकः

इत्युक्तोऽच्युतमानम्य गतो माहेश्वरो ज्वरः ।
बाणस्तु रथमारूढः प्रागाद्योत्स्यञ्जनार्दनम् ॥३०॥

पदच्छेद— इति उक्तः अच्युतम् आनम्य गतः माहेश्वरः ज्वरः ।
बाणः तु रथम् आरूढः प्रागात् योत्स्यन् जनार्दनम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इतना	बाणः	८. बाणासुर
उक्तः	२. कहा जाने पर	तु	१३. पुनः
अच्युतम्	५. श्रीकृष्ण को	रथम्	९. रथ पर
आनम्य	६. प्रणाम करके	आरूढः	१०. सवार होकर
माहेश्वरः	३. माहेश्वर	प्रागात्	१४. आ गया
गतः	७. चला गया	योत्स्यन्	१२. युद्ध करने के लिये
ज्वरः ।	४. ज्वर	जनार्दनम् ॥	११. श्रीकृष्ण से

श्लोकार्थ—इतना कहा जाने पर माहेश्वर ज्वर श्रीकृष्ण को प्रणाम करके चला गया । बाणासुर रथ पर सवार होकर श्रीकृष्ण से युद्ध करने के लिये पुनः आ गया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

ततो बाहुसहस्रेण नानायुधधरोऽसुरः ।
मुमोच परमक्रुद्धो बाणांश्चक्रायुधे नृप ॥३१॥

पदच्छेद— ततः बाहु सहस्रेण नाना आयुध धरः असुरः ।
मुमोच परमक्रुद्धः बाणान् चक्र आयुधे नृप ॥

शब्दार्थं—

ततः	२. तदनन्तर	मुमोच	१४. छोड़ने लगा
बाहु	४. बाँहों में	परम	९. अत्यन्त
सहस्रेण	३. हजार	क्रुद्धः	१०. कुपित होकर
नाना	५. अनेक प्रकार के	बाणान्	११. बाणों को
आयुध	६. अस्त्र-शस्त्र	चक्र	१२. चक्र
धरः	७. धारण करने वाले	आयुधे	१३. पाणि भगवान् पर
असुरः ।	८. असुर ने	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! तदनन्तर हजार बाँहों में अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र धारण करने वाले असुर अत्यन्त कुपित होकर बाणों को चक्रपाणि भगवान् पर छोड़ने लगा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तस्यास्यतोऽस्त्राण्यसकृच्चक्रेण क्षुरनेमिना ।
चिच्छेद भगवान् बाहून् शाखा इव वनस्पतेः ॥३२॥

पदच्छेद— तस्य अस्यतः अस्त्राणि असकृत् चक्रेण क्षुरनेमिना ।
चिच्छेद भगवान् बाहून् शाखा इव वनस्पतेः ॥

शब्दार्थं—

तस्य	४. उसको	चिच्छेद	९. उसी प्रकार काटने लगे
अस्यतः	३. छोड़ते हुये	भगवान्	६. भगवान् श्रीकृष्ण
अस्त्राणि	२. अस्त्रों को	बाहून्	५. भुजाओं को
असकृत्	१. बार-बार	शाखा	१२. डालियों को काट रहा हो
चक्रेण	८. चक्र से	इव	१०. जैसे कोई
क्षुरनेमिना ।	७. छुरे के समान धार वाले	वनस्पतेः ॥	११. वृक्ष की

श्लोकार्थ—बार-बार अस्त्रों को छोड़ते हुये उसकी भुजाओं को भगवान् श्रीकृष्ण छुरे के समान धार वाले चक्र से उसी प्रकार काटने लगे जैसे कोई वृक्ष की डालियों को काट रहा हो ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

बाहुषुच्छिद्यमानेषु बाणस्य भगवान् भवः ।
भक्तानुकम्प्युपव्रज्य चक्रायुधमभाषत ॥३३॥

पदच्छेद— बाहुषु छिद्यमानेषु बाणस्य भगवान् भवः ।
भक्त अनुकम्पी उपव्रज्य चक्र आयुधम् अभाषत ॥

शब्दार्थ—

बाहुषु	३.	बाँहों को (देखकर)	भक्त अनुकम्पी	४.	भक्तों पर दया करने वाले
छिद्यमानेषु	२.	कटती हुई	उपव्रज्य	६.	पास जाकर
बाणस्य	१.	बाण की	चक्र	७.	चक्र
भगवान्	५.	भगवान्	आयुधम्	८.	अस्त्र वाले श्रीकृष्ण के
भवः ।	६.	शङ्कर	अभाषत ।	१०.	बोले

श्लोकार्थ—बाण की कटती हुई बाँहों को देखकर भक्तों पर दया करने वाले भगवान् शङ्कर चक्र अस्त्र वाले श्रीकृष्ण के पास जाकर बोले ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

श्रीरुद्र उवाच—त्वं हि ब्रह्म परं ज्योतिर्गूढं ब्रह्मणि वाङ्मये ।
यं पश्यन्त्यमलात्मान आकाशमिव केवलम् ॥३४॥

पदच्छेद— त्वम् हि ब्रह्म परम् ज्योतिः गूढम् ब्रह्मणि वाङ्मये ।
पश्यन्ति अमल आत्मानः आकाशम् इव केवलम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम् हि	१.	आप ही	यम्	७.	जिन्हें
ब्रह्म	६.	ब्रह्म	पश्यन्ति	२.	देखते हैं
परम् ज्योतिः	५.	परम ज्योतिः स्वरूप	अमल	८.	निर्मल
गूढम्	४	छिपे हुये	आत्मनः	९.	अन्तः करण वाले (योगी)
ब्रह्मणि	३.	वेद में	आकाशम्	१०.	आकाश के
वाङ्मये ।	२.	वाणीमय	इव केवलम् ॥	११.	समान निर्विकार और निर्लेप

श्लोकार्थ—आप ही वाणीमय वेद में छिपे हुये परम ज्योतिः स्वरूप ब्रह्म हैं । जिन्हें निर्मल अन्तः करण वाले योगी आकाश के समान निर्विकार और निर्लेप देखते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

नाभिर्नभोऽग्निर्मुखमम्बु रेतो द्यौः शीर्षमाशा श्रुतिरङ्घ्रिरुर्वी ।
चन्द्रो मनो यस्य दृगर्क आत्मा अहं समुद्रो जठरं भुजेन्द्रः ।।३५।।

पदच्छेद—नाभिः नभः अग्निः मुखम् अम्बु रेतः द्यौः शीर्षम् आशा श्रुतिः अङ्घ्रिः उर्वी ।
चन्द्रः मनः यस्य दृक् अर्कः आत्मा अहम् समुद्रः जठरम् भुजेन्द्रः ।।

शब्दार्थ—

नाभिः	२. नाभि है	चन्द्रः मनः	९. चन्द्रमा मन और
नभः	१. आकाश आपकी	यस्य	११. जिन आपका
अग्निमुखम्	३. अग्नि मुख है	दृक् अर्कः	१०. सूर्य नेत्र हैं
अम्बुरेतः	४. जल वीर्य है	आत्मा	१२. अहंकार
द्यौः शीर्षम्	५. स्वर्ग सिर	अहम्	१३. मैं (शिव)
आशा	६. दिशायें	समुद्रः	१४. समुद्र
श्रुतिः	७. कान हैं और	जठरम्	१५. पेट और
अङ्घ्रिः उर्वी ।	८. पृथ्वी चरण हैं	भुजेन्द्रः ।।	१६. भुजायें इन्द्र हैं

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आकाश आपकी नाभि है । अग्नि मुख है, जलवीर्य है, स्वर्ग सिर है, दिशायें कान हैं और पृथ्वी चरण है । चन्द्रमा मन और सूर्य नेत्र हैं । जिन आपका अहंकार मैं शिव, समुद्र पेट और भुजायें इन्द्र हैं ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

रोमाणि यस्यौषधयोऽम्बुवाहाः केशा विरिञ्चो धिषणा विसर्गः ।
प्रजापतिर्हृदयं यस्य धर्मः स वै भवान् पुरुषो लोककल्पः ।।३६।।

पदच्छेद— रोमाणि यस्य ओषधयः अम्बु वाहाः केशाः विरिञ्चः धिषणा विसर्गः ।
प्रजापतिः हृदयम् यस्य धर्मः सः वै भवान् पुरुषः लोक कल्पः ।।

शब्दार्थ—

रोमाणि	३. रोम हैं	प्रजापतिः	८. प्रजापति
यस्य	२. जिनके	हृदयम्	१२. हृदय है
ओषधयः	१. ओषधियाँ	यस्य	११. जिनका
अम्बुवाहाः	४. मेघ	धर्मः	१०. धर्म
केशाः	५. केश हैं	सः वै	१३. वे ही
विरिञ्चः	६. ब्रह्मा	भवान्	१६. आप हैं
धिषणा	७. बुद्धि है	पुरुषः	१५. पुरुष
विसर्गः ।	९. लिङ्ग और	लोक कल्पः ।।	१४. सम्पूर्ण लोक के समान

श्लोकार्थ—ओषधियाँ जिनके रोम हैं । मेघ केश हैं, ब्रह्मा बुद्धि है; प्रजापति लिङ्ग और धर्म जिनका हृदय है । वे ही सम्पूर्ण लोक के समान पुरुष आप हैं ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तवावतारोऽयमकुण्ठधामन धर्मस्य गुप्त्यै ज
वयं च सर्वे भवतानुभाविता विभावयामो भु

पदच्छेद— तव अवतारः अयम् अकुण्ठ धामन् धर्मस्य गुप्त्यै ज
वयम् च सर्वे भवता अनुभाविताः विभावयामः भु

शब्दार्थ—

तव	३.	आपका	वयम्	
अवतारः	५.	अवतार	च	१
अयम्	४.	यह	सर्वे	१
अकुण्ठ	१.	अखण्ड	भवता	१
धामन्	२.	ज्योतिः स्वरूप	अनुभाविताः	१
धर्मस्य गुप्त्यै	६.	धर्म की रक्षा और	विभावयामः	१
जगतः	७.	संसार की	भुवनानि	१
भवाय ।	८.	अभिवृद्धि के लिये है	सप्त ।।	१

श्लोकार्थ—अखण्ड ज्योतिः स्वरूप आपका यह अवतार धर्म की र
के लिये है । हम सब भी आपसे प्रभावित होकर सातों भुव

अष्टत्रिंशः श्लोकः

त्वमेक आद्यः पुरुषोऽद्वितीयस्तुर्यः स्वदृग्घेतु
प्रतीयसेऽथापि यथाविकारं स्वमायया सर्वगुण

पदच्छेद— त्वम् एकः आद्यः पुरुषः अद्वितीयः तुर्यः स्वदृक् हेतुः अ
प्रतीयसे अथापि यथा विकारम् स्वमायया सर्व गु

शब्दार्थ—

त्वम् एकः	१.	आप एक और	प्रतीयसे	१४.
आद्यः पुरुषः	२.	आदि पुरुष	अथापि	८.
अद्वितीयः तुर्यः	३.	अद्वितीय तुरीय तत्त्व	यथा	१३.
स्वदृक्	४.	स्वयं प्रकाश	विकारम्	१२.
हेतुः	५.	सबके कारण	स्वमायया	११.
अहेतुः	६.	हेतु रहित और	सर्वगुण	९.
ईशः ।	७.	ईश्वर हैं	प्रसिद्धयै ।।	१०.

श्लोकार्थ— आप एक और आदि पुरुष, अद्वितीय, तुरीय तत्त्व, स्वयं प्रक
और ईश्वर हैं । तो भी तीनों गुणों को प्रकाशित करने के लि
अनुसार प्रतीत होते हैं ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

यथैव सूर्यः पिहितश्छाययया स्वया छायां च रूपाणि च सञ्चकास्ति ।
एवं गुणेनापिहितो गुणांस्त्वमात्मप्रदीपो गुणिनश्च भूमन् ॥३९॥

पदच्छेद— यथैव सूर्यः पिहितः छायया स्वया छायाम् च रूपाणि च सञ्चकास्ति ।
एवम् गुणेन अपिहितः गुणान् त्वम् आत्म प्रदीपः गुणिनः च भूमन् ॥

शब्दार्थ—

यथैव	२.	जैसे	एवम्	१०.	उसी प्रकार
सूर्यः	३.	सूर्य	गुणेन	११.	गुणों
पिहितः	६.	ढक जाता है	अपिहितः	१२.	ढके हुये
छायया	५.	छाया (बादल) से	गुणान्	१५.	गुणों
स्वया	४.	अपनी	त्वम्	१४.	आप
छायाम् च	७.	और बादल	आत्म प्रदीपः	१३.	स्वयं प्रकाश
रूपाणि च	८.	रूपों को	गुणिनः च	१६.	और गुणियों को (प्रकाशित करते हैं)
सञ्चकास्ति ।	९.	प्रकाशित करता है	भूमन् ॥	१.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जैसे सूर्य अपनी छाया बादल से ढक जाता है और रूपों को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार गुणों से ढके हुये स्वयं प्रकाश आप गुणों और गुणियों को प्रकाशित करते हैं ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

यन्मायामोहितधियः पुत्रदारगृहादिषु ।
उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति प्रसक्ता वृजिनार्णवे ॥४०॥

पदच्छेद— यत् माया मोहित धियः पुत्र दार गृह आदिषु ।
उन्मज्जन्ति निमज्जन्ति प्रसक्ताः वृजिन अर्णवे ॥

शब्दार्थ—

यत् माया	१.	जिनकी माया से	उन्मज्जन्ति	९.	डूबने
मोहित	२.	मोहित	निमज्जन्ति	१०.	उतराने लगते हैं
धियः	३.	बुद्धि वाले (मनुष्य)	प्रसक्ताः	६.	आसक्त होकर
पुत्र-दार	४.	पुत्र, स्त्री	वृजिन	७.	दुःख के
गृह आदिषु ।	५.	घर आदि में	अर्णवे ॥	८.	सागर में

श्लोकार्थ—जिनकी माया से मोहित बुद्धि वाले मनुष्य पुत्र, स्त्री, घर आदि में आसक्त होकर होकर दुःख के सागर में डूबने उतराने लगते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

देवदत्तमिमं लब्ध्वा नृलोकमजितेन्द्रियः ।
यो नाद्रियेत त्वत्पादौ स शोच्यो ह्यात्मवञ्चकः ॥४१॥

पदच्छेद— देव दत्तम् इमम् लब्ध्वा नृलोकम् अजितेन्द्रियः ।
यः न आद्रियेत त्वत् पादौ स शोच्यः हि आत्मवञ्चकः ॥

शब्दार्थ—

देव दत्तम्	१.	हे देव ! आपके दिये हुये	न	८.	नहीं
इमम्	२.	इस	आद्रियेत	९.	आदर करता है
लब्ध्वा	४.	पाकर	त्वत् पादौ	७.	आपके चरणों का
नृलोकम्	३.	मनुष्य लोक को	स	१०.	वह
अजितेन्द्रियः ।	६.	अजितेन्द्रिय पुरुष	शोच्यः हि	११.	शोचनीय है तथा
यः	५.	जो	आत्मवञ्चकः ॥	१२.	अपने को धोका देता है

श्लोकार्थ—हे देव ! आपके दिये हुये इस मनुष्य-लोक को पाकर जो अजितेन्द्रिय पुरुष आपके चरणों का आदर नहीं करता है, वह शोचनीय है तथा अपने को धोखा दे रहा है ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

यस्त्वां विसृजते मर्त्य आत्मानं प्रियमीश्वरम् ।
विपर्ययेन्द्रियार्थार्थं विषमत्त्यमृतं त्यजन् ॥४२॥

पदच्छेद— यः त्वाम् विसृजते मर्त्यः आत्मानम् प्रियम् ईश्वरम् ।
विपर्यय इन्द्रिय अर्थ अर्थम् विषम् अत्ति अमृतम् त्यजन् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	विपर्यय	७.	विपरीत
त्वाम्	९.	आपको	इन्द्रिय अर्थ	६.	विषय के
विसृजते	१०.	छोड़ देता है (वह)	अर्थम्	८.	तत्त्व
मर्त्यः	२.	मनुष्य	विषम् अत्ति	१२.	विष खाता है
आत्मानम्	३.	आत्मा	अमृतम्	११.	अमृत को
प्रियम्	४.	प्रिय	त्यजन् ॥	१ .	त्याग कर
ईश्वरम् ।	५.	ईश्वर और			

श्लोकार्थ—जो मनुष्य, आत्मा, प्रिय, ईश्वर और विषय के विपरीत तत्त्व आपको छोड़ देता है, वह अमृत को त्याग कर विष खाता है ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

अहं ब्रह्माथ विबुधा मुनयश्चामलाशयाः ।
सर्वात्मना प्रपन्नास्त्वामात्मानं प्रेष्ठमीश्वरम् ॥४३॥

पदच्छेद— अहम् ब्रह्म अथ विबुधा मुनयः च अमल आशयाः ।
सर्व आत्मना प्रपन्नाः त्वाम् आत्मानम् प्रेष्ठम् ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

अहम्	१.	मैं	सर्व	१२.	सब
ब्रह्म	२.	ब्रह्म	आत्मना	१३.	प्रकार से
अथ	३.	और	प्रपन्नाः	१४.	शरणागत हैं
विबुधाः	४.	देवता	त्वाम्	११.	आपके
मुनयः	७.	मुनि	आत्मानम्	८.	सबके आत्मा
च अमल	५.	एवम् निर्मल	प्रेष्ठम्	९.	अत्यन्त प्रिय और
आशयाः ।	६.	चित्त वाले	ईश्वरम् ॥	१०.	ईश्वर

श्लोकार्थ—मैं, ब्रह्म और देवता एवम् निर्मल चित्त वाले मुनि सबके आत्मा अत्यन्त प्रिय और ईश्वर आपके सब प्रकार से शरणागत हैं ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तं त्वा जगत्स्थित्युदयान्तहेतुं समं प्रशान्तं सुहृदात्मदैवम् ।
अनन्यमेकं जगदात्मकेतं भवापवर्गाय भजाम देवम् ॥४४॥

पदच्छेद— तम् त्वा जगत् स्थिति उदय अन्त हेतुम् समम् प्रशान्तम् सुहृद् आत्म दैवम् ।
अनन्यम् एकम् जगत् आत्म केतम् भव अपवर्गाय भजाम देवम् ॥

शब्दार्थ—

तम् त्वा	३.	हम उन आप	अनन्यम्	१२.	अद्वितीय
जगत् स्थिति	५.	संसार की स्थिति	एकम्	१३.	एक
उदय	६.	उत्पत्ति और	जगत्	१४.	जगत् के
अन्त	७.	प्रलय के	आत्म	१५.	आधार तथा
हेतुम् समम्	८.	कारण सम	केतम्	१६.	अधिष्ठान हैं
प्रशान्तम्	९.	परम शान्त	भव	१.	संसार से
सुहृद्	१०.	सुहृद्	अपवर्गाय	२.	मुक्त होने के लिये
आत्म दैवम् ।	११.	आत्मा, इष्ट देव	भजाम देवम् ॥	४.	देव का भजन करें (जो)

श्लोकार्थ—संसार से मुक्त होने के लिये हम उन आप देव का भजन करते हैं, जो संसार की स्थिति, उत्पत्ति और प्रलय के कारण सम, परम शान्त, सुहृद्, आत्मा, इष्टदेव, अद्वितीय, एक, जगत् के आधार तथा अधिष्ठान हैं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

अयं ममेष्टो दयितोऽनुवर्ती मयाभयं दत्तममुष्य देव ।
सम्पाद्यतां तद् भवतः प्रसादो यथा हि ते दैत्यपतौ प्रसादः ॥४५॥

पदच्छेद— अयम् मम इष्टः दयितः अनुवर्ती मया अभयम् दत्तम् अमुष्य देव ।
सम्पाद्यताम् तद् भवतः प्रसादः यथा हि ते दैत्यपतौ प्रसादः ॥

शब्दार्थ—

अयम्	२.	यह (बाणासुर)	सम्पाद्यताम्	१६.	कीजिये
मम इष्टः	३.	मेरा अभीष्ट	तद्	९.	इसलिये
दयितः	४.	प्रिय और	भवतः	१४.	(वैसा इस पर भी) अपना
अनुवर्ती	५.	आज्ञाकारी है	प्रसादः	१५.	कृपा प्रसाद
मया अभयम्	७.	मैंने अभयदान	यथा	१०.	जैसा
दत्तम्	८.	दिया है	हि ते	११.	आपका
अमुष्य	६.	इसे	दैत्यपतौ	१२.	दैत्यराज (प्रह्लाद) पर
देव ।	१.	हे देव !	प्रसादः ॥	१३.	कृपाप्रसाद है

श्लोकार्थ—हे देव ! यह बाणासुर मेरा अभीष्ट, प्रिय और आज्ञाकारी है। इसे मैंने अभयदान दिया है। इसलिये जैसा आपका दैत्यराज प्रह्लाद पर कृपाप्रसाद है वैसा इस पर भी कृपाप्रसाद कीजिये ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—यदात्थ भगवंस्त्वन्नः करवाम प्रियं तव ।
भवतो यद् व्यवसितं तन्मे साध्वनुमोदितम् ॥४६॥

पदच्छेद— यत् आत्मा भगवन् त्वम् नः करवाम प्रियम् तव ।
भवतः यत् व्यवसितम् तत् मे साधु अनुमोदितम् ॥

शब्दार्थ —

यत् आत्मा	३.	जो कहा है	भवतः	७.	आपका
भगवन्	१.	हे भगवन् !	यत्	८.	जो
त्वम् नः	२.	आपने हमसे	व्यवसितम्	९.	निश्चय था
करवाम	६.	करेंगे	तत् मे	१०.	उसका मैंने
प्रियम्	४.	वह प्रिय	साधु	११.	अच्छी तरह
तव ।	५.	आपका	अनुमोदितम् ॥	१२.	अनुमोदन कर दिया है

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपने हमसे जो कहा है वह प्रिय आपका करेंगे। आपका जो निश्चय था, उसका मैंने अच्छी तरह अनुमोदन कर दिया है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

अवध्योऽयं ममाप्येष वैरोचनिसुतोऽसुरः ।
प्रह्लादाय वरो दत्तो न वध्यो मे तवान्वयः ॥४७॥

पदच्छेद— अवध्यः अयम् मम अपि एषः वैरोचनि सुतः असुरः ।
प्रह्लादाय वरः दत्तः न वध्यः मे तव अन्वयः ॥

शब्दार्थ—

अवध्यः	७.	न मारने योग्य है (क्योंकि)	प्रह्लादाय	८.	मैंने प्रह्लाद को
अयम्	४.	यह	वरः	९.	वर
मम	५.	मेरे लिये	दत्तः	१०.	दिया था कि
अपि	६.	भी	न	१३.	नहीं
एषः	१.	यह	वध्यः	१४	मारूँगा
वैरोचनिसुतः	२.	बलिका पुत्र	मे तव	११.	मैं तुम्हारे
असुरः ।	३.	बाणासुर है	अन्वयः ॥	१२.	वंशज को

श्लोकार्थ—यह बलि का पुत्र बाणासुर है। यह मेरे लिये भी न मारने योग्य है। क्योंकि मैंने प्रह्लाद को वर दिया था कि मैं तुम्हारे वंशज को नहीं मारूँगा ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

दर्पोपशमनायास्य प्रवृक्णा बाहवो मया ।
सूदितं च बलं भूरि यच्च भारायितं भुवः ॥४८॥

पदच्छेद— दर्पः उपशमनाय अस्य प्रवृक्णाः बाहवः मया ।
सूदितम् च बलम् भूरि यत् च भारायितम् भुवः ॥

शब्दार्थ—

दर्पः	१.	इसके अभिमान को	सूदितम्	१०.	संहार कर दिया है
उपशमनाय	२.	चूर करने के लिये	च	७.	और
अस्य	४.	इसकी	बलम्	९.	इसकी सेना का
प्रवृक्णाः	६.	काट दिया है	भूरि	८.	बहुत बड़ी
बाहवः	५.	भुजाओं को	यत् च	११.	जो
मया ।	३.	मैंने	भारायितम्	१२.	भार बनी हुई थी
			भुवः ॥	१३.	पृथ्वी के लिये

श्लोकार्थ—इसके अभिमान को चूर करने के लिये मैंने इसकी भुजाओं को काट दिया है। और इसकी बहुत बड़ी सेना का संहार कर दिया है जो पृथ्वी के लिये भार बनी हुईं थीं ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

चत्वारोऽस्य भुजाः शिष्टा भविष्यन्त्यजरामराः।
पार्षदमुख्यो भवतो नकुतश्चिद्भयोऽसुरः ॥४९॥

पदच्छेद— चत्वारःऽस्य भुजाः शिष्टाः भविष्यन्ति अजर अमराः।
पार्षदमुख्यः भवतः न कुतः चिद्भयः असुरः ॥

शब्दार्थ—

चत्वारः	३.	चार	पार्षद	९.	पार्षदों में
अस्य	१.	इसकी	मुख्यः	१०.	मुख्य होगा
भुजाः	४.	भुजायें	भवतः	८.	यह आपके
शिष्टाः	२.	शेष	न	१४.	नहीं है
भविष्यन्ति	७.	हो जावेंगी	कुतः चिद्	१२.	कहीं से भी
अजर	५.	अजर और	भयः	१३.	भय
अमराः।	६.	अमर	असुरः ॥	११.	इस असुर को

श्लोकार्थ—इसकी शेष चार भुजायें अजर और अमर हो जावेंगी। यह आपके पार्षदों में मुख्य होगा। इस असुर को कहीं से भी भय नहीं है ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

इति लब्ध्वाभयं कृष्णं प्रणम्य शिरसासुरः।
प्राद्युम्निं रथमारोप्य सवध्वा समुपानयत् ॥५०॥

पदच्छेद— इति लब्ध्वा अभयम् कृष्णम् प्रणम्य शिरसा असुरः।
प्राद्युम्निम् रथम् आरोप्य सवध्वा सम्उपानयत् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	असुरः।	४.	बाणासुर
लब्ध्वा	३.	पाकर	प्राद्युम्निम्	८.	अनिरुद्ध को
अभयम्	२.	अभयदान	रथम्	१०.	रथ पर
कृष्णम्	५.	श्रीकृष्ण को	आरोप्य	११.	बैठाकर
प्रणम्य	७.	प्रणाम करके	सवध्वा	९.	वधू (ऊषा) के साथ
शिरसा	६.	सिर से	सम्उपानयत् ॥	१२.	ले आया

श्लोकार्थ—इस प्रकार अभय दान पाकर बाणासुर श्रीकृष्ण को सिर से प्रणाम करके अनिरुद्ध को वधू ऊषा के साथ रथ पर बैठाकर ले आया ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अक्षौहिण्या परिवृतं सुवासःसमलङ्कृतम् ।
सपत्नीकं पुरस्कृत्य ययौ रुद्रानुमोदितः ॥५१॥

पदच्छेद— अक्षौहिण्या परिवृतम् सुवासः सम् अलङ्कृतम् ।
सपत्नीकम् पुरस्कृत्य ययौ रुद्र अनुमोदितः ॥

शब्दार्थ—

अक्षौहिण्या	७. एक अक्षौहिणी सेना	सपत्नीकम्	६. पत्नी सहित अनिरुद्ध को
परिवृतम्	८. के साथ	पुरस्कृत्य	९. आगे करके
सुवासः	३. सुन्दर वस्त्र और	ययौ	१०. (श्रीकृष्ण ने) प्रस्थान किया
सम्	५. युक्त	रुद्र	१. महादेव से
अलङ्कृतम् ।	४. आभूषणों से	अनुमोदितः ॥	२. सम्मति लेकर

श्लोकार्थ—महादेव से सम्मति लेकर सुन्दर वस्त्र और आभूषणों से युक्त पत्नी सहित अनिरुद्ध को एक अक्षौहिणी सेना के साथ आगे करके श्रीकृष्ण ने प्रस्थान किया ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

स्वराजधानीं समलङ्कृतां ध्वजैः सतोरणैरुक्षितमार्गचत्वराम् ।
विवेश शङ्खानकदुन्दुभिस्वनैरभ्युद्यतः पौरसुहृद्द्विजातिभिः ॥५२॥

पदच्छेद— स्व राजधानीम् सम् अलङ्कृताम् ध्वजैः सतोरणैः उक्षित मार्ग चत्वराम् ।
विवेश शङ्ख आनकदुन्दुभि स्वनैः अभिउद्यतः पौर सुहृद्द्विजातिभिः ॥

शब्दार्थ—

स्व	१४. अपनी	विवेश	१६. प्रवेश किया
राजधानीम्	१५. राजधानी में	शङ्ख	१. शङ्खों और
सम् अलङ्कृतम्	१०. सुसज्जित तथा	आनकदुन्दुभिः	२. ढोलों की
ध्वजैः	८. झंडियों और	स्वनैः	३. ध्वनियों के साथ
सतोरणैः	९. तोरणों से	अभिउद्यतः	७. अगवानी किये जाते हुये (श्रीकृष्ण ने)
उक्षित	११. सींचे गये	पौर	४. पुरजनवासियों
मार्ग	१२. मार्गों और	सुहृद्	५. मित्रों और
चत्वराम् ।	१३. चौराहों वाली	द्विजातिभिः ॥	६. ब्राह्मणों के द्वारा

श्लोकार्थ—शङ्खों और ढोलों की ध्वनियों के साथ पुरजनवासियों, मित्रों, और ब्राह्मणों के द्वारा अगवानी किये जाते हुये श्रीकृष्ण ने झंडियों और तोरणों से सुसज्जित तथा सींचे गये मार्गों और चौराहों वाली अपनी राजधानी में प्रवेश किया ॥

त्रिपञ्चाशतमः श्लोकः

य एवं कृष्णविजयं शङ्करेण च संयुगम् ।
संस्मरेत् प्रातरुत्थाय न तस्य स्यात् पराजयः ।।५३।।

पदच्छेद—

यः एवम् कृष्ण विजयम् शङ्करेण च संयुगम् ।
संस्मरेत् प्रातः उत्थाय न तस्य स्यात् पराजयः ।।

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	संस्मरेत्	९.	स्मरण करता है
एवम्	२.	इस प्रकार	प्रातः	७.	प्रातःकाल
कृष्ण	४.	श्रीकृष्ण के	उत्थाय	८.	उठकर
विजयम्	६.	विजय की (कथा का)	न तस्य	१०.	उसकी नहीं
शङ्करेण	३.	शङ्कर जी के साथ	स्यात्	१२.	होती है
च संयुगम् ।	५.	युद्ध और	पराजयः ।।	११.	पराजय कहीं भी

श्लोकार्थ—

जो इस प्रकार शङ्कर जी के साथ श्रीकृष्ण के विजय की कथा का प्रातःकाल स्मरण करता है उसकी कहीं भी पराजय नहीं होती है ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे अनिरुद्धानयनं
नाम त्रिषष्टितमोऽध्यायः ।।६३।।



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

चतुःषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकदोपवनं राजन् जग्मुर्यदुकुमारकाः ।
विहर्तुं साम्बप्रद्युम्नचारुभानुगदादयः ॥१॥

पदच्छेद— एकदा उपवनम् राजन् जग्मुः यदु कुमारकाः ।
विहर्तुम् साम्ब प्रद्युम्न चारु भानु गद आदयः ॥

शब्दार्थ—

एकदा	२.	एक बार	विहर्तुम्	१०.	घूमने के लिये
उपवनम्	११.	उपवन में	साम्ब	३.	साम्ब
राजन्	१.	हे राजन् !	प्रद्युम्न	४.	प्रद्युम्न
जग्मुः	१२.	गये	चारु भानु	५.	चारु-भानु
यदु	८.	यदुवंशी	गद	६.	गद
कुमारकाः ।	९.	कुमार	आदयः ॥	७.	आदि

श्लोकार्थ—हे राजन् ! एक बार साम्ब, प्रद्युम्न, चारु, भानु, गद, आदि यदुवंशी कुमार घूमने के लिये उपवन में गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

क्रीडित्वा सुचिरं तत्र विचिन्वन्तः पिपासिताः ।
जलं निरुदके कूपे ददृशुः सत्त्वमद्भुतम् ॥२॥

पदच्छेद— क्रीडित्वा सुचिरम् तत्र विचिन्वन्तः पिपासिताः ।
जलम् निःउदके कूपे ददृशुः सत्त्वम् अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

क्रीडित्वा	३.	क्रीडा करके	जलम्	५.	जल
सुचिरम्	२.	बहुत समय तक	निःउदके	७.	एक जल रहित
तत्र	१.	वहाँ पर	कूपे	८.	कुयें में
विचिन्वन्तः	६.	ढूंढते हुये उन्होंने	ददृशुः	११.	देखा
पिपासिताः ।	४.	प्यासे होने पर	सत्त्वम्	१०.	जीव को
			अद्भुतम् ॥	९.	अलौकिक

श्लोकार्थ—वहाँ पर बहुत समय तक क्रीडा करके प्यासे होने पर जल ढूंढते हुये उन्होंने एक जल रहित कुयें में अलौकिक जीव को देखा ॥

तृतीयः श्लोकः

कृकलासं गिरिनिभं वीक्ष्य विस्मितमानसाः ।
तस्य चोद्धरणे यत्नं चक्रुस्ते कृपयान्विताः ॥३॥

पदच्छेद— कृकलासम् गिरिनिभम् वीक्ष्य विस्मित मानसाः ।
तस्य च उद्धरणे यत्नम् चक्रुः ते कृपया अन्विताः ॥

शब्दार्थ—

कृकलासम्	३. गिरगिट को	तस्य च	१०. उसके
गिरि	१. पर्वत के	उद्धरणे	११. उद्धार के लिये
निभम्	२. समान आकार के एक	यत्नम्	१२. प्रयत्न
वीक्ष्य	४. देखकर	चक्रुः ते	७. वे लोग करने लगे
विस्मित	५. आश्चर्य चकित	कृपया	८. दया के
मानसाः ।	६. चित्त होकर	अन्विताः ॥	९. वश होकर

श्लोकार्थ—पर्वत के समान आकार के एक गिरगिट को देखकर आश्चर्य चकित चित्त होकर वे लोग दया के वश होकर उसके उद्धार के लिये प्रयत्न करने लगे ।

चतुर्थः श्लोकः

चर्मजैस्तान्तवैः पाशैर्बद्ध्वा पतितमर्भकाः ।
नाशक्नुवन् समुद्धर्तुं कृष्णायाचख्युरुत्सुकाः ॥४॥

पदच्छेद— चर्मजैः तान्तवैः पाशैः बद्ध्वा पतितम् अर्भकाः ।
न अशक्नुवन् समुद्धर्तुं कृष्णाय आचख्युः उत्सुकाः ॥

शब्दार्थ—

चर्मजैः	३. चमड़े और	न	७. नहीं
तान्तवैः	४. सूत की	अशक्नुवम्	९. सके (तब)
पाशैः	५. रस्सियों से	समुद्धर्तुं	८. निकाल
बद्ध्वा	६. बाँधकर	कृष्णाय	१०. श्रीकृष्ण के पास जाकर
पतितम्	२. गिरे हुये (गिरगिट को)	आचख्युः	१२. निवेदन किया
अर्भकाः ।	१. जब बालक गण (कुयें में)	उत्सुकाः ॥	११. कौतूहल पूर्वक

श्लोकार्थ—जब बालक गण कुयें में गिरे हुये गिरगिट को चमड़े और सूत की रस्सियों से बाँध कर नहीं निकाल सके तब श्रीकृष्ण के पास जाकर कौतूहल पूर्वक निवेदन किया ॥

पञ्चमः श्लोकः

तत्रागत्यारविन्दाक्षो भगवान् विश्वभावनः ।
वीक्ष्योज्जहार वामेन तं करेण स लीलया ॥५॥

पदच्छेद— तत्र आगत्य अरविन्दाक्षः भगवान् विश्व भावनः ।
वीक्ष्य उज्जहार वामेन तम् करेण सः लीलया ॥

शब्दार्थ—

तत्र	६.	वहाँ	वीक्ष्य	९.	देखकर
आगत्य	७.	आकर	उज्जहार	१३.	बाहर निकाल लिया
अरविन्दाक्षः	३.	कमल नयन	वामेन	१०.	बायें
भगवान्	४.	भगवान्	तम्	८.	उसे
विश्व	१.	संसार के	करेण	११.	हाथ से
भावनः ।	२.	जीवन दाता	सः	५.	श्रीकृष्ण ने
			लीलया ॥	१२.	लीला पूर्वक

श्लोकार्थ—संसार के जीवनदाता कमलनयन भगवान् श्रीकृष्ण ने वहाँ आकर उसे देखकर बायें हाथ से लीला पूर्वक बाहर निकाल लिया ॥

षष्ठः श्लोकः

स उत्तमश्लोककराभिमृष्टो विहाय सद्यः कृकलासरूपम् ।
सन्तप्तचामीकरचारुवर्णः स्वर्ग्यद्भुतालङ्करणाम्बरस्रक् ॥६॥

पदच्छेद— सः उत्तमश्लोक कर अभिमृष्टः विहाय सद्यः कृकलासरूपम् ।
सन्तप्त चामीकर चारुवर्णः स्वर्गी अद्भुत अलङ्करण अम्बर स्रक् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह	सन्तप्त	८.	तपाये हुये
उत्तमश्लोक	२.	भगवान् श्रीकृष्ण का	चामीकर	९.	सोने के समान
करअभिमृष्टः	३.	स्पर्श होते ही	चारुवर्णः	१०.	सुन्दर वर्ण
विहाय	७.	त्याग कर	स्वर्गी	११.	दिव्य एवम्
सद्यः	४.	तत्काल	अद्भुत	१२.	अद्भुत
कृकलास	५.	गिरगिट का	अलङ्करण	१३.	आभूषणों
रूपम् ।	६.	स्वरूप	अम्बर	१४.	वस्त्र और
			स्रक् ॥	१५.	पुष्पों के हारों से शोभित हो गया

श्लोकार्थ—वह भगवान् श्रीकृष्ण का स्पर्श होते ही तत्काल गिरगिट का स्वरूप त्याग कर तपाये हुये सोने के समान सुन्दर वर्ण, दिव्य एवम् अद्भुत आभूषण, वस्त्र और पुष्पों के हारों से शोभित हो गया ॥

सप्तमः श्लोकः

पप्रच्छ विद्वानपि तन्निदानं जनेषु विख्यापयितुं मुकुन्दः ।
कस्त्वं महाभाग वरेण्यरूपो देवोत्तमं त्वां गणयामि नूनम् ॥७॥

पदच्छेद— पप्रच्छ विद्वान् अपि तत् निदानम् जनेषु विख्यापयितुम् मुकुन्दः ।
कः त्वम् महाभाग वरेण्यरूपः देव उत्तमम् त्वाम् गणयामि नूनम् ॥

शब्दार्थ—

पप्रच्छ	८.	पूछा	कः	१२.	कौन हो ?
विद्वान्	३.	जानते हुये	त्वम्	११.	तुम
अपि	४.	भी	महाभाग	९.	हे महाभाग !
तत्	१.	उसका	वरेण्यरूपः	१०.	सुन्दर रूप वाले
निदानम्	२.	कारण	देव उत्तमम्	१५.	देवताओं में श्रेष्ठ
जनेषु	६.	लोगों को	त्वाम्	१३.	मैं तुम्हें
विख्यापयितुम्	७.	बताने के लिये (उससे)	गणयामि	१६.	समझता हूँ
मुकुन्दः ।	५.	श्रीकृष्ण ने	नूनम् ॥	१४.	निश्चित रूप से

श्लोकार्थ—उसका कारण जानते हुये भी श्रीकृष्ण ने लोगों को बताने के लिये उससे पूछा। हे महाभाग ! सुन्दर रूप वाले तुम कौन हो ? मैं तुम्हें निश्चित रूप से देवताओं में श्रेष्ठ समझता हूँ ॥

अष्टमः श्लोकः

दशामिमां वा कतमेन कर्मणा सम्प्रापितोऽस्यतदर्हः सुभद्र ।
आत्मानमाख्याहि विवित्सतां नो यन्मन्यसे नः क्षममत्र वक्तुम् ॥८॥

पदच्छेद— दशामिमाम् वा कतमेन कर्मणा सम्प्रापितः असि अतत् अर्हः सुभद्र ।
आत्मानम् आख्याहि विवित्सताम् नः यत् मन्यसे नः क्षमम् अत्र वक्तुम् ॥

शब्दार्थ—

दशामिमाम्	५.	तुम इस दशा को	आत्मानम्	१५.	अपना
वा	२.	अथवा	आख्याहि	१६.	परिचय दो
कतमेन	३.	किस	विवित्सताम्	१३.	जानने के इच्छुक
कर्मणा	४.	कर्म से	नः	१४.	हम लोगों को
सम्प्रापितः	६.	पहुँचा दिये गये	यत्	९.	यदि
असि	७	हो	मन्यसे नः	१२.	उचित समझते हो तो
अतत् अर्हः	८.	तुम इसके योग्य नहीं हो	क्षमम् अत्र	१०.	हम लोगों को यहाँ
सुभद्र ।	१.	हे कल्याण मूर्ति !	वक्तुम् ॥	११.	बतलाना

श्लोकार्थ—हे कल्याण मूर्ते ! अथवा किस कर्म से तुम इस दशा को पहुँचा दिये गये हो। तुम इसके योग्य नहीं हो। यदि हम लोगों को यहाँ बतलाना उचित समझते हो तो जानने के इच्छुक हम लोगों को अपना परिचय दो ॥

नवमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति स्म राजा सम्पृष्टः कृष्णेनानन्तमूर्तिना ।
माधवं प्रणिपत्याह किरीटेनार्कवर्चसा ॥९॥

पदच्छेद— इति स्म राजा सम्पृष्टः कृष्णेन अनन्त मूर्तिना ।
माधवम् प्रणिपत्य आह किरीटेन अर्क वर्चसा ॥

शब्दार्थ—

इति स्म	४. इस प्रकार	माधवम्	१०. भगवान् को
राजा	६. राजा ने	प्रणिपत्य	११. प्रणाम करके
सम्पृष्टः	५. पूछे जाने पर	आह	१२. कहने लगे
कृष्णेन	३. श्रीकृष्ण के द्वारा	किरीटेन	९. मुकुट झुकाकर
अनन्त	१. अनन्त	अर्क	७. सूर्य के समान
मूर्तिना ।	२. रूप वाले भगवान्	वर्चसा ॥	८. चमकने वाले

श्लोकार्थ—अनन्त रूप वाले भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा इस प्रकार पूछे जाने पर राजा सूर्य के समान चमकने वाले मुकुट झुकाकर भगवान् को प्रणाम करके कहने लगे ॥

दशमः श्लोकः

नृग उवाच— नृगो नाम नरेन्द्रोऽहमिक्ष्वाकुतनयः प्रभो ।
दानिष्वाख्यायमानेषु यदि ते कर्णमस्पृशम् ॥१०॥

पदच्छेद— नृगः नाम नरेन्द्रः अहम् इक्ष्वाकु तनयः प्रभो ।
दानिषु आख्यायमानेषु यदि ते कर्णम् अस्पृशन् ॥

शब्दार्थ—

नृगः	५. नृग	दानिषु	८. दानी पुरुषों की
नाम	६. नामक	आख्याय	९. गिनती
नरेन्द्रः	७. राजा हूँ	मानेषु	१०. की जाते समय
अहम्	२. मैं	यदि	१३. मेरा नाम भी
इक्ष्वाकु	३. इक्ष्वाकु का	ते	११. आपके
तनयः	४. पुत्र	कर्णम्	१२. कानों में
प्रभो ।	१ हे प्रभो !	अस्पृशन् ॥	१४. अवश्य पड़ा होगा

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैं इक्ष्वाकु का पुत्र नृग नामक राजा हूँ । दानी पुरुषों की गिनती की जाते समय आपके कानों में मेरा नाम भी अवश्य पड़ा होगा ।

एकादशः श्लोकः

किं नु तेऽविदितं नाथ सर्वभूतात्मसाक्षिणः ।
कालेनाव्याहृतदृशो वक्ष्येऽथापि तवाज्ञया ॥११॥

पदच्छेद— किम् नु ते अविदितम् नाथ सर्व भूत आत्म साक्षिणः ।
कालेन अव्याहत दृशः वक्ष्ये अथापि तव आज्ञया ॥

शब्दार्थ—

किम् नु	९.	क्या	कालेन	५.	काल से
ते	८.	आपसे	अव्याहत	६.	अबाधित
अविदितम्	१०.	छिपा है	दृशः	७.	ज्ञान वाले
नाथ	१.	हे स्वामिन् !	वक्ष्ये	१४.	सब कुछ कहूँगा
सर्वभूत	२.	सभी प्राणियों की	अथापि	११.	तो भी
आत्म	३.	वृत्ति के	तव	१२.	मैं आपकी
साक्षिणः ।	४.	साक्षी हैं (तथा)	आज्ञया ॥	१३.	आज्ञा से

श्लोकार्थ—हे स्वामिन् ! सभी प्राणियों की वृत्ति के साक्षी हैं। तथा काल से अबाधित ज्ञान वाले आपसे क्या छिपा है। तो भी मैं आपकी आज्ञा से सब कुछ कहूँगा ।

द्वादशः श्लोकः

यावत्यः सिकता भूमेर्यावत्यो दिवि तारकाः ।
यावत्यो वर्षधाराश्च तावतीरददां स्म गाः ॥१२॥

पदच्छेद— यावत्यः सिकताः भूमेः यावत्यः दिवि तारकाः ।
यावत्यः वर्ष धाराः च तावतीः अददाम् स्म गाः ॥

शब्दार्थ—

यावत्यः	२.	जितने	यावत्यः	८.	जितनी
सिकताः	३.	धूलिकण हैं	वर्षधाराः	९.	वर्षा की धारायें हैं
भूमेः	१.	पृथ्वी के	च	७.	और
यावत्यः	४.	जितने	तावतीः	१०.	उतनी ही
दिवि	५.	आकाश में	अददाम्	१२.	दान की थीं
तारकाः ।	६.	तारे हैं	स्म गाः ॥	११.	गौयें मैंने

श्लोकार्थ—पृथ्वी के जितने धूलिकण हैं। जितने आकाश में तारे हैं। और जितनी वर्षा की धारायें हैं। उतनी ही गौयें मैंने दान की थीं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

पयस्विनीस्तरुणीः शीलरूपगुणोपपन्नाः कपिला हेमश्रृङ्गीः ।

न्यायार्जिता रूप्यखुराः सवत्सा दुकूलमालाभरणा ददावहम् ॥१३॥

पदच्छेद— पयस्विनीः तरुणीः शीलरूप गुण उपपन्नाः कपिलाः हेम श्रृङ्गीः ।
न्याय अर्जिता रूप्य खुराः सवत्साः दुकूल माला आभरणाः ददौ अहम् ॥

शब्दार्थ—

पयस्विनीः	१.	दुधारू	न्याय अर्जिता	७.	न्याय के धन से प्राप्त
तरुणीः	२.	नौजवान	रूप्य	८.	चाँदी के
शील	३.	सीधी	खुरा	९.	खुरों वाली
रूपगुण	४.	रूप और गुणों के	सवत्साः	१०.	बछड़े सहित
उपपन्नाः	५.	युक्त (सुलक्षणा)	दुकूलमाला	११.	वस्त्र, माला और
कपिलाः	१३.	कपिला गौयें	आभरणाः	१२.	आभूषणों से सज्जित
हेमश्रृङ्गीः ।	६.	सोने के सींगों वाली	ददौ अहम् ॥	१४.	मैंने दी थीं

श्लोकार्थ—दुधारू, नौजवान, सीधी, रूप और गुणों से युक्त, सुलक्षणा, सोने के सींगों वाली, न्याय के धन से प्राप्त, चाँदो के खुरों वाली, बछड़े सहित, वस्त्र, माला और आभूषणों से सज्जित कपिला गौयें मैंने दी थीं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स्वलङ्कृतेभ्यो गुणशीलवद्भ्यः सीदत्कुटुम्बेभ्य ऋतव्रतेभ्यः ।

तपःश्रुतब्रह्मवदान्यसद्भ्यः प्रादां युवभ्यो द्विजपुङ्गवेभ्यः ॥१४॥

पदच्छेद— स्वलङ्कृतेभ्यः गुण शील वद्भ्यः सीदत् कुटुम्बेभ्यः ऋत व्रतेभ्यः ।
तपः श्रुत ब्रह्म वदान्य सद्भ्यः प्रादाम् युवभ्यः द्विजपुङ्गवेभ्यः ॥

शब्दार्थ—

स्वलङ्कृतेभ्यः	१.	वस्त्र आभूषणों से सजी	तपः	९.	तपस्वी
गुण	२.	गुण और	श्रुत	१०.	शास्त्रों और
शील	३.	शील से	ब्रह्म	११.	वेदों को जानने वाले
वद्भ्यः	४.	युक्त	वदान्य	१२.	अतिशय विद्यादान करने वाले
सीदत्	५.	कष्ट में पड़े हुये	सद्भ्यः	१३.	सच्चरित्र
कुटुम्बेभ्यः	६.	कुटुम्ब वाले	प्रादाम्	१६.	दान दी थीं
ऋत	७.	सत्य	युवभ्यः	१४.	युवक और
व्रतेभ्यः ।	८.	व्रती	द्विजपुङ्गवेभ्यः ॥	१५.	श्रेष्ठ ब्राह्मणों

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैंने वस्त्र, आभूषणों से सजी, गुण और शील से युक्त, कष्ट में पड़े हुये, कुटुम्ब वाले, सत्यव्रती, तपस्वी, शास्त्रों और वेदों को जानने वाले, अतिशय विद्यादान करने वाले सच्चरित युवक और श्रेष्ठ ब्राह्मणों को दान दी थीं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गोभूहिरण्यायतनाश्वहस्तिनः कन्याः सदासीस्तिलरूप्यशय्याः ।
वासांसि रत्नानि परिच्छदान् रथानिष्टं च यज्ञैश्चरितं च पूर्तम् ॥१५॥

पदच्छेद— गोभू हिरण्य आयतन अश्व हस्तिनः कन्याः सदासीः तिलरूप्य शय्याः ।
वासांसि रत्नानि परिच्छदान् रथान् इष्टम् च यज्ञैः चरितम् च पूर्तम् ॥

शब्दार्थ—

गोभू	१.	गाय-भूमि	वासांसि	९.	वस्त्र
हिरण्य	२.	सुवर्ण	रत्नानि	१०.	रत्न
आयतन	३.	घर	परिच्छदान्	११.	घर की सामग्री
अश्व हस्तिनः	४.	घोड़े हाथी	रथान्	१२.	और रथ (प्रदान किये)
कन्याः	६.	कन्यायें	इष्टम्	१४.	यजन
सदासीः	५.	दासी सहित	च यज्ञैः	१३.	फिर अनेकों यज्ञों से
तिल	७.	तिल	चरितम् च	१५.	किया तथा
रूप्य शय्याः ।	८.	चाँदी-शय्या	पूर्तम् ॥	१६.	कुयें, बावली आदि बनवाये

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मैंने गाय, भूमि, सुवर्ण, घर, घोड़े, हाथी, दासी सहित कन्यायें, तिल, चाँदी, शय्या, वस्त्र, रत्न, घर की सामग्री और रथ प्रदान किये । फिर अनेकों यज्ञों से यजन किया । तथा कुयें, बावली आदि बनवाये ॥

षोडशः श्लोकः

कस्यचिद् द्विजमुख्यस्य भ्रष्टा गौर्मम गोधने ।
सम्पृक्ताविदुषा सा च मया दत्ता द्विजातये ॥१६॥

पदच्छेद— कस्यचित् द्विज मुख्यस्य भ्रष्टा गौःमम गोधने ।
सम्पृक्ता अविदुषा सा च मया दत्ता द्विजातये ॥

शब्दार्थ—

कस्यचित्	१.	किसी	सम्पृक्ता	८.	आ मिली
द्विज	३.	ब्राह्मण की	अविदुषा	१०.	अनजान में
मुख्यस्य	२.	श्रेष्ठ	सा	११.	उसे
भ्रष्टा	५.	बिछुड़ कर	च	९.	और
गौः	४.	गाय	मया	१२.	मैंने
मम	६.	मेरी	दत्ता	१४.	दान कर दिया
गोधने ।	७.	गायों में	द्विजातये ॥	१३.	दूसरे ब्राह्मण को

श्लोकार्थ—किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण की गाय बिछुड़कर मेरी गायों में आ मिली और अनजान में उसे मैंने दूसरे ब्राह्मण को दान कर दिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

तां नीयमानां तत्स्वामी दृष्ट्वोवाच ममेति तम् ।
ममेति प्रतिग्राह्याह नृगो मे दत्तवानिति ।।१७।।

पदच्छेद— ताम् नीयमानाम् तत् स्वामी दृष्ट्वा उवाच मम इति तम् ।
मम इति प्रति ग्राही आह नृगः मे दत्तवान् इति ।।

शब्दार्थ—

ताम्	१.	उस गाय को	मम	११.	मेरी है
नीयमानाम्	२.	ले जाती हुई	इति	१०.	यह
तत् स्वामी	४.	उसके स्वामी ने	प्रतिग्राही	८.	दान ले जाने वाले (ब्राह्मण) ने
दृष्ट्वा	३.	देख कर	आह	९.	कहा कि
उवाच	६.	कहा	नृगः	१३.	राजा नृग ने
मम इति	७.	यह मेरी गाय है	मे दत्तवान्	१४.	मुझे दी है
तम् ।	५.	उस (ब्राह्मण) से	इति ।।	१२.	यह

श्लोकार्थ—उस गाय को ले जाती हुई देखकर उसके स्वामी ने उस ब्राह्मण से कहा। यह मेरी गाय है। दान ले जाने वाले ब्राह्मण ने कहा यह मेरी गाय है। राजा नृग ने यह मुझे दी है ।।

अष्टादशः श्लोकः

विप्रौ विवदमानौ मामूचतुः स्वार्थसाधकौ ।
भवान् दातापहर्तेति तच्छ्रुत्वा मेऽभवद् भ्रमः ।।१८।।

पदच्छेद— विप्रौ विवदमानौ माम् ऊचतुः स्वार्थ साधकौ ।
भवान् दाता अपहर्ता इति तत् श्रुत्वा मे अभवत् भ्रमः ।।

शब्दार्थ—

विप्रौ	४.	दोनों ब्राह्मण	भवान्	८.	आपने मुझे
विवदमानौ	१.	झगड़ते हुये	दाता	९.	दी है (दूसरे ने कहा
माम	५.	मुझसे	अपहर्ता	१०.	आप चोर हैं
ऊचतुः	६.	बोले	इति	७.	यह
स्वार्थ	२.	स्वार्थ	तत श्रुत्वा	११.	वह सुनकर
साधकौ ।	३.	सिद्ध करने वाले	अभवत् भ्रमः ।।	१२.	मुझे भ्रम हो गया

श्लोकार्थ– हे प्रभो ! झगड़ते हुये स्वार्थ सिद्ध करने वाले दोनों ब्राह्मण मुझसे बोले। यह आपने मुझे दी है। दूसरे ने कहा आप चोर हैं। वह सुनकर मुझे भ्रम हो गया ।।

एकोनविंशः श्लोकः

अनुनीतावुभौ विप्रौ धर्मकृच्छ्रगतेन वै ।
गवां लक्षं प्रकृष्टानां दास्याम्येषा प्रदीयताम् ॥१६॥

पदच्छेद— अनुनीतौ उभौ विप्रौ धर्म कृच्छ्र गतेन वै ।
गवाम् लक्षम् प्रकृष्टानाम् दास्यामि एषा प्रदीयताम् ॥

शब्दार्थ—

अनुनीतौ	६. अनुनय-विनय किया (कि)	गवाम्	६. गौएँ
उभौ	४. उन दोनों	लक्षम्	७. मैं आपको एक लाख
विप्रौ	५. ब्राह्मणों से	प्रकृष्टानाम्	८. बहुत उत्तम
धर्म	१. धर्म	दास्यामि	१०. दूँगा
कृच्छ्र	२. संकट में	एषा	११. यह गौ
गतेन वै ।	३. पड़े हुये मैंने	प्रदीयताम् ॥	१२. मुझे दे दीजिये

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! धर्म संकट में पड़े हुये मैंने उन दोनों ब्राह्मणों से अनुनय-विनय किया कि मैं आपको बहुत उत्तम एक लाख गौएँ दूँगा । यह गौ मुझे दे दीजिये ॥

विंशः श्लोकः

भवन्तावनुगृह्णीतां किङ्करस्याविजानतः ।
समुद्धरत मां कृच्छ्रात् पतन्तं निरयेऽशुचौ ॥२०॥

पदच्छेद— भवन्तौ अनुगृह्णीताम् किङ्करस्य अविजानतः ।
समुद्धरत माम् कृच्छ्रात् पतन्तम् निरये अशुचौ ॥

शब्दार्थ—

भवन्तौ	३. आप दोनों	माम्	८. मुझे
अनुगृह्णीताम्	४. कृपा कीजिये	कृच्छ्रात्	६. कष्ट से
किङ्करस्य	२. मुझ सेवक पर	पतन्तम्	७. गिरते हुये
अविजानतः ।	१. न जानते हुये	निरये	६. नरक में
समुद्धरत	१०. बचा लीजिये	अशुचौ ॥	५. घोर

श्लोकार्थ—हे विप्रो ! न जानते हुये मुझ सेवक पर आप दोनों कृपा कीजिये । घोर नरक में गिरते हुये मुझे कष्ट से बचा लीजिये ॥

एकविंशः श्लोकः

नाहं प्रतीच्छे वै राजन्नित्युक्त्वा स्वाम्यपाक्रमत् ।
नान्यद् गवामप्ययुतमिच्छामीत्यपरो ययौ ॥२१॥

पदच्छेद— न अहम् प्रतीच्छे वै राजन् इति उक्त्वा स्वामी अपाक्रमत् ।
न अन्यत् गवाम् अपि अयुतम् इच्छमि इति अपरः ययौ ॥

शब्दार्थ—

न अहम्	४.	मैं कुछ नहीं (लूंगा)	न	११.	नहीं
प्रतीच्छे	३.	बदले में	अन्यत्	९.	दूसरी
वै	२.	निश्चित रूप से	गवाम् अपि	१०.	गौएँ भी
राजन्	१.	हे राजन् !	अयुतम्	८.	दस हजार
इति उक्त्वा	५.	यह कहकर	इच्छामि	१२.	चाहता
स्वामी	६.	(गाय का) स्वामी	इति अपरः	१३.	ऐसा कहकर दूसरा
अपाक्रमत् ।	७.	चला गया (और)	ययौ ॥	१४.	(ब्राह्मण भी) चला

श्लोकार्थ—हे राजन् ! निश्चित रूप से बदले में मैं कुछ नहीं लूंगा । यह कह कर गाय का स्वामी चला गया । दस हजार गौएँ भी दूसरी नहीं चाहता हूँ । ऐसा कहकर दूसरा ब्राह्मण भी चला गया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

एतस्मिन्नन्तरे याम्यैर्दूतैर्नीतो यमक्षयम् ।
यमेन पृष्टस्तत्राहं देवदेव जगत्पते ॥२२॥

पदच्छेद— एतस्मिन् अन्तरे याम्यैः दूतैः नीतः यमक्षयम् ।
यमेन पृष्टः तत्र अहम् देवदेव जगत्पते ॥

शब्दार्थ—

एतस्मिन्	३.	इस	यमेन	११.	यम ने
अन्तरे	४.	बीच	पृष्टः	१२.	पूछा
याम्यैः	५.	यम के	तत्र	९.	वहाँ
दूतैः	६.	दूत मुझे	अहम्	१०.	मुझ से
नीतः	७.	ले गये	देवदेव	१.	हे देवाधिदेव !
यमक्षयम् ।	८.	यमपुरी	जगत्पते ॥	२.	जगत् के स्वामी

श्लोकार्थ—हे देवाधिदेव ! जगत् के स्वामी ! इस बीच यम के दूत मुझे यम पुरी ले गये वहाँ मुझ से यम ने पूछा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

पूर्वं त्वमशुभं भुङ्क्षे उताहो नृपते शुभम् ।
नान्तं दानस्य धर्मस्य पश्ये लोकस्य भास्वतः ॥२३॥

पदच्छेद— पूर्वम् त्वम् शुभम् भुङ्क्षे उताहो नृपते शुभम् ।
न अन्तम् दानस्य धर्मस्य पश्ये लोकस्य भास्वतः ॥

शब्दार्थ—

पूर्वम्	२. पहले	न	१३. नहीं
त्वम्	३. तुम	अन्तम्	१२. अन्त
शुभम्	४. पाप का	दानस्य	९. तुम्हारे-दान और
भुङ्क्षे	५. फल भोगोगे	धर्मस्य	१०. धर्म के फल स्वरूप प्राप्त
उताहो	६. या	पश्ये	१४. देख रहा हूँ
नृपते	१. हे राजन् !	लोकस्य	११. लोक का
शुभम् ।	७. पुण्य का	भास्वतः ॥	८. तेजस्वी

श्लोकार्थ—हे राजन् ! पहले तुम पाप का फल भोगोगे या पुण्य का ? तेजस्वी तुम्हारे दान और धर्म के फलस्वरूप प्राप्त लोक का अन्त नहीं देख रहा हूँ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

पूर्वं देवाशुभं भुञ्ज इति प्राह पतेति सः ।
तावदद्राक्षमात्मानं कृकलासं पतन् प्रभो ॥२४॥

पदच्छेद— पूर्वम् देव अशुभम् भुञ्जे इति प्राह पतेति सः ।
तावत् अद्राक्षम् आत्मानम् कृकलासम् पतन् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

पूर्वम् देव	१. महाराज पहले मैं	तावत्	९. उसी क्षण
अशुभम्	२. पाप का फल	अद्राक्षम्	१३. देखा
भुञ्जे	३. भोगना चाहता हूँ	आत्मानम्	११. अपने को
इति	४. मेरे इस प्रकार कहते ही	कृकलासम्	१२. गिरगिट के रूप में
प्राह	६. कहा	पतन्	१०. गिरते हुये मैंने
पतेति	७. गिर जाओ	प्रभो ॥	८. हे प्रभो !
सः ।	५. यमराज ने		

श्लोकार्थ—महाराज ! पहले मैं पाप का फल भोगना चाहता हूँ । मेरे इस प्रकार कहते ही यमराज ने कहा गिर जाओ । हे प्रभो ! उसी क्षण गिरते हुये मैंने अपने को गिरगिट के रूप में देखा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ब्रह्मण्यस्य वदान्यस्य तव दासस्य केशव ।
स्मृतिर्नाद्यापि विध्वस्ता भवत्सन्दर्शनार्थिनः ॥२५॥

पदच्छेद— ब्रह्मण्यस्य वदान्यस्य तव दासस्य केशव ।
स्मृतिः न अद्यापि विध्वस्ता भवत् सन्दर्शन अर्थिनः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मण्यस्य	२.	ब्राह्मणों के सेवक	स्मृतिः	८.	(पूर्वजन्म की) स्मृति
वदान्यस्य	३.	अत्यन्त दानी	न अद्यापि	९.	आज भी नहीं
तव	४.	आपके	विध्वस्ता	१०.	नष्ट हुई है
दासस्य	५.	दास (और)	भवत् संदर्शन	६.	आपके दर्शन के
केशव ।	१.	हे भगवन् !	अर्थिनः ॥	७.	अभिलाषी (मेरे)

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! ब्राह्मणों के सेवक, अत्यन्त दानी, आपके दास और आपके दर्शन के अभिलाषी मेरे पूर्वजन्म की स्मृति आज भी नहीं नष्ट हुई है ॥

षड्विंशः श्लोकः

स त्वं कथं मम विभोऽक्षिपथः परात्मा योगेश्वरैः श्रुतिदृशामलहृद्विभाव्यः ।
साक्षादधोक्षज उरुव्यसनान्धबुद्धे स्यान्मेऽनुदृश्य इह यस्य भवापवर्गः ॥२६॥

पदच्छेद—सः त्वम् कथम् मम विभो अक्षिपथः परात्मा योगेश्वरैः श्रुतिदृशा अमलहृद् विभाव्यः ।
साक्षात् अधोक्षज उरुव्यसन अन्धबुद्धे स्यात् मे अनुदृश्यः इह यस्य भव अपवर्गः ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	जो	साक्षात्	१८.	सामने
त्वम्	७.	आप	अधोक्षज	११.	हे परमात्मन्
कथम्	१०.	कैसे आ गये	उरुव्यसन	१५.	अनेक प्रकार के दुःखों से
मम	८.	मेरे	अन्धबुद्धे	१६.	किंकर्तव्य विमूढ बने
विभो	१.	हे प्रभो !	स्यात्	२०.	हो रहे हैं
अक्षिपथः	९.	नेत्रों के सामने	मे	१७.	मेरे
परात्मायोगेश्वरैः	३.	परमात्मा योगीश्वरों द्वारा	अनुदृश्यः	१९.	दृष्टिगोचर कैसे
श्रुतिदृशा	४.	उपनिषदों की दृष्टि से	इह	१२.	यहाँ
अमलहृद्	५.	निर्मल चित्त में	यस्यभव	१३.	जिसे संसार से
विभाव्यः ।	६.	चिन्तन करने योग्य	अपवर्गः ॥	१४.	मोक्ष मिलता है उसे आप दर्शन देते हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जो परमात्मा योगीश्वरों के द्वारा उपनिषदों की दृष्टि से निर्मल चित्त में चिन्तन करने योग्य हैं, वे आप मेरे नेत्रों के सामने कैसे आ गये । हे परमात्मन् ! यहाँ जिसे संसार से मोक्ष मिलता है, उसे आप दर्शन देते हैं । अनेक प्रकार के दुःखों से किंकर्तव्य विमूढ बने मेरे सामने कैसे दृष्टि गोचर हो रहे हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

देवदेव जगन्नाथ गोविन्द पुरुषोत्तम ।
नारायण हृषीकेश पुण्यश्लोकाच्युताव्यय ॥२७॥

पदच्छेद— देवदेव जगन्नाथ गोविन्द पुरुषोत्तम ।
नारायण हृषीकेश पुण्यश्लोक अच्युत अव्यय ॥

शब्दार्थ—

देव	१.	हे देवों के	नारायण	६.	नारायण
देव	२.	देव	हृषीकेश	७.	इन्द्रियों के स्वामी
जगन्नाथ	३.	जगत् के स्वामी	पुण्यश्लोक	८.	पवित्र कीर्ति
गोविन्द	४.	गोविन्द	अच्युत	९.	अच्युत
पुरुषोत्तम ।	५.	पुरुषोत्तम	अव्यय ॥	१०.	अविनाशी (मुझे आज्ञा दें)

श्लोकार्थ—हे देवों के देव ! जगत् के स्वामी, गोविन्द, पुरुषोत्तम, नारायण, इन्द्रियों के स्वामी, पवित्र कीर्ति, अच्युत, अविनाशी मुझे आज्ञा दें ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अनुजानीहि मां कृष्ण यान्तं देवगतिं प्रभो ।
यत्र क्वापि सतश्चेतो भूयान्मे त्वत्पदास्पदम् ॥२८॥

पदच्छेद— अनुजानीहि माम् कृष्ण यान्तम् देवगतिम् प्रभो ।
यत्र क्वापि सतः चेतः भूयात् मे त्वत्पद आस्पदम् ॥

शब्दार्थ—

अनुजानीहि	७.	आज्ञा दें	यत्र क्वापि	८.	जहाँ कहीं भी
माम्	६.	मुझे	सतः	९.	रहते हुये
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण	चेतः	११.	चित्त
यान्तम्	५.	जाते हुये	भूयात्	१४.	रहे
देव	३.	देव	मे	१०.	मेरा
गतिम्	४.	लोक को	त्वत्पद	१२.	आपके चरणों में
प्रभो ।	१.	हे प्रभो !	आस्पदम् ॥	१३.	लगा

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! श्रीकृष्ण ! देवलोक को जाते हुये मुझे आज्ञा दें । जहाँ कहीं भी रहते हुये मेरा चित्त आपके चरणों में लगा रहे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

नमस्ते सर्वभावाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
कृष्णाय वासुदेवाय योगानां पतये नमः ॥२९॥

पदच्छेद— नमस्ते सर्व भावाय ब्रह्मणे अनन्त शक्तये ।
कृष्णाय वासुदेवाय योगानाम् पतये नमः ॥

शब्दार्थ—

नमस्ते	१.	आपको नमस्कार है	कृष्णाय	७.	श्रीकृष्ण
सर्व	२.	समस्त	वासुदेवाय	८.	वासुदेव और
भावाय	३.	कार्य-कारण रूप	योगानाम्	९.	योगों के
ब्रह्मणे	४.	ब्रह्म	पतये	१०.	स्वामी को
अनन्त	५.	अनन्त	नमः ॥	११.	नमस्कार है
शक्तये ।	६.	शक्ति वाले			

श्लोकार्थ—आपको नमस्कार है । समस्त कार्य-कारण रूप, ब्रह्म, अनन्त शक्ति वाले, श्रीकृष्ण, वासुदेव और योगों के स्वामी को नमस्कार है ॥

त्रिंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा तं परिक्रम्य पादौ स्पृष्ट्वा स्वमौलिना ।
अनुज्ञातो विमानाग्र्यमारुहत् पश्यतां नृणाम् ॥३०॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा तम् परिक्रम्य पादौ स्पृष्ट्वा स्व मौलिना ।
अनुज्ञातः विमान अग्र्यम् आरुहत् पश्यताम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

इति उक्त्वा	१.	यह कह कर	अनुज्ञातः	७.	उनसे आज्ञा लेकर
तम्	२.	उनकी	विमान	११.	विमान पर
परिक्रम्य	३.	परिक्रमा करके (और)	अग्र्यम्	१०.	उत्तम
पादौ	५.	चरणों का	आरुहत्	१२.	चढ़ गया
स्पृष्ट्वा	६.	स्पर्श करके	पश्यताम्	९.	देखते ही देखते
स्व मौलिना ।	४.	अपने मस्तक से	नृणाम् ॥	८.	लोगों के

श्लोकार्थ—यह कह कर उनकी परिक्रमा करके और अपने मस्तक से चरणों का स्पर्श करके उनसे आज्ञा लेकर लोगों के देखते ही देखते उत्तम विमान पर चढ़ गया ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

कृष्णः परिजनं प्राह भगवान् देवकीसुतः।
ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा राजन्याननुशिक्षयन् ॥३१॥

पदच्छेद— कृष्णः परिजनम् प्राह भगवान् देवकी सुतः।
ब्रह्मण्यदेवः धर्मात्मा राजन्यान् अनु शिक्षयन् ॥

शब्दार्थ—

कृष्णः	५.	श्रीकृष्ण ने	ब्रह्मण्यदेवः	१.	ब्राह्मणों के भक्त
परिजनम्	९.	अपने कुटुम्ब के लोगों से	धर्मात्मा	२.	धर्मात्मा
प्राह	१०.	कहा	राजन्यान्	६.	क्षत्रियों को
भगवान्	४.	भगवान्	अनु-	८.	देने के लिये
देवकीसुतः।	३.	देवकी के पुत्र	शिक्षयन् ॥	७.	शिक्षा

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के भक्त, धर्मात्मा, देवकी के पुत्र, भगवान् श्रीकृष्ण ने क्षत्रियों को शिक्षा देने के लिये अपने कुटुम्ब के लोगों से कहा ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

दुर्जरं बत ब्रह्मस्वं भुक्तमग्नेर्मनागपि।
तेजीयसोऽपि किमुत राज्ञामीश्वरमानिनाम् ॥३२॥

पदच्छेद— दुर्जरम् बत ब्रह्मस्वम् भुक्तम् अग्नेः मनाग् अपि।
तेजीयसः अपि किमुत राज्ञाम् ईश्वरमानिनाम् ॥

शब्दार्थ—

दुर्जरम्	९.	पचा नहीं सकता	तेजीयसः	६.	तेजस्वी व्यक्ति
बत	१.	खेद है कि	अपि	७.	भी
ब्रह्मस्वम्	२.	ब्राह्मण का धन	किमुत	८.	उसे
भुक्तम्	४.	छीन करके	राज्ञाम्	१२.	राजाओं का कहना ही क्या है
अग्नेः	५.	अग्नि के समान	ईश्वर	१०.	फिर अपने को ईश्वर
मनाक् अपि।	३.	थोड़ा भी	मानिनाम् ॥	११.	मानने वाले

श्लोकार्थ—खेद है कि! ब्राह्मण का धन थोड़ा भी छीन करके अग्नि के समान तेजस्वी व्यक्ति भी उसे पचा नहीं सकता। फिर अपने को ईश्वर मानने वाले राजाओं का तो कहना ही क्या है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

नाहं हालाहलं मन्ये विषं यस्य प्रतिक्रिया ।
ब्रह्मस्वं हि विषं प्रोक्तं नास्य प्रतिविधिर्भुवि ॥३३॥

पदच्छेद— न अहम् हालाहलम् मन्ये विषम् यस्य प्रतिक्रिया ।
ब्रह्मस्वम् हि विषम् प्रोक्तम् न अस्य प्रतिविधिः भुवि ॥

शब्दार्थ—

न	४.	नहीं	ब्रह्मस्वम्	८.	वस्तुतः ब्राह्मण का धन
अहम्	१.	मैं	हि	९.	ही
हालाहलम्	२.	हलाहल	विषम् प्रोक्तम्	१०.	विष कहा गया है
मन्ये	५.	मानता हूँ (क्योंकि)	न	१४.	नहीं है
विषम्	३.	विष को	अस्य	११.	इसकी
यस्य	६.	उसकी	प्रतिविधिः	१३.	चिकित्सा
प्रतिक्रिया ।	७.	चिकित्सा होती है	भुवि ॥	१२.	पृथ्वी पर

श्लोकार्थ—मैं हलाहल विषको नहीं मानता हूँ । क्योंकि उसकी चिकित्सा होती है । वस्तुतः ब्राह्मण का धन ही विष कहा गया है । इसकी पृथ्वी पर चिकित्सा नहीं है ।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

हिनस्ति विषमत्तारं वह्निरद्भिः प्रशाम्यति ।
कुलं समूलं दहति ब्रह्मस्वारणिपावकः ॥३४॥

पदच्छेद— हिनस्ति विषम् अत्तारम् वह्निः अद्भिः प्रशाम्यति ।
कुलम् समूलम् दहति ब्रह्मस्व अरणि पावकः ॥

शब्दार्थ—

हिनस्ति	३.	मार डालता है और	कुलम्	११.	कुल को
विषम्	१.	विष (केवल)	समूलम्	१०.	सारे
अत्तारम्	२.	खाने वाले	दहति	१२.	जला डालती है
वह्निः	४.	अग्नि	ब्रह्मस्व	७.	किन्तु ब्राह्मण के धन रूप
अद्भिः	५	जल से	अरणि	८.	काष्ठ की
प्रशाम्यति ।	६.	शान्त की जा सकती है	पावकः ॥	९.	जो अग्नि होती है

श्लोकार्थ—विष केवल खाने वाले काले को मार डालता है । और अग्नि जल से शान्त की जा सकती है । किन्तु ब्राह्मण के धन रूप काष्ठ की जो अग्नि होती है वह सारे कुल को जला डालती है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ब्रह्मस्वं दुरनुज्ञातं भुक्तं हन्ति त्रिपूरुषम् ।
प्रसह्य तु बलाद् भुक्तं दश पूर्वान् दशापरान् ॥३५॥

पदच्छेद— ब्रह्मस्वम् दुर्अनुज्ञातम् भुक्तम् हन्ति त्रिपूरुषम् ।
प्रसह्य तु बलात् भुक्तम् दश पूर्वान् दश अपरान् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मस्वम्	१.	ब्राह्मण का धन	तु	६.	परन्तु
दुर्अनुज्ञातम्	२.	बिना उसकी आज्ञा के	बलात्	७.	बलपूर्वक
भुक्तम्	३.	भोगा जाने पर	भुक्तम्	८.	भोगने पर
हन्ति	१२.	नष्ट कर देता है	दश	९.	दश
त्रिपूरुषम् ।	४.	तीन पीढ़ियों को तथा	पूर्वान्	१०.	पहले की और
प्रसह्य	५.	हठ करके	दश अपरान् ॥	११.	दश बाद की पीढ़ियों को

श्लोकार्थ—ब्राह्मण का धन बिना उसकी आज्ञा के भोगा जाने पर तीन पीढ़ियों को तथा हठ करके परन्तु बल पूर्वक भोगने पर दस पहले की और दस बाद की पीढ़ियों को नष्ट कर देता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

राजानो राजलक्ष्म्यान्धा नात्मपातं विचक्षते ।
निरयं येऽभिमन्यन्ते ब्रह्मस्वं साधु बालिशाः ॥३६॥

पदच्छेद— राजानः राजलक्ष्म्या अन्धाः न आत्मपातम् विचक्षते ।
निरयम् ये अभिमन्यन्ते ब्रह्मस्वम् साधु बालिशाः ॥

शब्दार्थ—

राजानः	३.	राजा	निरयम्	१२.	नरक में गिरते हैं
राजलक्ष्म्या	४.	राज लक्ष्मी से	ये	१.	जो
अन्धाः	५.	अन्धे होकर	अभिमन्यन्ते	११.	हड़प कर
न	७.	नहीं	ब्रह्मस्वम्	९.	ब्राह्मण का धन
आत्मपातम्	६.	अपने अधः पतन को	साधु	१०.	अच्छी प्रकार
विचक्षते ।	८.	देखते (वे ही)	बालिशाः ॥	२.	मूर्ख

श्लोकार्थ—जो मूर्ख राजा राजलक्ष्मी से अन्धे होकर अपने अधः पतन को नहीं देखते वे ही ब्राह्मण का धन अच्छी प्रकार हड़प कर नरक में गिरते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

गृह्णन्ति यावतः पांसून् क्रन्दतामश्रुबिन्दवः ।
विप्राणां हृतवृत्तीनां वदान्यानां कुटुम्बिनाम् ।।३७।।

पदच्छेद— गृह्णन्ति यावतः पांसून् क्रन्दताम् अश्रु बिन्दवः ।
विप्राणाम् हृत वृत्तीनाम् वदान्यानाम् कुटुम्बिनाम् ।।

शब्दार्थ—

गृह्णन्ति	११.	भिगोती हैं	विप्राणाम्	५.	ब्राह्मणों के
यावतः	९.	जितने	हृत	१.	छीन ली गई है
पांसून्	१०.	धूलि कणों को	वृत्तीनाम्	२.	जीविका जिनकी ऐसे
क्रन्दताम्	६.	रोने से	वदान्यानाम्	३.	उदार हृदय और
अश्रु	७.	आँसू की	कुटुम्बिनाम् ।।	४.	कुटुम्ब वाले
बिन्दवः ।	८.	बूँदें			

श्लोकार्थ—छीन ली गई है जीविका जिनकी ऐसे उदार हृदय और कुटुम्ब वाले ब्राह्मणों के रोने से आँसू की बूँदें जितने धूलि-कणों को भिगोती हैं । (उतने वर्षों तक जीविका छीनने वाले को नरक में रहना पड़ता है) ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

राजानो राजकुल्याश्च तावतोऽब्दान्निरङ्कुशाः ।
कुम्भीपाकेषु पच्यन्ते ब्रह्मदायापहारिणः ।।३८।।

पदच्छेद— राजानः राजकुल्याः च तावतः अब्दान् निरङ्कुशाः ।
कुम्भीपाकेषु पच्यन्ते ब्रह्मदाय अपहारिणः ।।

शब्दार्थ—

राजानः	४.	राजा	निरङ्कुशाः ।	३.	निरङ्कुश
राजकुल्याः	६.	उसके वंशजों को	कुम्भीपाकेषु	९.	कुम्भीपाक नरक में
च	५.	और	पच्यन्ते	१०.	दुःख भोगना पड़ता है
तावतः	७.	उतने	ब्रह्मदाय	१.	ब्राह्मणों का धन
अब्दान्	८.	वर्षों तक	अपहारिणः ।।	२.	अपहरण करने वाले

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों का धन अपहरण करने वाले निरङ्कुश राजा और उसके वंशजों को उतने वर्षों तक कुम्भी पाक नरक में दुःख भोगना पड़ता है ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरेच्च यः ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥३६॥

पदच्छेद— स्वदत्ताम् परदत्ताम् वा ब्रह्मवृत्तिम् हरेत् च यः ।
षष्टिवर्ष सहस्राणि विष्ठायाम् जायते कृमिः ॥

शब्दार्थ—

स्वदत्ताम्	२.	अपनी दी हुई	षष्टिवर्ष	६.	साठ
परदत्ताम् वा	३.	दूसरे की दी हुई या	सहस्राणि	७.	हजारवर्षों तक
ब्रह्मवृत्तिम्	४.	ब्राह्मण की जीविका का	विष्ठायाम्	८.	विष्ठा का
हरेत् च	५.	हरण करता है वह	जायते	१०.	होता है
यः ।	१.	जो (मनुष्य)	कृमिः ॥	६.	कीड़ा

श्लोकार्थ—जो मनुष्य अपनी दी हुई या दूसरे की दी हुई या ब्राह्मण की जीविका का हरण करता है, वह साठ हजार वर्षों तक विष्ठा का कीड़ा होता है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

न मे ब्रह्मधनं भूयाद् यद् गृद्ध्वाल्पायुषो नराः ।
पराजिताश्च्युता राज्याद् भवन्त्युद्वेजिनोऽहयः ॥४०॥

पदच्छेद— न मे ब्रह्मधनम् भूयात् यत्गृद्ध्वा अल्पआयुषः नराः ।
पराजिताः च्युताः राज्यात् भवन्ति उद्वेजिनः अहयः ॥

शब्दार्थ—

न मे	२.	मेरे राजकोष में न	पराजिताः	७.	शत्रुओं से पराजित
ब्रह्मधनम्	१.	ब्राह्मण का धन	च्युताः	६.	भ्रष्ट और (मरने पर)
भूयात्	३.	होवे (क्योंकि)	राज्यात्	८.	राज्य से
यत्गृद्ध्वा	४.	जिसकी इच्छा करके	भवन्ति	१२.	होते हैं
अल्पआयुषः	५.	थोड़ी आयु वाले	उद्वेजिनः	१०.	कष्ट देने वाले
नराः ।	६.	मनुष्य	अहयः ॥	११.	साँप

श्लोकार्थ—ब्राह्मण का धन मेरे राजकोष में न होवे। क्योंकि जिसकी इच्छा करके थोड़ी आयु वाले मनुष्य शत्रुओं से पराजित, राज्य से भ्रष्ट और मरने पर कष्ट देने वाले साँप होते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

विप्रं कृतागसमपि नैव द्रुह्यत मामकाः ।
घ्नन्तं बहु शपन्तं वा नमस्कुरुत नित्यशः ॥४१॥

पदच्छेद— विप्रम् कृत आगसम् अपि न एव द्रुह्यत मामकाः ।
घ्नन्तम् बहु शपन्तम् वा नमः कुरुत नित्यशः ॥

शब्दार्थ—

विप्रम्	५.	ब्राह्मण से	घ्नन्तम्	८.	मारते हुये
कृत	३.	करने पर	बहु	१०.	बहुत
आगसम्	२.	अपराध	शपन्तम्	११.	शाप देते हुये भी उन्हें
अपि	४.	भी	वा	९.	अथवा
न एव	७.	नहीं करो	नमः	१३.	नमस्कार
द्रुह्यत	६.	द्रोह	कुरुत	१४.	करो
मामकाः ।	१.	मेरे आत्मीयो	नित्यशः ॥	१२.	नित्य

श्लोकार्थ—मेरे आत्मीयो, अपराध करने पर भी ब्राह्मण से द्रोह नहीं करो। मारते हुये अथवा बहुत शाप देते हुये भी उन्हें नित्य नमस्कार करो ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

यथाहं प्रणमे विप्राननुकालं समाहितः ।
तथा नमत यूयं च योऽन्यथा मे स दण्डभाक् ॥४२॥

पदच्छेद— यथा अहम् प्रणमे विप्रान् अनुकालम् समाहितः ।
तथा नमत यूयम् च यः अन्यथा मे सः दण्डभाक् ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जिस प्रकार	तथा	७.	उसी प्रकार
अहम्	२.	मैं	नमत	९.	नमस्कार करो
प्रणमे	६.	प्रणाम करता हूँ	यूयम् च	८.	तुम लोग भी
विप्रान्	३	ब्राह्मणों को	यः अन्यथा	१०.	जो ऐसा नहीं करेगा
अनुकालम्	४.	तीनों समय	मे सः	११.	वह मेरे
समाहितः ।	५	सावधानी से	दण्डभाक् ॥	१२.	दण्ड का भागी होगा

श्लोकार्थ— जिस प्रकार मैं ब्राह्मणों को तीनों समय सावधानी से प्रणाम करता हूँ, उसी प्रकार तुम लोग भी नमस्कार करो। जो ऐसा नहीं करेगा, वह मेरे दण्ड का भागी होगा ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

ब्राह्मणार्थो ह्यपहृतो हर्तारं पातयत्यधः ।

अजानन्तमपि ह्येनं नृगं ब्राह्मणगौरिव ॥४३॥

पदच्छेद— ब्राह्मण अर्थः हि अपहृतः हर्तारम् पातयति अधः ।
अजानन्तम् अपि हि एनम् नृगम् ब्राह्मण गौः इव ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मण अर्थः	२.	ब्राह्मण का धन	अजानन्तम्	९.	अनजान में
हि	१.	क्योंकि	अपि हि	१०.	भी उसे लेने वाले
अपहृतः	३.	चुराया जाने पर	एनम्	११.	उस
हर्तारम्	४.	चुराने वाले का	नृगम्	१२.	नृग को (नरक में डाल दिया)
पातयति	६.	गिरा देता है	ब्राह्मण	७.	ब्राह्मण की
अधः ।	५.	नीचे	गौः इव ॥	८.	जैसे गाय ने

श्लोकार्थ—क्योंकि ब्राह्मण का धन चुराया जाने पर चुराने वाले को नीचे गिरा देता है। जैसे ब्राह्मण की गाय ने अनजान में भी उसे लेने वाले उस नृग को नरक में गिरा दिया।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

एवं विश्राव्य भगवान् मुकुन्दो द्वारकौकसः ।

पावनः सर्वलोकानां विवेश निजमन्दिरम् ॥४४॥

पदच्छेद— एवम् विश्राव्य भगवान् मुकुन्दः द्वारकौकसः ।
पावनः सर्वलोकानाम् विवेश निज मन्दिरम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	पावनः	५.	पवित्र करने वाले
विश्राव्य	३.	सुनाकर	सर्वलोकानाम्	४.	समस्त लोकों को
भगवान्	६.	भगवत्	विवेश	१०.	चले गये
मुकुन्दः	७.	श्रीकृष्ण	निज	८.	अपने
द्वारकौकसः ।	२.	द्वारकावासियों को	मन्दिरम् ॥	९.	भवन में

श्लोकार्थ—इस प्रकार द्वारकावासियों को सुनाकर समस्त लोकों को पवित्र करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण अपने भवन में चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे नृगोपाख्यानं
नाम चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥६४॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—बलभद्रः कुरुश्रेष्ठ भगवान् रथमास्थितः ।
सुहृद्दिदृक्षुरुत्कण्ठः प्रययौ नन्दगोकुलम् ॥१॥

पदच्छेद— बलभद्रः कुरुश्रेष्ठ भगवान् रथम् आस्थितः ।
सुहृद् दिदृक्षुः उत्कण्ठः प्रययौ नन्द गोकुलम् ॥

शब्दार्थ—

बलभद्रः	६.	बलराम जो	सुहृद्	२.	मित्रों एवं बन्धुओं की
कुरुश्रेष्ठ	१.	हे परीक्षित् !	दिदृक्षुः	३.	देखने के इच्छुक एवं
भगवान्	५.	भगवान्	उत्कण्ठः	४.	उत्कण्ठित
रथम्	७.	रथ पर	प्रययौ	१०.	गये
आस्थितः ।	८.	सवार होकर	नन्दगोकुलम् ॥	९.	नन्द के गोकुल (व्रज में)

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! मित्रों एवं बन्धुओं को देखने के इच्छुक एवम् उत्कण्ठित भगवान् बलराम जी रथ पर सवार होकर नन्द के गोकुल व्रज में गये ॥

द्वितीयः श्लोकः

परिष्वक्तश्चिरोत्कण्ठैर्गोपैर्गोपीभिरेव च ।
रामोऽभिवाद्य पितरावाशीर्भिरभिनन्दितः ॥२॥

पदच्छेद— परिष्वक्तः चिरः उत्कण्ठैः गोपैः गोपीभिः एव च ।
रामः अभिवाद्य पितरौ आशीर्भिः अभिनन्दितः ॥

शब्दार्थ—

परिष्वक्तः	६.	आलिंगन किया	रामः	७.	बलराम जी ने
चिरः	१.	बहुत दिनों से	अभिवाद्य	९.	अभिवादन करके
उत्कण्ठैः	२.	उत्कण्ठित	पितरौ	८.	माता और पिता का
गोपैः	३.	गोपों और	आशीर्भिः	१०.	उनके आशीर्वाद से
गोपीभिः	४.	गोपियों ने	अभिनन्दितः ॥	११.	अपने को कृतार्थ किया
एव च ।	५.	भी उनका			

श्लोकार्थ—बहुत दिनों से उत्कण्ठित गोपों और गोपियों ने भी उनका आलिंगन किया । बलराम जी ने माता और पिता का अभिवादन करके उनके आशीर्वाद से अपने को कृतार्थ किया ॥

तृतीयः श्लोकः

चिरं नः पाहि दाशार्ह सानुजो जगदीश्वरः ।

इत्यारोप्याङ्कमालिङ्ग्य नेत्रैः सिषिचतुर्जलैः ॥३॥

पदच्छेद— चिरम् नः पाहि दाशार्ह स अनुजः जगदीश्वरः ।
इति आरोप्य अङ्कम् आलिङ्ग्य नेत्रैः सिषिचतुः जलैः ॥

शब्दार्थ -

चिरम्	५.	चिरकाल तक	इति	८.	यह कह कर
नः	६.	हमारी	आरोप्य	१०.	उठाकर
पाहि	७.	रक्षा करें	अङ्कम्	९.	गोद में
दाशार्ह	१.	बलराम जी !	आलिङ्ग्य	११.	आलिंगन करके
स	३.	साथ	नेत्रैः	१२.	नेत्रों के
अनुजः	२.	छोटे भाई श्रीकृष्ण के	सिषिचतुः	१४.	भिगो दिया
जगदीश्वरः ।	४.	जगत् के स्वामी	जलैः ॥	१३.	जल से

श्लोकार्थ—बलराम जी ! छोटे भाई श्रीकृष्ण के साथ चिरकाल तक हमारी रक्षा करें। यह कहकर गोद में उठाकर आलिंगन करके नेत्रों के जल से भिगो दिया ॥

चतुर्थः श्लोकः

गोपवृद्धांश्च विधिवद् यविष्ठैरभिवन्दितः ।

यथावयो यथासख्यं यथासम्बन्धमात्मनः ॥४॥

पदच्छेद— गोप वृद्धान् च विधिवत् यविष्ठैः अभिवन्दितः ।
यथा वयः यथा सख्यम् यथा सम्बन्धम् आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

गोप	३.	गोपों को	यथा	८.	जैसी
वृद्धान्	२.	बड़े-बड़े	वयः	९.	अवस्था
च	१.	तथा	यथा	१०.	जैसी
विधिवत्	४.	विधिपूर्वक प्रणाम किया	सख्यम्	११.	मित्रता और
यविष्ठैः	५.	छोटे-छोटे गोपों ने	यथा	१२.	जैसा
अभिवन्दितः ।	६.	उन्हें प्रणाम किया	सम्बन्धम्	१३.	सम्बन्ध था (सबसे मिले)
			आत्मनः ॥	७.	अपनी

श्लोकार्थ—तथा बड़े-बड़े गोपों को विधिपूर्वक प्रणाम किया। और छोटे-छोटे गोपों ने उन्हें प्रणाम किया। अपनी जैसी अवस्था, जैसी मित्रता और जैसा सम्बन्ध था। सबसे मिले ॥

पञ्चमः श्लोकः

समुपेत्याथ गोपालान् हास्यहस्तग्रहादिभिः ।
विश्रान्तं सुखमासीनं पप्रच्छुः पर्युपागताः ॥५॥

पदच्छेद— समुपेत्य अथ गोपालान् हास्य हस्त ग्रह आदिभिः ।
विश्रान्तम् सुखम् आसीनम् पप्रच्छुः परिउपागताः ॥

शब्दार्थ—

समुपेत्य	३. पास जाकर	विश्रान्तम्	७. विश्राम पाने पर
अथ	१. इसके बाद	सुखम्	८. सुखपूर्वक
गोपालान्	२. ग्वाल वालों ने	आसीनम्	९. बैठे हुये (बलराम जी से)
हास्य	४. हँसी	पप्रच्छुः	१२. पूछा
हस्त	५. हाथ	परि	१०. चारों ओर से
ग्रह	६. मिलाने	उपागताः ॥	११. आये हुये गोपों ने
आदिभिः ।	७. आदि से		

श्लोकार्थ—इसके बाद ग्वाल वालों ने पास जाकर हँसी, हाथ मिलाने आदि से विश्राम पाने पर सुख पूर्वक बैठे हुये बलराम जी से चारों ओर से आये हुये गोपों ने पूछा ॥

षष्ठः श्लोकः

पृष्टाश्चानामयं स्वेषु प्रेमगद्गदया गिरा ।
कृष्णे कमलपत्राक्षे संन्यस्ताखिलराधसः ॥६॥

पदच्छेद — पृष्टाः च अनामयम् स्वेषु प्रेमगद्गदया गिरा ।
कृष्णे कमलपत्राक्षे संन्यस्त अखिल राधसः ॥

शब्दार्थ—

पृष्टाः	१०. प्रश्न किये जाने पर	कृष्णे	४. श्रीकृष्ण के लिये
च	१. फिर	कमल	२. कमल
अनामयम्	९. कुशल	पत्राक्षे	३. नयन
स्वेषु	८. स्वजनों के बारे में	संन्यस्त	५. त्यागे हुये
प्रेमगद्गदया	११. प्रेमगद्गद	अखिल	६. समस्त
गिरा ।	१२. वाणी से (उनसे पूछा)	राधसः ॥	७. भोग वाले गोपों ने

श्लोकार्थ—फिर कमल नयन श्रीकृष्ण के लिये त्यागे हुये समस्त भोग वाले गोपों ने स्वजनों के बारे में कुशल प्रश्न किये जाने पर प्रेमगद्गद वाणी से उनसे पूछा ॥

सप्तमः श्लोकः

कच्चिन्नो बान्धवा राम सर्वे कुशलमासते ।
कच्चित् स्मरथ नो राम यूयं दारसुतान्विताः ॥७॥

पदच्छेद— कच्चित् नः बान्धवाः राम सर्वे कुशलम् आसते ।
कच्चित् स्मरथ नः राम यूयम् दार सुत अन्विताः ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	७.	क्या	कच्चित्	१२.	कभी
नः	२.	हमारे	स्मरण	१४.	स्मरण करते हैं ?
बान्धवाः	४.	बन्धुगण	नः	१३.	हमारा
राम	१.	हे बलराम जी !	राम	८.	बलराम जी
सर्वे	३.	सभी	यूयम्	११.	आप लोग
कुशलम्	५.	कुशल से	दार सुत	९.	स्त्री, पुत्र
आसते ।	६.	हैं न	अन्विताः ॥	१०.	आदि के साथ

श्लोकार्थ—हे बलराम जी ! हमारे सभी बन्धुगण कुशल से हैं न । क्या हे बलराम जी ! स्त्री-पुत्र आदि के साथ आप लोग कभी हमारा स्मरण करते हैं ।

अष्टमः श्लोकः

दिष्ट्या कंसो हतः पापो दिष्ट्या मुक्ताः सुहृज्जनाः ।
निहत्य निर्जित्य रिपून् दिष्ट्या दुर्गं समाश्रिताः ॥८॥

पदच्छेद— दिष्टया कंसः हतः पापः दिष्टया मुक्ताः सुहृत् जनाः ।
निहत्य निर्जित्य रिपून् दिष्टया दुर्गम् समाश्रिताः ॥

शब्दार्थ—

दिष्टया	१.	भाग्य से	निहत्य	९.	मार कर (अथवा)
कंसः हतः	३.	कंस मारा गया	निर्जित्य	१०.	जीत कर
पापः	२.	पापी	रिपून्	८.	शत्रुओं को
दिष्टया	४.	भाग्य से ही	दिष्टया	७.	भाग्य से ही आप लोग
मुक्ताः	६.	बन्धन से मुक्त हो गये	दुर्गम्	११.	किले में
सुहृत् जनाः ।	५.	बन्धुगण	समाश्रिताः ॥	१२.	निवास करते हैं ॥

श्लोकार्थ—भाग्य से पापी कंस मारा गया । भाग्य से ही बन्धुगण बन्धन से मुक्त हो गये । भाग्य से ही आप लोग शत्रुओं को मार कर अथवा जीत कर किले में निवास करते हैं ॥

नवमः श्लोकः

गोप्यो हसन्त्यः पप्रच्छू रामसन्दर्शनादृताः ।
कच्चिदास्ते सुखं कृष्णः पुरस्त्रीजनवल्लभः ॥९॥

पदच्छेद— गोप्यो हसन्त्यः पप्रच्छुः रामसन्दर्शन आदृताः ।
कच्चित् आस्ते सुखम् कृष्णः पुरस्त्री जनवल्लभः ।।

शब्दार्थ—

गोप्यः	४. गोपियों ने	कच्चित्	१२ न
हसन्त्यः	५. हँस कर	आस्ते	११. हैं
पप्रच्छुः	६. पूछा	सुखम्	१०. सुख से तो
राम	१. बलराम जी के	कृष्णः	९. श्रीकृष्ण (अब)
सन्दर्शन	२. दर्शन से	पुरस्त्रीजन	७. नगर वासिनी स्त्रियों के
आदृताः ।	३. सम्मानित	वल्लभः ।।	८. प्यारे

श्लोकार्थ—बलराम जी के दर्शन से सम्मानित गोपियों ने हँसकर पूछा । नगरवासिनी स्त्रियों के प्यारे श्रीकृष्ण अब सुख से तो हैं न ?

दशमः श्लोकः

कच्चित् स्मरति वा बन्धून् पितरं मातरं च सः ।
अप्यसौ मातरं द्रष्टुं सकृदप्यागमिष्यति ।
अपि वा स्मरतेऽस्माकमनुसेवां महाभुजः ॥१०॥

पदच्छेद— कच्चित् स्मरति वा बन्धून् पितरम् मातरम् च सः ।
अपि असौ मातरम् द्रष्टुम् सकृत् अपि आगमिष्यति ।
अपि वा स्मरते अस्माकम् अनुसेवाम् महाभुजः ।।

शब्दार्थ—

कच्चित्	१. क्या कभी	सकृत्	९. एक बार
स्मरति	५. स्मरण करते हैं	अपि	१०. भी
वा बन्धून्	४. या भाई बन्धुओं का	आगमिष्यति ।	११. यहाँ आयेंगे
पितरम्	३. पिता का	अपि वा	१२. क्या
मातरम् च सः ।	२. वे माता	स्मरते	१६. स्मरण करते हैं
अपि असौ	६. क्या वे	अस्माकम्	१४. हम लोगों की
मातरम्	७. माता को	अनुसेवाम्	१५. सेवा का
द्रष्टुम्	८. देखने के लिये	महाभुजः ।।	१३. महाभुज (श्रीकृष्ण)

श्लोकार्थ—क्या कभी वे माता-पिता का या भाई बन्धुओं का स्मरण करते हैं । क्या वे माता को देखने के लिये एक बार भी यहाँ आयेंगे । क्या महाभुज श्रीकृष्ण हम लोगों की सेवा का स्मरण करते हैं ।।

एकादशः श्लोकः

मातरं पितरं भ्रातॄन् पतीन् पुत्रान् स्वसॄरपि ।
यदर्थे जहिम दाशार्ह दुस्त्यजान् स्वजनान् प्रभो ॥११॥

पदच्छेद— मातरम् पितरम् भ्रातॄन् पतीन् पुत्रान् स्वसॄः अपि ।
यत् अर्थे जहिम दाशार्ह दुस्त्यजान् स्व जनान् प्रभो ॥

शब्दार्थ—

मातरम्	७. माता	यत्	२. जिनके
पितरम्	८. पिता	अर्थे	४. लिये
भ्रातॄन्	९. भाई	जहिम	१४. त्याग दिया (क्या वे हमें भूल गये)
पतीन्	१०. पति	दाशार्ह	३. यदुवंशी श्रीकृष्ण के
पुत्रान्	११ पुत्र और	दुस्त्यजान्	५. बहुत कठिनाई से त्यागने योग्य
स्वसॄः	१२. बहनों को	स्वजनान्	६. स्वजन सम्बन्धियों को
अपि ।	१३. भी (हम ने)	प्रभो ॥	१. हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जिन यदुवंशो श्रीकृष्ण के लिये बहुत कठिनाई से त्यागने योग्य स्वजन सम्बन्धियों को, माता-पिता, भाई, पति, पुत्र और बहनों को भी हमने त्याग दिया । (क्या वे हमें भूल गये) ॥

द्वादशः श्लोकः

ता नः सद्यः परित्यज्य गतः संछिन्नसौहृदः ।
कथं नु तादृशं स्त्रीभिर्न श्रद्धीयेत भाषितम् ॥१२॥

पदच्छेद— ताः नः सद्यः परित्यज्य गतः संछिन्न सौहृदः ।
कथम् नु तादृशम् स्त्रीभिः न श्रद्धीयेत भाषितम् ॥

शब्दार्थ—

ताः नः	१. ऐसी हम लोगों को	कथम् नु	१०. कैसे
सद्यः	३. तुरन्त	तादृशम्	८. वैसे व्यक्ति के
परित्यज्य	२. त्याग कर (वे)	स्त्रीभिः	७. स्त्रियाँ
गतः	६. चले गये	न	११. नहीं
संछिन्न	५. तोड़ कर	श्रद्धीयेत	१२. विश्वास करें
सौहृदः ।	४. सौहार्द प्रेम को	भाषितम् ॥	९. वचन पर

श्लोकार्थ—ऐसी हम लोगों को त्याग कर वे तुरन्त सौहार्द प्रेम को तोड़ कर चले गये । स्त्रियाँ वैसे व्यक्ति के वचन पर कैसे नहीं विश्वास करें ॥

त्रयोदशः श्लोकः

कथं नु गृह्णन्त्यनवस्थितात्मनो वचः कृतघ्नस्य बुधाः पुरस्त्रियः ।
गृह्णन्ति वै चित्रकथस्य सुन्दरस्मितावलोकोच्छ्वसितस्मरातुराः ॥१३॥

पदच्छेद— कथम् नु गृह्णन्ति अनवस्थित आत्मनः वचः कृतघ्नस्य बुधाः पुरस्त्रियः ।
गृह्णन्ति वै चित्र कथस्य सुन्दरस्मित अवलोक उच्छ्वसित स्मर आतुराः ॥

शब्दार्थ—

कथम् नु	७.	क्यों	गृह्णन्ति	१६.	उनकी बातों में आ जाती होंगी
गृह्णन्ति	८.	आने लगीं	वै	९.	निश्चित ही (नगरनारियाँ
अनवस्थित	४.	चञ्चल	चित्र	१०.	रंगबिरंगी
आत्मनः	५.	चित्त वाले (श्रीकृष्ण की)	कथस्य	११.	मीठी-मीठी बातें बनाने वाले
वचः	६.	बातों में	सुन्दरस्मित	१२.	सुन्दर मुसकान से युक्त
कृतघ्नस्य	३.	कृतघ्न	अवलोक	१३.	चितवन और
बुधाः	१.	चतुर	उच्छ्वसित	१४.	ठंडी श्वासों से
पुरस्त्रियः ।	२.	नगर-नारियाँ	स्मर आतुराः ॥	१५.	कामातुर होकर

श्लोकार्थ— बलराम जी ! नगर नारियाँ चञ्चल चित्त वाले श्रीकृष्ण की बातों में क्यों आने लगी । निश्चित ही नगर-नारियाँ रंगबिरंगी मीठी-मीठी बातें बनाने वाले सुन्दर मुसकान से युक्त चितवन और ठंडी श्वासों से कामातुर होकर उनकी बातों में आ जाती होंगी ॥

चतुर्दशः श्लोकः

किं नस्तत्कथया गोप्यः कथाः कथयतापराः ।
यात्यस्माभिर्विना कालो यदि तस्य तथैव नः ॥१४॥

पदच्छेद— किम् नः तत् कथया गोप्यः कथाः कथयत अपराः ।
याति अस्माभिः विना कालः यदि तस्य तथैव नः ॥

शब्दार्थ—

किम्	५.	क्या काम है	याति	१४.	कट जाता है तो
नः	२.	हमें	अस्माभिः	१०.	हमारे
तत्	३.	उनकी	विना	११.	बिना
कथया	४.	बात से	कालः	१३.	समय
गोप्यः	१.	हे गोपियो !	यदि	९.	यदि
कथाः	७.	बातें	तस्य	१२.	उनका
कथयत	८.	कहो	तथा एव	१५.	वैसे ही
अपराः ।	६.	दूसरी	नः ॥	१६.	हमारा भी समय कट जायेगा

श्लोकार्थ—हे गोपियो ! हमें उनकी बात से क्या काम है । दूसरी बातें कहो । यदि हमारे बिना उनका समय कट जाता है तो वैसे ही हमारा समय भी कट जायेगा ॥

पञ्चदशः श्लोकः

इति प्रहसितं शौरेर्जल्पितं चारु वीक्षितम् ।
गतिं प्रेमपरिष्वङ्गं स्मरन्त्यो रुरुदुः स्त्रियः ॥१५॥

पदच्छेद— इति प्रहसितम् शौरेः जल्पितम् चारु वीक्षितम् ।
गतिम् प्रेम परिष्वङ्गम् स्मरन्त्यः रुरुदुः स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	गतिम्	७.	चाल
प्रहसितम्	४.	हंसी	प्रेम	८.	प्रेमपूर्वक
शौरेः	२.	श्रीकृष्ण की	परिष्वङ्गम्	९.	आलिङ्गन का
जल्पितम्	३.	बातें	स्मरन्त्यः	१०.	स्मरण करती हुई
चारु	५.	सुन्दर	रुरुदुः	१२.	रोने लगीं
वीक्षितम् ।	६.	चितवन	स्त्रियः ॥	११.	गोपियाँ

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण की बातें, हंसी, सुन्दर चितवन, चाल, प्रेम पूर्वक आलिङ्गन का स्मरण करती हुई गोपियाँ रोने लगीं ॥

षोडशः श्लोकः

सङ्कर्षणस्ताः कृष्णस्य सन्देशैर्हृदयङ्गमैः ।
सान्त्वयामास भगवान् नानानुनयकोविदः ॥१६॥

पदच्छेद— सङ्कर्षणः ताः कृष्णस्य सन्देशैः हृदयङ्गमैः ।
सान्त्वयामास भगवान् नाना अनुनय कोविदः ॥

शब्दार्थ—

सङ्कर्षण	५.	बलराम जी	सान्त्वयामास	१०.	सान्त्वना देने लगे
ताः	६.	उन लोगों को	भगवान्	४.	भगवान्
कृष्णस्य	७.	श्रीकृष्ण के	नाना	१.	अनेक प्रकार के
सन्देशैः	९.	सन्देशों से	अनुनय	२.	अनुनय-विनय करने में
हृदयङ्गमैः ।	८.	हृदयस्पर्शी	कोविदः ॥	३.	निपुण

श्लोकार्थ—अनेक प्रकार के अनुनय-विनय करने में निपुण भगवान् बलराम जी उन लोगों को श्रीकृष्ण के हृदयस्पर्शी सन्देशों से सान्त्वना देने लगे ॥

सप्तदशः श्लोकः

द्वौ मासौ तत्र चावात्सीन्मधुं माधवमेव च ।
रामः क्षपासु भगवान् गोपीनां रतिमावहन् ॥१७॥

पदच्छेद— द्वौ मासौ तत्र च अवात्सीत् मधुम् माधवम् एव च ।
रामः क्षपासु भगवान् गोपीनाम् रतिम् आवहन् ॥

शब्दार्थ—

द्वौ मासौ	७. दो मास	रामः	२. बलराम ने
तत्र च	८. वहाँ पर	क्षपासु	३. रात्रि के समय
आवात्सीत्	१२. बिताये	भगवान्	१. भगवान्
मधुम्	९. चैत्र और	गोपीनाम्	४. गोपियों की
माधवम्	१०. वैशाख	रतिम्	५. रति की
एव च ।	११. भी	आवहन् ॥	६. वृद्धि करते हुये

श्लोकार्थ—भगवान् बलराम ने रात्रि के समय गोपियों की रति की वृद्धि करते हुये दो मास वहाँ पर चैत्र और वैशाख भी बिता दिये ।

अष्टादशः श्लोकः

पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ।
यमुनोपवने रेमे सेविते स्त्रीगणैर्वृतः ॥१८॥

पदच्छेद— पूर्ण चन्द्रकला मृष्टे कौमुदी गन्ध वायुना ।
यमुना उपवने रेमे सेविते स्त्री गणैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

पूर्ण	१. पूर्ण	यमुना	८. यमुना के किनारे
चन्द्रकला	२. चन्द्रमा की कला से	उपवने	९. उपवन में (बलराम जी)
मृष्टे	३. उज्ज्वल तथा	रेमे	१२. विहार करते थे
कौमुदी	४. कुमुदिनी की	सेविते	७. सेवित
गन्ध	५. सुगन्ध से युक्त	स्त्रीगणैः	१०. स्त्रियों के समूह से
वायुना ।	६. वायु से	वृतः ॥	११. घिरे

श्लोकार्थ—पूर्ण चन्द्रमा की कला से उज्ज्वल तथा कुमुदिनी की सुगन्ध से युक्त वायु से सेवित यमुना के किनारे उपवन में बलराम जी स्त्रियों के समूह से घिरे हुये विहार करते थे ।

एकोनविंशः श्लोकः

वरुणप्रेषिता देवी वारुणी वृक्षकोटरात् ।
पतन्ती तद् वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत् ॥१९॥

पदच्छेद— वरुण प्रेषिता देवी वारुणी वृक्ष कोटरात् ।
पतन्ती तद् वनम् सर्वम् स्वगन्धेन अध्यवासयत् ॥

शब्दार्थ—

वरुण	१. वरुण की	पतन्ती	७. वह निकलीं और
प्रेषिता	२. भेजी हुई	तत्	८. उस
देवी	४. देवी	वनम्	१०. वन को
वारुणी	३. वारुणी	सर्वम्	९. सम्पूर्ण
वृक्ष	५. एक वृक्ष के	स्वगन्धेन	११. अपनी सुगन्ध से
कोटरात् ।	६. कोटर से	अध्यवासयत् ॥	१२. सुवासित कर दिया

श्लोकार्थ—वरुण की भेजी हुई वारुणी देवी एक वृक्ष के कोटर से वह निकलीं और उस सम्पूर्ण वन को अपनी सुगन्ध से सुवासित कर दिया ॥

विंशः श्लोकः

तं गन्धं मधुधाराया वायुनोपहृतं बलः ।
आघ्रायोपगतस्तत्र ललनाभिः समं पपौ ॥२०॥

पदच्छेद— तम् गन्धम् मधुधारायाः वायुना उपहृतम् बलः ।
आघ्राय उपगतः तत्र ललनाभिः समम् पपौ ॥

शब्दार्थ—

तम्	४. उस	आघ्राय	६. सूंघकर
गन्धम्	५. सुगन्ध को	उपगतः	९. आये और
मधुधारायाः	३. मधुधारा की	तत्र	८. वहाँ पर
वायुना	१. वायु के द्वारा	ललनाभिः	१०. रमणियों के
उपहृतम्	२. लायी गई	समम्	११. साथ उसे
बलः ।	७. बलराम जी	पपौ ॥	१२. पीने लगे

श्लोकार्थ—वायु के द्वारा लायी गई मधुधारा की उस सुगन्ध को सूंघकर बलराम जी वहाँ पर आये । और रमणियों के साथ उसे पीने लगे ॥

एकविंशः श्लोकः

उपगीयमानचरितो वनिताभिर्हलायुधः ।
वनेषु व्यचरत् क्षीबो मदविह्वललोचनः ॥२१॥

पदच्छेद— उपगीयमान चरितः वनिताभिः हल आयुधः ।
वनेषु व्यचरत् क्षीबः मदविह्वल लोचनः ॥

शब्दार्थ—

उपगीयमान	२.	गाये जाते हुये	वनेषु	९.	वन में
चरितः	३.	चरित वाले	व्यचरत्	१०.	विचर रहे थे
वनिताभिः	१.	रमणियों के द्वारा	क्षीबः	६.	मतवाले एवम्
हल	४.	हल का	मदविह्वल	७.	मद से विह्वल
आयुधः ।	५.	आयुध रखने वाले	लोचनः ॥	८.	नेत्र वाले होकर

श्लोकार्थ—रमणियों के द्वारा गाये जाते हुये चरित्र वाले और हल का आयुध रखने वाले बलरामजी मतवाले एवम् मद से विह्वल नेत्र वाले होकर वन में विचर रहे थे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

स्रग्व्येककुण्डलो मत्तो वैजयन्त्या च मालया ।
बिभ्रत् स्मितमुखाम्भोजं स्वेदप्रालेयभूषितम् ॥२२॥

पदच्छेद— स्रग्वी एककुण्डलः मत्तः वैजयन्त्या च मालया ।
बिभ्रत् स्मित मुखाम्भोजम् स्वेद प्रालेय भूषितम् ॥

शब्दार्थ—

स्रग्वी	१.	पुष्पहार	बिभ्रत्	९.	धारण किये हुये (और)
एककुण्डलः	२.	एक कुण्डल	स्मित	८.	मुस्कराहट
मत्तः	६.	मतवाले (बलराम)	मुखाम्भोजम्	७.	मुख कलम में
वैजयन्त्या	४.	वैजयन्ती	स्वेद	११.	पसीने की बूंदों से
च	३.	तथा	प्रालेय	१०.	हिमकण के समान
मालया ।	६.	माला से विभूषित	भूषितम् ॥	१२.	शोभायमान थे

श्लोकार्थ—पुष्पहार, एक कुण्डल तथा वैजयन्ती माला से विभूषित, मतवाले बलराम मुख कमल में मुस्कराहट धारण किये हुये और हिमकण के समान पसीने की बूंदों से शोभायमान थे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

स आजुहाव यमुनां जलक्रीडार्थमीश्वरः ।
निजं वाक्यमनादृत्य मत्त इत्यापगां बलः ।
अनागतां हलाग्रेण कुपितो विचकर्ष ह ॥२३॥

पदच्छेद— स: आजुहाव यमुनाम् जलक्रीडा अर्थम् ईश्वरः ।
निजम् वाक्यम् अनादृत्य मत्तः इति आपगाम् बलः ।
अनागतम् हल अग्रेण कुपितः विचकर्ष ह ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन	मत्तः	७.	मतवाले हो रहे हैं
आजुहाव	६.	बुलाया (किन्तु ये)	इति	८.	यह सोच कर (वे नहीं आईं)
यमुनाम्	५.	यमुना को	आपगाम्	१२.	यमुना को
जलक्रीडा	३.	जलक्रीडा	बलः ।	१४.	बलरामजी ने
अर्थम्	४.	करने के लिये	अनागताम्	१३.	नहीं आयी (ये देख कर)
ईश्वरः ।	२.	सर्वशक्तिमान् ने	हल	१६.	हल के
निजम्	९.	अपने	अग्रेण	१७.	अग्र भाग से (उन्हें)
वाक्यम्	१०.	वचन का	कुपितः	१५.	क्रुद्ध होकर
अनादृत्य	११.	अनादर करके	विचकर्ष ह ॥	१८.	खींचा

श्लोकार्थ—उन सर्वशक्तिमान् ने जल-क्रीडा करने के लिये यमुना को बुलाया । किन्तु ये मतवाले हो रहे हैं, यह सोच कर वे नहीं आयीं अपने वचन का अनादर करके यमुना को न आये देख कर बलराम जी ने क्रुद्ध होकर हल के अग्र भाग से उन्हें खींचा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

पापे त्वं मामवज्ञाय यन्नायासि मयाऽऽहुता ।
नेष्ये त्वां लाङ्गलाग्रेण शतधा कामचारिणीम् ॥२४॥

पदच्छेद— पापे त्वम् माम् अवज्ञाय यत् न आयासि मया आहुता ।
नेष्ये त्वाम् लाङ्गल अग्रेण शतधा काम चारिणीम् ॥

शब्दार्थ—

पापे त्वम्	१.	पापिनी तू	नेष्ये	१२.	ले आऊँगा
माम्	२.	मेरा	त्वाम् लाङ्गल	९.	तुझे हल के
अवज्ञाय	३.	तिरस्कार करके	अग्रेण	१०.	अग्र भाग से
यत्	४.	जो	शतधा	११.	सौ टुकड़े करके
न आयासि	६.	नहीं आ रही है	काम	७	सो स्वेच्छा से
मया आहुता ।	५.	मेरे बुलाने पर	चारिणीम् ॥	८.	आचरण करने वाली

श्लोकार्थ—पापिनी ! तू मेरा तिरस्कार करके जो मेरे बुलाने पर नहीं आ रही है । स्वेच्छा से आचरण करने वाली तुझे हल के अग्र भाग से सौ टुकड़े करके ले आऊँगा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

एवं निर्भर्त्सिता भीता यमुना यदुनन्दनम् ।
उवाच चकिता वाचं पतिता पादयोर्नृप ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् निर्भर्त्सिता भीता यमुना यदुनन्दनम् ।
उवाच चकिता वाचम् पतिता पादयोः नृप ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	उवाच	११.	बोलीं
निर्भर्त्सिता	३.	डाँटने पर	चकिता	६.	चकित होकर
भीता	४.	डरी हुई	वाचम्	१०.	गिड़गिड़ा कर
यमुना	५.	यमुना	पतिता	९.	गिर पड़ी (और)
यदुनन्दनम् ।	७.	बलराम जी के	पादयोः	८.	पैरों पर
			नृप ॥	१.	हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार डाँटने पर डरी हुई यमुना चकित हो कर बलराम जी के पैरों पर गिर पड़ीं और गिड़गिड़ा कर बोलीं ॥

षड्विंशः श्लोकः

राम राम महाबाहो न जाने तव विक्रमम् ।
यस्यैकांशेन विधृता जगती जगतः पते ॥२६॥

पदच्छेद— राम राम महाबाहो न जाने तव विक्रमम् ।
यस्य एक अंशेन विधृता जगती जगतः पते ॥

शब्दार्थ—

राम	२.	लोकाभिराम	यस्य	८.	जिस
राम	४.	बलराम जी	एक	९.	एक आप के
महाबाहो	३.	महापराक्रमी	अंशेन	१०.	(अंश मात्र शेष जी)
न जाने	७.	नहीं जान पायी कि	विधृता	१२.	धारण करते हैं
तव	५.	मैं आपका	जगती	११.	जगत् को
विक्रमम् ।	६.	पराक्रम	जगतः पते ॥	१.	हे जगत् के स्वामी !

श्लोकार्थ—हे जगत् के स्वामी ! लोकाभिराम, महापराक्रमी बलराम जी मैं आपका पराक्रम नहीं जान पायी कि आपके एक अंश मात्र शेष जी जगत् को धारण करते हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

परं भावं भगवतो भगवन् मामजानतीम् ।
मोक्तुमर्हसि विश्वात्मन् प्रपन्नां भक्तवत्सल ॥२७॥

पदच्छेद— परम् भावम् भगवतः माम् भगवन् अजानतीम् ।
मोक्तुम् अर्हसि विश्वात्मन् प्रपन्नाम् भक्तवत्सल ॥

शब्दार्थ—

परम्	५.	वास्तविक	मोक्तुम्	११.	छोड़ देने
भावम्	६.	स्वरूप को	अर्हसि	१२.	योग्य हैं
भगवतः	४.	भगवान् के	विश्वात्मन्	३.	हे विश्वात्मन् !
भगवन्	१.	हे भगवन् !	प्रपन्नाम्	१०.	शरणागत को आप
माम्	९.	मुझ	भक्तवत्सल ॥	२.	हे भक्तवत्सल !
अजानतीम् ।	८	न जानती हुई			

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! हे भक्तवत्सल ! हे विश्वात्मन् ! आप भगवान् के वास्तविक स्वरूप को न जानती हुई मुझ शरणागत को आप छोड़ देने योग्य हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

ततो व्यमुञ्चद् यमुनां याचितो भगवान् बलः ।
विजगाह जलं स्त्रीभिः करेणुभिरिवेभराट् ॥२८॥

पदच्छेद— ततः व्यमुञ्चत् यमुनाम् याचितो भगवान् बलः ।
विजगाह जलम् स्त्रीभिः करेणुभिः इव इभराट् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	विजगाह	९.	क्रीडा करने लगे
व्यमुञ्चत्	६.	छोड़ दिया (और)	जलम्	८.	वैसे ही जल
यमुनाम्	५.	यमुना को	स्त्रीभिः	७.	वे स्त्रियों के साथ
याचितः	२.	प्रार्थना किये जाने पर	करेणुभिः	१२.	हथिनियों के साथ करता है
भगवान्	३.	भगवान्	इव	१०.	जैसे
बलः ।	४.	बलराम ने	इभराट् ॥	११.	गजराज

श्लोकार्थ—तदनन्तर प्रार्थना किये जाने पर भगवान् बलराम ने यमुना को छोड़ दिया । और वे स्त्रियों के साथ वैसे ही जल क्रीड़ा करने लगे जैसे गजराज हथिनियों के साथ करता है ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

कामं विहृत्य सलिलादुत्तीर्णायासिताम्बरे ।
भूषणानि महार्हाणि ददौ कान्तिः शुभां स्रजम् ॥२९॥

पदच्छेद— कामम् विहृत्य सलिलात् उत्तीर्णाय असित अम्बरे ।
भूषणानि महाअर्हाणि ददौ कान्तिः शुभाम् स्रजम् ॥

शब्दार्थ—

कामम्	१.	यथेष्ट	भूषणानि	९.	आभूषण (और)
विहृत्य	२.	विहार करके (जब वे)	महाअर्हाणि	८.	बहुमूल्य
सलिलात्	३.	जल से	ददौ	१२.	दिया
उत्तीर्णाय	४.	निकले तब उन्हें	कान्तिः	५.	लक्ष्मी जी ने
असित	६.	दो नील	शुभाम्	१०.	पवित्र
अम्बरे ।	७.	वस्त्र	स्रजम् ॥	११.	हार

श्लोकार्थ—यथेष्ट विहार करके जब वे जल से बाहर निकले तब उन्हें लक्ष्मी जी ने दो नील वस्त्र, बहुमूल्य आभूषण और पवित्र हार दिया ॥

त्रिंशः श्लोकः

वसित्वा वाससी नीले मालामामुच्य काञ्चनीम् ।
रेजे स्वलङ्कृतो लिप्तो माहेन्द्र इव वारणः ॥३०॥

पदच्छेद— वसित्वा वाससो नोले मालाम् आमुच्य काञ्चनीम् ।
रेजे सुअलङ्कृतः लिप्तः माहेन्द्रः इव वारणः ॥

शब्दार्थ—

वसित्वा	३.	पहन कर	रेजे	१२.	शोभायमान हुये
वाससी	२.	वस्त्र	सुअलङ्कृतः	८.	सुन्दर भूषणों से विभूषित होकर
नीले	१.	दोनों नीले	लिप्तः	७.	अङ्ग राग लगा कर
मालाम्	५.	माला	माहेन्द्रः	९.	इन्द्र के
आमुच्य	६.	गले में डाल कर	इव	११.	समान
काञ्चनीम् ।	४.	सोने की	वारणः ।	१०.	हाथी के

श्लोकार्थ—दोनों नीले वस्त्र पहन कर, सोने की माला गले में डाल कर, अङ्गराग लगा कर, सुन्दर भूषणों से विभूषित होकर इन्द्र के हाथी के समान शोभायमान हुये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अद्यापि दृश्यते राजन् यमुनाऽऽकृष्टवर्त्मना ।
बलस्यानन्तवीर्यस्य वीर्यं सूचयतीव हि ।।३१।।

पदच्छेद— अद्य अपि दृश्यते राजन् यमुना आकृष्ट वर्त्मना ।
बलस्य अनन्त वीर्यस्य वीर्यम् सूचयति इव हि ।।

शब्दार्थ—

अद्य	५. आज	बलस्य	१२. बलराम के
अपि	६. भी	अनन्त	१०. अनन्त
दृश्यते	७. दिखाई देती है	वीर्यस्य	११. शक्ति वाले
राजन्	१. हे राजन्	वीर्यम्	१३. पराक्रम को
यमुना	४. यमुना	सूचयति	१४. सूचना दे रही है
आकृष्ट	२. खींचे हुये	इव	८. मानों
वर्त्मना ।	३. मार्ग से	हि ।।	९. वह

श्लोकार्थ—हे राजन् ! खींचे हुये मार्ग से यमुना आज भी दिखाई देती है। मानों वह अनन्त शक्ति वाले बलराम के पराक्रम की सूचना दे रही है ।।

द्वात्रिंशः श्लोकः

एवं सर्वा निशा याता एकेव रमतो व्रजे ।
रामस्याक्षिप्तचित्तस्य माधुर्यैर्व्रजयोषिताम् ।।३२।।

पदच्छेद— एवम् रामस्य सर्वाःनिशाः याताः एका इव रमतः व्रजे ।
रामस्य आक्षिप्त चित्तस्य माधुर्यैः व्रज योषिताम् ।।

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	रामस्य	७. बलराम जी के
सर्वाःनिशाः	१०. सभी रात्रियाँ	आक्षिप्त	५. मुग्ध
याताः	१२. व्यतीत हो गईं	चित्तस्य	६. चित्त वाले
एका इव	११. एक ही रात्रि के समान	माधुर्यैः	४. मधुरिमा से
रमतः	९. रमण करते हुये	व्रज	२. व्रज
व्रजे ।	८. व्रज में	योषिताम् ।।	३. बालाओं की

श्लोकार्थ—इस प्रकार व्रजबालाओं की मधुरिमा से मुग्ध चित्त वाले बलराम जी के व्रज में रमण करते हुये सभी रात्रियाँ एक ही रात्रि के समान व्यतीत हो गईं ।।

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे बलदेवविजये यमुनाकर्षणं नाम पञ्चषष्टितमः अध्यायः ।।६५।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षट्षष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नन्दव्रजं गते रामे करूषाधिपतिर्नृप ।
वासुदेवोऽहमित्यज्ञो दूतं कृष्णाय प्राहिणोत् ॥१॥

पदच्छेद— नन्दव्रजम् गते रामे करूष अधिपतिः नृप ।
वासुदेवः अहम् इति अज्ञः दूतम् कृष्णाय प्राहिणोत् ॥

शब्दार्थ—

नन्दव्रजम्	३.	नन्द के व्रज में	वासुदेवः अहम्	१२.	वासुदेव मैं हूँ
गते	४.	चले जाने पर	इति	११.	कि
रामे	२.	बलराम जी के	अज्ञः	६.	अज्ञानी
करूष	५.	करूष देश के	दूतम्	९.	एक दूत
अधिपतिः	७.	राजा ने	कृष्णाय	८.	श्रीकृष्ण के पास
नृप ।	१.	हे राजन् !	प्राहिणोत् ॥	१०.	भेजा

श्लोकार्थ—हे राजन् ! बलराम जी के नन्द के व्रज में चले जाने पर करूष देश के अज्ञानी राजा ने श्रीकृष्ण के पास दूत भेजा कि वासुदेव मैं हूँ ॥

द्वितीयः श्लोकः

त्वं वासुदेवो भगवानवतीर्णो जगत्पतिः ।
इति प्रस्तोभितो बालैर्मेन आत्मानमच्युतम् ॥२॥

पदच्छेद— त्वम् वासुदेवः भगवान् अवतीर्णः जगत् पतिः ।
इति प्रस्तोभितः बालैः मेने आत्मानम् अच्युतम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	३.	आपने	इति	७.	इस प्रकार
वासुदेवः	५.	वासुदेव के रूप में	प्रस्तोभितः	९.	बहकाया हुआ वह
भगवान्	४.	भगवान्	बालैः	८.	मूर्खों द्वारा
अवतीर्णः	६.	अवतार लिया है	मेने	१२.	मान बैठा
जगत्	१.	संसार के	आत्मानम्	१०.	अपने को
पतिः ।	२.	स्वामी	अच्युतम् ॥	११.	भगवान्

श्लोकार्थ—संसार के स्वामी आपने वासुदेव के रूप में अवतार लिया है। इस प्रकार मूर्खों द्वारा बहकाया हुआ वह अपने को भगवान् मान बैठा ॥

तृतीयः श्लोकः

दूतं च प्राहिणोन्मन्दः कृष्णायाव्यक्तवर्त्मने ।
द्वारकायां यथा बालो नृपो बालकृतोऽबुधः ।।३।।

पदच्छेद— दूतम् च प्राहिणोत् मन्दः कृष्णाय अव्यक्त वर्त्मने ।
द्वारकायाम् यथा बालः नृपः बालकृतः अबुधः ।।

शब्दार्थ—

दूतम् च	११. दूत	द्वारकायाम्	१०. द्वारका में
प्राहिणोत्	१२. भेज दिया	यथा	१. जैसे
मन्दः	५. मन्दमति	बालः	३. बालक
कृष्णाय	९. श्रीकृष्ण के पास	नृपः	४. राजा होता है (वैसे ही)
अव्यक्त	७. अचिन्त्य	बालकृत	२. बालकों का बनाया
वर्त्मने ।	८. गति वाले	अबुधः ।।	६. मूर्ख ने

श्लोकार्थ—जैसे बालकों का बनाया बालक राजा होता है। वैसे ही मन्द मति मूर्ख ने अचिन्त्य गति वाले श्रीकृष्ण के पास द्वारका में दूत भेज दिया ।।

चतुर्थः श्लोकः

दूतस्तु द्वारकामेत्य सभायामास्थितं प्रभुम् ।
कृष्णं कमलपत्राक्षं राजसन्देशमब्रवीत् ।।४।।

पदच्छेद— दूतः तु द्वारकाम् एत्य सभायाम् आस्थितम् प्रभुम् ।
कृष्णम् कमल पत्राक्षम् राज सन्देशम् अब्रवीत् ।।

शब्दार्थ—

दूतः तु	१. दूत ने	कृष्णम्	९. श्रीकृष्ण से
द्वारकाम्	२. द्वारका में	कमल	६. कमल
एत्य	३. आकर	पत्राक्षम्	७. नयन
सभायाम्	४. सभा में	राज	१०. राजा का
आस्थितम्	५. बैठे हुये	सन्देशम्	११. सन्देश
प्रभुम् ।	८. भगवान्	अब्रवीत् ।।	१२. कहा

श्लोकार्थ—दूत ने द्वारका में आकर सभा में बैठे हुये कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण से राजा का सन्देश कहा ।।

सप्तदशः श्लोकः

द्वौ मासौ तत्र चावात्सीन्मधुं माधवमेव च ।
रामः क्षपासु भगवान् गोपीनां रतिमावहन् ॥१७॥

पदच्छेद— द्वौ मासौ तत्र च अवात्सीत् मधुम् माधवम् एव च ।
रामः क्षपासु भगवान् गोपीनाम् रतिम् आवहन् ।।

शब्दार्थ—

द्वौ मासौ	७.	दो मास	रामः	२.	बलराम ने
तत्र च	८.	वहाँ पर	क्षपासु	३.	रात्रि के समय
आवात्सीत्	१२.	बिताये	भगवान्	१.	भगवान्
मधुम्	९.	चैत्र और	गोपीनाम्	४.	गोपियों की
माधवम्	१०.	वैशाख	रतिम्	५.	रति की
एव च ।	११.	भी	आवहन् ।।	६.	वृद्धि करते हुये

श्लोकार्थ—भगवान् बलराम ने रात्रि के समय गोपियों की रति की वृद्धि करते हुये दो मास वहाँ पर चैत्र और वैशाख भी बिता दिये ।

अष्टादशः श्लोकः

पूर्णचन्द्रकलामृष्टे कौमुदीगन्धवायुना ।
यमुनोपवने रेमे सेविते स्त्रीगणैर्वृतः ॥१८॥

पदच्छेद— पूर्ण चन्द्रकला मृष्टे कौमुदी गन्ध वायुना ।
यमुना उपवने रेमे सेविते स्त्री गणैः वृतः ।।

शब्दार्थ—

पूर्ण	१.	पूर्ण	यमुना	८.	यमुना के किनारे
चन्द्रकला	२.	चन्द्रमा की कला से	उपवने	९.	उपवन में (बलराम जी)
मृष्टे	३.	उज्ज्वल तथा	रेमे	१२.	विहार करते थे
कौमुदी	४.	कुमुदिनी की	सेविते	७.	सेवित
गन्ध	५.	सुगन्ध से युक्त	स्त्रीगणैः	१०.	स्त्रियों के समूह से
वायुना ।	६.	वायु से	वृतः ।।	११.	घिरे

श्लोकार्थ—पूर्ण चन्द्रमा की कला से उज्ज्वल तथा कुमुदिनी की सुगन्ध से युक्त वायु से सेवित यमुना के किनारे उपवन में बलराम जी स्त्रियों के समूह से घिरे हुये विहार करते थे ।

एकोनविंशः श्लोकः

वरुणप्रेषिता देवी वारुणी वृक्षकोटरात् ।
पतन्ती तद् वनं सर्वं स्वगन्धेनाध्यवासयत् ॥१९॥

पदच्छेद— वरुण प्रेषिता देवी वारुणी वृक्ष कोटरात् ।
पतन्ती तद् वनम् सर्वम् स्वगन्धेन अध्यवासयत् ॥

शब्दार्थ—

वरुण	१. वरुण की	पतन्ती	७. बह निकलीं और
प्रेषिता	२. भेजी हुई	तत्	८. उस
देवी	४. देवी	वनम्	१०. वन को
वारुणी	३. वारुणी	सर्वम्	९. सम्पूर्ण
वृक्ष	५. एक वृक्ष के	स्वगन्धेन	११. अपनी सुगन्ध से
कोटरात् ।	६. कोटर से	अध्यवासयत् ॥	१२. सुवासित कर दिया

श्लोकार्थ—वरुण की भेजी हुई वारुणी देवी एक वृक्ष के कोटर से बह निकलीं और उस सम्पूर्ण वन को अपनी सुगन्ध से सुवासित कर दिया ॥

विंशः श्लोकः

तं गन्धं मधुधाराया वायुनोपहृतं बलः ।
आघ्रायोपगतस्तत्र ललनाभिः समं पपौ ॥२०॥

पदच्छेद— तम् गन्धम् मधुधारायाः वायुना उपहृतम् बलः ।
आघ्राय उपगतः तत्र ललनाभिः समम् पपौ ॥

शब्दार्थ—

तम्	४. उस	आघ्राय	६. सूंघकर
गन्धम्	५. सुगन्ध को	उपगतः	९. आये और
मधुधारायाः	३. मधुधारा की	तत्र	८. वहाँ पर
वायुना	१. वायु के द्वारा	ललनाभिः	१०. रमणियों के
उपहृतम्	२. लायी गई	समम्	११. साथ उसे
बलः ।	७. बलराम जी	पपौ ॥	१२. पीने लगे

श्लोकार्थ—वायु के द्वारा लायी गई मधुधारा की उस सुगन्ध को सूंघकर बलराम जी वहाँ पर आये । और रमणियों के साथ उसे पीने लगे ॥

नवमः श्लोकः

मुखं तदपिधायाज्ञ कङ्कगृध्रवटैर्वृतः ।
शयिष्यसे हतस्तत्र भविता शरणं शुनाम् ॥६॥

पदच्छेद—
मुखम् तत् अपिधाय अज्ञ कङ्क गृध्रवटैः वृतः ।
शयिष्यसे हतः तत्र भविता शरणम् शुनाम् ॥

शब्दार्थ—

मुखम्	५.	मुँह को	शयिष्यसे	१०.	सो जायेगा (और)
तत्	४.	उस	हतः	३.	मारा जा कर
अपिधाय	६.	छिपाकर	तत्र	२.	वहाँ तू
अज्ञ	१.	मूर्ख	भविता	१३.	होगा
कङ्क	७.	चील	शरणम्	१२.	शरण
गृध्रवटैः	८.	गीध, बटेर आदि से	शुनाम् ॥	११.	कुत्तों की
वृतः ।	६.	घिर कर			

श्लोकार्थ—मूर्ख ! वहाँ तू मारा जाकर उस मुँह को छिपाकर चील, बटेर आदि से घिर कर सो जायेगा, और कुत्तों की शरण होगा ॥

दशमः श्लोकः

इति दूतस्तदाक्षेपं स्वामिने सर्वमाहरत् ।
कृष्णोऽपि रथमास्थाय काशीमुपजगाम ह ॥१०॥

पदच्छेद—
इति दूतः तत् आक्षेपम् स्वामिने सर्वम् आहरत् ।
कृष्णः अपि रथम् आस्थाय काशीम् उपजगाम ह ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	कृष्णः	८.	श्रीकृष्ण ने
दूतः	३.	दूत	अपि	६.	भी
तत	२.	उसका	रथम्	१०.	रथ पर
आक्षेपम्	५.	आक्षेप युक्त वचन	आस्थाय	११.	चढ़ कर
स्वामिने	६.	अपने स्वामी के पास	काशीम्	१२.	काशी पर
सर्वम्	४.	समस्त	उपजगाम ह ॥	१३.	चढ़ाई कर दी
आहरत् ।	७.	ले गया (और)			

श्लोकार्थ—इस प्रकार उसका दूत समस्त आक्षेप युक्त वचन अपने स्वामी के पास ले गया । और श्रीकृष्ण ने भी रथ पर चढ़ कर काशी पर चढ़ाई कर दी ॥

एकादशः श्लोकः

पौण्ड्रकोऽपि तदुद्योगमुपलभ्य महारथः ।
अक्षौहिणीभ्यां संयुक्तो निश्चक्राम पुराद् द्रुतम् ॥११॥

पदच्छेद - पौण्ड्रकः अपि तत् उद्योगम् उपलभ्य महारथः ।
अक्षौहिणीभ्याम् संयुक्तः निश्चक्राम पुरात् द्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

पौण्ड्रकः	५.	पौण्ड्रक	अक्षौहिणीभ्याम्	८.	दो अक्षौहिणी सेना
अपि	६.	भी	संयुक्तः	९.	लेकर
तत्	१.	उनकी	निश्चक्राम	११.	बाहर निकला
उद्योगम्	२.	चेष्टा को	पुरात्	१०.	नगर से
उपलभ्य	३.	जान कर	द्रुतम् ॥	७.	शीघ्र
महारथः ।	४.	महारथी			

श्लोकार्थ—उनकी चेष्टा को जान कर महारथी पौण्ड्रक भी शीघ्र दो अक्षौहिणी सेना लेकर नगर से बाहर निकला ॥

द्वादशः श्लोकः

तस्य काशिपतिर्मित्रं पार्ष्णिग्राहोऽन्वयान्नृप ।
अक्षौहिणीभिस्तिसृभिरपश्यत् पौण्ड्रकं हरिः ॥१२॥

पदच्छेद— तस्य काशीपतिः मित्रम् पार्ष्णिग्राहः अन्वयात् ।
अक्षौहिणीभिः तिसृभिः अपश्यत् पौण्ड्रकम् हरिः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२.	उसका	नृप ।	१.	हे राजन् !
काशीपतिः	४.	काशी नरेश	अक्षौहिणीभिः	८.	अक्षौहिणी सेना लेकर
मित्रम्	३.	मित्र	तिसृभिः	७.	तीन
पार्ष्णि	५.	सहायता	अपश्यत्	१२.	देखा
ग्राहः	६.	करने के लिये	पौण्ड्रकम्	११.	पौण्ड्रक को
अन्वयात्	९.	पीछे-पीछे आया	हरिः ॥	१०.	अब श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उसका मित्र काशी नरेश सहायता करने के लिये तीन अक्षौहिणी सेना लेकर पीछे-पीछे आया । तब श्रीकृष्ण ने पौण्ड्रक को देखा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

शङ्खार्यसिगदाशार्ङ्गश्रीवत्साद्युपलक्षितम् ।
बिभ्राणं कौस्तुभमणिं वनमालाविभूषितम् ॥१३॥

पदच्छेद— शङ्ख अरि असि गदा शार्ङ्ग श्रीवत्स आदि उपलक्षितम् ।
बिभ्राणम् कौस्तुभ मणिम् वनमाला विभूषितम् ॥

शब्दार्थ—

शङ्ख	१.	शङ्ख	उपलक्षितम् ।	७.	युक्त
अरि	२.	चक्र	बिभ्राणम्	१०.	धारण किये हुये तथा
असि	३.	तलवार	कौस्तुभ	८.	कौस्तुभ
गदा	४.	गदा	मणिम्	९.	मणि
शार्ङ्ग	५.	शार्ङ्ग धनुष	वनमाला	११.	वनमाला से
श्रीवत्स आदि	६.	श्रीवत्स चिह्न आदि से	विभूषितम् ॥	१२.	विभूषित (पौण्ड्रक को देखा)

श्लोकार्थ—हे राजन् ! खङ्ख, चक्र, तलवार, गदा, शार्ङ्ग धनुष श्रीवत्स आदि से युक्त कौस्तुभ मणि धारण किये हुये, वनमाला से विभूषित पौण्ड्रक को देखा ॥

चतुर्दशः श्लोकः

कौशेयवाससी पीते वसानं गरुडध्वजम् ।
अमूल्यमौल्याभरणं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ॥१४॥

पदच्छेद— कौशेय वाससी पीते वसानम् गरुड़ ध्वजम् ।
अमूल्य मौल्य आभरणम् स्फुरन् मकर कुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

कौशेय	१.	रेशमी	अमूल्य	७.	अमूल्य
वाससी	३.	वस्त्र	मौल्य	८.	मुकुट एवं
पीते	२.	पीले	आभरणम्	९.	आभूषण वाले तथा
वसानम्	४.	पहने हुये	स्फुरन्	१०.	जगमगाते हुये
गरुड़	५.	गरुड़ के चिन्ह से	मकर	११.	मकराकृत
ध्वजम् ।	६.	अंकित ध्वज वाले	कुण्डलम् ॥	१२.	कुण्डल वाले (पौण्ड्रक को देखा)

श्लोकार्थ—रेशमी पीले वस्त्र पहिने हुये गरुड़ के चिह्न से अंकित ध्वजा वाले अमूल्य मुकुट एवं आभूषण वाले तथा जगमगाते हुये मकराकृत कुण्डल वाले पौण्ड्रक को देखा ॥

पञ्चदशः श्लोकः

दृष्ट्वा तमात्मनस्तुल्यवेषं कृत्रिममास्थितम् ।
यथा नटं रङ्गगतं विजहास भृशं हरिः ॥१५॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा तम् आत्मनः तुल्य वेषम् कृत्रिमम् आस्थितम् ।
यथा नटम् रङ्ग गतम् विजहास भृशम् हरिः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	११.	देख कर	यथा	९.	समान
तम्	१०.	उसे	नटम्	८.	अभिनेता के
आत्मनः	१.	अपने	रङ्ग	६.	रंग मंच पर
तुल्य	२.	समान	गतम्	७.	आये हुये
वेषम्	३.	वेश वाले	विजहास	१४.	हंसने लगे
कृत्रिमम्	४.	बनावटी	भृशम्	१३.	खिल-खिला कर
आस्थितम् ।	५.	रूप धारण करके	हरिः ॥	१२.	श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—अपने समान वेश वाले बना वटी रूप धारण करके रंग मंच पर आये हुये अभिनेता के समान उसे देख कर श्रीकृष्ण खिल-खिला कर हंसने लगे ॥

षोडशः श्लोकः

शूलैर्गदाभिः परिघैः शक्त्यृष्टिप्रासतोमरैः ।
असिभिः पट्टिशैर्बाणैः प्राहरन्नरयो हरिम् ॥१६॥

पदच्छेद— शूलैः गदाभिः परिघैः शक्ति ऋष्टि प्रास तोमरैः ।
असिभिः पट्टिशैः बाणैः प्राहरन् अरयः हरिम् ॥

शब्दार्थ—

शूलैः	३.	त्रिशूल	असिभिः	१०.	तलवार
गदाभिः	४.	गदा	पट्टिशैः	११.	पट्टिश और
परिघैः	५.	मुद्गर	बाणैः	१२.	बाणों से
शक्ति	६.	शक्ति	प्राहरन्	१३.	प्रहार किया
ऋष्टि	७.	ऋष्टि	नरयो	१.	शत्रुओं ने
प्रास	८.	भाला	हरिम् ॥	२.	श्रीकृष्ण पर
तोमरैः ।	९.	तोमर			

श्लोकार्थ—शत्रुओं ने श्रीकृष्ण पर त्रिशूल, गदा, मुद्गर, शक्ति, ऋष्टि, भाला, तोमर, तलवार, पट्टिश और बाणों से प्रहार किया ॥

सप्तदशः श्लोकः

कृष्णस्तु तत्पौण्ड्रककाशिराजयोर्बलं गजस्यन्दनवाजिपत्तिमत् ।
गदासिचक्रेषुभिरार्दयद् भृशं यथा युगान्ते हुतभुक् पृथक् प्रजाः ॥१७॥

पदच्छेद— कृष्णः तु तत् पौण्ड्रक काशिराजयोः बलम् गज स्यन्दन वाजि पत्तिमत् ।
गदा असि चक्रेषुभिः आर्दयत भृशम् यथायुगान्ते हुतभुक् पृथक् प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णः तु	५.	वैसे ही श्रीकृष्ण ने	गदा असि	११.	गदा, तलवार
तत्	६.	उस	चक्रेषुभिः	१४.	चक्र और बाणों से
पौण्ड्रक	७.	पौण्ड्रक और	आर्दयत्	१६.	तहस-नहस कर दिया
काशिराजयोः	८.	काशिराज की	भृशम्	१५.	बहुत ही
बलम् गज	९.	सेना, हाथी	यथायुगान्ते	१.	जैसे प्रलय के समय
स्यन्दन	१०.	रथ	हुतभुक्	२.	अग्नि
वाजि	११.	घोड़े और	पृथक्	३.	सभी प्रकार के
पत्तिमत् ।	१२.	पैदल की चतुरंगिनी सेना को	प्रजाः ॥	४.	प्राणियों को जला देता है

श्लोकार्थ—जैसे अग्नि सभी प्रकार के प्राणियों को जला देता है, वैसे ही श्रीकृष्ण ने उस पौण्ड्रक और काशिराज की सेना, हाथी, घोड़े और पैदल की चतुरंगिनी सेना को गदा, तलवार, चक्र और बाणों से बहुत ही तहस-नहस कर दिया ॥

अष्टादशः श्लोकः

आयोधनं तद्रथवाजिकुञ्जरद्विपत्खरोष्ट्रैररिणावखण्डितैः ।
बभौ चितं मोदवहं मनस्विनामाक्रीडनं भूतपतेरिवोल्बणम् ॥१८॥

पदच्छेद— आयोधनम् तत् रथ वाजि कुञ्जर द्विपत् खर उष्ट्रैः अरिणा अवखण्डितैः ।
बभौ चितम् मोदवहम् मनस्विनाम् आक्रीडनम् भूतपतेः इव उल्बणम् ॥

शब्दार्थ—

आयोधनम्	२.	रणभूमि	बभौ	१६.	लग रही थी
तत्	१.	वह	चितम्	९.	पट गई (जिससे वह)
रथ वाजि	५.	रथ, घोड़े	मोदवहम्	१५.	आनन्द दायक
कुञ्जर	६.	हाथी	मनस्विनाम्	१४.	शूर वीरों के लिये
द्विपत्	७.	मनुष्य	आक्रीडनम्	१३.	क्रीडास्थली और
खर उष्ट्रैः	८.	गधे और ऊँटों	भूतपतेः	११.	भूतनाथ (शंकर) की
अरिणा	३.	चक्र से	इव	१०.	मानों
अवखण्डितैः ।	४.	खण्ड-खण्ड हुये	उल्बणम् ॥	१२.	भयंकर

श्लोकार्थ— वह रणभूमि चक्र से खण्ड-खण्ड हुये रथ, हाथी, घोड़े, मनुष्य, गधे और ऊँटों से पट गई । जिससे वह मानों भूतनाथ शंकर की भयंकर क्रीडास्थली और शूरवीरों के लिये आनन्द दायक लग रही थी ॥

एकोनविंशः श्लोकः

अथाह पौण्ड्रकं शौरिर्भो भोः पौण्ड्रक यद् भवान् ।
दूतवाक्येन मामाह तान्यस्त्राण्युत्सृजामि ते ॥१६॥

पदच्छेद— अथ आह पौण्ड्रकम् शौरिः भो-भोः पौण्ड्रक यत्‌भवान् ।
दूतवाक्येन माम् आह तानि अस्त्राणि उत्सृजामि ते ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. अब	दूतवाक्येन	८. दूत के द्वारा
आह	४. कहा	माम्	६. मुझे
पौण्ड्रकम्	३. पौण्ड्रक से	आह	१०. कहलाया था
शौरिः	२. श्रीकृष्ण ने	तानि	११. उन
भोभोः	५. अरे !	अस्त्राणि	१२. अस्त्रों को
पौण्ड्रक	६. पौण्ड्रक	उत्सृजामि	१४. छोड़ रहा हूँ
यत्‌भवान् ।	७. जो तूने	ते ॥	१३. तुझ पर

श्लोकार्थ—अब श्रीकृष्ण ने पौण्ड्रक से कहा । अरे ! पौण्ड्रक जो तूने दूत के द्वारा मुझे कहलाया था, उन अस्त्रों को तुझ पर छोड़ रहा हूँ ॥

विंशः श्लोकः

त्याजयिष्येऽभिधानं मे यत्त्वयाज्ञ मृषा धृतम् ।
व्रजामि शरणं तेऽद्य यदि नेच्छामि संयुगम् ॥२०॥

पदच्छेद— त्याजयिष्ये अभिधानम् मे यत् त्वया अज्ञ मृषा धृतम् ।
व्रजामि शरणम् ते अद्य यदि न इच्छामि संयुगम् ॥

शब्दार्थ--

त्याजयिष्ये	८. छुड़ा दूँगा	व्रजामि	१६. ग्रहण करूँगा
अभिधानम्	६. नाम	शरणम्	१५. शरण
मे	४. मेरा	ते	१४. तेरी
यत्	२. जो	अद्य	१०. आज (मैं)
त्वया	३. तूने	यदि	६. यदि
अज्ञ	१. रे मूर्ख !	न	१२. नहीं
मृषा	५. झूठ-मूठ	इच्छामि	१३. कर सकूंगा तो
धृतम् ।	७. रख लिया है उसे	संयुगम् ॥	११. युद्ध

श्लोकार्थ—रे मूर्ख ! जो तूने मेरा झूठ-मूठ नाम रख लिया है उसे छुड़ा दूँगा । यदि आज मैं युद्ध नहीं कर सकूंगा तो तेरी शरण ग्रहण करूँगा ॥

एकविंशः श्लोकः

इति क्षिप्त्वा शितैर्बाणैर्विरथीकृत्य पौण्ड्रकम् ।
शिरोऽवृश्चद् रथाङ्गेन वज्रेणेन्द्रो यथा गिरेः ॥२१॥

पदच्छेद— इति क्षिप्त्वा शितैः बाणैः विरथी कृत्य पौण्ड्रकम् ।
शिरः अवृश्चत् रथअङ्गेन वज्रेण इन्द्रः यथा गिरेः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	शिरः	९.	सिर को (वैसे ही)
क्षिप्त्वा	२.	तिरस्कार करके	अवृश्चत्	१०.	काट डाला
शितैः	३.	तीक्ष्ण	रथअङ्गेन	८.	चक्र से उसके
बाणैः	४.	बाणों से	वज्रेण	१३.	वज्र से
विरथी	६.	रथ विहीन	इन्द्रः	१२.	इन्द्र ने
कृत्य	७.	करके	यथा	११.	जैसे
पौण्ड्रकम् ।	५.	पौण्ड्रक को	गिरेः ॥	१४.	पहाड़ों को काट दिया था

श्लोकार्थ—इस प्रकार तिरस्कार करके तीक्ष्ण बाणों से पौण्ड्रक को रथ विहीन करके चक्र से उसके सिर को वैसे ही काट डाला । जैसे इन्द्र ने वज्र से पहाड़ों को काट दिया था ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तथा काशिपतेः कायाच्छिर उत्कृत्य पत्रिभिः ।
न्यपातयत् काशिपुर्यां पद्मकोशमिवानिलः ॥२२॥

पदच्छेद— तथा काशपितेः कायात् शिरः उत्कृत्य पत्रिभिः ।
न्यपातयत् काशिपुर्याम् पद्म कोशम् इव अनिलः ॥

शब्दार्थ—

तथा	१.	इसी प्रकार (भगवान् श्रीकृष्ण ने)	न्यपातयत्	८.	गिरा दिया
काशपितेः	३.	काशी नरेश का	काशिपुर्याम्	७.	काशी पुरी में
कायात्	५.	धड़ से	पद्म	११.	कमल का
शिरः	४.	सिर	कोशम्	१२.	पुष्प गिरा देता है
उत्कृत्य	६.	उड़ा कर	इव	९.	जैसे
पत्रिभिः ।	२.	बाणों से	अनिलः ॥	१०.	वायु

श्लोकार्थ—इसी प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण ने बाणों से काशी नरेश का सिर धड़ से उड़ा कर काशी पुरी में गिरा दिया । जैसे वायु कमल का पुष्प गिरा देता है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

एवं मत्सरिणं हत्वा पौण्ड्रकं ससखं हरिः ।
द्वारकामाविशत् सिद्धैर्गीयमानकथामृतः ॥२३॥

पदच्छेद— एवम् मत्सरिणम् हत्वा पौण्ड्रकम् ससखम् हरिः ।
द्वारकाम् आविशत् सिद्धैः गीयमान कथा अमृतः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	द्वारकाम्	७.	द्वारका
मत् सरिणम्	२.	द्वेष रखने वाले	आविशत्	८.	पहुँच गये (उत्तम समय)
हत्वा	५.	मार कर	सिद्धैः	९.	सिद्ध गण (भगवान् की)
पौण्ड्रकम्	३.	पौण्ड्रक को	गीयमान	१२.	गान कर रहे थे
ससखम्	४.	मित्र काशि राज के साथ	कथा	११.	कथा का
हरिः ।	६.	भगवान् श्रीकृष्ण	अमृतः ॥	१०.	अमृतमयी

श्लोकार्थ— इस प्रकार द्वेष रखने वाले पौण्ड्रक को मित्र काशिराज के साथ मार कर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारका पहुँच गये। उस समय सिद्ध गण भगवान् की अमृतमयी कथा का गान कर रहे थे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स नित्यं भगवद्ध्यानप्रध्वस्ताखिलबन्धनः ।
बिभ्राणश्च हरे राजन् स्वरूपं तन्मयोऽभवत् ॥२४॥

पदच्छेद— सः नित्यम् भगवत् ध्यान प्रध्वस्त अखिल बन्धनः ।
बिभ्राणः च हरेः राजन् स्वरूपम् तन्मयः अभवत् ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वह (पौण्ड्रक)	बिभ्राणः	११.	धारण करने से (उनके)
नित्यम्	३.	नित्य	च	९.	और
भगवत्	४.	भगवान् का	हरेः	१०.	श्रीकृष्ण का
ध्यान	५.	ध्यान करने के कारण	राजन्	१.	हे राजन्
प्रध्वस्त	८.	नष्ट करके	स्वरूपम्	१२.	स्वरूप को
अखिल	६.	सम्पूर्ण	तन्मयः	१३.	भगवत्स्वरूप
बन्धनः ।	७.	बन्धनों को	अभवत् ॥	१४.	हो गया

श्लोकार्थ— हे राजन् ! वह पौण्ड्रक नित्य भगवान् का ध्यान करने के कारण सम्पूर्ण बन्धनों को नष्ट करके और श्रीकृष्ण का स्वरूप धारण करने से भगवत्स्वरूप हो गया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

शिरः पतितमालोक्य राजद्वारे सकुण्डलम् ।
किमिदं कस्य वा वक्त्रमिति संशिशियिरे जनाः ॥२५॥

पदच्छेद— शिरः पतितम् आलोक्य राजद्वारे सकुण्डलम् ।
किम् इदम् कस्य वा वक्त्रम् इति संशिशियिरे जनाः ॥

शब्दार्थ—

शिरः	३.	सिर	कस्य	८.	किसका
पतितम्	४.	गिरा	वा	७.	अथवा
आलोक्य	५.	देख कर	वक्त्रम्	९.	मुख है
राजद्वारे	१.	राजमहल के दरवाजे पर	इति	१०.	इस प्रकार
सकुण्डलम् ।	२.	कुण्डल सहित	संशिशियिरे	१२.	सन्देह करने लगे
किम् इदम्	६.	यह क्या है	जनाः ॥	११.	लोग

श्लोकार्थ—राजमहल के दरवाजे पर कुण्डल सहित सिर गिरा देख कर यह क्या है अथवा किसका मुख है इस प्रकार लोग सन्देह करने लगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

राज्ञः काशिपतेर्ज्ञात्वा महिष्यः पुत्रबान्धवाः ।
पौराश्च हा हता राजन् नाथ नाथेति प्रारुदन् ॥२६॥

पदच्छेद— राज्ञः काशिपतेः ज्ञात्वा महिष्यः पुत्र बान्धवाः ।
पौराः च हा हताः राजन् नाथ-नाथ इति प्रारुदन् ॥

शब्दार्थ—

राज्ञः	१.	राजा	पौराः च	७.	और नागरिक
काशिपतेः	२.	काशिपति का सिर	हा हताः	८.	हाय सर्वनाश हो गया
ज्ञात्वा	३.	जान कर	राजन्	९.	हा राजन् !
महिष्यः	४.	रानियाँ	नाथ-नाथ	१०.	हा नाथ हा स्वामी
पुत्र	५.	पुत्र	इति	११.	इस प्रकार
बान्धवाः ।	६.	बन्धु	प्रारुदन् ॥	१२.	विलाप करने लगीं

श्लोकार्थ—राजा काशिपति का सिर जान कर रानियाँ, पुत्र, बन्धु और नागरिक हाय सर्वनाश हो गया, हा राजन्, हा नाथ, हा स्वामी इस प्रकार विलाप करने लगे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

सुदक्षिणस्तस्य सुतः कृत्वा संस्थाविधिं पितुः ।
निहत्य पितृहन्तारं यास्याम्यपचितिं पितुः ॥२७॥

पदच्छेद— सुदक्षिणः तस्य सुतः कृत्वा संस्थाविधिम् पितुः ।
निहत्य पितृ हन्तारम् यास्यामि अपचितिम् पितुः ॥

शब्दार्थ—

सुदक्षिणः	३.	सुदक्षिण ने	निहत्य	९.	मार कर
तस्य	१.	उसके	पितुः	७.	पिता का
सुतः	२.	पुत्र	हन्तारम्	८.	हत्या करने वाले को
कृत्वा	६.	करके कहा मैं	यास्यामि	१२.	हो जाऊँगा
संस्थाविधिम्	५.	अन्त्येष्टि संस्कार	अपचितिम्	११.	ऋण से उऋण
पितुः ।	४.	पिता का	पितुः ॥	१०.	पिता के

श्लोकार्थ—उसके पुत्र सुदक्षिण ने पिता का अन्त्येष्टि संस्कार करके कहा—मैं पिता को हत्या करने वाले को मार कर पिता के ऋण से उऋण हो जाऊँगा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

इत्यात्मनाभिसन्धाय सोपाध्यायो महेश्वरम् ।
सुदक्षिणोऽर्चयामास परमेण समाधिना ॥२८॥

पदच्छेद— इति आत्मना अभिसन्धाय स उपाध्यायः महेश्वरम् ।
सुदक्षिणः अर्चयामास परमेण समाधिना ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	महेश्वरम् ।	९.	भगवान् शङ्कर को
आत्मना	२.	मन में	सुदक्षिणः	४.	सुदक्षिण
अभिसन्धाय	३.	निश्चय करके	अर्चयामास	१०.	आराधना करने लगा
स	६.	साथ	परमेण	७.	अत्यन्त
उपाध्यायः	५.	कुल पुरोहित के	समाधिना ॥	८.	एकाग्रता से

श्लोकार्थ—ऐसा मन में निश्चय करके सुदक्षिण कुल पुरोहित के साथ अत्यन्त एकाग्रता से भगवान् शङ्कर की आराधना करने लगा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

प्रीतोऽविमुक्ते भगवांस्तस्मै वरमदाद् भवः ।
पितृहन्तृवधोपायं स वव्रे वरमीप्सितम् ॥२९॥

पदच्छेद— प्रीतः अविमुक्ते भगवान् तस्मै वरम् अदात् भवः ।
पितृ हन्तृ वधउपायम् सः वव्रे वरम् ईप्सितम् ॥

शब्दार्थ—

प्रीतः	२. प्रसन्न हुये	पितृ	८. पिता की
अविमुक्ते	१. काशी में	हन्तृ	९. हत्या करने वाले क
भगवान्	३. भगवान्	वधउपायम्	१०. वध का उपाय (अपने)
तस्मै	५. उसे	सः	७. उसने
वरम् अदात्	६. वर दिया	वव्रे वरम्	१२. वर के रूप में माँगा
भवः ।	४. शङ्कर ने	ईप्सितम् ॥	११. अभीष्ट

श्लोकार्थ—काशी में प्रसन्न हुये भगवान् शङ्कर ने उसे वर दिया । उसने पिता की हत्या करने वाले के वध का उपाय अपने अभीष्ट वर के रूप में माँगा ॥

त्रिंशः श्लोकः

दक्षिणाग्निं परिचर ब्राह्मणैः सममृत्विजम् ।
अभिचारविधानेन स चाग्निः प्रमथैर्वृतः ॥३०॥

पदच्छेद— दक्षिणाग्निम् परिचर ब्राह्मणैः समम् ऋत्विजम् ।
अभिचार विधानेन सः च अग्निः प्रमथैः वृतः ॥

शब्दार्थ—

दक्षिणाग्निम्	४. दक्षिणाग्नि की	अभिचार	५. अभिचार
परिचर	७. आराधना करो	विधानेन	६. विधि से
ब्राह्मणैः	१. ब्राह्मणों के	सः च अग्निः	८. वह अग्नि
समम्	२ साथ मिलकर	प्रमथैः	९. प्रमथ गणों के
ऋत्विजम् ।	३. ऋत्विक् बने	वृतः ॥	१०. साथ प्रकट होगा

श्लोकार्थ—शिव ने कहा—तुम ब्राह्मणों के साथ मिलकर ऋत्विक् बने दक्षिणाग्नि की अभिचार विधि से आराधना करो । वह अग्नि प्रमथ गणों के साथ प्रकट होगा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

साधयिष्यति सङ्कल्पमब्रह्मण्ये प्रयोजितः ।
इत्यादिष्टस्तथा चक्रे कृष्णायाभिचरन् व्रती ॥३१॥

पदच्छेद— साधयिष्यति सङ्कल्पम् अब्रह्मण्ये प्रयोजितः ।
इति आदिष्टः तथा चक्रे कृष्णाय अभिचरन् व्रती ॥

शब्दार्थ—

साधयिष्यति	४.	पूरा करेगा	आदिष्टः	७.	आदेश पाकर
सङ्कल्पम्	३.	तुम्हारा सङ्कल्प	तथा चक्रे	९.	वह
अब्रह्मण्ये	१.	ब्राह्मणों के अभक्त पर	कृष्णाय	८.	श्रीकृष्ण के लिये
प्रयोजितः ।	२.	प्रेरित् किया गया (वह)	अभिचरन्	१०.	अभिचार किया
इति	६.	ऐसा	व्रती ॥	५.	व्रती सुदक्षिण ने

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के अभक्त पर प्रेरित किया गया वह तुम्हारा सङ्कल्प पूरा करेगा। व्रती सुदक्षिण ने ऐसा आदेश पाकर श्रीकृष्ण के लिये वह अभिचार किया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

ततोऽग्निरुत्थितः कुण्डान्मूर्तिमानतिभीषणः ।
तप्तताम्रशिखाश्मश्रुरङ्गारोद्गारिलोचनः ॥३२॥

पदच्छेद— ततः अग्निः उत्थितः कुण्डात् मूर्तिमान् अतिभीषणः ।
तप्त ताम्र शिखाश्मश्रुः अङ्गार उद्गारि लोचनः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	तप्त	४.	तपे हुये
अग्निः	१०.	अग्नि	ताम्र शिखा	५.	ताँबे के समान लाल शिखा एवम्
उत्थितः	१२.	प्रकट हुआ	श्मश्रुः	६.	दाढ़ी-मूँछ वाला और
कुण्डात्	११.	यज्ञ कुण्ड से	अङ्गार	८.	अङ्गारे
मूर्तिमान्	३.	शरीरधारी	उद्गारि	९.	उगलने वाला
अतिभीषणः ।	२.	अत्यन्त भयानक	लोचनः ॥	७.	आँखों से

श्लोकार्थ—तदनन्तर अत्यन्त भयानक शरीरधारी, तपे हुये ताँबे के समान लाल शिखा एवम् दाढ़ी मूँछ वाला और आँखों से अङ्गारे उगलने वाला अग्नि यज्ञ कुण्ड से प्रकट हुआ ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

दंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीदण्डकठोरास्यः स्वजिह्वया ।
आलिहन् सृक्किणी नग्नो विधुन्वंस्त्रिशिखं ज्वलन् ॥३३॥

पदच्छेद— द्रंष्ट्रा उग्र भ्रुकुटी दण्ड कठोरास्यः स्वजिह्वया ।
आलिहन् सृक्किणी नग्नः विधुन्वन् त्रिशिखम् ज्वलन् ॥

शब्दार्थ—

द्रंष्ट्रा उग्र	१.	उग्र दाढ़ों और	आलिहन्	८.	चाट रहा था (उसका
भ्रुकुटी	३.	भौंहों के कारण उसका	सृक्किणी	७.	मुँह के दोनों कोने
दण्ड	२.	तनी हुई	नग्नः	९.	शरीर नग्गा था (वह)
कठोर	५.	भयंकर था (वह)	विधुन्वन्	११.	घुमा रहा था (और वह)
आस्यः	४.	मुख	त्रिशिखम्	१०.	त्रिशूल को
स्वजिह्वया ।	६.	अपनी जीभ से	ज्वलन् ॥	१२.	स्वयम् देदीप्यमान था

श्लोकार्थ—उग्र दाढ़ों और तनी हुई भौंहों के कारण उसका मुख भयंकर था । वह अपनी जीभ से मुँह के दोनों कोने चाट रहा था । वह त्रिशूल को घुमा रहा था । और वह स्वयम् देदीप्यमान था ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

पद्भ्यां तालप्रमाणाभ्यां कम्पयन्नवनीतलम् ।
सोऽभ्यधावद् वृतो भूतैर्द्वारकां प्रदहन् दिशः ॥३४॥

पदच्छेद— पद्भ्याम् ताल प्रमाणाभ्याम् कम्पयन् अवनीतलम् ।
सः अभ्यधावत् वृतः भूतैः द्वारकाम् प्रदहन् दिशः ॥

शब्दार्थ—

पद्भ्याम्	३.	पैरों से	अभ्यधावत्	१२.	दौड़ने लगा
ताल	१.	ताड़के पेड़	वृतः	१०.	साथ
प्रमाणाभ्याम्	२.	बराबर	भूतैः	९.	भूत गणों के
कम्पयन्	५.	कंपाता हुआ	द्वारकाम्	११.	द्वारका की ओर
अवनीतलम् ।	४.	पृथ्वीतल को	प्रदहन्	७.	जलाता हुआ
सः	८.	वह	दिशः ॥	६.	दिशाओं को

श्लोकार्थ—ताड़ के पेड़ के बराबर पैरों से पृथ्वी तल को कंपाता हुआ तथा दिशाओं को जलाता हुआ वह गणों के साथ द्वारका की ओर दौड़ने लगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तमाभिचारदहनमायान्तं द्वारकौकसः ।
विलोक्य तत्रसुः सर्वे वनदाहे मृगा यथा ॥३५॥

पदच्छेद— तम् आभिचार दहनम् आयान्तम् द्वारका ओकसः ।
विलोक्य तत्रसुः सर्वे वनदाहे मृगाः यथा ॥

शब्दार्थ—

तम्	१. उस	विलोक्य	५. देखकर
अभिचार	२. अभिचार की	तत्रसुः	६. वैसे ही डर गये
दहनम्	३. अग्नि को	सर्वे	६. सभी
आयान्तम्	४. आते हुये	वनदाहे	११. वन में अग्नि लगने पर
द्वारका	७. द्वारका	मृगाः	१२. हरिण डर जाते हैं
ओकसः ।	८. वासी	यथा ॥	१०. जैसे

श्लोकार्थ—उस अभिचार की अग्नि को आते हुये देखकर सभी द्वारकावासी वैसे ही डर गये । जैसे वन में अग्नि लगने पर हरिण डर जाते हैं ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

अक्षैः सभायां क्रीडन्तं भगवन्तं भयातुराः ।
त्राहि त्राहि त्रिलोकेश वह्नेः प्रदह्यतः पुरम् ॥३६॥

पदच्छेद— अक्षैः सभायाम् क्रीडन्तम् भगवन्तम् भय आतुराः ।
त्राहि त्राहि त्रिलोकेश वह्नेः प्रदह्यतः पुरम् ॥

शब्दार्थ—

अक्षैः	४. पासों से	त्राहि	११. रक्षा कीजिये
सभायाम्	३. सभा में	त्राहि	१२. रक्षा कीजिये
क्रीडन्तम्	५. खेलते हुये	त्रिलोकेश	७. तीनों लोकों के स्वामी
भगवन्तम्	६. भगवान् से कहने लगे	वह्नेः	८. अग्नि से
भय	१. भय से	प्रदह्यतः	९. जलते हुये
आतुराः ।	२. व्याकुल (वे लोग)	पुरम् ॥	१०. नगर की

श्लोकार्थ—भय से व्याकुल वे लोग सभा में पासों से खेलते हुये भगवान् से कहने लगे—तीनों लोकों के के स्वामी ! अग्नि से जलते हुये नगर की रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

श्रुत्वा तज्जनवैक्लव्यं दृष्ट्वा स्वानां च साध्वसम् ।
शरण्यः सम्प्रहस्याह मा भैष्टेत्यवितास्म्यहम् ॥३७॥

पदच्छेद— श्रुत्वा तत् जन वैक्लव्यम् दृष्ट्वा स्वानाम् च साध्वसम् ।
शरण्यः सम्प्रहस्य आह मा भैष्ट इति अवितास्मि अहम् ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	३.	सुनकर	शरण्यः	७.	शरणागतवत्सल
तत् जन	१.	लोगों की वह	सम्प्रहस्य	८.	हंस कर
वैक्लव्यम्	२.	विकलता	आह	९.	कहा
दृष्ट्वा	६.	देख कर	मा	१०.	मत
स्वानाम् च	४.	और स्वजनों का	भैष्ट इति	११.	डरो
साध्वसम् ।	५.	भय	अवितास्मि	१३.	रक्षा करूँगा
			अहम् ॥	१२.	मैं (तुम लोगों की)

श्लोकार्थ—लोगों की वह विकलता सुनकर और स्वजनों का भय देखकर शरणागत वत्सल भगवान् ने कहा—मत डरो, मैं तुम लोगों की रक्षा करूँगा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

सर्वस्यान्तर्बहिः साक्षी कृत्यां माहेश्वरीं विभुः ।
विज्ञाय तद्विघातार्थं पार्श्वस्थं चक्रमादिशत् ॥३८॥

पदच्छेद— सर्वस्य अन्तः बहिः साक्षी कृत्याम् माहेश्वरीम् विभुः ।
विज्ञाय तत् विघात अर्थम् पार्श्वस्थम् चक्रम् आदिशत् ॥

शब्दार्थ—

सर्वस्य	१.	सबके	विज्ञाय	८.	जानकर
अन्तः	२.	भीतर और	तत्	९.	उसके
बहिः	३.	बाहर की बातें	विघात	१०.	नाश के
साक्षी	४.	जानने वाले (श्रीकृष्ण ने)	अर्थम्	११.	लिये
कृत्याम्	७.	कृत्या को	पार्श्वस्थम्	१२.	समीप में स्थित
माहेश्वरीम्	६.	शंकर की	चक्रम्	१३.	सुदर्शन चक्र को
विभुः ।	५.	भगवान्	आदिशत् ॥	१४.	आदेश दिया

श्लोकार्थ—सबके भीतर और बाहर की बातें जानने वाले श्रीकृष्ण ने भगवान् शङ्कर की कृत्या को जानकर उसके नाश के लिये समीप में स्थित सुदर्शन चक्र को आदेश दिया ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तत् सूर्यकोटिप्रतिमं सुदर्शनं जाज्वल्यमानं प्रलयानलप्रभम् ।
स्वतेजसा खं ककुभोऽथ रोदसी चक्रं मुकुन्दास्त्रमथाग्निमार्दयत् ॥३९॥

पदच्छेद—तत् सूर्यकोटि प्रतिमम् सुदर्शनम् जाज्वल्यमानम् प्रलय अनल प्रभम् । स्वतेजसा खम् ककुभः अथ रोदसी चक्रम् मुकुन्द अस्त्रम् अथ अग्निम् आर्दयत् ॥

शब्दार्थ—

तत्	९.	उस	स्वतेजसा खम्	१२.	अपने तेज से आकाश
सूर्यकोटि	१.	करोड़ों सूर्य के	ककुभः अथ	१३.	दिशा और
प्रतिमम्	२.	समान	रोदसी	१४.	अन्तरिक्ष को चमका कर
सुदर्शनम्	१०.	सुदर्शन	चक्रम्	११.	चक्र ने
जाज्वल्यमानम्	३.	तेजस्वी	मुकुन्द	७.	भगवान् के
प्रलय	४.	प्रलय कालीन	अस्त्रम् अथ	८.	अस्त्र
अनल	५.	अग्नि के समान	अग्निम्	१५.	अभिचार अग्नि को
प्रभम् ।	६.	कान्तिमान्	आर्दयत् ॥	१६.	कुचल डाला

श्लोकार्थ—करोड़ों सूर्य के समान तेजस्वी, प्रलय कालीन अग्नि के समान कान्तिमान्, भगवान् के अस्त्र उस सुदर्शन चक्र ने अपने तेज से आकाश, दिशा और अन्तरिक्ष को चमका कर अभिचार-अग्नि को कुचल डाला ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

कृत्यानलः प्रतिहतः स रथाङ्गपाणेरस्त्रौजसा स नृप भग्नमुखो निवृत्तः ।
वाराणसीं परिसमेत्य सुदक्षिणं तं सर्त्विग्जनं समदहत् स्वकृतोऽभिचारः ॥४०॥

पदच्छेद—कृत्या अनलः प्रतिहतः सः रथाङ्गपाणेः अस्त्र ओजसा सः नृपभग्न मुखः निवृत्तः । वाराणसीम् परिसमेत्य सुदक्षिणम् तम् सर्त्विग्जनम् समदहत् स्वकृतः अभिचारः ॥

शब्दार्थ—

नृप	१.	राजन्	वाराणीम्	१०.	वाराणसी
कृत्या	५.	कृत्या रूप	परिसमेत्य	११.	आ गया
अनलः	६.	अग्नि का	सुदक्षिणम्	१५.	सुदक्षिण को
प्रतिहतः सः	४.	आहत उस	तम्	१४.	उस
रथाङ्गपाणेः	२.	चक्रपाणि श्रीकृष्ण के	सर्त्विग्जनम्	१६.	ऋत्विज आचार्य सहित
अस्त्र ओजसा	३.	सुदर्शन चक्र के तेज से	समदहत्	१७.	जला दिया
सः	८.	वह	स्वकृतः	१२.	अपने किये हुये
भग्नमुखः	७.	मुँह टूट-फूट गया	अभिचारः ॥	१३.	अभिचार ने
निवृत्तः ।	९.	लौट कर			

श्लोकार्थ—राजन् ! चक्रपाणि श्रीकृष्ण के सुदर्शन चक्र के तेज से आहत उस कृत्या रूप अग्नि का मुँह टूट-फूट गया । वह लौट कर वाराणसी आ गया । और अपने किये हुये अभिचार ने उस सुदक्षिण को ऋत्विज, आचार्य सहित जला दिया ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

चक्रं च विष्णोस्तदनुप्रविष्टं वाराणसीं साट्टसभालयापणाम् ।
सगोपुराट्टालककोष्ठसङ्कुलां सकोशहस्त्यश्वरथान्नशालाम् ।।४१।।

पदच्छेद—चक्रम् च विष्णोः तत् अनुप्रविष्टम् वाराणसीम् स अट्ट सभालय आपणाम् ।
स गोपुर अट्टालक कोष्ठ सङ्कुलाम् सकोश हस्ति अश्व रथ अन्न शालाम् ।।

शब्दार्थ—

चक्रम् च	२.	चक्र भी	सगोपुर	९.	द्वारों के शिखरों
विष्णोः	१.	श्रीकृष्ण का	अट्टालक	१०.	चहारदीवारियों (तथा)
तत्	३.	उसके	कोष्ठ	११.	कोठों से
अनुप्रविष्टम्	४.	पीछे	सङ्कुलाम्	१२.	व्याप्त थी (उसे)
वाराणसीम्	५.	वाराणसी (पहुँच गया) जो पुरी	सकोश	१३.	कोश-खजाने
स अट्ट	६.	अटारियों	हस्ति अश्व	१४.	हाथी-घोड़े
सभालया	७.	सभा भवनों	रथ अन्न	१५.	रथ-अन्न
आपणाम् ।	८.	बाजार	शालाम् ।।	१६.	शाला (गोदामों) सहित जला डाला

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण का चक्र भी उसके पीछे वाराणसी पहुँच गया । जो पुरी अटारियों, सभा भवनों बाजार, द्वारों के शिखरों, चहारदीवारियों तथा कोठों से व्याप्त थी, कोश, खजाने, हाथी, घोड़े, रथ, अन्न शाला, गोदामों सहित जला डाला ।।

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

दग्ध्वा वाराणसीं सर्वां विष्णोश्चक्रं सुदर्शनम् ।
भूयः पार्श्वमुपातिष्ठत् कृष्णस्याक्लिष्टकर्मणः ।।४२।।

पदच्छेद— दग्ध्वा वाराणसीम् सर्वाम् विष्णोः चक्रम् सुदर्शनम् ।
भूयः पार्श्वम् उपातिष्ठत् कृष्णस्य अक्लिष्ट कर्मणः ।।

शब्दार्थ—

दग्ध्वा	६.	जलाकर	भूयः	७.	फिर
वाराणसीम्	५.	काशी को	पार्श्वम्	११.	पास
सर्वान्	४.	सम्पूर्ण	उपातिष्ठत्	१२.	लौट आया
विष्णोः	१.	श्रीकृष्ण का	कृष्णस्य	१०.	श्रीकृष्ण के
चक्रम्	३.	चक्र	अक्लिष्ट	८.	परमानन्दमयी
सुदर्शनम् ।	२.	सुदर्शन	कर्मणः ।।	९.	लीला करने वाले

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र सम्पूर्ण काशी को जला कर फिर परमानन्दमयी लीला करने वाले श्रीकृष्ण के पास लौट आया ।।

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

य एतच्छ्रावयेन्मर्त्यं उत्तमश्लोकविक्रमम् ।
समाहितो वा शृणुयात् सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥४३॥

पदच्छेद—

यः एतत् श्रावयेत् मर्त्यः उत्तम श्लोक विक्रमम् ।
समाहितः वा शृणुयात् सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	समाहितः	६.	एकाग्रता के साथ
एतत्	३.	इस	वा	८.	अथवा
श्रावयेत्	७.	सुनाता है	शृणुयात्	९.	सुनता है वह
मर्त्यः	२.	मनुष्य	सर्व	१०.	सभी
उत्तम श्लोक	४.	श्रीकृष्ण	पापैः	११.	पापों से
विक्रमम् ।	५.	चरित्र को	प्रमुच्यते ।।	१२.	छूट जाता है

श्लोकार्थ—

जो मनुष्य इस श्रीकृष्ण चरित्र को एकाग्रता के साथ सुनाता है अथवा सुनता है वह सभी पापों से छूट जाता है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे पौण्ड्रकादिवधो
नाम षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥६६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्तषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— भूयोऽहं श्रोतुमिच्छामि रामस्याद्भुतकर्मणः।
अनन्तस्याप्रमेयस्य यदन्यत् कृतवान् प्रभुः ॥१॥

पदच्छेद— भूयः अहम् श्रोतुम् इच्छामि रामस्य अद्भुत कर्मणः।
अनन्तस्य अप्रमेयस्य यत् अन्यत् कृतवान् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

भूयः अहम्	६.	मैं फिर	अनन्तस्य	३.	अनन्त और
श्रोतुम्	७.	सुनना	अप्रमेयस्य	४.	अलौकिक
इच्छामि	८.	चाहता हूँ	यत्	१०.	जो कुछ
रामस्य	५.	बलराम जी के बारे में	अन्यत्	११.	अन्य
अद्भुत	१.	अद्भुत	कृतवान्	१२.	कार्य किया है (वह सुनाइये)
कर्मणः।	२.	कार्य करने वाले	प्रभुः ॥	९.	प्रभु ने

श्लोकार्थ—अद्भुत कार्य करने वाले अनन्त और अलौलिक बलराम जी के बारे में मैं फिर सुनना चाहता हूँ, प्रभु ने जो कुछ अन्य कार्य किया है वह सुनाइये ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नरकस्य सखा कश्चिद् द्विविदो नाम वानरः।
सुग्रीवसचिवः सोऽथ भ्राता मैन्दस्य वीर्यवान् ॥२॥

पदच्छेद— नरकस्य सखा कश्चित् द्विविदः नाम वानरः।
सुग्रीव सचिवः सः अथ भ्राता मैन्दस्य वीर्यवान् ॥

शब्दार्थ—

नरकस्य	१.	नरकस्य	सुग्रीव	८.	सुग्रीव का
सखा	२.	मित्र	सचिवः	९.	मन्त्री
कश्चित्	३.	कोई	सः	७.	वह
द्विविदः	४.	द्विविद	अथ	१०.	और
नाम	५.	नाम का	भ्राता	१३.	भाई था
वानरः।	६.	वानर था	मैन्दस्य	११.	मैन्द का
			वीर्यवान् ॥	१२.	शक्ति शाली

श्लोकार्थ—नरकासुर का मित्र कोई द्विविद नाम का वानर था। वह सुग्रीव का मन्त्री और मैन्द का शक्तिशाली भाई था ॥

तृतीयः श्लोकः

सख्युः सोऽपचितिं कुर्वन् वानरो राष्ट्रविप्लवम् ।
पुरग्रामाकरान् घोषानदहद् वह्निमुत्सृजन् ॥३॥

पदच्छेद— सख्युः सः अपचितिम् कुर्वन् वानरः राष्ट्र विप्लवम् ।
पुर ग्राम आकरान् घोषान् अदहत् वह्निम् उत्सृजन् ॥

शब्दार्थ —

सख्युः	३. मित्र का	पुर	८. वह नगरों
सः	१. वह	ग्राम	९. गाँवों
अपचितिम्	४. बदला	आकरान्	१०. खानों और
कुर्वन्	५. लेने के लिये	घोषान्	११. अहीरों की बस्तियों में
वानरः	२. वानर	अदहत्	१४. जलाने लगा
राष्ट्र	६. राष्ट्र में	वह्निम्	१२. आग
विप्लवम् ।	७. घोर उत्पात मचाने लगा	उत्सृजन् ॥	१३. लगा कर

श्लोकार्थ—वह वानर मित्र का बदला लेने के लिये राष्ट्र में घोर उत्पात मचाने लगा । वह नगरों, गाँवों, खानों और अहीरों की बस्तियों में आग लगा कर जलाने लगा ॥

चतुर्थः श्लोकः

क्वचित् स शैलानुत्पाट्य तैर्देशान् समचूर्णयत् ।
आनर्तान् सुतरामेव यत्रास्ते मित्रहा हरिः ॥४॥

पदच्छेद— क्वचित् सः शैलान् उत्पाट्य तैः देशान् समचूर्णयत् ।
आनर्तान् सुतराम् एव यत्र आस्ते मित्रहा हरिः ॥

शब्दार्थ—

क्वचित्	१. कहीं	आनर्तान्	९. काठियावाड़ (आनर्त) में
सः	२. वह	सुतराम्	८. विशेष करके
शैलान्	३. पहाड़ों को	एव	१०. ही (ऐसा करता था)
उत्पाट्य	४. उखाड़ कर	यत्र	११. जहाँ (उसके)
तैः	५. उनसे	आस्ते	१४. रहते थे
देशान्	६. देशों को	मित्रहा	१२. मित्र को मारने वाले
समचूर्णयत् ।	७. चकना चूर कर देता था	हरिः ॥	१३. श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—कहीं वह पहाड़ों को उखाड़ कर उनसे देशों को चकनाचूर कर देता था । विशेष करके काठियावाड़ (आनर्त) में ही ऐसा करता था । जहाँ उसके मित्र को मारने वाले श्रीकृष्ण रहते थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

क्वचित् समुद्रमध्यस्थो दोर्भ्यामुत्क्षिप्य तज्जलम् ।
देशान् नागायुतप्राणो वेलाकूलानमज्जयत् ॥५॥

पदच्छेद— क्वचित् समुद्र मध्यस्थः दोर्भ्याम् उत्क्षिप्य तत् जलम् ।
देशान् नाग अयुत प्राणः वेलाकूलान् अमज्जयत् ॥

शब्दार्थ—

क्वचित्	४.	कहीं	देशान्	११.	देशों को
समुद्र	५.	समुद्र में	नाग	२.	हाथियों का
मध्यस्थः	६.	खड़ा होकर	अयुत	१.	दश हजार
दोर्भ्याम्	७.	दोनों हाथों से	प्राणः	३.	बल रखने वाला वह
उत्क्षिप्य	९.	उछाल कर	वेलाकूलान्	१०.	समुद्र तट के
तत् जलम् ।	८.	उसका जल	अमज्जयत् ॥	१२.	डुबा देता था

श्लोकार्थ—दश हजार हाथियों का बल रखने वाला वह कहीं समुद्र में खड़ा होकर दोनों हाथों से उसका जल उछाल कर समुद्र तट के देशों को डुबा देता था ॥

षष्ठः श्लोकः

आश्रमानृषिमुख्यानां कृत्वा भग्नवनस्पतीन् ।
अदूषयच्छकृन्मूत्रैरग्नीन् वैतानिकान् खलः ॥६॥

पदच्छेद— आश्रमान् ऋषि मुख्यानाम् कृत्वा भग्न वनस्पतीन् ।
अदूषयत् शकृन् मूत्रैः अग्नीन् वैतानिकान् खलः ॥

शब्दार्थ—

आश्रमान्	३.	आश्रमों के	अदूषयत्	१२.	दूषित कर देता था
ऋषि	२.	ऋषियों के	शकृन्	१०.	मल
मुख्यानाम्	१.	श्रेष्ठ	मूत्रैः	११.	मूत्र करके उन्हें
कृत्वा	६.	नष्ट कर देता (तथा)	अग्नीन्	९.	अग्नियों पर
भग्न	५.	तोड़-मरोड़ कर	वैतानिकान्	८.	यज्ञ सम्बन्धी
वनस्पतीन् ।	४.	पेड़ पौधों को	खलः ॥	७.	वह दुष्ट

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ ऋषियों के पेड़-पौधों को तोड़-मरोड़ कर नष्ट कर देता । तथा यह दुष्ट यज्ञ सम्बन्धी अग्नियों पर मल-मूत्र करके उन्हें दूषित कर देता था ॥

सप्तमः श्लोकः

पुरुषान् योषितो दृप्तः क्ष्माभृद्द्रोणीगुहासु सः ।
निक्षिप्य चाप्यधाच्छैलैः पेशस्कारीव कीटकम् ॥७॥

पदच्छेद— पुरुषान् योषितः दृप्तः क्ष्माभृद् द्रोणी गुहासु सः ।
निक्षिप्य च अपिअधात् शैलैः पेशस्कारी इव कीटकम् ॥

शब्दार्थ—

पुरुषान्	३.	पुरुषों और	निक्षिप्य	८.	डाल देता
योषितः	४.	स्त्रियों को	च	९.	और
दृप्तः	२.	मदोन्मत्त (द्विविद)	अप्यधात्	११.	मुँह बन्द कर देता
क्ष्माभृद्	५.	पहाड़ों की	शैलैः	१०.	चट्टानों से (उनका)
द्रोणी	६.	घाटियों तथा	पेशस्कारी	१३.	भृङ्गी नामक कीड़ा दूसरे
गुहासु	७.	गुफाओं में	इव	१२.	जैसे
सः ।	१.	वह	कीटकम् ॥	१४.	कीड़ों को अपने बिल में बन्द कर देता है

श्लोकार्थ—वह मदोन्मत्त द्विविद पुरुषों और स्त्रियों को पहाड़ों की घाटियों तथा गुफाओं में डाल देता और चट्टानों से उनका मुँह बन्द कर देता, जैसे भृङ्गी नामक कीड़ा दूसरे कीड़ों को अपने बिल में बन्द कर देता है ॥

अष्टमः श्लोकः

एवं देशान् विप्रकुर्वन् दूषयंश्च कुलस्त्रियः ।
श्रुत्वा सुललितं गीतं गिरिं रैवतकं ययौ ॥८॥

पदच्छेद— एवम् देशान् विप्रकुर्वन् दूषयन् च कुलस्त्रियः ।
श्रुत्वा सुललितम् गीतम् गिरिम् रैवतकम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	श्रुत्वा	९.	सुन कर वह
देशान्	२.	देशवासियों का	सुललितम्	७.	एक बार सुन्दर
विप्रकुर्वन्	३.	तिरस्कार करता हुआ वह	गीतम्	८.	संगीत
दूषयन् च	६.	भी दूषित कर देता	गिरिम्	११.	पर्वत पर
कुल	४.	कुलीन	रैवतकम्	१०.	रैवतक नामक
स्त्रियः ।	५.	स्त्रियों को	ययौ ॥	१२.	गया

श्लोकार्थ—इस प्रकार देशवासियों का तिरस्कार करता हुआ वह कुलीन स्त्रियों को भी दूषित कर देता। एक बार सुन्दर संगीत सुनकर वह रैवतक नामक पर्वत पर गया ॥

नवमः श्लोकः

तत्रापश्यद् यदुपतिं रामं पुष्करमालिनम् ।
सुदर्शनीयसर्वाङ्गं ललनायूथमध्यगम् ॥६॥

पदच्छेद— तत्र अपश्यत् यदुपतिम् रामम् पुष्कर मालिनम् ।
सुदर्शनीय सर्वाङ्गम् ललना यूथ मध्यगम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ (उसने)	सुदर्शनीय	३.	अत्यन्त दर्शनीय
अपश्यत्	१०.	देखा	सर्वाङ्गम्	४.	समस्त अङ्गों वाले तथा
यदुपतिम्	८.	यदुवंश शिरोमणि	ललना	५.	सुन्दर युवतियों के
रामम्	९.	बलराम को	यूथ	६.	झुंड में
पुष्करमालिनम् ।	२.	कमलों की माला पहने	मध्यगम् ॥	७.	विराजमान

श्लोकार्थ—वहाँ उसने कमलों की माला पहने अत्यन्त दर्शनीय समस्त अङ्गों वाले तथा सुन्दर युवतियों के झुंड में विराजमान यदुवंश-शिरोमणि बलराम को देखा ॥

दशमः श्लोकः

गायन्तं वारुणीं पीत्वा मदविह्वललोचनम् ।
विभ्राजमानं वपुषा प्रभिन्नमिव वारणम् ॥१०॥

पदच्छेद— गायन्तम् वारुणीं पीत्वा मदविह्वल लोचनम् ।
विभ्राजमानम् वपुषा प्रभिन्नम् इव वारणम् ॥

शब्दार्थ—

गायन्तम्	३.	गा रहे थे	विभ्राजमानम्	७.	इस प्रकार शोभायमान था
वारुणीं	१.	वे मधु	वपुषा	६.	शरीर
पीत्वा	२.	पीकर	प्रभिन्नम्	९.	मदमत्त
मदविह्वल	५.	मद से विह्वल हो रहे थे	इव	८.	मानों
लोचनम् ।	४.	उनके नेत्र	वारणम् ॥	१०.	गजराज हो

श्लोकार्थ—वे मधु पीकर गा रहे थे । उनके नेत्र मद से विह्वल हो रहे थे । शरीर इस प्रकार शोभायमान था मानों मदमत्त गजराज हो ॥

एकादशः श्लोकः

दुष्टः शाखामृगः शाखामारूढः कम्पयन् द्रुमान् ।
चक्रे किलकिलाशब्दमात्मानं सम्प्रदर्शयन् ॥११॥

पदच्छेद— दुष्टः शाखामृगः शाखाम् आरूढः कम्पयन् द्रुमान् ।
चक्रे किलकिला शब्दम् आत्मानम् सम्प्रदर्शयन् ॥

शब्दार्थ—

दुष्टः	१.	दुष्ट	चक्रे	११.	करने लगता
शाखामृगः	२.	वानर	किलकिला	९.	किलकारी का
शाखाम्	३.	डाल पर	शब्दम्	१०.	शब्द
आरूढः	४.	चढ़ कर	आत्मानम्	७.	अपने को
कम्पयन्	६.	हिला देता (और)	सम्प्रदर्शयन् ॥	८.	दिखाता हुआ
द्रुमान् ।	५.	वृक्षों को			

श्लोकार्थ—दुष्ट वानर डाल पर चढ़कर वृक्षों को हिला देता और अपने को दिखाता हुआ किलकारी का शब्द करने लगता ॥

द्वादशः श्लोकः

तस्य धाष्ट्र्यं कपेर्वीक्ष्य तरुण्यो जातिचापलाः ।
हास्यप्रिया विजहसुर्बलदेवपरिग्रहाः ॥१२॥

पदच्छेद— तस्य धाष्ट्र्यम् कपेः वीक्ष्य तरुण्यः जाति चापलाः ।
हास्य प्रिया विजहसुः बलदेव परिग्रहाः ॥

शब्दार्थ—

तस्य	८.	उस	चापलाः ।	३.	चञ्चल तथा
धाष्ट्र्यम्	१०.	ढिठाई	हास्य	४.	हास
कपेः	९.	वानर की	प्रिया	५.	परिहास में रुचि रखती हैं
वीक्ष्य	११.	देखकर	विजहसुः	१२.	हँसने लगीं
तरुण्यः	१.	युवतियाँ	बलदेव	६.	बलराम की
जाति	२.	स्वभाव से ही	परिग्रहाः ॥	७.	स्त्रियाँ

श्लोकार्थ—युवतियाँ स्वभाव से ही चञ्चल तथा हास-परिहास में रुचि रखती हैं । बलराम की स्त्रियाँ उस वानर की ढिठाई देखकर हँसने लगीं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

ता हेलयामास कपिर्भ्रूक्षेपैः सम्मुखादिभिः ।
दर्शयन् स्वगुदं तासां रामस्य च निरीक्षतः ॥१३॥

पदच्छेद— ताः हेलयामास कपिः भ्रूक्षेपैः सम्मुख आदिभिः ।
दर्शयन् स्वगुदम् तासाम् रामस्य च निरीक्षतः ॥

शब्दार्थ—

ताः	११.	उनका	दर्शयन्	७.	दिखाता हुआ
हेलयामास	१२.	तिरस्कार करने लगा	स्वगुदम्	६.	अपनी गुदा
कपिः	१.	वह वानर	तासाम्	५.	स्त्रियों को
भ्रूक्षेपैः	८.	भौहें मटका कर	रामस्य	२.	बलराम
सम्मुख	९.	सामने मुँह बना कर	च	३.	के
आदिभिः ।	१०.	घुड़की आदि से	निरीक्षतः ॥	४.	सामने

श्लोकार्थ—वह वानर बलराम के सामने स्त्रियों को अपनी गुदा दिखाता हुआ भौहें मटका कर सामने मुँह बना कर घुड़की आदि से उनका तिरस्कार करने लगा ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तं ग्राव्णा प्राहरत् क्रुद्धो बलः प्रहरतां वरः ।
स वञ्चयित्वा ग्रावाणं मदिराकलशं कपिः ॥१४॥

पदच्छेद— तम् ग्राव्णा प्राहरत् क्रुद्धः बलः प्रहरतां वरः ।
सः वञ्चयित्वा ग्रावाणम् मदिरा कलशम् कपिः ॥

शब्दार्थ—

तम्	४.	उस पर	सः	७.	उस
ग्राव्णा	५.	एक पत्थर से	वञ्चयित्वा	१०.	अपने को बचा कर
प्राहरत्	६.	प्रहार किया (किन्तु)	ग्रावाणम्	९.	पत्थर से
क्रुद्धः	३.	क्रुद्ध होकर	मदिरा	११.	मधु का
बलः	२.	बलराम ने	कलशम्	१२.	कलश उठा लिया
प्रहरताम् वरः ।	१.	प्रहार करने वालों में श्रेष्ठ	कपिः ॥	८.	वानर ने

श्लोकार्थ—प्रहार करने वालों में श्रेष्ठ बलराम ने क्रुद्ध होकर उस पर एक पत्थर से प्रहार किया । किन्तु उस वानर ने पत्थर से अपने को बचा कर मधु का कलश उठा लिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गृहीत्वा हेलयामास धूर्तस्तं कोपयन् हसन् ।
निर्भिद्य कलशं दुष्टो वासांस्यास्फालयद् बलम् ॥१५॥

पदच्छेद— गृहीत्वा हेलयामास धूर्तः तम् कोपयन् हसन् ।
निर्भिद्य कलशम् दुष्टः वासांसि आस्फालयत् बलम् ॥

शब्दार्थ—

गृहीत्वा	४.	लेकर (और)	निर्भिद्य	५.	फोड़ कर
हेलयामास	६.	बलराम की अवहेलना की	कलशम्	३.	मधुकलश को
धूर्तः	२.	धूर्त वानर ने	दुष्टः	७.	फिर वह दुष्ट (स्त्रियों के)
तम्	१.	उस	वासांसि	८.	वस्त्रों को
कोपयन्	१२.	क्रोधित करने लगा	आस्फालयत्	९.	फाड़ कर
हसन् ।	१०.	हंसता हुआ	बलम् ॥	११	बलराम जी को

श्लोकार्थ—उस धूर्त वानर ने मधुकलश को लेकर बलराम जी की अवहेलना की। फिर वह दुष्ट स्त्रियों के वस्त्रों को फाड़ कर हंसता हुआ बलराम जी को क्रोधित करने लगा ॥

षोडशः श्लोकः

कदर्थीकृत्य बलवान् विप्रचक्रे मदोद्धतः ।
तं तस्याविनयं दृष्ट्वा देशांश्च तदुपद्रुतान् ॥१६॥

पदच्छेद— कदर्थी कृत्य बलवान् विप्रचक्रे मद उद्धतः ।
तम् तस्य अविनयम् दृष्ट्वा देशान् च तत् उपद्रुतान् ॥

शब्दार्थ—

कदर्थी	५.	तिरस्कार	तम्	४.	उन बलराम का
कृत्य	६.	करके	तस्य	८.	उसकी
बलवान्	१.	बलवान् और	अविनयम्	९.	ढिठाई
विप्रचक्रे	७.	उपद्रव किया	दृष्ट्वा	१०.	देख कर
मद	२.	मद से	देशान्	१३.	देशों को विनाश जान कर अपना अस्त्र उठा लिया
उद्धतः ।	३.	उद्धत (द्विविद ने)	च तत्	११.	और उसके द्वारा
			उपद्रुतान् ॥	१२.	उपद्रव ग्रस्त

श्लोकार्थ—बलवान् और मद से उद्धत द्विविद ने उन बलराम का तिरस्कार करके उपद्रव किया। उसकी ढिठाई देख कर और उसके द्वारा उपद्रव ग्रस्त देशों का विनाश जान कर बलराम ने अपना अस्त्र उठा लिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

क्रुद्धो मुसलमादत्त हलं चारिजिघांसया ।
द्विविदोऽपि महावीर्यः शालमुद्यम्य पाणिना ॥१७॥

पदच्छेद— क्रुद्धः मुसलम् आदत्त हलम् च अरि जिघांसया ।
द्विविदः अपि महावीर्यः शालम् उद्यम्य पाणिना ॥

शब्दार्थ—

क्रुद्धः	१.	कुपित बलराम ने	द्विविदः	८.	द्विविद ने
मुसलम्	५.	मूसल	अपि	९.	भी
आदत्त	६.	उठा लिया	महावीर्यः	७.	महाबली
हलम् च	४.	हल और	शालम्	११.	शाल का पेड़
अरि	२.	शत्रु को	उद्यम्य	१२.	उखाड़ लिया
जिघांसया ।	३.	मार डालने की इच्छा से	पाणिना ॥	१०.	एक हाथ से

श्लोकार्थ—इस प्रकार कुपित बलराम जी ने शत्रु को मार डालने की इच्छा से हल और मूसल उठा लिया । महाबली द्विविद ने भी एक हाथ से शाल का पेड़ उखाड़ लिया ।

अष्टादशः श्लोकः

अभ्येत्य तरसा तेन बलं मूर्धन्यताडयत् ।
तं तु सङ्कर्षणो मूर्ध्नि पतन्तमचलो यथा ॥१८॥

पदच्छेद— अभ्येत्य तरसा तेन बलम् मूर्धनि अताडयत् ।
तम् तु सङ्कर्षणः मूर्ध्नि पतन्तम् अचलः यथा ॥

शब्दार्थ—

अभ्येत्य	२.	पास पहुँच कर	तम् तु	१२.	उस पेड़ को (पकड़ लिया)
तरसा	१.	बड़े वेग से	सङ्कर्षणः	७.	बलराम जी ने
तेन	३.	उसे	मूर्ध्नि	१०.	सिर पर
बलम्	४.	बलराम जी के	पतन्तम्	११.	गिरते हुये
मूर्धनि	५.	सिर पर	अचलः	८.	पर्वत के
अताडयत् ।	६.	दे मारा	यथा ॥	९.	समान अविचल खड़े रह कर

श्लोकार्थ—बड़े वेग से पहुँच कर उसे बलराम जी के सिर पर दे मारा । बलराम जी ने पर्वत के समान अविचल खड़े होकर सिर पर गिरते हुये उस पेड़ को पकड़ लिया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

प्रतिजग्राह बलवान् सुनन्देनाहनच्च तम् ।
मुसलाहतमस्तिष्को विरेजे रक्तधारया ॥१९॥

पदच्छेद— प्रतिजग्राह बलवान् सुनन्देन अहनत् च तम् ।
मुसल आहत मस्तिष्कः विरेजे रक्त धारया ॥

शब्दार्थ—

प्रतिजग्राह	२.	पेड़ को पकड़ लिया	मुसल	७.	मूसल से (उसका)
बलवान्	१.	बली बलराम के (उस)	आहत	९.	फट गया (और)
सुनन्देन	५.	सुनन्द नामक (मूसल से)	मस्तिष्कः	८.	मस्तक
अहनत्	६.	प्रहार किया	विरेजे	१२.	शोभायमान हुआ
च	३.	और	रक्त	१०.	वह रक्त की
तम् ।	४.	उस पर	धारया ॥	११.	धारा से

श्लोकार्थ—बली बलराम ने उस पेड़ को पकड़ लिया। और उस पर सुनन्द नामक मूसल से प्रहार किया। मूसल से उसका मस्तक फट गया और वह रक्त की धारा से शोभायमान हुआ ॥

विंशः श्लोकः

गिरिर्यथा गैरिकया प्रहारं नानुचिन्तयन् ।
पुनरन्यं समुत्क्षिप्य कृत्वा निष्पत्रमोजसा ॥२०॥

पदच्छेद— गिरिः यथा गैरिकया प्रहारम् न अनुचिन्तयन् ।
पुनः अन्यम् सम् उत्क्षिप्य कृत्वा निष्पत्रम् ओजसा ॥

शब्दार्थ—

गिरिः	३.	पर्वत हो (उसने)	पुनः	७.	फिर
यथा	१.	जैसे	अन्यम्	८.	दूसरा वृक्ष
गैरिकया	२.	गेरू से शोभायमान	सम् उत्क्षिप्य	९.	उखाड़ कर उसे
प्रहारम्	४.	प्रहार की	कृत्वा	१२.	कर लिया
न	६.	नहीं की	निष्पत्रम्	११.	बिना पत्ते का
अनुचिन्तयन् ।	५.	कोई भी परवाह	ओजसा ॥	१०.	झाड़-झूड़ कर

श्लोकार्थ—जैसे गेरू से शोभायमान पर्वत हो। उसने प्रहार की कोई भी परवाह नहीं की। फिर दूसरा वृक्ष उखाड़ कर उसे झाड़-झूड़ कर बिना पत्ते का कर लिया ॥

एकविंशः श्लोकः

तेनाहनत् सुसंक्रुद्धस्तं बलः शतधाच्छिनत् ।
ततोऽन्येन रुषा जघ्ने तं चापि शतधाच्छिनत् ॥२१॥

पदच्छेद— तेन अहनत् सुसंक्रुद्धः तम् बलः शतधा अच्छिनत् ।
ततः अन्येन रुषा जघ्ने तम् च अपि शतधा अच्छिनत् ॥

शब्दार्थ—

तेन	२. उस वृक्ष से	ततः	८. तब
अहनत्	३. बलराम को मारा	अन्येन	१०. दूसरे वृक्ष से
सुसंक्रुद्धः	१. अत्यन्त क्रुद्ध होकर	रुषा	९. क्रोध से
तम्	५. उसके	जघ्ने	११. मारा
बलः	४. बलराम ने	तम् च अपि	१२. उसके भी
शतधा	६. सैंकड़ों	शतधा	१३. सैंकड़ों
अच्छिनत् ।	७. टुकड़े कर दिये	अच्छिनत् ॥	१४. टुकड़े कर दिये

श्लोकार्थ—अत्यन्त क्रुद्ध होकर उस वृक्ष से बलराम को मारा । बलराम जी ने उसके सैंकड़ों टुकड़े कर दिये । तब क्रोध से दूसरे वृक्ष से मारा, उसके भी सैंकड़ों टुकड़े कर दिये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

एवं युध्यन् भगवता भग्ने भग्ने पुनः पुनः ।
आकृष्य सर्वतो वृक्षान् निर्वृक्षमकरोद् वनम् ॥२२॥

पदच्छेद— एवम् युध्यन् भगवता भग्ने भग्ने पुनः पुनः ।
आकृष्य सर्वतः वृक्षान् निर्वृक्षम् अकरोत् वनम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	आकृष्य	९. उखाड़-उखाड़ कर
युध्यन्	३. युद्ध करते हुये (उसने)	सर्वतः	७. सब ओर से
भगवता	२. भगवान् बलराम जी से	वृक्षान्	८. वृक्षों को
भग्ने	४. एक-एक वृक्ष के	निर्वृक्षम्	११. वृक्ष विहीन
भग्ने	५. टूट जाने पर	अकरोद्	१२. कर दिया
पुनः पुनः ।	६. बारम्बार	वनम् ॥	१०. वन को

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् बलराम जी से युद्ध करते हुये उसने एक-एक वृक्ष के टूट जाने पर बारम्बार सब ओर से वृक्षों को उखाड़-उखाड़ कर वन को वृक्ष-विहीन कर दिया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

ततोऽमुञ्चच्छिलावर्षं बलस्योपर्यमर्षितः ।
तत् सर्वं चूर्णयामास लीलया मुसलायुधः ॥२३॥

पदच्छेद— ततः अमुञ्चत् शिला वर्षं बलस्य उपरि अमर्षितः ।
तत् सर्वम् चूर्णयामास लीलया मुसल आयुधः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर वह	तत्	८.	उन
अमुञ्चत्	७.	करने लगा	सर्वम्	९.	सबको
शिला	५.	चट्टानों की	चूर्णयामास	१३.	चकनाचूर कर दिया
वर्षम्	६.	वर्षा	लीलया	१२.	लीला पूर्वक
बलस्य	३.	बलराम जी के	मुसल	१०.	मुसल
उपरि	४.	ऊपर	आयुधः ॥	११.	अस्त्र वाले बलराम ने
अमर्षितः ।	२.	बहुत चिढ़कर			

श्लोकार्थ—तदनन्तर वह बहुत चिढ़कर बलराम जी के ऊपर चट्टानों की वर्षा करने लगा । उन सबको मुसल अस्त्र वाले बलराम ने लीला पूर्वक चकनाचूर कर दिया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स बाहू तालसङ्काशौ मुष्टीकृत्य कपीश्वरः ।
आसाद्य रोहिणीपुत्रं ताभ्यां वक्षस्यरूरुजत् ॥२४॥

पदच्छेद— सः बाहू ताल सङ्काशौ मुष्टी कृत्य कपीश्वरः ।
आसाद्य रोहिणी पुत्रम् ताभ्याम् वक्षसि अरूरुजत् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उस	आसाद्य	९.	पास जाकर
बाहू	४.	बाँहों से	रोहिणी	७.	रोहिणी के
तालसङ्काशौ	१३.	अपनी ताल के समान	पुत्रम्	८.	पुत्र (बलराम जी के)
मुष्टी	५.	घूँसा	ताभ्याम्	११.	घूँसे से
कृत्य	६.	बाँध कर	वक्षसि	१०.	उनकी छाती पर
कपीश्वरः ।	२.	वानरराज ने	अरूरुजत् ॥	१२.	प्रहार किया

श्लोकार्थ—उस वानर राज ने अपनी ताल के समान बाँहों से घूँसा बाँध कर रोहिणी के पुत्र के पास जाकर उनकी छाती पर घूँसे से प्रहार किया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

यादवेन्द्रोऽपि तं दोर्भ्यां त्यक्त्वा मुसललाङ्गले ।
जत्रावभ्यर्दयत्क्रुद्धः सोऽपतद् रुधिरं वमन् ॥२५॥

पदच्छेद— यादवेन्द्रः अपि तम् दोर्भ्यां त्यक्त्वा मुसल लाङ्गले ।
जत्रौ अभ्यर्दयत् क्रुद्धः सः अपतत् रुधिरम् वमन् ॥

शब्दार्थ—

यादवेन्द्रः	२.	यदुवंश शिरोमणि बलराम ने	जत्रौ	९.	जत्रु स्थान (हँसली) को
अपि	३.	भी	अभ्यर्दयत्	१०.	दवा दिया
तम्	८.	उसके	क्रुद्धः	१.	कुपित
दोर्भ्याम्	७.	दोनों बाँहों से	सः	११.	वह
त्यक्त्वा	६.	त्याग कर	अपतत्	१४.	गिर पड़ा
मुसल	५.	मूसल	रुधिरम्	१२.	रक्त
लाङ्गले ।	४.	हल और	वमन् ॥	१३.	उगलता हुआ

श्लोकार्थ—कुपित यदुवंश शिरोमणि बलराम ने भी हल और मूसल त्याग कर दोनों बाँहों से उसके जत्रु स्थान हँसली को दवा दिया । वह रक्त उगलता हुआ गिर पड़ा ॥

षड्विंशः श्लोकः

चकम्पे तेन पतता सटङ्कः सवनस्पतिः ।
पर्वतः कुरुशार्दूल वायुना नौरिवाम्भसि ॥२६॥

पदच्छेद— चकम्पे तेन पतता सटङ्कः सवनस्पतिः ।
पर्वतः कुरुशार्दूल वायुना नौः इव अम्भसि ॥

शब्दार्थ—

चकम्पे	७.	हिल गया	पर्वतः	६.	पर्वत
तेन	२.	उसके	कुरुशार्दूल	१.	हे परीक्षित् !
पतता	३.	गिरने से	वायुना	१०.	वायु से
सटङ्कः	५.	चोटियों के साथ	नौः	११.	डोंगी (नाव) डगमगाती है
सवनस्पतिः ।	४.	वृक्षों और	इव	८.	जैसे
			अम्भसि ॥	९.	जल में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! उसके गिरने से वृक्षों और चोटियों के साथ पर्वत हिल गया । जैसे जल में वायु से डोंगी (नाव) डगमगाती है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

जयशब्दो नमः शब्दः साधु साध्विति चाम्बरे ।
सुरसिद्धमुनीन्द्राणामासीत् कुसुमवर्षिणाम् ॥२७॥

पदच्छेद— जय शब्दः नमः शब्दः साधु-साधु इति च अम्बरे ।
सुर सिद्ध मुनीन्द्राणाम् आसीत् कुसुम वर्षिणाम् ॥

शब्दार्थ—

जय	७.	जय	अम्बरे ।	१.	आकाश में
शब्दः	८.	शब्द	सुर	४.	देवताओं
नमः	९.	नमः	सिद्ध	५.	सिद्धों और
शब्दः	१०.	शब्द	मुनीन्द्राणाम्	६.	ऋषि आदि का
साधु-साधु	१२.	साधु-साधु	आसीत्	१४.	होने लगे
इति	१३	यह शब्द	कुसुम	२.	फूल
च	११.	और	वर्षिणाम् ॥	३.	बरसाने वाले

श्लोकार्थ—आकाश में फूल बरसाने वाले देवताओं, सिद्धों और ऋषि आदि का जय शब्द, नमः शब्द और साधु-साधु यह शब्द होने लगा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

एवं निहत्य द्विविदं जगद्व्यतिकरावहम् ।
संस्तूयमानो भगवाञ्जनैः स्वपुरमाविशत् ॥२८॥

पदच्छेद— एवम् निहत्य द्विविदम् जगत् व्यतिकरावहम् ।
संस्तूयमानः भगवान् जनैः स्व पुरम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	संस्तूयमानः	८.	स्तुति किये जाते हुये
निहत्य	५.	मार कर	भगवान्	६.	भगवान् बलराम
द्विविदम्	४.	द्विविद को	जनैः	७.	लोगों द्वारा
जगत्	२.	संसार के लिये	स्व पुरम्	९.	अपने नगर में
व्यतिकरावहम् ।	३.	कष्टदायक	आविशत् ॥	१०	आये

श्लोकार्थ—इस प्रकार संसार के लिये कष्टदायक द्विविद को मार कर भगवान् बलराम लोगों द्वारा स्तुति किये जाते हुये अपने नगर में आये ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
द्विविदवधो नाम सप्तषष्टितमः अध्यायः ॥६७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अष्टषष्टितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—दुर्योधनसुतां राजन् लक्ष्मणां समितिञ्जयः ।

स्वयंवरस्थामहरत् साम्बो जाम्बवतीसुतः ॥१॥

पदच्छेद— दुर्योधन सुताम् राजन् लक्ष्मणाम् समितिञ्जयः ।

स्वयम्बर स्थाम् अहरत् साम्बः जाम्बवती सुतः ॥

शब्दार्थ—

दुर्योधन	७.	दुर्योधन की	स्वयंवर	५.	स्वयंवर में
सुताम्	८.	पुत्री	स्थाम्	६.	स्थित
राजन्	१.	हे राजन् !	अहरत्	१०.	हर ले आये
लक्ष्मणाम्	९.	लक्ष्मणा को	साम्बः	४.	साम्ब
समितिञ्जयः ।	२.	युद्धविजयी	जाम्बवती सुतः ॥	३.	जाम्बवती पुत्र

श्लोकार्थ—हे राजन् ! युद्धविजयी साम्ब स्वयंवर में स्थित दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा को हर ले आये ॥

द्वितीयः श्लोकः

कौरवाः कुपिता ऊचुर्दुर्विनीतोऽयमर्भकः ।

कदर्थीकृत्य नः कन्यामकामामहरद् बलात् ॥२॥

पदच्छेद— कौरवाः कुपिताः ऊचुः दुर्विनीतः अयम् अर्भकः ।

कदर्थी कृत्य नः कन्याम् अकामाम् अहरत् बलात् ॥

शब्दार्थ—

कौरवाः	१.	कौरव	कदर्थीकृत्य	८.	नीचा दिखा कर
कुपिताः	२.	क्रुद्ध होकर	नः	७.	हमें
ऊचुः	३.	कहने लगे	कन्याम्	१०.	कन्या का
दुर्विनीतः	५.	ढीठ	अकामाम्	९.	न चाहने वाली
अयम्	४.	इस	अहरत्	१२.	अपहरण किया है
अर्भकः ।	६.	बालक ने	बलात् ॥	११.	बलपूर्वक

श्लोकार्थ—कौरव क्रुद्ध होकर कहने लगे । इस ढीठ बालक ने हमें नीचा दिखाकर न चाहने वाली कन्या का बलपूर्वक अपहरण किया है ॥

तृतीयः श्लोकः

बध्नीतेमं दुर्विनीतं किं करिष्यन्ति वृष्णयः।
येऽस्मत्प्रसादोपचितां दत्तां नो भुञ्जते महीम् ॥३॥

पदच्छेद— बध्नीत इमम् दुर्विनीतम् किम् करिष्यन्ति वृष्णयः।
ये अस्मत् प्रसाद उपचिताम् दत्ताम् नः भुञ्जते महीम् ॥

शब्दार्थ —

बध्नीत	३.	बाँध लो	ये	७.	जो
इमम्	१.	इस	अस्मत्	८.	हमारी
दुर्विनीतम्	२.	ढीठ को	प्रसादः	९.	कृपा से
किम्	५.	क्या	उपचिताम्	१०.	समृद्धिशालिनी
करिष्यन्ति	६	कर लेंगे	दत्ताम् नः	११.	हमारी दी हुई
वृष्णयः।	४.	यदुवंशी हमारा	भुञ्जते महीम् ॥	१२.	भूमि का भोग कर रहे हैं

श्लोकार्थ—इस ढीठ को बाँध लो यदुवंशी हमारा क्या कर लेंगे। जो हमारी कृपा से समृद्धि-शालिनी हमारी दी हुई भूमि का उपभोग कर रहे हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

निगृहीतं सुतं श्रुत्वा यद्येष्यन्तीह वृष्णयः।
भग्नदर्पाः शमं यान्ति प्राणा इव सुसंयताः ॥४॥

पदच्छेद— निगृहीतम् सुतम् श्रुत्वा यदि एष्यन्तीह वृष्णयः।
भग्नदर्पाः शमम् यान्ति प्राणाः इव सुसंयताः ॥

शब्दार्थ—

निगृहीतम्	३.	बँधे हुये	भग्नदर्पाः	७.	अभिमान चूर करने पर
सुतम्	४.	पुत्र के बारे में	शमम्	८.	ठण्डे
श्रुत्वा	५.	सुन कर	यान्ति	९.	पड़ जायेंगे
यदि	१.	यदि	प्राणाः	१२.	इन्द्रियाँ शान्त हो जाती हैं
एष्यन्ति इह	६.	यहाँ आयेंगे तो वे	इव	१०.	जैसे
वृष्णयः।	२.	यदुवंशी लोग	सुसंयताः ॥	११.	पूर्ण संयम से

श्लोकार्थ—यदि यदुवंशी लोग बँधे हुये पुत्र के बारे में सुन कर यहाँ आयेंगे तो वे अभिमान चूर करने पर ठण्डे पड़ जायेंगे। जैसे पूर्ण संयम से इन्द्रियाँ शान्त हो जाती हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

इति कर्णः शलो भूरिर्यज्ञकेतुः सुयोधनः ।
साम्बमारेभिरे बद्धुं कुरुवृद्धानुमोदिताः ॥५॥

पदच्छेद— इति कर्णः शलः भूरिः यज्ञकेतुः सुयोधनः ।
साम्बम् आरेभिरे बद्धुम् कुरु वृद्ध अनुमोदिताः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	साम्बम्	१०.	साम्ब को
कर्णः	५.	कर्ण	आरेभिरे	१२.	विचार किया
शलः	६.	शल	बद्धुम्	११.	बाँधने का
भूरिः	७.	भूरिश्रवा	कुरु	२.	कुरुवंश के
यज्ञकेतुः	८.	यज्ञकेतु और	वृद्ध	३.	वृद्धों का
सुयोधनः ।	९.	दुर्योधन ने	अनुमोदिताः ॥	४.	अनुमोदन प्राप्त करके

श्लोकार्थ—इस प्रकार कुरु वंश के वृद्धों का अनुमोदन प्राप्त करके कर्ण, शल, भूरिश्रवा, यज्ञकेतु और दुर्योधन ने साम्ब को बाँधने का विचार किया ॥

षष्ठः श्लोकः

दृष्ट्वानुधावतः साम्बो धार्तराष्ट्रान् महारथः ।
प्रगृह्य रुचिरं चापं तस्थौ सिंह इवैकलः ॥६॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा अनुधावतः साम्बः धार्त राष्ट्रान् महारथः ।
प्रगृह्य रुचिरम् चापम् तस्थौ सिंहः इव एकलः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	६.	देख कर	प्रगृह्य	९.	चढ़ा कर
अनुधावतः	३.	पीछा कर रहे	रुचिरम्	७.	एक सुन्दर
साम्बः	२.	साम्ब ने	चापम्	८.	धनुष पर बाण
धार्त	४.	धृत	तस्थौ	१२.	डट कर खड़े हो गये
राष्ट्रान्	५.	राष्ट्र के पुत्रों को	सिंहः इव	१०.	सिंह के समान
महारथः ।	१.	महारथी	एकलः ॥	११.	अकेले ही

श्लोकार्थ—महारथी साम्ब ने पीछा कर रहे धृतराष्ट्र के पुत्रों को देख कर एक सुन्दर धनुष पर बाण चढ़ा कर सिंह के समान अकेले ही डट कर खड़े हो गये ॥

सप्तमः श्लोकः

तं ते जिघृक्षवः क्रुद्धास्तिष्ठ तिष्ठेति भाषिणः ।
आसाद्य धन्विनो बाणैः कर्णाग्रण्यः समाकिरन् ॥७॥

पदच्छेद— तम् ते जिघृक्षवः क्रुद्धाः तिष्ठ तिष्ठ इति भाषिणः ।
आसाद्य धन्विनः बाणैः कर्ण अग्रण्यः समाकिरन् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१. उन्हें	आसाद्य	११. जा कर
ते	३. वे लोग	धन्विनः	१०. धनुर्धारी (साम्ब के) पास
जिघृक्षवः	२. पकड़ने के इच्छुक	बाणैः	१२. बाणों की
क्रुद्धाः	४. क्रुद्ध होकर	कर्ण	८. कर्ण आदि
तिष्ठ तिष्ठ	५. ठहर-ठहर	अग्रण्यः	९. योद्धा
इति	६. इस प्रकार	समाकिरन् ॥	१३. वर्षा करने लगे
भाषिणः ।	७. कहने लगे		

श्लोकार्थ—उन्हें पकड़ने के इच्छुक वे लोग क्रुद्ध होकर ठहर-ठहर इस प्रकार कहने लगे । कर्ण आदि योद्धा धनुर्धारी साम्ब के पास जाकर बाणों की वर्षा करने लगे ॥

अष्टमः श्लोकः

सोऽपविद्धः कुरुश्रेष्ठ कुरुभिर्यदुनन्दनः ।
नामृष्यत्तदचिन्त्यार्भः सिंह क्षुद्रमृगैरिव ॥८॥

पदच्छेद— सः अपविद्धः कुरुश्रेष्ठ कुरुभिः यदुनन्दनः ।
न अमृष्यत् तत् अचिन्त्य अर्भः सिंहः क्षुद्र मृगैः इव ॥

शब्दार्थ—

सः	२. वे	तत्	८. उनके अपराध को
अपविद्धः	७. विंधे जाने पर भी	अचिन्त्य	३. अचिन्त्य ऐश्वर्यशाली
कुरुश्रेष्ठ	१. हे परीक्षित् !	अर्भः	४. श्रीकृष्ण के पुत्र
कुरुभिः	६. कौरवों द्वारा	सिंहः क्षुद्र	११. सिंह तुच्छ
यदुनन्दनः ।	५. यदुनन्दन साम्ब	मृगैः	१२. हिरनों के अपराध को नहीं सह सकता है
न अमृष्यत्	९. सह नहीं सके	इव ॥	१०. जैसे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वे अचिन्त्य ऐश्वर्य शाली श्रीकृष्ण के पुत्र यदुनन्दन साम्ब कौरवों द्वारा विंधे जाने पर भी उनके अपराध को सह नहीं सके । जैसे सिंह तुच्छ हिरनों के अपराध को सह नहीं सकता है ॥

नवमः श्लोकः

विस्फूर्ज्य रुचिरं चापं सर्वान् विव्याध सायकैः ।
कर्णादीन् षड्रथान् वीरास्तावद्भिर्युगपत् पृथक् ॥६॥

पदच्छेद— विस्फूर्ज्य रुचिरम् चापम् सर्वान् विव्याध सायकैः ।
कर्णआदीन् षड्रथान् वीरान् तावद्भिः युगपत् पृथक् ॥

शब्दार्थ—

विस्फूर्ज्य	३.	टंकार करके	कर्णआदीन्	६.	कर्ण आदि
रुचिरम्	१.	साम्ब ने सुन्दर	षड्रथान्	५.	छः रथों पर सवान्
चापम्	२.	धनुष की	वीरान्	८.	वीरों को
सर्वान्	७.	सभी	तावद्भिः	१०.	उतने ही
विव्याध	१२.	वेध दिया	युगपत्	९.	एक साथ
सायकैः ।	११.	बाणों से	पृथक् ॥	४.	अलग-अलग

श्लोकार्थ—साम्ब ने सुन्दर धनुष की टंकार करके अलग-अलग छः रथों पर सवार कर्ण आदि सभी वीरों को एक साथ उतने ही बाणों से वेध दिया ॥

दशमः श्लोकः

चतुर्भिश्चतुरो वाहानेकैकेन च सारथीन् ।
रथिनश्च महेष्वासांस्तस्य तत्तेऽभ्यपूजयन् ॥१०॥

पदच्छेद— चतुर्भिः चतुरः वाहान् एक एकेन च सारथीन् ।
रथिनः च महेष्वासान् तस्य तत् तेभ्यः अपूजयन् ॥

शब्दार्थ—

चतुर्भिः	१.	चार-चार बाण	रथिनः	८.	रथी वीरों पर छोड़ा
चतुरः	२.	उनके चार-चार	च	९.	और
वाहान्	३.	घोड़ों पर	महेष्वासान्	१०.	महान् पराक्रमी
एक	४.	एक-एक	तस्य	११.	साम्ब के
एकेन	६.	एक-एक	तत्	१२.	उस पराक्रमी की
च	७.	और (उनके)	तेभ्यः	१३.	उन लोगों ने
सारथीन् ।	५.	सारथियों पर	अपूजयन् ॥	१४.	प्रशंसा की

श्लोकार्थ—चार-चार बाण उनके चार-चार घोड़ों पर एक-एक सारथियों पर और एक एक उनके रथी वीरों पर छोड़ा । और महान् पराक्रमी साम्ब के उस पराक्रम की उन लोगों ने प्रशंसा की ॥

एकादशः श्लोकः

तं तु ते विरथं चक्रुश्चत्वारश्चतुरो हयान् ।
एकस्तु सारथिं जघ्ने चिच्छेदान्यः शरासनम् ॥११॥

पदच्छेद— तम् तु ते विरथम् चक्रुः चत्वारः चतुरः हयान् ।
एकः तु सारथिम् जघ्ने चिच्छेद अन्यः शरासनम् ॥

शब्दार्थ—

तम् तु	२.	साम्ब को	एकः तु	८.	एक ने
ते	१.	उन लोगों ने	सारथिम्	९.	सारथी को
विरथम्	३.	रथ हीन	जघ्ने	१०.	मार दिया (और)
चक्रुः	४.	कर दिया	चिच्छेद	१३.	काट दिया
चत्वारः	५.	चार वीरों ने	अन्यः	११.	दूसरे ने
चतुरः	६.	चार	शरासनम् ॥	१२.	धनुष को
हयान् ।	७.	घोड़ों को (तथा)			

श्लोकार्थ—उन लोगों ने साम्ब को रथहीन कर दिया। चार वीरों ने चार घोड़ों को मार दिया। तथा एक ने सारथी को मार दिया। और दूसरे ने धनुष को काट दिया॥

द्वादशः श्लोकः

तं बद्ध्वा विरथीकृत्य कृच्छ्रेण कुरवो युधि ।
कुमारं स्वस्य कन्यां च स्वपुरं जयिनोऽविशन् ॥१२॥

पदच्छेद— तम् बद्ध्वा विरथीकृत्य कृच्छ्रेण कुरवः युधि ।
कुमारम् स्वस्य कन्याम् च स्वपुरम् जयिनः अविशन् ॥

शब्दार्थ—

तम्	४.	उस साम्ब को	कुमारम्	७.	उन्हें (तथा)
बद्ध्वा	६.	बांध कर	स्वस्य	८.	अपनी
विरथीकृत्य	५.	रथ हीन करके	कन्याम्	९.	कन्या को लेकर
कृच्छ्रेण	३.	कठिनाई से	च स्वपुरम्	१०.	तथा अपने नगर में
कुरवः	२.	कौरवों ने	जयिनः	११.	जय मनाते हुये
युधि ।	१.	युद्ध में	अविशन् ॥	१२.	लौट आये

श्लोकार्थ—युद्ध में कौरवों ने कठिनाई से उस साम्ब को रथहीन करके और बांध कर उन्हें तथा अपनी कन्या को लेकर अपने नगर में जय मनाते हुये लौट आये॥

त्रयोदशः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा नारदोक्तेन राजन् सञ्जातमन्यवः ।
कुरून् प्रत्युद्यमं चक्रुरुग्रसेनप्रचोदिताः ॥१३॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा नारद उक्तेन राजन् सञ्जात मन्यवः ।
कुरून् प्रति उद्यमम् चक्रुः उग्रसेन प्रचोदिताः ॥

शब्दार्थ—

तत्	३.	वह (समाचार)	कुरून्	९.	कौरवों
श्रुत्वा	४.	सुन कर	प्रति	१०.	पर
नारद उक्तेन	२.	नारद के द्वारा	उद्यमम्	११.	चढ़ाई करने की तैयारी
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	चक्रुः	१२.	करने लगे
सञ्जात	६.	भर कर (यदुवंशी)	उग्रसेन	७.	उग्रसेन की
मन्यवः ।	५.	क्रोध में	प्रचोदिताः ॥	८.	आज्ञा पाकर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! नारद के द्वारा वह समाचार सुन कर क्रोध में भर कर यदुवंशी उग्रसेन की आज्ञा पाकर कौरवों पर चढाई करने की तैयारी करने लगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सान्त्वयित्वा तु तान् रामः सन्नद्धान् वृष्णिपुङ्गवान् ।
नैच्छत् कुरूणां वृष्णीनां कलिं कलिमलापहः ॥१४॥

पदच्छेद— सान्त्वयित्वा तु तान् रामः सन्नद्धान् वृष्णि पुङ्गवान् ।
न ऐच्छत् कुरूणाम् वृष्णीनाम् कलिम् कलिमल अपहः ॥

शब्दार्थ—

सान्त्वयित्वा	१३.	शान्त कर दिया	न	७.	(ठीक) नहीं
तु तान्	१०.	उन	ऐच्छत्	८.	समझता (अतः)
रामः	३.	बलराम ने	कुरूणाम्	४.	कुरुवंशियों और
सन्नद्धान्	९.	युद्ध के लिये तैयार	वृष्णीनाम्	५.	यदुवंशियों के
वृष्णि	१२.	यदुवंशियों को समझाकर	कलिम्	६.	झगड़े को (मैं)
पुङ्गवान् ।	११.	श्रेष्ठ	कलिमल	१.	कलियुग के
			अपहः ॥	२.	पाप-ताप को मिटाने वाले

श्लोकार्थ—कलियुग के पाप-ताप को मिटाने वाले बलराम ने कुरुवंशियों और यदुवंशियों के झगड़े को मैं ठीक नहीं समझता । अतः उन श्रेष्ठ यदुवंशियों को समझा कर शान्त कर दिया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

जगाम हास्तिनपुरं रथेनादित्यवर्चसा ।
ब्राह्मणैः कुलवृद्धैश्च वृतश्चन्द्र इव ग्रहैः ॥१५॥

पदच्छेद— जगाम हास्तिनपुरम् रथेन आदित्य वर्चसा ।
ब्राह्मणैः कुलवृद्धैः च वृतः चन्द्रः इव ग्रहैः ॥

शब्दार्थ—

जगाम	१२.	गये	कुलवृद्धैः	९.	कुल के बड़े बूढ़ों के
हास्तिनपुरम्	११.	हस्तिनापुर	च	८.	एवम्
रथेन	३.	रथ से वे	वृतः	१०.	साथ
आदित्य	१.	सूर्य के समान	चन्द्रः	५.	चन्द्रमा के
वर्चसा ।	२.	चमकीले	इव	६.	समान
ब्राह्मणैः	७.	ब्राह्मणों	ग्रहैः ॥	४.	ग्रहों के साथ

श्लोकार्थ—सूर्य के समान चमकीले रथ से वे ग्रहों के साथ चन्द्रमा के समान ब्राह्मणों एवम् कुल के बड़े बूढ़ों के साथ हस्तिनापुर गये ॥

षोडशः श्लोकः

गत्वा गजाह्वयं रामो बाह्योपवनमास्थितः ।
उद्धवं प्रेषयामास धृतराष्ट्रं बुभुत्सया ॥१६॥

पदच्छेद— गत्वा गज आह्वयम् रामः बाह्य उपवनम् आस्थितः ।
उद्धवम् प्रेषयामास धृतराष्ट्रम् बुभुत्सया ॥

शब्दार्थ—

गत्वा	२.	पहुँचकर	आस्थितः ।	६.	ठहर गये (और)
गज आह्वयम्	१.	हस्तिनापुर	उद्धवम्	८.	उद्धव को
रामः	३.	बलराम जी	प्रेषयामास	१०.	भेजा
बाह्य	४.	नगर के बाहर	धृतराष्ट्रम्	९.	धृतराष्ट्र के पास
उपवनम्	५.	एक उद्यान में	बुभुत्सया ॥	७.	(सारी बातें) जानने के लिये

श्लोकार्थ—हस्तिनापुर पहुँचकर बलराम जी नगर के बाहर एक उद्यान में ठहर गये। और सारी बातें जानने के लिये उद्धव को धृतराष्ट्र के पास भेजा ॥

सप्तदशः श्लोकः

सोऽभिवन्द्याम्बिकापुत्रं भीष्मं द्रोणं च बाह्लिकम् ।
दुर्योधनं च विधिवद् राममागतमब्रवीत् ।।१७।।

पदच्छेद— स: अभिवन्द्य अम्बिका पुत्रम् भीष्मम् द्रोणम् च बाह्लिकम् ।
दुर्योधनम् च विधिवत् रामम् आगतम् अब्रवीत् ।।

शब्दार्थ—

स:	१. उन उद्धव ने	दुर्योधनम्	८. दुर्योधन की
अभिवन्द्य	११. वन्दना की (तथा)	च	७. और
अम्बिका	३. धृतराष्ट्र	विधि	९. विधि
पुत्रम्	२. अम्बिका पुत्र	वत्	१०. पूर्वक
भीष्मम्	४. भीष्म पितामह	रामम्	१२. बलराम जी का
द्रोणम्	६. द्रोणाचार्य की	आगतम्	१३. आगमन
च बाह्लिकम् ।	५. बाह्लिक और	अब्रवीत् ।।	१४. बताया

श्लोकार्थ—उद्धव ने अम्बिकापुत्र धृतराष्ट्र, भीष्मपितामह बाह्लिक और द्रोणाचार्य की और विधि पूर्वक दुर्योधन की वन्दना की । तथा बलराम जी का आगमन बताया ।।

अष्टादशः श्लोकः

तेऽतिप्रीतास्तमाकर्ण्य प्राप्तं रामं सुहृत्तमम् ।
तमर्चयित्वाभिययुः सर्वे मङ्गलपाणयः ।।१८।।

पदच्छेद— ते अति प्रीता: तम् आकर्ण्य प्राप्तम् रामम् सुहृत्तमम् ।
तम् अर्चयित्वा अभिययुः सर्वे मङ्गल पाणयः ।।

शब्दार्थ—

ते	१. वे	तम्	८. उन उद्धव का
अतिप्रीता:	७. अत्यन्त प्रसन्न हुये (और)	अर्चयित्वा	९. सत्कार करके
तम्	२. उन	अभिययुः	१३. अगवानी करने चले
आकर्ण्य	६. सुन कर	सर्वे	१२. सब (बलराम जी की
प्राप्तम्	५. आये हुये	मङ्गल	११. माँगलिक सामग्री लेकर
रामम्	४. बलराम जी को	पाणयः ।।	१०. हाथों में
सुहृत्तमम् ।	३. परमबन्धु		

श्लोकार्थ— वे उन परम बन्धु बलराम जी को आये सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये । और उन उद्धव का सत्कार करके हाथों में माँगलिक सामग्री लेकर सब बलराम जी की अगवानी करने चले ।।

एकोनविंशः श्लोकः

तं सङ्गम्य यथान्यायं गामर्घ्यं च न्यवेदयन् ।
तेषां ये तत्प्रभावज्ञाः प्रणेमुः शिरसा बलम् ॥१९॥

पदच्छेद— तम् सङ्गम्य यथा न्यायम् गाम् अर्घ्यम् च न्यवेदयन् ।
तेषाम् ये तत् प्रभावज्ञाः प्रणेमुः शिरसा बलम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उनसे	तेषाम्	८.	उन लोगों में से
सङ्गम्य	४.	मिल कर	ये तत्	९.	जो उन बलराम के
यथा	२.	अनुसार	प्रभावज्ञाः	१०.	प्रभाव के जानकार थे (उन्होंने)
न्यायम्	१.	सम्बन्ध के	प्रणेमुः	१३.	प्रणाम किया
गाम्	५.	गाय	शिरसा	१२.	सिर झुका कर
अर्घ्यम् च	६.	और अर्घ्य	बलम् ॥	११.	बलराम जी को
न्यवेदयन् ।	७.	प्रदान किया			

श्लोकार्थ—सम्बन्ध के अनुसार उनसे मिलकर गाय और अर्घ्य प्रदान किया। उन लोगों में से जो उन बलराम के प्रभाव के जानकार थे। उन्होंने बलराम जी को सिर झुका कर प्रणाम किया ॥

विंशः श्लोकः

बन्धून् कुशलिनः श्रुत्वा पृष्ट्वा शिवमनामयम् ।
परस्परमथो रामो बभाषेऽविक्लवं वचः ॥२०॥

पदच्छेद— बन्धून् कुशलिनः पृष्ट्वा श्रुत्वा शिवम् अनामयम् ।
परस्परम् अथो रामः बभाषे अविक्लवम् वचः ॥

शब्दार्थ —

बन्धून्	६.	बन्धुओं की	परस्परम्	२.	एक दूसरे का
कुशलिनः	७.	कुशल	अथो	१.	तदनन्तर
श्रुत्वा	८.	सुन कर	रामः	९.	बलराम जी
पृष्ट्वा	५.	पूछा (तथा)	बभाषे	१२.	बोले
शिवम्	३.	कुशल	अविक्लवम्	१०.	धीरता पूर्वक
अनामयम् ।	४.	मङ्गल	वचः ॥	११.	यह वचन

श्लोकार्थ—तदनन्तर एक दूसरे का कुशल-मङ्गल पूछा। तथा बन्धुओं की कुशल सुन कर बलराम जी धीरता पूर्वक यह वचन बोले ॥

एकविंशः श्लोकः

उग्रसेनः क्षितीशेशो यत् व आज्ञापयत् प्रभुः ।
तदव्यग्रधियः श्रुत्वा कुरुध्वं माविलम्बितम् ॥२१॥

पदच्छेद— उग्रसेनः क्षितीश ईशः यत् वः आज्ञापयत् प्रभुः ।
तत् अव्यग्रधियः श्रुत्वा कुरुध्वम् मा विलम्बितम् ॥

शब्दार्थ—

उग्रसेनः	४.	उग्रसेन ने	तत्	७.	उसे
क्षितीश	१.	पृथ्वीपतियों के	अव्यग्रधियः	८.	एकाग्रता से
ईशः	२.	शासक	श्रुत्वा	९.	सुन कर
यत् वः	५.	जो आप लोगों को	कुरुध्वम्	१२.	उसका पालन कीजिये
आज्ञापयत्	६.	आज्ञा दी है	मा	१०.	बिना
प्रभुः ।	३.	प्रभु	विलम्बितम् ॥	११.	विलम्ब किये

श्लोकार्थ—पृथ्वी-पतियों के शासक प्रभु उग्रसेन ने जो आप लोगों को आज्ञा दी है। उसे एकाग्रता से सुन कर बिना विलम्ब किये उसका पालन कीजिये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

यद् यूयं बहवस्त्वेकं जित्वाधर्मेण धार्मिकम् ।
अबध्नीताथ तन्मृष्ये बन्धूनामैक्यकाम्यया ॥२२॥

पदच्छेद— यद् यूयम् बहवः तु एकम् जित्वा अधर्मेण धार्मिकम् ।
अबध्नीत अथ तत् मृष्ये बन्धूनाम् ऐक्य काम्यया ॥

शब्दार्थ—

यद	२.	जो	अबध्नीत	९.	बन्दी बना लिया है
यूयम्	३.	आप लोगों ने	अथ	८.	पश्चात्
बहवः	१.	बहुत से	तत्	१०.	सो
तु एकम्	५.	अकेले	मृष्ये	१४.	हम सह लेते हैं
जित्वा	७.	जीत कर	बन्धूनाम्	११.	सम्बन्धियों में
अधर्मेण	४.	अधर्म से	ऐक्य	१२.	एकता बनी रहे
धार्मिकम् ।	६.	धर्मात्मा (साम्ब) को	काम्यया ॥	१३.	इस कारण से

श्लोकार्थ—बहुत से जो आप लोगों ने अधर्म से अकेले धर्मात्मा साम्ब को जीत कर पश्चात् बन्दी बना लिया है, सो सम्बन्धियों में एकता बनी रहे इस कारण से हम सह लेते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

वीर्यशौर्यबलोन्नद्धमात्मशक्तिसमं वचः ।
कुरवो बलदेवस्य निशम्योचुः प्रकोपिताः ॥२३॥

पदच्छेद— वीर्यं शौर्य बल उन्नद्धम् आत्मशक्ति समम् वचः ।
कुरवः बल देवस्य निशम्य ऊचुः प्रकोपिताः ॥

शब्दार्थ—

वीर्यं	१.	वीरता	कुरवः	६.	कौरव लोग
शौर्यबल	२.	शूरता और बल-पौरुष के	बलदेवस्य	६.	बलराम की
उन्नद्धम	३.	उत्कर्ष से परिपूर्ण (और)	निशम्य	८.	सुनकर
आत्मशक्ति	४.	अपनी शक्ति के	ऊचुः	११.	बोले
समम्	५.	अनुरूप	प्रकोपिताः ॥	१०.	क्रोध से (तिलमिला कर)
वचः ।	७.	वाणी की			

श्लोकार्थ—वीरता, शूरता और बल-पौरुष के उत्कर्ष से परिपूर्ण और अपनी शक्ति के अनुरूप बलराम की वाणी को सुनकर कौरव लोग क्रोध से तिलमिला कर बोले ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अहो महच्चित्रमिदं कालगत्या दुरत्यया ।
आरुरुक्षत्युपानद् वै शिरो मुकुटसेवितम् ॥२४॥

पदच्छेद— अहो महत् चित्रम् इदम् कालगत्या दुरत्यया ।
आरुरुक्षति उपानत् वै शिरः मुकुट सेवितम् ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	ओह !	आरुरुक्षति	१२.	चढ़ना चाहती है
महत्	२.	बड़े	उपानत्	८.	आज पैरों की जूती
चित्रम्	३.	आश्चर्य की बात है	वै	७.	तभी तो
इदम्	४.	इस	शिरः	११.	सिर पर
कालगत्या	५.	काल गति को	मुकुट	९.	मुकुट से
दुरत्यया ।	६.	टालना कठिन है	सेवितम् ॥	१०.	सेवित

श्लोकार्थ—ओह ! बड़े आश्चर्य की बात है, इस काल गति को टालना कठिन है । तभी तो आज पैरों की जूती मुकुट से सेवित सिर पर चढ़ना चाहती है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

एते यौनेन सम्बद्धाः सहशय्यासनाशनाः ।
वृष्णयस्तुल्यतां नीता अस्मद्दत्तनृपासनाः ॥२५॥

पदच्छेद— एते यौनेन सम्बद्धाः सह शय्या आसन अशनाः ।
वृष्णयः तुल्यताम् नीताः अस्मत् दत्त नृप आसनाः ॥

शब्दार्थ—

एते	१. ये	वृष्णयः	२. यदुवंशी
यौनेन	३. वैवाहिक	तुल्यताम्	१३. बराबरी में
सम्बद्धाः	४. सम्बन्ध से जुड़ कर	नीताः	१४. आ गये
सह	५. हमारे साथ	अस्मत्	९. हमारे
शय्या	६. सोने	दत्त	१०. दिये हुये
आसन	७. बैठने और	नृप	११. राजा के
अशनाः ।	८. खाने लगे (तथा)	आसनाः ॥	१२. आसन पर बैठ कर हमारी

श्लोकार्थ—ये यदुवंशी वैवाहिक सम्बन्ध से जुड़ कर हमारे साथ सोने, बैठने और खाने लगे। तथा हमारे दिये हुये राजा के आसन पर बैठ कर हमारी बराबरी में आ गये ॥

षड्विंशः श्लोकः

चामरव्यजने शङ्खमातपत्रं च पाण्डुरम् ।
किरीटमासनं शय्यां भुञ्जन्त्यस्मदुपेक्षया ॥२६॥

पदच्छेद— चामर व्यजने शङ्खम् आतपत्रम् च पाण्डुरम् ।
किरीटम् आसनम् शय्याम् भुञ्जन्ति अस्मत् उपेक्षया ॥

शब्दार्थ—

चामर	१. ये चँवर	किरीटम्	७. मुकुट
व्यजने	२. व्यजन (पंखा)	आसनम्	८. राजसिंहासन (तथा)
शङ्खम्	३. शङ्ख	शय्याम्	९. (राजोचित) शय्या आदि का
आतपत्रम्	५. छत्र	भुञ्जन्ति	१०. उपभोग
च	६. और	अस्मत्	११. हमारी
पाण्डुरम् ।	४. श्वेत	उपेक्षया ॥	१२. उपेक्षा के कारण कर रहे हैं

श्लोकार्थ—ये चँवर, व्यजन पंखा, शङ्ख, श्वेत छत्र मुकुट, राजसिंहासन तथा राजोचित शय्या आदि का उपभोग हमारी उपेक्षा के कारण कर रहे हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

अलं यदूनां नरदेवलाञ्छनैर्दातुः प्रतीपैः फणिनामिवामृतम् ।
येऽस्मत्प्रसादोपचिता हि यादवा आज्ञापयन्त्यद्य गतत्रपा बत ॥२७॥

पदच्छेद— अलम् यदूनाम् नरदेव लाञ्छनैः दातुः प्रतीपैः फणिनाम् इव अमृतम् ।
ये अस्मत् प्रसाद उपचिताः हि यादवाः आज्ञापयन्ति अद्य गतत्रपाः बत ॥

शब्दार्थ—

अलम्	४.	व्यर्थ हुआ (क्योंकि) वे	ये अस्मत्	८.	जो हमारी
यदूनाम्	१.	यदुवंशियों को	प्रसाद	९.	कृपा से
नरदेव	२.	राज	उपचिताः हि	१०.	इतने समृद्ध शाली हुये (वे) ही
लाञ्छनैः	३.	चिह्न देना	यादवाः	११.	यदुवंशी
दातुः प्रदीपैः	५.	देने वाले के ही विरुद्ध हो गये	आज्ञापयन्ति	१३.	हमें आज्ञा देते हैं
फणिनाम् इव	६.	जैसे साँपों को	अद्य गतत्रपाः	१२.	आज निर्लज्ज होकर
अमृतम् ।	७.	दूध देने से वे विरुद्ध ही होते हैं	बत ॥	१४.	यह बड़े खेद की बात है

श्लोकार्थ—यदुवंशियों को राज-चिह्न देना व्यर्थ हुआ । क्योंकि वे देने वाले के ही विरुद्ध हो गये । जैसे साँपों को दूध देने से वे विरुद्ध ही होते हैं । जो हमारी कृपा से इतने समृद्धिशाली हुये, वे ही आज निर्लज्ज होकर हमें आज्ञा दे रहे हैं । यह बड़े खेद की बात है ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कथमिन्द्रोऽपि कुरुभिर्भीष्मद्रोणार्जुनादिभिः ।
अदत्तमवरुन्धीत सिंहग्रस्तमिवोरणः ॥२८॥

पदच्छेद— कथम् इन्द्रः अपि कुरुभिः भीष्म द्रोण अर्जुन आदिभिः ।
अदत्तम् अवरुन्धीत सिंह ग्रस्तम् इव उरणः ॥

शब्दार्थ—

कथम्	८.	कैसे	अदत्तम्	५.	न दी गई वस्तु का
इन्द्रः	६.	इन्द्र	अवरुन्धीत	९.	उपभोग कर सकते हैं
अपि	७.	भी	सिंह	११.	सिंह के
कुरुभिः	१.	कुरुवंशी	ग्रस्तम्	१२.	ग्रास को
भीष्म	२.	भीष्म	इव	१०.	जैसे
द्रोण	३.	द्रोण	उरणः ॥	१३.	भेड़ा नहीं छीन सकता
अर्जुन आदिभिः	४.	अर्जुन आदि के द्वारा			

श्लोकार्थ—कुरुवंशी भीष्म, द्रोण, अर्जुन आदि के द्वारा न दी गई वस्तु का इन्द्र भी कैसे उपभोग कर सकते हैं । जैसे सिंह के ग्रास को भेड़ा नहीं छीन सकता ॥

एकोनविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—जन्मबन्धुश्रियोन्नद्धमदास्ते भरतर्षभ ।
आश्राव्य रामं दुर्वाच्यमसभ्याः पुरमाविशन् ॥२९॥

पदच्छेद— जन्म बन्धु श्रिया उन्नद्ध मदाः ते भरतर्षभ ।
आश्राव्य रामम् दुर्वाच्यम् असभ्याः पुरम् आविशन् ॥

शब्दार्थ—

जन्म	२.	अपनी कुलीनता	आश्राव्य	६.	सुनाकर
बन्धु	३.	बन्धुओं (तथा)	रामम्	७.	बलराम को
श्रियः	४.	धन सम्पत्ति के नशे से वे कुरुवंशी	दुर्वाच्यम्	८.	दुर्वचन
उन्नद्ध	६.	चूर हो रहे थे	असभ्याः	१०.	असभ्य कौरव
मदाः ते	५.	वे मद में	पुरम्	११.	नगर में
भरतर्षभ ।	१.	हे परीक्षित् !	आविशन् ॥	१२.	चले गये

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अपनी कुलीनता, बन्धुओं तथा धन-सम्पत्ति के नशे में वे कुरुवंशी मद में चूर हो रहे थे । बलराम को दुर्वचन सुनाकर असभ्य कौरव नगर में चले गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

दृष्ट्वा कुरूणां दौःशील्यं श्रुत्वावाच्यानि चाच्युतः ।
अवोचत् कोपसंरब्धो दुष्प्रेक्ष्यः प्रहसन् मुहुः ॥३०॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा कुरूणाम् दौः शील्यम् श्रुत्वा वाच्यानि च अच्युतः ।
अवोचत् कोप संरब्धः दुष्प्रेक्ष्यः प्रहसन् मुहुः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	३.	देखकर	अवोचत्	१२.	बोले
कुरूणाम्	१.	कुरुवंशियों की	कोप	८.	क्रोध से
दौः शील्यम्	२.	दुःशीलता	संरब्धः	९.	तमतमा कर
श्रुत्वा	५.	सुनकर	दुष्प्रेक्ष्यः	७.	न देखने योग्य
वाच्यानि च	४.	और दुर्वचन	प्रहसन्	११.	हँसते हुये
अच्युतः ।	६.	बलराम जी	मुहुः ॥	१०.	बार-बार

श्लोकार्थ—कुरुवंशियों की दुःशीलता देखकर और दुर्वचन सुनकर बलराम जी न देखने योग्य क्रोध से तमा-तमा कर बार-बार हंसते हुये बोले ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

नूनं नानामदोन्नद्धाः शान्तिं नेच्छन्त्यसाधवः ।
तेषां हि प्रशमो दण्डः पशूनां लगुडो यथा ।।३१।।

पदच्छेद— नूनम् नानामद उन्नद्धाः शान्तिम् न इच्छन्ति असाधवः ।
तेषाम् हि प्रशमः दण्डः पशूनाम् लगुडः यथा ।।

शब्दार्थ—

नूनम्	१.	निश्चित ही	तेषाम्	७.	उनको
नानामद	२.	अनेक बातों के मद से	हि	९.	ही है
उन्नद्धाः	३.	उन्मत्त	प्रशमः दण्डः	८.	शान्त करने का उपाय दण्ड
शान्तिम् न	५.	शान्ति नहीं	पशूनाम्	११.	पशुओं को ठीक करने का
इच्छन्ति	६.	चाहते हैं	लगुडः	१२.	उपाय लाठी है
असाधवः ।	४.	दुष्ट लोग	यथा ।।	१०.	जैसे

श्लोकार्थ—निश्चित ही अनेक बातों के मद से उन्मत्त दुष्ट लोग शान्ति नहीं चाहते हैं । उनको शान्त करने का उपाय दण्ड ही है । जैसे पशुओं को ठीक करने का उपाय लाठी है ।।

द्वात्रिंशः श्लोकः

अहो यदून् सुसंरब्धान् कृष्णं च कुपितं शनैः ।
सान्त्वयित्वाहमेतेषां शममिच्छन्निहागतः ।।३२।।

पदच्छेद— अहो यदून् सुसंरब्धान् कृष्णम् च कुपितम् शनैः ।
सान्त्वयित्वा अहम् एतेषाम् शमम् इच्छन् इह आगतः ।।

शब्दार्थ—

अहो	१.	ओह !	सान्त्वयित्वा	७.	समझा कर
यदून्	३.	यदुवंशियों	अहम्	८.	मैं
सुसंरब्धान्	२.	क्रोध से भरे	एतेषाम्	९.	इन लोगों की
कृष्णम्	५.	श्रीकृष्ण को	शमम्	१०.	शान्ति
च कुपितम्	४.	और कुपित	इच्छन्	११.	चाहता हुआ
शनैः ।	६.	धीरे-धीरे	इह आगतः ।।	१२.	यहाँ आया

श्लोकार्थ—ओह ! क्रोध से भरे यदुवंशियों और कुपित श्रीकृष्ण को धीरे-धीरे समझा कर मैं इन लोगों की शान्ति चाहता हुआ यहाँ आया ।।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

त इमे मन्दमतयः कलहाभिरताः खलाः ।
तं मामवज्ञाय मुहुर्दुर्भाषान् मानिनोऽब्रुवन् ॥३३॥

पदच्छेद— ते इमे मन्दमतयः कलह अभिरताः खलाः ।
तम् माम् अवज्ञाय मुहुः दुर्भाषान् मानिनः अब्रुवन् ॥

शब्दार्थ—

ते	१. वे	तम् माम्	८. मेरा
इमे	२. ये	अवज्ञाय	१०. तिरस्कार करके
मन्दमतयः	४. मूर्ख और	मुहुः	९. बार-बार
कलह	५. कलह के	दुर्भाषान्	११. दुर्वचन
अभिरताः	६. प्रेमी हैं	मानिनः	७. इन अभिमानियों ने
खलाः ।	३. दुष्ट लोग	अब्रुवन् ॥	१२. कहे हैं

श्लोकार्थ—परन्तु ये दुष्ट लोग मूर्ख और कलह के प्रेमी हैं। इन अभिमानियों ने मेरा बार-बार तिरस्कार करके दुर्वचन कहे हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

नोग्रसेनः किल विभुर्भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ।
शक्रादयो लोकपाला यस्यादेशानुवर्तिनः ॥३४॥

पदच्छेद— न उग्रसेन किल विभुः भोज वृष्णि अन्धक ईश्वरः ।
शक्र आदयः लोकपालाः यस्य आदेश अनुवर्तिनः ॥

शब्दार्थ—

न उग्रसेनः	८. वे उग्रसेन नहीं हैं (केवल)	शक्र	२. इन्द्र
किल	१. ठीक है	आदयः	३. आदि
विभुः	९. राजाधिराज	लोकपालाः	४. लोकपाल
भोजवृष्णि	१०. वे तो भोज, वृष्णि और	यस्य	५. जिनकी
अन्धक	११. अन्धक वंश वालों के	आदेश	६. आज्ञा का
ईश्वरः ।	१२. स्वामी हैं	अनुवर्तिनः ।	७. पालन करते हैं

श्लोकार्थ—ठीक है ! इन्द्र आदि लोकपाल जिनकी आज्ञा का पालन करते हैं, वे उग्रसेन केवल राजाधिराज नहीं हैं; वे तो केवल भोज, वृष्णि और अन्धक वंश वालों के ही स्वामी हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

सुधर्माऽऽक्रम्यते येन पारिजातोऽमराङ्घ्रिपः ।
आनीय भुज्यते सोऽसौ न किलाध्यासनार्हणः ॥३५॥

पदच्छेद— सुधर्मा आक्रम्यते येन पारिजातः अमर अङ्घ्रिपः ।
आनीय भुज्यते सः असौ न किल अध्यासन अर्हणः ॥

शब्दार्थ—

सुधर्मा	२.	सुधर्मा सभा को	आनीय	७.	लाकर
आक्रम्यते	३.	अधिकार में कर लिया है	भुज्यते	८.	उसका उपभोग करते हैं
येन	१.	जिन्होंने	सः असौ	९.	वे श्रीकृष्ण भी
पारिजातः	६.	पारिजात को	न किल	१२.	नहीं हैं
अमर	४.	जो देवताओं के	अध्यासन	१०.	राजसिंहासन के
अङ्घ्रिपः ।	५.	वृक्ष	अर्हणः ॥	११.	अधिकारी

श्लोकार्थ—जिन्होंने सुधर्मा सभा को अधिकार में कर लिया है। जो देवताओं के वृक्ष पारिजात को लाकर उसका उपभोग करते हैं। वे श्रीकृष्ण भी राजसिंहासन के अधिकारी नहीं हैं ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

यस्य पादयुगं साक्षात् श्रीरुपास्तेऽखिलेश्वरी ।
स नार्हति किल श्रीशो नरदेवपरिच्छदान् ॥३६॥

पदच्छेद— यस्य पादयुगम् साक्षात् श्रीः उपास्ते अखिलेश्वरी ।
सः न अर्हति किल श्रीशः नरदेव परिच्छदान् ॥

शब्दार्थ—

यस्य	४.	जिनके	सः	८.	वे
पादयुगम्	५.	दोनों चरणों की	न अर्हति	१२.	नहीं रख सकते
साक्षात्	३.	स्वयम्	किल	७.	क्या
श्रीः	२.	लक्ष्मी	श्रीशः	९.	लक्ष्मी पति (भगवान्)
उपास्ते	६.	उपासना करती हैं	नरदेव	१०.	राजा की
अखिलेश्वरी ।	१.	सारे जगत् की स्वामिनी	परिच्छदान् ॥	११.	सामग्रियों को

श्लोकार्थ—सारे जगत् की स्वामिनी लक्ष्मी स्वयम् जिनके दोनों चरणों की उपासना करती हैं, क्या वे लक्ष्मीपति भगवान् राजा की सामग्रियों को नहीं रख सकते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

यस्याङ्घ्रिपङ्कजरजोऽखिललोकपालैर्मौल्युत्तमैर्धृतमुपासिततीर्थतीर्थम् ।
ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कलाः कलायाः श्रीश्चोद्वहेम चिरमस्य नृपासनं क्व ॥३७॥

पदच्छेद—यस्य अङ्घ्रि पङ्कज रजः अखिल लोकपालैः मौलि उत्तमैः धृतम् उपासित तीर्थ तीर्थम् ।
ब्रह्माभवः अहम् अपि यस्य कलाः कलाया श्रीम् च उद्वहेम चिरम् अस्य नृपासनम् क्व ॥

शब्दार्थ—

यस्य अङ्घ्रि	१.	जिनके चरण	ब्रह्मा-भवः	६.	ब्रह्मा-शङ्कर और
पङ्कज रजः	२.	कमलों की धूलि	अहम् अपि	१०.	मैं भी और
अखिल	३.	सारे	यस्य	१२.	जिनकी
लोकपालैः	४.	लोकपाल अपने	कला कलायाः	१३.	कला की कला हैं तथा जिनकी
मौलि उत्तमैः	५.	श्रेष्ठ मुकुट पर	श्रीः च	११.	लक्ष्मी
धृतम्	६.	धारण करते हैं (जो धूलि)	उद्वहेम चिरम्	१४.	धूलि को चिरकाल तक धारण करते हैं
उपासित	७.	सन्तों द्वारा सेवित	अस्य	१५.	उनके लिये
तीर्थ-तीर्थम् ।	८.	तीर्थों को भी तीर्थ बनाती है	नृपासनम् क्व ॥	१६.	राजसिंहासन कहाँ है

श्लोकार्थ—जिनके चरण कमलों की धूलि लोकपाल अपने श्रेष्ठ मुकुट पर धारण करते हैं। जो धूलि सन्तों द्वारा सेवित तीर्थों को भी तीर्थ बनाती है। ब्रह्मा-शङ्कर और लक्ष्मी जिनकी कला की कला हैं तथा जिनकी धूलि को चिरकाल तक धारण करते हैं। उनके लिये राजसिंहासन कहाँ है ? ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

भुञ्जते कुरुभिर्दत्तं भूखण्डं वृष्णयः किल ।
उपानहः किल वयं स्वयं तु कुरवः शिरः ॥३८॥

पदच्छेद— भुञ्जते कुरुभिः दत्तम् भूखण्डम् वृष्णयः किल ।
उपानहः किल वयम् स्वयम् तु कुरवः शिरः ॥

शब्दार्थ—

भुञ्जते	६.	भोगते हैं	उपानहः	९.	जूती हैं (तथा)
कुरुभिः	३.	कौरवों का	किल	७.	क्या खूब !
दत्तम्	४.	दिया हुआ	वयम्	८.	हम लोग तो
भूखण्डम्	५.	पृथ्वी का एक टुकड़ा	स्वयम्	११.	स्वयम्
वृष्णयः	१.	यदुवंशी	कुरवः	१०.	कौरव लोग
किल ।	२.	लोग तो	शिरः ॥	१२.	सिर हैं

श्लोकार्थ—यदुवंशी लोग तो कौरवों का दिया हुआ पृथ्वी का एक टुकड़ा भोगते हैं। क्या खूब हम लोग तो जूती हैं तथा कौरव लोग स्वयं सिर हैं ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अहो ऐश्वर्यमत्तानां मत्तानामिव मानिनाम् ।
असम्बद्धा गिरो रूक्षाः कः सहेतानुशासिता ॥३९॥

पदच्छेद— अहो ऐश्वर्य मत्तानाम् मत्तानाम् इव मानिनाम् ।
असम्बद्धाः गिरः रूक्षाः कः सहेत अनुशासिता ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	ओह !	असम्बद्धाः	८.	बिना सिर पैर की
ऐश्वर्य	२.	ऐश्वर्य से	गिरः	९.	बातों को
मत्तानाम्	३.	उन्मत्त तथा	रूक्षाः	७.	रूखी और
मत्तानाम्	४.	पागल	कः	१०.	कौन
इव	५.	सरीखे	सहेत	१२.	सहन कर सकता है
मानिनाम् ।	६.	घमंडी (कौरवों) की	अनुशासिता ॥	११.	शासक

श्लोकार्थ—ओह ! ऐश्वर्य से उन्मत्त तथा पागल सरीखे घमंडी कौरवों की रूखी और बिना सिर पैर की बातों को कौन शासक सहन कर सकता है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

अद्य निष्कौरवीं पृथ्वीं करिष्यामीत्यमर्षितः ।
गृहीत्वा हलमुत्तस्थौ दहन्निव जगत्त्रयम् ॥४०॥

पदच्छेद— अद्य निष्कौरवीम् पृथ्वीम् करिष्यामि इति अमर्षितः ।
गृहीत्वा हलम् उत्तस्थौ दहन् इव जगत् त्रयम् ॥

शब्दार्थ—

अद्य	१.	आज मैं	गृहीत्वा	८.	लेकर
निष्कौरवीम्	३.	कौरव-विहीन	हलम्	७.	(बलराम जी) हल को
पृथ्वीम्	२.	पृथ्वी को	उत्तस्थौ	१२.	उठ कर खड़े हो गये
करिष्यामि	४.	कर डालूंगा	दहन्	११.	जलाते हुये
इति	५.	इस प्रकार कहते हुये	इव	९.	मानों
अमर्षितः ।	६.	क्रोध से भर कर	जगत् त्रयम् ॥	१०.	तीनों लोक को

श्लोकार्थ—आज मैं पृथ्वी को कौरव-विहीन कर डालूंगा । इस प्रकार कहते हुये क्रोध से भर कर बलराम जी हल को लेकर मानों तीनों लोक को जलाते हुये उठ कर खड़े हो गये ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

लाङ्गलाग्रेण नगरमुद्विदार्य गजाह्वयम् ।
विचकर्ष स गङ्गायां प्रहरिष्यन्नमर्षितः ॥४१॥

पदच्छेद— लाङ्गल अग्रेण नगरम् उद्विदार्य गजाह्वयम् ।
विचकर्ष सः गङ्गायाम् प्रहरिष्यन् अमर्षितः ॥

शब्दार्थ—

लाङ्गल	१.	हल की	विचकर्ष	१०.	खींचने लगे
अग्रेण	२.	नोक से	सः	८.	वे बलराम जी
नगरम्	४.	नगर पर	गङ्गायाम्	७.	गङ्गा में डुबाने के लिये
उद्विदार्य	६.	उखाड़ कर	प्रहरिष्यन्	५.	प्रहार करते हुये (उसे)
गजाह्वयम् ।	३.	हस्तिनापुर	अमर्षितः ॥	९.	अत्यन्त क्रोध से

श्लोकार्थ—हल की नोक से हस्तिनापुर नगर पर प्रहार करते हुये उसे उखाड़ कर गङ्गा में डुबाने के लिये वे बलराम जी अत्यन्त क्रोध से उसे खींचने लगे ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

जलयानमिवाघूर्णं गङ्गायां नगरं पतत् ।
आकृष्यमाणमालोक्य कौरवा जातसम्भ्रमाः ॥४२॥

पदच्छेद— जलयानम् इव आघूर्णम् गङ्गायाम् नगरम् पतत् ।
आकृष्यमाणम् आलोक्य कौरवाः जात सम्भ्रमाः ॥

शब्दार्थ—

जलयानम्	३.	नौका के	आकृष्यमाणम्	१.	हल के खींचने पर
इव	४.	समान	आलोक्य	८.	देख कर
आघूर्णम्	२.	जल में डगमगाती हुई	कौरवाः	९.	कौरव
गङ्गायाम्	६.	गङ्गा में	जात	११.	उठे
नगरम्	५.	नगर को	सम्भ्रमाः ॥	१०.	घबड़ा
पतत् ।	७.	गिरते हुये			

श्लोकार्थ—हल से खींचने पर जल में डगमगाती हुई नौका के समान नगर को गङ्गा में गिरते हुये देख कर कौरव घबड़ा उठे ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

तमेव शरणं जग्मुः सकुटुम्बा जिजीविषवः ।
सलक्ष्मणं पुरस्कृत्य साम्बं प्राञ्जलयः प्रभुम् ॥४३॥

पदच्छेद— तम् एव शरणम् जग्मुः सकुटुम्बा जिजीविषवः ।
सलक्ष्मणम् पुरस्कृत्य साम्बम् प्राञ्जलयः प्रभुम् ॥

शब्दार्थ—

तम् एव	७. उन ही	सलक्ष्मणम्	२. लक्ष्मणा के साथ
शरणम्	६. शरण में	पुरस्कृत्य	४. आगे करके
जग्मुः	१०. गये	साम्बम्	३. साम्ब को
सकुटुम्बाः	५. कुटुम्ब के साथ	प्राञ्जलयः	६. हाथ जोड़ कर
जिजीविषवः ।	१. तब वे लोग प्राण रक्षा के लिये	प्रभुम् ॥	८. प्रभु बलराम जी की

श्लोकार्थ—तब वे लोग प्राण रक्षा के लिये लक्ष्मणा के साथ साम्ब को आगे करके कुटुम्ब के साथ हाथ जोड़ कर उन ही प्रभु बलराम जी की शरण में गये ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

राम रामाखिलाधार प्रभावं न विदाम ते ।
मूढानां नः कुबुद्धीनां क्षन्तुमर्हस्यतिक्रमम् ॥४४॥

पदच्छेद— राम राम अखिलाधार प्रभावम् न विदाम ते ।
मूढानाम् नः कुबुद्धीनाम् क्षन्तुम् अर्हसि अतिक्रमम् ॥

शब्दार्थ—

राम राम	१. हे लोकाभिराम बलराम जी	मूढानाम्	८. मूर्ख
अखिलाधार	२. सारे जगत् के आधार	नः	७. हम
प्रभावम्	४. प्रभाव को	कुबुद्धीनाम्	६. दुर्बुद्धियों का
न	५. नहीं	क्षन्तुम्	११. आप क्षमा करने
विदामः	६. जानते	अर्हसि	१२. योग्य हैं
ते ।	३. हम आपके	अतिक्रमम् ॥	१०. अपराध

श्लोकार्थ—हे लोकाभिराम बलराम जी ! सारे जगत् के आधार हम आपके प्रभाव को नहीं जानते, हम मूर्ख कुबुद्धियों का अपराध आप क्षमा करने योग्य हैं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

स्थित्युत्पत्त्यप्ययानां त्वमेको हेतुर्निराश्रयः ।
लोकान् क्रीडनकानीश क्रीडतस्ते वदन्ति हि ॥४५॥

पदच्छेद— स्थिति उत्पत्ति अप्ययानाम् त्वम् एकः हेतुः निराश्रयः ।
लोकान् क्रीडनकानिईश क्रीडतः ते वदन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

स्थिति	२.	स्थिति	लोकान्	११.	सारे लोक
उत्पत्ति	३.	उत्पत्ति और	क्रीडनकानि	१२.	खिलौने हैं
अप्ययानाम्	४.	प्रलय के	ईश	८.	हे प्रभो !
त्वम्	१.	आप (जगत् की)	क्रीडतः	९.	क्रीडा करने वाले
एकः	५.	एक मात्र	ते	१०.	आपके ये
हेतुः	६.	कारण (एवम्)	वदन्ति	१४.	ऋषि लोग कहते हैं
निराश्रयः ।	७.	निराधार हैं	हि ॥	१३.	ऐसा ही

श्लोकार्थ—आप जगत् की स्थिति, उत्पत्ति और प्रलय के एक मात्र कारण एवम् निराधार हैं। हे प्रभो ! क्रीडा करने वाले आपके ये सारे लोक खिलौने हैं। ऐसा ही ऋषि लोग कहते हैं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

त्वमेव मूर्ध्नीदमनन्त लीलया भूमण्डलं बिभर्षि सहस्रमूर्धन् ।
अन्ते च यः स्वात्मनि रुद्धविश्वः शेषेऽद्वितीयः परिशिष्यमाणः ॥४६॥

पदच्छेद— त्वम् एव मूर्ध्नि इदम् अनन्त लीलया भूमण्डलम् बिभर्षि सहस्र मूर्धन् ।
अन्ते च यः स्व आत्मनि रुद्ध विश्वः शेषे अद्वितीयः परिशिष्यमाणः ॥

शब्दार्थ—

त्वम् एव	३.	आप ही	अन्ते च	९.	अन्त में (प्रलय आने पर)
मूर्ध्नि	७.	अपने सिर पर	यः	१०.	जो आप
इदम्	४.	इस	स्व	११.	अपने
अनन्त	१.	हे अनन्त !	आत्मनि	१२.	आत्मा के अन्दर
लीलया	६.	खेल-खेल में	रुद्धविश्वः	१३.	जगत् को लीन करके
भूमण्डलम्	५.	भूमण्डल को	शेषे	१६.	शयन करते हैं
बिभर्षि	८.	धारण करते हैं	अद्वितीयः	१४.	अद्वितीय रूप से
सहस्रमूर्धन् ।	२.	सहस्र सिर वाले	परिशिष्यमाणः॥	१५.	बचे रह कर

श्लोकार्थ—हे अनन्त ! सहस्र सिर वाले ! आप ही इस भूमण्डल को खेल-खेल में अपने सिर पर धारण करते हैं। अन्त में जो आप अपने आत्मा के अन्दर जगत् को लीन करके अद्वितीय रूप से बचे रह कर शयन करते हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

कोपस्तेऽखिलशिक्षार्थं न द्वेषान्न च मत्सरात् ।
बिभ्रतो भगवन् सत्त्वं स्थितिपालनतत्परः ॥४७॥

पदच्छेद— कोपः ते अखिल शिक्षार्थम् न द्वेषात् न च मत्सरात् ।
बिभ्रतः भगवन् सत्त्वम् स्थिति पालन तत्परः ॥

शब्दार्थ—

कोपः	८.	क्रोध	बिभ्रतः	६.	धारण किये हुये हैं
ते	७.	आपका	भगवन्	१.	हे भगवन् ! आप
अखिल	६.	सब को	सत्त्वम्	५.	सत्त्वमय शरीर
शिक्षार्थम्	१०.	शिक्षा देने के लिये हैं	स्थिति	२.	जगत् की स्थिति और
न द्वेषात्	११.	यह न तो द्वेष से और	पालन	३.	पालन के लिये
न च मत्सरात् ।	१२.	न मत्सर के कारण होता है	तत्परः ॥	४.	तत्पर होकर

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आप जगत् की स्थिति और पालन के लिये तत्पर होकर सत्त्वमय शरीर धारण किये हुये हैं । आपका क्रोध सब को शिक्षा देने के लिये है । यह न तो द्वेष से और न मत्सर के कारण होता है ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

नमस्ते सर्वभूतात्मन् सर्वशक्तिधराव्यय ।
विश्वकर्मन् नमस्तेऽस्तु त्वां वयं शरणं गताः ॥४८॥

पदच्छेद— नमस्ते सर्वभूतात्मन् सर्वशक्तिधर अव्यय ।
विश्वकर्मन् नमस्ते अस्तु त्वाम् वयम् शरणम् गताः ॥

शब्दार्थ—

नमस्ते	६.	आप को नमस्कार है	विश्वकर्मन्	७.	विश्व के रचयिता
सर्व	१.	समस्त	नमस्ते	८.	आप को नमस्कार
भूतात्मन्	२.	प्राणि स्वरूप	अस्तु	६.	हो
सर्वशक्ति	३.	सभी शक्तियों को	त्वाम्	११.	आपको
धर	४.	धारण करने वाले	वयम्	१०.	हम लोग
अव्यय ।	५.	अविनाशी	शरणम्गताः ॥	१२.	शरणागत हैं

श्लोकार्थ—समस्त प्राणि स्वरूप, सभी शक्तियों को धारण करने वाले, के अविनाशी आपको नमस्कार है । विश्व के रचयिता आपको नमस्कार हो । हम लोग आपको शरणागत हैं ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— एवं प्रपन्नैः संविग्नैर्वेपमानायनैर्बलः ।
प्रसादितः सुप्रसन्नो मा भैष्टेत्यभयं ददौ ॥४९॥

पदच्छेद— एवम् प्रपन्नैः संविग्नैः वेपमान आयनैः बलः ।
प्रसादितः सुप्रसन्नः मा भैष्ट इति अभयम् ददौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	प्रसादितः	६.	कौरवों द्वारा स्तुति करने पर
प्रपन्नैः	५.	शरण में आये हुये	सुप्रसन्नः	७.	अत्यन्त प्रसन्न
संविग्नैः	४.	घबराये हुये (और)	मा भैष्ट	९.	मत डरो
वेपमान	३.	डगमगाते हुये (तथा)	इति	१०.	ऐसा कह कर (उन्हें)
आयनैः	२.	अपने घरों को	अभयम्	११.	अभयदान
बलः ।	८.	बलराम जी ने	ददौ ॥	१२.	दिया

श्लोकार्थ—इस प्रकार अपने घरों को डगमगाते हुये तथा घबराये हुये और शरण में आये हुये कौरवों द्वारा स्तुति करने पर अत्यन्त प्रसन्न बलराम जी ने मत डरो ऐसा कह कर उन्हें अभयदान दिया ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

दुर्योधनः पारिबर्हं कुञ्जरान् षष्टिहायनान् ।
ददौ च द्वादशशतान्ययुतानि तुरङ्गमान् ॥५०॥

पदच्छेद— दुर्योधनः पारिबर्हम् कुञ्जरान् षष्टिहायनान् ।
ददौ च द्वादश शतानि अयुतानि तुरङ्गमान् ॥

शब्दार्थ—

दुर्योधनः	१.	दुर्योधन ने	च	७.	और
पारिबर्हम्	२.	दहेज में	द्वादश	४.	बारह
कुञ्जरान्	६.	हाथी	शतानि	५.	सौ
षष्टिहायनान् ।	३.	साठ-साठ वर्ष के	अयुतानि	८.	दस हजार
ददौ	१०.	दिये	तुरङ्गमान् ॥	९.	घोड़े

श्लोकार्थ—दुर्योधन ने दहेज में साठ-साठ वर्ष के बारह सौ हाथी और दस हजार घोड़े दिये ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

रथानां षट्सहस्राणि रौक्माणां सूर्यवर्चसाम् ।
दासीनां निष्ककण्ठीनां सहस्रं दुहितृवत्सलः ।।५१।।

पदच्छेद— रथानाम् षट्सहस्राणि रौक्माणां सूर्य वर्चसाम् ।
दासीनाम् निष्ककण्ठीनाम् सहस्रम् दुहितृ वत्सलः ।।

शब्दार्थ—

रथानाम्	७. रथ (और)	दासीनाम्	१०. दासियाँ दीं
षट्सहस्राणि	६. छः हजार	निष्ककण्ठीनाम्	८. सोने के हार पहने हुये
रौक्माणाम्	५. सोने के	सहस्रम्	९. एक हजार
सूर्य	३. सूर्य के समान	दुहितृ	१. पुत्री के प्रति
वर्चसाम् ।	४. चमकते हुये	वत्सलः ।।	२. स्नेहशील (दुर्योधन ने)

श्लोकार्थ—पुत्री के प्रति स्नेह शील दुर्योधन ने सूर्य के समान चमकते हुये सोने के छः हजार रथ सोने के हार और एक हजार दासियाँ दीं ।।

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

प्रतिगृह्य तु तत् सर्वं भगवान् सात्वतर्षभः ।
ससुतः सस्नुषः प्रागात् सुहृद्भिरभिनन्दितः ।।५२।।

पदच्छेद— प्रतिगृह्य तु तत् सर्वम् भगवान् सात्वतर्षभः ।
ससुतः सस्नुषः प्रागात् सुहृद्भिः अभिनन्दितः ।।

शब्दार्थ—

प्रतिगृह्य	५. लेकर (और)	ससुतः	८. पुत्र और
तु तत्	३. वह	सस्नुषः	९. पुत्र वधू के साथ
सर्वम्	४. सब	प्रागात्	१०. चले गये
भगवान्	२. भगवान् बलराम जी	सुहृद्भिः	६. बन्धुओं का
सात्वतर्षभः ।	१. यदुवंश शिरोमणि	अभिनन्दितः ।।	७. अभिनन्दन स्वीकार करके

श्लोकार्थ—यदुवंश शिरोमणि भगवान् बलराम जी वह सब लेकर और बन्धुओं का अभिनन्दन स्वीकार करके पुत्र और पुत्र वधू के साथ चले गये ।।

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ततः प्रविष्टः स्वपुरं हलायुधः समेत्य बन्धूननुरक्तचेतसः ।
शशंस सर्वं यदुपुङ्गवानां मध्ये सभायां कुरुषु स्वचेष्टितम् ॥५३॥

पदच्छेद— ततः प्रविष्टः स्वपुरम् हल आयुधः समेत्य बन्धून् अनुरक्त चेतसः ।
शशंस सर्वम् यदुपुङ्गवानाम् मध्ये सभायाम् कुरुषु स्व चेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	शशंस	१३. सुनाया जो
प्रविष्टः	३. पहुँचने पर	सर्वम्	१२. सब वृत्तान्त
स्व पुरम्	२. अपनी नगरी द्वारका में	यदुपुङ्गवानाम्	९. यदुवंशियों की
हल आयुधः	४ हल-आयुध वाले बलराम ने	मध्ये	११. बीच में (अपना)
समेत्य	८. मिलकर (तथा)	सभायाम्	१०. सभा के
बन्धून्	७. बन्धुओं से	कुरुषु	१५. कौरवों के साथ
अनुरक्त	५. उत्सुक	स्व	१४. उन्होंने
चेतसः ।	६. चित्त वाले	चेष्टितम् ॥	१६. किया था

श्लोकार्थ— तदनन्दर अपनी नगरी द्वारका में पहुँचने पर हल आयुध वाले बलराम ने उत्सुक चित्त वाले बन्धुओं से मिलकर तथा यदुवंशियों की सभा के बीच में अपना सब वृत्तान्त सुनाया। जो उन्होंने कौरवों के साथ किया था ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अद्यापि च पुरं ह्येतत् सूचयद् रामविक्रमम् ।
समुन्नतं दक्षिणतो गङ्गायामनुदृश्यते ॥५४॥

पदच्छेद— अद्यअपि च पुरम् ह्येतत् सूचयत् रामविक्रमम् ।
समुन्नतम् दक्षिणतः गङ्गायाम् अनुदृश्यते ॥

शब्दार्थ—

अद्यअपि	१. आज भी	समुन्नतम्	७. ऊँचा और
च पुरम्	३. नगर	दक्षिणतः	६. दक्षिण की ओर
हि एतत्	२. वह	गङ्गायाम्	८. गङ्गा की ओर झुका हुआ
सूचयत्	५. सूचना देता हुआ	अनु	१०. दे रहा है
रामविक्रमम् ।	४. बलराम के पराक्रम की	दृश्यते ॥	९. दिखाई

श्लोकार्थ— आज भी वह नगर बलराम के पराक्रम की सूचना देता हुआ दक्षिण की ओर ऊँचा और गङ्गा की ओर झुका हुआ दिखाई दे रहा है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
उत्तरार्धे हास्तिनपुरकर्षणरूपसङ्कर्षणविजयो
नाम अष्टषष्टितमः अध्यायः ॥६८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकोनसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—नरकं निहतं श्रुत्वा तथोद्वाहं च योषिताम् ।
कृष्णेनैकेन बह्वीनां तद् दिदृक्षुः स्म नारदः ॥१॥

पदच्छेद— नरकम् निहतम् श्रुत्वा तथा उद्वाहम् च योषिताम् ।
कृष्णेन एकेन बह्वीनाम् तत् दिदृक्षुः स्म नारदः ॥

शब्दार्थ—

नरकम्	२.	नरकासुर का	कृष्णेन	८.	श्रीकृष्ण
निहतम्	३.	वध	एकेन	९.	अकेले ही
श्रुत्वा	७.	सुनकर	बह्वीनाम्	१०.	बहुत स्त्रियों के साथ कैसे
तथा	१.	तथा	तत्	१२.	यह
उद्वाहम्	६.	विवाह	दिदृक्षुः	१३.	देखने की
च	४.	और हजारों	स्म	१४.	इच्छा हुई
योषिताम् ।	५.	स्त्रियों के साथ	नारदः ॥	११.	नारद को

श्लोकार्थ—तथा नरकासुर का वध और हजारों स्त्रियों के साथ विवाह सुनकर, श्रीकृष्ण अकेले ही बहुत स्त्रियों के साथ कैसे रहते हैं नारद को यह देखने की इच्छा हुई ॥

द्वितीयः श्लोकः

चित्रं बतैतदेकेन वपुषा युगपत् पृथक् ।
गृहेषु द्व्यष्टसाहस्रं स्त्रिय एक उदावहत् ॥२॥

पदच्छेद— चित्रम् बत एतत् एकेन वपुषा युगपत् पृथक् ।
गृहेषु द्विअष्ट साहस्रम् स्त्रियः एकः उदावहत् ॥

शब्दार्थ—

चित्रम्	२.	आश्चर्य है कि	गृहेषु	८.	महलों में
बतएतत्	१.	अहो यह	द्विअष्ट	९.	सोलह
एकेन	४.	एक ही	साहस्रम्	१०.	हजार
वपुषा	५.	शरीर से	स्त्रियः	११.	स्त्रियों से
युगपत्	६.	एक समय	एकः	३.	अकेले श्रीकृष्ण ने
पृथक् ।	७.	अलग-अलग	उदावहत् ॥	१२.	विवाह किया

श्लोकार्थ— अहो ! यह आश्चर्य है कि अकेले श्रीकृष्ण ने एक ही शरीर से एक समय अलग-अलग महलों में सोलह हजार स्त्रियों से विवाह किया ॥

तृतीयः श्लोकः

इत्युत्सुको द्वारवतीं देवर्षिर्द्रष्टुमागमत् ।
पुष्पितोपवनारामद्विजालिकुलनादिताम् ॥३॥

पदच्छेद— इति उत्सुकः द्वारवतीम् देवर्षिः द्रष्टुम् आगमत् ।
पुष्पित उपवन आराम द्विज अलिकुल नादिताम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	पुष्पित	७.	पुष्पों से लदे
उत्सुकः	२.	उत्सुक होकर	उपवन	८.	उपवन तथा
द्वारवतीम्	५.	द्वारकापुरी	आराम	९.	उद्यान में
देवर्षिः	४.	नारद	द्विज	१०.	पक्षियों और
द्रष्टुम्	३.	देखने के लिये	अलिकुल	१०.	भौंरों के झुन्ड
आगमत् ।	६.	आये जहाँ	नादिताम् ॥	१२.	गुन्जार कर रहे थे

श्लोकार्थ—इस प्रकार उत्सुक होकर श्रीकृष्ण को देखने के लिये नारद द्वारकापुरी आये जहाँ पुष्पों से लदे उपवन तथा उद्यान में पक्षियों और भौंरों के झुन्ड गुन्जार कर रहे थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

उत्फुल्लेन्दीवराम्भोजकह्लारकुमुदोत्पलैः ।
छुरितेषु सरस्सूच्चैः कूजितां हंससारसैः ॥४॥

पदच्छेद— उत्फुल्ल इन्दीवर अम्भोज कह्लार कुमुद उत्पलैः ।
छुरितेषु सरस्सु उच्चैः कूजिताम् हंस सारसैः ॥

शब्दार्थ—

उत्फुल्ल	१.	जहाँ खिले हुये	छुरितेषु	७.	व्याप्त
इन्दीवर	२	नील कमल	सरस्सु	८.	सरोवरों में
अम्भोज	३.	लाल कमल	उच्चैः	११.	ऊँचे स्वर से
कह्लार	४.	श्वेत कमल	कूजिताम्	१२.	कूज रहे थे
कुमुद	५.	कुमुद (कोई और)	हंस	९.	हंस और
उत्पलैः ।	६.	नवजात कमलों से	सारसैः ॥	१०.	सारस

श्लोकार्थ—जहाँ खिले हुये नील कमल, लाल कमल, श्वेत कमल, कुमुद, कोई और नवजात कमलों से व्याप्त सरोवरों में हंस और सारस ऊँचे स्वर से कूज रहे थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

प्रासादलक्षैर्नवभिर्जुष्टां स्फाटिकराजतैः ।
महामरकतप्रख्यैः स्वर्णरत्नपरिच्छदैः ॥५॥

पदच्छेद— प्रासाद लक्षैः नवभिः जुष्टाम् स्फाटिक राजतैः ।
महामरकत प्रख्यैः स्वर्ण रत्न परिच्छदैः ॥

शब्दार्थ—

प्रासाद	६.	महल बने थे	महामरकत	७.	वे पन्ने की
लक्षैः	५.	लाख	प्रख्यैः	८.	प्रभा से जगमगा रहे थे
नवभिः	४.	नौ	स्वर्ण	९.	उनमें सोने तथा
जुष्टाम्	१.	उस द्वारकापुरी में	रत्न	१०.	हीरों की
स्फाटिक	२.	स्फटिक मणि और	परिच्छदैः ॥	११.	सामग्रियाँ शोभायमान थीं
राजतैः ।	३.	चाँदी के			

श्लोकार्थ—उस द्वारकापुरी में स्फटिक मणि और चाँदी के नौ लाख महल बने थे । वे पन्ने की प्रभा से जगमगा रहे थे । उनमें सोने तथा हीरों की सामग्रियाँ शोभायमान थीं ॥

षष्ठः श्लोकः

विभक्तरथ्यापथचत्वरापणैः शालासभाभी रुचिरां सुरालयैः ।
संसिक्तमार्गाङ्गणवीथिदेहलीं पतत्पताकाध्वजवारितातपाम् ॥६॥

पदच्छेद— विभक्त रथ्यापथ चत्वर आपणैः शाला सभाभिः रुचिराम् सुरालयैः ।
संसिक्त मार्ग अङ्गणवीथि देहलीम् पतत् पताका ध्वजवारित आतपाम् ॥

शब्दार्थ—

विभक्त	१.	अलग-अलग	संसिक्त	१२.	छिड़काव किया गया था
रथ्यापथ	२.	गलियों राज-मार्गों	मार्ग	९.	उसकी सड़कों
चत्वर	३.	चौराहों	अङ्गणवीथि	१०.	चौकों-गलियों और
आपणैः	४.	हजारों	देहलीम्	११.	दरवाजों पर
शाला	५.	शालाओं	पतत्	१४.	फहराती हुई
सभाभिः	६.	सभाओं और	पताका	१५.	पताकाओं और
रुचिराम्	८.	द्वारकापुरी शोभायमान थी	ध्वजवारित	१६.	ध्वजाओं ने रोक दिया था
सुरालयैः ।	७.	देव मन्दिरों से	आतपाम् ॥	१३.	धूप को

श्लोकार्थ—अलग-अलग गलियों, राज-मार्गों, चौराहों, बाजारों, शालाओं और देवमन्दिरों से द्वारकापुरी शोभायमान थी । उसकी सड़कों, चौकों, गलियों और दरवाजों पर छिड़काव किया गया । धूप को, फहराती हुई पताकाओं और ध्वजाओं ने रोक दिया था ॥

सप्तमः श्लोकः

तस्यामन्तःपुरं श्रीमदर्चितं सर्वधिष्ण्यपैः ।
हरेः स्वकौशलं यत्र त्वष्ट्रा कार्त्स्न्येन दर्शितम् ॥७॥

पदच्छेद— तस्याम् अन्तः पुरम् श्रीमद् अर्चितम् सर्वधिष्ण्यपैः ।
हरेः स्वकौशलम् यत्र त्वष्ट्रा कार्त्स्न्येन दर्शितम् ॥

शब्दार्थ—

तस्याम्	१. उस द्वारकापुरी में	हरेः	२. श्रीकृष्ण का
अन्तः पुरम्	३. अन्तः पुर	स्वकौशलम्	८. अपना कला कौशल
श्रीमद्	४. बहुत सुन्दर तथा	यत्र त्वष्ट्रा	७. जहाँ विश्वकर्मा ने
अर्चितम्	६. पूजित था	कार्त्स्न्येन	९. समग्र रूप से
सर्वधिष्ण्यपैः ।	५. सभी लोकपालों से	दर्शितम् ॥	१०. दिखलाया था

श्लोकार्थ—उस द्वारकापुरी में श्रीकृष्ण का अन्तः पुर बहुत सुन्दर तथा सभी लोकपालों से पूजित था । जहाँ विश्वकर्मा ने अपना कलाकौशल समग्ररूप से दिखलाया था ॥

अष्टमः श्लोकः

तत्र षोडशभिः सद्मसहस्रैः समलङ्कृतम् ।
विवेशैकतमं शौरेः पत्नीनां भवनं महत् ॥८॥

पदच्छेद— तत्र षोडशभिः सद्मसहस्रैः समलङ्कृतम् ।
विवेश एकतमम् शौरेः पत्नीनाम् भवनम् महत् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. वहाँ अन्तः पुर में	एकतमम्	७. एक
षोडशभिः	४. सोलह	शौरेः	२. श्रीकृष्ण की
सद्मसहस्रैः	५. हजार भवनों से	पत्नीनाम्	३. पत्नियों के
समलङ्कृतम् ।	६. विभूषित	भवनम्	९. भवन में
विवेश	१०. नारद ने प्रवेश किया	महत् ॥	८. बड़े

श्लोकार्थ—वहाँ अन्तः पुर में श्रीकृष्ण की पत्नियों के सोलह हजार भवनों से विभूषित एक बड़े भवन में नारद ने प्रवेश किया ॥

नवमः श्लोकः

विष्टब्धं विद्रुमस्तम्भैर्वैदूर्यफलकोत्तमैः ।
इन्द्रनीलमयैः कुड्यैर्जगत्या चाहतत्विषा ॥९॥

पदच्छेद— विष्टब्धम् विद्रुमस्तम्भैः वैदूर्य फलक उत्तमैः ।
इन्द्रनीलमयैः कुड्यैः जगत्या च अहत त्विषा ॥

शब्दार्थ—

विष्टब्धम्	१२.	शोभित था	इन्द्रनीलमयैः	६.	इन्द्रनीलमणि की
विद्रुम	१.	जो मूँगों के	कुड्यैः	७.	दीवारों
स्तम्भैः	२.	खम्भों	जगत्या	११.	गचों से
वैदूर्य	३.	वैदूर्य के	च	८.	और
फलक	५.	छज्जों	अहत	९.	कभी कम न होने वाली
उत्तमैः ।	४.	उत्तम	त्विषा ॥	१०.	कान्ति से युक्त

श्लोकार्थ—जो मूँगों के खम्भों, वैदूर्य के उत्तम छज्जों, इन्द्रनीलमणि की दीवारों और कभी कम न होने वाली कान्ति से युक्त गचों से शोभित था ॥

दशमः श्लोकः

वितानैर्निर्मितैस्त्वष्ट्रा मुक्तादामविलम्बिभिः ।
दान्तैरासनपर्यङ्कैर्मण्युत्तमपरिष्कृतैः ॥१०॥

पदच्छेद— वितानैः निर्मितैः त्वष्ट्रा मुक्तादाम विलम्बिभिः ।
दान्तैः आसन पर्यङ्कैः मणि उत्तम परिष्कृतैः ॥

शब्दार्थ—

वितानैः	३.	चंदोवों में	दान्तैः	६.	हाथी दाँत के बने हुये
निर्मितैः	२.	बनाये हुये	आसन	७.	आसन और
त्वष्ट्रा	१.	वहाँ विश्वकर्मा के द्वारा	पर्यङ्कैः	८.	पलंग थे जिनमें
मुक्तादाम	४	मोतियों की झालरें	मणिउत्तम	९.	उत्तम मणियाँ
विलम्बिभिः ।	५.	लटक रही थीं (तथा)	परिष्कृतैः ॥	१०.	जड़ी हुईं थीं

श्लोकार्थ—वहाँ विश्वकर्मा द्वारा बनाये हुये चंदोवों में मोतियों की झालरें लटक रहीं थीं। तथा हाथी दाँत के बने हुये आसन और पलंग थे। जिनमें उत्तममणियाँ जड़ी हुईं थीं ॥

एकादशः श्लोकः

दासीभिर्निष्ककण्ठीभिः सुवासोभिरलङ्कृतम् ।
पुम्भिः सकञ्चुकोष्णीषसुवस्त्रमणिकुण्डलैः ॥११॥

पदच्छेद— दासीभिः निष्ककण्ठीभिः सुवासोभिः अलङ्कृतम् ।
पुम्भिः सकञ्चुक उष्णीष सुवस्त्र मणि कुण्डलैः ॥

शब्दार्थ—

दासीभिः	३.	दासियों और	सकञ्चुक	७.	जामा
निष्ककण्ठीभिः	२.	सोने का हार पहने	उष्णीष	८.	पगड़ी धारण किये
सुवासोभिः	१.	सुन्दर वस्त्र	सुवस्त्र	४.	सुन्दर वस्त्र
अलङ्कृतम् ।	१०.	विभूषित था	मणि	५.	मणि निर्मित
पुम्भिः	९.	सेवकों से वह महल	कुण्डलैः ॥	६.	कुण्डल तथा

श्लोकार्थ—सुन्दर वस्त्र सोने का हार पहने दासियों और सुन्दर वस्त्र मणि निर्मित कुण्डल तथा जामा पगड़ी धारण किये सेवकों से वह महल विभूषित था ॥

द्वादशः श्लोकः

रत्नप्रदीपनिकरद्युतिभिर्निरस्तध्वान्तं विचित्रवलभीषु शिखण्डिनोऽङ्ग ।
नृत्यन्ति यत्र विहीतागुरुधूपमक्षैर्निर्यान्तमीक्ष्य घनबुद्धय उन्नदन्तः ॥१२॥

पदच्छेद—रत्नप्रदीप निकरद्युतिभिः निरस्त ध्वान्तम् विचित्र बलभीषु शिखण्डिनः अङ्ग ।
नृत्यन्ति यत्र विहित अगुरुधूपम् अक्षैः निर्यान्तम् ईक्ष्य घनबुद्धयः उन्नदन्तः ॥

शब्दार्थ—

रत्नप्रदीप	३.	रत्नों के दीपकों के	नृत्यन्ति	१७.	नाचते थे
निकरद्युतिभिः	४.	समूह की ज्योति से	यत्र	२.	जहाँ
निरस्त	६.	दूर रहता था और	विहित	११.	देने के कारण
ध्वान्तम्	५.	अन्धकार	अगुरुधूपम्	१०.	अगर की धूप
विचित्र	७.	रंगबिरंगे	अक्षैः	१२.	झरोखों से
बलभीषु	८.	छज्जों पर बैठे	निर्यान्तम्	१३.	निकलते हुये धुयें को
शिखण्डिनः	९.	मयूर	ईक्ष्य	१४.	देखकर
अङ्ग ।	१.	हे राजन् !	घनबुद्धयः	१५.	बादलों के भ्रम से
			उन्नदन्तः ॥	१६.	कूक-कूक कर

श्लोकार्थ—हे राजन् ! जहाँ रत्नों के दीपकों के समूह की ज्योति से अन्धकार दूर रहता था । रंग-बिरंगे छज्जों पर बैठे मयूर, अगर की धूप देने के कारण झरोंखों से निकलते हुये धुंयें को देख कर बादलों के भ्रम से कूक-कूक कर नाचते थे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तस्मिन् समानगुणरूपवयस्सुवेषदासीसहस्रयुतयानुसवं गृहिण्या ।
विप्रो ददर्श चमरव्यजनेन रुक्मदण्डेन सात्वतपतिं परिवीजयन्त्या ॥१३॥

पदच्छेद— तस्मिन् समानगुण रूपवयः सुवेष दासीसहस्र युतया अनुसवम् गृहिण्या ।
विप्रः ददर्श चमर व्यजनेन रुक्म दण्डेन सात्वतपतिम् परिवीजयन्त्या ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	उस महल में	विप्रः	२.	ब्राह्मण नारद जी ने
समानगुण	४	एक जैसे गुण	ददर्श	३.	देखा कि
रूपवयः	५.	रूप अवस्था और	चमर व्यजनेन	१३.	चँवर से
सुवेष	६.	सुन्दर वेष वाली	रुक्म	११.	सोने की
दासीसहस्र	७.	सहस्रों दासियों से	दण्डेन	१२.	डाँडी वाले
युतया	९.	युक्त	सात्वतपतिम्	१४.	श्रीकृष्ण को
अनुसवम्	८.	सर्वदा	परिवीजयन्त्या ॥	१५.	हवा कर रही थीं
गृहिण्या ।	१०.	गृहस्वामिनी (रुक्मिणी)			

श्लोकार्थ—उस महल में ब्राह्मण नारदजी ने देखा कि एक जैसे गुण, रूप, अवस्था और सुन्दर वेष वाली सहस्रों दासियों से सर्वदा युक्त गृहस्वामिनी रुक्मिणी सोने की डाँडी वाले चँवर से श्रीकृष्ण को हवा कर रही थीं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तं सन्निरीक्ष्य भगवान् सहसोत्थितः श्रीपर्यङ्कतः सकलधर्मभृतां वरिष्ठः ।
आनम्य पादयुगलं शिरसा किरीटजुष्टेन साञ्जलिरवीविशदासने स्वे ॥१४॥

पदच्छेद— तम् सन्निरीक्ष्य भगवान् सहसा उत्थितः श्रीपर्यङ्कतः सकल धर्मभृताम् वरिष्ठः ।
आनम्य पादयुगलम् शिरसा किरीट जुष्टेन साञ्जलिः अवीविशत् आसने स्वे ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन नारद जी को	आनम्य	१४.	प्रणाम करके
सन्निरीक्ष्य	२.	देख कर	पादयुगलम्	१२.	युगल चरणों में
भगवान्	६.	भगवान् श्रीकृष्ण	शिरसा	११.	सिर से
सहसा उत्थितः	८.	एकाएक उठ गये (और)	किरीट	९.	मुकुट
श्रीपर्यङ्कतः	७.	लक्ष्मी जी के पलंग से	जुष्टेन	१०.	युक्त
सकल	३.	समस्त	साञ्जलिः	१३.	हाथ जोड़ कर
धर्मभृताम्	४.	धार्मिकों में	वीविशत्	१६.	बैठाया
वरिष्ठः ।	५	श्रेष्ठ	आसने स्वे ॥	१५.	अपने आसन पर

श्लोकार्थ—उन नारद जी को देख कर समस्त धार्मिकों में श्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्ण लक्ष्मी के पलँग से एकाएक उठ गये और मुकुट युक्त सिर से युगल चरणों में हाथ जोड़ कर प्रणाम करके अपने आसन पर बैठाया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तस्यावनिज्य चरणौ तदपः स्वमूर्ध्ना बिभ्रज्जगद्गुरुतरोऽपि सतां पतिर्हि ।
ब्रह्मण्यदेव इति यद्गुणनाम युक्तं तस्यैव यच्चरणशौचमशेषतीर्थम् ॥१५॥

पदच्छेद— तस्य अवनिज्य चरणौ तदपः स्वमूर्ध्ना बिभ्रत् जगद् गुरुतरः अपि सताम् पतिःहि ।
ब्रह्मण्यदेवः इति यद् गुणनाम युक्तम् तस्यैव यत् चरण शौचम् अशेषतीर्थम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	४.	नारद के	ब्रह्मण्यदेवः	११.	ब्राह्मणों के भक्त
अवनिज्य	६.	धोकर	इति	१२.	यह
चरणौ	५.	चरणों को	यत्	१०.	उनका
तदपः	७.	उस जल को	गुणनाम	१३.	गुण के अनुरूप नाम
स्वमूर्ध्ना	८.	अपने मस्तक पर	युक्तम्	१४.	उचित ही है
बिभ्रत्	९.	धारण किया	तस्यैव	१५.	उनके
जगद् गुरुतरः	२.	संसार के परम गुरु होकर	यत् चरण	१६.	चरणों का
अपि	३.	भी	शौचम्	१७.	धोवन (गंगा जल)
सताम् पतिःहि ।	१.	संतों के स्वामी(भगवान् ने)	अशेषतीर्थम् ॥	१८.	सम्पूर्ण तीर्थ रूप है

श्लोकार्थ—सन्तों के स्वामी भगवान् ने संसार के परमगुरु होकर भी नारद के चरणों को धोकर उस जल को अपने मस्तक पर धारण किया । उनका ब्राह्मणों के भक्त यह गुण के अनुरूप नाम उचित ही है । उनके चरणों का धोवन गंगा जल सम्पूर्ण तीर्थ रूप है ॥

षोड्शः श्लोकः

सम्पूज्य देवऋषिवर्यमृषिः पुराणो नारायणो नरसखो विधिनोदितेन ।
वाण्याभिभाष्य मितयामृतमिष्टया तं प्राह प्रभो भगवते करवाम हे किम् ॥४२॥

पदच्छेद—सम्पूज्य देवऋषि वर्यम् ऋषिः पुराणः नारायणः नरसखः विधिना उदितेन ।
वाण्या अभिभाष्य मितया अमृतमिष्टया तम् प्राह प्रभोभगवते करवामहे किम् ॥

शब्दार्थ—

सम्पूज्य	८.	पूजा करके	वाण्या	११.	शब्दों में
देवऋषि	४.	देवर्षियों में	अभिभाष्य	१२.	बात-चीत करके
वर्यम्	५.	श्रेष्ठ (नारद जी)	मितया	१०.	एवम् परिमित
ऋषिः पुराणः	१.	सर्वदर्शी पुराण पुरुष	अमृतमिष्टया	९	अमृत के समान मधुर
नारायणः	३.	नारायण ने	तम् प्राह	१३.	उनसे कहा
नरसखः	२.	नर के सखा	प्रभो भगवते	१४.	प्रभो आप की
विधिना	७.	विधि से	करवामहे	१६.	सेवा करें
उदितेन ।	६.	शास्त्रोक्त	किम् ॥	१५.	हम क्या

श्लोकार्थ—सर्वदर्शी पुराण पुरुष, नर के सखा, नारायण ने देवर्षियों में श्रेष्ठ नारद की शास्त्रोक्त विधि से पूजा करके अमृत के समान मधुर एवम् परिमित शब्दों में बात-चीत करके उनसे कहा—प्रभो ! आप की हम क्या सेवा करें ॥

सप्तदशः श्लोकः

नारद उवाच—

नैवाद्भुतं त्वयि विभोऽखिललोकनाथे मैत्री जनेषु सकलेषु दमः खलानाम् ।
निःश्रेयसाय हि जगत्स्थितिरक्षणाभ्यां स्वैरावतार उरुगाय विदाम सुष्ठु ॥१७॥

पदच्छेद— न एव अद्भुतम् त्वयि विभो अखिल लोकनाथे मैत्री जनेषु सकलेषु दमः खलानाम् ।
निःश्रेयसाय हि जगत् स्थिति रक्षणाभ्याम् स्वैर अवतार उरुगाय विदाम सुष्ठु ॥

शब्दार्थ—					
न एव	५.	नहीं है (आप अपने)	निःश्रेयसाय	१३.	कल्याण करने के लिये
अद्भुतम् त्वयि	४.	आश्चर्य की बात आपके लिये	हि जगत् स्थिति	१०.	संसार की स्थिति और
विभो	१.	हे परमात्मन् !	रक्षणाभ्याम्	११.	रक्षा के द्वारा
अखिल	२.	समस्त	स्वैर	१२.	स्वेच्छा से
लोकनाथे	३.	लोकों के स्वामी	अवतार	१४.	अवतार धारण करने वाले
मैत्री	७.	प्रेम और	उरुगाय	९.	परम यशस्वी
जनेषु सकलेषु	६.	समस्त भक्तों से	विदाम	१६.	जानते हैं
दमः खलानाम् ।	८.	दुष्टों का दमन करते हैं	सुष्ठु ॥	१५.	हम आपको भली-भाँति

श्लोकार्थ— हे परमात्मन् ! समस्त लोकों के स्वामी आपके लिये आश्चर्य की बात नहीं हैं। क्योंकि आप अपने समस्त भक्तों से प्रेम और दुष्टों का दमन करते हैं। परम यशस्वी, संसार की स्थिति और रक्षा के द्वारा स्वेच्छा से कल्याण करने के लिये अवतार धारण करने वाले ! हम आपको भली-भाँति जानते हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

दृष्टं तवाङ्घ्रियुगलं जनतापवर्गं ब्रह्मादिभिर्हृदि विचिन्त्यमगाधबोधैः ।
संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बं ध्यायंश्चराम्यनुगृहाण यथा स्मृतिः स्यात् ॥१८॥

पदच्छेद— दृष्टम् तव अङ्घ्रियुगलम् जनता अपवर्गम् ब्रह्मादिभिः हृदि विचिन्त्यम् अगाधबोधैः ।
संसार कूप पतित उत्तरण अवलम्बम् ध्यायन् चरामि अनुगृहाण यथा स्मृतिः स्यात् ॥

शब्दार्थ—					
दृष्टम्	८.	दर्शन मुझे हुये हैं	संसार कूप	१२.	संसार रूपी कुयें में
तव	६.	आपके	पतित उत्तरण	१३.	गिरे हुये को उबारने के लिये
अङ्घ्रियुगलम्	७.	दोनों चरणों के	अवलम्बम्	१४.	अवलम्ब स्वरूप
जनता अपवर्गम्	५.	जनता को मोक्ष देने वाले	ध्यायन्	१५.	(इन चरणों का) ध्यान
ब्रह्मादिभिः	२.	ब्रह्मा आदि के द्वारा	चरामि	१६.	करता हुआ विचरण करूं
हृदि	३.	हृदय में	अनुगृहाण	९.	आप कृपा करें
विचिन्त्यम्	४.	चिन्तन करने योग्य (तथा)	यथास्मृतिः	१०.	जिससे मुझे स्मृति
अगाधबोधैः ।	१.	अगाध ज्ञान वाले	स्यात् ॥	११.	बनी रहे (और मैं)

श्लोकार्थ—अगाध ज्ञान वाले हे प्रभो ! ब्रह्मा आदि के द्वारा हृदय में चिन्तन करने योग्य तथा जनता को मोक्ष देने वाले आपके दोनों चरणों के दर्शन मुझे हुये हैं। आप कृपा करें। जिससे मुझे स्मृति बनी रहे। और मैं संसार रूपी कुयें में गिरे हुये को उबारने के लिये अवलम्ब रूप इन चरणों का ध्यान करता हुआ विचरण करूँ ॥

एकोनविंशः श्लोकः

ततोऽन्यदाविशद् गेहं कृष्णपत्न्याः स नारदः ।
योगेश्वरेश्वरस्याङ्ग योगमायाविवित्सया ॥१९॥

पदच्छेद— ततः अन्यत् अविशत् गेहम् कृष्ण पत्न्याः स नारदः ।
योगेश्वर ईश्वरस्य अङ्ग योगमाया विवित्सया ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तदनन्तर	स नारदः ।	७.	वे नारद
अन्यत्	१०.	दूसरे	योगेश्वर	३.	योगेश्वरों के
अविशत्	१२.	प्रविष्ट हुये	ईश्वरस्य	४.	ईश्वर की
गेहम्	११.	घर में	अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !
कृष्ण	८.	श्रीकृष्ण की	योगमाया	५.	योगमाया को
पत्न्याः	९.	पत्नी के	विवित्सया ॥	६.	जानने की इच्छा से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तदनन्तर योगेश्वरों के भी ईश्वर की योगमाया को देखने की इच्छा से नारद श्रीकृष्ण की पत्नी के दूसरे घर में प्रविष्ट हुये ॥

विंशः श्लोकः

दीव्यन्तमक्षैस्तत्रापि प्रियया चोद्धवेन च ।
पूजितः परया भक्त्या प्रत्युत्थानासनादिभिः ॥२०॥

पदच्छेद— दीव्यन्तम् अक्षैः तत्र अपि प्रियया च उद्धवेन च ।
पूजितः परया भक्त्या प्रति उत्थान आसन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

दीव्यन्तम्	७.	खेलते हुये (श्रीकृष्ण को) देखा	पूजितः	१४.	(नारद जी की) पूजा की
अक्षैः	६.	चौसर	परया	१२.	परम
तत्र अपि	२.	वहाँ पर भी	भक्त्या	१३.	भक्ति भाव से
प्रियया	३.	प्रिया	प्रति	८.	उन्होंने अगवानी के लिये
च	४.	और	उत्थान	९.	उठ कर
उद्धवेन	५.	उद्धव के साथ	आसन	१०.	आसन
च ।	१.	और	आदिभिः ॥	११.	आदि के द्वारा

श्लोकार्थ—और वहाँ पर भी प्रिया और उद्धव के साथ चौसर खेलते हुये श्रीकृष्ण को देखा। उन्होंने अगवानी के लिये उठकर आसन आदि के द्वारा परम भक्तिभाव से नारद जी की पूजा की ॥

एकविंशः श्लोकः

पृष्टश्चाविदुषेवासौ कदाऽऽयातो भवानिति ।

क्रियते किं नु पूर्णानामपूर्णैरस्मदादिभिः ॥२१॥

पदच्छेद— पृष्टः च अविदुषा इव असौ कदा आयातः भवान् इति ।
क्रियते किम् नु पूर्णानाम् अपूर्णैः अस्मत् आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

पृष्टः	६.	पूछा	इति ।	५.	इस प्रकार
च	१.	फिर	क्रियते	१४.	करें
अविदुषा	२.	अनजान के	किम् नु	१३.	आप की सेवा
इव	३.	समान	पूर्णानाम्	१२.	परिपूर्ण
असौ	४.	नारद जी से	अपूर्णैः	१०.	अपूर्ण
कदाआयातः	८.	कब पधारे	अस्मत्	९.	हम
भवान्	७.	आप	आदिभिः ॥	११.	लोग

श्लोकार्थ—फिर अनजान के समान नारद जी से इस प्रकार पूछा—आप कब पधारे ? हम अपूर्ण लोग परिपूर्ण आप की क्या सेवा करें ॥

द्वाविंशः श्लोकः

अथापि ब्रूहि नो ब्रह्मन् जन्मैतच्छोभनं कुरु ।

स तु विस्मित उत्थाय तूष्णीमन्यदगाद् गृहम् ॥२२॥

पदच्छेद— अथापि ब्रूहि नः ब्रह्मन् जन्म एतत् शोभनम् कुरु ।
सः तु विस्मितः उत्थाय तूष्णीम् अन्यत् अगात् गृहम् ॥

शब्दार्थ—

अथापि	२.	तो भी	सः तु	८.	वे नारद तो
ब्रूहि नः	३.	हमें बताइये (और)	विस्मितः	९.	आश्चर्य चकित हो कर
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन्	उत्थाय	११.	उठ कर
जन्म	५.	जन्म को	तूष्णीम्	१०.	चुप चाप
एतत्	४.	(सेवा का अवसर देकर) इस	अन्यत्	१२.	दूसरे
शोभनम्	६.	सफल	अगात्	१४.	चले गये
कुरु ।	७.	करें	गृहम् ॥	१३.	घर में

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! तो भी हमें बताइये और सेवा का अवसर देकर इस हमारे जन्म को सफल करें। वे नारद तो आश्चर्य-चकित होकर और चुपचाप उठ कर दूसरे घर में चले गये ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तत्राप्यचष्ट गोविन्दं लालयन्तं सुतान्छिशून् ।
ततोऽन्यस्मिन् गृहेऽपश्यन्मज्जनाय कृतोद्यमम् ॥२३॥

पदच्छेद— तत्र अपि अचष्ट गोविन्दम् लालयन्तम् सुतान् शिशून् ।
ततः अन्यस्मिन् गृहे अपश्यत् मज्जनाय कृत उद्यमम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र अपि	१.	वहाँ पर भी (नारद जी ने)	ततः	७.	वहाँ से
अचष्ट	६.	देखा	अन्यस्मिन्	८.	दूसरे
गोविन्दम्	५.	श्रीकृष्ण को	गृहे	९.	घर में जाने पर
लालयन्तम्	४.	दुलारते हुये	अपश्यत्	१०.	देखा कि वे
सुतान्	३.	पुत्रों को	मज्जनाय	११.	स्नान की
शिशून् ।	२.	नन्हें	कृत उद्यमम् ॥	१२.	तैयारी कर रहे हैं

श्लोकार्थ—वहाँ पर भी नारद जी ने नन्हें पुत्रों को दुलारते हुये श्रीकृष्ण को देखा । वहाँ से दूसरे घर में जाने पर देखा कि वे स्नान की तैयारी कर रहे हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

जुह्वन्तं च वितानाग्नीन् यजन्तं पञ्चभिर्मखैः ।
भोजयन्तं द्विजान् क्वापि भुञ्जानमवशेषितम् ॥२४॥

पदच्छेद— जुह्वन्तम् च वितान अग्नीन् यजन्तम् पञ्चभिः मखैः ।
भोजयन्तम् द्विजान् क्वापि भुञ्जानम् अवशेषितम् ॥

शब्दार्थ—

जुह्वन्तम्	३.	हवन करते हुये (और)	भोजयन्तम्	८.	भोजन कराते हुये
च वितान	१.	फिर कहीं यज्ञ कुण्ड	द्विजान्	७.	ब्राह्मणों को
अग्नीन्	२.	अग्नि में	क्वापि	६.	कहीं
यजन्तम्	५.	देवताओं की आराधना करते देखा	भुञ्जानम्	१०.	स्वयं भोजन करते देखा
पञ्चभिः मखैः ।	४.	महायज्ञों से	अवशेषितम् ॥	९.	और कहीं यज्ञ का अवशेष

श्लोकार्थ—फिर कहीं यज्ञ कुण्ड के अग्नि में हवन करते हुये और महायज्ञों से देवताओं की आराधना करते देखा । कहीं ब्राह्मणों को भोजन कराते हुये और कहीं यज्ञ का अवशेष स्वयं भोजन करते देखा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

क्वापि सन्ध्यामुपासीनं जपन्तं ब्रह्म वाग्यतम् ।
एकत्र चासिचर्मभ्यां चरन्तमसिवर्त्मसु ॥२५॥

पदच्छेद— क्वापि सन्ध्याम् उपासीनम् जपन्तम् ब्रह्म वाग्यतम् ।
एकत्र च असि चर्मभ्याम् चरन्तम् असि वर्त्मसु ॥

शब्दार्थ—

क्वापि	१. कहीं	एकत्र च	७. और कहीं
सन्ध्याम्	२. सन्ध्या वन्दन	असि	९. तलवार लेकर
उपासीनम्	३. करने (और कहीं)	चर्मभ्याम्	८. ढाल
जपन्तम्	६. जप करते हुये (देखा)	चरन्तम्	१२. (श्रीकृष्ण को देखा)
ब्रह्म	५. गायत्री का	असि	१०. तलवार के
वाग्यतम् ।	४. मौन होकर	वर्त्मसु ॥	११. मार्गों पर पैतरे, (बदलते हुये

श्लोकार्थ—कहीं सन्ध्या वन्दन करते और कहीं मौन होकर गायत्री का जप करते हुये देखा। और कहीं ढाल-तलवार लेकर तलवार के मार्गों पर पैंतरे बदलते हुये श्रीकृष्ण को देखा ॥

षड्विंशः श्लोकः

अश्वैर्गजै रथैः क्वापि विचरन्तं गदाग्रजम् ।
क्वचिच्छयानं पर्यङ्के स्तूयमानं च वन्दिभिः ॥२६॥

पदच्छेद— अश्वैः गजैः रथैः क्वापि विचरन्तम् गदाग्रजम् ।
क्वचित् शयानम् पर्यङ्के स्तूयमानम् च वन्दिभिः ॥

शब्दार्थ—

अश्वैः	२. घोड़े	क्वचित्	६. कहीं
गजैः	३. हाथी (अथवा)	शयानम्	८. सोते हुये
रथैः	४. रथ पर सवार होकर	पर्यङ्के	७. पलंग पर
क्वापि	१. कहीं पर	स्तूयमानम्	११. स्तुति किये जाते हुये
विचरन्तम्	५. विचरण करते हुये (और)	च	९. और कहीं
गदाग्रजम् ।	१२. श्रीकृष्ण को (देखा)	वन्दिभिः ॥	१०. वन्दियों द्वारा

श्लोकार्थ—कहीं पर घोड़े, हाथी अथवा रथ पर सवार होकर विचरण करते हुये और कहीं पलँग पर सोते हुये तथा कहीं वन्दियों द्वारा स्तुति किये जाते हुये श्रीकृष्ण को देखा ॥

सप्तविंशः श्लोकः

मन्त्रयन्तं च कस्मिंश्चिन्मन्त्रिभिश्चोद्धवादिभिः ।
जलक्रीडारतं क्वापि वारमुख्याबलावृतम् ॥२७॥

पदच्छेद— मन्त्रयन्तम् च कस्मिन् चित् मन्त्रिभिः च उद्धव आदिभिः ।
जलक्रीडा रतम् क्वापि वार मुख्या अबला आवृतम् ॥

शब्दार्थ—

मन्त्रयन्तम्	६.	परामर्श करते हुये	जल क्रीडा	११.	जल क्रीडा में
च	१.	और कहीं	रतम्	१२.	निरत श्रीकृष्ण को देखा
कस्मिन् चित्	२.	किसी महल में	क्वापि	७.	और कहीं
मन्त्रिभिः च	५.	मन्त्रियों के साथ	वार मुख्या	८.	श्रेष्ठ वाराङ्गनाओं
उद्धव	३.	उद्धव	अबला	९.	और नारियों से
आदिभिः ।	४.	आदि	आवृतम् ॥	१०.	घिर कर

श्लोकार्थ—और कहीं किसी महल में उद्धव आदि मन्त्रियों के साथ परामर्श करते हुये और कहीं श्रेष्ठ वाराङ्गनाओं और नारियों से घिर कर जल क्रीडा में निरत श्रीकृष्ण को देखा ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कुत्रचिद् द्विजमुख्येभ्यो ददतं गाः स्वलङ्कृताः ।
इतिहासपुराणानि शृण्वन्तं मङ्गलानि च ॥२८॥

पदच्छेद— कुत्रचित् द्विज मुख्येभ्यो ददतम् गाः स्वलङ्कृताः ।
इतिहास पुराणानि शृण्वन्तम् मङ्गलानि च ॥

शब्दार्थ—

कुत्रचित्	१.	कहीं	इतिहास	९.	इतिहास
द्विज	३.	ब्राह्मणों को	पुराणानि	१०.	पुराणों का
मुख्येभ्यः	२.	श्रेष्ठ	शृण्वन्तम्	११.	श्रवण करते हुये (श्रीकृष्ण को देखा)
ददतम्	६.	दान करते हुये	मङ्गलानि	८.	मङ्गलमय
गाः	५.	गौओं का	च ॥	७	और कहीं
सुअलङ्कृताः ।	४.	वस्त्राभूषणों से सुसज्जित			

श्लोकार्थ—कहीं श्रेष्ठ ब्राह्मणों को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित गौओं का दान करते हुये, और कहीं मङ्गलमय इतिहास, पुराणों का श्रवण करते हुये श्रीकृष्ण को देखा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

हसन्तं हास्यकथया कदाचित् प्रियया गृहे ।
क्वापि धर्मं सेवमानमर्थकामौ च कुत्रचित् ॥२९॥

पदच्छेद— हसन्तम् हास्य कथया कदाचित् प्रियया गृहे ।
क्वापि धर्मम् सेवमानम् अर्थ कामौ च कुत्रचित् ॥

शब्दार्थ—

हसन्तम्	६.	हँसते हुये	क्वापि	७.	कहीं पर
हास्य	४.	हास्य	धर्मम्	८.	धर्म का
कथया	५.	विनोद की बातें करके	सेवमानम्	१२.	सेवन करते (श्रीकृष्ण को) देखा
कदाचित्	१.	कहीं पर	अर्थ	१०.	अर्थ (तथा)
प्रियया	२.	प्रिया के साथ	कामौ	११.	काम का
गृहे ।	३.	घर में	च कुत्रचित् ॥	९.	और कहीं

श्लोकार्थ - कहीं पर प्रिया के साथ घर में हास्य विनोद की बातें करके हँसते हुये, कहीं पर धर्म का और कहीं अर्थ तथा काम का सेवन करते श्रीकृष्ण को देखा ॥

त्रिंशः श्लोकः

ध्यायन्तमेकमासीनं पुरुषं प्रकृतेः परम् ।
शुश्रूषन्तं गुरून् क्वापि कामैर्भोगैः सपर्यया ॥३०॥

पदच्छेद— ध्यायन्तम् एकम् आसीनम् पुरुषम् प्रकृतेः परम् ।
शुश्रूषन्तम् गुरून् क्वापि कामैः भोगैः सपर्यया ॥

शब्दार्थ—

ध्यायन्तम्	५.	ध्यान करते	शुश्रूषन्तम्	१२.	सेवा करते हुये (श्रीकृष्ण को देखा)
एकम्	३.	अद्वितीय	गुरून्	८.	गुरुजनों को
आसीनम्	६.	बैठे हुये	क्वापि	७.	और कहीं
पुरुषम्	४.	ब्रह्म का	कामैः	९.	अभीष्ट
प्रकृतेः	१.	कहीं प्रकृति से	भोगैः	१०.	पदार्थ
परम् ।	२.	परे	सपर्यया ॥	११.	समर्पित करके

श्लोकार्थ—कहीं प्रकृति से परे अद्वितीय ब्रह्म का ध्यान करते बैठे हुये और कहीं गुरुजनों को अभीष्ट पदार्थ समर्पित करके सेवा करते हुये श्रीकृष्ण को देखा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

कुर्वन्तं विग्रहं कैश्चित् सन्धिं चान्यत्र केशवम् ।
कुत्रापि सह रामेण चिन्तयन्तं सतां शिवम् ॥३१॥

पदच्छेद— कुर्वन्तम् विग्रहम् कैश्चित् सन्धिम् च अन्यत्र केशवम् ।
कुत्रापि सह रामेण चिन्तयन्तम् सताम् शिवम् ।।

शब्दार्थ—

कुर्वन्तम्	५. करते हुये	कुत्रापि	७. कहीं पर
विग्रहम्	२. युद्ध की बात	सह	९. साथ
कैश्चित्	१. किन्हीं के साथ	रामेण	८. बलराम के
सन्धिम्	४. सन्धि की बातें	चिन्तयन्तम्	१२. चिन्तन करते हुये देखा
च अन्यत्र	३. और दूसरी जगह	सताम्	१०. सत्पुरुषों के
केशवम् ।	६. श्रीकृष्ण को (देखा)	शिवम् ।।	११. कल्याण का

श्लोकार्थ—किन्हीं के साथ युद्ध की बात और दूसरी जगह सन्धि की बातें करते हुये श्रीकृष्ण को देखा । कहीं पर बलराम के साथ सत्पुरुषों के कल्याण का चिन्तन करते हुये देखा ।।

द्वात्रिंशः श्लोकः

पुत्राणां दुहितॄणां च काले विध्युपयापनम् ।
दारैर्वरैस्तत्सदृशैः कल्पयन्तं विभूतिभिः ॥३२॥

पदच्छेद— पुत्राणाम् दुहितॄणाम् च काले विधि उपयापनम् ।
दारैः वरैः तत् सदृशैः कल्पयन्तम् विभूतिभिः ।।

शब्दार्थ—

पुत्राणाम्	३. पुत्रों	दारैः	८. पत्नियों और
दुहितॄणाम्	५. पुत्रियों का	वरैः	९. वरों के साथ
च	४. और	तत्	६. उनके
काले	१. कहीं समय पर	सदृशैः	७. समान
विधि	२. विधिवत्	कल्पयन्तम्	१२. करते हुये (श्रीकृष्ण को)
उपयापनम् ।	११. विवाह कार्य	विभूतिभिः ।।	१०. बड़ी धूमधाम से

श्लोकार्थ—कहीं समय पर विधिवत् पुत्रों और पुत्रियों का उनके समान पत्नियों और वरों के साथ बड़ी धूमधाम से विवाह कार्य करते हुये श्रीकृष्ण को देखा ।।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

प्रस्थापनोपानयनैरपत्यानां महोत्सवान् ।
वीक्ष्य योगेश्वरेशस्य येषां लोका विसिस्मिरे ॥३३॥

पदच्छेद — प्रस्थापन उपानयनैः अपत्यानाम् महोत्सवान् ।
वीक्ष्य योगेश्वर ईशस्य येषाम् लोकाः विसिस्मरे ॥

शब्दार्थ —

प्रस्थापन	५.	विदाई और	योगेश्वर	१.	योगेश्वरों के
उपानयनैः	६.	बुलाने की तैयारी रूप	ईशस्य	२.	प्रभु श्रीकृष्ण के
अपत्यानाम्	४.	सन्तानों की	येषाम्	३.	जिन
महोत्सवान् ।	७.	महान् उत्सवों को	लोकाः	९.	लोग
वीक्ष्य	८.	देख कर	विसिस्मिरे ॥	१०.	विस्मित हो जाते थे

श्लोकार्थ— योगेश्वरों के प्रभु भगवान् श्रीकृष्ण के जिन सन्तानों की विदाई और बुलाने की तैयारी रूप महान् उत्सवों को देख कर लोग विस्मित हो जाते थे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यजन्तं सकलान् देवान् क्वापि क्रतुभिरूर्जितैः ।
पूर्तयन्तं क्वचिद् धर्मं कूपाराममठादिभिः ॥३४॥

पदच्छेद— यजन्तम् सकलान् देवान् क्वापि क्रतुभिः ऊर्जितैः ।
पूर्तयन्तम् क्वचित् धर्मम् कूपआराम मठ आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

यजन्तम्	६.	पूजन करते हुये	पूर्तयन्तम्	१२.	आचरण करते हुये (देखा)
सकलान्	४.	सभी	क्वचित्	७.	और कहीं
देवान्	५.	देवताओं का	धर्मम्	११.	इष्टा पूर्त धर्म का
क्वापि	१.	कहीं पर (श्रीकृष्ण को)	कूप आराम	८.	कुएँ बगीचे तथा
क्रतुभिः	३.	यज्ञों के द्वारा	मठ	९.	मठ
ऊर्जितैः ।	२.	बड़े-बड़े	आदिभिः ॥	१०.	आदि बनवा कर

श्लोकार्थ—कहीं पर श्रीकृष्ण को बड़े-बड़े यज्ञों के द्वारा सभी देवताओं का पूजन करते हुये और कहीं कुएँ, बगीचे तथा मठ आदि बनवा कर इष्टापूर्त धर्म का आचरण करते हुये देखा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

चरन्तं मृगयां क्वापि हयमारुह्य सैन्धवम् ।
घ्नन्तं ततः पशून् मेध्यान् परीतं यदुपुङ्गवैः ॥३५॥

पदच्छेद— चरन्तम् मृगयाम् क्वापि हयम् आरुह्य सैन्धवम् ।
घ्नन्तम् ततः पशून् मेध्यान् परीतम् यदुपुङ्गवैः ॥

शब्दार्थ—

चरन्तम्	८.	खेलते हुये	घ्नन्तम्	१२.	वध करते हुये (देखा)
मृगयाम्	७.	शिकार	ततः	९.	तदनन्तर
क्वापि	१.	कहीं	पशून्	११.	पशुओं का
हयम्	५.	घोड़े पर	मेध्यान्	१०.	यज्ञ के लिये
आरुह्य	६.	चढ़ कर	परीतम्	३.	घिरे हुये
सैन्धवम् ।	४.	सिन्धुदेशीय	यदुपुङ्गवैः ॥	२.	श्रेष्ठ यादवों से

श्लोकार्थ—कहीं श्रेष्ठ यादवों से घिरे हुये सिन्धु देशीय घोड़े पर चढ़कर शिकार खेलते हुये तदनन्तर यज्ञ के लिये पशुओं का वध करते हुये श्रीकृष्ण को देखा ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

अव्यक्तलिङ्गं प्रकृतिष्वन्तः पुरगृहादिषु ।
क्वचिच्चरन्तं योगेशं तत्तद्भावबुभुत्सया ॥३६॥

पदच्छेद— अव्यक्त लिङ्गम् प्रकृतिषु अन्तः पुर गृह आदिषु ।
क्वचित् चरन्तम् योगेशम् तत्-तत् भाव बुभुत्सया ॥

शब्दार्थ—

अव्यक्त	६.	छिपे रूप से	क्वचित्	१.	कहीं
लिङ्गम्	७.	वेष बदल कर	चरन्तम्	११.	विचरण करते हुये
प्रकृतिषु	२.	प्रजाओं में (तथा)	योगेशम्	१२.	योगेश्वर श्रीकृष्ण को देखा
अन्तः पुर	३.	अन्तः पुर के	तत्-तत्	८.	उन सब का
गृह	४.	महल	भाव	९.	भाव
आदिषु ।	५.	आदि में	बुभुत्सया ॥	१०.	जानने के लिये

श्लोकार्थ—कहीं प्रजाओं में तथा अन्तःपुर के महल आदि में छिपे रूप से वेष बदल कर उन सबका भाव जानने के लिये विचरण करते हुये योगेश्वर श्रीकृष्ण को देखा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अथोवाच हृषीकेशं नारदः प्रहसन्निव ।
योगमायोदयं वीक्ष्य मानुषीमीयुषो गतिम् ॥३७॥

पदच्छेद— अथ उवाच हृषीकेशम् नारदः प्रहसन् इव ।
योगमाया उदयम् वीक्ष्य मानुषीम् ईयुषः गतिम् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	अनन्तर	योगमाया	५.	योगमाया का
उवाच	१२.	कहा	उदयम्	६.	वैभव
हृषीकेशम्	११.	श्रीकृष्ण से	वीक्ष्य	७.	देख कर
नारदः	१०.	नारद ने	मानुषीम्	२.	मनुष्य की
प्रहसन्	८.	हँसते हुये	ईयुषः	४.	करते हुये (श्रीकृष्ण की)
इव ।	९.	से	गतिम् ॥	३.	लीला

श्लोकार्थ—अनन्तर मनुष्य की सी लीला करते हुये श्रीकृष्ण की योगमाया का वैभव देख कर हंसते हुये से नारद ने श्रीकृष्ण से कहा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

विदाम योगमायान्ते दुर्दर्शा अपि मायिनाम् ।
योगेश्वरात्मन् निर्भाता भवत्पादनिषेवया ॥३८॥

पदच्छेद— विदाम योगमायाम् ते दुर्दर्शा अपि मायिनाम् ।
योगेश्वर आत्मन् निर्भाता भवत् पाद निषेवया ॥

शब्दार्थ—

विदाम	६.	हम जानते हैं	योगेश्वर	७.	हे योग के ईश्वर !
योगमायाम्	५.	योग माया को	आत्मन्	८.	आत्म देव !
ते	४.	आप की (उस)	निर्भाता	१२.	मेरे सामने प्रकट हो गई
दुर्दर्शा	३.	अगम्य हैं	भवत्	९.	आप के
अपि	२.	भी	पाद	१०.	चरणों की
मायिनाम् ।	१.	जो मायावियों के लिये	निषेवया ॥	११.	सेवा से (वह माया)

श्लोकार्थ—जो मायावियों के लिये भी अगम्य है आपकी उस योग माया को हम जानते हैं । हे योग के ईश्वर ! आत्मदेव ! आपके चरणों की सेवा से वह माया मेरे सामने प्रकट हो गई ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

अनुजानीहि मां देव लोकांस्ते यशसाऽऽप्लुतान् ।
पर्यटामि तवोद्गायन् लीलां भुवनपावनीम् ॥३९॥

पदच्छेद— अनुजानीहि माम् देव लोकान् ते यशसा आप्लुतान् ।
पर्यटामि तव उद्गायन् लीलाम् भुवन पावनीम् ॥

शब्दार्थ—

अनुजानीहि	३. आज्ञा दीजिये (कि)	पर्यटामि	१२. विचरण करूँ
माम्	२. मुझे	तव	७. आप की
देव	१. हे भगवन् !	उद्गायन्	११. गान करता हुआ
लोकान्	६. लोकों में	लीलाम्	१०. लीला का
ते यशसा	४. मैं आपके यश से	भुवन	८. त्रिभुवन
आप्लुताम् ।	५. परिपूर्ण	पावनीम् ॥	९. पावनी

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं आपके यश से परिपूर्ण लोकों में आपकी त्रिभुवन पावनी लीला का गान करता हुआ विचरण करूँ ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—ब्रह्मन् धर्मस्य वक्ताहं कर्ता तदनुमोदिता ।
तच्छिक्षयँल्लोकमिममास्थितः पुत्र मा खिदः ॥४०॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् धर्मस्य वक्ता अहम् कर्ता तत् अनुमोदिता ।
तत् शिक्षयन् लोकम् इमम् आस्थितः पुत्र मा खिदः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१. देवर्षि नारद जी	तत्	९. उस (धर्म) की
धर्मस्य	३. धर्म का	शिक्षयन्	१०. शिक्षा देता हुआ (मैं)
वक्ता	४. उपदेशक	लोकम्	८. संसार को
अहम्	२. मैं	इमम्	११. इस प्रकार
कर्ता	५. अनुष्ठान करने वाला	आस्थितः	१२. आचरण करता हूँ
तत्	६. और उसका	पुत्र	१३. हे पुत्र !
अनुमोदिता ।	७. अनुमोदन कर्ता भी हूँ	मा खिदः ॥	१४. तुम खेद मत करना

श्लोकार्थ—देवर्षि नारद जी ! मैं धर्म का अनुष्ठान करने वाला और उसका अनुमोदन कर्ता भी हूँ । संसार को धर्म की शिक्षा देता हुआ मैं इस प्रकार आचरण करता हूँ । हे पुत्र ! तुम खेद मत करना ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्याचरन्तं सद्धर्मान् पावनान् गृहमेधिनाम् ।
तमेव सर्वगेहेषु सन्तमेकं ददर्श ह ॥४१॥

पदच्छेद— इति आचरन्तम् सद्धर्मान् पावनान् गृह मेधिनाम् ।
तम् एव सर्वं गेहेषु सन्तम् एकम् ददर्श ह ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	तम् एव	७.	उन ही
आचरन्तम्	६.	आचरण करते हुये	सर्वं	९.	सब
सद्	४.	श्रेष्ठ	गेहेषु	१०.	पत्नियों के
धर्मान्	५.	धर्मों का	सन्तम्	११.	भवनों में रहते हुये
पावनान्	३.	पवित्र करने वाले	एकम्	८.	एक (श्रीकृष्ण को)
गृहमेधिनाम् ।	२.	गृहस्थों को	ददर्श ह ॥	१२.	देखा

श्लोकार्थ—इस प्रकार गृहस्थों को पवित्र करने वाले श्रेष्ठ धर्मों का आचरण करते हुये उन ही एक श्रीकृष्ण को सब पत्नियों के भवनों में रहते हुये देखा ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

कृष्णस्यानन्तवीर्यस्य योगमायामहोदयम् ।
मुहुर्दृष्ट्वा ऋषिरभूद् विस्मितो जातकौतुकः ॥४२॥

पदच्छेद— कृष्णस्य अनन्त वीर्यस्य योगमाया महोदयम् ।
मुहुः दृष्ट्वा ऋषिः अभूत् विस्मितः जात कौतुकः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णस्य	३.	श्रीकृष्ण की	दृष्ट्वा	७.	देख कर
अनन्त	१.	अनन्त	ऋषिः	८.	ऋषि नारद को
वीर्यस्य	२.	शक्तिशाली	अभूत्	१२.	हुआ
योगमाया	४.	योगमाया का	विस्मितः	११.	विस्मय
महोदयम् ।	५.	परम ऐश्वर्य	जात	१०.	होने से
मुहुः	६.	बार-बार	कौतुकः ॥	९.	कौतूहल

श्लोकार्थ—अनन्त शक्तिशाली श्रीकृष्ण की योग माया का परम ऐश्वर्य बारम्बार देखकर ऋषि नारद को कौतूहल होने से विस्मय हुआ ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्यर्थकामधर्मेषु कृष्णेन श्रद्धितात्मना ।
सम्यक् सभाजितः प्रीतस्तमेवानुस्मरन् ययौ ॥४३॥

पदच्छेद— इति अर्थ काम धर्मेषु कृष्णेन श्रद्धित आत्मना ।
सम्यक् सभाजितः प्रीतः तम् एव अनुस्मरन् ययौ ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	सम्यक्	७.	नारद का बड़ा
अर्थ काम	३.	अर्थ-काम और	सभाजितः	८.	सम्मान किया
धर्मेषु	४.	धर्म में	प्रीतः	९.	वे प्रसन्न होकर
कृष्णेन	२.	श्रीकृष्ण ने	तम् एव	१०.	उन्हीं (श्रीकृष्ण) का
श्रद्धित	५.	श्रद्धायुक्त	अनुस्मरन्	११.	स्मरण करते हुये
आत्मना ।	६.	चित्त वाले	ययौ ॥	१२.	चले गये

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण ने अर्थ-काम और धर्म में श्रद्धा युक्त चित्त वाले नारद का बड़ा सम्मान किया । वे प्रसन्न होकर उन्हीं श्रीकृष्ण का स्मरण करते हुये चले गये ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

एवं मनुष्यपदवीमनुवर्तमानो नारायणोऽखिलभवाय गृहीतशक्तिः ।
रेमेऽङ्ग षोडशसहस्रवराङ्गनानां सव्रीडसौहृदनिरीक्षणहासजुष्टः ॥४४॥

पदच्छेद—एवम् मनुष्य पदवीम् अनुवर्तमानः नारायणः अखिल भवाय गृहीत शक्तिः ।
रेमे अङ्ग षोडश सहस्र वराङ्गनानाम् सव्रीड सौहृद निरीक्षण हासजुष्टः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	रेमे	१६.	उसके साथ विहार करते थे
मनुष्य	३.	मनुष्य की	अङ्ग	१.	हे राजन् !
पदवीम्	४.	लीला	षोडशसहस्र	१०.	सोलह हजार
अनुवर्तमानः	५.	करते हुये	वराङ्गनानाम्	११.	उत्तम स्त्रियों के
नारायण	६.	भगवान् श्रीकृष्ण	सव्रीड	१२.	सलज्ज
अखिल भवाय	७.	सारे संसार के लिये	सौहृद	१३.	सुहृदभाव
गृहीत	९.	स्वीकार करके	निरीक्षण	१४.	प्रेम भरी चितवन और
शक्तिः ।	८.	योग माया को	हास जुष्टः ।	१५.	मुसकान से सेवित होकर

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार मनुष्य की लीला करते हुये भगवान् श्रीकृष्ण सारे संसार के लिये योग माया को स्वीकार करके सोलह हजार उत्तम स्त्रियों के सलज्ज सुहृद्भाव, प्रेमभरी चितवन और मुसकान से सेवित होकर उनके साथ विहार करते थे ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

यानीह विश्वविलयोद्भववृत्तिहेतुः कर्माण्यनन्यविषयाणि हरिश्चकार ।
यस्त्वङ्ग गायति शृणोत्यनुमोदते वा भक्तिर्भवेद् भगवति ह्यपवर्गमार्गे ॥४५॥

पदच्छेद—

यानि इह विश्वविलय उद्भव वृत्ति हेतुः कर्माणि अनन्य विषयाणि हरिः चकार ।
यः तु अङ्ग गायति शृणोति अनुमोदते वा भक्तिः भवेत् भगवति हि अपवर्गमार्गे ॥

शब्दार्थ—

यानि इह	२.	जो यहाँ	यः तु	१०.	जो व्यक्ति उनका
विश्वविलय	७.	संसार के नाश	अङ्ग	१.	हे राजन् !
उद्भव	८.	उत्पत्ति और	गायति	११.	गान
वृत्ति हेतुः	९.	स्थिति के कारण रूप हैं	शृणोति	१२.	श्रवण
कर्माणि	५.	कर्म हैं उन्हें	अनुमोदते वा	१३.	अथवा अनुमोदन करता है
अनन्य	३.	दूसरे के	भक्तिःभवेत्	१६.	भक्ति प्राप्त होती है
विषयाणि	४.	विषय न होने योग्य	भगवति हि	१५.	भगवान् में
हरिः चकार ।	६.	श्रीकृष्ण ने किया है	अपवर्गमार्गे ॥	१४.	उसे मोक्ष के मार्ग रूप

श्लोकार्थ—

हे राजन् ! जो यहाँ दूसरे के विषय न होने योग्य कर्म हैं, उन्हें श्रीकृष्ण ने किया है जो संसार के नाश, उत्पत्ति और स्थिति के कारण रूप हैं । जो व्यक्ति उन (कर्मों) का गान, श्रवण अथवा अनुमोदन करता है उसे मोक्ष के मार्ग रूप भगवान् में भक्ति प्राप्त हो जाती है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे कृष्णगार्हस्थ्यदर्शनं
नाम एकोनसप्ततितमः अध्यायः ॥६९॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्तत्रिंशः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथोषस्युपवृत्तायां कुक्कुटान् कूजतोऽशपन् ।
गृहीतकण्ठ्यः पतिभिर्माधव्यो विरहातुराः ॥१॥

पदच्छेद— अथ उषसि उपवृत्तायाम् कुक्कुटान् कूजतः अशपन् ।
गृहीत कण्ठ्यः पतिभिः माधव्यः विरह आतुराः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसके बाद	गृहीत	११.	बाहें डाल रखी थीं
उषसि	२.	भोर	कण्ठ्यः	९.	गले में
उपवृत्तायाम्	३.	होने के समय	पतिभिः	१०.	पति श्रीकृष्ण ने
कुक्कुटान्	५.	मुर्गों को	माधव्यः	८.	श्रीकृष्ण की पत्नियाँ जिनके
कूजतः	४.	बोलते हुये	विरह	६.	वियोग की आशंका से
अशपन् ।	१२.	कोसने लगतीं	आतुराः ॥	७.	व्याकुल

श्लोकार्थ—इसके बाद भोर होने के समय बोलते हुये मुर्गों को वियोग की आशंका से व्याकुल श्रीकृष्ण की पत्नियाँ, जिनके गले में पति श्रीकृष्ण ने बाँहें डाल रखी थीं, कोसने लगतीं ॥

द्वितीयः श्लोकः

वयांस्यरूरुवन् कृष्णं बोधयन्तीव वन्दिनः ।
गायत्स्वलिष्वनिद्राणि मन्दारवनवायुभिः ॥२॥

पदच्छेद— वयांसि अरूरुवन् कृष्णम् बोधयन्ति इव वन्दिनः ।
गायत्सु अलिषु अनिद्राणि मन्दार वन वायुभिः ॥

शब्दार्थ—

वयांसि	७.	पक्षी	गायत्सु	६.	गाने लगते (और)
अरूरुवन्	८.	कूजने लगते	अलिषु	५.	भौंरे
कृष्णम्	११.	श्रीकृष्ण को	अनिद्राणि	४.	खुली हुई नींद वाले
बोधयन्ति	१२.	जगा रहे हों	मन्दार	१.	पारिजात
इव	९.	मानों	वन	२.	वन की
वन्दिनः ।	१०.	वन्दी लोग	वायुभिः ॥	३.	वायु से

श्लोकार्थ—पारिजात वन की वायु से खुली हुई नींद वाले भौंरे गाने लगते और पक्षी कूजने लगते । मानों वन्दी लोग श्रीकृष्ण को जगा रहे हों ॥

तृतीयः श्लोकः

मुहूर्तं तं तु वैदर्भी नामृष्यदतिशोभनम्।
परिरम्भणविश्लेषात् प्रियबाह्वन्तरं गता॥३॥

पदच्छेद— मुहूर्तम् तम् तु वैदर्भी न अमृष्यत् अतिशोभनम्।
परिरम्भण विश्लेषात् प्रिय बाहु अन्तरम् गता॥

शब्दार्थ—

मुहूर्तम्	१०.	ब्राह्म मुहूर्त को भी	परिरम्भण	५.	आलिंगन
तम् तु	८.	उस	विश्लेषात्	६.	छूट जाने के भय से
वैदर्भी	७.	रुक्मिणी	प्रिय	१.	प्रियतम की
न	११.	नहीं	बाहु	२.	भुजाओं के
अमृष्यत्	१२.	सहन कर पाती थीं	अन्तरम्	३.	भीतर
अतिशोभनम्।	९.	अत्यन्त सुहावने	गता॥	४.	पड़ी रहने पर भी

श्लोकार्थ—प्रियतम की भुजाओं के भीतर पड़ी रहने पर भी आलिंगन छूट जाने के भय से रुक्मिणी उस अत्यन्त सुहावने ब्राह्म मुहूर्त को भी नहीं सहन कर पाती थीं॥

चतुर्थः श्लोकः

ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय वार्युपस्पृश्य माधवः।
दध्यौ प्रसन्नकरण आत्मानं तमसः परम्॥४॥

पदच्छेद— ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय वारि उपस्पृश्य माधवः।
दध्यौ प्रसन्न करणः आत्मानम् तमसः परम्॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मे	२.	ब्राह्म	दध्यौ	१२.	ध्यान करने लगते
मुहूर्ते	३.	मुहूर्त में	प्रसन्न	७.	प्रसन्न
उत्थाय	४.	उठ कर	करणः	८.	चित्त से
वारि	५.	जल से	आत्मानम्	११.	आत्मस्वरूप का
उपस्पृश्य	६.	आचमन करके	तमसः	९.	माया से
माधवः।	१.	भगवान् श्रीकृष्ण	परम्॥	१०.	परे

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ब्राह्म मुहूर्त में उठ कर जल से आचमन करके प्रसन्न चित्त से माया से परे आत्मस्वरूप का ध्यान करने लगते॥

पञ्चमः श्लोकः

एकं स्वयंज्योतिरनन्यमव्ययं स्वसंस्थया नित्यनिरस्तकल्मषम् ।
ब्रह्माख्यमस्योद्भवनाशहेतुभिः स्वशक्तिभिर्लक्षितभावनिर्वृतिम् ॥५॥

पदच्छेद— एकम् स्वयम् ज्योतिः अनन्यम् अव्ययम् स्वसंस्थया नित्य निरस्त कल्मषम् ।
ब्रह्म आख्यम् अस्य उद्भव नाश हेतुभिः स्वशक्तिभिः लक्षितभाव निर्वृतिम् ॥

शब्दार्थ—

एकम्	१.	एक	ब्रह्म आख्यम्	१६.	ब्रह्म नाम से (अपने स्वरूप का) ध्यान करते हैं
स्वयम् ज्योतिः	२.	स्वयं प्रकाश	अस्य	९.	इस जगत् की
अनन्यम्	३.	भेद से रहित	उद्भव	१०.	उत्पत्ति-स्थिति और
अव्ययम्	४.	अविनाशी	नाश	११.	नाश की
स्वसंस्थया	५.	अपने स्वरूप में	हेतुभिः	१२.	कारण-भूता
नित्य	६.	सदा	स्वशक्तिभिः	१३.	अपनी शक्तियों के द्वारा
निरस्त	८.	परे	लक्षितभाव	१४.	अनुमित सत्तारूप
कल्मषम् ।	७.	अविद्या से	निर्वृतिम् ॥	१५.	आनन्द स्वरूप तथा

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! एक, स्वयं प्रकाश, भेद से रहित, अविनाशी, अपने स्वरूप में सदा अविद्या से परे, इस जगत् की उत्पत्ति स्थिति और नाश की कारण-भूता अपनी शक्तियों के द्वारा अनुमित सत्तारूप आनन्द स्वरूप तथा ब्रह्म नाम वाले अपने स्वरूप का ध्यान करते हैं ॥

षष्ठः श्लोकः

अथाप्लुतोऽम्भस्यमले यथाविधि क्रियाकलापं परिधाय वाससी ।
चकार सन्ध्योपगमादि सत्तमो हुतानलो ब्रह्म जजाप वाग्यतः ॥६॥

पदच्छेद— अथ आप्लुतः अम्भसि अमले यथाविधि क्रियाकलापम् परिधाय वाससी ।
चकार सन्ध्या उपगम आदि सत्तमः हुत अनलः ब्रह्म जजाप वाग्यतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसके बाद	चकार	१२.	करते (तब)
आप्लुतः	६.	स्नान करते फिर	सन्ध्या	९.	सन्ध्या
अम्भसि	४.	जल में	उपगम आदि	१०.	वन्दन आदि
अमले	३.	निर्मल	सत्तमः	२.	सज्जनों में अग्रणी (भगवान्)
यथाविधि	५.	विधि पूर्वक	हुत अनलः	१३.	हवन करके
क्रियाकलापम्	११.	नित्य कर्म	ब्रह्म	१५.	गायत्री का
परिधाय	८.	धारण करके	जजाप	१६.	जप करते थे
वाससी ।	७.	दो वस्त्र	वाग्यतः ॥	१४.	मौन होकर

श्लोकार्थ—इसके बाद सज्जनों में अग्रणी भगवान् निर्मल जल में विधि पूर्वक स्नान करते फिर दो वस्त्र धारण करके सन्ध्या-वन्दन आदि नित्य कर्म करते तब हवन करके मौन होकर गायत्री का जप करते थे ॥

सप्तमः श्लोकः

उपस्थायार्कमुद्यन्तं तर्पयित्वाऽऽत्मनः कलाः ।
देवानृषीन् पितॄन् वृद्धान् विप्रानभ्यर्च्य चात्मवान् ॥७॥

पदच्छेद— उपस्थाय अर्कम् उद्यन्तम् तर्पयित्वा आत्मनः कलाः ।
देवान् ऋषीन् पितॄन् वृद्धान् विप्रान् अभ्यर्च्य च आत्मवान् ॥

शब्दार्थ—

उपस्थाय	४.	सूर्योपस्थान करके	देवान्	७.	देवता
अर्कम्	१.	सूर्य के	ऋषीन्	८.	ऋषि तथा
उद्यन्तम्	२.	उदय होने पर	पितॄन्	९.	पितरों का
तर्पयित्वा	१०.	तर्पण करते (फिर)	वृद्धान्	११.	वृद्धों एवम्
आत्मनः	५.	अपने	विप्रान्	१२.	विप्रों की
कलाः ।	६.	कला रूप	अभ्यर्च्य च	१३.	पूजा करते थे
			आत्मवान् ॥	३.	आत्मनिष्ठ भगवान्

श्लोकार्थ—सूर्य के उदय होने पर आत्मनिष्ठ भगवान् श्रीकृष्ण सूर्योपस्थान करके अपनी कला रूप देवता, ऋषि तथा पितरों का तर्पण करते। फिर वृद्धों एवम् विप्रों की पूजा करते थे ॥

अष्टमः श्लोकः

धेनूनां रुक्मशृङ्गीणां साध्वीनां मौक्तिकस्रजाम् ।
पयस्विनीनां गृष्टीनां सवत्सानां सुवाससाम् ॥८॥

पदच्छेद— धेनूनाम् रुक्मशृङ्गीणाम् साध्वीनाम् मौक्तिक स्रजाम् ।
पयस्विनीनाम् गृष्टीनाम् सवत्सानाम् सुवाससाम् ॥

शब्दार्थ—

धेनूनाम्	१०.	गौओं का (दान करते थे)	स्रजाम् ।	९.	माला पहने हुई
रुक्म	४.	सोने से मण्डित	पयस्विनीनाम्	१.	दुधारू
शृङ्गीणाम्	५.	सींगों वाली	गृष्टीनाम्	२.	पहले-पहले ब्यायी हुई
साध्वीनाम्	६.	सीधी	सवत्सानाम्	३.	बछड़ों वाली
मौक्तिक	८.	मोतियों की	सुवाससाम् ॥	७.	सुन्दर वस्त्र और

श्लोकार्थ—फिर भगवान् दुधारू, पहले ब्यायी हुई, बछड़ों वाली, सोने से मण्डित सींगों वाली, सीधी, सुन्दर वस्त्र और मोतियों की माला पहने हुई गौओं का दान करते थे ॥

नवमः श्लोकः

ददौ रूप्यखुराग्राणां क्षौमाजिनतिलैः सह ।
अलङ्कृतेभ्यो विप्रेभ्यो बद्वं बद्वं दिने दिने ॥९॥

पदच्छेद— ददौ रूप्य खुर अग्राणाम् क्षौम अजिन तिलैः सह ।
अलङ्कृतेभ्यो विप्रेभ्यः बद्वम् बद्वम् दिने-दिने ॥

शब्दार्थ—

ददौ	११.	दान करते थे	अलङ्कृतेभ्यो	१.	वस्त्राभूषणों से सुसज्जित
रूप्य	६.	चाँदी से युक्त	विप्रेभ्यः	२.	ब्राह्मणों को
खुर	७.	खुरों के	बद्वम्	९.	तेरह हजार
अग्राणाम्	८.	अग्र भाग वाली	बद्वम्	१०.	चौरासी गौओं का
क्षौम अजिन	४.	रेशमी वस्त्र-मृग चर्म (और)	दिने-दिने ॥	३.	प्रति-दिन
तिलैः सह ।	५.	तिलों के साथ			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण वस्त्राभूषणों से सुसज्जित ब्राह्मणों को प्रति-दिन रेशमी वस्त्र, मृग-चर्म और तिलों के साथ चाँदी से युक्त खुरों के अग्रभाग वाली तेरह हजार चौरासी गौओं का दान करते थे ॥

दशमः श्लोकः

गोविप्रदेवतावृद्धगुरून् भूतानि सर्वशः ।
नमस्कृत्यात्मसम्भूतीर्मङ्गलानि समस्पृशत् ॥१०॥

पदच्छेद— गोविप्र देवता वृद्ध गुरून् भूतानि सर्वशः ।
नमस्कृत्य आत्म सम्भूतीः मङ्गलानि समस्पृशत् ॥

शब्दार्थ—

गोविप्र	३.	गौ-ब्राह्मण	नमस्कृत्य	८.	नमस्कार करके
देवता वृद्ध	४.	देवता, बड़े-बूढ़े	आत्म	१.	अपनी
गुरून्	५.	गुरु जन (और)	सम्भूतीः	२.	विभूति रूप
भूतानि	७.	प्राणियों को	मङ्गलानि	९.	माङ्गलिक वस्तुओं का
सर्वशः ।	६.	समस्त	समस्पृशत् ॥	१०.	स्पर्श करते थे

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण अपनी विभूति रूप गौ, ब्राह्मण, देवता, बड़े-बूढ़े, गुरु जन और समस्त प्राणियों को नमस्कार करके माङ्गलिक वस्तुओं का स्पर्श करते थे ॥

एकादशः श्लोकः

आत्मानं भूषयामास नरलोकविभूषणम् ।
वासोभिर्भूषणैः स्वीयैर्दिव्यस्रगनुलेपनैः ॥११॥

पदच्छेद— आत्मानम् भूषयामास नरलोक विभूषणम् ।
वासोभिः भूषणैः स्वीयैः दिव्यस्रक् अनुलेपनैः ॥

शब्दार्थ—

आत्मानम्	३.	अपने को	वासोभिः भूषणैः	५.	वस्त्रों, आभूषणों
भूषयामास	८.	आभूषित करते थे	स्वीयैः	४.	अपने
नरलोक	१.	मनुष्य लोक के	दिव्यस्रक्	६.	दिव्य पुष्पहारों और
विभूषणम् ।	२.	अलंकार स्वरूप	अनुलेपनैः ॥	७.	अङ्ग रागों से

श्लोकार्थ—वे भगवान् मनुष्य लोक के अलंकार स्वरूप अपने को अपने वस्त्रों, आभूषणों, दिव्य पुष्पहारों और अङ्गरागों से आभूषित करते थे ॥

द्वादशः श्लोकः

अवेक्ष्याज्यं तथाऽऽदर्शं गोवृषद्विजदेवताः ।
कामांश्च सर्ववर्णानां पौरान्तःपुरचारिणाम् ।
प्रदाप्य प्रकृतीः कामैः प्रतोष्य प्रत्यनन्दत ॥१२॥

पदच्छेद— अवेक्ष्य आज्यम् तथा आदर्शम् गोवृष द्विजदेवताः ।
कामान् च सर्ववर्णानाम् पौर अन्तःपुर चारिणाम् ।
प्रदाप्य प्रकृतीः कामैः प्रतोष्य प्रत्यनन्दत् ॥

शब्दार्थ—

अवेक्ष्य	६.	देखकर	सर्ववर्णानाम्	११.	सभी वर्णों को
आज्यम्	१.	घी	पौर	७.	पुरवासियों तथा
तथा	२.	तथा	अन्तःपुर	८.	अन्तःपुर में
आदर्शम्	३.	दर्पण	चारिणाम् ।	९.	रहने वाले
गोवृष	४.	गाय, बैल	प्रदाप्य प्रकृतीः	१३.	देकर-प्रजाओं को
द्विजदेवताः ।	५.	ब्राह्मण और देवताओं को	कामैः	१४.	कामनायें
कामान्	१२.	भोग सामग्रियाँ	प्रतोष्य	१५.	पूर्ण करके उनका
च	१०.	और	प्रत्यनन्दत् ॥	१६.	अभिनन्दन करते थे ।

श्लोकार्थ—वे भगवान् श्रीकृष्ण घी तथा दर्पण, गाय, बैल, ब्राह्मण और देवताओं को पुरवासियों तथा अन्तःपुर में रहने वाले और सभी वर्णों को भोग सामग्रियाँ देकर प्रजाओं की कामनायें पूर्ण करके उनका अभिनन्दन करते थे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

संविभज्याग्रतो विप्रान् स्रक्ताम्बूलानुलेपनैः ।
सुहृदः प्रकृतीर्दारानुपायुङ्क्त ततः स्वयम् ॥१३॥

पदच्छेद— संविभज्य अग्रतः विप्रान् स्रक् ताम्बूल अनुलेपनैः ।
सुहृदः प्रकृतीः दारान् उपायुङ्क्त ततः स्वयम् ॥

शब्दार्थ—

संविभज्य	६.	बाँट देते थे	सुहृदः	६.	स्वजन सम्बन्धियों को
अग्रतः	४.	पहले	प्रकृतीः	७.	मन्त्रियों और
विप्रान्	५.	ब्राह्मणों को	दारान्	८.	रानियों को
स्रक्	१.	वे पुष्पमाला	उपायुङ्क्त	१२.	काम में लाते थे
ताम्बूल	२.	ताम्बूल	ततः	१०.	तब
अनुलेपनैः ।	३.	चन्दन (आदि)	स्वयम् ॥	११.	अपने

श्लोकार्थ— वे पुष्पमाला, ताम्बूल, चन्दन आदि पहले ब्राह्मणों को, स्वजन, सम्बन्धियों को, मन्त्रियों को बाँट देते थे । तब अपने काम में लाते थे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तावत् सूत उपानीय स्यन्दनं परमाद्भुतम् ।
सुग्रीवाद्यैर्हयैर्युक्तं प्रणम्यावस्थितोऽग्रतः ॥१४॥

पदच्छेद— तावत् सूत उपानीय स्यन्दनम् परम अद्भुतम् ।
सुग्रीव आद्यैः हयैः युक्तम् प्रणम्य अवस्थितः अग्रतः ॥

शब्दार्थ—

तावत्	१.	तब-तक	सुग्रीव आदि	३.	सुग्रीव आदि
सूत	२.	सारथि	हयैः	४.	घोड़ों से
उपानीय	६.	लाकर	युक्तम्	५.	जुता हुआ
स्यन्दनम्	८.	रथ	प्रणम्य	१०.	प्रणाम करके
परम	६.	परम	अवस्थितः	१२.	खड़ा हो जाता था
अद्भुतम् ।	७.	अद्भुत	अग्रतः ॥	११.	सामने

श्लोकार्थ—तब-तक सारथि सुग्रीव आदि घोड़ों से जुता हुआ परम अद्भुत रथ लाकर प्रणाम करके सामने खड़ा हो जाता था ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गृहीत्वा पाणिना पाणी सारथेस्तमथारुहत् ।
सात्यक्युद्धवसंयुक्तः पूर्वाद्रिमिव भास्करः ॥१५॥

पदच्छेद— गृहीत्वा पाणिना पाणी सारथेः तम् अथ आरुहत् ।
सात्यकि उद्धव संयुक्तः पूर्वाद्रिम् इव भास्करः ॥

शब्दार्थ—

गृहीत्वा	८.	पकड़ कर	सात्यकि	२.	सात्यकि और
पाणिना	५.	हाथ से	उद्धव	३.	उद्धव के
पाणी	७.	हाथों को	संयुक्तः	४.	साथ (अपने)
सारथेः	६.	सारथी के	पूर्वाद्रिम्	१३.	उदयाचल पर आरूढ़ होते हैं
तम्	९.	रथ पर	इव	११.	ठीक वैसे ही जैसे
अथ	१.	इसके बाद श्रीकृष्ण	भास्करः ॥	१२.	सूर्य भगवान्
आरुहत् ।	१०.	सवार होते थे			

श्लोकार्थ—इसके बाद श्रीकृष्ण सात्यकि और उद्धव के साथ अपने हाथ से सारथी के हाथों को पकड़ कर रथ पर सवार होते थे, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य भगवान् उदयाचल पर आरूढ़ होते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

ईक्षितोऽन्तःपुरस्त्रीणां सव्रीडप्रेमवीक्षितैः ।
कृच्छ्राद् विसृष्टो निरगाज्जातहासो हरन् मनः ॥१६॥

पदच्छेद— ईक्षितः अन्तःपुर स्त्रीणाम् सव्रीडप्रेम वीक्षितैः ।
कृच्छ्रात् विसृष्टः निरगात् जात हासः हरन् मनः ॥

शब्दार्थ—

ईक्षितः	६.	निहारने लगतीं थीं (और)	कृच्छ्रात्	७.	बड़े कष्ट से
अन्तःपुर	१.	अन्तःपुर की	विसृष्टः	८.	विदा करतीं
स्त्रीणाम्	२.	स्त्रियाँ	निरगात्	११.	निकल जाते थे
सव्रीड	३.	लज्जा एवम्	जात हासः	९.	भगवान् हँस कर
प्रेम	४.	प्रेम से भरी	हरन् मनः ॥	१०.	चित्त को चुराते हुये
वीक्षितैः ।	५.	चितवन से (उन्हें)			

श्लोकार्थ—अन्तःपुर की स्त्रियाँ लज्जा एवम् प्रेम से भरी चितवन से उन्हें निहारने लगतीं थीं । और बड़े कष्ट से बिदा करतीं । भगवान् हँसकर चित्त को चुराते हुये निकल जाते थे ॥

सप्तदशः श्लोकः

सुधर्माख्यां सभां सर्वैर्वृष्णिभिः परिवारितः ।
प्राविशद् यन्निविष्टानां न सन्त्यङ्ग षडूर्मयः ॥१७॥

पदच्छेद— सुधर्मा आख्याम् सभाम् सर्वैः वृष्णिभिः परिवारितः ।
प्राविशत् यत् निविष्टानाम् न सन्ति अङ्ग षट् ऊर्मयः ॥

शब्दार्थ—

सुधर्मा	५.	सुधर्मा	प्राविशत्	८.	प्रवेश करते थे
आख्याम्	६.	नामक	यत्	९.	जिसमें
सभाम्	७.	सभा में	निविष्टानाम्	१०.	प्रविष्ट होने पर
सर्वैः	२.	सभी	न सन्ति	१२.	नहीं सताती थीं
वृष्णिभिः	३.	यदुवंशियों के	अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !
परिवारितः ।	४.	साथ भगवान् श्रीकृष्ण	षट् ऊर्मयः ॥	११.	छः ऊर्मियाँ (भूख, प्यास, शोक, मोह, जरा, मृत्यु)

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! सभी यदुवंशियों के साथ भगवान् श्रीकृष्ण सुधर्मा नामक सभा में प्रवेश करते थे । जिसमें प्रविष्ट होने पर छः ऊर्मियाँ (भूख, प्यास, शोक, मोह, जरा, मृत्यु) नहीं सताती थीं ॥

अष्टादशः श्लोकः

तत्रोपविष्टः परमासने विभुर्बभौ स्वभासा ककुभोऽवभासयन् ।
वृतो नृसिंहैर्यदुभिर्यदूत्तमो यथोडुराजो दिवि तारकागणैः ॥१८॥

पदच्छेद— तत्र उपविष्टः परमासने विभुः बभौ स्वभासा ककुभः अवभासयन् ।
वृतः नृसिंहैः यदुभिः यदु उत्तमः यथा उडुराजः दिवि तारका गणैः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ	वृतः	११.	घिर कर (वैसे ही)
उपविष्टः	३.	विराजमान	नृसिंहैः	९.	नर श्रेष्ठ
परमासने	२.	श्रेष्ठ सिंहासन पर	यदुभिः	१०.	यदुवंशियों से
विभुः	५.	भगवान् श्रीकृष्ण	यदुउत्तमः	४.	यदुवंश शिरोमणि
बभौ	१२.	शोभायमान होते	यथा	१३.	जैसे
स्वभासा	६.	अपनी कान्ति से	उडुराजः	१६.	चन्द्रमा शोभित होते हैं
ककुभः	७.	दिशाओं को	दिवि	१४.	आकाश में
अवभासयन् ।	८.	प्रकाशित करते हुये	तारका गणैः ॥	१५.	तारों से घिर कर

श्लोकार्थ—वहाँ श्रेष्ठ सिंहासन पर विराजमान यदुवंश शिरोमणि भगवान् श्रीकृष्ण अपनी कान्ति से दिशाओं को प्रकाशित करते हुये नर श्रेष्ठ यदुवंशियों से घिर कर वैसे ही शोभायमान होते जैसे आकाश में तारों से घिर कर चन्द्रमा शोभित होते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तत्रोपमन्त्रिणो राजन् नानाहास्यरसैर्विभुम् ।
उपतस्थुर्नटाचार्या नर्तक्यस्ताण्डवैः पृथक् ॥१६॥

पदच्छेद— तत्र उपमन्त्रिणः राजन् नाना हास्यरसैः विभुम् ।
उपतस्थुः नट आचार्याः नर्तक्यः ताण्डवैः पृथक् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ पर	उपतस्थुः	११.	सेवा करते थे
उपमन्त्रिणः	३.	उपमन्त्री (विदूषक लोग)	नटआचार्याः	६.	नटाचार्य और
राजन्	१.	हे राजन् !	नर्तक्यः	७.	नर्तकियाँ
नाना	४.	अनेक प्रकार के	ताण्डवैः	८.	नृत्यों से
हास्यरसैः	५.	हास्य विनोद से तथा	पृथक् ।	९.	अलग-अलग
विभुम् ॥	१०.	भगवान् की			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वहाँ पर उपमन्त्री और विदूषक लोग अनेक प्रकार के हास्य विनोद तथा नटाचार्य और नर्तकियाँ, नृत्यों से अलग-अलग भगवान् की सेवा करते थे ॥

विंशः श्लोकः

मृदङ्गवीणामुरजवेणुतालदरस्वनैः ।
ननृतुर्जगुस्तुष्टुवुश्च सूतमागधवन्दिनः ॥२०॥

पदच्छेद— मृदङ्ग वीणा मुरज वेणु तालदर स्वनैः ।
ननृतुः जगुः तुष्टुवुः च सूतमागध वन्दिनः ॥

शब्दार्थ—

मृदङ्ग	१.	मृदङ्ग	ननृतुः	९.	नाचते
वीणा	२.	वीणा	जगुः	१०.	गाते
मुरज	३.	पखावज	तुष्टुवुः	१२.	स्तुति करते थे
वेणु	४.	बाँसुरी	च	११.	और
तालदर	५.	झाँझ और शङ्ख	सूतमागध	७.	सूत-मागध और
स्वनैः ।	६.	बजने लगते (तथा)	वन्दिनः ॥	८.	बन्दी जन

श्लोकार्थ—मृदङ्ग, वीणा, पखावज, बाँसुरी, झाँझ और शङ्ख बजने लगते तथा सूत-मागध और बन्दीजन नाचते, गाते और स्तुति करते थे ॥

एकविंशः श्लोकः

तत्राहुर्ब्राह्मणाः केचिदासीना ब्रह्मवादिनः ।
पूर्वेषां पुण्ययशसां राज्ञां चाकथयन् कथाः ॥२१॥

पदच्छेद— तत्र आहुः ब्राह्मणाः केचित् आसीनाः ब्रह्मवादिनः ।
पूर्वेषाम् पुण्ययशसाम् राज्ञाम् च अकथयन् कथाः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	पूर्वेषाम्	८.	कोई पूर्वकाल के
आहुः	६.	वेदों की व्याख्या करते	पुण्ययशसाम्	९.	पवित्र कीर्ति
ब्राह्मणाः	५.	ब्राह्मण	राज्ञाम्	१०.	राजाओं की
केचित्	३.	कोई	च	७.	और
आसीनाः	२.	बैठे हुये	अकथयन्	१२.	कहते थे
ब्रह्मवादिनः ।	४.	वेद वादी	कथाः ॥	११.	कथायें

श्लोकार्थ—वहाँ पर बैठे हुये कोई वेद वादी ब्राह्मण वेदों की व्याख्या करते, और कोई पूर्व काल के पवित्र-कीर्ति राजाओं की कथायें कहते थे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तत्रैकः पुरुषो राजन्नागतोऽपूर्वदर्शनः ।
विज्ञापितो भगवते प्रतीहारैः प्रवेशितः ॥२२॥

पदच्छेद— तत्र एकः पुरुषः राजन् आगतः अपूर्व दर्शनः ।
विज्ञापितः भगवते प्रतीहारैः प्रवेशितः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	५.	वहाँ पर	अपूर्व दर्शनः ।	२.	अपूर्व दिखने वाला
एकः	३.	एक	विज्ञापितः	९.	उसकी सूचना दी (और उसे)
पुरुषः	४.	पुरुष	भगवते	८.	भगवान् को
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	प्रतीहारैः	७.	द्वारपालों ने
आगतः	६.	आया	प्रवेशितः ॥	१०.	सभाभवन में पहुँचा दिया ।

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अपूर्व दिखने वाला एक पुरुष वहाँ पर आया । द्वारपालों ने उसकी सूचना भगवान् को दी और उसे सभाभवन में पहुँचा दिया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

स नमस्कृत्य कृष्णाय परेशाय कृताञ्जलिः ।
राज्ञामावेदयद् दुःखं जरासन्धनिरोधजम् ॥२३॥

पदच्छेद— सः नमस्कृत्य कृष्णाय परेशाय कृत अञ्जलिः ।
राज्ञाम् आवेदयत् दुःखम् जरासन्ध निरोधजम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उसने	राज्ञाम्	८. राजाओं का
नमस्कृत्य	५. नमस्कार करके	आवेदयत्	१०. निवेदन किया
कृष्णाय	३. श्रीकृष्ण को	दुःखम्	९. दुःख
परेशाय	२. परमेश्वर	जरासन्ध	६. जरासन्ध द्वारा दिये गये
कृत अञ्जलिः ।	४. हाथ जोड़ कर	निरोधजम् ॥	७. कैद से उत्पन्न

श्लोकार्थ—उसने परमेश्वर श्रीकृष्ण को हाथ जोड़ कर नमस्कार करके जरासन्ध द्वारा दिये गये कैद से उत्पन्न राजाओं का दुःख निवेदन किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

ये च दिग्विजये तस्य सन्नतिं न ययुर्नृपाः ।
प्रसह्य रुद्धास्तेनासन्नयुते द्वे गिरिव्रजे ॥२४॥

पदच्छेद— ये च दिग्विजये तस्य सन्नतिम् न ययुः नृपाः ।
प्रसह्य रुद्धाः तेन आसन् अयुते द्वे गिरि व्रजे ॥

शब्दार्थ—

ये च	३. जो	प्रसह्य	१०. बलपूर्वक
दिग्विजये	२. दिग्विजय के समय	रुद्धाः	११. कैद कर लिये
तस्य	१. उस जरासन्ध के	तेन	८. उसके द्वारा
सन्नतिम्	५. उसके सामने	आसन्	१२. गये हैं
न ययुः	६. नहीं झुके	अयुते द्वे	७. ऐसे बीस हजार (राजा)
नृपाः ।	४. राजा लोग	गिरि व्रजे ॥	९. पर्वत की कन्दरा में

श्लोकार्थ—उस जरासन्ध के दिग्विजय के समय जो राजा लोग उसके सामने नहीं झुके, ऐसे बीस हजार राजा उसके द्वारा पर्वत की कन्दरा में बलपूर्वक कैद कर लिये गये हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

कृष्ण कृष्णाप्रमेयात्मन् प्रपन्नभयभञ्जन ।
वयं त्वां शरणं यामो भवभीताः पृथग्धियः ॥२५॥

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण अप्रमेय आत्मन् प्रपन्नभय भञ्जन ।
वयं त्वां शरणं यामः भवभीताः पृथग्धियः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण-कृष्ण	३.	कृष्ण-कृष्ण	वयम्	८.	हम
अप्रमेय	१.	हे अज्ञेय	त्वाम्	१०.	आपकी
आत्मन्	२.	स्वरूप	शरणम्	११.	शरण में
प्रपन्न	४.	शरणागतों के	यामः	१२.	आये हैं
भय	५.	भय को	भवभीताः	९.	संसार से भयभीत होकर
भञ्जन ।	६.	दूर करने वाले	पृथग्धियः ॥	७.	भेद बुद्धि वाले

श्लोकार्थ—हे अज्ञेय स्वरूप कृष्ण-कृष्ण शरणागतों के भय को दूर करने वाले भेद-बुद्धि वाले हम संसार से भयभीत होकर आपकी शरण में आये हैं ॥

षड्विंशः श्लोकः

लोको विकर्मनिरतः कुशले प्रमत्तः कर्मण्ययं त्वदुदिते भवदर्चने स्वे ।
यस्तावदस्य बलवानिह जीविताशां सद्यश्छिनत्त्यनिमिषाय नमोऽस्तु तस्मै ॥२६॥

पदच्छेद—लोकः विकर्मनिरतः कुशले प्रमत्तः कर्मणि अयम् त्वत् उदिते भवत् अर्चने स्वे ।
यः तावत् अस्य बलवान् इह जीवित आशाम् सद्यः छिनत्ति अनिमिषाय नमः अस्तु तस्मै ॥

शब्दार्थ—

लोकः	३.	जीव	यः तावत्	११.	जो ऐसा है
विकर्मनिरतः	१.	निषिद्ध कर्मों में फँसा हुआ	अस्य	१२.	उसकी
कुशले	५.	कल्याणकारी	बलवान्	१५.	कालरूप आप
प्रमत्तः	९.	विमुख हो गया है	इह	१०.	इस संसार में
कर्मणि	६.	कर्म से (और)	जीवित	१३.	जीवन सम्बन्धी
अयम्	२.	यह	आशाम्	१४.	आशा को
त्वत् उदिते	४.	आपके बताये हुये	सद्यः छिनत्ति	१६.	तुरन्त काट देते हैं
भवत्	७.	आपकी	अनिमिषाय	१७.	कालरूप को
अर्चने स्वे ।	८.	आत्मभूत उपासना से	नमःअस्तुतस्मै ।	१८.	आपके उस नमस्कार है

श्लोकार्थ—निषिद्ध कर्मों में फँसा हुआ यह जीव आपके बताये हुये कल्याणकारी कर्म से और आपकी आत्मभूत उपासना से विमुख हो गया है । इस संसार में जो ऐसा है । उसकी जीवन सम्बन्धी आशा को कालरूप आप तुरन्त काट देते हैं । आपके उस कालरूप को नमस्कार है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

लोके भवाञ्जगदिनः कलयावतीर्णः सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय चान्यः।
कश्चित् त्वदीयमतियाति निदेशमीश किं वा जनः स्वकृतमृच्छति तन्न विद्मः २७

पदच्छेद—लोके भवान् जगदिनः कलया अवतीर्णः सद्रक्षणाय खलनिग्रहणाय च अन्यः।
कश्चित् त्वदीयम् अतियाति निदेशम् ईश किम्वाजनः स्वकृतम् ऋच्छति तन्न विद्मः ॥

शब्दार्थ—

लोके	१. इस संसार में	त्वदीयम्	६. आपकी
भवान् जगदिनः	२. आप जगदीश्वर कहे जाते हैं	अतियाति	११. विपरीत कष्ट दे रहा है
कलया	६. आप अपने अंश से	निदेशम्	१०. आज्ञा के
अवतीर्णः	७. अवतार लेते हैं	ईश	१२. हे प्रभो !
सद्रक्षणाय	३. सन्तों की रक्षा करने	किम्वा जनः	१३. अथवा क्या लोग
खलनिग्रहाय	५. दुष्टों को दण्ड देने के लिये	स्वकृतम्	१४. अपने किये का
च	४. और	ऋच्छति	१५. फल पाते हैं
अन्यः। कश्चित्	८ दूसरा कोई क्या	तन्नविद्मः ॥	१६. इसे हम नहीं जानते हैं

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! इस संसार में आप जगदीश्वर कहे जाते हैं। सन्तों की रक्षा करने और दुष्टों को दण्ड देने के लिये आप अपने अंश से अवतार लेते हैं। दूसरा कोई क्या आप की आज्ञा के विपरीत कष्ट दे रहा है। हे प्रभो ! अथवा क्या लोग अपने किये का फल पाते हैं। इसे हम नहीं जानते हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

स्वप्नायितं नृपसुखं परतन्त्रमीश शश्वद्भयेन मृतकेन धुरं वहामः।
हित्वा तदात्मनि सुखं त्वदनीहलभ्यं क्लिश्यामहेऽतिकृपणास्तव माययेह ॥२८॥

पदच्छेद—स्वप्नायितम् नृपसुखम् परतन्त्रम् ईश शश्वत् भयेन मृतकेन धुरम्वहामः।
हित्वा तत् आत्मनि सुखम् त्वत् अनीहलभ्यम् क्लिश्यामहे अतिकृपणाः तव मायया इह ॥

शब्दार्थ—

स्वप्नायितम्	४. स्वप्न के समान असत् है (हम)	हित्वा	१४. छोड़ कर
नृपसुखम्	२. राज सुख	तत् आत्मनि	१२. इस आतम
परतन्त्रम्	३. पराधीन एवम्	सुखम्	१३. सुख को
ईश	१. हे प्रभो	त्वत्	१०. आप के द्वारा
शश्वत्	५. निरन्तर	अनीहलभ्यम्	११. निष्काम भाव से प्राप्त
भयेन	६. भय एवम्	क्लिश्यामहे	१६. क्लेश भोग रहे हैं
मृतकेन	७. मृतक शरीर से ही उसका	अतिकृपणाः	९. अत्यन्त अज्ञानी हम
धुरम्वहामः।	८. भार ढो रहे हैं	तवमाययाइह ॥	१५. आप की माया से यहाँ

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! राज सुख पराधीन एवम् स्वप्न के समान असत् है। हम निरन्तर भय एवम् मृतक शरीर से ही उसका भार ढो रहे हैं। अत्यन्त अज्ञानी हम आपके द्वारा निष्काम भाव से प्राप्त उस आत्म-सुख को छोड़ कर आपकी माया से यहाँ क्लेश भोग रहे हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तन्नो भवान् प्रणतशोकहराङ्घ्रियुग्मो बद्धान् वियुङ्क्ष्व मगधाह्वयकर्मपाशात् ।
यो भूभुजोऽयुतमतङ्गजवीर्यमेको बिभ्रद् रुरोध भवने मृगराडिवावीः ॥२९॥

पदच्छेद— तत् नः भवान् प्रणत शोकहर अङ्घ्रियुग्मः बद्धान् वियुङ्क्ष्व मगध आह्वय कर्मपाशात् ।
यः भूभुजो अयुतमतङ्गज वीर्यम् एकः बिभ्रत् रुरोध भवने मृगराड् इव अवीः ॥

शब्दार्थ— तत्	१.	इसलिये	यः भूभुजो	१४.	वह राजा
नः	५.	हमें	अयुत मतङ्गज	११.	दस हजार हाथियों की
भवान्	४.	आप	वीर्यम्	१२.	शक्ति
प्रणत शोकहर	२.	शरणागतों के शोक हरने वाले	एकः	१०.	अकेला ही
अङ्घ्रियुग्मः	३.	दोनों चरणों वाले	बिभ्रत्	१३.	धारण करने वाला
बद्धान्	८.	बँधे हुये	रुरोध	१६.	बन्दी बनाये हुये हैं
वियुङ्क्ष्व	९.	छुड़ाइये	भवने	१५.	अपने घर में (हमें)
मगधआह्वय	६.	जरा सन्धरूपी	मृगराड् इव	१७.	जैसे सिंह
कर्म पाशात् ।	७.	कर्म के बन्धन से	अवीः ॥	१८.	भेड़ों को घेर रखता है

श्लोकार्थ—इसलिये शरणागतों के शोक हरने वाले दोनों चरणों वाले आप जरा सन्धरूपी कर्म के बन्धन से बँधे हुये हमें छुड़ाइये। अकेला ही दस हजार हाथियों की शक्ति धारण करने वाला वह राजा अपने घर में हमें बन्दी बनाये हुये है, जैसे सिंह भेड़ों को घेर रखता है ॥

त्रिंशः श्लोकः

यो वै त्वया द्विनवकृत्व उदात्तचक्र भग्नो मृधे खलु भवन्तमनन्तवीर्यम् ।
जित्वा नृलोकनिरतं सकृदूढदर्पो युष्मत्प्रजा रुजति नोऽजित तद् विधेहि ॥३०॥

पदच्छेद—यः वै त्वया द्विनवकृत्वः उदात्त चक्र भग्नः मृधे खलु भवन्तम् अनन्त वीर्यम् ।
जित्वा नृलोक निरतम् सकृत् ऊढदर्पः युष्मत् प्रजाः रुजति नः अजित तत् विधेहि ॥

शब्दार्थ—

यः वै त्वया	२.	जो आपके द्वारा	जित्वा	१२.	जीत कर
द्विनवकृत्वः	३.	अट्ठारह बार	नृलोक	९.	मनुष्यों जैसी
उदात्त चक्र	१.	हे चक्रपाणि भगवन् !	निरतम्	१०.	लीला करने वाले
भग्नः मृधे	४.	युद्ध में हराया गया, वह	सकृत्	६.	एक बार
खलु	१३.	निश्चत ही	ऊढदर्पः युष्मत्	१४.	घमंडी हो गया है, आपकी
भवन्तम्	११.	आपको	प्रजाः रुजति नः	१५.	हम प्रजाओं को सताता है
अनन्त	७.	अनन्त	अजित	५.	हे विष्णो !
वीर्यम् ।	८.	शक्तिशाली	तत् विधेहि ॥	१६.	इसलिये आप जैसा चाहें कीजिये

श्लोकार्थ—हे चक्र पाणि भगवन् ! जो आपके द्वारा अठारह बार युद्ध में हराया गया, वह हे विष्णो ! एक बार अनन्त शक्तिशाली मनुष्यों जैसी लीला करने वाले आपको जीत कर निश्चित ही घमंडी हो गया है, आपकी हम प्रजाओं को सताता है। इसलिये आप जैसा चाहें वैसा कीजिये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

दूत उवाच— इति मागधसंरुद्धा भवद्दर्शनकाङ्क्षिणः ।
प्रपन्नाः पादमूलं ते दीनानां शं विधीयताम् ॥३१॥

पदच्छेद— इति मागध संरुद्धाः भवत् दर्शन काङ्क्षिणः ।
प्रपन्नाः पादमूलम् ते दीनानाम् शम् विधीयताम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	प्रपन्नाः	९.	शरण में हैं
मागध	२.	जरासन्ध के	पादमूलम्	८.	चरणकमलों की
संरुद्धाः	३.	बन्दी लोग	ते	७.	वे आपके
भवत्	४.	आपके	दीनानाम्	१०.	उन दीनों का
दर्शन	५.	दर्शन के	शम्	११.	कल्याण
काङ्क्षिणः ।	६.	अभिलाषी हैं	विधीयताम् ॥	१२.	कीजिये

श्लोकार्थ— इस प्रकार जरासन्ध के बन्दी लोग आपके दर्शन के अभिलाषी हैं। वे आपके चरणकमलों की शरण में हैं। उन दीनों का कल्याण कीजिये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—राजदूते ब्रुवत्येवं देवर्षिः परमद्युतिः ।
बिभ्रत् पिङ्गजटाभारं प्रादुरासीद् यथा रविः ॥३२॥

पदच्छेद— राजदूते ब्रुवति एवम् देवर्षिः परम द्युतिः ।
बिभ्रत् पिङ्ग जठाभारम् प्रादुः आसीत् यथा रविः ॥

शब्दार्थ—

राजदूते	१.	राजाओं का दूत	बिभ्रत्	९.	धारण किये
ब्रुवति	३.	कह ही रहा था कि	पिङ्ग	७.	सुनहरी
एवम्	२.	इस प्रकार	जटाभारम्	८.	जटाओं का भार
देवर्षिः	६.	देवर्षि नारद	प्रादुः	११.	प्रकट
परम	४.	परम	आसीत्	१२.	हुये
द्युतिः ।	५.	कान्ति वाले	यथा रविः ॥	१०.	सूर्य के समान

श्लोकार्थ—राजाओं का दूत इस प्रकार कह ही रहा था कि परम कान्ति वाले देवर्षि नारद सुनहरी जटाओं का भार धारण किये सूर्य के समान प्रकट हुये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तं दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः सर्वलोकेश्वरेश्वरः ।
ववन्द उत्थितः शीर्ष्णा ससभ्यः सानुगो मुदा ॥३३॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः सर्वलोक ईश्वर ईश्वरः ।
ववन्दे उत्थितः शीर्ष्णा ससभ्यः स अनुगः मुदा ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन्हें	ववन्दे	१४.	वन्दना करने लगे
दृष्ट्वा	२.	देखकर	उत्थितः	१२.	उठकर
भगवान्	६.	भगवान्	शीर्ष्णा	१३.	सिर झुका कर
कृष्णः	७.	श्रीकृष्ण	ससभ्यः	८.	सभासदों और
सर्वलोक	३.	समस्त लोकों के	सः	१०.	साथ
ईश्वर	४.	प्रभुओं के भी	अनुगः	९.	सेवकों के
ईश्वरः ।	५.	प्रभु	मुदा ॥	११.	प्रसन्नता पूर्वक

श्लोकार्थ—उन्हें देखकर समस्त लोकों के प्रभुओं के प्रभु भगवान् श्रीकृष्ण सभासदों और सेवकों के साथ प्रसन्नता पूर्वक उठ कर सिर झुका कर वन्दना करने लगे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सभाजयित्वा विधिवत् कृतासनपरिग्रहम् ।
बभाषे सूनृतैर्वाक्यैः श्रद्धया तर्पयन् मुनिम् ॥३४॥

पदच्छेद— सभाजयित्वा विधिवत् कृतासन परिग्रहम् ।
बभाषे सूनृतैः वाक्यैः श्रद्धया तर्पयन् मुनिम् ॥

शब्दार्थ—

सभाजयित्वा	६.	पूजा करके	बभाषे	१२.	कहा
विधि	४.	विधि	सूनृतैः	१०.	मधुर
वत्	५.	पूर्वक	वाक्यैः	११.	वचनों से
कृत	३.	हुये (नारद जी) की	श्रद्धया	७.	भगवान् ने श्रद्धा से
आसन	१.	आसन पर	तर्पयन्	९.	सन्तुष्ट करते हुये
परिग्रहम् ।	२.	विराजे	मुनिम् ॥	८.	मुनि को

श्लोकार्थ—आसन पर विराजे हुये नारद जी की विधिपूर्वक पूजा करके भगवान् ने श्रद्धा से मुनि को सन्तुष्ट करते हुये मधुर वचनों से कहा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

अपि स्विदद्य लोकानां त्रयाणामकुतोभयम् ।
ननु भूयान् भगवतो लोकान् पर्यटतो गुणः ॥३५॥

पदच्छेद— अपिस्वित् अद्य लोकानाम् त्रयाणाम् अकुतो भयम् ।
ननु भूयान् भगवतः लोकान् पर्यटतः गुणः ॥

शब्दार्थ—

अपिस्वित्	१.	क्या	ननु भूयान्	९.	यह निश्चित ही बड़ा
अद्य	२.	इस समय	भगवतः	६.	आप
लोकानाम्	४.	लोकों में	लोकान्	७.	लोको में
त्रयाणाम्	३.	तीनों	पर्यटतः	८.	भ्रमण करते रहते हैं
अकुतोभयम् ।	५.	कुशल-मङ्गल तो है न ?	गुणः ॥	१०.	लाभ है

श्लोकार्थ—क्या इस समय तीनों लोको में कुशल-मङ्गल तो है न ? आप लोकों में भ्रमण करते रहते हैं यह निश्चित ही बड़ा लाभ है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

न हि तेऽविदितं किञ्चिल्लोकेष्वीश्वरकर्तृषु ।
अथ पृच्छामहे युष्मान् पाण्डवानां चिकीर्षितम् ॥३६॥

पदच्छेद— न हि ते अविदितम् किञ्चित् लोकेषु ईश्वर कर्तृषु ।
अथ पृच्छामहे युष्मान् पाण्डवानाम् चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

न हि	५.	नहीं है जिसे	कर्तृषु ।	२.	रचे हुये
ते	६.	आप	अथ	८.	अतः हम
अविदितम्	७.	न जानते हैं	पृच्छामहे	१०.	पूछते हैं कि
किञ्चित्	४.	ऐसी कोई बात	युष्मान्	९.	आपसे
लोकेषु	३.	तीनों लोकों में	पाण्डवानाम्	११.	पाण्डव
ईश्वर	१.	भगवान् के द्वारा	चिकीर्षितम् ॥	१२.	क्या करना चाहते हैं

श्लोकार्थ—भगवान् के द्वारा रचे हुये तीनों लोकों में ऐसी कोई भी बात नहीं है, जिसे आप नहीं जानते हैं । अतः हम आपसे पूछते हैं कि पाण्डव क्या करना चाहते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

श्रीनारद उवाच—

दृष्टा मया ते बहुशो दुरत्यया माया विभो विश्वसृजश्च मायिनः ।
भूतेषु भूमंश्चरतः स्वशक्तिभिर्वह्नेरिवच्छन्नरुचो न मेऽद्भुतम् ॥३७॥

पदच्छेद— दृष्टा मया ते बहुशः दुरत्यया माया विभो विश्वसृजः च मायिनः ।
भूतेषु भूमन् चरतः स्वशक्तिभिः वह्नेः इव छन्न रुचः न मे अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

दृष्टा	८.	देखा है	भूतेषु	११.	घट-घट में
मया	६.	मैंने	भूमन्	९.	हे अनन्त ! आ ।
ते	४.	आपकी	चरतः	१२.	व्याप्त रहते
बहुशः	७.	बहुत बार	स्वशक्तिभिः	१०.	अपनी शक्तियों से
दुरत्यया माया	५.	दुस्तर माया को	वह्नेः इव	१३.	जैसे अग्नि
विभो	१.	हे प्रभो !	छन्न रुचः	१४.	काष्ठ में छिपा रहता है
विश्वसृजः च	२.	विश्व के निर्माता और	न	१६.	नहीं हुआ है
मायिनः ।	३.	मायावी	मे अद्भुतम् ॥	१५.	आपके प्रश्न से मुझे आश्चर्य

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! विश्व के निर्माता और मायावी आपकी दुस्तर माया को मैंने बहुत बार देखा है । हे अनन्त ! आप अपनी शक्तियों से घट-घट में व्याप्त रहते हैं, जैसे अग्नि काष्ठ में छिपा रहता है । अतः आपके प्रश्न से मुझे आश्चर्य नहीं हुआ है ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

तवेहितं कोऽर्हति साधु वेदितुं स्वमाययेदं सृजतो नियच्छतः ।
यद् विद्यमानात्मतयावभासते तस्मै नमस्ते स्वविलक्षणात्मने ॥३८॥

पदच्छेद— तव ईहितम् कः अर्हति साधु वेदितुम् स्वमायया इदम् सृजतः नियच्छतः ।
यद् विद्यमान आत्मतया अवभासते तस्मै नमस्ते स्वविलक्षण आत्मने ॥

शब्दार्थ—

तव	३.	आपकी	यद्	९.	उस माया से
ईहितम्	४.	इच्छा को	विद्यमान	१०.	ये संसार सत्य
कः	६.	कौन	आत्मतया	११.	स्वरूप
अर्हति	८.	सकता है	अवभासते	१२.	प्रतीत होता है
साधु	५.	अच्छी तरह	तस्मै	१५.	उन
वेदितुम्	७.	जान	नमस्ते	१६.	आपको नमस्कार है
स्वमायया इदम्	१.	अपनी माया से इस जगत् की	स्वविलक्षण	१३.	विलक्षण
सृजतः नियच्छतः ।	२.	सृष्टि और संहार करने वाले	आत्मने ॥	१४.	स्वरूप वाले

श्लोकार्थ—अपनी माया से इस जगत् की सृष्टि और संहार करने वाले आपकी इच्छा को अच्छी तरह कौन जान सकता है । उस माया से ये संसार सत्य स्वरूप प्रतीत होता है । विलक्षण स्वरूप वाले उन आपको नमस्कार है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

जीवस्य यः संसरतो विमोक्षणं न जानतोऽनर्थवहाच्छरीरतः ।
लीलावतारैः स्वयशःप्रदीपकं प्राज्वालयत्त्वा तमहं प्रपद्ये ॥३९॥

पदच्छेद— जीवस्य यः संसरतः विमोक्षणम् न जानतः अनर्थ वहात् शरीरतः ।
लीला अवतारैः स्वयशः प्रदीपकम् प्राज्वालयत् त्वा तम् अहम् प्रपद्ये ॥

शब्दार्थ—

जीवस्य	७.	जीव के लिये	लीला अवतारैः	९.	लीलावतार ग्रहण करके
यः	८.	जिन्होंने	स्वयशः	१०.	अपने यश का
संसरतः	६.	जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़े हुये	प्रदीपकम्	११.	दीपक
विमोक्षणम्	४.	छुटकारा	प्राज्वालयत्	१२.	जला दिया
न जानतः	५.	न पाने वाले (अतः)	त्वा	१४.	आप (श्रीकृष्ण को)
अनर्थ	१.	अनर्थकारी	तम्	१३.	ऐसे
वहात्	३.	मुक्त करने वाले	अहम्	१५.	मैं
शरीरतः ।	२.	शरीर से	प्रपद्ये ॥	१६.	शरण में हूँ

श्लोकार्थ—अनर्थकारी शरीर से मुक्त करने वाले, छुटकारा न पाने वाले अतः जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़े हुये जीव के लिये जिन्होंने लीलावतार ग्रहण करके अपने यश का दीपक जला दिया, ऐसे आप श्रीकृष्ण की मैं शरण में हूँ ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

अथाप्याश्रवये ब्रह्म नरलोकविडम्बनम् ।
राज्ञः पैतृष्वसेयस्य भक्तस्य च चिकीर्षितम् ॥४०॥

पदच्छेद— अथ अपि आश्रावये ब्रह्म नरलोक विडम्बनम् ।
राज्ञः पैतृष्वसेयस्य भक्तस्य च चिकीर्षितम् ॥

शब्दार्थ—

अथ अपि	१.	तो भी	राज्ञः	९.	राजा युधिष्ठिर
आश्रावये	५.	मैं सुनाना चाहता हूँ कि	पैतृष्वसेयस्य	६.	आपके फुफेरे भाई
ब्रह्म	४.	पर ब्रह्म आपको	भक्तस्य	८.	भक्त
नरलोक	२.	मनुष्यों की सी	च	७.	और
विडम्बनम् ।	३.	लीला करने वाले	चिकीर्षितम् ॥	१०.	क्या करना चाहते हैं

श्लोकार्थ—तो भी मनुष्यों की सी लीला करने वाले पर ब्रह्म आपको मैं सुनाना चाहता हूँ कि आपके फुफेरे भाई और भक्त राजा युधिष्ठिर क्या करना चाहते हैं ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

यक्ष्यति त्वां मखेन्द्रेण राजसूयेन पाण्डवः ।
पारमेष्ठ्यकामो नृपतिस्तद् भवाननुमोदताम् ॥४१॥

पदच्छेद— यक्ष्यति त्वाम् मखेन्द्रेण राजसूयेन पाण्डवः ।
पारमेष्ठ्य कामः नृपतिः तत् भवान् अनुमोदताम् ॥

शब्दार्थ—

यक्ष्यति	८. आराधना करेंगे	पारमेष्ठ्य	१. आपकी प्राप्ति की
त्वाम्	७. आपकी	कामः	२. कामना वाले
मखेन्द्रेण	५. श्रेष्ठ यज्ञ	नृपतिः	३. राजा
राजसूयेन	६. राजसूय के द्वारा	तत् भवान्	९. आप इसका
पाण्डवः ।	४. युधिष्ठिर	अनुमोदताम् ॥	१०. अनुमोदन करें

श्लोकार्थ—आपकी प्राप्ति की कामना वाले राजा युधिष्ठिर श्रेष्ठ यज्ञराज सूर्य के द्वारा आपकी आराधना करेंगे । आप इसका अनुमोदन करें ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

तस्मिन् देव क्रतुवरे भवन्तं वै सुरादयः ।
दिदृक्षवः समेष्यन्ति राजानश्च यशस्विनः ॥४२॥

पदच्छेद— तस्मिन् देव क्रतुवरे भवन्तम् वै सुर आदयः ।
दिदृक्षवः समेष्यन्ति राजानः च यशस्विनः ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन् देव	१. महाराज उस	दिदृक्षवः	४. देखने के इच्छुक
क्रतुवरे	२. श्रेष्ठ यज्ञ में	समेष्यन्ति	१०. आयेंगे
भवन्तम्	३. आपको	राजानः	६. राजा
वै	९. निश्चित रूप से	च	७. और
सुर आदयः ।	८. देवता आदि	यशस्विनः ॥	५. यशस्वी

श्लोकार्थ—महाराज उस श्रेष्ठ यज्ञ में देखने के इच्छुक यशस्वी राजा और देवता आदि निश्चित रूप से आयेंगे ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

श्रवणात् कीर्तनाद् ध्यानात् पूयन्तेऽन्तेवसायिनः ।
तव ब्रह्ममयस्येश किमुतेक्षाभिमर्शिनः ॥४३॥

पदच्छेद— श्रवणात् कीर्तनात् ध्यानात् पूयन्ते अन्ते वसायिनः ।
तव ब्रह्ममयस्य ईश किमुत ईक्षा अभिमर्शिनः ॥

शब्दार्थ—

श्रवणात्	४. श्रवण	तव	२. आपके
कीर्तनात्	५. कीर्तन और	ब्रह्ममयस्य	३. ब्रह्म स्वरूप के
ध्यानात्	६. ध्यान से	ईश	१. हे प्रभो !
पूयन्ते अन्ते	८. पवित्र हो जाते हैं (फिर)	किमुत	११. कहना ही क्या है
ऽवसायिनः ।	७. चाण्डाल भी	ईक्षा	९. आपके दर्शन और
		अभिमर्शिनः ॥	१०. स्पर्श का तो

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपके ब्रह्मस्वरूप के श्रवण, कीर्तन और ध्यान से चाण्डाल भी पवित्र हो जाते हैं । फिर आपके दर्शन और स्पर्श का कहना ही क्या है ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

यस्यामलं दिवि यशः प्रथितं रसायां भूमौ च ते भुवनमङ्गल दिग्वितानम् ।
मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाधो गङ्गेति चेह चरणाम्बु पुनाति विश्वम् ४४

पदच्छेद—यस्य अमलम् दिवि यशः प्रथितम् रसायाम् भूमौ च ते भुवन मङ्गल दिग्वितानम् ।
मन्दाकिनी इति दिवि भोगवती इति च अधः गङ्गाइति च इह चरण अम्बु पुनाति विश्वम् ॥

शब्दार्थ—

यस्य अमलम्	३. जो निर्मल	मन्दाकिनी इतिदिवि	१०. स्वर्ग में मन्दाकिनी
दिवि	६. स्वर्ग	भोगवती इति च	१२. भोगवती और
यशः	४. कीर्ति	अधः	११. पाताल में
प्रथितम्	८. फैल गयी है	गङ्गाइति	१४. गङ्गा जल इस नाम से
रसायाम् भूमौ च	७. पृथ्वी और पाताल में	च इह	१३. इस पृथ्वी पर
ते	२. आपकी	चरण अम्बु	९. जैसे आपके चरणों का जल
भुवन मङ्गल	१. हे तीनों लोकों के मङ्गल-स्वरूप ! भगवन्	पुनाति	१६. पवित्र कर रहा है
दिग्वितानम् ।	५. दिशाओं में व्याप्त होकर	विश्वम् ॥	१५. विश्व को

श्लोकार्थ—हे तीनों लोकों के मङ्गल स्वरूप भगवन् ! आपकी निर्मल कीर्ति दिशाओं में व्याप्त होकर वैसे फैल गयी है, जैसे आपके चरणों का जल स्वर्ग में मन्दाकिनी, पाताल में भोगवती और इस पृथ्वी पर गङ्गाजल इस नाम से विश्व को पवित्र कर रहा है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तत्र तेष्वात्मपक्षेष्वगृह्णत्सु विजिगीषया ।
वाचः पेशैः स्मयन् भृत्यमुद्धवं प्राह केशवः ॥४५॥

पदच्छेद—
तत्र तेषु आत्म पक्षेषु गृह्णत्सु विजिगीषया ।
वाचःपेशैः स्मयन् भृत्यम् उद्धवम् प्राह केशवः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ	वाचः पेशैः	९.	मीठी वाणी में
तेषु	२.	उन	स्मयन्	७.	मुस्कराते हुये
आत्म	३.	अपने	भृत्यम्	१०.	सेवक
पक्षेषु	४.	पक्ष के लोगों के	उद्धवम्	११.	उद्धव से
गृह्णत्सु	६.	प्रकट करने पर	प्राह	१२.	कहा
विजिगीषया ।	५.	विजय की इच्छा	केशवः ॥	८.	श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—वहाँ पर उन अपने पक्ष के लोगों के विजय की इच्छा प्रकट करने पर मुस्कराते हुये श्रीकृष्ण ने मीठी वाणी में सेवक उद्धव से कहा ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—त्वं हि नः परमं चक्षुः सुहृन्मन्त्रार्थतत्त्ववित् ।
तथात्र ब्रूह्यनुष्ठेयं श्रद्दध्मः करवाम तत् ॥४६॥

पदच्छेद—
त्वम् हि नः परमम् चक्षुः सुहृत् मन्त्रार्थं तत्त्ववित् ।
तथा अत्र ब्रूहि अनुष्ठेयम् श्रद्दध्मः करवाम तत् ॥

शब्दार्थ—

त्वम् हि	१.	तुम	तथा	७.	इसलिये
नः	२.	हमारे	अत्र	८.	इस विषय में
परमम् चक्षुः	६.	उत्तम नेत्र हो	ब्रूहि	९.	बताओ कि
सुहृत्	३.	मित्र (और)	अनुष्ठेयम्	१०.	क्या करें
मन्त्रार्थं	४.	कार्य के	श्रद्दध्मः	११.	हम तुम पर श्रद्धा रखते हैं
तत्त्ववित् ।	५.	तत्त्व को समझने वाले	करवाम	१३.	करेंगे (जो तुम कहोगे)
			तत् ॥	१२.	वही

श्लोकार्थ—हे उद्धव ! तुम हमारे मित्र और कार्य के तत्त्व को समझने वाले उत्तम नेत्र हो । इसलिये इस विषय में बताओ कि क्या करें । हम तुम पर श्रद्धा रखते हैं । वही करेंगे जो तुम कहोगे ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

इत्युपामन्त्रितो भर्त्रा सर्वज्ञेनापि मुग्धवत् ।
निदेशं शिरसाऽऽधाय उद्धवः प्रत्यभाषत ॥४७॥

पदच्छेद— इति उपामन्त्रितः भर्त्रा सर्वज्ञेन अपि मुग्धवत् ।
निदेशम् शिरसा आधाय उद्धवः प्रतिअभाषत ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	निदेशम्	७.	आज्ञा को
उपामन्त्रितः	६.	पूछे जाने पर	शिरसा	८.	शिरो
भर्त्रा	५.	स्वामी के द्वारा	आधाय	९.	धार्य करके
सर्वज्ञेन	२.	सर्वज्ञ होने पर	उद्धवः	१०.	उद्धव (उनसे)
अपि	३.	भी	प्रतिअभाषत ॥	११.	बोले
मुग्धवत् ।	४.	अनजान के समान			

श्लोकार्थ—इस प्रकार सर्वज्ञ होने पर भी अनजान के समान स्वामी के द्वारा पूछे जाने पर आज्ञा को शिरोधार्य करके उद्धव उनसे बोले ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे भगवद्यानविचारे
सप्ततितमः अध्यायः ॥७०॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युदीरितमाकर्ण्य देवर्षेरुद्धवोऽब्रवीत् ।
सभ्यानां मतमाज्ञाय कृष्णस्य च महामतिः ॥१॥

पदच्छेद— इति उदीरितम् आकर्ण्य देवर्षेः उद्धवः अब्रवीत् ।
सभ्यानाम् मतम् आज्ञाय कृष्णस्य च महामतिः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	यह	सभ्यानाम्	५.	सभासद्
उदीरितम्	२.	वचन	मतम्	८.	मत
आकर्ण्य	३.	सुनकर	आज्ञाय	९.	जानकर
देवर्षेः	४.	नारद	कृष्णस्य	७.	श्रीकृष्ण का
उद्धवः	११.	उद्धव जी	च	६.	और
अब्रवीत् ।	१२.	बोले	महामतिः ॥	१०.	महाबुद्धिमान्

श्लोकार्थ—यह वचन सुनकर नारद, सभासद् और श्रीकृष्ण का मत जानकर महाबुद्धिमान् उद्धव जी बोले ॥

द्वितीयः श्लोकः

उद्धव उवाच—यदुक्तमृषिणा देव साचिव्यं यक्ष्यतस्त्वया ।
कार्यं पैतृष्वसेयस्य रक्षा च शरणैषिणाम् ॥२॥

पदच्छेद— यत् उक्तम् ऋषिणा देव साचिव्यम् यक्ष्यतः त्वया ।
कार्यम् पैतृष्वयस्य रक्षा च शरण एषिणाम् ॥

शब्दार्थ—

यत्	३.	जो	कार्यम्	११.	करनी चाहिये
उक्तम्	४.	कहा कि	पैतृष्वसेयस्य	६.	फुफेरे भाई की
ऋषिणा	२.	ऋषि ने	रक्षा	१०.	रक्षा
देव	१.	हे भगवन् !	च	८.	और
साचिव्यम्	७.	सहायता	शरण एषिताम् ॥	९.	शरणार्थियों की
यक्ष्यतः त्वया ।	५.	आपको यज्ञ करते हुये			

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! ऋषि ने जो कहा कि आपको यज्ञ करते हुये फुफेरे भाई की सहायता और रक्षा करनी चाहिये ॥

तृतीयः श्लोकः

यष्टव्यं राजसूयेन दिक्चक्रजयिना विभो ।

अतो जरासुतजय उभयार्थो मतो मम ॥३॥

पदच्छेद— यष्टव्यम् राजसूयेन दिक्चक्र जयिना विभो ।

अतः जरासुतजयः उभयार्थः मतः मम ॥

शब्दार्थ —

यष्टव्यम्	५. यज्ञ करना चाहिये	अतः	६. इसलिये
राजसूयेन	४. राजसूय	जरासुतजयः	७. जरासन्ध को जीतना
दिक्चक्र	२. दशों दिशाओं के	उभयार्थः	८. दोनों प्रयोजनों को सिद्ध करना है
जयिना	३. जीतने वाले को	मतः	१०. विचार है
विभो ।	१. हे प्रभो !	मम ॥	९. ऐसा मेरा

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! दसों दिशाओं को जीतने वाले को राजसूय यज्ञ करना चाहिये । इसलिये जरासन्ध को जीतना दोनों प्रयोजनों को सिद्ध करना है । ऐसा मेरा विचार है ॥

चतुर्थः श्लोकः

अस्माकं च महानर्थो ह्येतेनैव भविष्यति ।

यशश्च तव गोविन्द राज्ञो बद्धान् विमुञ्चतः ॥४॥

पदच्छेद— अस्माकम् च महान् अर्थः हि एतेन एव भविष्यति ।

यशः च तव गोविन्द राज्ञः बद्धान् विमुञ्चतः ॥

शब्दार्थ—

अस्माकम्	२. हमारा	यशः	१२. यश मिलेगा
च	१. और	च	७. तथा
महान्	३. महान्	तव	९. आपको
अर्थः हि	४. प्रयोजन	गोविन्द	८. हे गोविन्द !
एतेन एव	५. इसी से सिद्ध	राज्ञः बद्धान्	१०. बन्दी राजाओं को
भविष्यति ।	६. हो जायेगा	विमुञ्चतः ॥	११. मुक्त करने का

श्लोकार्थ—और हमारा महान् प्रयोजन इसी से सिद्ध हो जायेगा तथा हे गोविन्द ! आपको बन्दी राजाओं को मुक्त करने का यश मिलेगा ॥

पञ्चमः श्लोकः

स वै दुर्विषहो राजा नागायुतसमो बले ।
बलिनामपि चान्येषां भीमं समबलं विना ॥५॥

पदच्छेद— सः वै दुर्विषहः राजा नागायुत समः बले ।
बलिनाम् अपि च अन्येषाम् भीमम् समबलम् विना ॥

शब्दार्थ—

सः वै	३.	वह	बलिनाम्	९.	बलवानों के
दुर्विषहः	११.	अत्यन्त असह्य है	अपि च	१०.	लिये भी
राजा	४.	राजा (जरासन्ध)	अन्येषाम्	८.	दूसरे
नागायुत समः	२.	दस हजार हाथी के समान	भीमम्	६.	भीमसेन को
बले ।	१.	बल में	समबलम्	५.	समान बल वाले
			विना ॥	७.	छोड़ कर

श्लोकार्थ—बल में दस हजार हाथी के समान वह राजा जरासन्ध समान बल वाले भीमसेन को छोड़ कर दूसरे बलवानों के लिये भी अत्यन्त असह्य है ॥

षष्ठः श्लोकः

द्वैरथे स तु जेतव्यो मा शताक्षौहिणीयुतः ।
ब्रह्मण्योऽभ्यर्थितो विप्रैर्न प्रत्याख्याति कर्हिचित् ॥६॥

पदच्छेद— द्वैरथे सः तु जेतव्यः मा शत अक्षौहिणी युतः ।
ब्रह्मण्यः अभ्यर्थितः विप्रैः न प्रति आख्याति कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

द्वैरथे	२.	आमने-सामने युद्ध में	ब्रह्मण्यः	७.	ब्राह्मण भक्त (जरासन्ध)
सः तु	१.	उसे	अभ्यर्थितः	९.	माँगने पर
जेतव्यः	३.	जीत लेना चाहिये	विप्रैः	८.	ब्राह्मणों के
मा	६.	नहीं जीता जा सकता है	न	१०.	ना
शत अक्षौहिणी	४.	सौ अक्षौहिणी सेना से	प्रति आख्याति	१२.	कहता है
युतः ।	५.	युक्त होने पर भी वह	कर्हिचित् ॥	११.	कभी नहीं

श्लोकार्थ—उसे आमने-सामने जीत लेना चाहिये । सौ अक्षौहिणी सेना से युक्त होने पर भी वह नहीं जीता जा सकता है । ब्राह्मण भक्त जरासन्ध ब्राह्मणों के मागने पर ना कभी नहीं कहता है ॥

सप्तमः श्लोकः

ब्रह्मवेषधरो गत्वा तं भिक्षेत वृकोदरः ।
हनिष्यति न सन्देहो द्वैरथे तव सन्निधौ ॥७॥

पदच्छेद— ब्रह्म वेषधरः गत्वा तम् भिक्षेत वृकोदरः ।
हनिष्यति न सन्देहः द्वैरथे तव सन्निधौ ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म	२.	ब्राह्मण के	हनिष्यति	११.	मार डालेंगे
वेषधरः	३.	वेश में	न सन्देहः	१०.	निःसन्देह (उसे)
गत्वा	४.	जाकर	द्वैरथे	९.	द्वन्द्व युद्ध में
तम्	५.	उससे	तव	७.	वे आपके
भिक्षेत	६.	(युद्ध की) भिक्षा माँगें	सन्निधौ ॥	८.	सम्मुख
वृकोदरः ।	१.	भीमसेन			

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! भीमसेन ब्राह्मण के वेश में जाकर उससे युद्ध की भिक्षा माँगें । वे आपके सम्मुख द्वन्द्व युद्ध में निःसन्देह उसे मार डालेंगे ॥

अष्टमः श्लोकः

निमित्तं परमीशस्य विश्वसर्गनिरोधयोः ।
हिरण्यगर्भः शर्वश्च कालस्यारूपिणस्तव ॥८॥

पदच्छेद— निमित्तम् परम् ईशस्य विश्वसर्ग निरोधयोः ।
हिरण्यगर्भः शर्वः च कालस्य अरूपिणः तव ॥

शब्दार्थ—

निमित्तम्	९.	निमित्त	हिरण्यगर्भः	५.	ब्रह्मा
परम्	१०.	मात्र हैं	शर्वः च	६.	और शिव
ईशस्य	४.	ईश्वर के बनाये	कालस्य	२.	काल स्वरूप
विश्वसर्ग	७.	संसार की सृष्टि और	अरूपिणः	१.	रूप रहित और
निरोधयोः ।	८.	संहार में	तव ॥	३.	आप

श्लोकार्थ—रूप रहित और काल स्वरूप आप ईश्वर के बनाये ब्रह्मा और शिव संसार की सृष्टि और संहार में निमित्त मात्र है ॥

नवमः श्लोकः

गायन्ति ते विशदकर्म गृहेषु देव्यो राज्ञां स्वशत्रुवधमात्मविमोक्षणं च ।
गोप्यश्च कुञ्जरपतेर्जनकात्मजायाः पित्रोश्च लब्धशरणा मुनयो वयं च ॥९॥

पदच्छेद—गायन्ति ते विशद कर्म गृहेषु देव्यः राज्ञाम् स्वशत्रु वधम् आत्म विमोक्षणम् च ।
गोप्यः च कुञ्जर पतेः जनक आत्म जायाः पित्रोः च लब्धशरणाः मुनयः वयम् च ॥

शब्दार्थ—

गायन्ति	८.	गान करेंगी	गोप्यः च	९.	जैसे गोपियाँ (शङ्खचूड़ से उद्धार का)
विशदकर्म	७.	आपकी विशुद्ध लीला का	कुञ्जर पतेः	१२.	गजेन्द्र एवम्
गृहेषु देव्यः	२.	महलों में रानियाँ	जनक	१३.	जनक की
राज्ञाम्	१.	राजाओं के	आत्मजायाः	१४.	पुत्री सीता के उद्धार का
स्वशत्रु	३.	अपने शत्रु का	पित्रोः च	१६.	आपके माता-पिता के कंस से उद्धार का गान करते हैं
वधम्	४.	वध और	लब्धशरणाः	१०.	आपके शरणागत
आत्म	५.	अपनी	मुनयः	११.	मुनिगण
विमोक्षणम् च ।	६.	बन्धन मुक्ति का स्मरण करके	वयम् च ॥	१५.	और हम लोग

श्लोकार्थ—राजाओं के महलों में रानियाँ अपने शत्रु का वध और अपनी बन्धन-मुक्ति का स्मरण करके आपकी विशुद्ध लीला का गान करेंगी । जैसे गोपियाँ शङ्खचूड़ से उद्धार का, आपके शरणागत मुनिगण गजेन्द्र एवम् जनक की पुत्री सीता के उद्धार का और हम लोग आपके माता-पिता के कंस से उद्धार का गान करते हैं ॥

दशमः श्लोकः

जरासन्धवधः कृष्ण भूर्यर्थायोपकल्पते ।
प्रायः पाकविपाकेन तव चाभिमतः क्रतुः ॥१०॥

पदच्छेद— जरासन्ध वधः कृष्ण भूरि अर्थाय उपकल्पते ।
प्रायः पाकविपाकेन तव च अभिमतः क्रतुः ॥

शब्दार्थ—

जरासन्ध	२.	जरासन्ध का	प्रायः	७.	प्रायः
वधः	३.	वध	पाक	८.	कर्म के
कृष्ण	१.	हे कृष्ण !	विपाकेन	९.	परिणाम से
भूरि	४.	बहुत से	तव च	१०.	आपको भी (पहले)
अर्थाय	५.	प्रयोजनों को	अभिमतः	१२.	पसन्द है
उपकल्पते ।	६.	सिद्ध कर देगा	क्रतुः ॥	११.	राजसूय यज्ञ का होना

श्लोकार्थ—हे कृष्ण ! जरासन्ध का वध बहुत से प्रयोजनों को सिद्ध कर देगा । प्रायः कर्म के परिणाम से आपको भी पहले राजसूय यज्ञ का होना पसन्द है ॥

एकादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युद्धववचो राजन् सर्वतोभद्रमच्युतम् ।
देवर्षिर्यदुवृद्धाश्च कृष्णश्च प्रत्यपूजयन् ॥११॥

पदच्छेद— इति उद्धव वचः राजन् सर्वतोभद्रम् अच्युतम् ।
देवर्षिः यदुवृद्धाः च कृष्णः च प्रतिअपूजयन् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	यह	अच्युतम् ।	६.	और निर्दोष थी
उद्धव	२.	उद्धव की	देवर्षिः	७.	नारद
वचः	४.	सलाह	यदुवृद्धाः च	८.	यदुवंशी वृद्धों और
राजन्	१.	हे राजन् !	कृष्णः च	९.	श्रीकृष्ण ने
सर्वतोभद्रम्	५.	सब प्रकार से हितकर	प्रतिअपूजयन् ॥	१०.	उसका समर्थन किया

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उद्धव की यह सलाह सब प्रकार से हितकर और निर्दोष थी । नारद, यदुवंशी वृद्धों और श्रीकृष्ण ने उसका समर्थन किया ॥

द्वादशः श्लोकः

अथादिशत् प्रयाणाय भगवान् देवकीसुतः ।
भृत्यान् दारुकजैत्रादीननुज्ञाप्य गुरून् विभुः ॥१२॥

पदच्छेद— अथ आदिशत् प्रयाणाय भगवान् देवकी सुतः ।
भृत्यान् दारुकजैत्र आदीन् अनुज्ञाप्य गुरून् विभुः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तदनन्तर	भृत्यान्	९.	सेवकों को
आदिशत्	११.	आदेश दिया	दारुकजैत्र	७.	दारुक और जैत्र
प्रयाणाय	१०.	प्रस्थान की तैयारी के लिये	आदीन्	८.	आदि
भगवान्	३.	भगवान्	अनुज्ञाप्य	६.	अनुमति लेकर
देवकी सुतः ।	४.	श्रीकृष्ण ने	गुरून्	५.	गुरुजनों से
			विभुः ॥	२.	अन्तर्यामी

श्लोकार्थ—तदनन्तर अन्तर्यामी भगवान् श्रीकृष्ण ने गुरुजनों से अनुमति लेकर दारुक और जैत्र आदि सेवकों को प्रस्थान की तैयारी के लिये आदेश दिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

निर्गमय्यावरोधान् स्वान् ससुतान् सपरिच्छदान् ।
सङ्कर्षणमनुज्ञाप्य यदुराजं च शत्रुहन् ।
सूतोपनीतं स्वरथमारुहद् गरुडध्वजम् ॥१३॥

पदच्छेद— निर्गमय्य अवरोधान् स्वान् ससुतान् सपरिच्छदान् ।
सङ्कर्षणम् अनुज्ञाप्य यदुराजम् च शत्रुहन् ।
सूत उपनीतम् स्वरथम् आरुहत् गरुडध्वजम् ॥

शब्दार्थ—

निर्गमय्य	६.	आगे बिठाकर	यदुराजम् च	७.	और उग्रसेन
अवरोधान्	५.	रानियों को	शत्रुहन्	१.	हे शत्रुहन्ता परीक्षित् श्रीकृष्ण
स्वान्	४.	अपनी	सूत	१०.	सारथी के
ससुतान्	३.	बाल बच्चों के साथ	उपनीतम्	११.	लाये हुये
सपरिच्छदान् ।	२.	सामान तथा	स्वरथम्	१३.	अपने रथ पर
सङ्कर्षणम्	८.	बलराम से	आरुहत्	१४.	सवार हो गये
अनुज्ञाप्य	९.	आज्ञा लेकर	गरुडध्वजम् ॥	१२.	गरुड़ध्वज नामक

श्लोकार्थ—हे शत्रुहन्ता परीक्षित् ! श्रीकृष्ण सामान तथा बाल-बच्चों के साथ अपनी रानियों को आगे बैठकर उग्रसेन और बलराम से आज्ञा लेकर सारथी के लाये हुये गरुडध्वज नामक अपने रथ पर सवार हो गये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

ततो रथद्विपभटसादिनायकैः करालया परिवृत आत्मसेनया ।
मृदङ्गभेर्यानकशङ्खगोमुखैः प्रघोषघोषितककुभो निराक्रमत् ॥१४॥

पदच्छेद— ततः रथ द्विपभट सादि नायकैः करालया परिवृत आत्म सेनया ।
मृदङ्ग भेरी आनक शङ्ख गोमुखैः प्रघोष घोषित ककुभः निराक्रमत् ॥

शब्दार्थ—

ततः रथ	१.	तथा रथों	मृदङ्ग भेरी	९.	उस समय मृदङ्ग नगारे
द्विपभट	२.	हाथियों वीरों	आनक शङ्ख	१०.	ढोल शङ्ख और
सादि	३.	घुड़सवारों और	गोमुखैः	११.	नरसिंहों की
नायकैः	४.	पैदलों की	प्रघोष	१२.	ऊँची ध्वनि से
करालया	५.	भयंकर	घोषित	१४.	शब्दायमान हो रही थीं
परिवृत	७	साथ घिर कर	ककुभः	१३.	सभी दिशायें
आत्म सेवया ।	६.	अपनी सेना के	निराक्रमत् ॥	८.	प्रस्थान किया

श्लोकार्थ—तथा रथों, हाथियों, वीरों, घुड़सवारों और पैदलों की भयंकर अपनी सेना के साथ घिरकर प्रस्थान किया । उस समय मृदङ्ग, नगारे, ढोल, शङ्ख और नरसिंहों की ऊँची ध्वनि से सभी दिशायें शब्दायमान हो रही थीं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

नृवाजिकाञ्चनशिबिकाभिरच्युतं सहात्मजाः पतिमनु सुव्रता ययुः ।
वराम्बराभरणविलेपनस्रजः सुसंवृता नृभिरसिचर्मपाणिभिः ॥१५॥

पदच्छेद—नृवाजि काञ्चन शिबिकाभिः अच्युतम् सह आत्मजाः पतिम् अनुसुव्रताः ययुः ।
वर-अम्बर आभरण विलेपन स्रजः सुसंवृताः नृभिः असि चर्म पाणिभिः ॥

शब्दार्थ—

नृवाजि	११.	डोलियों रथों और	वर-अम्बर	२.	उत्तम वस्त्र
काञ्चन	१२.	सोने की	आभरण	३.	आभूषण
शिबिकाभिः	१३.	पालकियों में	विलेपन स्रजः	४.	चन्दन-अङ्गराम और पुष्पहार
अच्युतम्	१५.	श्रीकृष्ण के पीछे-पीछे	सुसंवृताः	५.	से सज-धज कर
सह आत्मजाः	१०.	सन्तानों के साथ	नृभिः	९.	मनुष्यों से सुरक्षित होकर
पतिम्	१४.	पतिदेव	असि	८.	तलवार लिये हुये
अनुसुव्रताः	१.	उत्तम व्रतों वाली रानियाँ	चर्म	७.	ढाल और
ययुः ।	१६.	चल पड़ीं	पाणिभिः ॥	६.	हाथों में

श्लोकार्थ—उत्तम व्रतों वाली रानियाँ उत्तम वस्त्र, आभूषण, चन्दन, अङ्गराग और पुष्पहार से सज-धज कर हाथों में ढाल-तलवार लिये हुये मनुष्यों से सुरक्षित होकर सन्तानों के साथ डोलियों रथों और सोने की पालकियों में पतिदेव श्रीकृष्ण के पीछे-पीछे चल पड़ीं ॥

षोडशः श्लोकः

नरोष्ट्रगोमहिषखराश्वतर्यनःकरेणुभिः परिजनवारयोषितः ।
स्वलङ्कृताः कटकुटिकम्बलाम्बराद्युपस्करा ययुरधियुज्य सर्वतः ॥१६॥

पदच्छेद—नरउष्ट्र गोमहिष खर अश्वतरी अनः करेणुभिः परिजन वारयोषितः ।
सुअलङ्कृताः कटकुटि कम्बल अम्बर आदि उपस्कराः ययुः अधियुज्य सर्वतः ॥

शब्दार्थ—

नरउष्ट्र	१३.	पालकी, ऊँट	सुअलङ्कृताः	३.	भली-भाँति शृङ्गार करके
गोमहिष	८.	बैलों-भैसों	कटकुटि	४.	तम्बुओं, कनातों
खर	९.	गधों और	कम्बल	५.	कम्बलों और
अश्वतरी	१०.	खच्चरों पर	अम्बर आदि	६.	ओढ़ने-बिछाने आदि की
अनः	१४.	छकड़ों और	उपस्कराः	७.	सामग्रियों को
करेणुभिः	१५.	हथिनियों पर सवार होकर	ययुः	१६.	चलीं
परिजन	१.	अनुचरों की स्त्रियाँ और	अधियुज्य	१२.	लाद कर तथा स्वयम् भी
वारयोषितः ।	२.	वेश्यायें	सर्वतः ॥	११.	सब ओर से

श्लोकार्थ—अनुचरों की स्त्रियाँ और वेश्यायें भली-भाँति शृङ्गार करके, तम्बुओं, कनातों, कम्बलों और ओढ़ने-बिछाने आदि की सामग्रियों को बैलों, भैसों, गधों और खच्चरों पर सब ओर से लादकर तथा स्वयम् भी पालकी, ऊँट, छकड़ों और हथिनियों पर सवार होकर चलीं ॥

सप्तदशः श्लोकः

बलं बृहद्ध्वजपटछत्रचामरैर्वरायुधाभरणकिरीटवर्मभिः ।
दिवांशुभिस्तुमुलरवं बभौ रवेर्यथार्णवः क्षुभिततिमिङ्गिलोर्मिभिः ।।१७।।

पदच्छेद— बलम् बृहत् ध्वजपट छत्रचामरैः वर आयुध आभरण किरीट वर्मभिः ।
दिवांशुभिः तुमुलरवम् बभौ रवेः यथा अर्णवः क्षुभित तिमिङ्गिल ऊर्मिभिः ।।

शब्दार्थ—

बलम्	३. सेना	दिवांशुभिः	११. दिन में पड़ती हुई किरणों से
बृहत्	२. महान्	तुमुलरवम्	१. कोलाहल से परिपूर्ण वह
ध्वजपट	४. ध्वजा पताकाओं	बभौ	१२. वैसे ही शोभायमान हुई
छत्रचामरैः	५. छत्रों-चवरों	रवेः	१०. सूर्य की
वर आयुध	६. श्रेष्ठ-अस्त्रों	यथा	१३. जैसे
आभरण	७. आभूषणों	अर्णवः क्षुभित	१६. क्षुब्ध समुद्र की शोभा होती है
किरीट	८. मुकुटों	तिमिङ्गिल	१४. मगरमच्छों और
वर्मभिः ।	९. कवचों और	ऊर्मिभिः ।।	१५. लहरों के हिलने-डुलने से

श्लोकार्थ—कोलाहल से परिपूर्ण वह महान् सेना ध्वजा-पताकाओं, छत्रों, चँवरों, श्रेष्ठ अस्त्रों, आभूषणों, मुकुटों, कवचों और सूर्य की दिन में पड़ती हुई किरणों से वैसे ही शोभायमान हुई जैसे मगरमच्छों और लहरों के हिलने-डुलने से क्षुब्ध समुद्र की शोभा होती है ।।

अष्टादशः श्लोकः

अथो मुनिर्यदुपतिना सभाजितः प्रणम्य तं हृदि विदधद् विहायसा ।
निशम्य तद्व्यवसितमाहृतार्हणो मुकुन्दसन्दर्शननिर्वृतेन्द्रियः ।।१८।।

पदच्छेद— अथो मुनिः यदुपतिना सभाजितः प्रणम्य तम् हृदि विदधत् विहायसा ।
निशम्य तत् व्यवसितम् आहृत अर्हणः मुकुन्द सन्दर्शन निर्वृत इन्द्रियः ।।

शब्दार्थ—

अथो	१. अतः	निशम्य	६. सुनकर
मुनिः	१२. नारदमुनि ने	तत्	४. उनके
यदुपतिना	२. श्रीकृष्ण जी से	व्यवसितम्	५. निश्चय को
सभाजितः	३. सम्मानित होकर	आहृत अर्हणः	७. पूजन पाकर
प्रणम्य तम्	१३. उन्हें प्रणाम करके	मुकुन्द	८. भगवान् के
हृदि	१४. हृदय में	सन्दर्शन	९. दर्शन से
विदधत्	१५. धारण करके	निर्वृत	१०. आनन्द मग्न
विहायसा ।	१६. आकाश मार्ग से प्रस्थान किया	इन्द्रियः ।।	११. इन्द्रियों वाले

श्लोकार्थ—अतः श्रीकृष्ण से सम्मानित होकर उनके निश्चय को सुनकर पूजन पाकर भगवान् के दर्शन से आनन्द मग्न इन्द्रियों वाले नारदमुनि ने उन्हें प्रणाम कर हृदय में धारण करके आकाश मार्ग से प्रस्थान किया ।।

एकोनविंशः श्लोकः

राजदूतमुवाचेदं भगवान् प्रीणयन् गिरा।
मा भैष्ट दूत भद्रं वो घातयिष्यामि मागधम् ॥१९॥

पदच्छेद— राजदूतम् उवाच इदम् भगवान् प्रीणयन् गिरा।
मा भैष्ट दूत भद्रम् वः घातयिष्यामि मागधम् ॥

शब्दार्थ—

राजदूतम्	२.	राजाओं के दूत को	मा	९.	मत
उवाच	६.	कहा	भैष्ट	८.	डरो
इदम्	५.	यह	दूत	७.	दूत
भगवान्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	भद्रम् वः	१०.	तुम्हारा कल्याण हो
प्रीणयन्	४.	आश्वासन देते हुये	घातयिष्यामि	१२.	मरवा डालूँगा
गिरा।	३.	वाणी से	मागधम् ॥	११.	मैं जरासन्ध को

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने राजाओं के दूत को वाणी से आश्वासन देते हुये यह कहा—दूत ! डरो मत तुम्हारा कल्याण हो। मैं जरासन्ध को मरवा डालूँगा ॥

विंशः श्लोकः

इत्युक्तः प्रस्थितो दूतो यथावदवदन्नृपान्।
तेऽपि सन्दर्शनं शौरेः प्रत्यैक्षन् यन्मुमुक्षवः ॥२०॥

पदच्छेद— इति उक्तः प्रस्थितः दूतः यथावत् नृपान्।
ते अपि सन्दर्शनम् शौरेः प्रतिऐक्षन् यत् मुमुक्षवः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	ऐसा	ते अपि	९.	वे भी
उक्तः	२.	कहे जाने पर	सन्दर्शनम्	११.	दर्शन को
प्रस्थितः दूतः	३.	दूत चला गया	शौरेः	१०.	श्रीकृष्ण के
यथावत्	४.	उसने ज्यों का त्यों	प्रतिऐक्षन्	१२.	बाट देखने लगे
अवदत्	६.	बता दिया	यत्	७.	और फिर
नृपान्।	५.	राजाओं को	मुमुक्षवः ॥	८.	कारागार से छूटने के इच्छुक

श्लोकार्थ—ऐसा कहे जाने पर दूत चला गया। उसने ज्यों का त्यों राजाओं को बता दिया। और फिर कारागार से छूटने के इच्छुक वे भी श्रीकृष्ण के दर्शन की बाट देखने लगे ॥

एकविंशः श्लोकः

आनर्तसौवीरमरूंस्तीर्त्वा विनशनं हरिः ।
गिरीन् नदीरतीयाय पुरग्रामव्रजाकरान् ॥२१॥

पदच्छेद— आनर्त सौवीर मरून् तीर्त्वा विनशनम् हरिः ।
गिरीन् नदीः अतीयाय पुरग्राम व्रज आकरान् ॥

शब्दार्थ—

आनर्त	२.	आनर्त	गिरीन्	६.	पर्वतों
सौवीर	३.	सौवीर	नदीः	७.	नदियों
मरून्	४.	मरु	अतीयाय	१२.	आगे बढ़ने लगे
तीर्त्वा	११.	पार करके	पुरग्राम	८.	नगरों-गाँवों
विनशनम्	५.	कुरुक्षेत्र	व्रज	९.	अहीरों की बस्तियों तथा
हरिः ।	१.	श्रीकृष्ण	आकरान् ॥	१०.	खानों को

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण आनर्त, सौवीर, मरु, कुरुक्षेत्र, पर्वतों, नदियों, नगरों, अहीरों की बस्तियों तथा खानों को पार करके आगे बढ़ने लगे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

ततो दृषद्वतीं तीर्त्वा मुकुन्दोऽथ सरस्वतीम् ।
पञ्चालानथ मत्स्यांश्च शक्रप्रस्थमथागमत् ॥२२॥

पदच्छेद— तथा दृषद्वतीम् तीर्त्वा मुकुन्दः अथ सरस्वतीम् ।
पञ्चालान् अथ मत्स्यान् च शक्र प्रस्थम् अथ आगमत् ॥

शब्दार्थ—

तथा	३.	वहाँ से	पञ्चालान्	७.	पञ्चाल
दृषद्वतीम्	४.	दृषद्वती और	अथ	८.	और
तीर्त्वा	६.	पार करके	मत्स्यान् च	९.	मत्स्य देशों में होते हुये
मुकुन्दः	२.	भगवान् श्रीकृष्ण	शक्रप्रस्थम्	११.	इन्द्रप्रस्थ
अथ	१.	इसके बाद	अथ	१०.	पश्चात्
सरस्वतीम् ।	५.	सरस्वती को	आगमत् ॥	१२.	जा पहुँचे

श्लोकार्थ—इसके बाद भगवान् श्रीकृष्ण वहाँ से दृषद्वती और सरस्वती को पार करके पञ्चाल और मत्स्य देशों में होते हुये पश्चात् इन्द्रप्रस्थ जा पहुँचे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तमुपागतमाकर्ण्य प्रीतो दुर्दर्शनं नृणाम् ।
अजातशत्रुर्निरगात् सोपाध्यायः सुहृद्वृतः ॥२३॥

पदच्छेद— तम् उपागतम् आकर्ण्य प्रीतः दुर्दर्शनम् नृणाम् ।
अजातशत्रुः निरगात् स उपाध्यायः सुहृद् वृतः ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	भगवान् श्रीकृष्ण	अजातशत्रुः	६.	राजा युधिष्ठिर
उपागतम्	४.	आगमन	निरगात्	१०.	नगर से बाहर आये
आकर्ण्य	५.	सुनकर	स उपाध्यायः	७.	आचार्य एवम्
प्रीतः	६.	प्रसन्न हुये	सुहृद्	८.	बन्धुओं से
दुर्दर्शनम्	२.	अत्यन्त दुर्लभ दर्शन वाले	वृतः ॥	९.	घिरे हुये
नृणाम् ।	१.	मनुष्यों के लिये			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! मनुष्यों के लिये अत्यन्त दुर्लभ दर्शन वाले भगवान् श्रीकृष्ण का आगमन सुनकर प्रसन्न हुये राजा युधिष्ठिर आचार्य एवम् बन्धुओं से घिरे हुये नगर से बाहर आये ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

गीतवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा ।
अभ्ययात् स हृषीकेशं प्राणाः प्राणमिवादृतः ॥२४॥

पदच्छेद— गीत वादित्र घोषेण ब्रह्म घोषेण भूयसा ।
अभ्ययात् स हृषीकेशम् प्राणाः प्राणम् इव आदृतः ॥

शब्दार्थ—

गीत	१.	गीत और	अभ्ययात्	९.	पहुँचे
वादित्र	२.	बाजे के	सः हृषीकेशम्	७.	युधिष्ठिर श्रीकृष्ण के पास
घोषेण	३.	शब्द तथा	प्राणाः	११.	इन्द्रियाँ मुख्य
ब्रह्म	५.	वेदोच्चारण को	प्राणम्	१२.	प्राण से मिलने जा रही हों
घोषेण	६.	ध्वनि के साथ	इव	१०.	मानों
भूयसा ।	४.	ऊँचे स्वर से	आदृतः ॥	८.	आदर पूर्वक

श्लोकार्थ—गीत और बाजे के शब्द के साथ ऊँचे स्वर से वेदोच्चारण की ध्वनि के साथ युधिष्ठिर श्रीकृष्ण के पास आदर पूर्वक जा पहुँचे । मानों इन्द्रियाँ मुख्य प्राण से मिलने जा रही हों ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

दृष्ट्वा विक्लिन्नहृदयः कृष्णं स्नेहेन पाण्डवः ।
चिराद् दृष्टं प्रियतमं सस्वजेऽथ पुनः पुनः ॥२५॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा विक्लिन्न हृदयः कृष्णम् स्नेहेन पाण्डवः ।
चिराद् दृष्टम् प्रियतमम् सस्वजे अथ पुनः पुनः ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	३.	देख कर	चिराद्	९.	बहुत समय के बाद
विक्लिन्न	७.	गद्-गद हो गया	दृष्टम्	१०.	देखने पर (उन्हें)
हृदयः	६.	हृदय	प्रियतमम्	८.	प्रियतम श्रीकृष्ण
कृष्णम्	२.	भगवान् श्रीकृष्ण को	सस्वजे	१२.	आलिङ्गन करने लगे
स्नेहेन	४.	स्नेह से	अथ	१.	तथा
पाण्डवः ।	५.	राजा युधिष्ठिर का	पुनः पुनः ॥	११.	बार-बार

श्लोकार्थ—तथा भगवान् श्रीकृष्ण को देख कर स्नेह से राजा युधिष्ठिर का हृदय गद्-गद हो गया । प्रियतम श्रीकृष्ण को बहुत समय के बाद देखने पर उन्हें बार-बार आलिङ्गन करने लगे ॥

षड्विंशः श्लोकः

दोर्भ्यां परिष्वज्य रमामलालयं मुकुन्दगात्रं नृपतिर्हताशुभः ।
लेभे परां निर्वृतिमश्रुलोचनो हृष्यत्तनुर्विस्मृतलोकविभ्रमः ॥२६॥

पदच्छेद—दोर्भ्याम् परिष्वज्य रमा अमल आलयम् मुकुन्द गात्रम् नृपतिः हत अशुभः ।
लेभे पराम् निर्वृतिम् अश्रुलोचनः हृष्यत् तनुः विस्मृत लोक विभ्रमः ॥

शब्दार्थ—

दोर्भ्याम्	६.	अपनी भुजाओं से	लेभे	१२.	पा गये (उनके)
परिष्वज्य	७.	आलिङ्गन करके	पराम्	१०.	वे परम
रमा	१.	लक्ष्मी के	निर्वृतिम्	११.	आनन्द को
अमल	२.	निर्मल	अश्रुलोचनः	१३.	नेत्रों में आँसू छलक आये
आलयम्	३.	निवास स्थान	हृष्यत् तनुः	१४.	शरीर रोमाञ्चित हो गया
मुकुन्द	४.	श्रीकृष्ण के	विस्मृत	१७.	भूल गये
गात्रम्	५.	शरीर का	लोक	१५.	और संसार का
नृपतिः	८.	राजा युधिष्ठिर का	विभ्रमः ॥	१६.	चक्कर
हत अशुभः ।	९.	अमङ्गल नष्ट हो गया			

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के निर्मल निवास स्थान श्रीकृष्ण के शरीर का अपनी भुजाओं से आलिङ्गन करके राजा युधिष्ठिर का अमङ्गल नष्ट हो गया । वे परम आनन्द को पा गये । उनके नेत्रों में आँसू छलक आये, शरीर रोमाञ्चित हो गया । और वे संसार के चक्कर को भूल गये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तं मातुलेयं परिरभ्य निर्वृतो भीमः स्मयन् प्रेमजवाकुलेन्द्रियः ।
यमौ किरीटी च सुहृत्तमं मुदा प्रवृद्धबाष्पाः परिरेभिरेऽच्युतम् ॥२७॥

पदच्छेद— तम् मातुलेयम् परिरभ्य निर्वृतः भीमः स्मयन् प्रेमजव आकुलेन्द्रियः ।
यमौ किरीटी च सुहृत्तमम् मुदा प्रवृद्धबाष्पाः परिरेभिरे अच्युतम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	३.	उन	यमौ	९.	नकुल-सहदेव
मातुलेयम्	४.	ममेरे भाई का	किरीटी	११.	अर्जुन ने
परिरभ्य	५.	आलिङ्गन करके	च	१०.	और
निर्वृतः	८.	आनन्द में डूब गये	सुहृत्तमम्	१४.	परमबन्धु
भीमः	२.	भीमसेन	मुदा	१२.	हर्ष से
स्मयन्	१.	मुस्कराते हुये	प्रवृद्ध बाष्पाः	१३.	आँसू बहाते हुये
प्रेमजव	६.	प्रेम के वेग से	परिरेभिरे	१६.	आलिङ्गन किया
आकुलेन्द्रियः ।	७.	गद्‌गद होकर	अच्युतम् ॥	१५	श्रीकृष्ण का

श्लोकार्थ—मुसकराते हुये भीमसेन उन ममेरे भाई का आलिङ्गन करके प्रेम के वेग से गद्‌गद होकर आनन्द में डूब गये । नकुल-सहदेव और अर्जुन ने हर्ष से आँसू बहाते हुये परम बन्धु श्रीकृष्ण का आलिङ्गन किया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अर्जुनेन परिष्वक्तो यमाभ्यामभिवादितः ।
ब्राह्मणेभ्यो नमस्कृत्य वृद्धेभ्यश्च यथार्हतः ॥२८॥

पदच्छेद— अर्जुनेन परिष्वक्तः यमाभ्याम् अभिवादितः ।
ब्राह्मणेभ्यः नमस्कृत्य वृद्धेभ्यः च यथा अर्हतः ॥

शब्दार्थ—

अर्जुनेन	१.	अर्जुन ने (पुनः)	नमस्कृत्य	१०.	नमस्कार किया
परिष्वक्तः	२.	आलिङ्गन किया (और)	वृद्धेभ्यः	७.	वृद्धों को
यमाभ्याम्	३.	नकुल-सहदेव ने	च	६.	और
अभिवादितः	४.	प्रणाम किया (श्रीकृष्ण ने)	यथा	८.	यथा
ब्राह्मणेभ्यः ।	५.	ब्राह्मणों	अर्हतः ॥	९.	योग्य

श्लोकार्थ—अर्जुन ने पुनः आलिङ्गन किया, और नकुल-सहदेव ने प्रणाम किया । श्रीकृष्ण ने ब्राह्मणों और वृद्धों को यथा-योग्य नमस्कार किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

मानितो मानयामास कुरुसृञ्जयकेकयान् ।
सूतमागधगन्धर्वा वन्दिनश्चोपमन्त्रिणः ॥२९॥

पदच्छेद— मानितः मानयामास कुरु सृञ्जय केकयान् ।
सूत मागध गन्धर्वा वन्दिनः च उपमन्त्रिणः ॥

शब्दार्थ—

मानितः	१.	सम्मान पाये हुये श्रीकृष्ण ने	सूत	६.	सूत
मानयामास	५.	मागध	मागध	७.	मागध
कुरु	२.	कुरु	गन्धर्वाः	८.	गन्धर्व
सृञ्जय	३.	सृञ्जय और	वन्दिनः च	९.	वन्दिजन और
केकयान् ।	४.	केकय देश के राजाओं का	उपमन्त्रिणः ॥	१०.	उपमन्त्री (उनकी स्तुति करने लगे)

श्लोकार्थ—सम्मान पाये हुये श्रीकृष्ण ने कुरु, सृञ्जय और केकय देश के राजाओं का सम्मान किया । सूत, मागध, गन्धर्व, बन्दीजन और उपमन्त्री उनकी स्तुति करने लगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

मृदङ्गशङ्खपटहवीणापणवगोमुखैः ।
ब्राह्मणाश्चारविन्दाक्षं तुष्टुवुर्ननृतुर्जगुः ॥३०॥

पदच्छेद— मृदङ्ग, शङ्ख पटह वीणा पणव गोमुखैः ।
ब्राह्मणाः च अरविन्दाक्षम् तुष्टुवुः ननृतुः जगुः ॥

शब्दार्थ—

मृदङ्ग	२.	मृदङ्ग	ब्राह्मणाः	८.	ब्राह्मण
शङ्ख	३.	शङ्ख	च	१.	और
पटह	४.	नगारे	अरविन्दाक्षम्	९.	कमल नयन भगवान्
वीणा	५.	वीणा	तुष्टुवुः	१०.	स्तुति करके
पणव	६.	ढोल और	ननृतुः	११.	नाचने और
गोमुखैः ।	७.	नरसिंहे बजाकर	जगुः ॥	१२.	गाने लगे

श्लोकार्थ—और मृदङ्ग, शङ्ख, नगारे, वीणा, ढोल और नरसिंहे बजाकर नाचने और गाने लगे । और ब्राह्मण कमल नयन भगवान् की स्तुति करने लगे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एवं सुहृद्भिः पर्यस्तः पुण्यश्लोकशिखामणिः ।
संस्तूयमानो भगवान् विवेशालङ्कृतं पुरम् ॥३१॥

पदच्छेद— एवम् सुहृद्भिः पर्यस्तः पुण्यश्लोक शिखामणिः ।
संस्तूयमानः भगवान् विवेश अलङ्कृतम् पुरम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	संस्तूयमानः	७.	लोगों द्वारा प्रशंसा किये जाते हुये
सुहृद्भिः	२.	बन्धुजनों के	भगवान्	६.	भगवान् श्रीकृष्ण ने
पर्यस्तः	३	साथ होकर	विवेश	१०.	प्रवेश किया
पुण्यश्लोक	४	पवित्र कीर्ति वालों में	अलङ्कृतम्	८.	सुसज्जित
शिखामणिः ।	५.	अग्रगण्य	पुरम् ॥	९.	नगर में

श्लोकार्थ—इस प्रकार बन्धुजनों के साथ होकर पवित्र कीर्ति वालों में अग्रगण्य भगवान् श्रीकृष्ण ने लोगों द्वारा प्रशंसा किये जाते हुये सुसज्जित नगर में प्रवेश किया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

संसिक्तवर्त्म करिणां मदगन्धतोयैश्चित्रध्वजैः कनकतोरणपूर्णकुम्भैः ।
मृष्टात्मभिर्नवदुकूलविभूषणस्रग्गन्धैर्नृभिर्युवतिभिश्च विराजमानम् ॥३२॥

पदच्छेद—संसिक्तवर्त्म करिणाम् मदगन्धतोयैः चित्रध्वजैः कनक तोरण पूर्णकुम्भैः ।
मृष्टात्मभिः नवदुकूल विभूषण स्रग् गन्धैः नृभिः युवतिभिः च विराजमानम् ॥

शब्दार्थ—

संसिक्तवर्त्म	७.	सींचे गये (तथा)	मृष्टात्मभिः	८.	नहा धोकर
करिणाम्	१.	हाथियों के	नवदुकूल	९.	नये वस्त्र
मदगन्धतोयैः	२.	मद के सुगन्धित जल से	विभूषण स्रग्	१०.	अभूषण, पुष्पों के हार
चित्रध्वजैः	३.	रंगबिरंगी झंड़ियों	गन्धैः नृभिः	११.	सुगन्धि लगाये हुये पुरुषों
कनक	४.	सुनहरी	युवतिभिः	१३.	युवतियों से
तोरण	५.	तोरणों से	च	१२.	और
पूर्ण कुम्भैः ।	६.	जल भरे कलशों से	विराजमानम् ॥	१४.	शोभायमान था

श्लोकार्थ—वह नगर हाथियों के मद के सुगन्धित जल से, रंगबिरंगी झडियों सुनहरी तोरणों से जल भरे कलशों से, सींचे गये तथा नहा धोकर नये वस्त्र आभूषण, पुष्पों के हार, सुगन्धि लगाये हुये पुरुषों और युवतियों से शोभायमान था ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

उद्दीप्तदीपबलिभिः प्रतिसद्मजालनिर्यातधूपरुचिरं विलसत्पताकम् ।
मूर्धन्यहेमकलशै रजतोरुश्रृङ्गैर्जुष्टं ददर्श भवनैः कुरुराजधाम ॥३३॥

पदच्छेद— उद्दीप्त दीप बलिभिः प्रतिसद्म जाल निर्यात धूप रुचिरम् विलसत् पताकम् ।
मूर्धन्य हेमकलशैः रजत उरुश्रृङ्गैः जुष्टम् ददर्श भवनैः कुरुराजधाम ॥

शब्दार्थ—

उद्दीप्त	१.	जले हुये	मूर्धन्य	९.	चोटी पर
दीपबलिभिः	२.	दीप मालाओं से	हेमकलशैः	१०.	सोने के कलशों
प्रतिसद्मजाल	३.	प्रत्येक महल की खिड़कियों से	रजत	११.	चाँदी के
निर्यात	४.	निकलते हुये	उरुश्रृङ्गैः	१२.	विशाल शिखरों वाले
धूप	५.	धूपों से	जुष्टम्	१४.	परिपूर्ण
रुचिरम्	६.	सुन्दर (और)	ददर्श	१६.	देखा
विलसत्	८.	सुशोभित (तथा)	भवनैः	१३.	भवनों से
पताकम् ।	७.	पताकाओं से	कुरुराजधाम ॥	१६.	पाण्डवों की राजधानी को

श्लोकार्थ— वह नगर जले हुये दीपमालाओं से, प्रत्येक महल की खिड़कियों से निकलते हुये धूपों से सुन्दर और पताकाओं से सुशोभित तथा चोटी पर सोने के कलशों, चाँदी के विशाल शिखरों वाले भवनों से परिपूर्ण पाण्डवों की राजधानी को देखा ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

प्राप्तं निशम्य नरलोचनपानपात्रमौत्सुक्यविश्लथितकेशदुकूलबन्धाः ।
सद्यो विसृज्य गृहकर्म पतींश्च तल्पे द्रष्टुं ययुर्युवतयः स्म नरेन्द्रमार्गे ॥३४॥

पदच्छेद— प्राप्तम् निशम्य नरलोचन पानपात्रम् औत्सुक्य विश्लथित केशदुकूल बन्धाः ।
सद्यः विसृज्य गृहकर्म पतीन् च तल्पे द्रष्टुम् ययुः युवतयः स्म नरेन्द्रमार्गे ॥

शब्दार्थ—

प्राप्तम्	३.	आये हुये	सद्यः	१०.	तुरन्त
निशम्य	४.	सुनकर	विसृज्य	१४.	छोड़ कर (श्रीकृष्ण को)
नरलोचन	१.	मनुष्य नेत्रों के	गृहकर्म	११.	घर के काम को
पानपात्रम्	२.	अत्यन्त दर्शनीय (श्रीकृष्ण को)	पतीन्	१३.	पतियों को
औत्सुक्य	५.	उत्सुकतावश (उनकी)	च तल्पे	१२.	शय्या पर
विश्लथित	८.	ढीली पड़ गईं (और वे)	द्रष्टुम्	१५.	देखने के लिये
दुकूल	६.	साड़ियों और चोटियों की	ययुः	१७.	चल पड़ीं
बन्धाः ।	७.	गाँठें	युवतयः स्म	९.	युवतियाँ
			नरेन्द्रमार्गे ॥	१६.	राजमार्ग पर

श्लोकार्थ—मनुष्यों के नेत्रों के अत्यन्त दर्शनीय श्रीकृष्ण को आये हुये सुनकर उत्सुकतावश उनकी साड़ियों और चोटियों की गाँठें ढीली पड़ गईं। और वे युवतियाँ तुरन्त घर के काम को, शय्या पर पतियों को छोड़ कर श्रीकृष्ण को देखने के लिये राजमार्ग पर चल पड़ीं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तस्मिन् सुसङ्कुल इभाश्वरथद्विपद्भिः कृष्णं सभार्यमुपलभ्य गृहाधिरूढाः ॥
नार्यो विकीर्य कुसुमैर्मनसोपगुह्य सुस्वागतं विदधुरुत्स्मयवीक्षितेन ॥३५॥

पदच्छेद—तस्मिन् सुसङ्कुले इभ अश्वरथ द्विपद्भिः कृष्णम् सभार्यम् उपलभ्य गृह अधिरूढाः ।
नार्यः विकीर्य कुसुमैः मनसा उपगुह्य सुस्वागतम् विदधुः उत्स्मय वीक्षितेन ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	४.	उस (राज पथ) पर	नार्यः	९.	नारियों ने
सुसङ्कुले	३.	भीड़ से घिरे	विकीर्य कुसुमैः	१०.	पुष्पों की वर्षा करके
इभ-अश्व	१.	हाथी-घोड़े	मनसा	११.	मन ही मन
रथद्विपद्भिः	२.	रथ और पैदल सेना को	उपगुह्य	१२.	आलिङ्गन करके
कृष्णम्	५.	श्रीकृष्ण को	सुस्वागतम्	१५.	सुस्वागत
सभार्यम्	६.	पत्नियों के साथ	विदधुः	१६.	किया
उपलभ्य	७.	देखा	उत्स्मय	१३.	प्रेमभरी मुसकान तथा
गृहअधिरूढाः ।	८.	अटारियों पर चढ़ी हुई	वीक्षितेन ॥	१४.	चितवन से उनका

श्लोकार्थ—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सेना की भीड़ से घिरे उस राज पथ पर श्रीकृष्ण को पत्नियों के साथ देखा । अटारियों पर चढ़ी हुई नारियों ने पुष्पों की वर्षा करके मन ही मन आलिङ्गन करके प्रेम भरी मुसकान तथा चितवन से उनका सुस्वागत किया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

ऊचुः स्त्रियः पथि निरीक्ष्य मुकुन्दपत्नीस्तारा यथोडुपसहाः किमकार्यमूभिः ।
यच्चक्षुषां पुरुषमौलिरुदारहासलीलावलोककलयोत्सवमातनोति ॥३६॥

पदच्छेद—ऊचुः स्त्रियः पथि निरीक्ष्य मुकुन्द पत्नीः ताराः यथा उडुपसहाः किम् अकारि अमूभिः ।
यत् चक्षुषाम् पुरुषमौलिः उदारहास लीला अवलोक कलया उत्सवम् आतनोति ॥

शब्दार्थ—

ऊचुः	६.	कहने लगीं (इन स्त्रियों ने)	यत्	९.	जिसके कारण
स्त्रियः	५.	वे स्त्रियाँ (आपस में)	चक्षुषाम्	१४.	नेत्रों को
पथि निरीक्ष्य	४.	मार्ग में देखकर	पुरुष मौलिः	१०.	पुरुष-श्रेष्ठ
मुकुन्द पत्नीः	१.	उन श्रीकृष्ण की पत्नियों को	उदार हास	११.	उन्मुक्त-हास्य और
ताराः यथा	३.	ताराओं के समान	लीला अवलोक	१२.	विलास पूर्ण चितवन को
उडुपसहाः	२.	चन्द्रमा के साथ	कलयाः	१३.	कला से (इनके)
किम् अकारि	७.	कौन सा	उत्सवम्	१५.	आनन्द
अमूभिः ।	८.	किया था	आतनोति ॥	१६.	प्रदान करते हैं

श्लोकार्थ—उन श्रीकृष्ण की पत्नियों को चन्द्रमा के साथ ताराओं के समान मार्ग में देखकर वे स्त्रियाँ आपस में कहने लगीं—इन स्त्रियों ने कौन सा पुण्य किया था । जिसके कारण पुरुष श्रेष्ठ श्रीकृष्ण अपने उन्मुक्त हास्य और विलास पूर्ण चितवन की कला से इनके नेत्रों को आनन्द प्रदान करते हैं ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तत्र तत्रोपसङ्गम्य पौरा मङ्गलपाणयः ।
चक्रुः सपर्यां कृष्णाय श्रेणीमुख्या हतैनसः ॥३७॥

पदच्छेद — तत्र तत्र उपसङ्गम्य पौराः मङ्गल पाणयः ।
चक्रुः सपर्याम् कृष्णाय श्रेणी मुख्या हतैनसः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	७.	स्थान	चक्रुः	१२.	की
तत्र	८.	स्थान पर	सपर्याम्	११.	पूजा-अर्चा
उपसङ्गम्य	९.	मिलकर	कृष्णाय	१०.	श्रीकृष्ण की
पौराः	६.	नगर निवासियों ने	श्रेणी	५.	धनी-मानी
मङ्गल	२.	माङ्गलिक वस्तुयें लिये	मुख्याः	४.	प्रमुख
पाणयः ।	१.	हाथों में	हतैनसः ॥	३.	निष्पाप

श्लोकार्थ—हाथों में माङ्गलिक वस्तुयें लिये निष्पाप प्रमुख धनी-मानी नगरवासियों ने स्थान-स्थान पर मिल कर श्रीकृष्ण की पूजा अर्चा की ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

अन्तःपुरजनैः प्रीत्या मुकुन्दः फुल्ललोचनैः ।
ससम्भ्रमैरभ्युपेतः प्राविशद् राजमन्दिरम् ॥३८॥

पदच्छेद— अन्तः पुर जनैः प्रीत्या मुकुन्दः फुल्ललोचनैः ।
स सम्भ्रमैः अभिउपेतः प्राविशत् राजमन्दिरम् ॥

शब्दार्थ—

अन्तः पुर	१.	अन्तः पुर की	स	६.	साथ
जनैः	२.	स्त्रियों ने	सम्भ्रमैः	५.	प्रेम की विह्वलता के
प्रीत्या	३.	आनन्द से	अभिउपेतः	८.	स्वागत किया (और वे)
मुकुन्दः	७.	श्रीकृष्ण का	प्राविशत्	१०.	पधार गये
फुल्ललोचनैः ।	४.	खिले हुये नेत्रों के द्वारा	राजमन्दिरम् ॥	९.	राजभवन में

श्लोकार्थ—अन्तःपुर की स्त्रियों ने आनन्द से खिले हुये नेत्रों के द्वारा प्रेम की विह्वलता के साथ श्रीकृष्ण का स्वागत किया । और वे राजभवन में पधार गये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

पृथा विलोक्य भ्रात्रेयं कृष्णं त्रिभुवनेश्वरम् ।
प्रीतात्मोत्थाय पर्यङ्कात् सस्नुषा परिषस्वजे ॥३९॥

पदच्छेद— पृथा विलोक्य भ्रात्रेयम् कृष्णम् त्रिभुवन ईश्वरम् ।
प्रीतात्मा उत्थाय पर्यङ्कात् सस्नुषा परिषस्वजे ॥

शब्दार्थ—

पृथा	६.	कुन्ती ने	प्रीत	७.	प्रसन्न
विलोक्य	५.	देखकर	आत्मा	८.	चित्त होकर
भ्रात्रेयम्	३.	भतीजे	उत्थाय	११.	उठकर
कृष्णम्	४.	श्रीकृष्ण को	पर्यङ्कात्	१०.	पलँग से
त्रिभुवन	१.	तीनों लोक के	सस्नुषा	९.	पुत्र वधू (द्रौपदी के साथ)
ईश्वरम् ।	२.	स्वामी	परिषस्वजे ॥	१२.	उन्हें हृदय से लगाया

श्लोकार्थ—तीनों लोक के स्वामी भतीजे श्रीकृष्ण को देखकर कुन्ती ने प्रसन्न चित्त होकर पुत्र वधू द्रौपदी के साथ पलंग से उठकर उन्हें हृदय से लगाया ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

गोविन्दं गृहमानीय देवदेवेशमादृतः ।
पूजायां नाविदत् कृत्यं प्रमोदोपहतो नृपः ॥४०॥

पदच्छेद— गोविन्दम् गृहम् आनीय देवदेवेशम् आदृतः ।
पूजायाम् न अविदत् कृत्यम् प्रमोद उपहतः नृपः ॥

शब्दार्थ—

गोविन्दम्	२.	श्रीकृष्ण को	पूजायाम्	१०.	पूजा की
गृहम्	४.	घर में	न अविदत्	९.	न जाना अर्थात् आत्म विस्मृत होकर उनकी
आनीय	५.	लाकर	कृत्यम्	८.	कार्य को
देवदेवेशम्	१.	देवदेवेश्वर	प्रमोद उपहतः	६.	आनन्द से विभोर
आदृतः ।	३.	आदर पूर्वक	नृपः ॥	७.	राजा युधिष्ठिर ने

श्लोकार्थ—देवदेवेश्वर श्रीकृष्ण को घर में लाकर आनन्द से विभोर राजा युधिष्ठिर ने पूजा में कार्य को न जाना अर्थात् आत्म-विस्मृत होकर उनकी पूजा की ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

पितृष्वसुर्गुरुस्त्रीणां कृष्णश्चक्रेऽभिवादनम्।
स्वयं च कृष्णया राजन् भगिन्या चाभिवन्दितः ॥४१॥

पदच्छेद—
पितृष्वसुः गुरु स्त्रीणाम् कृष्णः चक्रे अभिवादनम्।
स्वयम् च कृष्णया राजन् भगिन्या च अभिवन्दितः ॥

शब्दार्थ—

पितृष्वसुः	३.	फूआ (कुन्ती) तथा	स्वयम् च	११.	स्वयम् उनको भी
गुरु	४.	गुरुजनों की	कृष्णया	१०.	द्रौपदी ने
स्त्रीणाम्	५.	स्त्रियों का	राजन्	१.	हे राजन् !
कृष्णः	२.	श्रीकृष्ण ने	भगिन्या	८.	बहन सुभद्रा
चक्रे	७.	किया	च	९.	और
अभिवादनम्।	६.	अभिवादन	अभिवन्दितः ॥	१२.	नमस्कार किया

श्लोकार्थ—हे राजन् ! श्रीकृष्ण ने फुआ कुन्ती तथा गुरुजनों की स्त्रियों को अभिवादन किया। बहन सुभद्रा और द्रौपदी ने स्वयम् उनको भी नमस्कार किया ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

श्वश्र्वा संचोदिता कृष्णा कृष्णपत्नीश्च सर्वशः।
आनर्च रुक्मिणीं सत्यां भद्रां जाम्बवतीं तथा ॥४२॥

पदच्छेद—
श्वश्र्वा संचोदिता कृष्णा कृष्ण पत्नीः च सर्वशः।
आनर्च रुक्मिणीम् सत्याम् भद्राम् जाम्बवतीम् तथा ॥

शब्दार्थ—

श्वश्र्वा	१.	सास (कुन्ती) की	आनर्च	१२.	सत्कार किया
संचोदिता	२.	प्रेरणा से	रुक्मिणीम्	६.	रुक्मिणी
कृष्णा	३.	द्रौपदी ने	सत्याम्	७.	सत्या
कृष्ण	४.	श्रीकृष्ण की	भद्राम्	८.	भद्रा
पत्नीः च	५.	पत्नियों	जाम्बवतीम्	१०.	जाम्बवती
सर्वशः।	११.	सब प्रकार से	तथा ॥	९.	तथा

श्लोकार्थ—सास कुन्ती की प्रेरणा से द्रौपदी ने श्रीकृष्ण की पत्नियों रुक्मिणी, सत्या, भद्रा तथा जाम्बवती का सब प्रकार से सत्कार किया ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

कालिन्दीं मित्रविन्दां च शैब्यां नाग्नजितीं सतीम् ।
अन्याश्चाभ्यागता यास्तु वासःस्रङ्मण्डनादिभिः ॥४३॥

पदच्छेद— कालिन्दीम् मित्रविन्दाम् च शैब्याम् नाग्नजितीम् सतीम् ।
अन्याः च अभ्यागताः याः तु वासः स्रग् मण्डन आदिभिः ॥

शब्दार्थ—

कालिन्दीम्	१. कालिन्दी	अन्याः च	७. और अन्य
मित्रविन्दाम्	२. मित्रविन्दा	अभ्यागताः	९. आयी हुई थीं उनकी भी
च	४. और	याः तु	८. जो स्त्रियाँ
शैब्याम्	३. शैब्या	वासः स्रग्	१० वस्त्र-माला
नाग्नजितीम्	६. नाग्नजिती	मण्डन	११. आभूषण
सतीम् ।	५. साध्वी	आदिभिः ॥	१२. आदि से (सत्कार किया)

श्लोकार्थ—कालिन्दी, मित्रविन्दा, शैब्या और साध्वी नाग्नजिती और अन्य जो स्त्रियाँ आयी हुई थीं । उनकी भी वस्त्र-माला, आभूषण आदि से सत्कार किया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

सुखं निवासयामास धर्मराजो जनार्दनम् ।
ससैन्यं सानुगामात्यं सभार्यं च नवं नवम् ॥४४॥

पदच्छेद— सुखम् निवासयामास धर्मराजः जनार्दनम् ।
ससैन्यम् सानुग अमात्यम् सभार्यम् च नवम्-नवम् ॥

शब्दार्थ—

सुखम्	९. सुख पूर्वक	सानुग	२. सेवक
निवासयामास	१०. ठहराया	अमात्यम्	३. मंत्री
धर्मराजः	६. युधिष्ठिर ने	सभार्यम्	५. पत्नियों के साथ
जनार्दनम् ।	७. श्रीकृष्ण को	च	४. और
ससैन्यम्	१. सेना	नवम्-नवम् ॥	८. नये-नये (भवन में)

श्लोकार्थ—तथा सेना, सेवक, मंत्री और पत्नियों के साथ युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण को नये-नये भवन में सुख पूर्वक ठहराया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तर्पयित्वा खाण्डवेन वह्निं फाल्गुनसंयुतः ।
मोचयित्वा मयं येन राज्ञे दिव्या सभा कृता ।।४५।।

पदच्छेद— तर्पयित्वा खाण्डवेन वह्निम् फाल्गुन संयुतः ।
मोचयित्वा मयम् येन राज्ञे दिव्या सभा कृता ।।

शब्दार्थ—

तर्पयित्वा	५.	तृप्त कराया (और)	मोचयित्वा	७.	उससे बचाया
खाण्डवेन	३.	खाण्डव वन जलाकर	मयम्	६.	मयासुर को
वह्निम्	५.	अग्नि को	येन राज्ञे	८.	जिसने युधिष्ठिर के लिये
फाल्गुन	१.	अर्जुन के	दिव्या	९.	एक दिव्य
संयुतः ।	२.	साथ (श्रीकृष्ण ने)	सभा कृता ।।	१०.	सभा भवन तैयार कर दिया

श्लोकार्थ—अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण ने खाण्डव वन जला कर अग्नि को तृप्त कराया । और मयासुर को उससे बचाया । जिसने युधिष्ठिर के लिये एक दिव्य सभा भवन तैयार कर दिया ।।

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

उवास कतिचिन्मासान् राज्ञः प्रियचिकीर्षया ।
विहरन् रथमारुह्य फाल्गुनेन भटैर्वृतः ।।४६।।

पदच्छेद— उवास कतिचित् मासान् राज्ञः प्रिय चिकीर्षया ।
विहरन् रथम् आरुह्य फाल्गुनेन भटैः वृतः ।।

शब्दार्थ—

उवास	१०.	वहीं निवास किया	विहरन्	५.	विहार करते हुये
कतिचित्	८.	कुछ	रथम्	३.	रथ पर
मासान्	९.	मासों तक	आरुह्य	४.	सवार होकर
राज्ञः	६.	राजा युधिष्ठिर का	फाल्गुनेन	२.	अर्जुन के साथ
प्रियचिकीर्षया ।	७.	प्रिय करने की इच्छा से	भटैः वृतः ।।	१.	योद्धाओं से घिर कर (श्रीकृष्ण ने)

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने योद्धाओं से घिर कर अर्जुन के साथ रथ पर सवार होकर विहार करते हुये राजा युधिष्ठिर का प्रिय करने की इच्छा से कुछ मासों तक वहीं निवास किया ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे कृष्णस्येन्द्रप्रस्थगमनं
नामैकसप्ततितमः अध्यायः ।।७१।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रिसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकदा तु सभामध्ये आस्थितो मुनिभिर्वृतः ।
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैर्भ्रातृभिश्च युधिष्ठिरः ॥१॥

पदच्छेद— एकदा तु सभा मध्ये आस्थितः मुनिभिः वृतः ।
ब्राह्मणैः क्षत्रियैः वैश्यैः भ्रातृभिः च युधिष्ठिरः ॥

शब्दार्थ—

एकदा तु	१.	एक दिन	ब्राह्मणैः	३.	ब्राह्मणों
सभा	१०.	सभा के	क्षत्रियैः	४.	क्षत्रियों
मध्ये	११.	बीच में	वैश्यैः	५.	वैश्यों
आस्थितः	१२.	बैठे हुये थे	भ्रातृभिः	७.	भाइयों से
मुनिभिः	२.	मुनियों	च	६.	और
वृतः ।	८.	घिरे	युधिष्ठिरः ॥	९.	राजा युधिष्ठिर

श्लोकार्थ—एक दिन मुनियों, ब्राह्मणों, वैश्यों और भाइयों से घिरे राजा युधिष्ठिर सभा के बीच में बैठे हुये थे ॥

द्वितीयः श्लोकः

आचार्यैः कुलवृद्धैश्च ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ।
शृण्वतामेव चैतेषामाभाष्येदमुवाच ह ॥२॥

पदच्छेद— आचार्यैः कुलवृद्धैः च ज्ञाति सम्बन्धि बान्धवैः ।
शृण्वताम् एव च एतेषाम् आभाष्य इदम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

आचार्यैः	१.	आचार्यों	शृण्वताम्	८.	सुनते हुये
कुलवृद्धैः	२.	कुल के बड़े बूढ़ों	एव च	९	ही
च	५.	और	एतेषाम्	७.	इनके
ज्ञाति	३.	स्वजनों	आभाष्य	१०.	श्रीकृष्ण को सम्बोधित करके
सम्बन्धि	४.	सम्बन्धियों			
बान्धवैः ।	६.	बन्धुओं के साथ बैठे थे	इदम् उवाच ह ॥	११.	यह कहा

श्लोकार्थ—आचार्यों, कुल के बड़े बूढ़ों, स्वजनों, सम्बन्धियों और बन्धुओं के साथ बैठे थे । इनके सुनते हुये ही श्रीकृष्ण को सम्बोधित करके यह कहा ॥

तृतीयः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—क्रतुराजेन गोविन्द राजसूयेन पावनीः ।
यक्ष्ये विभूतीर्भवतस्तत् सम्पादय नः प्रभो ॥३॥

पदच्छेद— क्रतु राजेन गोविन्द राजसूयेन पावनीः ।
यक्ष्ये विभूतीः भवतः तत् सम्पादय नः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

क्रतु	३.	यज्ञ	विभूतीः	७.	विभूतियों का
राजेन	२.	सर्वश्रेष्ठ	भवत्	५.	आपकी
गोविन्द	१.	हे गोविन्द !	तत्	११.	इस कामना को
राजसूयेन	४.	राजसूय के द्वारा	सम्पादय	१२.	पूर्ण करें
पावनीः ।	६.	पवित्र	नः	१०.	हमारी
यक्ष्ये	८.	मैं यजन करूँगा	प्रभो ॥	९.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे गोविन्द ! सर्वश्रेष्ठ यज्ञ राजसूय के द्वारा आपकी विभूतियों का मैं यजन करूँगा हे प्रभो ! हमारी इस कामना को पूर्ण करें ॥

चतुर्थः श्लोकः

त्वत्पादुके अविरतं परि ये चरन्ति ध्यायन्त्यभद्रनशने शुचयो गृणन्ति ।
विन्दन्ति ते कमलनाभ भवापवर्गमाशासते यदि त आशिष ईश नान्ये ॥४॥

पदच्छेद— त्वत् पादुके अविरतम् परि ये चरन्ति ध्यायन्ति अभद्रनशने शुचयः गृणन्ति ।
विन्दन्ति ते कमल नाभ भवअपवर्गम् आशासते यदि ते आशिष ईश न अन्ये ॥

शब्दार्थ—

त्वत् पादुके	२.	आपकी चरण पादुकायें	विन्दन्ति	१२.	पा जाते हैं
अविरतम्	३.	निरन्तर	ते	९.	वे
परि	५.	उनकी	कमलनाभ	१.	हे नाभि में कमल वाले !
ये चरन्ति	६.	जो सेवा करते हैं	भव अपवर्गम्	११.	संसार से मोक्ष
ध्यायन्ति	७.	ध्यान करते हैं	आशासते	१४.	आशा करते हैं (तो भी मिलाते हैं)
अभद्रनशने	४.	अमङ्गलों नष्ट करती है	यदि ते आशिष	१३.	यदि वे विषयों की
शुचयः	१०.	पवित्रात्मा हैं (और)	ईश न	१५.	हे प्रभो ! ये सब
गृणन्ति ।	८.	स्तुति करते हैं	अन्ये ॥	१६.	दूसरे लोग नहीं पाते हैं

श्लोकार्थ—हे नाभि में कमल वाले ! भगवन् आपकी चरण पादुकायें निरन्तर अमङ्गलों को नष्ट करती हैं । उनकी जो सेवा करते हैं, ध्यान करते हैं और स्तुति करते हैं वे पवित्रात्मा हैं । और संसार से मोक्ष पा जाते हैं । यदि वे विषयों की आशा करते हैं तो वे भी मिलते हैं । हे प्रभो ! ये सब दूसरे लोग नहीं पाते हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

तद् देवदेव भवतश्चरणारविन्दसेवानुभावमिह पश्यतु लोक एषः ।
ये त्वां भजन्ति न भजन्त्युत वोभयेषां निष्ठां प्रदर्शय विभो कुरुसृञ्जयानाम् ।५।

पदच्छेद—तत् देवदेव भवतः चरणारविन्द सेवा अनुभावम् इह पश्यतु लोक एषः ।
ये त्वाम् भजन्ति न भजन्ति उत वा उभयेषाम् निष्ठाम् प्रदर्शय विभो कुरु सृञ्जयानाम् ।।

शब्दार्थ—

तत् देवदेव	१. हे देवताओं के देवता !	येत्वाम् भजन्ति	११. जो आपको भजते हैं
भवतः	२. आपके	नभजन्ति	१३. भजन नहीं करते हैं
चरणारविन्द	३. चरण कमलों की	उत वा	१२. अथवा जो
सेवा	४. सेवा का	उभयेषाम्	१४. उनका
अनुभावम्	५. प्रभाव	निष्ठाम्	१५. अन्तर (जनता को)
इह	७. यहाँ पर	प्रदर्शय	१६. आप दिखा दीजिये
पश्यतु	८. देखें	विभो कुरु	९. हे प्रभो ! कुरुवंशी
लोक एषः	६. ये लोग	सृञ्जयानाम् ।।	१०. सृञ्जयवंशी राजाओं में

श्लोकार्थ—हे देवताओं के देवता ! आपके चरण कमलों की सेवा का प्रभाव ये लोग यहाँ पर देखें । हे प्रभो ! कुरुवंशी सृञ्जयवंशी राजाओं में जो आपको भजते हैं अथवा जो भजन नहीं करते हैं । उनका अन्तर जनता को आप दिखा दीजिये ।।

षष्ठः श्लोकः

न ब्रह्मणः स्वपरभेदमतिस्तव स्यात् सर्वात्मनः समदृशः स्वसुखानुभूतेः ।
संसेवतां सुरतरोरिव ते प्रसादः सेवानुरूपमुदयो न विपर्ययोऽत्र ।।६।।

पदच्छेद—न ब्रह्मणःस्वपर भेदमतिः तव स्यात् सर्व आत्मनः समदृशः स्वसुख अनुभूतेः ।
संसेवताम् सुरतरोः इव ते प्रसादः सेवा अनुरूपम् उदयः न विपर्ययः अत्र ।।

शब्दार्थ—

न	८. नहीं	संसेवताम्	११. सेवन करने वालों के
ब्रह्मणःस्वपर	६. ब्रह्म में अपने पराये की	सुरतरोः	१०. कल्प वृक्ष का
भेदमतिः	७. भेद बुद्धि	इव ते	१२. समान आपकी
तव	५. आप	प्रसादः	१४. फल की
स्यात्	९. होती है	सेवा अनुरूपम्	१३. सेवा के अनुरूप
सर्व आत्मनः	१. हे सब के आत्मा !	उदयः	१५. प्राप्ति होती है
समदृशः	२. समदर्शी	न	१८. नहीं होती है
स्वसुख	३. अपने आनन्द का	विपर्ययः	१७. विषमता
अनुभूतेः ।	४. अनुभव करने वाले	अत्र ।।	१६. इसमें

श्लोकार्थ—हे सबके आत्मा ! समदर्शी अपने आनन्द का अनुभव करने वाले आप ब्रह्म में अपने पराये की भेद बुद्धि नहीं होती है । कल्प वृक्ष का सेवन करने वालों के समान आपकी सेवा के अनुरूप फल की प्राप्ति होती है । इसमें विषमता नहीं होती है ।।

सप्तमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—सम्यग् व्यवसितं राजन् भवता शत्रुकर्शन ।
कल्याणी येन ते कीर्तिर्लोकाननु भविष्यति ॥७॥

पदच्छेद— सम्यक् व्यवसितम् राजन् भवता शत्रुकर्शन ।
कल्याणी येन ते कीर्तिः लोकान् अनुभविष्यति ॥

शब्दार्थ—

सम्यक्	४.	बहुत उत्तम	कल्याणी	७.	मङ्गलमयी
व्यवसितम्	५.	सोचा है	येन ते	६.	जिससे आपकी
राजन्	२.	हे राजन् !	कीर्तिः	८.	कीर्ति
भवता	३.	आपने	लोकान्	९.	लोकों में
शत्रुकर्शन ।	१.	शत्रु विजयी	अनुभविष्यति ॥	१०.	फैल जायगी

श्लोकार्थ—शत्रु विजयी हे राजन् ! आपने बहुत उत्तम सोचा है । जिससे आपकी मङ्गलमयी कीर्ति लोकों में फैल जायगी ॥

अष्टमः श्लोकः

ऋषीणां पितृदेवानां सुहृदामपि नः प्रभो ।
सर्वेषामपि भूतानामीप्सितः क्रतुराडयम् ॥८॥

पदच्छेद— ऋषीणाम् पितृ देवानाम् सुहृदाम् अपि नः प्रभो ।
सर्वेषाम् अपि भूतानाम् ईप्सितः क्रतुराट् अयम् ॥

शब्दार्थ—

ऋषीणाम्	४.	ऋषियों	सर्वेषाम्	१०.	सभी
पितृ	५.	पितरों	अपि	९.	तथा
देवानाम्	६.	देवों	भूतानाम्	११.	प्राणियों को
सुहृदाम्	७.	मित्रों	ईप्सितः	१२.	अभीष्ट है
अपि नः	८.	और हमें	क्रतुराट्	३.	यज्ञराज
प्रभो !	१.	हे महाराज !	अयम् ॥	२.	यह

श्लोकार्थ—हे महाराज ! यह यज्ञराज ऋषियों, पितरों, देवों, मित्रों और हमें तथा सभी प्राणियों को अभीष्ट है ॥

नवमः श्लोकः

विजित्य नृपतीन् सर्वान् कृत्वा च जगतीं वशे ।
सम्भृत्य सर्वसम्भारानाहरस्व महाक्रतुम् ॥९॥

पदच्छेद— विजित्य नृपतीन् सर्वान् कृत्वा च जगतीम् वशे ।
सम्भृत्य सर्व सम्भारान् आहरस्व महाक्रतुम् ॥

शब्दार्थ—

विजित्य	३.	जीत कर	सम्भृत्य	९.	एकत्रित करके
नृपतीन्	२.	राजाओं को	सर्व	७.	सम्पूर्ण
सर्वान्	१.	सभी	सम्भारान्	८.	सामग्री
कृत्वा	६.	करके	आहरस्व	१२.	अनुष्ठान कीजिये
च जगतीम्	४.	और संसार को	महा	१०.	महान्
वशे ।	५.	वश में	क्रतुम् ॥	११.	यज्ञ का

श्लोकार्थ—सभी राजाओं को जीतकर और संसार को वश में करके सम्पूर्ण सामग्री एकत्रित करके महान् यज्ञ का अनुष्ठान कीजिये ॥

दशमः श्लोकः

एते ते भ्रातरो राजन् लोकपालांशसम्भवाः ।
जितोऽस्म्यात्मवता तेऽहं दुर्जयो योऽकृतात्मभिः ॥१०॥

पदच्छेद— एते ते भ्रातरः राजन् लोकपालअंश सम्भवाः ।
जितः अस्मि आत्मवता ते अहम् दुर्जयः यः अकृत आत्मभिः ॥

शब्दार्थ—

एते ते	२.	ये आपके	जितः अस्मि	९.	वश में कर लिया है
भ्रातरः	३.	भाई	आत्मवता ते	७.	आत्मसंयमी आपने
राजन्	१.	हे राजन् !	अहम्	८.	मुझे
लोकपाल	४.	लोकपालों के	दुर्जयः	१२.	नहीं जीत सकते हैं
अंश	५.	अंश से	यः अकृत	१०.	जो अजित
सम्भवाः ।	६.	उत्पन्न हुये हैं	आत्मभिः ॥	११.	इन्द्रियों वाले हैं (वे मुझे)

श्लोकार्थ—हे राजन् ! ये आपके भाई लोकपालों के अंश से उत्पन्न हुये हैं । आत्मसंयमी आपने मुझे वश में कर लिया है । जो अजित इन्द्रियों वाले हैं वे मुझे नहीं जीत सकते हैं ॥

एकादशः श्लोकः

न कश्चिन्मत्परं लोके तेजसा यशसा श्रिया ।
विभूतिभिर्वाभिभवेद् देवोऽपि किमु पार्थिवः ॥११॥

पदच्छेद— न कश्चित् मत्परम् लोके तेजसा यशसा श्रिया ।
विभूतिभिः वा अभिभवेत् देवः अपि किमु पार्थिवः ॥

शब्दार्थ—

न	११.	नहीं कर सकता	विभूतिभिः	६.	ऐश्वर्य के द्वारा (फिर)
कश्चित्	८.	कोई			
मत्परम्	९.	मेरे भक्त का	वा	५.	अथवा
लोके	१.	इस संसार में	अभिभवेत्	१०.	तिरस्कार
तेजसा	२.	तेज	देवः अपि	७.	देवता भी
यशसा	३.	यश	किमु	१३.	बात ही क्या है
श्रिया ।	४.	लक्ष्मी	पार्थिवः ॥	१२.	राजा की तो

श्लोकार्थ— इस संसार में तेज, यश, लक्ष्मी अथवा ऐश्वर्य के द्वारा देवता भी मेरे भक्त का तिरस्कार नहीं कर सकता । फिर राजा की तो बात ही क्या है ॥

द्वादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—निशम्य भगवद्गीतं प्रीतः फुल्लमुखाम्बुजः ।
भ्रातॄन् दिग्विजयेऽयुङ्क्त विष्णुतेजोपबृंहितान् ॥१२॥

पदच्छेद— निशम्य भगवत् गीतम् प्रीतः फुल्ल मुख अम्बुजः ।
भ्रातॄन् दिग्विजये अयुङ्क्त विष्णु तेजः उपबृंहितान् ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	३.	सुनकर	भ्रातॄन्	९.	भाइयों को
भगवत्	१.	भगवान् की	दिग्विजये	१०.	दिग्विजय करने का
गीतम्	२.	बात को	अयुङ्क्त	११	आदेश दिया
प्रीतः	४.	आनन्दित एवम्	विष्णुतेजः	७.	श्रीकृष्ण के तेज से
फुल्ल	५.	खिले	उपबृंहितम् ॥	८.	बढ़े हुये
मुखअम्बुजः ।	६.	मुखकमल वाले (युधिष्ठिर ने)			

श्लोकार्थ—भगवान् की बात को सुनकर आनन्दित एवम् खिले मुखकमल वाले युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के तेज से बढ़े हुये भाइयों को दिग्विजय करने का आदेश दिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सहदेवं दक्षिणस्यामादिशत् सह सृञ्जयैः ।
दिशि प्रतीच्यां नकुलमुदीच्यां सव्यसाचिनम् ।
प्राच्यां वृकोदरं मत्स्यैः केकयैः सह मद्रकैः ॥१३॥

पदच्छेद— सहदेवम् दक्षिणस्याम् आदिशत् सह सृञ्जयैः ।
दिशि प्रतीच्यां नकुलम् उदीच्याम् सव्यसाचिनम् ।
प्राच्याम् वृकोदरम् मत्स्यैः केकयैः सह मद्रकैः ॥

शब्दार्थ—

सहदेवम्	१.	सहदेव को	उदीच्याम्	११.	उत्तर दिशा में और
दक्षिणस्याम्	४.	दक्षिण	सव्यसाचिनम् ।	९.	अर्जुन को
आदिशत्	१६.	जाने का आदेश दिया	प्राच्याम्	१५.	पूर्व दिशा में
सह	३.	साथ	वृकोदरम्	१२.	भीम को
सृञ्जयैः ।	२.	सृञ्जयवंशी वीरों के	मत्स्यैः	७.	मत्स्य देश के वीरों के साथ
दिशि	५.	दिशा में	केकयैः	१०.	केकय देश के वीरों के
प्रतीच्याम्	८.	पश्चिम में	सह	१४.	साथ
नकुलम्	६.	नकुल को	मद्रकैः ॥	१३.	मद्रदेश के वीरों के

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर ने सहदेव को सृञ्जयवंशी वीरों के साथ दक्षिण, दिशा में, नकुल को मत्स्य देश के वीरों के साथ पश्चिम में, अर्जुन को केकय देश के वीरों के साथ उत्तर दिशा में और भीम को मद्रदेश के वीरों के साथ पूर्व दिशा में जाने का आदेश दिया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

ते विजित्य नृपान् वीरा आजह्रुर्दिग्भ्य ओजसा ।
अजातशत्रवे भूरि द्रविणं नृप यक्ष्यते ॥१४॥

पदच्छेद— ते विजित्य नृपान् वीराः आजह्रुः दिग्भ्यः ओजसा ।
अजातशत्रवे भूरि द्रविणम् नृप यक्ष्यते ॥

शब्दार्थ—

ते	२.	उन	ओजसा ।	४.	पौरुष से
विजित्य	७.	जीत कर	अजातशत्रवे	१०.	राजा युधिष्ठिर को
नृपान्	६.	राजाओं को	भूरि	८.	बहुत सा
वीराः	३.	वीरों ने अपने	द्रविणम्	९.	धन लाकर
आजह्रुः	१२.	समर्पित किया	नृप	१.	हे राजन् !
दिग्भ्यः	५.	दिशाओं के	यक्ष्यते ॥	११	यज्ञ करने के लिये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन वीरों ने अपने पौरुष से दिशाओं के राजाओं को जीत कर बहुत सा धन लाकर राजा युधिष्ठिर को यज्ञ करने के लिये समर्पित किया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

श्रुत्वाजितं जरासन्धं नृपतेर्ध्यायतो हरिः ।
आहोपायं तमेवाद्य उद्धवो यमुवाच ह ॥१५॥

पदच्छेद— श्रुत्वा अजितम् जरासन्धम् नृपतेः ध्यायतः हरिः ।
आह उपायम् तम् एव अद्य उद्धवः यम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	३.	सुन कर	आह	१०.	बताया
अजितम्	२.	जीता न जाना	उपायम्	९.	उपाय
जरासन्धम्	१.	जरासन्ध का	तम् एव	८.	वही
नृपतेः	५.	राजा युधिष्ठिर से	अद्य	७.	आज
ध्यायतः	४.	चिन्ता करते हुये	उद्धवः यम्	११.	जो उद्धव ने
हरिः ।	६.	श्रीकृष्ण ने	उवाच ह ॥	१२.	कहा था

श्लोकार्थ—जरासन्ध का जीता न जाना सुन कर चिन्ता करते हुये राजा युधिष्ठिर से श्रीकृष्ण ने आज वही उपाय बताया, जो उद्धव ने कहा था ॥

षोडशः श्लोकः

भीमसेनोऽर्जुनः कृष्णो ब्रह्मलिङ्गधरास्त्रयः ।
जग्मुर्गिरिव्रजं तात बृहद्रथसुतो यतः ॥१६॥

पदच्छेद— भीमसेनः अर्जुनः कृष्णः ब्रह्म लिङ्गधराः त्रयः ।
जग्मुः गिरिव्रजम् तात बृहद्रथ सुतः यतः ॥

शब्दार्थ—

भीमसेनः	२.	भीमसेन	जग्मुः	९.	गये
अर्जुनः	३.	अर्जुन और	गिरिव्रजम्	८.	गिरिव्रज को
कृष्णः	४.	श्रीकृष्ण	तात	१.	हे परीक्षित् !
ब्रह्म	६.	ब्राह्मण का	बृहद्रथ	११.	बृहद्रथ
लिङ्गधराः	७.	वेष धारण करके	सुतः	१२.	पुत्र (जरासन्ध) रहता था
त्रयः ।	५.	ये तीनों	यतः ॥	१०.	जहाँ पर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! भीमसेन, अर्जुन और श्रीकृष्ण ये तीनों ब्राह्मण का वेष धारण करके गिरिव्रज को गये । जहाँ पर बृहद्रथ-पुत्र जरासन्ध रहता था ॥

सप्तदशः श्लोकः

ते गत्वाऽऽतिथ्यवेलायां गृहेषु गृहमेधिनम् ।
ब्रह्मण्यं समयाचेरन् राजन्या ब्रह्मलिङ्गिनः ॥१७॥

पदच्छेद— ते गत्वा आतिथ्य वेलायाम् गृहेषु गृहमेधिनम् ।
ब्रह्मण्यम् सम् अयाचेरन् राजन्याः ब्रह्मलिङ्गिनः ॥

शब्दार्थ—

ते	३.	उन	ब्रह्मण्यम्	१०.	ब्राह्मण भक्त (जरासन्ध से)
गत्वा	७.	जाकर	सम् अयाचेरन्	११.	याचना की
आतिथ्य	५.	अतिथि सत्कार के	राजन्याः	४.	क्षत्रियों ने
वेलायाम्	६.	समय	ब्रह्म	१.	ब्राह्मण
गृहेषु	८.	घर में	लिङ्गिनः ॥	२.	वेषधारी
गृहमेधिनम् ।	९.	गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले			

श्लोकार्थ—ब्राह्मण वेषधारी उन क्षत्रियों ने अतिथि सत्कार के समय जाकर घर में गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले ब्राह्मण भक्त जरासन्ध से याचना की ॥

अष्टादशः श्लोकः

राजन् विद्ध्यतिथीन् प्राप्तानर्थिनो दूरमागतान् ।
तन्नः प्रयच्छ भद्रं ते यद् वयं कामयामहे ॥१८॥

पदच्छेद— राजन् विद्धि अतिथीन् प्राप्तान् अर्थिनः दूरम् आगतान् ।
तत् नः प्रयच्छ भद्रम् ते यत् वयम् कामयामहे ॥

शब्दार्थ—

राजन्	१.	हे राजन् ! हम आपके	तत् नः	१३.	वह हमें
विद्धि	४.	समझिये (तथा)	प्रयच्छ	१४.	दीजिये
अतिथीन्	३.	(हमें) अतिथि	भद्रम	९.	कल्याण हो
प्राप्तान्	२.	पास आये हैं	ते	८.	आपका
अर्थिनः	७.	याचक हैं	यत्	१०.	जो
दूरम्	५.	बहुत दूर से	वयम्	११.	हम
आगतान् ।	६.	आये हुये हम	काम याम हे ॥	१२.	चाहते हैं

श्लोकार्थ—हे राजन् ! हम आपके पास आये हैं । हमें अतिथि समझिये तथा बहुत दूर से आये हुये हम याचक हैं । आपका कल्याण हो । जो हम चाहते हैं वह हमें दीजिये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

किं दुर्मर्षं तितिक्षूणां किमकार्यमसाधुभिः ।
किं न देयं वदान्यानां कः परः समदर्शिनाम् ॥१९॥

पदच्छेद— किम् दुर्मर्षम् तितिक्षूणाम् किम् अकार्यम् असाधुभिः ।
किम् न देयम् वदान्यानाम् कः परः समदर्शिनाम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	२.	क्या	किम् न	८.	क्या नहीं
दुर्मर्षम्	३.	असह्य है	देयम्	९.	दे सकते
तितिक्षूणाम्	१.	सहन शीलों के लिये	वदान्यानाम्	७.	उदार पुरुष
किम्	५.	क्या	कः	१२.	कौन है
अकार्यम्	६.	नहीं करने योग्य है	परः	११.	पराया
असाधुभिः ।	४.	दूसरों के लिये	समदर्शिनाम् ॥	१०.	समदर्शी पुरुषों के लिये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सहनशीलों के लिये क्या असह्य है । दूसरों के लिये कौन नहीं करने योग्य है । उदार पुरुष क्या नहीं दे सकते । समदर्शी पुरुषों के लिये पराया क्या है ॥

विंशः श्लोकः

योऽनित्येन शरीरेण सतां गेयं यशो ध्रुवम् ।
नाचिनोति स्वयं कल्पः स वाच्यः शोच्य एव सः ॥२०॥

पदच्छेद— यः अनित्येन शरीरेण सताम् गेयम् यशः ध्रुवम् ।
न आचिनोति स्वयम् कल्पः सः वाच्यः शोच्यः एव सः ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो व्यक्ति	न	१०.	नहीं
अनित्येन	४.	अनित्य	आचिनोति	११.	प्राप्त करता है
शरीरेण	५.	शरीर से	स्वयम्	२.	स्वयम्
सताम्	६.	सज्जनों के	कल्पः	३.	समर्थ होकर भी
गेयम्	७.	गान करने योग्य	सः	१२.	वह
यशः	९.	यश को	वाच्यः	१३.	निन्दनीय है (और)
ध्रुवम् ।	८.	अविनाशी	शोच्यः एव	१५.	शोक करने योग्य ही है
			सः ॥	१४.	वह

श्लोकार्थ—जो व्यक्ति स्वयम् समर्थ होकर भी अनित्य शरीर से सज्जनों के गान करने योग्य अविनाशी यश को नहीं प्राप्त करता है, वह निन्दनीय है और वह शोक करने योग्य है ॥

एकविंशः श्लोकः

हरिश्चन्द्रो रन्तिदेव उञ्छवृत्तिः शिविर्बलिः ।
व्याधः कपोतो बहवो ह्यध्रुवेण ध्रुवं गताः ॥२१॥

पदच्छेद— हरिश्चन्द्रः रन्तिदेवः उञ्छवृत्तिः शिविः बलिः ।
व्याधः कपोतः बहवःहि अध्रुवेण ध्रुवम् गताः ।।

शब्दार्थ—

हरिश्चन्द्रः	१. हरिश्चन्द्र	व्याजः	६. व्याध (और)
रन्तिदेवः	२. रन्तिदेव	कपोतः	७. कपोत आदि
उञ्छवृत्तिः	३. दाने बीन कर निर्वाह करने वाले	बहवःहि	८. बहुत से व्यक्ति
शिविः	४. शिवि	अध्रुवेण	९. नाशवान् (शरीर) से
बलिः ।	५. बलि	ध्रुवम्	१०. अविनाशी पद को
		गताः ।।	११. प्राप्त हो चुके हैं

श्लोकार्थ—हरिश्चन्द्र, रन्तिदेव, दाने बीन कर निर्वाह करने वाले शिवि, बलि, व्याध और कपोत आदि बहुत से व्यक्ति नाशवान् शरीर से अविनाशी पद को प्राप्त हो चुके हैं ।।

द्वाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—स्वरैराकृतिभिस्तांस्तु प्रकोष्ठैर्ज्याहतैरपि ।
राजन्यबन्धून् विज्ञाय दृष्टपूर्वानचिन्तयत् ॥२२॥

पदच्छेद— स्वरैः आकृतिभिः तान् तु प्रकोष्ठैः ज्याहतैः अपि ।
राजन्य बन्धून् विज्ञाय दृष्ट पूर्वान् अचिन्तयत् ।।

शब्दार्थ—

स्वरैः	१. आवाज	राजन्य	७. क्षत्रिय
आकृतिभिः	२. सूरत-शक्ल और	बन्धून्	८. बन्धु
तान् तु	६. उन्हें	विज्ञाय	९. जान कर
प्रकोष्ठैः	३. कलाइयों पर पड़े	दृष्ट	११. देखा है
ज्याहतैः	४. प्रत्यञ्चा की रगड़ के चिह्नों से	पूर्वान्	१०. पहले इन्हें कहीं पर
अपि ।	५. भी	अचिन्तयत् ।।	१२. ऐसा जरासन्ध सोचने लगा

श्लोकार्थ—आवाज, सूरत-शक्ल और कलाइयों पर पड़े प्रत्यञ्चा की रगड़ के चिह्नों से भी उन्हें क्षत्रिय बन्धु जान कर पहले इन्हें कहीं पर देखा है, ऐसा जरासन्ध सोचने लगा ।।

त्रयोविंशः श्लोकः

राजन्यबन्धवो ह्येते ब्रह्मलिङ्गानि बिभ्रति ।
ददामि भिक्षितं तेभ्य आत्मानमपि दुस्त्यजम् ॥२३॥

पदच्छेद— राजन्य बन्धवः हि एते ब्रह्म लिङ्गानि बिभ्रति ।
ददामि भिक्षितम् तेभ्यः आत्मानम् अपि दुस्त्यजम् ॥

शब्दार्थ—

राजन्य	५.	क्षत्रिय	ददामि	९.	दूंगा
बन्धवः	६.	बन्धु हैं (और)	भिक्षितम्	८.	भिक्षा
हि एते	१.	ये निश्चित ही	तेभ्यः	७.	इन्हें मैं
ब्रह्म	२.	ब्राह्मण के	आत्मानम्	११.	शरीर
लिङ्गानि	३.	चिह्नों को	अपि	१२.	भी (दे सकता हूँ)
बिभ्रति ।	४.	धारण किये हुये	दुस्त्यजम् ॥	१०.	कठिनाई से त्यागने योग्य

श्लोकार्थ—ये निश्चित ही ब्राह्मण के चिह्नों को धारण किये हुये क्षत्रिय बन्धु हैं। और इन्हें मैं कठिनाई से त्यागने योग्य शरीर भी दे सकता हूँ ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

बलेर्नु श्रूयते कीर्तिर्वितता दिक्ष्वकल्मषा ।
ऐश्वर्याद् भ्रंशितस्यापि विप्रव्याजेन विष्णुना ॥२४॥

पदच्छेद— बलेः नु श्रूयते कीर्तिः वितता दिक्षु अकल्मषा ।
ऐश्वर्यात् भ्रंशितस्य अपि विप्रव्याजेन विष्णुना ॥

शब्दार्थ—

बलेः नु	७.	बलि की	ऐश्वर्यात्	४.	ऐश्वर्य से
श्रूयते	१.	सुना जाता है कि	भ्रंशितस्य	५.	वञ्चित किये जाने पर
कीर्तिः	९.	कीर्ति	अपि	६.	भी
वितता	११.	फैली हुई है	विप्रव्याजेन	२.	ब्राह्मण के वेष में
दिक्षु	१०.	दिशाओं में	विष्णुना ॥	३.	विष्णु के द्वारा
अकल्मषा ।	८.	पवित्र			

श्लोकार्थ—सुना जाता है कि ब्राह्मण के वेष में विष्णु के द्वारा ऐश्वर्य से वञ्चित किये जाने पर भी बलि की पवित्र कीर्ति दिशाओं में फैली हुई है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

श्रियं जिहीर्षतेन्द्रस्य विष्णवे द्विजरूपिणे ।
जानन्नपि महीं प्रादाद् वार्यमाणोऽपि दैत्यराट् ॥२५॥

पदच्छेद— श्रियम् जिहीर्षते इन्द्रस्य विष्णवे द्विज रूपिणे ।
जानन् अपि महीम् प्रादात् वार्यमाणैः अपि दैत्यराट् ॥

शब्दार्थ—

श्रियम्	२. लक्ष्मी	जानन्	७. जानते हुये
जिहीर्षते	३. हरने के इच्छुक	अपि	८. भी (और)
इन्द्रस्य	१. इन्द्र के लिये	महीम्	११. पृथ्वी का
विष्णवे	६. विष्णु भगवान् को	प्रादात्	१२. दान कर दिया
द्विज	४. ब्राह्मण	वार्यमाणैः	९. रोके जाने पर
रूपिणे ।	५. रूपधारी	अपि दैत्यराट् ॥	१०. भी दैत्यराज (बलि) ने

श्लोकार्थ—इन्द्र के लिये लक्ष्मी हरने के इच्छुक ब्राह्मण रूपधारी विष्णु भगवान् को जानते हुये भी और रोके जाने पर दैत्यराज बलि ने पृथ्वी का दान कर दिया ॥

षड्विंशः श्लोकः

जीवता ब्राह्मणार्थाय को न्वर्थः क्षत्रबन्धुना ।
देहेन पतमानेन नेहता विपुलं यशः ॥२६॥

पदच्छेद— जीवता ब्राह्मण अर्थाय कः नु अर्थः क्षत्र बन्धुना ।
देहेन पतमानेन न ईहता विपुलम् यशः ॥

शब्दार्थ—

जीवता	३. जीने वाले (उस)	बन्धुना ।	५. बन्धु का
ब्राह्मण	१. ब्राह्मणों के	देहेन	९. शरीर
अर्थाय	२. लिये	पतमानेन	८. इस नाशवान्
कः नु	६. क्या	न ईहता	१२. इच्छा नहीं की
अर्थः	७. प्रयोजन है (जिसने)	विपुलम्	१०. विपुल
क्षत्र	४. क्षत्रिय	यशः ॥	११. यश कमाने की

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के लिये जीने वाले उस क्षत्रिय बन्धु का क्या प्रयोजन है। जिसने इस नाशवान् शरीर से विपुल यश कमाने की इच्छा नहीं की ?

सप्तविंशः श्लोकः

इत्युदारमतिः प्राह कृष्णार्जुनवृकोदरान् ।
हे विप्रा व्रियतां कामो ददाम्यात्मशिरोऽपि वः ॥२७॥

पदच्छेद— इति उदार मतिः प्राह कृष्ण अर्जुन वृकोदरान् ।
हे विप्राः व्रियताम् कामः ददामि आत्मशिरः अपि वः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	यह सोचकर	हे विप्राः	७.	हे ब्राह्मणो !
उदारमतिः	२.	उदार बुद्धि (जरासन्ध ने	व्रियताम्	९.	माँग लो
प्राह	६.	कहा	कामः	८.	मनचाही वस्तु
कृष्ण	३.	कृष्ण	ददामि	१२.	दे सकता हूँ
अर्जुन	४.	अर्जुन तथा	आत्म शिरः	१०.	मैं अपना सिर भी
वृकोदरान् ।	५.	भीम से	अपि वः ॥	११.	तुम्हें

श्लोकार्थ—यह सोचकर उदार बुद्धि जरासन्ध ने कृष्ण, अर्जुन तथा भीम से कहा—हे ब्राह्मणो ! मनचाही वस्तु माँग लो, मैं अपना सिर भी तुम्हें दे सकता हूँ ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—युद्धं नो देहि राजेन्द्र द्वन्द्वशो यदि मन्यसे ।
युद्धार्थिनो वयं प्राप्ता राजन्या नान्नकाङ्क्षिणः ॥२८॥

पदच्छेद— युद्धम् नः देहि राजेन्द्र द्वन्द्वशः यदि मन्यसे ।
युद्ध अर्थिनः वयम् प्राप्ताः राजन्याः न अन्नकाङ्क्षिणः ॥

शब्दार्थ—

युद्धम् नः	४.	हमें युद्ध	युद्ध अर्थिनः	९.	युद्ध की अभिलाषा से
देहि	६	दो	वयम्	७.	हम
राजेन्द्र	१.	हे राजेन्द्र !	प्राप्ताः	१०.	यहाँ पर आये हैं
द्वन्द्व	५.	द्वन्द्व	राजन्याः	८.	क्षत्रिय गण
यदि	२.	यदि आप	न अन्न	११.	अन्न की
मन्यसे ।	३.	मानें तो	काङ्क्षिणः ॥	१२.	इच्छा से नहीं आये हैं

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! यदि आप मानें तो हमें द्वन्द्व युद्ध दो । हम क्षत्रियगण युद्ध की अभिलाषा से यहाँ पर आये हैं । अन्न की इच्छा से नहीं आये हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

असौ वृकोदरः पार्थस्तस्य भ्रातार्जुनो ह्ययम् ।
अनयोर्मातुलेयं मां कृष्णं जानीहि ते रिपुम् ॥२९॥

पदच्छेद— असौ वृकोदरः पार्थः तस्य भ्राता अर्जुनः हि अयम् ।
अनयोः मातुलेयम् माम् कृष्णम् जानीहि ते रिपुम् ॥

शब्दार्थ—

असौ	१. ये	अनयोः	९. इन दोनों का
वृकोदरः	३. भीम हैं	मातुलेयम्	१०. ममेरा भाई
पार्थः	२. कुन्ती पुत्र	माम्	८. मुझे
तस्य	५. उनके	कृष्णम्	१३. कृष्ण
भ्राता	६. भाई	जानीहि	१४. जानो
अर्जुनः	७. अर्जुन हैं और	ते	११. अपना
हि अयम् ।	४. ये	रिपुम् ॥	१२. शत्रु

श्लोकार्थ—ये कुन्ती पुत्र भीम हैं, ये उनके छोटे भाई अर्जुन हैं और मुझे इन दोनों का ममेरा भाई अपना शत्रु कृष्ण जानो ॥

त्रिंशः श्लोकः

एवमावेदितो राजा जहासोच्चैः स्म मागधः ।
आह चामर्षितो मन्दा युद्धं तर्हि ददामि वः ॥३०॥

पदच्छेद— एवम् आवेदितः राजा जहास उच्चैःस्म मागधः ।
आह च अमर्षितः मन्दाः युद्धम् तर्हि ददामि वः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	आह च	८. बोला
आवेदितः	२. कहा जाने पर	अमर्षितः	७. चिढ़ कर
राजा	३. राजा	मन्दाः	९. अरे मूर्खों !
जहास	६. हंसने लगा (और)	युद्धम्	१०. यदि युद्ध चाहते हो
उच्चैःस्म	५. जोर से	तर्हि	११. तो मैं
मागधः ।	४. जरासन्ध	ददामि वः ॥	१२. तुम्हें दूंगा

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहा जाने पर राजा जरासन्ध जोर से हंसने लगा, और चिढ़ कर बोला—अरे मूर्खों ! यदि युद्ध चाहते हो तो मैं तुम्हें दूंगा ।

एकत्रिंशः श्लोकः

न त्वया भीरुणा योत्स्ये युधि विक्लवचेतसा ।
मथुरां स्वपुरीं त्यक्त्वा समुद्रं शरणं गतः ॥३१॥

पदच्छेद— न त्वया भीरुणा योत्स्ये युधि विक्लव चेतसः ।
मथुराम् स्वपुरीम् त्यक्त्वा समुद्रम् शरणम् गतः ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं	मथुराम्	९. मथुरा को
त्वया	४. तुझ	स्वपुरीम्	८. अपनी नगरी
भीरुणा	५. डरपोक के साथ	त्यक्त्वा	१०. त्याग कर
योत्स्ये	७. लड़ूंगा (तूने)	समुद्रम्	११. समुद्र की
युधि	१. युद्ध में	शरणम्	१२. शरण
विक्लव	२. घबराये हुये	गतः ॥	१३. ली है
चेतसा ।	३. चित्त वाले		

श्लोकार्थ—युद्ध में घबराये हुये चित्त वाले तुझ डरपोक के साथ नहीं लड़ूंगा । अपनी नगरी मथुरा को त्याग कर समुद्र की शरण ली है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

अयं तु वयसा तुल्यो नातिसत्त्वो न मे समः ।
अर्जुनो न भवेद् योद्धा भीमस्तुल्यबलो मम ॥३२॥

पदच्छेद— अयम् तु वयसा तुल्यः न अतिसत्त्वः न मे समः ।
अर्जुनः न भवेत् योद्धा भीमः तुल्य बलः मम ॥

शब्दार्थ—

अयम्	१. यह	अर्जुनः	२. अर्जुन
तु वयसा	३. तो अवस्था में (मेरे)	न	१०. नहीं
तुल्यः	४. बराबर हैं	भवेत्	११. होगा (हाँ)
न	६. नहीं है	योद्धा	९. योद्धा
अतिसत्त्वः	५. विशेष बलवान्	भीमः	१२. भीम
न	८. नहीं हैं (अतः)	तुल्य बलः	१४. समान बलवान् है
मे समः ।	७. मेरे समान भी	मम ॥	१३. मेरे

श्लोकार्थ— यह अर्जुन तो अवस्था में मेरे बराबर है विशेष बलवान् नहीं है, मेरे समान भी नहीं है, अतः योद्धा नहीं होगा । हाँ, भीम मेरे समान बलवान् है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा भीमसेनाय प्रादाय महतीं गदाम् ।
द्वितीयां स्वयमादाय निर्जगाम पुराद् बहिः ॥३३॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा भीमसेनाय प्रादाय महतीम् गदाम् ।
द्वितीयाम् स्वयम् आदाय निर्जगाम पुराद् बहिः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	यह	द्वितीयाम्	७.	दूसरी गदा
उक्त्वा	२.	कह कर	स्वयम्	८.	स्वयम्
भीमसेनाय	५.	भीमसेन को	आदाय	९.	लेकर
प्रादाय	६.	देकर (और)	निर्जगाम	१२.	निकल पड़ा
महतीम्	३.	एक बड़ी	पुराद्	१०.	नगर से
गदाम् ।	४.	गदा	बहिः ॥	११.	बाहर

श्लोकार्थ—यह कह कर भीमसेन को एक बड़ी गदा देकर और दूसरी गदा स्वयम् लेकर नगर से बाहर निकल पड़ा ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

ततः समे खले वीरौ संयुक्तावितरेतरौ ।
जघ्नतुर्वज्रकल्पाभ्यां गदाभ्यां रणदुर्मदौ ॥३४॥

पदच्छेद— ततः समे खले वीरौ संयुक्तौ इतरेतरौ ।
जघ्नतुः वज्र कल्पाभ्याम् गदाभ्याम् रण दुर्मदौ ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	जघ्नतुः	१२.	(एक दूसरे को) मारने लगे
समे	३.	समतल	वज्र	९.	वज्र के
खले	४.	अखाड़े में	कल्पाभ्याम्	१०.	समान
वीरौ	२.	दोनों वीर	गदाभ्याम्	११.	गदाओं से
संयुक्तौ	६.	भिड़ गये	रण	७.	युद्ध से
इतरेतरौ ।	५.	एक दूसरे से	दुर्मदौ ॥	८.	उन्मत्त दोनों

श्लोकार्थ—तदन्तर दोनों वीर समतल अखाड़े में एक दूसरे से भिड़ गये । तथा युद्ध से उन्मत्त दोनों वज्र के समान गदाओं से एक दूसरे को मारने लगे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

मण्डलानि विचित्राणि सव्यं दक्षिणमेव च ।
चरतोः शुशुभे युद्धं नटयोरिव रङ्गिणोः ॥३५॥

पदच्छेद— मण्डलानि विचित्राणि सव्यम् दक्षिणम् एव च ।
चरतोः शुशुभे युद्धम् नटयोः इव रङ्गिणोः ॥

शब्दार्थ—

मण्डलानि	६. पैंतरे बदलते हुए दोनों का	चरतोः	१२. अभिनय कर रहे हो
विचित्राणि	५. तरह-तरह के	शुशुभे	८. ऐसा शोभायमान हो रहा था
सव्यम्	१. बायें	युद्धम्	७. युद्ध
दक्षिणम्	३. दायें	नटयोः	१०. अभिनेता
एव	४. भी	इव	९. मानो दो
च ।	२. और	रङ्गिणोः ॥	११. रंग-मंच पर (अभिनय कर रहे हों)

श्लोकार्थ— बायें और दायें भी तरह-तरह के पैंतरे बदलते हुये दोनों का युद्ध ऐसा शोभायमान हो रहा था, मानों दो अभिनेता रंग-मंच पर अभिनय कर रहे हों ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

ततश्चटचटाशब्दो वज्रनिष्पेषसन्निभः ।
गदयोः क्षिप्तयो राजन् दन्तयोरिव दन्तिनोः ॥३६॥

पदच्छेद— ततः चटचटा शब्दः वज्र निष्पेष सन्निभः ।
गदयोः क्षिप्तयोः राजन् दन्तयोः इव दन्तिनोः ॥

शब्दार्थ—

ततः	२. तब	गदयोः	३. दोनों गदाओं के
चटचटा	११. चट-चट की	क्षिप्तयोः	४. चलाने से
शब्दः	१२. आवाज होने लगी	राजन्	१. हे राजन् !
वज्र	८. व्रज	दन्तयोः	६. दांतों की
निष्पेष	९. गिरने के	इव	७. तरह
सन्निभः ।	१२. समान	दन्तिनोः ॥	५. दो हाथियों के

श्लोकार्थ— हे राजन् ! तब दोनों गदाओं के चलाने से हाथियों के दांतों की तरह वज्र गिरने के समान चट-चट की आवाज होने लगी ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ते वै गदे भुजजवेन निपात्यमाने अन्योन्यतोऽसकटिपादकरोरुजत्रून् ।
चूर्णीबभूवतुरुपेत्य यथार्कशाखे संयुध्यतोर्द्विरदयोरिव दीप्तमन्व्योः ॥३७॥

पदच्छेद—ते वै गदे भुजजवेन निपात्यमाने अन्योन्यतः अंसकटिपाद करोरु जत्रू न् ।
चूर्णी बभूवतुः उपेत्य यथा अर्क शाखे संयुध्यतोः द्विरदयोः इव दीप्त मन्व्योः ॥

शब्दार्थ—

ते वै	१. वे दोनों	चूर्णी बभूवतुः	८. चकनाचूर होने लगीं
गदे	२. गदायें	उपेत्य	१४. टकराकर (चूर-चूर हो जाती हैं)
भुजजवेन	३. भुजाओं के वेग से	यथा	९. जैसे
निपात्यमाने	७. गिरायी जाने पर (वैसे ही)	अर्कशाखे	१३. आक की डालियाँ
अन्योन्यतः	४. एक दूसरे के	संयुध्यतोः	११. युद्ध में रत
अंसकटिपाद	५. कंधों कमरों पैरों	द्विरदयोः इव	१२. दो हाथियों के अंगों से
करोरुजत्रू न् ।	६. हाथों, जाँघों और हथेलियों पर	दीप्तमन्व्योः ॥	१०. क्रोध से तमतमाते हुये

श्लोकार्थ—वे दोनों गदायें भुजाओं के वेग से एक दूसरे के कंधों, कमरों, पैरों, हाथों, जाँघों और हथेलियों पर गिरायी जाने पर वैसे ही चकनाचूर होने लगीं जैसे क्रोध से तमतमाते हुये युद्ध मे रत दो हाथियों के अङ्गों से आक की डालियाँ टकराकर चूर-चूर हो जाती हैं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

इत्थं तयोः प्रहतयोर्गदयोर्नृवीरौ क्रुद्धौ स्वमुष्टिभिरयः स्पर्शैरपिष्टाम् ।
शब्दस्तयोः प्रहरतोरिभयोरिवासीन्निर्घातवज्रपरुषस्तलताडनोत्थः ॥३८॥

पदच्छेद—इत्थम् तयोः प्रहतयोः शब्दयोः नृवीरौ क्रुद्धौ स्वमुष्टिभिः अयः स्पर्शैः अपिष्टाम् ।
शब्दः तयोः प्रहरतोः इभयोः इव आसीत् निर्घात वज्रपरुषः तलताडन उत्थः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम् तयोः	१. इस प्रकार दोनों	शब्दः तयोः	१३. उन दोनों का शब्द
प्रहतयोः	३. टूट जाने पर	प्रहरतोः	९. एक दूसरे पर चोट करते हुये
गदयोः	२. गदाओं के	इभयोः इव	१०. दो हाथियों के समान
नृवीरौ	५. दोनों नर वीर	आसीत्	१६. था
क्रुद्धौ	४. क्रोध से भरे हुये	निर्घात	१४. बिजली की
स्वमुष्टिभिः	७. अपने घूसों से	वज्रपरुषः	१५. कड़कड़ाहट के समान कठोर
अयः स्पर्शैः	६. लोहे के समान	तलताडनः	११. घूसें मारने से
अपिष्टाम् ।	८. कुचलने की चेष्टा करने लगे	उत्थः ॥	१२. उत्पन्न

श्लोकार्थ—इस प्रकार गदाओं के टूट जाने पर क्रोध से भरे हुये दोनों नर वीर लोहे के समान अपने घूसों से कुचलने की चेष्टा करने लगे। एक दूसरे पर चोट करते हुये दो हाथियों के समान घूंसे मारने से उत्पन्न उन दोनों का शब्द बिजली की कड़कड़ाहट के समान कठोर था ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तयोरेवं प्रहरतोः समशिक्षाबलौजसोः ।
निर्विशेषमभूद् युद्धमक्षीणजवयोर्नृप ॥३९॥

पदच्छेद— तयोः एवम् प्रहरतोः समशिक्षा बल ओजसोः ।
निर्विशेषम् अभूत् युद्धम् अक्षीण जवयोः नृप ॥

शब्दार्थ—

तयोः	७. उन दोनों के	निर्विशेषम्	११. हार जीत से रहित
एवम्	८. इस प्रकार	अभूत्	१२. हुआ
प्रहरतोः	९. प्रहार करने पर	युद्धम्	१०. युद्ध
समशिक्षा	२. समान शिक्षा	अक्षीण	६. कमी न होने देने वाले
बल	३. बल और	जवयोः	५. वेग में
ओजसोः ।	४. उत्साह वाले (तथा)	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! समान शिक्षा बल और उत्साह वाले तथा वेग में कमी न होने देने वाले उन दोनों के इस प्रकार प्रहार करने पर युद्ध हार जीत से रहित हुआ ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

एवं तयोर्महाराज युध्यतोः सप्तविंशतिः ।
दिनानि निरगंस्तत्र सुहृद्वन्निशि तिष्ठतोः ॥४०॥

पदच्छेद— एवम् तयोः महाराज युध्यतोः सप्तविंशतिः ।
दिनानि निरगन् तत्र सुहृद्वत् निशि तिष्ठतोः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	दिनानि	१०. दिन
तयोः	७. उन दोनों को	निरगन् तत्र	९. वहाँ पर
महाराज	१. हे महाराज !	सुहृद्वत्	५. मित्र के समान
युध्यतोः	३. युद्ध करते हुये (और)	निशि	४. रात्रि में
सप्तविंशतिः ।	८. सत्ताईस	तिष्ठतोः ॥	६. रहते हुये

श्लोकार्थ—हे महाराज ! इस प्रकार युद्ध करते हुये और रात्रि में मित्र के समान रहते हुये उन दोनों को सत्ताईस दिन वहाँ पर बीत गये ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

एकदा मातुलेयं वै प्राह राजन् वृकोदरः ।
न शक्तोऽहं जरासन्धं निर्जेतुं युधि माधव ॥४१॥

पदच्छेद - एकदा मातुलेयम् वै प्राह राजन् वृकोदरः ।
न शक्तः अहम् जरासन्धम् निर्जेतुम् युधि माधव ॥

शब्दार्थ—

एकदा	२.	एक दिन	न शक्तः	१०.	नहीं सकता
मातुलेयम् वै	४.	ममेरे भाई से	अहम्	७.	मैं
प्राह	५.	कहा	जरासन्धम्	८.	जरासन्ध को
राजन्	१.	हे राजन् !	निर्जेतुम्	९.	जीत
वृकोदरः ।	३.	भीम ने	युधि माधव ॥	६.	हे श्रीकृष्ण ! युद्ध में

श्लोकार्थ—हे राजन् ! एक दिन भीम ने ममेरे भाई से कहा—हे श्रीकृष्ण ! युद्ध में मैं जरासन्ध को जीत नहीं सकता ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

शत्रोर्जन्ममृती विद्वान् जीवितं च जराकृतम् ।
पार्थमाप्याययन् स्वेन तेजसाचिन्तयद्धरिः ॥४२॥

पदच्छेद— शत्रोः जन्ममृती विद्वान् जीवितम् च जराकृतम् ।
पार्थम् आप्याययन् स्वेन तेजसा अचिन्तयत् हरिः ॥

शब्दार्थ—

शत्रोः	४.	शत्रु जरासन्ध के	पार्थम्	१०.	भीम को
जन्ममृती	५.	जन्म-मरण का	आप्याययन्	११.	शक्ति सम्पन्न कर दिया (और)
विद्वान्	७.	जानते थे (उन्होंने)	स्वेन	८.	अपने
जीवितम्	६.	रहस्य	तेजसा	९.	तेज से
च	३.	और	अचिन्तयत्	१२.	वध का उपाय सोचा
जराकृतम् ।	२.	जरा राक्षसी द्वारा प्राप्त	हरिः ॥	१.	भगवान् श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण जरा राक्षसी द्वारा प्राप्त शत्रु जरासन्ध के जीवन और जन्म-मरण का रहस्य जानते थे । उन्होंने अपने तेज से भीम को शक्ति सम्पन्न कर दिया और उसके वध का उपाय सोचा ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

सञ्चिन्त्यारिवधोपायं भीमस्यामोघदर्शनः ।
दर्शयामास विटपं पाटयन्निव संज्ञया ॥४३॥

पदच्छेद— सञ्चिन्त्य अरिवध उपायम् भीमस्य अमोघ दर्शनः ।
दर्शयामास विटपम् पाटयन् इव संज्ञया ॥

शब्दार्थ—

सञ्चिन्त्य	३.	सोचकर	दर्शयामास	१०.	ज्ञान करा दिया
अरिवधः	१.	शत्रु के वध का	विटपम्	५.	एक डाली को
उपायम्	२.	उपाय	पाटयन्	६.	चीरते हुये
भीमस्य	६.	भीम को	इव	७.	मानों
अमोघ दर्शनः ।	४.	निर्बाध ज्ञान वाले (श्रीकृष्ण ने)	संज्ञया ॥	८.	इशारे से

श्लोकार्थ—शत्रु के वध का उपाय सोचकर निर्बाध ज्ञान वाले श्रीकृष्ण ने एक डाली को चीरते हुये मानों इशारे से भीम को ज्ञान करा दिया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तद् विज्ञाय महासत्त्वो भीमः प्रहरतां वरः ।
गृहीत्वा पादयोः शत्रुं पातयामास भूतले ॥४४॥

पदच्छेद— तत् विज्ञाय महासत्त्वः भीमः प्रहरताम् वरः ।
गृहीत्वा पादयोः शत्रुम् पातयामास भूतले ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	यह	गृहीत्वा	६.	पकड़ कर
विज्ञाय	२.	जान कर	पादयोः	८.	पैरों को
महासत्त्वः	३.	महान् पराक्रमी और	शत्रुम्	७.	शत्रु के
भीमः	६.	भीम ने	पातयामास	११.	गिरा दिया
प्रहरताम्	४.	प्रहार करने वालों में	भूतले ॥	१०.	धरती पर
वरः ।	५.	श्रेष्ठ			

श्लोकार्थ—यह जानकर महान् पराक्रमी और प्रहार करने वालों में श्रेष्ठ भीम ने शत्रु के पैरों को पकड़ कर धरती पर गिरा दिया ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

एकं पादं पदाऽऽक्रम्य दोर्भ्यामन्यं प्रगृह्य सः ।
गुदतः पाटयामास शाखामिव महागजः ॥४५॥

पदच्छेद— एकम् पादम् पदा आक्रम्य दोर्भ्याम् अन्यम् प्रगृह्य सः ।
गुदतः पाटयामास शाखाम् इव महागजः ॥

शब्दार्थ—

एकम्	१.	उसके एक	प्रगृह्य सः ।	७.	पकड़ कर उन्होंने उसे
पादम्	२.	पैर को	गुदतः	८.	गुदा की ओर से ऐसे
पदा	३.	अपने पैर से	पाटयामास	९.	चीर डाला
आक्रम्य	४.	दबा कर	शाखाम्	१२.	डाली को चीर डालता है
दोर्भ्याम्	६.	दोनों हाथों से	इव	१०.	जैसे
अन्यम्	५.	दूसरे पैर को	महागजः ॥	११.	गजराज

श्लोकार्थ—उसके एक पैर को अपने पैर से दबा कर दूसरे पैर को दोनों हाथों से पकड़ कर उन्होंने उसे ऐसे चीर डाला, जैसे गजराज डाली को चीर डालता है ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

एकपादोरुवृषणकटिपृष्ठस्तनांसके ।
एकबाह्वक्षिभ्रूकर्णे शकले ददृशुः प्रजाः ॥४६॥

पदच्छेद— एक पादः उरु वृषण कटि पृष्ठ स्तन अंसके ।
एक बाहु अक्षि भ्रू कर्णे शकले ददृशुः प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

एक पाद	३.	एक-एक पैर	एक बाहु	९.	भुजा
ऊरु	४.	जाँघ	अक्षि	१०.	आँख
वृषण	५.	अण्ड कोश	भ्रू कर्णे	११.	भौंह और कान
कटि पृष्ठः	६.	कमर-पीठ	शकले	१२.	अलग-अलग हो गये हैं
स्तन	७.	स्तन और	ददृशुः	२.	देखा कि
अंस के ।	८.	कंधा	प्रजाः ॥	१.	लोगों ने

श्लोकार्थ—लोगों ने देखा कि एक-एक पैर, जाँघ, अण्डकोश, कमर, पीठ, स्तन और कंधा, भुजा, आँख, भौंह और कान अलग-अलग हो गये हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

हाहाकारो महानासीन्निहते मगधेश्वरे ।
पूजयामासतुर्भीमं परिरभ्य जयाच्युतौ ॥४७॥

पदच्छेद— हाहाकारः महान् आसीत् निहते मगधेश्वरे ।
पूजयामास तुः भीमम् परिरभ्य जयअच्युतौ ॥

शब्दार्थ—

हाहाकारः	४.	हाहाकार मच गया	पूजयामासतुः	८.	सत्कार किया
महानासीत्	३.	बड़ा भारी	भीमम्	६.	भीम का
निहते	२.	मार दिये जाने पर	परिरभ्य	७.	आलिंगन करके
मगधेश्वरे ।	१.	मगधराज के	जयअच्युतौ ॥	५.	अर्जुन और श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—मगधराज के मार दिये जाने पर बड़ा भारी हाहाकार मच गया । अर्जुन और श्रीकृष्ण ने भीम का आलिंगन करके सत्कार किया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

सहदेवं तत्तनयं भगवान् भूतभावनः ।
अभ्यषिञ्चदमेयात्मा मगधानां पतिं प्रभुः ।
मोचयामास राजन्यान् संरुद्धा मागधेन ये ॥४८॥

पदच्छेद— सहदेवम् तत् तनयम् भगवान् भूतभावनः ।
अभ्यषिञ्चत् अमेय आत्मा मगधानाम् पतिम् प्रभुः ।
मोचयामास राजन्यान् संरुद्धाः मागधेन ये ॥

शब्दार्थ—

सहदेवम्	६.	सहदेव का	पतिम्	८.	स्वामी के रूप में
तत् तनयम्	५.	उस जरासन्ध के पुत्र	प्रभुः ।	३.	सर्व समर्थ
भगवान्	४.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	मोचयामास	१४.	मुक्त कर दिया
भूतभावनः ।	१.	प्राणियों के (जीवन दाता)	राजन्यान्	१२.	राजाओं को
अभ्यषिञ्चत्	९.	अभिषेक कर दिया (और)	संरुद्धाः	१३.	बन्दी बना रखा था (उन्हें)
अमेय आत्मा	२.	सर्वशक्तिमान्	मागधेन	१०.	जरासन्ध ने
मगधानाम्	७.	मगध वासियों के	ये ।	११.	जिन

श्लोकार्थ—हे राजन् ! प्राणियों के जीवनदाता, सर्वशक्तिमान्, सर्व समर्थ भगवान् श्रीकृष्ण ने उस जरासन्ध के पुत्र सहदेव का मगध वासियों के स्वामी के रूप में अभिषेक कर दिया । और जरासन्ध ने जिन राजाओं को बन्दी बना रखा था, उन्हें मुक्त कर दिया ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे जरासन्धवधो नाम
द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥७२॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्रिसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अयुते द्वे शतान्यष्टौ लीलया युधि निर्जिताः ।
ते निर्गता गिरिद्रोण्यां मलिना मलवाससः ॥१॥

पदच्छेद— अयुते द्वे शतानि अष्टौ लीलया युधि निर्जिताः ।
ते निर्गताः गिरि द्रोण्याम् मलिना मलवाससः ॥

शब्दार्थ—

अयुते द्वे	४.	बीस हजार	ये	६.	वे राजा लोग
शतानि अष्टौ	५.	आठ सौ	निर्गताः	१०.	निकले
लीलया	२.	अनायास ही	गिरिद्रोण्याम्	७.	पहाड़ों की घाटी में से
युधि	१.	युद्ध में	मलिनाः	८.	मैले शरीर
निर्जिताः	३.	जीते गये	मलवाससः ॥	९.	मैले वस्त्र वाले होकर

श्लोकार्थ—युद्ध में अनायास ही जीते गये बीस हजार आठ सौ वे राजा लोग पहाड़ों की घाटी में से मैले शरीर, मैले वस्त्र वाले होकर निकले ॥

द्वितीयः श्लोकः

क्षुत्क्षामाः शुष्कवदनाः संरोधपरिकर्शिताः ।
ददृशुस्ते घनश्यामं पीतकौशेयवाससम् ॥२॥

पदच्छेद— क्षुत्क्षामाः शुष्क वदनाः संरोध परिकर्शिताः ।
ददृशुः ते घनश्यामम् पीत कौशेय वाससम् ॥

शब्दार्थ—

क्षुत्क्षामाः	१.	भूख से दुर्बल	ददृशुः ते	६.	उन राजा लोगों ने देखा
शुष्क	२.	सूखे	घनश्यामम्	७.	मेघ के समान श्याम वर्ण वाले
वदनाः	३.	मुँह और	पीत	८.	पीले
संरोध	४.	कैद रहने के कारण	कौशेय	९.	रेशमी
परिकर्शिताः ।	५.	खिन्न	वाससम् ॥	१०.	वस्त्र वाले श्रीकृष्ण को

श्लोकार्थ—भूख से दुर्बल, सूखे मुँह और कैद रहने के कारण खिन्न उन राजा लोगों ने मेघ के समान श्याम वर्ण वाले, पीले रेशमी वस्त्र वाले, श्रीकृष्ण को देखा ॥

तृतीयः श्लोकः

श्रीवत्साङ्कं चतुर्बाहुं पद्मगर्भारुणेक्षणम् ।
चारुप्रसन्नवदनं स्फुरन्मकरकुण्डलम् ॥३॥

पदच्छेद— श्रीवत्साङ्कम् चतुः बाहुम् पद्म गर्भ अरुण ईक्षणम् ।
चारु प्रसन्न वदनम् स्फुरन् मकर कुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

श्रीवत्साङ्कम्	१. श्रीवत्स चिह्न से युक्त	चारु	७.	सुन्दर और
चतुः बाहुम्	२. चार भुजा वाले	प्रसन्न	८.	प्रसन्न
पद्म	३. कमल के	वदनम्	९.	मुख वाले
गर्भ	४. भीतरी भाग के समान	स्फुरन्	१०.	चमकते हुये
अरुण	५. रतनारे	मकर	११.	मकराकृत
ईक्षणम् ।	६. नेत्र वाले	कुण्डलम् ॥	१२.	कुण्डल वाले (भगवान् श्रीकृष्ण को) देखने लगे

श्लोकार्थ—श्रीवत्स चिह्न से युक्त, चार भुजा वाले, कमल के भीतरी भाग के समान रतनारे नेत्रों वाले, सुन्दर और प्रसन्न मुख वाले चमकते हुये मकराकृत कुण्डल वाले उन भगवान् श्रीकृष्ण को देखने लगे ॥

चतुर्थः श्लोकः

पद्महस्तं गदाशङ्खरथाङ्गैरुपलक्षितम् ।
किरीटहारकटककटिसूत्राङ्गदाचितम् ॥४॥

पदच्छेद— पद्म हस्तम् गदा शङ्ख रथाङ्गैः उपलक्षितम् ।
किरीट हार कटक कटिसूत्र अङ्गद आचितम् ॥

शब्दार्थ—

पद्म	२. कमल	किरीट	७.	मुकुट
हस्तम्	१. हाथों में	हार	८.	हार
गदा	३. गदा	कटक	९.	कड़े
शङ्ख	४. शङ्ख और	कटिसूत्र	१०.	करधनी और
रथाङ्गैः	५. चक्र से	अङ्गद	११.	बाजूबन्द से
उपलक्षितम् ।	६. सुशोभित तथा	आचितम् ॥	१२.	युक्त (श्रीकृष्ण को देखने लगे)

श्लोकार्थ—हाथों में कमल, गदा, शङ्ख और चक्र से सुशोभित तथा मुकुट, हार, कड़े, करधनी और बाजूबन्द से युक्त श्रीकृष्ण को देखने लगे ॥

पञ्चमः श्लोकः

आजद्वरमणिग्रीवं निवीतं वनमालया ।
पिबन्त इव चक्षुर्भ्यां लिहन्त इव जिह्वया ॥५॥

पदच्छेद— आजद्वर मणिग्रीवम् निवीतम् वनमालया ।
पिबन्तः इव चक्षुर्भ्याम् लिहन्तः इव जिह्वया ॥

शब्दार्थ—

आजद्वर	१.	चमकते हुये उत्तम	इव	५.	मानों
मणिग्रीवम्	२.	गले में कौस्तुभ मणि वाले	चक्षुर्भ्याम्	६.	नेत्रों से
निवीतम्	३.	लटकती हुई	लिहन्तः	९.	चाटते हुये
वनमालया ।	४.	वनमाला वाले (श्रीकृष्ण) को	इव	१०.	से देखने लगे
पिबन्तः	७.	पीते हुये	जिह्वया ॥	८.	जीभ से

श्लोकार्थ—उन्होंने गले में चमकते हुये उत्तम कौस्तुभ वाले, लटकती हुई वनमाला वाले श्रीकृष्ण को मानों नेत्रों से पीते हुये जीभ से चाटते हुये से देखने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

जिघ्रन्त इव नासाभ्यां रम्भन्त इव बाहुभिः ।
प्रणेमुर्हतपाप्मानो मूर्धभिः पादयोर्हरेः ॥६॥

पदच्छेद— जिघ्रन्तः इव नासाभ्याम् रम्भन्तः इव बाहुभिः ।
प्रणेमुः हत पाप्मानः मूर्धभिः पादयोः हरेः ॥

शब्दार्थ—

जिघ्रन्तः	३.	सूंघते हुये	प्रणेमुः	१०.	प्रणाम किया
इव	२.	मानों	हत पाप्मानः	६.	निष्पाप राजाओं ने
नासाभ्याम्	१.	नासिका से	मूर्धभिः	९.	सिर रख कर
रम्भन्त इव	५.	आलिंगन करते हुये से	पादयोः	८.	चरणों में
बाहुभिः ।	४.	भुजाओं से	हरेः ॥	७.	श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—वे नासिका से मानों सूंघते हुये, भुजाओं से आलिंगन करते हुये से निष्पाप राजाओं ने श्रीकृष्ण के चरणों में सिर रख कर प्रणाम किया ॥

सप्तमः श्लोकः

कृष्णसन्दर्शनाह्लादध्वस्तसंरोधनक्लमाः ।
प्रशशंसुर्हृषीकेशं गीर्भिः प्राञ्जलयो नृपाः ॥७॥

पदच्छेद— कृष्ण सन्दर्शन आह्लाद ध्वस्त संरोधन क्लमाः ।
प्रशशंसुः हृषीकेशम् गीर्भिः प्राञ्जलयः नृपाः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण के	प्रशशंसुः	११.	स्तुति करने लगे
सन्दर्शन	२.	दर्शन से उत्पन्न	हृषीकेशम्	१०.	श्रीकृष्ण की
आह्लाद	३.	आनन्द से	गीर्भिः	९.	वाणी से
ध्वस्त	६.	विनष्ट करके	प्राञ्जलयः	८.	हाथ जोड़ कर
संरोधन	४.	बन्दीगृह में रहने के	नृपाः ॥	७.	राजा लोग
क्लमाः ।	५.	कष्ट को			

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के दर्शन से उत्पन्न आनन्द से बन्दीगृह के कष्ट को विनष्ट करके राजा लोग हाथ जोड़ कर वाणी से श्रीकृष्ण की स्तुति करने लगे ॥

अष्टमः श्लोकः

राजान ऊचुः—नमस्ते देवदेवेश प्रपन्नार्तिहराव्यय ।
प्रपन्नान् पाहि नः कृष्ण निर्विण्णान् घोरसंसृतेः ॥८॥

पदच्छेद— नमस्ते देवदेवेश प्रपन्न आर्तिहर अव्यय ।
प्रपन्नान् पाहि नः कृष्ण निर्विण्णाम् घोर संसृतेः ॥

शब्दार्थ—

नमस्ते	५.	आपको नमस्कार है	प्रपन्नान्	९.	शरणागतों की
देवदेवेश	४.	देव देवेश्वर !	पाहि	११.	रक्षा कीजिये
प्रपन्न	१.	शरणागतों के	नः	८.	हम
आर्तिहर	२.	दुःख दूर करने वाले	कृष्ण	६.	हे कृष्ण
अव्यय ।	३.	अविनाशी	निर्विण्णान्	७.	अत्यन्त दुःखी
			घोर संसृतेः ॥	१०.	घोर संसार चक्र से

श्लोकार्थ—शरणागतों के दुःख दूर करने वाले, अविनाशी हे देव देवेश्वर ! आपको नमस्कार है । हे कृष्ण ! अत्यन्त दुःखी हम शरणागतों की घोर संसार चक्र से रक्षा कीजिये ॥

नवमः श्लोकः

नैनं नाथान्वसूयामो मागधं मधुसूदन ।
अनुग्रहो यद् भवतो राज्ञां राज्यच्युतिर्विभो ॥९॥

पदच्छेद— न एनम् नाथ अन्वसूयामः मागधम् मधुसूदन ।
अनुग्रहः यद् भवतः राज्ञाम् राज्य च्युतिः विभो ॥

शब्दार्थ—

न	६. नहीं देखते हैं	अनुग्रहः	९. अनुग्रह है
एनम्	३. हम इस	यद्	१०. जो
नाथ	१. हे स्वामी !	भवतः	८. यह आपका
अन्वसूयामः	५. दोष	राज्ञाम्	११. हम राजा लोग
मागधम्	४. मगधराज (जरासन्ध को)	राज्यच्युतिः	१२. राज्य से अलग कर दिये गये
मधुसूदन ।	२. हे मधुसूदन !	विभो ॥	७. हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे स्वामी ! हे मधुसूदन ! हम इस मगधराज जरासन्ध का कोई भी दोष नहीं देखते हैं। हे प्रभो ! यह आपका अनुग्रह है, जो हम राजा लोग राज्य से अलग कर दिये गये हैं ॥

दशमः श्लोकः

राज्यैश्वर्यमदोन्नद्धो न श्रेयो विन्दते नृपः ।
त्वन्मायामोहितोऽनित्या मन्यते सम्पदोऽचलाः ॥१०॥

पदच्छेद— राज्य ऐश्वर्य मद उन्नद्धः न श्रेयः विन्दते नृपः ।
त्वत् माया मोहितः अनित्याः मन्यते सम्पदः अचलाः ॥

शब्दार्थ—

राज्य	१. राज्य	त्वत् माया	७. आपकी माया से
ऐश्वर्य	२. ऐश्वर्य के	मोहितः	८. मोहित वह
मद उन्नद्धः	३. मद से उन्मत्त	अनित्याः	९. अनित्य
न श्रेयः	५. कल्याण को नहीं	मन्यते	१२. मान बैठता है
विन्दते	६. पाता है	सम्पदः	१०. सम्पत्तियों को
नृपः ।	४. राजा	अचलाः ॥	११. अचल

श्लोकार्थ—राज्य, ऐश्वर्य के मद से उन्मत्त, राजा कल्याण को नहीं पाता है। आपकी माया से मोहित वह अनित्य सम्पत्तियों को अचल मान बैठता है ॥

एकादशः श्लोकः

मृगतृष्णां यथा बाला मन्यन्त उदकाशयम् ।
एवं वैकारिकीं मायामयुक्ता वस्तु चक्षते ॥११॥

पदच्छेद— मृगतृष्णाम् यथा बालाः मन्यन्ते उदकाशयम् ।
एवम् वैकारिकीम् मायाम् अयुक्ताः वस्तु चक्षते ॥

शब्दार्थ—

मृगतृष्णाम्	३.	मृगतृष्णा (के जल) को	एवम्	६.	वैसे ही
यथा	१.	जैसे	वैकारिकीम्	७.	परिवर्तनशील
बालाः	२.	बालक	मायाम्	८.	माया को
मन्यन्ते	५.	मान लेते हैं	अयुक्ताः	९.	असंयमी पुरुष
उदकाशयम् ।	४.	जलाशय	वस्तु	१०.	सत्य वस्तु
			चक्षते ॥	११.	मान लेते हैं

श्लोकार्थ—जैसे बालक मृग तृष्णा के जल को जलाशय मान लेते हैं, वैसे ही परिवर्तन शील माया को असंयमी पुरुष सत्य वस्तु मान लेते हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

वयं पुरा श्रीमदनष्टदृष्टयो जिगीषयास्या इतरेतरस्पृधः ।
घ्नन्तः प्रजाः स्वा अतिनिर्घृणाः प्रभो मृत्युं पुरस्त्वाविगणय्य दुर्मदाः ॥१२॥

पदच्छेद—वयम् पुरा श्रीमद नष्ट दृष्टयः जिगीषया अस्याः इतरेतर स्पृधः ।
घ्नन्तः प्रजाः स्वाः अतिनिर्घृणाः प्रभो मृत्युम् पुरः त्वा अविगणय्य दुर्मदाः ॥

शब्दार्थ—

वयम् पुरा	१.	हम लोग पहले	घ्नन्तः	११.	नाश करते हुये
श्रीमद	२.	धन-मद से	प्रजाः स्वाः	१०.	अपनी प्रजाओं का
नष्ट दृष्टयः	३.	अन्धे होकर	अतिनिर्घृणाः	९.	अत्यन्त दयाहीन होकर
जिगीषया	५	जीत लेने की इच्छा से	प्रभो	८.	हे प्रभो ! हम
अस्याः	४.	इस पृथ्वी को	मृत्युम् पुरः	१२.	मृत्यु रूप से सामने खड़े
इतरेतर	६.	एक दूसरे की	त्वा अविगणय्य	१३.	आपकी बिना परवाह किये
स्पृधः ।	७.	होड़ करते थे	दुर्मदाः ॥	१४.	मत वाले हो गये थे

श्लोकार्थ—हम लोग पहले धन-मद से अन्धे होकर इस पृथ्वी को जीत लेने की इच्छा से एक दूसरे की होड़ करते थे । हे प्रभो ! हम अत्यन्त दयाहीन होकर अपनी प्रजाओं का नाश करते हुये मृत्यु रूप से सामने खड़े आपकी बिना परवाह किये मतवाले हो गये थे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

त एव कृष्णाद्य गभीररंहसा दुरन्तवीर्येण विचालिताः श्रियः ।
कालेन तन्वा भवतोऽनुकम्पया विनष्टदर्पाश्चरणौ स्मराम ते ॥१३॥

पदच्छेद— त एव कृष्ण अद्य गभीर रंहसा दुरन्त वीर्येण विचालिताः श्रियः ।
कालेन तन्वा भवतः अनुकम्पया विनष्ट दर्पाः चरणौ स्मराम ते ॥

शब्दार्थ—

ते एव	२.	वे ही हम लोग	कालेन तन्वा	७.	सूक्ष्म काल के द्वारा
कृष्ण	१.	हे श्रीकृष्ण !	भवतः	१०.	आपकी
अद्य	३.	आज	अनुकम्पया	११.	कृपा से (हमारा)
गभीर	४.	गंभीर	विनष्ट	१३.	नष्ट हो गया हम
रंहसा	५.	वेग वाले	दर्पाः	१२.	अभिमान
दुरन्तवीर्येण	६.	प्रबल पराक्रम वाले (उस)	चरणौ	१५.	चरणों का
विचालिताः	९.	अलग कर दिये गये हैं	स्मराम	१६	स्मरण करते हैं
श्रियः ।	८.	धन से	ते ॥	१४.	आपके

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण ! वे ही हम लोग आज गंभीर वेग वाले, प्रबल पराक्रम वाले, सूक्ष्म काल के द्वारा धन से अलग कर दिये गये हैं। आपकी कृपा से हमारा अभिमान नष्ट हो गया है। हम आपके चरणों का स्मरण करते हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

अथो न राज्यं मृगतृष्णिरूपितं देहेन शश्वत् पतता रुजां भुवा ।
उपासितव्यं स्पृहयामहे विभो क्रियाफलं प्रेत्य च कर्णरोचनम् ॥१४॥

पदच्छेद— अथो न राज्यम् मृगतृष्णि रूपितम् देहेन शश्वत् पतता रुजाम् भुवा ।
उपासितव्यम् स्पृहयामहे विभो क्रियाफलम् प्रेत्य च कर्ण रोचनम् ॥

शब्दार्थ—

अथो न	२.	अब न तो हम	उपासितव्यम्	७.	भोगे जाने वाले
राज्यम्	१०.	राज्य की	स्पृहयामहे	११.	अभिलाषा करते हैं (और न)
मृगतृष्णि	८.	मृगतृष्णा के	विभो	१.	हे प्रभो !
रूपितम्	९.	समान	क्रियाफलम्	१६.	क्रिया फल ही चाहते हैं
देहेन	६.	शरीर से	प्रेत्य	१५.	मरने के बाद (मिलने वाला)
शश्वत्	३.	निरन्तर	च	१४.	तथा
पतता	४.	क्षीण होते हुये	कर्ण	१२.	सुनने में
रुजम् भुवा ।	५.	रोगों की जन्म भूमि (इस)	रोचनम् ॥	१३.	रोचक

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! अब न तो हम निरन्तर क्षीण होते हुये रोगों की जन्म भूमि इस शरीर से भोगे जाने वाले मृगतृष्णा के समान राज्य की अभिलाषा ही करते हैं। और न सुनने में रोचक तथा मरने के बाद मिलने वाला क्रिया फल ही चाहते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तं नः समादिशोपायं येन ते चरणाब्जयोः ।
स्मृतिर्यथा न विरमेदपि संसरतामिह ॥१५॥

पदच्छेद— तम् नः समादिश उपायम् येन ते चरण अब्जयोः ।
स्मृतिः यथा न विरमेत् अपि संसरताम् इह ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	वह	स्मृतिः	७.	स्मृति बनी रहे (और)
नः	१.	हमें	यथा	८.	जिससे
समादिश	४.	बताइये	न	१२.	न हो
उपायम्	३.	उपाय	विरमेत्	११.	विस्मृति
येन ते	५.	जिससे आपके	अपि	१०.	कभी भी
चरण अब्जयोः ।	६.	चरण कमलों की	संसरताम् इह ॥	९.	इस संसार चक्र में पड़े हुये हमें

श्लोकार्थ—हमें वह उपाय बताइये जिससे आपके चरण कमलों की स्मृति बनी रहे । और जिससे इस संसार चक्र में पड़े हुये हमें कभी भी विस्मृति न हो ॥

षोडशः श्लोकः

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१६॥

पदच्छेद— कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणत क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णाय	१.	हे कृष्ण !	प्रणत	५.	प्रणाम करने वालों के
वासुदेवाय	२.	वासुदेव	क्लेश	६.	दुःखों का
हरये	३.	हरि	नाशाय	७.	नाश करने वाले आप
परमात्मने ।	४.	परमात्मा	गोविन्दाय	८.	गोविन्द को
			नमो नमः ॥	९.	बार-बार नमस्कार है

श्लोकार्थ— हे श्रीकृष्ण ! वासुदेव, हरि, परमात्मा प्रणाम करने वालों के दुःखों का नाश करने वाले आप गोविन्द को बार-बार नमस्कार है ॥

सप्तदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—संस्तूयमानो भगवान् राजभिर्मुक्तबन्धनैः ।
तानाह करुणस्तात शरण्यः श्लक्ष्णया गिरा ॥१७॥

पदच्छेद— संस्तूयमानः भगवान् राजभिः मुक्त बन्धनैः ।
तान् आह करुणः तात शरण्यः श्लक्ष्णया गिरा ॥

शब्दार्थ—

संस्तूयमानः	५.	स्तुति किये जाने पर	तान् आह	१०.	उनसे कहा
भगवान्	८.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	करुणः	७.	दयालु
राजभिः	४.	राजाओं के द्वारा	तात	१.	हे परीक्षित् !
मुक्त	३.	मुक्त	शरण्यः	६.	शरणागत रक्षक
बन्धनैः ।	२.	कारागार से	श्लक्ष्णया गिरा ॥	९.	मधुर वाणी में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! कारागार से मुक्त राजाओं के द्वारा स्तुति किये जाने पर शरणागत रक्षक दयालु भगवान् श्रीकृष्ण ने मधुर वाणी में उनसे कहा ॥

अष्टादशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—अद्यप्रभृति वो भूपा मय्यात्मन्यखिलेश्वरे ।
सुदृढा जायते भक्तिर्बाढमाशंसितं तथा ॥१८॥

पदच्छेद— अद्य प्रभृति वः भूपाः मयि आत्मनि अखिलेश्वरे ।
सुदृढा जायते भक्तिः बाढम् आशंसितम् तथा ॥

शब्दार्थ—

अद्य	५.	आज से	सुदृढा	१०.	सुदृढ़
प्रभृतिः वः	६.	लेकर तुम लोगों की	जायते	१२.	उत्पन्न होगी
भूपाः	१.	हे राजाओं ! तुम लोगों ने	भक्तिः	११.	भक्ति
मयि	७.	मुझ	बाढम्	४.	निश्चय ही
आत्मनि	९.	आत्मा में	आशंसितम्	२.	जैसी इच्छा की है
अखिलेश्वरे ।	८.	सर्वेश्वर	तथा ॥	३.	उसी के अनुसार

श्लोकार्थ—हे राजाओ ! तुम लोगों ने जैसी इच्छा की है, उसी के अनुसार निश्चय ही आज से लेकर तुम लोगों की मुझ सर्वेश्वर आत्मा में सुदृढ़ भक्ति उत्पन्न होगी ॥

एकोनविंशः श्लोकः

दिष्ट्या व्यवसितं भूपा भवन्त ऋतभाषिणः ।
श्रियैश्वर्यमदोन्नाहं पश्य उन्मादकं नृणाम् ॥१९॥

पदच्छेद— दिष्टया व्यवसितम् भूपाः भवन्त ऋत भाषिणः ।
श्रिया ऐश्वर्य मद उन्नाहम् पश्य उन्मादकम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

दिष्टया	६. आनन्द की बात है	श्रिया	८. धन और
व्यवसितम्	५. निश्चय किया है वह	ऐश्वर्य	९. ऐश्वर्य के
भूपाः	१. राजाओं	मद उन्नाहम्	१०. मद की वृद्धि
भवन्तः	२. आप लोग	पश्य	७. देखो
ऋत	३. सत्य	उन्मादकम्	१२. उन्मत्त बनाने वाली है
भाषिणः ।	४. भाषी हैं (आपने जो)	नृणाम् ॥	११. मनुष्यों को

श्लोकार्थ—राजाओं ! आप लोग सत्यभाषी हैं। आपने जो निश्चय किया है यह आनन्द की बात है। देखो धन और ऐश्वर्य के मद की वृद्धि मनुष्यों को उन्मत्त बनाने वाली है, ॥

विंशः श्लोकः

हैहयो नहुषो वेनो रावणो नरकोऽपरे ।
श्रीमदाद् भ्रंशिताः स्थानाद् देवदैत्यनरेश्वराः ॥२०॥

पदच्छेद— हैहयः नहुषः वेनः रावणः नरकः अपरे ।
श्रीमदात् भ्रंशितः स्थानात् देव दैत्य नरेश्वरः ॥

शब्दार्थ—

हैहयः	१. हैहय	श्रीमदात्	१०. धन मद के कारण (अपने)
नहुषः	२. नहुष	भ्रंशितः	१२. गिर गये
वेनः	३. वेन	स्थानात्	११. स्थान से
रावणः	४. रावण	देव	७. देवता
नरकः	५. नरकासुर	दैत्य	८. दानव और
अपरे ।	६. आदि	नरेश्वरः ॥	९. नरपति

श्लोकार्थ—हे राजाओं ! हैहय, नहुष, वेन, रावण, नरकासुर आदि देवता, दानव और नरपति धन मद के कारण अपने स्थान से गिर गये ॥

एकविंशः श्लोकः

भवन्तः एतत् विज्ञाय देहाद्युत्पाद्यमन्तवत् ।
मां यजन्तोऽध्वरैर्युक्ताः प्रजा धर्मेण रक्षथ ॥२१॥

पदच्छेद— भवन्तः एतद् विज्ञाय देहादि उत्पाद्यम् अन्तवत् ।
माम् यजन्तः अध्वरैः युक्ताः प्रजाः धर्मेण रक्षथ ॥

शब्दार्थ—

भवन्तः	१.	आप लोग	माम्	८.	मेरा
एतद्	२.	यह	यजन्तः	९.	यजन करें और
विज्ञाय	३.	जान कर कि	अध्वरैः युक्ताः	७.	यज्ञों द्वारा योग में स्थित होकर
देहादि	४.	देह आदि	प्रजाः	१०.	प्रजाओं की
उत्पाद्यम्	५.	उत्पत्तिशील और	धर्मेण	११.	धर्म पूर्वक
अन्तवत् ।	६.	नाशवान् है	रक्षथ ॥	१२.	रक्षा करें

श्लोकार्थ—आप लोग यह जान कर कि देह आदि उत्पत्तिशील और नाशवान् है । यज्ञों द्वारा योग में स्थित होकर मेरा यजन करें । और प्रजाओं की धर्म पूर्वक रक्षा करें ॥

द्वाविंशः श्लोकः

सन्तन्वन्तः प्रजातन्तून् सुखं दुःखं भवाभवौ ।
प्राप्तं प्राप्तं च सेवन्तः मच्चिता विचरिष्यथ ॥२२॥

पदच्छेद— सन्तन्वन्तः प्रजातन्तून् सुखम् दुःखम् भवअभवौ ।
प्राप्तम् प्राप्तम् च सेवन्तः मत्चित्ताः विचरिष्यथ ॥

शब्दार्थ—

सन्तन्वन्त	२.	बढ़ाते हुये	प्राप्तम्	६.	लाभ-हानि जो कुछ भी
प्रजातन्तून्	१.	सन्तान परम्परा को	प्राप्तम् च	७.	प्राप्त हो उसका
सुखम्	३.	सुख	सेवन्तः	८.	सेवन करते हुये
दुःखम्	४.	दुःख	मत्चित्ताः	९.	मुझमें मन को लगा कर
भवअभवौ ।	५.	जन्म-मृत्यु	विचरिष्यथ ॥	१०.	विचरण करो

श्लोकार्थ—सन्तान-परम्परा को बढ़ाते हुये सुख-दुःख, जन्म-मृत्यु, लाभ-हानि जो कुछ भी प्राप्त हो उसका सेवन करते हुये मुझमें मन को लगा कर विचरण करो ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

उदासीनाश्च देहादावात्मारामा धृतव्रताः ।
मय्यावेश्य मनः सम्यङ् मामन्ते ब्रह्म यास्यथ ॥२३॥

पदच्छेद— उदासीनाः च देहादौ आत्मारामाः धृतव्रताः ।
मयि आवेश्य मनः सम्यक् माम् अन्ते ब्रह्म यास्यथ ॥

शब्दार्थ—

उदासीनाः	२.	आसक्ति न रखने वाले	मयि आवेश्य	९.	मुझमें लगा कर
च	४.	और	मनः	७.	तुम लोग मन को
देहादौ	१.	देह आदि में	सम्यक्	८.	भली-भाँति
आत्मारामाः	३.	आत्मा में रमण करने वाले	माम् अन्ते	१०.	अन्त में मुझ
धृत	५.	पालन करने वाले	ब्रह्म	११.	ब्रह्म स्वरूप को
व्रताः ।	६.	व्रतों का	यास्यथ ॥	१२.	प्राप्त हो जाओगे

श्लोकार्थ—देह आदि में आसक्ति न रखने वाले, आत्मा में रमण करने वाले और व्रतों का पालन करने वाले तुम लोग मन को भली-भाँति मुझमें लगा कर अन्त में मुझ ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त हो जाओगे ।

चतुर्विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— इत्यादिश्य नृपान् कृष्णो भगवान् भुवनेश्वरः ।
तेषां न्ययुङ्क्त पुरुषान् स्त्रियो मज्जनकर्मणि ॥२४॥

पदच्छेद— इति आदिश्य नृपान् कृष्णः भगवान् भुवनेश्वरः ।
तेषाम् न्ययुङ्क्त पुरुषान् स्त्रियः मज्जन कर्मणि ॥

शब्दार्थ—

इति	५.	यह	तेषाम्	७.	उन्हें
आदिश्य	६.	आदेश देकर	न्ययुङ्क्त	१२.	नियुक्त कर दिया
नृपान्	४.	राजाओं को	पुरुषान्	११.	पुरुषों को
कृष्णः	३.	श्रीकृष्ण ने	स्त्रियः	१०.	बहुत से स्त्री-
भगवान्	२.	भगवान्	मज्जन	८.	स्नानादि
भुवनेश्वरः ।	१.	भुवनपति	कर्मणि ॥	९.	कराने के लिये

श्लोकार्थ—भुवनपति भगवान् श्रीकृष्ण ने राजाओं को यह आदेश देकर उन्हें स्नानादि कराने के लिये बहुत से स्त्री-पुरुषों को नियुक्त कर दिया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

सपर्यां कारयामास सहदेवेन भारत ।
नरदेवोचितैर्वस्त्रैर्भूषणैः स्रग्विलेपनैः ॥२५॥

पदच्छेद— सपर्याम् कारयामास सहदेवेन भारत ।
नरदेव उचितैः वस्त्रैः भूषणैः स्रग् विलेपनैः ॥

शब्दार्थ—

सपर्याम्	९.	सम्मान	उचितैः	४.	चित
कारयामास	१०.	करवाया	वस्त्रैः	५.	वस्त्र
सहदेवेन	२.	(जरासन्ध के पुत्र) सहदेव से	भूषणैः	६.	आभूषण
भारत ।	१.	हे परीक्षित् !	स्रग्	७.	माला
नरदेव	३.	उन्हें राजो	विलेपनैः ॥	८.	चन्दनादि दिलवाकर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जरासन्ध के पुत्र सहदेव से उन्हें राजोचित वस्त्र, आभूषण, माला, चन्दनादि दिलवाकर सम्मान करवाया ॥

षड्विंशः श्लोकः

भोजयित्वा वरान्नेन सुस्नातान् समलङ्कृतान् ।
भोगैश्च विविधैर्युक्तांस्ताम्बूलाद्यैर्नृपोचितैः ॥२६॥

पदच्छेद— भोजयित्वा वरान्नेन सुस्नातान् समलङ्कृतान् ।
भोगैः च विविधैः युक्तान् ताम्बूल आद्यैः नृपउचितैः ॥

शब्दार्थ—

भोजयित्वा	४.	भोजन करवाया और	विविधैः	७.	विविध प्रकार के
वरान्नेन	३.	उत्तम पदार्थों का	युक्तान्	१०.	दिलवाये
सुस्नातान्	१.	अच्छी तरह स्नान करके	ताम्बूल	५.	पान
समलङ्कृतान् ।	२.	सुसज्जित हो जाने पर	आद्यैः	६.	आदि
भोगैः च	९.	भोग	नृपउचितैः ॥	८.	राजोचित

श्लोकार्थ— अच्छी तरह स्नान करके उत्तम पदार्थों का भोजन करवाया और पान, आदि विविध प्रकार के राजोचित भोग दिलवाये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

ते पूजिता मुकुन्देन राजानो मृष्टकुण्डलाः ।
विरेजुर्मोचिताः क्लेशात् प्रावृडन्ते यथा ग्रहाः ॥२७॥

पदच्छेद— ते पूजिताः मुकुन्देन राजानः मृष्ट कुण्डलाः ।
विरेजुः मोचिताः क्लेशात् प्रावृड्अन्ते यथा ग्रहाः ॥

शब्दार्थ—

ते	३.	वे	विरेजुः	९.	इस प्रकार शोभित हुये
पूजिताः	२.	सम्मानित	मोचिताः	६.	छुटकारा पाकर
मुकुन्देन	१.	श्रीकृष्ण के द्वारा	क्लेशात्	५.	दुःखों से
राजानः	४.	राजा लोग	प्रावृड्अन्ते	११.	वर्षा-ऋतु के अन्त में
मृष्ट	७.	सुन्दर-सुन्दर	यथा	१०.	जैसे
कुण्डलाः ।	८.	कुण्डल पहन कर	ग्रहाः ॥	१२.	तारे (हो जाते हैं)

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के द्वारा सम्मानित वे राजा लोग दुःखों से छुटकारा पाकर सुन्दर-सुन्दर कुण्डल पहन कर इस प्रकार शोभित हुये जैसे वर्षा ऋतु के अन्त में तारे हो जाते हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

रथान् सदश्वानारोप्य मणिकाञ्चनभूषितान् ।
प्रीणय्य सूनृतैर्वाक्यैः स्वदेशान् प्रत्ययापयत् ॥२८॥

पदच्छेद— रथान् सदश्वान् आरोप्य मणिकाञ्चन भूषितान् ।
प्रीणय्य सूनृतैः वाक्यैः स्वदेशान् प्रत्ययापयत् ॥

शब्दार्थ—

रथान्	४.	रथों पर	प्रीणय्य	८.	तृप्त करके
सदश्वान्	३.	श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त	सूनृतैः	६.	मधुर
आरोप्य	५.	बैठा कर	वाक्यैः	७.	वाणी से
मणिकाञ्चन	१.	सोने और मणियों से	स्वदेशान्	९.	अपने-अपने देशों को
भूषितान् ।	२.	भूषित एवं	प्रत्यापयत् ॥	१०.	भेज दिया

श्लोकार्थ—सोने और मणियों से भूषित एवम् श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथों पर बैठा कर मधुरवाणी से तृप्त करके अपने-अपने देशों को भेज दिया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

त एवं मोचिताः कृच्छ्रात् कृष्णेन सुमहात्मना ।
ययुस्तमेव ध्यायन्तः कृतानि च जगत्पतेः ॥२९॥

पदच्छेद— त एवम् मोचिताः कृच्छ्रात् कृष्णेन सुमहात्मना ।
ययुः तम् एव ध्यायन्तः कृतानि च जगत्पतेः ॥

शब्दार्थ—

त एवम्	३. उन्हें इस प्रकार	तम्	७. उन
मोचिताः	५. मुक्त किया	एव	८. ही
कृच्छ्रात्	४. कष्ट से	ध्यायन्तः	११. ध्यान करते हुये
कृष्णेन	२. श्रीकृष्ण ने	कृतानि	१०. लीलाओं का
सुमहात्मना ।	१. महात्मा	च	६. और वे
ययुः	१२. चले गये	जगत्पतेः ॥	९. जगत्पति भगवान् की

श्लोकार्थ—महात्मा श्रीकृष्ण ने उन्हें इस प्रकार कष्ट से मुक्त किया। और वे उन ही जगत्पति भगवान् की लीलाओं का ध्यान करते हुये चले गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

जगदुः प्रकृतिभ्यस्ते महापुरुषचेष्टितम् ।
यथान्वशासद् भगवांस्तथा चक्रुरतन्द्रिताः ॥३०॥

पदच्छेद— जगदुः प्रकृतिभ्यः ते महापुरुष चेष्टितम् ।
यथा अनुअशासत् भगवान् तथा चक्रुः अतन्द्रिताः ॥

शब्दार्थ—

जगदुः	५. कह सुनायी (और)	यथा	७. जैसा
प्रकृतिभ्यः	२. प्रजाओं से	अनुअशासत्	८. बतलाया था
ते	१. उन लोगों ने	भगवान्	६. भगवान् ने
महापुरुष	३. परम पुरुष (श्रीकृष्ण की)	तथा चक्रुः	१०. वैसा ही जीवन बिताने लगे
चेष्टितम् ।	४. लीला	अतन्द्रिताः ॥	९. सावधान होकर

श्लोकार्थ—उन लोगों ने प्रजाओं से परम पुरुष श्रीकृष्ण की लीला कह सुनायी और भगवान् ने जैसा बतलाया था, वे सावधान होकर वैसा ही जीवन बिताने लगे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

जरासन्धं घातयित्वा भीमसेनेन केशवः ।
पार्थाभ्यां संयुतः प्रायात् सहदेवेन पूजितः ॥३१॥

पदच्छेद— जरासन्धम् घातयित्वा भीमसेनेन केशवः ।
पार्थाभ्याम् संयुतः प्रायात् सहदेवेन पूजितः ॥

शब्दार्थ—

जरासन्धम्	३.	जरासन्ध का	पार्थाभ्याम्	७.	अर्जुन और भीम के
घातयित्वा	४.	वध करवा कर	संयुतः	८.	साथ
भीमसेनेन	२.	भीमसेन के द्वारा	प्रायात्	९.	चल दिये
केशवः ।	१.	श्रीकृष्ण	सहदेवेन	५.	सहदेव से
			पूजितः ॥	६.	पूजित होकर

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण भीमसेन के द्वारा जरासन्ध का बध करवा कर सहदेव से पूजित होकर अर्जुन और भीम के साथ चल दिये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

गत्वा ते खाण्डवप्रस्थं शङ्खान् दध्मुर्जितारयः ।
हर्षयन्तः स्वसुहृदो दुर्हृदां चासुखावहाः ॥३२॥

पदच्छेद— गत्वा ते खाण्डव प्रस्थम् शङ्खान् दध्मुः जितारयः ।
हर्षयन्तः स्वसुहृदः दुर्हृदाम् च असुखावहाः ॥

शब्दार्थ—

गत्वा	४.	पहुँच कर	हर्षयन्तः	६.	हर्ष
ते	२.	उन लोगों ने	स्वसुहृदाम्	५.	अपने मित्रों को
खाण्डव प्रस्थम्	३.	खाण्डव प्रस्थ	दुर्हृदाम्	८.	शत्रुओं को
शङ्खान्	१०.	शङ्ख	च	७.	तथा
दध्मुः	११.	बजाये	असुखावहाः ॥	९.	दुःख पहुँचाते हुये
जितारयः ।	१.	शत्रुविजयी			

श्लोकार्थ—शत्रुविजयी उन लोगों ने खाण्डव प्रस्थ पहुँचकर अपने मित्रों को हर्ष तथा शत्रुओं को दुःख पहुँचाते हुये शङ्ख बजाये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा प्रीतमनस इन्द्रप्रस्थनिवासिनः ।
मेनिरे मागधं शान्तं राजा चाप्तमनोरथः ॥३३॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा प्रीत मनसः इन्द्रप्रस्थ निवासिनः ।
मेनिरे मागधम् शान्तम् राजा च आप्त मनोरथः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	वह	मेनिरे	७.	मानने लगे कि
श्रुत्वा	२.	सुनकर	मागधम्	८.	जरासन्ध
प्रीत	५.	प्रसन्न	शान्तम्	९.	मर गया तथा
मनसः	६.	चित्त हो गये (और)	राजा च	१०.	राजा युधिष्ठिर का
इन्द्रप्रस्थ	३.	इन्द्र प्रस्थ के	आप्त	१२.	पूरा हो गया
निवासिनः ।	४.	निवासी	मनोरथः ॥	११.	मनोरथ

श्लोकार्थ—वह सुनकर इन्द्रप्रस्थ के निवासी प्रसन्न चित्त हो गये और मानने लगे कि जरासन्ध मर गया । तथा राजा युधिष्ठिर का मनोरथ पूरा हो गया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अभिवन्द्याथ राजानं भीमार्जुनजनार्दनाः ।
सर्वमाश्रावयाञ्चक्रुरात्मना यदनुष्ठितम् ॥३४॥

पदच्छेद— अभिवन्द्य अथ राजानम् भीम अर्जुन जनार्दनाः ।
सर्वम् आश्रावयाञ्चक्रुः आत्मना यत् अनुष्ठितम् ॥

शब्दार्थ—

अभिवन्द्य	६.	वन्दना करके	सर्वम्	७.	सब कुछ
अथ	१.	तदनन्तर	श्रावयाञ्चक्रुः	८.	कह सुनाया
राजानम्	५.	राजा की	आत्मना	१०.	स्वयम् (उन्हें)
भीम	२.	भीम	यत्	९.	जो
अर्जुन	३.	अर्जुन और	आनुष्ठितम् ॥	११.	जरासन्ध वध के लिये करना पड़ा था
जनार्दनाः ।	४.	श्रीकृष्ण ने			

श्लोकार्थ—तदन्तर भीम, अर्जुन और श्रीकृष्ण ने राजा की वन्दना करके सब कुछ कह सुनाया जो स्वयम् उन्हें जरासन्ध वध के लिये करना पड़ा था ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

निशम्य धर्मराजस्तत् केशवेनानुकम्पितम् ।
आनन्दाश्रुकलां मुञ्चन् प्रेम्णा नोवाच किञ्चन ॥३५॥

पदच्छेद— निशम्य धर्मराजः तत् केशवेन अनुकम्पितम् ।
आनन्द अश्रुकलाम् मुञ्चन् प्रेम्णा न उवाच किञ्चन ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	४.	सुनकर	आनन्द	६.	आनन्द के
धर्मराजः	५.	धर्मराज युधिष्ठिर	अश्रुकलाम्	७.	आँसू
तत्	३.	उस बात को	मुञ्चन्	८.	बहाने लगे और
केशवेन	१.	श्रीकृष्ण के	प्रेम्णा	१०.	प्रेम के कारण (उनसे)
अनुकम्पितम् ।	२.	अनुग्रह की	न उवाच	१२.	बोल न सके
			किञ्चन ॥	११.	कुछ

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के अनुग्रह की उस बात को सुनकर धर्मराज युधिष्ठिर आनन्द के आँसू बहाने लगे । और प्रेम के कारण कुछ बोल न सके ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे कृष्णाद्यागमने
त्रिसप्ततितमः अध्यायः ॥७३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

चतुःसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं युधिष्ठिरो राजा जरासन्धवधं विभोः ।
कृष्णस्य चानुभावं तं श्रुत्वा प्रीतस्तमब्रवीत् ॥१॥

पदच्छेद— एवम् युधिष्ठिरः राजा जरासन्ध वधम् विभोः ।
कृष्णस्य च अनुभावम् तम् श्रुत्वा प्रीतः तम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार	कृष्णस्य	८.	श्रीकृष्ण की
युधिष्ठिरः	२.	युधिष्ठिर	च	६.	और
राजा	१.	राजा	अनुभावम् तम्	९.	उस महिमा को
जरासन्ध	४.	जरासन्ध का	श्रुत्वा	१०.	सुनकर
वधम्	५.	वध	प्रीतः	११.	प्रसन्न हुये और
विभोः ।	७.	परमात्मा	तम् अब्रवीत् ॥	१२.	उनसे बोले

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर इस प्रकार जरासन्ध का वध और परमात्मा श्रीकृष्ण की महिमा को सुनकर प्रसन्न हुये और उनसे बोले ॥

द्वितीयः श्लोकः

युधिष्ठिर उवाच—ये स्युस्त्रैलोक्यगुरवः सर्वे लोकमहेश्वराः ।
वहन्ति दुर्लभं लब्ध्वा दीनानामीशमानिनाम् ॥२॥

पदच्छेद— ये स्युः त्रैलोक्य गुरवः सर्वे लोक महेश्वराः ।
वहन्ति दुर्लभम् लब्ध्वा शिरसा एव अनुशासनम् ॥

शब्दार्थ—

ये	१.	जो	वहन्ति	१२.	धारण करते हैं
स्युः	४.	है (वे) तथा	दुर्लभम्	७.	दुर्लभ
त्रैलोक्य	२.	तीनों लोक के	लब्ध्वा	९.	पाकर ही
गुरवः	३.	गुरु	शिरसा	१०.	सिर
सर्वे लोक	५.	सभी लोक	एव	११.	पर
महेश्वराः ।	६.	पाल (आपके)	अनुशासनम् ॥	८.	अनुशासन को

श्लोकार्थ—जो तीनों लोक के गुरु ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं, वे तथा सभी लोकपाल आपके दुर्लभ अनुशासन को पाकर ही सिर पर धारण करते हैं ॥

तृतीयः श्लोकः

स भवानरविन्दाक्षो दीनानामीशमानिनाम् ।
धत्तेऽनुशासनं भूमंस्तदत्यन्तविडम्बनम् ॥३॥

पदच्छेद— सः भवान् अरविन्दाक्षः दीनानाम् ईश मानिनाम् ।
धत्ते अनुशासनम् भूमन् तत् अत्यन्त विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

सः	३. वे	धत्ते	९. स्वीकार करते हैं
भवान्	४. आप	अनुशासनम्	८. आज्ञा
अरविन्दाक्षः	२. कमल लोचन	भूमन्	१. हे अनन्त !
दीनानाम्	७. हम दीनों की	तत्	१०. यह
ईश	५. अपने को शासक	अत्यन्त	११. अत्यन्त
मानिनाम् ।	६. मानने वाले	विडम्बनम् ॥	१२. विडम्बना मात्र है

श्लोकार्थ—हे अनन्त ! वे कमल लोचन आप अपने को शासक मानने वाले हम दीनों की आज्ञा को स्वीकार करते हैं, यह अत्यन्त विडम्बना मात्र है ॥

चतुर्थः श्लोकः

न ह्येकस्याद्वितीयस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ।
कर्मभिर्वर्धते तेजो ह्रसते च यथा रवेः ॥४॥

पदच्छेद— न हि एकस्य अद्वितीयस्य ब्रह्मणः परमात्मनः ।
कर्मभिः वर्धते तेजः ह्रसते च यथा रवेः ॥

शब्दार्थ—

न हि	७. न तो	कर्मभिः	६. कर्मों से
एकस्य	१. एक	वर्धते	८. बढ़ता है
अद्वितीयस्य	२. अद्वितीय	तेजः	५. तेज
ब्रह्मणः	३. पर ब्रह्म	ह्रसते च	९. और न घटता है
परमात्मनः ।	४. परमात्मा का	यथा रवेः ॥	१०. जैसे सूर्य का तेज (कम ज्यादा नहीं होता है)

श्लोकार्थ—एक अद्वितीय पर ब्रह्म परमात्मा का तेज कर्मों से न तो बढ़ता है और न घटता है । जैसे सूर्य का तेज कम ज्यादा नहीं होता है ॥

पञ्चमः श्लोकः

न वै तेऽजित भक्तानां ममाहमिति माधव ।
त्वं तवेति च नानाधीः पशूनामिव वैकृता ॥५॥

पदच्छेद — न वै ते अजित भक्तानाम् ममअहम् इति माधव ।
त्वम् तव इति च नानाधीः पशूनाम् इव वैकृता ॥

शब्दार्थ—

न वै	१२.	नहीं होती है	त्वम्	५.	यह तुम हो
ते	१०.	आपके	तव इति	४.	यह तुम्हारा है और
अजित	१.	किसी से जीते न जाने वाले	च	६.	ऐसी
भक्तानाम्	११.	भक्तों की	नानाधीः	६.	भेद बुद्धि
ममअहम्	३.	मैं हूँ और यह मेरा है	पशूनाम्	७.	पशुओं की
इति माधव ।	२.	हे माधव ! यह	इव वैकृता ॥	८.	जैसी विकार युक्त

श्लोकार्थ—किसी से जीते न जाने वाले हे माधव ! यह मैं हूँ और यह मेरा है, यह तुम्हारा है और यह तुम हो, ऐसी पशुओं की जैसी विकार युक्त भेद बुद्धि आपके भक्तों की नहीं होती है ॥

षष्ठः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इत्युक्त्वा यज्ञिये काले वव्रे युक्तान् स ऋत्विजः ।
कृष्णानुमोदितः पार्थो ब्राह्मणान् ब्रह्मवादिनः ॥६॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा यज्ञिये काले वव्रे युक्तान् सः ऋत्विजः ।
कृष्ण अनुमोदितः पार्थः ब्राह्मणान् ब्रह्म वादिनः ॥

शब्दार्थ—

इति उक्त्वा	१.	यह कह कर	कृष्ण	६.	श्रीकृष्ण की
यज्ञिये	२.	यज्ञ के	अनुमोदितः	७.	अनुमति से
काले	३.	समय	पार्थ	५.	युधिष्ठिर ने
वव्रे	१३.	वरण किया	ब्राह्मणान्	११.	ब्राह्मणों का
युक्तान्	१०.	निपुण	ब्रह्म	८.	वेद
सः	४.	उन	वादिनः ।	६.	वादी एवम्
ऋत्विजः ।	१२.	ऋत्विजों के रूप में			

श्लोकार्थ—यह कह कर यज्ञ के समय उन युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण की अनुमति से वेदवादी एवम् निपुण ब्राह्मणों का ऋत्विजों के रूप में वरण किया ॥

सप्तमः श्लोकः

द्वैपायनो भरद्वाजः सुमन्तुर्गौतमोऽसितः ।
वसिष्ठश्च्यवनः कण्वो मैत्रेयः कवषस्त्रितः ॥७॥

पदच्छेद— द्वैपायनः भरद्वाजः सुमन्तुः गौतमः असितः ।
वशिष्ठः च्यवनः कण्वः मैत्रेयः कवषः त्रितः ॥

शब्दार्थ—

द्वैपायनः	१.	द्वैपायन	वशिष्ठः	६.	वशिष्ठः
भरद्वाजः	२.	भरद्वाज	च्यवनः	७.	च्यवन
सुमन्तुः	३.	सुमन्तु	कण्वः	८.	कण्व
गौतमः	४.	गौतम	मैत्रेयः	९.	मैत्रेय
असितः ।	५.	असित	कवषः	१०.	कवष
			त्रितः ॥	११.	त्रित नामक मुनियों का वरण किया

श्लोकार्थ—द्वैपायन, भरद्वाज, सुमन्तु, गौतम, असित, वशिष्ठ, च्यवन, कण्व, मैत्रेय, कवष, त्रित नामक मुनियों का वरण किया ॥

अष्टमः श्लोकः

विश्वामित्रो वामदेवः सुमतिर्जैमिनिः क्रतुः ।
पैलः पराशरो गर्गो वैशम्पायन एव च ॥८॥

पदच्छेद— विश्वामित्रः वामदेवः सुमतिः जैमिनिः क्रतुः ।
पैलः पराशरः गर्गः वैशम्पायनः एव च ॥

शब्दार्थ—

विश्वामित्रः	१.	विश्वामित्र	पैलः	६.	पैल
वामदेवः	२.	वामदेव	पराशरः	७.	पराशर
सुमतिः	३.	सुमति	गर्गः	८.	गर्ग
जैमिनिः	४.	जैमिनि	वैशम्पायनः	१०.	वैशम्पायन का वरण किया
क्रतुः ।	५.	क्रतु	एव च ॥	९.	और

श्लोकार्थ—विश्वामित्र, वामदेव, सुमति, जैमिनि, क्रतु, पैल, पराशर, गर्ग और वैशम्पायन का वरण किया ॥

नवमः श्लोक

अथर्वा कश्यपो धौम्यो रामो भार्गव आसुरिः ।
वीतिहोत्रो मधुच्छन्दा वीरसेनोऽकृतव्रणः ॥९॥

पदच्छेद— अथर्वा कश्यपः धौम्यः रामः भार्गवः आसुरिः ।
वीतिहोत्रः मधुच्छन्दाः वीरसेनः अकृतव्रणः ॥

शब्दार्थ—

अथर्वा	१. अथर्वा	आसुरिः ।	६. आसुरि
कश्यपः	२. कश्यप	वीतिहोत्रः	७. वीतिहोत्र
धौम्यः	३. धौम्य	मधुच्छन्दाः	८. मधुच्छन्दा
रामः	४. परशुराम	वीरसेनः	९. वीरसेन
भार्गवः	५ शुक्राचार्य	अकृतव्रणः ॥	१०. अकृतव्रण का वरण किया

श्लोकार्थ—अथर्वा, कश्यप, धौम्य, परशुराम, शुक्राचार्य, आसुरि, वीतिहोत्र, मधुच्छन्दा, वीरसेन, अकृतव्रण का वरण किया ॥

दशमः श्लोकः

उपहूतास्तथा चान्ये द्रोणभीष्मकृपादयः ।
धृतराष्ट्रः सहसुतो विदुरश्च महामतिः ॥१०॥

पदच्छेद— उपहूताः तथा च अन्ये द्रोण भीष्म कृप आदयः ।
धृतराष्ट्रः सहसुतः विदुरः च महा मतिः ॥

शब्दार्थ—

उपहूताः	१२. बुलवाया	आदयः ।	६. आदि
तथा च	१. और	धृतराष्ट्रः	८. धृतराष्ट्र
अन्ये	२. उनके अतिरिक्त	सहसुतः	७. पुत्रों सहित
द्रोण	३ द्रोणाचार्य	विदुरः	११. विदुर को
भीष्म	४. भीष्म पितामह	च	९ और
कृप	५. कृपाचार्य	महामतिः ॥	१०. महाबुद्धिमान्

श्लोकार्थ—और उनके अतिरिक्त द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह, कृपाचार्य आदि तथा पुत्रों सहित धृतराष्ट्र और महाबुद्धिमान् विदुर को बुलवाया ॥

एकादशः श्लोकः

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा यज्ञदिदृक्षवः ।
तत्रेयुः सर्वराजानो राज्ञां प्रकृतयो नृप ॥११॥

पदच्छेद— ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्राः यज्ञ दिदृक्षवः ।
तत्र ईयुः सर्वराजानः राज्ञाम् प्रकृतयः नृप ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणाः	७. ब्राह्मण	तत्र	११. वहाँ पर
क्षत्रियाः	८. क्षत्रिय	ईयुः	१२. आये
वैश्याः	९. वैश्य	सर्वराजानः	४. सब राजा
शूद्राः	१०. शूद्र	राज्ञाम्	५. राजाओं की
यज्ञ	२. यज्ञ के	प्रकृतयः	६. प्रजायें
दिदृक्षवः ।	३. दर्शन के इच्छुक	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यज्ञ के दर्शन के इच्छुक सब राजा, राजाओं की प्रजायें, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वहाँ पर आये ॥

द्वादशः श्लोकः

ततस्ते देवयजनं ब्राह्मणाः स्वर्णलाङ्गलैः ।
कृष्ट्वा तत्र यथाम्नायं दीक्षयाञ्चक्रिरे नृपम् ॥१२॥

पदच्छेद— ततः ते देवयजनम् ब्राह्मणाः स्वर्ण लाङ्गलैः ।
कृष्ट्वा तत्र यथाम्नायम् दीक्षयान् चक्रिरे नृपम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	कृष्ट्वा	७. जुतवाकर
ते	२. उन	तत्र	८. वहाँ
देवयजनम्	६. यज्ञ भूमि को	यथाम्नायम्	१०. वेदानुसार
ब्राह्मणाः	३. ब्राह्मणों ने	दीक्षयान्	११. यज्ञ की दीक्षा
स्वर्ण	४. सोने के	चक्रिरे	१२. दी
लाङ्गलैः ।	५. हलों से	नृपम् ॥	९. राजा को

श्लोकार्थ—तदनन्तर उन ब्राह्मणों ने सोने के हलों से यज्ञ भूमि को जुतवा कर वहाँ राजा को वेदानुसार यज्ञ की दीक्षा दी ॥

त्रयोदशः श्लोकः

हैमाः किलोपकरणा वरुणस्य यथा पुरा ।
इन्द्रादयो लोकपाला विरिञ्चिभवसंयुताः ॥१३॥

पदच्छेद— हैमाः किल उपकरणाः वरुणस्य यथा पुरा ।
इन्द्र आदयः लोकपालाः विरिञ्चि भवसंयुताः ॥

शब्दार्थ—

हैमाः	५.	सोने के बने हुये थे	इन्द्र	१०.	इन्द्र
किल	६.	वैसे ही (युधिष्ठिर के यज्ञ में थे)	आदयः	११.	आदि
उपकरणाः	४.	यज्ञ पात्र	लोकपालाः	१२.	लोकपाल (उस यज्ञ में आये)
वरुणस्य	३.	वरुण के	विरिञ्चि	७.	ब्रह्मा और
यथा	१.	जैसे	भव	८.	महादेव
पुरा ।	२.	पूर्वकाल में	संयुताः ॥	९.	सहित

श्लोकार्थ—जैसे पूर्वकाल में वरुण के यज्ञपात्र सोने के बने हुये थे वैसे ही युधिष्ठिर के यज्ञ में थे। ब्रह्मा और महादेव सहित इन्द्र आदि लोकपाल उस यज्ञ में आये थे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सगणाः सिद्धगन्धर्वा विद्याधरमहोरगाः ।
मुनयो यक्षरक्षांसि खगकिन्नरचारणाः ॥१४॥

पदच्छेद— सगणाः सिद्ध गन्धर्वाः विद्याधर महोरगाः ।
मुनयः यक्ष रक्षांसि खग किन्नर चारणाः ॥

शब्दार्थ—

सगणाः	१.	गणों के साथ	मुनयः	६.	मुनि
सिद्ध	२.	सिद्ध	यक्षरक्षांसि	७.	यक्ष, राक्षस
गन्धर्वाः	३.	गन्धर्व	खग	८.	पक्षी
विद्याधर	४.	विद्याधर	किन्नर	९.	किन्नर और
महोरगाः ।	५.	महानाग	चारणाः ॥	१०.	चारण भी आये

श्लोकार्थ—गणों के साथ; सिद्ध, गन्धर्व, विद्याधर, महानाग, मुनि, यक्ष, राक्षस, पक्षी, किन्नर और चारण भी आये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

राजानश्च समाहूता राजपत्न्यश्च सर्वशः ।
राजसूयं समीयुः स्म राज्ञः पाण्डुसुतस्य वै ॥१५॥

पदच्छेद— राजानः च समाहूताः राजपत्न्यः च सर्वशः ।
राजसूयम् समीयुः स्म राज्ञः पाण्डुसुतस्य वै ॥

शब्दार्थ—

राजानः	४.	राजा	राजसूयम्	१०.	राजसूय यज्ञ में
च	१.	और	समीयुः स्म	११.	उपस्थित हुये
समाहूताः	३.	बुलाये गये	राज्ञः	७.	राजा
राजपत्न्यः	६.	रानियाँ	पाण्डु	८.	पाण्डु के
च	५.	तथा	सुतस्य वै ॥	९.	पुत्र युधिष्ठिर के
सर्वशः ।	२.	सभी ओर से			

श्लोकार्थ—और सभी ओर से बुलाये गये राजा तथा रानियाँ राजा पाण्डु के पुत्र युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित हुये ॥

षोडशः श्लोकः

मेनिरे कृष्णभक्तस्य सूपपन्नमविस्मिताः ।
अयाजयन् महाराजं याजका देववर्चसः ।
राजसूयेन विधिवत् प्राचेतसमिवामराः ॥१६॥

पदच्छेद — मेनिरे कृष्ण भक्तस्य सुउपपन्नम् अविस्मिताः ।
अयाजयन् महाराजम् याजकाः देववर्चसः ।
राजसूयेन विधिवत् प्राचेतसम् इव अमराः ॥

शब्दार्थ—

मेनिरे	२.	मान लिया कि	याजकाः	७.	याजकों ने
कृष्ण	३	श्रीकृष्ण के	देववर्चसः ।	६.	देवताओं के समान तेजस्वी
भक्तस्य	४.	भक्त का यज्ञ	राजसूयेन	१०.	राजसूय
सुउपपन्नम्	५.	सुसम्पन्न होना ही चाहिये	विधिवत्	९.	विधिपूर्वक
अविस्मिताः ।	१.	सबसे बिना कौतुहल के	प्राचेतसम्	१४.	वरुण से करवाया था
अयाजयन्	११.	यज्ञ कराया	इव	१२.	जिस प्रकार
महाराजम्	८.	महाराज युधिष्ठिर से	अमराः ॥	१३.	देवताओं ने

श्लोकार्थ—सबने बिना कौतुहल के मान लिया कि श्रीकृष्ण के भक्त का यज्ञ सुसम्पन्न होना ही चाहिये । देवताओं के समान तेजस्वी याजकों ने महाराज युधिष्ठिर से विधिपूर्वक राजसूय यज्ञ कराया जिस प्रकार देवताओं ने वरुण से कराया था ॥

सप्तदशः श्लोकः

सौत्येऽहन्यवनीपालो याजकान् सदसस्पतीन्।
अपूजयन् महाभागान् यथावत् सुसमाहितः ॥१७॥

पदच्छेद— सौत्ये अहनि अवनीपालः याजकम् सदसस्पतीन्।
अपूजयन् महाभागान् यथा वत् सुसमाहितः ॥

शब्दार्थ—

सौत्ये	१.	सोमलता कूटने के	अपूजयन्	१०.	पूजन किया
अहनि	२.	दिन	महाभागान्	४.	परम भाग्यवान्
अवनीपालः	३.	राजा ने	यथा	८.	विधि
याजकम्	५.	याजकों और	वत्	९.	पूर्वक
सदसस्पतीन्।	६.	सदसस्पतियों का	सुसमाहितः ॥	७.	बड़ी सावधानी से

श्लोकार्थ—सोमलता कूटने के दिन राजा ने परम भाग्यवान् याजकों और सदसस्पतियों का बड़ी सावधानी से विधि पूर्वक पूजन किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

सदस्याग्र्यार्हणार्हं वै विमृशन्तः सभासदः।
नाध्यगच्छन्ननैकान्त्यात् सहदेवस्तदाब्रवीत् ॥१८॥

पदच्छेद - सदस्य अग्र्य अर्हण अर्हम् वै विमृशन्तः सभासदः।
न अध्यगच्छन् अनैकान्त्यात् सहदेवः तदा अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

सदस्य	१.	सदस्यों में	न	९.	नहीं ले सके
अग्र्य	२.	पहली	अध्यगच्छन्	८.	कोई निर्णय
अर्हण	३.	पूजा लेने के	अनैकान्त्यात्	७.	एक मत न होने से
अर्हम् वै	४.	योग्य व्यक्ति पर	सहदेवः	११.	सहदेव ने
विमृशन्तः	५.	विचार करते हुये	तदा	१०.	तब
सभासदः।	६.	सभासद् लोग	अब्रवीत् ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—सदस्यों में पहली पूजा लेने के योग्य व्यक्ति पर विचार करते हुये, सभासद् लोग एक मत न होने से कोई निर्णय न ले सके। तब सहदेव ने कहा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

अर्हति ह्यच्युतः श्रैष्ठ्यं भगवान् सात्वतां पतिः ।
एष वै देवताः सर्वा देशकालधनादयः ॥१९॥

पदच्छेद— अर्हति हि अच्युतः श्रैष्ठ्यम् भगवान् सात्वताम् पतिः ।
एष वै देवताः सर्वाः देशकाल धन आदयः ॥

शब्दार्थ—

अर्हति	६.	योग्य हैं	एष वै	७.	ये ही
हि अच्युतः	४.	श्रीकृष्ण ही	देवताः	९.	देवता (तथा)
श्रैष्ठ्यम्	५.	श्रेष्ठ होने से	सर्वाः	८.	समस्त
भगवान्	३.	भगवान्	देशकाल	१०.	देश-काल
सात्वताम्	१.	भक्त	धन	११.	धन
पतिः ।	२.	वत्सल	आदयः ॥	१२.	आदि हैं

श्लोकार्थ—भक्त वत्सल भगवान् श्रीकृष्ण ही श्रेष्ठ होने से योग्य हैं । ये ही समस्त देवता तथा देश, काल, धन आदि हैं ॥

विंशः श्लोकः

यदात्मकमिदं विश्वं क्रतवश्च यदात्मकाः ।
अग्निराहुतयो मन्त्राः सांख्यं योगश्च यत्परः ॥२०॥

पदच्छेद— यद् आत्मकम् इदम् विश्वम् क्रतवः च यत् आत्मकाः ।
अग्निः आहुतयः मन्त्राः सांख्यम् योगः च यत्परः ॥

शब्दार्थ—

यद्	३.	उन ही का	अग्निः	८.	अग्नि
आत्मकम्	४.	रूप है	आहुतयः	९.	आहुतियाँ
इदम्	१.	यह	मन्त्राः	१०.	मन्त्र
विश्वम्	२.	विश्व	सांख्यम्	११.	सांख्य
क्रतवः च	५.	सभी यज्ञ भी	योगः	१३.	योग भी
यत्	६.	उन ही के	च	१२.	और
आत्मकाः ।	७.	रूप हैं	तत्परः ॥	१४.	उनके ही स्वरूप हैं

श्लोकार्थ—यह विश्व उन ही का रूप है । सभी यज्ञ भी उन ही के रूप हैं । अग्नि, आहुतियाँ, मन्त्र, सांख्य और योग भी उनके ही स्वरूप हैं ॥

एकविंशः श्लोकः

एक एवाद्वितीयोऽसावैतदात्म्यमिदं जगत् ।
आत्मनाऽऽत्माश्रयः सभ्याः सृजत्यवति हन्त्यजः ॥२१॥

पदच्छेद— एकः एव अद्वितीयः असौ एतद् आत्म्यम् इदम् जगत् ।
आत्मना आत्म आश्रयः सभ्याः सृजति अवति हन्ति अजः ॥

शब्दार्थ—

एकः एव	३.	अकेले ही	आत्मना	९.	अपने
अद्वितीय	४.	अद्वितीय ब्रह्म	आत्म	१०.	आप में
असौ	२.	वे (भगवान् श्रीकृष्ण)	आश्रयः	११.	स्थित और
एतद्	७.	उनही का	सभ्याः	१.	हे सभासदों !
आत्म्यम्	८.	स्वरूप है (वे ही)	सृजति	१३.	संसार की सृष्टि
इदम्	५.	यह	अवति हन्ति	१४.	रक्षा और संहार करते हैं
जगत् ।	६.	जगत्	अजः ॥	१२.	विकार रहित होकर

श्लोकार्थ—हे सभासदों ! ये भगवान् श्रीकृष्ण अकेले ही अद्वितीय ब्रह्म हैं । यह जगत् उनही का स्वरूप है ! वे ही अपने आप में स्थित और विकार रहित होकर संसार की सृष्टि रक्षा और संहार करते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

विविधानीह कर्माणि जनयन यदवेक्षया ।
ईहते यदयं सर्वः श्रेयो धर्मादिलक्षणम् ॥२२॥

पदच्छेद— विविधानि इह कर्माणि जनयन् यत् अवेक्षया ।
ईहते यत् अयम् सर्वः श्रेयः धर्म आदि लक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

विविधानि	६.	अनेक प्रकार के	ईहते यत्	१२.	सम्पादन करता है
इह	५.	यहाँ पर	अयम्	३.	यह
कर्माणि	७.	कर्मों का	सर्वः	४.	सारा संसार
जनयन्	८.	अनुष्ठान करता हुआ	श्रेयः	११.	श्रेय का
यत्	१.	जिन श्रीकृष्ण के	धर्म आदि	९.	धर्मादि
अवेक्षया ।	२.	अनुग्रह से	लक्षणम् ॥	१०.	लक्षण वाले

श्लोकार्थ—जिन श्रीकृष्ण के अनुग्रह से यह सारा संसार यहाँ पर अनेक प्रकार के कर्मों का अनुष्ठान करता हुआ धर्मादि लक्षण वाले श्रेय का सम्पादन करता है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

तस्मात् कृष्णाय महते दीयतां परमार्हणम् ।
एवं चेत् सर्वभूतानामात्मनश्चार्हणं भवेत् ॥२३॥

पदच्छेद— तस्मात् कृष्णाय महते दीयताम् परम अर्हणम् ।
एवम् चेत् सर्व भूतानाम् आत्मनः च अर्हणम् भवेत् ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	एवम्	८. इस प्रकार किया जाय तो
कृष्णाय	३. श्रीकृष्ण को ही	चेत्	७. यदि
महते	२. श्रेष्ठ	सर्व	९. समस्त
दीयताम्	६. समर्पित कीजिये	भूतानाम्	१०. प्राणियों की
परम	४. अग्र	आत्मनः च	११. और अपनी भी
अर्हणम् ।	५. पूजा	अर्हणम्	१२. पूजा
		भवेत् ॥	१३. हो जाती है

श्लोकार्थ—इसलिये श्रेष्ठ श्रीकृष्ण को ही अग्र पूजा समर्पित कीजिये । यदि इस प्रकार किया जाय तो समस्त प्राणियों की और अपनी भी पूजा हो जाती है ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सर्वभूतात्मभूताय कृष्णायानन्यदर्शिने ।
देयं शान्ताय पूर्णाय दत्तस्यानन्त्यमिच्छता ॥२४॥

पदच्छेद— सर्वभूतात्म भूताय कृष्णाय अनन्य दर्शिने ।
देयम् शान्ताय पूर्णाय दत्तस्य आनन्त्यम् इच्छता ॥

शब्दार्थ—

सर्व	४. सभी	देयम्	१२. दान दें
भूतात्म	५. प्राणियों के आत्मा	शान्ताय	७. शान्त
भूताय	६. स्वरूप	पूर्णाय	८. परिपूर्ण (तथा)
कृष्णाय	११. श्रीकृष्ण को	दत्तस्य	१. दान को
अनन्य	९. भेद-भाव से	आनन्त्यम्	२. अनन्त बनाने का
दर्शिने ।	१०. रहित	इच्छता ॥	३. इच्छुक

श्लोकार्थ—दान को अनन्त बनाने का इच्छुक व्यक्ति सभी प्राणियों के आत्मा स्वरूप, शान्त, परिपूर्ण तथा भेद-भाव से रहित श्रीकृष्ण को दान दें ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा सहदेवोऽभूत् तूष्णीं कृष्णानुभाववित् ।
तच्छ्रुत्वा तुष्टुवुः सर्वे साधु साध्विति सत्तमाः ॥२५॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा सहदेवः अभूत् तूष्णीम् कृष्ण अनुभाववित् ।
तत् श्रुत्वा तुष्टुवुः सर्वे साधु साधु इति सत्तमाः ॥

शब्दार्थ—

इति	४.	यह	तत्	६.	उनकी बात
उक्त्वा	५.	कह कर	श्रुत्वा	९.	सुन कर
सहदेवः	३.	सहदेव	तुष्टुवुः	१४.	समर्थन किया
अभूत्	७.	हो गये	सर्वे	१०.	सभी
तूष्णीम्	६.	चुप	साधु	१२.	ठीक है
कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण के	साधु इति	१३.	ठीक है कह कर (उनका)
अनुभाववित् ।	२.	प्रभाव को जानने वाले	सत्तमाः ॥	११.	सत् पुरुषों ने

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के प्रभाव को जानने वाले सहदेव यह कह कर चुप हो गये । उनकी बात सुन कर सभी सत् पुरुषों ने ठीक है, ठीक है कह कर उनका समर्थन किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

श्रुत्वा द्विजेरितं राजा ज्ञात्वा हार्दं सभासदाम् ।
समर्हयद्धृषीकेशं प्रीतः प्रणयविह्वलः ॥२६॥

पदच्छेद— श्रुत्वा द्विज ईरितम् राजा ज्ञात्वा हार्दम् सभा सदाम् ।
सम् अर्हयत् हृषीकेशम् प्रीतः प्रणय विह्वलः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	३.	सुन कर	सभा सदाम् ।	४.	सभासदों का
द्विज	१.	ब्राह्मणों का	सम् अर्हत्	१२.	पूजा की
ईरितम्	२.	कथन	हृषीकेशम्	११.	श्रीकृष्ण की
राजा	७.	राजा युधिष्ठिर ने	प्रीतः	१०.	आनन्द से
ज्ञात्वा	६.	जान कर	प्रणय	८.	प्रेम से
हार्दम्	५.	अभिप्राय	विह्वलः ॥	९.	विह्वल होकर

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों का कथन सुन कर सभासदों का अभिप्राय जान कर राजा युधिष्ठिर ने प्रेम से विह्वल होकर आनन्द से श्रीकृष्ण की पूजा की ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तत्पादाववनिज्यापः शिरसा लोकपावनीः ।
सभार्यः सानुजामात्यः सकुटुम्बोऽवहन्मुदा ॥२७॥

पदच्छेद— तत् पादौ अवनिज्य आपः शिरसा लोकपावनीः ।
सभार्यः स अनुज अमात्यः सकुटुम्बः अवहत् मुदा ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उनके	सभार्यः	६. पत्नी
पादौ	२. चरणों को	स अनुज	७. भाई
अवनिज्य	३. पखार कर	अमात्यः	८. मन्त्री और
आपः	५. जल को	सकुटुम्बः	९. कुटुम्ब के साथ
शिरसा	११. सिर पर	अवहत्	१२. धारण किया
लोकपावनीः ।	४. लोक पावन	मुदा ॥	१०. प्रसन्नता से

श्लोकार्थ—उनके चरणों को पखार कर लोक पावन जल को पत्नी, भाई, मन्त्री और कुटुम्ब के साथ प्रसन्नता से सिर पर धारण किया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

वासोभिः पीतकौशेयैर्भूषणैश्च महाधनैः ।
अर्हयित्वाश्रुपूर्णाक्षो नाशकत् समवेक्षितुम् ॥२८॥

पदच्छेद— वासोभिः पीत कौशेयैः भूषणैः च महाधनैः ।
अर्हयित्वा अश्रुपूर्ण अक्षः न अशकत् समवेक्षितुम् ॥

शब्दार्थ—

वासोभिः	३. वस्त्रों	अर्हयित्वा	७. पूजा करके
पीत	१. पीले	अश्रुपूर्ण	८. आँसुओं से भरे
कौशेयैः	२. रेशमी	अक्षः	९. नेत्रों वाले (युधिष्ठिर) उन्हें
भूषणैः	६. आभूषणों से (उनकी)	न	१०. नहीं
च	४. तथा	अशकत्	१२. सके
महाधनैः ।	५. बहुमूल्य	समवेक्षितुम् ॥	११. देख

श्लोकार्थ—पीले रेशमी वस्त्रों तथा बहुमूल्य आभूषणों से उनकी पूजा करके आँसुओं से भरे नेत्रों वाले युधिष्ठिर उन्हें नहीं देख सके ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

इत्थं सभाजितं वीक्ष्य सर्वे प्राञ्जलयो जनाः ।
नमो जयेति नेमुस्तं निपेतुः पुष्पवृष्टयः ॥२९॥

पदच्छेद— इत्थम् सभाजितम् वीक्ष्य सर्वे प्राञ्जलयः जनाः ।
नमो जय इति नेमुः तम् निपेतुः पुष्प वृष्टयः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	श्रीकृष्ण को इस प्रकार	नमो	७.	नमः
सभाजितम्	२.	पूजित	जयइति	८.	जय (इस प्रकार नारे लगाकर)
वीक्ष्य	३.	देखकर	नेमुः	१०.	नमस्कार करने लगे
सर्वे	४.	सभी	तम्	९.	उन्हें
प्राञ्जलयः	६.	हाथ जोड़कर	निपेतुः	१२.	करने लगे
जनाः ।	५.	लोग	पुष्पवृष्टयः ॥	११.	और देवता फूलों की वर्षा

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण को इस प्रकार पूजित देखकर सभी लोग हाथ जोड़कर नमः जय इस प्रकार नारे लगाकर उन्हें नमस्कार करने लगे । और देवता फूलों की वर्षा करने लगे ॥

त्रिंशः श्लोकः

इत्थं निशम्य दमघोषसुतः स्वपीठादुत्थाय कृष्णगुणवर्णनजातमन्युः ।
उत्क्षिप्य बाहुमिदमाह सदस्यमर्षी संश्रावयन् भगवते परुषाण्यभीतः ॥३०॥

पदच्छेद— इत्थम् निशम्य दमघोषसुतः स्वपीठात् उत्थाय कृष्ण गुणवर्णन जात मन्युः ।
उत्क्षिप्य बाहुम् इदम् आह सदसि अमर्षी संश्रावयन् भगवते परुषाणि अभीतः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	इस प्रकार	उत्क्षिप्य	११.	उठाकर
निशम्य	२.	सुनकर	बाहुम्	१०.	बाँह
दमघोषसुतः	३.	शिशुपाल	इदम् आह	१६.	यह कहने लगा
स्वपीठात्	७.	अपने आसन से	सदसि	९.	सभा में
उत्थाय	८.	उठकर (और)	अमर्षी	१२.	असहिष्णु
कृष्ण गुण	४.	श्रीकृष्ण के गुणों के	संश्रावयन्	१५.	सुनाते हुये
वर्णनः	५.	वर्णन से	भगवते परुषाणि	१४	भगवान् को कठोर वचन
जातमन्युः ।	६.	उत्पन्न क्रोध के कारण	अभीतः ॥	१३.	निडर होकर

श्लोकार्थ—इस प्रकार सुनकर शिशुपाल श्रीकृष्ण के गुणों के वर्णन से उत्पन्नक्रोध के कारण अपने आसन से उठकर और सभा में बाँह उठाकर असहिष्णु निडर होकर भगवान् को कठोर वचन सुनाते हुये यह कहने लगा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

ईशो दुरत्ययः काल इति सत्यवती श्रुतिः ।
वृद्धानामपि यद् बुद्धिर्बालवाक्यैर्विभिद्यते ॥३१॥

पदच्छेद— ईशः दुरत्ययः कालः इति सत्यवती श्रुतिः ।
वृद्धानाम् अपि यत् बुद्धिः बालवाक्यैः विभिद्यते ॥

शब्दार्थ—

ईशः	५.	ईश्वर है वह	वृद्धानाम्	८.	वृद्धों की
दुरत्ययः	६.	टाला नहीं जा सकता है	अपि	९.	भी
कालः	४.	काल ही	यत्	७.	इसलिये
इति	२.	यह कहना	बुद्धिः	१०.	बुद्धि
सत्यवती	३.	सत्य है कि	बालवाक्यैः	११	बालक की बात से
श्रुतिः ।	१.	श्रुति का	विभिद्यते ॥	१२.	चकरा गयी है

श्लोकार्थ— श्रुति का यह कहना सत्य है कि काल ही ईश्वर है। वह टाला नहीं जा सकता है। इसलिये वृद्धों की भी बुद्धि बालक की बात से चकरा गई है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यूयं पात्रविदां श्रेष्ठा मा मन्ध्वं बालभाषितम् ।
सदसस्पतयः सर्वे कृष्णो यत् सम्मतोऽर्हणे ॥३२॥

पदच्छेद— यूयम् पात्रविदाम् श्रेष्ठाः मा मन्ध्वम् बालभाषितम् ।
सदसस्पतयः सर्वे कृष्णः यत् सम्मतः अर्हणे ॥

शब्दार्थ—

यूयम्	५.	आप लोग	सदसस्पतयः	२.	सभासदों !
पात्रविदाम्	३.	पात्र को जानने वालों में	सर्वे	१.	सभी
श्रेष्ठाः	४.	श्रेष्ठ	कृष्णः	१०.	कृष्ण
मा	७.	मत	यत्	९.	कि
मन्ध्वम्	८.	मानिये	सम्मतः	१२.	योग्य हैं
बालभाषितम् ।	६.	बालक सहदेव का कहना	अर्हणे ॥	११.	अग्र पूजा के

श्लोकार्थ— सभी सभासदों ! पात्र के जानने वालों में श्रेष्ठ आप लोग बालक सहदेव का कहना मत मानिये कि कृष्ण ही अग्रपूजा के योग्य हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तपोविद्याव्रतधरान्　　ज्ञानविध्वस्तकल्मषान् ।
परमर्षीन् ब्रह्मनिष्ठान् लोकपालैश्च पूजितान् ॥३३॥

पदच्छेद— तपः विद्या व्रतधरान् ज्ञानविध्वस्त कल्मषान् ।
परमऋषीन् ब्रह्मनिष्ठान् लोकपालैः च पूजितान् ॥

शब्दार्थ—

तपः	१.	तपस्या	परमऋषीन्	१०.	महर्षियों की (पूजा क्यों नहीं की गई)
विद्या	२.	विद्या और	ब्रह्मनिष्ठान्	९.	ब्रह्म निष्ठ
व्रतधरान्	३.	व्रत को धारण करने वाले	लोकपालैः	७.	लोक पालों द्वारा
ज्ञानविध्वस्त	५.	ज्ञान के द्वारा नष्ट करने वाले	च	६.	और
कल्मषान् ।	४.	पापों को	पूजितान् ॥	८.	पूजित

श्लोकार्थ—तपस्या, विद्या और व्रत को धारण करने वाले तथा पापों को ज्ञान के द्वारा नष्ट करने वाले और लोकपालों द्वारा पूजित ब्रह्मनिष्ठ महर्षियों की पूजा क्यों नहीं की गई ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सदस्पतीनतिक्रम्य गोपालः कुलपांसनः ।
यथा काकः पुरोडाशं सपर्यां कथमर्हति ॥३४॥

पदच्छेद— सदस्पतीन् अतिक्रम्य गोपालः कुलपांसनः ।
यथा काकः पुरोडाशम् सपर्याम् कथम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

सदस्पतीन्	१.	सदस्पतियों को	काकः	९.	कौवा (क्या कभी)
अतिक्रम्य	२.	छोड़ कर यह	पुरोडाशम्	१०.	पुरोडाश का अधिकारी हो सकता है
गोपालः	४.	ग्वाला	सपर्याम्	५.	अग्रपूजा का अधिकारी
कुलपांसनः ।	३.	कुल कलंक	कथम्	६.	कैसे
यथा	८.	जैसे	अर्हति ॥	७.	हो सकता है

श्लोकार्थ—सदस्पतियों को छोड़ कर यह कुल कलंक ग्वाला कैसे अग्रपूजा का अधिकारी हो सकता है । जैसे कौवा क्या कभी पुरोडाश का अधिकारी हो सकता है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

वर्णाश्रमकुलापेतः सर्वधर्मबहिष्कृतः ।
स्वैरवर्ती गुणैर्हीनः सपर्यां कथमर्हति ॥३५॥

पदच्छेद— वर्ण आश्रम कुल अपेतः सर्व धर्म बहिष्कृतः ।
स्वैरवर्ती गुणैः हीनः सपर्याम् कथम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

वर्ण	१.	वर्ण	स्वैरवर्ती	७.	स्वेच्छाचारी (तथा)
आश्रम	२.	आश्रम और	गुणैः	८.	गुणों से
कुल	३.	कुल से	हीनः	९.	हीन (ये)
अपेतः	४.	रहित	सपर्याम्	१०.	अग्रपूजा का पात्र
सर्व धर्म	५.	सभी धर्मों से	कथम्	११.	कैसे
बहिष्कृतः ।	६.	अलग	अर्हति ॥	१२.	हो सकता है

श्लोकार्थ—वर्ण, आश्रम और कुल से रहित सभी धर्मों से अलग स्वेच्छाचारी तथा गुणों से हीन यह अग्रपूजा का पात्र कैसे हो सकता है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

ययातिनैषां हि कुलं शप्तं सद्भिर्बहिष्कृतम् ।
वृथापानरतं शश्वत् सपर्यां कथमर्हति ॥३६॥

पदच्छेद— ययातिना एषाम् हि कुलम् शप्तम् सद्भिः बहिष्कृतम् ।
वृथा पानरतम् शश्वत् सपर्याम् कथम् अर्हति ॥

शब्दार्थ—

ययातिना	१.	ययाति ने	वृथा	७.	(यह वंश) व्यर्थ
एषाम् हि	२.	इसके	पानरतम्	९.	मधुपान में आसक्त रहता है
कुलम्	३.	वंश को	शश्वत्	८.	निरन्तर
शप्तम्	४.	शाप दे रखा है और	सपर्याम्	१०.	यह अग्रपूजा के
सद्भिः	५.	सत्पुरुषों ने (इस वंश का)	कथम्	१२.	कैसे (हो सकता है)
बहिष्कृतः ।	६.	परित्याग (कर दिया है)	अर्हति ॥	११.	योग्य

श्लोकार्थ—ययाति ने इसके वंश को शाप दे रखा है। और सत्पुरुषों ने इस वंश का परित्याग कर दिया है। यह वंश व्यर्थ निरन्तर मधुपान में आसक्त रहता है। यह अग्रपूजा के योग्य कैसे हो सकता है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

ब्रह्मर्षिसेवितान् देशान् हित्वैतेऽब्रह्मवर्चसम् ।
समुद्रं दुर्गमाश्रित्य बाधन्ते दस्यवः प्रजाः ॥३७॥

पदच्छेद— ब्रह्मर्षि सेवितान् देशान् हित्वा एते अब्रह्मवर्चसम् ।
समुद्रम् दुर्गम् आश्रित्य बाधन्ते दस्यवः प्रजाः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मर्षि	१.	ब्रह्मर्षियों के द्वारा	समुद्रम्	७.	समुद्र में
सेवितान्	२.	सेवित	दुर्गम्	८.	किला
देशान्	३.	देशों का	आश्रित्य	९.	बना कर (रहते हैं) और
हित्वा	४.	त्याग करके	बाधन्ते	१२.	सताते हैं
एते	५.	ये लोग	दस्यवः	१०.	डाकुओं के समान
अब्रह्मवर्चसम् ।	६.	वेद चर्चा से रहित	प्रजाः ॥	११.	प्रजा को

श्लोकार्थ—ब्रह्मर्षियों के द्वारा सेवित देशों का त्याग करके ये लोग वेद चर्चा से रहित समुद्र में किला बना कर रहते हैं और डाकुओं के समान, प्रजाओं को सताते हैं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

एवमादीन्यभद्राणि बभाषे नष्टमङ्गलः ।
नोवाच किञ्चिद् भगवान् यथा सिंहः शिवारुतम् ॥३८॥

पदच्छेद— एवम् आदीनि अभद्राणि बभाषे नष्ट मङ्गलः ।
न उवाच किञ्चित् भगवान् यथा सिंहः शिवारुतम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार की	न उवाच	९.	नहीं बोले
आदीनि	४.	बहुत सी	किञ्चित्	८.	कुछ भी
अभद्राणि	५.	अनर्गल बातें	भगवान्	७.	भगवान् श्रीकृष्ण
बभाषे	६.	बोला (किन्तु)	यथा	१०.	जैसे
नष्ट	१.	नष्ट	सिंहः	१२.	सिंह (नहीं बोलता है)
मङ्गलः ।	२.	मङ्गल वाला (शिशुपाल)	शिवारुतम् ॥	११.	सियार के शब्दों पर

श्लोकार्थ—नष्ट मङ्गल वाला शिशुपाल इस प्रकार की बहुत सी अनर्गल बातें बोला । किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण कुछ भी नहीं बोले, जैसे सियार के शब्दों पर सिंह नहीं बोलता है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

भगवन्निन्दनं श्रुत्वा दुःसहं तत् सभासदः ।
कर्णौ पिधाय निर्जग्मुः शपन्तश्चेदिपं रुषा ॥३९॥

पदच्छेद— भगवत् निन्दनम् श्रुत्वा दुःसहम् तत् सभासदः ।
कर्णौ पिधाय निर्जग्मुः शपन्तः चेदिपम् रुषा ॥

शब्दार्थ—

भगवत्	१.	भगवान् की	कर्णौ	७.	कानों को
निन्दनम्	३.	निन्दा	पिधाय	८.	बन्द करके
श्रुत्वा	४.	सुन कर	निर्जग्मुः	१२.	बाहर चले गये
दुःसहम्	२.	असह्य	शपन्तः	११.	कोसते हुये
तत्	५.	वे	चेदिपम्	१०.	शिशुपाल को
सभासदः ।	६.	सभासद् लोग	रुषा ॥	९.	क्रोध से

श्लोकार्थ—भगवान् की असह्य निन्दा सुनकर वे सभासद् लोग कानों को बन्द करके क्रोध से शिशुपाल को कोसते हुये बाहर चले गये ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

निन्दां भगवतः शृण्वंस्तत्परस्य जनस्य वा ।
ततो नापैति यः सोऽपि यात्यधः सुकृताच्च्युतः ॥४०॥

पदच्छेद— निन्दाम् भगवतः शृण्वन् तत् परस्य जनस्य वा ।
ततः न अपैति यः सः अपि याति अधः सुकृतात् च्युतः ॥

शब्दार्थ—

निन्दाम्	७.	निन्दा	ततः न	९.	वहाँ से नहीं
भगवतः	२.	भगवान् की	अपैति	१०.	हट जाता
शृण्वन्	८.	सुनकर	यः	१.	जो (मनुष्य)
तत्	४.	भगवत्	सः अपि	११.	वह भी
परस्य	५.	परायण	याति	१४.	प्राप्त होता है
जनस्य	६.	व्यक्ति की	अधः	१३.	अधोगति को
वा ।	३.	अथवा	सुकृतात् च्युतः ॥	१२.	शुभ कर्मों से गिर जाता है और

श्लोकार्थ—जो मनुष्य भगवान् की अथवा भगवत् परायण व्यक्ति की निन्दा सुनकर वहाँ से हट नहीं जाता वह भी शुभ कर्मों से गिर जाता है और अधोगति को प्राप्त होता है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

ततः पाण्डुसुताः क्रुद्धा मत्स्यकैकयसृञ्जयाः ।
उदायुधाः समुत्तस्थुः शिशुपालजिघांसवः ॥४१॥

पदच्छेद— ततः पाण्डुसुताः क्रुद्धाः मत्स्य कैकय सृञ्जयाः ।
उदायुधाः समुत्तस्थुः शिशुपाल जिघांसवः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	सृञ्जयाः ।	५.	सृञ्जयवंशी राजा लोग
पाण्डुसुताः	२.	पाण्डव	उदायुधाः	९.	हथियार उठा कर
क्रुद्धाः	८.	क्रुद्ध होकर	समुत्तस्थुः	१०.	उठ खड़े हुये
मत्स्य	३.	मत्स्य	शिशुपाल	६.	शिशुपाल को
कैकय	४.	कैकय और	जिघांसवः ॥	७.	मार डालने की इच्छा से

श्लोकार्थ—तदनन्तर पाण्डव, मत्स्य, कैकय और सृञ्जयवंशी राजा लोग शिशुपाल को मार डालने की इच्छा से क्रुद्ध होकर हथियार उठा कर उठ खड़े हुये ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

ततश्चैद्यस्त्वसम्भ्रान्तो जगृहे खड्गचर्मणी ।
भर्त्सयन् कृष्णपक्षीयान् राज्ञः सदसि भारत ॥४२॥

पदच्छेद— ततः चैद्यः तु असम्भ्रान्तः जगृहे खड्ग चर्मणी ।
भर्त्सयन् कृष्ण पक्षीयान् राज्ञः सदसि भारत ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	तब	भर्त्सयन्	१२.	खरी-खोटी सुनाने लगा
चैद्यः तु	४.	शिशुपाल	कृष्ण	९.	श्रीकृष्ण के
असम्भ्रान्तः	३.	बिना घबराये	पक्षीयान्	१०.	पक्षपाती
जगृहे	७.	उठा कर	राज्ञः	११.	राजाओं को
खड्ग	६.	तलवार	सदसि	८.	सभा में
चर्मणी ।	५.	ढाल	भारत ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! तब बिना घबराये शिशुपाल ढाल-तलवार उठा कर सभा में श्रीकृष्ण के पक्षपाती राजाओं को खरी-खोटी सुनाने लगा ॥

त्र्यश्चत्वारिंशः श्लोकः

तावदुत्थाय भगवान् स्वान् निवार्य स्वयं रुषा ।
शिरः क्षुरान्तचक्रेण जहारापततो रिपोः ॥४३॥

पदच्छेद— तावत् उत्थाय भगवान् स्वान् निवार्य स्वयम् रुषा ।
शिरः क्षुरान्त चक्रेण जहार आपततः रिपोः ॥

शब्दार्थ—

तावत्	१.	तब-तक	शिरः	९.	सिर
उत्थाय	३.	उठकर	क्षुरान्त	१०.	छुरे के समान धार वाले
भगवान्	२.	भगवान् ने	चक्रेण	११.	चक्र से
स्वान्	४.	अपने लोगों को	जहार	१२.	काट लिया
निवार्य	५.	रोक कर	पततः	७.	अपने ऊपर झपटते हुये
स्वयम् रुषा ।	६.	स्वयं क्रोध से	रिपोः ॥	८.	शत्रु (शिशुपाल का)

श्लोकार्थ—तब-तक भगवान् ने उठ कर अपने लोगों को रोक कर स्वयं क्रोध से अपने ऊपर झपटते हुये शत्रु शिशुपाल का सिर छुरे के समान धार वाले चक्र के काट लिया ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

शब्दः कोलाहलोऽप्यासीत् शिशुपाले हते महान् ।
तस्यानुयायिनो भूपा दुद्रुवुर्जीवितैषिणः ॥४४॥

पदच्छेद— शब्दः कोलाहलः अपि आसीत् शिशुपाले हते महान् ।
तस्य अनुयायिनः भूपाः दुद्रुवुः जीवित एषिणः ॥

शब्दार्थ—

शब्दः	५.	शब्द	तस्य	८.	उसके
कोलाहलः	४.	कोलाहल का	अनुयायिनः	९.	अनुयायी
अपि	६.	भी	भूपाः	१२.	राजा लोग
आसीत्	७.	होने लगा	दुद्रुवुः	१३.	भाग खड़े हुये
शिशुपाले	१.	शिशुपाल के	जीवित	१०.	प्राणों के
हते	२.	मारे जाने पर	एषिणः ॥	११.	इच्छुक
महान् ।	३.	महान्			

श्लोकार्थ—शिशुपाल के मारे जाने पर महान् कोलाहल का शब्द भी होने लगा । उसके अनुयायी प्राणों के इच्छुक राजा लोग भाग खड़े हुये ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

चैद्यदेहोत्थितं ज्योतिर्वासुदेवमुपाविशत् ।
पश्यतां सर्वभूतानामुल्केव भुवि खाच्च्युता ॥४५॥

पदच्छेद— चैद्य देह उत्थितम् ज्योतिः वासुदेवम् उपाविशत् ।
पश्यताम् सर्वभूतानाम् उल्केव भुवि खात् च्युता ॥

शब्दार्थ—

चैद्य	१.	शिशुपाल के	पश्यताम्	६.	देखते-देखते
देह	२.	शरीर से	सर्वभूतानाम्	५.	सब प्राणियों के
उत्थितम्	३.	निकली हुई	उल्केव	११.	जैसे लूक
ज्योतिः	४.	ज्योति	भुवि	१२.	धरती में (समा जाता है)
वासुदेवम्	७.	श्रीकृष्ण में	खात्	९.	आकाश से
उपाविशत् ।	८.	समा गई	च्युता ॥	१०.	गिरा हुआ

श्लोकार्थ—शिशुपाल के शरीर से निकली हुई ज्योति सब प्राणियों के देखते-देखते श्रीकृष्ण में समा गई । आकाश से गिरा हुआ जैसे लूक धरती में समा जाता है ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

जन्मत्रयानुगुणितवैरसंरब्धया धिया ।
ध्यायंस्तन्मयतां यातो भावो हि भवकारणम् ॥४६॥

पदच्छेद— जन्म त्रय अनुगुणित वैर संरब्धया धिया ।
ध्यायन् तन्मयताम् यातः भावः हि भव कारणम् ॥

शब्दार्थ—

जन्म	२.	जन्म से	ध्यायन्	७.	ध्यान करते-करते (वह)
त्रय	१.	तीन	तन्मयताम्	८.	तन्मय
अनुगुणित	३.	बढ़े हुये	यातः	९.	हो गया था
वैर	४.	वैर-भाव से	भावः हि	१०.	भाव ही
संरब्धया	५.	ग्रस्त	भव	११.	जन्म-मृत्यु की गति में
धिया ।	६.	बुद्धि से	कारणम् ॥	१२.	कारण है

श्लोकार्थ—तीन जन्म से बढ़े हुये वैर भाव से ग्रस्त बुद्धि से ध्यान करते-करते वह तन्मय हो गया था । भाव ही जन्म-मृत्यु की गति में कारण है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

ऋत्विग्भ्यः ससदस्येभ्यो दक्षिणां विपुलामदात् ।
सर्वान् सम्पूज्य विधिवच्चक्रेऽवभृथमेकराट् ॥४७॥

पदच्छेद— ऋत्विग्भ्यः ससदस्येभ्यः दक्षिणाम् विपुलाम् अदात् ।
सर्वान् सम्पूज्य विधिवत् चक्रे अवभृथम् एकराट् ॥

शब्दार्थ—

ऋत्विग्भ्यः	३. ऋत्विजों को	सर्वान्	७. सबका
ससदस्येभ्यः	२. सदस्यों सहित	सम्पूज्य	८. सत्कार करके
दक्षिणाम्	५. दक्षिणा	विधिवत्	९. विधि पूर्वक
विपुलाम्	४. भर पूर	चक्रे	११. किया
अदात् ।	६. दी (तथा) उन	अवभृथम्	१०. अवभृथ स्नान
		एकराट् ॥	१. चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर ने

श्लोकार्थ—चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर ने सदस्यों सहित ऋत्विजों को भर पुर दक्षिणा दी । तथा उन सब का सत्कार करके विधि पूर्वक अवभृथ स्नान किया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

साधयित्वा क्रतुं राज्ञः कृष्णो योगेश्वरेश्वरः ।
उवास कतिचिन्मासान् सुहृद्भिरभियाचितः ॥४८॥

पदच्छेद— साधयित्वा क्रतुम् राज्ञः कृष्णः योगेश्वर ईश्वरः ।
उवास कतिचित्मासान् सुहृद्भिः अभियाचितः ॥

शब्दार्थ—

साधयित्वा	३. सम्पन्न करके	ईश्वरः ।	५. स्वामी
क्रतुम्	२. यज्ञ	उवास	१०. वहीं रहे
राज्ञः	१. राजा का	कतिचित्मासान्	९. कुछ महीनों तक
कृष्णः	६. श्रीकृष्ण	सुहृद्भिः	७. सुहृदों की
योगेश्वर	४. योगेश्वरों के	अभियाचितः ॥	८. प्रार्थना से

श्लोकार्थ—राजा का यज्ञ सम्पन्न करके योगेश्वरों के स्वामी भगवान् श्रीकृष्ण सुहृदों की प्रार्थना से कुछ महीनों तक वहीं रहे ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ततोऽनुज्ञाप्य राजानमनिच्छन्तमपीश्वरः ।
ययौ सभार्यः सामात्यः स्वपुरं देवकीसुतः ॥४९॥

पदच्छेद— ततः अनुज्ञाप्य राजानम् अनिच्छन्तम् अपि ईश्वरः ।
ययौ सभार्यः स अमात्यः स्वपुरम् देवकी सुतः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	ययौ	१२.	चले गये
अनुज्ञाप्य	५.	आज्ञा लेकर	सभार्यः	९.	पत्नी और
राजानम्	४.	राजा से	स अमात्यः	१०.	मंत्रियों सहित
अनिच्छन्तम्	२.	न चाहते हुये	स्वपुरम्	११	अपने नगर
अपि	३.	भी	देवकी	६.	देवकी के
ईश्वरः ।	८.	भगवान्	सुतः ॥	७.	पुत्र श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ—तदनन्तर न चाहते हुये भी राजा से आज्ञा लेकर देवकी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण पत्नी और मन्त्रियों सहित अपने नगर को चले गये ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

वर्णितं तदुपाख्यानं मया ते बहुविस्तरम् ।
वैकुण्ठवासिनोर्जन्म विप्रशापात् पुनः पुनः ॥५०॥

पदच्छेद— वर्णितम् तत् उपाख्यानम् मया ते बहुविस्तरम् ।
वैकुण्ठ वासिनः जन्म विप्र शापात् पुनः पुनः ॥

शब्दार्थ—

वर्णितम्	६.	बता चुका हूँ कि	वैकुण्ठ	७.	वैकुण्ठ में
तत्	१.	यह	वासिनः	८	रहने वाले (जय-विजय) को
उपाख्यानम्	२.	उपाख्यान	जन्म	१२.	जन्म लेना पड़ा था
मया	३.	मैं	विप्र	९.	ब्राह्मण के
ते	४.	आप को	शापात्	१०.	शाप से
बहुविस्तरम् ।	५.	बहुत विस्तार से पहले	पुनः पुनः ॥	११.	बार-बार

श्लोकार्थ—यह उपाख्यान मैं आपको बहुत विस्तार से पहले बता चुका हूँ कि वैकुण्ठ में रहने वाले जय-विजय को ब्राह्मण के शाप से बार-बार जन्म लेना पड़ा था ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

राजसूयावभृथ्येन स्नातो राजा युधिष्ठिरः ।
ब्रह्मक्षत्रसभामध्ये शुशुभे सुरराडिव ॥५१॥

पदच्छेद राजसूय आवभृथ्येन स्नातः राजा युधिष्ठिरः ।
ब्रह्मक्षत्र सभामध्ये शुशुभे सुरराट् इव ॥

शब्दार्थ—

राजसूय	१.	राजसूय का	ब्रह्म	६.	ब्राह्मण (और)
आवभृथ्येन	२.	यज्ञान्त	क्षत्र	७.	क्षत्रियों की
स्नातः	३.	स्नान करके	सभामध्ये	८.	सभा के बीच
राजा	४.	राजा	शुशुभे	१०.	सुशोभित हुये
युधिष्ठिरः ।	५.	युधिष्ठिर	सुरराट् इव ॥	९.	देवराज के समान

श्लोकार्थ—राजसूय का यज्ञान्त स्नान करके राजा युधिष्ठिर ब्राह्मण और क्षत्रियों की सभा के बीच देवराज के समान सुशोभित हुये ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

राज्ञा सभाजिताः सर्वे सुरमानवखेचराः ।
कृष्णं क्रतुं च शंसन्तः स्वधामानि ययुर्मुदा ॥५२॥

पदच्छेद— राज्ञा सभाजिताः सर्वे सुरमानव खेचराः ।
कृष्णम् क्रतुम् च शंसन्तः स्वधामानि ययुः मुदा ॥

शब्दार्थ—

राज्ञा	१.	राजा युधिष्ठिर से	कृष्णम्	७.	श्रीकृष्ण
सभाजिताः	२.	सम्मानित	क्रतुम्	८.	और यज्ञ की
सर्वे	३.	सभी	शंसन्तः	९.	प्रशंसा करते हुये
सुर	४.	देवता	स्वधामानि	११.	अपने-अपने लोक को
मानव	५.	मनुष्य और	ययुः	१२.	चले गये
खेचराः ।	६.	आकाशचारी गण	मुदा ॥	१०.	प्रसन्नता पूर्वक

श्लोकार्थ—राजा युधिष्ठिर से सम्मानित सभी देवता, मनुष्य और आकाशचारी गण श्रीकृष्ण और यज्ञ की प्रशंसा करते हुये प्रसन्नता पूर्वक अपने-अपने लोक को चले गये ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

दुर्योधनमृते पापं कलिं कुरुकुलामयम् ।
यो न सेहे श्रियं स्फीतां दृष्ट्वा पाण्डुसुतस्य ताम् ।।५३।।

पदच्छेद— दुर्योधनम् ऋते पापम् कलिम् कुरुकुल आमयम् ।
यः न सेहे श्रियम् स्फीताम् दृष्ट्वा पाण्डुसुतस्य ताम् ।।

शब्दार्थ—

दुर्योधनम्	५.	दुर्योधन को	यः	७.	जिस (दुर्योधन को)
ऋते	६.	छोड़कर (सब सुखी हुये)	न सेहे	१३.	सहन नहीं हुआ
पापम्	१.	पापी	श्रियम्	११.	राज्य लक्ष्मी का
कलिम्	२.	कलह प्रिय	स्फीताम्	१०.	समृद्ध
कुरुकुल	३.	कुरुकुल के	दृष्ट्वा	१२.	देखकर
आमयम् ।	४.	रोग स्वरूप	पाण्डुसुतस्य	८.	युधिष्ठिर की
			ताम् ।।	९.	उस

श्लोकार्थ—पापी, कलह प्रिय, कुरुकुल के रोग स्वरूप दुर्योधन को छोड़ कर सब सुखी हुये ! जिस दुर्योधन को युधिष्ठिर की उस समृद्ध राज्य लक्ष्मी का सहन नहीं हुआ ।

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

य इदं कीर्तयेद् विष्णोः कर्म चैद्यवधादिकम् ।
राजमोक्षं वितानं च सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।५४।।

पदच्छेद— यः इदम् कीर्तयेद् विष्णोः कर्म चैद्य वध आदिकम् ।
राजमोक्षम् वितानम् च सर्व पापैः प्रमुच्यते ।।

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	राज	८.	राजाओं की
इदम्	५.	इस	मोक्षम्	९.	मुक्ति का
कीर्तयेद्	१०.	कीर्तन करेगा (वह)	वितानम् च	७.	यज्ञानुष्ठान का और
विष्णोः	२.	श्रीकृष्ण की	सर्व	११.	सभी
कर्म	६.	लीला का	पापैः	१२.	पापों से
चैद्यवध	३.	शिशुपाल वध	प्रमुच्यते ।।	१३.	छूट जावेगा
आदिकम् ।	४.	आदि			

श्लोकार्थ—जो श्रीकृष्ण की शिशुपाल-वध आदि इस लीला का, यज्ञानुष्ठान का और राजाओं की मुक्ति का कीर्तन करेगा वह सभी पापों से छूट जावेगा ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे शिशुपालवधः नाम
चतुःसप्ततितमःअध्यायः ।।७४।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— अजातशत्रोस्तं दृष्ट्वा राजसूयमहोदयम् ।
सर्वे मुमुदिरे ब्रह्मन् नृदेवा ये समागताः ॥१॥

पदच्छेद— अजातशत्रोः तम् दृष्ट्वा राजसूय महोदयम् ।
सर्वे मुमुदिरे ब्रह्मन् नृदेवा ये समागताः ॥

शब्दार्थ—

अजातशत्रोः	२.	अजातशत्रु युधिष्ठिर के	सर्वे	९.	सभी
तम्	३.	उस	मुमुदिरे	१०.	आनन्दित हुये
दृष्ट्वा	६.	देखकर	ब्रह्मन्	१.	हे भगवन् !
राजसूय	४.	राजसूय	नृदेवा ये	७.	जो मनुष्य, देवता आदि
महोदयम् ।	५.	यज्ञ को	समागताः ॥	८.	आये थे (वे)

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! अजातशत्रु युधिष्ठिर के उस राजसूय यज्ञ को देखकर जो मनुष्य देवता, आदि आये थे वे सभी आनन्दित हुये ॥

द्वितीयः श्लोकः

दुर्योधनं वर्जयित्वा राजानः सर्षयः सुराः ।
इति श्रुतं नो भगवंस्तत्र कारणमुच्यताम् ॥२॥

पदच्छेद— दुर्योधनम् वर्जयित्वा राजानः सर्षयः सुराः ।
इति श्रुतम् नो भगवन् तत्र कारणम् उच्यताम् ॥

शब्दार्थ—

दुर्योधनम्	१.	तथा दुर्योधन को	इति	६.	ऐसा
वर्जयित्वा	२.	छोड़कर	श्रुतम् नो	७.	हमने सुना है
राजानः	३.	राजा	भगवन्	८.	हे भगवन् !
सर्षयः	४.	ऋषि और	तत्र कारणम्	९.	इसका कारण
सुराः ।	५.	देवता (प्रसन्न हुये थे)	उच्यताम् ॥	१०.	बताइये

श्लोकार्थ—तथा दुर्योधन को छोड़कर राजा, ऋषि और देवता प्रसन्न हुये थे, ऐसा हम ने सुना है । हे भगवन् ! इसका कारण बतलाइये ॥

तृतीयः श्लोकः

ऋषिरुवाच— पितामहस्य ते यज्ञे राजसूये महात्मनः ।
बान्धवाः परिचर्यायां तस्यासन् प्रेमबन्धनाः ॥३॥

पदच्छेद— पितामहस्य ते यज्ञे राजसूये महात्मनः ।
बान्धवाः परिचर्यायाम् तस्य आसन् प्रेम बन्धनाः ॥

शब्दार्थ—

पितामहस्य	३. पितामह के	बान्धवाः	८. भाई-बन्धु
ते	१. तुम्हारे	परिचर्यायाम्	९. सेवा कार्य में
यज्ञे	५. यज्ञ में	तस्य	६. उनके
राजसूये	४. राजसूय	आसन्	१०. लगे थे
महात्मनः ।	२. महात्मा	प्रेमबन्धनाः ॥	७. प्रेम से बँधकर

श्लोकार्थ—तुम्हारे महात्मा पितामह के राजसूय यज्ञ में उनके प्रेम से बँध कर भाई-बन्धु सेवा कार्य में लगे थे ॥

चतुर्थः श्लोकः

भीमो महानसाध्यक्षो धनाध्यक्षः सुयोधनः ।
सहदेवस्तु पूजायां नकुलो द्रव्यसाधने ॥४॥

पदच्छेद— भीमः महानस अध्यक्षः धनाध्यक्षः सुयोधनः ।
सहदेवः तु पूजायाम् नकुलः द्रव्य साधने ॥

शब्दार्थ—

भीमः	१. भीमसेन	सहदेवः तु	६. सहदेव
महानस	२. भोजनालय के	पूजायाम्	७. स्वागत-सत्कार में
अध्यक्षः	३. अध्यक्ष थे	नकुलः	८. नकुल
धनाध्यक्षः	५. कोषाध्यक्ष थे	द्रव्य	९. सामग्री
सुयोधनः ।	४. दुर्योधन	साधने ॥	१०. एकत्र करने में लगे थे

श्लोकार्थ—भीमसेन भोजनालय के अध्यक्ष थे, दुर्योधन कोषाध्यक्ष थे, सहदेव स्वागत-सत्कार में, नकुल सामग्री एकत्र करने में लगे थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

गुरुशुश्रूषणे जिष्णुः कृष्णः पादावनेजने ।
परिवेषणे द्रुपदजा कर्णो दाने महामनाः ॥५॥

पदच्छेद— गुरु शुश्रूषणे जिष्णुः कृष्णः पाद अवनेजने ।
परिवेषणे द्रुपदजा कर्णः दाने महामनाः ॥

शब्दार्थ—

गुरु	२. गुरुजनों की	परिवेषणे	८. भोजन परसने में और
शुश्रूषणे	३. सेवा शुश्रूषा में	द्रुपदजा	७. द्रौपदी
जिष्णुः	१. अर्जुन	कर्णः	१०. कर्ण
कृष्णः	४. श्रीकृष्ण	दाने	११. दान में लगे हुये थे
पाद	५. अतिथियों के पैर	महामनाः ॥	९. उदार-शिरोमणि
अवनेजने ।	६. पखारने में		

श्लोकार्थ—अर्जुन गुरुजनों की सेवा शुश्रूषा में, श्रीकृष्ण अतिथियों के पैर पखारने में, द्रौपदी भोजन परसने में और उदारशिरोमणि कर्ण दान देने में लगे हुये थे ॥

षष्ठः श्लोकः

युयुधानो विकर्णश्च हार्दिक्यो विदुरादयः ।
बाह्लीकपुत्रा भूर्याद्या ये च सन्तर्दनादयः ॥६॥

पदच्छेद— युयुधानः विकर्णः च हार्दिक्यः विदुर आदयः ।
बाह्लीक पुत्राः भूरि आद्याः ये च सन्तर्दन आदयः ॥

शब्दार्थ—

युयुधानः	१. युयुधान	बाह्लीक पुत्राः	७. बाह्लीक के पुत्र
विकर्णः	२. विकर्ण	भूरि	८ भूरिश्रवा
च	३. और	आद्या	९. आदि
हार्दिक्यः	४. हार्दिक्य	ये च	१०. और जो
विदुर	५. विदुर	सन्तर्दन	११. सन्तर्दन
आदयः ।	६. इत्यादि	आदयः ॥	१२. आदि थे सब अलग-अलग कार्य में लगे थे

श्लोकार्थ— युयुधान, विकर्ण और हार्दिक्य, विदुर इत्यादि बाह्लीक के पुत्र भूरिश्रवा आदि और जो सन्तर्दन आदि थे सब अलग-अलग कार्य में नियुक्त थे ॥

सप्तमः श्लोकः

निरूपिता महायज्ञे नानाकर्मसु ते तदा।
प्रवर्तन्ते स्म राजेन्द्र राज्ञः प्रियचिकीर्षवः ॥७॥

पदच्छेद— निरूपिताः महायज्ञे नाना कर्मसु ते तदा।
प्रवर्तन्ते स्म राजेन्द्र राज्ञः प्रिय चिकीर्षवः ॥

शब्दार्थ—

निरूपिताः	१०.	नियुक्त होकर	प्रवर्तन्ते स्म	११.	काम करते थे
महायज्ञे	७.	महान् यज्ञ में	राजेन्द्र	१.	हे परीक्षित् !
नाना	८.	विभिन्न	राज्ञः	२.	राजा युधिष्ठिर का
कर्मसु	९.	कार्यों में	प्रिय	३.	प्रिय
ते	५.	वे लोग	चिकीर्षवः ॥	४.	करने के इच्छुक
तदा।	६.	उस समय			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! राजा युधिष्ठिर का प्रिय करने के इच्छुक वे लोग उस समय महान् यज्ञ में विभिन्न कार्यों में नियुक्त होकर काम करते थे ॥

अष्टमः श्लोकः

ऋत्विक्सदस्यबहुवित्सु सुहृत्तमेषु स्विष्टेषु सूनृतसमर्हणदक्षिणाभिः।
चैद्ये च सात्वतपतेश्चरणं प्रविष्टे चक्रुस्ततस्त्ववभृथस्नपनं द्युनद्याम् ॥८॥

पदच्छेद—ऋत्विक् सदस्य बहुवित्सु सुहृत्तमेषु स्विष्टेषु सूनृत समर्हण दक्षिणाभिः।
चैद्ये च सात्वत पतेः चरणम् प्रविष्टे चक्रुः ततः तु अवभृथ स्नपनम् द्युनद्याम् ॥

शब्दार्थ—

ऋत्विक्	१.	ऋत्विजों	चैद्ये च	९.	तथा शिशुपाल का
सदस्य	२.	सदस्यों	सात्वतपतेः	१०.	भक्त वत्सल भगवान् के
बहुवित्सु	३.	बहुज्ञ पुरुषों	चरणम्	११.	चरणों में
सुहृत्तमेषु	४.	इष्ट-मित्रों एवं	प्रविष्टे	१२.	समा जाने पर
स्विष्टेषु	५.	बन्धु-बान्धवों का	चक्रुः ततः तु	१६.	बाद में किया
सूनृत	६.	सुमधुर वाणी	अवभृथ	१४.	यज्ञान्त
समर्हण	७.	पूजा-सामग्री और	स्नपनम्	१५.	स्नान
दक्षिणाभिः।	८.	दक्षिणा से सत्कार हो चुकने पर	द्युनद्याम् ॥	१३.	युधिष्ठिर ने गंगा जी में

श्लोकार्थ—तदनन्तर ऋत्विजों, सदस्यों, बहुत से पुरुषों, इष्ट-मित्रों एवं बन्धु-बान्धवों के सुमधुर वाणी, पूजा-सामग्री और दक्षिणा आदि से सत्कार हो चुकने पर तथा शिशुपाल के भक्त वत्सल भगवान् के चरणों में समा जाने पर युधिष्ठिर ने गंगा जी में यज्ञान्त स्नान बाद में किया ॥

नवमः श्लोकः

मृदङ्गशङ्खपणवधुन्धुर्यानकगोमुखाः ।
वादित्राणि विचित्राणि नेदुरावभृथोत्सवे ॥९॥

पदच्छेद— मृदङ्ग शङ्ख पणव धुन्धुर्य आनक गोमुखाः ।
वादित्राणि विचित्राणि नेदुः अवभृथ उत्सवे ॥

शब्दार्थ—

मृदङ्ग	३.	मृदंग	वादित्राणि	१०.	बाजे
शङ्ख	४.	शङ्ख	विचित्राणि	९.	तरह-तरह के
पणव	५.	पणव	नेदुः	११.	बजने लगे
धुन्धुर्य	६.	धुन्धुर्य (नौबत)	अवभृथ	१.	यज्ञान्त स्नान के
आनक	७.	(नगारे)	उत्सवे ॥	२.	उत्सव में
गोमुखाः ।	८.	(नरसिंगे) आदि			

श्लोकार्थ—यज्ञान्त स्नान के उत्सव में मृदंग, शङ्ख, पणव, धुन्धुर्य, नगारे, नरसिंगे आदि तरह-तरह के बाजे बजने लगे ॥

दशम श्लोकः

नर्तक्यो ननृतुर्हृष्टा गायका यूथशो जगुः ।
वीणावेणुतलोन्नादस्तेषां स दिवमस्पृशत् ॥१०॥

पदच्छेद— नर्तक्यः ननृतुः हृष्टाः गायकाः यूथशः जगुः ।
वीणा वेणुतल उन्नादः तेषाम् सः दिवम् अस्पृशत् ॥

शब्दार्थ—

नर्तक्यः	१.	नर्तकियाँ	वीणा	७.	वीणा तथा
ननृतुः	३.	नाचने लगीं	वेणुतल	८.	बाँसुरी बजने लगी
हृष्टाः	२.	आनन्द से	उन्नादः	११.	ध्वनि
गायकाः	५.	गवैये	तेषाम	९.	उनकी
यूथशः	४.	झुंड के झुंड	सः	१०.	वह
जगुः ।	६.	गाने लगे	दिवम्	१२.	आकाश में
			अस्पृशत् ॥	१३.	गूंजने लगी

श्लोकार्थ—नर्तकियाँ आनन्द से नाचने लगीं, झुन्ड के झुन्ड गवैये गाने लगे । वीणा तथा बाँसुरी बजने लगी । उनकी वह ध्वनि आकाश में गूंजने लगी ॥

एकादशः श्लोकः

चित्रध्वजपताकाग्रैरिभेन्द्रस्यन्दनार्वभिः ।
स्वलङ्कृतैर्भटैर्भूपा निर्ययू रुक्ममालिनः ॥११॥

पदच्छेद— चित्र ध्वज पताका अग्रैः इभ इन्द्र स्यन्दन अर्वभिः ।
सुअलङ्कृतैः भटैः भूपाः निर्ययुः रुक्म मालिनः ॥

शब्दार्थ—

चित्र	१.	रंग	सुअलङ्कृतैः	७.	खूब सजे-धजे
ध्वज	२.	बिरंगी	भटैः	८.	योद्धाओं के साथ
पताका	३.	पताकाओं से	भूपाः	९.	राजा लोग
अग्रैः	४.	युक्त और	निर्ययुः	१२.	चल रहे थे
इभइन्द्र	५.	गजराजों	रुक्म	१०.	सोने के
स्यन्दन अर्वभिः ।	६.	रथों, घोड़ों से (एवम्)	मालिनः ॥	११.	हार पहने हुये

श्लोकार्थ—रंग-बिरंगी पताकाओं से युक्त और गजराजों, रथों, घोड़ों से एवम् खूब सजे-धजे योद्धाओं के साथ राजा लोग सोने के हार पहने हुये चल रहे थे ॥

द्वादशः श्लोकः

यदुसृञ्जयकाम्बोजकुरुकेकयकोसलाः ।
कम्पयन्तो भुवं सैन्यैर्यजमानपुरः सराः ॥१२॥

पदच्छेद— यदु सृञ्जय काम्बोज कुरु केकय कोसलाः ।
कम्पयन्तः भुवम् सैन्यैः यजमान पुरः सराः ॥

शब्दार्थ—

यदु	१.	यदु	कम्पयन्तः	१२.	कंपाते हुये (चल रहे थे)
सृञ्जय	२.	सृञ्जय	भुवम्	११.	पृथ्वी को
काम्बोज	३.	कम्बोज	सैन्यैः	१०.	सैनिकों के साथ
कुरु	४.	कुरु	यजमान	७.	युधिष्ठिर को
केकय	५.	केकय और	पुरः	८.	आगे
कोसलाः ।	६.	कोसल देश के राजा लोग	सराः ॥	९.	करके

श्लोकार्थ—यदु-सृञ्जय-कम्बोज कुरु-केकय और कोसल देश के राजा लोग युधिष्ठिर को आगे करके सैनिकों के साथ पृथ्वी को कंपाते हुये चल रहे थे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

सदस्यर्त्विग्द्विजश्रेष्ठा ब्रह्मघोषेण भूयसा ।
देवर्षिपितृगन्धर्वास्तुष्टुवुः पुष्पवर्षिणः ॥१३॥

पदच्छेद— सदस्य ऋत्विक् द्विजश्रेष्ठाः ब्रह्म घोषेण भूयसा ।
देवर्षि पितृ गन्धर्वाः तुष्टुवुः पुष्प वर्षिणः ॥

शब्दार्थ—

सदस्य	१.	यज्ञ के सदस्य	देवर्षि	८.	देवता-ऋषि
ऋत्विक्	२.	ऋत्विक् और	पितृ	९.	पितर और
द्विज	४.	ब्राह्मण	गन्धर्वाः	१०.	गन्धर्व
श्रेष्ठाः	३.	श्रेष्ठ	तुष्टुवुः	१३.	स्तुति करने लगे
ब्रह्म	६.	वेद-मन्त्रों का	पुष्प	११.	फूलों की
घोषेण	७.	उच्चारण करते हुये चले	वर्षिणः ॥	१२.	वर्षा करते हुये
भूयसा ।	५.	ऊँचे स्वर से			

श्लोकार्थ— यज्ञ के सदस्य ऋत्विज और श्रेष्ठ ब्राह्मण ऊँचे स्वर से वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुये चले। देवता-ऋषि, पितर और गन्धर्व फूलों की वर्षा करते हुये स्तुति करने लगे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स्वलङ्कृता नरा नार्यो गन्धस्रग्भूषणाम्बरैः ।
विलिम्पन्त्योऽभिषिञ्चन्त्यो विजह्रुर्विविधैरसैः ॥१४॥

पदच्छेद— सुअलङ्कृताः नराः नार्यः गन्ध स्रक् भूषण अम्बरैः ।
विलिम्पन्त्यः अभिसिञ्चन्त्यः विजह्रुः विविधैः रसैः ॥

शब्दार्थ—

सुअलङ्कृताः	६.	खूब सज-धज कर	विलिम्पन्त्यः	७.	एक-दूसरे पर लेप लगाते हुये
नराः	१.	वहाँ के नर और	अभिषिञ्चन्त्यः	१०.	छिड़कते हुये
नार्यः	२.	नारियाँ	विजह्रुः	११.	विहार करने लगे
गन्ध	३.	इत्र-फुलेल	विविधैः	८.	अनेकों प्रकार के
स्रक्	४.	पुष्पों के हार	रसैः ॥	९.	रसों को
भूषण अम्बरैः ।	५.	आभूषण और वस्त्रों से			

श्लोकार्थ— वहाँ के नर और नारियाँ, इत्र-फुलेल, पुष्पों के हार, आभूषण और वस्त्रों से खूब सज-धज कर एक दूसरे पर लेप लगाते हुये तथा अनेकों प्रकार के रसों को छिड़कते हुये विहार करने लगे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तैलगोरसगन्धोदहरिद्रासान्द्रकुङ्कुमैः ।
पुम्भिर्लिप्ताः प्रलिम्पन्त्यो विजह्रुर्वारयोषितः ॥१५॥

पदच्छेद— तैल गोरस गन्धउद हरिद्रा सान्द्र कुङ्कुमैः ।
पुम्भिः लिप्ताः प्रलिम्पन्त्यः विजह्रुः वारयोषितः ॥

शब्दार्थ—

तैल	२.	तेल,	पुम्भिः	१.	पुरुषों के द्वारा
गोरस	३.	गोरस	लिप्ता	८.	लगायी जाने पर
गन्धउद	४.	सुगन्धित जल	प्रलिम्पन्त्यः	१०.	लेप लगाती हुई
हरिद्रा	५.	हल्दी और	विजह्रुः	११.	विहार करने लगीं
सान्द्र	६.	गाढ़ी	वारयोषितः ॥	९.	वेश्यायें भी उन पर
कुङ्कुमैः ।	७.	केसर			

श्लोकार्थ—पुरुषों के द्वारा तेल-गोरस-सुगन्धित जल, हल्दी और गाढ़ी केसर लगायी जाने पर वेश्यायें भी उन पर लेप लगाती हुई विहार करने लगीं ॥

षोडशः श्लोकः

गुप्ता नृभिर्निरगमन्नुपलब्धुमेतद् देव्यो यथा दिवि विमानवरैर्नृदेव्यः ।
ता मातुलेयसखिभिः परिषिच्यमानाः सव्रीडहासविकसद्वदना विरेजुः ॥१६॥

पदच्छेद—गुप्ताः नृभिः निरगमन् उपलब्धुम् एतत् देव्यः यथा दिवि विमान वरैः नृदेव्यः ।
ताः मातुलेय सखिभिः परिषिच्यमानाः सव्रीड हासविकसत् वदनाः विरेजुः ॥

शब्दार्थ—

गुप्ताः नृभिः	६.	मनुष्यों द्वारा सुरक्षित	ताः	९.	उन पर
निरगमन्	८.	आयी थीं	मातुलेय	१०.	ममेरे भाई श्रीकृष्ण और
उपलब्धुम् एतत्	१.	उत्सव को देखने के लिये	सखिभिः	११.	उनके सखा
देव्यः	५.	देवियाँ आयीं थीं (वैसे ही)	परिषिच्यमानाः	१२.	रंगादि डाल रहे थे
यथा	२.	जैसे	सव्रीड	१३.	जिससे लजीली
दिवि	३.	आकाश में	हासविकसत्	१४.	मुसकराहट से खिले हुये
विमानवरैः	४.	उत्तम विमानों पर चढ़कर	वदनाः	१५.	मुख वाली वे
नृदेव्यः ।	७.	राजमहिलायें भी	विरेजुः ॥	१६.	बड़ी शोभा पा रही थीं

श्लोकार्थ—उत्सव को देखने के लिये जैसे आकाश में उत्तम विमानों पर चढ़कर देवियाँ आई थीं, वैसे ही मनुष्यों द्वारा सुरक्षित राज-महिलायें भी आयी थीं। उन पर ममेरे भाई श्रीकृष्ण और उनके सखा रंग आदि डाल रहे थे। जिससे लजीली मुसकराहट से खिले हुये मुख वाली वे बड़ी शोभा पा रही थीं ॥

सप्तदशः श्लोकः

**ता देवरानुत सखीन् सिषिचुर्दृतीभिः क्लिन्नाम्बरा विवृतगात्रकुचोरुमध्याः ।
औत्सुक्यमुक्तकबराच्च्यवमानमाल्याः क्षोभं दधुर्मलधियां रुचिरैर्विहारैः ॥१७॥**

पदच्छेद– ताः देवरान् उत सखीन् सिषिचुः दृतीभिः क्लिन्नअम्बराः विवृतगात्र कुचउरु मध्याः ।
औत्सुक्य मुक्तकबरात् च्यवमान माल्याः क्षोभम् दधुः मलधियाम् रुचिरैः विहारैः ॥

शब्दार्थ—

ताः देवरान्	९.	वे रानियाँ भी देवरों और	औत्सुक्य	५.	उत्सुकता के कारण
उत सखीन्	१०.	उनके सखाओं पर	मुक्तकबरात्	६.	ढीली-चोटियों और जूड़ों से
सिषिचुः	१२.	रंग गिराने लगीं तथा	च्यवमान्	७.	गिरती हुई
दृतीभिः	११.	पिचकारियों से	माल्याः	८.	मालाओं वाली
क्लिन्नअम्बराः	१.	वस्त्रों के भीग जाने से	क्षोभम् दधुः	१६.	चञ्चल बनाने लगीं
विवृतगात्र	२.	कुछ-कुछ दिखाई दे रहे अङ्गों	मलधियाम्	१५.	मलिन बुद्धि वाले पुरुषों को
कुचउरु	३.	स्तनों जङ्घा और	रुचिरैः	१३.	अपने आकर्षक
मध्याः ।	४.	कटिभाग वाली तथा	विहारैः ॥	१४.	बिहारों से

श्लोकार्थ—वस्त्रों के भीग जाने से कुछ-कुछ दिखाई दे रहे अङ्गों, स्तनों, जङ्घा और कटि भाग वाली तथा उत्सुकता के कारण ढीली चोटियों और जूड़ों से गिरती हुई मालाओं वाली वे रानियाँ भी देवरों और उनके सखाओं पर पिचकारियों से रंग गिराने लगीं । अपने आकर्षक विहारों से मलिन बुद्धि पुरुषों को चञ्चल बनाने लगीं ॥

अष्टादशः श्लोकः

**स सम्राड्रथमारूढः सदश्वं रुक्ममालिनम् ।
व्यरोचत स्वपत्नीभिः क्रियाभिः क्रतुराडिव ॥१८॥**

पदच्छेद— सः सम्राट् रथम् आरूढः सदश्वम् रुक्ममालिनम् ।
व्यरोचत स्वपत्नीभिः क्रियाभिः क्रतुराट् इव ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वे	व्यरोचत	८.	ऐसे शोभायमान हुये
सम्राट्	२.	चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर	स्वपत्नीभिः	३.	अपनी पत्नियों के साथ
रथम्	६.	रथ पर	क्रियाभिः	११.	प्रयाजादि क्रियाओं के साथ शोभित हो
आरूढः	७.	चढ़कर	क्रतुराट्	१०.	राजसूय यज्ञ
सदश्वम्	४.	उत्तम घोड़ों तथा	इव ॥	९.	मानो
रुक्ममालिनम् ।	५.	सोने के हारों से युक्त			

श्लोकार्थ—वे चक्रवर्ती राजा युधिष्ठिर अपनी पत्नियों के साथ उत्तम घोड़ों तथा रथ पर चढ़कर ऐसे शोभायमान हुये मानों राजसूय यज्ञ प्रयाजादि क्रियाओं के साथ शोभित हो ॥

एकोनविंशः श्लोकः

पत्नीसंयाजावभृथ्यैश्चरित्वा ते तमृत्विजः ।
आचान्तं स्नापयाञ्चक्रुर्गङ्गायां सह कृष्णया ॥१९॥

पदच्छेद— पत्नी संयाज आवभृथ्यैः चरित्वा ते तम् ऋत्विजः ।
आचान्तम् स्नापयान् चक्रुः गङ्गायाम् सह कृष्णया ॥

शब्दार्थ—

पत्नी	३. पत्नी	आचान्तम्	१०. आचमन कराकर
संयाज	४. संयाज (एक यज्ञ कर्म) तथा	स्नापयान्	१२. स्नान
आवभृथ्यैः	५. यज्ञान्त (स्नान कर्म)	चक्रुः	१३. करवाया
चरित्वा	६. करवा कर	गङ्गायाम्	११. गंगा जी में
ते	१. उन	सह	८. सहित (उन)
तम्	९. राजा युधिष्ठिर को	कृष्णया ॥	७. द्रौपदी के
ऋत्विजः ।	२. ऋत्विजों ने		

श्लोकार्थ— उन ऋत्विजों ने पत्नी संयाज (एक यज्ञ कर्म) तथा यज्ञान्त स्नान कर्म करवा कर द्रौपदो सहित उन राजा युधिष्ठिर को आचमन कराकर गंगा जी में स्नान करवाया ।

विंशः श्लोकः

देवदुन्दुभयो नेदुर्नरदुन्दुभिभिः समम् ।
मुमुचुः पुष्पवर्षाणि देवर्षिपितृमानवाः ॥२०॥

पदच्छेद— देव दुन्दुभयः नेदुः नर दुन्दुभिभिः समम् ।
मुमुचुः पुष्प वर्षाणि देवर्षि पितृ मानवाः ॥

शब्दार्थ—

देव	४. देवताओं की	मुमुचुः	१२. करने लगे
दुन्दुभयः	५ दुन्दुभियाँ भो	पुष्प	१०. पुष्पों की
नेदुः	६. बजने लगीं	वर्षाणि	११. वर्षा
नर	१. मनुष्यों की	देवर्षि	७. देवता-ऋषि
दुन्दुभिभिः	२. दुन्दुभियों के	पितृ	८. पितर और
समम् ।	३ साथ	मानवाः ॥	९ मानव

श्लोकार्थ— मनुष्यों की दुन्दुभियों के साथ देवताओं की दुन्दुभियाँ भो बजने लगीं । देवता, ऋषि, पितर और मानव पुष्पों की वर्षा करने लगे ॥

एकविंशः श्लोकः

सस्नुस्तत्र ततः सर्वे वर्णाश्रमयुता नराः ।
महापातक्यपि यतः सद्यो मुच्येत किल्बिषात् ॥२१॥

पदच्छेद—
सस्नुः तत्र ततः सर्वे वर्ण आश्रम युताः नराः ।
महापातकी अपि यतः सद्यः मुच्येत किल्बिषात् ।।

शब्दार्थ—

सस्नुः	६.	स्नान किया	महापातकी	८.	महापापी
तत्र	५.	वहाँ पर	अपि	९.	भी
ततः	१.	तदनन्तर	यतः	७.	क्योंकि (इससे)
सर्वे	२.	सभी	सद्यः	१०.	तत्काल
वर्ण आश्रम	३.	वर्णों और आश्रमों	मुच्येत	१२.	छूट जाता है
युताः नराः ।	४.	वाले लोगों ने	किल्बिषात् ।।	११.	पाप से

श्लोकार्थ—तदनन्तर सभी वर्णों और आश्रमों वाले लोगों ने वहाँ पर स्नान किया । क्योंकि इससे महापापी भी तत्काल पाप से छूट जाता है ।।

द्वाविंशः श्लोकः

अथ राजाहते क्षौमे परिधाय स्वलङ्कृतः ।
ऋत्विक्सदस्यविप्रादीनानर्चाभरणाम्बरैः ॥२२॥

पदच्छेद—
अथ राजा आहते क्षौमे परिधाय सु अलङ्कृतः ।
ऋत्विक् सदस्य विप्रआदीन् आनर्च आभरण अम्बरैः ।।

शब्दार्थ—

अथ	१.	अनन्तर	ऋत्विक्	९.	ऋत्विज
राजा	२.	राजा युधिष्ठिर ने	सदस्य	१०.	सदस्यों
आहते	३.	नयी	विप्रआदीन्	११.	ब्राह्मणों आदि की
क्षौमे	४.	रेशमी धोती और दुपट्टा	आनर्च	१२.	पूजा की
परिधाय	५.	धारण करके	आभरण	७.	आभूषणों से
सुअलङ्कृतः ।	८.	खूब सज-धज कर	अम्बरैः ।।	६.	वस्त्र

श्लोकार्थ—अनन्तर राजा युधिष्ठिर ने नयी रेशमी धोती और दुपट्टा धारण करके वस्त्र आभूषणों से खूब सज-धज कर ऋत्विज, सदस्यों, ब्राह्मणों आदि की पूजा की ।।

त्रयोविंशः श्लोकः

बन्धुज्ञातिनृपान् मित्रसुहृदोऽन्यांश्च सर्वशः ।
अभीक्ष्णं पूजयामास नारायणपरो नृपः ॥२३॥

पदच्छेद— बन्धु ज्ञाति नृपान् मित्र सुहृदः अन्यान् च सर्वशः ।
अभीक्षणम् पूजयामास नारायण परः नृपः ॥

शब्दार्थ—

बन्धु	४.	भाई-बन्धु	सर्वशः ।	१०.	सभी लोगों की
ज्ञाति	५.	कुटुम्ब	अभीक्षणम्	११.	बारम्बार
नृपान् मित्र	६.	राजा-मित्र	पूजयामास	१२.	पूजा की
सुहृदः	७.	हितैषी	नारायण	१.	भगवत्
अन्यान्	९.	अन्य	परः	२.	परायण
च	८.	और	नृपः ॥	३.	राजा युधिष्ठिर ने

श्लोकार्थ—भगवत् परायण राजा युधिष्ठिर ने भाई-बन्धु, कुटुम्ब, राजा, मित्र, हितैषी और अन्य सभी लोगों की बारम्बार पूजा की ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

सर्वे जनाः सुररुचो मणिकुण्डलस्रगुष्णीषकञ्चुकदुकूलमहार्घ्यहाराः ।
नार्यश्च कुण्डलयुगालकवृन्दजुष्टवक्त्रश्रियः कनकमेखलया विरेजुः ॥२४॥

पदच्छेद—सर्वे जनाः सुररुचः मणि कुण्डल स्रग्उष्णीष कञ्चुक दुकूल महार्घ्य हाराः ।
नार्यः च कुण्डल युग अलक वृन्द जुष्ट वक्त्रश्रियः कनक मेखलया विरेजुः ॥

शब्दार्थ—

सर्वेजनाः	७.	सभी लोग	नार्यः च	१३.	नारियाँ
सुररुचः	८.	देवताओं के समान शोभा पा रहे थे	कुण्डल युग	९.	दोनों कुण्डल
मणिकुण्डल	१.	मणियों के कुण्डल	अलक वृन्द	१०.	घुँघराली अलकों से
स्रग्उष्णीष	२.	पुष्पहार-पगड़ी	जुष्ट	११.	सेवित
कञ्चुक	३.	लम्बी-अङ्गरखी	वक्त्रश्रियः	१२.	मुख की शोभा वाली
दुकूल	४.	दुपट्टा तथा	कनक	१४.	सोने की
महार्घ्य	५.	बहुमूल्य	मेखलया	१५.	करधनी से
हाराः ।	६.	हार धारण किये हुये	विरेजुः ॥	१६.	शोभायमान थीं

श्लोकार्थ— तथा मणियों के कुण्डल-पुष्पहार-पगड़ी-लम्बी-अंगरखी-दुपट्टा तथा बहुमूल्य हार धारण किये हुये सभी लोग देवताओं के समान शोभा पा रहे थे । दोनों कुण्डल और घुँघराली अलकों से सेवित मुख की शोभा वाली नारियाँ साने की करधनी से शोभायमान थीं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अथर्त्विजो महाशीलाः सदस्या ब्रह्मवादिनः ।
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा राजानो ये समागताः ॥२५॥

पदच्छेद— अथ ऋत्विजः महाशीलाः सदस्याः ब्रह्म वादिनः ।
ब्रह्म क्षत्रिय विट् शूद्राः राजानः ये समागताः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. तदनन्तर	ब्रह्म	८. ब्राह्मण
ऋत्विजः	४. ऋत्विज	क्षत्रिय	९. क्षत्रिय
महाशीलाः	३. परम शीलवान्	विट् शूद्राः	१०. वैश्य-शूद्र और
सदस्याः	७. सदस्य	राजानः	११. राजा लोग
ब्रह्म	५. ब्रह्म	ये	२. जो
वादिनः ।	६. वादी	समागताः ॥	१२. आये थे उनका भी सम्मान किया

श्लोकार्थ—तदनन्तर जो परम शीलवान ऋत्विज, ब्रह्मवादी सदस्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और राजा लोग आये थे, उनका भी सम्मान किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

देवर्षिपितृभूतानि लोकपालाः सहानुगाः ।
पूजितास्तमनुज्ञाप्य स्वधामानि ययुर्नृप ॥२६॥

पदच्छेद— देव ऋषि पितृ भूतानि लोकपालाः सह अनुगाः ।
पूजिताः तम् अनुज्ञाप्य स्वधामानि ययुः नृप ॥

शब्दार्थ—

देव	२. देवता	पूजिताः	८. युधिष्ठिर ने सब को पूजा की
ऋषि	३. ऋषि	तम्	९. वे लोग उनसे
पितृ	४. पितर (तथा अन्य)	अनुज्ञाप्य	१०. अनुमति लेकर
भूतानि	५. प्राणी और	स्वधामानि	११. अपने निवास-स्थान को
लोकपालाः	७. लोकपाल (आदि) थे	ययुः	१२. चले गये
सह अनुगाः ।	६. अनुयायियों के साथ	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! देवता, ऋषि, पितर तथा अन्य प्राणो और अनुयायियों के साथ लोकपाल आदि थे । युधिष्ठिर ने सब की पूजा की । वे लोग उनसे अनुमति लेकर अपने निवास-स्थान को चले गये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

हरिदासस्य राजर्षे राजसूयमहोदयम् ।
नैवातृप्यन् प्रशंसन्तः पिबन् मर्त्योऽमृतं यथा ॥२७॥

पदच्छेद— हरिदासस्य राजर्षेः राजसूय महोदयम् ।
न एव अतृप्यन् प्रशंसन्तः पिबन् मर्त्यः अमृतम् यथा ॥

शब्दार्थ—

हरि	१.	भगवान् के	अतृप्यन्	८.	तृप्त होते थे
दासस्य	२.	दास	प्रशंसन्तः	६.	प्रशंसा करते-करते लोग
राजर्षेः	३.	राजा युधिष्ठिर के	पिबन्	१२.	पीने से (तृप्त नहीं होते हैं)
राजसूय	४.	राजसूय	मर्त्यः	१०.	मनुष्य
महोदयम् ।	५.	महायज्ञ की	अमृतम्	११.	अमृत
न एव	७.	वैसे ही नहीं	यथा ॥	९	जैसे

श्लोकार्थ—भगवान् के दास राजा युधिष्ठिर के राजसूय महायज्ञ की प्रशंसा करते-करते लोग वैसे ही नहीं तृप्त होते थे, जैसे मनुष्य अमृत पीने से तृप्त नहीं होते हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

ततो युधिष्ठिरो राजा सुहृत्सम्बन्धिबान्धवान् ।
प्रेम्णा निवासयामास कृष्णं च त्यागकातरः ॥२८॥

पदच्छेद— ततः युधिष्ठिरः राजा सुहृत् सम्बन्धि बान्धवान् ।
प्रेम्णा निवासयामास कृष्णम् च त्याग कातरः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद (उनके)	प्रेम्णा	११.	प्रेम से
युधिष्ठिरः	५.	युधिष्ठिर ने	निवासयामास	१२.	रोक लिया
राजा	४.	राजा	कृष्णम्	१०.	श्रीकृष्ण को
सुहृत्	६.	हितैषियों	च	९.	और
सम्बन्धि	७.	सम्बन्धियों	त्याग	२.	बिछोह से
बान्धवान् ।	८.	बन्धुओं	कातरः ॥	३.	दुःख मानने वाले

श्लोकार्थ—इसके बाद राजा युधिष्ठिर ने बिछोह से दुःख मानने वाले हितैषियों, सम्बन्धियों, बन्धुओं और श्रीकृष्ण को प्रेम से रोक लिया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

भगवानपि तत्राङ्ग न्यवात्सीत्तत्प्रियङ्करः ।
प्रस्थाप्य यदुवीरांश्च साम्बादींश्च कुशस्थलीम् ॥२९॥

पदच्छेद— भगवान् अपि तत्र अङ्ग न्यवात्सीत् तत् प्रियङ्करः ।
प्रस्थाप्य यदु वीरान् च साम्ब आदीन् कुश स्थलीम् ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	४.	भगवान् श्रीकृष्ण	प्रस्थाप्य	११.	भेजकर
अपि	५.	भी	यदु	८	यदुवंशी
तत्र	१३.	वहीं पर	वीरान्	९.	वीरों को
अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !	च	११.	और (आप)
न्यवात्सीत्	१४.	रह गये	साम्ब	६.	साम्ब
तत्	२.	युधिष्ठिर का	आदीन्	७.	आदि
प्रियङ्करः ।	३.	प्रिय करने वाले	कुशस्थलीम् ॥	१०.	द्वारकापुरी में

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! युधिष्ठिर का प्रिय करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण भी साम्ब आदि यदुवंशी वीरों को द्वारका पुरी में भेजकर और आप वहीं पर रह गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

इत्थं राजा धर्मसुतो मनोरथमहार्णवम् ।
सुदुस्तरं समुत्तीर्य कृष्णेनासीद् गतज्वरः ॥३०॥

पदच्छेद— इत्थम् राजा धर्म सुतः मनोरथ महा अर्णवम् ।
सुदुस्तरम् समुत्तीर्य कृष्णेन आसीत् गत ज्वरः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	इस प्रकार	सुदुस्तरम्	७.	जिसे पार करना अति कठिन है
राजा	२.	राजा	समुत्तीर्य	८.	पार करके
धर्मसुतः	३.	धर्म-पुत्र युधिष्ठिर	कृष्णेन	९.	श्रीकृष्ण की कृपा से
मनोरथः	४.	मनोरथ रूपी	आसीत्	१०.	हो गये
महा	५.	महान्	गत	११.	रहित
अर्णवम् ।	६.	समुद्र को	ज्वरः ॥	१०.	सन्ताप

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा धर्म-पुत्र युधिष्ठिर मनोरथ रूपी महान् समुद्र को, जिसे पार करना अति कठिन है, पार करके श्रीकृष्ण की कृपा से सन्ताप रहित हो गये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एकदान्तःपुरे तस्य वीक्ष्य दुर्योधनः श्रियम् ।
अतप्यद् राजसूयस्य महित्वं चाच्युतात्मनः ॥३१॥

पदच्छेद— एकदा अन्तःपुरे तस्य वीक्ष्य दुर्योधनः श्रियम् ।
अतप्यत् राजसूयस्य महित्वम् च अच्युत आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१.	एक दिन	अतप्यत्	१२.	जलने लगा
अन्तःपुरे	५.	अन्तःपुर की	राजसूयस्य	८.	राजसूय द्वारा प्राप्त
तस्य	४.	युधिष्ठिर के	महित्वम्	९.	महिमा को
वीक्ष्य	१०.	देखकर	च	७.	और
दुर्योधनः	११.	दुर्योधन	अच्युत	२.	श्रीकृष्ण के
श्रियम् ।	६.	सम्पदा	आत्मनः ॥	३.	परम प्रेमी

श्लोकार्थ— एक दिन श्रीकृष्ण के परम प्रेमी युधिष्ठिर के अन्तःपुर की सम्पदा और राजसूय द्वारा प्राप्त महिमा को देखकर दुर्योधन जलने लगा ।

द्वात्रिंशः श्लोकः

यस्मिन् नरेन्द्रदितिजेन्द्रसुरेन्द्रलक्ष्मीर्नाना विभान्ति किल विश्वसृजोपक्लृप्ताः ।
ताभिः पतीन् द्रुपदराजसुतोपतस्थे यस्यां विषक्तहृदयः कुरुराडतप्यत् ॥३२॥

पदच्छेद— यस्मिन् नरेन्द्र दितिजेन्द्र सुरेन्द्र लक्ष्मीः नाना विभान्तिकिल विश्वसृजा उपक्लृप्ताः ।
ताभिः पतीन् द्रुपदराज सुता उपतस्थे यस्याम् विषक्त हृदयः कुरुराट् अतप्यत् ॥

शब्दार्थ—

यस्मिन्	१.	उस अन्तःपुर में	ताभिः	९.	उनसे
नरेन्द्र	४.	नरपति	पतीन्	११.	अपने पतियों की
दितिजेन्द्र	५.	दैत्यपति और	द्रुपदराज सुताः	१०.	द्रौपदी
सुरेन्द्र	६.	सुरपतियों की	उपतस्थे	१२.	सेवा करती थीं
लक्ष्मीः नाना	७.	अनेक विभूतियाँ	यस्याम्	१३.	उस (द्रौपदी) में
विभान्ति किल	८.	शोभायमान थीं	विषक्त हृदयः	१४.	आसक्त हृदय वाला
विश्वसृजा	२.	विश्वकर्मा की	कुरुराट्	१५.	दुर्योधन
उपक्लृप्ताः ।	३.	बनायी हुईं	अतप्यत् ॥	१६.	जलने लगा

श्लोकार्थ— उस अन्तःपुर में विश्वकर्मा की बनायी हुई नरपति, दैत्यपति और सुरपतियों की अनेक विभूतियाँ शोभायमान थीं । उनसे द्रौपदी अपने पतियों की सेवा करती थीं । उस द्रौपदी में आसक्त हृदय वाला दुर्योधन जलने लगा ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यस्मिंस्तदा मधुपतेर्महिषीसहस्रं श्रोणीभरेण शनकैः क्वणदङ्घ्रिशोभम् ।
मध्ये सुचारुकुचकुङ्कुमशोणहारं श्रीमन्मुखं प्रचलकुण्डलकुन्तलाढ्यम् ।।३३।।

पदच्छेद—यस्मिन् तदा मधुपतेः महिषीः सहस्रम् श्रोणी भरेण शनकैः क्वणत् अङ्घ्रि शोभम् ।
मध्ये सुचारु कुच कुङ्कुम शोणहारम् श्रीमन्मुखम् प्रचल कुण्डल कुन्तल आढ्यम् ।।

शब्दार्थ—

यस्मिन्	१.	जिस (राज भवन) में	मध्ये	६.	मध्यभाग में
तदा	२.	उस समय	सुचारु	७.	सुन्दर
मधुपतेः	१४.	श्रीकृष्ण की	कुच	८.	कुचों पर लगी
महिषी	१६.	रानियाँ (विराजती थीं)	कुङ्कुम	९.	केशर की
सहस्रम्	१५.	सहस्रों	शोणहारम्	१०.	लालिमा से युक्त हारों वाली
श्रोणीभरेण	३.	नितम्बों के भार के कारण	श्रीमन्मुखम्	१३.	शोभा सम्पन्न मुख वाली
शनकैः क्वणत्	४.	धीरे-धीरे बजती हुई पायल के	प्रचल कुण्डल	११.	चञ्चल कुण्डलों से और
अङ्घ्रि शोभम् ।	५.	शब्दों से शोभायमान चरण वाली	कुन्तलआढ्यम् ।	१२.	अलकों से बढ़ी हुई

श्लोकार्थ—जिस राज भवन में उस समय नितम्बों के भार के कारण धीरे बजती हुई पायल के शब्दों से शोभायमान चरण वाली, मध्य भाग में सुन्दर कुचों पर लगी केशर की लालिमा से युक्त हारों वाली, चञ्चल कुण्डलों से और अलकों से बढ़ी हुई शोभा सम्पन्न मुख वाली श्रीकृष्ण की सहस्रों रानियाँ विराजती थीं ।।

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

सभायां मयक्लृप्तायां क्वापि धर्मसुतोऽधिराट् ।
वृतोऽनुजैर्बन्धुभिश्च कृष्णेनापि स्वचक्षुषा ।।३४।।

पदच्छेद— सभायां मयक्लृप्तायाम् क्वापि धर्मसुतः अधिराट् ।
वृतः अनुजैः बन्धुभिः च कृष्णेन अपि स्व चक्षुषा ।।

शब्दार्थ—

सभायाम्	३.	सभा में	वृतः	१०.	युक्त होकर(विराजमान थे)
मयक्लृप्तायाम्	२.	मय दानव की बनायी	अनुजैः	६.	भाइयों
क्वापि	१.	एक दिन	बन्धुभिः च	७.	सम्बन्धियों और
धर्मसुतः	४.	धर्म पुत्र	कृष्णेन अपि	९.	श्रीकृष्ण से भी
अधिराट् ।	५.	महाराज युधिष्ठिर	स्व चक्षुषा ।।	८.	अपने नयनों के तारे

श्लोकार्थ—एक दिन मय दानव की बनायी सभा में धर्मपुत्र महाराज युधिष्ठिर भाइयों, सम्बन्धियों और अपने नयनों के तारे श्रीकृष्ण से भी युक्त होकर विराजमान थे ।।

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

आसीनः काञ्चने साक्षादासने मघवानिव ।
पारमेष्ठ्यश्रिया जुष्टः स्तूयमानश्च वन्दिभिः ॥३५॥

पदच्छेद— आसीनः काञ्चने साक्षात् आसने मघवान् इव ।
पारमेष्ठ्य श्रिया जुष्टः स्तूयमानः च वन्दिभिः ॥

शब्दार्थ—

आसीनः	१२.	विराजमान थे	पारमेष्ठ्य	१.	ब्रह्मा जी के
काञ्चने	१०.	सोने के	श्रिया	२.	ऐश्वर्य के समान
साक्षात्	७.	साक्षात्	जुष्टः	३.	सेवित
आसने	११.	सिंहासन पर	स्तूयमानः	६.	स्तुति किये जाते हुये (वे युधिष्ठिर)
मघवान्	८.	इन्द्र के	च	४.	और
इव ।	९.	समान	वन्दिभिः ॥	५.	वन्दीजनों से

श्लोकार्थ—ब्रह्मा जी के ऐश्वर्य के समान ऐश्वर्य से सेवित और बन्दीजनों से स्तुति किये जाते हुये वे युधिष्ठिर साक्षात् इन्द्र के समान सोने के सिंहासन पर विराजमान थे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तत्र दुर्योधनो मानी परीतो भ्रातृभिर्नृप ।
किरीटमाली न्यविशदसिहस्तः क्षिपन् रुषा ॥३६॥

पदच्छेद— तत्र दुर्योधनः मानी परीतो भ्रातृभिः नृप ।
किरीट माली न्यविशद् असि हस्तः क्षिपन् रुषा ॥

शब्दार्थ—

तत्र	११.	वहाँ पर	किरीट माली	६.	मुकुट और माला पहने हुये
दुर्योधनः	८.	दुर्योधन अपने	न्यविशद्	१२.	आया
मानी	७.	अभिमानी	असि	३.	तलवार लेकर
परीतो	१०.	साथ	हस्तः	२.	हाथ में
भ्रातृभिः	९.	भाइयों के	क्षिपन्	५.	सेवकों को झिड़कता
नृप ।	१.	हे राजन् !	रुषा ॥	४.	क्रोध से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! हाथ में तलवार लेकर क्रोध से सेवकों को झिड़कता हुआ मुकुट और माला पहने हुये अभिमानी दुर्योधन अपने भाइयों के साथ वहाँ पर आया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स्थलेऽभ्यगृह्णाद् वस्त्रान्तं जलं मत्वा स्थलेऽपतत् ।
जले च स्थलवद् भ्रान्त्या मयमायाविमोहितः ॥३७॥

पदच्छेद— स्थले अभिअगृह्णाद्वस्त्र अन्तम् जलम् मत्वा स्थलेअपतत् ।
जले च स्थलवत् भ्रान्त्या मयमाया विमोहितः ॥

शब्दार्थ—

स्थले	७.	स्थल पर	जले	११.	जल में
अभिअगृह्णाद्	९.	समेट लिया	च	१०.	और
वस्त्रअन्तम्	८.	अपने वस्त्रों के छोर को	स्थलवत्	१२.	स्थल का
जलम्	५.	जल	भ्रान्त्या	१३.	भ्रम हो जाने से (उसमें)
मत्वा	६.	मानकर	मय	१.	मयदानव की
स्थले	४.	स्थल को	माया	२.	माया से
अपतत् ।	१४.	गिर पड़ा	विमोहितः ॥	३.	मोहित होकर (दुर्योधन)

श्लोकार्थ—मयदानव की माया से मोहित होकर दुर्योधन स्थल को जल मान कर स्थल पर अपने वस्त्रों को समेट लिया और जल में स्थल का भ्रम हो जाने से उसमें गिर पड़ा ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

जहास भीमस्तं दृष्ट्वा स्त्रियो नृपतयोऽपरे ।
निवार्यमाणा अप्यङ्ग राज्ञा कृष्णानुमोदिताः ॥३८॥

पदच्छेद— जहास भीमः तम् दृष्ट्वा स्त्रियः नृपतयः अपरे ।
निवार्यमाणाः अपि अङ्ग राज्ञा कृष्ण अनुमोदिताः ॥

शब्दार्थ—

जहास	१३.	हँस पड़े	निवार्यमाणाः	९.	रोके जाने पर
भीमः	४.	भीमसेन	अपि	१०.	भी
तम्	२.	वह	अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !
दृष्ट्वा	३.	देखकर	राज्ञा	८.	महाराज युधिष्ठिर के
स्त्रियः	५.	स्त्रियाँ और	कृष्ण	११.	श्रीकृष्ण का
नृपतयः	७.	राजा लोग	अनुमोदिताः ॥	१२.	अनुमोदन प्राप्त होने से
अपरे ।	६.	दूसरे			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वह देखकर भीमसेन, स्त्रियाँ और दूसरे राजा लोग महाराज युधिष्ठिर के रोके जाने पर भी श्रीकृष्ण का अनुमोदन प्राप्त होने से हंस पड़े ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

स व्रीडितोऽवाग्वदनो रुषा ज्वलन् निष्क्रम्य तूष्णीं प्रययौ गजाह्वयम् ।
हाहेति शब्दः सुमहानभूत् सतामजातशत्रुर्विमना इवाभवत् ।
बभूव तूष्णीं भगवान् भुवो भरं समुज्जिहीर्षुर्भ्रमति स्म यद्दृशा ॥३९॥

पदच्छेद—सः व्रीडितः अवाक्‌वदनः रुषा ज्वलन् निष्क्रम्य तूष्णीम् प्रययौ गजाह्वयम् ।
हाहाइति शब्दः सुमहान्‌अभूत सताम् अजात शत्रुः विमना इव अभवत् ॥
बभूव तूष्णीम् भगवान् भुवः भरम् सम् उत्‌जिहीर्षुः भ्रमतिस्म यत् दृशा ॥

शब्दार्थ—सः व्रीडितः	१.	दुर्योधन लज्जित हो गया	अजात शत्रुः	१०.	राजा युधिष्ठिर का
अवाक् वदनः	२.	वह मुँह लटकाकर	विमनाः	११.	मन उदास
रुषा ज्वलन्	३.	क्रोध से जलता हुआ	इव अभवत्	१२.	सा हो गया
निष्क्रम्य तूष्णीम्	४	चुपचाप निकलकर	बभूवतूष्णीम्	१४.	चुप ही रहे (क्योंकि)
प्रययौ	६.	चला गया	भगवान्	१३.	भगवान्
गजाह्वयम् ।	५	हस्तिनापुर	भुवः भरम्	१५.	पृथ्वी का भार
हाहा इति शब्दः	८.	हाहा इस प्रकार का शब्द	सम्‌उत्‌जिहीर्षुः	१६.	उतारने के इच्छुक
सुमहान् अभूत्	९.	होने लगा	भ्रमतिस्म	१८.	भ्रम हुआ था
सताम्	७.	सज्जनों में	यत् दृशा ॥	१७.	जिनकी दृष्टि से (दुर्योधन को)

श्लोकार्थ—दुर्योधन लज्जित हो गया। वह मुँह लटकाकर क्रोध से जलता हुआ चुपचाप निकलकर हस्तिनापुर चला गया। सज्जनों में हा-हा इस प्रकार का शब्द होने लगा। राजा युधिष्ठिर का मन उदास सा हो गया। भगवान् श्रीकृष्ण चुप ही रहे। क्योंकि पृथ्वी का भार उतारने के इच्छुक जिनकी दृष्टि से दुर्योधन को भ्रम हुआ था ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

एतत्तेऽभिहितं राजन् यत् पृष्टोऽहमिह त्वया ।
सुयोधनस्य दौरात्म्यं राजसूये महाक्रतौ ॥४०॥

पदच्छेद— एतत् ते अभिहितम् राजन् यत् पृष्टः अहम् इह त्वया ।
सुयोधनस्य दौरात्म्यम् राजसूये महाक्रतौ ॥

शब्दार्थ—एतत्	४.	यह	इह त्वया ।	२.	यहाँ तुमने
ते अभिहितम्	१०.	वह तुम्हें बता दिया	सुयोधनम्	८.	दुर्योधन को
राजन्	१.	हे राजन् !	दौरात्म्यम्	९.	जलन क्यों हुआ था
यत्‌पृष्टः	५.	जो पूछा था कि	राजसूये	६.	राज सूय
अहम्	३.	मुझसे	महाक्रतौ ॥	७.	यज्ञ में

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यहाँ तुमने मुझसे यह जो पूछा था कि राजसूय यज्ञ में दुर्योधन को जलन क्यों हुआ था, वह तुम्हें बता दिया ॥

श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
दुर्योधनमानभङ्गो नाम पञ्चसप्ततितमः अध्यायः ॥७५॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षट्सप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथान्यदपि कृष्णस्य शृणु कर्माद्भुतं नृप ।
क्रीडानरशरीरस्य यथा सौभपतिर्हतः ॥१॥

पदच्छेद— अथअन्यत् अपि कृष्णस्य शृणु कर्मअद्भुतम् नृप ।
क्रीडा नर शरीरस्य यथा सौभपतिः हृतः ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	अब	नृप ।	१.	हे राजन् !
अन्यत्	७.	एक और	क्रीडा	३.	लीला करने के इच्छुक
अपि	८.	भी	नर	४.	मनुष्य
कृष्णस्य	६.	भगवान् श्रीकृष्ण का	शरीरस्य	५.	शरीर धारण करने वाले
शृणु	११.	सुनो	यथा	१२.	जिस प्रकार
कर्म	१०.	कर्म	सौभपतिः	१३.	सौभनामक विमान का स्वामी शाल्व
अद्भुतम्	९.	अद्भुत	हृतः ॥	१४.	मारा गया था

श्लोकार्थ—हे राजन् ! अब लीला करने के इच्छुक, मनुष्य शरीर धारण करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण का एक और भी अद्भुतकर्म सुनो । जिस प्रकार सौभनामक विमान का स्वामी शाल्व मारा गया था ॥

द्वितीयः श्लोकः

शिशुपालसखः शाल्वो रुक्मिण्युद्वाह आगतः ।
यदुभिर्निर्जितः संख्ये जरासन्धादयस्तथा ॥२॥

पदच्छेद— शिशुपाल सखः शाल्वः रुक्मिणी उद्वाहे आगतः ।
यदुभिः निर्जितः संख्ये जरासन्ध आदयः तथा ॥

शब्दार्थ—

शिशुपाल	३.	शिशुपाल का	यदुभिः	९.	यदुवंशियों के द्वारा
सखः	४.	मित्र	निर्जितः	१२.	जीत लिया गया था
शाल्वः	५.	शाल्व	संख्ये	८.	युद्ध में
रुक्मिणी	१.	रुक्मणी के	जरासन्ध	१०.	जरासन्ध
उद्वाहे	२.	विवाह में	आदयः	११.	आदि के साथ
आगतः ।	६.	आया था	तथा ॥	७.	और जिसे

श्लोकार्थ—रुक्मिणी के विवाह में शिशुपाल का मित्र शाल्व आया था । और जिसे युद्ध में यदुवंशियों के द्वारा जरासन्ध आदि के साथ जीत लिया गया था ॥

तृतीयः श्लोकः

शाल्वः प्रतिज्ञामकरोत् शृण्वतां सर्वभूभुजाम् ।
अयादवीं क्ष्मां करिष्ये पौरुषं मम पश्यत ॥३॥

पदच्छेद— शाल्वः प्रतिज्ञाम् अकरोत् शृण्वताम् सर्व भूभुजाम् ।
अयादवीम् क्ष्मामकरिष्ये पौरुषम् मम पश्यत ॥

शब्दार्थ—

शाल्वः	४.	शाल्व ने	अयादवीम्	८.	यदुवंशियों से शून्य
प्रतिज्ञाम्	५.	प्रतिज्ञा	क्ष्माम्	७.	पृथ्वी को
अकरोत्	६.	की थी कि मैं	करिष्ये	९.	कर दूँगा
शृण्वताम्	३.	सुनाकर	पौरुषम्	११.	बल-पौरुष
सर्व	१.	उस समय सभी	मम	१०.	मेरा
भूभुजाम् ।	२.	राजाओं को	पश्यत ॥	१२.	देखना

श्लोकार्थ—उस समय सभी राजाओं को सुनाकर शाल्व ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं पृथ्वी को यदुवंशियों से शून्य कर दूँगा । मेरा बल-पौरुष देखना ॥

चतुर्थः श्लोकः

इति मूढः प्रतिज्ञाय देवं पशुपतिं प्रभुम् ।
आराधयामास नृप पांसुमुष्टिं सकृद् ग्रसन् ॥४॥

पदच्छेद— इति मूढः प्रतिज्ञाय देवम् पशुपतिम् प्रभुम् ।
आराधयामास नृप पांसु मुष्टिम् सकृत् ग्रसन् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	आराधयामास	१२.	आराधना करने लगा
मूढः	२.	मूर्ख (शाल्व ने)	नृप	१.	हे परीक्षित् !
प्रतिज्ञाय	४.	प्रतिज्ञा करके	पांसु	७.	राख का
देवम्	११.	महादेव की	मुष्टिम्	६.	एक मुट्ठी
पशुपतिम्	१०.	पशुपति	सकृत्	५.	केवल एक बार
प्रभुम् ।	९.	प्रभु	ग्रसन् ॥	८.	आहार करता हुआ

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! मूर्ख शाल्व ने इस प्रकार प्रतिज्ञा करके केवल एक बार एक मुट्ठी राख का आहार करता हुआ प्रभु-पशुपति महादेव की आराधना करने लगा ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

संवत्सरान्ते भगवानशुतोष उमापतिः ।
वरेणच्छन्दयामास शाल्वं शरणमागतम् ॥५॥

पदच्छेद— संवत्सर अन्ते भगवान् आशुतोषः उमापतिः ।
वरेण छन्दयामास शाल्वम् शरणम् आगतम् ॥

शब्दार्थ—

संवत्सर	४.	एक वर्ष के	वरेण	९.	वर
अन्ते	५.	अन्त में	छन्दयामास	१०.	माँगने को कहा
भगवान्	३.	भगवान् शिव ने	शाल्वम्	८.	शाल्व से
आशुतोषः	१.	शीघ्र प्रसन्न होने वाले	शरणम्	६.	शरण में
उमापतिः ।	२.	गौरी पति	आगतम् ॥	७.	आये हुये

श्लोकार्थ— शीघ्र प्रसन्न होने वाले गौरी पति भगवान् शिव ने एक वर्ष के अन्त में शरण में आये हुये शाल्व से वर माँगने को कहा ॥

षड्विंशः श्लोकः

देवासुरमनुष्याणां गन्धर्वोरगरक्षसाम् ।
अभेद्यं कामगं वव्रे स यानं वृष्णिभीषणम् ॥६॥

पदच्छेद— देव असुर मनुष्याणाम् गन्धर्वः उरग रक्षसाम् ।
अभेद्यम् कामगम् वव्रे सः यानम् वृष्णि भीषणम् ॥

शब्दार्थ—

देव	१.	देवता	अभेद्यम्	८.	न तोड़ा जाने योग्य
असुर	२.	असुर	कामगम्	७.	इच्छानुसार चलने वाला
मनुष्याणाम्	३.	मनुष्य	वव्रे	१२.	वर माँगा
गन्धर्व	४.	गन्धर्व	सः	११.	उसने
उरग	५.	नाग और	यानम्	९.	विमान
रक्षसाम् ।	६.	राक्षसों में	वृष्णिभीषणम् ॥	१०.	यदुवंशियों के लिये भयानक

श्लोकार्थ— देवता, असुर, मनुष्य, गन्धर्व, नाग और राक्षसों से न तोड़ा जाने योग्य, इच्छानुसार चलने वाला और यदुवंशियों के लिये भयानक विमान उसने माँगा ॥

सप्तमः श्लोकः

तथेति गिरिशादिष्टो मयः परपुरञ्जयः ।
पुरं निर्माय शाल्वाय प्रादात्सौभमयस्मयम् ॥७॥

पदच्छेद— तथा इति गिरिश आदिष्टः मयः पर पुरञ्जयः ।
पुरम् निर्माय शाल्वाय प्रादात् सौभम् अयस्मयम् ॥

शब्दार्थ—

तथा	१. तथा	पुरम्	१०. विमान
इति	२. अस्तु यह	निर्माय	११. बनाकर
गिरिश	३. शङ्कर का	शाल्वाय	१२. शाल्व को
आदिष्टः	४. आदेश मिलने पर	प्रादात्	१३. दे दिया
मयः	७. मय दानव ने	सौभम्	८. सौभ नामक
पर	५. शत्रु के	अयस्मयम् ॥	९. लोहे का
पुरञ्जयः ।	६. नगर को जीतने वाले		

श्लोकार्थ—तथा अस्तु यह शङ्कर का आदेश मिलने पर शत्रु के नगर को जीतने वाले मय दानव ने सौभ नामक लोहे का विमान बनाकर शाल्व को दे दिया ॥

अष्टमः श्लोकः

स लब्ध्वा कामगं यानं तमोधाम दुरासदम् ।
ययौ द्वारवतीं शाल्वो वैरं वृष्णिकृतं स्मरन् ॥८॥

पदच्छेद— सः लब्ध्वा कामगम् यानम् तमोधाम दुरासदम् ।
ययौ द्वारवतीम् शाल्वः वैरं वृष्णि कृतम् स्मरन् ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उस	ययौ	१२. यात्रा की
लब्ध्वा	७. पाकर	द्वारवतीम्	११. द्वारकापुरी की
कामगम्	३. इच्छानुसार चलने वाला	शाल्वः	२. शाल्व ने
यानम्	६. विमान	वैरम्	९. वैर का
तमोधाम	४. अन्धकार मय	वृष्णिकृतम्	८. वृष्णि वंशियों द्वारा किये गये
दुरासदम् ।	५. बड़ी कठिनाई से पाने योग्य	स्मरन् ॥	१०. स्मरण करते हुये

श्लोकार्थ—उस शाल्व ने इच्छानुसार चलने वाला अन्धकार मय बड़ी कठिनाई से पाने योग्य विमान पाकर वृष्णि वंशियों द्वारा किये गये वैर का स्मरण करते हुये द्वारका पुरी की यात्रा की ॥

नवमः श्लोकः

निरुद्ध्य सेनया शाल्वो महत्या भरतर्षभ ।
पुरीं बभञ्जोपवनान्युद्यानानि च सर्वशः ॥९॥

पदच्छेद— निरुद्ध्य सेनया शाल्वः महत्या भरतर्षभ ।
पुरीम् बभञ्ज उपवनानि उद्यानानि च सर्वशः ॥

शब्दार्थ—

निरुद्ध्य	६.	घेर कर	पुरीम्	५.	द्वारकापुरी को
सेनया	४.	सेना के द्वारा	बभञ्ज	१०.	नष्ट-भ्रष्ट करने लगा
शाल्वः	२.	शाल्व	उपवनानि	७.	उपवनों
महत्या	३.	महान्	उद्यानानि च	८.	और उद्यानों को
भरतर्षभ ।	१.	हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ !	सर्वशः ॥	९.	सब ओर से

श्लोकार्थ—हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ ! शाल्व महान् सेना के द्वारा द्वारकापुरी को घेर कर उपवनों और उद्यानों को सब ओर से नष्ट-भ्रष्ट करने लगा ॥

दशमः श्लोकः

सगोपुराणि द्वाराणि प्रासादाट्टालतोलिकाः ।
विहारान् स विमानाग्र्यान्निपेतुः शस्त्रवृष्टयः ॥१०॥

पदच्छेद— सगोपुराणि द्वाराणि प्रासाद अट्टाल तोलिकाः ।
विहारान् सः विमान अग्र्यात् निपेतुः शस्त्रवृष्टयः ॥

शब्दार्थ—

सगोपुराणि	२.	फाटकों	विहारान्	७.	विनोद के स्थानों का उजाड़ने लगा
द्वाराणि	३.	नगर के द्वारों	सः	१.	वह
प्रासाद	४.	राजमहलों	विमान	९.	विमान से
अट्टाल	५.	अटारियों	अग्र्यात्	८	उस श्रेष्ठ
तोलिकाः ।	६.	दीवारों तथा	निपेतुः	११.	होने लगी
			शस्त्रवृष्टयः ॥	१०.	शस्त्रों की वर्षा

श्लोकार्थ— वह फाटकों, नगर के द्वारों, राजमहलों, अटारियों, दीवारों तथा विनोद के स्थानों को उजाड़ने लगा । उस श्रेष्ठ विमान से शस्त्रों की वर्षा होने लगी ॥

एकादशः श्लोकः

शिला द्रुमाश्चाशनयः सर्पा आसारशर्कराः ।
प्रचण्डश्चक्रवातोऽभूद् रजसाऽऽच्छादिता दिशः ॥११॥

पदच्छेद— शिलाः द्रुमाः च अशनयः सर्पाः आसार शर्कराः ।
प्रचण्ड चक्रवातः अभूत् रजसा आच्छादिताः दिशः ॥

शब्दार्थ—

शिलाः	१. चट्टानें	प्रचण्ड	७. बड़े जोर का
द्रुमाः च	२ वृक्ष और	चक्रवातः	८. ववन्डर
अशनयः	३. वज्र	अभूत्	९. उठ खड़ा हुआ (तथा)
सर्पाः	४. साँप तथा	रजसा	११. धूल से
आसार	६. बरसने लगे	आच्छादिताः	१२. ढक गईं
शर्कराः ।	५. ओले	दिशः ॥	१०. दिशायें

श्लोकार्थ—चट्टानें, वृक्ष और वज्र, साँप तथा ओले बरसने लगे । बड़े जोर का ववन्डर उठ खड़ा हुआ । तथा दिशायें धूल से ढक गईं ॥

द्वादशः श्लोकः

इत्यर्द्यमाना सौभेन कृष्णस्य नगरी भृशम् ।
नाभ्यपद्यत शं राजंस्त्रिपुरेण यथा मही ॥१२॥

पदच्छेद— इति अर्द्यमाना सौभेन कृष्णस्य नगरी भृशम् ।
न अभ्यपद्यत शम् राजन् त्रिपुरेण यथा मही ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	न अभ्यपद्यत	९. नहीं पा रही थी
अर्द्यमानाः	५. पीडित की जाती हुई	शम्	८ शान्ति
सौभेन	३. सौभ विमान के द्वारा	राजन्	१. हे परीक्षित् !
कृष्णस्य	६. भगवान् श्रीकृष्ण की	त्रिपुरेण	११. त्रिपुरासुर के द्वारा
नगरी	७. नगरी (उसी प्रकार)	यथा	१०. जिस प्रकार
भृशम् ।	४. अत्यन्त	महीम् ॥	१२. पृथ्वी शान्ति को नहीं पा रही थी

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार सौभ विमान के द्वारा अत्यन्त पीडित की जाती हुई भगवान् श्रीकृष्ण की नगरी उसी प्रकार शान्ति नहीं पा रही थी, जिस प्रकार त्रिपुरासुर के द्वारा पृथ्वी शान्ति नहीं पा रही थी ॥

त्रयोदशः श्लोकः

प्रद्युम्नो भगवान् वीक्ष्य बाध्यमाना निजाः प्रजाः ।
मा भैष्टेत्यभ्यधाद् वीरो रथारूढो महायशाः ॥१३॥

पदच्छेद— प्रद्युम्नः भगवान् वीक्ष्य बाध्यमानाः निजाः प्रजाः ।
मा भैष्ट इति अभ्यधात् वीरः रथ आरूढः महायशाः ॥

शब्दार्थ—

प्रद्युम्नः	८.	प्रद्युम्न ने	मा	११.	मत
भगवान्	७.	भगवान्	भैष्ट इति	१२.	डरो
वीक्ष्य	४.	देखकर	अभ्यधात्	१०.	कहा कि
बाध्यमानाः	३.	पीडित होती हुई	वीरः	६.	वीर
निजाः	१.	अपनी	रथ आरूढः	९.	रथ पर सवार होकर
प्रजाः ।	२.	प्रजाओं को	महायशाः ॥	५.	परम यशस्वी

श्लोकार्थ—अपनी प्रजाओं को पीडित होती हुई देखकर परम यशस्वी वीर भगवान् प्रद्युम्न रथ पर सवार होकर कहा कि मत डरो ॥

चतुर्दशः श्लोकः

सात्यकिश्चारुदेष्णश्च साम्बोऽक्रूरः सहानुजः ।
हार्दिक्यो भानुविन्दश्च गदश्च शुकसारणौ ॥१४॥

पदच्छेद— सात्यकिः चारुदेष्णः च साम्बः अक्रूरः सहअनुजः ।
हार्दिक्यः भानुविन्दः च गदः च शुकसारणौ ॥

शब्दार्थ—

सात्यकिः	१.	सात्यकि	हार्दिक्यः	७.	हार्दिक्य
चारुदेष्णः च	२.	चारुदेष्ण और	भानुविन्दः	८.	भानुविन्द
साम्बः	३.	साम्ब	च	९.	और
अक्रूरः	६.	अक्रूर	गदः च	१०.	गद
सह	५.	साथ	शुक	११.	शुक और
अनुजः ।	४.	भाइयों के	सारणौ ॥	१२.	सारण (प्रद्युम्न के साथ चल पड़े)

श्लोकार्थ—सात्यकि, चारुदेष्ण और भाइयों के साथ अक्रूर, हार्दिक्य, भानुविन्द और गद, शुक और सारण प्रद्युम्न के साथ चल पड़े ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अपरे च महेष्वासा रथयूथपयूथपाः ।
निर्ययुर्दंशिता गुप्ता रथेभाश्वपदातिभिः ॥१५॥

पदच्छेद— अपरे च महेष्वासाः रथ यूथप यूथपाः ।
निर्ययुः दंशिताः गुप्ताः रथ इभ अश्वपदातिभिः ।।

शब्दार्थ—

अपरे	१.	दूसरे भी	निर्ययुः	१०.	निकल पड़े
च	६.	और	दंशिताः	२.	कवच पहने हुये
महेष्वासाः	७.	धनुर्धर	गुप्ताः	५.	सुरक्षित
रथयूथप	८	महारथी एवं	रथ इभ	३	रथ-हाथी
यूथपाः ।	९.	सेनापति (प्रद्युम्न के साथ)	अश्वपदातिभिः।।४.		घोड़े और पैदल सेना से

श्लोकार्थ—दूसरे भी कवच पहने हुये रथ, हाथी, घोड़े और पैदल सेना से सुरक्षित और धनुर्धर महारथी एवम् सेनापति प्रद्युम्न के साथ निकल पड़े ।।

षोडशः श्लोकः

ततः प्रववृते युद्धं शाल्वानां यदुभिः सह ।
यथासुराणां विबुधैस्तुमुलं लोमहर्षणम् ॥१६॥

पदच्छेद — ततः प्रववृते युद्धम् शाल्वानाम् यदुभिः सह ।
यथा असुराणाम् विबुधैः तुमुलम् लोमहर्षणम् ।।

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	यथा	७.	जैसे (पूर्वकाल में)
प्रववृते	६.	होने लगा	असुराणाम्	८.	असुरों का
युद्धम्	५.	युद्ध	विबुधैः	९.	देवताओं के साथ
शाल्वानाम्	२	शाल्व के सैनिकों का	तुमुलम्	११.	घमासान युद्ध हुआ था
यदुभिः	३.	यदुवंशियों के	लोमहर्षणम् ।।	१०.	रोमाञ्चकारी
सह ।	४.	साथ			

श्लोकार्थ—इसके बाद शाल्व के सैनिकों का यदुवंशियों के साथ युद्ध होने लगा, जैसे पूर्वकाल में असुरों का देवताओं के साथ रोमाञ्चकारी घमासान युद्ध हुआ था ।

सप्तदशः श्लोक

ताश्च सौभपतेर्माया दिव्यास्त्रै रुक्मिणीसुतः ।
क्षणेन नाशयामास नैशं तम इवोष्णगुः ॥१७॥

पदच्छेद - ताः च सौभपतेः माया दिव्य अस्त्रैः रुक्मिणी सुतः ।
क्षणेन नाशयामास नैशम् तमः इव उष्णगुः ॥

शब्दार्थ—

ताः च	७.	उस	क्षणेन	५.	क्षणभर में
सौभपतेः	६.	सौभपति (शाल्व की)	नाशयामास	६.	नष्ट कर दिया
माया	८.	माया के (अस्त्रों को)	नैशम्	१२.	रात्रि के
दिव्य	३.	दिव्य	तमः	१३.	अन्धकार नष्ट कर देते हैं
अस्त्रैः	४.	अस्त्रों से	इव	१०.	जैसे
रुक्मिणी	१.	रुक्मिणी के	उष्णगुः ॥	११.	सूर्य
सुतः ।	२.	पुत्र (प्रद्युम्न ने)			

श्लोकार्थ—रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न ने दिव्य अस्त्रों से क्षण भर में सौभपति शाल्व को उस माया के अस्त्रों को नष्ट कर दिया। जैसे सूर्य रात्रि के अन्धकार को नष्ट कर देते हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

विव्याध पञ्चविंशत्या स्वर्णपुङ्खैरयोमुखैः ।
शाल्वस्य ध्वजिनीपालं शरैः सन्नतपर्वभिः ॥१८॥

पदच्छेद— विव्याध पञ्चविंशति स्वर्ण पुङ्खैः अयोमुखैः ।
शाल्वस्य ध्वजिनीपालम् शरैः सन्नत पर्वभिः ॥

शब्दार्थ—

विव्याध	१०.	बेध दिया	शाल्वस्य	८.	शाल्व के
पञ्चविंशति	६.	पच्चीस	ध्वजिनीपालम्	९.	सेनापति को
स्वर्ण	१.	सोने के	शरैः	७.	बाणों से
पुङ्खैः	२.	पङ्ख एवम्	सन्नत	४.	छिपी हुई
अयोमुखैः ।	३.	लोहे के फल वाले और	पर्वभिः ॥	५.	गाँठों वाले

श्लोकार्थ—प्रद्युम्न ने सोने के पङ्ख वाले एवम् लोहे के फल वाले और छिपी हुई गाँठों वाले पच्चीस बाणों से शाल्व के सेनापति को बेध दिया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

शतेनाताडयच्छाल्वमेकैकेनास्य सैनिकान् ।
दशभिर्दशभिर्नेतॄन् वाहनानि त्रिभिस्त्रिभिः ॥१९॥

पदच्छेद— शतेन अताडयत् शाल्वम् एकैकेन अस्य सैनिकान् ।
दशभिः दशभिः नेतॄन् वाहनानि त्रिभिः त्रिभिः ॥

शब्दार्थ—

शतेन	१.	सौ बाणों से	दशभिः	६.	दस
अताडयत्	१२.	आहत किया	दशभिः	७.	दस से
शाल्वम्	२.	शाल्व को	नेतॄन्	८.	सारथियों को और
एकैकेन	३.	एक-एक से	वाहनानि	११.	वाहनों को
अस्य	४.	उसके	त्रिभिः	९.	तीन
सैनिकान् ।	५.	सैनिकों को	त्रिभिः ॥	१०.	तीन से

श्लोकार्थ—सौ बाणों से शाल्व को, एक एक से उसके सैनिकों को, दस-दस से सारथियों को और तीन-तीन से वाहनों को आहत किया ॥

विंशः श्लोकः

तदद्भुतं महत् कर्म प्रद्युम्नस्य महात्मनः ।
दृष्ट्वा तं पूजयामासुः सर्वे स्वपरसैनिकाः ॥२०॥

पदच्छेद— तत् अद्भुतम् महत् कर्म प्रद्युम्नस्य महात्मनः ।
दृष्ट्वा तम् पूजयामासुः सर्वे स्वपर सैनिकाः ॥

शब्दार्थ—

तत्	३.	वह	दृष्ट्वा	७.	देखकर
अद्भुतम्	४.	अद्भुत (और)	तम्	११.	उनकी
महत्	५.	महान्	पूजयामासुः	१२.	प्रशंसा
कर्म	६.	कर्म	सर्वे	१०.	सभी
प्रद्युम्नस्य	२.	प्रद्युम्न का	स्वपर	८.	अपने और पराये
महात्मनः ।	१.	महात्मा	सैनिकाः ॥	९.	सैनिक

श्लोकार्थ—महात्मा प्रद्युम्न का वह अद्भुत और महान् कर्म देखकर अपने और पराये सैनिक सभी उनकी प्रशंसा करने लगे ॥

एकविंशः श्लोकः

बहुरूपैकरूपं तद् दृश्यते न च दृश्यते ।
मायामयं मयकृतं दुर्विभाव्यं परैरभूत् ॥२१॥

पदच्छेद बहुरूप एक रूपम् तत् दृश्यते न च दृश्यते ।
माया मयम् मय कृतम् दुर्विभाव्यम् परैः अभूत् ॥

शब्दार्थ—

बहुरूप	६.	कभी अनेक रूपों में	मायामयम्	२.	मायामय
एक रूपम्	५.	कभी एक रूप में तो	मय	१.	मय दानव का
तत्	४.	वह विमान	कृतम्	३.	बनाया हुआ
दृश्यते	७.	दिखाई पड़ता था (और)	दुर्विभाव्यम्	११.	अति दुर्लभ
न च	८.	कभी नहीं भी	परैः	१०.	दूसरों के लिये
दृश्यते ।	९.	दिखाई देता था	अभूत् ॥	१२.	था

श्लोकार्थ—मय दानव का बनाया हुआ मायामय वह विमान कभी एक रूप में तो कभी अनेक रूपों में दिखाई पड़ता था। और कभी नहीं भी दिखाई देता था। दूसरों के लिये वह अतिदुर्लभ था ॥

द्वाविंशः श्लोकः

क्वचिद् भूमौ क्वचिद् व्योम्नि गिरिमूर्ध्नि जले क्वचित् ।
अलातचक्रवद् भ्राम्यत् सौभं तद् दुरवस्थितम् ॥२२॥

पदच्छेद— क्वचित् भूमौ क्वचित् व्योम्नि गिरि मूर्ध्नि जले क्वचित् ।
अलात चक्रवत् भ्राम्यत् सौभम् तत् दुरवस्थितम् ॥

शब्दार्थ—

क्वचित्	१.	कहीं	अलात	७.	अलात
भूमौ	२.	भूमि पर	चक्रवत्	८.	चक्र के समान
क्वचित्	३.	कहीं	भ्राम्यत्	९.	घूमता हुआ
व्योम्नि	४.	आकाश में	सौभम्	११.	सौभ विमान कहीं
गिरिमूर्ध्नि	५.	पर्वत शिखर पर और	तत्	१०.	वह
जले क्वचित् ।	६.	कहीं जल में	दुरवस्थितम् ॥	१२.	ठहरता नहीं था

श्लोकार्थ—कहीं भूमि पर कहीं आकाश में, पर्वत शिखर पर और कहीं जल में अलात चक्र के समान घूमता हुआ वह सौभ विमान कहीं ठहरता नहीं था ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

यत्र यत्रोपलक्ष्येत ससौभः सहसैनिकः ।
शाल्वस्ततस्ततोऽमुञ्चन् शरान् सात्वतयूथपाः ॥२३॥

पदच्छेद— यत्र-यत्र उपलक्ष्येत ससौभः सहसैनिकः ।
शाल्वः ततः ततः अमुञ्चन् शरान् सात्वत यूथपाः ॥

शब्दार्थ—

यत्र-यत्र	५. जहाँ-जहाँ	शाल्वः	१. शाल्व
उपलक्ष्येत	६. दिखायी पड़ता	ततः ततः	७. वहीं-वहीं
ससौभः	२. सौभ और	अमुञ्चन्	११. छोड़ देते थे
सह	४. साथ	शरान्	१०. बाणों को
सैनिकः ।	३. सैनिकों के	सात्वतः	८. यदुवंशी
		यूथपाः ॥	९. सेनापति

श्लोकार्थ—शाल्व सौभ और सैनिकों के साथ जहाँ-जहाँ दिखाई पड़ता वहीं-वहीं यदुवंशी सेनापति बाणों को छोड़ देते थे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

शरैरग्न्यर्कसंस्पर्शैराशीविषदुरासदैः ।
पीड्यमानपुरानीकः शाल्वोऽमुह्यत् परेरितैः ॥२४॥

पदच्छेद— शरैः अग्नि अर्क संस्पर्शैः आशीविष दुरासदैः ।
पीड्यमान पुरअनीकः शाल्वः अमुह्यत् परईरितैः ॥

शब्दार्थ—

शरैः	८. बाणों से	पीड्यमान	९. पीड़ित होते हुये
अग्नि	३. अग्नि और	पुरअनीकः	१०. नगर और सेना वाला
अर्क	४. सूर्य के समान	शाल्वः	११. शाल्व
संस्पर्शैः	५. जलते हुये (तथा)	अमुह्यत्	१२. मूर्च्छित
आशीविष	६. साँपों के समान	पर	१. शत्रु के द्वारा
दुरासदैः ।	७. असह्य	ईरितैः ॥	२. प्रेरित

श्लोकार्थ—शत्रु के द्वारा प्रेरित अग्नि और सूर्य के समान जलते हुये तथा साँपों के समान असह्य बाणों से पीड़ित होते हुये नगर और सेनावाला शाल्व मूर्च्छित हो गया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

शाल्वानीकपशस्त्रौघैर्वृष्णिवीरा भृशार्दिताः ।
न तत्यजू रणं स्वं स्वं लोकद्वयजिगीषवः ॥२५॥

पदच्छेद— शाल्व अनीकप शस्त्र ओघैः वृष्णिवीराः भृश अर्दिताः ।
न तत्यजुः रणम् स्वम्-स्वम् लोकद्वय जिगीषवः ॥

शब्दार्थ—

शाल्व	१. शाल्व के	न	११. नहीं
अनीकप	२. सेनापतियों के	तत्यजुः	१२. छोड़ा
शस्त्र	३. शस्त्र	रणम्	१०. मोर्चा
ओघैः	४. समूहों से	स्वम्-स्वम्	९. अपना-अपना
वृष्णिवीराः	६. यदुवंशियों ने	लोकद्वय	७. दोनों लोक
भृश अर्दिताः ।	५. अत्यन्त पीडित	जिगीषवः ॥	८. जीतने की इच्छा से

श्लोकार्थ—शाल्व के सेनापतियों के शस्त्र, समूहों से अत्यन्त पीडित यदुवंशियों ने दोनों लोक जीतने की इच्छा से अपना-अपना मोर्चा नहीं छोड़ा ॥

षड्विंशः श्लोकः

शाल्वामात्यो द्युमान् नाम प्रद्युम्नं प्राक् प्रपीडितः ।
आसाद्य गदया मौर्व्या व्याहत्य व्यनदद् बली ॥२६॥

पदच्छेद— शाल्व अमात्यः द्युमान् नाम प्रद्युम्नम् प्राक् प्रपीडितः ।
आसाद्य गदया मौर्व्या व्याहत्य व्यनदत् बली ॥

शब्दार्थ—

शाल्व	१. शाल्व का	आसाद्य	९. झपट कर
अमात्यः	५. मंत्री	गदया	११. गदा से
द्युमान्	२. द्युमान्	मौर्व्या	१०. फौलादी
नाम	३. नामक	व्याहत्य	१२. प्रहार करके
प्रद्युम्नम्	८. प्रद्युम्न पर	व्यनदत्	१३. गरजने लगा
प्राक्	६. जिसे पहले (प्रद्युम्न ने)	बली ॥	४. बलवान्
प्रपीडितः ।	७. पीडित किया था		

श्लोकार्थ—शाल्व का द्युमान् नामक बलवान् मंत्री जिसे पहले प्रद्युम्न ने पीडित किया था, प्रद्युम्न पर झपटकर फौलादी गदा से प्रहार करके गरजने लगा ॥

सप्तविंशः श्लोकः

प्रद्युम्नं गदया शीर्णवक्षः स्थलमरिन्दमम् ।
अपोवाह रणात् सूतो धर्मविद् दारुकात्मजः ॥२७॥

पदच्छेद— प्रद्युम्नम् गदया शीर्ण वक्षःस्थलम् अरिन्दमम् ।
अपोवाह रणात् सूतः धर्मवित् दारुक आत्मजः ॥

शब्दार्थ—

प्रद्युम्नम्	५. प्रद्युम्न को	उवाह	१०. हटा ले गया
गदया	१. गदा की चोट से	रणात् सूतः	९. सारथि युद्ध से
शीर्ण	२. फटे हुये	धर्मवित्	८. धर्म वेत्ता
वक्षःस्थलम्	३. वक्षःस्थल वाले	दारुक	६. दारुक का
अरिन्दमम् ।	४. शत्रुदमनकारी	आत्मजः ॥	७. पुत्र

श्लोकार्थ—गदा की चोट से फटे हुये वक्षःस्थल वाले शत्रुदमनकारी प्रद्युम्न को दारुक का पुत्र धर्मवेत्ता सारथि युद्ध से हटा ले गया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

लब्धसंज्ञो मुहूर्तेन कार्ष्णिः सारथिमब्रवीत् ।
अहो असाध्विदं सूत यद् रणान्मेऽपसर्पणम् ॥२८॥

पदच्छेद— लब्धसंज्ञः मुहूर्तेन कार्ष्णिः सारथिम् अब्रवीत् ।
अहो असाधुइदम् सूत यत् रणात् मे अपसर्पणम् ॥

शब्दार्थ—

लब्धसंज्ञः	२. चेतना प्राप्त होने पर	असाधु	९. तूने बुरा किया
मुहूर्तेन	१. दो घड़ी में	इदम्	८. यह
कार्ष्णिः	३. प्रद्युम्न ने	सूत	७. सारथि
सारथिम्	४. सारथि से	यत्	१०. जो
अब्रवीत्	५. कहा	रणात् मे	११. मुझे रण से
अहो	६. ओह	अपसर्पणम् ॥	१२. हटा लाया

श्लोकार्थ—दो घड़ी में चेतना प्राप्त होने पर प्रद्युम्न ने सारथि से कहा—ओह ! सारथि, यह तूने बुरा किया । जो मुझे रण से हटा लाया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

न यदूनां कुले जातः श्रूयते रणविच्युतः ।
विना मत् क्लीबचित्तेन सूतेन प्राप्तकिल्बिषात् ॥२९॥

पदच्छेद— न यदूनाम् कुले जातः श्रूयते रण विच्युतः ।
बिना मत् क्लीब चितेन सूतेन प्राप्त किल्बिविषात् ॥

शब्दार्थ—

न	११.	नहीं	बिना	७.	सिवाय
यदूनाम्	८.	यदु	मत्	६.	मेरे
कुले	९.	वंश में	क्लीब	१.	नपुंसक
जातः	१०.	उत्पन्न ऐसा कोई	चित्तेन	२.	चित्त वाले
श्रूयते	१२.	सुना जाता है जो	सूनेन	३.	सारथि के द्वारा
रण	१३.	रण छोड़ कर	प्राप्त	५.	प्राप्त किये हुये
विच्युतः ।	१४.	भाग गया हो	किल्बिविषात् ॥	४.	पाप

श्लोकार्थ—नपुंसक चित्त वाले सारथि के द्वारा पाप प्राप्त किये हुये मेरे सिवाय यदुवंश में उत्पन्न कोई नहीं सुना जाता है जो रण छोड़कर भाग गया हो ॥

त्रिंशः श्लोकः

किं नु वक्ष्येऽभिसङ्गम्य पितरौ रामकेशवौ ।
युद्धात् सम्यगपक्रान्तः पृष्टस्तत्रात्मनः क्षमम् ॥३०॥

पदच्छेद— किम् नु वक्ष्ये अभिसङ्गम्य पितरौ राम केशवौ ।
युद्धात् सम्यक् अपक्रान्तः पृष्टः तत्र आत्मनः क्षमम् ॥

शब्दार्थ—

किम् नु	११.	क्या	युद्धात्	१.	युद्ध से
वक्ष्ये	१२.	कहूँगा	सम्यक्	२.	अच्छी तरह
अभिसङ्गम्य	९.	सामने जाकर	अपक्रान्तः	३.	भागा हुआ
पितरौ	६.	दोनों पिता	पृष्टः	५.	पूछा जाने पर
राम	७.	बलराम जी और	तत्र	४.	वहाँ उनके द्वारा
केशवौ ।	८.	श्रीकृष्ण के	आत्मनः क्षमम् ॥	१०.	अपने अनुरूप

श्लोकार्थ—युद्ध से अच्छी तरह भागा हुआ मैं उनके द्वारा पूछा जाने पर दोनों पिता बलराम/ जी और श्रीकृष्ण के सामने जाकर अपने अनुरूप क्या कहूँगा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

व्यक्तं मे कथयिष्यन्ति हसन्त्यो भ्रातृजामयः ।
क्लैब्यं कथं कथं वीर तवान्यैः कथ्यतां मृधे ॥३१॥

पदच्छेद— व्यक्तम् मे कथयिष्यन्ति हसन्त्यः भ्रातृ जामयः ।
क्लैब्यम् कथम्-कथम् वीर तवअन्यैः कथ्यताम् मृधे ॥

शब्दार्थ—

व्यक्तम्	४.	साफ-साफ	कथम्	१३.	कैसे दिखा दिया
मे	१.	मेरी	वीर	७.	वीर
कथयिष्यन्ति	५	कहेंगी कि	तव	११.	तुम को
हसन्त्यः	३.	हँसती हुई (मुझ से)	अन्यैः	१२.	दूसरों ने नीचा
भ्रातृ जामयः ।	२.	भाभियाँ	कथ्यताम्	६.	कहो
क्लैब्यम्	८.	(तुम में) नपुंसकता	मृधे ॥	१०.	युद्ध में
कथम्	९.	कैसे आ गई			

श्लोकार्थ—मेरी भाभियाँ हँसती हुई मुझसे साफ-साफ कहेंगी कि कहो वीर ! तुममें नपुंसकता कैसे आ गई । युद्ध में तुमको दूसरों ने नीचा कैसे दिखा दिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

सारथिरुवाच—धर्मं विजानताऽऽयुष्मन् कृतमेतन्मया विभो ।
सूतः कृच्छ्रगतं रक्षेद् रथिनं सारथिं रथी ॥३२॥

पदच्छेद— धर्मं विजानता आयुष्मन् कृतम् एतद् मया विभो ।
सूतः कृच्छ्र गतम् रक्षेद् रथिनम् सारथिम् रथी ॥

शब्दार्थ—

धर्मं	२.	धर्म को	सूतः	९.	सारथी
विजानता	३.	जानते हुये	कृच्छ्र	७.	संकट
आयुष्मन्	१.	हे आयुष्मन् !	गतम्	८.	पड़ने पर
कृतम्	५.	किया है	रक्षेद्	११.	रक्षा करे
एतद् मया	४.	मैंने यह	रथिनम्	१०.	रथी की
विभो ।	६.	हे प्रभो !	सारथिम् रथी ॥	१२.	रथी सारथी की रक्षा करे

श्लोकार्थ—हे आयुष्मन् ! धर्म को जानते हुये मैंने यह किया है । हे प्रभो ! संकट पड़ने पर सारथी रथी की रक्षा करे और रथी सारथी की रक्षा करे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

एतद् विदित्वा तु भवान् मयापोवाहितो रणात् ।
उपसृष्टः परेणेति मूर्च्छितो गदया हतः ॥३३॥

पदच्छेद— एतद् विदित्वा तु भवान् मया अपोवाहितः रणात् ।
उपसृष्टः परेणेति मूर्च्छितः गदया हतः ॥

शब्दार्थ—

एतद्	७. यह	उपसृष्टः	३. संकट में डाल दिये गये थे और
विदित्वा तु	८. जानकर	परेण	२. शत्रु द्वारा आप
भवान्	१०. आपको	इति	१. इस प्रकार
मया	९. मैं	मूर्च्छितः	६. मूर्च्छित हो गये थे
अपोवाहितः	१२. हटा ले गया	गदया	४. उसकी गदा से
रणात् ।	११. युद्ध से	हतः ॥	५. आहत होने पर आप

श्लोकार्थ—इस प्रकार शत्रु द्वारा आप संकट में डाल दिये गये थे और उसकी गदा से आहत होने पर आप मूर्च्छित हो गये थे। यह जानकर मैं आपको युद्ध से हटा ले गया था ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे शाल्वयुद्धे
षट्सप्ततितमः अध्यायः ॥७६॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्तसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—स तूपस्पृश्य सलिलं दंशितो धृतकार्मुकः ।

नय मां द्युमतः पार्श्वं वीरस्येत्याह सारथिम् ॥१॥

पदच्छेद— सः तु उपस्पृश्य सलिलम् दंशितः धृतकार्मुकः ।
नय माम् द्युमतः पार्श्वम् वीरस्य इति आह सारथिम् ॥

शब्दार्थ—

सः तु	१.	उन्होंने	नय	१२.	ले चलो
उपस्पृश्य	३.	हाथ मुँह धोकर	माम्	९.	मुझे
सलिलम्	२.	जल से	द्युमतः पार्श्वम्	११.	द्युमान् के पास
दंशितः	४.	कवच पहन कर	वीरस्य	१०.	वीर
धृत	६.	धारण किया (और)	इतिआह	८.	इस प्रकार कहा कि
कार्मुकः ।	५.	धनुष	सारथिम् ॥	७.	सारथी से

श्लोकार्थ—उन्होंने जल से हाथ मुँह धोकर कवच पहन कर धनुष धारण किया और सारथी से इस प्रकार कहा कि मुझे वीर द्युमान् के पास ले चलो ॥

द्वितीयः श्लोकः

विधमन्तं स्वसैन्यानि द्युमन्तं रुक्मिणीसुतः ।

प्रतिहत्य प्रत्यविध्यन्नाराचैरष्टभिः स्मयन् ॥२॥

पदच्छेद— विधमन्तम् स्वसैन्यानि द्युमन्तम् रुक्मिणी सुतः ।
प्रतिहत्य प्रत्यविध्यत् नाराचैः अष्टभिः स्मयन् ॥

शब्दार्थ—

विधमन्तम्	३.	विनष्ट किये जाते	प्रतिहत्य	६.	उसके पास पहुँच कर देख कर
स्वसैन्यानि	१.	अपनी सेना को	प्रत्यविध्यत्	१०.	वेध दिया
द्युमन्तम्	२.	द्युमान् के द्वारा	नाराचैः	९.	बाणों से उसे
रुक्मिणी	४.	रुक्मिणी के	अष्टभिः	८.	आठ
सुतः ।	५.	पुत्र (प्रद्युम्न ने)	स्मयन् ॥	७.	मुसकराते हुये

श्लोकार्थ—अपनी सेना को द्युमान् के द्वारा विनष्ट किये जाते देख कर रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न ने उसके पास पहुँच कर मुसकराते हुये आठ बाणों से उसे वेध दिया ॥

तृतीयः श्लोकः

चतुर्भिश्चतुरो वाहान् सूतमेकेन चाहनत् ।
द्वाभ्यां धनुश्च केतुं च शरेणान्येन वै शिरः ॥३॥

पदच्छेद— चतुर्भिः चतुरः वाहान् सूतम् एकेन च अहनत् ।
द्वाभ्याम् धनुः च केतुम् च शरेण अन्येन वै शिरः ॥

शब्दार्थ—

चतुर्भिः	१. चार बाणों से (उसके)	द्वाभ्याम्	६. दो बाणों से
चतुरः	२. चार	धनुः च	७ धनुष और
वाहान्	३. घोड़ों को	केतुम् च	८. ध्वजा को तथा
सूतम्	५. सारथी को	शरेण	१०. बाण से
एकेन च	४. और एक बाण से	अन्येन	९. अन्य
अहनत् ।	१२. काट डाला	वै शिरः ॥	११. सिर को

श्लोकार्थ—चार बाणों से उसके चार घोड़ों को और एक बाण से सारथी को, दो बाणों से धनुष और ध्वजा को तथा अन्य बाण से सिर को काट डाला ॥

चतुर्थः श्लोकः

गदसात्यकिसाम्बाद्या जघ्नुः सौभपतेर्बलम् ।
पेतुः समुद्रे सौभेयाः सर्वे संछिन्नकन्धराः ॥४॥

पदच्छेद— गद, सात्यकि साम्ब आद्याः जघ्नुः सौभपतेः बलम् ।
पेतुः समुद्रे सौभेयाः सर्वे संछिन्न कन्धराः ॥

शब्दार्थ—

गद	१. गद	पेतुः	१२. गिर पड़ते थे
सात्यकि	२. सात्यकि	समुद्रे	११. समुद्र में
साम्ब आद्याः	३. साम्ब आदि (वीर)	सौभेयाः	७. सौभ विमान पर चढ़े
जघ्नुः	६. संहार करने लगे	सर्वे	८. सभी सैनिकों की
सौभपतेः	४. सौभपति (शाल्व की)	संछिन्न	१०. कट जाने पर वे
बलम् ।	५. सेना का	कन्धराः ॥	९. गरदनें

श्लोकार्थ—गद, सात्यकि, साम्ब आदि वीर सौभपति शाल्व की सेना का संहार करने लगे। सौभविमान पर चढ़े सभी सैनिकों की गरदनें कट जाने पर वे समुद्र में गिर पड़ते थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

एवं यदूनां शाल्वानां निघ्नतामितरेतरम् ।
युद्धं त्रिणवरात्रं तदभूत्तुमुलमुल्बणम् ॥५॥

पदच्छेद— एवम् यदूनाम् शाल्वानाम् निघ्नताम् इतरेतरम् ।
युद्धम् त्रिणवरात्रम् तद् अभूत् तुमुलम् उल्बणम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	त्रिणव	७.	सत्ताईस
यदूनाम्	२.	यदुवंशी और	रात्रम्	८.	दिनों तक चलने वाला
शाल्वानाम्	३.	शाल्व के सैनिक	तद्	६.	वह
निघ्नताम्	५.	प्रहार करते रहे	अभूत्	१२.	हुआ
इतरेतरम् ।	४.	एक दूसरे पर	तुमुलम्	१०.	बड़ा ही घमासान तथा
युद्धम्	६.	युद्ध	उल्बणम् ॥	११.	भयंकर

श्लोकार्थ—इस प्रकार यदुवंशी और शाल्व के सैनिक एक दूसरे पर प्रहार करते रहे । वह सत्ताईस दिनों तक चलने वाला युद्ध बड़ा ही घमासान और भयंकर हुआ ॥

षष्ठः श्लोकः

इन्द्रप्रस्थं गतः कृष्ण आहूतो धर्मसूनुना ।
राजसूयेऽथ निर्वृत्ते शिशुपाले च संस्थिते ॥६॥

पदच्छेद— इन्द्र प्रस्थम् गतः कृष्णः आहूतः धर्मसूनुना ।
राजसूये अथ निवृत्ते शिशुपाले च संस्थिते ॥

शब्दार्थ—

इन्द्र प्रस्थम्	५.	इन्द्र प्रस्थ	राजसूये	८.	राजसूय यज्ञ
गतः	६.	गये हुये थे	अथ	७.	तब-तक
कृष्णः	४.	भगवान् श्रीकृष्ण	निर्वृत्ते	६.	समाप्त हो चुका था
आहूतः	३.	बुलाये गये	शिशुपाले	११.	शिशुपाल भी
धर्म	१.	धर्म	च	१०.	और
सूनुना ।	२.	पुत्र (युधिष्ठिर के द्वारा)	संस्थिते ॥	१२.	मारा जा चुका था

श्लोकार्थ—उस समय धर्मपुत्र युधिष्ठिर के द्वारा बुलाये गये भगवान् श्रीकृष्ण इन्द्रप्रस्थ गये हुये थे । तब-तक राजसूय यज्ञ समाप्त हो चुका था । और शिशुपाल भी मारा जा चुका था ॥

सप्तमः श्लोकः

कुरुवृद्धाननुज्ञाप्य मुनींश्च ससुतां पृथाम् ।
निमित्तान्यतिघोराणि पश्यन् द्वारवतीं ययौ ॥७॥

पदच्छेद— कुरु वृद्धान् अनुज्ञाप्य मुनीन् च ससुताम् पृथाम् ।
निमित्तानि अति घोराणि पश्यन् द्वारवतीम् ययौ ॥

शब्दार्थ—

कुरु	५. कुरुवंश के	निमित्तानि	३. अपशकुनों को
वृद्धान्	६. वृद्ध पुरुषों	अति	१. बड़े ही
अनुज्ञाप्य	१०. अनुमति लेकर	घोराणि	२. भयंकर
मुनीन् च	७. ऋषिमुनियों और	पश्यन्	४. देखते हुये श्रीकृष्ण ने
ससुताम्	९. पाण्डवों से	द्वारवतीम्	११. द्वारका के लिये
पृथाम् ।	८. कुन्ती एवम्	ययौ ॥	१२. प्रस्थान किया

श्लोकार्थ—बड़े ही भयंकर अपशकुनों को देखते हुये श्रीकृष्ण ने कुरुवंश के बड़े वृद्ध पुरुषों ऋषि-मुनियों और कुन्ती एवम् पाण्डवों से अनुमति लेकर द्वारका के लिये प्रस्थान किया ॥

अष्टमः श्लोकः

आह चाहमिहायात आर्यमिश्राभिसङ्गतः ।
राजन्याश्चैद्यपक्षीया नूनं हन्युः पुरीं मम ॥८॥

पदच्छेद— आह च अहम् इह आयातः आर्य मिश्र अभिसङ्गतः ।
राजन्याः चैद्य पक्षीयाः नूनम् हन्युः पुरीम् मम ॥

शब्दार्थ—

आह च	१. और (मन ही मन) कहा	राजान्याः	९. राजा लोग
अहम्	२. मैं	चैद्य	७. शिशुपाल के
इह आयातः	६. यहाँ चला आया	पक्षीयाः	८. पक्ष वाले
आर्य	३. पूज्य	नूनम्	१०. निश्चित ही
मिश्र	४. भाई	हन्युः	१२. आक्रमण कर रहे हैं
अभिसङ्गतः ।	५. बलराम जी के साथ	पुरीम् मम ॥	११. मेरी पुरी पर

श्लोकार्थ—और मन ही मन कहा मैं पूज्य भाई बलराम जी के साथ यहाँ चला आया। शिशुपाल के पक्ष वाले राजा लोग निश्चत ही मेरी पुरी पर आक्रमण कर रहे हैं ।

नवमः श्लोकः

वीक्ष्य तत् कदनं स्वानां निरूप्य पुररक्षणम् ।
सौभं च शाल्वराजं च दारुकं प्राह केशवः ॥९॥

पदच्छेद— वीक्ष्य तत् कदनम् स्वानाम् निरूप्य पुररक्षणम् ।
सौभम् च शाल्वराजम् च दारुकम् प्राह केशवः ॥

शब्दार्थ—

वीक्ष्य	४.	देखकर	सौभम् च	९.	सौभ विमान तथा
तत	२.	वह	शाल्वराजम्	१०.	शाल्वराज
कदनम्	३.	विपत्ति	च	८.	और
स्वानाम्	१.	अपने लोगों की	दारुकम्	११.	दारुक से
निरूप्य	७.	बलराम जी को नियुक्त किया	प्राह	१२.	कहा
पुररक्षणम् ।	६.	नगर को रक्षा के लिये	केशवः ॥	५.	भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—अपने लोगों की वह विपत्ति देख कर भगवान् श्रीकृष्ण ने नगर की रक्षा के लिये बलराम जी को नियुक्त किया। और सौभ विमान तथा शाल्वराज को देख कर दारुक से कहा ॥

दशमः श्लोकः

रथं प्रापय मे सूत शाल्वस्यान्तिकमाशु वै ।
सम्भ्रमस्ते न कर्तव्यो मायावी सौभराडयम् ॥१०॥

पदच्छेद— रथम् प्रापय मे सूत शाल्वस्य अन्तिकम् आशु वै ।
सम्भ्रमः ते न कर्तव्यः मायावी सौभराड् अयम् ॥

शब्दार्थ—

रथम्	४.	रथ	आशु वै ।	२.	शीघ्रातिशीघ्र
प्रापय	७.	ले चलो	सम्भ्रमः ते	११.	तुम भय
मे	३.	मेरा	न कर्तव्यः	१२.	न करना
सूत	१.	हे दारुक ! तुम	मायावी	१०.	मायावी है (जो भी)
शाल्वस्य	५.	शाल्व के	सौभराट्	९.	शाल्व (बड़ा ही)
अन्तिकम्	६.	पास	अयम् ॥	८.	यह

श्लोकार्थ—हे दारुक ! तुम शीघ्रातिशीघ्र मेरा रथ शाल्व के पास ले चलो। यह शाल्व बड़ा ही मायावी है। तो भी तुम भय न करना ॥

एकादशः श्लोकः

इत्युक्तश्चोदयामास रथमास्थाय दारुकः।
विशन्तं ददृशुः सर्वे स्वे परे चारुणानुजम् ॥११॥

पदच्छेद— इतिउक्तः चोदयामास रथम् आस्थाय दारुकः।
विशन्तम् ददृशुः सर्वे स्वे परे चारुण अनुजम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. यह	विशन्तम्	११. युद्ध भूमि में प्रवेश करते
उक्तः	२. कहा जाने पर	ददृशुः	१२. देखा
चोदयामास	६. (शाल्व की ओर) ले चला	सर्वे	९. सभी लोगों ने
रथम्	४. रथ पर	स्वे	७. अपने
आस्थाय	५. चढ़ कर (रथ को)	परे च	८. और शत्रु के
दारुकः।	३. दारुक	अरुण अनुजम् ॥	१०. गरुड़ से अङ्कित रथ को

श्लोकार्थ—यह कहा जाने पर दारुक रथ पर चढ़ कर रथ को शाल्व की ओर ले चला। अपने और शत्रु के सभी लोगों ने गरुड़ से अङ्कित रथ को युद्ध भूमि में प्रवेश करते देखा ॥

द्वादशः श्लोकः

शाल्वश्च कृष्णमालोक्य हतप्रायबलेश्वरः।
प्राहरत् कृष्णसूताय शक्तिं भीमरवां मृधे ॥१२॥

पदच्छेद— शाल्वः च कृष्णम् आलोक्य हत प्राय बल ईश्वरः।
प्राहरत् कृष्ण सूताय शक्तिम् भीम रवाम् मृधे ॥

शब्दार्थ—

शाल्वः च	४. शाल्व ने	प्राहरत्	१२. चला दिया
कृष्णम्	५. श्रीकृष्ण को	कृष्ण	१०. श्रीकृष्ण के
आलोक्य	६. देख कर	सूताय	११. सारथी पर
हत प्राय	१. प्रायः नष्ट हो चुकी	शक्तिम्	९. शक्ति नामक अस्त्र को
बल	२. सेना के	भीमरवाम्	८. भयंकर शब्द करने वाली
ईश्वरः।	३. स्वामी	मृधे ॥	७. युद्ध में

श्लोकार्थ—प्रायः नष्ट हो चुकी सेना के स्वामी शाल्व ने श्रीकृष्ण को देख कर युद्ध में भयंकर शब्द करने वाली शक्ति नामक अस्त्र को श्रीकृष्ण के सारथी पर चला दिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

तामापतन्तीं नभसि महोल्कामिव रंहसा ।
भासयन्तीं दिशः शौरिः सायकैः शतधाच्छिनत् ॥१३॥

पदच्छेद— ताम् आपतन्तीं नभसि महोल्कामिव रंहसा ।
भासयन्तीम् दिशः शौरिः सायकैः शतधा अच्छिनत् ॥

शब्दार्थ—

ताम्	८. उस शक्ति के	भासयन्तीम्	७. चमकाती हुई
आपतंतीम्	५. चलती हुई (तथा)	दिशः	६. दिशाओं को
नभसि	१. आकाश में	शौरिः	९. श्रीकृष्ण ने
महा उल्काम्	२. बहुत बड़े लूक के	सायकैः	१०. बाणों से
इव	३. समान	शतधा	११. सैकड़ों
रंहसा ।	४. वेग से	अच्छिनत् ॥	१२. टुकड़ें कर दिये

श्लोकार्थ—आकाश में बहुत बड़े लूक के समान वेग से चलती हुई तथा दिशाओं को चमकाती हुई उस शक्ति के श्रीकृष्ण ने बाणों से सैकड़ों टुकड़े कर दिये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तं च षोडशभिर्विद्ध्वा बाणैः सौभं च खे भ्रमत् ।
अविध्यच्छरसन्दोहैः खं सूर्य इव रश्मिभिः ॥१४॥

पदच्छेद— तम् च षोडशभिः विद्ध्वा बाणैः सौभम् च खे भ्रमत् ।
अविध्यत् शर सन्दोहैः खम् सूर्यः इव रश्मिभिः ॥

शब्दार्थ—

तम् च	१. उस शाल्व को	अविध्यत्	१०. चलनी कर दिया
षोडशभिः	२. सोलह	शर	८. बाण
विद्ध्वा	४. वेध कर	सन्दोहैः	९. समूहों से
बाणैः	३. बाणों से	खम्	१३. आकाश को
सौभम्	७. सौभ विमान को	सूर्य	१२. सूर्य
खे	५. आकाश में	इव	११. जैसे
भ्रमत् ।	६. घूमते हुये	रश्मिभिः ॥	१४. किरणों से भर देता है

श्लोकार्थ—उस शाल्व को सोलह बाणों से वेध कर आकाश में घूमते हुये सौभ विमान को बाण-समूहों से चलनी कर दिया । जैसे सूर्य आकाश को किरणों से भर देता है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

शाल्वः शौरेस्तु दोः सव्यं सशार्ङ्गं शार्ङ्गधन्वनः ।
बिभेद न्यपतद्धस्तात् शार्ङ्गमासीत्तदद्भुतम् ॥१५॥

पदच्छेद— शाल्वः शौरेः तु दोः सव्यम् सशार्ङ्गं शार्ङ्गधन्वनः ।
बिभेद न्यपतत् हस्तात् शार्ङ्गम् आसीत् तत् अद्भुतम् ॥

शब्दार्थ—

शाल्वः	१.	शाल्व ने	बिभेद	६.	बाण मारा (उससे)
शौरेः तु	२.	श्रीकृष्ण की	न्यपतत्	१०.	गिर पड़ा
दोः	५.	भुजा में	हस्तात्	८.	हाथ से
सव्यम्	४.	बायीं	शार्ङ्गम्	९.	शार्ङ्गधनुष
सशार्ङ्गं	३.	शार्ङ्गधनुष सहित	आसीत्	१२.	हुई
शार्ङ्गधन्वनः ।	७.	शार्ङ्गधनुषधारी श्रीकृष्ण के	तत् अद्भुतम् ॥	११.	यह एक अद्भुत घटना

श्लोकार्थ—शाल्व ने श्रीकृष्ण की शार्ङ्ग धनुष सहित बायीं भुजा में बाण मारा । उससे शार्ङ्ग धनुषधारी श्रीकृष्ण के हाथ से शार्ङ्ग धनुष गिर पड़ा । यह एक अद्भुत घटना हुई ॥

षोडशः श्लोकः

हाहाकारो महानासीद् भूतानां तत्र पश्यताम् ।
विनद्य सौभराडुच्चैरिदमाह जनार्दनम् ॥१६॥

पदच्छेद— हाहाकारः महान् आसीत् भूतानाम् तत्र पश्यताम् ।
विनद्य सौभराट् उच्चैः इदम् आह जनार्दनम् ॥

शब्दार्थ—

हाहाकारः	५.	हाहाकार	विनद्य	९.	गरजकर
महान्	४.	बड़े जोर से	सौभराट्	७.	तब शाल्व ने
आसीत्	६.	होने लगा	उच्चैः	८.	ऊँचे स्वर से
भूतानाम्	३.	प्राणियों का	इदम्	११.	यह
तत्र	१.	वहाँ पर	आह	१२	कहा
पश्यताम् ।	२.	देखने वाले	जनार्दनम् ॥	१०.	श्रीकृष्ण से

श्लोकार्थ— वहाँ पर देखने वाले प्राणियों का बड़े जोर से हाहाकार होने लगा । तब शाल्व ने ऊँचे स्वर से गरज कर श्रीकृष्ण से यह कहा ॥

सप्तदशः श्लोकः

यत्त्वया मूढ नः सख्युर्भ्रातुर्भार्या हृतेक्षताम् ।

प्रमत्तः स सभामध्ये त्वया व्यापादितः सखा ॥१७॥

पदच्छेद— यत् त्वया मूढ नः सख्युः भ्रातुः भार्या हृता ईक्षताम् ।
प्रमत्तः सः सभा मध्ये त्वया व्यापादितः सखा ॥

शब्दार्थ—

यत्	२.	जो	प्रमत्तः	११.	असावधान
त्वया	३.	तूने	सः	१२.	उस
मूढ	१.	हे मूर्ख !	सभा	९.	सभा के
नः	५.	हमारे	मध्ये	१०.	बीच
सख्युः	७.	सखा की	त्वया	१४.	तूने
भ्रातुः	६.	भाई और	व्यापादितः	१५.	मार डाला
भार्या हृता	८.	पत्नी को हर लिया (तथा)	सखा ॥	१३.	मित्र को
ईक्षताम् ।	४.	देखते-देखते			

श्लोकार्थ—हे मूर्ख ! जो तूने देखते-देखते हमारे भाई और सखा की पत्नी को हर लिया । तथा सभा के बीच असावधान उस मित्र को तूने मार डाला ॥

अष्टादशः श्लोकः

तं त्वाद्य निशितैर्बाणैरपराजितमानिनम् ।

नयाम्यपुनरावृत्तिं यदि तिष्ठेर्ममाग्रतः ॥१८॥

पदच्छेद— तम् त्वा अद्य निशितैः बाणैः अपराजित मानिनम् ।
नयामि अपुनः आवृत्तिम् यदि तिष्ठेः ममअग्रतः ॥

शब्दार्थ—

तम्	८.	उस	नयामि	१२.	वहाँ पहुँचा दूँगा
त्वा	९.	तुझको (अपने)	अपुनः	१४.	वापिस नहीं आता है
अद्य	५.	आज मैं	आवृत्तिम्	१३.	जहाँ से कोई
निशितैः	१०.	तीक्ष्ण	यदि	१.	यदि तू
बाणैः	११.	बाणों से	तिष्ठेः	४.	ठहर गया तो
अपराजित	६.	अपने को अजेय	मम	२.	मेरे
मानिनम् ।	७.	मानने वाले	अग्रतः ॥	३.	सामने

श्लोकार्थ—यदि तू मेरे सामने ठहर गया तो आज मैं अपने को अजेय मानने वाले उस तुझको अपने तीक्ष्ण बाणों से वहाँ पहुँचा दूँगा, जहाँ से कोई वापिस नहीं आता है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—वृथा त्वं कत्थसे मन्द न पश्यस्यन्तिकेऽन्तकम् ।
पौरुषं दर्शयन्ति स्म शूरा न बहुभाषिणः ॥१९॥

पदच्छेद— वृथा त्वम् कत्थसे मन्द न पश्यसि अन्तिके अन्तकम् ।
पौरुषम् दर्शयन्ति स्म शूराः न बहु भाषिणः ॥

शब्दार्थ—

वृथा त्वम	२. तू व्यर्थ ही	पौरुषम्	११. वे वीरता ही
कत्थसे	३. बहक रहा है	दर्शयन्ति स्म	१२. दिखलाते हैं
मन्द	१. हे मूर्ख !	शूराः	७. शूरवीर
न पश्यसि	६. नहीं देख रहा है	न	९. नहीं
अन्तिके	४. पास में	बहु	८. बहुत
अन्तकम् ।	५. यमराज को	भाषिणः ॥	१०. बोलते हैं

श्लोकार्थ—हे मूर्ख ! तू व्यर्थ ही बहक रहा है । पास में यमराज को नहीं देख रहा है । शूरवीर बहुत नहीं बोलते हैं । वे वीरता ही दिखलाते हैं ।

विंशः श्लोकः

इत्युक्त्वा भगवाञ्छाल्वं गदया भीमवेगया ।
तताड जत्रौ संरब्धः स चकम्पे वमन्नसृक् ॥२०॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा भगवान् शाल्वम् गदया भीमवेगया ।
तताड जत्रौ संरब्धः सः चकम्पे वमन् असृक् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. यह	तताड	१०. प्रहार किया (जिससे)
उक्त्वा	२. कह कर	जत्रौ	९. जत्रुस्थान (हँसली पर)
भगवान्	३. भगवान् ने	संरब्धः	४. क्रुद्ध होकर
शाल्वम्	८. शाल्व के	सः	११. वह
गदया	७. गदा से	चकम्पे	१४. कांपने लगा
भीम	५. भयंकर	वमन्	१३. उगलता हुआ
वेगया ।	६. वेग वाली	असृक् ॥	१२. रक्त

श्लोकार्थ—यह कह कर भगवान् ने क्रुद्ध होकर भयंकर वेग वाली गदा से शाल्व के जत्रु स्थान हँसली पर प्रहार किया । जिससे वह रक्त उगलता हुआ काँपने लगा ॥

एकविंशः श्लोकः

गदायां सन्निवृत्तायां शाल्वस्त्वन्तरधीयत ।
ततो मुहूर्त आगत्य पुरुषः शिरसाच्युतम् ।
देवक्या प्रहितोऽस्मीति नत्वा प्राह वचो रुदन् ॥२१॥

पदच्छेद— गदायाम् सन्निवृत्तायाम् शाल्वः तु अन्तरधीयत ।
ततः मुहूर्ते आगत्य पुरुषः शिरसा अच्युतम् ।
देवक्या प्रहितः अस्मि इति नत्वा प्राह वचः रुदन् ॥

शब्दार्थ—

गदायाम्	१.	उस गदा के	अच्युतम् ।	१०.	श्रीकृष्ण को
सन्निवृत्तायाम्	२.	लौट आने पर	देवक्या	१२.	देवकी ने मुझे
शाल्वः तु	३.	शाल्व	प्रहितः	१३.	भेजा
अन्तरधीयत ।	४.	अन्तर्हित हो गया	अस्मि इति	१४.	है यह
ततः मुहूर्ते	५.	तदनन्तर दो घड़ी में	नत्वा	११.	प्रणाम करके
आगत्य	७.	आकर	प्राह	१६.	कहा
पुरुषः	६.	एक पुरुष ने	वचः	१५.	वचन
शिरसा	९.	सिर झुका कर	रुदन् ॥	८.	रोता हुआ

श्लोकार्थ—उस गदा के लौट आने पर शाल्व अन्तर्हित हो गया। तदनन्तर दो घड़ी में एक पुरुष ने आकर रोता हुआ श्रीकृष्ण को सिर झुका कर प्रणाम करके देवकी ने मुझे भेजा है यह वचन कहा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

कृष्ण कृष्ण महाबाहो पिता ते पितृवत्सल ।
बद्ध्वापनीतः शाल्वेन सौनिकेन यथा पशुः ॥२२॥

पदच्छेद— कृष्ण कृष्ण महाबाहो पिता ते पितृ वत्सल ।
बद्ध्वा अपनीतः शाल्वेन सौनिकेन यथा पशुः ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण कृष्ण	४.	श्रीकृष्ण	बद्ध्वा	७.	उसी तरह बाँध कर
महाबाहो	३.	महापराक्रमी	अपनीतः	८.	ले गया है
पिता ते	६.	तुम्हारे पिता को	शाल्वेन	५.	शाल्व
पितृ	१.	हे पितृ	सौनिकेन यथा	९.	जैसे कसाई
वत्सल ।	२.	वत्सल	पशुः ॥	१०.	पशु को ले जाते हैं ।

श्लोकार्थ—हे पितृवत्सल ! महापराक्रमी श्रीकृष्ण ! शाल्व तुम्हारे पिता को उसी तरह बाँध कर ले गया है । जैसे कसाई पशु को ले जाते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

निशम्य विप्रियं कृष्णो मानुषीं प्रकृतिं गतः ।
विमनस्को घृणी स्नेहाद् बभाषे प्राकृतो यथा ॥२३॥

पदच्छेद— निशम्य विप्रियम् कृष्णः मानुषीम् प्रकृतिम् गतः ।
विमनस्कः घृणी स्नेहाद् बभाषे प्राकृतः यथा ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	२. सुनकर	विमनस्कः	९. उदासीन होकर
विप्रियम्	१. अप्रिय समाचार	घृणी	७. दया एवम्
कृष्णः	३. श्रीकृष्ण	स्नेहाद्	८. स्नेह वश
मानुषीम्	४. मानवीय	बभाषे	१२. कहने लगे
प्रकृतिम्	५. प्रकृति को	प्राकृतः	१०. साधारण पुरुष के
गतः ।	६. प्राप्त हो गये (और)	यथा ॥	११. समान

श्लोकार्थ—यह अप्रिय समाचार सुनकर श्रीकृष्ण मानवीय प्रकृति को प्राप्त हो गये । और दया एवम् स्नेहवश होकर उदासीन होकर साधारण मनुष्य के समान कहने लगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

कथं राममसम्भ्रान्तं जित्वाजेयं सुरासुरैः ।
शाल्वेनाल्पीयसा नीतः पिता मे बलवान् विधिः ॥२४॥

पदच्छेद— कथम् रामम् असम्भ्रान्तम् जित्वा अजेयम् सुर असुरैः ।
शाल्वेन अल्पीयसा नीतः पिता मे बलवान् विधिः ॥

शब्दार्थ—

कथम्	८. कैसे	शाल्वेन	७. शाल्व
रामम्	५. बलराम जी को	अल्पीयसा	६. अत्यन्त अल्प बल वाला
असम्भ्रान्तम्	४. सावधान	नीतः	१२. ले गया
जित्वा	९. जीत कर	पिता	११. पिता जी को
अजेयम्	३. अजेय एवम्	मे	१०. मेरे
सुर	१. देवता और	बलवान्	१४. बलवान् होता है
असुरैः ।	२. असुरों द्वारा	विधिः ॥	१३. अहो ! प्रारब्ध

श्लोकार्थ—देवता और असुरों द्वारा अजेय एवम् सावधान बलराम जी को अत्यन्त अल्प बल वाला शाल्व कैसे जीत कर मेरे पिता जी को ले गया । अहो ! प्रारब्ध बलवान् होता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

इति ब्रुवाणे गोविन्दे सौभराट् प्रत्युपस्थितः ।
वसुदेवमिवानीय कृष्णं चेदमुवाच सः ॥२५॥

पदच्छेद— इति ब्रुवाणे गोविन्दे सौभराट् प्रति उपस्थितः ।
वसुदेवम् इव आनीय कृष्णम् च इदम् उवाच सः ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	वसुदेवम्	५. वसुदेव जी के
ब्रुवाणे	३. कह ही रहे थे कि	इव आनीय	६. समान एक मनुष्य को लाकर
गोविन्दे	१. श्रीकृष्ण	कृष्णम्	८. श्रीकृष्ण से
सौभराट्	४. शाल्व (वहाँ पर)	च इदम्	१० यह
प्रति उपस्थितः ।	७. आ पहुँचा (और)	उवाच	११. कहा
		सः ॥	९. उसने

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण इस प्रकार कह ही रहे थे कि शाल्व वहाँ पर वसुदेव जी के समान एक मनुष्य को लाकर आ पहुँचा । और श्रीकृष्ण से उसने यह कहा ॥

षड्विंशः श्लोकः

एष ते जनिता तातो यदर्थमिह जीवसि ।
वधिष्ये वीक्षतस्तेऽमुमीशश्चेत् पाहि बालिश ॥२६॥

पदच्छेद— एषः ते जनिता तातः यत् अर्थम् इह जीवसि ।
वधिष्ये वीक्षतः ते अमुम् ईशः चेत् पाहि बालिश ॥

शब्दार्थ—

एषः ते	२. यही तुझे	वधिष्ये	१०. मार डालूँगा
जनिता	३. उत्पन्न करने वाला	वीक्षतः ते	८. तेरे देखते-देखते
तातः	४. बाप है	अमुम्	९. इसको मैं
यत् अर्थम्	५. जिसके लिये	ईशश्चेत्	११. यदि तुझमें शक्ति है तो
इह	६. यहाँ तू	पाहि	१२. इसे बचा ले
जीवसि ।	७. जी रहा है	बालिश ॥	१. हे मूर्ख !

श्लोकार्थ—हे मूर्ख ! यही तुझे उत्पन्न करने वाला बाप है । जिसके लिये यहाँ तू जी रहा है । तेरे देखते इसको मैं मार डालूँगा । यदि तुझ में शक्ति है तो इसे बचा ले ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एवं निर्भर्त्स्य मायावी खड्गेनानकदुन्दुभेः ।
उत्कृत्य शिर आदाय स्वस्थं सौभं समाविशत् ॥२७॥

पदच्छेद— एवम् निर्भर्त्स्य मायावी खड्गेन आनक दुन्दुभेः ।
उत्कृत्य शिरः आदाय स्वस्थम् सौभम् समाविशत् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	उत्कृत्य	७.	काटकर और
निर्भर्त्स्य	२.	भर्त्सना करके	शिरः	६.	सिर
मायावी	३.	मायावी शाल्व	आदाय	८	उसे लेकर
खड्गेन	४.	तलवार से	स्वस्थम्	९.	आकाश में स्थित
आनकदुन्दुभेः ।	५.	वसुदेव जी का	सौभम्	१०.	सौभ विमान में
			समाविशत् ॥	११.	घुस गया

श्लोकार्थ—इस प्रकार भर्त्संना करके मायावी शाल्व तलवार से वसुदेव जी का सिर काटकर उसे लेकर आकाश में स्थित सौभ विमान में घुस गया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

ततो मुहूर्तं प्रकृतावुपप्लुतः स्वबोध आस्ते स्वजनानुषङ्गतः ।
महानुभावस्तदबुद्ध्यदासुरीं मायां स शाल्वप्रसृतां मयोदिताम् ॥२८॥

पदच्छेद—ततः मुहूर्तम् प्रकृतौ उपप्लुतः स्वबोध आस्ते स्वजन अनुषङ्गतः ।
महानुभावः तत् अबुद्ध्यत् आसुरीम् मायाम् स शाल्व प्रसृताम् मय उदिताम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	महानुभावः	४.	महानुभाव
मुहूर्तम्	८.	दो घड़ी तक	तत्	११.	उसे
प्रकृतौ	९.	प्रकृति में	अबुद्ध्यत्	१६.	समझा
उपप्लुतः	१०.	डूबकर	आसुरीम्	१४.	आसुरी
स्वबोध	२.	अपने ज्ञान में	मायाम्	१५.	माया
आस्ते	३.	स्थित रहने वाले	सः	५.	श्रीकृष्ण ने (अपने)
स्वजन	६.	स्वजन वसुदेव जी के प्रति	शाल्व प्रसृताम्	१३.	शाल्व की फैलायी हुई
अनुषङ्गतः ।	७.	आसक्ति के कारण	मय उदिताम् ॥	१२.	मयदानव द्वारा बताई गयी

श्लोकार्थ—तदनन्तर अपने ज्ञान में स्थित रहने वाले महानुभाव श्रीकृष्ण ने अपने स्वजन वसुदेव जी के प्रति आसक्ति के कारण दो घड़ी तक प्रकृति में डूबकर उसे मयदानव द्वारा बताई गई शाल्व की फैलाई हुई आसुरी माया समझा ।

एकोनत्रिंशः श्लोकः

न तत्र दूतं न पितुः कलेवरं प्रबुद्ध आजौ समपश्यदच्युतः ।
स्वाप्नं यथा चाम्बरचारिणं रिपुं सौभस्थमालोक्य निहन्तुमुद्यतः ॥२९॥

पदच्छेद— न तत्र दूतम् न पितुः कलेवरम् प्रबुद्धः आजौ समपश्यत् अच्युतः ।
स्वाप्नम् यथा च अम्बर चारिणम् रिपुम् सौभस्थम् आलोक्य निहन्तुम् उद्यतः ।

शब्दार्थ—

न तत्र	४.	न तो वहाँ	स्वाप्नम्	१०.	स्वप्न का दृश्य हो, फिर
दूतम्	५.	दूत को	यथा च	९.	जैसे
न पितुः	६.	न पिता के	अम्बरचारिणम्	१२.	आकाश में विचरण करने वाले
कलेवरम्	७.	शरीर को ही	रिपुम्	१३.	शत्रु (शाल्व) को
प्रबुद्धः	२.	सचेत होने पर	सौभस्थम्	११.	सौभ विमान पर चढ़कर
आजौ	१.	युद्ध में	आलोक्य	१४.	देखकर (उसे)
समपश्यत्	८.	देखा	निहन्तुम्	१५.	मारने के लिये
अच्युतः ।	३.	श्रीकृष्ण ने	उद्यतः ॥	१६.	उद्यत हो गये

श्लोकार्थ— युद्ध में सचेत होने पर श्रीकृष्ण ने न तो वहाँ दूत को न पिता के शरीर को ही देखा । जैसे स्वप्न का दृश्य हो । फिर सौभ विमान पर चढ़कर शत्रु शाल्व को देखकर उसे मारने के लिये उद्यत हो गये ॥

त्रिंशः श्लोकः

एवं वदन्ति राजर्षे ऋषयः केचनान्विताः ।
यत् स्ववाचो विरुध्येत नूनं ते न स्मरन्त्युत ॥३०॥

पदच्छेद— एवम् वदन्ति राजर्षे ऋषयः केचन अन्विताः ।
यत् स्ववाचः विरुध्येत नूनम् ते न स्मरन्ति उत ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५.	इस प्रकार	यत्	१०.	श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ऐसा कहना
वदन्ति	६.	कहते हैं	स्ववाचः	११.	उन्हीं के वचनों के
राजर्षे	१.	हे परीक्षित्	विरुध्येत	१२.	विपरीत है
ऋषयः	४.	ऋषि	नूनम् ते	८.	अवश्य ही वे
केचन	३.	कोई-कोई	न स्मरन्ति	९.	इस बात को भूल जाते हैं कि
अन्विताः ।	२.	पूर्व बातों का विचार न करने वाले	उत ॥	७.	किन्तु

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! पूर्व बातों का विचार न करने वाले कोई-कोई ऋषि इस प्रकार कहते हैं । किन्तु अवश्य ही वे इस बात को भूल जाते हैं कि श्रीकृष्ण के सम्बन्ध में ऐसा कहना उन्हीं के वचनों के विपरीत है ॥

एकत्रिंशः श्लोक

क्व शोकमोहौ स्नेहो वा भयं वा येऽज्ञसम्भवाः ।
क्व चाखण्डितविज्ञानज्ञानैश्वर्यस्त्वखण्डितः ॥३१॥

पदच्छेद— क्व शोक मोहौ स्नेहो वा भयम् वा ये अज्ञ सम्भवाः ।
क्व च अखण्डित विज्ञान ज्ञान ऐश्वर्यः तु खण्डितः ॥

शब्दार्थ—

क्व शोक	३. शोक	क्व च	१२. कहाँ हो सकते हैं
मोहौ	४. मोह	अखण्डित	८. अखण्डित
स्नेहो वा	५. अथवा स्नेह	विज्ञान	९. विज्ञान
भयम् वा	६. या भय हैं वे	ज्ञान	१०. ज्ञान तथा
ये अज्ञ	१. जो अज्ञानियों में	ऐश्वर्यः तु	११. ऐश्वर्य वाले (श्रीकृष्ण में)
सम्भवाः ।	२. रहने वाले	अखण्डितः ॥	७. परिपूर्ण एवम्

श्लोकार्थ—जो अज्ञानियों में रहने वाले शोक, मोह अथवा स्नेह या भय हैं। वे परिपूर्ण एवम् अखण्डित, विज्ञान, ज्ञान तथा ऐश्वर्य वाले श्रीकृष्ण में कहाँ हो सकते हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यत्पादसेवोर्जितयाऽऽत्मविद्यया हिन्वन्त्यनाद्यात्मविपर्ययग्रहम् ।
लभन्त आत्मीयमनन्तमैश्वरं कुतो नु मोहः परमस्य सद्गतेः ॥३२॥

पदच्छेद— यत् पाद सेवा ऊर्जितया आत्मविद्यया हिन्वन्ति अनादि आत्मविपर्यय ग्रहम् ।
लभन्ते आत्मीयम् अनन्तम् ऐश्वयम् कुतः नुः मोहः परमस्य सद्गतेः ॥

शब्दार्थ—

यत् पाद	१. जिनके चरणों की	लभन्ते	१२. प्राप्त करते हैं (उन)
सेवा	२. सेवा से	आत्मीयम्	९. आत्म सम्बन्धी
ऊर्जितया	३. प्राप्त	अनन्तम्	१० अनन्त
आत्मविद्यया	४. आत्म विद्या के द्वारा सन्तजन	ऐश्वर्यम्	११. ऐश्वर्य को
हिन्वन्ति	८. नष्ट करते हैं (और)	कुतःनु	१६. कहाँ से (हो सकता है)
अनादि	६. अनादि	मोह	१५. मोह
आत्मविपर्यय	५. अनात्मा में आत्मा के द्वारा	परमस्य	१४. परम पुरुष को
ग्रहम् ।	७. अज्ञान को	सद्गतेः ॥	१३. सन्तों के गति स्वरूप

श्लोकार्थ— जिनके चरणों की सेवा से प्राप्त आत्म विद्या के द्वारा सन्त जन अनात्मा में आत्मा के द्वारा अनादि अज्ञान को नष्ट करते हैं और आत्म सम्बन्धी अनन्त ऐश्वर्य को प्राप्त करते हैं, उन सन्तों के गति स्वरूप परम पुरुष को मोह कहाँ से हो सकता है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तं शस्त्रपूगैः प्रहरन्तमोजसा शाल्वं शरैः शौरिरमोघविक्रमः ।
विद्ध्वाच्छिनद् वर्म धनुः शिरोमणिं सौभं च शत्रोर्गदया रुरोज ह ॥३३॥

पदच्छेद—तम् शस्त्र पूगैः प्रहरन्तम् ओजसा शाल्वम् शरैः शौरिः अमोघ विक्रमः ।
विद्ध्वा अच्छिनत् वर्मधनुः शिरोमणिम् सौभम् च शत्रोः गदया रुरोज ह ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन भगवान् के ऊपर	विद्ध्वा	९.	वेधकर
शस्त्र पूगैः	२.	शस्त्र समूहों से	अच्छिनत्	१२.	छिन्न-भिन्नकर दिया (और)
प्रहरन्तम्	४.	प्रहार करते हुये	वर्म-धनुः	१०.	कवच-धनुष तथा
ओजसा	३.	वेग पूर्वक	शिरोमणि	११.	सिर की मणि को
शाल्वम्	५.	शाल्व को	सौभम् च	१५.	सौभ विमान को
शरैः	८.	बाणों से	शत्रोः	१४.	शत्रु के
शौरिः	७.	श्रीकृष्ण ने	गदया	१३.	गदा से
अमोघ विक्रमः ।	६.	अमोघ शक्ति	रुरोज ह ॥	१६.	जर्जर कर दिया

श्लोकार्थ—उन भगवान् के ऊपर शस्त्र समूहों से वेग पूर्वक प्रहार करते हुये शाल्व को अमोघ शक्ति श्रीकृष्ण ने बाणों से वेधकर कवच-धनुष तथा सिर की मणि को छिन्न भिन्न कर दिया। और गदा से शत्रु के सौभनामक विमान को जर्जर कर दिया ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तत् कृष्णहस्तेरितया विचूर्णितं पपात तोये गदया सहस्रधा ।
विसृज्य तद् भूतलमास्थितो गदामुद्यम्य शाल्वोऽच्युतमभ्यगाद् द्रुतम् ॥३४॥

पदच्छेद—तत् कृष्ण हस्त ईरितया विचूर्णितम् पपात तोये गदया सहस्रधा ।
विसृज्य तत् भूतलम् आस्थितः गदाम् उद्यम्य शाल्वः अच्युतम् अभ्यगात् द्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	वह विमान	विसृज्य तत्	९.	उसे छोड़कर
कृष्ण	२.	श्रीकृष्ण के	भूतलम्	१२.	धरती पर
हस्त	३.	हाथ से	आस्थितः	१३.	आ खड़ा हुआ (और)
ईरितया	४.	चलायी हुई	गदाम् उद्यम्य	११.	गदा लेकर
विचूर्णितम्	७.	चूर-चूर होकर	शाल्वः	१०.	शाल्व
पपात तोये	८.	जल में गिर गया	अच्युतम्	१५.	श्रीकृष्ण की ओर
गदया	५.	गदा से	अभ्यगात्	१६.	झपटा
सहस्रधा ।	६.	हजारों खण्डों में	द्रुतम् ॥	१४.	बड़े वेग से

श्लोकार्थ—वह विमान श्रीकृष्ण के हाथ से चलायी हुई गदा से हजारों खण्डों में चूर-चूर होकर जल में गिर गया। उसे छोड़कर शाल्व गदा लेकर धरती पर आ खड़ा हुआ और बड़े वेग से श्रीकृष्ण की ओर झपटा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

आधावतः सगदं तस्य बाहुं भल्लेन छित्त्वाथ रथाङ्गमद्भुतम् ।
वधाय शाल्वस्य लयार्कसन्निभं बिभ्रद् बभौ सार्क इवोदयाचलः ॥३५॥

पदच्छेद—आधावतः सगदम् तस्य बाहुम् भल्लेन छित्त्वा अथ रथाङ्गम्अद्भुतम् ।
वधाय शाल्वस्य लयअर्क सन्निभम् बिभ्रद् बभौ स अर्कः इव उदयाचलः ॥

शब्दार्थ—

आधावतः	१.	आक्रमण करते हुये	वधाय	१०.	मारने के लिये
सगदम्	३.	गदा सहित	शाल्वस्य	९.	शाल्व को
तस्य	२.	उसकी	लय अर्क	११.	प्रलय कालीन सूर्य के
बाहुम्	४.	भुजा को	सन्निभम्	१२.	समान
भल्लेन	५.	भाले से	बिभ्रद्	१३.	धारण किये हुये श्रीकृष्ण
छित्त्वाअथ	६.	काटकर तत् पश्चात्	बभौ	१४.	ऐसे शोभित हुये
रथाङ्गम्	८.	सुदर्शन चक्र से	स अर्कः इव	१५.	मानों सूर्य के साथ
अद्भुतम् ।	७.	अद्भुत	उदयाचलः ॥	१६.	उदयाचल शोभायमान हो

श्लोकार्थ—आक्रमण करते हुये उसकी गदा सहित भुजा को भाले से काटकर तत् पश्चात् अद्भुत सुदर्शन चक्र से शाल्व को मारने के लिये प्रलय कालीन सूर्य के समान धारण किये हुये श्रीकृष्ण ऐसे शोभित हुये मानों सूर्य के साथ उदयाचल शोभायमान हो ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

जहार तेनैव शिरः सकुण्डलं किरीटयुक्तं पुरुमायिनो हरिः ।
वज्रेण वृत्रस्य यथा पुरन्दरो बभूव हाहेति वचस्तदा नृणाम् ॥३६॥

पदच्छेद— जहार तेन एव शिरः सकुण्डलम् किरीट युक्तम् पुरुमायिनः हरिः ।
वज्रेण वृत्रस्य यथा पुरन्दरः बभूव हाहा इति वचः तदा नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

जहार	८.	धड़ से अलग कर दिया	वज्रेण	११.	वज्र से
तेन	२.	उस	वृत्रस्य	१२.	वृत्रासुर का (सिर काट डाला था)
एव	३.	ही (चक्र से)	यथा	९.	जैसे
शिरः	७.	सिर	पुरन्दरः	१०.	इन्द्र ने
सकुण्डलम्	६.	कुण्डल सहित	बभूव	१६.	होने लगा
किरीट युक्तम्	५.	मुकुट से युक्त तथा	हाहा इति	१४.	हाय-हाय का
पुरुमायिनः	४.	परम मायावी शाल्व का	वचः	१५.	शब्द
हरिः ।	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	तदा नृणाम् ॥	१३.	उस समय लोगों में

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उस ही चक्र से परम मायावी शाल्व का मुकुट से युक्त तथा कुण्डल सहित सिर धड़ से अलग कर दिया । जैसे इन्द्र ने वज्र से वृत्रासुर का सिर काट डाला था । उस समय लोगों में हाय-हाय का शब्द होने लगा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

तस्मिन् निपतिते पापे सौभे च गदया हते।
नेदुर्दुन्दुभयो राजन् दिवि देवगणेरिताः।
सखीनामपचितिं कुर्वन् दन्तवक्त्रो रुषाभ्यगात् ॥३७॥

पदच्छेद—

तस्मिन् निपतिते पापे सौभे च गदया हते।
नेदुः दुन्दुभयः राजन् दिवि देव गण ईरिताः।
सखीनाम् अपचितिम् कुर्वन् दन्तवक्त्रः रुषा अभ्यगात्॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	२.	उस	दिवि	८.	आकाश में
निपतिते	४.	मर जाने पर	देवगण	९.	देवताओं द्वारा
पापे	३.	पापी शाल्व के	ईरिताः।	१०.	बजायी गई
सौभे च	५.	और सौभ विमान के	सखीनाम्	१२.	उसी समय मित्रों का
गदया	६.	गदा के प्रहार से	अपचितिम्	१३.	बदला
हते।	७.	चूर-चूर हो जाने पर	कुर्वन्	१४.	लेने के लिये
नेदुः दुन्दुभयः	११.	दुन्दुभियाँ बजने लगीं	दन्तवक्त्रः	१५.	दन्तवक्त्र
राजन्	१.	हे राजन्!	रुषा अभ्यगात्॥	१६.	क्रोध से वहाँ आ पहुँचा

श्लोकार्थ—

हे राजन्! उस पापी शाल्व के मर जाने पर और सौभ विमान के गदा के प्रहार से चूर-चूर हो जाने पर आकाश में देवताओं के द्वारा बजायी गई दुन्दुभियाँ बजने लगीं। उसी समय मित्रों का बदला लेने के लिए दन्तवक्त्र क्रोध से वहाँ आ पहुँचा॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे सौभवधो नाम
सप्तसप्ततितमः अध्यायः॥७७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अष्टसप्ततितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—शिशुपालस्य शाल्वस्य पौण्ड्रकस्यापि दुर्मतिः ।
परलोकगतानां च कुर्वन् पारोक्ष्यसौहृदम् ॥१॥

पदच्छेद— शिशुपालस्य शाल्वस्य पौण्ड्रकस्य अपि दुर्मतिः ।
परलोक गतानाम् च कुर्वन् पारोक्ष्य सौहृदम् ॥

शब्दार्थ—

शिशुपालस्य	१. शिशुपाल	परलोक	४. परलोक
शाल्वस्य	२. शाल्व और	गतानाम् च	५. सिधार जाने पर
पौण्ड्रकस्य	३. पौण्ड्रक के	कुर्वन्	९. निर्वाह करता हुआ
अपि	६. भी	पारोक्ष्य	७. पहले की
दुर्मतिः ।	१०. मूर्ख (दन्तवक्त्र आ धमका)	सौहृदम् ॥	८. मित्रता का

श्लोकार्थ— शिशुपाल, शाल्व और पौण्ड्रक के परलोक सिधार जाने पर भी पहले की मित्रता का निर्वाह करता हुआ मूर्ख दन्तवक्त्र आ धमका ॥

द्वितीयः श्लोकः

एकः पदातिः संक्रुद्धो गदापाणिः प्रकम्पयन् ।
पद्भ्यामिमां महाराज महासत्त्वो व्यदृश्यत ॥२॥

पदच्छेद— एकः पदातिः संक्रुद्धः गदापाणिः प्रकम्पयन् ।
पद्भ्याम् इमाम् महाराज महासत्त्वः व्यदृश्यत ॥

शब्दार्थ—

एकः	३. अकेला	पद्भ्याम्	७. पैरों से
पदातिः	४. पैदल	इमाम्	८. इस पृथ्वी को
संक्रुद्धः	५. अत्यन्त क्रुद्ध होकर	महाराज	१. हे महाराज !
गदापाणिः	६. हाथ में गदा लिये हुये	महासत्त्वः	२. महान् शक्ति शाली
प्रकम्पयन् ।	९. कंपाते हुये वह	व्यदृश्यत ॥	१०. दिखाई पड़ा

श्लोकार्थ—हे महाराज ! महान् शक्तिशाली, अकेला, पैदल, अत्यन्त क्रुद्ध होकर हाथ में गदा लिये हुये पैरों से इस पृथ्वो को कंपाते हुये वह दिखाई पड़ा ॥

तृतीयः श्लोकः

तं तथाऽऽयान्तमालोक्य गदामादाय सत्वरः ।
अवप्लुत्य रथात् कृष्णः सिन्धुं वेलेव प्रत्यधात् ॥३॥

पदच्छेद— तम् तथा आयान्तम् आलोक्य गदाम् आदाय सत्वरः ।
अवप्लुत्य रथात् कृष्णः सिन्धुम् वेला इव प्रत्यधात् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उसे	अवप्लुत्य	९.	कूदकर
तथा	२.	उस प्रकार	रथात्	८.	रथ से
आयान्तम्	३.	आते हुये	कृष्णः	१०.	श्रीकृष्ण ने उसे
आलोक्य	४.	देखकर	सिन्धुम्	१३.	समुद्र को तट-भूमि
गदाम्	६.	गदा	वेला	१४.	ज्वार भाटे को रोक देती है
आदाय	७.	लेकर	इव	१२.	जैसे
सत्वरः ।	५.	शीघ्रतापूर्वक	प्रत्यधात् ॥	११.	रोक दिया

श्लोकार्थ—उसे उस प्रकार आते हुये देखकर शीघ्रतापूर्वक गदा लेकर रथ से कूदकर श्रीकृष्ण ने उसे रोक दिया । जैसे समुद्र की तट-भूमि ज्वार भाटे को रोक देती है ॥

चतुर्थः श्लोकः

गदामुद्यम्य कारूषो मुकुन्दं प्राह दुर्मदः ।
दिष्ट्या दिष्ट्या भवानद्य मम दृष्टिपथं गतः ॥४॥

पदच्छेद— गदाम् उद्यम्य कारूषः मुकुन्दम् प्राह दुर्मदः ।
दिष्टया दिष्टया भवान् अद्य मम दृष्टि पथं गतः ॥

शब्दार्थ—

गदाम्	३.	गदा	दिष्टया	७.	बड़े
उद्यम्य	४.	उठाकर	दिष्टया	८.	भाग्य से
कारूषः	२.	दन्तवक्त्र ने	भवान्	९.	आप
मुकुन्दम्	५.	श्रीकृष्ण से	अद्य मम	१०.	आज मेरे
प्राह	६.	कहा	दृष्टि पथं	११.	सामने
दुर्मदः ।	१.	अभिमान के नशे में चूर	गतः ॥	१२	आये है

श्लोकार्थ—अभिमान के नशे में चूर दन्तवक्त्र ने गदा उठाकर श्रीकृष्ण से कहा कि बड़े भाग्य से आप आज मेरे सामने आये हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

त्वं मातुलेयो नः कृष्ण मित्रध्रुङ्मां जिघांससि ।
अतस्त्वां गदया मन्द हनिष्ये वज्रकल्पया ॥५॥

पदच्छेद— त्वम् मातुलेयः नः कृष्ण मित्रध्रुक् माम् जिघांससि ।
अतस्त्वाम् गदया मन्द हनिष्ये वज्र कल्पया ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२. तुम	अतस्त्वाम्	८. इसलिये तुझे मैं
मातुलेयः	४. मामा के पुत्र हो किन्तु	गदया	११. गदा से
नः	३. हमारे	मन्द	७. मूर्ख
कृष्ण	१. हे श्रीकृष्ण !	हनिष्ये	१२. मार डालूंगा
मित्रध्रुक्	५. तू मेरे मित्रों का हत्यारा है	वज्र	९. वज्र के
माम् जिघांससि ।	६. मुझे भी मारना चाहता है	कल्पया ॥	१०. समान

श्लोकार्थ— हे श्रीकृष्ण ! तुम हमारे मामा के पुत्र हो । और तू मेरे मित्रों का हत्यारा है। तथा मुझे भी मारना चाहता है । मूर्ख ! इसलिये तुझे मैं वज्र के समान गदा से मार डालूंगा ॥

षष्ठः श्लोकः

तर्ह्यानृण्यमुपैम्यज्ञ मित्राणां मित्रवत्सलः ।
बन्धुरूपमरिं हत्वा व्याधिं देहचरं यथा ॥६॥

पदच्छेद— तर्हि आनृण्यम् उपैमि अज्ञ मित्राणाम् मित्रवत्सलः ।
बन्धुरूपम् अरिम् हत्वा व्याधिम् देहचरम् यथा ॥

शब्दार्थ—

तर्हि	१. तब	बन्धु	७. बन्धु के
आनृण्यम्	११. ऋण से उऋण	रूपम् अरिम्	८. रूप में शत्रु
उपैमि	१२. हो जाऊँगा	हत्वा	९. तुझे मार कर
अज्ञ	२. रे मूर्ख !	व्याधिम्	५. रोग के
मित्राणाम्	१०. मित्रों के	देहचरम्	४. शरीर सन्तापकारी
मित्रवत्सलः ।	३. मित्रों का प्रेमी मैं	यथा ॥	६. समान

श्लोकार्थ— तब रे मूर्ख ! मित्रों का प्रेमी मैं शरीर सन्तापकारी रोग के समान बन्धु के रूप में शत्रु तुझे मार कर मित्रों के ऋण से उऋण हो जाऊँगा ॥

सप्तमः श्लोकः

एवं रूक्षैस्तुदन् वाक्यैः कृष्णं तोत्त्रैरिव द्विपम् ।
गदयाताडयन्मूर्ध्नि सिंहवद् व्यनदच्च सः ॥७॥

पदच्छेद— एवम् रूक्षैः तुदन् वाक्यैः कृष्णम् तोत्त्रैः इव द्विपम् ।
गदया अताडयत् मूर्ध्नि सिंह वत् व्यनदत् च सः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	गदया	९. गदा से (उनके)
रूक्षैः	५. रूखी	अताडयत्	११. प्रहार किया
तुदन्	७. चोट पहुँचाते हुये	मूर्ध्नि	१०. मस्तक पर
वाक्यैः	६. बातों से	सिंह वत्	१३. सिंह के समान
कृष्णम्	२. श्रीकृष्ण को	व्यनदत्	१४. गरज उठा
तोत्त्रैः	३. अंकुश से वेधे गये	च	१२. और
इव द्विपम् ।	४. हाथी के समान	सः ॥	८. उसने

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण को, अंकुश से वेधे गये हाथी के समान रूखी बातों से चोट पहुँचाते हुये उसने गदा से उनके मस्तक पर प्रहार किया। और सिंह के समान गरज उठा ॥

अष्टमः श्लोकः

गदयाभिहतोऽप्याजौ न चचाल यदूद्वहः ।
कृष्णोऽपि तमहन् गुर्व्या कौमोदक्या स्तनान्तरे ॥८॥

पदच्छेद— गदया अभिहतः अपि आजौ न चचाल यदूद्वहः ।
कृष्णः अपि तम् अहन् गुर्व्या कौमोदक्या स्तनान्तरे ॥

शब्दार्थ—

गदया	३. गदा की	कृष्णः	८. श्रीकृष्ण ने
अभिहतः	४. चोट खाकर	अपि	९. भी
अपि	५. भी	तम्	१२. उसके
आजौ	१. रणभूमि में	अहन्	१४. प्रहार किया
न	७. न हुये	गुर्व्या	१०. अपनी भारी
चचाल	६. टस से मस	कौमोदक्या	११. कौमोदकी गदा से
यदूद्वहः ।	२. श्रीकृष्ण	स्तनान्तरे ॥	१३. वक्षः स्थल पर

श्लोकार्थ—रण भूमि में श्रीकृष्ण गदा की चोट खाकर भी टस से मस न हुये। श्रीकृष्ण ने भी अपनी भारी कौमोदकी गदा से उसके वक्षः स्थल पर प्रहार किया ॥

नवमः श्लोकः

गदानिर्भिन्नहृदय उद्वमन् रुधिरं मुखात् ।
प्रसार्य केशबाह्वङ्घ्रीन् धरण्यां न्यपतद् व्यसुः ॥९॥

पदच्छेद— गदा निर्भिन्न हृदयः उद्वमन् रुधिरम् मुखात् ।
प्रसार्य केश बाहु अंघ्रीन् धरण्यां न्यपतत् व्यसुः ॥

शब्दार्थ—

गदा	१. गदा से	प्रसार्य	९. फैलाकर
निर्भिन्न	२. विदीर्ण	केश बाहु	७. केश, बाहु और
हृदयः	३. हृदय वाला (वह)	अङ्घ्रीन्	८. पैरों को
उद्वमन्	६. गिराता हुआ	धरण्याम्	११. धरती पर
रुधिरम्	५. रक्त	न्यपतत्	१२. गिर पड़ा
मुखात् ।	४. मुँह से	व्यसुः ॥	१०. निष्प्राण होकर

श्लोकार्थ—गदा से विदीर्ण हृदय वाला वह मुँह से रक्त गिराता हुआ केश, बाहु और पैरों को फैलाकर निष्प्राण होकर धरती पर गिर पड़ा ॥

दशमः श्लोकः

ततः सूक्ष्मतरं ज्योतिः कृष्णमाविशदद्भुतम् ।
पश्यतां सर्वभूतानां यथा चैद्यवधे नृप ॥१०॥

पदच्छेद— ततः सूक्ष्म तरम् ज्योतिः कृष्णम् आविशत् अद्भुतम् ।
पश्यताम् सर्वभूतानाम् यथा चैद्य वधे नृप ॥

शब्दार्थ—

ततः	५. उसके शरीर से	पश्यताम्	४. देखते-देखते
सूक्ष्मतरम्	६. अत्यन्त सूक्ष्म	सर्व	२. सभी
ज्योतिः	७. ज्योति निकलकर	भूतानाम्	३. प्राणियों के
कृष्णम्	८. श्रीकृष्ण में	यथा	११. जैसे
आविशत्	१०. समा गई	चैद्य वधे	१२. शिशुपाल की ज्योति समाई थी
अद्भुतम् ।	९. विचित्र रीति से	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सभी प्राणियों के देखते-देखते उसके शरीर से अत्यन्त सूक्ष्म ज्योति निकल कर श्रीकृष्ण में विचित्र रीति से समा गई जैसे शिशुपाल की ज्योति समाई थी ॥

एकादशः श्लोकः

विदूरथस्तु तद्भ्राता भ्रातृशोकपरिप्लुतः ।
आगच्छदसिचर्मभ्यामुच्छ्वसंस्तज्जिघांसया ॥११॥

पदच्छेद— विदूरथः तु तत् भ्राता भ्रातृ शोक परिप्लुतः ।
आगच्छत् असि चर्मभ्याम् उच्छ्वसन् तत् जिघांसया ॥

शब्दार्थ—

विदूरथः तु	३.	विदूरथ	आगच्छत्	१०.	आया
तत्	१.	उसका	असि	७.	तलवार और
भ्राता	२.	भाई	चर्मभ्याम्	८.	ढाल लेकर
भ्रातृशोक	४.	भाई के शोक से	उच्छ्वसन्	६.	लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ
परिप्लुतः ।	५.	व्याकुल होकर	तत् जिघांसया ॥	९.	श्रीकृष्ण को मार डालने की इच्छा से

श्लोकार्थ—उसका भाई विदूरथ भाई के शोक से व्याकुल होकर लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ तलवार और ढाल लेकर श्रीकृष्ण को मार डालने की इच्छा से आया ॥

द्वादशः श्लोकः

तस्य चापततः कृष्णश्चक्रेण क्षुरनेमिना ।
शिरो जहार राजेन्द्र सकिरीटं सकुण्डलम् ॥१२॥

पदच्छेद— तस्य च आपततः कृष्णः चक्रेण क्षुरनेमिना ।
शिरः जहार राजेन्द्र सकिरीटम् सकुण्डलम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य च	२.	उसके	शिरः	९.	उसका सिर
आपततः	३.	टूट पड़ते ही	जहार	१०.	धड़ से अलग कर दिया
कृष्णः	४.	श्रीकृष्ण ने	राजेन्द्र	१.	हे महाराज!
चक्रेण	६.	चक्र से	सकिरीटम्	७.	मुकुट और
क्षुरनेमिना ।	५	छुरे की धार वाले	सकुण्डलम् ॥	८.	कुण्डलों सहित

श्लोकार्थ—हे महाराज ! उसके टूट पड़ते ही श्रीकृष्ण ने छुरे की धार वाले चक्र से मुकुट और कुण्डलों सहित उसका सिर धड़ से अलग कर दिया ॥

त्रयोदशः श्लोकः

एवं सौभं च शाल्वं च दन्तवक्त्रं सहानुजम् ।
हत्वा दुर्विषहानन्यैरीडितः सुरमानवैः ॥१३॥

पदच्छेद— एवम् सौभम् च शाल्वम् च दन्तवक्त्रम् सह अनुजम् ।
हत्वा दुर्विषहान् अन्यैः ईडितः सुर मानवैः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१. इस प्रकार	हत्वा	७. मार कर
सौभम् च	२. सौभ	दुर्विषहान्	६. अत्यन्त कठिन था
शाल्वम् च	३. शाल्व और	अन्यैः	८. जिसे मारना
दन्तवक्त्रम्	६. दन्तवक्त्र को	ईडितः	१२. स्तुति किये जाते हुये पुरी में प्रवेश किया
सह	५. सहित	सुर	१०. देवता और
अनुजम् ।	४. भाई (विदूरथ)	मानवैः ॥	११. मनुष्यों द्वारा

श्लोकार्थ—इस प्रकार सौभ, शाल्व और भाई विदूरथ सहित दन्तवक्त्र को मारकर, जिसे मारना अत्यन्त कठिन था, देवता और मनुष्यों द्वारा स्तुति किये जाते हुये द्वारकापुरी में प्रवेश किया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

मुनिभिः सिद्धगन्धर्वैर्विद्याधरमहोरगैः ।
अप्सरोभिः पितृगणैर्यक्षैः किन्नरचारणैः ॥१४॥

पदच्छेद— मुनिभिः सिद्ध गन्धर्वैः विद्याधर महोरगैः ।
अप्सरोभिः पितृ गणैः यक्षैः किन्नर चारणैः ॥

शब्दार्थ—

मुनिभिः	१. मुनियों	अप्सरोभिः	६. अप्सराओं
सिद्ध	२. सिद्धों	पितृ गणैः	७. पितरों
गन्धर्वैः	३. गन्धर्वों	यक्षैः	८. यक्षों
विद्याधर	४. विद्याधरों	किन्नर	९. किन्नरों
महोरगैः ।	५. महानागों	चारणैः ॥	१०. चारणों द्वारा पुष्प वर्षा हो रही थी

श्लोकार्थ—मुनियों, सिद्धों, गन्धर्वों, विद्याधरों, महानागों, अप्सराओं, पितरों, यक्षों, किन्नरों, चारणों द्वारा पुष्प वर्षा हो रही थी ॥

पञ्चदशः श्लोकः

उपगीयमानविजयः कुसुमैरभिवर्षितः ।
वृतश्च वृष्णिप्रवरैर्विवेशालङ्कृतां पुरीम् ॥१५॥

पदच्छेद— उपगीय मान विजयः कुसुमैः अभिवर्षितः ।
वृतः च वृष्णि प्रवरैः विवेश अलङ्कृताम् पुरीम् ॥

शब्दार्थ—

उपगीयमान	२.	गाये जाते हुये तथा	वृतः च	६.	युक्त होकर
विजय	१.	विजय के गीत	वृष्णिप्रवरैः	५.	और श्रेष्ठ वृष्णिवंशियों से
कुसुमैः	३.	पुष्पों की	विवेश	९.	प्रवेश किया
अभिवर्षितः ।	४.	वर्षा करते हुये	अलङ्कृताम्	७.	सजी हुई
			पुरीम् ॥	८.	द्वारका पुरी में

श्लोकार्थ—विजय के गीत गाये जाते हुये तथा पुष्पों की वर्षा करते हुये और श्रेष्ठ वृष्णिवंशियों से युक्त होकर सजी हुई द्वारका पुरी में प्रवेश किया ॥

षोडशः श्लोकः

एवं योगेश्वरः कृष्णो भगवाञ्जगदीश्वरः ।
ईयते पशुदृष्टीनां निर्जितो जयतीति सः ॥१६॥

पदच्छेद— एवम् योगेश्वरः कृष्णः भगवान् जगदीश्वरः ।
ईयते पशु दृष्टीनाम् निर्जितः जयतिइति सः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	ईयते	८.	दिखाई देते हैं
योगेश्वरः	२.	योगेश्वर	पशुदृष्टीनाम्	६.	पशु के समान अविवेकियों को
कृष्णः	५.	श्रीकृष्ण	निर्जितः	७.	हारे हुये
भगवान्	४.	भगवान्	जयति इति	१०.	जीतते ही हैं
जगदीश्वरः ।	३.	जगदीश्वर	सः ॥	९.	वस्तुतः वे

श्लोकार्थ—इस प्रकार योगेश्वर जगदीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण पशु के समान अविवेकियों को हारे हुये दिखाई देते हैं । वस्तुतः वे जीतते ही हैं ॥

सप्तदशः श्लोकः

श्रुत्वा युद्धोद्यमं रामः कुरूणां सह पाण्डवैः ।
तीर्थाभिषेकव्याजेन मध्यस्थः प्रययौ किल ॥१७॥

पदच्छेद— श्रुत्वा युद्ध उद्यमम् रामः कुरूणाम् सह पाण्डवैः ।
तीर्थ अभिषेक व्याजेन मध्यस्थः प्रययौ किल ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	५. सुनकर	तीर्थ	७. तीर्थों में
युद्ध उद्यमम्	४. युद्ध के लिये प्रयत्न	अभिषेक	८. स्नान करने के
रामः	१. बलराम जी	व्याजेन	९. बहाने
कुरूणाम्	३. कौरवों का	मध्यस्थः	६. मध्यस्थ होने के कारण
सह पाण्डवैः ।	२. पाण्डवों के साथ	प्रययौ किल ॥	१०. द्वारका से चले गये

श्लोकार्थ—बलराम जी पाण्डवों के साथ कौरवों का युद्ध के लिये प्रयत्न सुनकर मध्यस्थ होने के कारण तीर्थों में स्नान करने के बहाने द्वारका से चले गये ॥

अष्टादशः श्लोकः

स्नात्वा प्रभासे सन्तर्प्य देवर्षिपितृमानवान् ।
सरस्वतीं प्रतिस्रोतं ययौ ब्राह्मणसंवृतः ॥१८॥

पदच्छेद— स्नात्वा प्रभासे सन्तर्प्य देवर्षि पितृ मानवान् ।
सरस्वतीम् प्रतिस्रोतम् ययौ ब्राह्मण संवृतः ॥

शब्दार्थ—

स्नात्वा	२. स्नान करके	सरस्वतीम्	६. सरस्वती नदी
प्रभासे	१. वे प्रभास क्षेत्र में	प्रति स्रोतम्	७. जिधर से आ रही थी
सन्तर्प्य	५. तर्पण करके	ययौ	१०. चल दिये
देवर्षि	३. देवता-ऋषि	ब्राह्मण	८. ब्राह्मणों के
पितृमानवान् ।	४. पितर और मनुष्यों का	संवृतः ॥	९. साथ उधर ही

श्लोकार्थ—वे प्रभास क्षेत्र में स्नान करके देवता, ऋषि, पितर और मनुष्यों का तर्पण करके सरस्वती नदी जिधर से आ रही थी, ब्राह्मणों के साथ उधर ही चल दिये ॥

एकोनविंशः श्लोकः

पृथूदकं बिन्दुसरस्त्रितकूपं सुदर्शनम् ।
विशालं ब्रह्मतीर्थं च चक्रं प्राचीं सरस्वतीम् ॥१६॥

पदच्छेद— पृथूदकम् बिन्दुसरः त्रितकूपम् सुदर्शनम् ।
विशालम् ब्रह्मतीर्थम् च चक्रम् प्राचीम् सरस्वतीम् ॥

शब्दार्थ—

पृथूदकम्	१.	वे क्रमशः पृथूदक	विशालम्	५.	विशाल तीर्थ
बिन्दुसरः	२.	बिन्दु सर	ब्रह्मतीर्थम्	६.	ब्रह्मतीर्थ
त्रितकूपम्	३.	त्रितकूप	च चक्रम्	७.	चक्रतीर्थ और
सुदर्शनम् ।	४.	सुदर्शन	प्राचीम्	८.	पूर्ववाहिनी
			सरस्वतीम् ॥	९.	सरस्वती आदि तीर्थों में गये

श्लोकार्थ—वे क्रमशः पृथूदक, बिन्दुसर, त्रितकूप, सुदर्शन, विशालतीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, चक्रतीर्थ और पूर्ववाहिनी सरस्वती आदि तीर्थों में गये ॥

विंशः श्लोकः

यमुनामनु यान्येव गङ्गामनु च भारत ।
जगाम नैमिषं यत्र ऋषयः सत्रमासते ॥२०॥

पदच्छेद— यमुनाम् अनु यानि एव गङ्गाम् अनु च भारत ।
जगाम नैमिषम् यत्र ऋषयः सत्रम् आसते ॥

शब्दार्थ—

यमुनाम् अनु	२.	यमुना के तट पर	जगाम	७.	गये
यानि एव	५.	जो भी तीर्थ हैं	नैमिषम्	६.	नैमिषारण्य क्षेत्र में
गङ्गाम् अनु	४.	गङ्गा के तट पर	यत्र	८.	जहाँ
च	३.	और	ऋषयः	९.	ऋषि गण
भारत ।	१.	हे परीक्षित् !	सत्रम् आसते ॥	१०.	यज्ञ कर रहे थे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! यमुना के तट पर और गङ्गा के तट पर जो भी तीर्थ हैं उनमें होकर नैमिषारण्य क्षेत्र में गये, जहाँ ऋषिगण यज्ञ कर रहे थे ॥

एकविंशः श्लोकः

तमागतमभिप्रेत्य मुनयो दीर्घसत्रिणः ।
अभिनन्द्य यथान्यायं प्रणम्योत्थाय चार्चयन् ॥२१॥

पदच्छेद— तम् आगतम् अभिप्रेत्य मुनयः दीर्घसत्रिणः ।
अभिनन्द्य यथा न्यायम् प्रणम्य उत्थाय च अर्चयन् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१.	उन्हें	अभिनन्द्य	९.	उनका सत्कार किया
आगतम्	२.	आये हुये	यथा न्यायम्	१०.	यथा योग्य
अभिप्रेत्य	३.	जानकर	प्रणम्य	११.	प्रणाम करके
मुनयः	६.	मुनियों ने	उत्थाय	७.	उठकर
दीर्घ	४.	दीर्घकाल तक	च	८.	और
सत्रिणः ।	५.	यज्ञ करने वाले	अर्चयन् ॥	१२	पूजा की

श्लोकार्थ— उन्हें आये हुये जानकर दीर्घकाल तक यज्ञ करने वाले मुनियों ने उठकर उनका सत्कार किया और यथा योग्य प्रणाम करके पूजा की ॥

द्वाविंशः श्लोकः

सोऽर्चितः सपरीवारः कृतासनपरिग्रहः ।
रोमहर्षणमासीनं महर्षेः शिष्यमैक्षत ॥२२॥

पदच्छेद— सः अर्चितः सपरीवारः कृतासन परिग्रहः ।
रोमहर्षणम् आसीनम् महर्षेः शिष्यम् ऐक्षत ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन्होंने	रोमहर्षण	९.	रोम हर्षण सूत को (ऊँचे आसन पर)
अर्चितः	६.	पूजित होने पर	आसीनम्	१०.	बैठे हुये
सपरीवारः	२.	अपने साथियों के साथ	महर्षेः	७.	महर्षि व्यास के
कृत	५.	कर लेने के बाद	शिष्यम्	८.	शिष्य
आसन	३.	आसन	ऐक्षत ॥	११.	देखा
परिग्रहः ।	४.	ग्रहण			

श्लोकार्थ— उन्होंने अपने साथियों के साथ आसन ग्रहण कर लेने के बाद पूजित होने पर महर्षि व्यास के शिष्य रोमहर्षण सूत को ऊँचे आसन पर बैठे हुये देखा ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अप्रत्युत्थायिनं सूतमकृतप्रह्वणाञ्जलिम् ।
अध्यासीनं च तान् विप्रांश्चुकोपोद्वीक्ष्य माधवः ॥२३॥

पदच्छेद— अप्रति उत्थायिनम् सूतम् अकृत प्रह्वण अञ्जलिम् ।
अध्यासीनम् च तान् विप्रान् चुकोप उद्वीक्ष्य माधवः ॥

शब्दार्थ—

अप्रति	२. न करने वाले	अध्यासीनम्	९. आसन पर बैठे हुये
उत्थायिनम्	१. उठकर उनका स्वागत	च तान्	७. और उन
सूतम्	६. सूत को	विप्रान्	८. ब्राह्मणों से ऊंचे
अकृत	५. न करने वाले	चुकोप	१२. क्रोध किया
प्रह्वण	४. प्रणाम	उद्वीक्ष्य	१०. देखकर
अञ्जलिम् ।	३. हाथ जोड़कर	माधवः ॥	११. बलराम जी ने

श्लोकार्थ— उठकर उनका स्वागत न करने वाले, हाथ जोड़कर प्रणाम न करने वाले और उन ब्राह्मणों से ऊंचे आसन पर बैठे हुये सूत को देखकर बलराम जी ने क्रोध किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

कस्मादसाविमान् विप्रानध्यास्ते प्रतिलोमजः ।
धर्मपालांस्तथैवास्मान् वधमर्हति दुर्मतिः ॥२४॥

पदच्छेद— कस्मात् असौ इमान् विप्रान् अध्यास्ते प्रति लोमजः ।
धर्मपालान् तथा एव अस्मान् वधम् अर्हति दुर्मतिः ॥

शब्दार्थ—

कस्मात्	३. क्यों	धर्मपालान्	७. धर्म के रक्षक
असौ	२ यह	तथा एव	६. तथा
इमान्	४. इन	अस्मान्	८. हम लोगों से
विप्रान्	५. ब्राह्मणों से	वधम्	११. वध के
अध्यास्ते	९. ऊपर बैठा हुआ है (यह)	अर्हति	१२. योग्य है
प्रतिलोमजः ।	१. प्रतिलोम जाति में उत्पन्न	दुर्मतिः ॥	१०. दुर्बुद्धि

श्लोकार्थ—प्रति लोम जाति में उत्पन्न यह क्यों इन ब्राह्मणों से तथा धर्म के रक्षक हम लोगों से ऊपर बैठा हुआ है । यह दुर्बुद्धि वध के योग्य है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

ऋषेर्भगवतो भूत्वा शिष्योऽधीत्य बहूनि च ।
सेतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः ॥२५॥

पदच्छेद— ऋषेः भगवतः भूत्वा शिष्यः अधीत्य बहूनि च ।
स इतिहास पुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वशः ॥

शब्दार्थ—

ऋषेः	२.	व्यासदेव का	सः	७.	सहित
भगवतः	१.	भगवान्	इतिहास	६.	इतिहास
भूत्वा	४.	होकर भी	पुराणानि	८.	पुराणों और
शिष्यः	३.	शिष्य	धर्म	९.	धर्म
अधीत्य	१२.	पढ़कर भी (यह उद्दण्ड है)	शास्त्राणि	१०.	शास्त्रों को
बहूनि च ।	५.	बहुत से	सर्वशः ॥	११.	सब प्रकार से

श्लोकार्थ—(यह) भगवान् व्यासदेव का शिष्य होकर भी बहुत से इतिहास सहित पुराणों को और धर्मशास्त्रों को सब प्रकार से पढ़कर भी उद्दण्ड है ॥

षड्विंशः श्लोकः

अदान्तस्याविनीतस्य वृथा पण्डितमानिनः ।
न गुणाय भवन्ति स्म नटस्येवाजितात्मनः ॥२६॥

पदच्छेद— अदान्तस्य अविनीतस्य वृथा पण्डित मानिनः ।
न गुणाय भवन्ति स्म नटस्य इव अजितआत्मनः ॥

शब्दार्थ—

अदान्तस्य	१.	इन्द्रियों का दमन न करने वाले	न गुणाय	९.	गुणकारी नहीं
अविनीतस्य	२.	अविनीत	भवन्ति स्म	१०.	होते हैं
वृथा	३.	झूठ-मूठ	नटस्य	७.	नट के
पण्डित	४.	अपने को पण्डित	इव	८.	समान
मानिनः ।	५.	मानने वाले व्यक्ति के (शास्त्र ज्ञान)	अजितआत्मनः ॥	६.	अजितेन्द्रिय

श्लोकार्थ—इन्द्रियों का दमन न करने वाले, अविनीत, झूठ-मूठ अपने को पण्डित मानने वाले व्यक्ति के शास्त्र-ज्ञान अजितेन्द्रिय नट के समान गुणकारी नहीं होते हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

एतदर्थो हि लोकेऽस्मिन्नवतारो मया कृतः ।
वध्या मे धर्मध्वजिनस्ते हि पातकिनोऽधिकाः ॥२७॥

पदच्छेद— एतत् अर्थे हि लोके अस्मिन् अवतारः मया कृतः ।
वध्याः मे धर्मध्वजिनः ते हि पातकिनः अधिकाः ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	इसी के	वध्याः	१४.	वध करने योग्य हैं
अर्थे हि	२.	लिये ही	मे	१३.	मेरे लिये
लोके	५.	संसार में	धर्म	८.	धर्म का
अस्मिन्	४.	इस	ध्वजिनः	९.	चिह्न धारण करने वाले
अवतारः	६.	अवतार	ते हि	१०.	वे लोग
मया	३.	मैंने	पातकिनः	१२.	अधर्मी होते हैं और
कृतः ।	७.	लिया है	अधिकाः ॥	११.	अधिकतर

श्लोकार्थ— इसी के लिये ही मैंने इस संसार में अवतार लिया है । धर्म का चिह्न धारण करने वाले वे लोग अधिकतर अधर्मी होते हैं । और मेरे लिये वध करने योग्य हैं ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

एतावदुक्त्वा भगवान् निवृत्तोऽसद्वधादपि ।
भावित्वात्तं कुशाग्रेण करस्थेनाहनत् प्रभुः ॥२८॥

पदच्छेद— एतावत् उक्त्वा भगवान् निवृत्तः असत् वधात् अपि ।
भावित्वात् तम् कुश अग्रेण करस्थेन अहनत् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

एतावत्	१.	इतना	भावित्वात्	९.	प्रारब्धवश
उक्त्वा	२.	कहकर	तम्	१३.	उस पर
भगवान्	३.	भगवान्	कुश	११.	कुश के
निवृत्तः	७.	निवृत्त होने पर	अग्रेण	१२.	अग्र भाग से
असत्	५.	दुष्टों के	करस्थेन	१०.	हाथ में रखे
वधात्	६.	वध से	अहनत्	१४.	प्रहार किया
अपि ।	८.	भी	प्रभुः ॥	४.	बलराम ने

श्लोकार्थ—इतना कहकर भगवान् बलराम ने दुष्टों के वध से निवृत्त होने पर भी प्रारब्धवश हाथ में रखे कुश के अग्र भाग से उस पर प्रहार किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

हाहेति वादिनः सर्वे मुनयः खिन्नमानसाः ।
ऊचुः सङ्कर्षणं देवमधर्मस्ते कृतः प्रभो ॥२९॥

पदच्छेद— हाहा इति वादिनः सर्वे मुनयः खिन्न मानसाः ।
ऊचुः सङ्कर्षणम् देवम् अधर्मः ते कृतः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

हाहा इति	१. हाय-हाय यह	ऊचुः	९. कहने लगे
वादिनः	२. कहते हुये	सङ्कर्षणम्	८. बलराम जी से
सर्वे	३. सभी	देवम्	७. भगवान्
मुनयः	४. मुनि	अधर्मः ते	११. आपने अधर्म
खिन्न	५. खिन्न	कृतः	१२. किया है
मानसाः ।	६. चित्त होकर	प्रभो ॥	१०. हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हाय-हाय यह कहते हुये सभी मुनि खिन्न चित्त होकर भगवान् बलराम जी से कहने लगे—हे प्रभो ! आपने अधर्म किया है ॥

त्रिंशः श्लोकः

अस्य ब्रह्मासनं दत्तमस्माभिर्यदुनन्दन ।
आयुश्चात्माक्लमं तावद् यावत् सत्रं समाप्यते ॥३०॥

पदच्छेद— अस्य ब्रह्मासनम् दत्तम् अस्माभिः यदुनन्दन ।
आयुः च आत्म अक्लमम् तावत् यावत् सत्रम् समाप्यते ॥

शब्दार्थ—

अस्य	३. इनको	आत्म	१०. शारीरिक
ब्रह्मासनम्	४. ब्राह्मणोचित आसन	अक्लमम्	११. कष्ट से रहित
दत्तम्	५. दिया था (और)	तावत्	९. तब तक के लिये
अस्माभिः	२. हम लोगों ने	यावत्	६. जब तक
यदुनन्दन ।	१. हे यदुनन्दन !	सत्रम्	७. यज्ञ
आयुः च	१२. आयु भी दे दी थी	समाप्यते ॥	८. समाप्त न हो जाय

श्लोकार्थ—हे यदुनन्दन ! हम लोगों ने इनको ब्राह्मणोचित आसन दिया था । और जब तक यज्ञ समाप्त न हो जाय तब तक के लिये शारीरिक कष्ट से रहित आयु भी दे दी थी ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

अजानतैवाचरितस्त्वया ब्रह्मवधो यथा ।
योगेश्वरस्य भवतो नाम्नायोऽपि नियामकः ॥३१॥

पदच्छेद— अजानता एव आचरितः त्वया ब्रह्मवधः यथा ।
योगेश्वरस्य भवतः न आम्नायः अपि नियामकः ॥

शब्दार्थ—

अजानता	१.	अनजान में	योगेश्वरस्य	७.	हे योगिराज
एव	२.	ही	भवतः	८.	आप पर
आचरितः	६.	कार्य किया	न	१२.	नहीं है
त्वया	३.	आपने	आम्नायः	९.	वेद
ब्रह्मवधः	४.	ब्रह्महत्या	अपि	१०.	भी
यथा ।	५.	जैसा	नियामकः ॥	११.	नियन्त्रण करने वाला

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! अनजान में ही आपने ब्रह्महत्या जैसा कार्य किया है । हे योगिराज ! आप पर वेद भी नियन्त्रण करने वाला नहीं है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यद्येतद् ब्रह्महत्यायाः पावनं लोकपावन ।
चरिष्यति भवाँल्लोकसङ्ग्रहोऽनन्यचोदितः ॥३२॥

पदच्छेद— यदि एतत् ब्रह्महत्यायाः पावनम् लोकपावन ।
चरिष्यति भवान् लोक सङ्ग्रहः अनन्य चोदितः ॥

शब्दार्थ—

यदि	३.	यदि	चरिष्यति	१०.	कर लेंगे तो
एतत्	७.	इस	भवान्	४.	आप
ब्रह्महत्यायाः	८.	ब्रह्महत्या का	लोक	११.	लोगों को
पावनम्	९.	प्रायश्चित्त	सङ्ग्रहः	१२.	शिक्षा मिलेगी
लोक	१.	लोगों को	अनन्य	५.	दूसरे की
पावन ।	२.	पवित्र करने वाले	चोदितः ॥	६.	प्रेरणा के बिना स्वयम् ही

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! लोगों को पवित्र करने वाले यदि आप दूसरे की प्रेरणा के बिना स्वयम् ही इस ब्रह्महत्या का प्रायश्चित्त कर लेंगे तो लोगों को शिक्षा मिलेगी ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—करिष्ये वधनिर्वेशं लोकानुग्रहकाम्यया ।
नियमः प्रथमे कल्पे यावान् स तु विधीयताम् ॥३३॥

पदच्छेद— करिष्ये वध निर्वेशम् लोक अनुग्रह काम्यया ।
नियमः प्रथमे कल्पे यावान् सः तु विधीयताम् ॥

शब्दार्थ—

करिष्ये	६.	करूँगा (अतः)	नियमः	१०.	प्रायश्चित्त हो
वध	४.	मैं हत्या का	प्रथमे	७.	इसके लिये प्रथम
निर्वेशम्	५.	प्रायश्चित्त	कल्पे	८.	श्रेणी का
लोक	१.	लोगों पर	यावान्	९.	जो
अनुग्रह	२.	अनुग्रह	सः तु	११.	उसी का
काम्यया ।	३.	करने की इच्छा से	विधीयताम् ॥	१२.	विधान कीजिये

श्लोकार्थ—लोगों पर अनुग्रह करने की इच्छा से मैं हत्या का प्रायश्चित्त करूँगा । अतः इसके लिये प्रथम श्रेणी का जो प्रायश्चित्त हो उसी का विधान कीजिये ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

दीर्घमायुर्बतैतस्य सत्त्वमिन्द्रियमेव च ।
आशासितं यत्तद् ब्रूत साधये योगमायया ॥३४॥

पदच्छेद— दीर्घम् आयुः बत एतस्य सत्त्वम् इन्द्रियम् एव च ।
आशासितम् यत्-तत् ब्रूत साधये योग मायया ॥

शब्दार्थ—

दीर्घम्	३.	लम्बी	आशासितम्	९.	चाहते हों
आयुः	४.	आयु	यत्-	८.	जो
बत	१.	फिर आप लोग	तत्	१०.	वह
एतस्य	२.	इस सूत को	ब्रूत	११.	बतला दीजिये
सत्त्वम्	५.	बल या	साधये	१४.	सम्पन्न कर दूँगा
इन्द्रियम्	६.	इन्द्रिय शक्ति	योग	१२.	मैं योग
एव च ।	७.	ही	मायया ॥	१३.	बल से

श्लोकार्थ—फिर आप लोग इस सूत को लम्बी आयु, बल या इन्द्रिय शक्ति ही जो चाहते हों वह बतला दीजिये मैं योग-बल से सम्पन्न कर दूँगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ऋषय ऊचुः— अस्त्रस्य तव वीर्यस्य मृत्योरस्माकमेव च ।
यथा भवेद् वचः सत्यं तथा राम विधीयताम् ॥३५॥

पदच्छेद— अस्त्रस्य तव वीर्यस्य मृत्योः अस्माकम् एव च ।
यथा भवेत् वचः सत्यम् तथा राम विधीयताम् ॥

शब्दार्थ—

अस्त्रस्य	४.	अस्त्र और	यथा	२.	जिससे
तव	३.	आपका	भवेत्	११.	हो
वीर्यस्य	५.	पराक्रम	वचः	९.	वचन
मृत्योः	६.	इसकी मृत्यु	सत्यम्	१०.	सत्य
अस्माकम्	८.	हमारा	तथा	१२.	वैसा ही
एव च ।	७.	और	राम	१.	हे बलराम जी !
			विधीयताम् ॥	१३.	कीजिये

श्लोकार्थ—हे बलराम जी ! जिससे आपका अस्त्र और पराक्रम, इसकी मृत्यु और हमारा वचन सत्य हो, वैसा ही कीजिये ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—आत्मा वै पुत्र उत्पन्न इति वेदानुशासनम् ।
तस्मादस्य भवेद् वक्ता आयुरिन्द्रियसत्त्ववान् ॥३६॥

पदच्छेद— आत्मा वै पुत्रः उत्पन्नः इति वेद अनुशासनम् ।
तस्मात् अस्य भवेत् वक्ता आयुः इन्द्रिय सत्त्ववान् ॥

शब्दार्थ—

आत्मा	१.	आत्मा	तस्मात्	७.	इसलिये
वै पुत्रः	२.	ही पुत्र रूप में	अस्य	८.	इसका पुत्र
उत्पन्नः	३.	उत्पन्न होता है	भवेत् वक्ता	९.	वक्ता होगा
इति	४.	ऐसा	आयुः	१०.	मैं उसे आयु
वेद	५.	वेदों का	इन्द्रिय	११.	इन्द्रिय शक्ति और
अनुशासनम् ।	६	कहना है	सत्त्ववान् ॥	१२.	बल दे दूँगा

श्लोकार्थ—आत्मा ही पुत्र रूप में उत्पन्न होता है, ऐसा वेदों का कहना है । इसलिये इसका पुत्र वक्ता होगा । मैं उसे आयु, इन्द्रिय-शक्ति और बल दे दूँगा ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

किं वः कामो मुनिश्रेष्ठा ब्रूताहं करवाण्यथ ।
अजानतस्त्वपचितिं यथा मे चिन्त्यतां बुधाः ॥३७॥

पदच्छेद— किम् वः कामः मुनिश्रेष्ठाः ब्रूत अहम् करवाणि अथ ।
अजानतः तु अपचितिम् यथा मे चिन्त्यताम् बुधाः ॥

शब्दार्थ—

किम् वः	२.	आप लोगों की क्या	अजानतः तु	९.	अनजान में हुये
कामः	३.	इच्छा है	अपचितिम्	११.	अपराध का प्रायश्चित्त
मुनिश्रेष्ठाः	१.	हे मुनिवरो !	यथा	१२.	जैसा हो
ब्रूत	४.	बताइये	मे	१०.	मेरे
अहम्	५.	मैं वह	चिन्त्यताम्	१३.	उसे विचार कर कहिये
करवाणि	६.	पूर्ण करूँगा	बुधाः ॥	८.	हे विद्वानो !
अथ ।	७.	इसके बाद			

श्लोकार्थ—हे मुनिवरो ! आप लोगों की क्या इच्छा है, बताइये । मैं वह पूर्ण करूँगा । हे विद्वानों ! अनजान में हुये मेरे अपराध का प्रायश्चित्त जैसा हो उसे विचार कर कहिये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

ऋषय ऊचुः— इल्वलस्य सुतो घोरो बल्वलो नाम दानवः ।
स दूषयति नः सत्रमेत्य पर्वणि पर्वणि ॥३८॥

पदच्छेद— इल्वलस्य सुतः घोरः बल्वलः नाम दानवः ।
सः दूषयति नः सत्रम् एत्य पर्वणि पर्वणि ॥

शब्दार्थ—

इल्वलस्य	१.	इल्वल का	सः	७.	वह
सुतः	२.	पुत्र	दूषयति	१२.	दूषित कर देता है
घोरः	५.	भयंकर	नः सत्रम्	११.	हमारे यज्ञ को
बल्वलः	३.	बल्वल	एत्य	१०.	आकर
नाम	४.	नाम का एक	पर्वणि	८.	प्रत्येक
दानवः ।	६.	दानव है	पर्वणि ॥	९.	पर्व पर

श्लोकार्थ—इल्वल का पुत्र बल्वल नाम का एक भयंकर दानव है । वह प्रत्येक पर्व पर आकर हमारे यज्ञ को दूषित कर देता है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तं पापं जहि दाशार्ह तन्नः शुश्रूषणं परम् ।
पूयशोणितविण्मूत्रसुरामांसाभिवर्षिणम् ॥३६॥

पदच्छेद— तम् पापम् जहि दाशार्ह तत् नः शुश्रूषणम् परम् ।
पूय शोणित विट्मूत्रसुरा मांस अभिवर्षिणम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	६.	उस	पूय	२.	पीव
पापम्	१०.	पापी को	शोणित	३.	रक्त
जहि	११.	मार डालिये	विट्	४.	विष्ठा
दाशार्ह	१.	हे बलराम जी ! वह	मूत्र	५.	मूत्र
तत् नः	१२.	यह हमारी	सुरा	६.	मद्य और
शुश्रूषणम्	१४.	सेवा होगी	मांस	७.	मांस की
परम् ।	१३.	बहुत बड़ी	अभिवर्षिणम् ॥	८.	वर्षा करने लगता है

श्लोकार्थ—हे बलराम जी ! वह पीव, रक्त, विष्ठा, मूत्र, मद्य और मांस की वर्षा करने लगता है । आप उस पापी को मार डालिये । यह हमारी बहुत बड़ी सेवा होगी ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

ततश्च भारतं वर्षं परीत्य सुसमाहितः ।
चरित्वा द्वादश मासांस्तीर्थस्नायी विशुद्ध्यसे ॥४०॥

पदच्छेद— ततः च भारतम् वर्षम् परीत्य सु समाहितः ।
चरित्वा द्वादश मासान् तीर्थस्नायी विशुद्ध्यसे ॥

शब्दार्थ—

ततः च	१.	इसके बाद	चरित्वा	७.	विचरण करने से
भारतम् वर्षम्	५.	भारतवर्ष की	द्वादशमासान्	४.	बारह मासों तक
परीत्य	६	प्रदक्षिणा करते हुये	तीर्थस्नायी	३.	तीर्थों में स्नान करके
सुसमाहितः ।	२.	एकाग्र चित्त से	विशुद्ध्यसे ॥	८.	आप शुद्ध हो जावेंगे

श्लोकार्थ— इसके बाद एकाग्र चित्त से तीर्थों में स्नान करके बारह मासों तक भारत वर्ष की प्रदक्षिणा करते हुये विचरण करने से आप शुद्ध हो जावेंगे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे बलदेवचरित्रे बल्वलवधोपक्रमो
नाम अष्टसप्ततितमः अध्यायः ॥७८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकोनाशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—ततः पर्वण्युपावृत्ते प्रचण्डः पांसुवर्षणः ।

भीमो वायुरभूद् राजन् पूयगन्धस्तु सर्वशः ॥१॥

पदच्छेद— ततः पर्वणि उपावृत्ते प्रचण्डः पांसु वर्षणः ।

भीमः वायुः अभूत् राजन् पूयगन्धः तु सर्वशः ॥

शब्दार्थ—

ततः	२.	इस प्रकार	भीमः	८.	प्रचण्ड
पर्वणि	३.	पर्व का दिन	वायुः	९.	वायु
उपावृत्ते	४.	आने पर	अभूत्	१०.	बहने लगा और
प्रचण्डः	६.	भयंकर	राजन्	१.	हे राजन् !
पांसु	५.	धूल की	पूयगन्धः	१२.	पीव की दुर्गन्ध आने लगी
वर्षणः ।	७.	वर्षा होने लगी	तु सर्वशः ॥	११.	चारों ओर से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार पर्व का दिन आने पर धूल की भयंकर वर्षा होने लगी । प्रचण्ड वायु बहने लगा और चारों ओर से पीवकी दुर्गन्ध आने लगी ॥

द्वितीयः श्लोकः

ततोऽमेध्यमयं वर्षं बल्वलेन विनिर्मितम् ।

अभवद् यज्ञशालायां सोऽन्वदृश्यत शूलधृक् ॥२॥

पदच्छेद— ततः अमेध्यमयम् वर्षम् बल्वलेन विनिर्मितम् ।

अभवत् यज्ञशालायाम् सः अन्वदृश्यत शूलधृक् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	अभवत्	७.	हुई (और)
अमेध्यमयम्	५.	अपवित्र वस्तुओं की	यज्ञशालायाम्	२.	यज्ञशाला में
वर्षम्	६.	वर्षा	सः	८.	वह स्वयम् भी
बल्वलेन	३.	बल्वल के द्वारा	अन्वदृश्यत	१०.	दिखाई पड़ा
विनिर्मितम् ।	४.	रची गई	शूलधृक् ॥	९.	त्रिशूल धारण किये हुये

श्लोकार्थ—इसके बाद यज्ञशाला में बल्वल के द्वारा रची गई अपवित्र वस्तुओं की वर्षा हुई और वह स्वयम् भी त्रिशूल धारण किये दिखाई पड़ा ॥

तृतीयः श्लोकः

तं विलोक्य बृहत्कायं भिन्नाञ्जनचयोपमम् ।
तप्तताम्रशिखाश्मश्रुं दंष्ट्रोग्रभ्रुकुटीमुखम् ॥३॥

पदच्छेद — तम् विलोक्य बृहत्कायम् भिन्न अञ्जनचय उपमम् ।
तप्तताम्र शिखा श्मश्रुं दंष्ट्रा उग्रभ्रुकुटी मुखम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	११.	उस दानव को	तप्त	५.	तपे हुये
विलोक्य	१२.	देखा	ताम्रशिखा	६.	ताँबे के समान लाल
बृहत्कायम्	१.	विशाल शरीर वाले	श्मश्रुं	७.	दाढ़ी-मूँछ वाले
भिन्न	२.	गहरे	दंष्ट्रा	८.	बड़े-बड़े दाँतों और
अञ्जनचय	३.	काजल के ढेर के	उग्रभ्रुकुटी	९.	भौंहों के कारण भयंकर
उपमम् ।	४.	समान दीखने वाले	मुखम् ॥	१०.	मुख वाले

श्लोकार्थ—विशाल शरीर वाले, गहरे काजल के ढेर के समान दीखने वाले, तपे हुये ताँबे के समान लाल दाढ़ी मूँछ वाले, बड़े-बड़े दाँतों और भौंहों के कारण भयंकर मुख वाले उस दानव को देखा ॥

चतुर्थः श्लोकः

सस्मार मुसलं रामः परसैन्यविदारणम् ।
हलं च दैत्यदमनं ते तूर्णमुपतस्थतुः ॥४॥

पदच्छेद — सस्मार मुसलम् रामः पर सैन्य विदारणम् ।
हलम् च दैत्य दमनम् ते तूर्णम् उपतस्थतुः ॥

शब्दार्थ—

सस्मार	८.	स्मरण किया	हलम् च	७.	हल का
मुसलम्	४.	मुसल और	दैत्य	५.	दैत्यों को
रामः	१.	बलराम जी ने	दमनम्	६.	दमन करने वाले
परसैन्य	२.	शत्रु सेना को	ते तूर्णम्	९.	वे दोनों अस्त्र शीघ्र ही
विदारणम् ।	३.	विदीर्ण करने वाले	उपतस्थतुः ॥	१०.	आ पहुँचे

श्लोकार्थ—बलराम जी ने शत्रु सेना को विदीर्ण करने वाले मुसल और दैत्यों का दमन करने वाले हल का स्मरण किया । वे दोनों अस्त्र शीघ्र ही आ पहुँचे ॥

पञ्चमः श्लोकः

तमाकृष्य हलाग्रेण बल्वलं गगनेचरम् ।
मुसलेनाहनत् क्रुद्धो मूर्ध्नि ब्रह्मद्रुहं बलः ॥५॥

पदच्छेद— तम् आकृष्य हल अग्रेण बल्वलम् गगनेचरम् ।
मुसलेन अहनत् क्रुद्धः मूर्ध्नि ब्रह्म द्रुहम् बलः ॥

शब्दार्थ—

तम्	४.	उस	मुसलेन	१०.	मुसल से उसके
आकृष्य	९.	खींचकर	अहनत्	१२.	मार दिया
हल	७.	हल के	क्रुद्धः	२.	क्रुद्ध होकर
अग्रेण	८.	अग्र भाग से	मूर्ध्नि	११.	सिर पर
बल्वलम्	६.	बल्वल को	ब्रह्मद्रुहम्	५.	ब्रह्मद्रोही
गगनेचरम् ।	३.	आकाश में विचरने वाले	बलः ॥	१.	बलराम जी ने

श्लोकार्थ—बलराम जी ने क्रुद्ध होकर आकाश में विचरने वाले उस ब्रह्मद्रोही बल्वल को हल के अग्र भाग से खींचकर मुसल से उसके सिर पर मार दिया ॥

षष्ठः श्लोकः

सोऽपतद् भुवि निर्भिन्नललाटोऽसृक्समुत्सृजन् ।
मुञ्चन्नार्तस्वरं शैलो यथा वज्रहतोऽरुणः ॥६॥

पदच्छेद— सः अपतत् भुवि निर्भिन्न ललाटः असृक् समुत् सृजन् ।
मुञ्चन् आर्तस्वरम् शैलः यथा वज्र हतः अरुणः ॥

शब्दार्थ—

सः	७.	वह	मुञ्चन्	६.	चिल्लाता हुआ
अपतत्	९.	गिर पड़ा	आर्तस्वरम्	५.	आर्त स्वर से
भुवि	८.	धरती पर	शैलः	१४.	पहाड़ गिर पड़ा हो
निर्भिन्न	२.	फट जाने पर	यथा	१०.	जैसे
ललाटः	१.	ललाट के	वज्र	११.	वज्र से
असृक्	३.	रक्त	हतः	१२.	आहत होने पर
समुत् सृजन् ।	४.	गिराता हुआ तथा	अरुणः ॥	१३.	लाल

श्लोकार्थ—ललाट के फट जाने पर रक्त गिराता हुआ तथा आर्त स्वर से चिल्लाता हुआ वह धरती पर गिर पड़ा । जैसे वज्र से आहत होने पर लाल पहाड़ गिर पड़ा हो ॥

सप्तमः श्लोकः

संस्तुत्य मुनयो रामं प्रयुज्याвितथाशिषः ।
अभ्यषिञ्चन् महाभागा वृत्रघ्नं विबुधा यथा ॥७॥

पदच्छेद— संस्तुत्य मुनयः रामम् प्रयुज्य अवितथ आशिषः ।
अभ्यषिञ्चन् महाभागाः वृत्रघ्नम् विबुधाः यथा ॥

शब्दार्थ—

संस्तुत्य	४.	स्तुति करके	अभ्यषिञ्चन्	८.	अभिषेक किया
मुनयः	२.	मुनियों ने	महाभागाः	१.	महाभाग्यवान्
रामम्	३.	बलराम जी की	वृत्रघ्नम्	११.	इन्द्र का करते हैं
प्रयुज्य	७.	देकर (उनका)	विबुधाः	१०.	देवता
अवितथ	५.	व्यर्थ न होने वाले	यथा ॥	९.	जैसे
आशिषः ।	६.	आशीर्वाद			

श्लोकार्थ— महाभाग्यवान् मुनियों ने बलराम जी की स्तुति करके व्यर्थ न होने वाले आशीर्वाद देकर उनका अभिषेक किया, जैसे देवता इन्द्र का करते हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

वैजयन्तीं ददुर्मालां श्रीधामाम्लानपङ्कजाम् ।
रामाय वाससी दिव्ये दिव्यान्याभरणानि च ॥८॥

पदच्छेद— वैजयन्तीम् ददुः मालाम् श्रीधाम अम्लान् पङ्कजाम् ।
रामाय वाससी दिव्ये दिव्यानि आभरणानि च ॥

शब्दार्थ—

वैजयन्तीम्	१०.	एक वैजयन्ती	रामाय	१.	उन्होंने बलराम जी को
ददुः	१२.	दी	वाससी	३.	दो वस्त्र
माला	११.	माला	दिव्ये	२.	दिव्य
श्रीधाम	७.	शोभा की आश्रय तथा	दिव्यानि	५.	दिव्य
अम्लान	८.	न मुरझाने वाली	आभरणानि	६.	आभूषण
पङ्कजाम् ।	९.	कमलों की	च ॥	४.	और

श्लोकार्थ— उन्होंने बलराम जी को दिव्य दो वस्त्र, दिव्य आभूषण, शोभा की आश्रय तथा न मुरझाने वाली कमलों की एक वैजयन्ती माला दो ॥

नवमः श्लोकः

अथ तैरभ्यनुज्ञातः कौशिकीमेत्य ब्राह्मणैः ।
स्नात्वा सरोवरमगाद् यतः सरयुरास्रवत् ॥९॥

पदच्छेद— अथ तैः अभि अनुज्ञातः कौशिकीम् एत्य ब्राह्मणैः ।
स्नात्वा सरोवरम् अगात् यतः सरयुः आस्रवत् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. इसके बाद	स्नात्वा	७. वहाँ पर स्नान करके
तैः	२. उनसे	सरोवरम्	८. उस सरोवर पर
अभिअनुज्ञातः	३. आज्ञा लेकर	अगात्	९. गये
कौशिकीम्	५. कौशिकी नदी के तट पर	यतः	१०. जहाँ से
एत्य	६. पहुँचे	सरयुः	११. सरयु नदी
ब्राह्मणैः ।	४. ब्राह्मणों के साथ	आस्रवत् ॥	१२. निकली हैं ॥

श्लोकार्थ—इसके बाद उनसे आज्ञा लेकर ब्राह्मणों के साथ कौशिकी नदी के तट पर पहुँचे । वहाँ पर स्नान करके उस सरोवर पर गये, जहाँ से सरयू नदी निकली है ।

दशमः श्लोकः

अनुस्रोतेन सरयूं प्रयागमुपगम्य सः ।
स्नात्वा सन्तर्प्य देवादीन् जगाम पुलहाश्रमम् ॥१०॥

पदच्छेद— अनुस्रोतेन सरयूम् प्रयागम् उपगम्य सः ।
स्नात्वा सन्तर्प्य देव आदीन् जगाम पुलहाश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

अनुस्रोतेन	२. किनारे-किनारे चलने के बाद	स्नात्वा	६. स्नान तथा
सरयूम्	१. सरयू के	सन्तर्प्य	८. तर्पण करके
प्रयागम्	३. प्रयाग	देवआदीन्	७. देव आदि का
उपगम्य	४. आकर	जगाम	१०. चले गये
सः ।	५. वे	पुलहाश्रमम् ॥	९. पुलहाश्रम ॥

श्लोकार्थ—सरयू के किनारे-किनारे चलने के बाद प्रयाग आकर वे स्नान तथा देव आदि का तर्पण करके पुलहाश्रम चले गये ॥

एकादशः श्लोकः

गोमतीं गण्डकीं स्नात्वा विपाशां शोण आप्लुतः ।
गयां गत्वा पितॄनिष्ट्वा गङ्गासागरसङ्गमे ॥११॥

पदच्छेद— गोमतीम् गण्डकीम् स्नात्वा विपाशाम् शोण आप्लुतः ।
गयाम् गत्वा पितॄन् इष्ट्वा गङ्गासागर सङ्गमे ॥

शब्दार्थ—

गोमतीम्	१.	गोमती	गयाम्	७.	तदनन्तर गया में
गण्डकीम्	२.	गण्डकी तथा	गत्वा	८.	जाकर
स्नात्वा	४.	स्नान करके	पितॄन्	९.	पितरों का
विपाशाम्	३.	विपाशा नदियों में	इष्ट्वा	१०.	भजन-पूजन करके
शोण	५	शोण नद में	गङ्गासागर	११.	गङ्गा सागर
आप्लुतः ।	६.	स्नान किया	सङ्गमे ॥	१२.	सङ्गम पर गये

श्लोकार्थ—उन्होंने गोमती, गण्डकी तथा विपाशा नदियों में स्नान करके, शोण नद में स्नान किया। तदनन्तर गया में जाकर पितरों का भजन-पूजन करके गङ्गा-सागर-सङ्गम पर गये ॥

द्वादशः श्लोकः

उपस्पृश्य महेन्द्राद्रौ रामं दृष्ट्वाभिवाद्य च ।
सप्तगोदावरीं वेणां पम्पां भीमरथीं ततः ॥१२॥

पदच्छेद— उपस्पृश्य महेन्द्र अद्रौ रामम् दृष्ट्वा अभिवाद्य च ।
सप्त गोदावरीम् वेणाम् पम्पाम् भीमरथीम् ततः ॥

शब्दार्थ—

उपस्पृश्य	१.	वहाँ स्नान करके	सप्त	७.	सप्त
महेन्द्र	२.	महेन्द्र	गोदावरीम्	८.	गोदावरी
अद्रौ	३.	पर्वत पर	वेणाम्	९.	वेणा
रामम्	४.	परशुराम का	पम्पाम्	१०.	पम्पा
दृष्ट्वा	५.	दर्शन और	भीमरथीम्	१२.	भीमरथी में (स्नान किया)
अभिवाद्य च ।	६	अभिवादन किया	ततः ॥	११.	तथा

श्लोकार्थ—वहाँ स्नान करके महेन्द्र पर्वत पर परशुराम का दर्शन और अभिवादन किया। और सप्त गोदावरी, वेणा, पम्पा, भीमरथी में स्नान किया।

त्रयोदशः श्लोकः

स्कन्दं दृष्ट्वा ययौ रामः श्रीशैलं गिरिशालयम् ।
द्रविडेषु महापुण्यं दृष्ट्वाद्रिं वेङ्कटं प्रभुः ॥१३॥

पदच्छेद— स्कन्दम् दृष्ट्वा ययौ रामः श्रीशैलम् गिरिश आलयम् ।
द्रविडेषु महा पुण्यम् दृष्ट्वा अद्रिम् वेङ्कटम् प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

स्कन्दम्	२.	कार्तिकेय का	द्रविडेषु	९.	द्रविड देश के
दृष्ट्वा	३.	दर्शन करके	महा	१०.	परम
ययौ	७.	पहुँचे तथा	पुण्यम्	११.	पुण्यमय स्थान
रामः	१.	बलराम जी ने	दृष्ट्वा	१४.	दर्शन किया
श्रीशैलम्	६.	श्री शैल पर	अद्रि	१३.	चल (बाला जी का)
गिरिश	४.	शिव के	वेङ्कटम्	१२.	वेंकटा
आलयम् ।	५.	स्थान	प्रभुः ॥	८	बलराम जी ने

श्लोकार्थ—बलरामजी ने कार्तिकेय का दर्शन करके शिव के स्थान श्री शैल पर पहुँचे। तथा बलराम जी ने द्रविड़ देश के परम पुण्यमय स्थान वेंकटाचल बालाजी का दर्शन किया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

कामकोष्णीं पुरीं काञ्चीं कावेरीं च सरिद्वराम् ।
श्रीरङ्गाख्यं महापुण्यं यत्र सन्निहितो हरिः ॥१४॥

पदच्छेद— कामकोष्णीम् पुरीम् काञ्चीम् कावेरीं च सरिद्वराम् ।
श्रीरङ्गाख्यम् महा पुण्यम् यत्र सन्निहितः हरिः ॥

शब्दार्थ—

कामकोष्णीम्	१.	वहाँ से वे कामाक्षी	श्रीरङ्गाख्यम्	९.	रङ्गक्षेत्र में (पहुँचे)
पुरीम्	३.	पुरी	महा	७.	परम
काञ्चीम्	२.	शिवकांची-विष्णुकांची	पुण्यम्	८.	पुण्यमय
कावेरी	६.	कावेरी (होते हुये)	यत्र	१०.	जहाँ
च	४	और	सन्निहित	१२.	विराजमान रहते हैं
सरिद्वराम् ।	५.	श्रेष्ठ नदी	हरिः ॥	११.	श्रीविष्णु

श्लोकार्थ—वहाँ से कामाक्षी, शिवकाञ्ची, विष्णुकाञ्ची पुरी और श्रेष्ठ नदी कावेरी होते हुये परम पुण्यमय रङ्ग क्षेत्र में पहुँचे। जहाँ श्रीविष्णु विराजमान रहते हैं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

ऋषभाद्रिं हरेः क्षेत्रं दक्षिणां मथुरां तथा ।
सामुद्रं सेतुमगमन्महापातकनाशनम् ॥१५॥

पदच्छेद— ऋषभ अद्रिम् हरेः क्षेत्रम् दक्षिणाम् मथुराम् तथा ।
सामुद्रम् सेतुम् अगमत् महापातक नाशनम् ॥

शब्दार्थ—

ऋषभ	३. ऋषभ	सामुद्रम्	१२. बन्ध (रामेश्वर) की
अद्रिम्	४. पर्वत	सेतुम्	११. सेतु
हरेः	१. उन्होंने विष्णु के	अगमत्	१३. यात्रा की
क्षेत्रम्	२. क्षेत्र	महा	८. महान्
दक्षिणाम्	५. दक्षिण	पातक	९. पापों को
मथुराम्	६. मथुरा	नाशनम् ॥	१०. नष्ट करने वाले
तथा ।	७. तथा		

श्लोकार्थ—उन्होंने विष्णु के क्षेत्र, ऋषभपर्वत, दक्षिण मथुरा तथा महान् पापों को नष्ट करने वाले सेतु बन्ध रामेश्वर की यात्रा की ॥

षोडशः श्लोकः

तत्रायुतमदाद् धेनूर्ब्राह्मणेभ्यो हलायुधः ।
कृतमालां ताम्रपर्णीं मलयं च कुलाचलम् ॥१६॥

पदच्छेद— तत्र अयुतम् अदात् धेनूः ब्राह्मणेभ्यः हल आयुधः ।
कृतमालाम् ताम्रपर्णीम् मलयम् च कुल अचलम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१. वहाँ	कृतमालाम्	७. कृतमाला
अयुतम्	४. दस हजार	ताम्रपर्णीम्	९. ताम्रपर्णी (होते हुये)
अदात्	६. दीं (फिर वहाँ से)	मलयम्	११ मलयपर्वत पर गये
धेनूः	५. गौयें	च	८. और
ब्राह्मणेभ्यः	३. ब्राह्मणों को	कुल अचलम् ॥	१०. सात कुल पर्वतों में से एक
हलआयुधः ।	२. बलराम जी ने		

श्लोकार्थ—वहाँ बलराम जी ने ब्राह्मणों को दस हजार गौयें दीं । फिर वहाँ से कृतमाला और ताम्रपर्णी होते हुये सात कुलपर्वतों में से एक मलय पर्वत पर गये ॥

सप्तदशः श्लोकः

तत्रागस्त्यं समासीनं नमस्कृत्याभिवाद्य च ।
योजितस्तेन चाशीर्भिरनुज्ञातो गतोऽर्णवम् ।
दक्षिणं तत्र कन्याख्यां दुर्गां देवीं ददर्श सः ॥१७॥

पदच्छेद— तत्र अगस्त्यम् समासीनम् नमस्कृत्य अभिवाद्य च ।
योजितः तेन च आशीर्भिः अनुज्ञातः गतः अर्णवम् ।
दक्षिणम् तत्र कन्याख्याम् दुर्गाम् देवीम् ददर्श सः ॥

शब्दार्थ—

तत्र	१.	वहाँ पर	अनुज्ञातः	८.	अनुमति
अगस्त्यम्	३.	अगस्त्य मुनिको	गतः अर्णवम् ।	१२.	समुद्र की यात्रा की तथा
समासीनम्	२.	बैठे हुए	दक्षिणम्	११.	दक्षिण
नमस्कृत्य	४.	नमस्कार	तत्र	१३.	वहाँ पर
अभिवाद्य च ।	५.	और अभिवादन करके	कन्याख्याम्	१४.	कन्याकुमारी के रूप में
योजितः	९.	पाकर	दुर्गाम् देवीम्	१५.	दुर्गादेवी का
तेन च	६.	उनसे	ददर्श	१६.	दर्शन किया
आशीर्भिः	७	आशीर्वाद और	सः ॥	१०.	उन्होंने

श्लोकार्थ—वहाँ पर बैठे हुये अगस्त्य मुनि को नमस्कार और अभिवादन करके उनसे आशीर्वाद और अनुमति पाकर उन्होंने दक्षिण समुद्र की यात्रा की। तथा वहाँ पर कन्याकुमारी के रूप में दुर्गा देवी का दर्शन किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

ततः फाल्गुनमासाद्य पञ्चाप्सरसमुत्तमम् ।
विष्णुः सन्निहितो यत्र स्नात्वास्पर्शद् गवायुतम् ॥१८॥

पदच्छेद— ततः फाल्गुनम आसाद्य पञ्चाप्सरसम् उत्तमम् ।
विष्णुः सन्निहितः यत्र स्नात्वा अस्पर्शत् गवायुतम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	विष्णुः	७.	विष्णु भगवान् का
फाल्गुनम्	२.	फाल्गुन तीर्थ में	सन्निहितः	८.	सान्निध्य रहता है(वहाँ पर)
आसाद्य	३.	जाकर	यत्र	६.	जहाँ पर
पञ्चाप्सरसम्	५.	पञ्चाप्सरस तीर्थ में	स्नात्वा	९.	स्नान करके
उत्तमम् ।	४.	उत्तम	अस्पर्शत्	११.	दान की
			गवायुतम् ॥	१०.	दस हजार गौयें

श्लोकार्थ—इसके बाद फाल्गुन तीर्थ में जाकर उत्तम पञ्चाप्सरस तीर्थ में जहाँ पर विष्णु भगवान् का सान्निध्य रहता है, वहाँ पर स्नान करके दस हजार गौयें दान दीं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

ततोऽभिव्रज्य भगवान् केरलांस्तु त्रिगर्तकान् ।
गोकर्णाख्यं शिवक्षेत्रं सान्निध्यं यत्र धूर्जटेः ॥१९॥

पदच्छेद— ततः अभिव्रज्य भगवान् केरलान् तु त्रिगर्तकान् ।
गोकर्णाख्यम् शिवक्षेत्रम् सान्निध्यम् यत्र धूर्जटेः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	गोकर्णाख्यम्	७.	गोकर्णनामक
अभिव्रज्य	६.	होकर	शिव	८.	शिवजी के
भगवान्	२.	भगवान् बलराम	क्षेत्रम्	९.	क्षेत्र में गये
केरलान्	३.	केरल	सान्निध्यम्	१२.	विराजमान रहते हैं
तु	४.	और	यत्र	१०.	जहाँ पर
त्रिगर्तकान् ।	५.	त्रिगर्त देशों में	धूर्जटेः ॥	११.	शङ्कर भगवान्

श्लोकार्थ—तदनन्तर भगवान् बलराम केरल और त्रिगर्तदेशों में होकर गोकर्ण नामक शिवजी के क्षेत्र में गये । जहाँ पर शङ्कर भगवान् विराजमान रहते हैं ।।

विंशः श्लोकः

आर्यां द्वैपायनीं दृष्ट्वा शूर्पारकमगाद् बलः ।
तापीं पयोष्णीं निर्विन्ध्यामुपस्पृश्याथ दण्डकम् ॥२०॥

पदच्छेद— आर्याम् द्वैपायनीम् दृष्ट्वा शूर्पारकम् अगात् बलः ।
तापीम् पयोष्णीम् निर्विन्ध्याम् उपस्पृश्य अथ दण्डकम् ॥

शब्दार्थ—

आर्याम्	२.	आर्या देवी का	तापीम्	८.	तापी
द्वैपायनीम्	१.	द्वीप में रहने वाली	पयोष्णीम्	९.	पयोष्णी तथा
दृष्ट्वा	३.	दर्शन करके	निर्विन्ध्याम्	१०.	निर्विन्ध्या नदियों में
शूर्पारकम्	५.	शूर्पारक क्षेत्र में	उपस्पृश्य	११.	स्नान करके
अगात्	६.	गये	अथ	७.	इसके बाद
बलः ।	४.	बलराम जी	दण्डकम् ॥	१२.	दण्डकारण्य में गये

श्लोकार्थ—द्वीप में रहने वाली आर्या देवी का दर्शन करके बलराम जी शूर्पारक क्षेत्र में गये । इसके बाद तापी, पयोष्णी तथा निर्विन्ध्या नदियों में स्नान करके दण्डकारण्य में गये ।

एकविंशः श्लोकः

प्रविश्य रेवामगमद् यत्र माहिष्मती पुरी ।
मनुतीर्थमुपस्पृश्य प्रभासं पुनरागमत् ॥२१॥

पदच्छेद— प्रविश्य रेवाम् अगमत् यत्र माहिष्मती पुरी ।
मनुतीर्थम् उपस्पृश्य प्रभासम् पुनः आगमत् ॥

शब्दार्थ—

प्रविश्य	२. प्रवेश करके	मनुतीर्थम्	७. मनुतीर्थ में
रेवाम्	१. नर्मदा जी में	उपस्पृश्य	८. आचमन करके
अगमत्	६. गये	प्रभासम्	१०. प्रभास क्षेत्र में
यत्र	३. जहाँ पर	पुनः	९. पुनः
माहिष्मती	४. माहिष्मती	आगमत्	११. चले आये
पुरी ।	५. पुरी है वहाँ		

श्लोकार्थ—नर्मदा जी में स्नान करके जहाँ पर महिष्मती पुरी है वहाँ गये । और मनुतीर्थ में आचमन करके पुनः प्रभासक्षेत्र में लौट आये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

श्रुत्वा द्विजैः कथ्यमानं कुरुपाण्डवसंयुगे ।
सर्वराजन्यनिधनं भारं मेने हृतं भुवः ॥२२॥

पदच्छेद— श्रुत्वा द्विजैः कथ्यमानम् कुरु पाण्डव संयुगे ।
सर्व राजन्य निधनम् भारं मेने हृतं भुवः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	९. सुनकर (बलराम जी ने)	सर्व	६. सभी
द्विजैः	१. ब्राह्मणों द्वारा	राजन्य	७. राजाओं का
कथ्यमानम्	२. कहे जाते हुए	निधनम्	८. संहार
कुरु	३. कौरवों और	भारम्	११. भार
पाण्डव	४. पाण्डवों के	मेने	१३. ऐसा माना
संयुगे	५. युद्ध में	हृतम्	१२. उतर गया
		भुवः ॥	१०. पृथ्वी का

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों द्वारा कहे जाते हुए कौरवों और पाण्डवों के युद्ध में सभी राजाओं का संहार सुनकर बलराम जी ने पृथ्वी का भार उतर गया ऐसा माना ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

स भीमदुर्योधनयोर्गदाभ्यां युध्यतोर्मृधे ।
वारयिष्यन् विनशनं जगाम यदुनन्दनः ॥२३॥

पदच्छेद— सः भीम दुर्योधनयोः गदाभ्याम् युध्यतोः मृधे ।
वारयिष्यन् विनशनम् जगाम यदुनन्दनः ॥

शब्दार्थ—

सः	५.	(बारे में सुनकर) वे	वारयिष्यन्	८.	रोकने के लिये (वहाँ)
भीमदुर्योधनयोः	४.	भीम और दुर्योधन के	विनशनम्	७.	विनाश को
गदाभ्याम्	२.	गदाओं से	जगाम	९.	जा पहुँचे
युध्यतोः	३.	युद्ध करते हुये	यदुनन्दनः ॥	६.	यदुनन्दन (बलराम जी)
मृधे ।	१.	रणभूमि में			

श्लोकार्थ—रणभूमि में गदाओं से युद्ध करते हुये भीम और दुर्योधन के बारे में सुनकर यदुनन्दन बलराम जी विनाश को रोकने के लिये वहाँ जा पहुँचे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

युधिष्ठिरस्तु तं दृष्ट्वा यमौ कृष्णार्जुनावपि ।
अभिवाद्याभवंस्तूष्णीं किंविवक्षुरिहागतः ॥२४॥

पदच्छेद— युधिष्ठिरः तु तम् दृष्ट्वा यमौ कृष्ण अर्जुनौ अपि ।
अभिवाद्याभवन् तूष्णीम् किम् विवक्षुः इह आगतः ॥

शब्दार्थ—

युधिष्ठिरः	१.	युधिष्ठिर	अभिवाद्य	८.	प्रणाम करके
तु तम्	६.	उन्हें	अभवन्	१४.	हो रहे
दृष्ट्वा	७.	देखकर	तूष्णीम्	१३.	चुप
यमौ	२.	नकुल-सहदेव	किम्	९.	वे क्या
कृष्ण	३.	श्रीकृष्ण (और)	विवक्षुः	१०.	कहने की इच्छा से
अर्जुनौ	४.	अर्जुन	इह	११.	यहाँ पर
अपि ।	५.	भी	आगतः ॥	१२.	आये हैं (यह सोचते हुये)

श्लोकार्थ—युधिष्ठिर, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण और अर्जुन भी उन्हें देखकर प्रणाम करके वे क्या कहने की इच्छा से यहाँ पर आये हैं, यह सोचते हुये चुप हो रहे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

गदापाणी उभौ दृष्ट्वा संरब्धौ विजयैषिणौ ।
मण्डलानि विचित्राणि चरन्ताविदमब्रवीत् ॥२५॥

पदच्छेद— गदापाणी उभौ दृष्ट्वा संरब्धौ विजय एषिणौ ।
मण्डलानि विचित्राणि चरन्तौ इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

गदापाणी	१. हाथों में गदा लिये हुये	मण्डलानि	६. पैंतरे
उभौ	८. दोनों को	विचित्राणि	५. भाँति-भाँति के
दृष्ट्वा	९. देखकर	चरन्तौ	७. बदलते हुये
संरब्धौ	४. क्रोध से भरकर	इदम्	१०. बलराम जी ने यह
विजय	२. विजय के	अब्रवीत् ॥	११. कहा
एषिणौ ।	३. इच्छुक		

श्लोकार्थ—हाथों में गदा लिये हुये, विजय के इच्छुक, क्रोध से भर कर, भाँति-भाँति के पैंतरें बदलते हुये दोनों को देखकर बलराम जी ने यह कहा ॥

षड्विंशः श्लोकः

युवां तुल्यबलौ वीरौ हे राजन् वे वृकोदर ।
एकं प्राणाधिकं मन्ये उतैकं शिक्षयाधिकम् ॥२६॥

पदच्छेद— युवाम् तुल्यबलौ वीरौ हे राजन् हे वृकोदर ।
एकम् प्राणाधिकम् मन्ये उतैकम् शिक्षया अधिकम् ॥

शब्दार्थ—

युवाम्	३. तुम दोनों	एकम्	६. एक को
तुल्यबलौ	४. समान बलवाले	प्राणाधिकम्	७. अधिक बल शाली
वीरौ	५. वीर हो	मन्ये	८. मानता हूँ
हे राजन्	१. हे राजन् ! (दुर्योधन)	उतैकम्	९. और दूसरे को
हे वृकोदर ।	२. हे भीमसेन !	शिक्षया	१०. गदा युद्ध की शिक्षा में
		अधिकम् ॥	११. अधिक मानता हूँ

श्लोकार्थ—हे राजन् दुर्योधन ! हे भीमसेन ! तुम दोनों समान बल वाले वीर हो । एक को अधिक बलशाली मानता हूँ । और दूसरे को गदा युद्ध की शिक्षा में अधिक मानता हूँ ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तस्मादेकतरस्येह युवयोः समवीर्ययोः ।
न लक्ष्यते जयोऽन्यो वा विरमत्वफलो रणः ॥२७॥

पदच्छेद— तस्मात् एकतरस्य इह युवयोः समवीर्ययोः ।
न लक्ष्यते जयः अन्यः वा विरमतु अफलः रणः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	न लक्ष्यते	७.	नहीं दिखाई दे रहा है (यह)
एकतरस्य	४.	किसी एक की	जयः अन्यः वा	६.	जय या पराजय
इह	५.	यहाँ	विरमतु	१०.	बन्द कर दो
युवयोः	३.	तुम दानों में से	अफलः	८.	निष्फल
समवीर्ययोः ।	२.	समान बल शाली	रणः ॥	९.	युद्ध

श्लोकार्थ—इसलिये समान बलशाली तुम दोनों में से किसी एक की यहाँ जय या पराजय नहीं दिखाई दे रहा है यह निष्फल युद्ध बन्द कर दो ।

अष्टाविंशः श्लोकः

न तद्वाक्यं जगृहतुर्बद्धवैरौ नृपार्थवत् ।
अनुस्मरन्तावन्योन्यं दुरुक्तं दुष्कृतानि च ॥२८॥

पदच्छेद— न तत् वाक्यम् जगृहतुः बद्ध वैरौ नृप अर्थवत् ।
अनुस्मरन्तौ अन्योन्यम् दुरुक्तम् दुष्कृतानि च ॥

शब्दार्थ—

न तत्	९.	नहीं बलराम की	अर्थवत्	१०.	हितकर
वाक्यम्	११.	बात	अनुस्मरन्तौ	८.	स्मरण करते हुये (उन्होंने)
जगृहतुः	१२.	मानी	अन्योन्यम्	४.	एक दूसरे की
बद्ध	२.	बँधे हुये	दुरुक्तम्	५.	कटुवाणी
वैरौ	३.	वैर भाव वाले तथा	दुष्कृतानि	७.	दुर्व्यवहारों का
नृप	१	हे राजन् !	च ॥	६.	और

श्लोकार्थ—हे राजन् ! बँधे हुये वैर भाव वाले तथा एक दूसरे की कटु वाणी और दुर्व्यवहारों का स्मरण करते हुये उन्होंने बलराम जी की हितकर बात नहीं मानी ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

दिष्टं तदनुमन्वानो रामो द्वारवतीं ययौ ।
उग्रसेनादिभिः प्रीतैर्ज्ञातिभिः समुपागतः ॥२९॥

पदच्छेद— दिष्टम् तत् अनुमन्वानः रामः द्वारवतीम् ययौ ।
उग्रसेन आदिभिः प्रीतैः ज्ञातिभिः सम्उपागतः ॥

शब्दार्थ—

दिष्टम्	२.	प्रारब्ध	उग्रसेन	७.	उग्रसेन
तत्	१.	उसे	आदिभिः	८.	आदि गुरुजनों तथा
अनुमन्वानः	३.	मानते हुये	प्रीतैः	१०.	प्रेम से
रामः	४.	बलराम जी	ज्ञातिभिः	९.	सम्बन्धियों ने
द्वारवतीम्	५.	द्वारका	समुपागतः ॥	११.	उनका स्वागत किया
ययौ ।	६.	लौट गये			

श्लोकार्थ— उसे प्रारब्ध मानते हुये बलराम जी द्वारका लौट गये । उग्रसेन आदि गुरुजनों तथा सम्बन्धियों ने प्रेम से उनका स्वागत किया ।

त्रिंशः श्लोकः

तं पुनर्नैमिषं प्राप्तमृषयोऽयाजयन् मुदा ।
क्रत्वङ्गं क्रतुभिः सर्वैर्निवृत्ताखिलविग्रहम् ॥३०॥

पदच्छेद— तम् पुनः नैमिषम् प्राप्तम् ऋषयः अयाजयन् मुदा ।
क्रतुअङ्गम् क्रतुभिः सर्वैः निवृत्त अखिल विग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

तम्	१०.	उन बलराम से	क्रतु	८.	यज्ञों के
पुनः	१.	फिर	अङ्गम्	९.	अङ्ग स्वरूप
नैमिषम्	२.	नैमिषारण्य में	क्रतुभिः	१३.	यज्ञ
प्राप्तम्	३.	जाने पर	सर्वैः	१२.	सब प्रकार के
ऋषयः	४.	ऋषियों ने	निवृत्त	७.	रहित तथा
अयाजयन्	१४.	कराये	अखिल	५.	समस्त
मुदा ।	११.	हर्ष पूर्वक	विग्रहम् ॥	६.	विरोध भाव से

श्लोकार्थ—फिर नैमिषारण्य में जाने पर ऋषियों ने समस्त विरोधभाव से रहित तथा यज्ञों के अङ्ग स्वरूप उन बलराम से हर्ष पूर्वक सब प्रकार के यज्ञ कराये ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तेभ्यो विशुद्धविज्ञानं भगवान् व्यतरद् विभुः ।
येनैवात्मन्यदो विश्वमात्मानं विश्वगं विदुः ॥३१॥

पदच्छेद— तेभ्यः विशुद्ध विज्ञानम् भगवान् व्यतरत् विभुः ।
येन एव आत्मनि अदः विश्वम् आत्मानम् विश्वगम् विदुः ॥

शब्दार्थ—

तेभ्यः	३.	उन ऋषियों को	येन एव	७.	जिससे वे लोग
विशुद्ध	४.	विशुद्ध	आत्मनि	९.	अपने में ओर
विज्ञानम	५.	तत्त्वज्ञान का	अदः विश्वम्	८.	इस विश्व को
भगवान्	२.	भगवान् बलराम ने	आत्मानम्	१०.	अपने आपको
व्यतरत्	६.	उपदेश दिया	विश्वगम्	११.	विश्व में व्याप्त
विभुः ।	१.	सर्वसमर्थ	विदुः ॥	१२	समझने लगे

श्लोकार्थ—सर्वसमर्थ भगवान् बलराम ने उन ऋषियों को विशुद्ध तत्त्वज्ञान का उपदेश दिया । जिससे वे लोग इस विश्व को अपने में और अपने आपको विश्व में व्याप्त समझने लगे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

स्वपत्न्यावभृथस्नातो ज्ञातिबन्धुसुहृद्वृतः ।
रेजे स्वज्योत्स्नयेवेन्दुः सुवासाः सुष्ठ्वलङ्कृतः ॥३२॥

पदच्छेद— स्व पत्न्या अवभृथ स्नातः ज्ञाति बन्धु सुहृत् वृतः ।
रेजे स्व ज्योत्स्नया इव इन्दुः सुवासाः सुष्ठु अलङ्कृतः ॥

शब्दार्थ—

स्वपत्न्या	१	अपनी पत्नियों के साथ	रेजे	१०.	इस प्रकार शोभित हुये
अवभृथ	२.	यज्ञान्त	स्वज्योत्स्नया इव	१०	जैसे चन्द्रिका के साथ
स्नातः	३.	स्नान किया (और)	इन्दुः	१२.	चन्द्रमा शोभित होते हैं
ज्ञात-बन्धु	७.	भाई-बन्धु (तथा)	सुवासाः	४.	सुन्दर वस्त्र तथा
सुहृत्	८.	मित्रों के	सुष्ठु	५.	उत्तम
वृतः ।	९.	साथ	अलङ्कृतः ॥	६.	आभूषण पहन कर

श्लोकार्थ—अपनी पत्नियों के साथ यज्ञान्त स्नान किया । और सुन्दर वस्त्र तथा उत्तम आभूषण पहन कर भाई-बन्धु तथा मित्रों के साथ इस प्रकार शोभित हुये जैसे चन्द्रिका के साथ चन्द्रमा शोभित होते हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

ईदृग्विधान्यसंख्यानि बलस्य बलशालिनः ।
अनन्तस्याप्रमेयस्य मायामर्त्यस्य सन्ति हि ॥३३॥

पदच्छेद— ईदृग्विधानि असंख्यानि बलस्य बलशालिनः ।
अनन्तस्य अप्रमेयस्य मायामर्त्यस्य सन्ति हि ॥

शब्दार्थ—

ईदृग्विधानि	८.	इस प्रकार के	अनन्तस्य	१.	अनन्त
असंख्यानि	९.	असंख्य चरित्र	अप्रमेयस्य	२.	मन-वाणी के परे
बलस्य	७.	बलराम के	माया	३.	माया से
बल	५.	बल-	मर्त्यस्य	४.	मानव बने हुये
शालिनः ।	६.	शाली	सन्ति हि ॥	१०.	हैं

श्लोकार्थ—अन्त रहित, मन-वाणी के परे, माया से मानव बने हुये, बलशाली बलराम जी के असंख्य चरित्र हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

योऽनुस्मरेत रामस्य कर्माण्यद्भुतकर्मणः ।
सायं प्रातरनन्तस्य विष्णोः स दयितो भवेत् ॥३४॥

पदच्छेद— यः अनुस्मरेत रामस्य कर्माणि अद्भुत कर्मणः ।
सायम् प्रातः अनन्तस्य विष्णोः सः दयितः भवेत् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो मनुष्य	सायम्	६.	सायम्
अनुस्मेरत	८.	स्मरण करता है	प्रातः	७.	प्रातः
रामस्य	४.	बलराम के	अनन्तस्य	१०.	अनन्त भगवान्
कर्माणि	५.	इन कार्यों का	विष्णोः	११.	विष्णु का
अद्भुत	२.	अद्भुत	सः	९.	वह
कर्मणः ।	३.	कर्म करने वाले	दयितः भवेत् ॥	१२.	प्रिय होता है

श्लोकार्थ—जो मनुष्य अद्भुत कर्म करने वाले बलराम के इन कार्यों का सायम्-प्रातः स्मरण करता है, वह अनन्त भगवान् विष्णु का प्रिय होता है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे बलदेवतीर्थयात्रानिरूपणं
नाम एकोनाशीतितमः अध्यायः ॥७९॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— भगवन् यानि चान्यानि मुकुन्दस्य महात्मनः ।
वीर्याण्यनन्तवीर्यस्य श्रोतुमिच्छामहे प्रभो ॥१॥

पदच्छेद— भगवन् यानि च अन्यानि मुकुन्दस्य महात्मनः ।
वीर्याणि अनन्त वीर्यस्य श्रोतुम् इच्छामहे प्रभो ॥

शब्दार्थ—

भगवन्	२.	हे भगवन्	वीर्याणि	१०.	लीलायें हैं उन्हें
यानि	८.	जो	अनन्त	३.	अनन्त
च	७.	और	वीर्यस्य	४.	शक्तिशाली
अन्यानि	९.	दूसरी	श्रोतुम्	११.	हम सुनना
मुकुन्दस्य	६.	श्री कृष्ण की	इच्छामहे	१२.	चाहते हैं
महात्मनः	५.	महात्मा	प्रभो ॥	१.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! हे भगवन् ! अनन्त शक्तिशाली महात्मा श्रीकृष्ण की और जो दूसरी लीलायें हैं उन्हें हम सुनना चाहते हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

को नु श्रुत्वासकृद् ब्रह्मन्नुत्तमश्लोकसत्कथाः ।
विरमेत विशेषज्ञो विषण्णः काममार्गणैः ॥२॥

पदच्छेद— कः नु श्रुत्वा असकृत् ब्रह्मन् उत्तम श्लोक सत्कथाः ।
विरमेत विशेषज्ञः विषण्णः काम मार्गणैः ॥

शब्दार्थ—

कः नु	५.	कौन	विरमेत	११.	विमुख होना चाहेगा
श्रुत्वा	१०.	सुनकर भी उनसे	विशेषज्ञः	६.	विशेषज्ञ पुरुष
असकृत्	९.	बार-बार	विषण्णः	४.	बिंधा हुआ
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन्	काम	२.	काम के
उत्तम श्लोक	७.	पवित्र कीर्ति श्रीकृष्ण की	मार्गणैः	३.	बाणों से
सत्कथाः ।	८.	उत्तम कथाओं को			

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! काम के बाणों से बिंधा हुआ कौन विशेषज्ञ पुरुष पवित्र कीर्ति श्रीकृष्ण की उत्तम कथाओं को बार-बार सुनकर भी उनसे विमुख होना चाहेगा ॥

तृतीयः श्लोकः

सा वाग् यया तस्य गुणान् गृणीते करौ च तत्कर्मकरौ मनश्च ।
स्मरेद् वसन्तं स्थिरजङ्गमेषु शृणोति तत्पुण्यकथाः स कर्णः ॥३॥

पदच्छेद— सा वाग् यया तस्य गुणान् गृणीते करौ च तत्कर्म करौ मनः च ।
स्मरेत् वसन्तम् स्थिर जङ्गमेषु शृणोति तत् पुण्यकथाः सः कर्णः ॥

शब्दार्थ—

सा वाग्	४.	वही वाणी है	स्मरेत्	११.	जो उनका स्मरण करे
यया तस्य	१.	जिससे भगवान् के	वसन्तम्	१०.	निवास करते हुये
गुणान्	२.	गुणों का	स्थिर	८	चराचर
गृणीते	३.	गायन किया जाय	जङ्गमेषु	९.	प्राणियों में
करौ च	७.	वे ही हाथ हैं	शृणोति	१५.	सुनता है
तत्कर्म	५.	जो उनकी सेवा के लिये	तत् पुण्य	१३.	उनकी पुण्यमयी
करौ	६.	काम करते हैं	कथाः	१४.	कथाओं को (प्रेम से)
मनः च ।	१२.	वही मन है (और जो)	सःकर्णः ॥	१६	वही कान है

श्लोकार्थ—जिससे भगवान् के गुणों का गायन किया जाय वही वाणी है। जो उनकी सेवा के लिये काम करते हैं वे ही हाथ हैं। और जो उनकी प्रेममयी कथाओं को सुनता है वही कान है ॥

चतुर्थः श्लोकः

शिरस्तु तस्योभयलिङ्गमानमेतत्तदेव यत् पश्यति तद्धि चक्षुः ।
अङ्गानि विष्णोरथ तज्जनानां पादोदकं यानि भजन्ति नित्यम् ॥४॥

पदच्छेद— शिरः तु तस्य उभय लिङ्गमानम् एतत् तदेव यत् पश्यति तत् हि चक्षुः ।
अङ्गानि विष्णोः अथ तज्जनानां पाद उदकम् यानि भजन्ति नित्यम् ॥

शब्दार्थ—

शिरः तु	१.	वही सिर है जो	अङ्गानि	१०.	अङ्ग वे ही हैं
तस्य उभय	३.	उन भगवान् की दोनों	विष्णोः	१२.	विष्णु तथा
लिङ्गमानम्	४.	चल-अचल प्रतिमा समक्ष नमस्कार करता है	अथ	९.	और शरीर के
एतत्	२.	इस चराचर जगत् को	तत् जनानाम्	१३.	उनके भक्तों के
तदेव यत्	७.	उन्हीं को जो सर्वत्र	पाद उदकम्	१४.	चरणोदक का
पश्यति	८.	देखता है	यानि	११.	जो
तत् हि	५.	वही	भजन्ति	१६.	सेवन करते हैं
चक्षुः ।	६.	नेत्र है	नित्यम् ॥	१५.	नित्य ही

श्लोकार्थ—वही सिर है जो इस चराचर जगत् को उन भगवान् की दोनों चल-अचल प्रतिमा समक्ष नमस्कार करता है। वही नेत्र है जो सर्वत्र उन्हीं को देखता है। और शरीर के अङ्ग वे ही हैं जो विष्णु तथा उनके भक्तों के चरणोदक का नित्य ही सेवन करते हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

सूत उवाच— विष्णुरातेन सम्पृष्टो भगवान् बादरायणिः।
वासुदेवे भगवति निमग्नहृदयोऽब्रवीत् ॥५॥

पदच्छेद— विष्णुरातेन सम्पृष्टः भगवान् बादरायणिः।
वासुदेवे भगवति निमग्न हृदयः अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

विष्णुरातेन	१.	परीक्षित् द्वारा	वासुदेवे	६.	श्रीकृष्ण में
सम्पृष्टः	२.	पूछे जाने पर	भगवति	५.	भगवान्
भगवान्	३.	भगवान्	निमग्न	७.	तल्लीन
बादरायणिः।	४.	शुकदेव जी	हृदयः	८.	मन से
			अब्रवीत् ॥	९.	बोले

श्लोकार्थ—परीक्षित् द्वारा पूछे जाने पर भगवान् शुकदेव जी भगवान् श्रीकृष्ण में तल्लीन मन से बोले ॥

षष्ठः श्लोकः

शुक उवाच— कृष्णस्यासीत् सखा कश्चिद् ब्राह्मणो ब्रह्मवित्तमः।
विरक्त इन्द्रियार्थेषु प्रशान्तात्मा जितेन्द्रियः ॥६॥

पदच्छेद— कृष्णस्य आसीत् सखा कश्चित् ब्राह्मणः ब्रह्मवित्तमः।
विरक्तः इन्द्रिय अर्थेषु प्रशान्त आत्मा जितेन्द्रियः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णस्य	९.	श्रीकृष्ण के	विरक्तः	३.	विरक्त
आसीत्	११.	थे	इन्द्रिय अर्थेषु	२.	विषयों से
सखा	१०.	मित्र	प्रशान्त	४.	शान्त
कश्चित्	७.	कोई एक	आत्मा	५.	चित्त
ब्राह्मणः	८.	ब्राह्मण	जितेन्द्रियः ॥	६.	जितेन्द्रिय
ब्रह्मवित्तमः।	१.	ब्रह्म ज्ञानियों में श्रेष्ठ			

श्लोकार्थ— ब्रह्म ज्ञानियों में श्रेष्ठ, विषयों से विरक्त, शान्तचित्त, जितेन्द्रिय कोई एक ब्राह्मण श्रीकृष्ण के मित्र थे ॥

सप्तमः श्लोकः

यदृच्छयोपपन्नेन वर्तमानो गृहाश्रमी ।
तस्य भार्या कुचैलस्य क्षुत्क्षामा च तथाविधा ॥७॥

पदच्छेद— यदृच्छया उपपन्नेन वर्तमानः गृह आश्रमी ।
तस्य भार्या कुचैलस्य क्षुत् क्षामा च तथा विधा ॥

शब्दार्थ—

यदृच्छया	३. प्रारब्ध के अनुसार	तस्य भार्या	८. उस ब्राह्मण की पत्नी भी
उपपन्नेन	४. प्राप्त वस्तु से	कुचैलस्य	७. फटे पुराने वस्त्र पहने
वर्तमानः	५. सन्तुष्ट रहने वाले	क्षुत क्षामा	१०. भूख से दुबली थी
गृह	१. गृहस्थ	च	६. और
आश्रमी ।	२. आश्रम के होने पर भी	तथाविधा ॥	९. उसी प्रकार

श्लोकार्थ—वे ब्राह्मण गृहस्थ आश्रम के होने पर भी प्रारब्ध के अनुसार प्राप्त वस्तु से सन्तुष्ट रहने वाले थे । और फटे-पुराने वस्त्र पहने उस ब्राह्मण की पत्नी भी उसी प्रकार भूख से दुबली थी ॥

अष्टमः श्लोकः

पतिव्रता पतिं प्राह म्लायता वदनेन सा ।
दरिद्रा सीदमाना सा वेपमानाभिगम्य च ॥८॥

पदच्छेद— पतिव्रता पतिम् प्राह म्लायता वदनेन सा ।
दरिद्रा सीदमाना सा वेपमाना अभिगम्य च ॥

शब्दार्थ—

पतिव्रता	४. प्रतिव्रता	दरिद्रा	३. दरिद्रा
पतिम्	८. पति के	सीदमाना	५. दुखी होकर
प्राह	१२. बोली	सा	१. वह
म्लायता	१०. मुरझाये हुये	वेपमाना	७. कांपती हुई
वदनेन	११. मुहँ से	अभिगम्य	९. पास जाकर
च ।	१. और	च ।	६. तथा

श्लोकार्थ—और वह दरिद्रा पतिव्रता दुःखी होकर तथा कांपती हुई, पति के पास जाकर मुरझाये हुये मुँह से बोली ॥

नवमः श्लोकः

ननु ब्रह्मन् भगवतः सखा साक्षाच्छ्रियः पतिः ।

ब्रह्मण्यश्च शरण्यश्च भगवान् सात्वतर्षभः ॥९॥

पदच्छेद— ननु ब्रह्मन् भगवतः सखा साक्षात् श्रियः पतिः ।

ब्रह्मण्यः च शरण्यः च भगवान् सात्वत ऋषभः ॥

शब्दार्थ—

ननु ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मन् !	ब्रह्मण्यः च	२. ब्राह्मणों के भक्त
भगवतः	९. आपके	शरण्यः च	३. शरणागत वत्सल
सखा	१०. सखा हैं	भगवान्	८. भगवान् श्रीकृष्ण
साक्षात्	६. साक्षात्	सात्वत	४. यदुवंशियों में
श्रियः पतिः ।	७. लक्ष्मी पति	ऋषभः ॥	५. श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! ब्राह्मणों के भक्त, शरणागतवत्सल, यदुवंशियों में श्रेष्ठ साक्षात् लक्ष्मी पति भगवान् श्रीकृष्ण आपके सखा हैं ॥

दशमः श्लोकः

तमुपैहि महाभाग साधूनां च परायणम् ।

दास्यति द्रविणं भूरि सीदते ते कुटुम्बिने ॥१०॥

पदच्छेद— तम् उपैहि महाभाग साधूनां च परायणम् ।

दास्यति द्रविणम् भूरि सीदते ते कुटुम्बिने ॥

शब्दार्थ—

तम्	४. उनके पास	दास्यति	११. देंगे
उपैहि	५. आप जाइये	द्रविणम्	१०. धन
महाभागे	१. हे महाभाग्यवान् !	भूरि	९. बहुत सा
साधूनाम् च	२. साधु पुरुषों के	सीदते	६. दुःखी और
परायणम् ।	३. एक मात्र आश्रय	ते	८. आपको वे
		कुटुम्बिने ॥	७. कुटुम्ब वाले

श्लोकार्थ—हे महाभाग्यवान् ! साधुपुरुषों के एकमात्र आश्रय उनके पास आप जाइये। दुःखी और कुटुम्ब वाले आपको वे बहुत सा धन देंगे।

एकादशः श्लोकः

आस्तेऽधुना द्वारवत्यां भोजवृष्ण्यन्धकेश्वरः ।
स्मरतः पादकमलमात्मानमपि यच्छति ।
किन्वर्थकामान् भजतो नात्यभीष्टाञ्जगद्गुरुः ॥११॥

पदच्छेद— आस्ते अधुना द्वारवत्याम् भोज वृष्णि अन्धक ईश्वरः ।
स्मरतः पाद कमलम् आत्मानम् अपि यच्छति ।
किम् नु अर्थ कामान् भजतः न अति अभीष्टान् जगद् गुरुः ।।

शब्दार्थ—आस्ते	६.	रह रहे हैं	आत्मानम्	९.	अपने आप तक को
अधुना	४.	इस समय	अपि यच्छति	१०.	भी दे डालते हैं
द्वारवत्याम्	५.	द्वारकापुरी में	किम् नु	१६.	दे दें तो क्या आश्चर्य है
भोज-वृष्णि	१.	भोज-वृष्णि और	अर्थ-कामान्	१३.	धन और विषय सुख
अन्धक	२.	अन्धकवंशी यादवों के	भजतः	१२.	भक्त को
ईश्वरः	३.	स्वामी	न	१५.	नहीं है
स्मरतः	८.	स्मरण करने वाले को	अति अभीष्टान्	१४.	जो अत्यन्त वाञ्छनीय
पादकमलम् ।	७.	अपने चरण कमलों का	जगद्गुरुः ।।	११.	ज़गत् के गुरु(श्रीकृष्ण) अपने

श्लोकार्थ—भोज-वृष्णि और अन्धकवंशी यादवों के स्वामी इस समय द्वारकापुरी में रह रहे हैं । अपने चरण कमलों का स्मरण करने वालों को अपने आप तक को भी दे डालते हैं । जगत् के गुरु श्रीकृष्ण अपने भक्त को धन और विषय सुख जो अत्यन्त वाञ्छनीय नहीं है दे दें तो क्या आश्चर्य है ।।

द्वादशः श्लोकः

स एवं भार्यया विप्रो बहुशः प्रार्थितो मृदु ।
अयं हि परमो लाभ उत्तमश्लोकदर्शनम् ॥१२॥

पदच्छेद— सः एवम् भार्यया विप्रः बहुशः प्रार्थितः मृदुः ।
अयम् हि परमः लाभः उत्तम श्लोक दर्शनम् ।।

शब्दार्थ—सः	६.	उस	अयम्	१०.	यह
एवम्	१.	इस प्रकार	हि	११.	ही
भार्यया	२.	पत्नी ने	परमः	१२.	परम
विप्रः	७.	ब्राह्मण ने सोचा कि	लाभः	१३.	लाभ है
बहुशः	४.	कई बार	उत्तमश्लोक	८.	भगवान् श्रीकृष्ण का
प्रार्थितः	५.	प्रार्थना की तब	दर्शनम् ।।	९.	दर्शन हो जायेगा
मृदुः ।	३.	नम्रता से			

श्लोकार्थ—इस प्रकार पत्नी ने नम्रता से कई बार प्रार्थना की तब उस ब्राह्मण ने सोचा कि भगवान् श्रीकृष्ण का दर्शन हो जायेगा । यह ही परम लाभ है ।।

त्रयोदशः श्लोकः

इति सञ्चिन्त्य मनसा गमनाय मतिं दधे ।
अप्यस्त्युपायनं किञ्चिद् गृहे कल्याणि दीयताम् ॥१३॥

पदच्छेद— इति सञ्चिन्त्य मनसा गमनाय मतिम् दधे ।
अपि अस्ति उपायनम् किञ्चित् गृहे कल्याणि दीयताम् ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	ऐसा	अपि अस्ति	११.	हो तो
सञ्चिन्त्य	३.	सोचकर	उपायनम्	१०.	भेंट देने के वास्ते
मनसा	१.	मन में	किञ्चित्	९.	कुछ
गमनाय	४.	जाने का	गृहे	८.	घर में
मतिम्	५.	निश्चय	कल्याणि	७.	हे कल्याणि
दधे ।	६.	किया (और पत्नी से बोले)	दीयताम् ॥	१२.	दे दो

श्लोकार्थ— मन में ऐसा सोचकर जाने का निश्चय किया और पत्नी से बोले—हे कल्याणि ! घर में कुछ भेंट देने के वास्ते हो तो दे दो ॥

चतुर्दशः श्लोकः

याचित्वा चतुरो मुष्टीन् विप्रान् पृथुकतण्डुलान् ।
चैलखण्डेन तान् बद्ध्वा भर्त्रे प्रादादुपायनम् ॥१४॥

पदच्छेद— याचित्वा चतुरः मुष्टीन् विप्रान् पृथुक तण्डुलान् ।
चैलखण्डेन तान् बद्ध्वा भर्त्रे प्रादात् उपायनम् ॥

शब्दार्थ—

याचित्वा	५.	माँगकर	चैलखण्डेन	६.	कपड़े के एक टुकड़े में
चतुरः	२.	चार	तान्	७.	उन्हें
मुष्टीन्	३.	मुट्ठी	बद्ध्वा	८.	बाँधकर
विप्रान्	१.	पत्नी ने ब्राह्मणों के घर से	भर्त्रे	१०.	स्वामी को
पृथुक तण्डुलान् ।	४.	चिउड़े	प्रादात्	११.	दे दिये
			उपायनम् ॥	९.	भेंट देने के लिये

श्लोकार्थ—पत्नी ने ब्राह्मणों के घर से चार मुट्ठी चिउड़े माँगकर कपड़े के एक टुकड़े में उन्हें बाँधकर भेंट देने के लिये स्वामी को दे दिये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

स तानादाय विप्राग्र्यः प्रययौ द्वारकां किल ।
कृष्णसन्दर्शनं मह्यं कथं स्यादिति चिन्तयन् ॥१५॥

पदच्छेद— सः तान् आदाय विप्र अग्र्यः प्रययौ द्वारकाम् किल ।
कृष्ण सन्दर्शनम् मह्यम् कथम् स्यात् इति चिन्तयन् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह	कृष्ण	५.	श्रीकृष्ण के
तान्	३.	उन चिउड़ों को	सन्दर्शनम्	६.	दर्शन
आदाय	४.	लेकर	मह्यम्	७.	मुझे
विप्र अग्र्यः	२.	श्रेष्ठ ब्राह्मण	कथम्	८.	कैसे प्राप्त
प्रययौ	१३.	चल पड़े	स्यात्	९.	होंगे
द्वारकाम्	१२.	द्वारका के लिये	इति	१०.	इस प्रकार
किल ।	१४.	ऐसा सुना जाता है	चिन्तयन् ॥	११.	सोचते हुये

श्लोकार्थ—वह श्रेष्ठ ब्राह्मण उन चिउड़ों को लेकर श्रीकृष्ण के दर्शन मुझे कैसे प्राप्त होंगे इस प्रकार सोचते हुये द्वारका के लिये चल पड़े । ऐसा सुना जाता है ॥

षोडशः श्लोकः

त्रीणि गुल्मान्यतीयाय तिस्रः कक्षाश्च स द्विजः ।
विप्रोऽगम्यान्धकवृष्णीनां गृहेष्वच्युतधर्मिणाम् ॥१६॥

पदच्छेद— त्रीणी गुल्मानि अतीयाय तिस्रः कक्षाः च सद्विजः ।
विप्रः अगम्य अन्धक वृष्णीनाम् गृहेषु अच्युतधर्मिणाम् ॥

शब्दार्थ—

त्रीणि	३.	तीन	विप्रः	१.	वह ब्राह्मण
गुल्मानि	४.	छावनियाँ (और)	अगम्य	१२.	अप्राप्य
अतीयाय	७.	पार करके	अन्धक	१०.	अन्धक और
तिस्रः	५.	तीन	वृष्णीनाम्	११.	वृष्णिवंशी यादवों के लिये
कक्षाः च	६.	ड्योढ़ियाँ	गृहेषु	१३.	भवनों में (जा पहुँचे)
स द्विजः	२.	अन्य ब्राह्मणों के साथ	अच्युत	८.	श्रीकृष्ण के
			धर्मिणाम् ॥	९.	धर्म को मानने वाले

श्लोकार्थ—वह ब्राह्मण अन्य ब्राह्मणों के साथ तीन छावनियाँ और तीन ड्योढ़ियाँ पार करके श्रीकृष्ण के धर्म को मानने वाले अन्धक और वृष्णिवंशी यादवों के अप्राप्य भवनों में जा पहुँचे ।

सप्तदशः श्लोकः

गृहं द्व्यष्टसहस्राणां महिषीणां हरेर्द्विजः ।
विवेशैकतमं श्रीमद् ब्रह्मानन्दं गतो यथा ॥१७॥

पदच्छेद— गृहम् द्व्यष्ट सहस्राणाम् महिषीणाम् हरेः द्विजः ।
विवेश एकतमम् श्रीमद् ब्रह्मानन्दम् गतः यथा ॥

शब्दार्थ—

गृहेषु	६.	महलों में से	विवेश	९.	प्रवेश किया
द्व्यष्ट	३.	सोलह	एकतमम्	७.	एक
सहस्राणाम्	४.	हजार	श्रीमद्	८.	शोभा सम्पन्न महल में
महिषीणाम्	५.	पत्नियों के	ब्रह्मानन्दम्	११.	ब्रह्मानन्द
हरेः	२.	श्रीकृष्ण की	गतः	१२.	पा गये हों
द्विजः ।	१.	ब्राह्मण ने	यथा ॥	१०.	मानो वह

श्लोकार्थ—ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण की सोलह हजार पत्नियों के महलों में से एक शोभा सम्पन्न महल में प्रवेश किया । मानों वह ब्रह्मानन्द पा गये हों ॥

अष्टादशः श्लोकः

तं विलोक्याच्युतो दूरात् प्रियापर्यङ्कमास्थितः ।
सहसोत्थाय चाभ्येत्य दोर्भ्यां पर्यग्रहीन्मुदा ॥१८॥

पदच्छेद — तम् विलोक्य अच्युतः दूरात् प्रिया पर्यङ्कम् आस्थितः ।
सहसा उत्थाय च अभ्येत्य दोर्भ्याम् पर्यग्रहीत् मुदा ॥

शब्दार्थ—

तम्	५.	उन्हें	सहसा	८.	एकाएक
विलोक्य	७.	देखकर	उत्थाय च	९.	उठकर
अच्युतः	४.	श्रीकृष्ण ने	अभ्येत्य	१०.	पास आकर
दूरात्	६.	दूर से ही	दोर्भ्याम्	१२.	बाहों में
प्रिया	१.	प्रिया (रुक्मिणी के)	पर्यग्रहीत्	१३.	भर लिया
पर्यङ्कम्	२.	पलंग पर	मुदा ॥	११.	हर्ष से
आस्थितः ।	३.	विराजमान			

श्लोकार्थ—प्रिया रुक्मिणी के पलंग पर विराजमान श्रीकृष्ण ने उन्हे दूर से ही देखकर एकाएक उठकर और पास आकर हर्ष से बाहों में भर लिया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

सख्युः प्रियस्य विप्रर्षेरङ्गसङ्गातिनिर्वृतः ।
प्रीतो व्यमुञ्चदब्बिन्दून् नेत्राभ्याम् पुष्करेक्षणः ॥१९॥

पदच्छेद— सख्युः प्रियस्य विप्रर्षे अङ्ग-सङ्ग अति निर्वृतः ।
प्रीतः व्यमुञ्चत् अप्‌बिन्दून् नेत्राभ्याम् पुष्कर ईक्षणः ॥

शब्दार्थ—

सख्युः	२.	मित्र	प्रीतिः	७.	तथा स्नेह पूर्ण
प्रियस्य	१.	प्यारे	व्यमुञ्चत्	१२.	बहाने लगे
विप्रर्षेः	३.	ब्रह्मर्षि के	अप्‌बिन्दून्	११.	आँसू
अङ्ग	४.	अङ्गों के	नेत्राभ्याम्	१०.	नेत्रों से
सङ्ग	५.	स्पर्श से	पुष्कर	८.	कमल
अतिनिर्वृतः ।	६.	अत्यन्त आनन्दित	ईक्षणः ॥	९.	नयन भगवान्

श्लोकार्थ—प्यारे मित्र ब्रह्मर्षि के अङ्गों के स्पर्श से अत्यन्त आनन्दित तथा स्नेहपूर्ण कमल नयन भगवान् नेत्रों से आँसू बहाने लगे ॥

विंशः श्लोकः

अथोपवेश्य पर्यङ्के स्वयं सख्युः समर्हणम् ॥
उपहृत्यावनिज्यास्य पादौ पादावनेजनीः ॥२०॥

पदच्छेद— अथ उपवेश्य पर्यङ्के स्वयम् सख्युः समर्हणम् ।
उपहृत्य अवनिज्य अस्य पादौ पाद अवनेजनीः ॥

शब्दार्थ —

अथ	१.	तथा	उपहृत्य	७.	लाकर
उपवेश्य	४.	बैठाकर	अवनिज्य	१०.	धोकर
पर्यङ्के	३.	पलंग पर	अस्य	८.	उनके
स्वयम्	२.	स्वयम्	पादौ	९.	चरणों को
सख्युः	५.	मित्र के लिये	पाद	११.	चरणों का
समर्हणम् ।	६.	पूजा सामग्री	अवनेजनीः ॥	१२.	जल लिया

श्लोकार्थ—तथा स्वयम् पलंग पर बैठाकर मित्र के लिये पूजा सामग्री लाकर उनके चरणों को धोकर चरणों का जल लिया ॥

एकविंशः श्लोकः

अग्रहीच्छिरसा राजन् भगवाँल्लोकपावनः ।

व्यलिम्पद् दिव्यगन्धेन चन्दनागुरुकुङ्कुमैः ॥२१॥

पदच्छेद— अग्रहीत् शिरसा राजन् भगवान् लोक पावनः ।

व्यलम्पित् दिव्य गन्धेन चन्दन अगुरुकुङ्कुमैः ॥

शब्दार्थ—

अग्रहीत्	६.	धारण किया (तथा)	व्यलिम्पत्	१२.	लेपन किया
शिरसा	५.	अपने सिर पर (उनके शरीर पर)	दिव्य	१०.	दिव्य
राजन्	१.	हे राजन् !	गन्धेन	११.	गन्धों का
भगवान्	४.	भगवान् ने उस (चरण जल को)	चन्दन	७.	चन्दन
लोक	२.	लोगों को	अगुरु	८.	अगर और
पावनः ।	३.	पवित्र करने वाले	कुङ्कुमैः ॥	९.	केसर आदि

श्लोकार्थ—हे राजन् ! लोगों को पवित्र करने वाले भगवान् ने उस चरण जल को अपने सिर पर धारण किया । तथा उनके शरीर पर चन्दन, अगर, केशर आदि दिव्य गन्धों का लेपन किया ॥

द्वाविंशः श्लोकः

धूपैः सुरभिभिर्मित्रं प्रदीपावलिभिर्मुदा ।

अर्चित्वाऽऽवेद्य ताम्बूलं गां च स्वागतमब्रवीत् ॥२२॥

पदच्छेद— धूपैः सुरभिभिः मित्रम् प्रदीप अवलिभिः मुदा ।

अर्चित्वा आवेद्य ताम्बूलम् गाम् च स्वागतम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

धूपैः	२.	धूपों से	अर्चित्वा	७.	पूजन करके
सुरभिभिः	१.	सुगन्धित	आवेद्य	१०.	देकर (भगवान् श्रीकृष्ण ने)
मित्रम्	५.	मित्र का	ताम्बूलम्	८.	पान
प्रदीप	३.	दीप	गाम् च	९.	और गाय
अवलिभिः	४.	अवलियों से	स्वागतम्	११.	स्वागत के
मुदा ।	६.	प्रसन्नता पूर्वक	अब्रवीत् ॥	१२.	शब्द कहे

श्लोकार्थ—सुगन्धित धूपों से, दीपावलियों से मित्र का प्रसन्नता पूर्वक पूजन करके पान और गाय देकर भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वागत के शब्द कहे ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

कुचैलं मलिनं क्षामं द्विजं धमनिसंततम् ।
देवी पर्यचरत् साक्षाच्चामरव्यजनेन वै ॥२३॥

पदच्छेद— कुचैलम् मलिनम् क्षामम् द्विजम् धमनि संततम् ।
देवी पर्यचरत् साक्षात् चामर व्यजनेन वै ॥

शब्दार्थ—

कुचैलम्	२.	पुराने वस्त्र वाले	देवी	११.	भगवती (रुक्मिणी)
मलिनम्	३.	मलिन	पर्यचरत्	१२.	सेवा करने लगीं
क्षामम्	४.	दुर्बल और	साक्षात्	८.	स्वयम्
द्विजम्	७.	ब्राह्मण की	चामर	९.	चँवर
धमनि	६.	नसों वाले	व्यजनेन	१०.	डुलाकर
संततम् ।	५.	उभरी हुई	वै ॥	१.	तथा

श्लोकार्थ—तथा फटे पुराने वस्त्र वाले मलिन, दुर्बल और उभरी हुई नसों वाले ब्राह्मण की स्वयम् चँवर डुलाकर भगवती रुक्मिणी सेवा करने लगीं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

अन्तःपुरजनो दृष्ट्वा कृष्णेनामलकीर्तिना ।
विस्मितोऽभूदतिप्रीत्या अवधूतं सभाजितम् ॥२४॥

पदच्छेद— अन्तःपुर जनः दृष्ट्वा कृष्णेन अमल कीर्तिना ।
विस्मितः अभूत् अतिप्रीत्या अवधूतम् सभाजितम् ॥

शब्दार्थ—

अन्तः पुर	८.	अन्तःपुर की	विस्मितः	१०	विस्मित
जनः	९.	स्त्रियाँ	अभूत्	११.	हो गईं
दृष्ट्वा	७.	देखकर	अतिप्रीत्या	४.	बड़े प्रेम से
कृष्णेन	३.	श्रीकृष्ण के द्वारा	अवधूतम्	६.	अवधूत ब्राह्मण को
अमल	१.	निर्मल	सभाजितम् ॥	५.	पूजे गये
कीर्तिना ।	२.	यश वाले			

श्लोकार्थ—निर्मल यश वाले श्रीकृष्ण के द्वारा बड़े प्रेम से पूजे गये अवधूत ब्राह्मण को देखकर अन्तःपुर की स्त्रियाँ विस्मित हो गईं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

किमनेन कृतं पुण्यमवधूतेन भिक्षुणा ।
श्रिया हीनेन लोकेऽस्मिन् गर्हितेनाधमेन च ॥२५॥

पदच्छेद— किम् अनेन कृतम् पुण्यम् अवधूतेन भिक्षुणा ।
श्रिया हीनेन लोके अस्मिन् गर्हितेन अधमेन च ॥

शब्दार्थ—

किम्	१०.	कौन सा	श्रिया	३.	धन से
अनेन	१.	इस	हीनेन	४.	रहित
कृतम्	१२.	किया है	लोके	९.	लोक में
पुण्यम्	११.	पुण्य	अस्मिन्	८.	इस
अवधूत	२.	अवधूत	गर्हितेन	५.	निन्दित
भिक्षुणा ।	७.	भिक्षुक ने	अधमेन च ॥	६.	और निकृष्ट

श्लोकार्थ—इस अवधूत, धन से रहित, निन्दित और निकृष्ट भिक्षुक ने इस लोक में कौन सा पुण्य किया है ॥

षड्विंशः श्लोकः

योऽसौ त्रिलोकगुरुणा श्रीनिवासेन सम्भृतः ।
पर्यङ्कस्थां श्रियं हित्वा परिष्वक्तोऽग्रजो यथा ॥२६॥

पदच्छेद— यः असौ त्रिलोक गुरुणा श्रीनिवासेन सम्भृतः ।
पर्यङ्कस्थाम् श्रियम् हित्वा परिष्वक्तः अग्रजः यथा ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	पर्यङ्कस्थाम्	७.	पलंग पर बैठी हुई
असौ	२.	इसका	श्रियम्	८.	लक्ष्मी रूपिणी (रुक्मिणी को)
त्रिलोक	३.	तीनों लोकों के	हित्वा	९.	छोड़कर
गुरुणा	४.	गुरु	परिष्वक्तः	१२.	आलिंगन किया
श्रीनिवासेन	५.	श्रीनिवास श्रीकृष्ण ने	अग्रजः	१०.	बड़े भाई के
सम्भृतः ।	६.	सत्कार किया और	यथा ॥	११.	समान

श्लोकार्थ—जो इसका तीनों लोकों के गुरु श्रीनिवास श्रीकृष्ण ने सत्कार किया और पलंग पर बैठी हुई लक्ष्मी रूपिणी रुक्मिणी को छोड़कर बड़े भाई के समान आलिंगन किया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

कथयाञ्चक्रतुर्गाथाः पूर्वा गुरुकुले सतोः।
आत्मनो ललिता राजन् करौ गृह्य परस्परम् ॥२७॥

पदच्छेद— कथयान् चक्रतुः गाथाः पूर्वाः गुरुकुले सतोः।
आत्मनः ललिताः राजन् करौ गृह्य परस्परम् ॥

शब्दार्थ—

कथयान्	११.	कहने	आत्मनः	८.	अपनी
चक्रतुः	१२.	लगे	ललिताः	९.	आनन्ददायक
गाथाः	१०.	घटनाओं को	राजन्	१.	हे राजन्
पूर्वाः	७.	पूर्व जीवन की	करौ	३.	हाथ
गुरुकुले	५.	गुरुकुल में	गृह्य	४.	पकड़कर
सतोः।	६.	रहते समय की (घटित हुई)	परस्परम् ॥	२.	वे दोनों एक दूसरे का

श्लोकार्थ—हे राजन्! वे दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर गुरुकुल में रहते समय की घटित हुई पूर्व जीवन की अपनी आनन्द दायक घटनाओं को कहने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—**अपि ब्रह्मन् गुरुकुलाद् भवता लब्धदक्षिणात्।**
समावृत्तेन धर्मज्ञ भार्योढा सदृशी न वा ॥२८॥

पदच्छेद— अपि ब्रह्मन् गुरुकुलात् भवता लब्ध दक्षिणात्।
समावृत्तेन धर्मज्ञ भार्या ऊढा सदृशी न वा ॥

शब्दार्थ—

अपि	८.	क्या	समावृत्तेन	६.	लौट आने पर
ब्रह्मन्	२.	ब्राह्मणदेव	धर्मज्ञ	१.	हे धर्म के ज्ञाता
गुरुकुलात्	५.	गुरुकुल से	भार्या	१०.	पत्नी से
भवता	७.	आपने	ऊढा	११.	विवाह किया
लब्ध	४.	देकर	सदृशी	९.	अपने समान
दक्षिणात्।	३.	गुरु दक्षिणा	न वा ॥	१२	अथवा नहीं ?

श्लोकार्थ—हे धर्म के ज्ञाता! ब्राह्मणदेव! गुरुदक्षिणा देकर गुरुकुल से लौट आने पर आपने क्या अपने समान पत्नी से विवाह किया या नहीं ?

एकोनत्रिंशः श्लोकः

प्रायो गृहेषु ते चित्तमकामविहतं तथा।
नैवातिप्रीयसे विद्वन् धनेषु विदितं हि मे ॥२९॥

पदच्छेद— प्रायः गृहेषु ते चित्तम् अकाम विहतम् तथा।
नैव अतिप्रीयसे विद्वन् धनेषु विदितम् हि मे ॥

शब्दार्थ—

प्रायः	७. प्रायः	न एव	१४. नहीं है
गृहेषु	४. घर में रहने पर भी	अति	१२. बहुत
ते	५. आपका	प्रीयसे	१३. प्रीति
चित्तम्	६. चित्त	विद्वन्	१. हे ब्रह्मन् !
अकाम	८. विषय भोग में	धनेषु	११. धन आदि से
विहतम्	९. आसक्त नहीं है	विदितम्	३. मालूम है कि
तथा।	१०. और	हि मे ॥	२. मुझे

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! मुझे मालूम है कि घर में रहने पर भी आपका चित्त विषय भोग में आसक्त नहीं है। और धन आदि से भी बहुत प्रीति नहीं है ॥

त्रिंशः श्लोकः

केचित् कुर्वन्ति कर्माणि कामैरहतचेतसः।
त्यजन्तः प्रकृतीर्दैवीर्यथाहं लोकसङ्ग्रहम् ॥३०॥

पदच्छेद— केचित् कुर्वन्ति कर्माणि कामैः अहत चेतसः।
त्यजन्तः प्रकृतीः दैवीः यथा अहम् लोक संग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

केचित्	४. कुछ लोग	त्यजन्तः	७. त्याग करके
कुर्वन्ति	१२. करते हैं	प्रकृतीः	६. वासनाओं को
कर्माणि	११. कर्मों को	दैवीः	५. देवनिर्मित
कामैः	१. कामनाओं से	यथा अहम्	८. मेरी तरह
अहत	२. रहित	लोक	९. लोक
चेतसः।	३. चित्त वाले	सङ्ग्रहम् ॥	१०. शिक्षा के लिये

श्लोकार्थ—कामनाओं से रहित चित्त वाले कुछ लोग देवनिर्मित वासनाओं को त्याग करके मेरी तरह लोक शिक्षा के लिये कर्मों को करते हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

कच्चिद् गुरुकुले वासं ब्रह्मन् स्मरसि नौ यतः ।
द्विजो विज्ञाय विज्ञेयं तमसः पारमश्नुते ॥३१॥

पदच्छेद— कच्चित् गुरुकुले वासम् ब्रह्मन् स्मरसि नौ यतः ।
द्विजः विज्ञाय विज्ञेयम् तमसः पारम् अश्नुते ॥

शब्दार्थ—

कच्चित्	२.	क्या आप	द्विजः	८.	द्विजाति
गुरुकुले	४.	गुरुकुल में	विज्ञाय	१०.	जानकर
वासम्	५.	निवास का	विज्ञेयम्	९.	ज्ञातव्य वस्तुओं को
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	तमसः	११.	अज्ञानान्धकार से
स्मरसि	६.	स्मरण करते हैं	पारम्	१२.	पार
नौ	३.	हम दोनों के	अश्नुते ॥	१३.	हो जाता है
यतः ।	७.	जहाँ से			

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! क्या आप हम दोनों के गुरुकुल में निवास का स्मरण करते हैं। जहाँ से द्विजाति ज्ञातव्य वस्तुओं को जानकर अज्ञानान्धकार से पार हो जाता है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

स वै सत्कर्मणां साक्षाद् द्विजातेरिह सम्भवः ।
आद्योऽङ्ग यत्राश्रमिणां यथाहं ज्ञानदो गुरुः ॥३२॥

पदच्छेद— सः वै सत्कर्मणाम् साक्षात् द्विजातेः इह सम्भवः ।
आद्यः अङ्ग यत्र आश्रमिणाम् यथा अहम् ज्ञानदः गुरुः ॥

शब्दार्थ—

सः	९.	वह शिक्षक	आद्यः	६.	पहला
वै	१०.	निश्चित ही (दूसरा गुरु है)	अङ्ग	१.	हे मित्र
सत्कर्मणाम्	८.	सत्कर्मों का	यत्र	११.	जहाँ
साक्षात्	४.	साक्षात्	आश्रमिणाम्	१२.	वर्णाश्रमियों को
द्विजातेः	३.	द्विजाति का	यथा अहम्	१४.	मेरे समान पूज्य हैं
इह	२.	इस संसार में	ज्ञानदः	१३.	ज्ञान देने वाला (तीसरा गुरु)
सम्भवः ।	५.	जन्मदाता पिता	गुरुः ॥	७.	गुरु है

श्लोकार्थ—हे मित्र ! इस संसार में द्विजाति का साक्षात् जन्मदाता पिता पहला गुरु है। सत्कर्मों का शिक्षक निश्चित ही दूसरा गुरु है। वर्णाश्रमियों को ज्ञान देने वाला तीसरा गुरु मेरे समान पूज्य है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

नन्वर्थकोविदा ब्रह्मन् वर्णाश्रमवतामिह।
ये मया गुरुणा वाचा तरन्त्यञ्जो भवार्णवम् ॥३३॥

पदच्छेद— ननु अर्थ कोविदाः ब्रह्मन् वर्णाश्रमवताम् इह।
ये मया गुरुणा वाचा तरन्ति अञ्जः भवअर्णवम् ॥

शब्दार्थ—

ननु	७. वे ही लोग हैं	ये	८. जो
अर्थ	५. स्वार्थ-परमार्थ के	मया	९. मुझ
कोविदाः	६. जानकार	गुरुणा	१०. गुरु की
ब्रह्मन्	१. हे ब्राह्मण देवता !	वाचा	११. वाणी से
वर्णाश्रम	३. वर्ण-आश्रम	तरन्ति	१४. पार कर लेते हैं
वताम्	४. वासियों में	अञ्जः	१३. अनायास ही
इह।	२. यहाँ पर	भव अर्णवम् ॥	१२. संसार सागर को

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मण देवता ! यहाँ पर वर्ण और आश्रम वासियों में स्वार्थ और परमार्थ के जानकार वे ही लोग हैं। जो मुझ गुरु की वाणी से संसार सागर को अनायास ही पार कर लेते हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

नाहमिज्याप्रजातिभ्यां तपसोपशमेन वा।
तुष्येयं सर्वभूतात्मा गुरुशुश्रूषया यथा ॥३४॥

पदच्छेद— न अहम् इज्या प्रजातिभ्याम् तपसा उपशमेन वा।
तुष्येयम् सर्वभूत आत्मा गुरु शुश्रूषया यथा ॥

शब्दार्थ—

न	९. नहीं होता हूँ	तुष्येयम्	८. उतना सन्तुष्ट
अहम्	३. मैं	सर्वभूत	१. सब प्राणियों की
इज्या	४. यज्ञ	आत्मा	२. आत्मा
प्रजातिभ्याम्	५. वेद अध्ययन	गुरु	११. गुरु की
तपसा	६. तपस्या	शुश्रूषया	१२. सेवा शुश्रूषा से प्रसन्न होता हूँ
उपशमेन वा।	७. अथवा शान्ति से	यथा ॥	१०. जितना कि

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! सब प्राणियों की आत्मा मैं यज्ञ, वेद-अध्ययन, तपस्या अथवा शक्ति से उतना सन्तुष्ट नही होता हूँ। जितना कि गुरु की सेवा शुश्रूषा से प्रसन्न होता हूँ ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

अपि नः स्मर्यते ब्रह्मन् वृत्तं निवसतां गुरौ ।
गुरुदारैश्चोदितानामिन्धनानयने क्वचित् ॥३५॥

पदच्छेद— अपि नः स्मर्यते ब्रह्मन् वृत्तम् निवसताम् गुरौ ।
गुरुदारैः चोदितानाम् इन्धन आनयने क्वचित् ॥

शब्दार्थ—

अपि	२. क्या	गुरौ ।	५. गुरुकुल में		
नः	७. हम लोगों को (एकदिन)	गुरुदारैः	८. गुरु-पत्नी ने		
स्मर्यते	४. आपको स्मरण है जब	चोदितानाम्	१२. भेजा था		
ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मन् !	इन्धन	१०. इंधन		
वृत्तम्	३. यह बात	आनयने	११. लाने के लिये		
निवसताम्	६. निवास करते समय	क्वचित् ॥	९. कहीं से (जङ्गल में)		

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! क्या यह बात आपको स्मरण है जब गुरुकुल में निवास करते समय हम लोगों को एक दिन गुरु पत्नी ने कहीं से जङ्गल में इंधन लाने के लिये भेजा था ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

प्रविष्टानां महारण्यमपर्तौ सुमहद् द्विज ।
वातवर्षमभूत्तीव्रं निष्ठुराः स्तनयित्नवः ॥३६॥

पदच्छेद— प्रविष्टानाम् महारण्यम् अपऋतौ सुमहत् द्विज ।
वातवर्षम् अभूत् तीव्रम् निष्ठुराः स्तनयित्नवः ॥

शब्दार्थ—

प्रविष्टानाम्	३. पहुँचे हुये थे कि	वातवर्षम्	७. आंधी-पानी
महारण्यम्	२. महावन में	अभूत्	८. आ गया था और
अपऋतौ	४. बिना ऋतु के ही	तीव्रम्	६. भयंकर
सुमहत्	५. बहुत ज्यादा	निष्ठुराः	१०. कड़कने लगी थी
द्विज	१. हे ब्रह्मन् ! हम लोग	स्तनयित्नवः ॥	९. आकाश में बिजली

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! हम लोग महावन में पहुँचे हुये थे कि बिना ऋतु के ही बहुत ज्यादा भयंकर आंधी-पानी आ गया था । और आकाश में बिजली कड़कने लगी थी ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

सूर्यश्चास्तं गतस्तावत् तमसा चावृता दिशः ।
निम्नं कूलं जलमयं न प्राज्ञायत किञ्चन ।।३७।।

पदच्छेद— सूर्यः च अस्तम् गतः तावत् तमसा च आवृताः दिशः ।
निम्नम् कूलम् जलमयम् न प्राज्ञायत किञ्चन ।।

शब्दार्थ—

सूर्यः चः	२. सूर्य	दिशः ।	५. दिशायें
अस्तम्	३. अस्त	निम्नम्	८. निचली भूमि और
गतः	४. हो गया	कूलम्	९. किनारे
तावत्	१. तब-तक	जलमयम्	१०. जलमय हो गये
तमसा च	६. अन्धकार से	न प्राज्ञायत	१२. नहीं मालूम पड़ता था
आवृताः	७. ढक गईं	किञ्चन ।।	११. कुछ भी

श्लोकार्थ—तब तक सूर्य अस्त हो गया । दिशायें अन्धकार से ढक गईं । निचली भूमि और किनारे जलमय हो गये । कुछ भी नहीं मालूम पड़ता था ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

वयं भृशं तत्र महानिलाम्बुभिर्निहन्यमाना मुहुरम्बु सम्प्लवे ।
दिशोऽविदन्तोऽथ परस्परं वने गृहीतहस्ताः परिबभ्रिमातुराः ।।३८।।

पदच्छेद— वयं भृशम् तत्र महा अनिल अम्बुभिः निहन्यमानाः मुहुः अम्बु सम्प्लवे ।
दिशः अविदन्तः अथ परस्परम् वने गृहीत हस्ताः परिबभ्रिम आतुराः ।।

शब्दार्थ—

वयम्	८. हम लोगों को	दिशः	९. दिशाओं का
भृशम्	६. अत्यन्त	अविदन्तः	१०. ज्ञान न रहा
तत्र	१. वहाँ	अथ	११. तथा
महा अनिल	३. आँधी के झटकों और	परस्परम्	१२. हम एक दूसरे का
अम्बुभिः	४. वर्षा की बौछारों	वने	१४. वन में
निहन्यमानाः	७. पीड़ित होते हुये	गृहीत हस्ताः	१३. हाथ पकड़े हुये
मुहुः	५. बार-बार	परिबभ्रिम	१६. इधर उधर भटकने लगे
अम्बुसम्प्लवे ।	२. जल की बाढ़ में	आतुराः ।।	१५. व्यग्र होकर

श्लोकार्थ—वहाँ जल की बाढ़ में आँधी के झटकों और वर्षा की बौछारों से बार-बार अत्यन्त पीड़ित होते हुये हम लोगों को दिशाओं का ज्ञान न रहा तथा हम एक दूसरे का हाथ पकड़े हुये वन में व्यग्र होकर इधर-उधर भटकने लगे ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

एतद् विदित्वा उदिते रवौ सान्दीपनिर्गुरुः ।
अन्वेषमाणो नः शिष्यानाचार्योऽपश्यदातुरान् । ३९॥

पदच्छेद— एतत् विदित्वा उदिते रवौ सान्दीपनिः गुरुः ।
अन्वेषमाणः नः शिष्यान् आचार्यः अपश्यत् आतुरान् ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	यह	अन्वेषमाणः	१०.	ढूंढते हुये (मिलने पर)
विदित्वा	२.	जानकर (कि हम नहीं लौटे हैं)	नः	८.	हम
उदिते	४.	उदय होने पर	शिष्यान्	९.	शिष्यों को
रवौ	३.	सूर्य के	आचार्यः	५.	आचार्य
सान्दीपनिः	७.	सान्दीपनि ने (वन में)	अपश्यत्	१२.	देखा
गुरुः ।	६.	गुरुदेव	आतुरान् ॥	११.	अत्यन्त आतुर

श्लोकार्थ—यह जानकर कि हम नहीं लौटे है । सूर्य के उदय होने पर आचार्य गुरुदेव सान्दीपनि ने वन में हम शिष्यों को ढूंढते हुये, मिलने पर अत्यन्त आतुर देखा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

अहो हे पुत्रका यूयमस्मदर्थेऽतिदुःखिताः ।
आत्मा वै प्राणिनां प्रेष्ठस्तमनादृत्य मत्पराः ॥४०॥

पदच्छेद— अहो हे पुत्रकाः यूयम् अस्मत् अर्थे अतिदुःखिताः ।
आत्मा वै प्राणिनाम् प्रेष्ठः तम् अनादृत्य मत्पराः ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	आश्चर्य है	आत्मा वै	७.	अपना शरीर
हे पुत्रकाः	२.	हे पुत्रों !	प्राणिनाम्	८.	प्राणियों को
यूयम	३.	तुम लोगों ने	प्रेष्ठः	९.	सबसे अधिक प्रिय होता है
अस्मत्	४.	हमारे	तम्	१०.	उसको
अर्थे	५.	लिये	अनादृत्य	११.	परवाह न करके तुम
अतिदुःखितः ।	६.	अति कष्ट उठाया	मत्पराः ॥	१२.	हमारी सेवा में लगे रहे

श्लोकार्थ— आश्चर्य है ! हे पुत्रो ! तुम लोगों ने हमारे लिये अति कष्ट उठाया । अपना शरीर प्राणियों को सबसे अधिक प्रिय होता है । उसकी परवाह न करके तुम हमारी सेवा में लगे रहे ।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

एतदेव हि सच्छिष्यैः कर्तव्यं गुरुनिष्कृतम् ।
यद् वै विशुद्धभावेन सर्वार्थात्मार्पणं गुरौ ॥४१॥

पदच्छेद— एतत् एव हि सत्शिष्यैः कर्तव्यम् गुरु निष्कृतम् ।
यद् वै विशुद्ध भावेन सर्वार्थ आत्म अर्पणम् गुरौ ॥

शब्दार्थ—

एतत्	४. यह	यद्वै	७. कि
एव हि	५. ही	विशुद्ध	८. विशुद्ध
सत्शिष्यैः	३. उत्तम शिष्यों को	भावेन	९. भाव से
कर्तव्यम्	६. करना चाहिये	सर्वार्थ	१०. अपना सब कुछ और
गुरु	१. गुरु का	आत्मतर्पणम्	१२. शरीर भी अर्पित कर दें
निष्कृतम् ।	२. ऋण चुकाने के लिये	गुरौ ॥	११. गुरु को

श्लोकार्थ—गुरु का ऋण चुकाने के लिये उत्तम शिष्यों को यह ही करना चाहिये कि विशुद्ध भाव से अपना सब कुछ और शरीर भी गुरु को अर्पित कर दे ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

तुष्टोऽहं भो द्विजश्रेष्ठाः सत्याः सन्तु मनोरथाः ।
छन्दांस्ययातयामानि भवन्त्विह परत्र च ॥४२॥

पदच्छेद— तुष्टः अहम् भो द्विजश्रेष्ठाः सत्याः सन्तु मनोरथाः ।
छन्दांसि अयातयामानि भवन्तु इह परत्र च ॥

शब्दार्थ—

तुष्टः	३. सन्तुष्ट हूँ (तुम्हारी)	छन्दांसि	१०. तुम्हें वेद
अहम्	२. मैं	अयातयामानि	११. सदा कण्ठस्थ
भोद्विजश्रेष्ठाः	१. हे द्विजवरों !	भवन्तु	१२. रहें
सत्याः	५. पूर्ण	इह	७. इस लोक में
सन्तु	६. हों	परत्र	९. परलोक में
मनोरथाः ।	४. अभिलाषायें	च ॥	८. और

श्लोकार्थ—हे द्विजवरो ! मैं सन्तुष्ट हूँ । तुम्हारी अभिलाषायें पूर्ण हों ! इस लोक में और परलोक में तुम्हें वेद सदा कण्ठस्थ रहें ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

इत्थंविधान्यनेकानि वसतां गुरुवेश्मसु ।
गुरोरनुग्रहेणैव पुमान् पूर्णः प्रशान्तये ॥४३॥

पदच्छेद— इत्थम् विधानि अनेकानि वसताम् गुरुवेश्मसु ।
गुरोः अनुग्रहेण एव पुमान् पूर्णः प्रशान्तये ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१. इस प्रकार	गुरुः	७. गुरु की
विधानि	६. घटनायें हुईं थीं	अनुग्रहेण	८. कृपा से
अनेकानि	५. अनेकों	एव	९. ही
वसताम्	४. निवास करते हुये	पुमान्	१०. मनुष्य
गुरु	२. गुरु के	पूर्णः	११. पूर्णता और
वेश्मसु ।	३. घर में	प्रशान्तये ॥	१२. शान्ति को पाता है

श्लोकार्थ—इस प्रकार गुरु के घर में निवास करते हुये अनेकों घटनायें हुईं थीं । गुरु की कृपा से ही मनुष्य पूर्णता को पाता है ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

ब्राह्मण उवाच—किमस्माभिरनिर्वृत्तं देवदेव जगद्गुरो ।
भवता सत्यकामेन येषां वासो गुरावभूत् ॥४४॥

पदच्छेद— किम् अस्माभिः अनिर्वृत्तम् देवदेव जगद्गुरो ।
भवता सत्यकामेन येषाम् वासः गुरौ अभूत् ॥

शब्दार्थ—

किम्	४. क्या	भवता	८. आप परमात्मा के साथ
अस्माभिः	३. हमने	सत्यकामेन	७. सत्य संकल्प
अनिर्वृत्तम्	५. नहीं पाया	येषाम्	६. क्योंकि हमारा
देवदेव	१. हे देवताओं के देव !	वासः गुरौ	९. गुरु के घर में वास
जगद्गुरो ।	२. जगत् के गुरु	अभूत् ॥	१०. हुआ था

श्लोकार्थ—हे देवताओं के देव ! जगत् के गुरु ! हमने क्या नहीं पाया । क्योंकि हमारा सत्य संकल्प आप परमात्मा के साथ गुरु के घर में वास हुआ था ।

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

यस्यच्छन्दोमयं ब्रह्म देह आवपनं विभो ।
श्रेयसां तस्य गुरुषु वासोऽत्यन्तविडम्बनम् ॥४५॥

पदच्छेद - यस्य छन्दोमयम् ब्रह्म देह आवपनम् विभो ।
श्रेयसाम् तस्य गुरुषु वासः अत्यन्त विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

यस्य	६.	जिनका	श्रेयसाम्	२.	कल्याणों का
छन्दोमयम्	४.	छन्दोमय	तस्य	८.	उनका
ब्रह्म	५	वेद	गुरुषु	६.	गुरुकुल में
देह	७.	शरीर है	वासः	१०.	निवास करना
आवपनम्	३.	मूल स्रोत	अत्यन्त	११	अत्यन्त
विभो ।	१.	हे प्रभो	विडम्बनम् ॥	१२.	अभिनय मात्र है

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! कल्याणों का मूलस्रोत छन्दोमय वेद जिनका शरीर है उनका गुरुकुल में निवास करना अत्यन्त अभिनय मात्र है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे श्रीदामचरिते
अशीतितमः अध्यायः ॥८०॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकाशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—स इत्थं द्विजमुख्येन सह सङ्कथयन् हरिः ।
सर्वभूतमनोऽभिज्ञः स्मयमान उवाच तम् ॥१॥

पदच्छेद— सः इत्थम् द्विज मुख्येन सह सङ्कथयन् हरिः ।
सर्वभूत मनः अभिज्ञः स्मयमानः उवाच तम् ॥

शब्दार्थ—

सः	८. वे	सर्वभूत	५. सभी प्राणियों के
इत्थम्	१. इस प्रकार	मनः	६. मन को
द्विज मुख्येन	२. श्रेष्ठ ब्राह्मण के	अभिज्ञः	७. जानने वाले
सह	३. साथ	स्मयमानः	१०. मुसकराते हुये
संकथयन्	४. बात चीत करते हुये	उवाच	१२. बोले
हरिः ।	९. भगवान्	तम् ॥	११. उसे

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रेष्ठ ब्राह्मण के साथ बातचीत करते हुये सभी प्राणियों के मन को जानने वाले वे भगवान् मुसकराते हुये उनसे बोले ॥

द्वितीयः श्लोकः

ब्रह्मण्यो ब्राह्मणं कृष्णो भगवान् प्रहसन् प्रियम् ।
प्रेम्णा निरीक्षणेनैव प्रेक्षन् खलु सतां गतिः ॥२॥

पदच्छेद— ब्रह्मण्यः ब्राह्मणम् कृष्णः भगवान् प्रहसन् प्रियम् ।
प्रेम्णा निरीक्षणेन एव प्रेक्षन् खलु सताम् गतिः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मण्यः	१. ब्राह्मणों के परमभक्त	प्रेम्णा	९. प्रेम भरी
ब्राह्मणम्	८. ब्राह्मण को	निरीक्षणेन एव	१०. दृष्टि से ही
श्रीकृष्ण	६. श्रीकृष्ण	प्रेक्षन्	११. देखते हुये (तथा)
भगवान्	५. भगवान्	खलु	३. एकमात्र
प्रहसन्	१२. हँसते हुये (बोले)	सताम्	२. सन्तों के
प्रियम् ।	७ प्रिय मित्र	गतिः ॥	४. आश्रय

श्लोकार्थ—ब्राह्मणों के परम भक्त सन्तों के एक मात्र आश्रय भगवान् श्रीकृष्ण प्रिय मित्र ब्राह्मण को प्रेम भरी दृष्टि से ही देखते हुये तथा हँसते हुये बोले ॥

तृतीयः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच किमुपायनमानीतं ब्रह्मन् मे भवता गृहात् ।
अण्वप्युपाहृतं भक्तैः प्रेम्णा भूर्येव मे भवेत् ।
भूर्यप्यभक्तोपहृत न मे तोषाय कल्पते ॥३॥

पदच्छेद— किम् उपानयम् आनीतम् ब्रह्मन् मे भवता गृहात् ।
अणु अपि उपाहृतम् भक्तैः प्रेम्णा भूरि एव मे भवेत् ।
भूरि अपि अभक्त उपहृतम् न मे तोषाय कल्पते ॥

शब्दार्थ—

किम्	४. क्या	भक्तैः प्रेम्णा	७. भक्तों के द्वारा प्रेम से
उपायनम्	५. उपहार	भूरि एव मे	१०. मुझे बहुत ही
आनीतम्	६. लाये हैं	भवेत्	११. है
ब्रह्मन्	१. हे ब्राह्मण देवता !	भूरि अपि	१२. किन्तु बहुत भी
मे भवता	२. आप मेरे लिये	अभक्त	१३. अभक्तों के द्वारा
गृहात्	३ घर से	उपहृतम्	१४. लाया गया उपहार
अणु अपि	८. थोड़ा भी	न मे तोषाय	१५. मेरे संतोष के लिये
उपाहृतम्	९. उपहार लाया गया	कल्पते ॥	१६. नहीं होता है

श्लोकार्थ—हे ब्राह्मण देवता ! आप मेरे लिये घर से क्या उपहार लाये हैं । भक्तों के द्वारा प्रेम से थोड़ा भी उपहार लाया गया मुझे बहुत ही है । किन्तु बहुत भी अभक्तों के द्वारा लाया गया उपहार मेरे सन्तोष के लिये नहीं होता है ॥

चतुर्थः श्लोकः

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥४॥

पदच्छेद— पत्रम् पुष्पम् फलम् तोयम् यः मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तत् अहम् भक्ति उपहृतम् अश्नामि प्रयत आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

पत्रम्	२. पत्र	तत्	७. तो
पुष्पम्	३ पुष्प	अहम्	८. मैं
फलम्तोयम्	४. फल-जल	भक्ति उपहृतम्	११. भक्ति से दिया हुआ उपहार
यः मे	१. जो मुझे	अश्नामि	१२. खा लेता हूँ
भक्त्या	५. भक्ति पूर्वक	प्रयत	९. उस शुद्ध
प्रयच्छति ।	६. देता है	आत्मनः ॥	१० चित्त भक्त का

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! जो मुझे पत्र, पुष्प, फल, जल भक्ति पूर्वक देता है, तो मैं उस शुद्ध चित्त भक्त का भक्ति पूर्वक दिया हुआ उपहार खा लेता हूँ ॥

पञ्चमः श्लोकः

इत्युक्तोऽपि द्विजस्तस्मै व्रीडितः पतये श्रियः ।
पृथुकप्रसृतिं राजन् न प्रायच्छदवाङ्मुखः ॥५॥

पदच्छेद— इति उक्तः अपि द्विजः तस्मै व्रीडितः पतये श्रियः ।
पृथुक प्रसृतिम् राजन् न प्रायच्छत् अवाङ्मुखः ॥

शब्दार्थ—

इति	२.	यह	पृथुक	९.	चिउड़े
उक्तः अपि	३.	कहने पर भी	प्रसृतिम्	८.	चारमुट्ठी
द्विजः	४.	ब्राह्मण ने	राजन्	१.	हे राजन् !
तस्मै	५.	उन	न	१०.	नहीं
व्रीडितः	७.	लज्जावश	प्रायच्छत्	११.	दिये (और)
पतये श्रियः ।	६.	लक्ष्मीपति को	अवाङ्मुखः ॥	१२.	मुँह नीचा कर लिया

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यह कहने पर भी ब्राह्मण ने उन लक्ष्मीपति को लज्जावश चार मुट्ठी चिउड़े नहीं दिये और मुँह नीचा कर लिया ॥

षष्ठः श्लोकः

सर्वभूतात्मदृक् साक्षात् तस्यागमनकारणम् ।
विज्ञायाचिन्तयन्नायं श्रीकामो माभजत् पुरा ॥६॥

पदच्छेद— सर्वभूत आत्मदृक् साक्षात् तस्य आगमन कारणम् ।
विज्ञाय अचिन्तयत् न अयम् श्रीकामः अभजत् पुरा ॥

शब्दार्थ—

सर्वभूत	१.	सभी प्राणियों के	विज्ञात	७.	जानकर
आत्मदृक्	२.	हृदय की बात जानने वाले	अचिन्तयत्	८.	सोचने लगे कि
साक्षात्	३.	स्वयम् भगवान्	न	१३.	नहीं किया है
तस्य	४.	उसके	अयम्	१०.	इसने
आगमन	५.	आने का	श्रीकामः	११.	लक्ष्मी की कामना से
कारणम् ।	६.	कारण	मा अभजत्	१२.	मेरा भजन
			पुरा ॥	९.	पहले कभी

श्लोकार्थ—सभी प्राणियों के हृदय की बात जानने वाले स्वयम् भगवान् उसके आने का कारण जानकर सोचने लगे कि पहले कभी इसने लक्ष्मी की कामना से मेरा भजन नहीं किया है ॥

सप्तमः श्लोकः

पत्न्याः पतिव्रतायास्तु सखा प्रियचिकीर्षया ।
प्राप्तो मामस्य दास्यामि सम्पदोऽमर्त्यदुर्लभाः ॥७॥

पदच्छेद— पत्न्याः पतिव्रतायाः तु सखा प्रिय चिकीर्षया ।
प्राप्तः माम् अस्य दास्यामि सम्पदः अमर्त्य दुर्लभाः ॥

शब्दार्थ—

पत्न्यः	२. पत्नी को	माम्	६. मेरे पास
पतिव्रतायाः	१. पतिव्रता	अस्य	८. इसे मैं
सखा	५. मित्र	दास्यामि	१२. दूँगा
प्रिय	३. प्रसन्न	सम्पदः	११. सम्पत्तियाँ
चिकीर्षया	४. करने के लिये	अमर्त्य	९. देवताओं के लिये भी
प्राप्तः ।	७. आया है	दुर्लभाः ॥	१०. दुर्लभ

श्लोकार्थ—पतिव्रता पत्नी को प्रसन्न करने के लिये मित्र मेरे पास आया है । इसे मैं देवताओं के लिये भी दुर्लभ सम्पत्तियाँ दूँगा ।

अष्टमः श्लोकः

इत्थं विचिन्त्य वसनाच्चीरबद्धान्द्विजन्मनः ।
स्वयं जहार किमिदमिति पृथुकतण्डुलान् ॥८॥

पदच्छेद— इत्थम् विचिन्त्य वसनात् चीर बद्धात् द्विजन्मनः ।
स्वयम् जहार किम् इदम् इति पृथुक तण्डुलान् ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१. इस प्रकार	स्वयम्	११. स्वयं ही
विचिन्त्य	२. विचार कर	जहार	१२. छीन लिये
वसनात्	४. वस्त्र में से	किम्	८. क्या है
चीर	५. चिथड़े की एक पोटली में	इदम्	७. यह
बद्धात्	६. बंधे हुये	इति	९. ऐसा कहकर
द्विजन्मनः ।	३. ब्राह्मण के	पृथुकतण्डुलान् ॥	१०. चिउड़े

श्लोकार्थ—इस प्रकार विचार कर ब्राह्मण के वस्त्र से चिथड़े की एक पोटली में बंधे हुये, यह क्या है, ऐसा कहकर चिउड़े स्वयं ही छीन लिये ॥

नवमः श्लोकः

नन्वेतदुपनीतं मे परमप्रीणनं सखे ।
तर्पयन्त्यङ्ग मां विश्वमेते पृथुकतण्डुलाः ॥९॥

पदच्छेद— ननु एतत् उपनीतम् मे परम प्रीणनम् सखे ।
तर्पयन्ति अङ्ग माम् विश्वम् एते पृथुक तण्डुलाः ॥

शब्दार्थ—

ननु	४. निश्चित ही	तर्पयन्ति	१२. तृप्त रहे हैं
एतत्	३. यह	अङ्ग	७. बन्धु
उपनीतम्	६. ले आये हो	माम्	१०. न केवल मुझे परन्तु
मे	२. मेरे लिये	विश्वम्	११. विश्व को
परमप्रीणनम्	५. परम प्रिय भेंट	एते	८. ये
सखे ।	१. हे मित्र ! तुम	पृथुकतण्डुलाः ॥	९. चिउड़े

श्लोकार्थ—हे मित्र ! तुम मेरे लिये यह निश्चित ही परमप्रिय भेंट ले आये हो । बन्धु ! ये चिउड़े न केवल मुझे परन्तु सारे विश्व को तृप्त कर रहे हैं ॥

दशमः श्लोकः

इति मुष्टिं सकृज्जग्ध्वा द्वितीयां जग्धुमाददे ।
तावच्छ्रीर्जगृहे हस्तं तत्परा परमेष्ठिनः ॥१०॥

पदच्छेद— इति मुष्टिम् सकृत् जग्ध्वा द्वितीयाम् जग्धुम् आददे ।
तावत् श्रीः जगृहे हस्तम् तत्परा परमेष्ठिनः ॥

शब्दार्थ—

इति	१. ऐसा कहकर	तावत्	८. त्यों ही
मुष्टिम्	३. मुट्ठी चिउड़ा	श्रीः	१०. लक्ष्मी (रुक्मिणी ने)
सकृत	२. वे एक	जगृहे	१३. पकड़ लिया
जग्ध्वा	४. खाकर	हस्तम्	१२. हाथ
द्वितीयाम्	५. दूसरी मुट्ठी	तत्परा	९. भगवत्परायण
जग्धुम्	६. खाने के लिये	परमेष्ठिनः ॥	११. भगवान् का
आददे ।	७. ज्योंहि हाथ उठाया		

श्लोकार्थ—ऐसा कहकर वे एक मुट्ठी चिउड़ा खाकर दूसरी मुट्ठी खाने के लिये ज्यों ही हाथ उठ या त्यों भगवत्परायण लक्ष्मी रुक्मिणी ने भगवान् का हाथ पकड़ लिया ॥

एकादशः श्लोकः

एतावतालं विश्वात्मन् सर्वसम्पत्समृद्धये ।
अस्मिँल्लोकेऽथवामुष्मिन् पुंसस्त्वत्तोषकारणम् ॥११॥

पदच्छेद— एतावता अलम् विश्व आत्मन् सर्वसम्पत् समृद्धये ।
अस्मिन् लोके अथवा अमुष्मिन् पुंसः त्वत् तोषकारणम् ॥

शब्दार्थ—

एतावता	१२.	इतना (चिउड़ा)	अस्मिन्	४.	इस
अलम्	१३.	पर्याप्त	लोके	५.	संसार में
विश्व	१.	हे संसार के	अथवा	६.	अथवा
आत्मा	२.	आत्मा	अमुष्मिन्	७.	परलोक में
सर्वसम्पत्	८.	सभी सम्पत्तियों की	पुंसः	३.	मनुष्य को
समृद्धये ।	९.	समृद्धि को पाने के वास्ते	त्वत	१०.	आपके
			तोषकारणम् ॥	११.	सन्तोष का कारण स्वरूप

श्लोकार्थ—हे संसार के आत्मा ! मनुष्य को इस संसार में अथवा परलोक में सभी सम्पत्तियों की समृद्धि को पाने के वास्ते आपके सन्तोष का कारण स्वरूप इतना चिउड़ा पर्याप्त है ॥

द्वादशः श्लोकः

ब्राह्मणस्तां तु रजनीमुषित्वाच्युतमन्दिरे ।
भुक्त्वा पीत्वा सुखं मेने आत्मानं स्वर्गतं यथा ॥१२॥

पदच्छेद— ब्राह्मणः ताम् तु रजनीम् उषित्वा अच्युत मन्दिरे ।
भुक्त्वा पीत्वा सुखम् मेने आत्मानं स्वर्गतम् यथा ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणः	१.	ब्राह्मण ने	भुक्त्वा	७.	खा
ताम् तु	२.	उस	पीत्वा	८.	पीकर
रजनीम्	३.	रात	सुखम्	९.	सुख का
उषित्वा	६.	रहकर	मेने	१०.	अनुभव किया
अच्युत	४.	श्रीकृष्ण के	आत्मानम्	१२.	अपने को
मन्दिरे ।	५.	भवन में	स्वर्गतम्	१३.	स्वर्ग में समझा
			यथा ॥	११.	मानों

श्लोकार्थ—ब्राह्मण ने उस रात श्रीकृष्ण के भवन में रहकर खा पीकर सुख का अनुभव किया । मानो अपने को स्वर्ग में समझा ॥

त्रयोदशः श्लोकः

श्वोभूते विश्वभावेन स्वसुखेनाभिवन्दितः ।
जगाम स्वालयं तात पथ्यनुव्रज्य नन्दितः ॥१३॥

पदच्छेद— श्वोभूते विश्वभावेन स्वसुखेन अभिवन्दितः ।
जगाम स्व आलयम् तात पथि अनुव्रज्य नन्दितः ॥

शब्दार्थ—

श्वोभूते	२.	प्रातःकाल वे	आलयम्	४.	घर की ओर
विश्वभावेन	७.	श्रीकृष्ण ने	तात	१.	हे परीक्षित् !
स्वसुखेन	६.	आत्माराम	पथि	८.	रास्ते में
अभिवन्दितः ।	११.	प्रणाम किया	अनुव्रज्य	९.	कुछ दूर पीछे-पीछे चलकर
जगाम	५.	चल पड़े	नन्दितः ॥	१०.	उनकी प्रशंसा की तथा
स्व	३.	अपने			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! प्रातः काल वे अपने घर की ओर चल पड़े । आत्माराम श्रीकृष्ण ने रास्ते में कुछ दूर पीछे-पीछे चलकर उनकी प्रशंसा की तथा प्रणाम किया ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स चालब्ध्वा धनं कृष्णान्न तु याचितवान् स्वयम् ।
स्वगृहान् व्रीडितोऽगच्छन्महद्दर्शननिर्वृतः ॥१४॥

पदच्छेद— स च अलब्ध्वा धनम् कृष्णात् न तु याचितवान् स्वयम् ।
स्व गृहान् व्रीडितः अगच्छत् महत् दर्शन निर्वृतः ॥

शब्दार्थ—

स च	१.	उन्होंने	स्वयम्	७.	स्वयं
अलब्ध्वा	४.	न पाकर भी	स्वगृहान्	८.	अपने घर की ओर
धनम्	३.	धन	व्रीडितः	९.	लज्जित होकर तथा
कृष्णात्	२.	श्रीकृष्ण से	अगच्छत्	१२.	चल दिये
न तु	५.	कुछ भी नहीं	महत् दर्शन	१०.	महापुरुष के श्रीकृष्ण दर्शन से
याचितवान् ।	६.	मांगा (अतः)	निर्वृतः ॥	११.	आनन्दित होते हुये

श्लोकार्थ—उन्होंने श्रीकृष्ण से धन न पाकर भी कुछ भी नहीं मांगा । अतः स्वयं अपने घर की ओर लज्जित होकर तथा महापुरुष श्रीकृष्ण के दर्शन से आनन्दित होते हुये चल दिये ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अहो ब्रह्मण्यदेवस्य दृष्टा ब्रह्मण्यता मया ।
यद् दरिद्रतमो लक्ष्मीमाश्लिष्टो बिभ्रतोरसि ॥१५॥

पदच्छेद— अहो ब्रह्मण्य देवस्य दृष्टा ब्रह्मण्यता मया ।
यत् दरिद्रतमः लक्ष्मीम् आश्लिष्टः बिभ्रता उरसि ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहा (भगवान् श्रीकृष्ण की)	यत्	६.	जो कि
ब्रह्मण्यदेवस्य	२.	ब्राह्मणों के प्रति	दरिद्रतमः	१०.	मुझ जैसे दरिद्र को
दृष्टा	५.	देख ली	लक्ष्मीम्	८.	लक्ष्मी को
ब्रह्मण्यता	३.	ब्राह्मण भक्ति	आश्लिष्टः	११.	हृदय से लगा लिया
मया ।	४.	मैंने	बिभ्रता	९.	धारण करते हुये उन्होंने
			उरसि ॥	७.	वक्षःस्थल पर

श्लोकार्थ—अहा भगवान् श्रीकृष्ण की ब्राह्मणों के प्रति ब्राह्मण भक्ति मैंने देख ली । जो कि वक्षः स्थल पर लक्ष्मी को धारण करते हुये उन्होंने मुझ जैसे दरिद्र को हृदय से लगा लिया ॥

षोडशः श्लोकः

क्वाहं दरिद्रः पापीयान् क्व कृष्णः श्रीनिकेतनः ।
ब्रह्मबन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भितः ॥१६॥

पदच्छेद— क्व अहम् दरिद्रः पापीयान् क्व कृष्णः श्रीनिकेतनः ।
ब्रह्म बन्धुः इति स्म अहम् बाहुभ्याम् परिरम्भितः ॥

शब्दार्थ—

क्व अहम्	१.	कहाँ तो मैं	ब्रह्म	७.	यह ब्राह्मण
दरिद्रः	२.	दरिद्र	बन्धुः	८.	गरीब है
पापीयान्	३.	पापी (और)	इति स्म	९.	ऐसा समझ कर भी
क्व	४.	कहाँ	अहम्	१०.	मुझे अपनी
कृष्णः	६.	श्रीकृष्ण (उन्होंने)	बाहुभ्याम्	११.	भुजाओं में
श्रीनिकेतनः ।	५.	लक्ष्मी के एकमात्र आश्रय	परिरम्भितः ॥	१२.	भर कर हृदय से लगा लिया

श्लोकार्थ—कहाँ तो मैं दरिद्र पापी और कहाँ लक्ष्मी के एक मात्र आश्रय श्रीकृष्ण । उन्होंने यह ब्राह्मण गरीब है; ऐसा समझकर भी मुझे अपनी भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया ॥

सप्तदशः श्लोकः

निवासितः प्रियाजुष्टे पर्यङ्के भ्रातरो यथा ।
महिष्या वीजितः श्रान्तो बालव्यजनहस्तया ॥१७॥

पदच्छेद— निवासितः प्रियाजुष्टे पर्यङ्के भ्रातरः यथा ।
महिष्या वीजितः श्रान्तः बालव्यजन हस्तया ॥

शब्दार्थ—

निवासितः	६. बैठाया (और)	महिष्या	७. पटरानी रुक्मिणी ने
प्रिया	१. प्रिया से	वीजितः	१२. पंखा किया
जुष्टे	२. सेवित	श्रान्तः	११. मुझ थके हुये पर
पर्यङ्के	३. पलंग पर	बाल	९. चँवर
भ्रातरः	४. मुझे भाई के	व्यजन	१०. डुलाकर
यथा ।	५. समान	हस्तया ॥	८. अपने हाथ से

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने प्रिया से सेवित पलंग पर मुझे भाई के समान बैठाया । पटरानी रुक्मिणी ने अपने हाथ से चँवर डुलाकर मुझ थके हुये पर पंखा किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

शुश्रूषया परमया पादसंवाहनादिभिः ।
पूजितो देवदेवेन विप्रदेवेन देववत् ॥१८॥

पदच्छेद— शुश्रूषया परमया पाद संवाहन आदिभिः ।
पूजितः देवदेवेन विप्र देवेन देववत् ॥

शब्दार्थ—

शुश्रूषया	८. शुश्रूषा के द्वारा	पूजितः	१०. मेरी पूजा की
परमया	७. अत्यन्त	देवदेवेन	३. देवेश्वर श्रीकृष्ण ने
पाद	४. पैरों के	विप्र	१. ब्राह्मण को
संवाहन	५. दबाने	देवेन	२. देवता मानने वाले
आदिभिः ।	६. आदि	देववत् ॥	९. देवता के समान

श्लोकार्थ— ब्राह्मण को देवता मानने वाले देवेश्वर श्रीकृष्ण ने पैरों के दबाने आदि अत्यन्त शुश्रूषा के द्वारा देवता के समान मेरी पूजा की ।

एकोनविंशः श्लोकः

स्वर्गापवर्गयोः पुंसां रसायां भुवि सम्पदाम् ।
सर्वासामपि सिद्धीनां मूलं तच्चरणार्चनम् ॥१९॥

पदच्छेद— स्वर्ग अपवर्गयोः पुंसाम् रसायाम् भुवि सम्पदाम् ।
सर्वासाम् अपि सिद्धीनाम् मूलम् तत् चरण अर्चनम् ॥

शब्दार्थ—

स्वर्ग	२. स्वर्ग	सर्वासाम्	७. समस्त
अपवर्गयोः	३. मोक्ष	अपि	९. भी
पुंसाम्	१. मनुष्यों के लिये	सिद्धीनाम्	८. सिद्धियों का
रसायाम्	५. रसातल की	मूलम्	१०. मूल
भुवि	४. पृथ्वी और	तत् चरण	११. उनके चरणों की
सम्पदाम् ।	६. सम्पत्ति तथा	अर्चनम् ॥	१२. पूजा है

श्लोकार्थ—मनुष्यों के लिये स्वर्ग, मोक्ष, पृथ्वी और रसातल की सम्पत्ति तथा समस्त सिद्धियों का भी मूल उनके चरणों की पूजा है ।

विंशः श्लोकः

अधनोऽयं धनं प्राप्य माद्यन्नुच्चैर्न मां स्मरेत् ।
इति कारुणिको नूनं धनं मेऽभूरि नाददात् ॥२०॥

पदच्छेद— अधनः अयम् धनम् प्राप्य माद्यन् उच्चैः न माम् स्मरेत् ।
इति कारुणिकः नूनम् धनम् मे अभूरि न अददात् ॥

शब्दार्थ—

अधनः	२. दरिद्र	इति	९. यह सोचकर
अयम्	१. यह	कारुणिकः	१०. दयालु भगवान् श्रीकृष्ण ने
धनम्	३. धन	नूनम्	११. निश्चित ही
प्राप्य	४. पाकर	धनम्	१४. धन
माद्यन्	६. मतवाला हो	मे	१२. मुझे
उच्चैः	५. बिल्कुल	अभूरि	१३. थोड़ा सा भी
न माम्	७. मुझे न	न	१५. नहीं
स्मरेत् ।	८ भूल जावे	अददात् ॥	१६. दिया

श्लोकार्थ—यह दरिद्र धन पाकर बिल्कुल मतवाला होकर मुझे न भूल जावे । यह सोचकर दयालु भगवान् श्रीकृष्ण ने निश्चित ही मुझे थोड़ा सा भी धन नहीं दिया ॥

एकविंशः श्लोकः

इति तच्चिन्तयन्नन्तः प्राप्तो निजगृहान्तिकम् ।
सूर्यानलेन्दुसङ्काशैर्विमानैः सर्वतो वृतम् ॥२१॥

पदच्छेद— इति तत् चिन्तयन् अन्तः प्राप्तः निजगृह अन्तिकम् ।
सूर्य अनल इन्दु सङ्काशैः विमानैः सर्वतः वृतम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	सूर्य	८.	(उन्होंने देखा) वह स्थान सूर्य
तत्	२.	उसे	अनल	९.	अग्नि और
चिन्तयन्	४.	सोचते विचारते वे	इन्दु	१०.	चन्द्रमा के
अन्तः	३.	मन में	संकाशैः	११.	समान
प्राप्तः	७.	पहुँच गये	विमानैः	१२.	(रत्न निर्मित) महलों से
निजगृह	५.	अपने घर के	सर्वतः	१३.	सब ओर से
अन्तिकम् ।	६.	पास में	वृतम् ॥	१४.	घिरा हुआ

श्लोकार्थ—इस प्रकार उसे मन में सोचते विचारते वे अपने घर के पास में पहुँच गये । उन्होंने देखा कि वह स्थान सूर्य अग्नि और चन्द्रमा के समान रत्ननिर्मित महलों से सब ओर से घिरा हुआ है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

विचित्रोपवनोद्यानैः कूजद्द्विजकुलाकुलैः ।
प्रोत्फुल्लकुमुदाम्भोजकह्लारोत्पलवारिभिः ॥२२॥

पदच्छेद— विचित्र उपवन उद्यानैः कूजद् द्विजकुल आकुलैः ।
प्रोत्फुल्ल कुमुद अम्भोज कह्लार उत्पल वारिभिः ॥

शब्दार्थ—

विचित्र	४.	चित्र विचित्र	प्रोत्फुल्ल	७.	खिले हुये
उपवन	५.	उपवनों एवं	कुमुद	८.	कुमुद
उद्यानैः	६.	उद्यानों से	अम्भोज	९.	श्वेत
कूजद्	१.	वह कलरव करते हुये	कह्लार	१०.	नील और
द्विजकुल	२.	पक्षी के झुन्डों से	उत्पल	११.	लाल कमलों वाला
आकुलैः ।	३.	भरे हुये	वारिभिः ॥	१२.	सरोवरों से युक्त था

श्लोकार्थ—वह कलरव करते हुये पक्षियों के झुन्डों से भरे हुये चित्र-विचित्र उपवनों एवम् उद्यानों से तथा खिले हुये कुमुद श्वेत, नील और लाल कमलों वाले सरोवरों से युक्त था ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

जुष्टं स्वलङ्कृतैः पुम्भिः स्त्रीभिश्च हरिणाक्षिभिः ।
किमिदं कस्य वा स्थानं कथं तदिदमित्यभूत् ॥२३॥

पदच्छेद— जुष्टम् स्वलङ्कृतैः पुम्भिः स्त्रीभिः च हरिण अक्षिभिः ।
किमिदम् कस्य वा स्थानम् कथम् तत् इदम् इति अभूत् ॥

शब्दार्थ—

जुष्टम्	६. सेवित	किमिदम्	७. यह क्या है
स्वलङ्कृतैः	४. सुसज्जित	कस्य वा	८. अथवा किसका
पुम्भिः	५. पुरुषों से	स्थानम्	९. स्थान है
स्त्रीभिः	३. स्त्रियों और	कथम् तत्	१०. किस प्रकार वह
हरिण	१. हरिण के समान	इदम् इति	११. ऐसा
अक्षिभिः ।	२. नेत्रों वाली	अभूत् ॥	१२. हो गया

श्लोकार्थ—हरिण के समान नेत्रों वाली स्त्रियों और सुसज्जित पुरुषों से सेवित यह क्या है । अथवा किसका स्थान है । किस प्रकार वह ऐसा हो गया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

एवं मीमांसमानं तं नरा नार्योऽमरप्रभाः ।
प्रत्यगृह्णन् महाभागं गीतवाद्येन भूयसा ॥२४॥

पदच्छेद— एवम् मीमांसमानं तम् नराः नार्यः अमर प्रभाः ।
प्रतिअगृह्णन् महाभागम् गीत वाद्येन भूयसा ॥

शब्दार्थ—

एवम्	५. इस प्रकार	प्रतिअगृह्णन्	१३. अगवानी करने लगे
मीमांसमानम्	६. सोच-विचार करते हुये	महा	८. महा
तम्	७. उस	भागम्	९. भाग्यवान् (ब्राह्मण की)
नराः	४. पुरुष	गीत	११. गाने
नार्यः	३. स्त्री	वाद्येन	१२. बजाने के साथ
अमर	१. देवताओं के समान	भूयसा ॥	१०. बहुत से
प्रभाः ।	२. कान्ति वाले		

श्लोकार्थ—देवताओं के समान कान्ति वाले स्त्री-पुरुष इस प्रकार सोच करते हुये उस महाभाग्यवान् ब्राह्मण की बहुत गाने-बजाने के साथ अगवानी करने लगे ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

पतिमागतमाकर्ण्य पत्न्युद्धर्षातिसम्भ्रमा ।
निश्चक्राम गृहात्तूर्णं रूपिणी श्रीरिवालयात् ॥२५॥

पदच्छेद— पतिम् आगतम् आकर्ण्य पत्नी उद्धर्ष अति सम्भ्रमा ।
निश्चक्राम गृहात् तूर्णम् रूपिणी श्रीः इव आलयात् ॥

शब्दार्थ—

पतिम्	१. पति को	निश्चक्राम	९. निकल आयी
आगतम्	२. आये हुये	गृहात्	८. घर से
अकर्ण्य	३. सुनकर	तूर्णम्	७. शीघ्रता पूर्वक
पत्नी	४. पत्नी	रूपिणी	१०. मूर्तिमती
उद्धर्ष	५. आनन्द से	श्रीःइव	११. लक्ष्मी ही मानो
अतिसम्भ्रमा ।	६. हड़बड़ाकर	आलयात् ॥	१२. कमलवन से आयी हो

श्लोकार्थ—पति को आये हुये सुनकर पत्नी आनन्द से हड़बड़ाकर शीघ्रतापूर्वक घर से निकल आयी । मूर्तिमती लक्ष्मी ही मानो कमलवन से आयी हो ॥

षड्विंशः श्लोकः

पतिव्रता पतिं दृष्ट्वा प्रेमोत्कण्ठाश्रुलोचना ।
मीलिताक्ष्यनमद् बुद्ध्या मनसा परिषस्वजे ॥२६॥

पदच्छेद— पतिव्रता पतिम् दृष्ट्वा प्रेम उत्कण्ठ अश्रुलोचना ।
मीलित अक्षी अनमद् बुद्ध्या मनसा परिषस्वजे ॥

शब्दार्थ—

पतिव्रता	३. पतिव्रता पत्नी के	लोचना ।	४. नेत्रों में
पतिम्	१. पति को	मीलितअक्षी	८. उसने आँखें बन्द करके
दृष्ट्वा	२. देखकर	अनमत्	१०. पति को नमस्कार किया और
प्रेम	५. प्रेम और	बुद्ध्या	९. बुद्धि से
उत्कण्ठा	६. उत्कण्ठा से	मनसा	११. मन से
अश्रु	७. आंसू छलक आये	परिषस्वजे ॥	१२. आलिंगन किया

श्लोकार्थ—पति को देखकर पतिव्रता पत्नी के नेत्रों में प्रेम और उत्कण्ठा से आंसू छलक आये । उसने आँखें बन्द करके बुद्धि से पति को नमस्कार किया और मन से आलिंगन किया ॥

सप्तविंशः श्लोकः

पत्नीं वीक्ष्य विस्फुरन्तीं देवीं वैमानिकीमिव ।
दासीनां निष्ककण्ठीनां मध्ये भान्तीं स विस्मितः ॥२७॥

पदच्छेद— पत्नीम् वीक्ष्य विस्फुरन्तीम् देवीम् वैमानिकीम् इव ।
दासीनाम् निष्ककण्ठीनाम् मध्ये भान्तीम् सः विस्मितः ॥

शब्दार्थ—

पत्नीम्	९.	पत्नी को	दासीनाम्	२.	दासियों के
वीक्ष्य	१०.	देखकर	निष्ककण्ठीनाम्	१.	सोने का हार पहने
विस्फुरन्तीम्	८.	देदीप्यमान	मध्ये	३	बीच में
देवीम्	५.	देवांगना के	भान्तीम्	७.	शोभायमान एवम्
वैमानिकीम्	४.	विमान में स्थित	सः	११.	वे
इव ।	६.	समान	विस्मितः ॥	१२.	विस्मित हो गये

श्लोकार्थ—सोने का हार पहने दासियों के बीच में विमान-स्थित देवाङ्गना के समान शोभायमान एवम् देदीप्यमान पत्नी को देखकर वे विस्मित हो गये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

प्रीतः स्वयं तया युक्तः प्रविष्टो निजमन्दिरम् ।
मणिस्तम्भशतोपेतं महेन्द्रभवनं यथा ॥२८॥

पदच्छेद— प्रीतः स्वयम् तया युक्तः प्रविष्टः निज मन्दिरम् ।
मणिस्तम्भ शत उपेतम् महेन्द्र भवनम् यथा ॥

शब्दार्थ—

प्रीतः	३.	प्रेम से	मणिस्तम्भ	५.	मणियों के खम्भों से
स्वयम्	१.	उन्होंने	शत	४.	सैकड़ों
तया युक्तः	२.	पत्नी के साथ	उपेतम्	६.	युक्त
प्रविष्टः	१२.	प्रवेश किया	महेन्द्र	७.	देवराज के
निज	१०.	अपने	भवनम्	८.	भवन के
मन्दिरम्	११.	महल में	यथा ॥	९.	समान

श्लोकार्थ—उन्होंने पत्नी के साथ प्रेम से सैकड़ों मणियों के खम्भों से युक्त देवराज के भवन के समान अपने महल में प्रवेश किया ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

पयः फेननिभाः शय्या दान्ता रुक्मपरिच्छदाः ।
पर्यङ्का हेमदण्डानि चामरव्यजनानि च ॥२९॥

पदच्छेद— पयः फेन निभाः शय्याः दान्ताः रुक्म परिच्छदाः ।
पर्यङ्काः हेम दण्डानि चामर व्यजनानि च ॥

शब्दार्थ—

पयः फेन	१. वहाँ पर दूध के फेन के	पर्यङ्काः	७ पलंग
निभाः	२. समान सफेद	हेम	८. सोने की
शय्याः	३. बिछौने	दण्डानि	९. डण्डियों वाले
दान्ताः	४. हाँथी दाँत के बने	चामर	१०. चँवर
रुक्म	५. सोने से	व्यजनानि	१२. पंखे थे
परिच्छदाः ।	६. मढ़े हुये	च ॥	११. और

श्लोकार्थ—वहाँ पर दूध के फेन के समान सफेद बिछौने, हाँथी दाँत के बने सोने से मढ़े हुये पलंग, सोने की डण्डियों वाले चँवर और पंखे थे ॥

त्रिंशः श्लोकः

आसनानि च हैमानि मृदूपस्तरणानि च ।
मुक्तादामविलम्बीनि वितानानि द्युमन्ति च ॥३०॥

पदच्छेद— आसनानि च हैमानि मृदु उपस्तरणानि च ।
मुक्तादाम विलम्बीनि वितानानि द्युमन्ति च ॥

शब्दार्थ—

आसनानि	३. सिंहासन	मुक्तादाम	८. मोतियों की लड़ियों वाले
च	१. और	विलम्बीनि	७. लटकती हुई
हैमानि	२. सोने के	वितानानि	११. चंदोवे थे
मृदु	४. कोमल	द्युमन्ति	१०. चमकने वाले
उपस्तरणानि	५. गद्दे	च ॥	९. और
च ।	६. तथा		

श्लोकार्थ—और सोने के सिंहासन, कोमल गद्दे तथा लटकती हुई मोतियों की लड़ियों वाले और चमकने वाले चंदोवे थे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

स्वच्छस्फटिककुड्येषु महामारकतेषु च ।
रत्नदीपा भ्राजमाना ललनारत्नसंयुताः ॥३१॥

पदच्छेद— स्वच्छ स्फटिक कुड्येषु महामारकतेषु च ।
रत्नदीपाः भ्राजमानाः ललना रत्न संयुताः ॥

शब्दार्थ—

स्वच्छ	१. स्वच्छ	रत्नदीपाः	९. रत्नों के दीपक
स्फटिक	२. स्फटिक मणि	भ्राजमानाः	१०. जगमगा रहे थे
कुड्येषु	५. दीवारों पर	ललना	७. स्त्रीमूर्तियों से
महामरकतेषु	४. महामारकतमणि (पन्ने की)	रत्न	६. रत्ननिर्मित
च ।	३. तथा	संयुताः ॥	८. युक्त

श्लोकार्थ— स्वच्छ स्फटिक मणि तथा महामरकतमणि (पन्ने) की दीवारों पर रत्ननिर्मित स्त्रीमूर्तियों से युक्त रत्नों के दीपक जगमगा रहे थे ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

विलोक्य ब्राह्मणस्तत्र समृद्धीः सर्वसम्पदाम् ।
तर्कयामास निर्व्यग्रः स्वसमृद्धिमहैतुकीम् ॥३२॥

पदच्छेद— विलोक्य ब्राह्मणः तत्र समृद्धीः सर्व सम्पदाम् ।
तर्कयामास निर्व्यग्रः स्व समृद्धिम् अहैतुकीम् ॥

शब्दार्थ—

विलोक्य	५. देखकर	तर्कयामास	११. विचार करने लगे
ब्राह्मण	६. ब्राह्मण देवता	निर्व्यग्रः	७. व्यग्रता से रहित
तत्र	१. वहाँ	स्व	८. अपनी
समृद्धीः	४. समृद्धियों को	समृद्धीः	१०. सम्पत्तियों के बारे में
सर्व	२. समस्त	अहैतुकीम् ॥	९. अकारण
सम्पदाम् ।	३. सम्पत्तियों की		

श्लोकार्थ— वहाँ समस्त सम्पत्तियों की समृद्धियों को देखकर ब्राह्मण देवता व्यग्रता से रहित होकर अपनी अकारण प्राप्त सम्पत्ति के बारे में विचार करने लगे ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

नूनं बतैतन्मम दुर्भगस्य शश्वद्दरिद्रस्य समृद्धिहेतुः ।
महाविभूतेरवलोकतोऽन्यो नैवोपपद्येत यदूत्तमस्य ॥३३॥

पदच्छेद— नूनं बत एतत् मम दुर्भगस्य शश्वत् दरिद्रस्य समृद्धिहेतुः ।
महाविभूतेः अवलोकतः अन्यः न एव उपपद्येत यदु उत्तमस्य ॥

शब्दार्थ—

नूनम्	७. निश्चित ही	महाविभूतेः	८. परम ऐश्वर्यशाली
बत	१. अहो	अवलोकतः	१२. कृपा दृष्टि के
एतत् मम	५. मेरी इस	अन्यः न एव	१३. अलावा कुछ नहीं
दुर्भगस्य	२. भाग्यहीन तथा	उपपद्येत	१४. हो सकता है
शश्वत्	३. सदा से	यदु	९. यदुवंशियों में
दरिद्रस्य	४. दरिद्र	उत्तम	१०. श्रेष्ठ
समृद्धि हेतुः ।	६. समृद्धि का कारण	अस्य ॥	११. उन श्रीकृष्ण की

श्लोकार्थ—अहो भाग्यहीन तथा सदा से दरिद्र मेरी इस समृद्धि का कारण निश्चित ही परम ऐश्वर्यशाली यदुवंशियों में श्रेष्ठ उन श्रीकृष्ण की कृपादृष्टि के अलावा और कुछ नहीं हो सकता है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

नन्वब्रुवाणो दिशते समक्षं याचिष्णवे भूर्यपि भूरिभोजः ।
पर्जन्यवत्तत् स्वयमीक्षमाणो दाशार्हकाणामृषभः सखा मे ॥३४॥

पदच्छेद— ननु अब्रुवाणः दिशते समक्षं याचिष्णवे भूरि अपि भूरिभोजः ।
पर्जन्यवत् तत् स्वयम् ईक्षमाणः दाशार्हकाणाम् ऋषभः सखा मे ॥

शब्दार्थ—

ननु	६. निश्चित ही	पर्जन्यवत्	१४. बादल के समान (देते हैं)
अब्रुवाणः	७. कुछ नहीं कहते	तत् स्वयम्	१२. उसे स्वयं
दिशते	३. भक्त को	ईक्षमाणः	१३. देखते हुये
समक्षम्	५. सामने	दाशार्हकाणाम्	८. यदुवंशियों में
याचिष्णवे	२. श्रीकृष्ण याचक	ऋषभः	९. श्रेष्ठ
भूरि अपि	४. बहुत देने पर भी	सखा	११. मित्र श्रीकृष्ण
भूरिभोजः ।	१. अनन्त भोगों से युक्त	मे ॥	१०. मेरे

श्लोकार्थ—अनन्त भोगों से युक्त श्रीकृष्ण याचक भक्त को बहुत देने पर भी सामने निश्चित ही कुछ नहीं कहते । यदुवंशियों में श्रेष्ठ मेरे मित्र श्रीकृष्ण उसे स्वयम् देखते हुये बादल के समान देते हैं ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

किञ्चित्करोत्युर्वपि यत् स्वदत्तं सुहृत्कृतं फल्ग्वपि भूरिकारी ।
मयोपनीतां पृथुकैकमुष्टिं प्रत्यग्रहीत् प्रीतियुतो महात्मा ॥३५॥

पदच्छेद— किञ्चित् करोति उरु अपि यत् स्वदत्तम् सुहृत्कृतम् फल्गु अपि भूरिकारी ।
मया उपनीताम् पृथुक एक मुष्टिम् प्रति अग्रहीत् प्रीतियुतः महात्मा ॥

शब्दार्थ—

किञ्चित्	४.	जैसे श्रीकृष्ण थोड़ा ही	मया	९.	मेरे द्वारा
करोति	५.	मानते हैं (और)	उपनीताम्	१०.	भेंट किये हुये
उरुअपि	३.	बहुत भी रहता है	पृथुक	१२.	चिउड़े को
यत्	१.	जो	एकमुष्टिम्	११.	एक मुट्ठी
स्वदत्तम्	२.	अपना दिया हुआ	प्रतिअग्रहीत्	१६.	स्वीकार किया
सुहृत्कृतम्	६.	मित्र के दिये हुये	प्रीति	१४.	प्रेम से
फल्गु अपि	७.	थोड़े को भी	युक्तः	१५.	युक्त होकर
भूरिकारी ।	८.	बहुत मानते हैं	महात्मा ॥	१३.	महात्मा श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—जो अपना दिया हुआ बहुत भी रहता है, उसे श्रीकृष्ण थोड़ा ही मानते हैं और मित्र के दिये हुये थोड़े को भी बहुत मानते हैं। मेरे द्वारा भेंट किये हुये एक मुट्ठी चिउड़े को महात्मा श्रीकृष्ण ने प्रेम से युक्त होकर स्वीकार किया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तस्यैव मे सौहृदसख्यमैत्री दास्यं पुनर्जन्मनि जन्मनि स्यात् ।
महानुभावेन गुणालयेन विषज्जतस्तत्पुरुषप्रसङ्गः ॥३६॥

पदच्छेद— तस्य एव मे सौहृद सख्य मैत्री दास्यम् पुनः जन्मनि जन्मनि स्यात् ।
महानुभावेन गुणालयेन विषज्जतः तत् पुरुष प्रसङ्गः ॥

शब्दार्थ—

तस्य एव	४.	उन्हीं का	जन्मनि	३.	जनम
मे	१.	मुझे	स्यात् ।	९.	प्राप्त हो
सौहृद	५.	स्नेह	महानुभावेन	११.	महानुभाव भगवान् में
सख्य	६.	हितैषिता	गुणालयेन	१०.	गुणों के निवास-स्थान
मैत्री	७.	मित्रता और	विषज्जतः	१२.	आसक्त होते हुये भी
दास्यम्	८	सेवा	तत्पुरुष	१३.	उनके भक्त पुरुषों का
पुनः जन्मनि	२	जनम	प्रसङ्गः ॥	१४.	सत्संग प्राप्त हो

श्लोकार्थ—मुझे जनम-जनम उन्हीं का स्नेह, हितैषिता, मित्रता और सेवा प्राप्त हो। गुणों के निवास स्थान महानुभाव भगवान् में आसक्त होते हुये मुझे भी उनके भक्त पुरुषों का सत्संग प्राप्त हो ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

भक्ताय चित्रा भगवान् हि सम्पदो राज्यं विभूतीर्न समर्थयत्यजः।
अदीर्घबोधाय विचक्षणः स्वयं पश्यन् निपातं धनिनां मदोद्भवम् ॥३७॥

पदच्छेद— भक्ताय चित्राः भगवान् हि सम्पदः राज्यम् विभूतीः न समर्थयति अजः।
अदीर्घ बोधाय विचक्षणः स्वयम् पश्यन् निपातम् धनिनाम् मदउद्भवम् ॥

शब्दार्थ—

भक्ताय चित्राः	१०.	भक्त को अनेक प्रकार की	अदीर्घ	८.	अदूर
भगवान्	७.	भगवान् श्रीकृष्ण	बोधाय	९.	दर्शी
हि	१३.	निश्चय ही	विचक्षणः	६.	विद्वान्
सम्पदः	११.	सम्पत्तियाँ	स्वयम्पश्यन्	४.	स्वयम् देखते हुये
राज्यम्विभूतीः	१२.	राज्य और ऐश्वर्य देने का	निपातम्	३.	पतन
न समर्थयति	१४.	समर्थन नहीं करते	धनिनाम्	१.	धनियों का
अजः।	५.	अजन्मा	मदउद्भवम् ॥	२.	धन मद से उत्पन्न

श्लोकार्थ—धनियों का धन मद से उत्पन्न पतन स्वयम् देखते हुये अजन्मा विद्वान् भगवान् श्रीकृष्ण अदूरदर्शी भक्त को अनेक प्रकार की सम्पत्तियाँ, राज्य और ऐश्वर्य देने का निश्चय ही समर्थन नहीं करते हैं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

इत्थं व्यवसितो बुद्ध्या भक्तोऽतीव जनार्दने।
विषयाञ्जायया त्यक्ष्यन् बुभुजे नातिलम्पटः ॥३८॥

पदच्छेद— इत्थम् व्यवसितः बुद्ध्या भक्तः अतीव जनार्दने।
विषयान् जायया त्यक्ष्यन् बुभुजे न अतिलम्पटः ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	इस प्रकार	विषयान्	११.	विषयों का
व्यवसितः	३.	निश्चय करके	जायया	९.	पत्नी के साथ
बुद्ध्या	२.	बुद्धि से	त्यक्ष्यन्	१०.	अनासक्त भाव से
भक्तः	६.	भक्त श्रीदामा	बुभुजे	१२.	भोग करने लगे
अतीव	५.	अत्यन्त	न	८.	न होकर
जनार्दने।	४.	भगवान् के	अतिलम्पटः ॥	७.	अत्यन्त लम्पट

श्लोकार्थ—इस प्रकार बुद्धि से निश्चय करके भगवान् के अत्यन्त भक्त श्रीदामा अत्यन्त लम्पट न होकर पत्नी के साथ अनासक्त भाव से विषयों का भोग करने लगे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तस्य वै देवदेवस्य हरेर्यज्ञपतेः प्रभोः ।
ब्राह्मणाः प्रभवो दैवं न तेभ्यो विद्यते परम् ॥३९॥

पदच्छेद— तस्य वै देवदेवस्य हरेः यज्ञपतेः प्रभोः ।
ब्राह्मणाः प्रभवः दैवम् न तेभ्यः विद्यते परम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य वै	५. उन	ब्राह्मणाः	१. ब्राह्मण
देवदेवस्य	२. देवताओं के देव	प्रभवः	८. पूज्य हैं (अतएव)
हरेः	७. श्रीकृष्ण	दैवम्	११. कोइ देवता नहीं
यज्ञ	३. यज्ञ के	तेभ्यः	९. ब्राह्मणों से
पतेः	४. स्वामी	विद्यते	१२. है
प्रभोः ।	६. भगवान्	परम् ॥	१०. श्रेष्ठ

श्लोकार्थ—ब्राह्मण देवताओं के देव, यज्ञ के स्वामी उन भगवान् श्रीकृष्ण के पूज्य हैं। अतएव ब्राह्मणों से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं है।

चत्वारिंशः श्लोकः

एवं स विप्रो भगवत्सुहृत्तदा दृष्ट्वा स्वभृत्यैरजितं पराजितम् ॥
तद्ध्यानवेगोद्ग्रथितात्मबन्धनस्तद्धाम लेभेऽचिरतः सतां गतिम् ॥४०॥

पदच्छेद— एवम् सः विप्रः भगवत् सुहृत् तदा दृष्ट्वा स्वभृत्यैः अजितम् पराजितम् ।
तत् ध्यानवेग उद्ग्रथित आत्मबन्धनः तत्धाम लेभे अचिरतः सताम् गतिम् ॥

शब्दार्थ —

एवम्	१. इस प्रकार	पराजितम्	७. पराजित (और)
सः विप्रः	४. उस ब्राह्मण ने	तत्ध्यानवेग	१०. उनके ध्यान के वेग से
भगवत्	२. भगवान् के	उद्ग्रथित	११. कटी हुई
सुहृत्	३. सखा	आत्मबन्धनः	१२. अविद्या की गांठ काटकर
तदा	५. उस समय	तत्धाम लेभे	१६. उनका धाम प्राप्त किया
दृष्ट्वा	९. देखकर	अचरितः	१३. शीघ्र ही
स्वभृत्यैः	६. अपने सेवकों द्वारा	सताम्	१४. सज्जनों का
अजितम् ।	८. अजित श्रीकृष्ण को	गतिम् ॥	१५. एकमात्र आश्रय

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् के सखा उस ब्राह्मण ने उस समय अपने सेवकों द्वारा पराजित अजित श्रीकृष्ण को देखकर उनके ध्यान के वेग से कटी हुई अविद्या की गांठ काटकर शीघ्र ही सज्जनों का एकमात्र आश्रय उनका धाम प्राप्त किया।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

एतद् ब्रह्मण्यदेवस्य श्रुत्वा ब्रह्मण्यतां नरः ।
लब्धभावो भगवति कर्मबन्धाद् विमुच्यते ॥४१॥

पदच्छेद— एतत् ब्रह्मण्य देवस्य श्रुत्वा ब्रह्मण्यताम् नरः ।
लब्ध भावः भगवति कर्मबन्धात् विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

एतत्	३.	इस	लब्ध	९.	प्राप्त करके
ब्रह्मण्य	१.	ब्राह्मणभक्त	भावः	८.	प्रेम भाव
देवस्य	२.	भगवान् की	भगवति	७.	भगवान् में
श्रुत्वा	५.	सुनकर	कर्म	१०.	कर्मों के
ब्रह्मण्यताम्	४.	ब्राह्मण भक्ति को	बन्धात्	११.	बन्धन से
नरः ।	६.	मनुष्य	विमुच्यते ॥	१२.	मुक्त हो जाता है

श्लोकार्थ--ब्रह्मणभक्त भगवान् की इस ब्राह्मण-मक्ति को सुनकर मनुष्य भगवान् में प्रेमभाव प्रप्त करके कर्मों के बन्धन से मुक्त हो जाता है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे पृथुकोपाख्यानं
नाम एकोनाशीतितमः अध्यायः ॥८१॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

द्व्यशीतितमः अध्याय

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अथैकदा द्वारवत्यां वसतो रामकृष्णयोः।
सूर्योपरागः सुमहानासीत् कल्पक्षये यथा ॥१॥

पदच्छेद— अथ एकदा द्वारवत्याम् वसतोः राम कृष्णयोः।
सूर्य उपरागः सुमहान् आसीत् कल्पक्षये यथा ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	तथा	सूर्य	८.	सूर्य
एकदा	६.	एक दिन	उपरागः	९.	ग्रहण
द्वारवत्याम्	२.	द्वारकापुरी में	सुमहान्	७.	सर्वग्रास
वसतोः	३.	निवास करते हुये	आसीत्	१०.	लगा
राम	४	बलराम और	कल्पक्षये	१२.	प्रलय के समय लगता है
कृष्णयोः।	५	श्रीकृष्ण के	यथा ॥	११.	जैसा कि

श्लोकार्थ—तथा द्वारकापुरी में निवास करते हुये बलराम और श्रीकृष्ण के, एक दिन सर्वग्रास सूर्य ग्रहण लगा, जैसा कि प्रलय के समय लगता है ॥

द्वितीयः श्लोकः

तं ज्ञात्वा मनुजा राजन् पुरस्तादेव सर्वतः।
समन्तपञ्चकं क्षेत्रं ययुः श्रेयोविधित्सया ॥२॥

पदच्छेद — तम् ज्ञात्वा मनुजाः राजन् पुरस्तादेव सर्वतः।
समन्तपञ्चकम् क्षेत्रम् ययुः श्रेयः विधित्सया ॥

शब्दार्थ—

तम्	२.	उसे	समन्तपञ्चकम्	६.	समन्तपञ्चक
ज्ञात्वा	४.	जानकर	क्षेत्रम्	७.	तीर्थ (कुरुक्षेत्र में)
मनुजाः	५.	मनुष्य	ययुः	११.	जाने लगे
राजन्	१.	हे राजन्!	श्रेयः	८.	कल्याणकारी
पुरस्तादेव	३.	पहले से ही	विधित्सया ॥	९.	पुण्य करने की इच्छा से
सर्वतः।	१०.	सब ओर से			

श्लोकार्थ—हे राजन्! उसे पहले से ही जानकर मनुष्य समन्तपञ्चक तीर्थ कुरुक्षेत्र में कल्याणकारी पुण्य करने की इच्छा से सब ओर से जाने लगे ॥

तृतीयः श्लोकः

निः क्षत्रियां महीं कुर्वन् रामः शस्त्रभृतां वरः ।

नृपाणां रुधिरौघेण यत्र चक्रे महाह्रदान् ॥३॥

पदच्छेद— निः क्षत्रियाम् महीं कुर्वन् रामः शस्त्रभृताम् वरः ।
नृपाणाम् रुधिर ओघेण यत्र चक्रे महाह्लदान् ॥

शब्दार्थ—

निःक्षत्रियाम्	६.	क्षत्रिय रहित	नृपाणाम्	८.	राजाओं के
महीम्	५.	पृथ्वी को	रुधिर	९.	रक्त
कुर्वन्	७.	करते हुये	ओघेण	१०.	समूह से
रामः	४.	परशुराम ने	यत्र	१.	जहाँ
शस्त्रभृताम्	२.	शस्त्रधारियों में	चक्रे	१२.	बना दिये थे
वरः ।	३.	श्रेष्ठ	महाह्लदान् ॥	११.	पाँच बड़े-बड़े कुण्ड

श्लोकार्थ—जहाँ पर शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ परशुराम ने पृथ्वी को क्षत्रिय रहित करते हुये राजाओं के रक्त-समूह से पाँच बड़े-बड़े कुण्ड बना दिये थे ।।

चतुर्थः श्लोकः

ईजे च भगवान् रामो यत्रास्पृष्टोऽपि कर्मणा ।

लोकस्य ग्राहयन्नीशो यथान्योऽघापनुत्तये ॥४॥

पदच्छेद— ईजे च भगवान् रामः यत्र अस्पृष्टः अपि कर्मणा ।
लोकस्य ग्राहयन् ईशः यथा अन्यः अघ अपनुत्तये ॥

शब्दार्थ—

ईजे च	१०.	यज्ञ किया था	लोकस्य	८.	लोगों को
भगवान्	३.	भगवान्	ग्राहयन्	९.	शिक्षा देने के लिए
रामः	४.	परशुराम ने	ईशः	२.	सर्व समर्थ
यत्र	१.	जहाँ पर	यथा	११.	जैसे
अस्पृष्टः	६.	सम्बन्ध न होने पर	अन्यः	१२.	दूसरा कोई
अपि	७.	भी	अघ	१३.	पाप की
कर्मणा ।	५.	कर्म का	अपनुत्तये ॥	१४.	निवृत्ति के लिये (प्रायश्चित्त करे)

श्लोकार्थ—जहाँ पर सर्व समर्थ भगवान् ने कर्म का सम्बन्ध न होने पर भी लोगों को शिक्षा देने के लिये यज्ञ किया था । जैसे दूसरा कोई पाप की निवृत्ति के लिये प्रायश्चित्त करे ।।

पञ्चमः श्लोकः

महत्यां तीर्थयात्रायां तत्रागन् भारतीः प्रजाः ।
वृष्णयश्च तथाक्रूरवसुदेवाहुकादयः ॥५॥

पदच्छेद— महत्याम् तीर्थ यात्रायाम् तत्र आगन् भारतीः प्रजाः ।
वृष्णयः च तथा अक्रूर वसुदेव आहुक आदयः ॥

शब्दार्थ—

महत्याम्	२. महान्	वृष्णयः	९. वृष्णिवंशी
तीर्थ	३. तीर्थ	च	८. और
यात्रायाम्	४. यात्रा में	तथा	११. तथा
तत्र	१. वहाँ पर (उस)	अक्रूर	१०. अक्रूर
आगन	७. आयी थीं	वसुदेव	१२. वसुदेव
भारतीः	५. भारतवर्ष की	आहुक	१३. उग्रसेन
प्रजाः ।	६. जनता भी	आदयः ॥	१४. आदि भी आये थे

श्लोकार्थ—वहाँ पर महान् तीर्थ में भारवर्ष की जनता भी आयी थी । और वृष्णिवंशो अक्रूर तथा वसुदेव, उग्रसेन आदि भो आये थे ॥

षष्ठः श्लोकः

ययुर्भारत तत् क्षेत्रं स्वमघं क्षपयिष्णवः ।
गदप्रद्युम्नसाम्बाद्याः सुचन्द्रशुकसारणैः ॥६॥

पदच्छेद— ययुः भारत तत् क्षेत्रम् स्वम् अघम् क्षपयिष्णवः ।
गद प्रद्युम्न साम्ब आद्याः सुचन्द्र शुक सारणैः ॥

शब्दार्थ—

ययुः	१४. आये थे	गद	५. गद
भारत	१. हे परीक्षित् !	प्रद्युम्न	६. प्रद्युम्न
तत्	१२. उस	साम्ब	७. साम्ब
क्षेत्रम्	१३. क्षेत्र में	आद्याः	८. आदि
स्वम्	२. अपने	सुचन्द्र	९. सुचन्द्र
अघम्	३. पाप को	शुक	१०. शुक
क्षपयिष्णवः ।	४. नष्ट करने के लिए	सारणैः ॥	११. सारण के साथ

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! अपने पाप को नष्ट करने के लिये गद, प्रद्युम्न, साम्ब आदि सुचन्द्र शुक, सारण के साथ उस क्षेत्र में आये थे ॥

सप्तमः श्लोकः

आस्तेऽनिरुद्धो रक्षायां कृतवर्मा च यूथपः ।
ते रथैर्देवधिष्ण्याभैर्हयैश्च तरलप्लवैः ॥७॥

पदच्छेद— आस्ते अनिरुद्धः रक्षायाम् कृतवर्मा च यूथपः ।
ते रथैः देवधिष्ण्य आभैः हयैः च तरलप्लवैः ॥

शब्दार्थ—

आस्ते	६. रह गये थे	ते	७. वे तीर्थयात्री
अनिरुद्ध	१. अनिरुद्ध	रथैः	१०. रथों
रक्षायाम्	५. पुरी की रक्षा के लिये	देवधिष्ण्य	८. देवताओं के विमान के समान
कृतवर्मा	४. कृतवर्मा	आभैः	९. चमकने वाले
च	२. और	हयैः	१२. घोड़ों से (शोभायमान थे)
यूथपः ।	३. सेनापति	च तरलप्लवैः ॥	११. और तरंग के समान गति वाले

श्लोकार्थ—अनिरुद्ध और सेनापति कृतवर्मा पुरी की रक्षा के लिये रह गये थे । वे तीर्थयात्री देवताओं के विमान के समान चमकने वाले रथों और तरंग के समान गति वाले घोड़ों से शोभायमान थे ॥

अष्टमः श्लोकः

गजैर्नदद्भिरभ्राभैर्नृभिर्विद्याधरद्युभिः ।
व्यरोचन्त महातेजाः पथि काञ्चनमालिनः ॥८॥

पदच्छेद— गजैः नदद्भिः अभ्राभैः नृभिः विद्याधर द्युभिः ।
व्यरोचन्त महातेजाः पथि काञ्चन मालिनः ॥

शब्दार्थ—

गजैः	३. हाथियों तथा	व्यरोचन्त	११. शोभित हो रहे थे
नदद्भिः	२. गर्जना करते हुये	महातेजाः	७. परम तेजस्वी (यदुवंशी)
अभ्राभैः	१. बादलों के समान	पथि	८. मार्ग में
नृभिः	६. मनुष्यों और	काञ्चन	९. सोने की
विद्याधर	४. विद्याधरों के समान	मालिनः ।	१०. माला पहने हुये
द्युभिः ।	५. कान्ति वाले		

श्लोकार्थ—बादलों के समान गर्जना करते हुये हाथियों तथा विद्याधरों के समान कान्ति वाले मनुष्यों से परम तेजस्वी यदुवंशी मार्ग में सोने की माला पहने हुये शोभित हो रहे थे ॥

नवमः श्लोकः

दिव्यस्रग्वस्त्रसन्नाहाः कलत्रैः खेचरा इव ।
तत्र स्नात्वा महाभागा उपोष्य सुसमाहिताः ॥९॥

पदच्छेद— दिव्यस्रक् वस्त्रसन्नाहाः कलत्रैः खेचराः इव ।
तत्र स्नात्वा महाभागाः उपोष्य सुसमाहिताः ॥

शब्दार्थ—

दिव्य	१.	दिव्य	इव ।	७.	समान (शोभित)
स्रक्	२.	पुष्पों के हार	तत्र	९.	वहाँ पर
वस्त्र	३.	वस्त्र और	स्नात्वा	११.	स्नान करके
सन्नाहाः	४.	कवचों से सुसज्जित	महाभागाः	८.	महान् भाग्यशाली यदुवंशियों ने
कलत्रैः	५.	पत्नियों के साथ	उपोष्य	१२.	उपवास किया
खेचराः	६.	देवताओं के	सुसमाहिताः ॥	१०.	एकाग्रचित्त होकर

श्लोकार्थ—दिव्य पुष्पों के हार, वस्त्र और कवचों से सुसज्जित, पत्नियों के साथ देवताओं के समान शोभित महाभाग्यशाली यदुवंशियों ने वहाँ पर एकाग्रचित्त होकर स्नान करके उपवास किया ॥

दशमः श्लोकः

ब्राह्मणेभ्यो ददुर्धेनूर्वासः स्रग्रुक्ममालिनीः ।
रामह्रदेषु विधिवत् पुनराप्लुत्य वृष्णयः ॥१०॥

पदच्छेद— ब्राह्मणेभ्यः ददुः धेनूः वासः स्रक् रुक्ममालिनीः ।
रामह्रदेषु विधिवत् पुनः आप्लुत्य वृष्णयः ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणेभ्यः	२.	ब्राह्मणों को	राम	९.	परशुराम के बनाये
ददुः	७.	दीं	ह्रदेषु	१०.	कुण्डों में
धेनूः	६.	गोएँ	विधिवत्	११.	विधि पूर्वक
वासः	३.	वस्त्र	पुनः	८.	फिर ग्रहण के बाद
स्रक्	४.	पुष्पमाला तथा	आप्लुत्य	१२.	स्नान किया
रुक्ममालिनीः ।	५.	सोने के हारों सहित	वृष्णयः ॥	१.	यदुवंशियों ने

श्लोकार्थ—यदुवंशियों ने ब्राह्मणों को वस्त्र, पुष्प माला तथा सोने के हारों सहित गोवें दीं । फिर ग्रहण के बाद परशुराम के बनाये कुण्डों में विधि पूर्वक स्नान किया ।

एकादशः श्लोकः

ददुः स्वन्नं द्विजाग्र्येभ्यः कृष्णे नो भक्तिरस्त्विति ।
स्वयं च तदनुज्ञाता वृष्णयः कृष्णदेवताः ॥११॥

पदच्छेद— ददुः स्वन्नम् द्विज अग्र्येभ्यः कृष्णे नः भक्तिः अस्तु इति ।
स्वयम् च तत् अनुज्ञाताः वृष्णयः कृष्ण देवताः ॥

शब्दार्थ—

ददुः	४. कराया (और)	स्वयम्	१३. स्वयं भोजन किया
स्वन्नम्	३. उत्तम भोजन	च तत्	११. उन ब्राह्मणों से
द्विज	२. ब्राह्मणों को	अनुज्ञाताः	१२. अनुमति लेकर
अग्र्येभ्यः	१. श्रेष्ठ	वृष्णयः	१०. यदुवंशियों ने
कृष्णे	५. श्रीकृष्ण में	कृष्ण	८. श्रीकृष्ण को
नः भक्तिः	६. हमारी भक्ति	देवताः ॥	९. देवता मानने वाले
अस्तु इति ।	७. हो (ऐसी कामना की)		

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ ब्राह्मणों को उत्तम भोजन कराया और श्रीकृष्ण में हमारी भक्ति हो ऐसी कामना की। श्रीकृष्ण को ही देवता मानने वाले यदुवंशियों ने उन ब्राह्मणों से अनुमति लेकर स्वयम् भोजन किया ॥

द्वादशः श्लोकः

भुक्त्वोपविविशुः कामं स्निग्धच्छायाङ्घ्रिपाङ्घ्रिषु ।
तत्रागतांस्ते ददृशुः सुहृत्सम्बन्धिनो नृपान् ॥१२॥

पदच्छेद— भुक्त्वा उपविविशुः कामम् स्निग्ध छाया अङ्घ्रिप अंघ्रिषु ।
तत्र आगतान् ते ददृशुः सुहृत् सम्बन्धिनः नृपान् ॥

शब्दार्थ—

भुक्त्वा	१. भोजन करके	तत्र	९. वहाँ पर
उपविविशुः	७. विश्राम किया	आगतान्	१०. आये हुये
कामम्	६. इच्छा के अनुसार	ते	८. फिर वे
स्निग्ध	२. घनी एवम् ठंडी	ददृशुः	१४. मिलने और भेंटने लगे
छाया	३. छाया वाले	सुहृत्	११. मित्रों और
अंघ्रिप	४. वृक्षों के	सम्बन्धिनः	१२. सम्बन्धि
अंघ्रिषु ।	५. नीचे	नृपान् ॥	१३. राजाओं से

श्लोकार्थ—उन्होंने भोजन करके घनी एवम् ठंडी छाया वाले वृक्षों के नीचे इच्छा के अनुसार विश्राम किया। फिर वे वहाँ पर आये हुये मित्रों और सम्बन्धि राजाओं से मिलने और भेंटने लगे ॥

त्रयोदशः श्लोकः

मत्स्योशीनरकौसल्यविदर्भकुरुसृञ्जयान् ।

काम्बोजकैकयान् मद्रान् कुन्तीनानर्तकेरलान् ॥१३॥

पदच्छेद— मत्स्य उशीनर कौसल्य विदर्भ कुरु सृञ्जयान् ।
काम्बोज कैकयान् मद्रान् कुन्तीन् आनर्त केरलान् ॥

शब्दार्थ—

मत्स्य	१.	मत्स्य	काम्बोज	७.	कम्बोज
उशीनर	२.	उशीनर	कैकयान्	८.	कैकय
कौसल्य	३.	कोसल	मद्रान्	९.	मद्र
विदर्भ	४.	विदर्भ	कुन्तीन्	१०.	कुन्ति
कुरु	५.	कुरु	आनर्त	११.	आनर्त और
सृञ्जयान् ।	६.	सृञ्जय	केरलान् ॥	१२.	केरल देश के राजा आये थे

श्लोकार्थ—वहाँ पर मत्स्य, उशीनर, कोसल, विदर्भ, कुरु, सृञ्जय, कम्बोज, कैकय, मद्र, कुन्ति, आनर्त और केरल देश के राजा आये थे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

अन्यांश्चैवात्मपक्षीयान् परांश्च शतशो नृप ।

नन्दादीन् सुहृदो गोपान् गोपीश्चोत्कण्ठिताश्चिरम् ॥१४॥

पदच्छेद— अन्यान् च एव आत्म पक्षीयान् परान् च शतशः नृप ।
नन्द आदीन् सुहृदः गोपान् गोपीः च उत्कण्ठिताः चिरम् ॥

शब्दार्थ—

अन्यान्	२.	दूसरे देशों के	नन्द	८.	नन्द
च एव आत्म	३.	और अपने	आदीन्	९.	आदि
पक्षीयान्	४.	पक्ष में	सुहृदः	७.	हितैषी
परान् च	५.	तथा शत्रुपक्ष के	गोपान्	१०.	गोप
शतशः	६.	सैकड़ों नरपति आये थे	गोपीः	१३.	गोपियाँ भी आयीं थीं
नृप ।	१.	हे परीक्षित् !	च उत्कण्ठित	१२.	और उत्कण्ठित
			चिरम् ॥	११.	चिरकाल से

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! दूसरे देशों के और अपने पक्ष के तथा शत्रु पक्ष के सैकड़ों नरपति आये थे । हितैषी नन्द आदि गोप और चिरकाल से उत्कण्ठित गोपियां भी आयी थीं ॥

पञ्चदशः श्लोकः

अन्योन्यसन्दर्शनहर्षरंहसा प्रोत्फुल्लहृद्वक्त्रसरोरुहश्रियः ।
आश्लिष्य गाढं नयनैः स्रवज्जला हृष्यत्त्वचो रुद्धगिरो ययुर्मुदम् ॥१५॥

पदच्छेद— अन्योन्य सन्दर्शन हर्षरंहसा प्रोत्फुल्ल हृद्वक्त्र सरोरुह श्रियः ।
आश्लिष्य गाढ़म् नयनैः स्रवन् जलाः हृष्यत् त्वचः रुद्धगिरः ययुः मुदम् ॥

शब्दार्थ—

अन्योन्य	१.	एक दूसरे के	आश्लिष्य	९.	आलिंगन करके
सन्दर्शन	२.	दर्शन से उत्पन्न	गाढम्	८.	(एक दूसरे का) गाढ़
हर्षरंहसा	३.	हर्ष के वेग से	नयनैः	१०.	नेत्रों से
प्रोत्फुल्ल	४.	खिले हुये	स्रवन् जलाः	११.	आँसू बहाते हुये
हृद्वक्त्र	५.	हृदय मुखरूपी	हृष्यत् त्वचः	१२.	रोमाञ्चित तथा
सरोरुह	६.	कमल की	रुद्धगिरः	१३.	अवरुद्ध वाणी से
श्रियः	७	शोभा वाले वे लोग	ययुः मुदम् ॥	१४.	हर्ष को प्राप्त हुये

श्लोकार्थ—एक दूसरे के दर्शन से उत्पन्न हर्ष के वेग से खिले हुये हृदय-मुखरूपी कमल की शोभा वाले वे लोग एक दूसरे का गाढ़ आलिंगन करके नेत्रों से आँसू बहाते हुये रोमाञ्चित तथा अवरुद्ध वाणी से हर्ष को प्राप्त हुये ॥

षोडशः श्लोकः

स्त्रियश्च संवीक्ष्य मिथोऽतिसौहृदस्मितामलापाङ्गदृशोऽभिरेभिरे ।
स्तनैः स्तनान् कुङ्कुमपङ्करूषितान्निहत्य दोर्भिः प्रणयाश्रुलोचनाः ॥१६॥

पदच्छेद— स्त्रियः च संवीक्ष्य मिथः अति सौहृद स्मित अमल अपाङ्ग दृशः अभिरेभिरे ।
स्तनैः स्तनान् कुङ्कुमपङ्करूषितान् निहत्य दोर्भिः प्रणय अश्रुलोचनाः ॥

शब्दार्थ—

स्त्रियः च	१.	स्त्रियाँ भी	स्तनैःस्तनान्	११.	स्तनों को स्तनों से
संवीक्ष्य	३.	देखकर	कुङ्कुमपङ्क	९.	केसर से
मिथः	२.	परस्पर	रूषितान्	१०.	लगे हुये
अति सौहृद	४.	अत्यन्त मित्रभाव से	निहत्य	१२.	दबाते हुये
स्मित अमल	५	मुसकराकर पवित्र	दोर्भिः	८.	भुजाओं में भरकर
अपाङ्ग दृशः	६.	चितवन डालती हुई	प्रणय	१३.	प्रेम के
अभिरेभिरे ।	७.	भेंट-अंकवार भरने लगीं	अश्रुलोचनाः ॥	१४.	नेत्रों से आँसू बहाने लगीं

श्लोकार्थ—स्त्रियां भी परस्पर देखकर अत्यन्त मित्र भाव से मुसकराकर पवित्र चितवन डालती हुई भेंट-अँकवार भरने लगीं तथा भुजाओं में भरकर केसर लगे हुये स्तनों को स्तनों से दबाते हुये नेत्रों से प्रेम के आँसू बहाने लगीं ।

सप्तदशः श्लोकः

ततोऽभिवाद्य ते वृद्धान् यविष्ठैरभिवादिताः ।
स्वागतं कुशलं पृष्ट्वा चक्रुः कृष्णकथा मिथः ॥१७॥

पदच्छेद— ततः अभिवाद्य ते वृद्धान् यविष्ठैः अभिवादिता ।
स्वागतम् कुशलम् पृष्ट्वा चक्रुः कृष्णकथाः मिथः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. तदनन्तर	स्वागतम्	७. स्वागत के बाद
अभिवाद्य	४. प्रणाम किया	कुशलम्	८. एक दूसरे की कुशल
ते	२. उन लोगों ने	पृष्ट्वा	९. पूछकर
वृद्धान्	३. वृद्धों को	चक्रुः	१२. कहने लगे
यविष्ठैः	५. और उन्हें छोटों ने	कृष्णकथाः	११. श्रीकृष्ण की कथायें
अभिवादिताः ।	६. प्रणाम किया	मिथः ॥	१०. परस्पर

श्लोकार्थ—तदनन्तर उन लोगों ने वृद्धों को प्रणाम किया और उन्हें छोटों ने प्रणाम किया । स्वागत के बाद एक दूसरे की कुशल पूछकर परस्पर श्रीकृष्ण की कथायें कहने लगे ।

अष्टादशः श्लोकः

पृथा भ्रातॄन् स्वसॄर्वीक्ष्य तत्पुत्रान् पितरावपि ।
भ्रातृपत्नीर्मुकुन्दं च जहौ संकथया शुचः ॥१८॥

पदच्छेद— पृथा भ्रातॄन् स्वसॄः वीक्ष्य तत् पुत्रान् पितरौ अपि ।
भ्रातृ पत्नीः मुकुन्दम् च जहौ संकथया शुचः ॥

शब्दार्थ—

पृथा	१. कुन्ती	भ्रातृपत्नीः	६. भाभियों
भ्रातॄन्	२. भाइयों	मकुन्दम्	८. श्रीकृष्ण को
स्वसॄः	३. बहनों	च	७. और
वीक्ष्य	९. देखकर (तथा)	जहौ	१२. भूल गईं
तत्पुत्रान्	४. उनके पुत्रों	संकथया	१० उनसे बात चीत करके
पितरौअपि ।	५ माता-पिता	शुचः ॥	११. अपने कष्टों को

श्लोकार्थ—कुन्ती भाइयों, बहनों, उनके पुत्रों, माता-पिता, भाभियों और श्रीकृष्ण को देखकर तथा उनसे बात-चीत करके अपने कष्टों को भूल गईं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

कुन्त्युवाच— आर्य भ्रातरहं मन्ये आत्मानमकृताशिषम् ।
यद् वा आपत्सु मद्वार्तां नानुस्मरथ सत्तमाः ।।१९।।

पदच्छेद— आर्य भ्रातः अहम् मन्ये आत्मानम् अकृत आशिषम् ।
यद् वा आपत्सु मत् वार्ताम् न अनुस्मरथ सत्तमाः ।।

शब्दार्थ—

आर्य	१. पूज्य	यद् वा	८. क्योंकि
भ्रातः	२. भइया	आपत्सु	१०. विपत्तियों में
अहम्	३. मैं	मत्	११. मेरी
मन्ये	७. मानती हूँ	वार्ताम्	१२. सुधि भी
आत्मानम्	४. अपने को	न	१३. न लें
अकृत	५. अत्यन्त	अनुस्मरथ	१४. इससे बढ़कर दुःख क्या होगा
आशिषम् ।	६. अभागिन	सत्तमाः ।।	९. आप जैसे सज्जन भाई

श्लोकार्थ—पूज्य भइया ! मैं अपने को अत्यन्त अभागिन मानती हूँ। क्योंकि आप जैसे सज्जन भाई विपत्तियों में मेरी सुधि भी न लें इससे बढ़कर क्या दुःख होगा ।।

विंशः श्लोकः

सुहृदो ज्ञातयः पुत्रा भ्रातरः पितरावपि ।
नानुस्मरन्ति स्वजनं यस्य दैवमदक्षिणम् ।।२०।।

पदच्छेद— सुहृदः ज्ञातयः पुत्राः भ्रातरः पितरौ अपि ।
न अनुस्मरन्ति स्वजनम् यस्य दैवम् अदक्षिणम् ।।

शब्दार्थ—

सुहृदः	१. मित्र	न	९. नहीं करते हैं
ज्ञातयः	२. सगे सम्बन्धी	अनुस्मरन्ति	८. स्मरण
पुत्राः	३. पुत्र	स्वजनम्	७. उस स्वजन का
भ्रातरः	४. भाई और	यस्य	११. जिसके
पितरौ	५. माता-पिता	दैवम्	१०. विधाता
अपि ।	६. भी	अदक्षिणम् ।।	१२. बाँयें हो जाता है

श्लोकार्थ— मित्र, सगे सम्बन्धी, पुत्र, भाई और माता-पिता भी उस स्वजन का स्मरण नहीं करते हैं, जिसके विधाता बाँयें हो जाता है ।।

एकविंशः श्लोकः

वसुदेव उवाच—अम्ब मास्मानसूयेथा दैवक्रीडनकान् नरान् ।
ईशस्य हि वशे लोकः कुरुते कार्यतेऽथवा ॥२१॥

पदच्छेद— अम्ब मा अस्मान् असूयेथाः दैव क्रीडनकान् नरान् ।
ईशस्य हि वशे लोकः कुरुते कार्यते अथवा ॥

शब्दार्थ—

अम्ब	१.	बहिन	ईशस्य	९.	ईश्वर के
मा अस्मान्	२.	हमें मत दो	हि	४.	क्योंकि
असूयेथाः	३.	उलहना	वशे	१०.	वश में रह कर
दैव	६.	दैव के	लोकः	८.	सारे लोक
क्रीडनकान्	७.	खिलौने हैं	कुरुते	११.	कर्म करते हैं
नरान् ।	५.	मनुष्य	कार्यते	१३.	कराया जाता है
			अथवा ॥	१२.	अथवा

श्लोकार्थ—बहिन ! हमें उलहना मत दो ! क्योंकि मनुष्य दैव के खिलौने हैं । सारे लोक ईश्वर के वश में रहकर कर्म करते हैं । अथवा कराया जाता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

कंसप्रतापिताः सर्वे वयं याता दिशं दिशम् ।
एतर्ह्येव पुनः स्थानं दैवेनासादिताः स्वसः ॥२२॥

पदच्छेद— कंसप्रतापिताः सर्वे वयम् याताः दिशम् दिशम् ।
एतर्हि एव पुनः स्थानम् दैवेन आसादिताः स्वसः ॥

शब्दार्थ—

कंस	२.	कंस से	एतर्हि एव	८.	अभी कुछ ही दिन हुये
प्रतापिताः	३.	सताये जाकर	पुनः	१०.	फिर
सर्वे वयम्	४.	हम सब	स्थानम्	११.	अपना स्थान
याताः	७.	भागे हुये थे	दैवेन	९.	भाग्य से ही (हम लोग)
दिशम्	५.	अनेक	आसादिताः	१२.	प्राप्त कर सके हैं
दिशम् ।	६.	दिशाओं में	स्वसः ॥	१.	हे बहन !

श्लोकार्थ—हे बहन ! कंस से सताये जाकर हम सब अनेक दिशाओं में भागे हुये थे । अभी कुछ ही दिन हुये भाग्य से ही हम लोग फिर अपना स्थान प्राप्त कर सके हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच— वसुदेवोग्रसेनाद्यैर्यदुभिस्तेऽर्चिता नृपाः ।
आसन्नच्युतसन्दर्शपरमानन्दनिर्वृताः ॥२३॥

पदच्छेद— वसुदेव उग्रसेन आद्यैः यदुभिः ते अर्चिताः नृपाः ।
आसन् अच्युत सन्दर्श परम आनन्द निर्वृताः ॥

शब्दार्थ—

वसुदेव	१.	वसुदेव	आसन्	१२.	करने लगे
उग्रसेन	२.	उग्रसेन	अच्युत	७.	श्रीकृष्ण के
आद्यैः	३.	आदि	सन्दर्शन	८.	दर्शन से
यदुभिः ते	४.	यदुवंशियों ने उन	परम्	९.	परम
अर्चिताः	६.	सम्मान-सत्कार किया (वे)	आनन्द	१०.	आनन्द का
नृपाः ।	५.	राजाओं का	निर्वृताः ॥	११.	अनुभव प्राप्त

श्लोकार्थ—वसुदेव, उग्रसेन आदि यदुवंशियों ने उन राजाओं का सम्मान सत्कार किया । वे श्रीकृष्ण के दर्शन से परम आनन्द का अनुभव प्राप्त करने लगे ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

भीष्मो द्रोणोऽम्बिकापुत्रो गान्धारी ससुता तथा ।
सदाराः पाण्डवाः कुन्ती सृञ्जयो विदुरः कृपः ॥२४॥

पदच्छेद— भीष्मः द्रोणः अम्बिका पुत्रः गान्धारी ससुता तथा ।
सदाराः पाण्डवाः कुन्ती सृञ्जयः विदुरः कृपः ॥

शब्दार्थ—

भीष्मः	१.	भीष्मपितामह	सदाराः	७.	पत्नियों सहित
द्रोणः	२.	द्रोणाचार्य	पाण्डवाः	८.	पाण्डव
अम्बिका पुत्र	३.	धृतराष्ट्र	कुन्ती	९.	कुन्ती
गान्धारी	५.	गान्धारी	सृञ्जयः	१०	सृञ्जय
ससुता	४.	पुत्रों समेत	विदुरः	११.	विदुर और
तथा ।	६.	तथा	कृपः ॥	१२.	कृपाचार्य (श्रीकृष्ण को देख कर विस्मित हो गये)

श्लोकार्थ—भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य धृतराष्ट्र, पुत्रों समेत गान्धारी तथा पत्नियों सहित पाण्डव, कुन्ती, सृञ्जय, विदुर और कृपाचार्य श्रीकृष्ण को देखकर विस्मित हो गये ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

कुन्तिभोजो विराटश्च भीष्मको नग्नजिन्महान् ।
पुरुजिद् द्रुपदः शल्यो धृष्टकेतुः सकाशिराट् ॥२५॥

पदच्छेद— कुन्तिभोजः विराटः च भीष्मकः नग्नजित् महान् ।
पुरुजित् द्रुपदः शल्यः धृष्टकेतुः सकाशिराट् ॥

शब्दार्थ—

कुन्तिभोजः	१. कुन्तिभोज	पुरुजित्	६. पुरुजित
विराटः च	२. विराट और	द्रुपदः	७. द्रुपद
भीष्मकः	३. भीष्मक	शल्यः	८. शल्य
नग्नजित्	५. नग्नजित्	धृष्टकेतुः	९. धृष्टकेतु और
महान् ।	४. महान्	सकाशिराट् ॥	१०. काशीनरेश (भी विस्मित हुये)

श्लोकार्थ—कुन्ति भोज, विराट और भीष्मक महान् नग्नजित्, पुरुजित्, द्रुपद, शल्य, धृष्टकेतु और काशीनरेश भी विस्मित हुये ॥

षड्विंशः श्लोकः

दमघोषो विशालाक्षो मैथिलो मद्रकेकयौ ।
युधामन्युः सुशर्मा च ससुता बाह्लिकादयः ॥२६॥

पदच्छेद— दमघोषः विशालाक्षः मैथिलः मद्रकेकयौ ।
युधामन्युः सुशर्मा च ससुताः बाह्लिक आदयः ॥

शब्दार्थ—

दमघोषः	१. दमघोष	युधामन्युः	६. युधामन्यु
विशालाक्षः	२. विशालाक्ष	सुशर्मा च	७. सुशर्मा और
मैथिलः	३. मिथिलापति	ससुताः	८. पुत्रों के साथ
मद्र	४. मद्रनरेश	बाह्लिक	९. बाह्लिक
केकयौ ।	५. केकयनरेश	आदयः ॥	१०. आदि (विस्मित हुये)

श्लोकार्थ—दमघोष, विशालाक्ष, मिथिला पति, मद्रनरेश, केकय नरेश, युधामन्यु, सुशर्मा और पुत्रों के साथ बाह्लिक आदि विस्मित हुये ॥

सप्तविंशः श्लोकः

राजानो ये च राजेन्द्र युधिष्ठिरमनुव्रताः ।
श्रीनिकेतं वपुः शौरेः सस्त्रीकं वीक्ष्य विस्मिताः ॥२७॥

पदच्छेद— राजानः ये च राजेन्द्र युधिष्ठिरम् अनुव्रताः ।
श्रीनिकेतम् वपुः शौरेः सस्त्रीकम् वीक्ष्य विस्मिताः ॥

शब्दार्थ—

राजानः	३. राजा	श्रीनिकेतम्	८. लक्ष्मी के निवास
ये च	२. और जो	वपुः	९. शरीर को
राजेन्द्र	१. हे परीक्षित् !	शौरेः	७ श्रीकृष्ण के
युधिष्ठिरम्	४. युधिष्ठिर के	सस्त्रीकम्	६. पत्नियों समेत
अनुव्रताः ।	५. अनुयायी थे	वीक्ष्य विस्मिताः	१०. देखकर (विस्मित हो गये)

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! और जो राजा युधिष्ठिर के अनुयायी थे, पत्नियों समेत श्रीकृष्ण के लक्ष्मी के निवास शरीर को देख कर विस्मित हो गये ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

अथ ते रामकृष्णाभ्यां सम्यक् प्राप्तसमर्हणाः ।
प्रशशंसुर्मुदा युक्ता वृष्णीन् कृष्णपरिग्रहान् ॥२८॥

पदच्छेद— अथ ते रामकृष्णाभ्याम् सम्यक् प्राप्त समर्हणाः ।
प्रशशंसुः मुदा युक्ताः वृष्णीन् कृष्ण परिग्रहान् ॥

शब्दार्थ—

अथ	१. अब	प्रशशंसुः	१२. प्रशंसा करने लगे
ते	२. वे	मुदा	७. हर्ष से
राम	३. बलराम और	युक्ताः	८. युक्त होकर
कृष्णाभ्याम्	४. श्रीकृष्ण से	वृष्णीन्	११. यदुवंशियों की
सम्यक्	५. भली-भाँति	कृष्ण	९. श्रीकृष्ण के
प्राप्त समर्हणाः ।	६. सम्मान प्राप्त करके	परिग्रहान् ॥	१०. स्वजन

श्लोकार्थ—अब वे बलराम और श्रीकृष्ण से भली-भाँति सम्मान प्राप्त करके हर्ष से युक्त होकर श्रीकृष्ण के स्वजन यदुवंशियों की प्रशंसा करने लगे ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

अहो भोजपते यूयं जन्मभाजो नृणामिह ।
यत् पश्यथासकृत् कृष्णं दुर्दर्शमपि योगिनाम् ॥२९॥

पदच्छेद— अहो भोजपते यूयम् जन्मभाजः नृणाम् इह ।
यत् पश्यथ असकृत् कृष्णम् दुर्दर्शम् अपि योगिनाम् ॥

शब्दार्थ—

अहो	१.	अहो	यत्	७.	जो कि (आपलोग)
भोजपते	२.	भोजराज	पश्यथ	१२.	देखते रहते है
यूयम्	५.	आप लोगों का	असकृत्	११.	बार-बार
जन्मभाजः	६.	जीवन धन्य है	कृष्णम्	१०.	भगवान् श्रीकृष्ण को
नृणाम्	४.	मनुष्यों में	दुर्दर्शम्	९.	दुर्लभ (दर्शन वाले)
इह ।	३.	इस संसार के	अपि योगिनाम् ॥	८.	योगियों के लिये भी

श्लोकार्थ—अहो भोजराज ! इस संसार के मनुष्यों में आप लोगों का जीवन धन्य है । जो कि आपलोग योगियों के लिये भी दुर्लभ दर्शन वाले भगवान् श्रीकृष्ण को बार-बार देखते रहते हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

यद्विश्रुतिः श्रुतिनुतेदमलं पुनाति पादावनेजनपयश्च वचश्च शास्त्रम् ।
भूः कालभर्जितभगापि यदङ्घ्रिपद्मस्पर्शोत्थशक्तिरभिवर्षति नोऽखिलार्थान् ॥३०

पदच्छेद—

यत् विश्रुतिः श्रुतिनुता इदम् अलम् पुनाति पादावनेजन पयः च वचः च शास्त्रम् ।
भूः कालभर्जित भगापि यत् अङ्घ्रिपद्म स्पर्श उत्थशक्तिः अभिवर्षति नः अखिल अर्थान् ॥

शब्दार्थ—

यत् विश्रुतिः	२.	जिनकी कीर्ति	भूः	११.	पृथ्वी
श्रुति नुता	१.	वेद द्वारा प्रशंसित	कालभर्जित	९.	समय के फेर से
इदम्	७.	इस जगत् को	भगापि	१०.	सौभाग्यवाली
अलम् पुनाति	८.	अत्यन्त पवित्र करते हैं (तथा)	यत्अङ्घ्रिपद्म	१२.	जिनके चरण कमल के
पादावनेजन	३.	चरण धोवन का	स्पर्श उत्थशक्तिः	१३.	स्पर्श से शक्ति प्राप्त करके
पयः च	४.	जल	अभिवर्षति	१६.	पूर्ण करती है
वचः च	५.	वाणी तथा	नः अखिल	१४.	हमारे सभी
शास्त्रम् ।	६.	शास्त्र	अर्थान् ॥	१५.	मनोरथों को

श्लोकार्थ—वेद द्वारा प्रशंसित जिनकी कीर्ति, चरण धोवन का जल, वाणी तथा शास्त्र इस जगत् को अत्यन्त पवित्र करते हैं । समय के फेर से नष्ट सौभाग्य वाली पृथ्वी जिनके चरण कमल के स्पर्श से शक्ति प्राप्त करके हमारे सभी मनोरथों को पूर्ण करती है ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

तद्दर्शनस्पर्शनानुपथप्रजल्पशय्यासनाशनसयौनसपिण्डबन्धः ।
येषां गृहे निरयवर्त्मनि वर्ततां वः स्वर्गापवर्गविरमः स्वयमास विष्णुः ॥३१॥

पदच्छेद— तत् दर्शन स्पर्शन अनुपथ प्रजल्प शय्या आसन अशन यौन सपिण्ड बन्धः ।
येषाम् गृहे निरयवर्त्मनि वर्तताम् वः स्वर्ग अपवर्ग विरमः स्वयम् आस विष्णुः ॥

शब्दार्थ—

ततदर्शन	८.	उनके दर्शन	येषाम्	४.	जिन
स्पर्शन	९.	स्पर्श	गृहे	२.	घर में
अनुपथप्रजल्प	१०.	साथ चलना-बोलना	निरयवर्त्मनि	१.	नरक मार्गरूप
शय्या-आसन	११.	शय्या पर बैठना	वर्तताम् वः	३.	रहते हुये आपके यहाँ
अशनयौन	१२.	एक साथ भोजन-वैवाहिककार्य	स्वर्ग अपवर्ग	५.	स्वर्ग मोक्ष को
सपिण्ड	१३.	और गोत्र	विरमः स्वयम्	६.	विराम देने वाले स्वयं
बन्धः ।	१४.	सम्बन्ध आपको प्राप्त है	आसविष्णुः ॥	७.	विष्णु निवास करते हैं

श्लोकार्थ—नरक के मार्गरूप घर में रहते हुये जिन आपके यहाँ स्वर्ग-मोक्ष को विराम देने वाले स्वयम विष्णु निवास करते हैं । उनके दर्शन, स्पर्श, साथ चलना, शय्या पर बैठना, एक साथ भोजन करना, वैवाहिक कार्य और गोत्र सम्बन्ध आपको प्राप्त है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्री शुकवाच— नन्दस्तत्र यदून् प्राप्तान् ज्ञात्वा कृष्णपुरोगमान् ।
तत्रागमद् वृतो गोपैरनः स्थार्थैर्दिदृक्षया ॥३२॥

पदच्छेद— नन्दः तत्र यदून् प्राप्तान् ज्ञात्वा कृष्ण पुरोगमान् ।
तत्र आगमत् वृतः गोपैः अनः स्थ अर्थैः दिदृक्षया ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	६.	नन्द बाबा	तत्र	११.	वहाँ पर
तत्र	१.	वहाँ कुरुक्षेत्र में	आगमत्	१२	आये
यदून	३.	यदुवंशियों को	वृतः गोपैः	८.	गोपों के साथ
प्राप्तान्	४.	आये हुये	अनः स्थ	९.	गाड़ियों में
ज्ञात्वा	५.	जानकर	अर्थैः	१०.	सामग्री लादकर
कृष्ण पुरोगमान् ।	२.	श्रीकृष्ण आदि	दिदृक्षया ॥	७.	उन्हें देखने की इच्छा से

श्लोकार्थ—वहाँ कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण आदि यदुवंशियों को आये हुये जानकर नन्द बाबा उन्हें देखने की इच्छा से गोपों के साथ गाड़ियों में सामग्री लादकर वहाँ पर आये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तं दृष्ट्वा वृष्णयो हृष्टास्तन्वः प्राणमिवोत्थिताः ।
परिषस्वजिरे गाढं चिरदर्शनकातराः ॥३३॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा वृष्णयः हृष्टाः तन्वः प्राणम् इव उत्थिताः ।
परिषस्वजिरे गाढम् चिरदर्शन कातराः ॥

शब्दार्थ—

तम् दृष्ट्वा	१.	उनको देखकर	परिषस्वजिरे	११.	आलिंगन करने लगे
वृष्णयः	२.	यदुवंशी	गाढम्	१०.	एक दूसरे का गाढ
हृष्टाः	३.	हर्षित हो गये	चिर	७.	बहुत दिनों से
तन्वःप्राणम्	६.	शरीर में प्राण आ गया हो	दर्शन	८.	दर्शन के लिये
इव	४.	मानों वे इस प्रकार	कातराः ॥	९.	अधीर (वे लोग)
उत्थिताः ।	५.	उठ खड़े हुये (जैसे)			

श्लोकार्थ—उनको देखकर यदुवंशी हर्षित हो गये । मानों वे इस प्रकार उठ खड़े हुये जैसे शरीर में प्राण आ गया हो । बहुत दिनों से दर्शन के लिये अधीर वे लोग एक दूसरे का गाढ आलिंगन करने लगे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

वसुदेवः परिष्वज्य सम्प्रीतः प्रेमविह्वलः ।
स्मरन् कंसकृतान् क्लेशान् पुत्रन्यासं च गोकुले ॥३४॥

पदच्छेद— वसुदेवः परिष्वज्य सम्प्रीतः प्रेम विह्वलः ।
स्मरन् कंसकृतान् क्लेशान् पुत्रन्यासम् च गोकुले ॥

शब्दार्थ—

वसुदेवः	१.	वसुदेव जी ने	स्मरन्	९.	स्मरण करते हुए
परिष्वज्य	१०.	(नन्द जी का) आलिंगन किया	कंसकृतान्	५.	कंस के दिये हुये
सम्प्रीतः	३.	आनन्द से	क्लेशान्	६.	क्लेशों
प्रेम	२.	प्रेम और	पुत्रन्यासम्	८.	पुत्र के रखने का
विह्वलः ।	४.	उत्कण्ठित होकर (और)	च गोकुले ॥	७.	तथा गोकुल में

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने प्रेम और आनन्द से उत्कण्ठित होकर और कंस के दिये हुये क्लेशों तथा गोकुल में पुत्र के रखने का स्मरण करते हुये नन्द जी का आलिंगन किया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कृष्णरामौ परिष्वज्य पितरावभिवाद्य च ।
न किञ्चनोचतुः प्रेम्णा साश्रुकण्ठौ कुरूद्वह ॥३५॥

पदच्छेद— कृष्णरामौ परिष्वज्य पितरौ अभिवाद्य च ।
न किञ्चन ऊचतुः प्रेम्णा साश्रुकण्ठौ कुरूद्वह ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	२. श्रीकृष्ण और	न	११. नहीं
रामौ	३. बलराम ने	किञ्चन	१०. कुछ भी
परिष्वज्य	५. गले लगकर	ऊचतुः	१२. बोले
पितरौ	४. माता यशोदा और पिता नन्द के	प्रेम्णा	८. प्रेम के कारण
अभिवाद्य	६. प्रणाम किया	साश्रुकण्ठौ	९. अवरुद्ध कण्ठ होने से
च ।	७. तथा	कुरूद्वह ॥	१. हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! श्रीकृष्ण और बलराम ने माता यशोदा के और पिता नन्द के गले लगकर प्रणाम किया तथा प्रेम के कारण अवरुद्ध कण्ठ होने से कुछ भी नहीं बोले ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तावात्मासनमारोप्य बाहुभ्यां परिरभ्य च ।
यशोदा च महाभागा सुतौ विजहतुः शुचः ॥३६॥

पदच्छेद— तौ आत्म आसनम् आरोप्य बाहुभ्याम् परिरभ्य च ।
यशोदा च महाभागा सुतौ विजहतुः शुचः ॥

शब्दार्थ—

तौ	१. उन दोनों नन्द जी	यशोदा	४. यशोदा ने
आत्म	६. अपने	च	२. तथा
आसनम्	७. आसन पर	महाभागा	३. महाभाग्यवती
आरोप्य	८. बैठाकर	सुतौ	५. दोनों पुत्रों को
बाहुभ्याम्	९. बाँहों में	विजहतुः	१३. त्याग दिया
परिरभ्य	१०. भर लिया	शुचः ॥	१२. चिरकाल के शोक को
च ।	११. और		

श्लोकार्थ—उन दोनों नन्द जी तथा महाभाग्यवती यशोदा ने दोनों पुत्रों को अपने आसन पर बैठाकर बाँहों में भर लिया और चिरकाल के शोक को त्याग दिया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

रोहिणी देवकी चाथ परिष्वज्य व्रजेश्वरीम् ।
स्मरन्त्यौ तत्कृतां मैत्रीं बाष्पकण्ठ्यौ समूचतुः ॥३७॥

पदच्छेद— रोहिणी देवकी च अथ परिष्वज्य व्रजेश्वरीम् ।
स्मरन्त्यौ तत् कृताम् मैत्रीम् बाष्पकण्ठचौ समूचतुः ॥

शब्दार्थ--

रोहिणी	४. रोहिणी	स्मरन्त्यौ	१०. स्मरण करती हुई
देवकी	२. देवकी	तत्	७. उनकी
च	३. और	कृताम्	८. की हुई
अथ	१. तदनन्तर	मैत्रीम्	६. मित्रता का
परिष्वज्य	६. आलिंगन करके	बाष्पकण्ठचौ	११. गद्-गद स्वर से
व्रजेश्वरीम् ।	५. यशोदा जी का	समूचतुः ॥	१२. बोलीं

श्लोकार्थ—तदनन्तर देवकी और रोहिणी यशोदा जी का आलिंगन करके उनकी की हुई मित्रता का स्मरण करती हुई गद्-गद स्वर से बोलीं ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

का विस्मरेत वां मैत्रीमनिवृत्तां व्रजेश्वरि ।
अवाप्याप्यैन्द्रमैश्वर्यं यस्या नेह प्रतिक्रिया ॥३८॥

पदच्छेद— का विस्मरेत वाम् मैत्रीम् अनिवृत्ताम् व्रजेश्वरि ।
अवाप्य अपि ऐन्द्रम् ऐश्वर्यम् यस्याः न इह प्रतिक्रिया ॥

शब्दार्थ--

का	५. कौन	अवाप्य	११. पाकर
विस्मरेत	६. भूल सकता है	अपि	१२. भी
वाम्	२. आप दोनों की	ऐन्द्रम्	६. इन्द्र का
मैत्रीम्	४. मित्रता को	ऐश्वर्यम्	१०. ऐश्वर्य
अनिवृत्ताम्	३. कभी न मिटने वाली	यस्याः	७. जिसका
व्रजेश्वरि ।	१. हे नन्दरानी जी	न इह	१३. नहीं चुकाया जा सकता
		प्रतिक्रिया ॥	८. बदला

श्लोकार्थ—हे नन्द रानी जी ! आप दोनों की कभी न मिटने वाली मित्रता को कौन भूल सकता है । जिसका बदला इन्द्र का ऐश्वर्य पाकर भी नहीं भुलाया जा सकता है ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

एतावदृष्टपितरौ युवयोः स्म पित्रोः सम्प्रीणनाभ्युदयपोषणपालनानि ।
प्राप्योषतुर्भवति पक्ष्म ह यद्वदक्षणोर्न्यस्तावकुत्रचभयौ न सतां परः स्वः ॥३९॥

पदच्छेद— एतौ अदृष्ट पितरौ युवयोः स्म पित्रोः सम्प्रीणन अभ्युदय पोषण पालनानि ।
प्राप्य ऊषतुः भवति पक्ष्मह यद्वत् अक्षणोः न्यस्तौ अकुत्र च भयौ न सताम् परः स्वः ॥

शब्दार्थ—

एतौ	१.	इन दोनों ने	प्राप्य ऊषतुः	१३.	सुरक्षित रहे
अदृष्ट	३.	देखा तक नहीं था	भवति	१०.	हे देवि
पितरौ	२.	अपने माता-पिता को	पक्ष्म ह	१२.	पलकें करती हैं (ये दोनों)
युवयोःस्म	५.	आप ही दोनों	तद्वत् अक्षणोः	११.	आँखों की रक्षा
पित्रोः	६.	माता-पिता से	न्यस्तौ	४.	आपके पास रखे गये इन्होंने
सम्प्रीणन	७	स्नेह-दुलार	अकुत्र च भयौ	१४.	इन्हें कहीं भी कष्ट न हुआ
अभ्युदय	८.	पाकर ही	न सताम्	१५	सत्पुरुषों की दृष्टि में नहीं
पोषणपालनानि ।	९.	पालन पोषण हुआ	पुरः स्वः ॥	१६.	अपने परोपकार भेद-भाव होता है ।

श्लोकार्थ— इन दोनों ने अपने माता-पिता को देखा तक नहीं था । आपके पास रखे गये इन दोनों का आप ही दोनों माता-पिता से स्नेह-दुलार पाकर ही पालन पोषण हुआ । हे देवि ! जैसे आँखों की रक्षा पलकें करती है ये दोनों सुरक्षित रहे । इन्हें कहीं भी कष्ट नहीं हुआ । सत्पुरुषों की दृष्टि में अपने-पराये का भेद भाव नहीं होता है ॥

श्री शुकउवाच—

चत्वारिंशः श्लोकः

गोप्यश्च कृष्णमुपलभ्य चिरादभीष्टं यत्प्रेक्षणे दृशिषु पक्ष्मकृतं शपन्ति ।
दृग्भिर्हृदीकृतमलं परिरभ्य सर्वास्तद्भावमापुरपि नित्ययुजां दुरापम् ॥४०॥

पदच्छेद— गोप्यः च कृष्णम् उपलभ्य चिरात् अभीष्टम् यत् प्रेक्षणे दृशिषु पक्ष्मकृतम् शपन्ति ।
दृग्भिः हृदीकृतमअलम् परिरभ्य सर्वाः तत् भावम् आपुः अपि नित्ययुजाम् दुरापम् ॥

शब्दार्थ—

गोप्यःच	५.	गोपियाँ	दृग्भिः	१०.	उनकी मूर्ति को
कृष्णम्	२.	श्रीकृष्ण को	हृदीकृत	११.	हृदय में ले जाकर
उपलभ्य	३.	पाकर	अलम् परिरभ्य	१२.	अति आलिङ्गन करके वे
चिरात्अभीष्टम्	१.	चिरकाल की लालसा से	सर्वाः	४.	सभी
यत् प्रेक्षणे	६.	उन श्रीकृष्ण के	तत्भावम्आपुः	१३.	उस भाव को प्राप्त हो गईं जो
दृशिषु	७.	दर्शन में बाधक अपने	अपि नित्य	१४	नित्य अभ्यास करने वाले
पक्ष्म कृतम्	८.	नेत्रोंकी पलकों के बनानेवाले	युजाम्	१५.	योगियों के लिये भी
शपन्ति ।	९.	कोसने लगतीं (तथा)	दुरापम् ॥	१६.	दुर्लभ है

श्लोकार्थ— चिरकाल की लालसा से श्रीकृष्ण को पाकर सभी गोपियाँ उन श्रीकृष्ण के दर्शन में बाधक अपने नेत्रों की पलकों को बनाने वाले को कोसने लगतीं तथा उनकी मूर्ति को हृदय में ले जाकर अति आलिङ्गन करके वे उस भाव को प्राप्त हो गईं जो नित्य अभ्यास करने वाले योगियों के लिये भी दुर्लभ है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

भगवांस्तास्तथाभूता विविक्त उपसङ्गतः ।
आश्लिष्यानामयं पृष्ट्वा प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥४१॥

पदच्छेद— भगवान् ताः तथा भूताः विविक्ते उपसङ्गतः ।
आश्लिष्य अनामयम् पृष्ट्वा प्रहसन् इदम् अब्रवीत् ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	१. भगवान् (श्रीकृष्ण)	आश्लिष्य	७. आलिंगन करके
ताः	४. उन गोपियों से	अनामयम्	८. कुशल-मङ्गल
तथा	२. उस प्रकार	पृष्ट्वा	९. पूछकर
भूताः	३. आत्मभाव को प्राप्त	प्रहसन्	१०. हंसते हुये
विविक्ते	५. एकान्त में	इदम्	११. यह
उपसङ्गतः ।	६. मिले (और)	अब्रवीत् ॥	१२. कहा

श्लोकार्थ- भगवान् श्रीकृष्ण उस प्रकार आत्मभाव को प्राप्त उन गोपियों से एकान्त में मिले । और आलिंगन करके कुशल मङ्गल पूछकर हंसते हुये यह कहा ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

अपि स्मरथ नः सख्यः स्वानामर्थचिकीर्षया ।
गतांश्चिरायिताञ्छत्रुपक्षक्षपणचेतसः ॥४२॥

पदच्छेद— अपि स्मरथ नः सख्यः स्वानाम् अर्थ चिकीर्षया ।
गतान् चिरायितान् शत्रु पक्ष क्षपण चेतसः ॥

शब्दार्थ—

अपि	१०. क्या तुम लोग कभी	गतान्	४. गये हुये तथा
स्मरथ	१२. स्मरण करती हो।	चिरायितान्	९. विलम्ब हो गया
नः	११. हमारा	शत्रु	५. शत्रुओं के
सख्यः	१. हे सखियो !	पक्ष	६. पक्ष वालों का
स्वानाम्	२. अपने लोगों का	क्षपण	७. विनाश करने में
अर्थचिकीर्षया ।	३. काम करने की इच्छा !	चेतसः ॥	८. लग जाने से

श्लोकार्थ— हे सखियो ! अपने लोगों का काम करने की इच्छा से गये हुये तथा शत्रुओं के पक्ष वालों का विनाश करने में लग जाने से विलम्ब हो गया । क्या तुम लोग कभी हमारा स्मरण करती हो ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

अप्यवध्यायथास्मान् स्विदकृतज्ञाविशङ्कया ।
नूनं भूतानि भगवान् युनक्ति वियुनक्ति च ॥४३॥

पदच्छेद— अपि अवध्यायथ अस्मान् स्वित् अकृतज्ञ अविशङ्कया ।
नूनम् भूतानि भगवान् युनक्ति वियुनक्ति च ॥

शब्दार्थ—

अपि	१.	क्या	नूनम्	७.	निः सन्देह
अवध्यायथ	६.	बुरा तो नहीं मान गई हो	भूतानि	९.	प्राणियों को
अस्मान्	५.	हमसे	भगवान्	८.	भगवान् ही
स्वित	२.	कहीं	युनक्ति	१०.	मिलते हैं
अकृतज्ञ	३.	अकृतज्ञ की	वियुनक्ति	१२.	अलग भी करते हैं
अविशङ्कया ।	४.	आशंका से	च ॥	११.	और (वही)

श्लोकार्थ—क्या कहीं अकृतज्ञ की आशंका से हमसे बुरा तो नहीं मान गई हो । निःसन्देह भगवान् ही प्राणियों को मिलाते हैं । और वही अलग भी करते हैं ।

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

वायुर्यथा घनानीकं तृणं तूलं रजांसि च ।
संयोज्याक्षिपते भूयस्तथा भूतानि भूतकृत् ॥४४॥

पदच्छेद— वायुः यथा घन अनीकम् तृणं तूलम् रजांसि च ।
संयोज्य आक्षिपते भूयः तथा भूतानि भूत कृत् ॥

शब्दार्थ—

वायुः	२.	वायु	संयोज्य	८.	मिलाकर
यथा	१.	जैसे	आक्षिपते	१०.	अलग कर देता है (जैसे)
घन	३.	मेघों के	भूयः तथा	९.	फिर (वैसे ही)
अनीकम्	४.	समूह	भूतानि	१३.	प्राणियों को मिलाकर अलग कर देते है
तृणम्	५.	तिनकों	भूत	११.	प्राणियों के
तूलम्	६.	रुई	कृत् ॥	१२.	निर्माता (भगवान्)
रजांसि च ।	७.	धूली को और			

श्लोकार्थ— जैसे वायु, मेघों के समूह, रुई और धूली को मिलाकर फिर वैसे ही अलग कर देता है वैसे ही प्राणियों के निर्माता भगवान् प्राणियों को मिलाकर अलग कर देते हैं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

मयि भक्तिर्हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते।
दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥४५॥

पदच्छेद— मयि भक्तिः हि भूतानाम् अमृतत्वाय कल्पते।
दिष्ट्या यत् आसीत् मत् स्नेहः भवतीनाम् मत् आपनः ॥

शब्दार्थ—

मयि	१.	मुझमें	यत्	११.	जो
भक्तिः हि	२.	भक्ति करने से	आसीत्	१२.	प्राप्त हो गया है
भूतानाम्	३.	प्राणियों को निश्चित ही	मत्	९.	मेरा
अमृतत्वाय	४.	अमृतत्व की	स्नेहः	१०.	प्रेम
कल्पते।	५.	प्राप्ति होती है (तथा)	भवतीनाम्	७.	आप लोगों को
दिष्ट्या	६.	भाग्य से ही	मत् आपनः ॥	८.	मुझे प्राप्त कराने वाला

श्लोकार्थ—मुझ में भक्ति करने से प्राणियों को निश्चित ही अमृतत्व की प्राप्ति होती है। तथा भाग्य से ही आप लोगों को मुझे प्राप्त कराने वाला प्रेम प्राप्त हो गया है ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

अहं हि सर्वभूतानामादिरन्तोऽन्तरं बहिः।
भौतिकानां यथा खं वार्भूर्वायुर्ज्योतिरङ्गनाः ॥४६॥

पदच्छेद— अहम् हि सर्वभूतानाम् आदिः अन्तः अन्तरम् बहिः।
भौतिकानाम् यथा खम् वाः भूः वायुः ज्योतिः अङ्गनाः ॥

शब्दार्थ—

अहम् हि	१२.	मैं ही हूँ	भौतिकानाम्	३.	भौतिक पदार्थों के
सर्वभूतानाम्	११.	सभी प्राणियों के अन्दर	यथा	२.	जैसे
आदिः	४.	आदि	खम् वाः	८.	आकाश, जल
अन्तः	५.	अन्त	भूः वायुः	९.	पृथ्वी, वायु और
अन्तरम्	६.	भीतर	ज्योतिः	१०.	अग्नि है (वैसे ही
बहिः।	७.	बाहर और	अङ्गनाः ॥	१.	हे गोपियो !

श्लोकार्थ— हे गोपियो ! जैसे भौतिक पदार्थों के आदि-अन्त-भीतर-बाहर और आकाश, जल, पृथ्वी, वायु और अग्नि है, वैसे ही सभी प्राणियों के अन्दर मैं ही हूँ ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

एवं ह्येतानि भूतानि भूतेष्वात्माऽऽत्मना ततः ।
उभयं मय्यथ परे पश्यताभातमक्षरे ॥४७॥

पदच्छेद— एवम् हि एतानि भूतानि भूतेषु आत्मा आत्मना ततः ।
उभयम् मयि अथ परे पश्यत आभातम् अक्षरे ॥

शब्दार्थ—

एवम् हि	१.	इसी प्रकार	उभयम्	१३.	इन दोनों को
एतानि	२.	यह	मयि	१०.	मुझ
भूतानि	३.	पाँचों महाभूत	अथ	७.	अनन्तर
भूतेषु	४.	प्राणियों में स्थित हैं	परे	९.	परे
आत्मा	५.	आत्मा	पश्यत	१४.	देखो
आत्मना	६.	भोक्ता अथवा जीवरूप से स्थित है	आभातम्	१२.	प्रतीत होते हुये
ततः ।	८.	इनसे	अक्षरे ॥	११.	अविनाशी में

श्लोकार्थ—इसी प्रकार यह पाँचों महाभूत प्राणियों में स्थित हैं । आत्मा भोक्ता रूप से अथवा जीव रूप से स्थित है । अनन्तर इनसे परे मुझ अविनाशी में प्रतीत होते हुये इन दोनों को देखो ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अध्यात्मशिक्षया गोप्य एवं कृष्णेन शिक्षिताः ।
तदनुस्मरणध्वस्तजीवकोशास्तमध्यगन् ॥४८॥

पदच्छेद— अध्यात्म शिक्षया गोप्यः एवम् कृष्णेन शिक्षिताः ।
तत् अनुस्मरण ध्वस्त जीवकोशाः तम् अध्यगन् ॥

शब्दार्थ—

अध्यात्म	३.	आध्यात्म ज्ञान की	तत्	६.	उस उपदेश के
शिक्षया	४.	शिक्षा से	अनुस्मरण	७.	बार-बार स्मरण से
गोप्यः	१०.	वे गोपियाँ	ध्वस्त	८.	नष्ट
एवम्	१.	इस प्रकार	जीवकोशाः	९.	लिङ्ग शरीर वाली
कृष्णेन	२.	श्रीकृष्ण द्वारा	तम्	११.	उन भगवान् को
शिक्षितः ।	५.	शिक्षित तथा	अध्यगन् ॥	१२.	प्राप्त हो गईं

श्लोकार्थ—इस प्रकार श्रीकृष्ण द्वारा अध्यात्म ज्ञान की शिक्षा से शिक्षित तथा उस उपदेश के बार बार स्मरण से नष्ट लिंग शरीर वाली वे गोपियाँ उन भगवान् को प्राप्त हो गईं ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

आहुश्च ते नलिननाभ पदारविन्दं योगेश्वरैर्हृदि विचिन्त्यमगाधबोधैः ।
संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बं गेहञ्जुषामपि मनस्युदियात् सदा नः ॥४९॥

पदच्छेद आहुः च ते नलिननाभ पदार विन्दम् योगेश्वरैः हृदि विचिन्त्यम् अगाधबोधैः ।
संसारकूप पतित उत्तरण अवलम्बम् गेहञ्जुषाम् अपि मनसि उदियात् सदा नः ॥

शब्दार्थ—

आहुः च	१.	अगोपियों ने कहा	संसारकूप	७.	संसार रूपी कुयें में
ते	११.	आपके	पतितः	८	गिरे हुये को
नलिननाभ	२.	हे कमलनाभ !	उत्तरण	९.	निकलने का
पदारविन्दम्	१२.	चरणकमल	अवलम्बम्	१०.	अवलम्बन स्वरूप
योगेश्वरैः	४.	योगेश्वरों द्वारा	गेहञ्जुषाम्	१३.	घर में रहते हुये
हृदि	५	हृदय में	अपि मनसि	१४.	भी मन में
विचिन्त्यम्	६.	चिन्तन करने योग्य	उदियात्	१६.	विराजमान रहें
अगाधबोधैः ।	३.	अगाध ज्ञान वाले	सदा नः ॥	१५.	हमारे

श्लोकार्थ—उन गोपियों ने कहा-कमलनाभ ! अगाध ज्ञान वाले योगेश्वरों द्वारा हृदय में चिन्तन करने योग्य, संसाररूपी कुयें में गिरे हुये को निकालने का अवलम्बस्वरूप आपके चरणकमल घर में रहते हुये भी हमारे मन में विराजमान रहें ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे वृष्णिगोपसङ्गमः नाम
द्व्यशीतितमः अध्यायः ॥८२॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

त्र्यशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तथानुगृह्य भगवान् गोपीनां स गुरुर्गतिः ।
युधिष्ठिरमथापृच्छत् सर्वांश्च सुहृदोऽव्ययम् ॥१॥

पदच्छेद— तथा अनुगृह्य भगवान् गोपीनाम् सः गुरुः गतिः ।
युधिष्ठिरम् अथ अपृच्छत् सर्वान् च सुहृदः अव्ययम् ॥

शब्दार्थ—

तथा	६.	उन गोपियों पर	युधिष्ठिरम्	८.	धर्मराज युधिष्ठिर
अनुगृह्य	७.	अनुग्रह किया (अब)	अथ	५.	जिस प्रकार कहा गया है उन्होंने
भगवान्	२.	भगवान् श्रीकृष्ण	अपृच्छत्	१२.	पूछा
गोपीनाम्	३.	गोपियों के शिक्षक हैं (और)	सर्वान्	९.	तथा समस्त
सः	१.	वही	सुहृदः	१०.	सम्बन्धियों से
गुरुः गतिः ।	४.	शिक्षा से प्राप्य वस्तु भी हैं	अव्ययम् ॥	११.	कुशल-मङ्गल

श्लोकार्थ—वही भगवान् श्रीकृष्ण गोपियों के शिक्षक हैं और शिक्षा से प्राप्य वस्तु भी हैं। जिस प्रकार कहा गया है, उन्होंने उन गोपियों पर अनुग्रह किया। धर्मराज युधिष्ठिर तथा समस्त सम्वन्धियों से कुशल-मङ्गल पूछा ॥

द्वितीयः श्लोकः

त एवं लोकनाथेन परिपृष्टाः सुसत्कृताः ।
प्रत्यूचुर्हृष्टमनसस्तत्पादेक्षाहतांहसः ॥२॥

पदच्छेद— ते एवम् लोक नाथेन परिपृष्टाः सुसत्कृताः ।
प्रतिऊचुः हृष्टमनसः तत् पाद ईक्षा हत अंहसः ॥

शब्दार्थ—

ते	९.	वे	प्रतिऊचुः	१२.	कहने लगे
एवम्	३.	इस प्रकार	हृष्ट	१०.	हर्षित
लोक	१.	संसार के	मनसः	११.	चित्त होकर
नाथेन	२.	स्वामी (श्रीकृष्ण के द्वारा)	तत् पाद	६.	उनके चरण कमल के
परिपृष्टाः	४.	पूछे जाने पर	ईक्षा	७.	दर्शन से जिनके
सुसत्कृताः ।	५.	बहुत सम्मानित हुये (और)	हतअंह सः ॥	८.	अशुभ नष्ट हो गये थे

श्लोकार्थ—संसार के स्वामी श्रीकृष्ण के द्वारा इस प्रकार पूछे जाने पर बहुत सम्मानित हुये और उनके चरण कमल के दर्शन से जिनके अशुभ नष्ट हो गये थे, वे हर्षित चित्त होकर कहने लगे ॥

तृतीयः श्लोकः

कुतोऽशिवं त्वच्चरणाम्बुजासवं महन्मनस्तो मुखनिःसृतं क्वचित् ।
पिबन्ति ये कर्णपुटैरलं प्रभो देहम्भृतां देहकृदस्मृतिच्छिदम् ॥३॥

पदच्छेद– कुतः अशिवम् त्वत् चरण अम्बुज आसवम् महत् मनस्तः मुखनिःसृतम् क्वचित् ।
पिबन्ति ये कर्णपुटैः अलम् प्रभो देहम्भृताम् देहकृत् अस्मृति छिदम् ॥

शब्दार्थ—कुतः	१६	कहाँ से होगा	पिबन्ति	१४	पीते हैं (उनका)
अशिवम्	१५.	अमङ्गल	ये कर्णपुटैः	१२.	जो उसे कानों के दानों में
त्वत्	५.	आपके	अलम्	१३.	भर-भर कर
चरणअम्बुज	६.	चरण कमल का	प्रभो	१.	हे भगवान् !
आसवम्	७.	रस जा	देहम्भृताम्	८.	प्राणियों को
महत् मनस्तः	३.	महापुरुष के	देहकृत्	९.	जन्म-मृत्यु के चक्र में डालने वाली
मुख निःसृतम्	४	मुख से निकला हुआ	अस्मृति	१०.	विस्मृति को
क्वचित् ।	२.	कहीं लीला कथा के रूप में	छिदम् ॥	११.	नष्ट करने वाला है

श्लोकार्थ--हे भगवान् ! कहीं लीला कथा के रूप में महापुरुष के मुख से निकला हुआ आपके चरण कमल का रस जो प्राणियों को जन्म-मृत्यु के चक्र में डालने वाली विस्मृति को नष्ट करने वाला है । जो से कानों के दोनों में भर-भर कर पीते हैं उनका अमङ्गल कहाँ से होगा ॥

चतुर्थः श्लोकः

हित्वाऽऽत्मधामविधुतात्मकृतत्र्यवस्थमानन्दसम्प्लवमखण्डमकुण्ठबोधम् ।
कालोपसृष्टनिगमावन आत्तयोगमायाकृतिं परमहंसगतिं नताः स्म ॥४॥

पदच्छेद—हित्वा आत्मधाम विधुतआत्मकृत त्र्यवस्थम् आनन्द सम्प्लवम् अखण्डम् अकुण्ठबोधम् ।
काल उपसृष्ट निगमावन आत्तयोगमाया आकृतिम् परमहंस गतिम् नताः स्म ॥

शब्दार्थ—

हित्वाआत्मधाम	१.	अपना धाम छोड़कर	कालउपसृष्ट	९.	समय के फेर से नष्ट
विधुत	४.	परे	निगमावन	१०.	वेदों की रक्षा के लिये
आत्मकृत	२.	अपनी की हुई	आत्त	११.	अपनी
त्र्यवस्थम्	३.	तीनों अवस्थाओं से	योगमाया	१२.	योगमाया के द्वारा
आनन्द	५.	आनन्द के	आकृतिम्	१३.	शरीर धारण करने वाले
सम्प्लवम्	६.	समुद्र	परमहंस	१४.	परम हंसों की
अखण्डम्	७.	अखण्ड और	गतिम्	१५.	एकमात्र गति आपको
अकुण्ठबोधम् ।	८	निर्बाध ज्ञानस्वरूप	नताः स्म ॥	१६.	हम नमस्कार करते हैं

श्लोकार्थ—अपना धाम छोड़कर अपनी की हुई तीनों अवस्थाओं से परे, आनन्द के समुद्र, अखण्ड और निर्बाधज्ञानस्वरूप। समय के फेर से नष्ट वेदों की रक्षा के लिये अपनी योगमाया के द्वारा शरीर धारण करने वाले परमहंसों की एकमात्र गति आपको हम नमस्कार करते हैं ॥

पञ्चमः श्लोकः

इत्युत्तमश्लोकशिखामणिं जनेष्वभिष्टुवत्स्वन्धककौरवस्त्रियः ।
समेत्य गोविन्दकथा मिथोऽगृणंस्त्रिलोकगीताः शृणु वर्णयामि ते ॥५॥

पदच्छेद— इति उत्तमश्लोक शिखामणिम् जनेषु अभिष्टुवत्सु अन्धक कौरवस्त्रियः ।
समेत्य गोविन्दकथाः मिथः अगृणन् त्रिलोक गीताः शृणु वर्णयामि ते ।।

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	समेत्य	८.	एकत्रित होकर
उत्तमश्लोक	३.	उत्तम कीर्ति वालों में	गोविन्दकथाः	१०.	श्रीकृष्ण की लीलाओं का
शिखामणिम्	४.	सर्वश्रेष्ठ भगवान्	मिथः अगृणन्	११.	परस्पर वर्णन करने लगीं
जनेषु	२.	लोगों में	त्रिलोक गीताः	९.	त्रिभुवन विख्यात
अभिष्टुवत्सु	५.	स्तुति कर चुकने पर	शृणु	१२.	सुनो (वह)
अन्धक	६.	यादव और	वर्णयामि	१४.	कहता हूँ
कौरवस्त्रियः ।	७.	कौरव कुल की स्त्रियाँ	ते।।	१३.	तुमसे

श्लोकार्थ—इस प्रकार लोगों में उत्तम कीर्ति वालों में सर्वश्रेष्ठ भगवान् की स्तुति कर चुकने पर यादव और कौरवकुल की स्त्रियाँ एकत्रित होकर त्रिभुवन विख्यात श्रीकृष्ण की लीलाओं का परस्पर वर्णन करने लगीं । सुनो, वह तुमसे कहता हूँ ।।

षष्ठः श्लोकः

द्रौपद्युवाच— **हे वैदर्भ्यच्युतो भद्रे हे जाम्बवति कौसले ।**
हे सत्यभामे कालिन्दि शैब्ये रोहिणि लक्ष्मणे ॥६॥

पदच्छेद— हे वैदर्भि अच्युतः भद्रे हे जाम्बवति कौसले ।
हे सत्यभामे कालिन्दि शैब्ये रोहिणि लक्ष्मणे ।।

शब्दार्थ—

हे वैदर्भि	१.	हे रुक्मिणि	हे सत्यभामे	५.	हे सत्यभामे
अच्युतः	१०.	श्रीकृष्ण ने (जैसे विवाह किया बताओ)	कालिन्दि	६.	कालिन्दी
भद्रे	२.	भद्रे	शैब्ये	७.	शैब्ये
हे जाम्बवति	३.	हे जाम्बवति	रोहिणि	८.	रोहिणी
कौसले ।	४.	सत्ये	लक्ष्मणे ।।	९.	लक्ष्मणा (आप लोगो से)

श्लोकार्थ—हे रुक्मिणि ! भद्रे ! हे जाम्बवति ! सत्ये, हे सत्यभामे, कालिन्दी, शैब्ये, रोहिणी, लक्ष्मणे, आप लोगों से श्रीकृष्ण ने जैसे विवाह किया वह बताओ ।।

सप्तमः श्लोकः

हे कृष्णपत्न्य एतन्नो ब्रूत वो भगवान् स्वयम् ।
उपयेमे यथा लोकमनुकुर्वन् स्वमायया ॥७॥

पदच्छेद— हे कृष्ण पत्न्यः एतत् नः ब्रूत वः भगवान् स्वयम् ।
उपयेमे यथा लोकम् अनुकुर्वन् स्व मायया ॥

शब्दार्थ—

हे कृष्ण	१.	हे श्रीकृष्ण की	उपयेमे	१०.	विवाह किया
पत्न्यः	२.	पत्नियो	यथा	९.	जिस प्रकार
एतत् नः	११.	वह हमें	लोकम्	५.	लोगों का
ब्रूत	१२.	बताइये	अनुकुर्वन्	६.	अनुकरण करते हुये
वः	८.	आप लोगों से	स्व	३.	अपनी
भगवान्स्वयम् ।	७.	भगवान् ने स्वयम्	मायया ॥	४.	माया से

श्लोकार्थ—हे श्रीकृष्ण की पत्नियों, अपनी माया से लोगों का अनुकरण करते हुये भगवान् ने स्वयम् आप लोगों से जिस प्रकार विवाह किया वह हमें बताइये ॥

अष्टमः श्लोकः

रुक्मिण्युवाच—
चैद्याय मार्पयितुमुद्यतकार्मुकेषु राजस्वजेयभटशेखरिताङ्घ्रिरेणुः ।
निन्ये मृगेन्द्र इव भागमजावियूथात् तच्छ्रीनिकेतचरणोऽस्तु ममार्चनाय ॥८॥

पदच्छेद—चैद्याय मा अर्पयितुम् उद्यतकार्मुकेषु राजसु अजेयभट शेखरित अङ्घ्रिरेणुः ।
निन्ये मृगेन्द्र इव भागम् अजअवियूथात् तत् श्रीनिकेतचरणः अस्तु मम अर्चनाय ॥

शब्दार्थ—

चैद्याय	१.	शिशुपाल को	निन्ये	९.	मुझे वैसे ही हर लाये
मा	२.	मुझे	मृगेन्द्र इव	१०.	जैसे सिंह
अर्पयितुम्	३.	देने के लिये	भागम्	१२.	अपना भाग ले जाता है
उद्यतकार्मुकेषु	५.	धनुष तान लेने पर	अजअवियूथात्	११.	बकरी और भेड़ों के झुन्ड से
राजसु	४.	राजाओं के	तत्	१३.	उन्हीं भगवान्
अजेयभट	६.	अजेय वीरों के	श्रीनिकेतचरणः	१४.	लक्ष्मी निवास के चरण
शेखरित	७.	मुकुट पर स्थित	अस्तु	१६.	लिये हों
अङ्घ्रिरेणुः ।	८.	चरण धूलि वाले (भगवान्)	ममअर्चनाय ॥	१५.	मेरी पूजा के

श्लोकार्थ—शिशुपाल को मुझे देने के लिये राजाओं के धनुष तान लेने पर अजेय वीरों के मुकुट पर स्थित चरण धूलि वाले भगवान् मुझे वैसे ही हर लाये जैसे सिंह बकरी और भेड़ों के झुन्ड से अपना भाग ले जाता है । उन्हीं भगवान् लक्ष्मी निवास के चरण मेरी पूजा के लिये हों ॥

सत्यभामोवाच—

नवमः श्लोकः

यो मे सनाभिवधतप्तहृदा ततेन लिप्ताभिशापमपमार्ष्टुमुपाजहार ।
जित्वर्क्षराजमथ रत्नमदात् स तेन भीतः पितादिशत मां प्रभवेऽपि दत्ताम् ।।९।।

पदच्छेद—यः मे सनाभिवध तप्तहृदा ततेन लिप्ता अभिशापम् अपमार्ष्टुम् उपजहार ।
जित्वा ऋक्षराजम् अथ रत्नम् अदात् सः तेन भीतः पिता आदिशत् माम् प्रभवे अपि दत्ताम् ।।

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	जित्वाऋक्षराजम्	८.	ऋक्षराज (जाम्बवान् को) जीतकर
मे	४.	मेरे	अथ रत्नम्	९.	उस रत्न (स्यमन्तकमणि) को
सनाभिवध	२.	भाई की हत्या से	अदात्	११.	पिताजी को दे दिया
तप्तहृदा	३.	सन्तप्त चित्तवाले	सः तेन भीतः	१२.	उस मिथ्या कलंक से डरे हुये
ततेनलिप्ता	५.	पिताजी के द्वारा लगाये गये	पिता	१३.	पिता ने
अभिशापम्	६.	कलंक	आदिशत्	१६.	समर्पित कर दिया
अपमार्ष्टुम्	७.	दूर करने के लिये	माम् प्रभवे	१५.	मुझे भगवान् को रत्नसहित
उपजहार ।	१०.	ले आये (और)	अपिदत्ताम् ।।	१४.	दूसरे को दी हुई

श्लोकार्थ—जो भाई हत्या से सन्तप्त चित्तवाले मेरे पिताजी के द्वारा लगाये गये कलंक को दूर करने के लिये ऋक्षराज जाम्बवान् को जीतकर उस रत्न स्यमन्तक मणि को ले आये और पिता को दे दिया। उस मिथ्या कलंक से डरे हुये पिता ने दूसरे को दी हुई मुझे भगवान् को रत्न सहित समर्पित कर दिया ।।

जाम्बवत्युवाच—

दशमः श्लोकः

प्राज्ञाय देहकृदमुं निजनाथदेवं सीतापतिं त्रिणवहान्यमुनाभ्ययुध्यत् ।
ज्ञात्वा परीक्षित उपाहरदर्हणं मां पादौ प्रगृह्य मणिनाहममुष्य दासी ।।१०।।

पदच्छेद—प्राज्ञाय देहकृत् अमुम् निजनाथदेवम् सीतापतिम् त्रिणवहानि अमुना अभिअयुध्यत् ।
ज्ञात्वा परीक्षितः उपाहरत् अर्हणम् माम् पादौ प्रगृह्य मणिना अहम् अमुष्य दासी ।।

शब्दार्थ—

प्राज्ञाय	५.	अच्छी प्रकार न जानकर	ज्ञात्वा	१०.	जानकर
देहकृत्	१.	देहधारी	परीक्षितः	९.	परीक्षा लेने पर तथा
अमुम्निजनाथ	२.	उन अपने स्वामी	उपाहरत्	१४.	समर्पित कर दिया
देवम्	३.	देव	अर्हणम् माम्	१३.	मुझे पूजा सामग्री के रूप में
सीतापतिम्	४.	रामचन्द्र को (पिता ने)	पादौ प्रगृह्य	११.	उनके चरण पकड़कर
त्रिणवहानि	६.	सत्ताइस दिन	मणिना	१२.	मणि के साथ
अमुना	७.	उनसे	अहम्	१५.	मुझे
अभियुध्यत् ।	८.	युद्ध किया	अमुष्यदासी ।।	१६.	उनकी दासी रहने की कामना है

श्लोकार्थ—देहधारी उन अपने स्वामी देव रामचन्द्र को पिता ने अच्छी प्रकार न जानकर सत्ताइस दिन उनसे युद्ध किया। परीक्षा लेने पर तथा जानकर उनके चरण पकड़कर मणि के साथ पूजा सामग्री के रूप में मुझे समर्पित कर दिया। मुझे उनकी दासी बनी रहने की कामना है ।।

एकादशः श्लोकः

कालिन्द्युवाच— तपश्चरन्तीमाज्ञाय स्वपादस्पर्शनाशया ।
सख्योपेत्याग्रहीत् पाणिं योऽहं तद्गृहमार्जनी ॥११॥

पदच्छेद— तपः चरन्तीम् आज्ञाय स्वपाद स्पर्शन आशया ।
सख्या उपेत्य अग्रहीत् पाणिम् यः अहम् तत् गृह मार्जनी ॥

शब्दार्थ—

तपः	५.	तपस्या	सख्या उपेत्य	८.	सखा अर्जुन के साथ आकर
चरन्तीम्	६.	करती हुई मुझे	अग्रहीत्	१०.	पकड़ लिया
आज्ञाय	७.	जानकर	पाणिम्	९.	मेरा हाथ
स्वपाद	२.	अपने चरणों में	यः	१.	उन्होंने
स्पर्शन	३.	स्पर्श करने की	अहम् तत्	११.	मैं उनका
आशया ।	४.	कामना से	गृह मार्जनी ॥	१२.	घर बुहारने वाली दासी हूँ

श्लोकार्थ—उन्होंने अपने चरणों का स्पर्श करने की कामना से तपस्या करती हुई मुझे जानकर सखा अर्जुन के साथ आकर मेरा हाथ पकड़ लिया । मैं उनका घर बुहारने वाली दासी हूँ ॥

द्वादशः श्लोकः

मित्रविन्दोवाच—

यो मां स्वयंवरउपेत्य विजित्य भूपान् निन्ये श्वयूथगमिवात्मबलिं द्विपारिः ।
भ्रातॄंश्च मेऽपकुरुतः स्वपुरं श्रियौकस्तस्यास्तु मेऽनुभवमङ्घ्र्यवनेजनत्वम् ॥१२॥

पदच्छेद—यः माम् स्वयंवरे उपेत्य विजित्य भूपान् निन्ये श्वयूथगम् इव आत्म बलिम् द्विप अरिः ।
भ्रातॄन् च मे अपकुरुतः स्वपुरम् श्रिया ओकः तस्य अस्तु मे अनुभवम् अङ्घ्रि अवनेजनत्वम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	भ्रातॄन च	५.	मेरे भाइयों को भी
माम्	७.	मुझे	मे अपकुरुतः	४.	मेरा अपकार करते हुये
स्वयंवरे उपेत्य	२.	स्वयंवर में आकर	स्वपुरम्	९.	अपनी नगरी द्वारका में
विजित्य	६.	जीतकर	श्रिया ओकः	८.	शोभा सम्पन्न
भूपान्	३.	राजाओं को (तथा)	तस्य	१४.	उनके
निन्ये	१०.	ले आये	अस्तु मे	१८.	मुझे प्राप्त होता रहे
श्वयूथगम् इव	१२.	कुत्तों के झुन्ड में से जैसे	अनुभवम्	१७.	सौभाग्य
आत्मबलिम्	१३.	अपना भाग ले जाये	अङ्घ्रि	१५.	चरणों को
द्विप अरिः ।	११.	हाथियों का शत्रु सिंह	अवनेजनत्वम् ॥	१६.	धोने का

श्लोकार्थ—जो स्वयंवर में आकर राजाओं का तथा मेरा अपकार करते हुये मेरे भाइयों को भी जीतकर मुझे शोभा सम्पन्न अपनी नगरी द्वारका में ले आये, जैसे हाथियों का शत्रु सिंह कुत्तों के झुन्ड में से अपना भाग ले जाये, उनके चरणों को धोने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होता रहे ·

त्रयोदशः श्लोक.

सत्योवाच—

सप्तोक्षणोऽतिबलवीर्यसुतीक्ष्णश्रृंगान् पित्रा कृतान् क्षितिपवीर्यपरीक्षणाय।
तान् वीरदुर्मदहनस्तरसा निगृह्य क्रीडन् बबन्ध ह यथा शिशवोऽजतोकान् ॥१३॥

पदच्छेद— सप्त उक्षण अतिबल वीर्य सुतीक्ष्ण श्रृंगान् पित्रा कृतान् क्षितिपवीर्यं परीक्षणाय।
तान् वीर दुर्मदहनः तरसा निगृह्य क्रीडन् बबन्ध ह यथा शिशवः अजतोकान् ॥

शब्दार्थ—

सप्तउक्षणः	८.	सात बैलों को	तान्	१०.	उन बैलों को भगवान् ने
अतिबलवीर्य	४.	अति बलवान् पराक्रमी	वीर	६.	वीरों के
सुतीक्षणश्रृंगान्	५.	बहुत तीखे सींग वाले	दुर्मदहनः	७.	घमंड को चूर-चूर करने वाले
पित्रा	१.	मेरे पिता ने	तरसा निगृह्य	११.	शीघ्रता से पकड़कर
कृतान्	९.	रख छोड़ा था	क्रीडन् बबन्धह	१२.	खेलते हुये वैसे ही बांध लिया
क्षितीपवीर्यं	२.	राजाओं की शक्ति की	यथाशिशवः	१३.	जैसे छोटे-छोटे बच्चे
परीक्षणाय।	३.	परीक्षा के लिये	अजतोकान् ॥	१४.	बकरी के बच्चों को पकड़ लेता है

श्लोकार्थ—मेरे पिता ने राजाओं की शक्ति की परीक्षा के लिये अति बलवान्, पराक्रमी, बहुत तीखे सींग वाले, वीरों के घमंड को चूर-चूर करने वाले, सात बैलों को रख छोड़ा था। उन बैलों को भगवान् ने शीघ्रता से पकड़कर वैसे ही बांध लिया जैसे छोटे-छोटे बच्चे बकरी के बच्चों को पकड़ लेता है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

य इत्थं वीर्यशुल्कां मां दासीभिश्चतुरङ्गिणीम्।
पथि निर्जित्य राजन्यान् निन्ये तद्दास्यमस्तु मे ॥१४॥

पदच्छेद— यः इत्थम् वीर्य शुल्काम् माम् दासीभिः चतुरङ्गिणीम्।
पथि निर्जित्य राजन्यान् निन्ये तत् दास्यम् अस्तु मे ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो	पथि	५.	मार्ग में
इत्थम्	२.	इस प्रकार	निर्जित्य	७.	जीतकर
वीर्यशुल्काम	३.	बल पौरुष के द्वारा	राजन्यान्	६.	विरोधी राजाओं को
माम्	४.	मुझे प्राप्त कर (और)	निन्ये	१०.	मुझे ले आये
दासीभिः	९.	दासियों के साथ	तत्दास्यम्	११.	उनकी सेवा का अवसर
चतुरङ्गिणीम्।	८.	चतुरङ्गिणी सेना (और)	अस्तु मे ॥	१२.	मुझे सदा प्राप्त होता रहे

श्लोकार्थ—जो इस प्रकार बल-पौरुष के द्वारा मुझे प्राप्तकर और मार्ग में विरोधी राजाओं को जीत कर चतुरगिणी सेना और दासियों के साथ मुझे ले आये उनकी सेवा का अवसर मुझे सदा प्राप्त होता रहें ॥

पञ्चदशः श्लोकः

भद्रोवाच— पिता मे मातुलेयाय स्वयमाहूय दत्तवान् ।
कृष्णे कृष्णाय तच्चित्तामक्षौहिण्या सखीजनैः ॥१५॥

पदच्छेद— पिता मे मातुलेयाय स्वयम् आहूय दत्तवान् ।
कृष्णे कृष्णाय तत् चित्ताम् अक्षौहिण्या सखीजनैः ॥

शब्दार्थ—

पिता मे	२. पिताजी ने मेरे	कृष्णे	१. हे द्रौपदी जी !
मातुलेयाय	३. माता के पुत्र	कृष्णाय	४. श्रीकृष्ण को
स्वयम्	५. स्वयम् ही	तत्चित्ताम्	७. उनमें चित्त लगाये हुये
आहूय	६. बुलाकर	अक्षौहिण्या	८. अक्षौहिणी
दत्तवान् ।	१०. मुझे समर्पित कर दिया	सखीजनैः ॥	९. सखियों के साथ

श्लोकार्थ—हे द्रौपदी जी ! पिताजी ने मेरे मामा के पुत्र श्रीकृष्ण को स्वयम् ही बुलाकर उनमें चित्त लगाये हुये अक्षौहणी सेना और सखियों के साथ मुझे समर्पित कर दिया ॥

षोडशः श्लोकः

अस्य मे पादसंस्पर्शो भवेज्जन्मनि जन्मनि ।
कर्मभिर्भ्राम्यमाणाया येन तच्छ्रेय आत्मनः ॥१६॥

पदच्छेद— अस्य मे पाद संस्पर्शः भवेत् जन्मनि जन्मनि ।
कर्मभिः भ्राम्यमाणायाः येन तत् श्रेयः आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

अस्य मे	५. मुझे इनके	कर्मभिः	१. कर्म के अनुसार
पाद	६. चरणों का	भ्राम्यमाणायाः	४. चक्कर काटते हुये
सस्पर्शः	७. स्पर्श	येन	९. जिसे मैं
भवेत्	८. प्राप्त होता रहे	तत्	११. परम
जन्मनि	२ जन्म	श्रेयः	१२. कल्याण समझती हूँ
जन्मनि ।	३. जन्मान्तर में	आत्मनः ॥	१०. अपना

श्लोकार्थ—कर्म के अनुसार जन्म-जन्मान्तर में चक्कर काटते हुये मुझे इनके चरणों का स्पर्श प्राप्त होता रहे । जिसे मैं अपना परम कल्याण समझती हूँ ॥

सप्तदशः श्लोकः

लक्ष्मणोवाच—

ममापि राज्ञ्यच्युतजन्मकर्म श्रुत्वा मुहुर्नारदगीतमास ह।
चित्तं मुकुन्दे किल पद्महस्तया वृतः सुसंमृश्य विहाय लोकपान् ॥१७॥

पदच्छेद— मम अपि राज्ञि अच्युत जन्म कर्म श्रुत्वा मुहुः नारद गीतम् आस ह।
चित्तम् मुकुन्दे किल पद्महस्तया वृतः सुसंमृश्य विहाय लोकपान् ॥

शब्दार्थ—

मम अपि	१३.	मेरा भी	चित्तम्	१४.	चित्त
राज्ञि	१.	हे रानी जी !	मुकुन्दे	१५.	श्रीकृष्ण में
अच्युत	४.	भगवान् श्रीकृष्ण के	किल	७.	तथा
जन्म कर्म	५.	जन्म और कर्म को	पद्महस्तया	८.	लक्ष्मी ने भी
श्रुत्वा	६.	सुनकर	वृतः	११.	वरण किया (यह)
मुहुः	३.	बार-बार	सुसंमृश्य	१२.	अच्छी प्रकार सोचकर
नारद गीतम्	२.	नारद द्वारा लाये गये	विहाय	१०.	त्याग करके (भगवान् का ही)
आस ह।	१६.	लग गया	लोकपान् ॥	९.	लोकपालों को

श्लोकार्थ—हे रानी जी ! नारद द्वारा गाये गये बार-बार भगवान् श्रीकृष्ण के जन्म और कर्म को सुनकर तथा लक्ष्मी ने भी लोकपालों को त्याग करके भगवान् का ही वर किया, यह अच्छी प्रकार सोचकर मेरा भी चित्त श्रीकृष्ण में ही लग गया ॥

अष्टादशः श्लोकः

ज्ञात्वा मम मतं साध्वि पिता दुहितृवत्सलः।
बृहत्सेन इति ख्यातस्तत्रोपायमचीकरत् ॥१८॥

पदच्छेद— ज्ञात्वा मम मतम् साध्वि पिता दुहितृ वत्सलः।
बृहत्सेन इति ख्यातः तत्र उपायम् अचीकरत् ॥

शब्दार्थ—

ज्ञात्वा	१०.	जानकर	बृहत्सेन	४.	बृहत्सेन
मम	८.	मेरा	इति	५.	इस
मतम्	९.	आशय	ख्यातः	६.	नाम से प्रसिद्ध
साध्वि	१.	हे पतिव्रते	तत्	११.	वहाँ पर यह
पिता	७.	पिता ने	उपायम्	१२.	उपाय
दुहितृ	२.	पुत्री के प्रति	अचीकरत् ॥	१३.	किया
वत्सलः।	३.	स्नेह रखने वाले			

श्लोकार्थ—हे पतिव्रते ! पुत्री के प्रति स्नेह रखने वाले बृहत्सेन इस नाम से प्रसिद्ध पिता ने मेरा आशय जानकर वहाँ पर यह उपाय किया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

यथा स्वयंवरे राज्ञि मत्स्यः पार्थेप्सया कृतः ।
अयं तु बहिराच्छन्नो दृश्यते स जले परम् ॥१९॥

पदच्छेद— यथा स्वयंवरे राज्ञि मत्स्यः पार्थ ईप्सया कृतः ।
अयम् तु बहिः आच्छन्नः दृश्यते सः जले परम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	२.	जैसे आपके	अयम्	९.	हमारे यहाँ का मत्स्य
स्वयंवरे	३.	स्वयंवर में	तु	८.	किन्तु
राज्ञि	१.	रानी जी	बहिः	१०.	बाहर से
मत्स्यः	६.	मत्स्य वेध का आयोजन	आच्छन्नः	११.	ढका हुआ था
पार्थ	४.	अर्जुन को	दृश्यते	१४.	दीख पड़ती थी
ईप्सया	५.	पाने की इच्छा से	सः	१३.	उसकी परछाईं
कृतः ।	७.	किया था (वैसे ही पिता ने किया था	जले परम् ॥	१२.	केवल जल में

श्लोकार्थ—रानी जी ! जैसे आपके स्वयंवर में अर्जुन को पाने की इच्छा से मत्स्यवेध का आयोजन किया था वैसे ही मेरे पिता ने किया था । किन्तु हमारे यहाँ का मत्स्य बाहर से ढका हुआ था । केवल जल में उसकी परछाईं दीख पड़ती थी ॥

विंशः श्लोकः

श्रुत्वैतत् सर्वतो भूपा आययुर्मत्पितुः पुरम् ।
सर्वास्त्रशस्त्रतत्त्वज्ञाः सोपाध्यायाः सहस्रशः ॥२०॥

पदच्छेद— श्रुत्वा एतत् सर्वतः भूपाः आययुः मत् पितुः पुरम् ।
सर्व अस्त्र-शस्त्र तत्त्वज्ञाः स उपाध्यायाः सहस्रशः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	२.	सुनकर	सर्व	३.	सब प्रकार के
एतत्	१.	यह	अस्त्र	४.	अस्त्रों और
सर्वतः	१३.	सब ओर से	शस्त्र	५.	शस्त्रों के
भूपाः	१०.	राजा लोग	तत्त्वज्ञाः	६.	तत्त्वों को जानने वाले
आययुः	१४.	आने लगे	स	८.	साथ
मत् पितुः	११.	मेरे पिता के	उपाध्यायाः	७.	गुरुओं के
पुरम् ।	१२.	नगर में	सहस्रशः ॥	९.	हजारों

श्लोकार्थ—यह सुनकर सब प्रकार के अस्त्रों और शस्त्रों के तत्त्वों के जानने वाले गुरुओं के साथ हजारों राजा लोग मेरे पिता के नगर में सब ओर से आने लगे ॥'

एकविंशः श्लोकः

पित्रा सम्पूजिताः सर्वे यथावीर्यं यथावयः ।
आददुः सशरं चापं वेद्धुं पर्षदि मद्धियः ॥२१॥

पदच्छेद— पित्रा सम्पूजिताः सर्वे यथा वीर्यम् यथा वयः ।
आददुः सशरम् चापम् वेद्धुम् पर्षदि मत् धियः ॥

शब्दार्थ—

पित्रा	१.	पिता जी के द्वारा	सशरम्	११.	बाण
सम्पूजितः	४.	सत्कृत होने पर	चापम्	१०.	धनुष और
सर्वे	७.	सभी राजाओं ने	वेद्धुम्	९.	मत्स्य को वेधने के लिये
यथावीर्यम्	२.	बल-पौरुष और	पर्षदि	८.	स्वयंवर में
यथावयः	३.	अवस्था के अनुसार	मत्	५.	मुझे
आददुः ।	१२.	उठाये	धियः ॥	६.	पाने के लिये

श्लोकार्थ—पिता के द्वारा बल, पौरुष और अवस्था के अनुसार सत्कृत होने पर मुझे पाने के लिये सभी राजाओं ने स्वयंवर में मत्स्यवेध के लिये धनुष और बाण उठाये ॥

द्वाविंशः श्लोकः

आदाय व्यसृजन् केचित् सज्यं कर्तुमनीश्वराः ।
आकोटि ज्यां समुत्कृष्य पेतुरेकेऽमुना हताः ॥२२॥

पदच्छेद— आदाय व्यसृजन् केचित् सज्यम् कर्तुम् अनीश्वराः ।
आकोटि ज्याम् समुत्कृष्य पेतुः एके अमुना हताः ॥

शब्दार्थ—

आदाय	५.	धनुष लेकर	आकोटि	८.	दूसरे सिरे तक
व्यसृजन्	६.	रख दिया (कुछ)	ज्याम्	७.	धनुष की डोरी को
केचित्	४.	कुछ राजाओं ने	समुत्कृष्य	९.	खींचकर
सज्यम्	१.	धनुष पर तांतें	पेतुः	१०.	गिर गये
कर्तुम्	२.	चढ़ाने में	एके अमुना	११.	कुछ उससे
अनीश्वराः ।	३.	असमर्थ	आहताः ॥	१२.	आहत हो गये

श्लोकार्थ—धनुष पर तांत चढ़ाने में असमर्थ कुछ राजाओं ने धनुष लेकर रख दिया । कुछ धनुष की डोरी को दूसरे सिरे तक खींचकर गिर गये, कुछ उससे आहत हो गये ।

त्रयोविंशः श्लोकः

सज्यं कृत्वा परे वीरा मागधाम्बष्ठचेदिपाः ।
भीमो दुर्योधनः कर्णो नाविन्दंस्तदवस्थितिम् ॥२३॥

पदच्छेद— सज्यम् कृत्वा परे वीराः मागध अम्बष्ठ चेदिपाः ।
भीमः दुर्योधनः कर्णः न अविन्दन् तत् अवस्थितिम् ॥

शब्दार्थ—

सज्यम	९.	धनुष पर डोरी तो	भीमः	६.	भीमसेन
कृत्वा	१०.	चढ़ा ली	दुर्योधनः	७.	दुर्योधन और
परे	१.	दूसरे	कर्णः	८.	कर्ण ने
वीराः	२.	वीरों	न	१३.	नहीं
मागध	३.	जरासन्ध	अविन्दन्	१४.	पता पाया
अम्बष्ठ	४.	अम्बष्ठ नरेश	तत्	११.	किन्तु मछली की
चेदिपाः ।	५.	शिशुपाल	अवस्थितिम् ॥	१२.	स्थिति का

श्लोकार्थ—दूसरे वीरों जरासन्ध, अम्बष्ठ नरेश, शिशुपाल, भीमसेन, दुर्योधन और कर्ण ने धनुष पर डोरी तो चढ़ा ली, किन्तु मछली की स्थिति का पता नहीं पाया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

मत्स्याभासं जले वीक्ष्य ज्ञात्वा च तदवस्थितिम् ।
पार्थो यत्तोऽसृजद् बाणं नाच्छिनत् पस्पृशे परम् ॥२४॥

पदच्छेद— मत्स्य आभासम् जले वीक्ष्य ज्ञात्वा च तत् अवस्थितिम् ।
पार्थः यत्तः असृजत् बाणम् न अच्छिनत् पस्पृशे परम् ॥

शब्दार्थ—

मत्स्य	२.	मछली की	पार्थः	८.	अर्जुन ने
आभासम्	३.	परछाईं को	यत्तः	९.	सावधानी से
जले	१.	जल में	असृजत्	११.	छोड़ा (परन्तु)
वीक्ष्य	४.	देखकर	बाणम्	१०.	बाण को
ज्ञात्वा	७.	जानकर	न अच्छिनत्	१२.	लक्ष्यवेध नहीं हुआ
च तत्	५.	और उसकी	पस्पृशे	१४.	उसका स्पर्श मात्र किया
अवस्थितिम् ।	६	स्थिति को	परम् ॥	१३	केवल

श्लोकार्थ—जल में मछली की परछाईं को देखकर और उसकी स्थिति को जानकर अर्जुन ने बाण को छोड़ा । परन्तु लक्ष्यवेध नहीं हुआ । केवल उसका स्पर्श मात्र किया ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

राजन्येषु निवृत्तेषु भग्नमानेषु मानिषु ।
भगवान् धनुरादाय सज्यं कृत्वाथ लीलया ॥२५॥

पदच्छेद— राजन्येषु निवृत्तेषु भग्नमानेषु मानिषु ।
भगवान् धनुः आदाय राज्यम् कृत्वा अथ लीलया ॥

शब्दार्थ—

राजन्येषु	१.	राजाओं ने (लक्ष्यवेध की)	धनुः	६.	धनुष
निवृत्तेषु	२.	चेष्टा छोड़ दी तथा	आदाय	७.	उठाया (और)
भग्नमानेषु	४.	मानमर्दन हो जाने पर	राज्यम्	९.	उस पर डोरी
मानिषु ।	३.	अभिमानियों के	कृत्वा	१०.	चढ़ा दी
भगवान्	५.	भगवान् ने	अथ लीलया ॥	८.	खेल ही खेल में

श्लोकार्थ—राजाओं ने लक्ष्यवेध की चेष्टा छोड़ दी । तथा अभिमानियों का मानमर्दन हो जाने पर भगवान् श्रीकृष्ण ने धनुष उठाया । और खेल हो खेल में उस पर डोरी चढ़ा दी ॥

षड्विंशः श्लोकः

तस्मिन् सन्धाय विशिखं मत्स्यं वीक्ष्य सकृज्जले ।
छित्त्वेषुणापातयत्तं सूर्ये चाभिजिति स्थिते ॥२६॥

पदच्छेद— तस्मिन् सन्धाय विशिखम् मत्स्यम् वीक्ष्य सकृत् जले ।
छित्त्वा इषुणा अपातयत् तम् सूर्ये च अभिजिति स्थिते ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	उसमें	छित्त्वा	१०.	बेधकर
सन्धाय	३.	चढ़ाकर	इषुणा	९.	बाण से
विशिखम्	२.	बाण को	अपातयत्	११.	नीचे गिरा दिया
मत्स्यम्	६.	मछली को	तम्	८.	उसे
वीक्ष्य	७.	देखकर	सूर्ये च	१२	उस समय सूर्य
सकृत्	४.	एकबार	अभिजित्	१३.	अभिजित् नामक मुहूर्त में
जले ।	५.	जल में	स्थिते ॥	१४.	स्थित थे

श्लोकार्थ—उसमें बाण को चढ़ाकर एक बार जल में मछली को देखकर उसे बाण से बेधकर नीचे गिरा दिया । उस समय सूर्य अभिजित् मुहूर्त में स्थित थे ॥

सप्तविंशः श्लोकः

दिवि दुन्दुभयो नेदुर्जयशब्दयुता भुवि ।
देवाश्च कुसुमासारान् मुमुचुर्हर्षविह्वलाः ॥२७॥

पदच्छेद— दिवि दुन्दुभयः नेदुः जय शब्द युताः भुवि ।
देवाः च कुसुम आसारान् मुमुचुः हर्षविह्वलाः ॥

शब्दार्थ—

दिवि	१. आकाश में	देवाः	८. देवता
दुन्दुभयः	२. दुन्दुभियाँ	च	७. और
नेदुः	३. बजने लगीं	कुसुम	१०. फूलों की
जय शब्द	५. जय-जयकार का शब्द	आसारान्	११. वर्षा
युताः	६. होने लगा	मुमुचुः	१२. करने लगे
भुवि ।	४. पृथ्वी पर	हर्षविह्वलाः ॥	९. आनन्द से विभोर होकर

श्लोकार्थ—आकाश में दुन्दुभियाँ बजने लगीं । पृथ्वी पर जय-जयकार का शब्द होने लगा । और देवता आनन्द से विभोर होकर फूलों की वर्षा करने लगे ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तद् रङ्गमाविशमहं कलनूपुराभ्यां पद्भ्यां प्रगृह्य कनकोज्ज्वलरत्नमालाम् ।
नूत्ने निवीय परिधाय च कौशिकाग्र्ये सव्रीडहासवदना कबरीधृतस्रक् ॥२८॥

पदच्छेद— तत् रङ्गम् आविशम् अहम् कलनूपुराभ्याम् पद्भ्याम् प्रगृह्य कनक उज्ज्वल रत्नमालाम् ।
नूत्ने निवीय परिधाय च कौशिक अग्र्ये सव्रीडहास वदना कबरी धृत स्रक् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. उसी समय	नूत्ने	९. मैंने नये
रङ्गम्	५. रङ्गशाला में	निवीय	१०. बने हुये
आविशम् अहम्	६. मैंने प्रवेश किया	परिधाय च	१२. पहन रखे थे
कलनूपुराभ्याम्	८. पायल शब्द कर रहे थे	कौशिकअग्र्ये	११. रेशमी वस्त्र
पद्भ्याम्	७. मेरे पैरों के	सव्रीडहास	१४. लज्जामिश्रित मुस्कान थी और
प्रगृह्य	४. लेकर	वदना	१५. जूड़े में
कनक उज्ज्वलः	२. सुवर्णयुक्त सफेद	कबरीधृत	१३. मुख पर
रत्न मालाम् ।	३. रत्न माला	स्रक् ॥	१६. फूलों की माला थी

श्लोकार्थ—उसी समय सुवर्णयुक्त सफेद रत्न माला लेकर रङ्गशाला में मैंने प्रवेश किया । मेरे पैरों के पायल के शब्द कर रहे थे । मैंने नये बने हुये रेशमी वस्त्र पहन रखे थे । मुख पर लज्जा मिश्रित मुस्कान थी । और जूड़े में फूलों की माला थीं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

उन्नीय वक्त्रमुरुकुन्तलकुण्डलत्विड् गण्डस्थलं शिशिरहासकटाक्षमोक्षैः ।
राज्ञो निरीक्ष्य परितः शनकैर्मुरारेरंसेऽनुरक्तहृदया निदधे स्वमालाम् ॥२९॥

पदच्छेद— उन्नीय वक्त्रम् उरु कुन्तल कुण्डलत्विट् गण्डस्थलम् शिशिर हास कटाक्ष मोक्षैः ।
राज्ञः निरीक्ष्य परितः शनकैः मुरारेः अंसे अनुरक्त हृदया निदधे स्वमालाम् ॥

शब्दार्थ—

उन्नीय	५.	उठाकर	राज्ञः निरीक्ष्य	९.	राजाओं को देखकर (भगवान् में)
वक्त्रम्	४.	अपने मुख को	परितः	८.	चारों ओर से
उरु कुन्तल	१.	घनी घुँघराली अलकों तथा	शनकैः	११.	धीरे से
कुण्डलत्विट्	२.	कुण्डल की कान्ति से युक्त	मुरारेः अंसे	१२.	श्रीकृष्ण के गले में
गण्डस्थलम्	३.	कपोल स्थल वाले	अनुरक्त हृदया	१०.	अनुरक्त हृदय वाली
शिशिर हास	६.	शीतल हास्य रेखा	निदधे	१४.	डाल दी
कटाक्षमोक्षैः ।	७.	तिरछी चितवन से	स्वमालाम् ॥	१३.	अपनी माला

श्लोकार्थ—और घनी घुँघराली अलकों तथा कुण्डल की कान्ति से युक्त कपोल स्थल वाले अपने मुख को उठाकर शीतलहास्य रेखा और तिरछी चितवन से चारों ओर से राजाओं को देखकर भगवान् में अनुरक्त हृदय वाली मैंने अपनी माला श्रीकृष्ण के गले में डाल दी ॥

त्रिंशः श्लोकः

तावन्मृदङ्गपटहाः शङ्खभेर्यानकादयः ।
निनेदुर्नटनर्तक्यो ननृतुर्गायका जगुः ॥३०॥

पदच्छेद— तावत् मृदङ्ग पटहाः शङ्ख भेरी आनक आदयः ।
निनेदुः नट नर्तक्यः ननृतुः गायकाः जगुः ॥

शब्दार्थ—

तावत्	१.	तभी	निनेदुः	७.	बजने लगे
मृदङ्ग	२.	मृदङ्ग	नट	८.	नट और
पटहाः	३.	पखावज	नर्तक्यः	९.	नर्तकियाँ
शङ्ख	४.	शङ्ख	ननृतुः	१०.	नाचने लगीं (तथा)
भेरी	५.	भेरी (ढोल)	गायकाः	११.	गवैये
आनक आदयः ।	६.	नगारे आदि बाजे	जगुः ॥	१२.	गाने लगे

श्लोकार्थ—तभी मृदङ्ग, पखावज, शङ्ख, ढोल, नगारे आदि बाजे बजने लगे । नट और नर्तकियाँ नाचने लगीं । गवैये गाने लगे ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एवं वृते भगवति मयेशे नृपयूथपाः।
न सेहिरे याज्ञसेनि स्पर्धन्तो हृच्छयातुराः ॥३१॥

पदच्छेद— एवम् वृते भगवति मया ईशे नृप यूथपाः।
न सेहिरे याज्ञसेनि स्पर्धन्तः हृच्छय आतुराः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३. इस प्रकार	न	११. नहीं
वृते	६. वरण कर लेने पर	सेहिरे	१२. सहन किया
भगवति	५. भगवान् श्रीकृष्ण का	याज्ञसेनि	१. हे द्रौपदी जी !
मया	२. मेरे द्वारा	स्पर्धन्तः	१०. स्पर्धा करते हुये इसे
ईशे	४. ईश्वर	हृच्छय	८. काम से
नृप यूथपाः।	७. राजाओं के समूह ने	आतुराः॥	९. आतुर एवम्

श्लोकार्थ— हे द्रौपदी जी ! मेरे द्वारा इस प्रकार ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का वरण कर लेने पर राजाओं के समूह ने काम से आतुर एवम् स्पर्धा करते हुये, इसे सहन नहीं किया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

मां तावद् रथमारोप्य हयरत्नचतुष्टयम्।
शार्ङ्गमुद्यम्य सन्नद्धस्तस्थावाजौ चतुर्भुजः ॥३२॥

पदच्छेद— माम् तावत् रथम् आरोप्य हय रत्न चतुष्टयम्।
शार्ङ्गम् उद्यम्य सन्नद्धः तस्थौ आजौ चतुर्भुजः ॥

शब्दार्थ—

माम्	६. मुझे	शार्ङ्गम्	८. शार्ङ्ग धनुष को
तावत्	१. तब-तक	उद्यम्य	९. उठाकर
रथम्	५. रथ पर	सन्नद्धः	१०. कवच को पहनकर
आरोप्य	७. बैठाकर	तस्थौ	१२. खड़े हो गये
हयरत्न	४. उत्तम घोड़ों वाले	आजौ	११. युद्ध के लिये
चतुष्टयम्।	३. चार	चतुर्भुजः॥	२. चतुर्भुज भगवान् श्रीकृष्ण

श्लोकार्थ— तब-तक चतुर्भुज भगवान् श्रीकृष्ण चार उत्तम घोड़ों वाले रथ पर मुझे बैठाकर शार्ङ्ग-धनुष को उठाकर कवच पहनकर युद्ध के लिये खड़े हो गये ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

दारुकश्चोदयामास काञ्चनोपस्करं रथम् ।
मिषतां भूभुजां राज्ञि मृगाणां मृगराडिव ॥३३॥

पदच्छेद— दारुकः चोदयामास काञ्चन उपस्करम् रथम् ।
मिषताम् भूभुजाम् राज्ञि मृगाणाम् मृगराडिव ॥

शब्दार्थ—

दारुकः	२. दारुक ने	मिषताम्	७. सामने ही
चोदयामास	८. हाँक दिया	भूभुजाम्	६. राजाओं के
काञ्चन	३. सोने के	राज्ञि	१. हे रानी जी !
उपस्करम्	४. साज सामान से लदे हुये	मृगाणाम्	९. मृगों के झुण्ड में से
रथम् ।	५. रथ को	मृगराडिव ॥	१०. जैसे सिंह अपना भाग ले जाये

श्लोकार्थ—हे रानी जी ! दारुक ने सोने के साज सामान से लदे हुये रथ को राजाओं के सामने ही हाँक दिया । मृगों के झुण्ड में से जैसे सिंह अपना भाग ले जाये ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

तेऽन्वसज्जन्त राजन्या निषेद्धुं पथि केचन ।
संयत्ता उद्धृतेष्वासा ग्रामसिंहा यथा हरिम् ॥३४॥

पदच्छेद— ते अनुअसज्जन्त राजन्याः निषेद्धुम् पथि केचन ।
संयत्ताः उद्धृत इषुआसाः ग्रामसिंहाः यथा हरिम् ॥

शब्दार्थ—

ते	१. उनमें से	संयत्ताः	६. सज-धजकर
अनुअसज्जन्त	९. तैयार थे	उद्धृत	८. लेकर
राजन्याः	३. राजा लोग	इषु आसाः	७. धनुष
निषेद्धुम्	५. रोकने के लिये	ग्रामसिंहाः	११. कुत्ते
पथि	४. मार्ग में	यथा	१०. जैसे
केचन ।	२. कुछ	हरिम् ॥	१२. सिंह को (रोकना चाहते हों)

श्लोकार्थ—उनमें से कुछ राजा लोग मार्ग में रोकने के लिये सज-धजकर धनुष-बाण लेकर तैयार थे । जैसे कुत्ते सिंह को रोकना चाहते हों ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

ते शार्ङ्गच्युतबाणौघैः कृत्तबाह्वङ्घ्रिकन्धराः ।
निपेतुः प्रधने केचिदेके सन्त्यज्य दुद्रुवुः ॥३५॥

पदच्छेद— ते शार्ङ्गच्युत बाण ओघैः कृत्त बाहु अङ्घ्रि कन्धराः ।
निपेतुः प्रधने केचित् एके सन्त्यज्य दुद्रुवुः ॥

शब्दार्थ—

ते	६.	वे लोग	निपेतुः	८.	गिरने लगे
शार्ङ्गच्युत	१.	शार्ङ्गधनुष से छूटे हुये	प्रधने	७.	युद्ध में
बाण	२.	बाणों के	केचित्	९.	कुछ
ओघैः	३.	समूहों से	एके	१०.	लोग
कृत्तबाहु	४.	कटी हुई बाहों	सन्त्यज्य	११.	युद्ध छोड़कर
अङ्घ्रिकन्धराः ।	५.	पैरों तथा गर्दनों वाले	दुद्रुवुः ॥	१२.	भागने लगे

श्लोकार्थ—शार्ङ्गधनुष से छूटे हुये बाणों के समूहों से कटी हुई बाहों, पैरों तथा गर्दनों वाले वे लोग युद्ध मे गिरने लगे । कुछ लोग युद्ध छोड़कर भागने लगे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

ततः पुरीं यदुपतिरत्यलङ्कृतां रविच्छदध्वजपटचित्रतोरणाम् ।
कुशस्थलीं दिवि भुवि चाभिसंस्तुतां समाविशत्तरणिरिव स्वकेतनम् ॥३६॥

पदच्छेद— ततः पुरीम् यदुपतिः अति अलङ्कृताम् रविच्छद ध्वजपट चित्र तोरणाम ।
कुशस्थलीम् दिवि भुवि च अभिसंस्तुनाम् समाविशत् तरणिः इव स्वकेतनम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	कुशस्थलीम्	१४.	द्वारका
पुरीम्	१५.	पुरी में	दिविभुवि च	८.	स्वर्ग और पृथ्वी पर
यदुपतिः	२.	यदुवंशियों में भगवान् ने	अभिसंस्तुताम्	९.	प्रशंसित
अतिअलङ्कृताम्	७.	अत्यन्त सुसज्जित	समाविशत्	१६.	प्रवेश किया
रविच्छद	३.	सूर्य को ढकने वाले	तरणिः	१०.	सूर्य के
ध्वज पट	४.	ध्वज,वस्त्रों	इव	११.	समान
चित्र	५.	चित्र तथा	स्व	१२.	अपने
तोरणाम् ॥	६.	बन्दनवारों से	केतनम् ॥	१३.	निवास-स्थान

श्लोकार्थ—तदनन्तर यदुवंशियों में श्रेष्ठ भगवान् ने सूर्य को ढकने वाले ध्वज-वस्त्रों, चित्रों तथा बन्दनवारों से अत्यन्त सुसज्जित तथा स्वर्ग और पृथ्वी पर प्रशंसित सूर्य के समान अपने निवास-स्थान द्वारका पुरी में प्रवेश किया ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

पिता मे पूजयामास सुहृत्सम्बन्धिबान्धवान् ।
महार्हवासोऽलङ्कारैः शय्यासनपरिच्छदैः ॥३७॥

पदच्छेद— पिता मे पूजयामास सुहृत् सम्बन्धि बान्धवान् ।
महार्हवासः अलङ्कारैः शय्या आसन परिच्छदैः ।।

शब्दार्थ—

पिता	२.	पिताजी ने	महार्हवासः	६.	बहुमूल्य वस्त्रों
मे	१.	मेरे	अलङ्कारैः	७.	आभूषणों
पूजयामास	११.	पूजा की	शय्या	८.	शय्याओं और
सुहृत्	३.	मित्रों	आसन	९.	आसनों तथा
सम्बन्धि	४.	सम्बन्धियों और	परिच्छदैः ।।	१०.	अन्य सामग्रियों से
बान्धवान् ।	५.	बन्धुओं को			

श्लोकार्थ—मेरे पिताजी ने मित्रों, सम्बन्धियों और बन्धुओं की बहुमूल्य वस्त्रों, आभूषणों, शय्याओं और आसनों तथा अन्य सामग्रियों से पूजा की ।।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

दासीभिः सर्वसम्पद्भिर्भटेभरथवाजिभिः ।
आयुधानि महार्हाणि ददौ पूर्णस्य भक्तितः ॥३८॥

पदच्छेद— दासीभिः सर्वं सम्पद्भिः भट इभ रथ वाजिभिः ।
आयुधानि महार्हाणि ददौ पूर्णस्य भक्तितः ।।

शब्दार्थ—

दासीभिः	२.	दासियाँ	आयुधानि	८.	अस्त्र-शस्त्र
सर्वं	३.	सब प्रकार की	महार्हाणि	७.	बहुमूल्य
सम्पद्भिः	४.	सम्पत्तियाँ	ददौ	१०.	समर्पित किये
भट इभ	५.	सैनिक-हाथी	पूर्णस्य	१.	परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्ण को
रथ वाजिभिः ।	६.	रथ-घोड़े एवम्	भक्तितः ।।	९.	भक्तिपूर्वक

श्लोकार्थ—मेरे पिताजी ने परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्ण को दासियाँ सब प्रकार की सम्पत्तियाँ, सैनिक-हाथी, रथ, घोड़े एवम् बहुमूल्य, अस्त्र शस्त्र भक्तिपूर्वक समर्पित किये ।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

आत्मारामस्य तस्येमा वयं वै गृहदासिकाः।
सर्वसङ्गनिवृत्त्याद्धा तपसा च बभूविम ॥३९॥

पदच्छेद— आत्मारामस्य तस्य इमाः वयम् वै गृह दासिकाः।
सर्व सङ्ग निवृत्त्या अद्धा तपसा च बभूविम ॥

शब्दार्थ—

आत्मारामस्य	८.	आत्माराम	सर्व	१.	हमने पूर्व जन्म में सबकी
तस्य	९.	उन भगवान् की	सङ्ग	२.	आसक्ति
इमाः	६.	ये	निवृत्त्या	३.	छोड़कर
वयम् वै	७.	हम लोग	अद्धा	४.	बहुत बड़ी
गृह	१०.	घर की	तपसा च	५.	तपस्या की होगी (जिससे)
दासिकाः।	११.	दासियाँ	बभूविम ॥	१२.	हुईं

श्लोकार्थ—हमने पूर्व जन्म में सबकी आसक्ति छोड़कर बहुत बड़ी तपस्या की होगी। जिससे ये हम लोग आत्माराम उन भगवान् की घर की दासियाँ हुईं॥

चत्वारिंशः श्लोकः

महिष्य ऊचुः—

भौमं निहत्य सगणं युधि तेन रुद्धा ज्ञात्वाथ नः क्षितिजये जितराजकन्याः।
निर्मुच्य संसृतिविमोक्षमनुस्मरन्तीः पादाम्बुजं परिणिनाय य आप्तकामः ॥४०॥

पदच्छेद— भौमम् निहत्य सगणं युधि तेन रुद्धा ज्ञात्वा अथ नः क्षितिजये जित राजकन्याः।
निर्मुच्य संसृति विमोक्षम् अनुस्मरन्तीः पाद अम्बुजम् परिणिनाय यः आप्तकामः॥

शब्दार्थ —

भौमम्	३.	भौमासुर को	जित राजकन्याः	८.	राजकन्याओं को जीतकर
निहत्य सगणम्	४.	मारकर गणोंसहित	निर्मुच्य	११.	छुड़ाया (और)
युधि	२.	युद्ध में	संसृति	१२.	संसार से
तेन	५.	उसके द्वारा	विमोक्षम्	१३.	मुक्ति दिलाने वाले अपने
रुद्धाः	९.	बन्दी बनायी गईं	अनुस्मरन्तीः	१५.	ध्यान करती हुईं
ज्ञात्वा अथ	१०.	जानकर	पादअम्बुजम्	१४.	चरण कमल का
नः	७.	हम	परिणिनाय	१६	हमसे विवाह कर लिया
क्षितिजये।	६.	पृथ्वी विजय के समय	यःआप्तकामः॥	१.	जिन्होंने पूर्णकाम होने पर भी

श्लोकार्थ—जिन्होंने युद्ध में भौमासुर को गणोंसहित मारकर उसके द्वारा राजाओं को पृथ्वी विजय के समय हम राजकन्याओं को जीतकर बन्दी बनाई गईं जानकर छुड़ाया और संसार से मुक्ति दिलाने वाले अपने चरण कमल का ध्यान करती हुईं हमसे विवाह किया॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

न वयं साध्वि साम्राज्यं स्वाराज्यं भौज्यमप्युत ।
वैराज्यं पारमेष्ठ्यं च आनन्त्यं वा हरेः परम् ।।४१।।

पदच्छेद— न वयम् साध्वि साम्राज्यम् स्वाराज्यम् भौज्यम् अपि उत ।
वैराज्यम् पारमेष्ठचम् च आनन्त्यम् वा हरेः पदम् ।।

शब्दार्थ—

न	१२.	नहीं चाहती है	वैराज्यम्	६.	अणिमादि ऐश्वर्य
वयम् साध्वि	१.	हे पतिव्रते ! हम	पारमेष्ठचम्	७.	ब्रह्मा का पद
साम्राज्यम्	२.	साम्राज्य	आनन्त्यम्	८.	निर्वाण
स्वाराज्यम्	३.	इन्द्रपद	वा	९.	अथवा
भौज्यम्	५.	इन दोनों के भोग	हरेः	१०.	भगवान् का
अपिउत ।	४.	अथवा	पदम् ।।	११.	धाम

श्लोकार्थ—हे पतिव्रते ! हम साम्राज्य, इन्द्रपद अथवा इन दोनों के भोग, अणिमादि ऐश्वर्य, ब्रह्मा का पद, निर्वाण अथवा भगवान् का धाम नहीं चाहती हैं ।।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

कामयामह एतस्य श्रीमत्पादरजः श्रियः ।
कुचकुङ्कुमगन्धाढ्यं मूर्ध्ना वोढुं गदाभृतः ।।४२।।

पदच्छेद— कामयामहे एतस्य श्रीमत् पादरजः श्रियः ।
कुचकुङ्कुम गन्धाढचम् मूर्ध्ना बोढुम् गदाभृतः ।।

शब्दार्थ—

कामयामहे	१२.	चाहती हैं	कुच	६.	कुचों पर लगी हुई
एतस्य	१.	हम इन	कुङ्कुम	७.	केशर को
श्रीमत्	९.	शोभायमान हैं अपने	गन्धआढचम्	८.	सुगन्ध से युक्त एवम्
पाद	३.	चरणों की	मूर्ध्ना	१०.	सिर पर
रजः	४.	धूलि को जो	वोढुम्	११.	ढोना
श्रियः ।	५.	लक्ष्मी के	गदाभृतः ।।	२.	गदाधारी भगवान् के

श्लोकार्थ—हम इन गदाधारी भगवान् के चरणों की धूलि को जो लक्ष्मी के कुचों पर लगी हुई केशर की सुगन्ध से युक्त एवम् शोभा सम्पन्न हैं अपने सिर पर ढोना चाहती हैं ।।

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

व्रजस्त्रियो यद् वाञ्छन्ति पुलिन्द्यस्तृणवीरुधः ।
गावश्चारयतो गोपाः पादस्पर्शं महात्मनः ॥४३॥

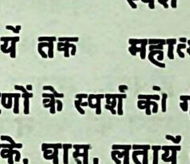
पदच्छेद— व्रजस्त्रियः यत् वाञ्छन्ति पुलिन्द्यः तृणवीरुधः ।
गावः चारयतः गोपाः पाद स्पर्शं महात्मनः ॥

शब्दार्थ—

व्रज	८.	व्रज की	गावः	६.	गायें
स्त्रियः	९.	स्त्रियाँ तथा	चारयतः	५.	(गौ) चराते समय
यत्	१.	जिन	गोपाः	७.	गोप और
वाञ्छन्ति	१२.	चाहती हैं (वही हम भी चाहती हैं)	पाद	३.	चरणों के
पुलिन्द्यः	१०.	भीलनियाँ	स्पर्शं	४.	स्पर्श को
तृण-वीरुधः ।	११.	तिनके, घास, लतायें तक	महात्मनः ॥	२.	भगवान् श्रीकृष्ण के

श्लोकार्थ—जिन भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों के स्पर्श को गौ चराते समय गायें, गोप और व्रज की स्त्रियाँ, तथा भीलनियाँ, तिनके, घास, लतायें तक चाहती हैं, वही हम भी चाहती हैं ।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे पृथुकोपाख्यानं नाम
त्र्यशीतितमः अध्यायः ॥८३॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्
दशमः स्कन्धः
चतुरशीतितमः अध्यायः
प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—

श्रुत्वा पृथा सुबलपुत्र्यथ याज्ञसेनी माधव्यथ क्षितिपपत्न्य उत स्वगोप्यः।
कृष्णेऽखिलात्मनि हरौ प्रणयानुबन्धं सर्वा विसिस्म्युरलमश्रुकलाकुलाक्ष्यः ॥१॥

पदच्छेद— श्रुत्वा पृथा सुबल पुत्री याज्ञसेनी माधवी अथ क्षितिप पत्न्यः उत स्व गोप्यः।
कृष्णे अखिल आत्मनि हरौ प्रणय अनुबन्धं सर्वाः विसिस्म्युः अलम् अश्रुकला आकुलाक्ष्यः ॥

शब्दार्थ—

श्रुत्वा	१२.	सुनकर	कृष्णे	९.	श्रीकृष्ण के प्रति
पृथा सुबलपुत्री	२.	कुन्ती, गान्धारी	अखिलआत्मनि	८.	सबके आत्मा
अथ	१.	तदनन्तर	हरौ प्रणय	१०.	कृष्ण की पत्नियों के प्रेम की
याज्ञसेनी	३.	द्रौपदी	अनुबन्धं	११.	प्रगाढ़ता को
माधवी अथ	४.	सुभद्रा और	सर्वाः	१३.	सब की सब
क्षितिपपत्न्यः	५.	राज पत्नियाँ	विसिस्म्युःअलम्	१४.	विस्मित हो गईं और
उत	६.	तथा	अश्रुकला	१५.	आँसू की बूंदों से उनकी
स्व गोप्यः।	७.	अपनी गोपियां	आकुलाक्ष्यः ॥	१६.	आँखें डब-डबा आईं

श्लोकार्थ—तदनन्तर कुन्ती, गान्धारी, द्रौपदी, सुभद्रा और राजपत्नियां तथा अपनी गोपियाँ सबके आत्मा श्रीकृष्ण के प्रति कृष्ण की पत्नियों के प्रेम की प्रगाढ़ता को सुनकर सबकी सब विस्मित हो गईं। और आंसू की बूंदो से उनकी आँखें डब-डबा आईं ॥

द्वितीयः श्लोकः

इति सम्भाषमाणासु स्त्रीभिः स्त्रीषु नृभिर्नृषु।
आययुर्मुनयस्तत्र कृष्णरामदिदृक्षया ॥२॥

पदच्छेद — इति सम्भाषमाणासु स्त्रीभिः स्त्रीषु नृभिः नृषु।
आययुः मुनयः तत्र कृष्ण राम दिदृक्षया ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	आययुः	१२.	आये
सम्भाष	५.	बातें	मुनयः	११.	मुनिगण
माणासु	६.	कर रहे थे कि	तत्र	१०.	वहाँ पर
स्त्रीभिः	२.	स्त्रियों से	कृष्ण	७.	श्रीकृष्ण और
स्त्रीषु नृभिः	३.	स्त्रियाँ और पुरुषों से	राम	८.	बलराम को
नृषु।	४.	पुरुष	दिदृक्षया ॥	९.	देखने की इच्छा से

श्लोकार्थ—इस प्रकार स्त्रियों से स्त्रियाँ और पुरुषों से पुरुष बातें कर रहे थे कि श्रीकृष्ण और बलराम को देखने की इच्छा से वहाँ पर मुनिगण आये ॥

तृतीयः श्लोकः

द्वैपायनो नारदश्च च्यवनो देवलोऽसितः ।
विश्वामित्रः शतानन्दो भरद्वाजोऽथ गौतमः ॥३॥

पदच्छेद— द्वैपायनः नारदः च च्यवनः देवलः असितः ।
विश्वामित्रः शतानन्दः भरद्वाजः अथ गौतमः ॥

शब्दार्थ—

द्वैपायनः	१. व्यास	विश्वामित्रः	७. विश्वामित्र
नारदः	२. नारद	शतानन्दः	८. शतानन्द
च	३. और	भरद्वाजः	९. भरद्वाज
च्यवनः	४. च्यवन	अथ	१०. और
देवलः	५. देवल	गौतमः ॥	११. गौतम आये
असितः ।	६. असित		

श्लोकार्थ—वहाँ पर व्यास, नारद और च्यवन, देवल, असित, विश्वामित्र, शतानन्द, भरद्वाज और गौतम आये ॥

चतुर्थः श्लोकः

रामः सशिष्यो भगवान् वशिष्ठो गालवो भृगुः ।
पुलस्त्यः कश्यपोऽत्रिश्च मार्कण्डेयो बृहस्पतिः ॥४॥

पदच्छेद— रामः सशिष्यः भगवान् वशिष्ठः गालवः भृगुः ।
पुलस्त्यः कश्यपः अत्रिः च मार्कण्डेयः बृहस्पतिः ॥

शब्दार्थ—

रामः	३. परशुराम	पुलस्त्यः	७. पुलस्त्य
सशिष्यः	१. शिष्यों सहित	कश्यपः	८. कश्यप
भगवान्	२. भगवान्	अत्रिः	९. अत्रि
वशिष्ठः	४. वशिष्ठ	च	११. और
गालवः	५. गालव	मार्कण्डेयः	१०. मार्कण्डेय
भृगुः ।	६. भृगु	बृहस्पतिः ॥	१२. बृहस्पति भी आए

श्लोकार्थ—शिष्यों सहित भगवान् परशुराम, वशिष्ठ, गालव, भृगु, पुलस्त्य, कश्यप, अत्रि, मार्कण्डेय और बृहस्पति भी आये ॥

पञ्चमः श्लोकः

द्वितस्त्रितश्चैकतश्च ब्रह्मपुत्रास्तथाङ्गिराः ।
अगस्त्यो याज्ञवल्क्यश्च वामदेवादयोऽपरे ॥५॥

पदच्छेद— द्वितः त्रितः च एकतः च ब्रह्म पुत्राः तथा अङ्गिराः ।
अगस्त्यः याज्ञवल्क्यः च वामदेव आदयः अपरे ॥

शब्दार्थ—

द्वितः	१. द्वित	अगस्त्यः	७. अगस्त्य
त्रितः	२. त्रित	याज्ञवल्क्यः	८. याज्ञवल्क्य
च एकतः	३. और एकत	च वामदेवः	१०. वामदेव
च ब्रह्मपुत्राः	४. ब्रह्मपुत्र (सनक आदि)	आदयः	११. इत्यादि आये
तथा	५. और	अपरे ॥	९. और
अङ्गिराः ।	६. अङ्गिरा		

श्लोकार्थ—वहाँ पर द्वित, त्रित और एकत ब्रह्मपुत्र (सनक सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार) और अङ्गिरा, अगस्त्य, याज्ञवल्क्य तथा वामदेव इत्यादि आये ॥

षष्ठः श्लोकः

तान् दृष्ट्वा सहसोत्थाय प्रागासीना नृपादयः ।
पाण्डवाः कृष्णरामौ च प्रणेमुर्विश्ववन्दितान् ॥६॥

पदच्छेद— तान् दृष्ट्वा सहसा उत्थाय प्राक् आसीनाः नृप आदयः ।
पाण्डवाः कृष्ण रामौ च प्रणेमुः विश्व वन्दितान् ॥

शब्दार्थ—

तान्	१. उन्हें	पाण्डवाः	५. पांडव
दृष्ट्वा	२. देखकर	कृष्ण	६. श्रीकृष्ण
सहसा	८. एकाएक	रामौ च	७. और बलराम ने
उत्थाय	९. उठकर	प्रणेमुः	१२. प्रणाम किया
प्राक् आसीनाः	३. पहले से बैठे हुये	विश्व	१०. विश्व-
नृप आदयः ।	४. राजा आदि	वन्दितान् ॥	११. वन्दित (ऋषियों को)

श्लोकार्थ—उन्हें देखकर पहले से बैठे हुये राजा आदि, पाण्डव, श्रीकृष्ण और बलराम ने एकाएक उठकर विश्ववन्दित ऋषियों को प्रणाम किया ॥

सप्तमः श्लोकः

तानानर्चुर्यथा सर्वे सहरामोऽच्युतोऽर्चयत् ।
स्वागतासनपाद्यार्घ्यमाल्यधूपानुलेपनैः ॥७॥

पदच्छेद— तान् आनर्चुः यथा सर्वे सहरामः अच्युतः अर्चयत् ।
स्वागत आसन पाद्य अर्घ्य माल्य धूप अनुलेपनैः ॥

शब्दार्थ—

तान्	१०.	उनकी	स्वागत	१.	स्वागत
आनर्चुः	११.	पूजा की और	आसन	२.	आसन
यथा	९.	विधि पूर्वक	पाद्य	३.	पाद्य
सर्वे	८.	सब राजाओं ने	अर्घ्य	४.	अर्घ्य
सहरामः	१२.	बलराम सहित	माल्य	५.	माला
अच्युत	१३.	श्रीकृष्ण ने भी	धूप	६.	धूप और
अर्चयत् ।	१४.	पूजन किया	अनुलेपनैः ॥	७.	चन्दनादि से

श्लोकार्थ—इसके बाद स्वागत, आसन, पाद्य, अर्घ्य, माला, धूप और चन्दनादि से सब राजाओं ने विधि पूर्वक उनकी पूजा की । और बलराम सहित श्रीकृष्ण ने भी पूजन किया ।

अष्टमः श्लोकः

उवाच सुखमासीनान् भगवान् धर्मगुप्तनुः ।
सदसस्तस्य महतो यतवाचोऽनुश्रृण्वतः ॥८॥

पदच्छेद— उवाच सुखम् आसीनान् भगवान् धर्मगुप्तनुः ।
सदसः तस्य महतः यत वाचः अनुश्रृण्वतः ॥

शब्दार्थ—

उवाच	६.	कहा (उस समय)	सदसः	८.	सभा
सुखम्	४.	सुख से	तस्य	९.	उनका भाषण
आसीनान्	५.	बैठे हुये उनसे	महतः	७.	बहुत बड़ी
भगवान्	३.	भगवान् ने	यतवाचः	१०.	चुपचाप
धर्म	१.	धर्म की रक्षा के लिये	अनुश्रृण्वतः ॥	११.	सुन रही थी
गुप्तनुः ।	२.	शरीर धारण करने वाले			

श्लोकार्थ—धर्म की रक्षा के लिये शरीर धारण करने वाले भगवान् ने सुख से बैठे हुये उनसे कहा । उस समय बहुत बड़ी सभा चुप चाप उनका भाषण सुन रही थी ॥

नवमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—अहो वयं जन्मभृतो लब्धं कार्त्स्न्येन तत्फलम् ।
देवानामपि दुष्प्रापं यद् योगेश्वरदर्शनम् ॥९॥

पदच्छेद— अहो वयम् जन्मभृतः लब्धम् कार्त्स्न्येन तत् फलम् ।
देवानाम् अपि दुष्प्रापम् यद् योगेश्वर दर्शनम् ॥

शब्दार्थ—

अहो	३. धन्य हैं	देवानाम्	८. देवताओं के लिये
वयम्	२. हम लोग	अपि	९. भी
जन्मभृतः	१. जन्म धारण करने वाले	दुष्प्रापम्	१०. दुर्लभ
लब्धम्	६. हमें मिल गया	यद्	७. जो कि
कार्त्स्न्येन	५. सम्पूर्ण	योगेश्वर	११. योगेश्वरों का
तत् फलम् ।	४. जन्म लेने का फल	दर्शनम् ॥	१२. दर्शन (हमें प्राप्त हो गया)

श्लोकार्थ—जन्म धारण करने वाले हम लोग धन्य हैं । जन्म लेने का सम्पूर्ण फल हमें मिल गया । जो कि देवताओं के लिये भी दुर्लभ योगेश्वरों का दर्शन हमें प्राप्त हो गया ।

दशमः श्लोकः

किं स्वल्पतपसां नृणामर्चायां देवचक्षुषाम् ।
दर्शनस्पर्शनप्रश्नप्रह्वपादार्चनादिकम् ॥१०॥

पदच्छेद— किम् स्वल्प तपसाम् नृणाम् अर्चायाम् देव चक्षुषाम् ।
दर्शन स्पर्शन प्रश्न प्रह्व पाद अर्चन आदिकम् ॥

शब्दार्थ—

किम्	१४. क्या लाभ है ?	दर्शन	७. आप लोगों के दर्शन
स्वल्प	१. थोड़ी सी	स्पर्शन	८. स्पर्श
तपसाम्	२. तपस्या वाले एवम्	प्रश्न	९. पश्न
नृणाम्	६. मनुष्यों को	प्रह्व	१०. प्रणाम और
अर्चायाम्	३. मूर्ति में ही	पाद	११ चरण
देव	४. देवता का	अर्चन	१२. पूजन
चक्षुषाम् ।	५. दर्शन करने वाले	आदिकम् ॥	१३. आदि से

श्लोकार्थ—थोड़ी तपस्या वाले एवम् मूर्ति में ही देवता का दर्शन करने वाले मनुष्यों को आप लोगों के दर्शन, स्पर्श, प्रश्न, प्रणाम और चरण-पूजन आदि से क्या लाभ है ?

एकादशः श्लोकः

न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः ।
ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः ॥११॥

पदच्छेद— नहि अपमयानि तीर्थानि न देवाः मृत् शिला मयाः ।
ते पुनन्ति उरुकालेन दर्शनात् एव साधवः ॥

शब्दार्थ—

नहि	३.	नहीं है	ते	७.	वे तो
अप्मयानि	१.	केवल जलमय	पुनन्ति	९.	पवित्र करते हैं
तीर्थानि	२.	तीर्थ ही (तीर्थ	उरुकालेन	८.	बहुत समय के सेवन से
न देवाः	६.	देवता देवता नहीं है	दर्शनात्	११.	दर्शन से
मृत् शिला	४.	मिट्टी एवं पत्थर के	एव	१२.	ही (पवित्र कर देते हैं)
मयाः ।	५.	बने हुये	साधवः ॥	१०.	किन्तु सन्त पुरुष

श्लोकार्थ—केवल जलमय तीर्थ ही तीर्थ नहीं है । मिट्टी के एवम् पत्थर के बने हुये देवता ही देवता नहीं हैं । वे तो बहुत समय के सेवन से पवित्र करते हैं । किन्तु सन्त पुरुष दर्शन से ही पवित्र कर देते हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

नाग्निर्न सूर्यो न च चन्द्रतारका न भूर्जलं खं श्वसनोऽथ वाङ्मनः ।
उपासिता भेदकृतो हरन्त्यघं विपश्चितो घ्नन्ति मुहूर्तसेवया ॥१२॥

पदच्छेद—न अग्निः न सूर्यः न च चन्द्र तारकाः न भूः जलम् खम् श्वसनः अथ वाङ्मनः ।
उपासिताः भेदकृतः हरन्ति अघम् विपश्चितः घ्नन्ति मुहूर्त सेवया ॥

शब्दार्थ—

न अग्निः	२.	न अग्नि	उपासिताः	९.	उपासना करने पर
न सूर्यः	३.	न सूर्य	भेदकृतः	१.	भेद-बुद्धि करने वाले
न च चन्द्रतारकाः	४.	और न चन्द्रमा तारे	हरन्ति अघम्	१०.	पाप का हरण करते हैं (किन्तु)
न भूः जलम्	५.	न पृथ्वी, जल	विपश्चितः	११.	विद्वान् पुरुष
खम् श्वसनः	६.	आकाश, वायु	घ्नन्ति	१४.	पापों को हर लेते हैं
अथ	७.	और न	मुहूर्त	१२.	दो घड़ी की
वाङ्मनः ।	८.	वाणी तथा मन के देवता	सेवया ॥	१३.	सेवा से ही

श्लोकार्थ—भेद-बुद्धि करने वाले न अग्नि, न सूर्य न चन्द्रमा, न तारे न पृथ्वी, न जल और न वाणी तथा मन के देवता उपासना करने पर पाप का हरण करते हैं । किन्तु विद्वान् पुरुष दो घड़ी की सेवा से ही पापों को हर लेते हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः ।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥१३॥

पदच्छेद— यस्य आत्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्र आदिषु भौम इज्यधीः ।
यत् तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचित् जनेषु अभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१. जो	यत्	७. और
आत्मबुद्धिः	४. आत्मा समझता है (और)	तीर्थबुद्धिः	८. तीर्थ कहता है (किन्तु)
कुणपे	३. शवतुल्य शरीर को	सलिले	९. जल को
त्रिधातुके	२. तीन धातुओं से बने इस	न कर्हिचित्	१०. कभी नहीं तीर्थ कहता है
स्वधीः	६. अपना मानता है (तथा)	जनेषु	११. पुरुषों को
कलत्रआदिषु	५. स्त्री आदि को	अभिज्ञेषु	११. विद्वान्
भौम	७. पत्थरादि की मूर्तियों को	स एव	१२. वह
इज्यधीः ।	८. इष्ट देव मानता है	गोखरः ॥	१६. बैल तथा गधा है

श्लोकार्थ—जो तीन धातुओं से बने इस शवतुल्य शरीर को आत्मा समझता है और स्त्री आदि को अपना मानता हैं, पत्थरादि की मूर्तियों को इष्टदेव मानता है और जल को तीर्थ कहता है; किन्तु विद्वान् पुरुषों को तीर्थ कभी नहीं कहता है वह बैल तथा गधा है ॥

चतुर्दशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—निशम्येत्थं भगवतः कृष्णस्याकुण्ठमेधसः ।
वचो दुरन्वयं विप्रास्तूष्णीमासन् भ्रमद्धियः ॥१४॥

पदच्छेद— निशम्य इत्थम् भगवतः कृष्णस्य अकुण्ठ मेधसः ।
वचः दुरन्वयम् विप्राः तूष्णीम् आसन् भ्रमत् धियः ॥

शब्दार्थ—

निशम्य	८. सुनकर	वचः	७. वचन
इत्थम्	१. इस प्रकार	दुरन्वयम्	६. गूढ
भगवतः	४. भगवान्	विप्राः	९. ऋषिगण
कृष्णस्य	५. श्रीकृष्ण का	तूष्णीम्	१०. चुप
अकुण्ठ	२. अखण्ड	आसन्	११. रह गये (और)
मेधसः ।	३. ज्ञान सम्पन्न	भ्रमत्धियः	१२. उनकी बुद्धि भ्रमित हो गई

श्लोकार्थ—इस प्रकार अखण्ड ज्ञान सम्पन्न भगवान् श्रीकृष्ण का गूढ वचन सुनकर ऋषिगण चुप रह गये और उनकी बुद्धि भ्रमित हो गई ॥

पञ्चदशः श्लोकः

चिरं विमृश्य मुनय ईश्वरस्येशितव्यताम् ।
जनसङ्ग्रह इत्यूचुः स्मयन्तस्तं जगद्गुरुम् ॥१५॥

पदच्छेद— चिरम् विमृश्य मुनयः ईश्वरस्य ईशितव्यताम् ।
जनसङ्ग्रहः इति ऊचुः स्मयन्तः तम् जगद्गुरुम् ॥

शब्दार्थ—

चिरम्	२.	बहुत देर तक	जनसङ्ग्रहः	६.	लोकसङ्ग्रह के लिये है
विमृश्य	३.	विचार करने के बाद	इति	७.	ऐसा जानकर
मुनयः	१.	मुनियों के	ऊचुः	१२.	कहा
ईश्वरस्य	४.	भगवान् की	स्मयन्तः	८.	मुसकराते हुये
ईशितव्यताम् ।	५.	पराधीन होना	तम्	९.	उन
			जगद्गुरुम् ॥	११.	भगवान् श्री कृष्ण से

श्लोकार्थ—मुनियों ने बहुत देर तक विचार करने के बाद भगवान् का पराधीन होना लोकसङ्ग्रह के लिये है। ऐसा जानकर मुस्कराते हुये उन भगवान् श्रीकृष्ण से कहा ॥

षोडशः श्लोकः

मुनय ऊचुः—यन्मायया तत्त्वविदुत्तमा वयं विमोहिता विश्वसृजामधीश्वराः ।
यदीशितव्यायति गूढ ईहया अहो विचित्रं भगवद्विचेष्टितम् ॥१६

पदच्छेद— यत्मायया तत्त्ववित् उत्तमाः वयम् विमोहिताः विश्वसृजाम् अधीश्वराः ।
यत् ईशितव्यायति गूढ ईहया अहो विचित्रम् भगवत् विचेष्टितम् ॥

शब्दार्थ—

यत्मायया	१.	जिनकी माया से	यत्	८.	जो
तत्त्ववित्	२.	तत्त्ववेत्ताओं में	ईशितव्यायति	११.	जीव की भाँति आचरण करते हैं
उत्तमाः	३.	श्रेष्ठ एवम्	गूढ	१०.	अपने को छिपाये रखकर
वयम्	६.	हम लोग	ईहया	९.	स्वेच्छा से
विमोहिताः	७.	मोहित हो गये	अहोविचित्रम्	१४.	अद्भुत और विचित्र है
विश्वसृजाम्	४.	प्रजापतियों के	भगवत्	१२.	ऐसे भगवान् की
अधीश्वराः ।	५.	अधीश्वर	विचेष्टितम् ॥	१३.	लीला

श्लोकार्थ—जिनकी माया से तत्त्ववेत्ताओं में श्रेष्ठ एवम् प्रजापतियों के अधीश्वर हम लोग मोहित हो गये। जो स्वेच्छा से अपने को छिपाये रखकर जीव की भाँति आचरण करते हैं। ऐसे भगवान् की लीला अद्भुत और विचित्र है ॥

सप्तदशः श्लोकः

अनीह एतद् बहुधैक आत्मना सृजत्यवत्यत्ति न बध्यते यथा ।
भौमैर्हि भूमिर्बहुनामरूपिणी अहो विभूम्नश्चरितं विडम्बनम् ॥१७॥

पदच्छेद— अनीहः एतद् बहुधा एकः आत्मना सृजति अवति अत्ति न बध्यते यथा ।
भौमैः हि भूमिः बहुनाम रूपिणी अहो विभूम्नः चरितम् विडम्बनम् ॥

शब्दार्थ—

अनीहः	७.	इच्छा रहित होने पर	यथा ।	१.	जैसे
एतत्	१०.	इस जगत् को	भौमैः हि	३.	अपने विकारों द्वारा
बहुधा	८.	अनेक रूप धारण कर लेते हैं	भूमिः	२.	पृथ्वी एक होने पर
एकः	६.	आप एक और	बहुनाम	४.	बहुत से नाम और
आत्मना	९.	अपने आप	रूपिणी	५.	रूप ग्रहण कर लेती है (वैसेही)
सृजतिअवति	११.	रचना रक्षा और	अहो विभूम्नः	१४.	अहो भगवान् का यह
अत्ति	१२	संहार करते हैं	चरितम्	१५.	चरित्र
न बध्यते	१३.	इसमें लिप्त नहीं होते	विडम्बनम् ॥	१६.	लीला मात्र है

श्लोकार्थ—जैसे पृथ्वी एक होने पर भी अपने विकारों द्वारा बहुत से नाम और रूप ग्रहण कर लेती है, वैसे ही आप एक और इच्छा रहित होने पर भी अनेक रूप धारण कर लेते हैं। अपने आप इस जगत् को रचना रक्षा और संहार करते हैं। इसमें लिप्त नहीं होते हैं। अहो भगवान् का यह चरित्र लीला मात्र है ॥

अष्टादशः श्लोकः

अथापि काले स्वजनाभिगुप्तये बिभर्षि सत्त्वं खलनिग्रहाय च ।
स्वलीलया वेदपथं सनातनं वर्णाश्रमात्मा पुरुषः परो भवान् ॥१८॥

पदच्छेद— अथापि काले स्वजन अभि गुप्तये बिभर्षि सत्त्वम् खलनिग्रहाय च ।
स्वलीलया वेदपथम् सनातनम् वर्णआश्रम आत्मा पुरुषः परः भवान् ॥

शब्दार्थ—

अथापिकाले	४.	तो भी समय पर	स्वलीलया	१२.	अपनी लीला के द्वारा
स्वजन	५.	अपने भक्तों की	वेदपथम्	१४.	वेदमार्ग की (रक्षा करते हैं)
अभिगुप्तये	६.	रक्षा	सनातनम्	१३.	सनातन
बिभर्षि	११.	धारण करते हैं (और)	वर्णआश्रम	१५.	आप वर्णों तथा आश्रमों के
सत्त्वम्	१०.	सत्त्वमय शरीर	आत्मा	१६	स्वरूप हैं
खल	८.	दुष्टों का	पुरुषः	३.	पुरुष परमात्मा हैं
निग्रहाय	९.	दमन करने के लिये	परः	२.	परम
च ।	७.	और	भवान् ॥	१.	आप ही

श्लोकार्थ—आप ही परम पुरुष परमात्मा हैं। तो भी समय पर अपने भक्तों की रक्षा और दुष्टों का दमन करने के लिये सत्त्वमय शरीर धारण करते हैं। और अपनी लीला के द्वारा सनातन वेदमार्ग की रक्षा करते हैं। आप वर्णों तथा आश्रमों के स्वरूप हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

ब्रह्म ते हृदयं शुक्लं तपः स्वाध्यायसंयमैः ।
यत्रोपलब्धं सद् व्यक्तमव्यक्तं च ततः परम् ॥१९॥

पदच्छेद— ब्रह्म ते हृदयम् शुक्लम् तपः स्वाध्याय संयमैः ।
यत्र उपलब्धम् सत् व्यक्तम् अव्यक्तम् च ततः परम् ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म ते	१. वेद आपका	यत्र	४. जिसमें
हृदयम्	३. हृदय है	उपलब्धम्	१२. साक्षात्कार होता है
शुक्लम्	२. विशुद्ध	सत्	११. परब्रह्म का
तपः	५. तपस्या	व्यक्तम्	८. आपके साकार
स्वाध्याय और	६. स्वाध्याय और	अव्यक्तम्	९. निराकार रूप
संयमैः ।	७. संयम के द्वारा	च ततः परम् ॥	१०. और उससे परे

श्लोकार्थ—वेद आपका विशुद्ध हृदय है। जिसमें तपस्या, स्वाध्याय और संयम के द्वारा आपके साकार तथा निराकार रूप और उससे परे परब्रह्म का साक्षात्कार होता है ॥

विंशः श्लोकः

तस्माद् ब्रह्मकुलं ब्रह्मन् शास्त्रयोनेस्त्वमात्मनः ।
सभाजयसि सद्धाम तद् ब्रह्मण्याग्रणीर्भवान् ॥२०॥

पदच्छेद— तस्मात् ब्रह्मकुलम् ब्रह्मन् शास्त्र योनेःत्वम् आत्मनः ।
सभाजयसि सद्धाम तत् ब्रह्मण्य अग्रणीः भवान् ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	७. इसो से	सभाजयसि	९. सम्मान करते हैं (और)
ब्रह्मकुलम्	२. ब्राह्मणों का कुल	सद्धाम	६. उत्तम स्थान है
ब्रह्मन्	१ हे परमात्मन् !	तत्	११. इसी से
शास्त्र	३. वेदों के	ब्रह्मण्य	१२ ब्राह्मण भक्तों में
योनेः	४. आधार भूत	अग्रणीः	१३. अग्रगण्य हैं
त्वम्	८. आप ब्राह्मणों का	भवान् ॥	१०. आप
आत्मनः ।	५. आपकी उपलब्धि का		

श्लोकार्थ– हे परमात्मन् ! ब्राह्मणों का कुल वेदों के आधारभूत आपकी उपलब्धि का उत्तम स्थान है। इसी से आप ब्राह्मणों का सम्मान करते हैं। और आप इसो से ब्राह्मण-भक्तों में अग्रगण्य हैं ॥

एकविंशः श्लोकः

अद्य नो जन्मसाफल्यं विद्यायास्तपसो दृशः ।
त्वया सङ्गम्य सद्गत्या यदन्तः श्रेयसां परः ॥२१॥

पदच्छेद— अद्य नः जन्म साफल्यम् विद्यायाः तपसः दृशः ।
त्वया सङ्गम्य सद्गत्या यदन्तः श्रेयसाम् परः ॥

शब्दार्थ—

अद्य नः	४	आज हमारे	त्वया	२.	आपसे
जन्म	५.	जन्म	सङ्गम्य	३.	मिलकर
साफल्यम	९.	सफल हो गये (क्योंकि)	सद्गत्या	१.	सज्जनों की एकमात्र गति
विद्यायाः	६.	विद्या तथा	यदन्तः	१२.	फल आप ही हैं
तपसः	७.	तप और	श्रेयसाम्	१०.	कल्याणों का
दृशः ।	८.	ज्ञान	परः ॥	११.	परम

श्लोकार्थ—सज्जनों की एकमात्र गति आपसे मिलकर आज हमारे जन्म विद्या तथा तप और ज्ञान सफल हो गये । क्योंकि कल्याणों का परम फल आप ही हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।
स्वयोगमाययाच्छन्नमहिम्ने परमात्मने ॥२२॥

पदच्छेद— नमः तस्मै भगवते कृष्णाय अकुण्ठ मेधसे ।
स्वयोगमायया छन्न महिम्ने परमात्मने ॥

शब्दार्थ—

नमः	११.	नमस्कार है	स्वयोग	३.	अपनी योग
तस्मै	७.	उन	मायया	४.	माया के द्वारा
भगवते	९.	भगवान्	छन्न	५.	ढकी हुई
कृष्णाय	१०.	श्रीकृष्ण को	महिम्ने	६.	महिमा वाले
अकुण्ठ	१	अनन्त	परमात्मने ॥	८.	परमात्मा
मेधसे ।	२.	ज्ञान वाले			

श्लोकार्थ—अनन्त ज्ञान वाले अपनी योग माया के द्वारा ढकी हुई महिमा वाले उन परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार है ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

न यं विदन्त्यमी भूपा एकारामाश्च वृष्णयः ।
मायाजवनिकाच्छन्नमात्मानं कालमीश्वरम् ॥२३॥

पदच्छेद— न यम् विदन्ति अमी भूपाः एक आरामाः च वृष्णयः ।
माया जवनिका छन्नम् आत्मानम् कालम् ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

न	१२.	नहीं	माया	१.	माया के
यम्	७.	जिन आपको	जवनिकान्	२.	परदे से
विदन्ति	१३.	जानते हैं	छन्नम्	३.	ढके हुये
अमी भूपाः	८.	ये राजा लोग और	आत्मानम्	४	सबके आत्मा
एक	९	एक साथ	कालम्	५.	आदि कारण और
आरामाः च	१०.	आहार-विहार करने वाले	ईश्वरम् ॥	६.	नियन्ता
वृष्णयः ।	११.	यदुवंशी लोग भी			

श्लोकार्थ— माया के परदे से ढके हुये सब के आत्मा, आदि कारण और नियन्ता जिन आपको ये राजा लोग और एक साथ आहार-विहार करने वाले यदुवंशी लोग भी नहीं जानते हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

यथा शयानः पुरुष आत्मानं गुणतत्त्वदृक् ।
नाममात्रेन्द्रियाभातं न वेद रहितं परम् ॥२४॥

पदच्छेद— यथा शयानः पुरुषः आत्मानम् गुणतत्त्वदृक् ।
नाम मात्र इन्द्रिय आभातम् न वेद रहितम् परम् ॥

शब्दार्थ—

यथा	१.	जैसे	नाममात्र	६.	नाम मात्र की
शयानः	२.	सोया हुआ	इन्द्रिय	७.	इन्द्रियों से
पुरुषः	३.	पुरुष	आभातम्	८.	प्रतीत होने वाले
आत्मानम्	९.	अपने स्वप्न शरीर (को ही जानता है)	न वेद	१२.	नहीं जानता है
गुण	४.	मिथ्या पदार्थ को	रहितम्	१०.	इसके अतिरिक्त
तत्त्वदृक् ।	५.	सत्य मान लेता है	परम् ॥	११.	जाग्रत् अवस्था के शरीर को

श्लोकार्थ—जैसे सोया हुआ पुरुष मिथ्या पदार्थ को सत्य मान लेता है । और नाम मात्र की इन्द्रियों से प्रतीत होने वाले अपने स्वप्न शरीर को ही जानता है । इसके अतिरिक्त जाग्रत् अवस्था के शरीर को नहीं जानता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

एवं त्वा नाममात्रेषु विषयेष्विन्द्रियेहया ।
मायया विभ्रमच्चित्तो न वेद स्मृत्युपप्लवात् ॥२५॥

पदच्छेद— एवम् त्वा नाममात्रेषु विषयेषु इन्द्रिय ईहया ।
मायया विभ्रमत् चित्तः न वेद स्मृति उपप्लवात् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	मायया	६.	माया से
त्वा	११.	आपको	विभ्रमत्	७.	मोहित
नाममात्रेषु	२.	नाम मात्र के	चित्तः	८.	चित्त वाला व्यक्ति
विषयेषु	३.	विषयों में	न वेद	१२.	नहीं जानता है
इन्द्रिय	४.	इन्द्रियों की	स्मृति	९.	स्मरण शक्ति के
ईहया ।	५.	प्रवृत्तिरूप	उपप्लवात् ॥	१०	नष्ट हो जाने से

श्लोकार्थ—इस प्रकार नाम मात्र के विषयों में इन्द्रियों की प्रवृत्तिरूप माया से मोहित चित्त वाला व्यक्ति स्मरण शरीर के नष्ट हो जाने से आपको नहीं जानता है ॥

षड्विंशः श्लोकः

तस्याद्य ते ददृशिमाङ्घ्रिमघौघमर्षतीर्थास्पदं हृदि कृतं सुविपक्वयोगैः ।
उत्सिक्तभक्त्युपहताशयजीवकोशा आपुर्भवद्गतिमथोऽनुगृहाण भक्तान् ॥२६॥

पदच्छेद— तस्य अद्य ते ददृशिम अङ्घ्रि अघौघमर्ष तीर्थ आस्पदम् हृदि कृतम् सुविपक्व योगैः ।
उत्सिक्त भक्ति उपहत आशय जीवकोशाः आपुः भवद् गतिम् अथो अनुगृहाण भक्तान् ॥

शब्दार्थ—

तस्य अद्य ते	१.	आज आपके उन	उत्सिक्त भक्ति	९.	उत्कृष्ट भक्ति के द्वारा
ददृशिम अङ्घ्रिम्	२.	चरणों को हमने देखा है जो	उपहत आशय	१०.	जिनका लिङ्ग शरीर नष्ट हो गया है
अघौघमर्ष	३.	पापराशि को नष्ट करने वाले	जीवकोशाः	११.	ऐसे जीवकोश वाले व्यक्ति
तीर्थ	४.	तीर्थ (गंगाजल) के	आपुः	१३.	प्राप्त करते हैं
आस्पदम्	५.	आश्रय स्थान हैं जिन्हे	भवद्गतिम्	१२.	आपके परम पद को
हृदि कृतम्	८.	हृदय में धारण करते हैं	अथो	१४.	अब आप
सुविपक्व	६.	अत्यन्त परिपक्व योगी	अनुगृहाण	१६.	कृपा कीजिये
योगैः ।	७.	योग साधना के द्वारा	भक्तान् ॥	१५.	हम भक्तों पर

श्लोकार्थ—आज आपके उन चरणों को हमने देखा है, जो तीर्थ गंगाजल के आश्रय स्थान हैं । जिन्हें अत्यन्त परिपक्व योगी योग साधना के द्वारा हृदय में धारण करते हैं । उत्कृष्ट भक्ति के द्वारा जिनका लिङ्ग शरीर नष्ट हो गया है । ऐसे जीव कोशवाले व्यक्ति आपके परम पद को प्राप्त करते हैं । अब आप हम भक्तों पर कृपा कीजिये ।

सप्तविंशः श्लोकः

इत्यनुज्ञाप्य दाशार्हं धृतराष्ट्रं युधिष्ठिरम् ।
राजर्षे स्वाश्रमान् गन्तुं मुनयो दधिरे मनः ॥२७॥

पदच्छेद— इति अनुज्ञाप्य दाशार्हम् धृतराष्ट्रम् युधिष्ठिरम् ।
राजर्षे स्व आश्रमान् गन्तुम् मुनयः दधिरे मनः ॥

शब्दार्थ—

इति	२. इस प्रकार	राजर्षे	१. हे राजर्षे !
अनुज्ञाप्य	६. अनुमति लेकर	स्वआश्रमान्	७. अपने आश्रमों में
दाशार्हम्	३. भगवान् श्रीकृष्ण से	गन्तुम्	८. जाने के लिये
धृतराष्ट्रम्	४. धृतराष्ट्र तथा	मुनयः	६. मुनियों ने
युधिष्ठिरम् ।	५ युधिष्ठिर से	दधिरे मनः	१०. मन को लगाया

श्लोकार्थ— हे राजर्षे ! इस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण से धृतराष्ट्र तथा युधिष्ठिर से अनुमति लेकर अपने आश्रमों में जाने के लिये मुनियों ने मन को लगाया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

तद् वीक्ष्य तानुपव्रज्य वसुदेवो महायशाः ।
प्रणम्य चोपसंगृह्य बभाषेदं सुयन्त्रितः ॥२८॥

पदच्छेद— तत् वीक्ष्य तान् उपव्रज्य वसुदेवः महायशाः ।
प्रणम्य च उप संगृह्य बभाष इदम् सुयन्त्रितः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. यह	प्रणम्य	७. उन्हें प्रणाम किया
वीक्ष्य	२. देखकर	च	८. और
तान्	३. उनके	उपसंगृह्य	६. पैर पकड़कर
उपव्रज्य	४. पास जाकर	बभाष	१२. कहा
वसुदेवः	५. वसुदेव ने	इदम्	११. यह
महायशाः ।	६. महान् यशस्वी	सुयन्त्रितः ॥	१०. बड़ी नम्रता से

श्लोकार्थ—यह देखकर उनके पास जाकर महान् यशस्वी वसुदेव ने उन्हें प्रणाम किया और पैर पकड़ कर बड़ी नम्रता से यह कहा ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

वसुदेव उवाच—नमो वः सर्वदेवेभ्य ऋषयः श्रोतुमर्हथ।
कर्मणा कर्मनिर्हारो यथा स्यान्नस्तदुच्यताम् ॥२९॥

पदच्छेद— नमो वः सर्व देवेभ्यः ऋषयः श्रोतुम् अर्हथ।
कर्मणा कर्म निर्हारः यथा स्यात् नः तत् उच्यताम् ॥

शब्दार्थ—

नमो	५. नमस्कार है	कर्मणा	८. कर्म के द्वारा
वः	४. आप लोगों को	कर्म	९. कर्म का
सर्व	२. सर्व	निर्हारः	१०. नाश
देवेभ्यः	३. देव स्वरूप	यथा	११. जिस प्रकार
ऋषयः	१. हे ऋषियों !	स्यात्	१२. हो जाय
श्रोतुम्	६. आप हमारी प्रार्थना सुनने	नः तत्	१३. वह हमें
अर्हथ।	७. योग्य हैं	उच्यताम्॥	१४. उपदेश कीजिये

श्लोकार्थ—हे ऋषियों ! सर्व देव स्वरूप आप लोगों को नमस्कार है। आप हमारी प्रार्थना सुनने योग्य हैं। कर्म के द्वारा कर्म का नाश जिस प्रकार से हो जाय वह हमें उपदेश कीजिये ॥

त्रिंशः श्लोकः

नारद उवाच—नातिचित्रमिदं विप्रा वसुदेवो बुभुत्सया।
कृष्णं मत्वार्भकं यन्नः पृच्छति श्रेय आत्मनः ॥३०॥

पदच्छेद— न अतिचित्रम् इदम् विप्राः वसुदेवः बुभुत्सया।
कृष्णम् मत्वा अर्भकम् यत् नः पृच्छति श्रेयः आत्मनः ॥

शब्दार्थ—

न	४. नहीं है जो कि	कृष्णम्	६. श्रीकृष्ण को अपना
अतिचित्रम्	३. बहुत आश्चर्य की बात	मत्वा	८. जानकर
इदम्	२. यह	अर्भकम्	७. बालक
विप्राः	१. हे विप्रगण !	यत् नः	११. हमसे
वसुदेव	५. वसुदेव जी	पृच्छति	१२. पूछ रहे हैं
बुभुत्सया।	९. जिज्ञासा के भाव से	श्रेयःआत्मनः॥	१०. अपने कल्याण का साधन

श्लोकार्थ—हे विप्रगण ! यह बहुत आश्चर्य की बात नहीं हैं जो कि वसुदेव जी श्रीकृष्ण को अपना बालक जानकर जिज्ञासा के भाव से अपने कल्याण का साधन हमसे पूछ रहे हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

सन्निकर्षो हि मर्त्यानामनादरणकारणम् ।
गाङ्गं हित्वा यथान्याम्भस्तत्रत्यो याति शुद्धये ॥३१॥

पदच्छेद— सन्निकर्षः हि मर्त्यानाम् अनादरण कारणम् ।
गाङ्गम् हित्वा यथा अम्भः तत्रत्यः याति शुद्धये ॥

शब्दार्थ—

सन्निकर्षः	२. बहुत पास रहना	हित्वा	८. छोड़कर
हि	१. निश्चय ही	यथा	६. जैसे
मर्त्यानाम्	३. मनुष्यों के	अन्यअम्भः	११. दूसरे तीर्थ में
अनादरण	४. अनादर का	तत्रत्यः	९. वहाँ का रहने वाला
कारणम् ।	५. कारण होता है	याति	१२. जाता है
गाङ्गम्	७. गङ्गाजल को	शुद्धये ॥	१०. शुद्धि के लिये

श्लोकार्थ—निश्चय ही बहुत पास रहना मनुष्यों के अनादर का कारण होता है । जैसे गङ्गाजल को छोड़कर वहाँ का रहने वाला शुद्धि के लिये दूसरे तीर्थ में जाता है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

यस्यानुभूतिः कालेन लयोत्पत्त्यादिनास्य वै ।
स्वतोऽन्यस्माच्च गुणतो न कुतश्चन रिष्यति ॥३२॥

पदच्छेद— यस्य अनुभूतिः कालेन लय उत्पत्ति आदिना अस्य वै ।
स्वतः अन्यस्मात् च गुणतः न कुतश्चन रिष्यति ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१. जिन (श्रीकृष्ण की)	स्वतः	९. स्वतः
अनुभूतिः	२. अनुभूति	अन्यस्मात्	१०. दूसरे निमित्त से
कालेन	३. समय के फेर से	च	८. तथा
लय	५. प्रलय और	गुणतः	११. गुण से और
उत्पत्ति	६. होने वाली उत्पत्ति	न	१३. नहीं
आदिना	७. आदि से	कुतश्चन	१२. किसी से
रिष्यति ।	४. इस जगत् की	रिष्यति ॥	१४. क्षीण होती है

श्लोकार्थ—जिन श्रीकृष्ण की अनुभूति समय के फेर से इस जगत् के प्रलयी और उत्पत्ति आदि से तथा स्वतः दूसरे निमित्त से, गुण से और किसी से क्षीण नहीं होती है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तं क्लेशकर्मपरिपाकगुणप्रवाहैरव्याहतानुभवमीश्वरमद्वितीयम् ।
प्राणादिभिः स्वविभवैरुपगूढमन्यो मन्येत सूर्यमिव मेघहिमोपरागैः ॥३३॥

पदच्छेद—तम् क्लेशकर्म परिपाक गुणप्रवाहैः अव्याहत अनुभवम् ईश्वरम् अद्वितीयम् ।
प्राण आदिभिः स्वविभवैः उपगूढम् अन्यः मन्येत सूर्यम् इव मेघहिम उपरागैः ॥

शब्दार्थ—

तम्	६.	उन	प्राणआदिभिः	७.	प्राण आदि से
क्लेशकर्म	१.	क्लेशकर्म	स्व विभवैः	६.	अपनी शक्तियों
परिपाक	२.	फल तथा	उपगूढम्	८.	छिपे हुये
गुणप्रवाहैः	३	(सत्त्वादि) गुणों के प्रवाहों से	अन्यः	१२.	दूसरे (मूर्खजन)
अव्याहत	४.	अखण्डित	मन्येत	१६.	मान लेता है
अनुभवम्	५.	स्वरूप वाले और	सूर्यम् इव	१५.	सूर्य के समान
ईश्वरम्	११.	परमात्मा (श्रीकृष्ण) को	मेघहिम	१३.	बादल, कुहरा तथा
अद्वितीयम् ।	१०.	अद्वितीय	उपरागैः ॥	१४.	ग्रहण से

श्लोकार्थ—क्लेश कर्म-फल तथा सत्त्वादि गुणों के प्रवाहों से अखण्डित स्वरूप वाले और अपनी शक्तियों प्राण आदि से छिपे हुये उन अद्वितीय परमात्मा श्रीकृष्ण को दूसरे मूर्खजन बादल, कुहरा तथा ग्रहण से सूर्य के समान मान लेता है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

अथोचुर्मुनयो राजन्नाभाष्यानकदुन्दुभिम् ।
सर्वेषां श्रृण्वतां राज्ञां तथैवाच्युतरामयोः ॥३४॥

पदच्छेद— अथ ऊचुः मुनयः राजन् आभाष्य आनक दुन्दुभिम् ।
सर्वेषाम् श्रृण्वताम् राज्ञाम् तथा एव अच्युत रामयोः ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	इसके बाद	सर्वेषाम्	७.	सभी
ऊचुः	१२.	कहा	श्रृण्वताम्	९.	सुनते हुये
मुनयः	३.	मुनियों ने	राज्ञाम्	८.	राजाओं के
राजन्	१.	हे परीक्षित् !	तथा एव	६.	और
आभाष्य	११.	सम्बोधित करके	अच्युत	४.	श्रीकृष्ण
आनकदुन्दुभिम् ।	१०.	वसुदेवजी को	रामयोः ॥	५.	बलराम जी

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इसके बाद मुनियों ने श्रीकृष्ण, बलरामजी और सभी राजाओं के सुनते हुए वसुदेव जी को सम्बोधित करके कहा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

कर्मणा कर्मनिर्हार एष साधु निरूपितः ।
यच्छ्रद्धया यजेद्विष्णुः सर्वयज्ञेश्वरं मखैः ॥३५॥

पदच्छेद— कर्मणा कर्मनिर्हार एष साधु निरूपितः ।
यत् श्रद्धया यजेत् विष्णुम् सर्व यज्ञेश्वरम् मखैः ॥

शब्दार्थ—

कर्मणा	१. कर्म के द्वारा	श्रद्धया	११. श्रद्धापूर्वक
कर्मनिर्हार	२. कर्मों के नाश का	यजेत्	१२. आराधना करें
एषः	३. यह	विष्णुम्	१०. विष्णु की
साधु	४. अच्छा	सर्व	७. सभी
निरूपितः	५. उपाय कहा गया है	यज्ञेश्वरम्	९. अधिपति
यत् ।	६. कि	मखैः ॥	८. यज्ञों के

श्लोकार्थ—कर्म के द्वारा कर्मों के नाश का यह अच्छा उपाय कहा गया है कि सभी यज्ञों के अधिपति विष्णु की श्रद्धापूर्वक आराधना करें ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

चित्तस्योपशमोऽयं वै कविभिः शास्त्रचक्षुषा ।
दर्शितः सुगमो योगो धर्मश्चात्ममुदावहः ॥३६॥

पदच्छेद— चित्तस्य उपशमः अयम् वै कविभिः शास्त्र चक्षुषा ।
दर्शितः सुगमः योगः धर्मः च आत्म मुदावहः ॥

शब्दार्थ—

चित्तस्य	५. चित्त की	दर्शितः	१२. बतलाया है
उपशमः	६. शान्ति का	सुगमः	७. सुगम उपाय
अयम् वै	४. यह ही	योगः	८. मोक्ष साधन
कविभिः	१. विद्वानों ने	धर्मः	११. धर्म
शास्त्र	२. शास्त्रों की	च आत्म	९. और मन को
चक्षुषा ।	३. दृष्टि से	मुदावहः ॥	१०. आनन्द देने वाला

श्लोकार्थ—विद्वानों ने शास्त्र की दृष्टि से यह ही चित्त को शान्ति का सुगम उपाय, मोक्ष साधन और मन को आनन्द देने वाला धर्म बतलाया है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

अयं स्वस्त्ययनः पन्था द्विजातेर्गृहमेधिनः ।
यच्छ्रद्धयाऽऽप्तवित्तेन शुक्लेनेज्येत पूरुषः ॥३७॥

पदच्छेद— अयम् स्वस्त्ययनः पन्थाः द्विजातेः गृह मेधिनः ।
यत् श्रद्धया आप्तवित्तेन शुक्लेन इज्येत पूरुषः ॥

शब्दार्थ—

अयम्	३. यह	श्रद्धया	१०. श्रद्धापूर्वक
स्वस्त्ययनः	४. कल्याण का	आप्त	८. उपार्जित
पन्थाः	५. मार्ग है	वित्तेन	९. धन से
द्विजातेः	१. ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य	शुक्लेन	७. न्याय से
गृहमेधिनः ।	२. गृहस्थ के लिये	इज्येत	१२. आराधना करे
यत्	६. कि वह	पूरुषः ॥	११. पुरुषोत्तम भगवान् की

श्लोकार्थ—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य गृहस्थ के लिये यह कल्याण का मार्ग है कि वह न्याय से उपार्जित धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषोत्तम भगवान् की आराधना करे ।

अष्टात्रिंशः श्लोकः

वित्तैषणां यज्ञदानैर्गृहैर्दारसुतैषणाम् ।
आत्मलोकैषणां देव कालेन विसृजेद् बुधः ।
ग्रामे त्यक्तैषणाः सर्वे ययुर्धीरास्तपोवनम् ॥३८॥

पदच्छेद— वित्तैषणाम् यज्ञदानैः गृहैः दार सुत एषणाम् ।
आत्मलोक एषणाम् देव कालेन विसृजेद् बुधः ।
ग्रामे त्यक्त एषणाः सर्वे ययुःधीराः तपोवनम् ॥

शब्दार्थ—

वित्तैषणाम्	४. धन की इच्छा को	विसृजेद्	१०. त्याग दे
यज्ञ दानैः	३. यज्ञ दान द्वारा	बधः ।	२. विद्वान् व्यक्ति
गृहैः	५. गृहस्थोचित भोगों द्वारा	ग्रामे	१३. घर में ही
दारसुत एषणाम् ।	६. पत्नी, पुत्र की इच्छा को	त्यक्त एषणाः	१४. इच्छाओं को त्याग कर
आत्मलोक	८. अपनी लोक	सर्वे	११. सभी
एषणाम्	९. इच्छा को	ययुः	१६. चले गये
देव	१. हे वसुदेव जी !	धीराः	१२. धीर पुरुष
कालेन	७. काल क्रम से	तपोवनम् ॥	१५. तपोवन को

श्लोकार्थ—हे वसुदेवजी ! विद्वान् व्यक्ति यज्ञ, दान द्वारा धन की इच्छा को, गृहस्थोचित भोगों द्वारा पत्नी, पुत्र को इच्छा को काल क्रम से अपनी लोक इच्छा को त्याग दे । सभी धीर पुरुष घर में ही इच्छाओं को त्याग कर तपोवन को चले गये ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

ऋणैस्त्रिभिर्द्विजो जातो देवर्षिपितॄणां प्रभो ।

यज्ञाध्ययनपुत्रैस्तान्यनिस्तीर्य त्यजन् पतेत् ॥३९॥

पदच्छेद— ऋणैः त्रिभिः द्विजः जातः देवर्षि पितॄणाम् प्रभो ।
यज्ञ अध्ययन पुत्रैः तानि अनिस्तीर्य त्यजन् पतेत् ॥

शब्दार्थ—

ऋणैः	६.	ऋणों से	यज्ञ	८.	यज्ञ
त्रिभिः	५.	तीन	अध्ययन	९.	अध्ययन और
द्विजः	२.	ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य	पुत्रैः	१०.	पुत्रों द्वारा
जातः	७.	उत्पन्न होते हैं (अतएव)	तानि	११.	इन ऋणों को
देवर्षि	३.	देवता, ऋषि और	अनिस्तीर्य	१२.	चुकाये बिना
पितॄणाम्	४.	पितरों के	त्यजन्	१३.	जो संसार का त्याग करते हैं
प्रभो ।	१	समर्थ वसुदेव जी	पतेत् ॥	१४.	उनका पतन हो जाता है

श्लोकार्थ—हे समर्थ वसुदेव जी ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य, देवता, ऋषि और पितरों के तीन ऋणों से उत्पन्न होते हैं । अतएव यज्ञ, अध्ययन, और पुत्रों द्वारा इन ऋणों को चुकाये बिना जो संसार का त्याग करते हैं, उनका पतन हो जाता है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

त्वं त्वद्य मुक्तो द्वाभ्यां वै ऋषिपित्रोर्महामते ।

यज्ञैर्देवर्णमुन्मुच्य निरृणोऽशरणो भव ॥४०॥

पदच्छेद— त्वम् तु अद्य मुक्तः द्वाभ्याम् वै ऋषि पित्रोः महामते ।
यज्ञैः देव ऋणम् उन्मुच्य निरृणः अशरणः भव ॥

शब्दार्थ—

त्वम् तु	२.	आप तो	यज्ञैः	७.	यज्ञों द्वारा
अद्य	३.	आज	देव ऋणम्	८.	देव-ऋण
मुक्तः	६.	मुक्त हो चुके हैं (अब)	उन्मुच्य	९.	चुकाकर
द्वाभ्याम् वै	५.	दो ऋणों से	निरृणः	१०.	उऋण होकर
ऋषि पित्रोः	४.	ऋषि और पितरों के	अशरणः	११.	घर का त्याग
महामते ।	१.	परम बुद्धिमान् वसुदेव जी	भव ॥	१२.	कीजिये

श्लोकार्थ—परम बुद्धिमान् वसुदेव जी ! आप तो आज ऋषि और पितरों के दो ऋणों से मुक्त हो चुके हैं । अब यज्ञों द्वारा देव ऋण चुकाकर उऋण होकर घर का त्याग कीजिये ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

वसुदेव भवान् नूनं भक्त्या परमया हरिम् ।
जगतामीश्वरं प्रार्चः स यद् वां पुत्रतां गतः ॥४१॥

पदच्छेद— वसुदेव भवान् नूनम् भक्त्या परमया हरिम् ।
जगताम् ईश्वरम् प्रार्चः सः यद् वाम् पुत्रताम् गतः ॥

शब्दार्थ—

वसुदेव	१.	वसुदेव जी	जगताम्	६.	संसार के
भवान्	२.	आपने	ईश्वरम्	७.	ईश्वर
नूनम्	३.	निश्चित ही	प्रार्चः	९.	आराधना की है
भक्त्या	५.	भक्ति से	सः यद्	१०.	जिससे वे
परमया	४.	परम	वाम्	११.	आप दोनों के
हरिम् ।	८.	भगवान् की	पुत्रताम् गतः ॥	१२.	पुत्र हुये हैं

श्लोकार्थ— वसुदेव जी आपने निश्चत ही परम भक्ति से संसार के ईश्वर भगवान् को आराधना की है । जिससे वे आप दोनों के पुत्र हुये हैं ॥

द्वाचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—इति तद्वचनं श्रुत्वा वसुदेवो महामनाः ।
तानृषीनृत्विजो वव्रे मूर्ध्नाऽऽनम्य प्रसाद्य च ॥४२॥

पदच्छेद— इति तत् वचनम् श्रुत्वा वसुदेवः महामनाः ।
तान् ऋषीन् ऋत्विजः वव्रे मूर्ध्ना आनम्य प्रसाद्य च ॥

शब्दार्थ—

इति	४.	यह	तान् ऋषीन्	७.	उन ऋषियों को
तत्	३.	उनका	ऋत्विजः	८.	ऋत्विजों के रूप में
वचनम्	५.	वचन	वव्रे	९.	वरण कर लिया
श्रुत्वा	६.	सुनकर	मूर्ध्ना	११.	सिर से
वसुदेवः	२.	वसुदेव जी ने	आनम्य	१२.	प्रणाम किया
महामनाः ।	१.	परम यशस्वी	प्रसाद्य च ॥	१०.	और प्रसन्न करके

श्लोकार्थ— परम यशस्वी वसुदेव जी ने उनका यह वचन सुनकर उन ऋषियों को ऋत्विजों के रूप में वरण कर लिया और प्रसन्न करके सिर से प्रणाम किया ॥

त्रयश्चत्वारिंशः श्लोकः

त एनमृषयो राजन् वृता धर्मेण धार्मिकम् ।
तस्मिन्नयाजयन् क्षेत्रे मखैरुत्तमकल्पकैः ॥४३॥

पदच्छेद— ते एनम् ऋषयः राजन् वृताः धर्मेण धार्मिकम् ।
तस्मिन् अयाजयन् क्षेत्रे मखैः उत्तम कल्पकैः ॥

शब्दार्थ—

ते	२.	उन	तस्मिन्	७.	उस
एवम्	३.	वसुदेव जी के	अयाजयन्	१२.	करवाये
ऋषयः	५.	ऋषियों ने	क्षेत्रे	८.	कुरुक्षेत्र में
राजन्	१.	हे राजन् !	मखैः	११.	यज्ञ
वृताःधर्मेण	४.	वरणकर लिये जाने पर धर्मपूर्वक	उत्तम	९.	उत्तम
धार्मिकम् ।	६.	धार्मिक	कल्पकैः ॥	१०.	सामग्रियों से युक्त

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन वसुदेव जी के वरण कर लिये जाने पर धर्मपूर्वक ऋषियों ने धार्मिक उस कुरुक्षेत्र में उत्तम सामग्रियों से युक्त यज्ञ करवाये ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

तद्दीक्षायां प्रवृत्तायां वृष्णयः पुष्करस्रजः ।
स्नाताः सुवाससो राजन् राजानः सुष्ठ्वलङ्कृताः ॥४४॥

पदच्छेद— तत् दीक्षायाम् प्रवृत्तायाम् वृष्णयः पुष्कर स्रजः ।
स्नाताः सुवाससः राजन् राजानः सुष्ठु अलङ्कृताः ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	तब	स्नाताः	६	स्नान करके
दीक्षायाम्	३.	यज्ञ की दीक्षा	सुवाससः	७.	सुन्दर वस्त्र और
प्रवृत्तायाम्	४.	ले लेने पर	राजन्	१.	हे राजन् !
वृष्णयः	५.	यदुवंशियों ने	राजानः	१०.	राजा लोग
पुष्कर	८.	कमलों की	सुष्ठु	११.	खूब
स्रजः ।	९.	मालायें धारण कर लीं (और)	अलङ्कृताः ॥	१२.	सुसज्जित हो गये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! तब यज्ञ की दीक्षा ले लेने पर यदुवंशियों ने स्नान करके सुन्दर वस्त्र और कमलों की मालायें धारण कर लीं । और राजा लोग खूब सुसज्जित हो गये ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तन्महिष्यश्च मुदिता निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ।
दीक्षाशालामुपाजग्मुरालिप्ता वस्तुपाणयः ॥४५॥

पदच्छेद— तत् महिष्यः च मुदिताः निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ।
दीक्षाशालाम् उपाजग्मुः आलिप्ताः वस्तु पाणयः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	उनकी	दीक्षा शालाम्	९.	यज्ञशाला में
महिष्यः च	२.	रानियाँ भी	उपाजग्मुः	१०.	आयीं
मुदिताः	६.	आनन्द से	आलिप्ताः	४.	अङ्गराग तथा
निष्ककण्ठ्यः	५.	सोने के हारों से सजकर	वस्तु	८.	माँगलिक सामग्री लेकर
सुवाससः ।	३.	सुन्दर वस्त्र और	पाणयः ॥	७.	हाथों में

श्लोकार्थ—उनकी रानियाँ भी सुन्दर वस्त्र और अङ्गराग तथा सोने के हारों से सजकर आनन्द से हाथों में माङ्गलिक सामग्री लेकर यज्ञशाला में आयीं ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

नेदुर्मृदङ्गपटहशङ्खभेर्यानकादयः ।
ननृतुर्नटनर्तक्यस्तुष्टुवुः सूतमागधाः ।
जगुः सुकण्ठ्यो गन्धर्व्यः सङ्गीतं सहभर्तृकाः ॥४६॥

पदच्छेद— नेदुः मृदङ्ग पटह शङ्ख भेरी आनक आदयः ।
ननृतुः नट नर्तक्यः तुष्टुवुः सूत मागधाः ।
जगुः सुकण्ठ्यः गन्धर्व्यः सङ्गीतम् सहभर्तृकाः ॥

शब्दार्थ—

नेदुः	४.	बजने लगे	सूत	७.	सूत और
मृदङ्ग पटह	१.	उस समय मृदंग, पखावज	मागधाः	८.	मागध
शङ्ख भेरी	२.	शङ्ख और ढोल	जगुः	१४.	गान करने लगीं
आनक आदयः ।	३.	नगारे आदि	सुकण्ठ्यः	१०.	सुरीले गले वाली
ननृतुः	६.	नाचने लगीं	गन्धर्व्यः	११.	गन्धर्व पत्नियाँ
नट नर्तक्यः	५.	नट और नर्तकियाँ	सङ्गीतम्	१३.	सङ्गीत का
तुष्टुवुः ।	९.	स्तुति करने लगे	सहभर्तृकाः ॥	१२.	गन्धर्वों के साथ

श्लोकार्थ—उस समय मृदङ्ग, पखावज, शङ्ख और ढोल, नगारे आदि बजने लगे नट और नर्तकियाँ नाचने लगीं । सूत और मागध स्तुति करने लगे । सुरीले गले वाली गन्धर्व पत्नियाँ गन्धर्वों के साथ सङ्गीत का गान करने लगीं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तमभ्यषिञ्चन् विधिवदक्तमभ्यक्तमृत्विजः ।

पत्नीभिरष्टादशभिः सोमराजमिवोडुभिः ॥४७॥

पदच्छेद— तम् अभिअषिञ्चन् विधिवत् अक्तम् अभिअक्तम् ऋत्विजः ।
पत्नीभिः अष्टादशभिः सोमराजम् इव उडुभिः ॥

शब्दार्थ—

तम्	४.	उनका	पत्नीभिः	६.	पत्नियों के साथ
अभिअषिञ्चन्	८.	अभिषेक किया	अष्टादशभिः	५.	आठरह
विधिवत्	७.	विधिपूर्वक	सोमराजम्	११.	चन्द्रमा का अभिषेक हुआ था
अक्तम्	२.	अञ्जन लगाये	इव	९.	जैसे पहले
अभिअक्तम्	३.	मक्खन का लेप किये	उडुभिः ॥	१०.	नक्षत्रों के साथ
ऋत्विजः ।	१.	ऋत्विजों ने			

श्लोकार्थ—ऋत्विजों ने अञ्जन लगाये मक्खन का लेप किये उनका अठारह पत्नियों के साथ अभिषेक किया, जैसे पहले नक्षत्रों के साथ चन्द्रमा का अभिषेक हुआ था ।

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

ताभिर्दुकूलवलयैर्हारनूपुरकुण्डलैः ।

स्वलङ्कृताभिर्विबभौ दीक्षितोऽजिनसंवृतः ॥४८॥

पदच्छेद— ताभिः दुकूल वलयैः हार नूपुर कुण्डलैः ।
सु अलङ्कृताभिः विबभौ दीक्षितः अजिन संवृतः ॥

शब्दार्थ—

ताभिः	८.	उन रानियों के साथ	सु	६.	भली-भाँति
दुकूल	१.	रेशमी वस्त्र	अलङ्कृताभिः	७.	सजी हुई
वलयैः	२.	कङ्कन	विबभौ	१२.	सुशोभित हुये
हार	३.	हार	दीक्षितः	९.	यज्ञ में दीक्षित
नपुर	४.	पायजेब और	अजिन	१०.	मृगचर्म
कुण्डलैः ।	५.	कर्णफूल आदि से	संवृतः ॥	११.	धारी वसुदेव जी

श्लोकार्थ—रेशमी वस्त्र, कङ्कन, हार, पायजेब और कर्णफूल आदि से भलीभाँति सजी हुई उन रानियों के साथ यज्ञ में दीक्षित मृगचर्मधारी वसुदेव जी सुशोभित हुये ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तस्यर्त्विजो महाराज रत्नकौशेयवाससः ।
ससदस्या विरेजुस्ते यथा वृत्रहणोऽध्वरे ॥४९॥

पदच्छेद— तस्य ऋत्विजः महाराज रत्न कौशेय वाससः ।
स सदस्याः विरेजुः ते यथा वृत्रहणः अध्वरे ॥

शब्दार्थ—

तस्य	५. उनके	स सदस्याः	८. सदस्यों के साथ
ऋत्विजः	७. ऋत्विज और	विरेजुः	९. शोभायमान हुये
महाराज	१. महाराज	ते	६. वे
रत्न	२. रत्न और	यथा	१०. जैसे (पहले)
कौशेय	३. रेशमी	वृत्रहणः	११. इन्द्र के
वाससः ।	४. वस्त्र धारण किये हुये	अध्वरे ॥	१२. यज्ञ में हुये थे

श्लोकार्थ—हे महाराज ! रत्न और रेशमी वस्त्र धारण किये हुये उनके वे ऋित्विज और सदस्य शोभायमान हुये, जैसे पहले इन्द्र के यज्ञ में हुये थे ।

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

तदा रामश्च कृष्णश्च स्वैर्बन्धुभिरन्वितौ ।
रेजतुः स्वसुतैर्दारैर्जीवेशौ स्वविभूतिभिः ॥५०॥

पदच्छेद— तदा रामः च कृष्णः च स्वैः स्वैः बन्धुभिः अन्वितौ ।
रेजतुः स्वसुतैः दारैः जीव ईशौ स्वविभूतिभिः ॥

शब्दार्थ—

तदा	१. उस समय	रेजतुः	९. इस प्रकार शोभित हुये (जैसे)
रामः च	२. बलराम और	स्वसुतैः	६. अपने पुत्रों
कृष्णः च	३. श्रीकृष्ण	दारैः	७. और पत्नियों के
स्वैः स्वैः	४. अपने-अपने	जीव	११. जीव और
बन्धुभिः	५. बन्धुओं	ईशौ	१२. ईश्वर शोभित होते हैं
अन्वितौ ।	८. साथ	स्वविभूतिभिः ॥	१०. अपनी विभूतियों के साथ

श्लोकार्थ—उस समय बलराम और श्रीकृष्ण अपने-अपने बन्धुओं अपने पुत्रों और पत्नियों के साथ इस प्रकार शोभित हुये, जैसे अपनी विभूतियों के साथ जीव और ईश्वर शोभित होते हैं ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ईजेऽनुयज्ञं विधिना अग्निहोत्रादिलक्षणैः ।
प्राकृतैर्वैकृतैर्यज्ञैर्द्रव्यज्ञानक्रियेश्वरम् ॥५१॥

पदच्छेद— ईजे अनुयज्ञम् विधिना अग्निहोत्र आदि लक्षणैः ।
प्राकृतैः वैकृतैः यज्ञैः द्रव्य ज्ञान क्रिया ईश्वरम् ॥

शब्दार्थ—

ईजे	१३.	आराधना की	प्राकृतैः	२.	प्राकृत
अनुयज्ञम्	१.	वसुदेवजी ने प्रत्येकयज्ञ में	वैकृतैः	३.	वैकृत और
विधिना	१२.	विधि पूर्वक	यज्ञैः	७.	यज्ञों के द्वारा
अग्निहोत्र	४.	अग्निहोत्र	द्रव्य	८.	द्रव्य
आदि	५.	आदि	ज्ञान	१०.	ज्ञान के मन्त्रों के
लक्षणैः	६	लक्षणों वाले	क्रिया	९.	क्रिया और उनके
			ईश्वरम् ॥	११.	स्वामी विष्णु की

श्लोकार्थ - वसुदेव जी ने प्रत्येक यज्ञ में प्राकृत, वैकृत और अग्निहोत्र आदि लक्षणों वाले यज्ञों के द्वारा द्रव्य, क्रिया और उनके ज्ञान के मन्त्रों के स्वामी विष्णु भगवान् की विधि पूर्वक आराधना की ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अथर्त्विग्भ्योऽददात् काले यथाम्नातं स दक्षिणाः ।
स्वलङ्कृतेभ्योऽलङ्कृत्य गोभूकन्या महाधनाः ॥५२॥

पदच्छेद— अथ ऋत्विग्भ्यः अददात् काले यथा आम्नातम् सः दक्षिणाः ।
सुअलङ्कृतेभ्यः अलङ्कृत्य गोभू कन्याः महाधनाः ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसके बाद	सुअलङ्कृतेभ्यः	४.	सुसज्जित किये हुये
ऋत्विग्भ्यः	५	ऋत्विजों को	अलङ्कृत्य	८.	अलङ्कृत
अददात्	१२.	दी	गो	९.	गौएँ
काले	२.	उचित समय पर	भूः	१०.	पृथ्वी और
यथा आम्नातम्	६.	शास्त्र के अनुसार	कन्याः	११.	कन्यायें
सः दक्षिणाः ।	३.	उन्होंने दक्षिणा के रूप में	महाधनाः ॥	७.	बहुत से धन के साथ

श्लोकार्थ—इसके बाद उचित समय पर उन्होंने बहुत सी दक्षिणा के रूप में सुसज्जित किये हुये ऋत्विजों को शास्त्र के अनुसार बहुत से धन के साथ अलङ्कृत गौएँ पृथ्वी और कन्यायें दीं ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

पत्नीसंयाजावभृथ्यैश्चरित्वा ते महर्षयः ।
सस्नू रामह्रदे विप्रा यजमानपुरः सराः ॥५३॥

पदच्छेद— पत्नी संयाजैः अवभृथ्यैः चरित्वा ते महर्षयः ।
सस्नुः रामह्लदे विप्रा यजमान पुराः सराः ॥

शब्दार्थ—

पत्नी	४. पत्नी	सस्नुः	१२. स्नान किया
संयाजैः	५. संयाज नामक	रामह्लदे	११. परशुराम के बनाये कुण्ड में
अवभृथ्यैः	६. यज्ञान्त स्नान सम्बन्धी	विप्राः	१. विप्रो
चरित्वा	७. कर्म कराकर	यजमान	८. वसुदेवजी को
ते	२. उन	पुरः	९. आगे
महर्षयः ।	३. महर्षियों ने	सराः ॥	१०. करके

श्लोकार्थ— विप्रो ! उन महर्षियों ने पत्नी संयाज न मक यज्ञान्त स्नान सम्बन्धी र्म कराकर वसुदेवजी को आगे करके परशुरामजी के बनाये कुण्ड में स्नान किया ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

स्नातोऽलङ्कारवासांसि वन्दिभ्योऽदात्तथा स्त्रियः ।
ततः स्वलङ्कृतो वर्णाना श्वभ्योऽन्नेन पूजयत् ॥५४॥

पदच्छेद— स्नातः अलङ्कार वासांसि वन्दिभ्यः अदात् तथा स्त्रियः ।
ततः सुअलङ्कृतः वर्णान् आ श्वभ्यः अन्नेन पूजयत् ॥

शब्दार्थ—

स्नातः	१. स्नान करने के बाद	ततः	७. तदनन्तर (वयम्)
अलङ्कार	३. आभूषण और	सुअलङ्कृतः	८. अलङ्कृत होकर
वासांसि	४. वस्त्र	वर्णान्	९. सभी वर्णों से लेकर
वन्दिभ्यः	५. बन्दीजनों को	आ श्वभ्यः	१०. कुत्तों तक को
अदात्	६. दिये	अन्नेन	११. भोजन
तथा स्त्रियः ।	२. उनकी पत्नियों ने	पूजयत् ॥	१२. कराया

श्लोकार्थ— स्नान करने के बाद उनकी पत्नियों ने आभूषण और वस्त्र बन्दीजनों को दिये । तदनन्तर स्वयम् अलङ्कृत होकर सभी वर्णों से लेकर कुत्तों तक को भोजन कराया ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

बन्धून् सदारान् ससुतान् पारिबर्हेण भूयसा ।
विदर्भकोसलकुरून् काशिकेकयसृञ्जयान् ॥५५॥

पदच्छेद— बन्धून् सदारान् ससुतान् पारिबर्हेण भूयसा ।
विदर्भ कोशल कुरून् काशिकेकय सृञ्जयान् ॥

शब्दार्थ—

बन्धून्	१. भाई बन्धुओं और	विदर्भ	४. विदर्भ
सदारान्	२. उनके स्त्री	कोशल	५. कोसल
ससुतान्	३. पुत्रों तथा	कुरून्	६. कुरु
पारिबर्हेण	१०. वस्तुयें भेंट में दीं	काशिकेकय	७. काशी, केकय
भूयसा ।	९. बहुत सी	सृञ्जयान् ॥	८. सृञ्जय देशों के राजाओं को

श्लोकार्थ— तदनन्तर भाई, बन्धुओं और उनके स्त्री-पुत्रों तथा विदर्भ, कोसल, कुरु, काशी, केकय, सृञ्जय देश के राजाओं को बहुत सी वस्तुयें भेंट में दीं ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

सदस्यर्त्विक्सुरगणान् नृभूतपितृचारणान् ।
श्रीनिकेतमनुज्ञाप्य शंसन्तः प्रययुः क्रतुम् ॥५६॥

पदच्छेद— सदस्य ऋत्विक् सुर गणान् नृ भूत पितृ चारणान् ।
श्रीनिकेतम् अनुज्ञाप्य शंसन्तः प्रययुः क्रतुम् ॥

शब्दार्थ—

सदस्य	१. सदस्यों	श्रीनिकेतम्	६. वे लोग लक्ष्मीपति की
ऋत्विक्	२. ऋत्विजों और	अनुज्ञाप्य	७. अनुमति लेकर
सुर गणान्	३. देवताओं तथा	शंसन्तः	९. प्रशंसा करते हुये
नृभूतपितृ	४. मनुष्यों, भूतों, पितरों और	प्रययुः	१०. चले गये
चारणान् ।	५. चारणों को भेंटें दीं	क्रतुम् ॥	८. यज्ञ की

श्लोकार्थ—सदस्यों, ऋत्विजों और देवताओं तथा मनुष्यों, भूतों, पितरों, और चरणों को भेंटें दीं । वे लोग लक्ष्मीपति की अनुमति लेकर यज्ञ की प्रशंसा करते हुये चले गये ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

धृतराष्ट्रोऽनुजः पार्था भीष्मो द्रोणः पृथा यमौ ।
नारदो भगवान् व्यासः सुहृत्सम्बन्धिबान्धवाः ॥५७॥

पदच्छेद— धृतराष्ट्रः अनुजः पार्थाः भीष्मः द्रोणः पृथा यमौ ।
नारदः भगवान् व्यासः सुहृत् सम्बन्धि बान्धवाः ॥

शब्दार्थ—

धृतराष्ट्र	१. धृतराष्ट्र	नारदः	८. नारद
अनुजः	२. विदुर	भगवान्	९. भगवान्
पार्थाः	३. युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन	व्यासः	१०. व्यास
भीष्मः	४. भीष्म पितामह	सुहृत्	११. स्वजन
द्रोणः	५. द्रोणाचार्य	सम्बन्धि	१२. सम्बन्धी और
पृथा	६. कुन्ती	बान्धवाः ॥	१३. बन्धु विरह से कातर हो गये
यमौ ।	७. नकुल, सहदेव		

श्लोकार्थ—धृतराष्ट्र, विदुर, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कुन्ती, नकुल, सहदेव, नारद, भगवान् व्यास, स्वजन, सम्बन्धी और बन्धु विरह से कातर हो गये ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

बन्धून् परिष्वज्य यदून् सौहृदात् क्लिन्नचेतसः ।
ययुर्विरहकृच्छ्रेण स्वदेशांश्चापरे जनाः ॥५८॥

पदच्छेद— बन्धून् परिष्वज्य यदून् सौहृदात् क्लिन्न चेतसः ।
ययुः विरह कृच्छ्रेण स्वदेशान् च अपरे जनाः ॥

शब्दार्थ—

बन्धून्	४. हितैषी बन्धु	ययुः	१०. गये
परिष्वज्य	६. आलिगन करके	विरह	७. वियोग के कारण
यदून्	५. यादवों का	कृच्छ्रेण	८. कठिनाई से
सौहृदात्	१. मित्र स्नेह के कारण	स्वदेशान्	९. अपने देशों को
क्लिन्न	२. आर्द्र	च अपरे	१२. और दूसरे
चेतसः ।	३. चित्त से	जनाः ॥	१३. लोग भी चले गये

श्लोकार्थ—मित्र स्नेह के कारण आर्द्र चित्त से हितैषी-बन्धु यादवों का आलिगन करके वियोग के कारण कठिनाई से अपने देशों को गये । और दूसरे लोग भी चले गये ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

नन्दस्तु सह गोपालैर्बृहत्या पूजयार्चितः ।
कृष्णरामोग्रसेनाद्यैर्न्यवात्सीद् बन्धुवत्सलः ॥५९॥

पदच्छेद— नन्दः तु सह गोपालैः बृहत्या पूजया अर्चितः ।
कृष्णरामः उग्रसेन आद्यैः न्यवात्सीत् बन्धुवत्सलः ॥

शब्दार्थ—

नन्दः तु	११.	नन्दजी तो	कृष्ण-रामः	१.	श्रीकृष्ण-बलराम
सह	७.	साथ	उग्रसेन	२.	उग्रसेन
गोपालैः	६.	गोपों के	आद्यैः	३.	आदि के द्वारा
बृहत्या	४.	बहुत बड़ी	न्यवात्सीत्	१२.	कुछ दिनों तक वहीं रह गये
पूजया	५.	सामग्रियों से	बन्धु	९.	बन्धु
अर्चितः ।	८.	पूजित होकर	वत्सलः ॥	१०.	प्रेमी

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण, बलराम, उग्रसेन आदि के द्वारा बहुत बड़ी सामग्रियों से गोपों के साथ पूजित होकर बन्धु प्रेमी नन्दजी तो कुछ दिनों तक वहीं रह गये ॥

षष्टितमः श्लोकः

वसुदेवोऽञ्जसोत्तीर्य मनोरथमहार्णवम् ।
सुहृद्वृतः प्रीतमना नन्दमाह करे स्पृशन् ॥६०॥

पदच्छेद— वसुदेवः अञ्जसा उत्तीर्य मनोरथ महार्णवम् ।
सुहृद् वृतः प्रीतमनाः नन्दम् आह करे स्पृशन् ॥

शब्दार्थ—

वसुदेवः	१.	वसुदेव जी ने	सुहृद् वृतः	६.	स्वजनों से युक्त एवम्
अञ्जसा	२.	अनायास ही	प्रीतमनाः	७.	प्रसन्नमन होकर
उत्तीर्य	५.	पार करके	नन्दम्	८.	नन्द जी का
मनोरथ	३.	मनोरथ रूपी	आह	१०.	कहा
महार्णवम् ।	४.	महासागर को	करे स्पृशन् ॥	९.	हाथ पकड़ कर

श्लोकार्थ—वसुदेव जी ने अनायास ही मनोरथ रूपी महासागर को पार करके स्वजनों से युक्त एवम् प्रसन्न मन होकर नन्द जी का हाथ पकड़ कर कहा ॥

एकषष्टितमः श्लोकः

बसुदेव उवाच—भ्रातरीशकृतः पाशो नृणां यः स्नेहसंज्ञितः ।
तं दुस्त्यजमहं मन्ये शूराणामपि योगिनाम् ॥६१॥

पदच्छेद— भ्रातः ईश कृतः पाशः नृणाम् यः स्नेह संज्ञितः ।
तम् दुस्त्यजम् अहम् मन्ये शूराणाम् अपि योगिनाम् ॥

शब्दार्थ—

भ्रातः	१.	भाई जी	तम्	८.	उसे
ईश	३.	भगवान् का	दुस्त्यजम्	१३.	कठिनाई से त्यागने योग्य
कृतः	४.	बनाया हुआ	अहम्	९.	मैं
पाशः	७.	बन्धन है	मन्ये	१४.	मानता हूँ
नृणाम्	२.	मनुष्यों के लिये	शूराणाम्	१०.	शूरवीर तथा
यः स्नेह	५.	जो स्नेह	अपि	१२.	भी
संज्ञितः ।	६.	नाम का	योगिनाम् ॥	११.	योगियों के लिये

श्लोकार्थ—भाई जी मनुष्यों के लिये भगवान् का बनाया हुआ जो स्नेह नाम का बन्धन है । उसे मैं शूरवीर तथा योगियों के लिये भी कठिनाई से त्यागने योग्य मानता हूँ ॥

द्विषष्टितमः श्लोकः

अस्मास्वप्रतिकल्पेयं यत् कृताज्ञेषु सत्तमैः ।
मैत्र्यर्पिताफला वापि न निवर्तेत कर्हिचित् ॥६२॥

पदच्छेद— अस्मासु प्रतिकल्पा इयम् यत् कृता अज्ञेषु सत्तमैः ।
मैत्री अर्पिता अफला वा अपि न निवर्तेत कर्हिचित् ॥

शब्दार्थ—

अस्मासु	१.	हम	मैत्री	७.	मित्रता
प्रतिकल्पा	६.	अनुपम	अर्पिता	८.	अर्पित
इयम्	४.	यह	अफला	१०.	इसका फल हम नहीं दे सकते
यत्	५.	जो	वा अपि	११.	फिर भी
कृता	९.	की है	न	१३.	नहीं
अज्ञेषु	२.	अज्ञानियों के प्रति	निवर्तेत	१४.	टूटेगी
सत्तमैः ।	३.	सज्जनों में श्रेष्ठ आप लोगों ने	कर्हिचित् ॥	१२.	यह मित्रता कभी

श्लोकार्थ—हम अज्ञानियों के प्रति सज्जनों में श्रेष्ठ आप लोगों ने यह जो अनुपम मित्रता अर्पित की है इसका फल हम नहीं दे सकते फिर भी यह मित्रता कभी नहीं टूटेगी ॥

त्रिषष्टितमः श्लोकः

प्रागकल्पाच्च कुशलं भ्रातर्वो नाचराम हि ।

अधुना श्रीमदान्धाक्षा न पश्यामः पुरः सतः ॥६३॥

पदच्छेद— प्राक् अकल्पात् च कुशलम् भ्रातः वः न आचराम हि ।
अधुना श्रीमत् अन्ध अक्षाः न पश्यामः पुरः सतः ॥

शब्दार्थ—

प्राक्	२.	पहले (बन्दीगृह में रहने से)	अधुना	८.	इस समय
अकल्पात्	३.	असमर्थता के कारण	श्रीमत्	९.	धनमद से
कुशलम्	५.	कुछ भी हित	अन्ध	११.	अंधे हो रहे हैं हम
भ्रातः	१.	भाई जी	अक्षाः	१०.	नेत्र
वः	४.	आपका	न पश्यामः	१४.	नहीं देख पाते थे
न	६.	नहीं	पुरः	१२.	सामने
आचराम हि ।	७.	कर सके	सतः ॥	१३.	रहते हुये भी आपकी ओर

श्लोकार्थ—भाईजी ! पहले बन्दीगृह में रहने से असमर्थता के कारण आपका कुछ भी हित नहीं कर सके । इस समय धनमद से नेत्र अन्धे हो रहे हैं । हम सामने रहते हुये भी आपकी ओर नहीं देख पाते ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

मा राज्यश्रीरभूत् पुंसः श्रेयस्कामस्य मानद ।

स्वजनानुत बन्धून् वा न पश्यति ययान्धदृक् ॥६४॥

पदच्छेद— मा राज्यश्रीः अभूत् पुंसः श्रेयस् कामस्य मानद ।
स्वजनान् उत बन्धून् वा न पश्यति यया अन्धदृक् ॥

शब्दार्थ—

मा	६.	नहीं	स्वजनान्	१०.	स्वजनों
राज्यश्रीः	५.	राज्य लक्ष्मी	उत	११.	अथवा
अभूत्	७.	मिले	बन्धून्	१२.	बन्धुओं को
पुंसः	४.	मनुष्य को	वा न	१३.	नहीं
श्रेयस्	२.	कल्याण	पश्यति	१४.	देख पाता है
कामस्य	३.	चाहने वाले (भाईजी)	यया	८.	जिससे वह
मानद ।	१.	हे मान देने वाले	अन्धदृक् ॥	९.	अन्ध नेत्र होकर

श्लोकार्थ—हे मान देने वाले ! कल्याण चाहने वाले भाई जी ! मनुष्य को राज्य लक्ष्मी नहीं मिले । जिससे वह अन्ध नेत्र होकर स्वजनों अथवा बन्धुओं को नहीं देख पाता है ॥

पञ्चषष्टितमः श्लोकः

श्री शुकवाच— एवं सौहृदशैथिल्यचित्त आनकदुन्दुभिः ।
रुरोद तत्कृतां मैत्रीं स्मरन्नश्रुविलोचनः ॥६५॥

पदच्छेद— एवम् सौहृद शैथिल्यचित्तः आनक दुन्दुभिः ।
रुरोद तत् कृताम् मैत्रीम् स्मरन् अश्रुविलोचनः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	रुरोद	१०.	रोने लगे
सौहृद	२.	मित्र स्नेह से	तत्कृताम्	६.	उनकी
शैथिल्य	३.	विचलित	मैत्रीम्	७.	मित्रता का
चित्त	४.	हृदय वाले	स्मरन्	८.	स्मरण करते हुये
आनक दुन्दुभिः ।	५.	वसुदेव जी	अश्रुविलोचनः ॥	९.	आँखों में आँसू भरकर

श्लोकार्थ—इस प्रकार मित्र स्नेह से विचलित हृदय वाले वसुदेव जी उनकी मित्रता का स्मरण करते हुये आँखों में आँसू भरकर रोने लगे ॥

षट्षष्टितमः श्लोकः

नन्दस्तु सख्युः प्रियकृत् प्रेम्णा गोविन्दरामयोः ।
अद्य श्व इति मासांस्त्रीन् यदुभिर्मानितोऽवसत् ॥६६॥

पदच्छेद— नन्दः तु सख्युः प्रियकृत् प्रेम्णा गोविन्द रामयोः ।
अद्य श्वः इति मासान् त्रीन् यदुभिः मानितः अवसत् ॥

शब्दार्थ—

नन्दः तु	३.	नन्द जी	अद्य	७.	आज
सख्युः	१.	मित्र वसुदेव का	श्वः इति	८.	कल करते-करते
प्रियकृत्	२.	प्रिय करने वाले	मासान्त्रीन्	९.	तीन महीने तक
प्रेम्णा	६.	प्रेम के कारण	यदुभिः	१०.	यदुवंशियों से
गोविन्द	४.	श्रीकृष्ण और	मानितः	११.	सम्मानित होकर
रामयोः ।	५.	बलराम के	अवसत् ॥	१२.	वहीं रह गये

श्लोकार्थ— मित्र वसुदेव का प्रिय करने वाले नन्द जी श्रीकृष्ण के और बलराम के प्रेम के कारण आज कल करते-करते तीन महीने तक यदुवंशियों से सम्मानित होकर वहीं रह गये ॥

सप्तषष्टितमः श्लोकः

ततः कामैः पूर्यमाणः सव्रजः सहबान्धवः ।
परार्ध्याभरणक्षौमनानानर्घ्यपरिच्छदैः ॥६७॥

पदच्छेद— ततः कामैः पूर्यमाणः सव्रजः सह बान्धवः ।
परार्ध्य आभरण क्षौम नाना अनर्घ्य परिच्छदैः ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद	परार्ध्य	२.	बहुमूल्य
कामैः	११.	खूब	आभरण	३.	आभूषण
पूर्यमाणः	१२.	तृप्त किया	क्षौम	४.	रेशमी वस्त्र
सव्रजः	८.	व्रजवासी साथियों और	नाना	५.	अनेक प्रकार की
सह	१०.	साथ (नन्दजी को)	अनर्घ्य	६.	उत्तम से उत्तम
बान्धवः ।	९.	बान्धवों के	परिच्छदैः ॥	७.	सामग्रियों और भोगों से

श्लोकार्थ—इसके बाद बहुमूल्य रेशमी वस्त्र अनेक प्रकार की उत्तम से उत्तम सामग्रियों और भोगों से व्रजवासी साथियों और बान्धवों के साथ नन्द जी को खूब तृप्त किया ॥

अष्टषष्टितमः श्लोकः

वसुदेवोग्रसेनाभ्यां कृष्णोद्धवबलादिभिः ।
दत्तमादाय पारिबर्हं यापितो यदुभिर्ययौ ॥६८॥

पदच्छेद— वसुदेव उग्रसेनाभ्याम् कृष्ण उद्धव बल आदिभिः ।
दत्तम् आदाय पारिबर्हम् यापितः यदुभिः ययौ ॥

शब्दार्थ—

वसुदेव	१.	वसुदेव	दत्तम्	७.	दी गईं
उग्रसेनाभ्याम्	२.	उग्रसेन	आदाय	९.	लेकर
कृष्ण	३.	श्रीकृष्ण	पारिबर्हम्	८.	भेंटें
उद्धव	४.	उद्धव	यापितः	११.	बिदा करने पर (नन्दजी)
बल	५.	बलराम	यदुभिः	१०.	यदुवंशियों के
आदिभिः ।	६.	आदि के द्वारा	ययौ ॥	१२.	चले गये

श्लोकार्थ—वसुदेव, उग्रसेन, श्रीकृष्ण, उद्धव, बलराम आदि के द्वारा दी गईं भेंटें लेकर यदुवंशियों के बिदा करने पर नन्दजी चले गये ॥

एकोनसप्ततितमः श्लोकः

नन्दो गोपाश्च गोप्यश्च गोविन्दचरणाम्बुजे ।
मनः क्षिप्तं पुनर्हर्तुमनीशा मथुरां ययुः ॥६६॥

पदच्छेद— नन्दः गोपः च गोप्यः च गोविन्द चरण अम्बुजे ।
मनः क्षिप्तम् पुनः हर्तुम् अनीशाः मथुराम् ययुः ॥

शब्दार्थ—

नन्दः	१.	नन्द जी	मनः	४.	चित्त
गोपः च	२.	गोप और	क्षिप्तम्	८.	लगा हुआ था
गोप्यः च	३.	गोपियों का	पुनः	९.	वे उसे वहाँ से
गोविन्द	५.	श्रीकृष्ण में	हर्तुम्	१०.	हटाने में
चरण	६.	चरण	अनीशाः	११.	असमर्थ होकर
अम्बुजे ।	७.	कमल में	मथुराम्ययुः॥	१२.	मथुरा को चले गये

श्लोकार्थ—नन्द जी, गोप और गोपियों का चित्त श्रीकृष्ण के चरण कमल में लगा हुआ था । वे उसे वहाँ से हटाने में असमर्थ होकर मथुरा चले गये ॥

सप्ततितमः श्लोकः

बन्धुषु प्रतियातेषु वृष्णयः कृष्णदेवताः ।
वीक्ष्य प्रावृषमासन्नां ययुर्द्वारवतीं पुनः ॥७०॥

पदच्छेद— बन्धुषु प्रतियातेषु वृष्णयः कृष्ण देवताः ।
वीक्ष्य प्रावृषम् आसन्नाम् ययुः द्वारवतीम् पुनः ॥

शब्दार्थ—

बन्धुषु	१.	बन्धु-बान्धवों के	वीक्ष्य	८.	जानकर
प्रतियातेषु	२.	चले जाने पर	प्रावृषम्	६.	वर्षा ऋतु को
वृष्णयः	५.	यदुवंशियों ने	आसन्नाम्	७.	आयी हुई
कृष्ण	३.	श्रीकृष्ण को ही	ययुः	११.	प्रस्थान किया
देवताः ।	४.	एकमात्र देवता मानने वाले	द्वारवतीम्	९.	द्वारका के लिये
			पुनः ॥	१०.	पुनः

श्लोकार्थ—तथा बन्धु-बान्धवों के चले जाने पर श्रीकृष्ण को ही एकमात्र देवता मानने वाले यदुवंशियों ने वर्षा ऋतु को आयी हुई जानकर द्वारका के लिये पुनः प्रस्थान किया ॥

एकसप्ततितमः श्लोकः

जनेभ्यः कथयाञ्चक्रुर्यदुदेवमहोत्सवम् ।
यदासीत्तीर्थयात्रायां सुहृत्सन्दर्शनादिकम् ॥७१॥

पदच्छेद - जनेभ्यः कथयान् चक्रुः यदुदेव महोत्सवम् ।
यत् आसीत् तीर्थयात्रायाम् सुहृत् सन्दर्शन आदिकम् ॥

शब्दार्थ—

जनेभ्यः	१०.	लोगों से	आसीत्	९.	हुआ था (वह सब)
कथयान्	११.	कहने	तीर्थ	६.	तीर्थ
चक्रुः	१२.	लगे	यात्रायाम्	७.	यात्रा में
यदुदेव	१.	वसुदेव जी के	सुहृत्	३.	मित्रों के
महोत्सवम् ।	२.	यज्ञ महोत्सव में	सन्दर्शन	४.	दर्शन मिलन
यत्	८.	जो कुछ	आदिकम् ॥	५.	आदि

श्लोकार्थ—वसुदेव जी के यज्ञ महोत्सव में मित्रों के दर्शन मिलन आदि तीर्थ-यात्रा में जो कुछ हुआ था, वह सब लोगों से कहने लगे ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे तीर्थयात्रानुवर्णनं नाम
चतुरशीतितमः अध्यायः ॥८४॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

पञ्चाशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीबादरायणिरुवाच-अथैकदाऽऽत्मजौ प्राप्तौ कृतपादाभिवन्दनौ ।
वसुदेवोऽभिनन्द्याह प्रीत्या सङ्कर्षणाच्युतौ ॥१॥

पदच्छेद— अथ एकदा आत्मजौ प्राप्तौ कृतपादाभिवन्दनौ ।
वसुदेवः अभिनन्द्य आह प्रीत्या सङ्कर्षण अच्युतौ ॥

शब्दार्थ—

अथ	१.	इसके बाद	वसुदेवः	८.	वसुदेव ने
एकदा	२.	एक दिन	अभिनन्द्य	१२.	अभिनन्दन करके
आत्मजौ	३.	दोनों पुत्र	आह	१३.	कहा
प्राप्तौ	४.	आये	प्रीत्या	११.	प्रेम से
कृत	७.	कर लेने पर	सङ्कर्षण	९.	बलराम और
पाद	५.	चरणों की	अच्युतौ ॥	१०.	श्रीकृष्ण का
अभिवन्दनौ ।	६.	वन्दना			

श्लोकार्थ—इसके बाद एक दिन पुत्र आये । चरणों की वन्दना कर लेने पर वसुदेव ने बलराम और श्रीकृष्ण का प्रेम से अभिनन्दन करके कहा ॥

द्वितीयः श्लोकः

मुनीनां स वचः श्रुत्वा पुत्रयोर्धामसूचकम् ।
तद्वीर्यैर्जातविश्रम्भः परिभाष्याभ्यभाषत ॥२॥

पदच्छेद— मुनीनां स वचः श्रुत्वा पुत्रयोः धाम सूचकम् ।
तत् वीर्यैः जात विश्रम्भः परिभाष्य अभ्यभाषत ॥

शब्दार्थ—

मुनीनां	१.	मुनियों के	तत्	७.	उनके
सः वचः	२.	बसुदेवजी ने वचनों का	वीर्यैः	८.	पराक्रमों से
श्रुत्वा	३.	सुनकर तथा	जात	१०.	उत्पन्न हो जाने पर (उन्हें)
पुत्रयोः	४.	दोनों पुत्रों की	विश्रम्भः	९.	विश्वास
धाम	५.	महिमा	परिभाष्य	११.	सम्बोधित करके
सूचकम् ।	६.	सूचक	अभ्यभाषत ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—मुनियों के वसुदेव जी ने वचनों को सुनकर तथा दोनों पुत्रों की महिमा सूचक उनके पराक्रमों से विश्वास उत्पन्न हो जाने पर उन्हें सम्बोधित करके कहा ॥

तृतीयः श्लोकः

कृष्ण कृष्ण महायोगिन् सङ्कर्षण सनातन ।
जाने वामस्य यत् साक्षात् प्रधानपुरुषौ परौ ॥३॥

पदच्छेद – कृष्ण-कृष्ण महायोगिन् सङ्कर्षण सनातन ।
जाने वामस्य यत् साक्षात् प्रधान पुरुषौ परौ ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण-कृष्ण	२.	हे श्रीकृष्ण !	वामस्य	६.	तुम दोनों इस जगत् के
महायोगिन्	१.	हे महायोगी !	यत्	७.	कि
सङ्कर्षण	४.	बलराम जी	साक्षात्	८.	साक्षात् कारण स्वरूप
सनातन ।	३.	सनातन	प्रधान	९.	प्रधान और
जाने	५.	मैं जानता हूँ	पुरुषौ	१०.	पुरुष के भी नियामक
			परौ ॥	११.	परमेश्वर हो

श्लोकार्थ—हे महायोगी ! हे श्रीकृष्ण ! सनातन बलराम जी मैं जानता हूँ कि तुम दोनों इस जगत् के साक्षात् कारणस्वरूप प्रधान और पुरुष के भी नियामक परमेश्वर हो ॥

चतुर्थः श्लोकः

यत्र येन यतो यस्य यस्मै यद् यद् यथा यदा ।
स्यादिदं भगवान् साक्षात् प्रधानपुरुषेश्वरः ॥४॥

पदच्छेद— यत्र येन यतः यस्य यस्मै यद्-यद् यथा यदा ।
स्यात् इदम् भगवान् साक्षात् प्रधान पुरुष ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१.	जहाँ	स्यात्	७.	होता है
येन	३.	जिसके द्वारा	इदम्	८.	वह तथा
यतः यस्य	५.	जिससे जिसका	भगवान्	१०.	भगवान्
यस्मै	४.	जिसके लिये	साक्षात्	९.	साक्षात्
यद्-यद्	६.	जो कुछ	प्रधान	११.	प्रधान
यथा-यदा ।	२.	जिस रूपमें-जिस समय	पुरुषेश्वरः ॥	१२.	पुरुष और ईश्वर तुम ही हो

श्लोकार्थ—जहाँ जिस रूप में जिस समय जिसके द्वारा जिसके लिये जिससे जिसका जो कुछ होता है वह तथा साक्षात् भगवान् प्रधान पुरुष और ईश्वर तुम ही हो ॥

पञ्चमः श्लोकः

एतन्नानाविधं विश्वमात्मसृष्टमधोक्षज ।
आत्मनानुप्रविश्यात्मन् प्राणो जीवो बिभर्ष्यज: ॥५॥

पदच्छेद— एतत् नाना विधम् विश्वम् आत्म सृष्टम् अधोक्षज ।
आत्मना अनुप्रविश्य आत्मन् प्राणः जीवः बिभर्षि अजः ॥

शब्दार्थ—

एतत्	४.	इस	आत्मना	९.	इसमें आत्मस्वरूप से
नाना	५.	चित्र	अनुप्रविश्य	१०.	प्रवेश करके
विधम्	६.	विचित्र	आत्मन्	३.	हे परमात्मन् !
विश्वम्	७.	जगत् को	प्राणः जीवः	११.	प्राण और जीव के रूप में
आत्म सृष्टम्	८.	तुम्हीं ने रचा है (और)	बिभर्षि	१२.	इसका पालन-पोषण कर रहे हो
अधोक्षज ।	१.	हे इन्द्रियों से परे !	अज ॥	२.	अजन्मा

श्लोकार्थ—हे इन्द्रियों से परे ! अजन्मा ! हे परमात्मन् ! इस चित्र-विचित्र जगत् को तुम्हीं ने रचा है । और इसमें आत्मस्वरूप से प्रवेश करके प्राण और जीव के रूप में इसका पालन-पोषण कर रहे हो ।

षष्ठः श्लोकः

प्राणादीनां विश्वसृजां शक्तयो याः परस्य ताः ।
पारतन्त्र्याद् वैसादृश्याद् द्वयोश्चेष्टैव चेष्टताम् ॥६॥

पदच्छेद— प्राण आदीनाम् विश्वसृजां शक्तयः याः परस्य ताः ।
पारतन्त्र्यात् वै सादृश्यात् द्वयोः चेष्टा एव चेष्टताम् ॥

शब्दार्थ—

प्राण	२.	प्राण	पारतन्त्र्यात्	८.	परतन्त्र हैं
आदीनाम्	३.	आदि में	वै	७.	क्योंकि
विश्वसृजाम्	१.	संसार की सृष्टि करने वाले	सादृश्यात्	१०.	समानता नाममात्र की है
शक्तयः	५.	शक्तियाँ हैं	द्वयोः	९.	दोनों में
याः	४.	जो	चेष्टा एव	१२.	केवल क्रिया होती है शक्ति नहीं है
परस्य ताः ।	६.	वे तुम्हारी ही हैं	चेष्टताम् ॥	११.	प्रयत्न करते हुये उनमें

श्लोकार्थ—संसार की सृष्टि करने वाले प्राण, आदि में जो शक्तियाँ हैं, वे तुम्हारी ही हैं । क्योंकि वे परतन्त्र हैं । दोनों में समानता नाम मात्र की है । प्रयत्न करते हुये उनमें केवल क्रिया होती है, शक्ति नहीं है ॥

सप्तमः श्लोकः

कान्तिस्तेजः प्रभा सत्ता चन्द्राग्न्यर्कर्क्षविद्युताम् ।
यत् स्थैर्यं भूभृतां भूमेर्वृत्तिर्गन्धोऽर्थतो भवान् ॥७॥

पदच्छेद— कान्तिः तेजः प्रभा सत्ता चन्द्र अग्नि अर्कऋक्ष विद्युताम् ।
यत् स्थैर्यम् भूभृताम् भूमेः वृत्तिः गन्धः अर्थतः भवान् ॥

शब्दार्थ—

कान्तिः	२.	कान्ति	यत्	११.	जो
तेजः	४.	तेज	स्थैर्यम्	१०.	स्थिरता है
प्रभा	६.	प्रभा	भूभृताम्	९.	पर्वतों की
सत्ता	८.	सत्ता (तथा)	भूमेः	१२.	पृथ्वी की
चन्द्र	१.	चन्द्रमा की	वृत्ति	१३.	साधारण शक्ति वृत्ति और
अग्नि	३.	अग्नि का	गन्धः	१४.	गन्ध रूप गुण हैं वह
अर्क	५.	सूर्य की	अर्थतः	१५.	वास्तव में
ऋक्षविद्युताम् ।	७.	नक्षत्र और बिजली की	भवान् ॥	१६.	आप ही हैं

श्लोकार्थ—चन्द्रमा की कान्ति, अग्नि का तेज, सूर्य की प्रभा, नक्षत्र और बिजली की सत्ता तथा पर्वतों की स्थिरता है, जो पृथ्वी की साधारण शक्ति वृत्ति और गन्धरूप गुण हैं वह वास्तव में आप ही हैं ॥

अष्टमः श्लोकः

तर्पणं प्राणनमपां देवत्वं ताश्च तद्रसः ।
ओजः सहो बलं चेष्टा गतिर्वायोस्तवेश्वर ॥८॥

पदच्छेद— तर्पणम् प्राणनम् अपाम् देवत्वम् ताः च तत् रसः ।
ओजः सहः बलम् चेष्टा गतिः वायोः तव ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

तर्पणम्	३.	तृप्त करने	ओजः	८.	इन्द्रिय शक्ति
प्राणनम्	४.	जीवन देने और	सहः	९.	अन्तःकरण की शक्ति
अपाम्	२.	जल में	बलम्	१०.	शरीर की शक्ति
देवत्वम्	५.	शुद्ध करने की शक्ति	चेष्टागतिः	११.	हिलना, डुलना, चलना, फिरना
ताः च	६.	जल और	वायोः	१२.	ये सब वायु की शक्तियाँ
तत् रसः ।	७.	उसका रस	तव	१३.	तुम्हारी ही हैं
			ईश्वर ॥	१.	हे परमेश्वर !

श्लोकार्थ—हे परमेश्वर ! जल में तृप्त करने, जीवन देने और शुद्ध करने की शक्ति जल और उसका रस, इन्द्रिय शक्ति, अन्तःकरण की शक्ति, शरीर की शक्ति, हिलना-डुलना, चलना-फिरना ये सब वायु की शक्तियाँ तुम्हारी ही हैं ॥

नवमः श्लोकः

दिशां त्वमवकाशोऽसि दिशः खं स्फोट आश्रयः ।
नादो वर्णस्त्वमोङ्कार आकृतीनां पृथक्कृतिः ॥९॥

पदच्छेद— दिशाम् त्वम् अवकाशः असि दिशः खम् स्फोट आश्रयः ।
नादः वर्णः त्वम् ओङ्कारः आकृतीनाम् पृथक् कृतिः ॥

शब्दार्थ—

दिशाम्	२.	दिशाओं का	नादः	८.	परा वाणी पश्यन्ती
त्वम् अवकाशः	३.	तुम्हीं स्थान	वर्णः	१०.	अक्षर एवम्
असि	४.	हो	त्वम्	१४.	तुम्हीं हो
दिशः	१.	दिशायें और	ओङ्कारः	९.	ओङ्कार
खम	५.	आकाश और	आकृतीनाम्	११.	पदार्थों का
स्फोटः	६.	उनका आश्रय भूत	पृथक्	१२.	अलग-अलग करने वाले
आश्रयः ।	७.	शब्द तन्मात्रा	कृतिः ॥	१३	पद-रूप-वैखरी वाणी भी

श्लोकार्थ—दिशायें और दिशाओं का स्थान तुम्हीं हो । आकाश और उनका आश्रयभूत शब्द तन्मात्रा, परा वाणी पश्यन्ती, ओङ्कार, अक्षर एवम् पदार्थों को अलग-अलग करने वाले पदरूप वैखरी वाणी भी तुम्हीं हो ॥

दशमः श्लोकः

इन्द्रियं त्विन्द्रियाणां त्वं देवाश्च तदनुग्रहः ।
अवबोधो भवान् बुद्धेर्जीवस्यानुस्मृतिः सती ॥१०॥

पदच्छेद— इन्द्रियम् तु इन्द्रियाणाम् त्वम् देवाः च तत् अनुग्रहः ।
अवबोधः भवान् बुद्धेः जीवस्य अनुस्मृतिः सती ॥

शब्दार्थ—

इन्द्रियम् तु	१	इन्द्रियाँ (तथा)	अवबोधः	८.	निश्चय करने की शक्ति और
इन्द्रियाणाम्	२.	इन्द्रियों के	भवान्	१२.	आप ही हैं
त्वम्	६.	तुम्हीं हो	बुद्धेः	७.	बुद्धि की
देवाः	३.	देवता	जीवस्य	९.	जीव की
च तत्	४.	और उनकी	अनुस्मृतिः	११	स्मृति भी
अनुग्रहः ।	५.	विषयों के प्रकाश की शक्ति भी	सती ॥	१०.	विशुद्ध

श्लोकार्थ—इन्द्रियाँ तथा इन्द्रियों के देवता और उनकी विषयों के प्रकाश की शक्ति भी तुम्हीं हो । बुद्धि के निश्चय करने की शक्ति और जीव की विशुद्ध स्मृति भी आप ही हैं ॥

एकादशः श्लोकः

भूतानामसि भूतादिरिन्द्रियाणां च तैजसः ।
वैकारिको विकल्पानां प्रधानमनुशायिनाम् ।।११।।

पदच्छेद— भूतानाम् असि भूतादिः इन्द्रियाणाम् च तैजसः ।
वैकारिकः विकल्पानाम् प्रधानम् अनु शायिनाम् ।।

शब्दार्थ—

भूतानाम्	१.	भूतों में	तैजसः ।	४.	तैजस अहंकार
असि	१०.	तुम्हीं हो	वैकारिकः	७.	सात्त्विक अहंकार
भूतादिः	२.	उनका कारण तामस अहंकार	विकल्पानाम्	६.	इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देवता
इन्द्रियाणाम्	३.	इन्द्रियों में	प्रधानम्	९.	माया भी
च	५	और	अनुशायिनाम् ।।	८.	जीवों के आवागमन का कारण

श्लोकार्थ— भूतों में उनका कारण तामस अहंकार, इन्द्रियों में तैजस अहंकार और इन्द्रियों के अधिष्ठातृ देवता जीवों के आवागमन का कारण माया भी तुम्हीं हो ।।

द्वादशः श्लोकः

नश्वरेष्विह भावेषु तदसि त्वमनश्वरम् ।
यथा द्रव्यविकारेषु द्रव्यमात्रं निरूपितम् ।।१२।।

पदच्छेद— नश्वरेषु इह भावेषु तत् असि त्वम् अनश्वरम् ।
यथा द्रव्य विकारेषु द्रव्य मात्रम् निरूपितम् ।।

शब्दार्थ—

नश्वरेषु	८.	विनाश शील	यथा	१.	जैसे
इह	७.	यहाँ पर	द्रव्य	२.	मिट्टी आदि के
भावेषु	९.	पदार्थों में	विकारेषु	३.	विकार घड़े आदि में
तत्	१०.	वह	द्रव्य	४.	मिट्टी
असि त्वम्	१२.	तुम ही विद्यमान हो	मात्रम्	५.	निरन्तर ही
अनश्वरम् ।	११.	अविनाशी तत्त्व	निरूपितम् ।।	६.	वर्तमान है वैसे ही

श्लोकार्थ— जैसे मिट्टी आदि के विकार घड़े आदि में मिट्टी निरन्तर ही वर्तमान है, वैसे ही यहाँ पर विनाशशील पदार्थों में वह अविनाशी तत्त्व तुम ही विद्यमान हो ।।

त्रयोदशः श्लोकः

सत्त्वं रजस्तम इति गुणास्तद्वृत्तयश्च याः ।
त्वय्यद्धा ब्रह्मणि परे कल्पिता योगमायया ॥१३॥

पदच्छेद— सत्त्वम् रजः तम इति गुणाः तत् वृत्तयः च याः ।
त्वयि अद्धा ब्रह्मणि परे कल्पिता योगमायया ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वम्	१. सत्त्व	त्वयि	११. तुममें
रजः तमः	२. रज, तम	अद्धा	८. तत्त्वतः
इति गुणाः	३. ये तीनों गुण	ब्रह्मणि	१०. ब्रह्मरूप
तत्	६. उनकी	परे	९. पर
वृत्तयः	७. वृत्तियाँ हैं (वे)	कल्पिता	१४. कल्पित
च	४. और	योग	१२. योग
याः ।	५. जो	मायया ॥	१३. माया के द्वारा

श्लोकार्थ—सत्त्व, रज, तम ये तीनों गुण और जो उनकी वृत्तियाँ हैं वे तत्त्वतः पर ब्रह्मरूप तुममें योग माया के द्वारा कल्पित हैं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

तस्मान्न सन्त्यमी भावा यर्हि त्वयि विकल्पिताः ।
त्वं चामीषु विकारेषु ह्यन्यदाव्यावहारिकः ॥१४॥

पदच्छेद— तस्मात् न सन्ति अमी भावाः यर्हि त्वयि विकल्पिताः ।
त्वम् च अमीषु विकारेषु हि अन्यत् अव्यावहारिकः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१. इसलिये	त्वम् च	७. तुम
न सन्ति	४. नहीं हैं	अमीषु	८. इन
अमी भावाः	२. ये जन्मादि भाव	विकारेषु	९. विकारों में जान पड़ते हो
यर्हि	५. जब	अन्यदा	१०. कल्पना के मिट जाने पर
त्वयि	३. तुममें	अव्य	११. निर्विकल्प
विकल्पिताः ।	६ ये कल्पित हो जाते हैं तब	अव्यवहारिकाः ॥	१२. परमार्थ स्वरूप तुम ही रह जाते हो

श्लोकार्थ—इसलिये ये जन्मादि भाव तुममें नहीं है । जब ये कल्पित हो जाते हैं । तब तुम इन विकारों में जान पड़ते हो । कल्पना के मिट जाने पर निर्विकल्प परमार्थस्वरूप तुम ही रह जाते हो ॥

पञ्चदशः श्लोकः

गुणप्रवाह एतस्मिन्नबुधास्त्वखिलात्मनः ।
गतिं सूक्ष्मामबोधेन संसरन्तीह कर्मभिः ॥१५॥

पदच्छेद— गुण प्रवाहे एतस्मिन् अबुधाः तु अखिल आत्मनः ।
गतिम् सूक्ष्माम् अबोधेन संसरन्ति इह कर्मभिः ॥

शब्दार्थ—

गुण	१. यह जगत् तीन गुणों का	गतिम्	८. स्वरूप
प्रवाह	२. प्रवाह है	सूक्ष्माम्	७. सूक्ष्म
एतस्मिन्	३. इसमें	अबोधेन	९. नहीं जानते
अबुधाः तु	४. अज्ञानी लोग हैं वे	संसरन्ति	१२. भटकते रहते हैं
अखिल	५. आप सर्व	इह	१०. यहाँ
आत्मनः ।	६. आत्मा का	कर्मभिः ।।	११. जन्म मृत्यु के चक्कर में

श्लोकार्थ—यह जगत् तीनों गुणों का प्रवाह है । इसमें अज्ञानी लोग हैं । वे आप सर्व आत्मा का सूक्ष्म स्वरूप नहीं जानते हैं । यहाँ जन्म, मृत्यु के चक्कर में भटकते रहते हैं ।।

षोडशः श्लोकः

यदृच्छया नृतां प्राप्य सुकल्पामिह दुर्लभाम् ।
स्वार्थे प्रमत्तस्य वयो गतं त्वन्माययेश्वर ॥१६॥

पदच्छेद— यदृच्छया नृताम् प्राप्य सुकल्पाम् इह दुर्लभाम् ।
स्वार्थे प्रमत्तस्य वयः गतम् त्वत् मायया ईश्वर ॥

शब्दार्थ—

यदृच्छया	३. प्रारब्धवश	स्वार्थे	१०. स्वार्थ में
नृताम्	६. मनुष्य शरीर	प्रमत्तस्य	११. पागल बने मेरी
प्राप्य	७. पाकर	वयः गतम्	१२. अवस्था बीत गई
सुकल्पाम्	५. सामर्थ्य युक्त एवम्	त्वत्	८. तुम्हारी
इह	२. यहाँ	मायया	९. माया के कारण
दुर्लभाम् ।	४. दुर्लभ	ईश्वर ।।	१. हे परमेश्वर !

श्लोकार्थ—हे परमेश्वर ! यहाँ प्रारब्धवश दुर्लभ सामर्थ्य युक्त एवम् मनुष्य शरीर पाकर तुम्हारी माया के कारण स्वार्थ में पागल बने मेरी अवस्था बीत गई ।।

सप्तदशः श्लोकः

असावहं ममैवैते देहे चास्यान्वयादिषु ।
स्नेहपाशैर्निबध्नाति भवान् सर्वमिद जगत् ॥१७॥

पदच्छेद— असौ अहम् मम एव एते देहे च अस्य अन्वय आदिषु ।
स्नेह पाशैः निबध्नाति भवान् सर्वम् इदम् जगत् ॥

शब्दार्थ—

असौ	१. यह शरीर	स्नेह	९. स्नेह की
अहम	२. मैं हूँ और	पाशैः	१०. फाँसी से
मम एव	४. मेरे ही हैं	निबध्नाति	१५. बाँध रखा है
एते	३. ये	भवान्	११. आपने
देहे च	६ शरीर के	सर्वान्	१३. सम्पूर्ण
अस्य	५. इस	इदम्	१२. इस
अन्वय	७. सम्बन्धी	जगत् ॥	१४. जगत् को
आदिषु ।	८. आदि में		

श्लोकार्थ—यह शरीर मैं हूँ । और ये मेरे ही हैं । इस शरीर के सम्बन्धी आदि में स्नेह की फाँसी से आपने इस जगत् को बांध रखा है ॥

अष्टदशः श्लोकः

युवां न नः सुतौ साक्षात् प्रधानपुरुषेश्वरौ ।
भूभारक्षत्रक्षपण अवतीर्णौ तथाऽऽत्थ ह ॥१८॥

पदच्छेद— युवाम् न नः सुतौ साक्षात् प्रधान पुरुष ईश्वरौ ।
भूभार क्षत्र क्षपण अवतीर्णौ तथा आत्थ ह ॥

शब्दार्थ—

युवाम्	१. तुम दोनों	भूभार	७. पृथ्वी के भार भूत
न	३. नहीं हो	क्षत्र	८. राजाओं के
नः सुतौ	२. हमारे पुत्र	क्षपण	९. विनाश के लिये (आपने)
साक्षात्	४. साक्षात	अवतीर्णौ	१०. अवतार लिया है
प्रधान पुरुष	५. प्रकृति-पुरुष और	तथा	११. जैसा कि
ईश्वरौ ।	६. ईश्वर हो	आत्थ ह ॥	१२. आपने कहा था

श्लोकार्थ—तुम दोनों हमारे पुत्र नहीं हो । साक्षात् प्रकृति-पुरुष और ईश्वर हो । पृथ्वी के भारभूत राजाओं के विनाश के लिये आपने अवतार लिया है, जैसा कि आपने कहा था ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तत्ते गतोऽस्म्यरणमद्य पदारविन्दमापन्नसंसृतिभयापहमार्तबन्धो ।
एतावतालमलमिन्द्रियलालसेन मर्त्यात्मदृक् त्वयि परे यदपत्यबुद्धिः ॥१९॥

पदच्छेद— तत् ते गतः अस्मि अरणम् अद्य पदार विन्दम् आपन्न संसृति भया पहम् आर्तबन्धो ।
एतावता अलम्-अलम् इन्द्रिय लालसेन मर्त्य आत्मदृक् त्वयि परे यत् आपत्य बुद्धिः ॥

शब्दार्थ—

तत् ते	२.	इसलिये	एतावता	१०.	इतनी
गतः अस्मि	८.	आया हूँ	अलम्-अलम्	१३.	बस-बस मैंने
अरणम्	७.	शरण में	इन्द्रिय	९.	इन्द्रियों की
अद्य	५.	आज	लालसेन	११.	लालसा से ही
पदारविन्दम्	६.	चरण कमल की	मर्त्य	१२.	मरणासन्न शरीर
आपन्नसंसृति	३.	शरणागतों के संसार	आत्मदृक्	१४.	आत्म बुद्धि कर ली
भयापहम्	४	भय को मिटाने वाले	त्वयि परे यत्	१५.	और आप परमात्मा में
आर्तबन्धो ।	१.	हे दीनजनों के हितैषी !	अपत्यबुद्धः ।।	१६	पुत्र बुद्धि कर ली है

श्लोकार्थ—हे दीनजनों के हितैषी ! इसलिये शरणागतों के संसार-भय को मिटाने वाले आपके आज चरण कमल की शरण में आया हूँ । इन्द्रियों की इतनो लालसा से ही मरणासन्न शरीर में बस-बस मैंने आत्मबुद्धि कर ली और आप परमात्मा में पुत्र बुद्धि कर ली है ॥

विंशः श्लोकः

सूतीगृहे ननु जगाद भवानजो नौ संजज्ञ इत्यनुयुगं निजधर्मगुप्त्यै ।
नानातनूर्गगनवद् विदधज्जहासि को वेद भूम्न उरुगाय विभूतिमायाम् ॥२०॥

पदच्छेद—सूती गृहे ननु जगाद भवान् अजः नौ संजज्ञे इति अनुयुगम् निज धर्म गुप्त्यं ।
नानातनूः गगनवत् विदधत् जहासि कः वेद भूम्नः उरुगाय विभूति मायाम् ॥

शब्दाथ—

सूती गृहे ननु	१.	सूतिका गृह में	नानातनूः	१०.	अनेकों शरीर
जगाद भवान्	२.	आपने कहा था	गगनवत्	९.	तुम आकाश के समान
अजः	४.	अजन्मा हूँ	विदधत्	११	ग्रहण करते और
नौ संजज्ञे	८.	तुम दोनों के द्वारा जन्म	जहासि	१२.	छोड़ते रहते हो
इति	३.	कि मैं	कः वेद	१६.	कौन जान सकता है
अनुयुगम्	७.	प्रत्येक युग में	भूम्नः	१४.	हे अनन्त ! तुम्हारी
निजधर्म	५.	अपने धर्म की	उरुगाय	१३.	विशालकीर्ति वाले
गुप्त्यै ।	६.	रक्षा के लिये	विभूतमायाम् ।।	१५.	शक्ति योगमाया को

श्लोकार्थ—सूतिका गृह में ही आपने कहा था कि मैं अजन्मा हूँ अपने धर्म की रक्षा के लिये प्रत्येक युग में तुम दोनों के द्वारा जन्म लेता हूँ । तुम आकाश के समान अनेकों शरीर ग्रहण करते और छोड़ते रहते हो । विशाल कीर्ति वाले हे अनन्त ! तुम्हारी शक्ति योगमाया को कौन जान सकता है ॥

एकविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—आकर्ण्येत्थं पितुर्वाक्यं भगवान् सात्वतर्षभः ।
प्रत्याह प्रश्रयानम्रः प्रहसञ्श्लक्ष्णया गिरा ॥२१॥

पदच्छेद— आकर्ण्य इत्थम् पितुः वाक्यम् भगवान् सात्वत ऋषभः ।
प्रति आह प्रश्रय आनम्रः प्रहसन् श्लक्ष्णया गिरा ॥

शब्दार्थ—

आकर्ण्य	४. सुनकर	ऋषभः ।	६. शिरोमणि
इत्थम्	१. इस प्रकार	प्रति आह	१२. कहा
पितुः	२. पिता की	प्रश्रय आनम्रः	८. विनय से झुककर
वाक्यम्	३. बात को	प्रहसन्	९. मुसकराते हुये
भगवान्	७. भगवान् ने	श्लक्ष्णया	१०. मधुर
सात्वत	५. यदुवंश	गिरा ॥	११. वाणी से

श्लोकार्थ—इस प्रकार पिता की बात को सुनकर यदुवंश शिरोमणि भगवान् ने विनय से झुककर मुसकराते हुये मधुर वाणी से कहा ॥

द्वाविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—वचो वः समवेतार्थं तातैतदुपमन्महे ।
यन्नः पुत्रान् समुद्दिश्य तत्त्वग्राम उदाहृतः ॥२२॥

पदच्छेद — वचः वः समवेत अर्थम् तात एतत् उपमन्महे ।
यत् नः पुत्रान् समुद्दिश्य तत्त्वग्रामः उदाहृतः ॥

शब्दार्थ—

वचः	११. बात को	यत्	२. जो
वः	९. हम आपकी	नः	३. हम
समवेत	१२. युक्ति	पुत्रान्	४. पुत्रों को
अर्थम्	१३. युक्त	समुद्दिश्य	५. लक्ष्य करके
तात	१. हे पिताजी ! आपने	तत्त्व	६. ब्रह्म
एतत्	१०. इस	ग्रामः	७. ज्ञान का
उपमन्महे ।	१४. मानते हैं	उदाहृतः ॥	८. उपदेश किया है

श्लोकार्थ—हे पिताजी ! आपने जो हम पुत्रों को लक्ष्य करके ब्रह्म ज्ञान का उपदेश किया है, सो हम आपकी इस बात को युक्ति-युक्त मानते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

अहं यूयमसावार्य इमे च द्वारकौकसः ।
सर्वेऽप्येवं यदुश्रेष्ठ विमृश्याः सचराचरम् ॥२३॥

पदच्छेद— अहम् यूयम् असौ आर्य इमे च द्वारकौकसः ।
सर्वे अपि एवम् यदु श्रेष्ठ विमृश्याः सचराचरम् ॥

शब्दार्थ—

अहम्	३.	मैं	सर्वे अपि	१०.	सभी को
यूयम्	४.	आप लोग	एवम्	११.	इस प्रकार ब्रह्मरूप ही
असौ	५.	ये	यदु	१.	हे यदुवंश
आर्य	६.	भैया बलराम जी	श्रेष्ठ	२.	शिरोमणि !
इमे	७.	ये	विमृश्याः	१२.	समझना चाहिये
च द्वारकौकसः ।	८.	द्वारकावासी और	सचराचरम् ॥	९.	सम्पूर्ण जगत् तथा

श्लोकार्थ—हे यदुवंश शिरोमणि ! मैं, आप लोग, ये भैया बलराम जी, ये द्वारकावासी और सम्पूर्ण जगत् तथा सभी को इस प्रकार ब्रह्मरूप ही समझना चाहिये ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

आत्मा ह्येकः स्वयंज्योतिर्नित्योऽन्यो निर्गुणो गुणैः ।
आत्मसृष्टैस्तत्कृतेषु भूतेषु बहुधेयते ॥२४॥

पदच्छेद— आत्मा हि एकः स्वयम् ज्योतिः नित्यः अन्यः निर्गुणः गुणैः ।
आत्म सृष्टैः तत् कृतेषु भूतेषु बहुधा ईयते ॥

शब्दार्थ—

आत्मा हि	१.	आत्मा तो	आत्म	६.	अपने
एकः स्वयम्	२.	एक स्वयं	सृष्टैः	७.	बनाये हुये
ज्योतिः	३.	प्रकाश	तत्	९.	उनके
नित्यः	४.	नित्य तथा	कृतेषु	१०.	बनाये हुये
अन्यः	१३.	भिन्न (अनित्य, सगुणादि)	भूतेषु	११.	पञ्चभूतों मे
निर्गुणः	५.	निर्गुण है किन्तु	बहुधा	१२.	अनेक
गुणैः ।	८.	गुणों के द्वारा	ईयते ॥	१४.	प्रतीत होते हैं

श्लोकार्थ—आत्मा तो एक, स्वयम् प्रकाश, नित्य तथा निर्गुण है, किन्तु अपने बनाये हुये गुणों के द्वारा उनके बनाये हुये पञ्चभूतों मे अनेक भिन्न, अनित्य सगुणादि प्रतीत होते हैं ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

खं वायुर्ज्योतिरापो भूस्तत्कृतेषु यथाशयम् ।
आविस्तिरोऽल्पभूर्येको नानात्वं यात्यसावपि ।।२५।।

पदच्छेद— खम् वायुः ज्योतिः आपः भूः तत् कृतेषु यथा आशयम् ।
आविः तिर अल्प भूरिः एकः नानात्वम् याति असौ अपि ।।

शब्दार्थ—

खम्	४.	आकाश	आविः तिरः	८.	प्रकट, अप्रकट
वायुः	३.	वायु और	अल्पभूरि	९.	थोड़ा, बहुत और
ज्योतिः	२.	अग्नि	एकः	१०.	एक और
आपः भूः	१.	जल-पृथ्वी	नानात्वम्	११.	अनेक प्रकार का
तत् कृतेषु	५.	अपने कार्यों (घट आदि में)	याति	१२.	हो जाता है (उसी प्रकार)
यथा	७.	अनुसार	असौ	१३.	वह (आत्मा)
आशयम् ।	६.	आधार के	अपि ।।	१४.	भी (अनेक हो जाता है)

श्लोकार्थ—हे पिताजी ! जल, पृथ्वी, वायु और आकाश अपने कार्यों घट आदि में आधार के अनुसार प्रकट, अप्रकट, थोड़ा, बहुत, एक और अनेक प्रकार के हो जाते हैं । उसी प्रकार वह आत्मा भी अनेक हो जाता है ।।

षड्विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं भगवता राजन् वसुदेव उदाहृतम् ।
श्रुत्वा विनष्टनानाधीस्तूष्णीं प्रीतमना अभूत् ।।२६।।

पदच्छेद— एवम् भगवता राजन् वसुदेवः उदाहृतम् ।
श्रुत्वा विनष्ट नाना धीः तूष्णीम् प्रीतमनाः अभूत् ।।

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	विनष्ट	९.	छोड़ दी और
भगवतः	३.	भगवान् के	नाना	७.	नानात्व
राजन्	१.	हे राजन् !	धीः	८.	बुद्धि
वसुदेवः	६.	वसुदेव ने	तूष्णीम्	११.	चुप
उदाहृतम्	४.	वचनों को	प्रीतमनाः	१०.	आनन्द चित्त होकर
श्रुत्वा ।	५.	सुनकर	अभूत् ।।	१२.	हो गये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार भगवान् के वचनों को सुनकर वसुदेव ने नानात्व बुद्धि छोड़ दी और आनन्द चित्त होकर चुप हो गये ।।

सप्तविंशः श्लोकः

अथ तत्र कुरुश्रेष्ठ देवकी सर्वदेवता ।
श्रुत्वाऽऽनीतं गुरोः पुत्रमात्मजाभ्यां सुविस्मिता ॥२७॥

पदच्छेद— अथ तत्र कुरुश्रेष्ठ देवकी सर्व देवता ।
श्रुत्वा आनीतम् गुरोः पुत्रम् आत्मजाभ्याम् सुविस्मिता ॥

शब्दार्थ—

अथ	२.	तदनन्तर	श्रुत्वा	११.	सुनकर
तत्र	३.	वहाँ पर बैठी हुई	आनीतम्	८.	लाये गये
कुरुश्रेष्ठ	१.	हे कुरुश्रेष्ठ !	गुरोः	९.	गुरु
देवकी	६.	देवकी	पुत्रान्	१०.	पुत्रों के बारे में
सर्व	४.	सर्व	आत्मजाभ्याम्	७.	दोनों पुत्रों के द्वारा
देवता ।	५.	देवमयी	सुविस्मिता ॥	१२.	अत्यन्त विस्मित हुई

श्लोकार्थ—हे कुरुश्रेष्ठ ! तदनन्तर वहाँ पर बैठी हुई सर्व देवमयी देवकी दोनों पुत्रों के द्वारा लाये गये गुरु पुत्र के बारे में सुनकर अत्यन्त विस्मित हुई ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

कृष्णरामौ समाश्राव्य पुत्रान् कंसविहिंसितान् ।
स्मरन्ती कृपणं प्राह वैक्लव्यादश्रुलोचना ॥२८॥

पदच्छेद— कृष्ण रामौ समाश्राव्य पुत्रान् कंसविहिंसितान् ।
स्मरन्ती कृपणम् प्राह वैक्लव्यात् अश्रुलोचना ॥

शब्दार्थ—

कृष्ण	८.	श्रीकृष्ण और	स्मरन्ती	४.	स्मरण करती हुई
रामौ	९.	बलराम को	कृपणम्	११.	करुण वचन
समाश्राव्य	१०.	सुनाकर	प्राह	१२.	बोलीं
पुत्रान्	३.	पुत्रों को	वैक्लव्यात्	५.	विकलता के कारण
कंस	१.	कंस द्वारा	अश्रु	६.	आँसू भरे
विहिंसितान् ।	२.	मारे गये	लोचना ॥	७.	नेत्रों से

श्लोकार्थ—कंस द्वारा मारे गये पुत्रों को स्मरण करती हुई विकलता के कारण आँसू भरे नेत्रों से श्रीकृष्ण और बलराम को सुनाकर करुण वचन बोलीं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

देवक्युवाच— राम रामाप्रमेयात्मन् कृष्ण योगेश्वरेश्वर।
वेदाहं वां विश्वसृजामीश्वरावादिपूरुषौ ॥२९॥

पदच्छेद— राम राम अप्रेय आत्मन् कृष्ण योगेश्वर ईश्वर।
वेद अहम् वाम् विश्व सृजाम् ईश्वरौ आदि पूरुषौ ॥

शब्दार्थ—

राम	१.	लोकाभिराम	वेद	९	जानती हूँ कि
राम	२.	बलराम	अहम्	८.	मैं
अप्रमेय	४.	मन और वाणी परे हैं	वाम्	१०.	तुम दोनों
आत्मन्	३.	तुम्हारी शक्ति	विश्वसृजाम्	११.	प्रजापतियों के भी
कृष्ण	५.	श्रीकृष्ण तुम	ईश्वरौ	१२.	ईश्वर और
योगेश्वर	६.	योगीश्वरों के भी	आदि	१३.	आदि
ईश्वरौ।	७.	ईश्वर हो	पूरुषौ ॥	१४.	पुरुष हो

श्लोकार्थ—लोकाभिराम बलराम तुम्हारी शक्ति मन और वाणी से परे है। श्रीकृष्ण! तुम योगीश्वरों के भी ईश्वर हो। मैं जानती हूँ कि तुम दोनों प्रजापतियों के भी ईश्वर और आदि पुरुष हो।

त्रिंशः श्लोकः

कालविध्वस्तसत्त्वानां राज्ञामुच्छास्त्रवर्तिनाम्।
भूमेर्भारायमाणानामवतीर्णो किलाद्य मे ॥३०॥

पदच्छेद— काल विध्वस्त सत्त्वानाम् राज्ञाम् उच्छास्त्र वर्तिनाम्।
भूमेः भाराय माणानाम् अवतीर्णौ किल अद्य मे ॥

शब्दार्थ—

काल	१.	काल के द्वारा	भूमेः	६.	पृथ्वी के
विध्वस्त	२.	विनष्ट किये गये	भाराय	७.	भार
सत्त्वानाम्	३.	पराक्रम वाले	माणानाम्	८.	बने हुये (उन)
राज्ञाम्	९.	राजाओं का (नाश करने के लिये)	अवतीर्णौ	११.	अवतीर्ण
उच्छास्त्र	४.	शास्त्रों का उल्लंघन करके	किल	१२.	हुये हो
वर्तिनाम्।	५.	आचरण करने वाले और	अद्य मे ॥	१०.	अब मेरे गर्भ से

श्लोकार्थ—तुम दोनों काल के द्वारा विनष्ट किये गये पराक्रम वाले शास्त्रों का उल्लंघन करके आचरण करने वाले और पृथ्वी के भार बने हुये उन राजाओं का नाश करने के लिये अब मेरे गर्भ से अवतीर्ण हुये हो ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

यस्यांशांशभागेन विश्वोत्पत्तिलयोदयाः ।
भवन्ति किल विश्वात्मंस्तं त्वाद्याहं गतिं गता ॥३१॥

पदच्छेद— यस्य अंश अंश भागेन विश्व उत्पत्तिलय उदयाः ।
भवन्ति किल विश्वात्मन् तम् त्वा अद्य अहम् गतिम् गता ॥

शब्दार्थ—

यस्य	२. जिसके	भवन्तिकिल	८. होता है
अंश	३. अंश के	विश्वात्मन्	१. हे विश्व की आत्मा !
अंशभागेन	४. अंश के भाग से	तम् त्वा	६. उस तुम्हारी
विश्व	५. संसार की	अद्य	१०. आज
उत्पत्तिलयः	६. उत्पत्ति, प्रलय और	अहम्	११. मैं
उदयाः ।	७. विकास	गतिम् गता ॥	१२. शरण में आयी हूँ

श्लोकार्थ—हे विश्वात्मन् ! जिसके अंश के, अंश के भाग से संसार की उत्पत्ति, प्रलय और विकास होते हैं, उस तुम्हारी आज में शरण मे आई हूँ ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

चिरान्मृतसुतादाने गुरुणा कालचोदितौ ।
आनिन्यथुः पितृस्थानाद् गुरवे गुरुदक्षिणाम् ॥३२॥

पदच्छेद— चिरात् मृत सुत आदाने गुरुणा काल चोदितौ ।
आनिन्यथुः पितृ स्थानात् गुरवे गुरु दक्षिणाम् ॥

शब्दार्थ—

चिरात्	१. चिरकाल से	आनिन्यथुः	६. ले आये और
मृतसुत	२. मरे हुये पुत्रों को	पितृ	७. यम
आदाने	३. ला देने के लिये	स्थानात्	८. पुरी से
गुरुणा	४. गुरु की आज्ञा तथा	गुरवे	१०. उन्हें गुरु को
काल	५. काल की	गुरु	११. गुरु
चोदितौ ।	६. प्रेरणा से तुम दोनों	दक्षिणाम् ॥	१२. दक्षिणा में समर्पित कर दिया

श्लोकार्थ—चिरकाल से मरे हुये पुत्रों को ला देने के लिये गुरु की आज्ञा तथा काल की प्रेरणा से तुम दोनों यमपुरी से ले आये, और उन्हें गुरु को, गुरुदक्षिणा में समर्पित कर किया ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

तथा मे कुरुतं कामं युवां योगेश्वरेश्वरौ ।
भोजराजहतान् पुत्रान् कामये द्रष्टुमाहृतान् ॥३३॥

पदच्छेदः— तथा मे कुरुतम् कामम् युवाम् योगेश्वर ईश्वरौ ।
भोजराज हतान् पुत्रान् कामये द्रष्टुम् आहृतान् ॥

शब्दार्थ—

तथा मे	४. उसी प्रकार मेरी	भोजराज	७ कंस के द्वारा
कुरुतम्	६. पूर्ण करो	हतान्	८. मारे गये
कामम्	५. कामना को	पुत्रान्	९. मेरे पुत्रों को
युवाम्	३. तुम दोनों	कामये	११. मैं देखना
योगेश्वर	१. योगेश्वरों के भी	द्रष्टुम्	१२. चाहती हूँ
ईश्वरौ ।	२. ईश्वर	आहृतान् ॥	१०. ला दो

श्लोकार्थ—योगेश्वरों के भी ईश्वर तुम दोनों उसी प्रकार मेरी कामना को पूर्ण करो । कंस के द्वारा मारे गये मेरे पुत्रों को ला दो मैं देखना चाहती हूँ ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

ऋषिरुवाच— एवं सञ्चोदितौ मात्रा रामः कृष्णश्च भारत ।
सुतलं संविविशतुर्योगमायामुपाश्रितौ ॥३४॥

पदच्छेद— एवम् सञ्चोदितौ मात्रा रामः कृष्णः च भारत ।
सुतलम् संविविशतुः योग मायाम् उपाश्रितौ ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३. इस प्रकार	सुतलम्	१०. सुतल लोक में
सञ्चोदितौ	४. कहे जाने पर	संविविशतुः	११. प्रवेश किया
मात्रा	२. माता के द्वारा	योग	७. योग
रामः	५. बलराम	मायाम्	८. माया का
कृष्णः च	६. और श्रीकृष्ण ने	उपाश्रितौ ॥	९. आश्रय लेकर
भारत ।	१. हे परीक्षित् !		

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! माता के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर बलराम और श्रीकृष्ण ने योगमाया का आश्रय लेकर सुतललोक में प्रवेश किया ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

तस्मिन् प्रविष्टावुपलभ्य दैत्यराड् विश्वात्मदैवं सुतरां तथाऽऽत्मनः ।
तद्दर्शनाह्लादपरिप्लुताशयः सद्यः समुत्थाय ननाम सान्वयः ॥३५॥

पदच्छेद— तस्मिन् प्रविष्टौ उपलभ्य दैत्यराट् विश्वात्म दैवम् सुतराम् तथा आत्मनः ।
तत् दर्शन आह्लाद परिप्लुत आशयः सद्यः समुत्थाय ननाम सान्वयः ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	वे वहाँ उन दोनों के	तत् दर्शन	८.	उनके दर्शन के
प्रविष्टौ	२.	प्रवेश करने पर	आह्लाद	९.	आनन्द में
उपलभ्य	७.	जानकर	परिप्लुत	१०.	निमग्न
दैत्यराट्	१२.	दैत्यराज बलि	आशयः	११.	चित्त
विश्वात्म	३.	संसार के आत्मा और	सद्यः	१३.	तुरन्त
दैवम्	४.	इष्ट देव	समुत्थाय	१४.	उठकर
सुतराम्	६.	परम स्वामी भगवान् को	ननाम	१६.	उनके चरणों में प्रणाम किया
तथा आत्मनः ।	५.	तथा अपने	सान्वयः ॥	१५.	अपने कुटुम्ब के साथ

श्लोकार्थ—वहाँ उन दोनों के प्रवेश करने पर संसार के आत्मा और इष्ट देव तथा अपने परम स्वामी भगवान् को जानकर उनके दर्शन के आनन्द में निमग्न चित्त दैत्यराज बलि ने तुरन्त उठकर अपने कुटुम्ब के साथ उनके चरणों में प्रणाम किया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

तयोः समानीय वरासनं मुदा निविष्टयोस्तत्र महात्मनोस्तयोः ।
दधार पादाववनिज्य तज्जलं सवृन्द आब्रह्म पुनद् यदम्बु ह ॥३६॥

पदच्छेद— तयोः समानीय वरासनम् मुदा निविष्टयोः तत्र महात्मनोः तयोः ।
दधार पादौ अवनिज्य तत् जलम् सवृन्द आब्रह्म पुनत् यत् अम्बु ह ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१.	उन दोनों को	दधार	१३.	सिर पर धारण किया
समानीय	३.	देकर	पादौ	९.	उनके चरणों को
वरासनम्	२.	श्रेष्ठ आसन	अवनिज्य	१०.	धोकर
मुदा	७.	आनन्द से	तत् जलम्	११.	वह जल
निविष्टयोः	८.	बैठ जाने पर (बलि ने)	सवृन्द	१२.	परिवार सहित
तत्र	४.	उस पर	आब्रह्म	१५.	ब्रह्मा सहित सारे जगत् को
महात्मनोः	६.	महात्माओं के	पुनत्	१६.	पवित्र कर देता है
तयोः ॥	५.	उन दोनों	यत् अम्बु ह ॥	१४.	जो जल

श्लोकार्थ—उन दोनों को श्रेष्ठ आसन देकर उस पर उन दोनों महात्माओं के आनन्द से बैठ जाने पर बलि ने उनके चरणों को धोकर वह जल परिवार सहित सिर पर धारण किया, जो ब्रह्मा सहित सारे जगत् को पवित्र कर देता है ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

समर्हयामास स तौ विभूतिभिर्महार्हवस्त्राभरणानुलेपनैः ।
ताम्बूलदीपामृतभक्षणादिभिः स्वगोत्रवित्तात्मसमर्पणेन च ॥३७॥

पदच्छेद— समर्हयामास सः तौ विभूतिभिः महार्हवस्त्र आभरण अनुलेपनैः ।
ताम्बूल दीप अमृत भक्षण आदिभिः स्वगोत्र वित्त आत्मसमर्पणेन च ॥

शब्दार्थ—

समर्हयामास	१०.	पूजा की	ताम्बूलदीप	५.	ताम्बूल दीपक तथा
सः	१.	उस बलि ने	अमृतभक्षण	६.	अमृत के समान भोजन
तौ	९.	उन दोनों की	आदिभिः	७.	आदि
विभूतिभिः	८.	विविध सामग्रियों से	स्वगोत्र	१२.	अपने समस्त परिवार
महार्ह	२.	बहुमूल्य	वित्त आत्म	१३.	धन एवम् शरीर को भी
वस्त्र आभरण	३.	वस्त्र आभूषण	समर्पणेन	१४.	समर्पित कर दिया
अनुलेपनैः ।	४.	चन्दन	च ॥	११.	और

श्लोकार्थ—उस बलि ने बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण, चन्दन, ताम्बूल, दीपक तथा अमृत के समान भोजन आदि विविध सामग्रियों से उन दोनों की पूजा की और अपने समस्त परिवार धन एवम् शरीर को भी समर्पित कर दिया ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

स इन्द्रसेनो भगवत्पदाम्बुजं बिभ्रन्मुहुः प्रेमविभिन्नया धिया ।
उवाच हानन्दजलाकुलेक्षणः प्रहृष्टरोमा नृप गद्‌गदाक्षरम् ॥३८॥

पदच्छेद— सः इन्द्रसेनः भगवत् पद अम्बुजम् बिभ्रत् मुहुः प्रेम विभिन्नया धिया ।
उवाच ह आनन्द जल अकुल ईक्षणः प्रहृष्ट रोमा नृप गद्‌गद अक्षरम् ॥

शब्दार्थ—

सः	२.	वह	उवाच ह	१६.	बोले
इन्द्रसेनः	३.	बलि	आनन्द	१०.	आनन्द के
भगवत्	४.	भगवान् के	जल	११.	आँसुओं से
पद अम्बुजम्	५.	चरण कमलों को	आकुलेक्षणः	१२.	व्याप्त नेत्रों तथा
बिभ्रत्	७.	धारण करते हुये	प्रहृष्ट रोमा	१३.	रोमांचित शरीर होकर
मुहुः	६.	बार-बार	नृप	१.	हे राजन् !
प्रेम विभिन्नया	८.	प्रेम से विह्वल	गद्‌गद	१४.	गद्‌गद
धिया ।	९.	चित्त	अक्षरम् ॥	१५.	स्वर से

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वह बलि भगवान् के चरण कमलों को बार-बार धारण करते हुये प्रेम से विह्वल चित्त, आनन्द के आँसुओं से व्याप्त नेत्रों तथा रोमांचित शरीर होकर गद्‌गद स्वर से बोले ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

वलिरुवाच— नमोऽनन्ताय बृहते नमः कृष्णाय वेधसे।
सांख्ययोगवितानाय ब्रह्मणे परमात्मने ॥३९॥

पदच्छेद— नमः अनन्ताय बृहते नमः कृष्णाय वेधसे।
सांख्ययोग वितानाय ब्रह्मणे परम आत्मने ॥

शब्दार्थ—

नमः अनन्ताय	१. अनन्त को नमस्कार है	सांख्ययोग	६. ज्ञान योग और भक्तियोग का
बृहते	२. महान् को	वितानाय	७. प्रसार करने वाले उस
नमः	३. नमस्कार है	ब्रह्मणे	८. ब्रह्म तथा
कृष्णाय	४. श्रीकृष्ण	परम	९. परम
वेधसे।	५. सबके स्रष्टा हैं।	आत्मने ॥	१०. आत्मा को नमस्कार है

श्लोकार्थ—अनन्त को नमस्कार है। महान् को नमस्कार है। श्रीकृष्ण सबके स्रष्टा हैं। ज्ञानयोग और भक्तियोग का प्रसार करने वाले उस ब्रह्म तथा परम आत्मा को नमस्कार है॥

चत्वारिंशः श्लोकः

दर्शनं वां हि भूतानां दुष्प्रापं चाप्यदुर्लभम्।
रजस्तमःस्वभावानां यन्नः प्राप्तौ यदृच्छया ॥४०॥

पदच्छेद— दर्शनम् वाम् हि भूतानाम् दुष्प्रापम् च अपि अदुर्लभम्।
रजः तमः स्वभावानाम् यत् नः प्राप्तौ यदृच्छया ॥

शब्दार्थ—

दर्शनम्	२. दर्शन	रजः तमः	८. रजोगुणी तथा तमोगुणी
वाम् हि	१. आप दोनों का	स्वभावानाम्	९. स्वभाव वाले
भूतानाम्	३. प्राणियों के लिये	यत्	७. जो कि
दुष्प्रापम्	४. दुर्लभ	नः	१०. हम लोगों को
च अपि	५. होने पर भी	प्राप्तौ	१२. मिल गया है
अदुर्लभम्।	६. सुलभ हो जाता है	यदृच्छया ॥	११. अपने आप ही

श्लोकार्थ— आप दोनों का दर्शन प्राणियों के लिये दुर्लभ होने पर भी सुलभ हो जाता है। जो कि रजोगुणी, तमोगुणो स्वभाव वाले हम लोगों को आप दोनों अपने आप ही मिल गये हैं॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

दैत्यदानवगन्धर्वाः सिद्धविद्याध्रचारणाः ।
यक्षरक्षःपिशाचाश्च भूतप्रमथनायकाः ॥४१॥

पदच्छेद— दैत्य दानव गन्धर्वाः सिद्ध विद्याध्र चारणाः ।
यक्ष रक्षः पिशाचाः च भूत प्रमथ नायकाः ॥

शब्दार्थ—

दैत्य	१.	दैत्य	यक्ष	७.	यक्ष
दानव	२.	दानव	रक्षः	८.	राक्षस
गन्धर्वाः	३.	गन्धर्व	पिशाचाः	९.	पिशाच
सिद्ध	४.	सिद्ध	च	११.	और
विद्याध्र	५.	विद्याधर	भूत	१०.	भूत
चारणाः ।	६.	चारण	प्रमथनायकाः ॥	१२.	प्रमथनायकाः (आपसे वैर रखते हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! दैत्य, दानव, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर, चारण, यक्ष, राक्षस, पिशाच, भूत और प्रमथनायक आपसे वैर रखते हैं ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

विशुद्धसत्त्वधाम्न्यद्धा त्वयि शास्त्रशरीरिणि ।
नित्यं निबद्धवैरास्ते वयं चान्ये च तादृशाः ॥४२॥

पदच्छेद— विशुद्ध सत्त्वधाम्नि अद्धा त्वयि शास्त्र शरीरिणि ।
नित्यं निबद्ध वैराः ते वयम् च अन्ये च तादृशाः ॥

शब्दार्थ—

विशुद्ध	५.	विशुद्ध	नित्यं	११.	हमेशा
सत्त्वधाम्नि	६.	सत्त्व स्वरूप तथा	निबद्ध	१२.	दृढ
अद्धा	१०.	हठात्	वैराः	१३.	वैर भाव रखते हैं
त्वयि	९.	आपसे	ते	४.	दैत्यादि
शास्त्र	७.	शास्त्रमय	वयम्	१.	हम
शरीरिणि ।	८.	शरीर वाले	च अन्ये	३.	दूसरे
			च तादृशाः ॥	२.	और हमारे जैसे

श्लोकार्थ—हम और हमारे जैसे दैत्यादि विशुद्ध सत्त्व स्वरूप तथा शास्त्रमय शरीर वाले आपसे हठात् हमेशा दृढ वैर भाव रखते हैं ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

केचनोद्बद्धवैरेण भक्त्या केचन कामतः ।
न तथा सत्त्वसंरब्धाः सन्निकृष्टाः सुरादयः ॥४३॥

पदच्छेद— केचन उद्बद्ध वैरेण भक्त्या केचन कामतः ।
न तथा सत्त्व संरब्धाः सन्निकृष्टाः सुर आदयः ॥

शब्दार्थ—

केचन	१.	कुछ ने	न	१२.	नहीं प्राप्त कर सकते
उद्बद्ध	२.	दृढ	तथा	७.	उस प्रकार
वैरेण	३.	वैर भाव से	सत्त्व	८.	सत्त्व गुण
भक्त्या	५.	भक्ति से (और)	संरब्धाः	९.	प्रधान
केचन	४.	कुछ ने	सन्निकृष्टाः	१०.	आपके समीप रहने वाले
कामतः ।	६.	काम-भाव से प्राप्त किया	सुर आदयः ॥	११.	देवता आदि भी

श्लोकार्थ—कुछ ने दृढ वैर भाव से कुछ ने भक्ति से और कुछ ने काम-भाव से प्राप्त किया । उस प्रकार सत्त्व गुण प्रधान आपके समीप रहने वाले देवता आदि भी नहीं प्राप्त कर सकते ॥

चतुश्चत्वारिंशः श्लोकः

इदमित्थमिति प्रायस्तव योगेश्वरेश्वर ।
न विदन्त्यपि योगेशा योगमायां कुतो वयम् ॥४४॥

पदच्छेद— इदम् इत्थम् इति प्रायः तव योगेश्वर ईश्वर ।
न विदन्ति अपि योगेशाः योग मायाम् कुतः वयम् ॥

शब्दार्थ—

इदम्	५.	यह है	न	११.	नहीं
इत्थम्	६.	ऐसी ही	विदन्ति	१२.	जानते हैं फिर
इति	७.	इस प्रकार	अपि	९.	भी
प्रायः	१०.	प्रायः	योगेशाः	८.	योगेश्वर
तव	३.	आपकी	योगमायाम्	४.	योग माया को
योगेश्वर	१.	योगेश्वरों के	कुतः	१४.	बात ही क्या है
ईश्वर ।	२.	ईश्वर	वयम् ॥	१३.	हमारी तो

श्लोकार्थ—योगेश्वरों के ईश्वर आपकी योगमाया को यह है, ऐसी है, इस प्रकार योगेश्वर भी प्रायः नहीं जानते हैं । फिर हमारी तो बात ही क्या है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तन्नः प्रसीद निरपेक्षविमृग्ययुष्मत्पादारविन्दधिषणान्यगृहान्धकूपात् ।
निष्क्रम्य विश्वशरणाङ्घ्र्युपलब्धवृत्तिः शान्तो यथैक उत सर्वसखैश्चरामि ॥४५

पदच्छेद—तत् नः प्रसीद निरपेक्ष विमृग्य युष्मत् पाद अरविन्दधिषणा अन्य गृह अन्ध कूपात् ।
निष्क्रम्य विश्वशरण अङ्घ्रि उपलब्ध वृत्तिः शान्तः यथा एकः उत सर्वसखैः चरामि ॥

शब्दार्थ—

तत् नः	१.	इसलिये हम पर	निष्क्रम्य	९.	निकलकर
प्रसीद	२.	प्रसन्न होइये	विश्वशरण	१०.	संसार के रक्षक
निरपेक्ष	३.	अपेक्षा न रखने लाले मनुष्यों के द्वारा	अङ्घ्रि	११.	आपके चरणों का
विमृग्य	४.	ढूँढने योग्य	उपलब्ध वृत्तिः	१२.	आश्रय पाकर
युष्मत् पाद	५.	आपके चरण	शान्तः	१३.	शान्त हो जाऊँ
अरविन्दधिषण	६.	कमलरूपी	यथाएकउत	१४.	जिससे कि अकेला, अथवा
अन्य गृह	७.	घर से भिन्न	सर्वसखैः	१५.	सबके सखा सन्तों के साथ
अन्धकूपात् ।	८.	अन्धेरे कुयें से	चरामि ॥	१६.	विचरण करूँ

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! इसलिये हम पर प्रसन्न होइये, अपेक्षा न रखने वाले मुनियों के द्वारा ढूँढने योग्य आपके चरण कमलरूपी घर से भिन्न अन्धेरे कुएँ से निकलकर संसार के रक्षक आपके चरणों का आश्रय पाकर शान्त हो जाऊँ । जिससे कि अकेला, अथवा सबके सखा सन्तों के साथ विचरण करूँ ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोक

शाध्यस्मानीशितव्येश निष्पापान् कुरु नः प्रभो ।
पुमान् यच्छ्रद्धयाऽऽतिष्ठंश्चोदनाया विमुच्यते ॥४६॥

पदच्छेद— शाधि अस्मान् ईशितव्य ईश निष्पापान् कुरु नः प्रभो ।
पुमान् यत् श्रद्धया आतिष्ठन् चोदनायाः विमुच्यते ॥

शब्दार्थ—

शाधि	३.	आज्ञा दीजिये	पुमान्	१०.	पुरुष
अस्मान्	२.	हमें	यत्	७.	क्योंकि
ईशितव्य	४.	शासन करने वालों के	श्रद्धया	८.	श्रद्धा के साथ
ईश	५.	स्वामी	आतिष्ठन्	९.	रहने वाला (भक्त)
निष्पापान् कुरु नः	६.	हमें पाप रहित बनाइये	चोदनायाः	११.	विधि-निषेधरूपी बन्धन से
प्रभो ।	१.	हे प्रभो !	विमुच्यते ॥	१२.	मुक्त हो जाता हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! हमें आज्ञा दीजिये, शासन करने वालों के स्वामी हमें पापरहित बनाइये । क्योंकि श्रद्धा के साथ रहने वाला भक्त पुरुष विधि-निषेधरूपी बन्धन से मुक्त हो जाता है ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—आसन् मरीचेः षट् पुत्रा ऊर्णायां प्रथमेऽन्तरे ।
देवाः कं जहसुर्वीक्ष्य सुतां यभितुमुद्यतम् ॥४७॥

पदच्छेद— आसन् मरीचेः षट्पुत्राः ऊर्णायाम् प्रथमे अन्तरे ।
देवाःकम् जहसुः वीक्ष्य सुताम् यभितुम् उद्यतम् ॥

शब्दार्थ—

आसन्	६. हुये थे (वे)	देवाःकम्	७. देवता लोग ब्रह्मा को
मरीचेः	३. प्रजापति मरीचि की पत्नी	जहसुः	१२. हंसने लगे
षट् पुत्राः	५. छः पुत्र उत्पन्न	वीक्ष्य	११. देखकर
ऊर्णायाम्	४. ऊर्णा के गर्भ से	सुताम्	८. अपनी पुत्री से
प्रथमे	१. स्वायंभुव	यभितुम्	९. समागम करने के लिये
अन्तरे ।	२. मन्वन्तर में	उद्यतम् ॥	१०. उद्यत

श्लोकार्थ—स्वायंभुव मन्वन्तर में प्रजापति मरीचि की पत्नी ऊर्णा के गर्भ से छः पुत्र उत्पन्न हुये थे। ये देवता लोग ब्रह्मा को अपनी पुत्री से समागम करने के लिये उद्यत देखकर हंसने लगे ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

तेनासुरीमगन् योनिमधुनावद्यकर्मणा ।
हिरण्यकशिपोर्जाता नीतास्ते योगमायया ॥४८॥

पदच्छेद— तेन आसुरीम् अगन् योनिम् अधुना अवद्य कर्मणा ।
हिरण्यकशिपोः जाताः नीताः ते योग मायया ॥

शब्दार्थ—

तेन	१. उस	हिरण्यकशिपोः	७. हिरण्यकशिपु के
आसुरीम्	४. वे लोग असुर	जाताः	८. पुत्र बने
अगन्	६. प्राप्त हुये (तथा)	नीताः	१३. देवकी के गर्भ मे पहुँचा दिया
योनिम्	५. योनि को	ते	१२. उन्हे
अधुना	९. अब	योग	१०. योग
अवद्य	२. निन्दित	मायया ॥	११. मापा ने
कर्मणा ।	३. अपराध से		

श्लोकार्थ—उस निन्दित अपराध से वे लोग असुर योनि को प्राप्त हुये। तथा हिरण्यकशिपु के पुत्र बने। अब योगमाया ने उन्हें देवकी के गर्भ में पहुँचा दिया ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

देवक्या उदरे जाता राजन् कंसविहिंसिताः ।
सा तांछोचत्यात्मजान् स्वांस्त इमेऽध्यासतेऽन्तिके ॥४९॥

पदच्छेद— देवक्याः उदरे जाताः राजन् कंस विहिंसिताः ।
सा तान् शोचति आत्मजान् स्वान् ते इमे अध्यासते अन्तिके ॥

शब्दार्थ—

देवक्याः	२.	देवकी के	सा तान्	७.	वह देवकी उन
उदरे	३.	उदर से	शोचति	९.	शोक कर रही हैं
जाताः	४.	उत्पन्न होते ही (उन्हें)	आत्मजान्स्वान्	८.	अपने पुत्रों के लिये
राजन्	१.	हे राजन् !	ते इमे	१०.	वे लोग तुम्हारे
कंस	५.	कंस ने	अध्यासते	१२.	रह रहे हैं
विहिंसिताः ।	६.	मार दिया था	अन्तिके ॥	११.	पास

श्लोकार्थ—हे राजन् ! देवकी के उदर से उत्पन्न होते ही उन्हें कंस ने मार दिया था । वह देवकी उन अपने पुत्रों के लिये शोक कर रही हैं । वे लोग तुम्हारे पास रह रहे हैं ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

इत एतान् प्रणेष्यामो मातृशोकापनुत्तये ।
ततः शापाद् विनिर्मुक्ता लोकं यास्यन्ति विज्वराः ॥५०॥

पदच्छेद— इतः एतान् प्रणेष्यामः मातृ शोक अपनुत्तये ।
ततः शापात् विनिर्मुक्ताः लोकम् यास्यन्ति विज्वराः ॥

शब्दार्थ—

इतः	५.	यहाँ से	ततः	७.	तब
एतान्	४.	इन लोगों को	शापात्	८.	शाप से
प्रणेष्यामः	६.	हम ले जायेंगे	विनिर्मुक्ताः	९.	छूटकर (ये लोग) अपने
मातृ	१.	माता के	लोकम्	१०.	लोक को
शोक	२.	शोक को	यास्यन्ति	१२.	चले जायेंगे
अपनुत्तये ।	३.	दूर करने के लिये	विज्वराः ॥	११.	आनन्द पूर्वक

श्लोकार्थ—माता के शोक को दूर करने के लिये इन लोगों को यहाँ से हम ले जायेंगे । तब शाप से छूटकर ये लोग अपने लोक को आनन्द पूर्वक चले जायेंगे ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

स्मरोद्‍गीथः परिष्वङ्गः पतङ्गः क्षुद्रभृद् घृणी ।
षडिमे मत्प्रसादेन पुनर्यास्यन्ति सद्‍गतिम् ॥५१॥

पदच्छेद— स्मर उद्‍गीथः परिष्वङ्गः पतङ्गः क्षुद्रभृत् घृणी ।
षट् इमे मत् प्रसादेन पुनः यास्यन्ति सद्‍गतिम् ॥

शब्दार्थ—

स्मरः	१. स्मर	षट् इमे	७. ये छहों
उद्‍गीथः	२. उद्‍गीथ	मत्	८. मेरी
परिष्वङ्गः	३. परिष्वङ्ग	प्रसादेन	९. कृपा से
पतङ्गः	४. पतङ्ग	पुनः	१०. फिर
क्षुद्रभृत्	५. क्षुद्रभृत्	यास्यन्ति	१२. प्राप्त हो जायेंगे
घृणी	६. घृणी	सद्‍गतिम् ॥	११. उत्तम गति को

श्लोकार्थ—स्मर, उद्‍गीथ, परिष्वङ्ग, पतङ्ग, क्षुद्रभृत्, घृणी, ये छहों मेरी कृपा से फिर उत्तम गति को प्राप्त हो जायेंगे ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

इत्युक्त्वा तान् समादाय इन्द्रसेनेन पूजितौ ।
पुनर्द्वारवतीमेत्य मातुः पुत्रानयच्छताम् ॥५२॥

पदच्छेद— इति उक्त्वा तान् समादाय इन्द्रसेनेन पूजितौ ।
पुनः द्वारवतीम् एत्य मातुः पुत्रान् अयच्छताम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. यह	पुनः	७. फिर
उक्त्वा	२. कहकर	द्वारवतीम्	८. द्वारिकापुरी में
तान्	५. उन बालकों को	एत्य	९. आकर
समादाय	६. लेकर	मातुः	१०. माता को
इन्द्रसेनेन	३. इन्द्रसेन के द्वारा	पुत्रान्	११. पुत्र
पूजितौ ।	४. पूजित हुये दोनों भाइयों ने	अयच्छताम् ॥	१२. सौंप दिये

श्लोकार्थ—यह कहकर इन्द्रसेन के द्वारा पूजित हुये दोनों भाइयों ने उन बालकों को लेकर फिर द्वारकापुरी में आकर माता को पुत्र सौप दिये ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तान् दृष्ट्वा बालकान् देवी पुत्रस्नेहस्नुतस्तनी ।
परिष्वज्याङ्कमारोप्य मूर्ध्न्यजिघ्रदभीक्ष्णशः ।।५३।।

पदच्छेद— तान् दृष्ट्वा बालान् देवी पुत्रस्नेह स्नुतस्तनी ।
परिष्वज्य अङ्कम् आरोप्य मूर्धिन अजिघ्रत् अभीक्षणशः ।।

शब्दार्थ—

तान्	१.	उन	परिष्वज्य	१०.	छाती से लगातीं तथा
दृष्ट्वा	३.	देखकर	अङ्कम्	७.	वे उन्हें गोद में
बालकान्	२.	बालकों को	आरोप्य	८.	लेकर
देवी	५.	देवकी के	मूर्धिन	११.	उनका सिर
पुत्रस्नेह	४.	पुत्र स्नेह के कारण	अजिघ्रत्	१२.	सूंघतीं
स्नुतस्तनी ।	६.	स्तनों से दूध बहने लगा	अभीक्षणशः ।।	९.	बार-बार

श्लोकार्थ—उन बालकों को देखकर पुत्र स्नेह के कारण देवकी के स्तनों से दूध बहने लगा । वे उन्हें गोद में लेकर बार-बार छाती से लगातीं तथा उनका सिर सूंघती थीं ।।

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

अपाययत् स्तनं प्रीता सुतस्पर्शपरिप्लुता ।
मोहिता मायया विष्णोर्यया सृष्टिः प्रवर्तते ।।५४।।

पदच्छेद— अपाययत् स्तनम् प्रीता सुतस्पर्श परिप्लुता ।
मोहिता मायया विष्णोः यया सृष्टिः प्रवर्तते ।।

शब्दार्थ—

अपाययत्	६.	पान कराया (वे)	मोहिता	९.	मोहित हो रही थी
स्तनम्	५.	उनको स्तन	मायया	८.	माया से
प्रीता	४.	प्रसन्न देवकी	विष्णोः	७.	विष्णु की
सुत	१.	पुत्रों के	यया	१०.	जिससे
स्पर्श	२.	स्पर्श के आनन्द से	सृष्टिः	११.	सृष्टि-चक्र
परिप्लुता ।	३.	सराबोर	प्रवर्तते ।।	१२.	चलता है

श्लोकार्थ—पुत्रों के स्पर्श के आनन्द से सराबोर प्रसन्न देवकी ने उनको स्तन पान कराया । वे विष्णु की माया से मोहित हो रही थीं । जिससे सृष्टि-चक्र चलता है ।।

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

पीत्वामृतं पयस्तस्याः पीतशेषं गदाभृतः ।
नारायणाङ्गसंस्पर्शप्रतिलब्धात्मदर्शनाः ॥५५॥

पदच्छेद— पीत्वा अमृतम् पयः तस्याः पीतशेषम् गदाभृतः ।
नारायण अङ्ग संस्पर्श प्रतिलब्ध आत्म दर्शनाः ॥

शब्दार्थ—

पीत्वा	६. पीकर	नारायण	७. भगवान् के
अमृतम् पयः	५. अमृत के समान दूध	अङ्ग	८. अङ्ग के
तस्याः	४. उन देवकी का	संस्पर्श	९. संग से उन्हें
पीत	२. पीने से	प्रतिलब्ध	१२. प्राप्त हो गया
शेषम्	३. बचा हुआ	आत्म	१०. आत्म
गदाभृतः ।	१. श्रीकृष्ण के	दर्शनाः ॥	११. साक्षात्कार

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के पीने से बचा हुआ उन देवकी का अमृत के समान दूध पीकर भगवान् के अङ्ग संग से उन्हें आत्म-साक्षात्कार प्राप्त हो गया ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

ते नमस्कृत्य गोविन्दं देवकीं पितरं बलम् ।
मिषतां सर्वभूतानां ययुर्धाम दिवौकसाम् ॥५६॥

पदच्छेद— ते नमस्कृत्य गोविन्दम् देवकीम् पितरम् बलम् ।
मिषताम् सर्वभूतानाम् ययुः धाम दिवौकसाम् ॥

शब्दार्थ—

ते	१. वे	मिषताम्	९. सामने ही
नमस्कृत्य	६. प्रणाम करके	सर्व	७. सभी
गोविन्दम्	२. श्रीकृष्ण को	भूतानाम्	८. लोगों के
देवकीम्	३. देवकी	ययुः	१२. चले गये
पितरम्	४. वसुदेव और	धाम	११. धाम में
बलम् ।	५. बलराम के	दिवौकसाम् ॥	१०. देवताओं के

श्लोकार्थ—वे श्रीकृष्ण को, देवकी, वसुदेव और बलराम को प्रणाम करके सभी लोगों के सामने ही देवताओं के धाम में चले गये ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तं दृष्ट्वा देवकी देवी मृतागमननिर्गमम् ।
मेने सुविस्मिता मायां कृष्णस्य रचितां नृप ॥५७॥

पदच्छेद— तम् दृष्ट्वा देवकी देवी मृत आगमन निर्गमम् ।
मेने सुविस्मिता मायां कृष्णस्य रचिताम् नृप ॥

शब्दार्थ—

तम्	६. उस वृत्तान्त को	मेने	१२. मानने लगीं
दृष्ट्वा	७. देखकर	सुविस्मिता	८. अत्यन्त विस्मित होकर
देवकी देवी	२. देवी देवकी	मायाम्	११. माया
मृत	३. मरे हुये बालकों के	कृष्णस्य	९. श्रीकृष्ण की
आगमन	४. आने और	रचिताम्	१०. रची हुई
निर्गमम् ।	५. जाने के	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! देवी देवकी मरे हुये बालकों के आने और जाने के उस वृत्तान्त को देखकर अत्यन्त विस्मित होकर श्रीकृष्ण की रची हुई माया मानने लगीं ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

एवंविधान्यद्भुतानि कृष्णस्य परमात्मनः ।
वीर्याण्यनन्तवीर्यस्य सन्त्यनन्तानि भारत ॥५८॥

पदच्छेद— एवम् विधानि अद्भुतानि कृष्णस्य परमात्मनः ।
वीर्याणि अनन्त वीर्यस्य सन्ति अनन्तानि भारत ॥

शब्दार्थ—

एवम्	६. इस	वीर्याणि	९. चरित्र
विधानि	७. प्रकार के	अनन्त	२. अनन्त
अद्भुतानि	८. अद्भुत	वीर्यस्य	३. शक्ति वाले
कृष्णस्य	५. श्रीकृष्ण के	सन्तिअनन्तानि	१०. अनन्त हैं
परमात्मनः ।	४. परमात्मा	भारत ॥	१. हे परीक्षित !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! अनन्त शक्ति वाले परमात्मा श्रीकृष्ण के इस प्रकार के अद्भुत चरित्र अनन्त हैं ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

सूत उवाच—

य इदमनुश्रृणोति श्रावयेद् वा मुरारेश्चरितममृतकीर्तेर्वर्णितं व्यासपुत्रैः ।
जगदघभिदलं तद्भक्तसत्कर्णपूरं भगवति कृतचित्तो याति तत्क्षेमधाम ॥५९॥

पदच्छेद—यः इदम् अनुश्रृणोति श्रावयेत् वा मुरारेः चरितम् अमृत कीर्तेः वर्णितम् व्यास पुत्रैः ।
जगत् अघभित् अलम् तत् भक्त सत्कर्ण पूरम् भगवति कृतचित्तः याति तत् क्षेम धाम ॥

शब्दार्थ—

यः	१.	जो मनुष्य	जगत	७.	संसार के
इदम्	१३.	इस	अघभित्	८.	पापी को मिटाने वाले
अनुश्रृणोति	१५.	श्रवण करता है	अलम्	११.	पर्याप्त रूप से
श्रावयेत् वा	१६.	अथवा भावना करता है(वह)	तत् भक्त	९.	उनके भक्तों के
मुरारेः	३.	श्रीकृष्ण के	सत्कर्ण	१०.	उत्तम कानों को
चरितम्	१४.	चरित्र का	पूरम्	१२.	तृप्त करने वाले
अमृतकीर्तेः	२.	अमृतमयी कीर्ति वाले	भगवति	१७.	भगवान् में
वर्णितम्	६.	वर्णित	कृतचित्तः	१८.	चित्त को लगाकर
व्यास	४.	व्यास जी के	याति	२०.	प्राप्त होता है
पुत्रैः ।	५.	पुत्र द्वारा	तत्क्षेमधाम ॥	१९.	उनके कल्याणकारी धाम को

श्लोकार्थ—जो मनुष्य अमृतमयी कीर्ति वाले श्रीकृष्ण के व्यास जी के पुत्र द्वारा वर्णित संसार के पापों को मिटाने वाले उनके भक्तों के उत्तम कानों को पर्याप्ति रूप से तृप्त करने वाले इस चरित्र का श्रवण करता है अथवा भावना करता है वह भगवान् में चित्त लगाकर उनके कल्याणकारी धाम को प्राप्त होता है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे मृताग्रजानयनं नाम
पञ्चाशीतितमः अध्यायः ॥८५॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

षडशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— ब्रह्मन् वेदितुमिच्छामः स्वसारं रामकृष्णयोः ।
यथोपयेमे विजयो या ममासीत् पितामही ॥१॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् वेदितुम् इच्छामः स्वसारम् राम कृष्णयोः ।
यथा उपयेमे विजयः या मम आसीत् पितामही ।।

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१.	भगवन्	यथा	९.	जिस प्रकार
वेदितुम्	११.	वह मैं जानना	उपमेये	१०.	विवाह किया
इच्छामः	१२.	चाहता हूँ	विजयः	८.	अर्जुन ने
स्वसारम्	४.	बहन से	या मम	५.	जो मेरी
राम	२.	बलराम और	आसीत्	७.	थीं
कृष्णयोः ।	३.	श्रीकृष्ण की	पितामही ।।	६.	दादी

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! बलराम और श्रीकृष्ण की बहन से, जो मेरी दादी थीं, अर्जुन ने जिस प्रकार विवाह किया वह मैं जानना चाहता हूँ ।।

द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—अर्जुनस्तीर्थयात्रायां पर्यटन्नवनीं प्रभुः ।
गतः प्रभासमश्रृणोन्मातुलेयीं स आत्मनः ॥२॥

पदच्छेद— अर्जुनः तीर्थ यात्रायाम् पर्यटन् अवनीम् प्रभुः ।
गतः प्रभासम् अश्रृणोत् मातुलेयीम् सः आत्मनः ।।

शब्दार्थ—

अर्जुनः	२.	अर्जुन (एकबार)	गतः	८.	पहुँचे
तीर्थ	३.	तीर्थ	प्रभासम्	७.	प्रभासक्षेत्र
यात्रायाम	४.	यात्रा में	अश्रृणोत्	१२.	सुना
पर्यटन्	६.	विचरण करते हुये	मातुलेयीम्	११.	मामा की पुत्री के बारे में
अवनीम्	५.	पृथ्वी पर	सः	९.	वहाँ पर उन्होंने
प्रभुः ।	१.	अत्यन्त शक्तिशाली	आत्मनः ।।	१०.	अपने

श्लोकार्थ—अत्यन्त शक्तिशाली अर्जुन एक बार तीर्थ यात्रा में पृथ्वी पर विचरण करते हुये प्रभास क्षेत्र पहुँचे । वहाँ पर उन्होंने अपने मामा की पुत्री के बारे में सुना ।।

तृतीयः श्लोकः

दुर्योधनाय रामस्तां दास्यतीति न चापरे।
तल्लिप्सुः स यतिर्भूत्वा त्रिदण्डी द्वारकामगात् ॥३॥

पदच्छेद— दुर्योधनाय रामः ताम् दास्यति इति न च अपरे।
तत् लिप्सुः स यतिः भूत्वा त्रिदण्डी द्वारकाम् अगात् ॥

शब्दार्थ—

दुर्योधनाय	३.	दुर्योधन को	तत् लिप्सुः	८.	उनको पाने के इच्छुक
रामः	१.	बलराम जी	सः	९.	वे अर्जुन
ताम्	२.	उन्हें	यतिः	११.	संन्यासी का रूप
दास्यति	४.	देंगे (किन्तु)	भूत्वा	१२.	धारण करके
इति	७.	यह सुना	त्रिदण्डी	१०.	त्रिदण्डी
न च	६.	नहीं देना चाहते	द्वारकाम्	१३.	द्वारकापुरी में
अपरे।	५.	दूसरे लोग	अगात् ॥	१४.	पहुँचे

श्लोकार्थ--बलरामजी उन्हें दुर्योधन को देंगे। किन्तु दूसरे लोग नहीं देना चाहते हैं। यह सुना। उनको पाने के इच्छुक वे अर्जुन त्रिदण्डी संन्यासी का वेष धारण करके द्वारकापुरी में पहुँचे ॥

चतुर्थः श्लोकः

तत्र वै वार्षिकान् मासानवात्सीत् स्वार्थसाधकः।
पौरैः सभाजितोऽभीक्ष्णं रामेणाजानता च सः ॥४॥

पदच्छेद— तत्र वै वार्षिकान् मासान् अवात्सीत् स्वार्थ साधकः।
पौरैः सभाजितः अभीक्ष्णम् रामेण अजानता च सः ॥

शब्दार्थ—

तत्र वै	३.	वहाँ पर	पौरैः	७.	नगर निवासियों और
वार्षिकान्	४.	वर्षा ऋतु के	सभाजितः	१२.	सम्मान किया
मासान्	५.	चार मास तक	अभीक्ष्णम्	११.	खूब
अवात्सीत्	६.	निवास किया	रामेण	८.	बलराम जी ने
स्वार्थ	१.	अपना स्वार्थ	अजानता	९.	नहीं पहिचानते हुये
साधकः।	२.	सिद्ध करने वाले अर्जुन ने	च सः ॥	१०.	उनका

श्लोकार्थ—अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले अर्जुन ने वहाँ पर वर्षा ऋतु के चार मास तक निवास किया। नगर निवासियों और बलरामजी ने नहीं पहिचानते हुये उनका खूब सम्मान किया ॥

पञ्चमः श्लोकः

एकदा गृहमानीय आतिथ्येन निमन्त्र्य तम् ।
श्रद्धयोपहृतं भैक्ष्यं बलेन बुभुजे किल ॥५॥

पदच्छेद— एकदा गृहमानीय आतिथ्येन निमन्त्र्य तम् ।
श्रद्धया उपहृतम् भैक्ष्यम् बलेन बुभुजे किल ।।

शब्दार्थ—

एकदा	२.	एक बार	श्रद्धया	६.	श्रद्धा के साथ
गृहम्	६.	घर में	उपहृतम्	१०.	भोजन कराया और
आनीय	७.	लाकर	भैक्ष्यम्	८.	भिक्षा में
आतिथ्येन	४.	आतिथ्य के लिये	बलेन	१.	बलराम जी ने
निमन्त्र्य	५.	निमन्त्रित करके	बुभुजे	११.	त्रिदण्डी ब्रह्मचारी ने भोजन किया
तम् ।	३.	उन्हें	किल ।।	१२.	ऐसा कहा जाता है

श्लोकार्थ—बलरामजी ने एक बार उन्हें आतिथ्य के लिये निमन्त्रित करके घर में लाकर भिक्षा में श्रद्धा के साथ भोजन कराया । और त्रिदण्डी ब्रह्मचारी अर्जुन ने भोजन किया । ऐसा कहा जाता है ।।

षष्ठ श्लोकः

सोऽपश्यत्तत्र महतीं कन्यां वीरमनोहराम् ।
प्रीत्युत्फुल्लेक्षणस्तस्यां भावक्षुब्धं मनो दधे ॥६॥

पदच्छेद— सः अपश्यत् तत्र महतीम् कन्याम् वीर मनोहराम् ।
प्रीति उत्फुल्ल ईक्षणः तस्याम् भाव क्षुब्धम् मनः दधे ।।

शब्दार्थ—

सः	६.	अर्जुन ने	प्रीति	८.	प्रेम से
अपश्यत्	७.	देखा	उत्फुल्ल	६.	प्रफुल्लित
तत्र	१.	वहाँ	ईक्षणः	१०.	नेत्र होकर
महतीम्	४.	एक परम सुन्दरी	तस्याम्	१२.	उसको पाने के लिये
कन्याम्	५.	कन्या को	भाव	१३.	भावना से
वीर	२.	वीरों का	क्षुब्धम्	१४.	विह्वल हो गया
मनोहराम् ।	३.	मन हरने वाली	मनः दधे ।।	११.	उनका मन

श्लोकार्थ—वहाँ पर वीरों का मन हरने वाली एक परम सुन्दरी कन्या को अर्जुन ने देखा । प्रेम से प्रफुल्लित नेत्र होकर उनका मन उसे पाने के लिये भावना से विह्वल हो गया ।।

सप्तमः श्लोकः

सापि तं चकमे वीक्ष्य नारीणां हृदयङ्गमम् ।
हसन्ती व्रीडितापाङ्गी तन्न्यस्तहृदयेक्षणा ॥७॥

पदच्छेद— सा अपि तम् चकमे वीक्ष्य नारीणाम् हृदयङ्गमम् ।
हसन्ती व्रीडिता अपाङ्गी तत् न्यस्त हृदय ईक्षणा ॥

शब्दार्थ—

सा अपि	१.	उसने भी	हसन्ती	९.	तब-वह हँसती हुई
तम्	४.	उन अर्जुन को	व्रीडिता	१०.	लजीली
चकमे	६.	पति बनाने का निश्चय किया	अपाङ्गी	११.	चितवन से
वीक्ष्य	५.	देखकर	तत्	७.	उनको अपना
नारीणाम्	२.	स्त्रियों के	न्यस्त हृदय	८.	हृदय सौंपकर
हृदयङ्गमम् ।	३.	हृदय में पहुँचने वाले	ईक्षणा ॥	१२.	देखने लगीं

श्लोकार्थ—उसने भी स्त्रियों के हृदय में पहुँचने वाले उन अर्जुन को देखकर पति बनाने का निश्चय किया । और उनको अपना हृदय सौंपकर तब वह हंसती हुई लजीली चितवन से देखने लगी ॥

अष्टमः श्लोकः

तां परं समनुध्यायन्नन्तरं प्रेप्सुरर्जुनः ।
न लेभे शं भ्रमच्चित्तः कामेनातिबलीयसा ॥८॥

पदच्छेद— ताम् परम् समनुध्यायन् अन्तरम् प्रेप्सुः अर्जुनः ।
न लेभे शम् भ्रमत् चित्तः कामेन अति बलीयसा ॥

शब्दार्थ—

ताम्	२.	उसी का	न लेभे	१२.	नहीं मिलती थी
परम्	१	अब केवल	शम्	११.	शान्ति
समनुध्यायन्	३	ध्यान करते हुये	भ्रमत्चित्त	९.	चलायमान चित्त वाले
अन्तरम्	४.	अवसर ढूंढने के	कामेन	८.	काम के वेग से
प्रेप्सुः	५	इच्छुक (तथा)	अति	६.	अत्यन्त
अर्जुनः ।	१०.	अर्जुन को	बलीयसा ॥	७	बलवान्

श्लोकार्थ—अब केवल उसी का ध्यान करते हुये अवसर ढूंढने के इच्छुक तथा अत्यन्त बलवान् काम के वेग से चलायमान चित्त वाले अर्जुन को शान्ति नहीं मिलती थी ॥

नवमः श्लोकः

महत्यां देवयात्रायां रथस्थां दुर्गनिर्गताम् ।
जहारानुमतः पित्रोः कृष्णस्य च महारथः ॥९॥

पदच्छेद— महत्याम् देव यात्रायाम् रथस्थाम् दुर्ग निर्गताम् ।
जहार अनुमतः पित्रोः कृष्णस्य च महारथः ॥

शब्दार्थ—

महत्याम्	६.	महान्	जहार	१२.	हरण कर लिया
देव	७.	देव दर्शन की	अनुमतः	५.	अनुमति से
यात्रायाम्	८.	यात्रा में	पित्रोः	२.	देवकी-वसुदेव
रथस्थाम्	११.	रथ में बैठी सुभद्रा का	कृष्णस्य	४.	श्रीकृष्ण की
दुर्ग	९.	किले से	च	३.	और
निर्गताम् ।	१०.	निकलकर	महारथः ॥	१.	महारथी अर्जुन ने

श्लोकार्थ—महारथी अर्जुन ने देवकी-वसुदेव और श्रीकृष्ण की अनुमति से महान् देव दर्शन की यात्रा में किले से निकलकर रथ में बैठी हुई सुभद्रा का हरण कर लिया ॥

दशमः श्लोकः

रथस्थो धनुरादाय शूरांश्चारुन्धतो भटान् ।
विद्राव्य क्रोशतां स्वानां स्वभागं मृगराडिव ॥१०॥

पदच्छेद— रथस्थः धनुः आदाय शूरान् च अरुन्धतः भटान् ।
विद्राव्य क्रोशताम् स्वानाम् स्वभागम् मृगराट् इव ॥

शब्दार्थ—

रथस्थः	१.	रथ पर सवार होकर	विद्राव्य	७.	भगाकर
धनुः	२.	धनुष	क्रोशताम्	९.	रोते चिल्लाते रहने पर
आदाय	३.	लेकर	स्वानाम्	८.	अपने लोगों के
शूरान् च	५.	वीर	स्वभागम्	१२.	अपना भाग लेकर चल पड़े
अरुन्धतः	४.	चारों ओर से रोकते हुये	मृगराट्	१०.	सिंह के
भटान् ।	६.	सैनिकों को	इव ॥	११.	समान

श्लोकार्थ—रथ पर सवार होकर धनुष लेकर चारों ओर से रोकते हुये वीर सैनिकों को भगाकर अपने लोगों के रोते चिल्लाते रहने पर सिंह के समान अपना भाग लेकर चल पड़े ॥

एकादशः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा क्षुभितो रामः पर्वणीव महार्णवः ।
गृहीतपादः कृष्णेन सुहृद्भिश्चान्वशाम्यत ॥११॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा क्षुभितः रामः पर्वणि इव महार्णवः ।
गृहीत पादः कृष्णेन सुहृद्भिः च अनु अशाम्यत ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	वह	गृहीत	११.	पकड़कर
श्रुत्वा	२.	सुनकर	पादः	१०.	पैर
क्षुभितः	४.	क्षुब्ध हो उठे	कृष्णेन	७.	श्रीकृष्ण
रामः	३.	बलराम जी	सुहृद्भिः	९.	बन्धुओं ने उन्हें
पर्वणि इव	५.	जैसे पूर्णिमा के दिन	च	८.	और
महार्णवः ।	६.	समुद्र हो उठना है	अनुअशाम्यत ॥	१२.	शान्त किया

श्लोकार्थ—वह सुनकर बलराम जी क्षुब्ध हो उठे जैसे पूर्णिमा के दिन समुद्र क्षुब्ध हो उठता है। श्रीकृष्ण और बन्धुओं ने उन्हें पैर पकड़कर शान्त किया ॥

द्वादशः श्लोकः

प्राहिणोत् पारिबर्हाणि वरवध्वोर्मुदा बलः ।
महाधनोपस्करेभरथाश्वनरयोषितः ॥१२॥

पदच्छेद— प्राणिहोत् पारिबर्हाणि वरवध्वोः मुदा बलः ।
महाधन उपस्कर इभ रथ अश्व नर योषितः ॥

शब्दार्थ—

प्राणिहोत्	१०.	भेजीं	महाधन	४.	बहुत-सा धन
पारिबर्हाणि	९.	दहेज में	उपस्कर	५.	सामग्री
वरवध्वोः	३.	वर-वधू के लिये	इभ रथ	६.	हाथी-रथ
मुदा	२.	प्रसन्नता पूर्वक	अश्व	७.	घोड़े
बलः ।	१	बलरामजी ने	नर योषितः ॥	८.	दास और दासियाँ

श्लोकार्थ—बलरामजी ने प्रसन्नता पूर्वक वर-वधू के लिये बहुत-सा धन सामग्री, हाथी, रथ, घोड़े, दास और दासियाँ दहेज में दीं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

कृष्णस्यासीद् द्विजश्रेष्ठः श्रुतदेव इति श्रुतः ।
कृष्णैकभक्त्या पूर्णार्थः शान्तः कविरलम्पटः ॥१३॥

पदच्छेद— कृष्णस्य आसीत् द्विज श्रेष्ठः श्रुतदेव इति श्रुतः ।
कृष्णैक भक्त्या पूर्णार्थः शान्तः कविः अलम्पटः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णस्य	५. श्रीकृष्ण के भक्त	कृष्णैक	७. श्री कृष्ण की
आसीत्	६. थे (वे एकमात्र)	भक्त्या	८. भक्ति से
द्विज श्रेष्ठः	४. श्रेष्ठ ब्राह्मण	पूर्णार्थः	९. पूर्ण मनोरथ
श्रुतदेव	१. श्रुतदेव	शान्तः	१०. शान्त
इति	२. इस नाम से	कविः	११. ज्ञानी और
श्रुतः ।	३. विख्यात एक	अलम्पटः ॥	१२. विरक्त थे

श्लोकार्थ—श्रुतदेव इस नाम से विख्यात एक श्रेष्ठ ब्राह्मण श्रीकृष्ण के भक्त थे। वे एकमात्र श्रीकृष्ण की भक्ति से पूर्ण मनोरथ, शान्त, ज्ञानी और विरक्त थे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

स उवास विदेहेषु मिथिलायां गृहाश्रमी ।
अनीहयाऽऽगताहार्यनिर्वर्तितनिजक्रियः ॥१४॥

पदच्छेद— सः उवास विदेहेषु मिथिलायाम् गृह आश्रमी ।
अनीहया आगताहार्य निर्वर्तित निज क्रियः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. वे (ब्राह्मण)	अनीहया	७. बिन चाहे
उवास	६. रहते थे	आगत	८. प्राप्त
विदेहेषु	२. विदेह की	आहार्य	९. सामग्री से
मिथिलायाम्	३. राजधानी मिथिला में	निर्वर्तित	१२. कर लेते थे
गृह	४. गृहस्थ	निज	१०. अपना
आश्रमी ।	५. आश्रम में	क्रियः ॥	११. निर्वाह

श्लोकार्थ—वे ब्राह्मण विदेह की राजधानी मिथिला में गृहस्थ आश्रम में रहते थे। बिना चाहे प्राप्त सामग्री से अपना निर्वाह कर लेते थे ॥

पञ्चदशः श्लोकः

यात्रामात्रं त्वहरहर्दैवादुपनमत्युत ।
नाधिकं तावता तुष्टः क्रियाश्चक्रे यथोचिताः ॥१५॥

पदच्छेद— यात्रा मात्रम् तु अहः अहः दैवात् उपनमति उत ।
न अधिकम् तावता तुष्टः क्रियाः चक्रे यथोचिताः ॥

शब्दार्थ—

यात्रा	४.	जीवन निर्वाह	न अधिकम्	७.	अधिक नहीं
मात्रम्	५.	भर के लिये जो	तावता	८.	उतने मे ही
अहः अहः	३.	प्रतिदिन	तुष्टः	९.	सन्तुष्ट रहकर
दैवात्	२.	प्रारब्धवश	क्रियाः	११.	स्वधर्म पालनरूप क्रियायें
उपनमति	६.	सामग्री मिल जाती थी	चक्रे	१२.	करते थे
उत ।	१.	अथवा	यथोचिताः ॥	१०.	आश्रम के अनुसार

श्लोकार्थ—अथवा प्रारब्धवश प्रतिदिन जीवन निर्वाह भर के लिये जो सामग्री मिल जाती थी। अधिक नहीं उतने से ही सन्तुष्ट रहकर आश्रम के अनुसार स्वधर्म पालनरूप क्रियायें करते थे ॥

षोडशः श्लोकः

तथा तद्राष्ट्रपालोऽङ्ग बहुलाश्व इति श्रुतः ।
मैथिलो निरहम्मान उभावप्यच्युतप्रियौ ॥१६॥

पदच्छेद — तथा तद् राष्ट्रपालः अङ्ग बहुलाश्वः इति श्रुतः ।
मैथिलः निरहम्मान उभौ अपि अच्युत प्रियौ ॥

शब्दार्थ—

तथा	६.	कृष्ण भक्त था (यह)	मैथिलः	७.	मैथिल नरपति
तद्	४.	उस देश का	निरहम्मानः	८.	अहंकार रहित था
राष्ट्रपालः	५	राजा भी	उभौ	९.	दोनों (श्रुतदेव, बहुलाश्व)
अङ्ग	१.	हे परीक्षित् !	अपि	१०.	भी
बहुलाश्व	२	बहुलाश्व	अच्युत	११.	श्री कृष्ण के
इति श्रुतः ।	३.	इस नाम से प्रसिद्ध	प्रियौ ॥	१२.	प्रिय भक्त थे

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! बहुलाश्व इस नाम से प्रसिद्ध उस देश का राजा भी कृष्ण का भक्त था। यह मैथिल नरपति अहंकार रहित था। दोनों श्रुतदेव, बहुलाश्व भी श्रीकृष्ण के प्रिय भक्त थे ॥

सप्तदशः श्लोकः

तयोः प्रसन्नो भगवान् दारुकेणाहृतं रथम् ।
आरुह्य साकं मुनिभिर्विदेहान् प्रययौ प्रभुः ॥१७॥

पदच्छेद— तयोः प्रसन्नः भगवान् दारुकेण आहृतम् रथम् ।
आरुह्य साकम् मुनिभिः विदेहान् प्रययौ प्रभुः ॥

शब्दार्थ—

तयोः	१. उन दोनों पर	आरुह्य	९. उस पर चढ़कर
प्रसन्नः	२. प्रसन्न होकर	साकम्	८. साथ
भगवान्	३. भगवान् ने	मुनिभिः	७. मुनियों के
दारुकेण	४. दारुक से	विदेहान्	११. विदेह देश की ओर
आहृतम्	६. मँगवाया (और)	प्रययौ	१२. प्रस्थान किया
रथम् ।	५. रथ	प्रभुः ॥	१०. भगवान् श्रीकृष्ण ने

श्लोकार्थ—उन दोनों पर प्रसन्न होकर भगवान् ने दारुक से रथ मँगवाया और मुनियों के साथ उस पर चढ़कर भगवान् श्रीकृष्ण ने विदेह देश की ओर प्रस्थान किया ॥

अष्टादशः श्लोकः

नारदो वामदेवोऽत्रिः कृष्णो रामोऽसितोऽरुणिः ।
अहं बृहस्पतिः कण्वो मैत्रेयश्च्यवनादयः ॥१८॥

पदच्छेद— नारदः वामदेवः अत्रिः कृष्णः रामः असितः अरुणिः ।
अहम् बृहस्पतिः कण्वः मैत्रेयः च्यवन आदयः ॥

शब्दार्थ—

नारदः	२. नारद	अहम्	८. मैं (शुकदेव)
वामदेवः	३. वामदेव	बृहस्पतिः	९. बृहस्पति
अत्रिः	४. अत्रि	कण्वः	१०. कण्व
कृष्णः	१. श्रीकृष्ण के साथ	मैत्रेयः	११. मैत्रेय
रामः	५. परशुराम	च्यवन	१२. च्यवन
असितः	६. असित	आदयः ॥	१३. आदि (ऋषि थे)
अरुणिः ।	७. आरुणि		

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण के साथ उस यात्रा में नारद, वामदेव, अत्रि, परशुराम, असित, आरुणि मैं शुकदेव बृहस्पति, कण्व, मैत्रेय, च्यवन आदि ऋषि थे ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तत्र तत्र तमायान्तं पौरा जानपदा नृप ।

उपतस्थुः सार्घ्यहस्ता ग्रहैः सूर्यमिवोदितम् ॥१९॥

पदच्छेद— तत्र तत्र तम् आयान्तम् पौराः जान पदाः नृप ।

उपतस्थुः सार्घ्यहस्ताः ग्रहैः सूर्यम् इव उदितम् ॥

शब्दार्थ—

तत्र-तत्र	२.	उन-उन देशों में	उपतस्थुः	१२.	उपस्थित होतीं थीं
तम्	८.	उनके समीप	सार्घ्यहस्ताः	११.	अर्घ्य लेकर
आयान्तम्	३.	पहुँचने पर	ग्रहैः	४.	ग्रहों के साथ
पौराः	९.	नागरिक और	सूर्यम्	६.	सूर्य के
जानपदाः	१०.	ग्रामवासी प्रजायें	इव	७.	समान
नृप ।	१.	हे राजन् !	उदितम् ॥	५.	उदित हुये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन-उन देशों में पहुँचने पर ग्रहों के साथ उदित हुये सूर्य के समान उनके समीप नागरिक और ग्रामवासी प्रजायें अर्घ्य लेकर उपस्थित होती थीं ॥

विंशः श्लोकः

आनर्तधन्वकुरुजाङ्गलकङ्कमत्स्यपाञ्चालकुन्तिमधुकेकयकोसलार्णाः ।

अन्ये च तन्मुखसरोजमुदारहासस्निग्धेक्षणं नृप पपुर्दृशिभिर्नृनार्यः ॥२०॥

पदच्छेद—आनर्तधन्व कुरुजाङ्गल कङ्कमत्स्य पाञ्चाल कुन्ति मधु केकय कोशल अर्णाः ।

अन्ये च तत् मुख सरोजम् उदारहास स्निग्ध ईक्षणम् नृप पपुः दशिभिः नृनार्यः ॥

शब्दार्थ—

आनर्तधन्व	२.	आनर्तधन्व	अन्ये च	१०.	दूसरे देशों के
कुरुजाङ्गल	३.	कुरुजाङ्गल	तत्मुख	१४.	उनके मुख
कङ्कमत्स्य	४.	कङ्कमत्स्य	सरोजम्	१५.	कमल के (मकरन्द का)
पाञ्चाल	५.	पाञ्चाल	उदारहास	१२.	मुक्त हास्य और
कुन्ति	६.	कुन्ति	स्निग्ध ईक्षणम्	१३.	प्रेम भरी चितवन से युक्त
मधु	७.	मधु	नृप	१.	हे राजन् !
केकय	८.	केकय	पपुः दृशिभिः	१६.	नेत्रों से पान किया
कोशलअर्णाः ।	९.	कोशल अर्ण तथा	नृनार्यः ॥	११.	नर-नारियों ने

श्लोकार्थ—हे राजन् ! आनर्त, धन्व, कुरुजाङ्गल, कङ्क, मत्स्य, पाञ्चाल, कुन्ति, मधु, केकय, कोशल, अर्ण तथा दूसरे देशों के नर-नारियों ने मुक्त हास्य और प्रेम भरी चितवन से युक्त उनके मुख कमल के मकरन्द का नेत्रों से पान किया ॥

एकविंशः श्लोकः

तेभ्यः स्ववीक्षणविनष्टतमिस्रदृग्भ्यः क्षेमं त्रिलोकगुरुरर्थदृशं च यच्छन् ।
शृण्वन् दिगन्तधवलं स्वयशोऽशुभघ्नं गीतं सुरैर्नृभिरगाच्छनकैर्विदेहान् ॥२१

पदच्छेद- तेभ्यः स्ववीक्षण विनष्ट तमिस्र दृग्भ्यः क्षेमम् त्रिलोकगुरुः अर्थ दृशम् च यच्छन् ।
शृण्वन् दिगन्त धवलम् स्वयशः अशुभघ्नम् गीतम् सुरैः नृभिः अगात् शनकैः विदेहान् ॥

शब्दार्थ—

तेभ्यः	४.	उन नर-नारियों को	शृण्वन्	१४.	सुनते हुये
अच्युतम्	१.	अपने दर्शन से	दिगन्त	१३.	उज्ज्वल बनाने वाला है (उसे)
विनष्ट तमिस्र	२.	नष्ट हुई अज्ञान	धवलम्	१२.	और दिशाओं को
दृग्भ्यः	३.	दृष्टि वाले	स्वयशः	१०.	अपने यश को जो
क्षेमम्	६.	कल्याणकारी	अशुभघ्नम्	११.	अमङ्गल का नाश करने वाला
त्रिलोकगुरुः	५.	तीनों लोक के गुरु भगवान्	गीतम् सुरैःनृभिः	९.	देवताओं, मनुष्यों द्वारा गाये गये
अर्थदृशम् च	७.	तत्त्वज्ञान का उपदेश	अगात्	१७.	पहुँचे
यच्छन् ।	८	देते हुये (तथा)	शनकैःविदेहान् ॥	१५.	धीरे-धीरे विदेह नगर में

श्लोकार्थ—अपने दर्शन से नष्ट हुई अज्ञान दृष्टि वाले उन नर-नारियों को तीनों लोक के गुरु भगवान श्रीकृष्ण कल्याणकारी तत्त्वज्ञान का उपदेश देते हुये तथा देवताओं, मनुष्यों द्वारा गाये गये अपने यश को जो अमङ्गल का नाश करने वाला और दिशाओं को उज्ज्वल बनाने वाला है, उसे सुनते हुये धीरे-धीरे विदेह नगर में पहुँचे ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तेऽच्युतं प्राप्तमाकर्ण्य पौरा जानपदा नृप ।
अभीयुर्मुदितास्तस्मै गृहीतार्हणपाणयः ॥२२॥

पदच्छेद — ते अच्युतम् प्राप्तम् आकर्ण्य पौराः जानपदाः नृप ।
अभीयुः मुदिताः तस्मै गृहीत अर्हण पाणयः ॥

शब्दार्थ—

ते	२.	वे	अभीयुः	१३.	अगवानी करने के लिये आये
अच्युतम्	५.	भगवान् श्रीकृष्ण को	मुदिताः	८.	आनन्दित होकर
प्राप्तम्	६.	आये हुये	तस्मै	१२.	उनकी
अकर्ण्य	७.	सुनकर	गृहीत	११.	लेकर
पौराः	३.	नगर निवासी और	अर्हण	१०.	पूजन सामग्री
जानपदाः	४.	ग्रामवासी जन	पाणयः ॥	९.	हाथों में
नृप ।	१	हे राजन् !			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! वे नगरवासी और ग्रामवासीजन भगवान् श्रीकृष्ण को आये हुये सुनकर आनन्दित होकर हाथों में पूजन सामग्री लेकर उनकी अगवानी करने के लिये आये ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

दृष्ट्वा त उत्तमश्लोकं प्रीत्युत्फुल्लाननाशयाः ।
कैर्धृताञ्जलिभिर्नेमुः श्रुतपूर्वांस्तथा मुनीन् ॥२३॥

पदच्छेद— दृष्ट्वा ते उत्तमश्लोकम् प्रीति उत्फुल्ल आनन आशयाः ।
कैः धृत अञ्जलिभिः नेमुः श्रुत पूर्वान् तथा मुनीन् ॥

शब्दार्थ—

दृष्ट्वा	२.	देखकर	कैः धृत	६.	मस्तक झुकाकर
ते	३.	लोगों के	अञ्जलिभिः	८.	हाथों को जोड़कर
उत्तमश्लोकम्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण को	नेमुः	१४.	प्रणाम किया
प्रीति	६.	प्रेम और आनन्द से	श्रुत	११.	सुने गये
उत्फुल्ल	७.	खिल उठे (और उन्होंने)	पूर्वान्	१०.	पहले
आनन	५.	मुख	तथा	१३.	तथा (श्रीकृष्ण को)
आशयः ।	४	हृदय तथा	मुनीन् ॥	१२.	मुनियों को

श्लोकार्थ— भगवान् श्रीकृष्ण को देखकर उन लोगों के हृदय तथा मुख प्रेम और आनन्द से खिल उठे। और उन्होंने हाथों को जोड़कर मस्तक झुकाकर पहले सुने गये मुनियों को तथा श्रीकृष्ण को प्रणाम किया ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

स्वानुग्रहाय सम्प्राप्तं मन्वानौ तं जगद्गुरुम् ।
मैथिलः श्रुतदेवश्च पादयोः पेततुः प्रभोः ॥२४॥

पदच्छेद— स्व अनुग्रहाय सम्प्राप्तम् मन्वानौ तम् जगद्गुरुम् ।
मैथिलः श्रुतदेवः च पादयोः पेततुः प्रभोः ॥

शब्दार्थ—

स्व	३.	अपने लोगों पर	मैथिलः	७.	मिथिला नरेश (बहुलाश्व)
अनुग्रहाय	४.	अनुग्रह करने के लिये	श्रुतदेवः	६.	श्रुतदेव
सम्प्राप्तौ	५.	आये हुये	च	८.	और
मन्वानौ	६.	समझकर	पादयोः	११.	चरणों पर
तम्	१.	उन	पेततुः	१२.	गिर पड़े
जगद्गुरुम् ।	२.	जगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण को	प्रभोः ॥	१०.	भगवान् के

श्लोकार्थ—उन जगद्गुरु भगवान् श्रीकृष्ण को अपने लोगों पर अनुग्रह करने के लिये आये हुये समझकर मिथिलानरेश (बहुलाश्व) और श्रुतदेव भगवान् के चरणों पर गिर पड़े ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

न्यमन्त्रयेतां दाशार्हमातिथ्येन सह द्विजैः ।
मैथिलः श्रुतदेवश्च युगपत् संहताञ्जली ॥२५॥

पदच्छेद— न्यमन्त्रयेताम् दाशार्हम् आतिथ्येन सह द्विजैः ।
मैथिलः श्रुतदेवः च युगपत् संहत अञ्जली ॥

शब्दार्थ—

न्यमन्त्रयेताम्	११.	निमन्त्रित किया	मैथिलः	१.	बहुलाश्व
दाशार्हम्	९.	श्रीकृष्ण को	श्रुतदेवः	३.	श्रुतदेव ने
आतिथ्येन	१०.	आतिथ्य ग्रहण करने के लिये	च	२.	और
सह	८.	सहित	युगपत्	४.	एक साथ
द्विजैः ।	७.	ब्राह्मणों के	संहत	६.	जोड़कर
			अञ्जली ॥	५.	हाथ

श्लोकार्थ—बहुलाश्व और श्रुतदेव ने एक साथ हाथ जोड़कर ब्राह्मणों के सहित श्रीकृष्ण को आतिथ्य ग्रहण करने के लिये निमन्त्रित किया ॥

षड्विंशः श्लोकः

भगवांस्तदभिप्रेत्य द्वयोः प्रियचिकीर्षया ।
उभयोराविशद् गेहमुभाभ्यां तदलक्षितः ॥२६॥

पदच्छेद— भगवान् तत् अभिप्रेत्य द्वयोः प्रिय चिकीर्षया ।
उभयोः आविशत् गेहम् उभाभ्याम् तत् अलक्षितः ॥

शब्दार्थ—

भगवान्	१.	भगवान् श्रीकृष्ण ने	उभयोः	७.	दोनों के
तत्	२.	उनका	आविशत्	९.	प्रवेश किया (किन्तु)
अभिप्रेत्य	३.	अभिप्राय जानकर	गेहम्	८.	घर में
द्वयोः	४.	दोनों को	उभाभ्याम्	११.	दोनों ने ही
प्रिय	५.	प्रसन्न	तत्	१०.	इस बात को
चिकीर्षया ।	६.	करने की इच्छा से	अलक्षितः ॥	१२.	नहीं जाना

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने उनका अभिप्राय जानकर दोनों को प्रसन्न करने की इच्छा से दोनों के घर में प्रवेश किया । किन्तु इस बात को दोनों ने ही नहीं जाना ।

सप्तविंशः श्लोकः

श्रोतुमप्यसतां दूरान् जनकः स्वगृहागतान् ।

आनीतेष्वासनाग्र्येषु सुखासीनान् महामनाः ॥२७॥

पदच्छेद— श्रोतुम् अपि असताम् दूरान् जनकः स्वगृह आगतान् ।
आनीतेषु आसन अग्र्येषु सुख आसीनान् महामनाः ॥

शब्दार्थ—

श्रोतुम अपि	४.	सुनने से भी	आनीतेषु	८.	लाये गये
असताम्	३.	दुष्ट पुरुषों के	आसन	१०.	आसन
दूरान्	५.	दूर रहने वाले (उन भगवान् को)	अग्र्येषु	९.	श्रेष्ठ
जनकः	२.	बहुलाश्व को	सुख	११.	सुख से
स्वगृह	६.	अपने घर	आसीनम्	१२.	बैठ जाने पर (उन्हें प्रणाम किया
आगतान् ।	७.	आये हुये (श्रीकृष्ण, मुनियों के लिये)	महामनाः ॥	१.	बड़े मनस्वी

श्लोकार्थ—बड़े मनस्वी बहुलाश्व ने दुष्ट पुरुषों के सुनने से भी दूर रहने वाले उन भगवान् को अपने घर आये हुये श्रीकृष्ण और मुनियों के लिये लाये गये श्रेष्ठ आसनों पर सुख पूर्वक बैठ जाने पर उन्हें प्रणाम किया ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

प्रवृद्धभक्त्या उद्धर्षहृदयास्राविलेक्षणः ।

नत्वा तदङ्घ्रीन् प्रक्षाल्य तदपो लोकपावनीः ॥२८॥

पदच्छेद— प्रवृद्ध भक्त्या उद्धर्ष हृदय अस्र आविल ईक्षणः ।
नत्वा तत् अङ्घ्रीन् प्रक्षाल्य तत् अपः लोकपावनीः ॥

शब्दार्थ—

प्रवृद्ध	१.	बढ़ी हुई	नत्वा	७.	नमस्कार किया और
भक्त्या	२.	भक्ति से	तत्	८.	उनके
उद्धर्ष	३.	अत्यन्त आनन्दित	अङ्घ्रीन्	९.	चरणों को
हृदय	४.	चित्त	प्रक्षाल्य तत्	१०.	पखार कर उस
अस्र आविल	५.	अश्रु पूरित	अपः	१२.	जल को (सिर पर छिड़का)
ईक्षणः ।	६.	नेत्र होकर	लोकपावनीः ॥	११.	लोकपावन

श्लोकार्थ—बढ़ी हुई भक्ति से अत्यन्त आनन्दित चित्त तथा अश्रु पूरित नेत्र होकर नमस्कार किया। और उनके चरणों को पखार कर उस लोकपावन जल को सिर पर छिड़का ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

सकुटुम्बो वहन् मूर्ध्ना पूजयाञ्चक्र ईश्वरान् ।
गन्धमाल्याम्बराकल्पधूपदीपार्घ्यगोवृषैः ॥२९॥

पदच्छेद— स कुटुम्बः वहन् मूर्ध्ना पूजयान् चक्रे ईश्वरान् ।
गन्धमाल्य अम्बर आकल्प धूपदीप अर्घ्य गोवृषैः ॥

शब्दार्थ—

स	१.	उनके चरणोदक को अपने	गन्ध	६.	गन्ध (चन्दनादि)
कुटुम्बः	२.	कुटुम्ब के साथ	माल्य	७.	माला
वहन्	४.	धारण किया	अम्बर	८.	वस्त्र
मूर्ध्ना	३.	सिर पर	आकल्प	९.	अलंकार
पूजयान्	१३.	(समर्पित करके) पूजा	धूपदीप	१०.	धूप-दीप
चक्रे	१४.	की	अर्घ्य	११.	अर्घ्य तथा
ईश्वरान् ।	५.	भगवान् एवं ऋषियों को	गोवृषैः ॥	१२	गऊ-बैल

श्लोकार्थ—उनके चरणोदक को अपने कुटुम्ब के साथ सिर पर धारण किया । भगवान् एवम् ऋषियों को गन्ध, माला, वस्त्र, अलंकार, धूप-दीप, अर्घ्य तथा गऊ-बैल समर्पित करके पूजा की ॥

त्रिंशः श्लोकः

वाचा मधुरया प्रीणन्निदमाहान्नतर्पितान् ।
पादावङ्कगतौ विष्णोः संस्पृशञ्छनकैर्मुदा ॥३०॥

पदच्छेद— वाचा मधुरया प्रीणन् इदम् आह अन्न तर्पितान् ।
पादौ अङ्कगतौ विष्णोः संस्पृशन् शनकैः मुदा ॥

शब्दार्थ—

वाचा	४.	वाणी से	पादौ	७.	पैरों को
मधुरया	३.	मधुर	अङ्क	८.	गोद में
प्रीणन्	५.	प्रसन्न करते हुये	गतौ	९.	लेकर
इदम्	१३.	इस प्रकार	विष्णोः	६.	विष्णु के
आह	१४.	बोले	संस्पृशन्	१२.	सहलाते हुये
अन्न	१.	भोजन से	शनकैः	११.	धीरे-धीरे
तर्पितान् ।	२.	तृप्त किये गये (सबको)	मुदा ॥	१०.	हर्ष से

श्लोकार्थ—भोजन से तृप्त किये गये सबको मधुर वाणी से प्रसन्न करते हुये और विष्णु के पैरों को गोद में लेकर हर्ष से धीरे-धीरे सहलाते हुये इस प्रकार बोले ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

राजोवाच— भवान् हि सर्वभूतानामात्मा साक्षी स्वदृग् विभो ।
अथ नस्त्वत्पदाम्भोजं स्मरतां दर्शनं गतः ॥३१॥

पदच्छेद— भवान् हि सर्व भूतानाम् आत्मा साक्षी स्वदृक् विभो ।
अथ नः त्वत् पद अम्भोजम् स्मरताम् दर्शनम् गतः ॥

शब्दार्थ—

भवान हि	२. आप ही	अथ	८. अब
सर्व	३. सभी	नः	१२. हमें
भूतानाम्	४. प्राणियों के	त्वम्	६. आपके
आत्मा	५. आत्मा	पदअम्भोजम्	१०. चरण कमल
साक्षी	६. साक्षी एवम्	स्मरताम्	११. स्मरण करते हुये
स्वदृक्	७. स्वयं प्रकाश हैं	दर्शनम्	१३. आपका दर्शन
विभो ।	१. हे प्रभो !	गतः ॥	१४. मिला है

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपही सभी प्राणियों के आत्मा, साक्षी एवम् स्वयं प्रकाश हैं । अब आपके चरण कमल का स्मरण करते हुये हमें आपका दर्शन मिला है ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

स्ववचस्तदृतं कर्तुमस्मदृग्गोचरो भवान् ।
यदात्थैकान्तभक्तान् मे नानन्तः श्रीरजः प्रियः ॥३२॥

पदच्छेद— स्ववचः ऋतम् कर्तुम् अस्मत् दृक्गोचरः भवान् ।
यत् आत्थ एकान्त भक्तान् मे न अनन्तः श्रीरजः प्रियः ॥

शब्दार्थ—

स्ववचः	६. अपने वचन को	यत्आत्थ	१. आपने जो कहा था
तत्	८. उसी	एकान्त	३ अनन्य प्रेमी
ऋतम्	१०. सत्य	भक्तान्	४. भक्त से बढ़कर
कर्तुम	११. करने के लिये	मे	२. मुझे
अस्मत्	१२. हमको	न अनन्तः	५. न तो बलराम जी न
दृक्गोचरः	१४. दर्शन दिया	श्रीः अजः	६. लक्ष्मी और न ब्रह्मा जो ही
भवान् ।	१३. आपने	प्रियः ॥	७. प्रिय हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपने जो कहा था कि मुझे अनन्य प्रेमी भक्त से बढ़कर न तो बलराम जी न लक्ष्मी और न ब्रह्माजी ही प्रिय हैं । उसी अपने वचन को सत्य करने के लिये हमको आपने दर्शन दिया है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

को नु त्वच्चरणाम्भोजमेवंविद् विसृजेत् पुमान् ।
निष्किञ्चनानां शान्तानां मुनीनां यस्त्वमात्मदः ॥३३॥

पदच्छेद— कः नु त्वत् चरण अम्भोजम् एवम् वित् विसृजेत् पुमान् ।
निष्किञ्चनानाम् शान्तानाम् मुनीनाम् यः त्वम् आत्मदः ॥

शब्दार्थ—

कः नु	३. कौन	पुमान्	४. पुरुष
त्वत्	५. आपके	निष्किञ्चनानाम्	११. परिग्रह शून्य और
चरण	६. चरण	शान्तानाम्	१२. शान्त
अम्भोजम्	७. कमल को	मुनीनाम्	१३. मुनियों को
एवम्	१. इस प्रकार	यः	९. जो
वित्	२. जानने वाला	त्वम्	१०. आप
विसृजेत् ।	८. छोड़ सकेगा	आत्मदः ॥	१४. अपने आप तक को दे डालते हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! इस प्रकार जानने वाला कौन पुरुष आपके चरण कमल को छोड़ सकेगा । जो आप परिग्रह शून्य और शान्त मुनियों को अपने आप तक को दे डालते हैं ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

योऽवतीर्य यदोर्वंशे नृणां संसरतामिह ।
यशो वितेने तच्छान्त्यै त्रैलोक्यवृजिनापहम् ॥३४॥

पदच्छेद— यः अवतीर्य यदोः वंशे नृणाम् संसरताम् इह ।
यशः वितेने तत् शान्त्यै त्रैलोक्य वृजिन अपहम् ॥

शब्दार्थ—

यः	१. जिस आपने	यशः	१३. यश
अवतीर्य	४. अवतार लेकर	वितेने	१४. फैलाया है
यदोः	२. यदु के	तत्	८. उससे
वंशे	३. वंश में	शान्त्यै	९. मुक्त करने के लिये
नृणाम्	७. मनुष्यों को	त्रैलोक्य	१०. तीनों लोक के
संसरताम्	६. जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़े हुये	वृजिन	११. पाप को
इह ।	५. यहाँ पर	अपहम् ॥	१२. शान्त करने वाला

श्लोकार्थ—जिस आपने यदु के वंश में अवतार लेकर यहाँ पर जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़े हुये मनुष्यों को उससे मुक्त करने के लिये तीनों लोक के पाप को शान्त करने वाला यश फैलाया है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

नमस्तुभ्यं भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।
नारायणाय ऋषये सुशान्तं तप ईयुषे ॥३५॥

पदच्छेद— नमः तुभ्यम् भगवते कृष्णाय अकुण्ठ मेधसे ।
नारायणाय ऋषये सुशान्तम् तपः ईयुषे ॥

शब्दार्थ—

नमः	११. नमस्कार है	नारायणाय	३. नारायण
तुभ्यम्	८. आप	ऋषये	४. ऋषि के रूप में
भगवते	९. भगवान्	सुशान्तम्	५. अत्यन्त शान्त
कृष्णाय	१०. श्रीकृष्ण को	तपः	६. तप
अकुण्ठ	१. अनन्त	ईयुषे ॥	७. करने वाले
मेधसे ।	२. ज्ञान वाले		

श्लोकार्थ—अनन्त ज्ञान वाले नारायण ऋषि के रूप में अत्यन्त शान्त तप करने वाले आप भगवान् को नमस्कार है ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

दिनानि कतिचिद् भूमन् गृहान् नो निवस द्विजैः ।
समेतः पादरजसा पुनीहीदं निमेः कुलम् ॥३६॥

पदच्छेद— दिनानि कतिचित् भूमन् गृहान् नः निवस द्विजैः ।
समेतः पाद रजसा पुनीहि इदम् निमेः कुलम् ॥

शब्दार्थ—

दिनानि	३. दिनों तक	समेतः	५. साथ
कतिचित्	२. आप कुछ	पाद	९. चरणों की
भूमन्	१. एकरस अनन्त	रजसा	१०. धूलि से
गृहान्	७. घर में	पुनीहि	१४. पवित्र कीजिये
नः	६. हमारे	इदम्	११. इस
निवस	८. निवास कीजिये (और)	निमेः	१२. निमि
द्विजैः ॥	४. मुनि मण्डली के	कुलम् ॥	१३. वंश को

श्लोकार्थ—एक रस अनन्त आप कुछ दिनों तक मुनि-मण्डली के साथ हमारे घर में निवास कीजिये । और चरणों की धूलि से इस निमि-वंश को पवित्र कीजिये ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

इत्युपामन्त्रितो राज्ञा भगवाँल्लोकभावनः ।
उवास कुर्वन् कल्याणं मिथिलानरयोषिताम् ॥३७॥

पदच्छेद— इति उपामन्त्रितः राज्ञा भगवान् लोक भावनः ।
उवास कुर्वन् कल्याणम् मिथिला नर योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	उवास	१२.	रह गये
उपामन्त्रितः	३.	प्रार्थना किये जाने पर	कुर्वन्	११.	करते हुये
राज्ञा	२.	राजा के द्वारा	कल्याणम्	१०.	कल्याण
भगवान्	६.	भगवान् श्रीकृष्ण	मिथिला	७.	मिथिला वासी
लोक	४.	लोगों को	नर	८.	नर (और)
भावनः ।	५.	जीवन देने वाले	योषिताम् ॥	९.	नारियों का

श्लोकार्थ—इस प्रकार राजा के द्वारा प्रार्थना किये जाने पर लोगों को जीवन देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण मिथिलावासी नर और नारियों का कल्याण करते हुये रह गये ॥

अष्टात्रिंशः श्लोकः

श्रुतदेवोऽच्युतं प्राप्तं स्वगृहाञ्जनको यथा ।
नत्वा मुनीन् सुसंहृष्टो धुन्वन् वासो ननर्त ह ॥३८॥

पदच्छेद— श्रुतदेवः अच्युतम् प्राप्तम् स्व गृहान् जनकः यथा ।
नत्वा मुनीन् सुसंहृष्टः धुन्वन् वासः ननर्त ह ॥

शब्दार्थ—

श्रुतदेवः	४.	श्रुतदेव	नत्वा	९.	नमस्कार किया
अच्युतम्	३.	श्रीकृष्ण को (देखकर)	मुनीन्	८.	मुनियों को
प्राप्तम्	२.	आये हुये	सुसंहृष्टः	७.	आनन्द से विभोर हो गये और
स्वगृहान्	१.	अपने घर	धुन्वन्	११.	उछालते हुये
जनकः	५.	बहुलाश्व के	वासः	१०.	वस्त्र
यथा ।	६.	समान	ननर्त ह ॥	१२.	नाचने लगे

श्लोकार्थ—अपने घर आये हुये श्रीकृष्ण को देखकर श्रुतदेव बहुलाश्व के समान आनन्द विभोर हो गये और मुनियों को नमस्कार करके वस्त्र उछालते हुये नाचने लगे ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

तृणपीठबृसीष्वेतानानीतेषूपवेश्य सः ।
स्वागतेनाभिनन्द्याङ्घ्रीन् सभार्योऽवनिजे मुदा ॥३९॥

पदच्छेद— तृण पीठ बृसीषु एतान् आनीतेषु उपवेश्य सः ।
स्वागतेन अभिनन्द्य अङ्घ्रीन् सभार्यः अवनिजे मुदा ॥

शब्दार्थ—

तृणपीठ	३. चटाई पीढ़े और	स्वागतेन	७. स्वागत के वचनों से
बृसीषु	४. कुश के आसनों पर	अभिनन्द्य	८. अभिनन्दन करके (उनके)
एतान्	५. उन सबको	अङ्घ्रीन्	९. चरणों को
आनीतेषु	२. लाये गये	सभार्यः	१०. पत्नी के साथ
उपवेश्य	६. बैठाकर	अवनिजे	१२. पखारा
सः ।	१. श्रुतदेव ने	मुदा ॥	११. हर्ष से

श्लोकार्थ—श्रुतदेव ने लाये गये चटाई, पीढ़े और कुशासनों पर उन सबको बैठाकर स्वागत के वचनों से अभिनन्दन करके उनके चरणों को पत्नी के साथ हर्ष से पखारा ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तदम्भसा महाभाग आत्मानं सगृहान्वयम् ।
स्नापयाञ्चक्र उद्धर्षो लब्धसर्वमनोरथः ॥४०॥

पदच्छेद— तत् अम्भसा महाभाग आत्मानम् सगृह अन्वयम् ।
स्नापयान् चक्रे उद्धर्षः लब्ध सर्व मनोरथः ॥

शब्दार्थ—

तत्	६. उस	स्नापयान्	११. सींच
अम्भसा	७. जल से	चक्रे	१२. दिया
महाभाग	१. महाभाग	उद्धर्ष	५. हर्षातिरेकसे मतवाले श्रुतदेव ने
आत्मानम्	८. अपने को	लब्ध	४. प्राप्त एवं
सगृह	९. घर और	सर्व	२. सारे
अन्वयम् ।	१०. कुटुम्बियों को	मनोरथः ॥	३. मनोरथों को

श्लोकार्थ—महाभाग ! सारे मनोरथों को प्राप्त एवं हर्षातिरेक से मतवाले श्रुतदेव ने उस जल से अपने को, घर और कुटुम्बियों को सींच दिया ॥

एकचत्वारिंशः श्लोक

फलार्हणोशीरशिवामृताम्बुभिर्मृदा सुरभ्या तुलसीकुशाम्बुजैः ।
आराधयामास यथोपपन्नया सपर्यया सत्त्वविवर्धनान्धसा ॥४१॥

पदच्छेद— फल अर्हण उशीर शिव अमृत अम्बुभिः मृदा सुरभ्या तुलसी कुश अम्बुजैः ।
अराधयामास यथा उपपन्नया सपर्यया सत्त्व विविर्धन अन्धसा ।।

शब्दार्थ—

फल अर्हण	१.	श्रुतदेव ने फल-गन्ध	आराधयामास	१४.	सबकी आराधना की
उशीर	२.	खश से सुवासित	यथा	८.	अनायास
शिव-अमृत	३.	निर्मल एवम् मधुर	उपपन्नया	६.	प्राप्त
अम्बुभिः	४.	जल	सपर्यया	१०.	पूजा सामग्री तथा
मृदा सुरभ्या	५.	मिट्टी सुगन्धित	सत्त्व	११.	सत्त्वगुण
तुलसीकुश	६.	तुलसी, कुश	विवर्धन	१२.	बढ़ाने वाले
अम्बुजैः ।	७.	कमल (और)	अन्धसा ।।	१३.	अन्न से

श्लोकार्थ—श्रुतदेव ने फल, गन्ध, खश से सुवासित निर्मल एवम् मधुर जल, सुगन्धित मिट्टी, तुलसी, कुश, कमल और अनायास-प्राप्त पूजा सामग्री तथा सत्त्वगुण बढ़ाने वाले अन्न से सबकी आराधना की ।।

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

स तर्कयामास कुतो ममान्वभूद् गृहान्धकूपे पतितस्य सङ्गमः ।
यः सर्वतीर्थास्पदपादरेणुभिः कृष्णेन चास्यात्मनिकेतभूसुरैः ॥४२॥

पदच्छेद— सः तर्कयामास कुतः मम अन्वभूत् गृह अन्धकूपे पतितस्य सङ्गमः ।
यः सर्वतीर्थ आस्पद पादरेणुभिः कृष्णेन च अस्य आत्म निकेत भूसुरैः ।।

शब्दार्थ—

सः	१.	श्रुतदेव	यः सर्वतीर्थ	७.	जो समस्त तीर्थों की
तर्कयामास	२.	तर्कणा करने वाले	आस्पद	८.	प्रतिष्ठा स्वरूप
कुतः	१५.	कैसे	पाद रेणुभिः	६.	चरण-धूलि वाले
मम्	५.	मेरा	कृष्णेन	१०.	श्रीकृष्ण और
अन्वभूत्	१६.	हो गया	अस्य	११.	उनके
गृह अन्धकूपे:	३.	घररूपी अन्धेरे कुयें में	आत्म	१२.	अपने
पतितस्य	४.	गिरे हुये	निकेत	१३.	निवास स्थान
सङ्गमः ।	६.	समागम	भूसुरैः ।।	१४.	ब्राह्मणों के साथ

श्लोकार्थ—श्रुतदेव तर्कणा करने लगे कि घर रूपी अन्धेरे कुयें में गिरे हुये मेरा समागम समस्त तीर्थों की प्रतिष्ठा स्वरूप चरण धूलि वाले श्रीकृष्ण और उनके अपने निवास स्थान ब्राह्मणों के साथ कैसे हो गया ।।

त्रियचत्वारिंशः श्लोकः

सूपविष्टान् कृतातिथ्याञ्छ्रुतदेव उपस्थितः ।
सभार्यः स्वजनापत्य उवाचाङ्घ्र्यभिमर्शनः ॥४३॥

पदच्छेद— सूप विष्टान् कृत आतिथ्यान् श्रुतदेव उपस्थितः ।
सभार्य स्वजन अपत्य उवाच अङ्घ्रि अभिमर्शनः ॥

शब्दार्थ—

सूप	४. आराम से बैठे हुये	सभार्य	६. स्त्री
विष्टान्	५. अभ्यागतों की सेवा में	स्वजन	७. भाई-बन्धु और
कृत	३. स्वीकार करके	अपत्य	८. पुत्र के साथ
आतिथ्यान्	२. आतिथ्य	उवाच	१२. बोले
श्रुतदेव	१. श्रुतदेव	अङ्घ्रि	१०. वे भगवान के चरणों का
उपस्थितः ।	९. उपस्थित हो गये	अभिमर्शनः ॥	११. स्पर्श करते हुये

श्लोकार्थ—श्रुतदेव आतिथ्य स्वीकार करके आराम से बैठे हुये अभ्यागतों की सेवा में स्त्री, भाई-बन्धु और पुत्र के साथ उपस्थित हो गये । वे भगवान् के चरणों का स्पर्श करते हुये बोले ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

श्रुतदेव उवाच—नाद्य नो दर्शनं प्राप्तः परं परमपूरुषः ।
यर्हीदं शक्तिभिः सृष्ट्वा प्रविष्टो ह्यात्मसत्तया ॥४४॥

पदच्छेद— न आद्य नः दर्शनम् प्राप्तः परम् परमपूरुषः ।
यर्हि इदम् शक्तिभिः सृष्ट्वा प्रविष्टः हि आत्मसत्तया ॥

शब्दार्थ—

न	४. ऐसी बात नहीं है	यर्हि	७. जबसे आपने
आद्य नः	१. आज हमें आपका	इदम्	८. इस जगत की
दर्शनम्	२. दर्शन	शक्तिभिः	९. अपनी शक्तियों के द्वारा
प्राप्तः	३ प्राप्त हुआ है	सृष्ट्वा	१०. सृष्टि करके
परम्	५. आप सबसे परे	प्रविष्टः	१२. प्रवेश किया है
परमपूरुषः ।	६. पुरुषोत्तम हैं	आत्मसत्तया ॥	११. आत्मसत्ता के रूप में इसमें

श्लोकार्थ—आज हमें आपका दर्शन प्राप्त हुआ है, ऐसी बात नहीं है । आप सबसे परे पुरुषोत्तम हैं । जब से आपने इस जगत् की अपनी शक्तियों के द्वारा सृष्टि करके आत्मसत्ता के रूप में इसमें प्रवेश किया है । तभी से आप हम मिले हैं ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

यथा शयानः पुरुषो मनसैवात्ममायया।
सृष्ट्वा लोकं परं स्वाप्नमनुविश्यावभासते ॥४५॥

पदच्छेद— यथा शयानः पुरुषः मनसा एव आत्म मायया।
सृष्ट्वा लोकम् परम् स्वाप्नम् अनुविश्य अवभासते ॥

शब्दार्थ—

यथा	१. जैसे	सृष्ट्वा	१०. सृष्टि करके
शयानः	२. सोया हुआ	लोकम्	९. लोक की
पुरुषः	३. पुरुष	परम्	८. दूसरे
मनसा	५. मन से	स्वाप्नम्	७. स्वप्न में
एव	६. ही	अनुविश्य	११. उसमें उपस्थित होकर
आत्ममायया।	४. अविद्यावश	अवभासते ॥	१२. प्रकाशित होता है

(वैसे ही आप इसमें हो रहे हैं।)

श्लोकार्थ—जैसे सोया हुआ पुरुष अविद्यावश मन से ही स्वप्न में दूसरे लोक की सृष्टि करके उसमें उपस्थित होकर प्रकाशित होता है, वैसे ही आप इसमें हो रहे हैं ॥

षड्चत्वारिंशः श्लोकः

शृण्वतां गदतां शश्वदर्चतां त्वाभिवन्दताम्।
नृणां संवदतामन्तर्हृदि भास्यमलात्मनाम् ॥४६॥

पदच्छेद— शृण्वताम् गदताम् शश्वत् अर्चताम् त्वा अभिवन्दताम्।
नृणाम् संवदताम् अन्तः हृदि भासि अमल आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

श्रवणताम्	३. श्रवण	नृणाम्	७. लोगों से (आपकी ही)
गदताम्	४. कीर्तन	संवदताम्	८ चर्चा करते हुये
शश्वत्	२. निरन्तर	अन्तः हृदिः	११. हृदय के भीतर आप
अर्चताम्	५. पूजन तथा	भासि	१२. प्रकाशित हो जाते हैं
त्वा	१. आपकी लीलाओं का	अमल	९. निर्मल
अभिवन्दताम्।	६. बन्दन करते हुये (तथा)	आत्मनाम् ॥	१०. चित्त वालों के

श्लोकार्थ—आपकी लीलाओं का निरन्तर श्रवण कीर्तन पूजन तथा बन्दन करते हुये तथा लोगों से आपकी ही चर्चा करते हुये निर्मल चित्त वालों के हृदय के भीतर आप प्रकाशित हो जाते हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

हृदिस्थोऽप्यतिदूरस्थः   कर्मविक्षिप्तचेतसाम् ।
आत्मशक्तिभिरग्राह्योऽप्यन्त्युपेतगुणात्मनाम् ॥४७॥

पदच्छेद— हृदिस्थः अपि अति दूरस्थः कर्म विक्षिप्त चेतसाम् ।
आत्म शक्तिभिः अग्राह्यः अपि अन्ति उपेत गुण आत्मनाम् ॥

शब्दार्थ—

हृदिस्थः	४.	हृदय में रहते हुये	आत्मशक्तिभिः	१०.	चित्त शक्ति से
अपि	५.	भी आप	अग्राह्यअपि	११.	अग्राह्य होनेपरभी आपउनके
अतिदूरस्थः	६.	उनसे वहुत दूर रहते हैं (किन्तु)	अन्ति	१२.	अत्यन्त निकट हैं
कर्म	१.	कर्मों की वासना से	उपेत	९.	सद्‌गुण सम्पन्न बना लिया है
विक्षिप्त	२.	बहिर्मुख	गुण	७.	आपके गुणों के गान से
चेतसाम् ।	३.	चित्त वालों के	आत्मनाम्॥	८.	अपने अन्तःकरण को

श्लोकार्थ—कर्मों की वासना से बहिर्मुख चित्तवालों के हृदय में रहते हुये भी आप उनसे दूर रहते हैं। किन्तु आपके गुणों के गान से अपने अन्तःकरण को सद्‌गुण सम्पन्न बना लिया है। चित्तशक्ति अग्राह्य होने पर भी आप उनके अत्यन्त निकट हैं ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

नमोऽस्तु तेऽध्यात्मविदां परात्मने अनात्मने स्वात्मविभक्तमृत्यवे ।
सकारणाकारणलिङ्गमीयुषे   स्वमाययासंवृतरुद्धदृष्टये   ॥४८॥

पदच्छेद— नमः अस्तुते अध्यात्मविदाम् परात्मने अनात्मने स्व आत्म विभक्त मृत्यवे ।
सकारण अकारण लिङ्गम् ईयुषे स्वमायया संवृत रुद्ध दृष्टये ॥

शब्दार्थ—

नमः अस्तुते	१६.	आपको नमस्कार है	सकारण	८.	आप प्रकृति रूप कारण और
अध्यात्म	१.	आत्मतत्त्व को	अकारण	९.	महत्तत्त्वादि कार्य के
विदाम्	२.	जानने वालों के लिये	लिङ्गम्	१०.	चिह्न को
परात्मने	३.	परमात्म रूप	ईयुषे	११.	प्राप्त (नियामक है)
अनात्मने	४.	अनात्मा को प्राप्त	स्वमायया	१४.	अपनी माया से
स्वआत्म	५.	अपनी आत्मा को	असंवृत	१५.	घिरे हुये हैं
विभक्त	६.	विभक्त किये हुये	रुद्ध	१३.	ढकने वाली
मृत्यवे ।	७.	मृत्युरूप (आपकोनमस्कारहै)	दृष्टये ॥	१२.	दूसरे की दृष्टि को

श्लोकार्थ—हे प्रभोः ! आत्मतत्व को जानने वालों के लिये परमात्मरूप अनात्मा को प्राप्त अपनी आत्मा को विभक्त किये हुये मृत्युरूप आपको नमस्कार है। आप प्रकृतिरूप कारण और महतत्व आदि कार्य के चिह्न को प्राप्त नियामक हैं। दूसरे की दृष्टि को ढकने वाली अपनी माया से घिरे हुये हैं ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सत्वं शाधि स्वभृत्यान् नः किं देव करवामहे।
एतदन्तो नृणां क्लेशो यद् भवानक्षिगोचरः ॥४६॥

पदच्छेद— सः त्वम् शाधि स्वभृत्यान् न किम् देवकानाम हे।
एतत् अन्तः नृणाम् क्लेशः यत् भवान् अक्षि गोचरः ॥

शब्दार्थ—

सः त्वम्	१.	सो आप	एतत्	१०.	यहीं हो जाता है
शाधि	३.	शासित कीजिये	अन्तः	६.	अन्त
स्वभृत्यान् नः	२.	अपने सेवक हमें	नृणाम्	७.	मनुष्यों के
किम्	५.	आपकी क्या सेवा	क्लेशः	८.	क्लेश का
देव	४.	हे प्रभो ! हम	यत्भवान्	११.	कि आपका
करवामहे।	६.	करें	अक्षिगोचरः ॥	१२.	दर्शन होता रहे

श्लोकार्थ—सो आप अपने सेवक हमें शासित कीजिये। हे प्रभो ! हम आपकी क्या सेवा करें। मनुष्यों के क्लेश का अन्त यहीं हो जाता है कि आपका दर्शन होता रहे ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—तदुक्तमित्युपाकर्ण्य भगवान् प्रणतार्तिहा।
गृहीत्वा पाणिना पाणिं प्रहसंस्तमुवाच ह ॥५०॥

पदच्छेद— तत् उक्तम उपाकर्ण्य भगवान् प्रणत आर्तिहा।
गृहीत्वा पाणिना पाणिम् प्रहसन् तम् उवाच ह ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	श्रुतदेव	गृहीत्वा	६.	पकड़कर
उक्तम इति	२.	यह प्रार्थना	पाणिना	७.	अपने हाथ से उनका
उपाकर्ण्य	३.	सुनकर	पाणिम्	८.	हाथ
भगवान्	६.	भगवान् ने	प्रहसन्	१०.	हँसते हुये
प्रणत	४.	शरणागत	तम्	११.	उनसे
आर्तिहा।	५.	भयहारी	उवाच ह ॥	१२.	कहा

श्लोकार्थ—श्रुतदेव की यह प्रार्थना सुनकर शरणागत भयहारी भगवान् ने अपने हाथ से उनका हाथ पकड़कर हँसते हुये उनसे कहा ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—ब्रह्मं स्तेऽनुग्रहार्थाय सम्प्राप्तान् विद्ध्यमून् मुनीन् ।
सञ्चरन्ति मया लोकान् पुनन्तः पाद रेणुभिः ॥५१॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् ते अनुग्रह अर्थाय सम्प्राप्तान् विद्धि अमून् मुनीन् ।
सञ्चरन्ति मया लोकान् पुनन्तः पाद रेणुभिः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन् ते	१.	हे ब्रह्मन् ! तुम १२	सञ्चरन्ति	१२.	विचरण कर रहे हैं
अनुग्रह	२.	अनुग्रह	मया	७.	ये सब
अर्थाय	३.	करने के लिये	लोकान्	१०.	लोगों को
सम्प्राप्तान्	४.	आये हुये	पुनन्तः	११.	पवित्र करते हुये
विद्धि	६.	जानो	पाद	८.	अपने चरणों की
अमून् मुनीन्	५.	इन मुनियों को	रेणुभिः ॥	६.	धूलि से

श्लोकार्थ— हे ब्रह्मन् ! अनुग्रह करने के लिये आये हुये इन मुनियों को जानो । ये सब अपने चरणों की धूलि से लोगों को पवित्र करते हुये विचरण कर रहे हैं ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

देवाः क्षेत्राणि तीर्थानि दर्शनस्पर्शनार्चनैः ।
शनैः पुनन्ति कालेन तदप्यर्हत्तमेक्षया ॥५२॥

पदच्छेद— देवाः क्षेत्राणि तीर्थानि दर्शन स्पर्शन् अर्चनैः ।
शनैः पुनन्ति कालेन तदपि अर्हत्तम ईक्षया ॥

शब्दार्थ—

देवाः	१.	देवता	शनैः	७.	धीरे-धीरे
क्षेत्राणि	२.	पुण्य क्षेत्र और	पुनन्ति	६.	पवित्र करते हैं किन्तु)
तीर्थानि	३.	तीर्थ तो	कालेन	८.	बहुत दिनों में
दर्शन	४.	दर्शन	तदपि	१२.	ही (पवित्र कर देते है)
स्पर्शन्	५.	स्पर्श और	अर्हत्तम	१०.	संत पुरुष
अर्चनैः ।	६.	पूजन से	ईक्षया ॥	११.	दृष्टि से

श्लोकार्थ—देवता, पुण्यक्षेत्र और तीर्थ तो दर्शन, स्पर्श और पूजन से धीरे-धीरे बहुत दिनों में पवित्र करते हैं । किन्तु संत पुरुष दृष्टि से ही पवित्र करते हैं ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ब्राह्मणो जन्मना श्रेयान् सर्वेषां प्राणिनामिह ।
तपसा विद्यया तुष्ट्या किमु मत्कलया युतः ॥५३॥

पदच्छेद— ब्राह्मणः जन्मना श्रेयान् सर्वेषाम् प्राणिनाम् इह ।
तपसा विद्यया तुष्टया किमु मत् कलया युतः ॥

शब्दार्थ—

ब्राह्मणः	१. ब्राह्मण	तपसा	७. तपस्या
जन्मना	२. जन्म से ही	विद्यया	८. विद्या
श्रेयान्	६. श्रेष्ठ है (यदि वह)	तुष्टया	९. सन्तोष और
सर्वेषाम्	४. सब	किमु	१२. कहना ही क्या
प्राणिनाम्	५. प्राणियों से	मत्कलया	१०. मेरी उपासना भक्ति से
इह ।	३. यहाँ	युतः ॥	११. युक्त हो तो

श्लोकार्थ—ब्राह्मण जन्म से ही श्रेष्ठ है । यदि वह तपस्या, विद्या, सन्तोष और मेरी उपासना भक्ति से युक्त हो तो कहना ही क्या है ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

न ब्राह्मणान्मे दयितं रूपमेतच्चतुर्भुजम् ।
सर्ववेदमायोविप्रः सर्वदेवमयो ह्यहम् ॥५४॥

पदच्छेद— न ब्रह्मणान् में दयितम् रूपम् एतत् चतुर्भुजम् ।
सर्व वेदमयः विप्रः सर्व देवमयः हि अहम् ॥

शब्दार्थ—

न	७. नहीं है	सर्व	१०. सर्व
ब्रह्मणान्	५. ब्राह्मण से	वेदमयः	११. वेदमय है और
मे	१. मुझे (अपना)	विप्रः	९. ब्राह्मण
दयितम्	६. अधिक प्रिय	सर्व	१३. सर्व
रूपम्	४. रूप भी	देवमयः	१४. देवमय हूँ
एतत्	२. यह	हि	८. क्योंकि
चतुर्भुजम् ।	३. चतुर्भुज	अहम् ॥	१२. मैं

श्लोकार्थ—मुझे अपना यह चतुर्भुज रूप भी ब्राह्मण से अधिक प्रिय नहीं है । क्योंकि ब्राह्मण सर्व वेदमय है और मैं सर्व देवमय हूँ ।

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

दुष्प्रज्ञाः अविदित्वैवमवजानन्त्यसूयवः ।
गुरुं मां विप्रमात्मानमर्चादाविज्य दृष्टयः ॥५५॥

पदच्छेद— दुष्प्रज्ञाः अविदित्वा एवम् अवजानन्ति असूयवः ।
गुरुम् माम् विप्रम् अर्चा दौ इज्य दृष्टयः ॥

शब्दार्थ—

दुष्प्रज्ञाः	१.	दुर्बुद्धि मनुष्य	गुरुम्	७.	गुरु
अविदित्वा	३.	न जानकर	माम् विप्रम्	८.	मेरा, ब्राह्मण तथा
एवम्	२.	इस प्रकार	आत्मानम्	९.	आत्मा का
अवजानन्ति	१०.	अपमान करते हैं	अर्चादौ	४.	केवल मूर्ति आदि में
असूयवः ।	६.	गुणों में दोष निकालकर	इज्य दृष्टयः ॥	५.	पूज्य बुद्धि रखते हैं और

श्लोकार्थ—दुर्बुद्धि मनुष्य इस प्रकार न जानकर केवल मूर्ति आदि में पूज्य बुद्धि रखते हैं और गुणों में दोष निकालकर गुरु, मेरा, ब्राह्मण तथा आत्मा का अपमान करते हैं ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

चराचरमिदं विश्वं भावा ये चास्य हेतवः ।
मद्रूपाणीति चेतस्याधत्ते विप्रो मदीक्षया ॥५६॥

पदच्छेद— चराचरम् इदम् विश्वम् भावाः ये च अस्य हेतवः ।
मद्रूपाणि इति चेतसि आधत्ते विप्रः मत् ईक्षया ॥

शब्दार्थ—

चराचरम्	८.	चराचर	मद्रूपाणि	१३.	मेरा ही रूप हैं
इदम्	७.	यह	इति	५.	यह
विश्वम्	९.	जगत्	चेतसि	४.	चित्त में
भावाः	१०.	सभी भाव	आधत्ते	६.	निश्चय कर लेता है कि
ये च अस्य	११.	और जो इसके	विप्रः	१.	ब्राह्मण
हेतवः ।	१२.	कारण (प्रकृति महत्तत्त्वादि) सब	मत्	२.	मेरा
			ईक्षया ॥	३.	साक्षात्कार करके

श्लोकार्थ—ब्राह्मण मेरा साक्षात्कार करके चित्त में यह निश्चय कर लेता है कि यह चराचर जगत् सभी-भाव और जो इसके कारण प्रकृति-महत्तत्त्वादि सब मेरा ही रूप हैं ॥

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तस्माद् ब्रह्मऋषीनेतान् ब्रह्मन् मच्छ्रद्धयार्चय ।
एवं चेदर्चितोऽस्म्यद्धा नान्यथा भूरिभूतिभिः ॥५७॥

पदच्छेद— तस्मात् ब्रह्म ऋषीन् एतान् ब्रह्मन् मत् श्रद्धया अर्चय ।
एवम् चेत् अर्चितः अस्मि अद्धा न अन्यथा भूरि भूतिभिः ॥

शब्दार्थ—

तस्मात्	१.	इसलिये	एवम् चेत्	७.	यदि ऐसा करोगे तो तुमने
ब्रह्मऋषीन्	४.	ब्रह्मर्षियों की	अर्चितः अस्मि	६.	मेरा पूजन कर लिया
एतान्	३.	इन	अद्धा	८.	अनायास ही
ब्रह्मन्	२.	हे श्रुतदेव ! तुम	न अन्यथा	१०.	नहीं तो
मत् श्रद्धया	५.	मेरी श्रद्धा-भावना से	भूरि	११.	बड़ी-बड़ी बहुमूल्य
अर्चय ।	६.	पूजा करो	भूतिभिः ॥	१२.	सामग्रियों से भी मेरी पूजा नहीं होगी

श्लोकार्थ—इसलिये श्रुतदेव तुम इन ब्रह्मर्षियों की मेरी श्रद्धा-भावना से पूजा करो। यदि ऐसा करोगे तो तुमने अनायास ही मेरा पूजन कर लिया। नहीं तो बड़ी-बड़ी बहुमूल्य सामग्रियों से भी मेरी पूजा नहीं होगी ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

श्री शुकवाच— स इत्थं प्रभुणाऽऽदिष्टः सहकृष्णान् द्विजोत्तमान् ।
आराध्यैकात्मभावेन मैथिलश्चाप सद्गतिम् ॥५८॥

पदच्छेद— सः इत्थम् प्रभुणा आदिष्टः सहकृष्णान् द्विज उत्तमान् ।
आराध्य एक आत्म भावेन मैथिलः च आप सद् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

सः इत्थम्	१.	उन्होंने इस प्रकार	आराध्य	६.	आराधना करके
प्रभुणा	२.	श्रीकृष्ण से	एक आत्म	७.	एकात्म
आदिष्टः	३.	आदेश पाने पर	भावेन	८.	भाव से
सह कृष्णान्	४.	श्रीकृष्ण के साथ	मैथिलः च	१०.	बहुलाश्व ने भी उसी
द्विज	५.	ब्राह्मणों की	आप	१२.	प्राप्त किया
उत्तमान् ।	६.	श्रेष्ठ	सद्गतिम् ॥	११.	उत्तम गति को

श्लोकार्थ—उन्होंने इस प्रकार श्रीकृष्ण से आदेश पाने पर श्रीकृष्ण के साथ श्रेष्ठ ब्राह्मणों की एकात्म भाव से आराधना करके बहुलाश्व ने भी उसी उत्तम गति को प्राप्त किया ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

एवं स्वभक्तयोः राजन् भगवान् भक्तभक्तिमान् ।
उषित्वाऽऽदिश्य सन्मार्गं पुनर्द्वारवतीमगात् ॥५९॥

पदच्छेद— एवम् स्वभक्तयोः राजन् भगवान् भक्त भक्तिमान् ।
उषित्वा आदिश्य सन् मार्गम् पुनः द्वारवतीम् अगात् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	उषित्वा	७.	रहकर उन्हें
स्वभक्तयोः	६.	अपने दोनों भक्तों के यहाँ	आदिश्य	६.	आदेश देकर
राजन्	१.	हे राजन् !	सन्मार्गम्	८.	श्रेष्ठ मार्ग का
भगवान्	५.	भगवान्	पुनः	१०.	फिर
भक्त	३.	भक्तों की	द्वारवतीम्	११.	द्वारकापुरी
भक्तिमान् ।	४.	भक्ति करने वाले	अगात् ॥	१२.	चले गये

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार भक्तों की भक्ति करने वाले भगवान् अपने दोनों भक्तों के यहाँ रहकर उन्हें श्रेष्ठ मार्ग का आदेश देकर फिर द्वारकापुरी चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे श्रुतदेवानुग्रहो नाम
षडशीतितमः अध्यायः ॥८६॥



श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

सप्ताशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

परीक्षिदुवाच— ब्रह्मन् ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणे गुणवृत्तयः।
कथं चरन्ति श्रुतयः साक्षात् सदसतः परे ॥१॥

पदच्छेद— ब्रह्मन् ब्रह्मणि अनिर्देश्ये निर्गुणे गुणवृत्तयः।
कथम् चरन्ति श्रुतयः साक्षात् सत् असतः परे ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्मन्	१.	हे भगवन्!	कथम्	११.	कैसे
ब्रह्मणि	७.	ब्रह्म का	चरन्ति	१२.	प्रतिपादन करती हैं
अनिर्देश्ये	२.	कार्य और कारण से परे	श्रुतयः	१०.	श्रुतियां
निर्गुणे	३.	गुणों से रहित (और)	साक्षात्	४.	स्वयं
गुण	८.	गुण रूप	सत् असत्	५.	सत् असत से
वृत्तयः।	९.	विषय वाली	परे ॥	६.	परे

श्लोकार्थ—हे भगवान्! कार्य और कारण से परे गुणों से रहित और स्वयम् सत्-असत् से परे ब्रह्म का गुण रूप विषय वाली श्रुतियाँ कैसे प्रदान करती हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मनेऽकल्पनाय च ॥२॥

पदच्छेद— बुद्धि इन्द्रिय मनः प्राणान् जनानाम् असृजत् प्रभुः।
मात्रा अर्थम् च भव अर्थम् च आत्मने अकल्पनाय च ॥

शब्दार्थ—

बुद्धि	३.	बुद्धि	मात्रा	८.	जिससे वे धर्म
इन्द्रिय	४.	इन्द्रिय	अर्थम् च	९.	अर्थ
मनः	५.	मन और	भवअर्थम्	१०.	काम
प्राणान्	६.	प्राणों की	च	११.	और
जनानाम्	२.	प्राणियों के लिये	आत्मने	१२.	अपने
असृजत्	७.	सृष्टि की है	अकल्पनाय	१३.	मोक्ष का अर्जन
प्रभुः।	१.	भगमान् ने	च ॥	१४.	कर सकें

श्लोकार्थ—भगवान् ने प्राणियों के लिये बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों की सृष्टि की है जिससे वे धर्म, अर्थ, काम और अपने मोक्ष का अर्जन कर सकें ॥

तृतीयः श्लोकः

सैषा ह्युपनिषद् ब्राह्मी पूर्वेषां पूर्वजैर्धृता ।
श्रद्धया धारयेद् यस्तां क्षेमं गच्छेदकिञ्चनः ॥३॥

पदच्छेद — स एषा हि उपनिषद् ब्राह्मी पूर्वेषाम् पूर्वजैः धृता ।
श्रद्धया धारयेत् यः ताम् क्षेमम् गच्छेत् किञ्चन ॥

शब्दार्थ—

स एषा हि	२. यही वह	श्रद्धया	८. श्रद्धापूर्वक
उपनिषद्	३. उपनिषद् है जिसे	धारयेत्	९. धारण करता है (वह)
ब्राह्मी	१. ब्रह्मका प्रतिपादन करने वाला	यः ताम्	७. जो इसे
पूर्वेषाम्	४. पूर्वजों के भी	क्षेमम्	११. कल्याण को
पूर्वजैः	५. पूर्वजों (सनकादि ऋषियों ने)	गच्छेत्	१२. प्राप्त करता है
धृता ।	६. धारण किया है	किञ्चन ॥	१०. अनात्म भावों से मुक्त होकर

श्लोकार्थ —ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाला यही वह उपनिषद है जिसे पूर्वजों के भी पूर्वजों सनकादि ऋषियों ने धारण किया है। जो इसे श्रद्धापूर्वक धारण करता है वह अनात्मभावों से मुक्त होकर कल्याण को प्राप्त करता है ॥

चतुर्थः श्लोकः

अत्र ते वर्णयिष्यामि गाथां नारायणान्विताम् ।
नारदस्य च संवादमृषेर्नारायणस्य च ॥४॥

पदच्छेद— अत्र ते वर्णयिष्यामि गाथाम् नारायण अन्विताम् ।
नारदस्य च संवादम् ऋषेः नारायणस्य च ॥

शब्दार्थ—

अत्र ते	१. इस विषय में मैं तुमसे	नारदस्य च	६. वह गाथा नारद और
वर्णयिष्यामि	५. वर्णन करूँगा	संवादम्	९. संवाद है
गाथाम्	४. एक गाथा का	ऋषेः	८. ऋषि का
नारायण	२. नारायण से	नारायणस्य च ॥	७. नारायण
अन्विताम् ।	३. सम्बन्धित		

श्लोकार्थ—इस विषय में मैं तुमसे नारायण से सम्बन्धित एक गाथा का वर्णन करूँगा। वह गाथा नारद और नारायण ऋषि का संवाद है ॥

पञ्चमः श्लोकः

एकदा नारदो लोकान् पर्यटन् भगवत्प्रियः ।
सनातनमृषिं द्रष्टुं ययौ नारायणाश्रमम् ॥५॥

पदच्छेद— एकदा नारदः लोकान् पर्यटन् भगवत् प्रियः ।
सनातनम् ऋषिम् द्रष्टुम् ययौ नारायण आश्रमम् ॥

शब्दार्थ—

एकदा	१. एक बार	सनातनम्	७. सनातन
नारदः	४. नारद	ऋषिम्	८. ऋषि
लोकान्	५. लोकों में	द्रष्टुम्	१०. दर्शन करने के लिये
पर्यटन्	६. विचरण करते हुये	ययौ	१२. गये
भगवत्	२. भगवान् के	नारायण	९. नारायण का
प्रियः ।	३. प्रिय	आश्रमम् ॥	११. बदरिकाश्रम

श्लोकार्थ—एक बार भगवान् के प्रिय नारद लोकों में विचरण करते हुये सनातन ऋषि नारायण का दर्शन करने के लिये बदरिकाश्रम गये ॥

षष्ठः श्लोकः

यो वै भारतवर्षेऽस्मिन् क्षेमाय स्वस्तये नृणाम् ।
धर्मज्ञानशमोपेतमाकल्पादास्थितस्तपः ॥६॥

पदच्छेद— यः वै भारतवर्षे अस्मिन् क्षेमाय स्वस्तये नृणाम् ।
धर्मज्ञान शमः उपेतम् आकल्पात् आस्थितः तपः ॥

शब्दार्थ—

यः वै	१. जो	धर्म ज्ञान	८. धर्म-ज्ञान और
भारतवर्षे	३. भारतवर्ष में	शमः	९. शान्ति के
अस्मिन्	२. इस	उपेतम्	१०. साथ
क्षेमाय	५. कल्याण और	आकल्पात्	७. कल्प के प्रारम्भ से ही
स्वस्तये	६. अभ्युदय के लिये	आस्थितः	१२. निरत हैं
नृणाम् ।	४. मनुष्यों के	तपः ॥	११. तपस्या में

श्लोकार्थ—जो इस भारतवर्ष में मनुष्यों के कल्याण और अभ्युदय के लिये कल्प के प्रारम्भ में धर्म-ज्ञान और शान्ति के साथ तपस्या में निरत हैं ॥

सप्तमः श्लोकः

तत्रोपविष्टमृषिभिः कलापग्रामवासिभिः ।
परीतं प्रणतोऽपृच्छदिदमेव कुरूद्वह ॥७॥

पदच्छेद— तत्र उपविष्टम् ऋषिभिः कलापग्राम वासिभिः ।
परीतम् प्रणतः अपृच्छत् इदम् एव कुरुद्वह ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ पर	परीतम्	६.	घिरे हुये वे
उपविष्टम्	७.	बैठे हुये थे	प्रणतः	८.	नारद ने उन्हें प्रणाम करके
ऋषिभिः	५.	ऋषियों से	अपृच्छत्	१०.	प्रश्न पूछा था
कलापग्राम	३.	कलापग्राम	इदम् एवं	९.	यही
वासिभि ।	४.	वासी	कुरुद्वह ॥	१.	हे परीक्षित् !

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वहाँ पर कलापग्राम वासी ऋषियों से घिरे हुये वे बैठे थे । नारद ने उन्हें प्रणाम करके यही प्रश्न पूछा था ॥

अष्टमः श्लोकः

तस्मै ह्यवोचत् भगवानृषीणां शृण्वतामिदम् ।
यो ब्रह्मवादः पूर्वेषां जनलोकनिवासिनाम् ॥८॥

पदच्छेद— तस्मै हि अवोचत् भगवान् ऋषीणाम् शृण्वताम् इदम् ।
यः ब्रह्मवादः पूर्वेषाम् जनलोक निवासीनाम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मै हि	४.	उन (नारदजी से)	यः	७.	क्योंकि
अवोचत्	६.	कहा	ब्रह्मवादः	११.	ब्रह्मरूप के बारे में कहा था
भगवान्	१.	भगवान् नारायण ने	पूर्वेषाम्	८.	पूर्वकालीन
ऋषीणाम्	३.	ऋषियों के सामने	जनलोक	९.	जनलोक
शृण्वताम्	२.	सुनते हुये	निवासीनाम् ॥	१०.	निवासियों में
इदम् ।	५.	यह			

श्लोकार्थ—भगवान् नारायण ने सुनते हुये ऋषियों के सामने उन नारदजी से यह कहा जो कि पूर्वकालीन् जनलोक निवासियों में ब्रह्मरूप के बारे में कहा था ॥

नवमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—स्वायम्भुव ब्रह्मसत्रं जनलोकेऽभवत् पुरा।
तत्रस्थानां मानसानां मुनीनामूर्ध्वरेतसाम् ॥९॥

पदच्छेद— स्वायम्भुव ब्रह्म सत्रम् जनलोके अभवत् पुरा।
तत्र स्थानाम् मनसानाम् मुनीनाम् ऊर्ध्वं रेतसाम् ॥

शब्दार्थ—

स्वायम्भुव	१.	नारद जी	तत्र	४.	वहाँ पर
ब्रह्म	१०.	ब्रह्म के विषय में	स्थानाम्	५.	रहने वाले
सत्रम	११.	विचार	मानसानाम्	६.	ब्रह्म के मानस पुत्र
जनलोके	३.	जनलोक में	मुनीनाम्	९	ऋषियों का
अभवत्	१२.	हुआ था	ऊर्ध्वं	७.	नैष्टिक
पुरा।	२.	पूर्व काल में	रेतसाम् ॥	८.	ब्रह्मचारी (सनकादि

श्लोकार्थ—नारदजी ! पूर्वकाल में जनलोक में वहाँ पर रहने वाले ब्रह्मा के मानस पुत्र नैष्टिक ब्रह्मचारी सनकादि ऋषियों का ब्रह्म के विषय में विचार हुआ था ॥

दशमः श्लोकः

श्वेतद्वीपं गतवति त्वयि द्रष्टुं तदीश्वरम्।
ब्रह्मवादः सुसंवृत्तः श्रुतयो यत्र शेरते।
तत्र हायमभूत् प्रश्नस्त्वं मां यमनुपृच्छसि ॥१०॥

पदच्छेद— श्वेतद्वीपम् गतवति त्वयि द्रष्टुम् तत् ईश्वरम्।
ब्रह्मवादः सुसंवृत्तः श्रुतयः यत्र शेरते।
तत्र ह अयम् अभूत् प्रश्नः त्वम् माम् यम् अनुपृच्छसि ॥

शब्दार्थ—

श्वेतद्वीपम्	५.	श्वेतद्वीप को	श्रुतयः	१०.	श्रुतियाँ भी
गतवति	६.	चले जाने पर (वहाँ पर)	यत्र	९.	जिसके विषय में
त्वयि	४.	तुम्हारे	शेरते	११.	मौन धारण कर लेती है
द्रष्टुम्	३.	दर्शन करने के लिये	तत्रह अयम्	१२.	वहाँ यही
तत्	१.	उस समय	अभूत्	१४.	हुआ था
ईश्वरम्	२	ईश्वर (मेरी अनिरुद्ध मूर्ति) का	प्रश्नः	१३.	प्रश्न
ब्रह्मवादः	७.	ब्रह्म विचार	त्वम्मामयम्	१५.	जो तुम मुझसे
सुसंवृत्तः।	८.	बहुत सुन्दर हुआ था	अनुपृच्छसि ॥	१६.	पूछ रहे हो

श्लोकार्थ—उस समय ईश्वर मेरी अनिरुद्ध मूर्ति का दर्शन के लिये तुम्हारे श्वेत द्वीप को चले जाने पर वहाँ पर ब्रह्म विचार बहुत सुन्दर हुआ था जिसके विषय में श्रुतियाँ भी मौन धारण कर लेती हैं। वहाँ यही प्रश्न हुआ था जो तुम मुझसे पूछ रहे हो ॥

एकादशः श्लोकः

तुल्यश्रुततपः शीलास्तुल्यस्वीयारिमध्यमाः ।
अपि चक्रुः प्रवचनमेकं शुश्रूषवोऽपरे ॥११॥

पदच्छेद— तुल्यश्रुत तपः शीलाः तुल्य स्वीय अरि मध्यमाः ।
अपि चक्रुः प्रवचनम् एकम् शुश्रुषवः अपरे ॥

शब्दार्थ—

तुल्य	२.	समान हैं	मध्यमाः ।	७.	उदासीन के प्रति
श्रुत	१.	(चारोंभाई) शास्त्रीयज्ञानमें	अपि	८.	भी
तपः	३.	तपस्या	चक्रुः	१२.	लगाया (और)
शीलाः	४.	शील-स्वभाव	प्रवचनम्	११.	प्रवचन करने में
तुल्य	९.	एक से रहते हैं (उनमें से)	एकम्	१०.	एक को तो
स्वयि	५.	मित्र	शुश्रूषवः	१४.	श्रोता बन गये
अरि	६.	शत्रु और	अपरे ॥	१३.	दूसरे शेष भाई

श्लोकार्थ—(सनक, सनन्दन आदि-चारों भाई) शास्त्रीय ज्ञान में समान हैं। तपस्या, शील-स्वभाव में तथा मित्र, शत्रु, उदासीन के प्रति भी एक से रहते हैं। उनमें से एक को तो प्रवचन करने में लगाया और दूसरे शेष भाई श्रोता बन गये ॥

द्वादशः श्लोकः

सनन्दन उवाच—स्वसृष्टमिदमापीय शयानं सह शक्तिभिः ।
तदन्ते बोधयाञ्चक्रुस्तल्लिङ्गैः श्रुतयः परम् ॥१२॥

पदच्छेद— स्वसृष्टम् इदम् अपीय शयानम् सह शक्तिभिः ।
तत् अन्ते बोधयाञ्चक्रुः तत् लिङ्गैः श्रुतयः परम् ॥

शब्दार्थ—

स्वसृष्टम्	१.	अपने बनाये हुये	तत् अन्ते	८.	प्रलय के अन्त में
इदम्	२.	इस जगत् को	बोधयाञ्चक्रुः	१२.	जगाने लगीं
अपीय	३.	अपने में लीन करके	तत्	१०.	उनके
शयानम्	६.	सोये हुये	लिङ्गैः	११.	प्रतिपादक वचनों से
सह	५.	साथ	श्रुतयः	९.	श्रुतियाँ
शक्तिभिः ।	४.	अपनी शक्तियों के	परम् ॥	७.	परमात्मा को

श्लोकार्थ—अपने बनाये हुये इस जगत् को अपने में लीन करके अपनी शक्तियों के साथ सोये हुये परमात्मा को प्रलय काल के अन्त में उनके प्रतिपादक वचनों से जगाने लगीं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

यथा शयानं सम्राजं वन्दिनस्तत्पराक्रमैः ।
प्रत्यूषेऽभ्येत्य सुश्लोकैर्बोधयन्त्यनुजीविनः ॥१३॥

पदच्छेद— यथाशयानम् सम्राज वन्दिनः तत् पराक्रमैः ।
प्रत्यूषे अभ्येत्य सुश्लोकैः बोधयन्ति अनुजीवनः ॥

शब्दार्थ—यथा	१.	जैसे	प्रत्यूषे	६.	प्रातःकाल
शयानम्	२.	सोये हुये	अभ्येत्य	७.	पास आकर
सम्राज	३.	सम्राट् को	सुश्लोकैः	१०.	सुयश का गान करके उन्हें
नन्दिनः	५.	बन्दीजन	बोधयन्ति	११.	जगाते हैं (वैसे ही श्रुतियाँ भगवान् को जगाने लगीं)
तत्	८.	उसके	अनुजीवनः ॥	४.	अनुजीवी
पराक्रमैः ।	९.	पराक्रम (तथा)			

श्लोकार्थ—जैसे सोये हुये सम्राट् को अनुजीवी वन्दीजन प्रातःकाल पास आकर उसके पराक्रम तथा सुयश का गान करके उन्हें जगाते हैं वैसे ही श्रुतियाँ भगवान् को जगाने लगीं ॥

चतुर्दशः श्लोकः

श्रुतय ऊचुः— जय जय जह्यजामजित् दोषगृभीतगुणां
त्वमसि यदात्मना समवरुद्धसमस्तभगः ।
अगजगदोकसामखिलशक्त्यवबोधक ते
क्वचिदजयाऽऽत्मना च चरतोऽनुचरेन्निगमः ॥१४॥

पदच्छेद-जयजय जहि अजाम् अजित् दोषगृभीत गुणाम् त्वम् असि यत् आत्मनासम अवरुद्ध समस्तभगः ।
अग जगत् ओकसाम् अखिलशक्ति अववोधक ते क्वचित् अजया आत्मना च चरतः अनुचरत् निगमः ॥

शब्दार्थ—जयजय	२.	जय हो-जय हो	अगजगत्	११.	स्थावर एवं जङ्गम
जहि अजाम्	४.	माया को नष्ट कर दीजिये	ओकसाम्	१२.	शरीर वाले जीवों की
अजित	१.	हे अजेय !	अखिलशक्ति	१३.	सम्पूर्ण शक्तियों को
दोषगृभीतगुणम्	३.	दोष के लिये गुणों का ग्रहण करने वाली	अववोधक	१४.	जगाने वाले
त्वम्	६.	आप	ते	१९.	आपका
असि	१०.	हैं	क्वचित् अजया	१५.	कभी माया के द्वारा
यत्	५.	क्योंकि	आत्मना च	१६.	स्वयम् ही
आत्मना	७.	अपने में	चरतः	१७.	विचरण करते हुये
सम अवरुद्ध	९.	रोककर स्थित	अनुचरेत्	२०.	अनुगमन करता है
समस्तभगः ।	८.	सम्पूर्ण ऐश्वर्य को	निगमः ॥	१८.	वेद

श्लोकार्थ—हे अजेय ! जयहो-जयहो दोष के लिये गुणों को ग्रहण करने वाली माया को नष्ट कर दीजिये । क्योंकि आप अपने में सम्पूर्ण ऐश्वर्य को रोककर स्थित हैं। स्थावर और जङ्गम शरीर वाले जीवों की सम्पूर्ण शक्तियों को जगाने वाले कभी माया के द्वारा स्वयम् ही विचरण करते हुये वेद आपका अनुगमन करता है ॥

पञ्चदशः श्लोकः

बृहदुपलब्धमेतदवयन्त्यवशेषतया यत उदयास्तमयौ विकृतेर्मृदि वाविकृतात्।
अत ऋषयो दधुस्त्वयि मनोवचनाचरितं कथमयथा भवन्ति भुवि दत्तपदानि नृणाम्॥

पदच्छेद—बृहत् उपलब्धम् एतत् अवयन्ति अवशेषतयायत उदयाअस्तमयौ विकृतेः मृदि वा अविकृतात्।
अतः ऋषयः दधुःत्वयि मनोवचन आचरितम् कथम्अयथा भवन्ति भुविदत्त पदानि नृणाम्॥

शब्दार्थ—बृहत्	७.	ब्रह्म ही है	अतः ऋषयः	८.	ऐसा ऋषि लोग
उपलब्धम् एतत्	६.	दिखाई देने वाला सब कुछ	दधुः त्वयि	१२.	आप में ही अनुभव करते हैं
अवयन्ति	९.	जानते हैं	मनोवचन	१०.	मन-वाणी से जो सोचा (और)
अवशेषतयायतः	५.	क्योंकि शेष बचा हुआ (तथा)	आचरितम्	११.	कहा गया है उसे
उदयअस्तमयौः	२.	उत्पत्ति और नाश	कथमअयथा	१५.	दूसरी जगह
विकृतेः	१.	जैसे घटादि विकार की	भवन्ति	१६.	नहीं होगा
मृदि वा	३.	मिट्टी में होते हैं (वैसे ही)	भुविदत्तपदानि	१४.	पैर पृथ्वी पर ही होगा
अविकृतात्।	४.	विकाररहित आपमें उदय, नाश होते हैं	नृणाम्॥	१३.	मनुष्यों का कहीं भी रखा गया

श्लोकार्थ—जैसे घटादि विकार की उत्पत्ति और नाश मिट्टी में होते हैं वैसे ही विकाररहित आपसे उदय और नाश होते हैं क्योंकि शेष बचा हुआ तथा दिखाई देने वाला सब कुछ ब्रह्म ही है। ऐसा ही ऋषि लोग जानते हैं। मन-वाणी से जो सोचा और कहा गया है उसे आप में ही अनुभव करते हैं। मनुष्यों का कहीं भी रखा गया पैर पृथ्वी पर ही होगा। दूसरी जगह नहीं होगा॥

षोडशः श्लोकः

इति तव सूरयस्त्र्यधिपतेऽखिललोकमल-
क्षपणकथामृताब्धिमवगाह्य तपांसि जहुः।
किमुत पुनः स्वधामविधुताशयकालगुणाः
परम भजन्ति ये पदमजस्रसुखानुभवम्॥१६॥

पदच्छेद-इति तव सूरयः त्रिअधिपते अखिललोक मलक्षपण कथा अमृत अब्धिम् अवगाह्य तपांसि जहुः।
किमुतपुनः स्वधाम विधुत आशय कालगुणाः परम भजन्ति ये पदम् अजस्र सुख अनुभवम्॥

शब्दार्थ—इति	१.	इसलिये	किमुत पुनः	१७.	उनके विषय में क्या कहना है?
तव	५.	आपकी	स्वधाम	११.	साक्षात्कार से
सूरयःत्रिअधिपते	२	हे तीनों लोक के स्वामी! विद्वान् लोग	विधुत	१३.	त्याग करके
अखिललोक	३.	सभी जीवों के	आशयकालगुणाः	१२.	धर्म, काल, गुण आदि का
मलक्षपण	४	मायामल को नष्ट करने,वाली	परम्	९.	हे पुरुषोत्तम!
कथाअमृतअब्धिम्	६.	कथारूपी अमृत सागर में	भजन्ति	१६.	मग्न रहते हैं
अवगाह्य	७.	गोते लगा-लगाकर	ये पदम्	१०.	जो महापुरुष के
तपांसिजहुः।	८.	तापों को धो बहा देते हैं	अजस्त्र	१४.	आपके अखण्ड
			सुखअनुभवम्॥	१५.	आनन्द की अनुभूति में

श्लोकार्थ—इसलिये हे तीनों लोक के स्वामी! विद्वान् लोग सभी जीवों के मायामल को नष्ट करने वाली आपकी कथारूपी अमृत सागर में गोते लगा लगाकर तापों को धो बहा देते हैं! हे पुरुषोत्तम! जो महापुरुष के साक्षात्कार से धर्म, काल, गुण आदि का त्याग करके आपके अखण्ड आनन्द की अनुभूति में मग्न रहते हैं उनके विषय में क्या कहना है?

सप्तदशः श्लोकः

दृतय इव श्वसन्त्यसुभृतो यदि तेऽनुविधा महदहमादयोऽण्डमसृजन् यदनुग्रहतः।
पुरुषविधोऽन्वयोऽत्र चरमोऽन्नमयादिषु यः सदसतः परं त्वमथ यदेष्ववशेषमृतम् ॥१७

पदच्छेद-दृतयः इव श्वसन्ति असुभृतः यदि ते अनुविधाः महत् अहम् आदयः अण्डम् असृजन् यत् अनुग्रहतः पुरुषविधः अन्वयः अत्र चरमः अन्नमय आदिषु यः सदसतः परम् त्वम् अथ यत् एषु अवशेषम् ऋतम् ॥

शब्दार्थ-दृतयःइव	४.	धौंकनी के समान व्यर्थ हैं	पुरुषविधः	१०.	पुरुष रूप से
श्वसन्ति	३.	साँस लेते हैं (अन्यथा)	अन्वयः अत्र	११.	रहने वाले और इनमें
असुभृतः यदि	१.	प्राणधारी यदि	चरमः	१२.	अन्तिम रूप में भी आप ही हैं
ते अनुविधाः	२.	आपके भक्त हैं तो वे सफल	अन्नमयआदिषु	९.	अन्नमय आदि कोशों में
महत् अहम्	५.	महत्तत्व-अहंकार	यःसद्सतः	१३.	जो सत् और असत् से
आदयः	६.	आदि ने	परम् त्वम्	१४.	परे हैं वह आप हैं
अण्डम् असृजन्	८.	ब्रह्माण्ड की रचना की	अथयत् एषु	१५.	फिर जो इनमें
यत् अनुग्रहतः।	७.	आपके अनुग्रह से	अवशेषमृतम्॥	१६.	शेष है और सत्य हैं वह आप हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभु ! प्राणधारि यदि आपके भक्त हैं तो वे सफल साँस लेते हैं अन्यथा धौंकनी के समान व्यर्थ हैं। महत्तत्व-अहंकार आदि ने आपके अनुग्रह से ब्रह्माण्ड की रचना की। अन्नमय आदि कोशों में पुरुष रूप से रहने वाले और इनमें अन्तिम रूप में भी आप ही हैं। जो सत् और असत् से परे हैं फिर जो इनमें शेष है, और सत्य हैं, वह आप हैं ॥

अष्टादशः श्लोकः

उदरमुपासते य ऋषिवर्त्मसु कूर्पदृशः परिसरपद्धतिं हृदयमारुणयो दहरम्।
तत उदगादनन्त तव धाम शिरः परमं पुनरिह यत् समेत्य न पतन्ति कृतान्तमुखे ॥१८

पदच्छेद—उदरम् उपासते ये ऋषि वर्त्मसु कूर्पदृशः परिसर पद्धतिम् हृदयम् अरुणयो दहरम्। ततः उद्गात् अनन्त तवधाम शिरः परमम् पुनः इह यत् समेत्य न पतन्ति कृतान्त मुखे ॥

शब्दार्थ—उदरम्	३.	अग्निरूप से आपकी	तत्	१०.	वहीं हृदय से
उपासते	४.	उपासना करते हैं	उद्गात्	१२.	गया हुआ है
येऋषिवर्त्मसु	१.	ऋषियों के मार्गों में जो	अनन्त तवधाम्	९	हे अनन्त ! आपका धाम
कूर्पदृशः	२.	स्थूल दृष्टि वाले हैं वे	शिरः परमम्	११.	ब्रह्मरन्ध्र तक
परिसर	६.	समस्त नाड़ियों के	पुनः इह	१४.	फिर यहाँ
पद्धतिम् हृदयम्	७.	निकलने के स्थान हृदय में	यत् समेत्य	१३.	जिसे पाकर मनुष्य
आरुणयः	५.	अरुणवंश के ऋषि आपके	न पतन्ति	१६.	नहीं गिरता है
दहरम्।	८.	सूक्ष्मरूप दहर ब्रह्म की उपासना करते हैं	कृतान्तमुखे॥	१५.	मृत्यु के मुख में

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! ऋषियों के मार्गों में जो स्थूल दृष्टि वाले हैं वे अग्निरूप से आपकी उपासना करते हैं अरुणवंश के ऋषि आपके समस्त नाड़ियों के निकलने के स्थान हृदय में सूक्ष्मरूप दहर ब्रह्म की उपासना करते है। हे अनन्त ! आपका धाम वही हृदय से ब्रह्मरन्ध्र तक गया हुआ है जिसे पाकर मनुष्य फिर यहाँ मृत्यु के मुख में नहीं गिरता है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

स्वकृतविचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया
तरतमतश्चकास्यनलवत् स्वाकृतानुकृतिः ।
अथ वितथास्वमूष्ववितथं तव धाम समं
विरजधियोऽन्वयन्त्यभिवियंपण्यव एकरसम् ॥१९॥

पदच्छेद—

स्वकृत विचित्रयोनिषु विशन् इव हेतु तया
तरतमतः चकास्सि अनलवत् स्वकृत अनुकृतिः ।
अथतवितथासु अमूषु अवितथम् तवधाम समम्
विरजधियः अन्वयन्ति अभिवियण्यव एकरसम् ॥

शब्दार्थ—

स्वकृत	१.	अपनी ही बनायी हुई	अव वितथासु	९.	अत एव मिथ्या भूत
विचित्र योनिषु	२.	ऊँची-नीची योनियों में	अमूषुअवितथम्	१०	इन योनियों में विकार से रहित
विशन् इन	४.	प्रवेश किये हुये हैं जैसे	तवधाम	१३.	आपके स्वरूप को
हेतु तया	३.	कारण रूप से आप ही	समम्	११.	समभाव से स्थित
तरतमतःचकास्सि	८.	छोटे-बड़े रूप में दिखाई दे रहे हैं	विरजधियः	१५.	निर्मल बुद्धि वाले लोग
अनलवत्	७.	अग्नि के समान	अन्ववन्ति	१६.	जानते हैं
स्वकृत	५.	अपनी बनाई योनियों का	अभिवियण्यवः	१४.	कर्म फल से रहित
अनुकृतिः ।	६.	अनुकरण करके	एकरसम् ॥	१२.	एक रस-एक रूप

श्लोकार्थ— अपनी ही बनायी हुई ऊँची-नीची योनियों में कारण रूप से आप ही प्रवेश किये हुये हैं। जैसे अपनी बनायी योनियों का अनुकरण करके अग्नि के समान छोटे-बड़े रूपों में दिखाई दे रहे हैं। अत एव मिथ्या भूत इन योनियों में विकार से रहित समभाव से स्थित एक रस-एक रूप आपके स्वरूप को कर्मफल से रहित निर्मल बुद्धि वाले लोग जानते हैं ॥

विंशः श्लोकः

स्वकृतपुरेष्वमीष्वबहिरन्तरसंवरणं
तव पुरुषं वदन्त्यखिलशक्तिधृतोंऽशकृतम् ।
इति नृगतिं विविच्य कवयो निगमावपनं
भवत उपासतेऽङ्घ्रिमभवं भुवि विश्वसिताः ॥२०॥

पदच्छेदः—

स्वकृतपुरेषुअमीषु अवहिः अन्तर संवरणम्
तवपुरुषम् वदन्ति अखिल शक्तिधृतः अशकृतम् ।
इति नृगतिम् विविच्य कवयः निगम आवपनम्
भवतः उपासते अङ्घ्रिम् अभवम् भुविविश्वसिताः ।।

शब्दार्थ—

स्वकृतपुरेषुअमीषु	३.	इन अपने कर्म से देवतादि के शरीर में	इति नृगतिम्	९.	इस प्रकार जीवके तत्वका
अबहिः अन्तर	१.	कार्य और कारण से	विविच्यकवयः	१०.	विवेचन करके विद्वान लोग
संवरणम्	२.	रहित होने पर भी	निगमआवपनम्	१४.	वेदोक्त कर्मों के क्षेत्र
तव	६.	आपके	भवतः	१५.	आपके
पुरुषम्	४.	जीवों को	उपासतेअङ्घ्रिम्	१६.	चरणों की उपासना करते हैं
वदन्ति	८.	कहते हैं	अभवम्	१३.	जन्म-मरणादि दुःखों के विनाशक
अखिलशक्तिधृतः	५.	सभी शक्तियों को धारण करने वाले	भुवि	११.	भूलोक में
अशकृतम्	७.	अंश स्वरूप	विश्वसिताः ।।	१२.	विश्वास युक्त होकर

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! कार्य और कारण से रहित होने पर भी इन अपने कर्म से देवतादि के शरीर में जीवों को सभी शक्तियों को धारण करने वाले आपके अंश स्वरूप कहते हैं। इस प्रकार जीव के तत्त्व का विवेचन करके विद्वान लोग भूलोक में विश्वास युक्त होकर जन्म-मरणादि दुःखों के विनाशक वेदोक्त कार्मों के क्षेत्र आपके चरणों की उपासना करते हैं ।।

एकविंशः श्लोकः

दुरवगमात्मतत्त्वनिगमाय तवात्ततनो
श्चरितमहामृताब्धिपरिवर्तपरिश्रमणाः ।
न परिलषन्ति केचिदपवर्गमपीश्वर ते
चरणसरोजहंसकुलसङ्गविसृष्टगृहाः ॥२१॥

पदच्छेद—

दुरवगम आत्मतत्त्व निगमाय तव आत्ततनोः
चरित महामृत अब्धि परिवर्त परिश्रमणाः ।
न परिलषन्ति केचित् अपवर्गम् अपि ईश्वर ते
चरण सरोज हंस कुल सङ्ग विसृष्ट गृहाः ॥

शब्दार्थ—

दुरवगम	२.	कठिनाई से जाने योग्य	न	१५.	नहीं
आत्मतत्त्व	३.	आत्मतत्त्व का	परिलषन्ति	१६.	चाहते हैं
निगमाय	४.	ज्ञान कराने के लिये	केचित्	१३.	कोई भक्तजन
तव आत्ततनोः	५.	शरीर धारण करने वाले आपके	अपवर्गम् अपि	१४.	मोक्ष भी
चरित महामृत	६.	चरित्ररूपी अमृत के	ईश्वर	१.	हे ईश्वर !
अब्धि	७.	महासागर में	ते चरण सरोज	१०.	आपके चरणों में
परिवर्त	८.	गोते लगाने से	हंस कुलसङ्ग	११.	हंस के समान रहने वाले सङ्ग से
परिश्रमणाः ।	९	श्रान्त तथा	विसृष्ट गृहाः ॥	१२.	गृहस्थी का त्याग किये हुये

श्लोकार्थ—हे ईश्वर ! कठिनाई से जानने योग्य आत्मतत्त्व का ज्ञान कराने के लिये शरीर धारण करने वाले आपके चरित्ररूपी अमृत के महासागर में गोते लगाने से श्रान्त तथा आपके चरणों में हंस के समान रहने वाले सङ्ग से गृहस्थी का त्याग किये हुये कोई भक्त जनमोक्ष भी नहीं चाहते हैं ॥

द्वाविंशः श्लोकः

त्वदनुपथं कुलायमिदमात्मसुहृत्प्रियवच्चरति
तथोन्मुखे त्वयि हिते प्रिय आत्मनि च।
न बत रमन्त्यहो असदुपासनयाऽऽत्महनो
यदनुशया भ्रमन्त्युरुभये कुशरीरभृतः ॥२२॥

पदच्छेद—

त्वत् अनुपथम् कुलायम् इदम् आत्मसुहृत् प्रियवत् चरति
तथा उन्मुखें त्वयि हितेप्रिय आत्मनि च।
न बत रमन्ति अहो असत् उपासनया आत्महनः
यत् अनुशया भ्रमन्ति उरुभये कुशरीरभृतः ॥

शब्दार्थ—

त्वत् अनुपथम्	१.	आपके मार्ग का अनुगामी	न वतरमन्ति	१०.	कष्ट की बात है कि जो आपमें नहीं लगते हैं
कुलायम् इदम्	२.	यह नीडरूप शरीर	अहो	९.	आश्चर्य और
आत्मसुहृत्	३.	आत्मा, हितैषी और	असत्उपासयना	११.	ऐसे शरीरादि की उपासना से
प्रियवत्	४.	प्रिय व्यक्ति के समान	आत्महनः	१२.	आत्मा का हनन करने हैं (और)
चरति तथा	५.	आचरण करता है तथा	यत् अनुशया	१३.	असत् वस्तु में वासना वाले लोग
उन्मुखे त्वयि	८.	आपके सामने रहने पर भी	भ्रमन्ति	१६.	भटकते रहते हैं
हिते प्रिय	६.	हितकारक प्रिय	उरुभये	१५.	संसार में
आत्मनि च।	७.	और आत्मरूप	कुशरीर भृतः॥	१४.	कुत्सित शरीर धारण करके

श्लोकार्थ—हे प्रभो! आपके मार्ग का अनुगामी यह नीडरूप शरीर, आत्मा, हितैषी, और प्रिय व्यक्ति के समान आचरण करता है तथा हितकारक प्रिय और आत्मरूप आपके सामने रहने पर भी आश्चर्य और कष्ट की बात है कि जो आप में नहीं लगते हैं ऐसे शरीरादि की उपासना से आत्मा का हनन करने वाले हैं। और असत् वस्तु में वासना वाले लोग कुत्सित शरीर धारण करके संसार में भटकते रहते हैं ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजो हृदि य-
न्मुनय उपासते तदरयोऽपि ययुः स्मरणात् ।
स्त्रिय उरगेन्द्रभोगभुजदण्डविषक्तधियो
वयमपि ते समाः समदृशोऽङ्घ्रिसरोजसुधाः ॥२३॥

पदच्छेद—

निभृत मरुन्मनः दृढयोगयुजः हृदियत् मुनय
उपासते तत् अरयः अपि ययुः स्मरणात् ।
स्त्रियः उरगेन्द्र भोगभुजदण्ड विषक्तधियः
वयम् अपि ते समाः समदृशः अङ्घ्रिसरोज सुधाः ॥

शब्दार्थ—

निभृत	१.	संयमित	उरगेन्द्रभोग	८.	शेषनाग के शरीर के समान
मरुन्मनः	२.	प्राण, मन और इन्द्रिय वाले	भुजदण्ड	९.	आपके बाहुदण्ड में
दृढयोगयुजः	३.	दृढयोगाभ्यासी	विषक्तधियः	१०.	आसक्त बुद्धि वाली
हृदियत् मुनयः	४.	मुनि जिस तत्त्व की हृदय में	वयम् अपिते	१३.	हम श्रुतियाँ भी आपके
उपासते	५.	उपासना करते हैं	समाः	१६.	उसी तत्त्व को प्राप्त करती हैं
तत् अरयः अपि	६.	उस तत्त्व को शत्रु भी आपके	समदृशः	१२.	समदर्शी
ययुः स्मरणात् ।	७.	स्मरण से प्राप्तकर लेते हैं	अङ्घ्रिसरोज	१४.	चरण कमल को
स्त्रियः	११.	स्त्रियाँ और	सुधाः ॥	१५.	धारण करने वाली

श्लोकार्थ—संयमित प्राण, मन और इन्द्रिय वाले दृढयोगाभ्यासी मुनि जिस तत्त्व की हृदय में उपासना करते हैं। उस तत्त्व को शत्रु भी आपके स्मरण से प्राप्त कर लेते हैं। शेषनाग के शरीर के समान आपके बाहुदण्ड में आसक्त बुद्धि वाली स्त्रियाँ और समदर्शी हम श्रुतियाँ भी आपके चरण कमल को धारण करने वाली उसी तत्त्व को प्राप्त करती हैं ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

क इह नु वेद बतावरजन्मलयोऽग्रसरं
यत उदगादृषिर्यमनु देवगणा उभये।
तर्हि न सत् चासदुभयं न च कालजवः
किमपि न तत्र शास्त्रमवकृष्य शयीत यदा ॥२४॥

पदच्छेद—

कः इह नुवेद वत अवर जन्मलयः अग्रसरम्
यत् उद्गात् ऋषियम् अनुदेव गणाः उभये।
तर्हि न सत् न च असत् उभयम् न च कालजवः
किम् अपि न तत्र शास्त्रम् अवकृष्य शयीत यदा ॥

शब्दार्थ—

कः	५.	कौन पुरुष	तर्हि न सत्	११.	उस समय न आकाशादि
इह	२.	इस संसार में	नचअसत् उभयम्	१३.	न महतत्त्वादि न सत् असत् से बना शरीर
नुवेद	६.	निश्चत रूप से जान सकता है	न च कालजवः	१४.	न क्षण, न मुहूर्तादि काल के अङ्ग
वत	१.	खेद है कि	किम् अपि न	१५.	कुछ भी नहीं रहता तथा
अवर जन्मलयः	४.	नवीन उत्पत्ति और विनाश वाला	तत्र	१२.	वहाँ
अनुग्रसरम्	३.	पहले से सिद्ध आपको	शास्त्रम्	१६.	शास्त्र भी नहीं रहता है
यत्उद्गात्ऋषिः	७.	जिससे वेद-ब्रह्मा हुये	अवकृष्यशयीत	१०.	अपने में समेटकर सो जाते हैं
यम् अनुदेवगणाःउभये।	८.	जिनके पश्चात् दोनों, देवगण हुये	यदा ॥	९.	जब आप प्रलय में सबको

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! खेद है कि इस संसार में पहले से सिद्ध आपको नवीन उत्पत्ति और विनाश वाला कौन पुरुष निश्चित रूप से जान सकता है ? जिससे वेद और ब्रह्मा उत्पन्न हुये, जिनके पश्चात् दोनों देव गण हुये ; जब आप प्रलय में सबको अपने में समेट कर सो जाते हैं उस समय न आकाशादि वहाँ न महतत्त्वादि, न सत्, असत् से बना शरीर न क्षण, न मुहूर्तादि काल के अङ्ग कुछ भी नहीं रहता तथा वहाँ शास्त्र भी नहीं रहता है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

जनिमसतः सतो मृतिमुतात्मनि ये च भिदां
विपणमृतं स्मरन्त्युपदिशन्ति त आरुपितैः ।
त्रिगुणमयः पुमानिति भिदा यदबोधकृता
त्वयि न ततः परत्र सभवेदवबोधरसे ॥२५॥

पदच्छेद—

जनिम् असतः सतः मृतिम् उतआत्मनि ये च भिदाम्
विपणम् ऋतम् स्मरन्ति उपदिशन्ति ते आरुपितैः ।
त्रिगुणमयः पुमान् इति भिदा यत् अबोधकृता
त्वयि न ततः परत्र सः भवेत् अवबोधरसे ॥

शब्दार्थ—

जनिम् असतः	२.	असत् जगत की उत्पत्ति बताते हैं	त्रिगुणमयःपुमान् ९.		पुरुष त्रिगुणमय है
सतः मृतिम्	३.	कुछ सत् रूप दुःख के विनाश को मुक्ति कहते हैं	इति भिदायत्	१०.	इस प्रकार का भेदभाव केवल
उत आत्मनि	४.	कुछ आत्मा में	अबोधकृता	१२.	अज्ञान से होता है
ये च	१.	कुछ लोग	त्वपि न	११.	आपके विषय में
भिदाम् विपणम्	५.	भेद मानते हैं कुछ कर्म फल को	ततः परत्र	१३.	इसलिये अज्ञान से परे
ऋतम् स्मरन्ति	६.	सत्य मानते हैं (किन्तु)	सः	१५.	वह भेदभाव नहीं
उपदिशन्ति	८.	ऐसा आदेश करते हैं	भवेत्	१६.	हो सकता है
ते आरुपितैः ।	७.	वे लोग आरोप करके ही	अवबोध रसे ॥	१४.	ज्ञान स्वरूप आप में

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! कुछ लोग असत् जगत् की उत्पत्ति बताते हैं । कुछ सत् रूप दुःख के विनाश को मुक्ति कहते हैं । कुछ आत्मा में भेद मानते हैं । कुछ कर्म फल को सत्य मानते हैं । किन्तु वे लोग आरोप करके ही ऐसा आदेश करते हैं । पुरुष त्रिगुणमय है इस प्रकार का भेदभाव केवल आपके विषय में अज्ञान से होता है । इसलिये अज्ञान से परे ज्ञान स्वरूप आप में वह भेदभाव नहीं हो सकता है ॥

षड्विंशः श्लोकः

सदिव मनस्त्रिवृत्त्वयि विभात्यसदामनुजात्
सदभिमृशन्त्यशेषमिदमात्मतयाऽऽत्मविदः ।
न हि विकृतिं त्यजन्ति कनकस्य तदात्मतया
स्वकृतमनुप्रविष्टमिदमात्मतयावसितम् ॥२६॥

पदच्छेद—

सदिव मनः त्रिवृत्त्वयि विभाति असत् आमनुजात्
सत् अभिमृशन्ति अशेषम् इदम् आत्मतया आत्मविदः ।
नहि विकृतिम् त्यजन्ति कनकस्य तत् आत्मतया
स्वकृतम् अनुप्रविष्टम् इदम् आत्मतया अवसितम् ॥

शब्दार्थ—

सदिव	५.	सत्य के समान	न हि	१३.	नहीं
मनः	१.	मन में कल्पित	विकृतिम्	११.	बने हुये (कुण्डलादि को
त्रिवृत्त्वयि	३.	त्रिगुणात्मक जगत् आप में वह	त्यजन्ति	१४.	त्यागते हैं (किन्तु)
विभाति	६.	प्रतीत होता है	कनकस्य	१०.	सोना चाहने वाला सोने के
असत् आमनुजात	४.	जीव तक सबके असत् होने पर भी	तत् आत्मतया	१२.	सोना ही होने से
सत् अभिमृशन्ति	९.	इसे सत्य समझते हैं	स्वकृतम्	१५.	अपने किये हुये और
अशेषम् इदम्	२.	यह सम्पूर्ण	अनुप्रविष्टम्	१६.	उसमें प्रविष्ट
आत्मतया	८.	आत्म स्वरूप ही	इदम् आत्मतया	१७.	इस जीव जगत् को
आत्मविदः ।	७.	आत्मज्ञानी तो	अवसितम् ॥	१८.	आत्मरूप में ही मानते हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! मन में कल्पित यह सम्पूर्ण त्रिगुणात्मक जगत आप में वह जीव तक सबके असत् होने पर भी सत्य के समान प्रतीत होता है। आत्म ज्ञानी तो आत्म स्वरूप ही इसे सत्य समझते हैं। सोना चाहने वाला सोने के बने कुण्डलादि को सोना ही होने से नहीं त्यागते हैं। अपने किये हुये और उसमें प्रविष्ट जीव जगत को आत्मरूप ही मानते हैं ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तव परि ये चरन्त्यखिलसत्त्वनिकेततया
त उत पदाऽऽक्रमन्त्यविगणय्य शिरो निर्ऋतेः ।
परिवयसे पशूनिव गिरा विबुधानपि तां-
स्त्वयि कृतसौहृदाः खलु पुनन्ति न ये विमुखाः ॥२७॥

पदच्छेद—

तव परि ये चरन्ति अखिल सत्त्व निकेततया
त उतपदा आक्रमन्ति अविगणय्य शिरः निर्ऋतेः ।
परिवय से पशून् इव गिरा विबुधान् अपि तान्
त्वयिकृतसौहृदाः खलुपुनन्ति न ये विमुखाः ॥

शब्दार्थ—

तव	३.	आपका	परिवयसे	१४.	बाँध लेते हैं (फिर)
परिये	१	जो लोग	पशून् इव	१३.	पशुओं के समान
चरन्ति	४.	भोजन करते हैं	गिरा	१२.	वाणी से
अखिलसत्त्वनिकेततया	२.	समस्त प्राणियों के रूप में	विबुधान् अपि	११.	विद्वान् होने पर भी आप
ते उत	५.	वे	तान्	१०.	उन्हें
पदा आक्रमन्ति	८.	पैर से आक्रमण करते हैं	त्वयिकृतसौहृदाः	१५.	जो आपके लिये प्रेम भाव रखते हैं
अविगणय्य	६.	तिरस्कार करके	खलु पुनन्ति	१६.	वे निश्चित हो सबको पवित्र कर देते हैं
शिरः निर्ऋतेः ।	७.	मृत्यु के सिर पर	ये विमुखाः ॥	९.	जो लोग आपसे विमुख हैं

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! जो लोग समस्त प्राणियों के रूप में आपका भजन करते हैं वे तिरस्कार करके मृत्यु के सिर पर पैर से आक्रमण करते हैं । जो लोग आपसे विमुख हैं उन्हें विद्वान होने पर भी आप वाणी से पशुओं के समान बाँध लेते हैं । फिर जो निश्चित ही आपके लिये प्रेमभाव रखते हैं वे निश्चित हो सबको पवित्र कर देते हैं ॥

अष्टविंशः श्लोकः

त्वमकरणः स्वराङ्खिलकारकशक्तिधर-
स्तव बलिमुद्वहन्ति, समदन्त्यजयानिमिषाः ।
वर्षभुजोऽखिलक्षितिपतेरिव विश्वसृजो
विदधति यत्र ये त्वधिकृता भवतश्चकिताः ॥२८॥

पदच्छेद—

त्वम् अकरणः स्वराङ् अखिलकारक शक्तिधरः
तवबलिम् उद्वहन्ति समदन्ति अजया अनिमिषाः ।
वर्षभुजः अखिलक्षितिपतेः इव विश्वसृजः
विदधाति यत्रये तु अधिकृताः भवतः चकिताः ॥

शब्दार्थ—

त्वम् अकरणः	१.	आप इन्द्रियों से रहित होने पर भी	वर्षभुजिः	११.	जनपद के कर दाता राजा
स्वराङ्	४.	स्वतन्त्र हैं	अखिलक्षितिपते	१२.	सम्पूर्ण मण्डल के राजा को कर देते हैं
अखिल कारक	२.	समस्त इन्द्रियों की	इव	१०.	जैसे प्रजाओं से कर लेते हैं (वैसेही)
शक्तिधरः	३	शक्ति से सम्पन्न	विश्वसृजः	५.	ब्रह्मा आदि देवता
तव बलिम्	६.	आपको नैवेद्य	विदधाति	१६.	कार्य करते हैं
उद्वहन्ति	७.	चढ़ाते हैं (और)	यत्र ये तु	१३.	जिन्हें आपने जहाँ
समदन्ति	८.	दूसरे का दिया हुआ नैवेद्य	अधिकृताः	१४.	नियुक्त किया हैं
अजयाअनिमिषाः।	९.	अविद्या से युक्त देवता स्वयं	भवतःचकिताः ॥	१५.	वहीं वे भयभीत होकर

श्लोकार्थ—आप इन्द्रियों से रहित होने पर भी समस्त इन्द्रियों की शक्ति से सम्पन्न स्वतन्त्र हैं। ब्रह्मादि देवता आपको नैवेद्य चढ़ाते हैं और दूसरे का दिया हुआ नैवेद्य अविद्या से युक्त देवता स्वयं खाते हैं। जैसे प्रजाओं से कर लेते हैं वैसे ही जनपद से करदाता राजा सम्पूर्ण मण्डल के राजा को कर देते हैं जिन्हे आपने जहाँ नियुक्त किया है वहीं वे भयभीत होकर कार्य करते हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

स्थिरचरजातयः स्युरजयोत्थनिमित्तयुजो
विहर उदीक्षया यदि परस्य विमुक्त ततः ।
न हि परमस्य कश्चिदपरो न परश्च भवेद्
वियत इवापदस्य तव शून्यतुलां दधतः ॥२९॥

पदच्छेद—

स्थिरचरजातयःस्युः अजयः उत्थनिमित्तयुजः
विहर उदीक्षया यदि परस्य विमुक्तततः ।
नहि परस्य कश्चित् अपरः न परश्चभवेत्
वियत इव अपदस्य तव शून्य तुलाम् दधतः ।।

शब्दार्थ—

स्थिरचरजातयःस्युः	८.	चर और अचर प्राणी उत्पन्न होते हैं	न हि	१४.	न तो
अजयः	५.	माया के साथ	परमस्य	१३.	हे परम पुरुष ! आपका
उत्थनिमित्तयुजः	७.	विचित्र कर्मयुक्त लिङ्ग शरीर वाले	कश्चित्अपरः	१५.	कोई अपना है
विहर उदीक्षया	६.	क्रीड़ा करना चाहते हैं तब संकल्प से ही	नपरश्चभवेत्	१६.	और न पराया है
यदि	२	यदि सृष्टि के समय	वियत इव	९.	आकाश के समान
परस्य	४.	परे आप	अपदस्य	१०.	वाणी और मन से परे
विमुक्त	१.	हे मायातीत	तवशून्यतुलाम्	११.	आप शून्य के समान
ततः ।	३.	उससे	दधतः ।।	१२.	जान पड़ते हैं

श्लोकार्थ—हे मायातीत ! यदि सृष्टि के समय उससे परे आप माया के साथ क्रीड़ा करना चाहते हैं तब संकल्प से ही विचित्र कर्मयुक्त लिङ्ग शरीर वाले चर और अचर प्राणी उत्पन्न होते हैं। आकाश के समान वाणी और मन से परे आप शून्य के समान जान पड़ते हैं। हे परम पुरुष ! आपका न तो कोई अपना है और न कोई पराया है।।

त्रिंशः श्लोकः

अपरिमिता ध्रुवास्तनुभृतो यदि सर्वगता-
स्तर्हि न शास्यतेति नियमो ध्रुव नेतरथा।
अजनि च यन्मयं तदविमुच्य नियन्तृ भवेत्
सममनुजानतां यदमतं मतदुष्टतया ॥३०॥

पदच्छेद—

अपरिमिताः ध्रुवाः तनुभृतःयदि सर्वगता-
र्तांह नशास्यते इति नियमः ध्रुव न इतरथा।
अजनि च यन्मयम् तत् विमुच्य नियन्तृ भवेत्
समम् अनुजानताम् यत्मतम् दुष्टतया॥

शब्दार्थ—

अपरिमिताःध्रुवाः	३.	असंख्य-नित्य और	अजनिचयन्मयम्	६.	जिस ब्रह्म का विकार जीव उत्पन्न हुआ
तनुभृतः यदि	२.	यदि जीव	तत् विमुच्य	१०.	वह कारण ब्रह्म जीव को न छोड़कर
सर्वगतार्तांह	४.	सर्वव्यापी हैं तो	नियन्तृभवेत्	११.	उसका नियामक होगा
नशास्यता	६.	वे शासित और आप शासक नहीं हो सकते	समम्	१३.	सब में स्थित है
इति नियमः	५.	यह नियम	अनुजानताम्	१५.	हम ब्रह्म को जानते हैं ऐसा मानने वालों के लिये
ध्रुव	१.	हे भगवान्	यत्	१२.	जो कारण ब्रह्म
न	८.	यह दोष नहीं होगा	मतम्	१६.	अज्ञात ही है
इतरथा।	७.	अन्यथा आपसे उत्पन्न अव्यापक मानने पर	दुष्टतया॥	१४.	(वह) बुद्धि के विषम होने से

श्लोकार्थ—हे भगवान्! यदि जीव असंख्य नित्य और सर्वव्यापी है तो यह नियम वे शासित और आप शासक नहीं हो सकते। अन्यथा आपसे उत्पन्न अव्यापक मानने पर यह दोष नहीं होगा। जिस ब्रह्म का विकार जीव उत्पन्न हुआ वह कारण ब्रह्म जीव को न छोड़कर उसका नियामक होगा। जो कारण ब्रह्म सब में स्थित है (वह) बुद्धि के विषम होने से हम ब्रह्म को जानते हैं, ऐसा मानने वालों के लिये अज्ञात ही हैं॥

एकत्रिंश श्लोकः

न घटत उद्भवः प्रकृतिपूरुषयोरजयोरुभययुजा भवन्त्यसुभृतो जलबुद्बुदवत्।
त्वयि त इमे ततो विविधनामगुणैः परमे सरित इवार्णवे मधुनि लिल्युशेषरसा ३१

पदच्छेद— नघटतः उद्भवः प्रकृति पुरुषयोः अजयः उभययुजा भवन्ति असुभृतः जलबुद्बुदवत।
त्वयि तेइमेततः विविधनाम गुणैः परमेश्वरितः इव अर्णवे मधुनि लिल्युः अवशेषरसाः।।

शब्दार्थ—

नघटतेउद्भवः	४. जन्म नहीं होता है	त्वयि	१४. आप
प्रकृति	२. प्रकृति और	तेइमेततः	९. इसलिये ये जीव
पुरुषयोः	३. पुरुष का	विविधनाम	१०. अनेक नामों और
अजयोः	१. अजन्मा	गुणैः	११. गुणों के साथ
उभययुजा	५. दोनों के संयोग से	परमे	१५. परमेश्वर में
भवन्ति	८. होते हैं	सरितः इव अर्णवे	१२. समुद्र में नदियों के समान
असुभृतः	६. प्राणी	मधुनि	१३. और मधु में
जलबुद्बुदवत्।	७. बुलबुले के समान	लिल्युअवशेषरसाः।।	१६. समस्त रसों के समान समा जाते हैं

श्लोकार्थ—अजन्मा प्रकृति और पुरुष का जन्म नहीं होता है। दोनों के संयोग से प्राणी बुलबुले के समान होते हैं। इसलिये ये जीव अनेक नामों और गुणों के साथ समुद्र में नदियों के समान और मधु में समस्त रसों के समान आप (परमेश्वर) में समा जाते हैं।।

द्वात्रिंशः श्लोकः

नृषु तव मायया भ्रमममीष्ववगत्य भृशं
त्वयि सुधियोऽभवे दधति भावमनुप्रभम्।
कथमनुवर्ततां भवभयं तव यद् भ्रुकुटिः
सृजति मुहुस्त्रिणेमिरभवच्छरणेषु भयम् ।।३२।।

पदच्छेद—नृषुतवमायया भ्रम् अमीषु अवगत्य भृशम् त्वयि सुधियः अभवे दधतिभावम् अनुप्रभवम्।
कथम् अनुवर्ततांम भवभयम् तवयत् भ्रुकुटिः सृजति मुहुः त्रिणेभिः अभवत् शरणेषु भयम्।।

शब्दार्थ—

नृषु तवमायया	२. जीवों में आपकी माया से	कथम	१८. कैसे होगा
भ्रम	४. भ्रम	अनुवर्तताम्	१६. आपका भजन करने वालों का
अमीषु	१. इन	भवभयम्	१७ संसार का भय
अवगत्य	५. जानकर	तवयत्	११. आपका
भृशम्	३. दुस्तर	भ्रुकुटिः	१२. भ्रू विलास मात्र से
त्वयि	७. आपमें	सृजति	१५. उत्पन्न करता है (किन्तु)
सुधियःअभवे	६. विवेकी लोग संसार से छुड़ाने वाले	मुहुः त्रिणेभिः	१३. तीनों भागों वाला कालक्रम बारम्बार
दधतिभवम्	९. मनोवृत्ति को धारण करते हं	अभवत् शरणेषु	१०. जिनके आप रक्षक नहीं हैं ऐसे लोगों का
अनुप्रभवम्।	८. प्रतिक्षण बढ़ने वाली	भयम्।।	१४. भय

श्लोकार्थ इन जीवों में आपकी माया से दुस्तर भ्रम जानकर विवेकी लोग संसार से छुड़ाने वाले आपमें प्रतिक्षण बढ़ने वाली मनोवृत्ति को धारण करते हैं। जिनके आप रक्षक नहीं हैं। ऐसे लोगों को आपका भ्रूविलास मात्र से तीनों भागों वाला कालक्रम बारम्बार भय उत्पन्न करता है। किन्तु आपका भजन करने वालों का संसार का भय कैसे होगा।।

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

विजितहृषीकवायुभिरदान्तमनस्तुरगं
य इह यतन्ति यन्तुमतिलोलमुपायखिदः ।
व्यसनशतान्विताः समवहाय गुरोश्चरणं
वणिज इवाज सन्त्यकृतकर्णधरा जलधौ ॥३३॥

पदच्छेद—

विजितहृषीक वायुभिः अदान्तमनः तुरगम्
ये इह यतन्ति यन्तुम् अतिलोलम् उपायखिदः ।
व्यसनशतान्वितः समवहाय गुरोः चरणम्
वणिजः इव अज सन्ति अकृतकर्णधराः जलधौ ॥

शब्दार्थ—

विजित	६.	जीत लेने वाले योगी के भी	व्यसनशतअन्विता	११.	तथा सैकड़ों दुःखों से युक्त व्यक्ति
हृषीक वायुभिः	५.	इन्द्रियों और प्राणों को	समवहाय	३.	छोड़कर
अदान्तमनः	७.	वश में न आने वाले मनरूपी	गुरोः चरणम्	२.	गुरुदेव के चरणों को
तुरगम्	८.	घोड़े को	वणिजः इव	१३.	जैसे व्यापारियों की
ये इह	१२.	इस संसार में (वैसे ही डूब जाते हैं)	अज	१.	हे अजन्मा प्रभो !
यतन्तियन्तुम्	९.	वश में करने के लिये प्रयत्न करते हैं	सन्ति	१६.	डूब जाती है
अतिलोलम्	४.	अत्यन्त चंचल	अकृतकर्णधराः	१४.	बिना नाविक की नाव
उपायखिदः ।	१०.	वे साधनों में क्लेश का अनुभव करने वाले हैं	जलधौ ॥	१५.	समुद्र में

श्लोकार्थ—हे अजन्मा ! प्रभो ! गुरुदेव के चरणों को छोड़कर अत्यन्त चञ्चल इन्द्रियों और प्राणों को जीत लेने वाले योगी को भी वश में आने वाले मन रूपी घोड़े को वश में करने के लिये प्रयत्न करते हैं । वे साधनों में क्लेश का अनुभव करने वाले हैं । तथा सैकड़ों दुःखों से युक्त व्यक्ति इस संसार में वैसे ही डूब जाते हैं जैसे व्यापारियों की बिना नाविक की नाव समुद्र में डूब जाती है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

स्वजनसुतात्मदारधनधामधरासुरथै-
स्त्वयि सति किं नृणां श्रयत आत्मनि सर्वरसे।
इति सदजानतां मिथुनतो रतये चरतां
सुखयति को न्विह स्वविहते स्वनिरस्तभगे ॥३४॥

पदच्छेद—

स्वजनसुत आत्मदारधन-धामधरअसुरथैः
त्वयि सति किम् नृणाम् श्रयतः आत्मनि सर्वरसे।
इतिसत् अजानताम् मिथुनतः रतये चरताम्
सुखयति कः नु इह स्वविहते स्वनिरस्तभगे ॥

शब्दार्थ—

स्वजनसुत	५.	स्वजन-सुत
आत्मदारधन	६.	शरीर और स्त्री, धन
धामधरअसुरथैः	७.	महल, पृथ्वी, प्राण और रथ से
त्वयि सति	४.	आपके रहते
किम्	८.	क्या प्रयोजन है (जो लोग)
नृणाम्	३.	मनुष्यों को
श्रयतः	२.	आपका आश्रय लेने वाले
आत्मनिसर्वरसे।	१.	अखण्ड आनन्द स्वरूप
इतिसत्अजानताम्	९.	इस सत्यसिद्धान्त को न जानकर
मिथुनतः	१०.	स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध से होने वाले
रतये	११.	रति सुख के लिये
चरताम्	१२.	प्रयत्न करने वालों को
सुखयतिः नु इह	१६.	इस संसार में कौन सुख है
स्वविहते	१३.	अपने नाशवान
स्वनिरस्त	१४.	स्वरूप से रहित
भगे ॥	१५.	ऐश्वर्यादि से

श्लोकार्थ—हे भगवान् ! अखण्ड आनन्दस्वरूप आपका आश्रय लेने वाले मनुष्यों को आपके रहते स्वजन, पुत्र, शरीर, स्त्री, धन, महल, पृथ्वी, प्राण और रथ से क्या प्रयोजन है ? जो लोग इस सत्य सिद्धान्त को न जानकर स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध से होने वाले रति सुख के लिये प्रयत्न करने वालों को अपने नाशवान स्वरूप से रहित ऐश्वर्यादि से इस संसार में कौन सुख दे सकता है ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

भुवि पुरुपुण्यतीर्थसदनान्यृषयो विमदास्त उत भवत्पदाम्बुजहृदोऽघभिदङ्घ्रिजलाः
दधति सकृन्मनस्त्वयि य आत्मनि नित्यसुखे न पुनरुपासते पुरुषसारहरावसथान् ।।३५

पदच्छेद-- भुवि पुरु पुण्यतीर्थ सदनानि ऋषयः विमदाः तेउतभवत् पदअम्बुजहृदः अथभित्अङ्घ्रिजलाः
दधति सकृत्मनः त्वयि ये आत्मनि नित्यसुखे न पुनः उपासते पुरुषसार हर अवसथान् ।।

शब्दार्थ---

भुवि पुरु	६.	पृथ्वी पर परम	दधति	१२.	लगा देते हैं (वे)
पुण्यतीर्थ	७.	पवित्र तीर्थ	सुकृतमनःत्वयि	११.	आप में एक बार मन का
सदनानि	८.	स्थानों की	ये आत्मनि नित्यसुखे	१०.	जो आनन्द रूप आत्मभूत
ऋषयःविमदाः	१.	जोऋषिगणअहंकार रहित	न पुनः	१६.	फिर नहीं करते हैं
ते उत	५.	वे भी	उपासते	९.	उपासना करते हैं (किन्तु)
भवत्पद् अम्बुज	२.	आपके चरण कमलों को	पुरुषसार	१३.	जीव के विवेक आदि के
हृदअघभित्	३.	हृदयमें रखने वालेपापनाशक	हर	१४.	निस्सार
अङ्घ्रिजलाः ।	४.	चरणोदक वाले हैं	अवसथान् ।।	१५.	गृहों की उपासना

श्लोकार्थ—जो ऋषिगण अहंकार रहित आपके चरण कमलों को हृदय में रखने वाले पापनाशक चरणोदक वाले हैं। वे भी पृथ्वी पर परम पवित्र तीर्थ स्थानों की उपासना करते हैं। किन्तु जो आनन्दरूप, आत्मभूत आपमें एक बार मन को लगा देते हैं। वे जीव के विवेक आदि के निस्सार गृहों की उपासना फिर नहीं करते हैं ।।

षट्त्रिंशः श्लोकः

सत इदमुत्थितं सदिति चेन्ननु तर्कहतं व्यभिचरति क्वचक्वच मृषा न तथोभययुक्
व्यवहृतये विकल्प इषितोऽन्धपरम्परया भ्रमयति भारतीत उरुवृत्तिभिरुक्थजडान्

पदच्छेद-- सत इदम् उत्थितम् सत्इति चेत्ननु तर्कहतम् व्यभिचरति क्वचक्वच मृषा न तथाउभययुक
व्यवहृतये विकल्पः इषितः अन्ध परम्परया भ्रमयति भारती ते उरुवृत्तिभिः उक्थजडान् ।।

शब्दार्थ—सत्	२.	सत् रूप परमात्मा से	व्यवहृतये	९.	व्यवहार के लिये
इदम्	१.	यह जगत्	विकल्पःइषिताः	१०.	जगत की सत्ता हो तो
उत्थितम्सत्इति	३.	उत्पन्न हुआ है अतःसत्यहीहै	अन्धपरम्परया	११.	अन्ध परम्परा से
चेत् न नु	४.	यदि ऐसा कहेंगे तो	भ्रमयति	१६.	भ्रम में डालती है
तर्कहतम्	५.	यह विचार से दुःखदायी है	भारती ते	१२.	आपकी वाणी
व्यभिचरतिक्वच	६.	क्योंकियहव्यभिचारसेग्रस्तहै	उरुवृत्तिभिः	१३.	बहुत सी वृत्तियों से
क्व च मृषान्	७	और कहीं असत्य नहीं है	उक्थ	१४.	कर्म के प्रतिश्रद्धा रखने वाले
तथाउभययुक् ।	८.	वैसे ही सत्य-असत्य दोनों है	जडान् ।।	१५.	मन्द मतियों को

श्लोकार्थ—यह जगत् सत् रूप परमात्मा से उत्पन्न हुआ है। अतः सत्य ही है। यदि ऐसा कहेंगे तो यह विचार से दुःखदायी है। क्योंकि ये कहीं व्यवहार से ग्रस्त है। और कहीं असत्य नहीं है। वैसे सत्य-असत्य दोनों है। व्यवहार के लिये जगत् की सत्ता हो तो अन्ध परम्परा से आपकी वाणी बहुत सी वृत्तियों से कर्म के प्रति श्रद्धा रखने वाले मन्द मतियों को भ्रम में डालती है ।।

सप्तत्रिंशः श्लोकः

न यदिदमग्र आसन भविष्यदतो निधनादनुमितमन्तरा त्वयि विभाति मृषैकरसे ।
अत उपमीयते द्रविणजातिविकल्पपथैर्वितथमनोविलासमृतमित्यवयन्त्यबुधाः ३७

पदच्छेद—न यत् इदम् अग्रे आस न भविष्यत् अतः निधनात् अनुमितम् अन्तरा त्वयि विभाति मृषा एकरसे
अतः उपमीयते द्रविण जाति विकल्पः पथैः वितथमनः विलासम् ऋतम् इति अवयन्ति अबुधाः

शब्दार्थ—

नयत्इदम्अग्रे	१. यह जगत् सृष्टि के पहले नहीं	अतः	९.	अत एव
आस	२. था और	उपमीयते	१२.	उपमा दी जाती है
न भविष्यत्अत	४. नहीं होगा इसलिये	द्रविणजाति	१०.	सोना, मिट्टी आदि के नाम के
निधनात् अनु	३. प्रलय के पश्चात् भी	विकल्पपथैः	११.	सन्देह युक्त मार्ग से
मितम्	८. यह निश्चित है	वितथमनः	१३.	यह मिथ्या तथा
अन्तरात्वयि	६. बीच में ही आप परमात्मा में	विलासम्	१४.	मन की कल्पना है
विभातिमृषा	७. मिथ्या ही प्रतीत होता है	ऋतम्इति	१६.	इसे सत्य समझते हैं
एकरसे ।	५. केवल	अवयन्तिअबुधाः ।।	१५.	मूर्ख लोग

श्लोकार्थ—यह जगत् सृष्टि के पहले नहीं था । और प्रलय के पश्चात् भी नहीं होगा । इसलिये केवल बीच में ही आप परमात्मा में मिथ्या ही प्रतीत होता है । यह निश्चित है । अत एव सोना, मिट्टी आदि के नाम के सन्देहयुक्त मार्ग से उपमा दी जाती है । वह मिथ्या तथा मन की कल्पना है । मूर्ख लोग इसे सत्य समझते हैं ।।

अष्टत्रिंशः श्लोकः

स यदजया त्वजामनुशयीत गुणांश्च जुषन् भजति सरूपतां तदनु मृत्युमपेतभगः ।
त्वमुत जहासि तामहिरिव त्वचमात्तभगो महसि महीयसेऽष्टगुणितेऽपरिमेयभगः

पदच्छेद—सः यत् अजया तु अजाम् अनुशयीत गुणान् च जुषन् भजति सरूपताम् तत् अनुमृत्युम् अपेतभगः
त्वम् उत जहासि ताम् अहिः इव त्वचम आत्तभगः महसि महीयसे अष्ट गुणिते अपरिमेय भगः

शब्दार्थ—सः यत्	१. जीव	त्वम् उत	१०.	परन्तु आप
अजयातुअजाम्	२. माया से मोहित होकर अविद्या को	जहासिताम्	१३.	उस अविद्या को त्याग देते हैं
अनुशयीत	३. अपना लेता है	अहिः इव	१४.	जैसे सांप
गुणान् च	५. गुणों से शरीरादि को तथा	त्वचम्	१५.	केंचुली को त्याग देता है (आप)
जुषन्	७. सेवा करता हुआ	आत्तभगः	११.	नित्य सिद्ध एवम्
भजति	९ प्राप्त होता है	महसि	१७.	परम आनन्द में
सरूपताम्	६. उनके धर्म को अपना मानकर उनकी	महीयसे	१८.	विराजमान रहते हैं
तत्अनु	४. तब बाद में	अष्टगुणिते	१६.	अणिमादि आठ विभूतियां वाले हैं तथा
मृत्युम्अपतभगः	८. ज्ञान आदि के नष्ट हो जाने से मृत्यु को	अपरिमेयभगः ।।	१२.	अनन्त ऐश्वर्यादि युक्त होने से

श्लोकार्थ—जब जीव माया से मोहित होकर अविद्या को अपना लेता है । तब बाद में गुणों से शरीरादि को तथा उनके धर्म को अपना मानकर उनकी सेवा करता हुआ ज्ञान आदि के नष्ट हो जाने से मृत्यु को प्राप्त होता है । परन्तु आप नित्य सिद्ध एवम् अनन्त ऐश्वर्यादि से युक्त होने से उस अविद्या को त्याग देते हैं । जैसे सांप केंचुली को त्याग देता है । आप अणिमादि आठ विभूतियों वाले हैं तथा परम आनन्द में विराजमान रहते हैं ।।

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

यदि न समुद्धरन्ति यतयो हृदि कामजटा
दुरधिगमोऽसतां हृदि गतोऽस्मृतकण्ठमणिः ।
असुतृपयोगिनामुभयतोऽप्यसुखं भगव-
न्ननपगतान्तकादनधिरूढपदाद् भवतः ॥३९॥

पदच्छेद — यदि न समुद्धरन्ति यतयः हृदि कामजटादुर्अधिगमः असताम् हृदिगतः अस्मृत कण्ठमणिः असुतृप योगिनाम् उभयतः अपिअसुखम् भगवन् अनपगत अन्तकात् अनधिरूढ पदात्भवतः

शब्दार्थ— यदि	३.	यदि	असुतृप	११.	इन्द्रियों को तृप्त करने में व्यस्त
न समुद्धरन्ति	५.	उखाड़ नहीं फेंकते तो	योगिनाम्	१२.	योगियों के लिये
यतयः हृदि	२.	सन्यासी भी हृदय में स्थित	उभयतः अपि	१७.	दोनों लोकों में भी
कामजटा	४.	काम वासनाओं को	असुखम्	१८.	दुःख ही दुःख है
दुरअधिगमः	१०.	दुर्लभ हैं	भगवन्	१.	हे भगवन् ।
असताम्	६.	उन असाधकों के लिये	अनपगत	१४.	छुटकारा न मिलने से तथा
हृदिगतः	७.	आप हृदय में रहने पर भी	अन्तकात्	१३.	मृत्यु से
अस्मृत	८.	विस्मृत हुई	अनधिरूढ	१६.	प्राप्त न करने से
कण्ठमणि :	९.	गले की मणि के समान	पदात्भवतः ।।	१५.	आपके स्थान को

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! सन्यासी भी हृदय में स्थित यदि कामवासनाओं को उखाड़ नहीं फेंकते तो उन असाधकों के लिये आप हृदय में रहने पर भी विस्मृत हुई गले की मणि के समान दुर्लभ हैं । इन्द्रिय को तृप्त करने में व्यस्त योगियों के लिये मृत्यु से छुटकारा न मिलने से तथा आपके स्थान को प्राप्त न करने से दोनों लोकों में भी दुःख ही दुःख है ।।

चत्वारिंशः श्लोकः

त्वदवगमी न वेत्ति भवदुत्थशुभाशुभयोर्गुणविगुणान्वयांतर्हि देहभृतां च गिरः
अनुयुगमन्वहं सगुण गीतपरम्परया श्रवणभृतो यतस्त्वमपवर्गगतिर्मनुजैः ॥४०

पदच्छेद—त्वत् अवगमी न वेत्ति भवत् उत्थशुभ अशुभयोः गुणविगुण अन्वयान् तर्हिदेह भृताम् च गिर अनुयुगम् अन्वहम् सगुण गीत परम्परया श्रवणभृतः यतः त्वम् अपवर्ग गीतः मनुजैः ।।

शब्दार्थ—

त्वत् अवगमी	२.	आपको जानने वाला पुरुष	अनुयुगम्	१०.	प्रत्येक युग में
न वेत्ति	७.	नहीं जानता है (क्योंकि)	अन्वहम्	११.	प्रत्येक दिन की गई
भवतउत्थ	३.	आपके कारण उत्पन्न	सगुण	१.	हे भगवन् !
शुभअशुभयोः	४.	शुभ-अशुभ कर्मों के	गीतपरम्परया	१३.	लीलाओं का गान
गुण विगुण	५.	फल सुख और दुख के	श्रवणभृतःयतः	१४.	कानों से सुन-सुनकर धारण करते हैं
अन्वयात्	६.	सम्बन्धों को	त्वमअपवर्ग	१५.	आप उनको मोक्ष
तर्हिदेहभृताम्	८	उस समय प्राणियों के	गतिः	१६.	देते हैं
च गिरः ।	९.	निन्दा स्तुति वचनों को भी नहीं जानता है	मनुजैः ।।	१२	मनुष्यों द्वारा

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आपको जानने वाला पुरुष आपके कारण उत्पन्न शुभ-अशुभ कर्मों के फल सुख-दुःख के सम्बन्धों को नहीं जानता है । क्योंकि उस समय तो प्राणियों के निन्दा स्तुति बचनों को भी नहीं जानता है । प्रत्येक युग में प्रत्येक दिन की गई मनुष्यों द्वारा लीलाओं का गान कानों से सुन-सुनकर धारण करते हैं । आप उनको मोक्ष देते हैं ।।

एकचत्वारिंशः श्लोकः

द्युपतय एव ते न ययुरन्तमनन्ततया
त्वमपि यदन्तराण्डनिचया ननु सावरणाः ।
ख इव रजांसि वान्ति वयसा सह यच्छ्रुतय-
स्त्वयि हि फलन्त्यतन्निरसनेन भवन्निधनाः ॥४१॥

पदच्छेद—द्युपतयः एवते नययुः अन्तम् अनन्ततया त्वम् अपि यत् अन्तरा अण्डनिचयाः ननुसावरणाः
खेइव रजांसि वान्ति वयसा सह श्रुतयः त्वयि हि फलन्ति अतत् निरसनेन भवत् निधनाः

शब्दार्थ—

द्युपतय.	१.	स्वर्गलोकपतिब्रह्माआदिभी	खे इव	१०.	जैसे आकाश में वायु से
एव ते	२.	आपके	रजांसि	११.	धूलि के कण उड़ते रहते हैं
नययुअन्तम्	३.	अन्त को नहीं पा सके	वान्तिवयस सह	९.	काल के वेग से भ्रमण करते रहते हैं
अनन्ततया	४.	अनन्त होने से	यत्	१२.	हम
त्वम् अपि	५.	आप भी अपने अन्त को नहीं जान पाते हैं	श्रुतयःत्वयिहि	१३.	श्रुतियाँ भी आपमें ही
यत् अन्तरा	६.	आपके मध्य में	फलन्ति	१६.	लीन हो जाती हैं
अण्डनिचयाः	८.	ब्रह्माडों के समूह	अतत्निरसनेन	१४.	वस्तु का निषेध करते-करते
ननु सावरणाः।	७.	सात आवरणों सहित	भवतःनिधनाः॥	१५.	समाप्त होकर आप में ही

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! स्वर्गलोकपति ब्रह्मा भी आपके अन्त को नहीं पा सके अनन्त होने से, आप भी अपने अन्त को नहीं जान पाते हैं आपके मध्य में सात आवरणों सहित ब्रह्माण्डों के समूह काल के वेग से भ्रमण करते रहते हैं। जैसे आकाश में वायु से धूलि कण उड़ते रहते हैं। हम श्रुतियाँ भी आपमें ही वस्तु का निषेध करते-करते समाप्त होकर आपमें ही लीन हो जाती हैं ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—इत्येतद् ब्रह्मणः पुत्रा आश्रुत्यात्मानुशासनम् ।
सनन्दनमथानर्चुः सिद्धा ज्ञात्वाऽऽत्मनो गतिम् ॥४२॥

पदच्छेद— इति एतत् ब्रह्मणः पुत्रा आश्रुत्य आत्मा अनुशासनम् ।
शनन्दनम् अथ आनर्चुः सिद्धाः ज्ञात्वा आत्मनः गतिम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	सनन्दनम्	१२.	सनन्दनादि की
एतत्	४.	यह	अथ	१०.	तदनन्तर
ब्रह्मणः	२.	ब्रह्माजी के	आनर्चुः	१३	पूजा की
पुत्राः	३.	पुत्रों ने	सिद्धाः	११.	सिद्धों ने
आश्रुत्य	६.	सुनकर	ज्ञात्वा	९.	जाना
आत्मअनुशासनम्।	५.	आत्मा का, जीव और ब्रह्म की एकता को	आत्मनः	७.	आत्मा की
			गतिम् ॥	८.	गति को

श्लोकार्थ—इस प्रकार ब्रह्माजी के पुत्रों ने यह आत्मा का जीव और ब्रह्म की एकता को सुनकर आत्मा की गति को जाना । तदनन्तर सिद्धों ने सनन्दनादि की पूजा की ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

इत्यशेषसमाम्नायपुराणोपनिषद्रसः ।
समुद्धृतः पूर्वजातैर्व्योमयानैर्महात्मभिः ॥४३॥

पदच्छेद— इति अशेष समाम्नाय पुराण उपनिषद् रसः ।
सम उद्धृतः पूर्वजातैः व्योम यानैः महात्मभिः ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	यह	सम् उद्धृतः	११.	निचोड़ लिया है
अशेष	२.	सम्पूर्ण	पूर्वजातैः	७.	पूर्व में उत्पन्न
समाम्नाय	३.	वेद	व्योम	८.	आकाश
पुराण	४.	पुराण और	यानैः	९.	गामी (सनकादि)
उपनिषद्	५	उपनिषदों का	महात्मभिः ॥	१०.	महात्माओं ने
रसः ।	६.	रस है (जिसे)			

श्लोकार्थ—यह सम्पूर्ण वेद पुराण और उपनिषदों का रस है जिसे पूर्व में उत्पन्न आकाशगामी सनकादि महात्माओं ने निचोड़ लिया है ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

त्वं चैतद् ब्रह्मदायाद श्रद्धयाऽऽत्मानुशासनम् ।
धारयंश्चरं गां कामं कामानां भर्जनं नृणाम् ॥४४॥

पदच्छेद— त्वम् च एतत् ब्रह्मदायाद श्रद्धया आत्म अनुशासनम् ।
धारयन् चरम् गाम् कामम् कामानाम् भर्जनम् नृणाम् ॥

शब्दार्थ—

त्वम् च	२.	तुम भी	धारयन्	७.	धारण करते हुये
एतत्	३.	इस	चरम्	१०.	विचरण करो
ब्रह्मदायाद	१.	हे ब्रह्मपुत्रों !	गाम्	८.	पृथ्वी पर
श्रद्धया	६.	श्रद्धा के साथ	कामम्	९	यथाशक्ति
आत्म	४.	ब्रह्मात्म	कामानाम्	१२.	वासनाओं को
अनुशासनम् ।	५.	विद्या को	भर्जनम्	१३.	भस्म करने वाली है
			नृणाम् ॥	११.	यह मनुष्यों की

श्लोकार्थ—हे ब्रह्म पुत्रों ! तुम भी इस ब्रह्मात्म विद्या को श्रद्धा के साथ धारण करते हुये पृथ्वी पर यथाशक्ति विचरण करो । यह मनुष्यों की वासनाओं को भस्म करने वाली है ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं स ऋषिणाऽऽदिष्टं गृहीत्वा श्रद्धयाऽऽत्मवान् ।
पूर्णः श्रुतधरो राजन्नाह वीरव्रतो मुनिः ॥४५॥

पदच्छेद— एवम् सः ऋषिणा आदिष्टम् गृहीत्वा श्रद्धया आत्मवान् ।
पूर्णः श्रुतधरः राजन् आह वीरव्रत मुनिः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	पूर्णः	८.	पूर्णकाम
सः	१२.	नारद जी	श्रुतधरः	९.	ज्ञानी
ऋषिणा	३.	ऋषि के द्वारा	राजन्	१.	हे राजन् !
आदिष्टम्	४.	दिये गये उपदेशों को	आह	१३.	बोले
गृहीत्वा	६.	ग्रहण करके	वीरव्रतः	१०.	नैष्ठिक ब्रह्मचारी
श्रद्धया	५.	श्रद्धा से	मुनिः ॥	११.	मुनि (नारदजी)
आत्मवान् ।	७.	संयमी			

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार ऋषि के द्वारा दिये गये उपदेश को श्रद्धा से ग्रहण करके संयमी पूर्णकाम ज्ञानी नैष्ठिक ब्रह्मचारी मुनि नारद जी बोले ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

नारद उवाच— नमस्तस्मै भगवते कृष्णायामलकीर्त्तये ।
यः धत्ते सर्वभूतानामभवायोशतीः कलाः ॥४६॥

पदच्छेद— नमः तस्मै भगवते कृष्णाय अमल कीर्त्तये ।
यः धत्ते सर्वभूतानाम् अभवाय उशतीः कलाः ॥

शब्दार्थ—

नमः	६.	नमस्कार है	यः	७.	जो
तस्मै	३.	उन	धत्ते	१२.	धारण करते हैं
भगवते	४.	भगवान्	सर्वभूतानाम्	८.	समस्त प्राणियों के
कृष्णाय	५.	श्रीकृष्ण को	अभवाय	९.	मोक्ष के लिये
अमल	१.	निर्मल	उशतीः	१०.	कमनोय
कीर्त्तये ।	२.	यश वाले	कलाः ॥	११.	कलावतार

श्लोकार्थ—निर्मल यश वाले उन भगवान् श्रीकृष्ण को नमस्कार हैं, जो समस्त प्राणियों के मोक्ष के लिये कमनीय कलावतार धारण करने हैं ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

इत्याद्यमृषिमानम्य तच्छिष्यांश्च महात्मनः ।
ततोऽगादाश्रमं साक्षात् पितुर्द्वैपायनस्य मे ॥४७॥

पदच्छेद— इति आद्यम् ऋषिम् आनम्य तत् शिष्यान् च महात्मनः ।
ततः अगात् आश्रमम् साक्षात् पितुः द्वैपायनस्य मे ॥

शब्दार्थ—

इति	१.	इस प्रकार	ततः	८.	वहाँ से
आद्यम्	२.	आदि	अगात्	१४.	गये
ऋषिम्	३.	ऋषि (नारायण) को और	आश्रमम्	१३.	आश्रम पर
आनम्य	७.	नमस्कार करके	साक्षात्	९.	स्वयं
तत्	४.	उनके	पितुः	११.	पिता
शिष्यों को च	६.	शिष्यों को	द्वैपायनस्य	१२.	कृष्ण द्वैपायन के
महात्मनः ।	५.	महात्मा	मे ॥	१०.	मेरे

श्लोकार्थ—इस प्रकार आदि ऋषि नारायण को और उनके महात्मा शिष्यों को नमस्कार करके वहाँ से स्वयं मेरे पिता कृष्ण द्वैपायन के आश्रम पर गये ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

सभाजितो भगवता कृतासनपरिग्रहः ।
तस्मै तद् वर्णयामास नारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥४८॥

पदच्छेद— सभाजितः भगवता कृत आसन परिग्रहः ।
तस्मै तत् वर्णयामास नारायणमुखात् श्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

सभाजितः	२.	सम्मानित होने पर	तस्मै	९.	उनसे
भगवता	१.	भगवान् व्यास द्वारा	तत्	८.	वह सब
कृत	५.	बैठ गये और	वर्णयामास	१०.	वर्णन कर दिया
आसन	३.	(नारदजी) आसन	नारायणमुखात्	६.	नारायण के मुख से
परिग्रहः ।	४.	स्वीकार करके	श्रुतम् ।	७.	जो सुना था

श्लोकार्थ— भगवान् व्यास द्वारा सम्मानित होने पर नारदजी आसन स्वीकार करके बैठ गये और नारायण के मुख से जो सुना था, वह सब उनसे वर्णन कर दिया ॥

एकोनपञ्चाशः श्लोकः

इत्येतद् वर्णितं राजन् यन्नः प्रश्नः कृतस्त्वया ।
यथा ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणेऽपि मनश्चरेत् ॥४९॥

पदच्छेद— इति एतत् वर्णितम् राजन् यत् नः प्रश्नः कृतः त्वया ।
यथा ब्रह्मणि अनिर्देश्ये निर्गुणे अपि मनः चरेत् ॥

शब्दार्थ—

इति एतत्	२. इस प्रकार यह	यथा	११. कैसे
वर्णितम्	३. बतला दिया	ब्रह्मणि	७. ब्रह्म में
राजन्	१. हे राजन् !	अनिर्देश्ये	८. मन-वाणी से अगोचर
यत् नः	४. जो हमसे	निर्गुणे अपि	९. प्राकृत गुणों से रहित होने पर भी
प्रश्नः कृत	६. प्रश्न किया था	मनः	१०. मन
त्वया ।	५. तुमने	चरेत् ॥	१२. प्रवेश करता है

श्लोकार्थ—हे राजन् ! इस प्रकार यह बतला दिया जो हमसे तुमने प्रश्न किया था। ब्रह्म में मन-वाणी से अगोचर प्राकृत गुणों से रहित होने पर भी मन कैसे प्रवेश करता है ॥

पञ्चाशः श्लोकः

योऽस्योत्प्रेक्षक आदिमध्यनिधने योऽव्यक्तजीवेश्वरो
यः सृष्ट्वेदमनुप्रविश्य ऋषिणा चक्रे पुरः शास्ति ताः ।
यं संपद्य जहात्यजामनुशयी सुप्तः कुलायं यथा
तं कैवल्यनिरस्तयोनिमभयं ध्यायेदजस्रं हरिम् ॥५०॥

पदच्छेद— यः अस्य उत्प्रेक्षकः आदिमध्यनिधने यः अव्यक्त जीवः ईश्वरः
यः सृष्ट्वा इदम् अनुप्रविश्य ऋषिणा चक्रे पुरः शास्तिताः ।
यम् संपद्य जहाति अजाम् अनुशयी सुप्तः कुलायम् यथा
तम् कैवल्य निरस्तयः योनिम् अभयम् ध्यायेत् अजस्रम् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

यःअस्य उत्प्रेक्षकः	१. जो इस संसार का संकल्प करते हैं	यम् संपद्य	१० जिनको पाकर
आदिमध्यनिधने	२. आदि मध्य अन्त में रहते हैं	जहाति	१२. छोड़ देता है
यःअव्यक्तजीवः	३. जो प्रकृति और जीव के	अजामअनुशयी	११. जीव माया को
ईश्वरः यः	४. ईश्वर हैं जिन्होंने	सुप्तःकुलायम्-यथा	१३. वैसे ही सोया पुरुष शरीर छोड़ देता है
सृष्ट्वा इदम्	५. सृष्टि करके इसमें	तम् कैवल्य	१४. वे भगवान् केवल चिन्मात्रत्व हैं
अनुप्रविश्य	६. प्रवेश किया है (तथा)	निरस्तःयोनिम्	१५. माया से परे और
ऋषिणा	७. ऋषि रूप से	अभयम्	१६. भय से रहित
चक्रे पुरः	८. शरीरों का निर्माण किया है	ध्यायेत्	१८. ध्यान करना चाहिये
शास्तिताः ।	९. वेही उनका नियन्त्रण करते हैं	अजस्रम्हरिम् ॥	१७. श्रीहरि का निरन्तर

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! जो इस संसार का संकल्प करते हैं, आदि मध्य अन्त में रहते हैं, जो प्रकृति और जीव के ईश्वर हैं, जिन्होंने सृष्टि करके इसमें प्रवेश किया है तथा ऋषि रूप से शरीरों का निर्माण किया है। वे ही उनका नियन्त्रण करते हैं। जिनको पाकर जीव माया को छोड़ देता है। वैसे ही सोया पुरुष शरीर छोड़ देता है। वे भगवान् केवल चिन्मात्रतत्त्व हैं। माया से परे और भय से रहित श्री हरि का निरन्तर ध्यान करना चाहिये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे
नारद नारायण संवादे वेदस्तुति नाम सप्ताशीतितमः अध्यायः ॥८७॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

अष्टाशीतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

राजोवाच— देवासुरमनुष्येषु ये भजन्त्यशिवं शिवम् ।
प्रायस्ते धनिनो भोजा न तु लक्ष्म्याः पतिं हरिम् ॥१॥

पदच्छेद— देव असुर मनुष्येषु ये भजन्ति अशिवम् शिवम् ।
प्रायः ते धनिनः भोजाः न तु लक्ष्म्याः पतिम् हरिम् ॥

शब्दार्थ—

देव	१.	देवता	प्रायः	६.	प्रायः
असुर	२.	असुर और	ते	८.	वे
मनुष्येषु	३.	मनुष्यों में	धनिनः	१०.	धनी और
ये	४.	जो	भोजाः	११.	भोग सम्पन्न होते है (किन्तु)
भजन्ति	७.	उपासना करते हैं	न तु	१४.	नहीं होते हैं
अशिवम्	५.	अभद्र वेषधारी	लक्ष्म्याः पतिम्	१२.	लक्ष्मीपति
शिवम् ।	६.	शिव की	हरिम् ॥	१३.	विष्णु की उपासना करने वाले

श्लोकार्थ—देवता, असुर और मनुष्यों में जो अभद्र वेषधारी शिव की उपासना करते हैं वे प्रायः धनी और भोग सम्पन्न होते हैं । किन्तु लक्ष्मीपति विष्णु की उपासना करने वाले नहीं होते हैं ॥

द्वितीयः श्लोकः

एतद् वेदितुमिच्छामः सन्देहोऽत्र महान् हि नः ।
विरुद्धशीलयोः प्रभ्वोर्विरुद्धा भजतां गतिः ॥२॥

पदच्छेद— एतत् वेदितुम् इच्छामः सन्देहः अत्र महान् हि नः ।
विरुद्ध शीलयोः प्रभ्वोः विरुद्धा भजताम् गतिः ॥

शब्दार्थ—

एतत्	१.	हम यह	विरुद्धः	८.	विरुद्ध
वेदितुम्	२.	जानना	शीलयोः	९.	स्वभाव वाले
इच्छामः	३.	चाहते हैं	प्रभ्वोः	१०.	दोनों प्रभुओं के
सन्देहः	७.	सन्देह हो रहा है कि	विरुद्धा	१२.	विपरीत
अत्र	४.	इसमें	भजताम्	११.	उपासकों को
महान्	६.	बड़ा ही	गतिः ॥	१३.	फल क्यों मिलता है ।
हि नः ।	५.	हमें			

श्लोकार्थ—हम यह जानना चाहते है । इसमें हमें बड़ा ही सन्देह हो रहा है कि विरुद्ध स्वभाव वाले दोनों प्रभुओं के उपासकों को विपरीत फल क्यों नहीं मिलता है ?

तृतीयः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—शिवः शक्तियुतः शश्वत् त्रिलिङ्गो गुणसंवृतः ।
वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा ॥३॥

पदच्छेद— शिवः शक्तियुतः शश्वत् त्रिलिङ्गः गुण संवृतः ।
वैकारिकः तैजसः च तामसः च इति अहम् त्रिधा ॥

शब्दार्थ—

शिवः	१.	शङ्कर	वैकारिकः	९.	वैकारिक
शक्तियुतः	३.	शक्ति से युक्त रहते हैं वे	तैजसः	१०.	तैजस
शश्वत्	२.	सदा	च	११.	और
त्रिलिङ्गः	६.	अहंकार के अधिष्ठाता	तामसः च	१२.	तामस कहते हैं
गुण	४.	सत्त्वादि गुणों से	इतिअहम्	७.	इस अहंकार के
संवृतः ।	५.	युक्त तथा	त्रिधा ॥	८.	तीन भेद हैं जिसे

श्लोकार्थ—शङ्कर सदा शक्ति से युक्त रहते हैं। वे सत्त्वादि गुणों से युक्त तथा अहंकार के अधिष्ठाता हैं। इस अहंकार के तीन भेद है जिसे वैकारिक, तैजस और तामस कहते हैं ॥

चतुर्थः श्लोकः

ततो विकारा अभवन् षोडशामीषु कञ्चन ।
उपधावन् विभूतीनां सर्वासामश्नुते गतिम् ॥४॥

पदच्छेद— ततः विकाराः अभवन् षोडश आमीषु कञ्चन ।
उपधावन् विभूतीनाम् सर्वासाम् अश्नुते गतिम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	उस अहंकार से	उपधावन्	७.	उपासना करने से
विकाराः	३.	विकार (दस इन्द्रियाँ पांच महाभूत एक मन)	विभूतीनाम्	९.	ऐश्वर्यों की
अभवन्	४.	उत्पन्न हुये	सर्वसाम	८.	समस्त
षोडश	२.	सोलह	अश्नुते	११.	हो जाती है
आमीषु	५.	उनमें से	गतिम् ॥	१०.	प्राप्ति
कञ्चन ।	६.	किसी एक की			

श्लोकार्थ—उस अहंकार से सोलह विकार (दस इन्द्रियां पांच महाभूत एकमन) उत्पन्न हुये। उनमें से किसी एक की उपासना करने से समस्त ऐश्वर्यों की प्राप्ति हो जाती है ॥

पञ्चमः श्लोकः

हरिर्हि निर्गुणः साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः ।
स सर्वदृगुपद्रष्टा तं भजन् निर्गुणो भवेत् ।।५।।

पदच्छेद— हरिः हि निर्गुणः साक्षात् पुरुषः प्रकृतेः परः ।
सः सर्वदृक् उपद्रष्टा तम् भजन् निर्गुणः भवेत् ।।

शब्दार्थ—

हरिः हि	१.	श्रीहरि तो	सः सर्वदृक्	७.	वे सर्वज्ञ तथा
निर्गुणः	६.	गुण रहित हैं	उपद्रष्टा	८.	सबके अन्तः करणों के साक्षी हैं
साक्षात्	४.	स्वयं	तम्	९.	उनका
पुरुषः	५.	पुरुष तथा	भजन्	१०.	भजन करने वाला
प्रकृतेः	२.	प्रकृति से	निर्गुणः	११.	गुणातीत
परः ।	३.	परे	भवेत् ।।	१२.	हो जाता है

श्लोकार्थ—श्रीहरि तो प्रकृति से परे स्वयं पुरुष तथा गुण रहित हैं । वे सर्वज्ञ तथा सबके अन्त.करणों के साक्षी हैं । उनका भजन करने वाला गुणातीत हो जाता है ।।

षष्ठः श्लोकः

निवृत्तेष्वश्वमेधेषु राजा युष्मत्पितामहः ।
शृण्वन् भगवतो धर्मानपृच्छदिदमच्युतम् ।।६।।

पदच्छेद— निवृत्तेषु अश्वमेधेषु राजा युष्मत् पितामहः ।
शृण्वन् भगवतः धर्मान् अपृच्छत् इदम् अच्युतम् ।।

शब्दार्थ—

निवृत्तेषु	५.	कर चुकने पर	शृण्वन्	९.	सुनते समय
अश्वमेधेषु	४.	अश्वमेध यज्ञ	भगवतः	६.	भगवान्
राजा	३.	राजा युधिष्ठिर ने	धर्मान्	८.	अनेक धर्मों को
युष्मत्	१.	तुम्हारे	अपृच्छत्	११.	प्रश्न किया था
पितामहः ।	२.	दादा	इदम्	१०.	यही
			अच्युतम् ।।	७.	श्रीकृष्ण से

श्लोकार्थ—तुम्हारे दादा राजा युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ कर चुकने पर भगवान् श्रीकृष्ण से अनेक धर्मों को सुनते समय यही प्रश्न किया था ।।

सप्तमः श्लोकः

स आह भगवांस्तस्मै प्रीतः शुश्रूषवे प्रभुः ।
नृणां निःश्रेयसार्थाय योऽवतीर्णो यदोः कुले ॥७॥

पदच्छेद— सः आह भगवान् तस्मै प्रीतः शुश्रुषवे प्रभुः ।
नृणाम् निःश्रेयस अर्थाय यः अवतीर्णः यदोः कुले ॥

शब्दार्थ—

सः	८.	वे	नृणाम्	१.	मनुष्यों के
आह	१४.	कहने लगे	निःश्रेयस	२.	कल्याण के
भगवान्	९.	भगवान्	अर्थाय	३.	लिये
तस्मै	१३.	उन (युधिष्ठिर) से	यः	४.	जिन्होंने
प्रीतः	११.	प्रसन्न होकर	अवतीर्णः	७.	अवतार लिया था
शुश्रूषवे	१२.	सेवा करने वाले	यदोः	५.	यदु
प्रभुः ।	१०.	श्रीकृष्ण	कुले ॥	६.	वंश में

श्लोकार्थ—मनुष्यों के कल्याण के लिये जिन्होंने यदुवंश में अवतार लिया था, वे भगवान् श्रीकृष्ण प्रसन्न होकर सेवा करने वाले उन युधिष्ठिर से कहने लगे ॥

अष्टमः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—यस्याहमनुगृह्णामि हरिष्ये तद्धनं शनैः ।
ततोऽधनं त्यजन्त्यस्य स्वजना दुःखदुःखितम् ॥८॥

पदच्छेद— यस्य अहम् अनुगृह्णामि हरिष्ये तत् धनम् शनैः ।
ततः अधनम् त्यजन्ति अस्य स्वजनाः दुःख दुःखितम् ॥

शब्दार्थ—

यस्य	१.	जिस पर	ततः	८.	तब
अहम्	२.	मैं	अधनम्	१३.	उस निर्धन को
अनुगृह्णामि	३.	कृपा करता हूँ	त्यजन्ति	१४.	त्याग देते हैं
हरिष्ये	७.	छीन लेता हूँ	अस्य	९.	उसके
तत्	४.	उसका	स्वजनाः	१०.	सगे-सम्बन्धी
धनम्	५.	धन	दुःख	११.	दुःख से
शनैः ।	६.	धीरे-धीरे	दुःखितम् ॥	१२.	व्याकुल

श्लोकार्थ—जिस पर मैं कृपा करता हूँ उसका धन धीरे-धीरे छीन लेता हूँ । तब उसके सगे-सम्बन्धी दुःख से व्याकुल उस निर्धन को त्याग देते हैं ॥

नवमः श्लोकः

स यदा वितथोद्योगो निर्विण्णः स्याद् धनेहया ।
मत्परैः कृतमैत्रस्य करिष्ये मदनुग्रहम् ॥९॥

पदच्छेद— सः यदा वितथ उद्योगः निर्विण्णः स्यात् धन ईहया ।
मत् परैः कृत मैत्रस्य करिष्ये मत् अनुग्रहम् ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	वह	मत्	८.	मेरे
यदा	२.	जब	परैः	९.	भक्तों से
वितथ	४.	विफल होने पर	कृत	११.	करता है
उद्योगः	३.	धन कमाने के प्रयत्न में	मैत्रस्य	१०.	मित्रता
निर्विण्णः	६.	विरक्त	करिष्ये	१४.	करता हूँ
स्यात्	७.	हो जाता है (और)	मत्	१२.	तब मैं उस पर अपनी
धनईहया ।	५.	धन के कमाने से	अनुग्रहम् ॥	१३.	कृपा

श्लोकार्थ—वह जब धन कमाने के प्रयत्न में विफल होने पर धन कमाने से विरक्त हो जाता है, और मेरे भक्तों ने मित्रता करता है, तब मैं उस पर अपनी कृपा करता हूँ ॥

दशमः श्लोकः

तद् ब्रह्म परमं सूक्ष्मं चिन्मात्रं सदनन्तकम् ।
अतो मां सुदुराराध्यं हित्वान्यान् भजते जनः ॥१०॥

पदच्छेद— तत् ब्रह्म परमम् सूक्ष्मम् चिन्मात्रम् सत् अनन्तकम् ।
अतः माम् सुदुराराध्यम् हित्वा अन्यान् भजते जनः ॥

शब्दार्थ—

तत्	१.	मेरी कृपा से उसे	अतः	८.	इसलिये
ब्रह्म	२.	ब्रह्म की प्राप्ति होती है जो	माध्यम्	११.	मेरी आराधना
परमम्	३.	परम्	सुदुराराध्यम्	१०.	बड़ी कठिनाई से करने योग्य
सूक्ष्मम्	४.	सूक्ष्म	हित्वा	१२.	छोड़कर
चिन्मात्रम्	५.	चित्स्वरूप	अन्यान्	१३.	अन्य देवताओं का
सत्	६.	सत् स्वरूप तथा	भजते	१४.	भजन करते हैं
अनन्तकम् ।	७.	अनन्त है	जनः ॥	९.	लोग

श्लोकार्थ—मेरी कृपा से उसे ब्रह्म की प्राप्ति होती है जो परमसूक्ष्म चित्तस्वरूप, सत् स्वरूप तथा अनन्त हैं इसलिये लोग बड़ी कठिनाई से करने योग्य मेरी आराधना छोड़कर अन्य देवताओं का भजन करते हैं ॥

एकादशः श्लोकः

ततस्त आशुतोषेभ्यो लब्धराज्यश्रियोद्धताः ।

मत्ताः प्रमत्ता वरदान् विस्मरन्त्यवजानते ॥११॥

पदच्छेद— ततः ते आशुतोषेभ्यः लब्ध राज्यश्रियाः उद्धताः ।

मत्ताः प्रमत्ताः वरदान् विस्मरन्ति अव जानते ॥

शब्दार्थ—

ततः ते	१.	तब वे	मत्ताः	७.	उन्मादी और
आशुतोषेभ्यः	२.	शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवों से	प्रमत्ताः	८.	प्रमादी होकर
लब्ध	५.	पाकर	वरदान्	९.	वर देने वालों को
राज्य	३.	राज्य	विस्मरन्ति	१०.	भूल जाते हैं और
श्रियाः	४.	लक्ष्मी को	अवजानते ॥	११.	उनका तिरस्कार करते हैं
उद्धताः ।	६.	उन्मत्त			

श्लोकार्थ—तब वे शीघ्र प्रसन्न होने वाले देवों से राज्य लक्ष्मी को पाकर उन्मत्त, उन्मादी और प्रमादी होकर वर देने वालों को भूल जाते हैं और उनका तिरस्कार करते हैं ॥

द्वादशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—शापप्रसादयोरीशा ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।

सद्यः शापप्रसादोऽङ्ग शिवो ब्रह्मा न चाच्युतः ॥१२॥

पदच्छेद— शाप प्रसादयोः ईशाः ब्रह्म विष्णु शिव आदयः ।

सद्यः शाप प्रसादः अङ्ग शिवः ब्रह्मान् च अच्युतः ॥

शब्दार्थ—

शाप	६.	शाप और	सद्यः	१२.	तुरन्त दे देते हैं परन्तु
प्रसादयोः	७.	वरदान देने में	शाप प्रसादः	११.	शाप और वरदान
ईशाः	८.	समर्थ हैं	अङ्ग	१.	हे परीक्षित !
ब्रह्म	२.	ब्रह्मा	शिवः	९.	शिव और
विष्णु	३.	विष्णु	ब्रह्मा	१०.	ब्रह्मा
शिव	४.	शिव	न च	१४.	ऐसे नहीं हैं
आदयः ।	५.	आदि देवता	अच्युतः ॥	१३.	विष्णु

श्लोकार्थ—हे रीक्षित ! ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता शाप और वरदान देने में समर्थ हैं । शिव और ब्रह्मा शाप या वरदान तुरन्त दे देते हैं । परन्तु विष्णु ऐसे नही हैं ॥

त्रयोदशः श्लोकः

अत्र चोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
वृकासुराय गिरिशो वरं दत्त्वाऽऽप सङ्कटम् ॥१३॥

पदच्छेद— अत्र च उदाहरन्ति इमम् इतिहासम् पुरातनम् ।
वृकासुराय गिरीशः वरम् दत्त्वा आप सङ्कटम् ॥

शब्दार्थ—

अत्र	१.	इस विषय में	वृकासुराय	८.	वृकासुर को
च	२.	विद्वान् लोग	गिरिशः	७.	शङ्कर
उदाहरन्ति	६.	बताते हैं कि	वरम्	९.	वर
इमम्	३.	यह	दत्त्वा	१०.	देकर
इतिहासम्	५.	इतिहास	आप	११.	पड़ गये थे
पुरातनम् ।	४.	प्राचीन	सङ्कटम् ॥	१२.	सङ्कट में

श्लोकार्थ—इस विषय में विद्वान् लोग यह प्राचीन इतिहास बताते हैं कि शङ्कर वृकासुर को वर देकर सङ्कट में पड़ गये थे ॥

चतुर्दशः श्लोकः

वृको नामासुरः पुत्रः शकुनेः पथि नारदम् ।
दृष्ट्वाऽऽशुतोषं पप्रच्छ देवेषु त्रिषु दुर्मतिः ॥१४॥

पदच्छेद— वृकः नाम असुरः पुत्रः शकुनेः पथि नारदम् ।
दृष्ट्वा आशुतोषम् पप्रच्छ देवेषु त्रिषु दुर्मतिः ॥

शब्दार्थ—

वृकः नाम	१.	वृक नामक	दृष्ट्वा	७.	देखकर
असुरः	२.	असुर	आशुतोषम्	१२.	शीघ्र प्रसन्न होने वाला कौन है
पुत्रः	४.	पुत्र था	पप्रच्छ	९.	पूछा कि
शकुनेः	३.	शकुनि का	देवेषु	११.	देवताओं में
पथि	५.	मार्ग में	त्रिषु	१०.	तीनों
नारदम् ।	६.	नारदजी को	दुर्मति ॥	८.	उस दुष्ट बुद्धि ने

श्लोकार्थ—वृक नामक असुर शकुनि का पुत्र था । मार्ग में नारदजी को देखकर उस दुष्ट बुद्धि ने पूछा कि तीनों देवताओं में शीघ्र प्रसन्न होने वाला कौन है ?

पञ्चदशः श्लोकः

स आह देवं गिरिशमुपाधावाशु सिद्ध्यसि ।
योऽल्पाभ्यां गुणदोषाभ्यामाशु तुष्यति कुप्यति ॥१५॥

पदच्छेद— सः आह देवम् गिरिशम् उपाधाव आशु सिद्ध्यसि ।
यः अल्पाभ्याम् गुण दोषाभ्याम् आशु तुष्यति कुप्यति ॥

शब्दार्थ—

सः	१.	उन्होंने	यः	८.	जो शङ्कर
आह	२.	कहा	अल्पाभ्याम्	९.	थोड़े से
देवम्	३.	भगवान्	गुण	१०.	गुण और
गिरिशम्	४.	शङ्कर की	दोषाभ्याम्	११.	दोषों से
उपाधाव	५.	आराधना करो	आशु	१२.	शीघ्र ही
आशु	६.	शीघ्र ही	तुष्यति	१३.	सन्तुष्ट और
सिद्ध्यसि ।	७.	मनोरथ सिद्ध हो जायेगा	कुप्यति ॥	१४.	कुपित हो जाते हैं

श्लोकार्थ—उन्होंने कहा भगवान् शङ्कर की आराधना करो शीघ्र ही मनोरथ सिद्ध हो जायेगा । जो शङ्कर थोड़े से गुण और दोषों से शीघ्र ही सन्तुष्ट और कुपित हो जाते हैं ॥

षोडशः श्लोकः

दशास्यबाणयोस्तुष्टः स्तुवतोर्वन्दिनोरिव ।
ऐश्वर्यमतुलं दत्त्वा तत आप सुसङ्कटम् ॥१६॥

पदच्छेद— दशास्य बाणयोः तुष्टः स्तुवतोः वन्दिनोः इव ।
ऐश्वर्यम् अतुलम् दत्त्वा तत आप सुसङ्कटम् ॥

शब्दार्थ—

दशास्य	४.	रावण और	ऐश्वर्यम्	८.	ऐश्वर्य
बाणयोः	५.	बाणासुर पर	अतुलम्	७.	उन्हें अतुलनीय
तुष्टः	६.	प्रसन्न शिव ने	दत्त्वा	९.	देकर
स्तुवतोः	१.	स्तुति करते हुये	तत्	१०.	उनसे
वन्दिनोः	२.	बन्दीजनों के	आप	११.	भारी
इव ।	३.	समान	सुसङ्कटम् ॥	१२.	सङ्कट में पड़े हुये

श्लोकार्थ— स्तुति करते हुये बन्दीजनों के समान रावण और बाणासुर पर प्रसन्न शिव ने उन्हें अतुलनीय ऐश्वर्य देकर उनसे भारी संकट में पड़ गये ॥

सप्तदशः श्लोकः

इत्यादिष्टस्तमसुर उपाधावत स्वगात्रतः ।
केदार आत्मक्रव्येण जुह्वानोऽग्निमुखं हरम् ॥१७॥

पदच्छेद— इति आदिष्टः तम् असुरः उपाधावत् स्व गात्रतः ।
केदार आत्म क्रव्येण जुह्वानो अग्नि मुखम् हरम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	केदार	४. केदार क्षेत्र में (जाकर)
आदिष्टः	२. उपदेश पाकर	आत्म	१०. अपना
तम्	१३. उन शङ्कर की	क्रव्येण	११. मांस काटकर उससे
असुरः	३. वृकासुर	जुह्वान्	१२. हवन करते हुये
उपाधावत्	१४. उपासना करने लगा	अग्नि	५. अग्नि
स्व	८. अपने	मुखम्	६. जिनका मुख है
गात्रतः ।	९. शरीर से	हरम् ॥	७. ऐसे शङ्कर के लिये

श्लोकार्थ—इस प्रकार उपदेश पाकर वृकासुर केदार क्षेत्र में जाकर अग्नि जिनका मुख है, ऐसे शङ्कर के लिये अपने शरीर से अपना मांस काटकर उससे हवन करते हुये उन शङ्कर की उपासना करने लगा ॥

अष्टादशः श्लोकः

देवोपलब्धिमप्राप्य निर्वेदात् सप्तमेऽहनि ।
शिरोऽवृश्चत् स्वधितिना तत्तीर्थक्लिन्नमूर्धजम् ॥१८॥

पदच्छेद— देव उपलब्धिम् अप्राप्य निर्वेदात् सप्तमे अहनि ।
शिरः अवृश्चत् स्वधितिना तत् तीर्थ क्लिन्न मूर्धजम् ॥

शब्दार्थ—

देव	१. शङ्कर की	शिरः	११. अपना सिर
उपलब्धिम्	२. प्राप्ति	अवृश्चत्	१२. काटने लगा
अप्राप्य	३. न होने पर	स्वधितिना	१०. कुल्हाड़े से
निर्वेदात्	६. दुःख से	तत्तीर्थ	८. केदार तीर्थ में
सप्तमे	४. सातवें	क्लिन्न	९. भिगोकर
अहनि ।	५. दिन	मूर्धजम् ॥	७. मस्तक को

श्लोकार्थ— शङ्कर की प्राप्ति न होने पर सातवें दिन दुःख से मस्तक को केदार तीर्थ में भिगोकर कुल्हाड़े से अपना सिर काटने लगा ॥

एकोनविंशः श्लोकः

तदा महाकारुणिकः स धूर्जटिर्यथा वयं चाग्निरिवोत्थितोऽनलात् ।
निगृह्य दोर्भ्यां भुजयोर्न्यवारयत् तत्स्पर्शनाद् भूय उपस्कृताकृतिः ॥१९॥

पदच्छेद—तदा महाकारुणिकः सः धूर्जटिः यथा वयम् च अग्निः इव उत्थितः अनलात् ।
निगृह्य दोर्भ्याम् भुजयोः न्यवारयत् तत् स्पर्शनात् भूयः उपस्कृत आकृतिः ॥

शब्दार्थ—

तदामहाकारुणिकः	१.	तब परम दयालु	निगृह्य	१०.	पकड़ कर
सः धूर्जटिः	२.	उन शंकर ने	दोर्भ्याम्	८.	दोनों हाथों से (उसकी)
यथा	३.	जैसे (आत्महत्या करते को)	भुजयोः	९.	भुजाओं को
वयम् च	४.	हम लोग बचा लेते हैं (वैसेही)	न्यवारयत्	११.	रोक दिया
अग्निः	६.	अग्निदेव के	तत्स्पर्शनात्	१२.	उसके स्पर्श से
इव उत्थितः	७.	समान प्रकट होकर (अपने)	भूयः उपस्कृत	१४.	पुनः पूर्ण हो गई
अनलात् ।	५.	अग्नि कुण्ड से	आकृतिः ॥	१३.	उसकी आकृति

श्लोकार्थ—तब परम दयालु उन शंकर ने जैसे आत्महत्या करते को हम लोग बचा लेते हैं वैसे ही अग्नि, कुण्ड से अग्नि देव के समान प्रकट होकर अपने दोनों हाथों से उसकी भुजाओं को पकड़ कर रोक दिया । उसके स्पर्श से उसकी आकृति पुनः पूर्ण हो गई ॥

विंशः श्लोकः

तमाह चाङ्गालमलं वृणीष्व मे यथाभिकामं वितरामि ते वरम् ।
प्रीयेय तोयेन नृणां प्रपद्यतामहो त्वयाऽऽत्मा भृशमर्द्यते वृथा ॥२०॥

पदच्छेद— तम् आह च अङ्ग अलम् अलम् वृणीष्व यथा अभिकामम् वितरामि ते वरम् ।
प्रीयेय तोयेन नृणाम् प्रपद्यताम् अहो त्वया आत्माभृशम् अर्द्यते वृथा ॥

शब्दार्थ—

तम् आह	१.	शङ्कर जी ने उससे कहा	प्रीयेय	१०.	प्रसन्न हो जाता हूँ
च अङ्ग	२.	प्रिय वृकासुर	तोयेन	९.	जल चढाने से ही
अलम् अलम्	३.	बस करो, बस करो	नृणाम्प्रपद्यताम्	८.	मैं तो शरण में आये लोगों पर
वृणीष्व मे	५.	मुझसे वरदान माँग लो	अहो त्वया	११.	अहो तुम
यथा अभिकामम्	४.	जैसा चाहो	आत्माभृशम्	१३.	आत्मा को अत्यन्त
वितरामि	६.	तुम्हें	अर्द्य ते	१४.	पीड़ित कर रहे हो
ते वरम् ।	७.	मैं वर दूँगा	वृथा ॥	१२.	व्यर्थ ही

श्लोकार्थ—शङ्कर जी ने उससे कहा कि प्रिय वृकासुर बस करो, बस करो जैसा चाहो मुझसे वरदान माँग लो । तुम्हें मैं वर दूँगा । मैं तो शरण में आये हुए लोगों पर जल चढ़ाने से ही प्रसन्न हो जाता हूँ । अहो, तुम व्यर्थ ही आत्मा को अत्यन्त पीड़ित कर रहे हों ॥

एकविंशः श्लोकः

देवं स वव्रे पापीयान् वरं भूतभयावहम् ।
यस्य यस्य करं शीर्ष्णि धास्ये स म्रियतामिति ॥२१॥

पदच्छेद— देवम् स वव्रे पापीयान् वरम् भूत भयावहम् ।
यस्य यस्य करम् शीर्ष्णि धास्ये सः म्रियताम् इति ॥

शब्दार्थ—

देवम्	२.	महादेव से	यस्य यस्य	९.	जिस जिस के
स	१.	उन	करम्	११.	मैं हाथ
वव्रे	८.	माँगा कि	शीर्ष्णि	१०.	सिर पर
पापीयान्	३.	उस पापी ने	धास्ये	१२.	रख दूँ
वरम्	७.	वर	सः	१३.	वह
भूत	४.	प्राणियों के लिये	म्रियताम्	१४.	मर जाय
भयावहम् ।	५.	भयदायक	इति ॥	६.	यह

श्लोकार्थ—उन महादेव से उस पापी ने प्राणियों के लिये भयदायक यह वर माँगा कि जिस, जिस के सिर पर मैं हाथ रख दूँ वह मर जाय ॥

द्वाविंशः श्लोकः

तच्छ्रुत्वा भगवान् रुद्रो दुर्मना इव भारत ।
ओमिति प्रहसंस्तस्मै ददेऽहेरमृतं यथा ॥२२॥

पदच्छेद— तत् श्रुत्वा भगवान् रुद्रः दुर्मना इव भारत ।
ओम् इति प्रहसन् तस्मै ददे अहेः अमृतम् यथा ॥

शब्दार्थ—

तत्	२.	यह	ओम्	९.	अच्छा
श्रुत्वा	३.	सुनकर	इति	१०.	ऐसा ही हो, कहकर
भगवान्	४.	भगवान्	प्रहसन्	८.	हँसते हुये
रुद्रः	५.	शिव ने	तस्मै ददे	११.	उसे वर दे दिया
दुर्मना	६.	अनमने	अहेः	१३.	साँप को
इव	७.	से होकर	अमृतम्	१४.	अमृत पिला दिया
भारत ।	१.	हे परीक्षित् !	यथा ॥	१२.	मानों

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! यह सुनकर भगवान् शिव ने अनमने से होकर हँसते हुये अच्छा ऐसा ही हो, कहकर उसे वर दे दिया । मानों साँप को अमृत पिला दिया ॥

त्रयविंशः श्लोकः

इत्युक्तनः सोऽसुरो नूनं गौरीहरणलालसः।
स तद्वरपरीक्षार्थं शम्भोर्मूर्ध्नि किलासुरः।
स्वहस्तं धातुमारेभे सोऽबिभ्यत् स्वकृताच्छिवः॥२३॥

पदच्छेद— इति युक्तः सः असुरः नूनम् गौरी हरण लालसः।
सः तत् वर परीक्षार्थम् शम्भोः मूर्धिर्न किल असुरः।
स्वहस्तम् धातुम् आरेभे सः अबिभ्यत् स्वकृतात् शिवः॥

शब्दार्थ —

इति	१.	इस प्रकार	शम्भोःमूर्धिर्न	११.	शिव के सिर पर
उक्तः	२.	कहा जाने पर	किल	७.	कहा जाता है कि वह
सः असुरः	३.	वह असुर	असुरः	८.	वृत्रासुर
नूनम्	४.	निश्चित ही	स्वहस्तम्	१२.	अपना हाथ
गौरीहरण	५.	पार्वतीजी को हरने की	धातुम्	१३.	रखने के लिये
लालसः	६.	लालसा से युक्त हो गया	आरेभेसः	१४.	उद्योग करने लगा
सः तत् वर	९.	शंकर के वर की	अबिभ्यत्	१६.	वे डरने लगे
परीक्षार्थम्।	१०.	परीक्षा करने के लिये	स्वकृतात्शिवः॥	१५.	शिव अपने दिये वरदान से

श्लोकार्थ—इस प्रकार कहा जाने पर वह असुर निश्चित ही पार्वती जी को हरने की लालसा से युक्त हो गया। कहा जाता है कि वह वृत्रासुर शंकर के वर की परीक्षा करने के लिये शिव के सिर पर अपना हाथ रखने के लिये उद्योग करने लगा। वे शिव अपने दिये वर से डरने लगे॥

चतुर्विंशः श्लोकः

तेनोपसृष्टः संत्रस्तः पराधावन् सवेपथुः।
यावदन्तं दिवो भूमेः काष्ठानामुदगादुदक्॥२४॥

पदच्छेद— तेन उपसृष्टः संत्रस्तः पराधावन् स वेपथुः।
यावत् अन्तम् दिवः भूमे काष्ठानाम् उदगात् उदक्॥

शब्दार्थ—

तेन	१.	वह उनका	यावत्	११.	तक गये (फिर)
उपसृष्ट	२.	पीछा करने लगा और	अन्तम्	१०.	अन्त
संत्रस्तः	५.	डरकर	दिवः	७.	स्वर्ग
पराधावन्	६.	भागने लगे	भूमेः	८.	पृथ्वी और
स	३.	वे	काष्ठानाम्	९.	दिशाओं के
वेपथुः।	४.	काँपते हुये	उदगात् उदक्॥	१२.	उत्तर दिशा की ओर बढ़ गये

श्लोकार्थ—वह उनका पीछा करने लगा और वे काँपते हुये डर कर भागने लगे। स्वर्ग, पृथ्वी और दिशाओं के अन्त तक गये। फिर उत्तर दिशा की ओर बढ़ गये॥

पञ्चविंशः श्लोकः

अजानन्तः प्रतिविधिं तूष्णीमासन् सुरेश्वराः ।
ततो वैकुण्ठमगमद् भास्वरं तमसः परम् ॥२५॥

पदच्छेद— अजानन्तः प्रति विधिम् तूष्णीम् आसन् सुरेश्वराः ।
ततः वैकुण्ठम् अगमत् भास्वरम् तमसः परम् ॥

शब्दार्थ—

अजानन्तः	२. न देखकर		ततः	६. तदनन्तर	
प्रतिविधिम्	३. इसका कोई प्रतीकार		वैकुण्ठम्	१०. वैकुण्ठलोक में	
तूष्णीम्	४. चुप		अगमत्	११. गये	
आसन्	५. रह गये		भास्वरम्	७ प्रकाशमय	
सुरेश्वराः ।	१. बड़े-बड़े देवता		तमसः	८. प्राकृतिक अन्धकार से	
			परम् ॥	६ परे	

श्लोकार्थ—बड़े-बड़े देवता भी इसका कोई प्रतीकार न देखकर चुप रह गये । तदनन्तर प्रकाशमय प्राकृतिक अन्धकार से परे वैकुण्ठलोक में चले गये ॥

षट्विंशः श्लोकः

यत्र नारायणः साक्षान्न्यासिनां परमा गतिः ।
शान्तानां न्यस्तदण्डानां यतो नावर्तते गतः ॥२६॥

पदच्छेद— यत्र नारायणः साक्षात् न्यासिनाम् परमा गतिः ।
शान्तानाम् न्यस्त दण्डानाम् यतः न आवर्तते गतः ॥

शब्दार्थ—

यत्र	१. जहाँ पर	शान्तानाम्	६. शान्तभाव में स्थित हैं (और)
नारायणः	३. नारायण रहते हैं	न्यस्त	८. देकर
साक्षात्	२. स्वयम्	दण्डानाम्	७. जो जगत् को अभय
न्यासिनाम्	४. जो उन संन्यासियों की	यतः	१०. जहाँ
परमा	५. परम	न आवर्तते	१२. लौटना नहीं पड़ता है
गतिः ।	६. गति हैं	गतः ॥	११. जाकर (फिर)

श्लोकार्थ—जहाँ पर स्वयम् नारायण रहते हैं, जो उन सन्यासियों की परम गति हैं, जो जगत को अभय देकर शान्त भाव में स्थित हैं, और जहाँ जाकर फिर लौटना नहीं पड़ता है ॥

सप्तविंशः श्लोकः

तं तथाव्यसनं दृष्ट्वा भगवान् वृजिनार्दनः ।
दूरात् प्रत्युदियाद् भूत्वा बटुको योगमायया ॥२७॥

पदच्छेद— तम् तथा व्यसनम् दृष्ट्वा भगवान् वृजिन् अर्दनः ।
दूरात् प्रति उद्यात् भूत्वा बटुकः योगमायया ॥

शब्दार्थ—

तम्	४. उन्हें	दूरात्	१२. दूर से ही धीरे-धीरे
तथा	५. उस प्रकार	प्रति	१३. वृकासुर की ओर
व्यसनम्	६. संकट में पड़े	उदयात्	१४. आने लगे
दृष्ट्वा	७. देखकर	भूत्वा	११. बनकर
भगवान्	३. भगवान्	बटुक	१०. ब्रह्मचारी
वृजिन	१. भक्तभय	योग	८. अपनी योग
अर्दनः ।	२. हारी	मायया ॥	९. माया से

श्लोकार्थ—भक्तभयहारी भगवान् उन्हें उस प्रकार संकट में पड़े देखकर अपनी योग माया से ब्रह्मचारी बनकर दूर से ही धीरे-धीरे वृकासुर की ओर आने लगे ॥

अष्टविंशः श्लोकः

मेखलाजिनदण्डाक्षैस्तेजसाग्निरिव ज्वलन् ।
अभिवादयामास च तं कुशपाणिर्विनीतवत् ॥२८॥

पदच्छेद— मेखला अजिन दण्ड अक्षैः तेजसा अग्निः इव ज्वलन् ।
अभिवादयामास च तम् कुश पाणिः विनीतवत् ॥

शब्दार्थ—

मेखला	१. मंजू की करधनी	अभिवादयामास	१२. अभिवादन किया
अजिन	२. मृगचर्म	च	७. और
दण्ड अक्षै	३. दण्ड और रुद्राक्षधारण किये	तम्	१०. उसका
तेजसा	४. तेज से	कुश	९. कुश लिये हुये भगवान ने
अग्निरिव	६. अग्नि के समान	पाणिः	८. हाथ में
ज्वलन् ।	५. धधकती	विनीतवत् ॥	११. विनीत की भाँति

श्लोकार्थ—मंजू की करधनी मृगचर्म दण्ड और रुद्राक्ष धारण किये तेज से धधकती अग्नि के समान और हाथ में कुश लिये हुये भगवान् ने उसका विनीत की भाँति अभिवादन किया ॥

एकोनविंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—शाकुनेय भवान् व्यक्तं श्रान्तः किं दूरमागतः ।
क्षणं विश्रम्यतां पुंसः आत्मायं सर्वकामधुक् ॥२९॥

पदच्छेद— शाकुनेय भवान् व्यक्तम् श्रान्तः किम् दूरम् आगतः ।
क्षणम् विश्राम्यताम् पुंसः आत्माअयम् सर्वकाम धुक् ॥

शब्दार्थ—

शाकुनेय	१.	हे शकुनि के पुत्र (वृत्रासुर)	क्षणम्	८.	क्षणभर
भवान्	२.	आप	विश्राम्यताम्	९.	विश्राम कर लीजिये
व्यक्तम्	३.	बहुत ही	पुंसः	१०.	मनुष्य का
श्रान्तः	४.	थक गये हैं	आत्मा	१२.	शरीर
किम्	५.	क्या आप	अयम्	११.	यह
दूरम्	६.	दूर से	सर्वकाम	१३.	सभी कामनाओं को
आगतः ।	७.	आ रहे हैं	धुक् ॥	१४.	पूर्ण करने वाला है

श्लोकार्थ—हे शकुनि के पुत्र वृत्रासुर आप बहुत ही थक गये हैं । क्या दूर से आ रहे हैं ? क्षणभर विश्राम कर लीजिये । मनुष्य का यह शरीर सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला है ॥

त्रिंशः श्लोकः

यदि नः श्रवणायालं युष्मद्व्यवसितं विभो ।
भण्यतां प्रायशः पुम्भिर्धृतैः स्वार्थान् समीहते ॥३०॥

पदच्छेद— यदि नः श्रवणाय अलम् युष्मत् व्यवसितम् विभो ।
भयताम् प्रायशः पुम्भिः धृतैः स्वार्थान् समीहते ॥

शब्दार्थ—

यदि	४.	यदि	भण्यताम्	८.	बतलाइये
नः	५.	हमारे	प्रायशः	९.	प्रायः लोग
श्रवणाय	६.	सुनने	पुम्भिः	११.	पुरुषों के द्वारा
अलम्	७.	योग्य हो तो	धृतैः	१०.	सहायक
युष्मत्	२.	आपको जो	स्वार्थान्	१२.	स्वार्थों को
व्यवसितम्	३.	करना है वह	समीहते ॥	१३.	सिद्ध कर लेते हैं
विभो ।	१.	हे प्रभो !			

श्लोकार्थ—हे प्रभो ! आपको जो करना है वह यदि हमारे सुनने योग्य हो तो बतलाइये । प्रायः लोग सहायक पुरुषों के द्वारा स्वार्थों को सिद्ध कर लेते हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं भगवता पृष्टो वचसामृतवर्षिणा ।
गतक्लमोऽब्रवीत्तस्मै यथापूर्वमनुष्ठितम् ॥३१॥

पदच्छेद— एवम् भगवता पृष्टः वचसा अमृत वर्षिणा ।
गत क्लमः अब्रवीत् तस्मै यथा पूर्वम् अनुतिष्ठतम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	गत क्लमः	७.	उसकी थकावट दूर हो गयी
भगवता	२.	भगवान् के	अब्रवीत्	१२.	बता दिया
पृष्टः	६.	पूछा जाने पर	तस्मै	११.	उन्हें
वचसा	५.	वचनों से	यथा	८.	तब उसने
अमृत	३.	अमृत	पूर्वम्	९.	जैसा पहले
वर्षिणा ।	४.	बरसाने वाले	अनुतिष्ठतम् ॥	१०.	किया था वह सब

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् के अमृत बरसाने वाले वचनों से पूछा जाने पर उसकी थकावट दूर हो गयी । तब उसने जैसा पहले किया था, वह सब उन्हें बता दिया ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

श्रीभगवानुवाच—एवं चेत्तर्हि तद्वाक्यं न वयं श्रद्दधीमहि ।
यो दक्षशापात् पैशाच्यं प्राप्तः प्रेतपिशाचराट् ॥३२॥

पदच्छेद— एवम् चेत् तर्हि तत् वाक्यम् वयम् श्रद्दधीमहि ।
यः दक्ष शापात् पैशाच्यम् प्राप्तः प्रेत पिशाच राट् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	ऐसी	यः	८.	जो
चेत्	२.	बात है	दक्ष	९.	दक्ष के
तर्हि	३.	तब तो	शापात्	१०.	शाप से
तत्	५.	उसकी	पैशाच्यम्	११.	पिशाचत्व को
वाक्यम्	६.	बात पर नहीं	प्राप्तः	१२.	प्राप्त हो गया है (और जो)
वयम्	४.	हम	प्रेत	१३.	प्रेतों तथा
श्रद्दधीमहि ।	७.	विश्वास करते हैं (क्योंकि)	पिशाचराट् ॥	१४.	पिशाचों का सम्राट् है

श्लोकार्थ—ऐसी बात है तब तो हम उसकी बात पर नहीं विश्वास करते हैं । क्योंकि जो दक्ष के शाप से पिशाचत्व को प्राप्त हो गया है और जो प्रेतों तथा पिशाचों का सम्राट् है ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

यदि वस्तत्र विश्रम्भो दानवेन्द्र जगद्गुरौ ।
तर्ह्यङ्गाशु स्वशिरसि हस्तं न्यस्य प्रतीयताम् ॥३३॥

पदच्छेद— यदि वः तत्र विश्राम्भः दानवेन्द्र जगत् गुरौ ।
तर्हि अङ्ग आशु स्व शिरसि हस्तम् न्यस्य प्रतीयताम् ॥

शब्दार्थ—

यदि	२. यदि	तर्हि	८. तो
वः	३. तुम	अङ्ग	९. भाई !
तत्र	६. उस पर	आशु	१०. शीघ्र
विश्राम्भः	७. विश्वास करते हो	स्वशिरसि	११. अपने सिर पर
दानवेन्द्र	१. दानवराज	हस्तम्	१२. हाथ
जगत्	४. जगद्	न्यस्य	१३. रखकर
गुरौ ।	५. गुरु मानकर	प्रतीयताम् ॥	१४. परीक्षा कर लो

श्लोकार्थ—दानवराज ! यदि तुम जगद् गुरु मानकर उस पर विश्वास करते हो तो भाई ! शीघ्र अपने सिर पर हाथ रखकर परीक्षा कर लो ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

यद्यसत्यं वचः शम्भोः कथञ्चिद् दानवर्षभ ।
तदैनं जह्यसद्वाचं न यद् वक्तानृतं पुनः ॥३४॥

पदच्छेद— यदि सत्यम् वचः शम्भोः कथञ्चित् दानवर्षभ ।
तत् एनम् जहि असद् वाचम् न यत् वक्ता अनृतं पुनः ॥

शब्दार्थ—

यदि	२. यदि	तत् इनम्	७. तो इस
सत्यम्	६. असत्य हो जाय	जहि	९. मार डालो
वचः	४. वचन	असत् वाचम्	८. मिथ्यावादी को
शम्भोः	३. शङ्कर का	नयत्	१०. जिससे नहीं
कथञ्चित्	५. किसी प्रकार	वक्ता	१३. बोल सकेगा
दानवर्षभ ।	१. दानव श्रेष्ठ	अनृतम्	१२. झूठ
		पुनः ॥	११. फिर

श्लोकार्थ—दानव श्रेष्ठ ! यदि शङ्कर का वचन किसी प्रकार असत्य हो जाय तो इस मिथ्यावादी को मार डालो । जिससे फिर झूठ नहीं बोल सकेगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

इत्थं भगवतश्चित्रैर्वचोभिः स सुपेशलैः ।
भिन्नधीर्विस्मृतः शीर्ष्णि स्वहस्तं कुमतिर्न्यधात् ॥३५॥

पदच्छेद— इत्थम् भगवतः चित्रैः वचोभिः स सुपेशलैः ।
भिन्नधीः विस्मृतः शीर्ष्णि स्वहस्तम् कुमतिः न्यधात् ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१.	इस प्रकार	भिन्नधीः	७.	बुद्धि का विवेक
भगवतः	२.	भगवान् के	विस्मृतः	८.	नष्ट हो गया (और)
चित्रैः	३.	अद्भुत	शीर्ष्णि	११.	सिर पर
वचोभिः	५.	वचनों से	स्वहस्तम्	१०.	अपना हाथ अपने
सः	६.	उसकी	कुमतिः	९.	उस दुर्बुद्धि ने
सुपेशलैः ।	४.	और मधुर	न्यधात् ॥	१२.	रख लिया

श्लोकार्थ—इस प्रकार भगवान् के अद्भुत और मधुर बचनों से उसकी बुद्धि का विवेक नष्ट हो गया और उस दुर्बुद्धि ने अपना हाथ अपने सिर पर रख लिया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

अथापतद् भिन्नशिरा वज्राहत इव क्षणात् ।
जयशब्दोनमःशब्दः साधुशब्दोऽभवद् दिवि ॥३६॥

पदच्छेद— अथ अपतद् भिन्न शिरा वज्र आहत इव क्षणात् ।
जयशब्दः नमः शब्दः साधु शब्दः अभवत् दिवि ॥

शब्दार्थ —

अथ	१.	तथा	जय शब्दः	७.	जय, जय
अपतत्	५.	गिर पड़ा (तब)	नमः शब्दः	८.	नमः नमः
भिन्नशिराः	२.	उसका सिर फट गया (और वह)	साधु शब्दः	९.	साधु-साधु के नारे
वज्र आहतः	३.	वज्र से मारे गये के समान	अभवत्	१०.	लगाने लगे
क्षणात् ।	४.	उसी क्षण	दिवि ॥	६.	आकाश से (देवता)

श्लोकार्थ—तथा उसका सिर फट गया और वह वज्र से मारे गये के समान उसी क्षण गिर पड़ा। तब आकाश से देवता जय-जय, नमः नमः, साधु-साधु के नारे लगाने लगे ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

मुमुचुः पुष्पवर्षाणि हते पापे वृकासुरे।
देवर्षिपितृगन्धर्वा मोचितः सङ्कटाच्छिवः ॥३७॥

पदच्छेद— मुमुचुः पुष्पवर्षाणि हते पापे वृक असुरे।
देवर्षि पितृ गन्धर्वाः मोचितः सङ्कटात् शिवः ॥

शब्दार्थ—

मुमुचुः	९. करने लगे (और)	देवर्षि	४. देवता, ऋषि
पुष्प	७. पुष्पों की	पितृ	५. पितर
वर्षाणि	८. वर्षा	गन्धर्वाः	६. गन्धर्व
हते	३. मारे जाने पर	मोचितः	१२. मुक्त हो गये
पापे	१. पापी	सङ्कटात्	११. सङ्कट से
वृक असुरे।	२. वृकासुर के	शिवः ॥	१०. शङ्कर जो

श्लोकार्थ—पापी वृकासुर के मारे जाने पर देवता, ऋषि, पितर, गन्धर्व पुष्पों की वर्षा करने लगे और शङ्कर जी सङ्कट से मुक्त हो गये ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

मुक्तं गिरिशमभ्याह भगवान् पुरुषोत्तमः।
अहो देव महादेव पापोऽयं स्वेन पाप्मना ॥३८॥

पदच्छेद— मुक्तम् गिरिशम् अभ्याह भगवान् पुरुषोत्तमः।
अहो देव महादेव पापः अयम् स्वेन् पाप्मना ॥

शब्दार्थ—

मुक्तम्	१. सङ्कट से मुक्त	अहो	७. बड़े हर्ष की बात है कि
गिरिशम्	२. शङ्कर जी से	देव महादेव	६. देवाधिदेव
अभ्याह	५. कहा	पापः	९. पापी
भगवान्	३. भगवान्	अयम्	८. यह
पुरुषोत्तमः।	४. विष्णु ने	स्वेन पाप्मना ॥	१० अपने ही पाप से मारा गया

श्लोकार्थ—सङ्कट से मुक्त शङ्कर जी से भगवान विष्णु ने कहा कि देवाधिदेव ! बड़े हर्ष की बात है कि यह पापी अपने ही पाप से मारा गया ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

हतः को नु महत्स्वीश जन्तुर्वै कृतकिल्बिषः ।

क्षेमी स्यात् किमु विश्वेशे कृतागस्को जगद्गुरौ ॥३९॥

पदच्छेद— हतः कः नु महत्सु ईश जन्तुः वै कृत किल्बिषः ।

क्षेमी स्यात् किमु विश्वेशे कृत आगस्कः जगद्गुरौ ॥

शब्दार्थ—

हतः	१.	वह असुर मारा गया	क्षेमी	७.	कुशल से
कः नु	३.	कौन	स्यात्	८.	रह सकता है (फिर)
महत्सु	५.	महापुरुषों का	किमु	१२.	कोई रह जाय (यह असंभव है)
ईश	२.	हे प्रभो !	विश्वेशे	१०.	विश्वेश्वर का
जन्तुः वै	४.	प्राणी	कृतआगस्कः	११.	अपराध करके तो
कृतकिल्बिषः ।	६.	अपराध करके	जगद्गुरौ ॥	९.	जगद्गुरौ

श्लोकार्थ— वह असुर मारा गया । हे प्रभो ! कौन प्राणी महापुरुषों का अपराध करके कुशल से रह सकता है फिर जगद्गुरौ विश्वेश्वर का अपराध करके तो कोई रह जाय, यह असंभव है ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

य एवमव्याकृतशक्त्युदन्वतः परस्य साक्षात् परमात्मनो हरेः ।

गिरित्रमोक्षं कथयेच्छृणोति वा विमुच्यते संसृतिभिस्तथारिभिः ॥४०॥

पदच्छेद— यः एवम् अव्याकृत शक्ति उदन्वतः परस्य साक्षात् परमात्मनः हरेः ।

गिरित्र मोक्षम् कथयेत् शृणोति वा विमुच्यते संसृतिभिः तथा अरिभिः ॥

शब्दार्थ—

यः एवम्	१.	जो इस प्रकार	गिरित्र	८.	शंकर को
अव्याकृत	२.	अनन्त	मोक्षम्	९.	छुड़ाने का वृत्तान्त
शक्ति	३.	शक्ति के	कथयेत्	१०.	कहता है
उदन्वतः	४.	समुद्र और	शृणोति वा	११.	या सुनता है वह
परस्य	५.	प्रकृति से परे	विमुच्यते	१४.	मुक्त हो जाता है
साक्षात्	६.	स्वयम्	संसृतिभिः	१२.	संसार के बन्धनों से
परमात्मनःहरेः ।	७.	परमात्मा विष्णु के और	तथा अरिभिः ॥	१३.	तथा शत्रुओं से

श्लोकार्थ—जो इस प्रकार अनन्त शक्ति के समुद्र और प्रकृति से परे स्वयम् परमात्मा विष्णु के और शंकर को छुड़ाने का वृत्तान्त कहता है या सुनता है वह संसार के बन्धनों मुक्त हो जाता है ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे परमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे रुद्रमोक्षणः नाम
अष्टाशीतितमः अध्यायः ॥८८॥

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

एकोननवतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—सरस्वत्यास्तटे राजन्नृषयः सत्रमासत ।
वितर्कः समभूत्तेषां त्रिष्वधीशेषु को महान् ॥१॥

पदच्छेद— सरस्वत्याः तटे राजन् ऋषयः सत्रम आसत ।
वितर्कः समभूत् तेषाम् त्रिषु अधीशेषु कः महान् ॥

शब्दार्थ—

सरस्वत्याः	२.	सरस्वती नदी के	वितर्कः	८.	वाद-विवाद
तटे	३.	तट पर	समभूत्	९.	चल पड़ा कि
राजन्	१.	हे राजन् !	तेषाम्	७.	उन लोगों में
ऋषयः	४.	ऋषिगण	त्रिषु	१०.	तीनों
सत्रम्	५.	यज्ञ	अधीशेषु	११.	अधीश्वरों में
आसत् ।	६.	कर रहे थे (वहाँ	कः महान् ॥	१२.	सबसे बड़ा कौन है

श्लोकार्थ—हे राजन् ! सरस्वती नदी के तट पर ऋषिगण यज्ञ कर रहे थे । वहाँ उन लोगों में वाद-विवाद चल पड़ा कि तीनों अधीश्वरों में सबसे बड़ा कौन है ?

द्वितीयः श्लोकः

तस्य जिज्ञासया ते वै भृगुं ब्रह्मसुतं नृप ।
तज्ज्ञप्त्यै प्रेषयामासुः सोऽभ्यगगद् ब्रह्मणः सभाम् ॥२॥

पदच्छेद— तस्य जिज्ञासया ते वै भृगुम् ब्रह्मसुतम् नृप ।
तत् ज्ञप्त्यै प्रेषयामासुः सः अभ्यगगत् ब्रह्मणः सभाम् ॥

शब्दार्थ—

तस्य	२.	उसे	तत्	८.	उसका
जिज्ञासया	३.	जानने की इच्छा से	ज्ञप्त्यै	९.	पता लगाने के लिये
ते वै	४.	उन लोगों ने	प्रेषयामासुः	१०.	भेजा
भृगुम्	७.	भृगु को	सः	११.	वे
ब्रह्म	५.	ब्रह्मा के	अभ्यगगात्	१४.	गये
सुतम्	६.	पुत्र	ब्रह्मणः	१२.	ब्रह्मा की
नृप ।	१.	हे राजन् !	सभाम् ॥	१३.	सभा में

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उसे जानने की इच्छा से उन लोगों ने ब्रह्मा के पुत्र भृगु को उसका पता लगाने के लिये भेजा ॥

तृतीयः श्लोकः

न तस्मै प्रह्वणं स्तोत्रं चक्रे सत्त्वपरीक्षया।
तस्मै चुक्रोध भगवान् प्रज्वलन् स्वेन तेजसा ॥३॥

पदच्छेद— न तस्मै प्रह्वणम् स्तोत्रम् चक्रे सत्त्व परीक्षया।
तस्मै चुक्रोध भगवान् प्रज्वलन् स्वेन तेजसा ॥

शब्दार्थ—

न तस्मै	३. न उन्हें	तस्मै	११. उन पर
प्रह्वणम्	४. नमस्कार किया और	चुक्रोध	१२. क्रोध किया
स्तोत्रम्	५. न स्तुति ही	भगवान्	१०. भगवान् ब्रह्मा ने
चक्रे	६. की	प्रज्वलन्	९. जलते हुये
सत्त्व	१. पराक्रम की	स्वेन्	७. अपने
परीक्षया।	२. परीक्षा करने के लिये	तेजसा ॥	८. तेज से

श्लोकार्थ—पराक्रम की परीक्षा करने के लिये न उन्हें नमस्कार किया और न तो स्तुति ही की। अपने तेज से जलते हुये भगवान् ब्रह्मा ने उन पर क्रोध किया।

चतुर्थः श्लोकः

स आत्मन्युत्थितं मन्युमात्मजायात्मना प्रभुः।
अशीशमद् यथा वह्निं स्वयोन्या वारिणाऽऽत्मभूः ॥४॥

पदच्छेद— सः आत्मनि उत्थितम् मन्युम् आत्मजाय आत्मना प्रभुः।
अशीशमत् यथा वह्निम् स्वयोन्या वारिणा आत्मभूः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उन	अशीशतम्	९. शान्त कर लिया
आत्मनि	५. अपने मन में	यथा	१०. जिस प्रकार
उत्थितम्	६. उठे हुये	वह्निम्	१२. अग्नि को
मन्युम्	७. क्रोध को (वैसे ही)	स्वयोन्या	११. अरणि से उत्पन्न
आत्मजाय	४. पुत्र के प्रति	वारिणा	१३. जल शान्त कर देता है
आत्मना	८. भीतर ही भीतर	आत्मभूः ॥	३. ब्रह्मा जी ने
प्रभुः।	२. समर्थ		

श्लोकार्थ—उन समर्थ ब्रह्माजी ने पुत्र के प्रति अपने मन में उठे हुये क्रोध को वैसे ही भीतर ही भीतर शान्त कर लिया जिस प्रकार अरणी से उत्पन्न अग्नि को जलशान्त कर देता है ॥

पञ्चमः श्लोकः

ततः कैलासमगमत् स तं देवो महेश्वरः ।
परिरब्धुं समारेभे उत्थाय भ्रातरं मुदा ॥५॥

पदच्छेद— ततः कैलासम् अगमत् सः तम् देवः महेश्वरः ।
परि अरब्धुम् समारेभे उत्थाय भ्रातरम् मुदा ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	महेश्वरः ।	६.	शङ्कर
कैलासम्	३.	कैलास पर	परिअरब्धुम्	११.	आलिंगन
अगमत्	४.	गये	समारेभे	१२.	करने लगे
सः	२.	वे	उत्थाय	७.	उठकर
तम्	८.	उन	भ्रातरम्	९.	भाई का
देवः	५.	भगवान्	मुदा ॥	१०.	हर्ष से

श्लोकार्थ--तदनन्तर वे कैलास पर गये । भगवान् शङ्कर उठकर उन भाई का हर्ष से आलिंगन करने लगे ॥

षष्ठः श्लोकः

नैच्छत्त्वमस्युत्पथग इति देवश्चुकोप ह ।
शूलमुद्यम्य तं हन्तुमारेभे तिग्मलोचनः ॥६॥

पदच्छेद— न ऐच्छत् त्वम् असि उत्पथगः इति देवः चुकोप ह ।
शूलम् उद्यम्य तम् हन्तुम् आरेभे तिग्मलोचनः ॥

शब्दार्थ—

न	१.	भृगु ने आलिंगन नहीं	शूलम्	९.	त्रिशूल
ऐच्छत्	२.	किया (और कहा)	उद्यम्य	१०.	उठाकर
त्वम्	३.	तुम	तम् हन्तुम्	११.	उन्हें मारने के लिये
असि उत्पथगः	४.	कुमार्गगामी हो	आरेभे	१२.	दौड़े
इतिदेवः	५.	इस पर महादेव जी	तिग्म	७.	तीक्ष्ण
चुकोपह ।	६.	कुपित हो गये	लोचनः ॥	८.	नेत्र वाले (रुद्र)

श्लोकार्थ—भृगु जी ने आलिंगन नहीं किया और कहा कि तुम कुमार्गगामी हो । इस पर महादेव जी कुपित हो गये । तीक्ष्ण नेत्रवाले रुद्र त्रिशूल उठाकर उन्हें मारने के लिये दौड़े ॥

सप्तमः श्लोकः

पतित्वा पादयोर्देवी सान्त्वयामास तं गिरा ।
अथो जगाम वैकुण्ठं यत्र देवो जनार्दनः ॥७॥

पदच्छेद— पतित्वा पादयोः देवी सान्त्वयामास तम् गिरा ।
अथो जगाम् वैकुण्ठम् यत्र देवः जनार्दनः ।।

शब्दार्थ—

पतित्वा	३. गिरकर	अथो	७. तदनन्तर (वे)
पादयोः	२. उनके पैरों पर	जगाम्	६. चले गये
देवी	१. सती ने	वैकुण्ठम्	८. वैकुण्ठ में
सान्त्वयामास	६. शान्त किया	यत्र	१०. जहाँ
तम्	४. उन्हें	देवः	१२. भगवान् रहते हैं
गिरा ।	५. अनुनय विनय करके	जनार्दनः ।।	११. जनार्दन

श्लोकार्थ—सती ने उनके पैरों पर गिरकर उन्हें अनुनय विनय करके शान्त किया । तदनन्तर वे वैकुण्ठ में चले गये, जहाँ जनार्दन भगवान् रहते हैं ।।

अष्टमः श्लोकः

शयानं श्रिय उत्सङ्गे पदा वक्षस्यताडयत् ।
तत उत्थाय भगवान् सह लक्ष्म्या सतां गतिः ॥८॥

पदच्छेद— शयानं श्रिय उत्सङ्गे पदा वक्षस्य ताडयत् ।
ततः उत्थाय भगवान् सह लक्ष्म्या सताम् गतिः ।।

शब्दार्थ—

शयानम्	३. सोते हुये विष्णु के	ततः	७. तब
श्रिय	१. लक्ष्मी की	उत्थाय	१२. उठ खड़े हुये
उत्सङ्गे	२. गोद में	भगवान्	६. भगवान् जनार्दन
पदा	५. पैर से	सह	११. साथ
वक्षस्य	४. वक्षः स्थल पर	लक्ष्म्या	१०. लक्ष्मी के
ताडयत् ।	६. मार दिया	सताम् गतिः ।।	८. सज्जनों के आश्रय

श्लोकार्थ—लक्ष्मी की गोद में सोते हुये विष्णु के वक्षःस्थल पर पैर से मार दिया । तब सज्जनों के आश्रय भगवान् जनार्दन लक्ष्मी के साथ उठ खड़े हुये ।।

नवमः श्लोकः

स्वतल्पादवरुह्याथ ननाम शिरसा मुनिम् ।
आह ते स्वागतं ब्रह्मन् निषीदात्रासने क्षणम् ।
अजानतामागतान् वः क्षन्तुमर्हथ नः प्रभो ॥९॥

पदच्छेद— स्वतल्पात् अवरुह्य अथ ननाम् शिरसा मुनिम् ।
आह ते स्वागतम् ब्रह्मन् निषीद अत्र आसने क्षणम् ।
अजानताम् आगतान् वः क्षन्तुम् अर्हथ नः प्रभो ॥

शब्दार्थ—

स्वतल्पात्	२.	अपनी शय्या से	निषीद	११.	बैठिये
अवरुह्य	३.	उतरकर	अत्र आसने	९.	इस आसन पर
अथ	१.	तदनन्तर	क्षणम्	१०.	क्षण भर
ननाम	५.	प्रणाम किया (और)	अजानताम्	१४.	न जानते हुये
शिरसामुनिम्	४.	मुनि को सिर से	आगतान् वः	१३.	आपको आये हुये
आह	६.	कहा	क्षन्तुम्अर्हथ	१६.	आप क्षमा करने योग्य हैं
ते स्वागतम्	८.	आपका स्वागत है	नः	१५.	हमें
ब्रह्मन् ।	७.	हे ब्रह्मन्	प्रभो ॥	१२.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—तदनन्तर अपनी शय्या से उतर कर मुनि को सिर से प्रणाम किया और कहा कि हे ब्रह्मन् आपका स्वागत् है । इस आसन पर क्षण भर बैठिये । हे प्रभो ! आपको आये हुये न जानते हुये हमें आप क्षमा करने योग्य हैं ॥

दशमः श्लोकः

अतीव कोमलौ तात चरणौ ते महामुने ।
इत्युक्त्वा विप्रचरणौ मर्दयन् स्वेन् पाणिना ॥१०॥

पदच्छेद— अतीव कोमलौ तात चरणौ ते महामुने ।
इति उक्त्वा विप्र चरणौ मर्दयन् स्वेन पाणिना ॥

शब्दार्थ—

अतीव	५.	अत्यन्त	इति	७.	यह
कोमलौ	६.	कोमल हैं	उक्त्वा	८.	कहकर
तात	१.	हे तात	विप्र	१०.	ब्राह्मण के
चरणौ	४.	चरण	चरणौ	११.	दोनों चरणो को
ते	३.	आपके	मर्दयन्	१२.	सहलाने लगे
महामुने ।	२.	महामुने	स्वेनपाणिना॥	९.	अपने हाथ से

श्लोकार्थ—हे तात ! महामुने आपके चरण अत्यन्त कोमल हैं यह कहकर अपने हाथ से ब्राह्मण के दोनों चरणों को सहलाने लगे ॥

एकादशः श्लोकः

पुनीहि सहलोकं मां लोकपालांश्च मद्गतान् ।
पदोदकेन भवतस्तीर्थानां तीर्थकारिणा ॥११॥

पदच्छेद— पुनीहि सहलोकम् माम् लोकपालान् च मत् गतान् ।
पाद उदकेन भवतः तीर्थानाम् तीर्थ चरणौ ॥

शब्दार्थ—

पुनीहि	१२.	पवित्र कीजिये	पाद	२.	चरणों का
सहलोकम्	७.	लोक सहित	उदकेन	३.	जल
माम्	८.	मुझे	भवतः	१.	आपके
लोकपालान्	११.	लोकपालों को	तीर्थानाम्	४.	तीर्थों को भी
च मत्	९.	और मेरे	तीर्थ	५.	तीर्थ
गतान् ।	१०.	अन्दर रहने वाले	कारिणा ॥	६.	बनाने वाला है (इससे)

श्लोकार्थ—हे मुनि ! आपके चरणों का जल तीर्थों को भी तीर्थ बनाने वाला है। इससे लोकसहित मुझे और मेरे अन्दर रहने वाले लोकपालों को पवित्र कीजिये ॥

द्वादशः श्लोकः

अद्याहं भगवँल्लक्ष्म्या आसमेकान्तभाजनम् ।
वत्स्यत्युरसि मे भूतिर्भवत्पादहतांहसः ॥१२॥

पदच्छेद— अद्य अहम् भगवान् लक्ष्म्या आसम् एकान्त भाजनम् ।
वत्स्यसि उरसि मे भूतिः भवत् पाद हत अंहसः ॥

शब्दार्थ

अद्य	२.	आज	वत्स्यसि	१४.	निवास करेगी
अहम्	३.	मैं	उरसि मे	१२.	मेरे वृक्षःस्थल पर
भगवन्	१.	हे भगवन् !	भूतिः	१३.	लक्ष्मी (सदा)
लक्ष्म्या	४.	लक्ष्मी का	भवत्	८.	आपके
आसम्	७.	हो गया	पाद	९.	चरण से
एकान्त	५.	एकमात्र	हत	१०.	विनाश
भाजनम् ।	६.	आश्रय	अंहसः ॥	११.	पापवाले

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! आज मैं लक्ष्मी का एकमात्र आश्रय हो गया। आपके चरण से विनाश पाप वाले मेरे वक्षःस्थल पर लक्ष्मी सदा निवास करेगी ॥

त्रयोदशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं ब्रुवाणे वैकुण्ठे भृगुस्तन्मन्द्रया गिरा।
निर्वृतस्तर्पितस्तूष्णीं भक्त्युत्कण्ठोऽश्रुलोचनः ॥१३॥

पदच्छेद— एवम् ब्रुवाणे वैकुण्ठे भृगुः तत मन्द्रया गिरा।
निर्वृतः तर्पित तुष्णीम् भक्ति उत्कण्ठः अश्रुलोचनः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२. इस प्रकार	निवृतः	८ परम सुखी और
ब्रुवाणे	३. कहने पर	तर्पित	९. तृप्त हो गये
वैकुण्ठे	१. भगवान् के	तूष्णीम्	१४. वे चुप हो गये
भृगुः	४. भृगु जी	भक्ति	१०. भक्ति के उद्रेक से
तत्	५. उनकी	उत्कण्ठः	११. गला भर आया
मन्द्रया	६. गम्भीर	अश्रु	१३. आँसू छलक आये और
गिरा।	७. वाणी से	लोचनः ॥	१२. आँखों में

श्लोकार्थ—भगवान् के इस प्रकार कहने पर भृगुजी उनकी गम्भीर वाणी से परम सुखी और तृप्त हो गये। उनका गला भर आया आँखों में आँसू छलक आये और वे चुप हो गये ॥

चतुर्दशः श्लोकः

पुनश्च सत्रमाव्रज्य मुनीनां ब्रह्मवादिनाम्।
स्वानुभूतमशेषेण राजन् भृगुरवर्णयत् ॥१४॥

पदच्छेद— पुनः च सत्रम् आव्रज्य मुनीनाम् ब्रह्मवादिनाम्।
स्व अनुभूतम् अशेषेण राजन् भृगुः अवर्णयत् ॥

शब्दार्थ—

पुनः च	२. पुनः	स्व	९. अपना
सत्रम्	७. सत्संग में	अनुभूतम्	१०. अनुभव
आव्रज्य	८. आकर	अशेषेण	११. सम्पूर्ण रूप से
मुनीनाम्	६. मुनियों के	राजन्	१. हे राजन्!
ब्रह्म	४. ब्रह्म	भृगुः	३. भृगु जी ने
वादिनाम्।	५. वादी	अवर्णयत् ॥	१२. कह सुनाया

श्लोकार्थ—हे राजन्! पुनः भृगुजी ने ब्रह्मवादी मुनियों के सत्सङ्ग में आकर अपना अनुभव सम्पूर्ण रूप से कह सुनाया ॥

पञ्चदशः श्लोकः

तन्निशम्याथ मुनयो विस्मिता मुक्तसंशयाः ।
भूयांसं श्रद्दधुर्विष्णुं यतः शान्तिर्यतोऽभयम् ॥१५॥

पदच्छेद— तत् निशम्य अथ मुनयः विस्मिताः मुक्त संशयाः ।
भूयां सम् श्रद्दधुः विष्णुम् यतः शान्तिः यतः अभयम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	२. वह	भूयांसम्	९. सबसे अधिक
निशम्य	३. सुनकर	श्रद्दधुः	१०. श्रद्धा करने लगे
अथ	१. तदनन्तर	विष्णुम्	८. वे विष्णु पर
मुनयः	४. मुनिजन	यतः	११. क्योंकि विष्णु
विस्मिताः	५. आश्चर्य चकित एवम्	शान्ति	१२. शान्ति
मुक्त	७. रहित हो गये	यतः	१३. और
संशयाः ।	६. सन्देह से	अभयम् ॥	१४. निर्भयता के उद्गम स्थान हैं

श्लोकार्थ—तदनन्तर यह सुनकर मुनिजन आश्चर्यचकित एवम् सन्देह से रहित हो गये । वे विष्णु पर सबसे अधिक श्रद्धा करने लगे । क्योंकि विष्णु शान्ति और निर्भयता के उद्गम स्थान हैं ॥

षोडशः श्लोकः

धर्मः साक्षाद् यतो ज्ञानं वैराग्यं च तदन्वितम् ।
ऐश्वर्यं चाष्टधा यस्माद् यशश्चात्ममलापहम् ॥१६॥

पदच्छेद— धर्मः साक्षात् यतः ज्ञानम् वैराग्यम् च तत् अन्वितम् ।
ऐश्वर्यम् च आष्टधा यस्मात् यशः च आत्म मल अपहम् ॥

शब्दार्थ—

धर्मः	३. धर्म	ऐश्वर्यम्	९. ऐश्वर्य और
साक्षात्	२ साक्षात्	अष्टधा	८. आठ प्रकार के
यतः	१. जिन (विष्णु से)	यस्मात्	१०. जिनसे
ज्ञानम्	४. ज्ञान	यशः	१४. यश प्राप्त होता है
वैराग्य	५. वैराग्य	च आत्म	११. चित्त के
च तत्	६. और उससे	मल	१२. मल को
अन्वितम् ।	७. युक्त	अपहम् ॥	१३. दूर करने वाला

श्लोकार्थ—जिन विष्णु से साक्षात् धर्म, ज्ञान, वैराग्य और उससे युक्त आठ प्रकार के ऐश्वर्य और जिनसे चित्त के मल को दूर करने वाला यश प्राप्त होता है ॥

सप्तदशः श्लोकः

मुनीनां न्यस्तदण्डानां शान्तानां समचेतसाम् ।
अकिञ्चनानां साधूनां यमाहुः परमां गतिम् ॥१७॥

पदच्छेद— मुनीनाम् न्यस्त दण्डानाम् शान्तानाम् समचेतसाम् ।
अकिञ्चनानाम् साधूनाम् यम आहुः परमाम् गतिम् ॥

शब्दार्थ—

मुनीनाम्	७.	मुनियों की	अकिञ्चनानाम्	३.	अकिञ्चन और
न्यस्त	४.	सबको	साधूनाम्	६.	साधुओं की एवम्
दण्डानाम्	५.	अभय देने वाले	यम आहुः	१०.	जिन्हें कहा जाता है
शान्तानाम्	१.	शान्त और	परमाम्	८.	परम
समचेतसाम् ।	२.	समचित्त	गतिम् ॥	९.	गति

श्लोकार्थ—शान्त और समचित्त अकिञ्चन और सबको अभय देने वाले साधुओं की एवम् मुनियों की परम गति जिन्हें कहा जाता है ॥

अष्टादशः श्लोकः

सत्त्वं यस्य प्रिया मूर्तिर्ब्राह्मणास्त्विष्टदेवताः ।
भजन्त्यनाशिषः शान्ता यं वा निपुणबुद्धयः ॥१८॥

पदच्छेद— सत्त्वम् यस्य प्रिया मूर्तिः ब्राह्मणाः तु इष्ट देवताः ।
भजन्ति अनाशिषः शान्ताः यम् वा निपुण बुद्धयः ॥

शब्दार्थ—

सत्त्वम्	४.	सत्त्वमयी	भजन्ति	१४.	भजन करते हैं
यस्य	१.	जिनकी	अनाशिषः	१०.	निष्काम
प्रिया	२.	प्रिय	शान्ताः	११.	शान्त और
मूर्तिः	३.	मूर्ति है	यम्	९.	जिनका
ब्राह्मणाः	७.	ब्राह्मण	वा	८.	अथवा
तु इष्ट	५.	और इष्ट	निपुण	१२.	निपुण
देवताः ।	६.	देव हैं	बुद्धयः ॥	१३.	बुद्धि सम्पन्न लोग

श्लोकार्थ—जिनकी प्रिय मूर्ति है सत्त्वमयी और इष्टदेव हैं ब्राह्मण अथवा जिनका निष्काम, शान्त और निपुण बुद्धि सम्पन्न लोग भजन करते हैं ॥

एकोनविंशः श्लोकः

त्रिविधाकृतयस्तस्य राक्षसा असुराः सुराः ।
गुणिन्या मायया सृष्टाः सत्त्वं तत्तीर्थसाधनम् ॥१९॥

पदच्छेद— त्रिविधा आकृतयः तस्य राक्षसाः सुराः ।
गुणिन्या मायया सृष्टाः सत्त्वम् तत् तीर्थ साधनम् ॥

शब्दार्थ—

त्रिविधा	७.	तीन प्रकार की	गुणिन्याः	१.	भगवान् की गुणमयी
आकृतयः	८.	मूर्तियों की	मायया	२.	माया ने
तस्य	३.	उनकी	सृष्टाः	९.	सृष्टि कर दी है इसमें
राक्षसाः	४.	राक्षस	सत्त्वम्	१०.	सत्त्वमयी, देवमूर्ति ही
असुराः	५.	असुर ही	तत् तीर्थ	११.	उनकी प्राप्ति का
सुराः ।	६.	देवता रूपी	साधनम् ॥	१२.	साधन है

श्लोकार्थ—भगवान् की गुणमयी माया ने उनकी राक्षस, असुर और देवता रूपी तीन प्रकार की मूर्तियों की सृष्टि कर दी है। इनमें सत्त्वमयी, देवमूर्ति ही उनकी प्राप्ति का साधन है ॥

विंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एवं सारस्वता विप्रा नृणां संशयनुत्तये ।
पुरुषस्य पदाम्भोजसेवया तद्गतिं गताः ॥२०॥

पदच्छेद— एवम् सारस्वताः विप्राः नृणाम् संशय नुत्तये ।
पुरुषस्य पदाम्भोज सेवया तत् गतिम् गताः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	पुरुषस्य	७.	उन्होंने भगवान् के
सारस्वताः	२.	सरस्वती तट निकट	पदाम्भोज	८.	चरण कमलों की
विप्राः	३.	ब्राह्मणों ने	सेवया	९.	सेवा से
नृणाम्	४.	मनुष्यों का	तत्	१०.	उनकी
संशय	५.	संशय	गतिम्	११.	परम गति को
नुत्तये ।	६.	मिटाने के लिये ऐसा किया था	गताः ॥	१२.	प्राप्त किया

श्लोकार्थ—इस प्रकार सरस्वती तट निवासी ब्राह्मणों ने मनुष्यों का संशय मिटाने के लिये ऐसा किया था। उन्होंने भगवान् के चरण कमलों की सेवा से उनकी परम गति को प्राप्त किया ॥

एकविंशः श्लोकः

सूत उवाच—इत्येन्मुनितनयास्यपद्मगन्धपीयूषं भवभयभित् परस्य पुंसः ।
सुश्लोकं श्रवणपुटैः पिबत्यभीक्ष्णं पान्थोऽध्वभ्रमणपरिश्रमं जहाति ॥२१

पदच्छेद— इति एतत् मुनितनयास्य पद्मगन्ध पीयूषम् भवभयभित् परस्य पुंसः ।
सुश्लोकम् श्रावणपुटैः पिबत्यभीक्षणम् पान्थः अध्वभ्रमणपरिश्रमम् जहाति ॥

शब्दार्थ—

इति एतत्	२.	यह पूर्णोक्त	सुश्लोकम्	३.	कीर्ति कथा
मुनि	४.	व्यास-	श्रवणपुटैः	१०.	अपने कानों के दोनों से
तनया अस्य	५.	पुत्र शुकदेव के	पिबति	११.	पान करता है (वह)
पद्मगन्ध	६.	मुख से निकली	अभीक्षणम्पान्थः	९.	जो मनुष्य निरन्तर इसका
पीयूषम्	७.	अमृतमयी	अध्वभ्रमण	१२.	जगत में घूमने का
भवभयभित्	८.	संसार के भय को मिटाने वाली है	परिश्रमम्	१३.	परिश्रम
परस्य पुंसः ।	१.	श्रेष्ठ पुरुष पुरुषोत्तम की	जहाति ॥	१४.	छोड़ देता है

श्लोकार्थ—श्रेष्ठ पुरुष पुरुषोत्तम की यह पूर्वोक्त कीर्ति कथा व्यास पुत्र शुकदेव के मुख से निकली अमृतमयी संसार के भय को मिटाने वाली है । जो मनुष्य निरन्तर इसका अपने कानों के दोनों के पान करता है वह जगत में घूमने का परिश्रम छोड़ देता है ॥

द्वाविंशः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—एकदा द्वारवत्यां तु विप्रपत्न्याः कुमारकः ।
जातमात्रो भुवं स्पृष्टवा ममार किल भारत ॥२२॥

पदच्छेद— एकदा द्वारवत्याम् तु विप्र पत्न्याः कुमारकः ।
जातमात्रः भुवम् स्पृष्टवा ममार किल भारत ॥

शब्दार्थ—

एकदा	२.	एक बार	जातमात्रः	७.	उत्पन्न होते ही
द्वारवत्याम्	३.	द्वारकापुरी में	भुवम्	८.	भूमि का
तु विप्र	४.	किसी ब्राह्मण	स्पृष्टवा	९.	स्पर्श करते ही
पत्न्याः	५.	पत्नी का	ममार	१०.	मर गया
कुमारकः ।	६.	बालक	किलभारत ॥	१.	हे परीक्षित ! कहते हैं कि

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! कहते हैं कि एक बार द्वारकापुरी में किसी ब्राह्मण पत्नी का बालक उत्पन्न होते ही भूमिका स्पर्श करते ही मर गया ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

विप्रो गृहीत्वा मृतकं राजद्वार्युपधाय सः ।
इदं प्रोवाच विलपन्नातुरो दीनमानसः ॥२३॥

पदच्छेद — विप्रः गृहीत्वा मृतकम् राजद्वारि उपधाय सः ।
इदम् प्रोवाच विलपन् आतुरः दीनमानसः ॥

शब्दार्थ—

विप्रः	२.	ब्राह्मण (बालक का)	इदम्	११.	यह
गृहीत्वा	४.	लेकर	प्रोवाच	१२.	कहने लगा
मृतकम्	३.	मृत शरीर	विलपन्	१०.	विलाप करता हुआ
राजद्वारि	५.	राज भवन के द्वार पर	आतुरः	७.	आतुरता और
उपधाय	६.	रखकर	दीन	८.	दुःखी
सः ।	१.	वह	मानसः ।	९.	मन से

श्लोकार्थ—वह ब्राह्मण बालक का मृत शरीर लेकर राजभवन के द्वार पर रखकर आतुरता और दुःखी मन से विलाप करता हुआ यह कहने लगा ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

ब्रह्मद्विषः शठधियो लुब्धस्य विषयात्मनः ।
क्षत्रबन्धोः कर्मदोषात् पञ्चत्वं मे गतोऽर्भकः ॥२४॥

पदच्छेद — ब्रह्मद्विषः शठधियः लुब्धस्य विषय आत्मनः ।
क्षत्र बन्धोः कर्मदोषात् पञ्चत्वम् मे गतः अर्भकः ॥

शब्दार्थ—

ब्रह्म	१.	ब्राह्मण	क्षत्रबन्धो	८.	अधम राजा के
द्विषः	२.	द्रोही	कर्म	९.	कर्म
शठ	३.	दुष्ट	दोषात्	१०.	दोष से
धियः	४.	बुद्धि वाले	पञ्चत्वम्	१३.	मृत्यु को
लुब्धस्य	५.	लोभी	मे	११.	मेरा
विषय	६.	विषयासक्त	गतः	१४.	प्राप्त हुआ है
आत्मनः ।	७.	चित्त वाले	अर्भकः ॥	१२.	बालक

श्लोकार्थ—ब्राह्मण द्रोही दुष्ट बुद्धि वाले लोभी विषयासक्त चित्त वाले अधम राजा के कर्म दोष से मेरा बालक मृत्यु को प्राप्त हुआ है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

हिंसाविहारं नृपतिं दुःशीलमजितेन्द्रियम् ।
प्रजा भजन्त्यः सीदन्ति दरिद्रा नित्यदुःखिताः ।।२५।।

पदच्छेद— हिंसा विहारम् नृपतिं दुःशीलम् अजितेन्द्रियम् ।
प्रजाः भजन्त्यः सीदन्ति दरिद्रा नित्यदुखिताः ।।

शब्दार्थ—

हिंसा	१.	हिंसा	प्रजा	७.	प्रजायें
विहारम्	२.	परायण	भजन्त्यः	६.	सेवा करने वाली
नृपतिम्	५.	राजा की	सीदन्ति	१०.	सङ्कट में पड़ती हैं
दुःशीलम्	३.	दुःशील और	दरिद्रा	८.	दरिद्र तथा
अजितेन्द्रियम् ।	४.	अजितेन्द्रिय	नित्यदुःखिताः ।।	९.	नित्य दुःखित होकर

श्लोकार्थ—हिंसा परायण दुःशील और अजितेन्द्रिय राजा की सेवा करने वाली प्रजायें दरिद्र तथा नित्य दुःखित होकर सङ्कट में पड़ती हैं ।।

षड्विंशः श्लोकः

एवं द्वितीयं विप्रर्षिस्तृतीयं त्वेवमेव च ।
विसृज्य स नृपद्वारि तां गाथां समगायत ।।२६।।

पदच्छेद— एवम् द्वितीयम् विप्रर्षिः तृतीयम् तु एव मेव च ।
विसृज्य सः नृप द्वारि ताम् गाथाम् समगायत ।।

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	विसृज्य	९.	मृत शरीर रखकर
द्वितीयम्	४.	दूसरे और	सः	२.	वह
विप्रर्षि	३.	ऋषि तुल्य ब्राह्मण	नृपद्वारि	८.	राजद्वार पर
तृतीयम्	५.	तीसरे बालक के भी	ताम्	१०.	वही
एव	६.	इसी तरह	गाथाम्	११.	बात
मेव च ।	७.	मर जाने पर	समगायत ।।	१२.	कह गया

श्लोकार्थ—इस प्रकार वह ऋषि तुल्य ब्राह्मण दूसरे तीसरे बालक के भी इसी तरह मर जाने पर राजद्वार पर मृत शरीर को रखकर वही बात कह गया ।।

सप्तविंशः श्लोकः

तामर्जुन उपश्रुत्य कर्हिचित् केशवान्तिके ।
परेते नवमे बाले ब्राह्मणं समभाषत ॥२७॥

पदच्छेद— ताम् अर्जुनः उपश्रुत्य कर्हिचित् केशव अन्तिके ।
परेते नवमे बाले ब्राह्मणम् समभाषत ॥

शब्दार्थ—

ताम्	५. वह बात	परेते	९. मर जाने पर
अर्जुन	४ अर्जुन ने	नवमे	७. नवमें
उपश्रुत्य	६. सुनकर	बाले	८. बालक के
कर्हिचित्	१. किसी समय	ब्राह्मणम्	१०. ब्राह्मण से
केशव	२. श्रीकृष्ण के	समभाषत ॥	११. कहा
अन्तिके ।	३. पास बैठे हुये		

श्लोकार्थ—किसी समय श्रीकृष्ण के पास बैठे हुये अर्जुन ने यह बात सुनकर नवमें बालक के मर जाने पर ब्राह्मण से कहा ॥

अष्टविंशः श्लोकः

किंस्विद् ब्रह्मंस्त्वन्निवासे इह नास्ति धनुर्धरः ।
राजन्यबन्धुरेते वै ब्राह्मणाः सत्र आसते ॥२८॥

पदच्छेद— किंस्वित् ब्रह्मन् त्वत् निवासे इह न अस्ति धनुर्धरः ।
राजन्यबन्धुः एते वै ब्राह्मणाः सत्र आसते ॥

शब्दार्थ—

किंस्वित	५ क्या	राजन्यबन्धुः	७. क्षत्रिय
ब्रह्मन्	१. हे ब्रह्मन् !	एते	१०. यदुवंशी (क्या)
त्वत्	२. आपके निवास स्थान	वै	९. ये
निवासे	४. द्वारका में	ब्राह्मणाः	११. ब्राह्मण होकर
इह	३. इस	सत्र	१२. यज्ञ में
न अस्ति	८. नहीं हैं	आसते ॥	१३. बैठे हैं
धनुर्धरः ।	६. कोई धनुर्धारी		

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! आपके निवास स्थान इस द्वारका में क्या कोई धनुर्धारी क्षत्रिय नहीं है । ये यदुवंशी क्या ब्राह्मण होकर यज्ञ में बैठे हैं ॥

एकोनत्रिंशः श्लोकः

धनदारात्मजापृक्ता यत्र शोचन्ति ब्राह्मणाः ।
ते वै राजन्यवेषेण नटा जीवन्त्यसुम्भराः ॥२९॥

पदच्छेद— धन दारा आत्मज अपृक्ता यत्र शोचन्ति ब्राह्मणाः ।
ते वै राजन्य वेषेण नटा जीवन्ति असुम्भराः ॥

शब्दार्थ—

धन	२.	धन	ते वै	८.	वे राजा
दारा	३.	पत्नी और	राजन्य	९.	क्षत्रिय के
आत्मज	४.	पुत्र से	वेषेण	१०.	वेष में
अपृक्ता	५.	रहित होकर	नटा	११.	नट होकर
यत्र	१.	जहाँ	जीवन्ति	१३.	व्यर्थ ही जीते हैं
शोचन्ति	७.	शोक करते हैं	असुम्भरा ॥	१२.	प्राण धारण किये हुये
ब्राह्मणा ।	६.	ब्राह्मण			

श्लोकार्थ—जहाँ धन, पत्नी और पुत्र से रहित होकर ब्राह्मण शोक करते हैं वे राजा क्षत्रिय के वेश में नट होकर प्राण धारण किये हुये व्यर्थ ही जीते हैं ॥

त्रिंशः श्लोकः

अहं प्रजा वां भगवन् रक्षिष्ये दीनयोरिह ।
अनिस्तीर्णप्रतिज्ञोऽग्निं प्रवेक्ष्ये हृतकल्मषः ॥३०॥

पदच्छेद— अहम् प्रजा वाम् भगवन् रक्षिष्ये दीनयोः इह ।
अनिस्तीर्ण प्रतिज्ञः अग्निम् प्रवेक्ष्ये हृतकल्मषः ॥

शब्दार्थ—

अहम्	२.	मैं	अनिस्तीर्ण	९.	पूरी न कर सका तो
प्रजा	६.	सन्तानों की	प्रतिज्ञः	८.	यदि प्रतिज्ञा
वाम्	४.	आप दोनों	अग्निम्	१०.	अग्नि में
भगवन्	१.	हे भगवन् !	प्रवेक्ष्ये	११.	प्रवेश कर जाऊँगा (और)
रक्षिष्ये	७.	रक्षा करूँगा	हृत	१३.	रहित हो जाऊँगा
दीनयोः	५.	दुखियों की	कल्मषः ॥	१२.	पाप से
इह ।	३.	यहाँ			

श्लोकार्थ—हे भगवन् ! मैं यहाँ आप दोनों दुःखियों की सन्तानों की रक्षा करूँगा । यदि प्रतिज्ञा पूरी न कर सका तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊँगा और पाप से रहित जाऊँगा ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

ब्राह्मण उवाच—सङ्कर्षणो वासुदेवः प्रद्युम्नो धन्विनां वरः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथो न त्रातुं शक्नुवन्ति यत् ॥३१॥

पदच्छेद— सङ्कर्षणः वासुदेवः प्रद्युम्नः धन्विनाम् वरः ।
अनिरुद्धः अप्रतिरथः न त्रातुम् शक्नुवन्ति यत् ॥

शब्दार्थ—

सङ्कर्षणः	१. बलराम जी	अनिरुद्ध	७. अनिरुद्ध भी
वासुदेवः	२. श्रीकृष्ण जी	अप्रतिरथः	६. अद्वितीय योद्धा
प्रद्युम्नः	५. प्रद्युम्न और	न	१०. नहीं
धन्विनाम्	३. धनुर्धारियों में	त्रातुम्	६. रक्षा करने में
वरः ।	४. श्रेष्ठ	शक्नुवन्ति	११. समर्थ हैं
		यत् ॥	८. जब

श्लोकार्थ—बलराम जी श्रीकृष्ण जी धनुर्धारियों में श्रेष्ठ प्रद्युम्न और अद्वितीय योद्धा अनिरुद्ध भी जब रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तत् कथं नु भवान् कर्म दुष्करं जगदीश्वरैः ।
चिकीर्षसि त्वं बालिश्यात् तन्न श्रद्दध्महे वयम् ॥३२॥

पदच्छेद— तत् कथम् नु भवान् कर्म दुष्करम् जगदीश्वरैः ।
चिकीर्षसि त्वम् बालिश्यात् तत् न श्रद्दध्महे वयम् ॥

शब्दार्थ—

तत्	१. तब	चिकीर्षसि	१२. करते हैं
कथम् नु	६. कैसे (करेंगे)	त्वम्	८. तुम्हारी
भवान्	५. आप	बालिश्यात्	६. मूर्खता है
कर्म	४. कर्म	तत्	७. यह
दुष्करम्	३. कठिन	न श्रद्दध्महे	११. विश्वास नहीं
जगदीश्वरैः ।	२. जगदीश्वरों के लिये भी	वयम् ॥	१०. हम

श्लोकार्थ—तब जगदीश्वरों के लिये भी कठिन कर्म आप कैसे करेंगे ? यह तुम्हारी मूर्खता है । हम विश्वास नहीं करते हैं ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

अर्जुन उवाच— नाहं सङ्कर्षणो ब्रह्मन् न कृष्णः कार्ष्णिरेव च ।
अहं वा अर्जुनो नाम गाण्डीवं यस्य वै धनुः ॥३३॥

पदच्छेद— न अहम् सङ्कर्षणः ब्रह्मन् न कृष्णः कार्ष्णिः एव च ।
अहम् वा अर्जुनः नाम गाण्डीवम् यस्य वैं धनुः ॥

शब्दार्थ—

न अहम्	२.	मैं न तो	अहम् वा	७.	अथवा मैं
सङ्कर्षणः	३.	बलराम हूँ	अर्जुनः	९.	अर्जुन हूँ
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	नामगाण्डीवम्	१२.	नाम गाण्डोव है
न कृष्णः	४.	न कृष्ण हूँ	यस्य	१०.	जिसके
कार्ष्णिः	६.	कृष्ण पुत्र ही हूँ	वैं	८.	निश्चित रूप से
एव च ।	५.	और न ही	धनुः ॥	११.	धनुष का

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! मैं न तो बलराम हूँ । न कृष्ण हूँ और न ही कृष्ण पुत्र ही हूँ । अथवा मैं निश्चित रूप से अर्जुन हूँ जिसके धनुष का नाम गाण्डीव है ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

मावमंस्था मम ब्रह्मन् वीर्यं त्र्यम्बकतोषणम् ।
मृत्युं विजित्य प्रधने आनेष्ये ते प्रजां प्रभो ॥३४॥

पदच्छेद— माव मंस्था मम ब्रह्मन् वीर्यम् त्र्यम्बक तोषणम् ।
मृत्युम् विजित्य प्रधने आनेष्ये ते प्रजाम् प्रभो ॥

शब्दार्थ —

मा	७.	मत (कीजिये)	मृत्युम्	१०.	मृत्यु को
अवमंस्था	६.	तिरस्कार	विजित्य	११.	जीतकर
मम	४.	मेरे	प्रधने	९.	मैं युद्ध में
ब्रह्मन्	१.	हे ब्रह्मन् !	आनेष्ये	१४.	ला दूँगा
वीर्यम्	५.	बल-पौरुष का	ते	१२.	आपकी
त्र्यम्बक	२.	शङ्कर को	प्रजाम्	१३.	सन्तान
तोषणम् ।	३.	सन्तुष्ट करने वाले	प्रभो ॥	८.	हे प्रभो !

श्लोकार्थ—हे ब्रह्मन् ! शङ्कर को सन्तुष्ट करने वाले मेरे बल-पौरुष का तिरस्कार मत कीजिये । हे प्रभो ! मैं युद्ध में मृत्यु को जीतकर आपकी सन्तान ला दूँगा ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एवं विश्रम्भितो विप्रः फाल्गुनेन परंतप ।
जगाम स्वगृहं प्रीतः पार्थवीर्यं निशामयन् ॥३५॥

पदच्छेद— एवम् विश्रम्भितः विप्रः फाल्गुनेन परंतप ।
जगाम स्वगृहम् प्रीतः पार्थवीर्यम् निशामयन् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	२.	इस प्रकार	जगाम	१०.	चला गया
विश्रम्भितः	५.	विश्वास दिलाया गया (तब)	स्वगृहम्	९.	अपने घर
विप्रः	४.	ब्राह्मण को	प्रीतः	६.	प्रसन्न होकर
फाल्गुनेन	३.	अर्जुन के द्वारा	पार्थवीर्यम्	७.	अर्जुन के बल-पौरुष का
परंतप ।	१.	हे परीक्षित !	निशामयन् ॥	८.	बखान करता हुआ (वह ब्राह्मण)

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! इस प्रकार अर्जुन के द्वारा ब्राह्मण को विश्वास दिलाया गया तब प्रसन्न होकर अर्जुन के बल-पौरुष का बखान करता हुआ वह अपने घर,चला गया ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

प्रसूतिकाल आसन्ने भार्याया द्विजसत्तमः ।
पाहि पाहि प्रजां मृत्योरित्याहार्जुनमातुरः ॥३६॥

पदच्छेद— प्रसूतिकाल आसन्ने भार्यायाः द्विज सत्तमः ।
पाहि पाहि प्रजाम् मृत्योः इति आह अर्जुनम् आतुरः ॥

शब्दार्थ—

प्रसूतिकाले	२.	प्रसव का समय	पाहि पाहि	११.	बचाओ
आसन्ने	३.	निकट आने पर	प्रजाम्	९.	मेरी सन्तान को
भार्यायाः	१.	पत्नी के	मृत्योः	१०.	मृत्यु से
द्विज	४.	ब्राह्मण	इति आह	८.	यह कहा कि
सत्तमः ।	५.	श्रेष्ठ ने	अर्जुनम्	७.	अर्जुन से
			आतुरम् ॥	६.	आतुर होकर

श्लोकार्थ—पत्नी के प्रसव का समय निकट आने पर ब्राह्मण श्रेष्ठ ने आतुर होकर अर्जुन से यह कहा कि मेरी सन्तान को मृत्यु से बचाओ ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स उपस्पृश्य शुच्यम्भो नमस्कृत्य महेश्वरम् ।
दिव्यान्यस्त्राणि संस्मृत्य सज्यं गाण्डीवमाददे ॥३७॥

पदच्छेद— सः उपस्पृश्य शुचि अम्भः नमस्कृत्य महेश्वरम् ।
दिव्यानि अस्त्राणि संस्मृत्य सज्यम् गाण्डीवम् आददे ॥

शब्दार्थ—

सः	१. अर्जुन ने	दिव्यानि	७. दिव्य
उपस्पृश्य	४. आचमन करके	अस्त्राणि	८. अस्त्रों का
शुचि	२. शुद्ध	संस्मृत्य	९. स्मरण करके
अम्भः	३. जल से	सज्यम्	११. डोरी चढ़ाकर (उसे)
नमस्कृत्य	६. प्रणाम किया (फिर अनेक)	गाण्डीवम्	१०. गाण्डीव धनुष पर
महेश्वरम् ।	५. शङ्कर को	आददे ॥	१२. हाथ में धारण किया

श्लोकार्थ—अर्जुन ने शुद्ध जल से आचमन करके शङ्कर को प्रणाम किया । फिर अनेक दिव्य अस्त्रों का स्मरण करके गाण्डीव धनुष पर डोरी चढ़ाकर उसे हाथ में धारण किया ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

न्यरुणत् सूतिकागारं शरैर्नानास्त्रयोजितैः ।
तिर्यगूर्ध्वमधः पार्थश्चकार शरपञ्जरम् ॥३८॥

पदच्छेद— न्यरुणत् सूतिकागारम् शरैः नाना अस्त्र योजितैः ।
तिर्यक् ऊर्ध्वम् अधः पार्थः चकार शर पञ्जरम् ॥

शब्दार्थ—

न्यरुणत्	७. घेर दिया	तिर्यक्	१०. तिरछे
सूतिकागारम्	६. प्रसव गृह को	ऊर्ध्वम्	८. मानों ऊपर
शरैः	५. वाणों से	अधः	९. नीचे
नाना	२. अनेक	पार्थः	१. अर्जुन ने
अस्त्र	३. अस्त्रों से	चकार	१२. बना दिया
योजितैः ।	४. जोड़कर	शरपञ्जरम् ॥	११. वाणों का पिंजड़ा सा

श्लोकार्थ—अर्जुन ने अनेक अस्त्रों से जोड़कर वाणों से प्रसवग्रह को घेर दिया । मानों ऊपर नीचे तिरछे वाणों का पिंजड़ा सा बना दिया ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

ततः कुमारः संजातो विप्रपत्न्या रुदन् मुहुः ।
सद्योऽदर्शनमापेदे सशरीरो विहायसा ॥३९॥

पदच्छेद— ततः कुमारः संजातः विप्र पत्न्याः रुदन् मुहुः ।
सद्यः अदर्शनम् आपेदे सशरीरः विहायसा ॥

शब्दार्थ—

ततः	१. इसके बाद	मुहुः ।	६. बारम्बार
कुमारः	४. एक शिशु	सद्यः	८. तुरन्त ही वह
संजातः	५. उत्पन्न हुआ जो	अदर्शनम्	११. अदृश्य
विप्रः	२. ब्राह्मण की	आपेदे	१२. हो गया
पत्न्याः	३. पत्नी से	सशरीरः	९. सशरीर
रुदन्	७. रो रहा था	विहायसा ॥	१०. आकाश में

श्लोकार्थ—इसके बाद ब्राह्मण की पत्नी से एक शिशु उत्पन्न हुआ जो बारम्बार रो रहा था। तुरन्त ही वह सशरीर आकाश में अदृश्य हो गया ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

तदाऽऽह विप्रो विजयं विनिन्दन् कृष्णसन्निधौ ।
मौढ्यं पश्यत मे योऽहं श्रद्दधे क्लीबकत्थनम् ॥४०॥

पदच्छेद— तदा आह विप्रः विजयम् विनिन्दन् कृष्ण सन्निधौ ।
मौढ्यम् पश्यत मे यः अहम् श्रद्दधे क्लीब कत्थनम् ॥

शब्दार्थ—

तदा	१. तब	मौढ्यम्	९. मूर्खता तो
आह	७. कहा	पश्यत	१०. देखो
विप्रः	२. ब्राह्मण ने	मे	८. मेरी
विजयम्	५. अर्जुन को	यः अहम्	११. जो मैंने इस
विनिन्दन्	६. निन्दा करते हुये	श्रद्दधे	१४. विश्वास कर लिया
कृष्ण	३. श्रीकृष्ण के	क्लीब	१२. नपुंसक की
सन्निधौ ।	४. सामने ही	कत्थनम् ॥	१३. डींग भरी बातों पर

श्लोकार्थ—तब ब्राह्मण ने श्रीकृष्ण के सामने ही अर्जुन की निन्दा करते हुये कहा। मेरी मूर्खता तो देखो। जो मैंने इस नपुंसक की डींग भरी बातों पर विश्वास कर लिया ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

न प्रद्युम्नो नानिरुद्धो न रामो न च केशवः ।
यस्य शेकुः परित्रातुं कोऽन्यस्तदवितेश्वरः ॥४१॥

पदच्छेद— न प्रद्युम्नः न अनिरुद्धः न रामः न च केशवः ।
यस्य शेकुः परित्रातुम् कः अन्यः तत् अविता ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

न प्रद्युम्न.	१.	न प्रद्युम्न	शेकुः	८.	सके
न अनिरुद्धः	२.	न अनिरुद्ध	परित्रातुम्	७.	बचा
न रामः	३.	न बलराम	कः अन्यः	१०.	कौन दूसरा
न च	४.	और न	तत्	९.	उसको
केशवः ।	५.	श्रीकृष्ण ही	अवितः	११.	बचाने में
यस्य	६.	जिसे	ईश्वरः ॥	१२.	समर्थ हो सकता है

श्लोकार्थ—न प्रद्युम्न, न अनिरुद्ध, न बलराम और न श्रीकृष्ण ही जिसे बचा सके। उसको कौन दूसरा बचाने में समर्थ हो सकता है ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

धिगर्जुनं मृषावादं धिगात्मश्लाघिनो धनुः ।
दैवोपसृष्टं यो मौढ्यादानिनीषति दुर्मतिः ॥४२॥

पदच्छेद— धिक् अर्जुनम् मृषावादम् धिक् आत्मश्लाघिनः धनुः ।
दैव उपसृष्टम् यः मौढ्यात् आनिनीषति दुर्मतिः ॥

शब्दार्थ—

धिक्	३.	धिक्कार है	दैव	१०.	प्रारब्ध के द्वारा
अर्जुनम्	२.	अर्जुन को	उपसृष्टम्	११.	अलग किये गये को
मृषावादम्	१.	मिथ्या बोलने वाले	यः	७.	जो
धिक्	६.	धिक्कार है	मौढ्यात्	९.	मूढ़तावश
आत्मश्लाघिनः	४.	अपनी प्रसंशा करने वाले के	आनिनीषति	१२.	लौटा लाना चाहता है
धनुः ।	५.	धनुष को	दुर्मतिः ॥	८.	दुर्बुद्धि

श्लोकार्थ—मिथ्या बोलने वाले अर्जुन को धिक्कार है। अपनी प्रसंशा करने वाले के धनुष को धिक्कार है। जो दुर्बुद्धि मूढ़तावश प्रारब्ध के द्वारा अलग किये गये को लौटाना चाहता है ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

एवं शपति विप्रर्षौ विद्यामास्थाय फाल्गुनः ।
ययौ संयमनीमाशु यत्रास्ते भगवान् यमः ॥४३॥

पदच्छेद— एवम् शपति विप्र ऋषि विद्याम् आस्थाय फाल्गुनः ।
ययौ संयमनीम् आशु यत्र आस्ते भगवान् यमः ॥

शब्दार्थ—

एवम्	१.	इस प्रकार	ययौ	१०.	गये
शपति	४.	भला-बुरा कहने पर	संयमनीम्	९.	संयमनी पुरी में
विप्र	३.	ब्राह्मण के	आशु	८.	तत्काल
ऋषि	२.	ऋषि	यत्र	११.	जहाँ
विद्याम्	६.	योग विद्या का	आस्ते	१४.	रहते हैं
आस्थाय	७.	आश्रय लेकर	भगवान्	१२.	भगवान्
फाल्गुनः ।	५.	अर्जुन	यमः ॥	१३.	यमराज

श्लोकार्थ—इस प्रकार ऋषि ब्राह्मण के भला-बुरा कहने पर अर्जुन योग विद्या का आश्रय लेकर तत्काल संयमनी पुरी में गये । जहाँ भगवान् यमराज रहते हैं ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

विप्रापत्यमचक्षाणस्तत ऐन्द्रीमगात् पुरीम् ।
आग्नेयीं नैर्ऋतीं सौम्यां वायव्यां वारुणीमथ ।
रसातलं नाकपृष्ठं धिष्ण्यान्यन्यान्युदायुधः ॥४४॥

पदच्छेद— विप्र अपत्यम् अचक्षाणः तत् ऐन्द्रीम् अगात् पुरीम् ।
आग्नेयीम् नैर्ऋतीम् सौम्याम् वायव्याम् वारुणीम् अथ ।
रसातलम् नाकपृष्ठम् धिष्ण्यानि अन्यानि उदा युधः ॥

शब्दार्थ—

विप्रअपत्यम्	१.	वहाँ ब्राह्मण के बालक को	वायव्याम्	९.	वायु और
अचक्षाणः	२.	नहीं देखा	वारुणीम्	१०.	वरुण की
ततः	३.	तब (वे)	अथ	१२.	तत् पश्चात्
ऐन्द्रीम्	५.	इन्द्र की	रसातलम्	१३	पाताल
अगात् पुरीम् ।	११.	पुरियों में गये	नाकपृष्ठम्	१४.	स्वर्ग और
आग्नेयीम्	६.	अग्नि	धिष्ण्यानि	१६.	स्थानों में भी गये
नैर्ऋतीम्	७.	निर्ऋति	अन्यानि	१५.	दूसरे
सौम्याम्	८.	सोम	उदायुधः ॥	४.	शस्त्र लेकर

श्लोकार्थ—वहाँ पर ब्राह्मण के बालक को नहीं देखा । तब वे शस्त्र लेकर इन्द्र की, अग्नि, निर्ऋति, सोम, वायु, और वरुण की पुरियों में गये । तत्पश्चात् पाताल, स्वर्ग और दूसरे स्थानों में भी गये ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

ततोऽलब्धद्विजसुतो ह्यनिस्तीर्णप्रतिश्रुतः ।
अग्निं विविक्षुः कृष्णेन प्रत्युक्तः प्रतिषेधता ॥४५॥

पदच्छेद— ततः अलब्ध द्विज सुतः हि अनिस्तीर्ण प्रतिश्रुतः ।
अग्निम् विविक्षुः कृष्णेन प्रतिउक्तः प्रतिषेधता ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	तदनन्तर	अग्निम्	७.	अग्नि में
उपलब्ध	४.	न मिलने पर और	विविक्षुः	८.	प्रवेश करने के इच्छुक
द्विजः	२.	ब्राह्मण	कृष्णेन	१०.	श्री कृष्ण ने
सुतः हि	३.	पुत्र के	प्रति उक्तः	११.	अर्जुन से कहा
अनिस्तीर्ण	६.	पूरी न होने पर	प्रतिषेधता ॥	९.	रोकते हुये
प्रतिश्रुतः ।	५.	प्रतिज्ञा			

श्लोकार्थ—तदनन्तर ब्राह्मण पुत्र के न मिलने पर और प्रतिज्ञा पूरी न होने पर अग्नि में प्रवेश करने के इच्छुक (अर्जुन को) रोकते हुये श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

दर्शये द्विजसूनूंस्ते मावज्ञात्मानमात्मना ।
ये ते नः कीर्तिं विमलां मनुष्याः स्थापयिष्यन्ति ॥४६॥

पदच्छेद— दर्शये द्विज सूनूनम् ते मा अवज्ञ आत्मानम् आत्मना ।
ये ते नः कीर्तिम् विमलाम् मनुष्याः स्थापयिष्यन्ति ॥

शब्दार्थ—

दर्शये	४.	दिखाये देता हूँ	ये	८.	जो
द्विज	२.	ब्राह्मण के	ते	१०.	वे ही फिर
सूनून्	३.	पुत्रों को	नः	११.	हमारी
ते	१.	मैं तुम्हें	कीर्तिम्	१३.	कीर्ति को
मा अवज्ञ	७.	तिरस्कार मत करो	विमलाम्	१२.	निर्मल
आत्मानम्	६.	अपना	मनुष्याः	९.	मनुष्य (हमारी निन्दा कर रहे हैं)
आत्मना ।	५.	तुम अपने से	स्थापयिष्यन्ति ॥	१४.	स्थापित्य करेंगे

श्लोकार्थ—मैं तुम्हें ब्राह्मण के पुत्रों को दिखाये देता हूँ । तुम अपने से अपना तिरस्कार मत करो । जो मनुष्य हमारी निन्दा कर रहे हैं । वे ही फिर हमारी निर्मल कीर्ति को स्थापित करेंगे ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

इति संभाष्य भगवानर्जुनेन सहेश्वरः ।
दिव्यं स्वरथमास्थाय प्रतीचीं दिशमाविशत् ॥४७॥

पदच्छेद— इति संभाष्य भगवान् अर्जुनेन सहेश्वरः ।
दिव्यं स्वरथम् आस्थाय प्रतीचीम् दिशम् आविशत् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	स्व	६.	अपने
संभाष्य	४.	समझाकर	रथम्	८.	रथ पर
भगवान्	२.	भगवान् ने	आस्थाय	९.	सवार होकर
अर्जुनेन	५.	अर्जुन के साथ	प्रतीचीम्	१०.	पश्चिम
सहेश्वरः	१.	सर्वशक्तिमान्	दिशम्	११.	दिशा को
दिव्यम् ।	७.	दिव्य	आविशत् ॥	१२.	प्रस्थान किया

श्लोकार्थ—सर्व शक्तिमान भगवान् ने इस प्रकार समझाकर अर्जुन के साथ अपने दिव्य रथ पर सवार होकर पश्चिम दिशा को प्रस्थान किया ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

सप्त द्वीपान् सप्त सिन्धून् सप्तसप्तगिरीनथ ।
लोकालोकं तथातीत्य विवेश सुमहत्तमः ॥४८॥

पदच्छेद— सप्त द्वीपान् सप्त सिन्धून् सप्त-सप्त गिरीन् अथ ।
लोकालोकम् तथा अतीत्य विवेश सुमहत्तमः ॥

शब्दार्थ—

सप्तद्वीपान्	२.	सात द्वीप	लोकालोकम्	७.	लोकालोक पर्वत
सप्तसिन्धून्	३.	सात समुद्र	तथा	६.	और
सप्त-सप्त	४.	सात-सात	अतीत्य	८.	लाँघकर
गिरीन्	५.	पर्वतों वाले	विवेश	१०.	प्रवेश किया
अथ ।	१.	तदनन्तर	सुमहत्तमः ।	९.	घोर अन्धकार में

श्लोकार्थ—तदनन्तर सातद्वीप, सात समुद्र सात-सात पर्वतों वाले और लोकालोक पर्वत को लाँघकर घोर अन्धकार में प्रवेश किया ॥

एकोनपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तत्राश्वाः शैब्यसुग्रीवमेघपुष्पबलाहकाः ।
तमसि भ्रष्टगतयो बभूवुर्भरतर्षभ ॥४९॥

पदच्छेद— तत्र अश्वाः शैब्य सुग्रीव मेघ पुष्प बलाहकाः ।
तमसि भ्रष्ट गतयः बभूवुः भरतर्षभ ॥

शब्दार्थ—

तत्र	२.	वहाँ पर	तमसि	८.	घोर अन्धकार में
अश्वाः	७.	घोड़े	भ्रष्ट	१०.	भूलकर
शैब्य	३.	शैब्य	गतयः	९.	मार्ग
सुग्रीव	४.	सुग्रीव	बभूवुः	११.	भटकने लगे
मेघपुष्प	५.	मेघ पुष्प	भरतर्षभ	१.	हे परीक्षित् !
बलाहकः ।	६.	बलाहक नाम के			

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! वहाँ पर शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प बलाहक नाम के घोड़े घोर अन्धकार में मार्ग भूलकर भटकने लगे ॥

पञ्चाशत्तमः श्लोकः

तान् दृष्ट्वा भगवान् कृष्णो महायोगेश्वरेश्वरः ।
सहस्रादित्यसंकाशं स्वचक्रं प्राहिणोत् पुरः ॥५०॥

पदच्छेद-- तान् दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः महायोगेश्वर ईश्वरः ।
सहस्र आदित्य संकाशम् स्वचक्रम् प्राहिणोत् पुरः ॥

शब्दार्थ—

तान्	५.	उसे	सहस्र	७.	हजारों
दृष्ट्वा	६.	देखकर	आदित्य	८.	सूर्य के
भगवान्	३.	भगवान्	संकाशम्	९.	समान तेजस्वी
कृष्णः	४.	श्रीकृष्ण ने	स्वचक्रम्	१०.	अपने चक्र को
महायोगेश्वर	१.	योगेश्वरों के भी	प्राहिणोत्	१२.	चलने को कहा
ईश्वरः ।	२.	महान् ईश्वर	पुरः ॥	११.	आगे

श्लोकार्थ—योगेश्वरों के भी महान् ईश्वर भगवान् श्रीकृष्ण ने उसे देखकर हजारों सूर्य के समान तेजस्वी अपने चक्र को आगे चलने को कहा ॥

एकपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तमः सुघोरं गहनं कृतं महद् विदारयद् भूरितरेण रोचिषा ।
मनोजवं निर्विविशे सुदर्शनं गुणच्युतो रामशरो यथा चमूः ॥५१॥

पदच्छेद— तमः सुघोरम् गहनम् कृतम् महत् विदारयत् भूरितरेण रोचिषा ।
मनोजवम् निर्विविशे सुदर्शनम् गुणच्युतः रामशरः यथा चमूः ॥

शब्दार्थ—

तमः	७.	अन्धकार को अपने	मनोजवम्	१.	मन के समान तेज गति वाला
सुघोरम्	६.	अत्यन्त घोर	निर्विविशे	११.	प्रवेश करने लगा
गहनम्	५.	घने और	सुदर्शनम्	२.	सुदर्शन चक्र
कृतम्	३.	भगवान् के द्वारा उत्पन्न	गुण	१३.	धनुष की डोरी से
महत्	४.	महान्	च्युतः	१४.	छूटा हुआ
विदारयत्	१०.	चीरता हुआ (वैसे ही)	रामशरः	१५.	परशुराम का बाण
भूरितरेण	८.	अत्यधिक	यथा	१२.	जैसे
रोचिषा ।	९.	तेज से	चमूः ॥	१६.	राक्षसों की सेना में प्रविष्ट हुआ था

श्लोकार्थ—मन के समान तेज गति वाला सुदर्शन चक्र भगवान् के द्वारा उत्पन्न महान् घने और अत्यन्त घोर अन्धकार को अपने अत्यधिक तेज से चीरता हुआ वैसे ही प्रवेश करने लगा जैसे धनुष की डोरी से छूटा हुआ परशुराम का बाण राक्षसों की सेना में प्रविष्ट हुआ था ॥

द्विपञ्चाशत्तमः श्लोकः

द्वारेण चक्रानुपथेन तत्तमः परं परं ज्योतिरनन्तपारम् ।
समश्नुवानं प्रसमीक्ष्य फाल्गुनः प्रताडिताक्षोऽपिदधेऽक्षिणी उभे ॥५२॥

पदच्छेद— द्वारेण चक्र अनुपथेन तत् तमः परम्-परम् ज्योतिः अनन्त पारम् ।
समश्नुवानम् प्रसमीक्ष्य फाल्गुनः प्रताडित अक्षः अपिदधे अक्षिणी उभे ॥

शब्दार्थ —

द्वारेण	२.	द्वारा बतलाये हुये	समश्नुवानम्	९.	जगमगा रही थी
चक्र	१.	सुदर्शन चक्र के	प्रसमीक्ष्य	१०.	उसे देखकर
अनुपथेन	३.	मार्ग से (रथ)	फाल्गुनः	११.	अर्जुन की
तत् तमः	४.	उस अन्धकार की	प्रताडित	१३.	चौंधिया गईं (और)
परम् परम्	५.	अन्तिम सीमा पर पहुँचा	अक्षः	१२.	आँखें
ज्योतिः	८.	परम ज्योति	अपिदधे	१६.	बन्द कर दिये
अनन्त	६.	उसके आगे सर्वश्रेष्ठ	अक्षिणी	१५.	नेत्र
पारम् ।	७.	व्यापक	उभे ॥	१४.	उन्होंने अपने दोनों

श्लोकार्थ— सुदर्शन चक्र के द्वारा बतलाये हुये मार्ग से रथ उस अन्धकार की अन्तिम सीमा पर पहुँचा । उसके आगे सर्वश्रेष्ठ व्यापक परम् ज्योति जगमगा रही थी । उसे देखकर अर्जुन की आँखें चौंधिया गईं । और उन्होंने अपने दोनों नेत्र बन्द कर लिये ॥

त्रिपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ततः प्रविष्टः सलिलं नभस्वता बलीयसैजद्बृहदूर्मिभूषणम् ।
तत्राद्भुतं वै भवनं द्युमत्तमं भ्राजन्मणिस्तम्भसहस्रशोभितम् ॥५३॥

पदच्छेद— ततः प्रविष्टः सलिलम् नभस्वता बलीयसा एजत् बृहत् ऊर्मि भूषणम् ।
तत्र अद्भुतम् वै भवनम् द्युमत् तमम् भ्राजत् मणि स्तम्भ सहस्र शोभितम् ॥

शब्दार्थ—

ततः	१.	इसके बाद (रथ ने)	तत्र	९.	वहाँ पर
प्रविष्टः	३.	प्रवेश किया	अदभुतम्वै	११.	एक अद्भुत
सलिलम	२.	जल में	भवनम्	१२.	भवन था जो
नभस्वता	५.	आँधी	द्युमत्तमम्	१०.	अत्यन्त प्रकाशमान
बलीयसा	४.	बड़ी तेज	भ्राजत्मणि	१३.	चमकते हुये मणियों के
एजत्	६.	चलने के कारण उसमें	स्तम्भ	१५.	खम्भों से
बृहत् ऊर्मि	७.	बड़ी-बड़ी तरगें	सहस्र	१४.	हजारों
भूषणम् ।	८.	उठ रही थीं	शोभितम् ॥	१६.	शोभायमान था

श्लोकार्थ—इसके बाद रथ ने जल में प्रवेश किया । बड़ी तेज आँधी चलने के कारण उसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रहीं थीं । वहाँ पर एक अद्भुत अत्यन्त प्रकाशमान एक भवन था । जो चमकते हुये मणियों के हजारों खम्भों से शोभायमान था ॥

चतुःपञ्चाशत्तमः श्लोकः

तस्मिन् महाभीममनन्तमद्भुतं सहस्रमूर्धन्यफणामणिद्युभिः ।
विभ्राजमानं द्विगुणोल्बणेक्षणं सिताचलाभं शितिकण्ठजिह्वम् ॥५४॥

पदच्छेद— तस्मिन् महाभीमम् अनन्तम् अद्भुतम् सहस्रमूर्ध्नि फणामणि द्युभिः ।
विभ्राजमानम् द्विगुण उल्बण ईक्षणम् सित अचल आभम् शितिकण्ठ जिह्वम् ॥

शब्दार्थ—

तस्मिन्	१.	उस भवन में	विभ्राजमानम्	७.	सुशोभित
महाभीमम्	२.	अत्यन्त भयानक	द्विगुण	८.	प्रत्येक सिर में (दो-दो)
अनन्तम्	१४.	अनन्तशेषजी (विराजमानथे)	उल्बण	९.	भयंकर
अद्भुतम्	३.	अद्भुत	ईक्षणम्	१०.	नेत्रों वाले
सहस्रमूर्ध्नि	४.	सहस्र सिरों वाले	सितअचल	११.	कैलाश के समान
फणामणि	५.	फण पर मणियों की	आभम्शिति	१२.	वर्ण वाले नील रंग के
द्युभिः ।	६.	कान्ति से	कण्ठजिह्वम् ॥	१३.	गले तथा जीभ वाले

श्लोकार्थ—उस भवन में अत्यन्त भयानक अद्भुत सहस्र सिरों वाले फण पर मणियों की कान्ति से सुशोभित प्रत्येक सिर में दो-दो भयंकर नेत्रों वाले कैलाश के समान वर्ण वाले नीले रंग के गले तथा जीभ वाले अनन्त शेषजी विराजमान थे ॥

पञ्चपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ददर्श तद्भोगसुखासनं विभुं महानुभावं पुरुषोत्तमोत्तमम् ।
सान्द्राम्बुदाभं सुपिशङ्गवाससं प्रसन्नवक्त्रं रुचिरायतेक्षणम् ॥५५॥

पदच्छेद— ददर्श तत् भोग सुखासनम् विभुम् महानुभावम् पुरुषोत्तम उत्तमम् ।
सान्द्र अम्बुद आभम् सुपिशङ्ग वाससम् प्रसन्न वक्त्रम् रुचिर आयत ईक्षणम् ॥

शब्दार्थ—

ददर्श	१६.	देखा	सान्द्र अम्बुद	६.	घने बादल के समान
तत्	१.	शेषजी के	आभम्	७.	कान्ति वाले
भोग	२.	शरीर पर	सुपिशङ्ग	८.	पीले
सुखासनम्	३.	सुख पूर्वक लेटे हुए	वाससम्	९.	वस्त्र धारण किये हुये
विभुम्	४.	सर्व व्यापक	प्रसन्न	१०.	प्रसन्न
महानुभावम्	५.	महान् प्रभावशाली	वक्त्रम्	११.	मुख वाले
पुरुषोत्तम	१५.	पुरुषोत्तम भगवान् को	रुचिर-आयत	१२.	सुन्दर और लम्बी
उत्तमम् ।	१४.	परम	ईक्षणम् ॥	१३.	आँखों वाले

श्लोकार्थ—हे परीक्षित् ! शेषजी के शरीर पर सुख पूर्वक लेटे हुये सर्वव्यापक महान् प्रभावशाली घने बादल के समान कान्ति वाले पीले वस्त्र धारण किये हुये प्रसन्न मुख वाले सुन्दर और लम्बी आँखों वाले परम पुरुषोत्तम भगवान् को देखा ॥

षट्पञ्चाशत्तमः श्लोकः

महामणिव्रातकिरीटकुण्डलप्रभापरीक्षिप्तसहस्रकुन्तलम् ।
प्रलम्बचार्वष्टभुजं सकौस्तुभं श्रीवत्सलक्ष्मं वनमालया वृतम् ॥५६॥

पदच्छेद— महामणिव्रात किरीट कुण्डल प्रभा परीक्षिप्त सहस्र कुन्तलम् ।
प्रलम्ब चारु अष्टभुजम् सकौस्तुभं श्रीवत्सलक्ष्मम् वनमालया वृतम् ॥

शब्दार्थ—

महामणि	१.	बहुमूल्य मणियों के	प्रलम्ब	९.	लम्बी और
व्रात	२.	समूह से जटित	चारु	१०.	सुन्दर
किरीट	३.	मुकुट और	अष्टभुजम्	११.	आठ भुजायें थीं
कुण्डल	४.	कुण्डलों की	सकौस्तुभम्	१२.	कौस्तुभ मणि
प्रभा	५.	कान्ति से (उनकी)	श्रीवत्स	१३.	श्रीवत्स
परिक्षिप्त	८.	चमक रही थी	लक्ष्मम्	१४.	चिह्न और
सहस्र	६.	सहस्रों	वनमालया	१५.	वनमाला से
कुन्तलम् ।	७.	घुंघराली अलकें	वृतम् ॥	१६.	शोभित थे

श्लोकार्थ—बहुमूल्य मणियों के समूह से जटित मुकुट और कुण्डलों की कान्ति से उनकी सहस्रों घुंघराली अलकें चमक रही थीं । लम्बी और सुन्दर आठ भुजायें थीं । वे कौस्तुभ मणि श्रीवत्सचिह्न और वनमाला से शोभित थे ।

सप्तपञ्चाशत्तमः श्लोकः

सुनन्दनन्दप्रमुखैः स्वपार्षदैश्चक्रादिभिर्मूर्तिधरैर्निजायुधैः ।
पुष्ट्या श्रिया कीर्त्यजयाखिलर्द्धिभिर्निषेव्यमाणं परमेष्ठिनां पतिम् ॥५७॥

पदच्छेद—सुनन्द नन्द प्रमुखैः स्वपार्षदैः चक्र आदिभिः मूर्तिधरैः निजआयुधैः ।
पुष्ट्या श्रिया कीर्ति अजया अखिल ऋद्धिभिः निषेव्यमाणम् परमेष्ठिनाम् पतिम् ॥

शब्दार्थ—

सुनन्द	१. सुनन्द	पुष्टया	९. पुष्टि
नन्द	२. नन्द	श्रियाकीर्ति	१०. श्री, कीर्ति
प्रमुखैः	३. आदि	अजया	११. ये शक्तियाँ (एवम्)
स्वपार्षदैः	४. अपने पार्षद	अखिल	१२. सम्पूर्ण
चक्र आदिभिः	५. चक्र सुदर्शन आदि	ऋद्धिभिः	१३. ऋद्धियाँ
मूर्तिधरैः	६. मूर्तिमान	निषेव्यमाणम्	१६. सेवा कर रही थीं
निज	७. अपने	परमेष्ठिनाम्	१४. ब्रह्मादि लोकपाजों के
आयुधैः ।	८. आयुध तथा	पतिम् ॥	१५. अधीश्वरम् भगवान् की

श्लोकार्थ—सुनन्द नन्द आदि अपने पार्षद चक्र सुदर्शन आदि मूर्तिमान अपने आयुध तथा पुष्टि श्री कीर्ति ये शक्तियाँ एवम् सम्पूर्ण ऋद्धियाँ ब्रह्मादि लोकपालों के अधीश्वर भगवान् की सेवा कर रही थीं ॥

अष्टपञ्चाशत्तमः श्लोकः

ववन्द आत्मानमनन्तमच्युतो जिष्णुश्च तद्दर्शनजातसाध्वसः ।
तावाह भूमा परमेष्ठिनाम् प्रभुर्बद्धाञ्जली सस्मितमूर्जया गिरा ॥५८॥

पदच्छेद— ववन्दे आत्मानम् अनन्तम् अच्युतः जिष्णुः च तत् दर्शन जात साध्वसः ।
तौ आह भूमा परमेष्ठिनाम् प्रभुः बद्ध अञ्जली सस्मितम् ऊर्जया गिरा ॥

शब्दार्थ—

ववन्दे	४. प्रणाम किया	तौ आह	१६. उन दोनों से कहा
आत्मानम्	१. श्रीकृष्ण ने अपने ही स्वरूप	भूमा	११. भूमा पुरुष ने
अनन्तम्	२. अनन्त	परमेष्ठिनाम्	९. ब्रह्मादि लोकपालों के
अच्युतः	३. भगवान् को	प्रभुः	१०. स्वामी
जिष्णुः च	५. अर्जुन	बद्ध अञ्जली	१२. हाथ जोड़े हुये
तत् दर्शन	६. उनके दर्शन से	सस्मितम्	१५. मुसकराते हुये
जात	८. हो गये	ऊर्जया	१३. मधुर एवं गम्भीर
साध्वसः ।	७. भयभीत	गिरा ॥	१४. वाणी से

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण ने अपने ही स्वरूप अनन्त भगवान को प्रणाम किया । अर्जुन उनके दर्शन से भयभीत हो गये । ब्रह्मादि लोकपालों के स्वामी भूमा पुरुष ने हाथ जोड़े हुये मधुर एवम् गम्भीर वाणी में उन दोनों से कहा ॥

एकोनषष्टितमः श्लोकः

द्विजात्मजा मे युवयोर्दिदृक्षुणा मयोपनीता भुवि धर्मगुप्तये ।
कलावतीर्णाववनेर्भरासुरान् हत्वेह भूयस्त्वरयेतमन्ति मे ।।५९।।

पदच्छेद— द्विज आत्मजाः मे युवयोः दिदृक्षुणा मया उपनीता भुवि धर्म गुप्तये ।
कला अवतीर्णौ अवनेर्भर असुरान् हत्वा इह भूयः त्वरया एतम् अन्तिमे ।।

शब्दार्थ—

द्विजआत्मजाः	४. ब्राह्मण के पुत्रों को अपने पास	कला	८.	मेरी कलाओं के साथ
मे युवयोः	२. तुम दोनों को	अवतीर्णौ	९.	अवतार लिया है
दिदृक्षुणा	३. देखने की इच्छा	अवनेर्भर	१०.	पृथ्वी के भार रूप
मया	१. मैंने ही	असुरान्हत्वा	११.	असुरों को मारकर
उपनीता	५. मंगा लिया था	इहभूयःत्वरया	१२.	शीघ्र यहाँ पुनः
भुवि	७. पृथ्वी पर	एतम्	१४.	लौट आओगे
धर्मगुप्तये ।	६. धर्म की रक्षा के लिए	अन्तिमे ।।	१३.	मेरे पास

श्लोकार्थ—मैंने ही तुम दोनों को देखने की इच्छा से ब्राह्मण के पुत्रों को अपने पास मंगा लिया था। तुम दोनों ने धर्म की रक्षा के लिए पृथ्वी पर मेरी कलाओं के साथ अवतार लिया है। पृथ्वी के भार रूप असुरों को मारकर शीघ्र यहाँ पुनः मेरे पास लौट आओगे।

षष्टितमः श्लोकः

पूर्णकामावपि युवां नरनारायणावृषी ।
धर्ममाचरतां स्थित्यै ऋषभौ लोकसंग्रहम् ।।६०।।

पदच्छेद— पूर्णकामौ अपि युवाम् नर नारायणौ ऋषी ।
धर्मम् आचरताम् स्थित्यै ऋषभौ लोकसंग्रहम् ।।

शब्दार्थ —

पूर्णकामौ	६. पूर्ण काम होने पर	धर्मम्	११.	धर्म का
अपि	७. भी	आचरताम्	१२.	आचरण करो
युवाम्	१. तुम दोनों	स्थित्यै	८.	जगत की स्थिति तथा
नर	४. नर और	ऋषभौ	२.	श्रेष्ठ
नारायणौ	५. नारायण हो (अतः)	लोक	९.	लोक
ऋषी ।	३. ऋषि	संग्रहम् ।।	१०.	संग्रह के लिए

श्लोकार्थ—तुम दोनों श्रेष्ठ ऋषि नर और नारायण हो। अतः पूर्ण काम होने पर भी जगत की स्थिति तथा लोक संग्रह के लिए धर्म का आचरण करो।।

एकषष्टितमः श्लोकः

इत्यादिष्टौ भगवता तौ कृष्णौ परमेष्ठिना ।
ओमित्यानम्य भूमानमादाय द्विजदारकान् ॥६१॥

पदच्छेद— इति आदिष्टौ भगवता तौ कृष्णौ परमेष्ठिना ।
ओम् इति आनम्य भूमानम् आदाय द्विज दारकान् ॥

शब्दार्थ—

इति	३.	इस प्रकार	ओम् इति	७.	उसे स्वीकार करके
आदिष्टौ	४.	आदेश दिये जाने पर	आनम्य	९.	नमस्कार किया (और)
भगवता	१.	भगवान्	भूमानम्	८.	भूमा पुरुष को
तौ	५.	उन दोनों	आदाय	१२.	लेकर चल दिये
कृष्णौ	६.	श्रीकृष्ण ओर अर्जुन ने	द्विज	१०.	ब्राह्मण के
परमेष्ठिना ।	२.	भूमा पुरुष के द्वारा	दारकान् ॥	११.	बालकों को

श्लोकार्थ—भगवान् भूमा पुरुष के द्वारा इस प्रकार आदेश दिये जाने पर उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ने उसे स्वीकार करके भूमा पुरुष को नमस्कार किया । और ब्राह्मण के बालकों को लेकर चल दिये ॥

द्विषष्टितमः श्लोकः

न्यवर्तेतां स्वकं धाम सम्प्रहृष्टौ यथागतम् ।
विप्राय ददतुः पुत्रान् यथारूपं यथावयः ॥६२॥

पदच्छेद— न्यवर्तताम् स्वकम् धाम सम्प्रहृष्टौ यथा गतम् ।
विप्राय ददतुः पुत्रान् यथा रूपम् यथा वयः ॥

शब्दार्थ—

न्यवर्तताम्	६.	लौट आये (और बच्चों की)	विप्राय	११.	ब्राह्मण को
स्वकम्	४.	अपने	ददतुः	१२.	दे दिये
धाम्	५.	धाम (द्वारकापुरी में)	पुत्रान्	१०.	सभी पुत्रों को
सम्पृष्टौ	१.	वे अत्यन्त हर्षित होकर	यथा	७.	जैसी
यथा	२.	जैसे	रूपम्	८.	आकृति थी
गतम् ।	३.	गये थे (वैसे ही)	यथावयम् ॥	९.	जैसी अवस्था थी उसी रूप में

श्लोकार्थ—वे अत्यन्त हर्षित होकर जैसे गये थे वैसे ही अपने धाम द्वारकापुरी में लौट आये । और बच्चों की जैसी आकृति थी, जैसी अवस्था थी उसी रूप में सभी पुत्रों को ब्राह्मण को दे दिया ॥

त्रिषष्टितमः श्लोकः

निशाम्य वैष्णवम् धाम पार्थः परमविस्मितः ।
यत्किञ्चित् पौरुषं पुंसां मेने कृष्णानुकम्पितम् ॥६३॥

पदच्छेद— निशाम्य वैष्णवम् धाम पार्थः परम विस्मितः ।
यत् किञ्चित् पौरुषम् पुंसाम् मेने कृष्ण अनुकम्पितः ॥

शब्दार्थ—

निशाम्य	४. देखकर	यत्	८. जो
वैष्णवम्	२. विष्णु के	किञ्चित्	९. कुछ भी
धाम	३. धाम को	पौरुषम्	१०. पौरुष है (उसे)
पार्थः	१. अर्जुन	पुंसाम्	७. जीवों में
परम	५. अत्यन्त	मेने	१३. मानने लगे
विस्मितः ।	६. आश्चर्य चकित हुये	कृष्ण	११. श्रीकृष्ण की ही
		अनुकम्पितम् ॥	१२ कृपा का फल

श्लोकार्थ—अर्जुन विष्णु के धाम को देखकर अत्यन्त आश्चर्य चकित हुये । जीवों में जो कुछ भी पौरुष है । उसे श्रीकृष्ण की ही कृपा का फल मानने लगे ॥

चतुःषष्टितमः श्लोकः

इतीदृशान्यनेकानि वीर्याणीह प्रदर्शयन् ।
बुभुजे विषयान् ग्राम्यानीजे चात्यूर्जितैर्मखैः ॥६४॥

पदच्छेद— इति ईदृशानि अनेकानि वीर्याणि इह प्रदर्शयन् ।
बुभुजे विषयान् ग्राम्यान् ईजे च अति ऊर्जितैः मखैः ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	बुभुजे	९. उपभोग किया (और)
ईदृशानि	२. ऐसे	विषयान्	८. विषयों का
अनेकानि	३. अनेकों	ग्राम्यान्	७. सांसारिक
वीर्याणि	४. पराक्रमों के कार्य	ईजे च	१२. सम्पन्न किया
इह	५. यहाँ पर	अति	१०. अत्यन्त
प्रदर्शयन् ।	६. दिखाते हुये	ऊर्जितैःमखैः ॥	११. महत्त्वपूर्ण यज्ञों को

श्लोकार्थ—इस प्रकार ऐसे अनेकों पराक्रम के कार्य यहाँ पर दिखाते हुये सांसारिक विषयों का उपभोग किया । और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण यज्ञों को सम्पन्न किया ॥

पञ्चाषष्टितमः श्लोकः

प्रववर्षाखिलान् कामान् प्रजासु ब्राह्मणादिषु ।
यथाकालं यथैवेन्द्रो भगवाञ्छ्रैष्ठ्यमास्थितः ।।६५।।

पदच्छेद— प्रववर्ष अखिलान् कामान् प्रजासु ब्राह्मण आदिषु ।
यथा कालम् यथैव इन्द्रो भगवान् श्रैष्ठ्यम् आस्थितः ।।

शब्दार्थ—

प्रववर्ष	९. पूर्ण किया	यथाकालम्	११. समयानुसार
अखिलान्	७. समस्त	यथैव	१०. जिस प्रकार
कामान्	८. मनोरथों को	इन्द्रो	१२. इन्द्र वर्षा करते हैं
प्रजासु	६. प्रजाओं के	भगवान्	१. भगवान् श्रीकृष्ण ने
ब्राह्मण	४. ब्राह्मण	श्रैष्ठ्यम्	२. श्रेष्ठतम महापुरुषों का आचरण
आदिषु ।	५. आदि	आस्थितः ।।	३. करते हुये

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रेष्ठतम महापुरुषों का आचरण करते हुये ब्राह्मण आदि प्रजाओं के समस्त मनोरथों को पूरा किया । जिस प्रकार समयानुसार इन्द्र वर्षा करते हैं ।।

षष्ठषष्टितमः श्लोकः

हत्वा नृपानधर्मिष्ठान् घातयित्वार्जुनादिभिः ।
अञ्जसा वर्तयामास धर्मं धर्मसुतादिभिः ।।६६।।

पदच्छेद— हत्वा नृपान् अधर्मिष्ठान् घातयित्वा अर्जुन आदिभिः ।
अञ्जसा वर्तयामास धर्मम् धर्मसुत आदिभिः ।।

शब्दार्थ—

हत्वा	३. मारकर और	अञ्जसा	९. अनायास ही
नृपान्	२. राजाओं को	वर्तयामास	११. स्थापित कर दिया
अधर्मिष्ठान्	१. अत्यन्त पापी	धर्मम्	१०. धर्म को
घातयित्वा	६. मरवाकर	धर्मसुत	७. युधिष्ठिर
अर्जुन	४. अर्जुन	आदिभिः ।।	८. आदि धार्मिक राजाओं द्वारा
आदिभिः ।	५. आदि के द्वारा		

श्लोकार्थ— हे परीक्षित् ! भगवान् श्रीकृष्ण ने अत्यन्त पापी राजाओं को मारकर और अर्जुन आदि के द्वारा मरवाकर युधिष्ठिर आदि धार्मिक राजाओं के द्वारा अनायास ही धर्म को स्थापित कर दिया ।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे उत्तरार्धे द्विजकुमारानयनं नाम एकोननवतितमः अध्यायः ।।८९।।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम्

दशमः स्कन्धः

नवतितमः अध्यायः

प्रथमः श्लोकः

श्रीशुक उवाच—सुखं स्वपुर्यां निवसन् द्वारकायां श्रियः पतिः ।
सर्वसंपत्समृद्धायां जुष्टायां वृष्णिपुङ्गवैः ॥१॥

पदच्छेद— सुखम् स्वपुर्याम् निवसन् द्वारकायाम् श्रियः पतिः ।
सर्व सम्पत् समृद्धायाम् जुष्टायाम् वृष्णि पुङ्गवैः ॥

शब्दार्थ—

सुखम्	६.	सुख पूर्वक	सर्व	२.	सभी
स्वपुर्याम्	७.	अपनी नगरी	सम्पत्	३.	सम्पत्तियों से
निवसन्	१०.	निवास करने लगे	समृद्धायाम्	४.	समृद्ध (तथा)
द्वारकायाम्	८.	द्वारका में	जुष्टायाम्	६.	सेवित
श्रियःपतिः ।	१.	लक्ष्मी के पति (श्रीकृष्ण)	वृष्णिपुङ्गवैः ॥	५.	श्रेष्ठ वृष्णि वंशियों से

श्लोकार्थ—लक्ष्मी के पति श्रीकृष्ण सभी सम्पत्तियों से समृद्ध तथा श्रेष्ठ वृष्णि वंशियों से सेवित अपनी नगरी द्वारका में सुखपूर्वक निवास करने लगे ॥

द्वितीयः श्लोकः

स्त्रीभिश्चोत्तमवेषाभिर्नवयौवनकान्तिभिः ।
कन्दुकादिभिर्हर्म्येषु क्रीडन्तीभिस्तडिद्द्युभिः ॥२॥

पदच्छेद— स्त्रीभिः च उत्तम वेषाभिः नवयौवन कान्तिभिः ।
कन्दुक आदिभिः हर्म्येषु क्रीडान्तीभिः तडित् द्युभिः ॥

शब्दार्थ—

स्त्रीभिः	६.	स्त्रियाँ	कन्दुक	८.	गेंद
च उत्तम	५.	सुन्दर	आदिभिः	९.	आदि के
वेषाभिः	१.	वेष भूषाओं तथा	हर्म्येषु	७.	महलों में
नवयौवन	२.	नव यौवन की	क्रीडान्तीभिः	१०.	खेल खेलती थीं
कान्तिभिः ।	३.	कान्ति से विभूषित	तडित्द्युभिः ॥	४.	बिजली की सी छटा वाली

श्लोकार्थ—वेषभूषाओं तथा नव यौवन की कान्ति से विभूषित बिजली की सी छटा वाली सुन्दर स्त्रियाँ महलों में गेंद आदि के खेल खेलती थीं ॥

तृतीयः श्लोकः

नित्यं संकुलमार्गायां मदच्युद्भिर्मतङ्गजैः ।
स्वलङ्कृतैर्भटैरश्वै रथैश्च कनकोज्ज्वलैः ॥३॥

पदच्छेद— नित्यम् संकुल मार्गायाम् मदच्युद्भिः मतङ्गजैः ।
स्वलङ्कृतैः भटैः अश्वैः रथैः च कनक उज्ज्वलैः ॥

शब्दार्थ—

नित्यम्	९.	नित्य	स्वलङ्कृतैः	४.	सुसज्जित
संकुल	१०.	भरा रहता था	भटैः अश्वैः	५.	योद्धाओं, घोड़ों तथा
मार्गायाम्	१.	द्वारका का मार्ग	रथैः च	८.	रथों से
मदच्युद्भिः	२.	मदचूते हुये	कनक	६.	सोने के समान
मतङ्गजैः ।	३.	मतवाले हाथियों	उज्ज्वलैः ॥	७.	उज्ज्वल

श्लोकार्थ--द्वारका का मार्ग मदचूने हुये मतवाले हाथियों, सुसज्जित योद्धाओं, घोड़ों तथा सोने के समान उज्ज्वल रथों से नित्य भरा रहता था ॥

चतुर्थः श्लोकः

उद्यानोपवनाढ्यायां पुष्पितद्रुमराजिषु ।
निर्विशद्भृङ्गविहगैर्नादितायां समन्ततः ॥४॥

पदच्छेद— उद्यान उपवन आढ्यायाम् पुष्पित द्रुमराजिषु ।
निर्विशद् भृङ्ग विहगैः नादितायाम् समन्ततः ॥

शब्दार्थ—

उद्यान	१.	वहाँ पर उद्यान और	निर्विशत्	६.	उनमें घुसते हुए
उपवन	२.	उपवन	भृङ्ग	७.	भौंरे तथा
आढ्यायाम्	३.	लहरा रहे थे	विहगैः	८.	पक्षी
पुष्पित	४.	फूलों से लदी हुई	नादितायाम्	१०.	कलरव कर रहे थे
द्रुमराजिषु ।	५.	वृक्षों की पंक्तियाँ थी	समन्ततः ॥	९.	चारों ओर

श्लोकार्थ—वहाँ पर उद्यान और उपवन लहरा रहे थे। फूलों से लदी हुई वृक्षों की पंक्तियाँ थीं। उनमे घुसते हुये भौरें तथा पक्षी चारों ओर कलरव कर रहे थे ॥

पञ्चमः श्लोकः

रेमे षोडशसाहस्रपत्नीनामेकवल्लभः ।
ताावद्विचित्ररूपोऽसौ तद्गृहेषु महर्द्धिषु ।।५।।

पदच्छेद— रेमे षोडश साहस्र पत्नीनाम् एक वल्लभः ।
तावत् विचित्ररूपः असौ तद् गृहेषु महर्द्धिषु ।।

शब्दार्थ—

रेमे	१०.	रमण करते थे	तावत्	६.	उतने ही
षोडशसाहस्र	१.	श्रीकृष्ण सोलह हजार	विचित्ररूपः	७.	अद्भुत रूप धारण करके
पत्नीनाम्	२.	पत्नियों के	असौ	५.	वे
एक	३.	एक मात्र	तद्गृहेषु	९.	उन पत्नियों के घरों में
वल्लभः ।	४.	प्रिय थे	महर्द्धिषु ।।	८.	परम ऐश्वर्य सम्पन्न

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण सोलह हजार पत्नियों के एक मात्र प्रिय थे । वे उतने ही अद्भुत रूप धारण करके परम ऐश्वर्य सम्पन्न उन पत्नियों के घरों में रमण करते थे ।।

षष्ठः श्लोकः

प्रोत्फुल्लोत्पलकह्लारकुमुदाम्भोजरेणुभिः ।
वासितामलतोयेषु कूजद्द्विजकुलेषु च ।।६।।

पदच्छेद— प्रोत्फुल्ल उत्पल कह्लार कुमुद अम्भोज रेणुभिः ।
वासित अमल तोयेषु कूजत् द्विज कुलेषु च ।।

शब्दार्थ—

प्रोत्फुल्ल	१.	खिले हुए	वासित	७.	सुगन्धित
उत्पल	२.	नीले	अमल	११.	निर्मल
कह्लार	३.	पीले	तोयेषु	१२.	जल में (बिहार करते थे)
कुमुद	४.	श्वेत तथा	कूजत्	८.	चहकते,
अम्भोज	५.	लाल कमलों के	द्विज	९.	पक्षियों के
रेणुभिः ।	६.	पराग से	कुलेषु च ।।	१०.	समूह से युक्त

श्लोकार्थ—खिले हुये नीले, पीले, श्वेत तथा लाल कमलों के पराग से सुगन्धित चहकते पक्षियों के समूह से युक्त निर्मल जल में बिहार करते थे ।।

सप्तमः श्लोकः

विजहार विगाह्याम्भो ह्रदिनीषु महोदयः ।
कुचकुङ्कुमलिप्ताङ्गः परिरब्धश्च योषिताम् ॥७॥

पदच्छेद— विजहार विगाह्य अम्भोज ह्रदिनीषु महोदयः ।
कुचकुङ्कुम लिप्ताङ्गः परिरब्धः च योषिताम् ॥

शब्दार्थ—

विजहार	५.	विहार करते थे	कुच	७.	कुचों में लगी
विगाह्य	४.	उछाल कर	कुङ्कुम	८.	केसर से
अम्भोज	३.	जल को	लिप्ताङ्गः	९.	उनके अङ्ग
ह्रदिनीषु	२.	तालाबों में	परिरब्धः	११.	रङ्ग जाते थे
महोदयः ।	१.	भगवान् (श्रीकृष्ण)	च योषिताम् ॥	६.	और स्त्रियों द्वारा (उनके)

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण तालाबों में जल को उछाल कर बिहार करते थे । और स्त्रियों द्वारा उनके कुचों में लगी केसर से उनके अङ्ग रँङ्ग जाते थे ॥

अष्टमः श्लोकः

उपगीयमानो गन्धर्वैर्मृदङ्गपणवानकान् ।
वादयद्भिर्मुदा वीणां सूतमागधवन्दिभिः ॥८॥

पदच्छेद— उपगीयमानः गन्धर्वैः मृदङ्ग पणव आनकान् ।
वादयद्भिः मुदा वीणाम् सूतमागध वन्दिभिः ॥

शब्दार्थ—

उपगीयमानः	२.	उनके यश का गान करते	वादयद्भिः	१०.	बजाने लगते थे
गन्धर्वैः	१.	(उस समय) गन्धर्व	मुदा	५.	आनन्द से
मृदङ्ग	६.	मृदङ्ग	वीणाम्	९.	वीणा
पणव	७.	ढोल	सूतमागध	३.	सूत मागध और
आनकान् ।	८.	नगारे (और)	वन्दिभिः ॥	४.	बन्दीजन

श्लोकार्थ—उस समय गन्धर्व उनके यश का गान करते, सूत, मागध और बन्दीजन आनन्द से मृदङ्ग ढोल, नगारे और वीणा बजाने लगते थे ॥

नवमः श्लोकः

सिच्यमानोऽच्युतस्ताभिर्हसन्तीभिः स्म रेचकैः ।
प्रतिसिञ्चन् विचिक्रीडे यक्षीभिर्यक्षराडिव ॥९॥

पदच्छेद— सिच्यमानः अच्युतः ताभिः हसन्तीभिः स्म रेचकैः ।
प्रति सिञ्चन् विचिक्रीडे यक्षीभिः यक्षराट् इव ॥

शब्दार्थ—

सिच्यमानः	५.	भिगो दिये जाते	प्रतिसिञ्चन्	७.	वे भी उन्हें भिगोते हुये
अच्युतः	१.	भगवान् (श्रीकृष्ण)	विचिक्रीडे	८.	क्रीड़ा करते थे
ताभिः	३.	उन पत्नियों के द्वारा	यक्षीभिः	११.	यक्षिणियों के साथ क्रीड़ा कर रहे हों
हसन्तीभिः	२.	हँसती हुई	यक्षराट्	१०.	यक्षराज
स्म	६.	थे	इव ॥	९.	जिस प्रकार
रेचकैः ।	४.	पिचकारियों से			

श्लोकार्थ—भगवान् श्रीकृष्ण हंसती हुई उन पत्नियों के द्वारा पिचकारियों से भिगो दिये जाते थे । वे भी उन्हें भिगोते हुये क्रीड़ा करते थे । जिस प्रकार यक्षराज यक्षिणियों के साथ क्रीड़ा करते हैं ॥

दशमः श्लोकः

ताः क्लिन्नवस्त्रविवृतोरुकुचप्रदेशाः सिञ्चन्त्य उद्धृतबृहत्कबरप्रसूनाः ।
कान्तं स्म रेचकजिहीरषयोपगुह्य जातस्मरोत्सवलसद्वदना विरेजुः ॥१०॥

पदच्छेद—ताः क्लिन्नवस्त्र विवृत उरु कुच प्रदेशाः सिञ्चन्त्य उद्धृत बृहत् कबर प्रसूनाः ।
कान्तं स्म रेचक जिहिरषया उपगुह्य जात स्मर उत्सव लसत् वदना विरेजुः ॥

शब्दार्थ—

ताः क्लिन्नवस्त्र	१.	उनके वस्त्रों के भीगने से	कान्तम् स्म	८.	वे प्रियतम को
विवृत	४.	झलकने लगते	रेचक	१०.	पिचकारी
उरुकुच	२.	जंघा और स्तन	जिहीरषया	११.	छीन लेने की इच्छा से
प्रदेशः	३.	प्रदेश	उपगुह्य	१२.	उनके पास जाकर
सिञ्चन्त्यः	९.	भिगोते-भिगोते	जात	१४.	उत्पन्न (उनका आलिंगन कर लेतीं)
उद्धृत	७.	गिरने लगते	स्मर उत्सव	१३.	काम भाव से
बृहत्कबर	५.	बड़ी-बड़ी चोटियोंऔरजूड़ोंमेंसे	लसत् वदना	१५.	जिससे उनका मुख
प्रसूनाः ।	६.	गुंथे हुये फूल	विरेजुः ॥	१६.	विशेष रूप से शोभित हो जाता।

श्लोकार्थ—उनके वस्त्रों के भीगने से जंघा और स्तन प्रदेश झलकने लगते, बड़ी-बड़ी चोटियाँ और जूड़े में से गुथे हुये फूल गिरने लगते, वे प्रियतम को भिगोते-भिगोते पिचकारी छीन लेने की इच्छा से उनके पास जाकर उत्पन्न काम-भाव से उनका आलिंगन कर लेतीं । जिससे उनका मुख विशेष रूप से शोभित हो जाता ॥

एकादशः श्लोकः

कृष्णस्तु तत्स्तनविषज्जितकुङ्कुमस्रक् क्रीडाभिषङ्गधुतकुन्तलवृन्दबन्धः ।
सिञ्चन् मुहुर्युवतिभिः प्रतिषिच्यमानो रेमे करेणुभिरिवेभपतिः परीतः ॥११॥

पदच्छेद—कृष्णः तु तत् स्तन विषज्जित कुङ्कुमस्रक् क्रीडाभिषङ्गधुत कुन्तल वृन्दबन्धः ।
सिञ्चन् मुहुः युवतिभिः प्रतिषिच्यमानः रेमे करेणुभिः इव इभपतिः परीतः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णः तु	८.	श्रीकृष्ण उन्हें	सिञ्चन्	१०.	भिगोते हुये तथा
तत् स्तन	१.	उनके स्तनों में	मुहुः	९.	बार-बार
विषज्जित	२.	लगे हुये	युवतिभिः	११.	स्त्रियों द्वारा
कुङ्कुमस्रक्	३.	केसर से युक्त वनमाला वाले	प्रतिषिच्यमानः	१२.	भिगोये जाते हुये
क्रीडाभि	४.	क्रीडा में अत्यन्त	रेमे	१३.	इस प्रकार विहार करते
षङ्गधुत	५.	मग्न होने से हिलती हुई	करेणुभिः	१५.	हथिनियों से
कुन्तल	६.	घुंघराली अलकों के	इव इभपतिः	१४.	मानों गजराज
वृन्दबन्धः ।	७.	समूह वाले	परीतः ॥	१६.	घिरकर क्रीड़ा कर रहे हो

श्लोकार्थ—उनके स्तनों में लगे हुये केसर से युक्त वन माला वाले क्रीडा में अत्यन्त मग्न होने से हिलती हुई घुंगराली अलकों के समूह वाले श्रीकृष्ण उन्हें बार-बार भिगोते हुये तथा स्त्रियों द्वारा भिगोये जाते हुये इस प्रकार विहार करते मानों गजराज हथिनियों से घिरकर क्रीडा कर रहा हो ॥

द्वादशः श्लोकः

नटानां नर्तकीनां च गीतवाद्योपजीविनाम् ।
क्रीडालङ्कारवासांसि कृष्णोऽदात्तस्य च स्त्रियः ॥१२॥

पदच्छेद— नटानाम् नर्तकीनाम् च गीत वाद्य उप जीविनाम् ।
क्रीडा अलङ्कार वासांसि कृष्णः अदात् तस्य च स्त्रियः ॥

शब्दार्थ—

नटानाम्	९.	नटों	क्रीडा	१.	क्रीड़ा करने के बाद
नर्तकीनाम्	११.	नर्तकियों को	अलङ्कार	५.	आभूषण
च	१०.	और	वासांसि	४.	वस्त्र और
गीत	६.	गाने और	कृष्णः	२.	श्रीकृष्ण
वाद्य	७.	बजाने से	अदात्	१२.	दे देते
उपजीविनाम् ।	८.	जीविका चलाने वाले	तस्य च स्त्रियः ॥	३.	और उनकी पत्नियाँ अपने

श्लोकार्थ—क्रीडा करने के बाद श्रीकृष्ण और उनकी पत्नियाँ अपने वस्त्र और आभूषण गाने और बजाने से जीविका चलाने वाले नटों और नर्तकियों को दे देते ॥

त्रयोदशः श्लोकः

कृष्णस्यैवं विहरतो गत्यालापेक्षितस्मितैः ।

नर्मक्ष्वेलिपरिष्वङ्गैः स्त्रीणां किल हृता धियः ॥१३॥

पदच्छेद— कृष्णस्य एवम् विहरतः गति आलाप ईक्षित स्मितैः ।

नर्मक्ष्वेलि परिष्वङ्गैः स्त्रीणाम् किल हृता धियः ॥

शब्दार्थ—

कृष्णस्य	३.	श्रीकृष्ण की	नर्मक्ष्वेलि	७.	हास-विलास और
एवम्	१.	इस प्रकार	परिष्वङ्गैः	८.	आलिङ्गन से
विहरतः	२.	विहार करते हुये	स्त्रीणाम्	९.	रानियों की
गति	४.	चाल ढाल	किल	१२.	ऐसा सुना जाता है
आलाप	५.	बातचीत	हृता	११.	उन्हीं की ओर खिंची रहती थीं
ईक्षितस्मितैः ।	६.	चितवन मुसकान	धियः ॥	१०.	चित्त वृत्तियाँ

श्लोकार्थ—इस प्रकार बिहार करते हुये श्रीकृष्ण की चाल-ढाल, बातचीत, चितवन, मुसकान, हास-विलास और आलिङ्गन से रानियों की चित्तवृत्तियाँ उन्हीं की ओर खिंची रहतीं ऐसा सुना जाता है ।

चतुर्दशः श्लोकः

ऊचुर्मुकुन्दैकधियोऽगिर उन्मत्तवज्जडम् ।

चिन्तयन्त्योऽरविन्दाक्षं तानि मे गदतः शृणु ॥१४॥

पदच्छेद— ऊचुः मुकुन्द एकः धियः अगिरः उन्मत्तवत् जडम् ।

चिन्तयन्त्यः अरविन्दाक्षम् तानि मे गदतः शृणु ॥

शब्दार्थ—

ऊचुः	१.	कहते हैं कि	चिन्तयन्त्यः	८.	चिन्तन में डूबी हुई
मुकुन्दः	३.	श्रीकृष्ण में	अरविन्दाक्षम्	७.	कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण के
एकः	२.	एकमात्र	तानि	१०.	उनकी बातें
धियः	४.	मन को लगाये हुये रानियाँ	मे	१२.	मुझसे
अगिरः	५.	चुप हो जाती (और फिर)	गदतः	११.	कहते हुये
उन्मत्तवत्	६.	उन्मत्त के समान	शृणु ॥	१३.	सुनो
जडम् ।	७.	कहने लगतीं (तथा)			

श्लोकार्थ—कहते हैं कि एकमात्र श्रीकृष्ण में मन को लगाये हुये रानियाँ चुप हो जातीं । और फिर उन्मत्त के समान कहने लगतीं । तथा कमल नयन भगवान् श्रीकृष्ण के चिन्तन में डूबी हुई उनकी बातें कहते हुये मुझसे सुनो ॥

पञ्चदशः श्लोकः

महिष्य ऊचुः—

कुररि विलपसि त्वं वीतनिद्रा न शेषे स्वपिति जगति राव्यामीश्वरो गुप्तबोधः ।
वयमिव सखि कच्चिद् गाढनिर्भिन्नचेता नलिननयनहासोदारलीलेक्षितेन ॥१५॥

पदच्छेद— कुररि विलपसि त्वम् वीतनिद्रा न शेषे स्वपिति जगति राव्याम् ईश्वरः गुप्तबोधः ।
वयम् इव सखि कच्चित् गाढनिर्भिन्न चेता नलिन नयन हास उदार लीला ईक्षितेन ॥

शब्दार्थ—

कुररि	१.	अरी कुररी	वयम् इव	१०.	हमारी तरह
विलपसित्वम्	२.	तू विलाप कर रही है	सखिकच्चित्	९.	सखी कहीं
वीतनिद्रा	८.	नींद नहीं आती	गाढ	१५.	गहराई से
न शेषे	७.	तू नहीं सोती (क्या तुझे)	निर्भिन्न	१६.	विंध तो नहीं गया है
स्वपिति	४.	सो रहा है	चेता	११.	तेरा चित्त
जगतिराव्याम्	३.	रात्रि में संसार	नलिन नयन	१२.	कमल नयन भगवान् के
ईश्वरः	५.	भगवान् श्रीकृष्ण भी अपना	हास-उदार	१३.	हास्य और उदर एवम्
गुप्तबोधः ।	६.	अखण्ड बोध छिपाकर सो रहे हैं	लीलाईक्षितेन॥	१४.	लीला भरी चितवन की

श्लोकार्थ—अरी कुररी ! तू विलाप कर रही है । रात्रि में संसार सो रहा है । भगवान् श्रीकृष्ण भी अपना अखण्ड बोध छिपाकर सो रहे हैं । सखी कहीं हमारी तरह तेरा चित्त कमल नयन भगवान् के हास्य और उदार एवम् लीला भरी चितवन की गहराई से विंध तो नहीं गया ॥

षोडशः श्लोकः

नेत्रे निमीलयसि नक्तमदृष्टबन्धुस्त्वं रोरवीषि करुणं बत चक्रवाकि ।
दास्यं गता वयमिवाच्युतपादजुष्टां किं वा स्रजं स्पृहयसे कबरेण वोढुम् ॥१६

पदच्छेद—नेत्रे निमीलयसि नक्तम् अदृष्टबन्धुः त्वम् रोरवीषि करुणम् बत चक्रवाकि ।
दास्यम् गता वयम्इव अच्युतपाद जुष्टाम् किम् वा स्रजम् स्पृहयसे कबरेण वोढुम् ॥

शब्दार्थ—

नेत्रे	३.	तूने आँखें	दास्यम्गता	१२.	भगवान् की दासी बन गई है
निमीलयसि	४.	क्यों मूंद ली हैं	वयम् इव	११.	हमारे समान तू
नक्तम्	२.	रात के समय	अच्युतपादजुष्टाम्	१४.	भगवान् के चरणों पर चढ़ी
अदृष्टे बन्धुः	५.	क्या पति के न दीखने से	किम्	१३.	क्या तू
त्वम्	७.	तू	वा	१०.	अथवा
रोरवीषि	८.	रो रही है	स्रजम्	१५.	पुष्प माला को
करुणम्	६.	करुण स्वर से	स्पृहयसे	१८.	चाहती है
बत	९	हाय तू दुःखिनी है	कबरेण	१६.	अपनी चोटी पर
चक्रवाकि ।	१.	अरीचकवी !	वोढुम् ॥	१७.	धारण करना

श्लोकार्थ—अरी चकवी ! रात के समय तूने आँखें क्यों मूंद ली हैं । क्या पति के न दीखने से करुण स्वर से तू रो रही है । हाय तू दुःखिनी है । अथवा हमारे समान तू भगवान् की दासी बन गई है । क्या तू भगवान के चरणों पर चढ़ी पुष्प माला को अपनी चोटी पर धारण करना चाहती है ॥

सप्तदशः श्लोकः

भो भोः सदा निष्टनसे उदन्वन्नलब्धनिद्रोऽधिगतप्रजागरः ।
किं वा मुकुन्दापहृतात्मलाञ्छनः प्राप्तां दशां त्वं च गतो दुरत्ययाम् ॥१७॥

पदच्छेद—भो भोः सदा निष्टनसे उदन्वन् अलब्ध निद्रः अधिगत प्रजागरः ।
किम् वा मुकुन्द अपहृता आत्मलाञ्छनः प्राप्ताम् दशाम् त्वम् च गतः दुरत्याम् ॥

शब्दार्थ—

भो भोः	१.	हे	किम् वा	९.	अथवा
सदा	३.	निरन्तर	मुकुन्द अपहृता	११.	श्रीकृष्ण ने छीन लिया है
निष्टनसे	४.	गरजते रहते हो (क्या)	आत्मलाञ्छनः	१०.	तुम्हारे धर्म आदि गुणों को
उदन्वन्	२.	समुद्र (तुम)	प्राप्ताम्	१५.	प्राप्त
अलब्ध	६.	नहीं आती है	दशाम्	१४.	दशा को
निद्रः	५.	तुम्हें नींद	त्वम् च	१२.	इसी से तुम
अधिगत	८.	लग गया है	गतः	१६.	हो गये हो
प्रजागरः ।	७.	तुम्हें जागने का रोग	दुरत्याम् ॥	१३.	अत्यन्त कठिन

श्लोकार्थ—हे समुद्र ! तुम निरन्तर गरजते रहते हो, क्या तुम्हें नींद नहीं आती है, तुम्हें जागने का रोग लग गया है । अथवा तुम्हारे धर्म आदि गुणों को श्रीकृष्ण ने छीन लिया है । इसी से तुम अत्यन्त कठिन दशा को प्राप्त हो गये हो ॥

अष्टादशः श्लोकः

त्वं यक्ष्मणा बलवतासि गृहीत इन्दो क्षीणस्तमो न निजदीधितिभिः क्षिणोषि
कच्चिन्मुकुन्दगदितानि यथा वयं त्वं विस्मृत्य भोःस्थगितगीरुपलक्ष्यसे नः ।१८

पदच्छेद—त्वम् यक्ष्मणा बलवता असि गृहीत इन्दो क्षीणः तमः न निज दीधितिभिः क्षिणोसि ।
क्वचित् मुकुन्द गदितानि यथा वयम् त्वम् विस्मृत्य भोः स्थगितगीः उपलक्ष्यसे नः ॥

शब्दार्थ—

त्वम्	२.	तुम	क्वचित्	९.	कहीं
यक्ष्मणा	४.	यक्ष्मा रोग से	मुकुन्द	१०.	श्रीकृष्ण की
बलवता	३.	बलवान	गदितानि	११.	बातों को
असिगृहीत	५.	ग्रस्त हो गये हो	यथावयम्त्वम्	१२.	हमारी तरह
इन्दो	१.	हे चन्द्र !	विस्मृत्य भोः	१३.	भूलकर तुम
क्षीणः तमः	६.	इससे कमजोर होने के कारण अन्धकार को	स्थगितगीः	१५.	निस्तब्ध
ननिजदीधितिभिः	७.	अपनी किरणों से नहीं	उपलक्ष्यसे	१६.	मालूम हो रहे हो
क्षिणोषि ।	८.	हटा पा रहे हो	नः ॥	१४.	हमें

श्लोकार्थ—हे चन्द्र ! तुम बलवान यक्ष्मा रोग से ग्रस्त हो गये हो । इससे कमजोर होने के कारण अन्धकार को नहीं हटा पा रहे हो । कहीं श्रीकृष्ण की बातों को हमारी तरह भूलकर तुम हमें निस्तब्ध मालूम हो रहे हो ॥

एकोनविंश: श्लोक:

किन्त्वाचरितमस्माभिर्मलयानिल तेऽप्रियम् ।
गोविन्दापाङ्गनिर्भिन्ने हृदीरयसि नः स्मरम् ॥१९॥

पदच्छेद— किन्तु आचरितम् अस्माभिः मलयानिल ते अप्रियम् ।
गोविन्द अपाङ्ग निर्भिन्ने हृदि ईरयसि नः स्मरम् ॥

शब्दार्थ—

किन्तु	४.	कौन सा	गोविन्द	७.	श्रीकृष्ण की
आचरितम्	६.	आचरण किया है (जो तू)	अपाङ्ग	८.	चितवन से
अस्माभिः	२.	हमने	निर्भिन्ने	९.	विंधे हुये
मलयानिल	१.	हे मलय वायु !	हृदि	११	हृदय में
ते	३.	तेरे प्रति	ईरयसि	१३.	सञ्चार कर रहा है
अप्रियम् ।	५.	अप्रिय	नः	१०.	हमारे
			स्मरम् ॥	१२.	काम को

श्लोकार्थ—हे मलयवायु ! हमने तेरे प्रति कौन सा अप्रिय आचरण किया है। जो तू श्रीकृष्ण की चितवन से विंधे हुये हमारे हृदय में काम का सञ्चार कर रहा है ॥

विंश: श्लोक:

मेघ श्रीमंस्त्वमसि दयितो यादवेन्द्रस्य नूनं
श्रीवत्साङ्कं वयमिव भवान् ध्यायति प्रेमबद्धः ।
अत्युत्कण्ठः शवलहृदयोऽस्मद्विधो बाष्पधाराः
स्मृत्वा स्मृत्वा विसृजसि मुहुर्दुःखदस्तत्प्रसङ्गः ॥२०॥

पदच्छेद-मेघश्रीमन्त्वम् असिदयितः यादवेन्द्रस्य नूनम् श्रीवत्साङ्कम् वयम्इवभवान् ध्यायति प्रेमबद्धः
अतिउत्कण्ठः शवलहृदयः अस्मत् विधः बाष्पधाराः स्मृत्वा स्मृत्वा विसृजसि मुहुः दुखदः तत् प्रसङ्गः

शब्दार्थ—

मेघश्रीमन्त्वम्	१.	श्रीमन् मेघ तुम	अतिउत्कण्ठः	९.	तुम अति उत्कण्ठित हो रहे हो
असिदयितः	४.	प्रियपात्र हो	शवलहृदयः	१०.	तुम्हारा हृदय चिन्तासे भरा है
यादवेन्द्रस्य	३.	यदुवंशशिरोमणि के	अस्मत् विधः	१३.	हमारी तरह
नूनम्	२.	निश्चत ही	बाष्पधाराः	१४.	आँसुओं की धारा
श्रीवत्साङ्कम्	७.	श्रीकृष्ण का	स्मृत्वा स्मृत्वा	१२.	स्मरण कर करके (तुम भी)
वयम्इवभवान्	५.	आप भी हमारी तरह	विसृजसि	१५.	गिरा रहे हो
ध्यायति	८.	ध्यान करते हो	मुहुः	११.	बार-बार
प्रेमबद्धः	६.	प्रेमपाश में बंधकर	दुःखदःतत्प्रसङ्गः ॥	१६.	उनका प्रसङ्ग अति ही दुःखदायी है

श्लोकार्थ-श्रीमन् मेघ तुम निश्चित ही यदुवंश शिरोमणि के प्रियपात्र हो, आप भी हमारी तरह प्रेमपास में बंधकर श्रीकृष्ण का ध्यान करते हो। तुम अति उत्कण्ठित हो रहे हो। तुम्हारा हृदय चिन्ता से भरा है, बार-बार स्मरण कर करके तुम भी हमारी तरह आँसुओं की धारा गिरा रहे हो। उनका प्रसङ्ग अति ही दुःखदायी है ॥

एकविंशः श्लोकः

प्रियरावपदानि भाषसे मृतसञ्जीविकयानया गिरा ।
करवाणि किमद्य ते प्रियं वद मे वल्गितकण्ठ कोकिल ॥२१॥

पदच्छेद— प्रियराव पदानि भाषसे मृत सञ्जीविकया अनया गिरा ।
करवाणि किमद्य ते प्रियम् वद मे वल्गित कण्ठ कोकिला ॥

शब्दार्थ—

प्रियराव	८.	प्रियतम के शब्द समान	करवाणि	१४.	करूँ
पदानि	९.	पदों को	किम् अद्य ते	१२.	इस समय तेरा क्या
भाषसे	१०.	बोलती है	प्रियम्	१३.	प्रिय
मृत	४.	मरे हुये को	वदमे	११.	मुझे बता
सञ्जीविकया	५.	जिलाने वाली	वल्गित	१.	हे सुरीले
अनया	६.	इस	कण्ठ	२.	गले वाली
गिरा ।	७.	बोली से तू हमारे	कोकिल ॥	३.	कोयल

श्लोकार्थ—हे सुरीले गले वाली कोयल ! मरे हुये को जिलाने वाली इस बोली से तू हमारे प्रियतम के शब्द के समान पदों को बोलती है। मुझे बता इस समय तेरा क्या प्रिय करूँ ॥

द्वाविंशः श्लोकः

न चलसि न वदस्युदारबुद्धे क्षितिधर चिन्तयसे महान्तमर्थम् ।
अपि बत वसुदेवनन्दनाङ्घ्रिं वयमिव कामयसे स्तनैर्विधर्तुम् ॥२२॥

पदच्छेद— न चलसि न वदसि उदार बुद्धे क्षितिधर चिन्तयसे महान्तम् अर्थम् ।
अपि बत वसुदेवनन्दन अङ्घ्रिम् वयम् इव कामयसे स्तनैः विधर्तुम् ॥

शब्दार्थ—

न चलसि	४.	न चलते हो	अपि	९.	क्या (किसी)
न वदसि	५.	न बोलते हो	बत	१०.	ठीक है, मैं समझ गई कि
उदार	१.	उदार	वसुदेवनन्दन	१२.	श्रीकृष्ण के
बुद्धे	२.	विचार वाले	अङ्घ्रिम्	१३.	चरण कमल को
क्षितिधर	३.	पर्वत	वयम् इव	११.	हमारे समान तुम
चिन्तयसे	९.	चिन्तन कर रहे हो	कामयसे	१६.	चाहते हो
महान्तम्	७.	महान	स्तनैः	१४.	स्तनों के समान शिखरों पर
अर्थम् ।	८.	विषय का	विधर्तुम् ॥	१५.	धारण करना

श्लोकार्थ—हे उदार विचार वाले पर्वत ! न चलते हो, न बोलते हो, क्या किसी महान् विषय का चिन्तन कर रहे हो। ठीक है, मैं समझ गई कि हमारे समान तुम भी श्रीकृष्ण के चरण कमल को स्तनों के समान शिखरों पर धारण करना चाहते हो ॥

त्रयोविंशः श्लोकः

शुष्यद्ध्रदाः करशिता बत सिन्धुपत्न्यः
सम्प्रत्यपास्तकमलश्रिय इष्टभर्तुः ।
यद्वद् वयं मधुपतेः प्रणयावलोक-
मप्राप्य मुष्टहृदयाः पुरुकर्शिताः स्म ॥२३॥

पदच्छेद—
शुष्यद् ह्रदाः कर्शिता बत सिन्धुपत्न्यः
सम्प्रति अपास्त कमलश्रियः इष्टभर्तुः ।
यद्वत् वयम् मधुपतेः प्रणय अवलोकम्
अप्राप्य मुष्टम् हृदयाः पुरु कार्शिताः स्म ॥

शब्दार्थ—

शुष्यद्	३.	सूख गये हैं	यद्वत्	८.	जैसे
ह्रदा	२.	तुम्हारे कुण्ड	वयम्	९.	हम
कर्शिता बत	४.	खेद है कि तुम दुबली हो गई हो	मधुपतेः	११.	श्याम सुन्दर की
सिन्धुपत्न्यः	१.	हे समुद्र पत्नी नदियों !	प्रणयअवलोकम्	१२.	प्रेमभरी चितवन
सम्प्रति	५.	अब तुम्हारे अन्दर	अप्राप्य	१३.	न पाकर
अपास्त	७.	नष्ट हो गई है	मुष्ट हृदयाः	१४.	हृदय खो बैठी हैं और
कमलश्रियः	६.	कमलों की शोभा	पुरुकार्शिताः	१५.	अत्यन्त दुबली-पतली हो गई हैं
इष्टभर्तुः ।	१०.	अपने स्वामी	स्म ॥	१६.	वैसे ही तुम भी हो गई हो

श्लोकार्थ—हे समुद्र पत्नी नदियों ! तुम्हारे कुण्ड सूख गये हैं । खेद है कि तुम दुबली हो गई हो । अब तुम्हारे अन्दर कमलों की शोभा नष्ट हो गई है । जैसे हम अपने स्वामी श्याम सुन्दर की प्रेमभरी चितवन न पाकर हृदय खो बैठी हैं । और अत्यन्त पतली-दुबली हो गई हैं । वैसे ही तुम भी हो गई हो ॥

चतुर्विंशः श्लोकः

हंस स्वागतमास्यतां पिब पयो ब्रूह्यङ्ग शौरेः कथां
दूतं त्वां नु विदाम कच्चिदजितः स्वस्त्यास्त उक्तं पुरा ।
किं वा नश्चलसौहृदः स्मरति तं कस्माद् भजामो वयं
क्षौद्रालापय कामदं श्रियमृते सैवैकनिष्ठा स्त्रियाम् ॥२४॥

पदच्छेद— हंसस्वागतम् आस्याम् पिबपयः ब्रूहि अङ्ग शौरे कथाम्
दूतम् त्वाम् नुविदाम् कच्चित् अजितः स्वस्ति आस्ते उक्तं पुरा ।
किम् वानः चलसौहृदः स्मरति यम् कस्मात् भजाम् वयम्
क्षौद्र आलापयः कामदम् श्रियम् ऋते साएव एक निष्ठा स्त्रियाम् ॥

शब्दार्थ—

हंसस्वागतम्	१.	हंस स्वागत है	किम् वानः	१०.	वे क्या हमारा
आस्ययाम्पिवपयः	२.	बैठो दूध पियो	चलसौहृदःस्मरति	९.	अस्थिर मित्रता वाले स्मरण करते है
ब्रूहिअङ्गशौरेकथाम्	३.	सखे श्याम सुन्दर की बात कहो	यम्कस्मात्भजामः	१२.	उनको क्यों भजें
दूतम्त्वाम्नुविदाम्	४.	हम तुम्हें उनका दूत समझती हैं	वयम्	११.	हम
कच्चित अजितः	५.	क्या श्रीकृष्ण	क्षौद्रआलापयः	१३.	क्षुद्र के दूत हमसे बात करें
स्वस्ति आस्ते	६.	कुशल से हैं	कामदम्श्रियाम्ऋते	१४.	कामना वाले बिना लक्ष्मी के जाकर
उक्तम्	८.	कहा था	साएवएकनिष्ठा	१६.	वही एक निष्ठावाली है
पुरा ।	७.	पहले उन्होंने ऐसा	स्त्रियाम् ॥	१५.	क्या स्त्रियों में

श्लोकार्थ— हंस स्वागत है, बैठो दूध पियो ! सखे श्याम सुन्दर की बात कहो ! हम तुम्हें उनका दूत समझती हैं । क्या श्रीकृष्ण कुशल से हैं । पहले उन्होंने ऐसा कहा था । अस्थिर मित्रता वाले वे क्या हमारा स्मरण करते हैं । हम उनको क्यों भजें । क्षुद्र के दूत कामना वाले बिना लक्ष्मी के आकर हमसे बात करें । क्या स्त्रियों में हीं एक निष्ठावाली है ॥

पञ्चविंशः श्लोकः

इतीदृशेन भावेन कृष्णे योगेश्वरेश्वरे ।
क्रियमाणेन माधव्यो लेभिरे परमां गतिम् ॥२५॥

पदच्छेद— इति ईदृशेन भावेन कृष्णे योगेश्वर ईश्वरे ।
क्रियमःणेन माधव्यः लेभिरे परमां गतिम् ॥

शब्दार्थ—

इति	१. इस प्रकार	क्रियमाणेन	७. रखने से
ईदृशेन	५. ऐसा ही	माधव्यः	८. श्रीकृष्ण की पत्नियों ने
भावेन	६. प्रेमभाव	लेभिरे	११. प्राप्त की
कृष्णे	४. श्रीकृष्ण में	परमां	९. परम
योगेश्वर	२. योगेश्वरों में	गतिम् ॥	१०. गति
ईश्वरेः ।	३. सर्वश्रेष्ठ		

श्लोकार्थ—इस प्रकार योगेश्वरों में सर्वश्रेष्ठ श्रीकृष्ण में ऐसा ही प्रेमभाव रखने से श्रीकृष्ण की पत्नियों ने परम गति प्राप्त की ॥

षड्विंशः श्लोकः

श्रुतमात्रोऽपि यः स्त्रीणां प्रसह्याकर्षते मनः ।
उरुगायोरुगीतो वा पश्यन्तीनां कुतः पुनः ॥२६॥

पदच्छेद— श्रुतमात्रः अपि यः स्त्रीणाम् प्रसह्य आकर्षते मनः ।
उरुगाय उरुगीतः वा पश्यन्तीनाम् कुतः पुनः ॥

शब्दार्थ—

श्रुतमात्रः	४. केवल सुने जाने पर	उरुगाय	२. लीला गीतों द्वारा
अपि यः	५. भी जो (श्रीकृष्ण)	उरुगीतः	३. गाये गये
स्त्रीणाम्	६. स्त्रियों के	वा	१. अथवा
प्रसह्य	८. बल पूर्वक	पश्यन्तीनाम्	११. देखती हुई (स्त्रियों के बारे में)
आकर्षते	९. अपनी ओर खींच लेते हैं	कुतः	१२. क्या कहना है
मनः ।	७. मन को	पुनः ॥	१०. फिर (उनको)

श्लोकार्थ—अथवा लीला गीतों द्वारा गाये गये, केवल सुने जाने पर भी जो श्रीकृष्ण स्त्रियों के मन को वल पूर्वक अपनीं [ओर खींच लेते हैं । फिर उनको देखती हुई स्त्रियों के बारे में क्या कहना है ।

सप्तविंशः श्लोकः

याः सम्पर्यचरन् प्रेम्णा पादसंवाहनादिभिः ।
जगद्गुरुं भर्तृबुद्ध्या तासां किं वर्ण्यते तपः ॥२७॥

पदच्छेद— याः सम्परि अचरन् प्रेम्णा पाद सम्वाहन आदिभिः ।
जगत् गुरुं भर्तृबुद्धया तासाम् किम् वर्ण्यते तपः ॥

शब्दार्थ—

याः	१.	जिन स्त्रियों ने	जगत् गुरुम्	२.	जगत् गुरु श्रीकृष्ण को
सम्परि	८.	उनकी	भर्तृबुद्धया	३.	अपना पति मानकर
अचरन्	९.	सेवा की	तासाम्	१०.	उनकी
प्रेम्णा	४.	प्रेम से	किम्	१२.	क्या
पाद	५.	पैर	वर्ण्यते	१३.	वर्णन किया जाय
सम्पावन	६.	दबाने	तपः ॥	११.	तपस्या का
आदिभिः ।	७.	आदि के द्वारा			

श्लोकार्थ—जिन स्त्रियों ने जगद्गुरु श्रीकृष्ण को अपना पति मानकर प्रेम से पैर दबाने आदि के द्वारा उनकी सेवा की, उनकी तपस्या का क्या वर्णन किया जाय ॥

अष्टाविंशः श्लोकः

एवं वेदोदितं धर्ममनुतिष्ठन् सतां गतिः ।
गृहं धर्मार्थकामानां मुहुश्चादर्शयत् पदम् ॥२८॥

पदच्छेद— एवम् वेद उदितम् धर्मम् अनुतिष्ठन् सताम् गतिः ।
गृहम् धर्म अर्थ कामानाम् मुहुः च अदर्शयत् पदम् ॥

शब्दार्थ—

एवम्	३.	इस प्रकार	गृहम्	१०.	घर ही
वेद	४.	वेद की	धर्म-अर्थ	११.	धर्म-अर्थ
उदितम्	५.	रीति से	कामानाम्	१३.	काम का
धर्मम्	६.	धर्म का	मुहुः	७.	बार-बार
अनुतिष्ठन्	८.	अनुष्ठान करके यह	च	१२.	और
सताम्	१.	सज्जनों के	अदर्शयत्	९.	दिखलाया है कि
गतिः ।	२.	एकमात्र आश्रय (भगवान् ने)	पदम् ॥	१४.	स्थान है

श्लोकार्थ—सज्जनों के एकमात्र आश्रय भगवान ने इस प्रकार वेद की रीति से धर्म का बार-बार अनुष्ठान करके यह दिखलाया है कि घर ही धर्म-अर्थ और काम का स्थान है ॥

एकोनविंशः श्लोकः

आस्थितस्य परं धर्मं कृष्णस्य गृहमेधिनाम् ।
आसन् षोडशसाहस्रं महिष्यश्च शताधिकम् ॥२९॥

पदच्छेद— आस्थितस्य परम् धर्मम् कृष्णस्य गृहम् मेधिनाम् ।
आसन् षोडश साहस्रम् महिष्यः च शत अधिकम् ॥

शब्दार्थ—

आस्थितस्य	६. आश्रय लिये हुये	आसन्	१२. थीं
परम्	४. श्रेष्ठ	षोडश	८. सोलह
धर्मम्	५. धर्म का	साहस्रम्	९. हजार
कृष्णस्य	७. श्रीकृष्ण की	महिष्यः	११. रानियाँ
गृहम्	२. गृहस्थ ये	च	१. तथा
मेधिनाम् ।	३. अन्दर	शतअधिकम् ॥	१०. एक सौ आठ

श्लोकार्थ—तथा गृहस्थ के अन्दर श्रेष्ठ धर्म का आश्रय लिये हुये श्रीकृष्ण की सोलह हजार एक सौ आठ रानियाँ थीं ॥

त्रिंशः श्लोकः

तासां स्त्रीरत्नभूतानामष्टौ याः प्रागुदाहृताः ।
रुक्मिणीप्रमुखा राजंस्तत्पुत्राश्चानुपूर्वशः ॥३०॥

पदच्छेद— तासाम् स्त्रीरत्न भूतानाम अष्टौ याः प्रागुदाहृताः ।
रुक्मिणी प्रमुखाः राजन् तत् पुत्रा च अनु पूर्वशः ॥

शब्दार्थ—

तासाम्	२. उन	रुक्मिणी	४. रुक्मणि
स्त्रीरत्न	३. श्रेष्ठ स्त्रियों में	प्रमुखाः	५. आदि
भूतानाम्	८. रानियाँ थीं (वे)	राजन्	१. हे राजन्
अष्टौ	७. आठ	तत्	१०. उनके
याः	६. जो	पुत्रा	११. पुत्र
प्राक्	१३. पहले ही	च	९. और
हृता ।	१४. बताये जा चुके हैं	अनुपूर्वशः ॥	१२. क्रमशः

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उन श्रेष्ठ रानियों में रुक्मणि आदि जो आठ रानियाँ थी । वे उनके पुत्र क्रमशः पहले ही बताये जा चुके हैं ॥

एकत्रिंशः श्लोकः

एकैकस्यां दश दश कृष्णोऽजीजनदात्मजान् ।
यावत्य आत्मनो भार्या अमोघगतिरीश्वरः ॥३१॥

पदच्छेद— एक एकस्याम् दश दश कृष्णः अजीजनत् आत्मजान् ।
यावत्यः आत्मनः भार्याः अमोघ गतिः ईश्वरः ॥

शब्दार्थ—

एकएकस्याम्	५.	प्रत्येक के	यावत्यः	१.	इसके अतिरिक्त और
दश-दश	८.	दस-दस	आत्मनः	२.	अपनी जितनी
कृष्णः	४.	श्रीकृष्ण ने	भार्याः	३.	पत्नियाँ थीं उनसे
अजीजनत्	१०.	उत्पन्न किये	अमोघगतिः	६.	अमोघ गति वाले
आत्मजान् ।	९.	पुत्र	ईश्वरः ॥	७.	सर्वशक्तिमान्

श्लोकार्थ—इनके अतिरिक्त और अपनी जितनी पत्नियाँ थीं उनसे श्रीकृष्ण ने प्रत्येक के अमोघ गति वाले सर्वशक्तिमान् दस-दस पुत्र उत्पन्न किये ॥

द्वात्रिंशः श्लोकः

तेषामुद्दामवीर्याणामष्टादश महारथाः ।
आसन्नुदारयशसस्तेषां नामानि मे शृणु ॥३२॥

पदच्छेद— तेषाम् उद्दाम् वीर्याणाम् अष्टादश महारथाः ।
आसन् उदार यशसः तेषाम् नामानि मे शृणु ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	१.	उन	आसन्	७.	थे
उद्दाम्	२.	परम	उदार यशसः	६.	यशस्वी एवम् महान्
वीर्याणाम्	३.	पराक्रमी (पुत्रों में)	तेषाम्	८.	उनके
अष्टादश	४.	अठारह	नामानि	९.	नाम
महारथाः ।	५.	महारथी	मे शृणु ॥	१०.	मुझसे सुनो

श्लोकार्थ—उन परम पराक्रमी पुत्रों में अठारह महारथी यशस्वी एवम् महान् थे। उनके नाम मुझसे सुनो ॥

त्रयस्त्रिंशः श्लोकः

प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च दीप्तिमान् भानुरेव च ।
साम्बो मधुर्बृहद्भानुश्चित्रभानुर्वृकोऽरुणः ॥३३॥

पदच्छेद— प्रद्युम्नः च अनिरुद्धः च दीप्तिमान् भानुः एव च ।
साम्बः मधुः बृहद्भानुः चित्रभानुः वृक अरुणः ॥

शब्दार्थ—

प्रद्युम्नः च	१. प्रद्युम्न	साम्बः	६. साम्ब
अनिरुद्धः च	२. अनिरुद्ध	मधुः	७. मधु
दीप्तिमान्	३. दीप्तिमान्	बृहद्भानुः	८. बृहद्भानु
भानुः	४. भानु	चित्रभानुः	९. चित्रभानु (और)
एव च ।	५. और	वृक	१०. वृक
		अरुणः ॥	११. अरुण थे

श्लोकार्थ—प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, दीप्तिमान्, भानु और साम्ब, मधु, बृहद्भानु, चित्रभानु वृक, और अरुण थे ॥

चतुस्त्रिंशः श्लोकः

पुष्करो वेदबाहुश्च श्रुतदेवः सुनन्दनः ।
चित्रबाहुर्विरूपश्च कविर्न्यग्रोध एव च ॥३४॥

पदच्छेद— पुष्करः वेदबाहुः च श्रुतदेवः सुनन्दनः ।
चित्रबाहुः विरुपः च कविः न्यग्रोध एव च ॥

शब्दार्थ—

पुष्करः	२. पुष्कर	चित्रबाहुः	६. चित्रबाहु
वेदबाहुः	३. वेद वाहु	विरुपः च	७. विरुप
च	१. और	कविः	८. कवि
श्रुतदेवः	४. श्रुतदेव	न्यग्रोध	१०. न्यग्रोध थे
सुनन्दनः ।	५. सुनन्दन	एव च ॥	९. तथा

श्लोकार्थ—और पुष्कर, वेदबाहु, श्रुतदेव, सुनन्दन, चित्रबाहु, विरुप कवि तथा न्यग्रोध थे ॥

पञ्चत्रिंशः श्लोकः

एतेषामपि राजेन्द्र तनुजानां मधुद्विषः।
प्रद्युम्न आसीत् प्रथमः पितृवद् रुक्मिणीसुतः ॥३५॥

पदच्छेद— एतेषाम् अपि राजेन्द्र तनुजानाम् मधुद्विषः।
प्रद्युम्नः आसीत् प्रथमः पितृवद् रुक्मिणी सुतः ॥

शब्दार्थ—

एतेषाम्	३. इन	प्रद्युम्नः	८. प्रद्युम्न
अपि	५. भी	आसीत्	१०. थे
राजेन्द्र	१. हे राजेन्द्र !	प्रथमः	६. सबसे श्रेष्ठ
तनुजानाम्	४. पुत्रों में	पितृवद्	९. पिता के समान
मधुद्विषः।	२. श्रीकृष्ण के	रुक्मिणी सुतः ॥	७. रुक्मिणी के पुत्र

श्लोकार्थ—हे राजेन्द्र ! श्रीकृष्ण के इन पुत्रों में भी सबसे श्रेष्ठ रुक्मिणि के पुत्र प्रद्युम्न पिता के समान थे ॥

षट्त्रिंशः श्लोकः

स रुक्मिणो दुहितरमुपयेमे महारथः।
तस्मात् सुतोऽनिरुद्धोऽभून्नागायुतबलान्वितः ॥३६॥

पदच्छेद— सः रुकमणि दुहितम् उपयेमे महारथः।
तस्मात् सुतः अनिरुद्धः अभूत् नागायुत बल अन्वितः ॥

शब्दार्थ—

सः	१. उस	तस्मात्	६. उससे
रुकमणि	३. रुक्मी की	सुतः अनिरुद्धः	७. अनिरुद्ध नामक पुत्र
दुहितम्	४. पुत्री से	अभूत्	८. उत्पन्न हुआ जो
उपयेमे	५. विवाह किया	नागायुत	९. दस हजार हाथियों के
महारथः।	२. महारथी ने	बल अन्वितः ॥	१०. बल से युक्त था

श्लोकार्थ—उस महारथी ने रुक्मी की पुत्री से विवाह किया। उससे अनिरुद्ध नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। जो दस हजार हाथियों के बल से युक्त था ॥

सप्तत्रिंशः श्लोकः

स चापि रुक्मिणः पौत्रीं दौहित्रो जगृहे ततः ।
वज्रस्तस्याभवद् यस्तु मौसलादवशेषितः ॥३७॥

पदच्छेद— सः च अपि रुक्मिणः पौत्रीम् दौहित्रः जगृहे ततः ।
वज्रः तस्य अभवत् यः तु मौसलात् अवशेषितः ॥

शब्दार्थ—

सः	३.	उस	वज्रः	९.	वज्र
च अपि	५.	भी	तस्य	८.	उसका पुत्र
रुक्मिणः	२.	रुक्मी से	अभवत्	१०.	हुआ
पौत्रीम्	६.	अपने नाना की पोती से	यः तु	११.	जो
दौहित्रः	४.	दौहित्र (अनिरुद्ध)	मौसलात्	१२.	मूशल के द्वारा यदुवंशियों के नाश होने पर
जगृहे	७.	विवाह किया	अवशेषितः ॥	१३.	बच गया था
ततः ।	१.	तदनन्दर			

श्लोकार्थ—तदनन्तर रुक्मी के उस दौहित्र अनिरुद्ध ने भी अपने नाना की पोती से विवाह किया। उसका पुत्र वज्र हुआ जो मूसल के द्वारा यदुवंशियों के नाश होने पर बच गया था ॥

अष्टत्रिंशः श्लोकः

प्रतिबाहुरभूत्तस्मात् सुबाहुस्तस्य चात्मजः ।
सुबाहोः शान्तसेनोऽभूच्छतसेनस्तु तत्सुतः ॥३८॥

पदच्छेद— प्रतिबाषुः अभूत् तस्मात् सुबाहुः तस्य च आत्मजः ।
सुबाहोः शान्तसेनः अभूत् शतसेनः तु तत्सुतः ॥

शब्दार्थ—

प्रतिबाषुः	२.	प्रतिबाहु	सुबाहोः	७	सुबाहु से
अभूत्	३.	हुआ	शान्तसेनः	८.	शान्त सेन (और)
तस्मात्	१.	उससे	अभूत्	१२.	हुआ
सुबाहुः	६.	सुबाहु हुआ	शतसेनः	११.	शतसेन
तस्य च	४.	उसका	तत्	९.	उसका
आत्मजः ।	५.	पुत्र	सुतः ॥	१०.	पुत्र

श्लोकार्थ—उससे प्रतिबाहु हुआ। उसका पुत्र सुबाहु हुआ। सुबाहु से शान्तसेन और उसका पुत्र शतसेन हुआ ॥

एकोनचत्वारिंशः श्लोकः

न ह्येतस्मिन् कुले जाता अधना अबहुप्रजाः ।
अल्पायुषोऽल्पवीर्याश्च अब्रह्मण्याश्च जज्ञिरे ॥३९॥

पदच्छेद— न हि एतस्मिन् कुले जाता अधना अबहु प्रजाः ।
अल्प आयुषः अल्पवीर्याः च अब्रह्मण्याः च जज्ञिरे ॥

शब्दार्थ—

न हि	७. नहीं हुये	अल्प आयुषः	५. कम आयु
एतस्मिन्	१. इस	अल्पवीर्याः	६. कम शक्तिवाले
कुले जाता	२. वंश में	च	८. और
अधना	३. उत्पन्न हुये (पुरुष)	अब्रह्मण्याः	९. ब्राह्मण भक्ति से रहित भी
अबहु प्रजाः ।	४. निर्धन, सन्तान रहित	च जज्ञिरे ॥	१०. नहीं हुये

श्लोकार्थ—इस वंश में उत्पन्न हुये (पुरुष) निर्धन, सन्तान रहित, कम आयु, कम शक्तिवाले नहीं हुये । और ब्राह्मण भक्ति से रहित भी नहीं हुये ॥

चत्वारिंशः श्लोकः

यदुवंशप्रसूतानां पुंसां विख्यातकर्मणाम् ।
संख्या न शक्यते कर्तुमपि वर्षायुतैर्नृप ॥४०॥

पदच्छेद— यदुवंश प्रसूतानाम् पुंसाम् विख्यात कर्मणाम् ।
संख्या न शक्यते कर्तुम् अपि वर्ष अयुतैः नृप ॥

शब्दार्थ—

यदुवंश	२. यदुवंश में	संख्या	७. गिनती
प्रसूतानाम्	३. उत्पन्न हुये	न शक्यते	१०. नहीं जा सकती है
पुंसाम्	६. पुरुषों की	कर्तुम्	९. की
विख्यात	४. प्रसिद्ध	अपि वर्ष अयुतैः	८. हजारों वर्षों में भी
कर्मणाम् ।	५. पराक्रमी	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यदुवंश में उत्पन्न हुये प्रसिद्ध पराक्रमी पुरुषों की गिनती हजारों वर्षों में भी नहीं की जा सकती है ॥

एकचत्वारिंशः श्लोकः

तिस्रः कोटयः सहस्राणामष्टाशीतिशतानि च ।
आसन् यदिकुलाचार्याः कुमाराणामिति श्रुतम् ॥४१॥

पदच्छेद— तिस्रः कोटयः सहस्राणाम् अष्टाशीति शतानि च ।
आसन् यदुकुल आचार्याः कुमाराणाम् इति श्रुतम् ॥

शब्दार्थ—

तिस्रः	४.	तीन	आसन्	१०.	थे
कोटयः	५.	करोड़	यदुकुल	१.	यदुवंश में
सहस्राणाम्	७.	लाख	आचार्याः	३.	आचार्य
अष्टाशीति	६.	अट्ठासी	कुमाराणाम्	२.	बालकों के
शतानि	९.	सौ हजार	इति	११.	ऐसा
च ।	८.	और	श्रुतम् ॥	१२.	सुना जाता है

श्लोकार्थ—यदुवंश में बालकों के आचार्य तीन करोड़ अट्ठासी लाख और सौ हजार थे, ऐसा सुना जाता है ॥

द्विचत्वारिंशः श्लोकः

संख्यानं यादवानां कः करिष्यति महात्मनाम् ।
यत्रायुतानामयुतलक्षेणास्ते स आहुकः ॥४२॥

पदच्छेद— संख्यानाम् यादवानाम् कः करिष्यति महात्मनाम् ।
यत्र अयुतानाम् अयुतलक्षेण आस्ते स आहुकः ॥

शब्दार्थ—

संख्यानाम्	३.	संख्या	यत्र	६.	जहाँ
यादवानाम्	२.	यादवों की	अयुतानाम्	९.	दस हजार के
कः	४.	कौन	अयुतलक्षेण	१०.	दस सौ लाख (एक नील) सैनिक
करिष्यति	५.	करेगा	आस्ते	११.	रहते थे
महात्मनाम् ।	१.	महात्मा	सः	७.	उन
			आहुकः ॥	८.	उग्रसेन के साथ

श्लोकार्थ—महात्मा यादवों की संख्या कौन करेगा । जहाँ उन उग्रसेन के साथ दस हजार के दस सौ लाख (एक नील) सैनिक रहते थे ॥

त्रिचत्वारिंशः श्लोकः

देवासुराहवहता दैतेया ये सुदारुणाः ।
ते चोत्पन्ना मनुष्येषु प्रजा दृप्ता बबाधिरे ॥४३॥

पदच्छेद— देव असुर आहव हताः दैतेयाः ये सुदारुणाः ।
ते च उत्पन्नाः मनुष्येषु प्रजाः दृप्ताः बबाधिरे ॥

शब्दार्थ—

देव-असुर	१. देवासुर	ते च	९. और वे
आहव	२. संग्राम में	उत्पन्नाः	८. उत्पन्न हुये
हताः	६. मारे गये थे	मनुष्येषु	७. वे मनुष्यों में
दैतेयाः	५. दैत्य	प्रजाः	११. प्रजाओं को
ये	३. जो	दृप्ताः	१०. घमंड के साथ
सुदारुणाः ।	४. भयंकर	बबाधिरे ॥	१२. सताने लगे

श्लोकार्थ—देवासुर संग्राम में जो भयंकर दैत्य मारे गये थे । वे मनुष्यों में उत्पन्न हुये और वे घमंड के साथ प्रजाओं को सताने लगे ॥

चतुःचत्वारिंशः श्लोकः

तन्निग्रहाय हरिणा प्रोक्ता देवा यदोः कुले ।
अवतीर्णाः कुलशतं तेषामेकाधिकं नृप ॥४४॥

पदच्छेद— तत् निग्रहाय हरिणा प्रोक्ता देवा यदोः कुले ।
अवतीर्णाः कुलशतम् तेषाम् एक अधिकम् नृप ॥

शब्दार्थ—

तत्	२. उनका	अवतीर्णाः	८. अवतार लिया था
निग्रहाय	३. दमन करने के लिए	कुलशतम्	१०. कुलों की संख्या
हरिणा	४. भगवान् के	तेषाम्	९. उनके
प्रोक्ताः	५. आदेश से	एक	११. एक सौ से-
देवाः	६. देवताओं ने	अधिकम्	१२. अधिक थी
यदुकुले ।	७. यदुवंश में	नृप ॥	१. हे राजन् !

श्लोकार्थ—हे राजन् ! उनका दमन करने के लिये भगवान् के आदेश से देवताओं ने यदुवंश में अवतार लिया था । उनके कुलों की संख्या एक सौ से अधिक थी ॥

पञ्चचत्वारिंशः श्लोकः

तेषां प्रमाणं भगवान् प्रभुत्वेनाभवद्धरिः ।
ये चानुवर्तिनस्तस्य ववृधुः सर्वयादवाः ॥४५॥

पदच्छेद— तेषाम् प्रमाणम् भगवान् प्रभुत्वेन अभवत् हरिः ।
ये च अनुवर्तिनः तस्य ववृधुः सर्व यादवाः ॥

शब्दार्थ—

तेषाम्	४.	उनके	ये च	७	जो
प्रमाणम्	५.	सब कुछ	अनुवर्तिनः	९.	अनुयायी थे
भगवान्	१.	भगवान्	तस्य	१०.	उनकी
प्रभुत्वेन	२.	प्रभुता में	ववृधुः	१२.	उन्नति हुई
अभवत्	६.	थे	सर्व	११.	सब प्रकार से
हरिः ।	३.	श्रीकृष्ण ही	यादवाः ॥	८.	यदुवंशी उनके

श्लोकार्थ- प्रभुता में भगवान् श्रीकृष्ण ही उनके अनुयायी थे । जो यदुवंशी उनके अनुयायी थे, उनकी सब प्रकार से उन्नति हुई ॥

षट्चत्वारिंशः श्लोकः

शय्यासनाटनालापक्रीडास्नानादिकर्मसु ।
न विदुः सन्तमात्मानं वृष्णयः कृष्णचेतसः ॥४६॥

पदच्छेद— शय्या आसन अटन आलाप क्रीडा स्नान आदि कर्मसु ।
न विदुः सन्तम् आत्मानम् वृष्णयः कृष्ण चेतसः ॥

शब्दार्थ—

शय्या	४.	सोने	न विदुः	१२.	सुधि नहीं रहती थी
आसन अटन	५.	बैठने-घूमने-फिरने	सन्तम्	१०.	लगे हुये
आलाप	६.	बोलने	आत्मानम्	११.	अपनी
क्रीडा	७.	खेलने	वृष्णयः	३.	वृष्णीवंशियों को
स्नान आदि	८.	स्नान आदि	कृष्ण	१.	श्रीकृष्ण में लगे हुये
कर्मसु ।	९.	कामों में	चेतसः ॥	२.	चित्त वाले

श्लोकार्थ—श्रीकृष्ण में लगे हुये चित्तवाले वृष्णीवंशियों को सोने, बैठाने, घूमने, फिरने, बोलने, खेलने स्नान आदि कामों में लगे हुये अपनी सुधि नहीं रहती थी ॥

सप्तचत्वारिंशः श्लोकः

तीर्थं चक्रे नृपोनं यदजनि यदुषु स्वःसरित्पादशौचं
विद्विट्स्निग्धाः स्वरूपं ययुरजितपरा श्रीर्यदर्थेऽन्ययत्नः ।
यन्नामामङ्गलघ्नं श्रुतमथ गदितं यत्कृतो गोत्रधर्मः
कृष्णस्यैतन्न चित्रं क्षितिभरहरणं कालचक्रायुधस्य ॥४७॥

पदच्छेद— तीर्थम् चक्रे नृप ऊनम् यदजनि यदुषु स्वः सरित् पाद् शौचम् ।
विद्‌विट् स्निग्धाः स्वरूपं ययुः अजित परा श्रीः यद्‌अर्थ अन्य यत्ना ।।
यत्‌नाम् अमङ्गलघ्नम् श्रुतम् अथ गदितम् यत्‌कृतः गोत्रधर्मः ।
कृष्णस्य एतत् न चित्रम् क्षितिभर हरणम् कालचक्र आयुधस्य ।।

शब्दार्थ—

तीर्थम्	७.	तीर्थ की महिमा को	यत्‌नाम्	१८.	जिनका नाम
चक्रे	९.	कर दिया है	अमङ्गलघ्नम्	२२.	अमङ्गलों का नाश करता है
नृप	१.	हे राजन् !	श्रुतम्	१९.	सुनने पर
ऊनम्	८.	कम	अथ	२०.	और
यदजनि	३.	जिन्होंने अवतार लिया है (और)	गदितम्	२१.	आचरण करने पर
यदुषु	२.	यदुवंश में	यत्	२३.	जिन्होंने (ऋषियों का)
स्वःसरित्	६.	स्वर्ग नदी गंगा	कृतः	२५.	चलाया है
पाद्	४.	अपने चरणों का	गोत्रधर्मः	२४.	वंशधर्म
शौचम्	५.	धोवन	कृष्णस्य	२९.	श्रीकृष्ण के लिये
विद्‌विट्	१०.	जिनके द्वेषी तथा	एतत्	३०.	यह
स्निग्धाः	११.	प्रेमी	न	३४.	नहीं है
स्वरूपम्	१२.	उनके स्वरूप को	चित्रम्	३३.	आश्चर्य की बात
ययुः	१३.	प्राप्त हुये (और)	क्षितिभर	३१.	पृथ्वी का भार
अजितपरा	१५.	जिनकी सेविका हैं	हरणम्	३२.	उतारना
श्रीः	१४.	लक्ष्मी	काल	२६.	उन काल स्वरूप
यद्‌अर्थे	१६.	जिसको पाने के लिये	चक्र	२७.	चक्र
अन्ययत्नः ।	१७.	दूसरे लोग यत्न करते हैं	आयुधस्य ।।	२८.	धारण करने वाले (भगवान्)

श्लोकार्थ—हे राजन् ! यदुवंश में जिन्होंने अवतार लिया है, और अपने चरणों का धोवन स्वर्ग नदी गंगा तीर्थ की महिमा को कम कर दिया है। जिनके द्वेषी तथा प्रेमी उनके स्वरूप को प्राप्त हुये। लक्ष्मीं जिनकी सेविका हैं। जिसको पाने के लिये दूसरे लोग यत्न करते हैं। जिनका नाम सुनने पर और उच्चारण करने पर अमङ्गलों का नाश करता है। जिन्होंने ऋषियों का वंशधर्म चलाया है। उन काल स्वरूप चक्र धारण करने वाले भगवान् के यह पृथ्वो का भार उतारना आश्चर्य की बात नही है ॥

अष्टचत्वारिंशः श्लोकः

जयति जननिवासो देवकीजन्मवादो यदुवरपर्षत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्मम् ।
स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मितश्रीमुखेन व्रजपुरवनितानां वर्धयन् कामदेवम् ॥४८॥

पदच्छेद—जयति जननिवासः देवकी जन्मवादः यदुवर पर्षत् स्वैः दोर्भिः अस्यन् न अधर्मम् ।
स्थिरचर वृजिनघ्नः सुस्मित श्रीमुखेन व्रजपुर वनितनाम् वर्धयन् कामदेवम् ॥

शब्दार्थ—

जयति	१६.	सर्वदा विराजमान हैं	स्थिरःचर	८.	चराचर जगत के
जननिवासः	१.	जीवों के आश्रय स्थान	वृजिनघ्नः	६.	दुःख को मिटाने वाले
देवकी	२.	देवकी के गर्भ में	सुस्मितः	१०.	मुसकराहट से युक्त
जन्मवादः	३.	जन्म लेने वाले (श्रीकृष्ण की)	श्रीमुखेन	११.	सुन्दर मुख वाले
यदुवरपर्षत्	४.	यदुवंशी वीर पार्षद रूप में सेवा करते हैं	व्रजपुर	१२.	व्रज और नगर की
स्वैर्दोर्भिः	६.	अपनी भुजाओं से	वनितानाम्	१३.	स्त्रियों में
अस्यन् न	७.	दूर करने वाले	वर्धयन्	१५.	बढ़ाते हुये (भगवान् श्रीकृष्ण)
अधर्मम् ।	५.	अधर्म को	कामदेवम् ॥	१४.	काम भाव

श्लोकार्थ—जीवों के आश्रय स्थान देवकी के गर्भ से जन्म लेने वाले श्रीकृष्ण की यदुवंशी वीर पार्षद रूप में सेवा करते हैं। अधर्म को अपनी भुजाओं से दूर करने वाले चराचर जगत के दुःख को मिटाने वाले मुसकराहट से युक्त सुन्दर मुख वाले व्रज और नगर की स्त्रियों के काम-भाव को बढ़ाते हुये भगवान् श्रीकृष्ण सर्वदा विराजमान हैं ॥

एकोनपञ्चाशत् श्लोकः

इत्थं परस्य निजवर्त्मरिरक्षयाऽऽत्तलीलातनोस्तदनुरूपविडम्बनानि ।
कर्माणि कर्मकषणानि यदूत्तमस्य श्रूयादमुष्य पदयोरनुवृत्तिमिच्छन् ॥४९॥

पदच्छेद—इत्थम् परस्य निजवर्त्म रिरक्षया आत्त लीलातनोः तत् अनुरूप विडम्बनानि ।
कर्माणि कर्मकषणानि यदूत्तम अस्य श्रूयात् अमुष्य पदयोः अनुवृत्तिम् इच्छन् ॥

शब्दार्थ—

इत्थम्	१	इस प्रकार	कर्माणि	१०.	कर्मों का स्मरण
परस्य	२.	प्रकृति से परे	कर्म-कषणानि	११.	कर्म बन्धन को काटने वाला है
निजवर्त्म	३.	अपने द्वारा बनाये धर्म की	यदूत्तम अस्य	६.	यदुवंश शिरोमणि श्रीकृष्ण के
रिरक्षया	४.	रक्षा के लिये	श्रूयात्	१६.	श्रवण करें
आत्त	६.	धारण करके	अमुष्य	१२.	भगवान श्रीकृष्ण के
लीलातनोः	५.	लीला शरीर	पदयोः	१३.	चरणों की
तत् अनुरूप	७.	उसके अनुरूप	अनुवृत्तिम्	१४.	सेवा का
विडम्बनानि ।	८.	अद्भुत चरित्र किये	इच्छन् ॥	१५.	इच्छुक भक्त (उनका)

श्लोकार्थ—इस प्रकार प्रकृति से परे अपने द्वारा बनाये धर्म की रक्षा के लिये लीला शरीर धारण करके उसके अनुरूप अद्भुत चरित्र किये। उन यदुवंश शिरोमणि श्रीकृष्ण के कर्मों का स्मरण कर्म बन्धन को काटने वाला है। भगवान् श्रीकृष्ण के चरणों की सेवा का इच्छुक भक्त उनका श्रवण करें ॥

पञ्चाशत् श्लोकः

मर्त्यस्तयानुसवमेधितया मुकुन्दश्रीमत्कथाश्रवणकीर्तनचिन्तयैति ।
तद्धाम दुस्तरकृतान्तजवापवर्गं ग्रामाद् वनं क्षितिभुजोऽपि ययुर्यदर्थाः ॥५०॥

पदच्छेद—मर्त्यः तया अनुसवम् एधितया मुकुन्द श्रीमत् कथा श्रवण कीर्तन चिन्तया एति ।
तत्धाम दुस्तर कृतान्त जव अपवर्गं ग्रामाद् वनम् क्षितिभुजः अपि ययुः यद्अर्थाः ॥

शब्दार्थ—

मर्त्यः	१.	मनुष्य	तत्	१४.	उनके
तया	२.	उस	धाम्	१५.	धाम में
अनुसवम्	४.	प्रतिक्षण	दुस्तर	११.	दुर्लंध्य
एधितया	३.	बुद्धि को प्राप्त	कृतान्त जव	१२.	यमराज के वेग को
मुकुन्द	५.	भगवान की	अपवर्ग	१३.	छुड़ाने वाले
श्रीमत्	६.	मनोहर	ग्रामाद्	२०.	गाँवों से
कथा	७.	कथाओं के	वनम्	२१.	वन को
श्रवण	८.	सुनने	क्षितिभुजः	१८.	पृथ्वी के पालक राजा
कीर्तन	९.	कीर्तन और	अपि	१९.	भी
चिन्तया	१०.	चिन्तन से	ययुः	२२.	चले गये
एति ।	१६.	पहुँच जाता है (क्योंकि)	यद्अर्थाः ॥	१७.	जिसके लिये

श्लोकार्थ—हे परीक्षित ! मनुष्य उस प्रतिक्षण बुद्धि को प्राप्त उस भगवान् की मनोहर-कथाओं के सुनने कीर्तन और चिन्तन से दुर्लंध्य यमराज के वेग को छुड़ाने वाले उनके धाम में पहुँच जाता है । क्योंकि जिसके लिये पृथ्वी के पालक राजा भी गाँवों से वन को चले गये ॥

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां
दशमस्कन्धे उत्तरार्धे श्रीकृष्ण चरितानु वर्णनम् नाम
नवतितमः अध्यायः ॥९०॥

॥ इति दशमस्कन्धोत्तरार्धः सम्पूर्णः ॥



भजन

तुम्हारे दिव्य दर्शन को, मैं इच्छा लेकर आया हूँ !
पिलादो प्रेम का अमृत, पिपासा होकर आया हूँ ।। तुम्हारे० ।।

रत्न अनमोल लाते हैं, आने वाले भेंट को तेरी ।
मैं केवल आँसुओं की, मञ्जुमाला लेकर आया हूँ ।। तुम्हारे० ।।

जगत के रंग सब झूठे, तू अपने रंग में रंग दे ।
मैं अपना ये महाबदरंग, चोला लेकर आया हूँ ।। तुम्हारे० ।।

प्रभो प्रकाश हो जाये, मेरी अन्धेरी कुटिया में ।
दयासिन्धु तेरे द्वारे पर, मैं आशा लेकर आया हूँ ।। तुम्हारे० ।।

भजन

तेरे दर को छोड़कर, अब किस दर जाऊँ मैं ।।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं ।। तेरे० ।।

जब से याद भुलाई तेरी, लाखों कष्ट उठाये हैं ।।
क्या जांनू इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये हैं ।
हूँ शर्मिन्दा आप से, क्या बतलाऊँ मैं ।। तेरे० ।।

मेरे पाप कर्म ही मुझसे, प्रीति न करने देते हैं ।
कभी जो चाहूँ मिलूं आपसे, रोक मुझे वे लेते हैं ।
कैसे प्रभु जी आपका, दर्शन पाऊँ मैं ।। तेरे० ।।

तू है नाथ वरों का दाता, तुझसे सब वर पाते हैं ।
ऋषि-मुनि और योगी, यति, तेरे ही गुण गाते हैं ।
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं ।। तेरे० ।।

जो बीती सो बीती भगवन्, बाकी उमर संभालूँ मैं ।
चरणों में मैं बैठ आपके, गीत प्रेम के गाऊँ मैं ।
दयासिन्धु जीवन अपना, सफल बनाऊँ मैं ।। तेरे० ।।